अभिनव हिन्दी कोष

सम्पादक
हरिशङ्कर शर्मा

मूल्य ८)

प्रकाशक
गया प्रसाद एण्ड संस, आगरा

करनेवाला। वेगवान्। सूर्य।

अंशुनाभि—[स्त्री०] वह मध्य विन्दु जिस पर चारों ओर की किरणें तिरछी होती हुई इकट्ठी हो जायँ।

अंशुपति—[पु०] सूर्य।

अंशुमत्फला—[स्त्री०] कदली वृक्ष। केले का पेड़।

अंशुमान्—[पु०] किरणों वाला। सूर्य। सूर्यवंश में उत्पन्न हुआ एक राजा।

अंशुमाला—[स्त्री०] किरण-समूह।

अंशुमाली—[पु०] सूर्य।

अंशुल—[पु०] खाना। भोजन। अन्न।

अंस—[पु०] भाग। हिस्सा। बाधा।

अंसकूट—[पु०] साड़ के कंधे पर ऊँचा उठा हुआ भाग। टाँट। कूबड़। हुड्ड।

अंह—[पु०] पाप। विघ्न। बाधा। विकलता। आकुलता। कुकर्म। अपराध।

अंहति—[पु०] दान। त्याग। रोग।

अंहस्पात—[पु०] क्षयमास जो बहुत वर्षों में कभी पड़ता है।

अंह्रि—[पु०] पैर। वृक्ष की जड़।

अंह्रिप—[पु०] जड़ के द्वारा पीने-वाला। वृक्ष।

अऊत—[पु०] [स्त्री० अऊती] अपुत्र। निपूता। जिसके कोई सन्तान न हो।

अऋणी—[वि०] बिना ऋणवाला। जिस पर कर्जा न हो। जिसे किसी का देना न हो।

अक—[पु०] पाप। पातक। दुःख।

अकण्टक—[वि०] निर्बाध। निर्विघ्न। जिसमें काँटे न हों। जिसमें कोई रोक-टोक न हो।

अकम्पन—[वि०] न काँपना। कम्पन-रहित। स्थिर। एक राक्षस का नाम जो रावण का सेवक था।

अकम्पित—[वि०] जो काँपा न हो। जो हिला न हो। अटल। निश्चल।

अकम्प्य—[वि०] जो कँपाने योग्य न हो। जो हिलाया न जा सके। निश्चल।

अकच—[वि०] बिना बालों का। बालरहित। खल्वाट। गंजा। केतु-नामक ग्रह।

अकच्छ—[वि०] नंगा। नग्न। विवस्त्र। दिगम्बर। व्यभिचारी। पराई स्त्री से भोग करनेवाला।

अकड़—[स्त्री०] हठ। अड़। ऐंठ। घमंड। मरोड़। तनाव। धृष्टता।

अकड़न—[स्त्री०] ऐंठन। मरोड़। अड़।

अकड़ना—[क्रि०] हठ करना। ऐंठना। घमंड दिखाना। सिकुड़ना। ठिठुरना। तनना। अड़ना। धृष्टता करना। मृत देह का ज्यों का त्यों तना रह जाना।

अकड़बाज—[वि०] ऐंठबाज। ऐंठू। अकड़ू। घमंडी। अभिमानी।

अकड़बाजी—[स्त्री०] देखो "अकड़"।

अकड़ाव—[पु०] देखो "अकड़न"।

अकथ—[वि०] अकथनीय। न कहने योग्य। वर्णन के बाहर। जो कहा न जा सके। अनिर्वचनीय। अवर्णनीय।

अकथनीय—[वि०] देखो "अकथ"।

अकथ्य—[वि०] न कहने लायक। 'अकथ'।

अकधक—[पु०] भय। डर। आशंका। सोच-विचार। आगा-पीछा।

अकबकाना—[क्रि०] आश्चर्य में पड़ जाना। चकित होना। स्तब्ध रह जाना। भौंचक्का हो जाना। घबरा जाना।

अकर—[वि०] बिना हाथ का। हाथ-रहित। न करने योग्य। कठिन। मुश्किल। विकट। बिना कर का। जिस पर महसूल न लगता हो।

अकरकरा—[पु०] एक पौधा जिसकी जड़ दवा के काम में आती है।

अकरण—[पु०] इन्द्रियों से रहित। परमात्मा। जिसका करना असम्भव हो। न करने योग्य। फलशून्य कर्म जिस का करना न करना एक सा हो। कर्म का अभाव।

अकरणीय—[वि०] न करने लायक। करने के अयोग्य।

अकरा—[स्त्री०] बिना हाथों वाली। आँवले का वृक्ष। [वि०] मँहगा। अधिक दामों का। उत्तम। खरा।

अकराल—[वि०] जो भयंकर न हो। अच्छा। सुन्दर। सौम्य।

अकरुण—[वि०] निर्दय। कठोर। निष्ठुर। दयारहित। करुणाशून्य।

अकर्कश—[वि०] जो कर्कश न हो। दयावान्। अच्छा। सहृदय। मृदु। कोमल। मुलायम।

अकर्ण—[वि०] कानरहित। बिना कान का। बहरा। [पु०] सर्प।

अकर्तव्य—[वि०] न करने योग्य। अनुचित।

अकर्ता—[वि०] न करने वाला। कर्म से अलग।

अकर्तृक—[पु०] जो किसी के द्वारा किया गया न हो। जिसका कोई करने वाला न हो। बिना कर्ता का।

अकर्म—[पु०] कर्म का न होना। कर्म का अभाव। न करने लायक काम। दुष्कर्म। बुरा काम।

अकर्मक—[पु०] कर्मरहित। बिना कर्म का। व्याकरण में क्रिया का एक भेद। वह क्रिया जिसमें उसका फल कर्ता में ही रहता है, जैसे—मोहन

सोता है।

अकर्मण्य–[वि०] निकम्मा। आलसी। जो कुछ काम न करे।

अकर्मा—[वि०] जो काम न करे या कर सके। आलसी। निकम्मा। बेकाम। [पु०] अनुद्योगीपन। निकम्मापन। कर्मशून्यता।

अकर्मी—[पु०] बुरा काम करनेवाला। कुकर्मी। पापी। अपराधी। दुष्कर्मी।

अकल—[वि०] अखण्ड। जिसके खण्ड या अवयव न हों। निरवयवी। सर्वाङ्गपूर्ण। सम्पूर्ण। परमात्मा का एक विशेषण।

अकलखुरा—[वि०] केवल अपने को चाहने वाला। स्वार्थी। अकेला खाने वाला।

अकलङ्क—[वि०] निर्दोष। बेऐब। बिना दाग-धब्बे का। निर्मल। स्वच्छ। निष्कलङ्क।

अकलङ्कता—[स्त्री०] निर्मलता। स्वच्छता। निर्दोषता। कलङ्कशून्यता।

अकलङ्कित—[पु०] देखो "अकलङ्क"।

अकल्क—[वि०] निष्पाप। निर्दोष। स्वच्छ। दम्भ-शून्य।

अकल्का—[स्त्री०] निष्पाप या पाखण्ड-रहित स्त्री। चाँदनी। चन्द्रिका।

अकल्मष—[वि०] निष्पाप। निर्दोष। पापरहित। बेऐब। निर्विकार।

अकल्य—[वि०] रोगी। दुखी।

अकल्याण—[पु०] अहित। अमङ्गल। अशुभ।

अकस—[पु०] शत्रुता। वैर। द्वेष। अनुचित उत्तेजन।

अकसना—[क्रि०] शत्रुता रखना। स्पर्धा करना।

अकसर—[क्रि० वि०] अधिकतर। प्रायः। बहुधा।

अकसीर—[स्त्री०] किसी रोग की अचूक ओषधि। अव्यर्थ। अवश्य गुण-कारी। रामबाण। रसायन–अर्थात् वह ओषधि जिसके योग से ताँबा, गिलट आदि सोना-चाँदी बन जायँ। कीमिया।

अकस्मात्—[अ०] एकबारगी। अनायास। औचक। सहसा। अचानक। यकायक। संयोग से। दैवयोग से। बैठे-बिठाए। आपसे आप। एकदम। तत्क्षण।

अकाण्ड—[पु०] बेमौके। बिना अवसर। असमय में। बिना बाण। शाखारहित। जिसमें डालियां न हों। [क्रि० वि०] सहसा। अचानक।

अकाण्डजात—[वि०] वह जो पैदा होते ही मर जाय। जन्मते ही मर जाने वाला।

अकाण्ड ताण्डव—[पु०] बेमतलब का झगड़ा। व्यर्थ या असमय की उछल-कूद। बिना प्रयोजन का विवाद। व्यर्थ का लड़ाई-झगड़ा।

अकाज—[पु०] कार्यहानि। विघ्न। बिगाड़। हर्ज। नुकसान। दुष्कर्म। बुरा काम। [क्रि० वि०] निरर्थक। निष्प्रयोजन। बिना काम।

अकाट्य—[वि०] जो काटा न जा सके। जिसका खंडन या प्रतिवाद न हो सके। दृढ़। मज़बूत। पक्का।

अकादर—[वि०] जो कायर न हो। हिम्मत वाला। शूरवीर। साहसी।

अकाम— [पु०] इच्छारहित। कामना-रहित। निस्पृह। [क्रि० वि०] व्यर्थ। बिना काम। निष्प्रयोजन।

अकामी—[पु०] कामनारहित। इच्छा-विहीन। निःस्वार्थ। निस्पृह। अकाम।

अकाय— [पु०] अशरीरी। काया-शून्य। देहरहित। निराकार। बिना देह वाला। अजन्मा। राहु नामक ग्रह।

अकार—[पु०] हिन्दी वर्णमाला का पहला अक्षर। 'अ' अक्षर।

अकारण—[पु०] बिना हेतु। प्रयोजन-रहित। बेमतलब। बिना कारण। स्वयम्भू। जिसकी उत्पत्ति कोई उससे भिन्न कारण न हो।

अकारथ—[क्रि० वि०] वृथा। निष्फल। बेकाम। फ़िज़ूल।

अकार्य—[पु०] अकाज। बुरा कार्य। दुष्कर्म। (जूआ, चोरी आदि) बिना काम।

अकाल—[पु०] असमय। कुसमय। अनवसर। बे समय। नियत या उपयुक्त समय से आगे-पीछे। दुष्काल। दुर्भिक्ष।

अकाल कुसुम—[पु०] असमय का फूला हुआ फूल (जो अशुभ माना जाता है)। बेमौसम का फूल। बेसमय की चीज़।

अकाल जलदोदय—[पु०] बेसमय बादलों का होना।

अकालमूर्ति—[स्त्री०] शाश्वत। नित्य। अविनाशी।

अकाल मृत्यु—[स्त्री०] बेसमय का मरना। उचित समय से पहले की मृत्यु। छोटी अवस्था में मरना।

अकालिक—[वि०] असमय का। बिना अवसर का। बेमौके का।

अकाली—[पु०] सिक्खों के एक पंथ के साधु जो नीले रंग के कपड़े पहनते और सिर पर लोहे का चक्र धारण किये रहते हैं।

अकिञ्चन—[वि०] निर्धन। गरीब। कंगाल। जिसके पास कुछ न हो। आवश्यकता से अधिक संचय करने वाला। जिसे कुछ भी कर्मफल भोगने को शेष न रहे हों।

अकिञ्चनता—[स्त्री०] गरीबी।

कंगाली । निर्धनता ।

अकिञ्चिज्ञ—[वि०] कम जानकार । थोड़ा ज्ञान रखनेवाला । मूर्ख । अज्ञ ।

अकिञ्चित्कर—[वि०] काम न करने वाला । अशक्त । असमर्थ । तुच्छ ।

अकिल्विष—[वि०] निष्पाप । पाप-रहित । पवित्र निर्मल । शुद्ध ।

अकीर्ति—[स्त्री०] निंदा । अपयश । बदनामी । अयश । अपवाद ।

अकीर्तिकर—[वि०] बदनामी करने या कराने वाला । अपवाद का कारण । अपयश का हेतु ।

अकुटिल—[वि०] सीधा । सरल । निष्कपट । निश्छल । शुद्ध हृदय का । भोला भाला ।

अकुण्ठ—[वि०] तेज । तीक्ष्ण । न रुकनेवाला । काम में चतुर । खरा । चोखा ।

अकुण्ठित—[वि०] देखो "अकुण्ठ"।

अकुताना—[क्रि०] आकुल होना । ऊबना । परेशान होना ।

अकुतोभय—[वि०] न डरनेवाला । निडर । निर्भीक ।

अकुप्य—[पु०] धन । सोना-चाँदी ।

अकुल—[पु०] नीच कुल । बुरा खान-दान । असद्वंश । [वि०] नीच कुल का । बुरे खानदान का । जिसके कुल में कोई न रहा हो ।

अकुलाना—[क्रि०] विकल या व्या-कुल होना । घबराना । अधीर होना । उतावला होना । मग्न होना । लीन होना ।

अकुलीन—[वि०] बुरे कुल का । नीच कुल का । कमीना ।

अकुशल—[पु०] अहित । अमंगल । अशुभ । अनाड़ी । अनिपुण ।

अकूत—[वि०] असीम । अपरिमित । बे अन्दाज़ । जिसका अनुमान या अन्दाज़ न किया जा सके ।

अकूपार—[पु०] समुद्र । बड़ा कछुआ । सूर्य । पत्थर । चट्टान । दूर पार ।

अकृच्छ्र—[पु०] सुगम । सरल । आसान । जिसमें कष्ट न हो । कष्ट का अभाव ।

अकृत—[वि०] बिना किया हुआ । उलटा किया हुआ । अंड बंड किया हुआ । बिगाड़ा हुआ । नित्य । शाश्वत । स्वयंभू । जो किसी का बनाया हुआ न हो । स्वाभाविक । प्राकृतिक । निकम्मा । बेकाम । कारण । मोक्ष । स्वभाव ।

अकृतज्ञ—[वि०] जो और के किये हुए उपकार को न माने । कृतघ्न । गुन-मेटा । नीच ।

अकृताभ्यागम—[पु०] बिना किये हुए कर्म के फल की प्राप्ति ।

अकृतार्थ—[वि०] जिसका काम पूरा न हुआ हो । जिसका प्रयत्न सफल न हुआ हो । अकृतकार्य । जो काम में दक्ष न हो । अपटु । अकुशल ।

अकृती—[वि०] जो काम में होशियार न हो । अकुशल । जो काम करने योग्य न हो । निकम्मा ।

अकृत्य—[पु०] न करने योग्य काम । अकर्म । दुष्कर्म । बुरा काम । बिना काम ।

अकृप—[वि०] निठुर । निर्दय । कठोर हृदय ।

अकृपा—[स्त्री०] क्रोध । नाराज़ी । कृपा का अभाव । कोप । निष्ठुरता ।

अकेला—[वि०] एकाकी । अद्वितीय । जिसका कोई संगी-साथी न हो । अस-हाय । एकान्त । जनशून्य स्थान ।

अकेले—[क्रि० वि०] बिना सहायक या साथी के । एकमात्र । केवल । सिर्फ । एकाकी ।

अकृत्रिम—[वि०] स्वाभाविक । प्राकृ-तिक । असली । जो बनावटी या दिखा-वटी न हो । सच्चा । हार्दिक । यथार्थ ।

अकृष्टपच्य—[वि०] जो बिना जोते-बोए उत्पन्न हुआ हो । खुदरौ । जंगली ।

अकेतन—[वि०] बिना घर का । जिसका कोई ठौर-ठिकाना न हो । खाना-बदोश । बिना झंडे या निशान का । बिना काम । निकम्मा ।

अकैतव—[पु०] छलछिद्र का अभाव । सीधापन । निष्कपटता ।

अकोविद—[वि०] जो जानकार न हो । मूर्ख । अनाड़ी । अज्ञ ।

अकौटिल्य—[पु०] सिधाई । सर-लता । कुटिलता का अभाव ।

अकौशल—[पु०] चतुराई या दक्षता का अभाव । अनिपुणता । अमंगल ।

अक्का—[स्त्री०] माता । माँ ।

अक्खड़—[वि०] उद्धत । अशिष्ट । उजड्ड । असभ्य । निडर । निर्भय । झग-ड़ालू । किसी की बात न मानने वाला । शुष्क स्वभाव का । खरी कहनेवाला ।

अक्खड़पन—[पु०] उद्धतपन । अशिष्टता । उजड्डता । असभ्यता । निर्भयता । झगड़ालूपन । खरी बात कहने का स्वभाव ।

अक्त—[वि०] संयुक्त । जुड़ा हुआ । फैला हुआ । घिरा हुआ । मिला हुआ । भरा हुआ । व्याप्त । रंगा हुआ । सफल ।

अक्रम—[वि०] जिसका कोई क्रम न हो । अनियमित । बेसिलसिले । बे-तरतीब । उलटा सीधा । अंड बंड । बे-ढंगा । ऊटपटाँग । [पु०] क्रम का न होना । व्यतिक्रम ।

अक्रम संन्यास—[पु०] वह संन्यास जिसे क्रम अर्थात् ब्रह्मचर्य, गृहस्थ और वानप्रस्थ के सिलसिले का उल्लंघन कर के धारण किया हो । वह संन्यास जो

ब्रह्मचर्य के बाद ही अथवा गृहस्थ के अनन्तर ही ग्रहण कर लिया हो।

अक्रमातिशयोक्ति—[स्त्री०] साहित्य में अतिशयोक्ति अलंकार का एक भेद।

अक्रिय—[वि०] जो क्रिया न करे। क्रियाशून्य। अनुद्योगी। निश्चेष्ट। निश्चल। जड़।

अक्रूर—[पु०] यदुकुल में उत्पन्न एक व्यक्ति जो कृष्ण का चचा था। [वि०] कोमल स्वभाव। शान्त प्रकृति। दयालु। सरल। सुशील। जो क्रूर न हो।

अक्रोध—[पु०] क्रोधरहित। शान्त। [वि०] क्रोधशून्य। कोप-रहित।

अक्ल—[स्त्री०] बुद्धि। समझ। ज्ञान। प्रज्ञा।

अक्ल का दुश्मन=नासमझी के काम करने वाला। मूर्ख। बेवकूफ। **अक्ल का पूरा**-कमअक्ल। मूर्ख। **अक्ल का बेच खाना**=समझ से काम न लेना। बेवकूफी का काम करना। **अक्ल का चरने जाना**=बुद्धिशून्यता। समझ का अभाव।

अक्लमन्द—[पु०] बुद्धिमान्। समझदार।

अक्लमन्दी—[स्त्री०] बुद्धिमानी। समझदारी। चतुराई।

अक्लिष्ट—[वि०] जो कठिन न हो। सहल। सुगम। आसान जिसमें कोई कष्ट न हो।

अक्ष—[पु०] आँख। सोलह मासे तोल का बाट। जूआ खेलने का पासा। चौसर। पहिये की धुरी। वह कल्पित रेखा जो पृथ्वी के उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव तक पृथ्वी के भीतरी केन्द्र के ऊपर हो कर आर पार गई है और जिस पर पृथ्वी घूमती है। छकड़ा। गाड़ी। तराजू की डंडी। तूतिया। सुहागा। बहेड़ा। रुद्राक्ष। साँप। गरुड़। वह जो जन्म से अन्धा हो। रावण के एक बेटे का नाम।

अक्षकुमार—[पु०] रावण के एक बेटे का नाम।

अक्षकूट—[पु०] आँख की पुतली।

अक्षक्रीड़ा—[स्त्री०] पासों का खेल। चौसर। चौपड़।

अक्षत—[वि०] बिना टूटा हुआ। साबित। समूचा। जिसमें घाव न हुआ हो। [पु०] बिना टूटा चावल जो देवताओं के पूजन में काम आता है। जौ। चावल। धान का लावा। [स्त्री०] काकड़ासिंगी नामक औषधि।

अक्षतयोनि—[स्त्री०] वह स्त्री जिसका पुरुष के साथ संसर्ग न हुआ हो। कन्या।

अक्षतवीर्य—[पु०] वह पुरुष जिसका वीर्यपात न हुआ हो। ब्रह्मचारी।

अक्षता—[स्त्री०] वह स्त्री जिसका पुरुष से समागम न हुआ हो।

अक्षदर्शक—[पु०] न्यायाधीश। जज। मुन्सिफ्। जुआ खेलनेवाला। ज्वारी।

अक्षदेवी—[वि०] पाँसों से खेलने वाला। ज्वारी।

अक्षधुरा—[स्त्री०] पहिये का अग्र-भाग। पहिये का धुरा।

अक्षपाद—[पु०] गौतम ऋषि का नाम। तर्कशास्त्र का जाननेवाला। तार्किक। नैयायिक।

अक्षबन्ध—[पु०] वह कला या विद्या जिसके द्वारा दर्शकों की आँखों पर जादू कर दिया जाय जिससे वे कुछ का कुछ देखें। नज़रबन्दी।

अक्षम—[वि०] असमर्थ। अशक्त। लाचार। क्षमारहित। असहिष्णु।

अक्षमता—[स्त्री०] असमर्थता। लाचारी। अशक्तता। क्षमा का न होना। असहिष्णुता। डाह। ईर्ष्या।

अक्षमा—[स्त्री०] क्षमा का अभाव। असहिष्णुता। असहनशीलता। ईर्ष्या। कोई काम करने में असमर्थ (स्त्री०)।

अक्षमाला—[स्त्री०] रुद्राक्ष के दानों की माला। जप करने की माला। वशिष्ठ मुनि की पत्नी अरुन्धती। 'अ' से 'क्ष' तककी वर्णमाला।

अक्षय—[पु०] अविनाशी। कभी नष्ट या कम न होनेवाला। कभी समाप्त न होनेवाला। कल्पान्त में भी रहनेवाला। अनश्वर।

अक्षयतृतीया—[स्त्री०] वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया। अखतीज।

अक्षयकुमार—[पु०] देखो "अक्ष-कुमार"।

अक्षयनवमी—[स्त्री०] कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की नवमी। अखैनौमी।

अक्षयवट—[पु०] प्रयाग और गया तीर्थ में स्थित वट के वृक्ष जो पौराणिक मतानुसार प्रलय काल में भी नष्ट नहीं होते।

अक्षय्य—[वि०] अक्षय। सदा रहने-वाला। अविनाशी।

अक्षय्योदक—[पु०] श्राद्ध कार्य में विशेष विधि से ब्राह्मण के हाथ पर डाला जानेवाला जल।

अक्षर—[पु०] जो कभी नष्ट न हो। अविनाशी। ब्रह्म। आकाश। धर्मजल। मोक्ष। तपस्या। अकारादि वर्ण।

अक्षरचण—[पु०] लिखनेवाला। लेखक। कातिब।

अक्षरन्यास—[पु०] लिखना। लेख। लिखावट। तन्त्र ग्रन्थों के अनुसार किसी मन्त्र के एक एक अक्षर को बोलते हुए अंग छूना।

अक्षरपंक्ति—[स्त्री०] एक छन्दविशेष।

अक्षरशः--[क्रि० वि०] एक-एक अक्षर। पूरा। सम्पूर्ण। बिलकुल

अक्षरेखा--[स्त्री०] वह सीधी रेखा जो किसी गेंद सदृश गोल वस्तु के भीतरी केन्द्र पर होती हुई बाहरी परिधि को दोनों ओर स्पर्श करती रहे।

अक्षवाट--[पु०] जूआघर। जूआ खेलने का स्थान। अखाड़ा। कुश्ती लड़ने की जगह।

अक्षसूत्र--[पु०] रुद्राक्ष की माला।

अक्षशौण्ड--[पु०] पक्का जुआरी। जूआ खेलने में सिद्धहस्त।

अक्षहीन--[वि०] नेत्रहीन। अंधा।

अक्षांति--[स्त्री०] क्षमा का अभाव। डाह। जलन। ईर्ष्या।

अक्षांश--[पु०] भूमण्डल पर दोनों ध्रुवों के बीच पृथिवी के स्तर को समान ३६० भागों में बाँटनेवाली ३६० कल्पित रेखाएँ।

अक्षि--[स्त्री०] आँख। नेत्र।

अक्षिगत--[वि०] जो आँखों के सामने आ गया हो। विरोधी। शत्रु।

अक्षिगोलक--[पु०] चेहरे पर के वे गढ़े या छिद्र जिनमें आँखें होती हैं।

अक्षितारा--[स्त्री०] आँख की काली पुतली।

अक्षिपटल--[पु०] आँख का परदा।

अक्षीण--[वि०] कम न होनेवाला। न घटनेवाला। अविनाशी।

अक्षीब--[पु०] जो मतवाला न हो। शान्त। समुद्र का नमक। सहँजने का पेड़।

अक्षुण्ण--[वि०] जो टूटा न हो। अभग्न। अच्छिन्न। समूचा। अकुशल। अनाड़ी।

अक्षेम--[पु०] अशुभ। अमंगल। अकुशल।

अक्षोट--[पु०] अखरोट। एक प्रसिद्ध मेवा या उसका वृक्ष।

अक्षोभ--[पु०] शांति। धैर्य। स्थिरता। गंभीरता। हाथी बाँधने का खंभा।

अक्षौहिणी--[स्त्री०] एक विशेष संख्या की सेना। सेना का एक परिमाण। चतुरंगिणी सेना की एक नियमित संख्या इसमें २१८७० हाथी, २१८७० रथ, ६५६१० घोड़े और १०६३५० पैदल या प्यादे होते हैं।

अक्स--[पु०] छाया। प्रतिबिम्ब। चित्र। तसवीर।

अखण्ड--[वि०] सम्पूर्ण। पूरा। समूचा। समग्र। अविच्छिन्न। लगातार। जो टूटे नहीं। जिसके टुकड़े न हों। बेरोक। निर्विघ्न। जिसके बीच में विराम न लिया जाय।

अखण्डनीय--[वि०] जिसका खण्डन न हो सके। जो काटा न जा सके। युक्तियुक्त। पुष्ट। अकाट्य। जिसके टुकड़े न हो सकें। जिसका प्रतिवाद न किया जा सके।

अखण्डल--[पु०] देखो आखण्डल।

अखण्डित--[वि०] जिसमें खण्ड या टुकड़े न हुए हों। समूचा, पूरा, साबूत। निर्विघ्न। बिना रुकावट। निर्बाध। अविच्छिन्न। लगातार। जिसके बीच में विराम न लिया गया हो।

अखतीज--[स्त्री०] देखो "अक्षय तृतीया"।

अखबार--[पु०] समाचारपत्र। संवादपत्र। वह कागज जिसमें खबरें छपी हों।

अखरना--[क्रि०] अनुचित या बुरा लगना। कष्टदायक होना। खलना।

अखरोट--[पु०] इस नाम का प्रसिद्ध मेवा या उसका वृक्ष

अखर्व--[वि०] जो छोटा या क्षुद्र न हो। बड़ा। लम्बा।

अखाड़ा--[पु०] व्यायाम-शाला। कुश्ती लड़ने का स्थान। वह स्थान या सभा जिसमें किसी एक विषय के जानकार एकत्र हो कर अपना अपना कला-कौशल दिखावें। रंग-मंच। गाने बजाने वालों की मण्डली। किसी एक सम्प्रदाय के साधुओं की जमात या मण्डली।

अखाद्य--[वि०] जो खाने योग्य न हो। अभक्ष्य।

अखिल--[वि०] सब। सम्पूर्ण। समग्र। पूरा। अखण्ड। सर्वाङ्गसहित।

अखीन--[वि०] देखो "अक्षीण"।

अखीर--[पु०] समाप्ति। अन्त। पिछला सिरा। छोर।

अखेद--[पु०] दुःख का अभाव। प्रसन्नता। हर्ष। [वि०] दुःखरहित। प्रसन्न। खुश।

अख्यात--[वि०] अप्रसिद्ध। जो मशहूर न हो। जिसे कोई जानता न हो। अविदित। अज्ञात।

अख्याति--[स्त्री०] अप्रसिद्धि या कुप्रसिद्धि। निन्दा। अपवाद। बदनामी।

अग--[पु०] जो न चले। पहाड़। वृक्ष। सूर्य। अचल। स्थिर। जो टेढ़ा चले। सर्प।

अगज--[वि०] पहाड़ में उत्पन्न होनेवाला। वृक्ष से उत्पन्न होने वाला। [पु०] शिलाजतु नामक प्रसिद्ध औषध। हाथी।

अगड़धत्त--[वि०] हृष्ट-पुष्ट। विशालकाय। लम्बा-तड़ंगा। श्रेष्ठ। ऊँचा।

अगड़ बगड़--[पु०] ऊटपटाँग। निरर्थक। बे काम का। अनुपयोगी। अंड बंड। बे-सिर पैर का काम। वार्तालाप आदि। [वि०] अव्यवस्थित।

बे सिलसिले । क्रमविहीन ।

अगण—[पु०] छन्दःशास्त्र के आठ गणों में से रगण, मगण, तगण और जगण जिनका प्रयोग कुछ विशेष-विशेष स्थानों पर अशुभ माना जाता है । बुरे गण । अशुभ गण ।

अगणनीय—[वि०] गिनती में न लाने योग्य । मामूली । साधारण । तुच्छ । जो गिने न जा सकें । अनगिनत । असंख्य । बेशुमार ।

अगणित—[वि०] बिना गिने हुए । अनगिनती । असंख्य । बेशुमार । बे हिसाब । बहुत ।

अगण्ड—[पु०] बिना शिर और हाथ पैरों का धड़ । कबन्ध ।

अगण्य—[वि०] देखो "अगणनीय" ।

अगति—[स्त्री०] दुर्गति । दुर्दशा । बुरी गति । बन्धन । मोक्ष का अभाव । मृत्यु के पीछे की दुरवस्था । नरक । गति का अभाव । [वि०] निरुपाय । उपायशून्य ।

अगतिक—[वि०] जिस की कहीं भी पहुँच या पैठ न हो । निराश्रय । अशरण । असहाय । अनाथ ।

अगती—[वि०] जो गति अर्थात् मोक्ष का अधिकारी न हो । पापी । दुराचारी । कुकर्मी ।

अगद—[पु०] औषधि । दवा । [वि०] स्वस्थ । नीरोग ।

अगदङ्कार—[पु०] रोगरहित करनेवाला । वैद्य । चिकित्सक । हकीम । औषध । उपचार ।

अगदतन्त्र—[वि०] आयुर्वेद का एक विभाग जिसमें साँप, बिच्छू आदि विषैले प्राणियों के काटे हुओं की चिकित्सा का वर्णन है ।

अगनित—[वि०] देखो "अगणित" ।

अगम—[वि०] जहाँ पहुँच न सकें । दुर्गम । जहाँ कोई जा न सके । बीहड़ । विकट । कठिन । मुश्किल । अप्राप्य । दुर्लभ । अपार । अथाह । बहुत गहरा । कठिनाई से जानने योग्य । दुर्बोध्य ।

अगमनीया—[स्त्री०] गमन (संभोग) न करने योग्य स्त्री । जिसके साथ संभोग वाजत हो । रजस्वला आदि ।

अगमानी—[पु०] नेता । नायक । अगुआ । सरदार । [स्त्री०] देखो "अगवानी" ।

अगम्य—[वि०] न जाने योग्य । जहाँ कोई जा न सके । गहन । कठिन । विकट । अलभ्य । पहुँच से बाहर । ज्ञान से परे । न जानने योग्य । दुर्बोध । बहुत गहरा । अगम ।

अगम्या—[स्त्री०] देखो "अगमनीया" ।

अगर—[अ०] यदि । जो । [पु०] एक वृक्ष जिसकी लकड़ी सुगन्धित होती है । ऊद ।

अगरई—[वि०] अगर वृक्ष की लकड़ी के से रंग का । पीली झलक लिए हुए हलके काले रंग का ऊदा या ऊदी ।

अगरबत्ती—[स्त्री०] अगर की लकड़ी को कूट कर बनाई गई बत्ती जो मन्दिरों और घरों में सुगन्ध फैलाने के लिए जलाई जाती है । ऊद बत्ती ।

अगर सार—[पु०] अगर वृक्ष की लकड़ी ।

अगरा—[वि०] अधिक । ज्यादा । बढ़कर । बढ़िया । श्रेष्ठ । उत्तम ।

अगरु—[पु०] एक सुगन्धित लकड़ी जिसकी धूप बत्तियाँ बनाई जाती हैं । इससे इत्र भी बनाते हैं । अगर । ऊद ।

अगर्व—[वि०] निरभिमान । गर्वरहित । सीधा । सादा । सरल ।

अगल-बगल—[वि०] आस-पास । इधर-उधर । दोनों ओर ।

अगला—[वि०] आगे वाला । आगे का । आनेवाला । आगामी । पुरातन । पहले का । प्राचीन । और । अन्य । दूसरा । [पु०] मुखिया । प्रधान । अगुआ । नेता । चतुर ।

अगले—[पु०] पूर्वज । पुरखा । पुराने लोग ।

अगवाई—[स्त्री०] किसी बड़े आदमी के आने पर उसके स्वागतार्थ उठकर खड़े होना । अभ्युत्थान । अभ्यर्थना । अगवानी ।

अगवाड़ा—[पु०] घर के सामने अर्थात् दरवाजे की ओर का भाग ।

अगवान—[पु०] अगवाई या अगवानी करनेवाला ।

अगवानी—[स्त्री०] स्वागत । अभ्यर्थना । अगवानी । (पु०) नेता । अगुआ । मुखिया । सरदार ।

अगस्त—[पु०] अंग्रेजी वर्ष के एक महीने का नाम जो प्रायः भादों में पड़ता है । देखो "अगस्त्य" ।

अगस्ति—[पु०] देखो "अगस्त्य" ।

अगस्ती—[स्त्री०] अगस्त्य सम्बन्धी दिशा । दक्षिण दिशा ।

अगस्त्य—एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम । कुम्भज नामक मुनि । (पुराणों में लिखा है कि अगस्त्य या कुम्भज ऋषि ने तीन चिल्लू में समस्त समुद्र को पी लिया था ।) एक तारे का नाम जो प्रायः भादों के महीने में दक्षिण दिशा में दिखाई देता है । इस तारे के सम्बन्ध से ही दक्षिण दिशा का "अगस्ती" नाम पड़ा है । इस नाम का एक पेड़ जिसके फूल, पत्ते, छाल आदि दवा के काम में आते हैं ।

अगह—[वि०] जो हाथ में न आ सके । जो वश में न हो सके । चंचल । जिसका वर्णन या विचार न किया जा

जा सके। अग्रह। अचिन्त्य।

अगहन—[पु०] चान्द्र वर्ष के एक महीने का नाम जो कार्तिक के पीछे और पौष के पहले पड़ता है। अग्रहायण। मार्गशीर्ष। मगसिर। हेमन्त ऋतु का पहला महीना। प्राचीन समय में वर्ष का प्रारम्भ इसी महीने से माना जाता था, इसीलिए इसका नाम—('हायन'-अर्थात् वर्ष का 'अग्र'-प्रारम्भ) अग्रहायन है। कहीं कहीं अब भी इसी मास से नये संवत् का प्रारम्भ मानते हैं। [वि०] जो गहन (दुर्गम या घना) न हो।

अगहनिया—[वि०] अगहन में पकने वाले धान आदि अन्न।

अगहनी—[स्त्री०] वह फसल जो अगहन में पक कर तैयार होती है।

अगाऊ—[क्रि० वि०] प्रथम। पेशगी। अग्रिम। समय से पहले।

अगाड़ी—[पु०] घोड़ा बाँधने के वे दो रस्से जो उसके गले में बांध कर इधर-उधर गाड़े हुए दो खूँटों में बाँध दिये जाते हैं। किसी वस्तु के आगे का भाग। किसी काम में आगे रहना या किसी काम को प्रतिपक्षी से पहले करना। युद्ध में सेना का प्रथम आक्रमण। [वि०] सम्मुख। समक्ष। सामने। आगे। पहले। प्रथम। पूर्व। भविष्य में। आगे आने वाले समय में।

अगाध—[वि०] अत्यन्त गहरा। जिसकी थाह न मिले। अथाह। जो समझ में न आवे। दुर्बोध। अति अधिक। बहुत। असीम। अपार। [पु०] छेद या गड्ढा।

अगार—[पु०] घर। गृह। रहने की जगह। निवास-स्थान। राशि। समूह। ढेर।

[क्रि० वि०] आगे। अगाड़ी। प्रथम। पहले।

अगिन—[स्त्री०] अग्नि। आग। एक छोटी चिड़िया जो बहुत मीठा बोलती है। एक प्रकार की घास। [वि०] अगणित। बेशुमार। असंख्य।

अगिनित—[वि०] अगणित। बेशुमार। असंख्य।

अगिया—[स्त्री०] अगिन नामक घास। अग्नि से सम्बन्ध रखनेवाला। यज्ञ में काम आने वाले कुश। पशुओं का एक रोग। उक्त नाम का एक पौधा जो पहाड़ों पर होता है। इसके पत्ते पर रोएँ होते हैं जिनके शरीर के किसी अंग से छू जाने पर उस अंग में जलन होने लगती है।

अगिया कोइलिया—[पु०] विक्रमादित्य की कहानियों में वर्णित दो बेताल (भूत-विशेष) जिनमें एक के मुँह से आग की लपटें निकलती थीं और दूसरा दहकते हुए कोयले बरसाता था।

अगिया बैताल—[पु०] राजा विक्रमादित्य की कहानियों में वर्णित एक कल्पित भूत विशेष जिसके मुँह में से आग की लपटें निकलती बताई जाती हैं। अत्यन्त उग्र स्वभाव वाला। बहुत अधिक क्रोधी।

अगियासन—[पु०] इस नाम से प्रसिद्ध एक कीड़ा। एक प्रकार की घास। फोड़े-फुंसियों की एक बीमारी।

अगुआ—[पु०] आगे चलने वाला। मार्ग बतानेवाला। लीडर। नेता। पथ-प्रदर्शक। मुखिया। प्रधान। सरदार।

अगुआई—[स्त्री०] अगुआपन। लीडरी। नेतागीरी। मुखियागीरी। प्रधानत्व। सरदारी।

अगुण—[वि०] गुणों से रहित। निर्गुण। धर्म या व्यापार से शून्य। अनाड़ी। बेहुनर।

[वि०] दुर्गुण। दोष। अवगुण।

अगुणज्ञ—[वि०] जो गुणों को जानता न हो। जिसे गुणों की परख न हो। मूर्ख। अनाड़ी। गँवार।

अगुणी—[वि०] गुणरहित। मूर्ख। अनाड़ी।

अगुरु—[पु०]अगर नाम से प्रसिद्ध सुगन्धित लकड़ी। ऊद। [वि०] जो भारी न हो। हलका। जिसका कोई गुरु न हो। बिना गुरु का। निगुरा।

अगूढ़—[वि०] जो गूढ़ (गम्भीर या जटिल) न हो। सरल। आसान। स्पष्ट। जो छिपा हुआ न हो। प्रकट।

अगूढ़गन्धा—[स्त्री०] स्पष्ट या उग्र गन्धवाली। हींग।

अगेह—[वि०] जिसका कोई घर न हो। बेघर द्वार का। गृहरहित। बेठौर-ठिकाने। खानाबदोश।

अगोचर—[वि०] जो बाह्य इन्द्रियों द्वारा न जाना जा सके। इन्द्रियों से परे। इन्द्रियातीत। अव्यक्त। अप्रत्यक्ष।

अगोटना—[क्रि०] छाँट लेना। छेकना। अलग कर लेना। घेर लेना। कैद या पहरे में रखना। पसन्द कर लेना। चुन लेना। अपने ज़िम्मे ले लेना। स्वीकार कर लेना।

अगोरना—[क्रि०] छाँट लेना। छेक लेना। चुन लेना। इन्तज़ार करना। प्रतीक्षा करना। देख-भाल रखना। चौकसी रखना।

अगौनी—[स्त्री०] देखो "अगवानी"।

अग्नायी—[स्त्री०] अग्निदेव की स्त्री या पत्नी। स्वाहा।

अग्नि—[स्त्री०] आग। पृथिवी आदि पाँच तत्त्वों में से तेज नामक तत्त्व का प्रत्यक्ष या कार्य रूप। पावक। वह्नि। शरीर के भीतर का पित्त नामक पदार्थ।

चीता या चित्रक नामक ओषधि। तीन की संख्या। स्वर्ण। सोना। भिलावा। नीबू। ऋषिविशेष जिन पर सब से पहले ऋग्वेद का आविर्भाव हुआ था।

अग्निक—[पु०] इन्द्रगोप। बीर बहूटी नाम का कीड़ा।

अग्निकर्म—[पु०] आग का काम। अग्निसंस्कार। शवदाह। मुर्दे को जलाना। अग्निहोत्र। हवन।

अग्निकार्य—[पु०] देखो "अग्नि कर्म"।

अग्निकीट—[पु०] एक कीड़ा-विशेष जिसके सम्बन्ध में कहा जाता है कि वह अग्नि में रहता है।

अग्निकुक्कुट—[पु०] लूका। उल्मुक। जलता हुआ तिनका या घास-फूस का पूला।

अग्निकुमार—[पु०] स्वामी कार्तिक। कार्तिकेय। शरजन्मा। षडानन। षण्मुख। आयुर्वेद में एक सिद्ध रस का नाम।

अग्निकुल—[पु०] क्षत्रियों का एक वंश।

अग्निकेतु—[पु०] रावण की सेना का एक राक्षस। महादेव का एक नाम।

अग्निकोण—[पु०] पूर्व और दक्षिण के बीच की उपदिशा।

अग्निक्रिया—[स्त्री०] देखो "अग्नि कर्म"।

अग्निक्रीड़ा—[स्त्री०] आग का खेल। आतिशबाजी।

अग्निगर्भ—[पु०] सूर्यकान्त मणि। सूर्यमुखी या आतिशी शीशा। शमी वृक्ष। छोंकर का पेड़। [वि०] जिसके भीतर अग्नि हो ऐसी कोई भी वस्तु।

अग्निचित्—[पु०] अग्निहोत्री।

अग्निज—[पु०] अग्नि से उत्पन्न हुआ पदार्थ। सोना। आग उत्पन्न करने वाला। जठराग्नि को तीव्र करने वाला।

अग्निजिह्व—[पु०] देवता।

अग्निजिह्वा—[स्त्री०] अग्नि की जीभें या लपटें। अग्नि देव की—१ काली, २ कराली, ३ मनोजवा, ४ लोहिता, ५ स्फुलिङ्गिनी, ६ धूम्रवर्णा और ७ विश्वरूपा—ये सात जीभें शास्त्रों में लिखी हैं।

अग्निज्वाला—[स्त्री०] अग्नि की लौ या लपटें।

अग्निदाह—[पु०] मुर्दे को आग में जलाना।

अग्नि-दीपक—[वि०] जठराग्नि को उद्दीप्त करने वाला। पाचन-शक्ति बढ़ाने-वाला।

अग्नि-दीपन—[पु०] जठराग्नि की वृद्धि। पाचनशक्ति का बढ़ना या बढ़ाना। पाचन-शक्ति बढ़ाने वाली ओषधि।

अग्नि-परीक्षा—[स्त्री०] कठिन परीक्षा। कड़ी जाँच। प्राचीन प्रथा के अनुसार जलती हुई आग में घुसा कर या गरम की हुई कोई वस्तु शरीर से स्पर्श कराकर किसी व्यक्ति की सदा-चारता या निर्दोषता की परीक्षा करना। सोना या चांदी को आग में तपा कर उसकी विशुद्धता की जाँच करना।

अग्नि पुराण—[पु०] अठारह पुराणों में से एक पुराण का नाम।

अग्नि प्रस्तर—[पु०] आग पैदा करने वाला पत्थर। चकमक पत्थर।

अग्निबाहु—[पु०] धूम। धूआँ।

अग्निभ—[पु०] अग्नि के समान चमकने वाला। सोना। स्वर्ण।

अग्निभू—[पु०] अग्नि में से उत्पन्न होने वाला। देखो "अग्निकुमार"।

अग्नि मन्थ—[पु०] अरणी नामक यन्त्र जिसके द्वारा यज्ञों में अग्नि उत्पन्न की जाती है। अरणी नामक वृक्ष जिसकी सूखी लकड़ियों को परस्पर रगड़ने से बहुत जल्द अग्नि उत्पन्न हो जाती है।

अग्नि मान्द्य—[पु०] एक रोग जिसमें पाचन-शक्ति कम हो जाती है। जठराग्नि की मन्दता या कमी। भूख न लगने की बीमारी।

अग्नि मारुती—[पु०] अगस्त्य या कुम्भज ऋषि का एक नाम।

अग्निमुख—[पु०] देवता। ब्राह्मण। चित्रक या चीता नामक वनस्पति। भिलावें का वृक्ष। आयुर्वेद में एक चूर्ण का नाम।

अग्निरोहिणी—[स्त्री०] एक रोग-विशेष। इस रोग में मनुष्य के शरीर भर में लाल लाल फुंसियाँ हो जाती हैं जिनमें आग से जले के समान दाह होता है।

अग्निवंश—[पु०] देखो "अग्निकुल"।

अग्निवल्लभ—[पु०] साल का पेड़। साखू। साल वृक्ष का गोंद। राल।

अग्निवाण—[पु०] एक प्रकार का अस्त्र जिसके चलाने से आग की वर्षा होने लगे। वह वाण जिसके प्रयोग से लक्ष्य में आग लग जाय।

अग्निविद्—[पु०] अग्निहोत्री।

अग्निवेश—[पु०] एक ऋषि का नाम। ये अग्नि के पुत्र और आयुर्वेद के सर्वप्रथम आचार्य माने जाते हैं।

अग्निशाला—[स्त्री०] वह घर जिसमें अग्निहोत्र करने की अग्नि रहती हो। यज्ञशाला।

अग्निशिख—[पु०] कुङ्कुम। केसर। दीपक। सोना। वाण।

अग्निशिखा—[स्त्री०] अग्नि की ज्वाला या लपट। लौ। करियारी नामक पौधा जिसकी जड़ में विष होता है।

अग्निशुद्धि—[स्त्री०] देखो "अग्नि-परीक्षा"।

अग्निष्टोम—[पु०] एक यज्ञ विशेष।

अग्निष्वात्ता—[पु०] एक प्रकार के पितर। अग्नि या विद्युतसम्बन्धी विज्ञान का जाननेवाला।

अग्निसंकार—[पु०] शव को जलाने के लिए चिता में आग लगाना। दाह-क्रिया। अग्निकर्म। आग जलाना। आग से तपाकर किसी चीज को शुद्ध करना। शुद्धि के लिए अग्नि-स्पर्श कराने की विधि। श्राद्ध में वेदी पर रक्खे हुए पिंडों पर उल्मुक घुमाने की क्रिया।

अग्निसखा-[पु०] वायु। पवन। हवा।

अग्निसहाय—[पु०] जंगली कबूतर। देखो "अग्निसखा"।

अग्निसाक्षिक—[वि०] जिस कार्य में अग्नि को साक्षी बनाया गया हो। अग्नि के सामने किया गया कार्य।

अग्निसात्—[वि०] अग्नि में जलाया हुआ। भस्म किया हुआ।

अग्नि-सेवन-[पु०] आग से तापना।

अग्नि-होत्र—[पु०] मन्त्र-पाठपूर्वक अग्नि में हव्य पदार्थों की आहुति देने की क्रिया। हवन।

अग्नि-होत्री—[पु०] अग्नि-होत्र करनेवाला। अग्निविद्। अग्निचित्।

अग्नीध्र—[पु०] यज्ञ में एक ऋत्विग् जिसका कार्य अग्नि की रक्षा करना होता है। ब्रह्मा का एक नाम।

अग्न्यस्त्र—[पु०] आग से चलनेवाला हथियार–बन्दूक, तोप आदि। वह अस्त्र जिसके प्रयोग से अग्नि उत्पन्न हो जाय। आग्नेयास्त्र।

अग्न्याधान—[पु०] यज्ञ कार्य के लिए विधिपूर्वक अग्नि जलाना। अग्नि-होत्र के लिए कुण्ड या वेदी में अग्नि स्थापन करना।

अग्न्याशय—[पु०] शरीर के भीतर जठराग्नि का स्थान। पक्वाशय। मेदा। शरीर का वह भीतरी भाग जहाँ खाना पहुँचकर हज़म होता है।

अग्न्याहित—[पु०] अग्नि-होत्री। आहिताग्नि। साग्निक। वह व्यक्ति जो शास्त्र-विधि के अनुसार अग्नि-स्थापन करके, उसमें आजीवन अथवा संन्यास ग्रहण करने के समय तक नित्यप्रति यज्ञ करे तथा उस अग्नि को कभी बुझने न दे।

अग्न्युत्पात—[पु०] आकाश से अग्नि आदि की वर्षा होना। धूमकेतु।

अग्न्युपस्थान—[वि०] अग्नि की उपासना। अग्नि की प्रार्थना। उन मन्त्रों का पाठ करना जिनमें अग्नि की प्रशंसा वर्णित हो। अग्नि को समीप लाने का मन्त्र।

अग्यारी—[स्त्री०] अग्नि-होत्र का बिगड़ा हुआ रूप। आग के अंगारों पर सुगन्धित वस्तु डालना। धूप देना। अग्निकार्य। यज्ञ-कुण्ड।

अग्र—[पु०] पहला। प्रथम। प्रधान। मुख्य। ऊपर। सिरा। नोक। श्रेष्ठ। उत्तम। अधिक।
[क्रि० वि०] आगे।

अग्रकाय—[वि०] देह का ऊपरी भाग। शरीर का अग्रभाग।

अग्रग—[वि०] आगे चलनेवाला। आगे जानेवाला।

अग्रगण्य—[वि०] आगे गिनाया जाने योग्य। आगे गिनाया गया। प्रधान। मुखिया। बड़ा। श्रेष्ठ।

अग्रगामी—[पु०] आगे चलनेवाला। अगुआ। नेता। मुखिया। अग्रेसर।

अग्रज—[पु०] जो पहले जन्मा हो। ज्येष्ठ भ्राता। बड़ा भाई। ब्राह्मण। उत्तम। श्रेष्ठ।

अग्रजन्मा—[पु०] पहले उत्पन्न हुआ। बड़ा भाई। ब्राह्मण। ब्रह्मा।

अग्रजाति—[पु०] ब्राह्मण।

अग्रजिह्वा—[स्त्री०] जीभ का अग्रभाग या सिरा। जीभ की नोक।

अग्रणी—[वि०] अगुआ। नेता। स्वामी। मुखिया। प्रधान। श्रेष्ठ।

अग्रत:—[अव्य०] आगे। आगे का हिस्सा। आगे तक। पूर्व भाग।

अग्रत:सर—[वि०] आगे चलनेवाला। आगे जानेवाला। अगुआ। नेता। मुखिया।

अग्रदानी—[पु०] मृत व्यक्ति के नाम पर दिया गया दान लेनेवाला ब्राह्मण। महाब्राह्मण।

अग्रनख—[पु०] नख का अग्र भाग। नाखून की नोक।

अग्रनासिका—[स्त्री०] नाक की नोक।

अग्रबीज—[पु०] वे वृक्ष जिनकी शाखा भूमि में गाड़ देने से ही वृक्ष हो जाता है। वे पेड़ जिनकी कलम लग जाय।

अग्रभाग—[पु०] किसी भी वस्तु का अगला या पहला सिरा। सिरा। छोर। श्राद्धादि में बनाई भोजन सामग्री में से सर्वप्रथम निकाल कर दिया गया भाग।

अग्रभुक्—[वि०] बिना पंचयज्ञ किये खानेवाला। अपना ही पेट भरने वाला।

अग्रभूमि—[स्त्री०] मकान की छत। पटाव।

अग्रमुख—[पु०] मुख का अगला भाग। मुख का सामने का भाग। चेहरा।

अग्रयान—[पु०] सेना का आगे बढ़ना। सेना का धावा बोलना। आक्रमण करना। आक्रमण करती हुई

फ़ौज। [वि०] आगे चलने वाला।

अग्रयायी—[पु०] आगे चलनेवाला। अग्रेसर। अगुआ।

अग्रवर्ती—[वि०] आगे उपस्थित। आगे रहने वाला। अगुआ।

अग्रशोची—[पु०] आगे की बात सोचने वाला। कार्यारम्भ से पूर्व अच्छी तरह सोच-विचार लेने वाला।

अग्रसन्ध्या—[स्त्री०] सन्ध्या से कुछ पहले का समय। पहली सन्ध्या। पूर्व सन्ध्या। प्रातःकाल की सन्धि।

अग्रसर—[पु०] आगे जाने या चलने वाला। मुखिया। अगुआ। नेता। अग्रेसर। आरम्भ करने वाला।

अग्रह—[पु०] अपरिग्रह। स्त्री का न होना। बिना स्त्री वाला, वानप्रस्थ या संन्यासी।

अग्रहर—[पु०] सर्वप्रथम देने योग्य पदार्थ। [वि०] आगे लेनेवाला। दानपात्र। ब्राह्मण।

अग्रहायण—[पु०] हायन (वर्ष) का अग्र-अर्थात् वर्ष का पहला महीना। अगहन। मार्ग शीर्ष। प्राचीनकाल में अगहन से ही वर्ष का प्रारम्भ माना जाता था, चैत से नहीं। दक्षिण भारत में अब भी जहाँ तहाँ यही प्रथा है।

अग्रहायणी—[स्त्री०] मृगशिर नामक नक्षत्र।

अग्रहार—[पु०] राजा की ओर से ब्राह्मणों या ब्रह्मचारियों को दी हुई भूमि।

अग्राशन—[पु०] भोजनार्थ बनाई हुई सामग्री में से देवता, अतिथि आदि के निमित्त सबसे पहले निकाल कर अलग रक्खा हुआ भाग।

अग्राह्य—[वि०] न लेने योग्य। जो ग्रहण करने लायक न हो। न मानने योग्य। त्याज्य। छोड़ने लायक। जिनका दान लेना वर्जित है—सोना, घोड़ा, तैल आदि।

अग्रिम—[पु०] आगे होने वाला–बड़ा भाई। आगे आने वाला। आगामी। अगाऊ। पेशगी। [वि०] प्रधान। उत्तम। श्रेष्ठ।

अग्रि(ग्री)य—[पु०] बड़ा भाई। [वि०] उत्तम। श्रेष्ठ। प्रधान।

अग्रेगा—[वि०] अग्रगामी। आगे चलने वाला।

अग्रेगू—[वि०] आगे चलनेवाला (सेवक)।

अग्रेदिधिषु—[स्त्री०] वह छोटी बहन जिसका विवाह अपनी बड़ी बहन के विवाह से पहले हो गया हो।

अग्रेसर—[वि०] आगे चलने वाला। नेता। अगुआ। प्रधान। श्रेष्ठ।

अग्र्य—[पु०] बड़ा भाई। [वि०] श्रेष्ठ। उत्तम। प्रधान।

अघ—[पु०] पाप। व्यसन। दुःख। अघासुर नाम का राक्षस।

अघट—[वि०] अनहोनी। न होने योग्य। जो कठिनाई से हो। दुर्घट। जो ठीक न हो। अनुपयुक्त। बेमेल। जो घटे नहीं। कम न होने वाली (कोई वस्तु)। अक्षय। एक रस।

अघटित—[वि०] जो घटित न हो सके। न होने योग्य। असम्भव। अनुचित। जो किसी से कम न हो। अनिवार्य। अवश्यंभावी। अमिट।

अघमर्षण—[वि०] पाप नष्ट करने वाला। एक मन्त्र जो सन्ध्योपासन के समय पाप नष्ट करने की कामना से जपा जाता है।

अघात—[पु०] चोट। प्रहार। आघात।

अघाना—[क्रि०] पेट भर जाना। तृप्त होना। सन्तुष्ट होना। तबियत भर जाना। थक जाना। प्रसन्न होना। खुश होना।

अघारि—[पु०] पाप का शत्रु। पाप मिटाने वाला। पापनाशक। श्रीकृष्ण का एक नाम। अघासुर नामक राक्षस को मारने वाला।

अघासुर—[पु०] एक राक्षस जो कंस का सेनापति था और जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।

अघी—[पु०] पापी। पातकी।

अघोर—[पु०] महादेव। शिव। [वि०] जो घोर (भयावना) न हो—सौम्य। शान्त। सुहावना। एक सम्प्रदाय जिसके अनुयायी मल-मूत्रादि से भी घृणा नहीं करते।

अघोरनाथ—[पु०] महादेव। शिव।

अघोरपन्थ—[पु०] एक सम्प्रदाय जिसके मानने वाले अघोरपन्थी या अघोरी कहाते हैं और वे मल-मूत्रादि से भी घृणा नहीं करते। अघोर।

अघोरपन्थी—[पु०] अघोर पंथ को माननेवाला। अघोरी।

अघोरा—[स्त्री०] भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी।

अघोरी—[पु०] अघोरपंथी। अघोर पंथ का अनुयायी। औघड़। सर्वभक्षी। घृणित। घिनौना। भक्ष्याभक्ष्य का विचार न करनेवाला।

अघोष—[पु०] जिसका शब्द न होता हो। जहाँ किसी तरह का शब्द न हो। जो घोष (गोप या अहीर) न हो। व्याकरण में अक्षरों के एक समूह का नाम जिसमें पाँचों वर्गों के पहले-दूसरे अक्षर (क-च-ट-त-प, ख-छ-ठ-थ-फ) और श-ष-स सम्मिलित हैं।

अघौघ—[पु०] पापों का समूह। बहुत से पातक।

अघ्न्य—[पु०] न मारने योग्य। अवध्य। जिसका मारना शास्त्रों में वर्जित है वह (ब्राह्मण, दूत, गौ स्त्री

आदि)। ब्रह्मा।

अघ्रेय—[वि०] न सूँघने योग्य। जिसका सूँघना निषिद्ध हो—मद्य इत्यादि।

अङ्क—[पु०] चिह्न। छाप। दाग़। धब्बा। दिठौना। निशान। नाटक का एक भाग। गोद। क्रोड़। रेखा। अपराध। पाप। दुःख। भूषण। समीप। लेख। लिखावट। भाग्य। संख्या-बोधक चिह्न (१, २, ३ इत्यादि)। नौ की संख्या। देह। शरीर। बार। मर्तबा। पर्वत। चित्र युद्ध।

अङ्ककार—[पु०] युद्ध अथवा किसी खेल की बाज़ी में हार-जीत का निर्णय करने वाला।

अङ्कगणित—[पु०] अङ्कों (१, २, ३ आदि) की विद्या। संख्याओं का विवेचन। अङ्क-विज्ञान।

अङ्कति—[पु०] ब्रह्मा। अग्नि। अग्निहोत्री। वायु।

अङ्कधारण—[पु०] धातु के बने शङ्ख-चक्रादि के छापों को अग्नि में गरम करके शरीर पर दगवाना (यह प्रथा वैष्णवों में प्रचलित है)।

अङ्कन—[पु०] निशान लगाना। लिखना। दाग़ना। निशान लगाने का साधन—मोहर। छाप। मुद्रा। अङ्क डालना।

अङ्कपलई—[स्त्री०] वह विद्या जिसमें अक्षरों के बदले अङ्क निश्चित करके अङ्कों में ही शब्द और वाक्य लिखे जाते हैं।

अङ्कपालि, (ली)—[स्त्री०] दाई। धाय। धात्री। वेदी नामक सुगन्धित द्रव्य। गोद। आलिङ्गन। गले मिलना।

अङ्कपालिका—[स्त्री०] देखो "अङ्कपालि"।

अङ्कमाल—[पु०] गले मिलना। आलिङ्गन। भेंट।

अङ्कमालिका—[स्त्री०] आलिङ्गन। भेंट। गले मिलना। छोटी माला। छोटा हार।

अङ्कविद्या—[स्त्री०] देखो "अङ्कगणित"।

अङ्कावतार—[पु०] नाटक में एक अङ्क समाप्त होने के पश्चात् आगामी अङ्क के अभिनय या कथानक का पात्रों द्वारा संक्षेप में परिचय।

अङ्कित—[वि०] चिह्नित। चिह्न किया गया। लिखा गया। गिना गया।

अङ्कुर—[पु०] भूमि में बोये गये बीज से नया उगने वाला कल्ला। भूमि को फोड़कर निकलने वाला अँखुआ। कली। कोंपल। नोंक। आँख। रुधिर। पानी। रोम। घाव भरते समय उसमें उत्पन्न होने वाले मांस के छोटे-छोटे लाल दाने। अङ्गूर।

अङ्कुरक—[पु०] जो बड़े प्रयत्न से एकत्र किया जाय। पक्षियों का वास-स्थान। घोंसला। खोंता।

अङ्कुरना—[क्रि०] बीज का जमना। अँखुआ उगना।

अङ्कुरित—[वि०] उगा हुआ। जिसमें कल्ला या अँखुआ निकल आया हो।

अङ्कुरित यौवना—[स्त्री०] वह स्त्री जिसके शरीर में यौवन के चिह्न प्रकट होने लगे हों। नवयुवती।

अङ्कुश—[पु०] हाथी को हाँकने का लोहे का बना विशेष प्रकार का शस्त्र। आँकुस। नियन्त्रण। दबाव। रोक। प्रतिबन्ध।

अङ्कुश ग्रह—[पु०] अङ्कुश ग्रहण करने या रखनेवाला। हाथीवान। फीलवान। महावत। हस्तिप।

अङ्कुशदन्ता—[वि०] वह हाथी जिसका एक दाँत सीधा और दूसरा नीचे को टेढ़ा झुका हुआ हो।

अङ्कुश दुर्धर—[पु०] वह हाथी जो अङ्कुश की भी परवाह न करे। मदमत्त हाथी। वह जो कठिनाई से वश में आ सके।

अङ्को (ट) ल—[पु०] एक वृक्ष विशेष जिसके तने पर कील के समान काँटे होते हैं। (इसके फूल पीले सुगन्धयुक्त और फल लाल रंग के होते हैं।) अकोला। ढेरा।

अङ्कोलसार—[पु०] अङ्कोल या अङ्कोट वृक्ष का विष।

अङ्कोलिका—[स्त्री०] आलिङ्गन। गले मिलना। भेंट।

अङ्क्य—[पु०] गोद में रखकर बजाया जानेवाला वाद्य। मृदङ्ग। पखावज। तबला। अङ्कित करने या दागने योग्य—अपराधी आदि। [वि०] चिह्न करने योग्य। निशान लगाने लायक।

अङ्ग—[पु०] शरीर। देह। गात्र। शरीर के अवयव हाथ-पैर इत्यादि। भाग। खण्ड। टुकड़ा। उपाय। सहायक। मित्र। तरफदार। पक्ष। और। नाटकीय भाषा में एक सम्बोधन। प्रिय। प्रियवर। कार्य का साधन। प्रकार। भेद। पार्श्व। तरफ़। बंगाल में भागलपुर के आस-पास का प्रदेशविशेष। छः की संख्या। जन्मलग्न। (व्याकरण में)—प्रकृति। सेनाके—हाथी, घोड़े, रथ और पैदल—चार विभाग। योग के—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा और समाधि—ये आठ विभाग। वेदों के शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष—ये छः अङ्ग। राजनीति के—स्वामी, मन्त्री, मित्र, कोष, राष्ट्र, दुर्ग और सेना—ये सात अङ्ग। नाटक में गौण रस। उलटा। प्रतिकूल।

अप्रधान। गौण।

अङ्ग लगना=खाये हुए पदार्थ का पचकर शरीर को पुष्ट करना। काम में आना। छाती से लगना या गले मिलना।

अङ्ग लगाना=काम में लाना। गले मिलना। आलिङ्गन करना।

अङ्गग्रह—[पु०] शरीर की पीड़ा। गात्रवेदना।

अङ्गज—[पु०] पुत्र। बेटा। बाल। रुधिर। पसीना। काम क्रोधादि मनोविकार। रोग। कामदेव। मद। साहित्य में कायिक अनुभाव। [वि०] शरीर से उत्पन्न होने वाला।

अङ्गजा–[स्त्री०] पुत्री। बेटी। कन्या।

अङ्गड़-खङ्गड़—[वि०] लोहे-लकड़ी आदि का टूटा फूटा सामान। काठ-कबाड़। टूटा फूटा।

अङ्गण—[पु०] आँगन। घर के भीतर का खुला हुआ भाग। चौक। सहन।

अङ्गति—[पु०] ब्रह्मा। विष्णु। अग्निहोत्री।

अङ्गत्राण—[पु०] शरीर की रक्षा रखने वाला। अँगरखा। कुरता। कवच।

अङ्गद—[पु०] बालिनामक वानरराज का बेटा। भुजाओं में पहनने का आभूषण। केयूर। बाजूबन्द। लक्ष्मण जी के एक पुत्र का नाम। [वि०] अङ्गदान करनेवाला।

अङ्गदा—[स्त्री०] दक्षिण दिशा के दिग्गज की हथिनी।

अङ्गदान—[पु०] पीठ देना। पीठ दिखाना। युद्ध में से भागना। शरीर अर्पण करना। शरीर देना (स्त्रियों के रति कार्य से प्रयोजन है)।

अङ्गना—[स्त्री०] विशेष (स्तन आदि) अङ्गों वाली। अच्छे अङ्गों वाली। स्त्रीमात्र। उत्तर दिशा के दिग्गज की हथिनी। ज्योतिष में वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन राशियाँ।

अङ्गनाप्रिय—[पु०] अशोक वृक्ष। (क्यों कि इसके फूल पत्तों से स्त्रियाँ अपने अङ्गों को सुभूषित किया करती हैं)। [वि०] स्त्रियों की कोई भी प्रिय वस्तु।

अङ्गन्यास—[पु०] पूजा के समय तांत्रिक विधि से मन्त्रपाठ करते हुए अङ्गों का स्पर्श करना।

अङ्गपालि(ली)—[पु०] आलिङ्गन।

अङ्गपालिका—[स्त्री०] दाई। धाय। उपमाता। शरीर की रक्षा करने वाली।

अङ्गभङ्ग—[पु०] शरीर के किसी अवयव का खण्डन या नष्ट हो जाना। [वि०] वह जिसका कोई अङ्ग नष्ट हो गया हो। लंगड़ा। लूला।

अङ्गभङ्गी—[स्त्री०] मोहित करने के लिए स्त्रियों की भ्रूविक्षेप आदि चेष्टा। कटाक्ष।

अङ्गभाव—[पु०] नृत्य-गान के समय हाथ, पैर, नेत्र, भौं आदि द्वारा मनोभावों को व्यक्त करना।

अङ्गभू–[पु०] कामदेव। पुत्र। बेटा।

अङ्गभूत–[पु०] कामदेव। पुत्र। बेटा। (वि०) अंग से उत्पन्न होने वाला जो भी। जो किसी चीज़ का मुख्य भाग बन गया हो। अन्तर्गत। भीतर।

अङ्गमर्द—[पु०] हाथ पैर दबाने वाला। मुट्ठीचापी करने वाला। संवाहक। नौकर। शरीर का टूटना। हड़फूटन नामक रोग।

अङ्गमर्दन—[पु०] अङ्गों को दबाना। शरीर की मालिश करना।

अङ्गमर्दी—[पु०] देखो "अङ्गमर्द"।

अङ्गरक्षक—[पु०] शरीर की रक्षा करनेवाला। राजा आदि के साथ उसकी शरीर-रक्षा के लिए विशेष रूप से रहने वाला सेवक। बॉडी गार्ड।

अङ्गरक्ष (क्षि) णी—[स्त्री०] अंगरखी। कवच। सँजोया। सन्नाह।

अङ्गरक्षा—[स्त्री०] देह की हिफ़ाज़त। शरीर का बचाव।

अङ्गराग—[पु०] अङ्गलेप। केसर, चन्दन, कस्तूरी, कपूर आदि सुगन्धित पदार्थों के योग से बना हुआ शरीर पर मलने का उबटन। शरीर की शोभा के लिए पैरों में महावर, हाथों में मेहदी, माथे में बिन्दी, गाल पर तिल आदि लगाना।

अङ्गराज—[पु०] अङ्ग देश का राजा—कर्ण।

अङ्गरुह—[पु०] शरीर पर जमने या उगनेवाला। रोम। बाल। नख।

अङ्गव—[पु०] जो अपने अङ्गों में ही सिकुड़ जाय। सूखा हुआ फल।

अङ्गविकृति—[स्त्री०] मृगी नामक रोग। अपस्मार। मूर्च्छा। अङ्गों का विकार—कानापन, लँगड़ापन आदि।

अङ्ग-विक्षेप—[पु०] नृत्यादि के समय भाव-प्रकाशन के लिए मुँह, आँख, भौं, हाथ आदि मटकाना। अङ्गों का हिलाना। नाचना। मटकना। कला खाना। नाट्य करना।

अङ्ग-विद्या—[स्त्री०] शरीर के अङ्ग-प्रत्यङ्गों तथा हस्तरेखादि देखकर जीवन की शुभाशुभ घटनाओं को बताने की कला। सामुद्रिक विद्या।

अङ्गशैथिल्य—[पु०] थकावट। अंगों का ढीलापन।

अङ्गशोष—[पु०] एक रोगविशेष जिसमें शरीर सूख जाता है। सूखा रोग।

अङ्ग-सिहरी—[स्त्री०] ठंड लगने या जूड़ी आने के समय देह का काँपना। कँप-कँपी। कम्प।

अङ्ग-सङ्ग—[पु०] सम्भोग। मैथुन।

अङ्ग-संस्कार—[पु०] देह की सजावट। उबटन मलकर स्नान करना। केसर, चन्दन आदि लगाना।

अङ्गहार--[पु०] अङ्गों का हिलाना। बात-चीत करते समय भाव-प्रदर्शन के लिए आँख, अँगुली, हाथ आदि का चलाना। शरीर का मटकाना। नाचना। अङ्ग-विक्षेप।

अङ्गहीन--[वि०] जिसका कोई अङ्ग कम हो। लँगड़ा, लूला, काना आदि। अङ्गरहित। [पु०] बिना देह वाला। कामदेव। अतनु।

अङ्गा--[पु०] पहनने का वस्त्रविशेष जो गले से घुटनों तक नीचा होता है। अँगरखा। झगा। एक प्रकार की मोटी रोटी जो बिना तवे के अङ्गारों पर ही सेक ली जाती है।

अङ्गाकड़ी--[स्त्री०] अङ्गारों पर सेकी गई मोटी और छोटी रोटी। बाटी। अगरैया।

अङ्गाङ्गि भाव--[पु०] अङ्ग और अङ्गों का परस्पर सम्बन्ध। गौण और मुख्य अथवा अंश और पूर्ण का अनिवार्य सम्बन्ध। बड़े-छोटे का भाव। साहित्य में एक अलङ्कार का नाम।

अङ्गाधिप--[पु०] अङ्ग देश का स्वामी-राजा कर्ण। अङ्गों (देह के अवयवों) का स्वामी।

अङ्गार--[पु०] वह आग जिसमें न धूआँ निकलता हो और न लौ। दहकता हुआ कोयला या उपला। लाल रंग। मंगल नामक ग्रह।

अङ्गारे उगलना=कड़ी या अप्रिय बातें कहना।

अङ्गारों पर पैर रखना--अपने आप को संकट में डालना। जानते बूझते हानिकारक काम करना। इतराकर चलना।

अङ्गारों पर लोटना=अत्यधिक क्रोध प्रकट करना। डाह अथवा ईर्ष्या से जलना।

अङ्गारक--[पु०] भाँगरा व भृंगराज। अंगारा। चिनगारी। मङ्गल नामक ग्रह। लाल रङ्ग।

अङ्गारकमणि--[पु०] मूँगा। प्रवाल।

अङ्गारधानिका--[स्त्री०] अँगीठी। सिकड़ी। बरोसी।

अङ्गारपाचित--[पु०] अङ्गारों पर पकाया हुआ भोजन। बाटी। अङ्गा, नानखताई, कबाब आदि।

अङ्गारपुष्प--[पु०] अँगारे के समान लाल फूलों वाला एक वृक्ष। हिंगोट का पेड़। इंगुदी वृक्ष।

अङ्गारमञ्जरी--[स्त्री०] करञ्ज अथवा कञ्जा का वृक्ष जिसकी मञ्जरी लाल रंग की होती है।

अङ्गारमणि--[पु०] देखो "अङ्गारकमणि"।

अङ्गारमति--[स्त्री०] राजा कर्ण की स्त्री का नाम।

अङ्गारवल्ली--[स्त्री०] गुञ्जा। घुँघुची। चौंटनी। चिरमिटी की बेल।

अङ्गारशकटी--[स्त्री०] अङ्गारधानिका। सिकड़ी। अँगीठी।

अङ्गारा--[पु०] देखो "अङ्गार"।

अङ्गारिका--[स्त्री०] अँगीठी। बरोसी। सिकड़ी।

अङ्गारिणी--[स्त्री०] अँगीठी। बरोसी। सिकड़ी। अंगारशकटी।

अङ्गारित--[पु०] वृक्ष जिसमें लाल रंग की नयी कोंपलें निकल आई हों। [वि०] जला हुआ।

अङ्गारी--[स्त्री०] छोटा अंगारा। चिनगारी। अँगीठी। बाटी।

अङ्गिका--[स्त्री०] अँगिया। चोली। कञ्चुकि।

अङ्गिरस्--[पु०]एक ऋषि--इन्हें ब्रह्मा के मुख से उत्पन्न हुआ और देवताओं का पुरोहित बताया जाता है। साठ संवत्सरों में से एक संवत्सर का नाम। बृहस्पति। देवगुरु। कतीरा नामक गोंद।

अङ्गिरा--[पु०] देखो "अङ्गिरस्"।

अङ्गी--[पु०] अङ्गवाला। अवयवी। देहधारी। अंशी। समष्टि। पूर्ण। प्रधान। मुख्य। नाटक का मुख्य रस। नाटक का प्रधान नायक। चौदह विद्याएँ।

अङ्गीकार--[पु०] स्वीकार। कबूल। मंजूर।

अङ्गीकृत--[वि०] स्वीकृत। अपनाया हुआ। ग्रहण किया हुआ। माना हुआ। लिया हुआ। मंजूर।

अङ्गीकृति--[स्त्री०] मञ्जूरी। स्वीकृति।

अङ्गुर--[पु०] देखो "अङ्गुल"।

अङ्गुरि (री)--[स्त्री०] उँगली।

अङ्गुरीय--[पु०] उँगली का भूषण। अँगूठी। मुँदरी।

अङ्गुरीयक--[पु०] देखो "अंगुरीय"।

अङ्गुल--[पु०] लम्बाई का एक नाप जो आठ यवों (जौ) की मोटाई के बराबर होता है। वात्स्यायन मुनि। अँगूठा।

अङ्गुलि तोरण--[पु०] त्रिपुण्ड्र। उंगलियों द्वारा माथे पर लगाया गया चन्दनादि का अर्ध चन्द्राकार तिलक।

अङ्गुलित्र--[पु०] बाण चलाते समय उँगलियों की रक्षा के निमित्त पहना जाने वाला गोह-चर्म का दस्ताना। लोहे आदि की छोटी टोपी जिसे दर्जी कपड़ा सीते समय अँगुली की पोर में पहनते हैं।

अङ्गुलित्राण--[पु०] देखो "अंगुलित्र"।

अङ्गुलि पञ्चक--[पु०] :पाँचो उँगलियाँ। पञ्जा।

अङ्गुलिपर्व--[पु०] उँगलियों के पोर। रेखाओं द्वारा पृथक् किये गये

उँगलियों के हिस्से।

अङ्गुलिमुद्रा—[स्त्री०] वह अँगूठी जिसमें उसके पहनने वाले का नाम खुदा हो। मुहर लगाने के लिए नामांकित अँगूठी।

अङ्गुलि-सन्देश—[पु०] उँगली के शब्दद्वारा संकेत करना। चुटकी बजा कर इशारा करना।

अङ्गुलिसम्भूत—[पु०] उँगली में उत्पन्न होने वाला नख। नाखून। नँह।

अङ्गुली—[स्त्री०] उँगली। हाथी की सूड़ की नोक।

अङ्गुल्यादेश—[पु०] उँगली के संकेत से मनोभाव सूचित करना। उँगली बजा या उठा कर इशारा करना। संकेत। इशारा।

अङ्गुलि-निर्देश—[पु०] उँगली उठाना। दोष लगाना। लांच्छन। बदनामी। कलङ्क।

अङ्गुश्तनुमाई—[स्त्री०] बदनामी करना। लांच्छन या कलङ्क लगाना। दोषारोपण करना। उँगली उठाना।

अङ्गुश्तरी—[स्त्री०] मुंदरी। अँगूठी। मुद्रिका।

अङ्गुश्ताना—[पु०] दर्जियों के पहनने की टोपी के आकार की अँगूठी। अँगूठे में पहनने की मुंदरी। आरसी।

अङ्गुष्ठ—[पु०] अँगूठा। हाथ या पैर की सब से मोटी उँगली।

अङ्गुष्ठ मात्र—[वि०] अँगूठा-भर। अँगूठे के बराबर।

अङ्गुष्ठाना-[पु०] देखो "अङ्गुलित्र"।

अङ्गूर—[पु०] द्राक्षा। दाख। इस नाम से प्रसिद्ध एक मीठा और स्वादिष्ठ फल। उक्त फल की लता। घाव भरते समय उसमें उत्पन्न होनेवाले मांस के लाल लाल अङ्कुर। अँकुआ। अङ्कुर। कल्ला।

अङ्गूरी—[वि०] अङ्गूर से बना हुआ आसव आदि। अङ्गूर के रंग का। हलके हरे रंग का जिसमें कुछ पीली झलक मारती हो।

अङ्गूष—[पु०] नकुल। नेवला। बाण। तीर।

अङ्गेजना—[क्रि०] ऊपर लेना। सहना। देखो "अँगेजना"।

अङ्घस—[पु०] पाप। दुष्कर्म। अपराध।

अङ्घारि—[वि०] चमकदार। चमकीला। दीप्तिवान्।

अङ्घ्रि—[पु०] पांव। चरण। पैर। वृक्ष की जड़।

अङ्घ्रिप—[पु०] वृक्ष। पेड़।

अङ्घ्रिपान—[पु०] पैर का अँगूठा चूसने वाला। छोटा बालक। शिशु।

अङ्घ्रिस्कन्ध—[पु०] पैर की एँड़ी।

अचक—[वि०] धीरे से। चुपचाप। सावधानी से।

अचकन—[पु०] एक विशेष प्रकार का अंगरखा या कोट।

अचका—[स्त्री०]

अचक्का—[पु०]

अचक्र—[वि०] बिना पहिये का। गति या व्यापारशून्य।

अचक्षुस्—[वि०] बिना आँखों वाला। अन्धा। नेत्रहीन।

अचण्डी—[स्त्री०] शान्त स्वभाव की गौ। सीधी सादी। क्रोध न करने वाली स्त्री।

अचपल—[वि०] जो चंचल न हो। धीर। शान्त। गम्भीर। अत्यन्त चंचल। उतावला।

अचर—[वि०] जो चले नहीं। ठहरा हुआ। अचल। स्थिर। स्थावर। जड़। पहाड़, सूर्य आदि।

अचरज—[पु०] आश्चर्य। अचम्भा। विस्मय।

अचल—[पु०] पर्वत। पहाड़। ब्रह्म। [वि०] जो चले या हिले नहीं। स्थिर। ठहरा हुआ। दृढ़। ध्रुव। चिरस्थायी। अविनाशी। शाश्वत। स्थावर। जड़।

अचलकन्यका—[स्त्री०] पुत्री। लड़की। तनया। सुता। दुहिता। हिमालय पर्वत की पुत्री। पार्वती।

अचल कीला—[स्त्री०] पृथिवी।

अचलजात—[वि०] पहाड़ से उत्पन्न हुई कोई वस्तु।

अचलत्विष्—[पु०] स्थिर कान्तिवाला। कोयल नामक पक्षी। [वि०] जिसकी शोभा कभी नष्ट न हो, वह।

अचलद्विष्—[पु०] अचलों (पहाड़ों) का शत्रु। पर्वतों के पंख काटनेवाला। इन्द्र।

अचलधृति—[स्त्री०] छन्द-शास्त्र में एक वर्णवृत्त का नाम। गीत्यार्या। इसके प्रत्येक चरण में सोलह वर्ण होते हैं।

अचलपति—[पु०] पहाड़ों का स्वामी। गिरिराज हिमालय।

अचलभ्राता—[पु०] एक बौद्ध गणाधिप का नाम।

अचला—[स्त्री०] जो चले नहीं। ठहरी हुई। स्थिर। पृथ्वीका एक नाम।

अचला सप्तमी—[स्त्री०] आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की सप्तमी। माघ शुक्ला सप्तमी।

अचवन—[स्त्री०] आचमन करना। भोजन के पश्चात् हाथ मुँह धोकर कुल्ला करना। जल पीना।

अचानक—[वि०] सहसा। अकस्मात्। यकायक।

अचानचक—[वि०] देखो "अचानक"।

अचार—[पु०] मसालों के साथ नीबू के रस, तेल या सिरके में किसी कन्द, मूल या फल को डालकर बनाया गया एक प्रकार का व्यञ्जन । आचार । चिरौंजी का वृक्ष ।

अचारी—[स्त्री०] कच्चे आम की छिली हुई और नमक में सिझाई गई फाँकें । अचार का एक भेद ।

अचित्—[पु०] जो चेतन न हो, जड़ । प्रकृति ।

अचिन्तनीय—[पु०] जो विचारा न जा सके । जो ध्यान में न आ सके । अज्ञेय । दुर्बोध । ब्रह्म ।

अचिन्तित—[वि०] जिसके सम्बन्ध में कुछ विचार न किया गया हो । बिना सोचा हुआ । जिसका कुछ ध्यान भी न हो । अचानक घटित होने वाला । सहसा सम्भूत । आशातीत ।

अचिन्त्य—[वि०] जिसका विचार न हो सके । जो ध्यान में न आ सके । अज्ञेय । कल्पनातीत । आकस्मिक । ब्रह्म । आशा से अधिक । अतुल ।

अचिर—[पु०] थोड़ा समय । शीघ्र । जल्दी ।

अचिरद्युति—[स्त्री०] जिसकी चमक थोड़ी देर रहे । बिजली । विद्युत् ।

अचिरप्रभा—[स्त्री०] अचिरद्युति । विद्युत् । बिजली ।

अचिरांशु—[स्त्री०] जिसकी किरणें थोड़ी देर रहें । अचिरप्रभा । विद्युत् । बिजली ।

अचिरात्—[अव्य०] जल्दी । शीघ्र । अविलम्ब ।

अचिराभा—[स्त्री०]देखो "अचिरप्रभा"।

अचूक—[वि०] न चूकने वाला । अवश्य फल देने वाला । ठीक निशाने पर लगने वाला । पक्का । अमोघ । निर्भ्रान्त । [क्रि० वि०] अवश्य । निश्चय । चतुराई से । सफाई के साथ ।

अचेत—[वि०] चेतनारहित । मूर्छित । बेसुध । बेहोश । विकल । व्याकुल । अनजान । बेखबर । मूर्ख । नासमझ । मूढ़ । जड़ । संज्ञाशून्य ।

अचेतन—[वि०] चेतनारहित । मूर्छित । संज्ञाहीन । बेसमझ । जड़ ।

अचेतस्—[वि०] विचार-शून्य । दुष्ट चित्त वाला ।

अचैतन्य-[पु०] ज्ञानशून्य । चेतनारहित । अनात्मा । जड़ । प्रकृति ।

अचैन—[पु०] चैन या सुख का अभाव । दुःख । अशान्ति । विकलता । बेचैनी ।

अच्छ—[अव्य०] सम्मुख । अभिमुख । सामने । [वि०] स्वच्छ । साफ़ । निर्मल । [पु०] रीछ ।

अच्छत—[पु०] अक्षत । बिना टूटे हुए चावल ।

अच्छत्र—[पु०] वह देश जहाँ कोई राजा या शासक न हो । अराजक देश ।

अच्छन्दस्—[वि०] जिसे वेद पढ़ने का अधिकार न हो । वेदाधिकारशून्य । शूद्र । बिना छन्द का ।

अच्छ भल्ल—[पु०] रीछ । भालू ।

अच्छा—[अव्य०] किसी के निवेदन को स्वीकार करने के समय कहा जानेवाला स्वीकृतिसूचक शब्द । [वि०] सुन्दर । भला । उत्तम । बढ़िया । रुचिकर । स्वस्थ । नीरोग ।

अच्छे आये=ठीक अवसर पर आये । उपयुक्त समय पर आए । (व्यंग्य में) आए नहीं ।

अच्छाई—[स्त्री०] अच्छा होने का भाव । उत्तमता । भलाई । अच्छापन ।

अच्छापन—[पु०] अच्छाई । उत्तमता । भलाई ।

अच्छिद्र-[वि०] जिसमें छिद्र (दोष) न हो । दोषरहित । निर्दोष । जिस में कोई भूल-चूक या कमी न हो । भूल या दोष का अभाव ।

अच्छोद—[वि०] निर्मल जल वाला जलाशय । एक सरोवर का नाम, जिस का वर्णन कादम्बरी की कहानी में आता है ।

अच्छोटन—[पु०] मृगया । शिकार । आहेर । आखेट ।

अच्छोहिनी-[स्त्री०]देखो 'अक्षौहिणी'।

अच्युत—[पु०] विष्णु । पीपल । कृष्ण का नाम । [वि०] जो गिरा न हो, अचल । स्थिर । अविनाशी । नित्य । अटल ।

अच्युताग्रज—[पु०] विष्णु का भाई इन्द्र । कृष्ण का बड़ा भाई बलराम ।

अच्युताङ्गज—[पु०] अच्युत (विष्णु या कृष्ण) के शरीर से उत्पन्न हुआ । कामदेव । कृष्ण और रुक्मिणी का पुत्र ।

अच्युतात्मज—[पु०] देखो "अच्युताङ्गज" ।

अच्युतानन्द—[वि०] जिसका आनन्द अविनाशी या शाश्वत हो । नित्यानन्द । सर्वदानन्द । [पु०] ईश्वर । परमात्मा ।

अच्युतावास—[पु०] अच्युत का निवासस्थान । वट वृक्ष । बड़ । अश्वत्थ । पीपल । मथुरा-वृन्दावन धाम । क्षीरसमुद्र ।

अछत—[क्रि० वि०] रहते हुए । मौजूदगी में । उपस्थिति में । सामने । अतिरिक्त । सिवा । [वि०] अविद्यमान । अनुपस्थित ।

अछताना पछताना—[क्रि०] पश्चात्ताप करना ।

अछय—[वि०] कभी कम या नष्ट न होनेवाला । सदा भरा-पूरा रहने वाला ।

अक्षय।

अछाम—[वि०] जो दुबला-पतला न हो। मोटा-ताजा। हृष्ट-पुष्ट। अक्षाम।

अछूत—[वि०] अस्पृष्ट। जो व्यवहार में न लाया गया हो। जिसे छुआ भी न हो। टटका। ताजा। नया। कोरा। वह जिसे अपवित्र मान कर कोई छुए नहीं। अस्पृश्य। न छूने योग्य।

अछूता—[वि०] जो व्यवहार में न लाया गया हो। जिसे छुआ भी न गया हो। अस्पृष्ट। नया। कोरा। ताजा।

अछेद्य—[वि०] जिसके टुकड़े न हो सकें। अखंड्य। अभेद्य। अविनाशी। ईश्वर।

अछेद्य—[वि०] जिसका छेदन या भेदन न हो सके। अभेद्य। अविनाशी। ईश्वर।

अछोट—[वि०] जो छोटा या कम न हो। बड़ा। भरपूर।

अछोभ—[वि०] देखो "अक्षोभ"।

अछोह—[पु०] साहस। धैर्य। हिम्मत। गम्भीरता। अनाकुलता।

अज—[पु०] जिसका जन्म नहीं होता वह। स्वयम्भू। ब्रह्मा। विष्णु। शिव। जीवात्मा। ईश्वर। बकरा। मेढ़ा। ज्योतिष में मेष राशि। सूर्यवंशीय एक राजा का नाम जो दशरथ के पिता थे। कामदेव।

अजकर्ण—[पु०] एक वृक्षविशेष, जिसके पत्ते बकरे के कान जैसे होते हैं।

अजकव—[पु०] शिवजी का धनुष। पिनाक। अजगव।

अजकाव—[पु०] देखो "अजकव"।

अजक्षीर—[पु०] बकरी का दूध।

अजग—[पु०] विष्णु। अग्नि।

अजगन्धा—[स्त्री०] जिसकी गन्ध बकरे की जैसी हो। अजमोद नामक औषधि।

अजगर—[पु०] बहुत बड़ी जाति का साँप जो अपने मोटापे के कारण बड़ी कठिनाई से चल फिर सकता है। इसके सम्बन्ध में प्रसिद्ध है कि यह बकरे को भी निगल जाता है तथा अपने स्थान पर पड़े-पड़े जो इसके पास आ जाता है, उसे ही खा लेता है।

अजगरी—[स्त्री०] स्त्री जाति का अजगर साँप। अजगर के समान एक स्थान पर पड़े रहने की वृत्ति। अजगर की भाँति बिना हाथ-पैर हिलाए की जीविका।

अजगव—[पु०] महादेव जी का धनुष। पिनाक। अजकव।

अजगुत—[पु०] अयुक्त। अनुचित। असंगत। आश्चर्यजनक।

अजघन्य—[वि०] जो नीच, निन्दित या पतित न हो। अच्छा। उत्तम।

अजजीविक—[वि०] जो बकरियों द्वारा अपनी जीविका चलाता हो। गड़रिया। बकरे पालनेवाला।

अजड़—[वि०] चेतन। जो जड़ न हो।

अजथ्या—[स्त्री०] बकरों का झुण्ड। बकरियों का खेड़।

अजदण्डी—[स्त्री०] ब्रह्मदण्डी नामक बूटी।

अजदहा—[पु०] अजगर नामक सर्प।

अजन—[वि०] जो जन्म धारण न करे। स्वयम्भू। अनादि। नित्य। जनशून्य स्थान। सुनसान। निर्जन।

अजननि—[वि०] जिसकी माता न हो। जिसका जन्म न हो।

अजनबी—[वि०] अपरिचित। बिना जाना हुआ। अज्ञात। अनजाना।

अजन्म—[वि०] जो जन्म धारण न करे। अनादि। नित्य।

अजन्मा—[वि०] देखो "अजन्म"।

अजन्य—[पु०] दैवी उत्पात जिससे भावी अनिष्ट की सूचना मिले, जैसे—तारों का टूटना, धूमकेतु का उदय इत्यादि।

अजप—[पु०] जो अच्छी तरह न पढ़ सके। बुरे ढंग से पढ़नेवाला। बकरियाँ पालनेवाला।

अजपा—[वि०] जिसके जप के लिए कोई विशेष यत्न न किया जाय। जिसका जप आप ही आप होता हो। हंस अथवा सोहं मन्त्र का जप जो श्वास-प्रश्वास के साथ आप ही आप होता रहता है।

अजपाद—[पु०] जिसके पैर बकरी के पैरों जैसे हों। पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र। ग्यारह रुद्रों में से एक का नाम।

अजपाल—[पु०] बकरियाँ पालनेवाला। गड़रिया।

अजब—[वि०] विचित्र। विलक्षण। अद्भुत। अभूतपूर्व। अनोखा।

अजभक्ष—[पु०] बकरे या बकरी का भोजन। बाबुई नामक वनस्पति जिसे बकरी-बकरे बड़े चाव से खाते हैं।

अजमाना—[क्रि०] परखना। परीक्षा करना। जाँचना।

अजमीढ—[पु०] एक प्रदेश या प्रान्त का नाम। अजमेर नगर के आस-पास के प्रान्त का प्राचीन नाम।

अजमोद—[पु०] जिसमें बकरे की सी गन्ध आती हो वह (अजवायन की जाति की एक दवा)।

अजमोदा—[स्त्री०] अजवायन।

अजम्भ—[वि०] जिसके दाँत न हों। बिना दाँतोंवाला [पु०] मेंढक, दादुर, मण्डूक (इनके दाँत नहीं होते)।

अजय—[पु०] एक नदविशेष का नाम जो वीरभूमि नामक नगर के पास बहता है। जिसकी जय अर्थात् जीत न हो। पराजय। हार। बकरे पर चढ़कर चलने वाला—अग्नि। (अग्नि का वाहन बकरा माना गया है) षट्पदी छन्द का एक भेद। [स्त्री०] भाँग। विजया।

सिद्धि। दुर्गा के एक सहायक का नाम। [वि०] जो जीता न जा सके। अजेय।

अजया—[स्त्री०] विजया। भाँग। सिद्धि। जो जीती न जा सके।

अजय्य-[वि०] जिसे जीता न जा सके। अजेय। अजय।

अजर—[पु०] देव। निर्जर। बुढ़ापे से रहित। जो कभी बूढ़ा न हो। जरा रहित। सदा एक सा रहने वाला। [वि०] जो जीर्ण न हो अथवा पचे नहीं। हजम न होने वाला।

अजरा—[स्त्री०] घीक्वार या ग्वारपाठा नामक वनस्पति। जरा अर्थात् बुढ़ापे से रहित। बुढ़ापे का अभाव।

अजर्य—[पु०] मित्रता। दोस्ती।

अजलोमा—[पु०] शूकशिम्बी नामक वृक्ष, जिसकी मञ्जरी (फूल) बकरी के बालों जैसी होती है।

अजवायन—[स्त्री०] अजमोदा। एक पदार्थ जो मसाले और दवा के काम में आता है।

अजवीथी—[स्त्री०] आकाश में पुल के समान दिखाई देनेवाला नीहारिका-पुञ्ज। आकाश-गंगा। छाया-पथ। पितृ-मार्ग।

अजशृंगी—[स्त्री०] मेंढ़ासिंगी नामक दवा। एक वृक्ष जिसके फल मेंढ़ा के सींग जैसे होते हैं।

अजस—[पु०] अयश। निन्दा।

अजसी—[वि०] अयशी। निन्दित। बदनाम।

अजस्र-[क्रि० वि०] लगातार। निरन्तर। सदा। सतत।

अजहत्स्वार्था—[स्त्री०] साहित्य में लक्षणा नामक शक्ति का एक भेद। शब्द की वह शक्ति जो वाच्यार्थ को न छोड़ती हुई दूसरे अर्थ को भी प्रकट करे।

अजहल्लिंग—[पु०] नियत लिङ्ग वाला। जो अन्य लिंग वाले विशेष्य के साथ जुड़ कर भी अपने निश्चित लिंग को न छोड़े।

अजा—[स्त्री०] न जन्मने वाली। जिसका जन्म न हुआ हो। प्रकृति। माया। बकरी।

अजागर—[पु०] भीमराज या भृंगराज नामक बूटी। इसके सेवन करने से नींद नहीं आती। इसको भुजागर भी कहते हैं।

अजाजी—[स्त्री०] जीरा। जीरक।

अजात—[वि०] जिसका जन्म न हुआ हो, अजन्मा।

अजातककुद्—[पु०] वह बैल जिसके ककुद (टाँट या डिल्ला) पूर्ण रूप से भरे न हों। छोटी उम्र का बैल। बछड़ा।

अजातशत्रु—[पु०] जो संसार में उत्पन्न किसी से भी वैर न रखता हो। जिसका कोई शत्रु उत्पन्न ही न हुआ हो। युधिष्ठिर। मगध देश के राजा बिम्बसार के एक पुत्र का नाम। काशी के एक प्राचीन राजा का नाम (इसका वर्णन उपनिषदों में है)। शिवजी।

अजाति—[वि०] अजन्मा। जन्मशून्य। जातिरहित। उत्पन्न न होना।

अजाती—[वि०] जाति बहिष्कृत।

अजान—[वि०] अज्ञ। अबोध। जो जानकार न हो। अनजान। अपरिचित।

अजानपन-[पु०] अज्ञान। नासमझी।

अजानि—[पु०] बिना स्त्री वाला। (कुमार या विधुर)।

अजानेय—[पु०] उत्तम जाति का घोड़ा। वह घोड़ा जो शस्त्रास्त्रों के आघात सह कर भी अपने आरोही को उपयुक्त स्थान पर ले पहुँचे।

अजामिल—[पु०] एक पापी ब्राह्मण का नाम। इसकी कथा पुराणों में आती है।

अजायब—[पु०] "अजब" का बहुवचन।

अजायबघर—[पु०] वह घर जहाँ बहुत सी अद्भुत वस्तुएँ संगृहीत हों।

अजि-[पु०] द्रुतगामी। तेज चलने वाला।

अजित—[वि०] जो जीता न गया हो। अजय। [पु०] शिव, विष्णु और बुद्ध।

अजितेन्द्रिय-[वि०] जो अपनी इन्द्रियों को जीत न सके। जिसकी इन्द्रियाँ उसके वश में न हों। इन्द्रियलोलुप।

अजिन—[पु०] खाल। चर्म। चमड़ा।

अजिनपत्रा-[स्त्री०] चिमगादड़ नामक पक्षी, (इसके पंख चमड़े के होते हैं। इसे 'अजिनपत्रिका' भी कहते हैं)।

अजिनयोनि-[स्त्री०] चमड़े का उत्पत्ति स्थान अर्थात् प्रत्येक पशु। मृगमात्र।

अजिर [पु०] मकान के अन्दर का खुला हुआ भाग। आँगन। चौक। मकान के आगे का चबूतरा या चौतरा।

अजिह्म—[वि०] जो टेढ़ा-मेढ़ा न हो। सरल। सीधा। सच्चा। जो कुटिल न हो।

अजिह्मग—[वि०] जो टेढ़ा न चले। सीधा चलने वाला।

अजिह्व—[वि०] जिसके जीभ न हो। बिना जीभ वाला। कोई भी प्राणी। [पु०] मेंढक। मण्डूक।

अजी—[अव्य०] संबोधन का शब्द। अयि, हे।

अजीब—[वि०] विचित्र। अद्भुत। अजब।

अजीर्ण—[पु०] एक प्रकार का आमाशय का रोग जिसमें खाया हुआ भोजन पचता नहीं। बदहजमी। अपच। [वि०] जो जीर्ण अर्थात् पुराना न हो।

अजीव—[वि०] जीवरहित। बिना प्राण का। निर्जीव। मृत। मुर्दा। [पु०] जो जीव अर्थात् चेतन न हो, अचेतन। ज

अजीवनि—[स्त्री०] न जीवे, मर जाय इत्यादि वचन कहना। आक्रोश। कोसना। मरण। मौत।

अजेय—[वि०] जो जीता न जा सके।

अजैकपाद—[पु०] महादेव जी का एक नाम। पूर्वा भाद्रपद नामक नक्षत्र।

अज्ञ—[वि०] जो कुछ भी न जाने। ज्ञान-रहित। मूर्ख। जड़। अल्प ज्ञान रखने-वाला। कमसमझ।

अज्ञता—[स्त्री०] नादानी। नासमझी। मूर्खता।

अज्ञात—[वि०] अनजाना। अपरिचित। अविदित। अप्रकट। छिपा हुआ।

अज्ञातनामा—[वि०] जिसका कोई नाम भी न जानता हो। अप्रसिद्ध। अविख्यात। मामूली।

अज्ञातवास—[पु०] इस प्रकार का निवास जिसमें कोई जान न सके। छिप-कर निवास करना।

अज्ञातयौवना—[स्त्री०] साहित्य में नायिकाओं का एक भेद। वह मुग्धा नायिका जिसे अपने शरीर में होनेवाले यौवन-विकास का ज्ञान भी न हो।

अज्ञान—[पु०] ज्ञान का अभाव या ज्ञान का उलटा। अबोध। मूर्खता। जड़ता। अविवेक। [वि०] मूर्ख। नासमझ। ज्ञानशून्य।

अज्ञानी—[पु०] ज्ञान-शून्य। मूर्ख। नासमझ।

अज्ञेय—[वि०] जो जानने में न आवे। ज्ञानातीत।

अञ्चल—[पु०] वस्त्र का सिरा। पल्ला। छोर। आँचल। किसी देश अथवा पहाड़ आदि का सीमा प्रदेश। किनारा। तट।

अञ्चित-[वि०] पूजा गया। सिकोड़ा हुआ।

अञ्चितभ्रू—[स्त्री०] सुन्दर भौंहोंवाली। टेढ़ी भौंहोंवाली।

अञ्ज—[पु०] कमल। कमल का फूल।

अञ्जन—[पु०] काजल। सुरमा जो आँखों में आँजा जाता है। कालोंछ। स्याही। मैला करना। प्रकाश करना। जाना। मिलाना। उत्तर दिशा के हाथी का नाम।

अञ्जनकेश—[पु०] दीपक। चिराग।

अञ्जनकेशी—[स्त्री०] काजल जैसे काले बालोंवाली। जिसके लगाने से बाल काले हो जावें। एक सुगन्धित द्रव्य जिसे नख या हट्टविलासिनी भी कहते हैं।

अञ्जनशलाका—[स्त्री०] काजल-सुरमा लगाने की सलाई।

अञ्जनसार—[वि०] जिसके काजल लगा हो।

अञ्जनहारी—[स्त्री०] एक फुड़िया जो आँख के पलक में होती है। गुहेरी। गुहाञ्जनी।

अञ्जना—[स्त्री०] हनुमान् जी की माता का नाम। गुहेरी। उत्तर दिशा की हथिनी। [पु०] एक प्रकार का धान।

अञ्जनानन्दन—[पु०] अञ्जना का पुत्र, हनुमान्।

अञ्जनावती—[स्त्री०] ईशान कोण की हथिनी।

अञ्जनी—[स्त्री०] हनुमान् की माता अञ्जना। गुहेरी कुटकी नामक ओषधि। वह स्त्री जिसके शरीर में केसर-कपूर आदि सुगन्धित द्रव्य लगे हों।

अञ्जर-पञ्जर—[पु०] शरीर की हड्डियों का ढांचा। ठठरी। अंगों के जोड़, बन्द।

अञ्जलि—[स्त्री०] दोनों हथेलियों को परस्पर मिलाकर बनाई गयी हाथों की मुद्रा। जोड़े हुए हाथ। दोनों हाथों के कन्नी उंगली की ओर के पार्श्वों को मिलाकर बना हुआ कटोरा-सा गड्ढा। उतनी वस्तु जो एक अञ्जलि में आवे। सोलह तोले या एक पाव भर की माप।

अञ्जलिकारिका—[स्त्री०] अञ्जलि बनाना। हाथ जोड़ना। लजवन्ती या छुई मुई की बेल जो छूने से अपने पत्तों को सिकोड़ लेती है। मानो हाथ जोड़ती है।

अञ्जलिगत—[वि०] हाथों में रक्खा हुआ। अञ्जलि में आया हुआ।

अञ्जलिपुट—[पु०] दोनों हाथों को मिलाकर बनाया हुआ स्थान जिसमें पानी या अन्य वस्तु भर सकें। अञ्जलि।

अञ्जलिबद्ध—[वि०] हाथ जोड़े हुए।

अञ्जली—[स्त्री०] देखो "अञ्जलि"।

अञ्जस्—[पु०] वेग। तेजी। शक्ति। सीधा। सरल।

अञ्जसा—[अव्य०] शीघ्र। जल्दी। वेग से। ठीक-ठीक।

अञ्जाम—[पु०] अन्त। समाप्ति। पूर्ति। परिणाम। नतीजा।

अञ्जित—[वि०] काजल या सुरमा लगाए हुए।

अञ्जीर—[पु०] एक प्रसिद्ध फल।

अटक—[स्त्री०] प्रतिबन्ध। रुकावट। अड़चन। हिचकिचाहट। संकोच। सिन्ध नदी।

अटकना—[क्रि०] झगड़ना। छेड़ना। रुकना। ठहरना। फँसना। हिचकना।

अटकल—[स्त्री०] कल्पना। अनुमान। अन्दाज़।

अटकलपच्चू—[पु०] निराधार कल्पना। मोटा अन्दाज़। ऊटपटाँग।

अटका—[पु०] वह भात या धन जो जगन्नाथ जी को भेंट चढ़ाया गया हो।

अटकाना-[क्रि०] रोकना। उलझाना। फँसाना।

अटकाव-[पु०] रोक। प्रतिबन्ध। विघ्न।

अटन--[क्रि०] घूमना। भ्रमण करना।

अटना--[क्रि०] देखो "अटन"।

अटनि(नी)--[स्त्री०] धनुष पर डोरी बाँधने का स्थान। प्रत्यंचा चढ़ाने की जगह। धनुष्कोटि। कमान के सिरे।

अटपट-[वि०] दुर्गम। कठिन। जटिल।

ऊटपटाँग । बेप्रसंग । बेसिलसिले । गड़बड़ । अस्तव्यस्त ।

अटपटी--[वि०] जटिल । कठिन । बेप्रसंग । गड़बड़ । अस्तव्यस्त ।

अटब्बर--[पु०] ढोंग । आडम्बर । परिवार । कुटुम्ब के लोग ।

अटरनी--[पु०] वकील । बैरिस्टर ।

अटल--[वि०] न टलने वाला । अवश्यं-भावी । असन्दिग्ध । निश्चित । ध्रुव । अचल । नित्य । शाश्वत ।

अटवि (वी)--[स्त्री०] वन । जंगल । विपिन । अरण्य । कानन ।

अटा--[पु०] घर की ऊपरी मंज़िल पर बना कमरा । अट्टा । अटारी । ढेर । राशि ।

अटाट्या--[स्त्री०] निरर्थक घूमना । अवारा फिरना । निरुद्देश्य भ्रमण करना ।

अटारी--[स्त्री०] चौबारा । अट्टा ।

अटाल--[पु०] बुर्ज । स्तूप । धौरहरा ।

अटाला--[पु०] ढेर । समूह । असबाब । सामान । वह मुहल्ला जिसमें कसाई रहते हों ।

अटूट--[वि०] अक्षय । अविच्छेद्य । अखण्ड । पक्का । पुष्ट । जो कभी न टूटे ।

अटेरन--[पु०] लकड़ी का बना एक यन्त्र जिस पर सूत की अटियाँ बनाई जाती हैं । ऐना ।

अटेरना--[क्रि०] अटेरन द्वारा सूत की अटिया बनाना ।

अट्ट--[पु०] अटारी । अधिकता । ढेर ।

अट्ट-सट्ट--[पु०] ऊट-पटांग बातें या चीजें । व्यर्थ । अनाप-शनाप ।

अट्टहास--[पु०] बहुत ज़ोर की हँसी । खिलखिलाकर या ठहाका मारकर हँसना ।

अट्टहासक--[पु०] कुन्द नामक वृक्ष (इसकी कलियाँ हँसते समय दिखाई देनेवाले दाँतों जैसी होती हैं) ।

अट्टालक--[पु०] अट्टा । अटारी । चौबारा ।

अट्टालिका--[स्त्री०] राज-भवन । ऊँचा महल या मन्दिर । प्रासाद । एक नगर का नाम ।

अट्टी--[स्त्री०] सूत या ऊन की अटिया । लच्छी ।

अठकोना--[पु०] जिसमें आठ कोने हों ।

अठकौशल--[स्त्री०] सलाह । गुप्त मन्त्रणा । गोष्ठी । पंचायत ।

अठखेली--[स्त्री०] छेड़-छाड़ । चुल-बुला-पन । चंचलता । चपलता । खेल-विनोद ।

अठपहलू--[वि०] कोई वस्तु जिसमें आठ पहलू (पार्श्व) हों ।

अठमासी--[स्त्री०] एक सोने का सिक्का जो तौल में आठ माशेभर होता है । गिन्नी ।

अठवारा--[पु०] आठ दिन का समय । सप्ताह या हफ्ता ।

अठिलाना--[क्रि०] देखो "इठलाना" ।

अडिग--[वि०] अविचल । अचल । स्थिर । न डिगनेवाला ।

अडोल--[वि०] अविचल । अटल । स्थिर । जो हिले डुले नहीं ।

अड्डा--[पु०] कोई चीज़ बुनने का यन्त्र । कबूतरों के बैठने की छतरी । पालतू पक्षियों के बैठने के लिए बाँधी गई लकड़ी अथवा लोहे की छड़ । ठहरने की जगह । एकत्र होने का स्थान । मुख्य स्थान । केन्द्र ।

अड़--[पु०] हठ । दुराग्रह ।

अड़ंगा--[पु०] विघ्न । बाधा । रुकावट ।

अड़चन--[स्त्री०] कठिनाई । दिक्कत । आपत्ति । विघ्न ।

अड़ना--[क्रि०] हठ या दुराग्रह करना । रुक जाना ।

अड़बंगा-[पु०] विघ्न । बाधा । रुकावट । अड़ंगा । वह मोटी लकड़ी जो किवाड़ें बन्द करने के पश्चात् उन के पीछे दोनों ओर की दीवारों में तिरछी लगा दी जाती है, जिससे किवाड़ें खुल न सकें ।

अड़ान--[स्त्री०] रोक । रुकावट । थूनी । अटकाव । पड़ाव । ठहरने की जगह ।

अड़ाना--[क्रि०] उलझाना । फँसाना । अटकाना ।

अड़ियल--[वि०] अड़ जानेवाला । चलते-चलते रुक जाने वाला । हठी । जिद्दी । दुराग्रही ।

अड़ी--[स्त्री०] अटकाव । उलझन । अत्यन्त ज़रूरत का मौका ।

अड़ूसा--[पु०] बाँसा । एक पौधा जो दवा में काम आता है ।

अड़ोस-पड़ोस--[पु०] आस-पास । समीप । इधर-उधर ।

अड़ोसी-पड़ोसी--[पु०] आस-पास रहने वाले । समीप-निवासी ।

अणि--[वि०] धुरी या हल के फाल का अग्रभाग । सूई अथवा बाण आदि की नोंक । अनी ।

अणिमा-[स्त्री०] योग की आठ सिद्धियों में से पहली जिसके प्राप्त हो जाने पर सिद्ध लोग अत्यन्त लघु रूप धारण कर सकते हैं । छोटापन । लघुता ।

अणीयान्--[वि०] अत्यन्त छोटा । बहुत थोड़ा ।

अणु--[वि०] बहुत छोटा कण । अति सूक्ष्म । परमाणु और द्वयणुक के बीच का द्रव्य । अत्यल्प परिमाण ।

अणुक-[वि०] बहुत छोटा कण । जर्रा । बहुत थोड़ी मात्रा ।

अणुमा--[स्त्री०] जिसकी चमक बहुत कम देर ठहरे । बिजली । विद्युत् ।

अणुमात्रिक-[वि०] बहुत सूक्ष्म । अत्यंत छोटा ।

अणु रेणु--[पु०] अति सूक्ष्म । धूलि-कण । रजकण । जर्रा ।

अणुवाद--[पु०] दार्शनिकों का वह सिद्धांत जिसमें आत्मा को अणु माना गया है ।

अणुवादी—[पु०] जो अणुवाद को मानता हो।

अणुवीक्षण—[पु०] सूक्ष्म दर्शन। बारीकी से देखना। सूक्ष्म दर्शक यन्त्र।

अण्टा—[पु०] बड़ी गोली, अफीम या भाँग की गोली। दाव। अवसर।

अण्टा गुड़गुड़—[वि०] नशे में धुत्त। ज्ञानशून्य। बेखबर। अचेत। बेहोश।

अण्टाचित्त—[क्रि० वि०] चित्त। उतान। पीठ के बल। नशे में चूर।

अण्टी—[स्त्री०] कमर के आस-पास धोती की वह लपेटन जो उस के दो सिरों को ऊपर तले मिला कर लपेटी जाती है। नीवी।

अण्ड—[पु०] पक्षियों का अण्डा। कस्तूरी का नाफ़ा। मृगनाभि। वीर्य। कामदेव। अण्डकोश।

अण्डकटाह—[पु०] विश्व। ब्रह्माण्ड।

अण्डकोश—[पु०]फोता। वृषण। फल। फल का छिलका। सीमा। हद।

अण्डज [पु०] अण्डे से उत्पन्न होने वाले जीव।

अण्डजा—[स्त्री०] कस्तूरी।

अण्ड-बण्ड—[वि०] ऊटपटांग। बे-सिलसिले। असम्बद्ध। अनाप-शनाप। व्यर्थ।

अण्डवृद्धि—[स्त्री०] एक रोग जिसमें फ़ोते बढ़ जाते हैं।

अण्डस—[स्त्री०] दिक़्क़त। कठिनाई। अड़चन। असुविधा।

अण्डा—[पु०] देखो "अण्ड"।

अण्डाकार—[वि०] अण्डे के आकार का। बैज़ावी। कुछ लम्बाई लिए हुए गोल।

अण्डाकृति—[वि०] अण्डे के-से आकार वाला। अण्डे की शक्ल का। अण्डे का आकार। अण्डे की शक्ल।

अण्डालु—[पु०] मत्स्य। मछली।

अण्डी—[स्त्री०] एरण्ड या रेंड़ी के बीज। एक प्रकार का रेशमी वस्त्र जो रेंड़ी के पेड़ों पर पाले गये कीड़ों से उत्पन्न हुए रेशम द्वारा बनाया जाता है।

अण्डीर—[पु०] जिसमें पुरुषार्थ हो वह। पुरुष। समर्थ। शक्तिशाली। शक्ति। पुरुषार्थ।

अतएव—[अव्य०] इस कारण। इसलिए।

अतट—[वि०] जिसका किनारा न हो। पर्वत का उच्च स्थान।

अतथा—[अव्य०] वैसा नहीं।

अतथ्य—[वि०] झूठ। मिथ्या।

अतदर्ह—[अव्य०] जो उचित रीति से न हो। अनुचित रूप से। अन्याय से। अयोग्य साधनों से।

अतद्गुण—[पु०] साहित्य में एक अलङ्कार का नाम।

अतनु—[पु०] कामदेव। अनङ्ग। [वि०] बिना शरीर वाला कोई भी। बिना देह का। मोटा। स्थूल।

अतन्त्र—[वि०] स्वतन्त्र। स्वाधीन। नियम-बन्धन से परे। बिना ताँत या तार का बाजा।

अतन्द्र—[वि०] सतर्क। सावधान। चुस्त-चालाक। काम करने वाला।

अतन्द्रिक—[वि०] निरालस्य। चुस्त। चुलबुला। विकल। बेचैन।

अतन्द्रित—[वि०] आलस्यरहित। तन्द्रा-शून्य। चुस्त। चालाक। उद्योगी। हिम्मत वाला।

अतमस्—[वि०] चमकदार।

अतर—[पु०] इत्र। सुगन्धित द्रव्यों की सुगन्ध का सार।

अतरदान—[पु०] इत्र रखने का पात्र।

अतरुण—[वि०] जो जवान न हो, बूढ़ा या बालक।

अतर्कित—[वि०] अचानक। आकस्मिक। जिसकी सम्भावना न हो। जिसका कोई ख़याल भी न हो।

अतर्क्य—[वि०] अचिन्त्य। अनिर्वचनीय। जिस के सम्बन्ध में तर्क-वितर्क न किया जा सके।

अतल—[पु०] सात पातालों में से पहले का नाम। [वि०] जिसका तल (पेंदा न हो। बेपेंदे का।

अतलस—[स्त्री०] एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा।

अतलस्पर्श—[वि०] जिसके पेंदे का स्पर्श न किया जा सके। अत्यन्त गहरा। अथाह। अगाध।

अतलस्पर्शी—[वि०] जो अतल को छूता हो। अतल तक पहुँचा हुआ। अति गम्भीर। अत्यन्त गहरा। अथाह। अगाध।

अतसी—[स्त्री०] अलसी। तीसी।

अताई—[वि०] किसी काम को बिना बाक़ायदा सीखे हुए करने वाला। प्रत्येक काम में प्रवीण। दक्ष। चतुर। चालाक।

अति—[अव्य०] बहुत। अधिक। ऊपर लाँघना। पार कर जाना। [स्त्री०] अधि-कता। ज़्यादती।

अतिकथ—[वि०] विश्वास न करने लायक। अश्रद्धेय। न कहने योग्य।

अतिकाय—[वि०] विशालकाय। स्थूल। मोटा।

अतिकाल—[पु०] देर। विलम्ब। अस-मय। कुसमय।

अतिकृच्छ्र—[पु०] अत्यन्त कठिन। भारी कष्ट। स्मृति ग्रंथों में वर्णित एक व्रत।

अतिकृति—[स्त्री०] साहित्य में एक छन्द का नाम।

अतिक्रम—[पु०] लाँघ जाना। नियम का तोड़ना। मर्य्यादा का उल्लंघन। तिक-ड़म। अपना कर्तव्य भूल जाना।

अतिक्रमण—[पु०] उल्लंघन कर जाना। आगे बढ़ जाना। सीमा से बाहर हो जाना।

अतिक्रान्त--[वि०] सीमा से बाहर गया हुआ। बीता हुआ। व्यतीत।

अतिग--[वि०] लाँघ गया। बाहर हो गया

अतिगण्ड--[पु०] जिसके गण्डस्थल साधारण से अधिक बढ़ गए हों। बड़े गालों वाला। ज्योतिष में एक योग का नाम।

अतिगन्ध--[वि०] उत्कट गन्ध वाला। [पु०] चम्पा का वृक्ष।

अतिचार--[पु०] बहुत चलना। शीघ्र चलना। लाँघ कर चले जाना। ज्योतिष में ग्रहों की वह चाल जिसमें कि एक राशि का भोगकाल पूरा किए बिना ही दूसरी राशि पर पहुँच जाते हैं।

अतिचारी--[वि०] अति शीघ्र चलने वाला। अतिक्रमण करके जाने वाला। लाँघ जाने वाला। बहुत चलने वाला।

अतिच्छत्र--[वि०] छत्र का अतिक्रमण कर जाने वाला। एक पौधा जिसके फूल-पत्तों का आकार छत्र के समान होता है।

अतिजगती--[स्त्री०] एक छन्द का नाम जिसके प्रत्येक चरण में जगती छन्द से एक एक अक्षर अधिक होता है। जगती के प्रत्येक चरण में १२ और अति जगती में १३ होते हैं। [वि०] वह जो संसार का उल्लंघन कर जाय।

अतिजव--[वि०] अत्यन्त तेज़ चलने वाला। बहुत वेग वाला।

अतिजागर--[वि०] बहुत जागने वाला। [पु०] एक पक्षी विशेष जिस के सम्बन्ध में प्रसिद्ध है कि वह कभी नहीं सोता।

अतितराम्-[अ०] बहुत। अत्यधिक।

अतितीक्ष्ण--[पु०] सहजना नामक वृक्ष। मिर्च। [वि०] अत्यन्त तेज।

अतिथि--[पु०] अभ्यागत। अचानक किसी के घर आया हुआ मेहमान अथवा कोई अपरिचित व्यक्ति। वह संन्यासी जो एक रात से अधिक कहीं नहीं ठहरता। रामचन्द्र जी का नाती जो कुश का पुत्र था।

अतिथि-पूजा--[स्त्री०] अतिथि का सेवा-सत्कार। मेहमानदारी।

अतिथि-यज्ञ--[पु०] पंच महायज्ञों में से एक। अभ्यागत का सत्कार। अतिथि-पूजा।

अतिथि-सपर्या--[स्त्री०] देखो "अतिथि-पूजा"।

अतिदान--[पु०] बहुत अधिक देना।

अतिदिष्ट--[वि०] अति देश किया हुआ।

अतिदेव--[पु०] बड़ा देवता। विष्णु। शिव।

अतिदेश--[पु०] वह नियम जो एक कार्य के लिए बनाया गया हो। परन्तु अन्य कार्यों में भी काम आवे। एक स्थान के नियम या धर्म का दूसरे स्थान पर भी लागू कर देना।

अतिधन्वा-[पु०] जिसका धनुष साधारण धनुषों का अतिक्रमण कर गया हो अर्थात् बहुत बड़े या विशेष प्रकार के धनुष वाला। [वि०] वह जो मरुस्थल को लाँघ गया हो।

अतिधृति-[वि०] वह जिसका धैर्य जाता रहा हो। जो अधीर हो गया हो। [स्त्री०] वह छन्द जिसके चरण में धृति छन्द के चरण से एक अक्षर अधिक हो। उन्नीस अक्षरों के चरणों वाला एक छन्द।

अतिनाभ-[पु०] हिरण्याक्ष के नौ पुत्रों में से एक का नाम।

अतिनु (नौ)--[पु०] जो नाव को भी अतिक्रमण कर गया हो। नाव की परवाह न करके बेड़ा-तमेड़ आदि के द्वारा ही पार उतर जानेवाला।

अतिपतन--[पु०] नाश। बरबादी। हानि। गड़बड़ी। अत्यय। अव्यवस्था।

अतिपत्ति--[स्त्री०] सवारों या सेना में से निकला हुआ। किसी बात का सिद्ध न होना।

अतिपत्र--[वि०] वह वृक्ष जिसके पत्ते बहुत बड़े हों। हस्तिकन्द नामक वृक्ष जिसके पत्ते बहुत बड़े होते हैं।

अतिपन्थ--[पु०] सन्मार्ग। सत्पथ। अच्छा रास्ता।

अतिपात--[पु०] देखो "अतिपतन"।

अतिपातक--[पु०] जो पातकों को अतिक्रमण कर गया हो। बड़ा भारी पाप। महापातक। [वि०] जिसके पातक नष्ट हो गए हों। पुण्यशाली। धर्मात्मा।

अतिप्रगे-[अव्य०]बहुत तड़के का समय।

अतिप्रश्न--[पु०] मर्यादा को लाँघकर किया गया प्रश्न। उत्तरदाता को परेशान करने के लिए किसी प्रश्न के उत्तर को ही प्रश्न का रूप देते जाना। ऊट-पटाँग प्रश्न। बेढंगा प्रश्न। अति कठिन प्रश्न जिसका उत्तर न दिया जा सके।

अतिप्रसक्ति--[स्त्री०] किसी काम में अत्यधिक लिप्त हो जाना।

अतिप्रसङ्ग-[वि०]प्रसंग को उल्लंघन कर जाना। वह जो प्रसंग छोड़कर इधर-उधर बहक जाय।

अतिबल--[वि०]प्रबल। प्रचण्ड। अति बलवान्। बड़ा बल। विशाल सेना।

अतिबला--[स्त्री०] वह शस्त्रास्त्र-विद्या जो विश्वामित्र ने लक्ष्मण को सिखाई थी। एक बूटी जिसके सेवन से बल की वृद्धि होती। खरेटी। अत्यन्त बलवती।

अतिमङ्गल्य--[पु०] अधिक मंगल (शुभ) करनेवाला। बिल्व नामक वृक्ष। [वि०] अत्यधिक मंगल करनेवाली कोई भी वस्तु।

अतिमात्र--[वि०] मात्रा को लांघ जानेवाला। मात्रा से अधिक। अतिशय।

ब ँत । ज्यादा ।

अतिमानुष—[वि०] वह काम जो मनुष्य की शक्ति से बाहर हो । अमानुषिक कार्य ।

अतिमित–[वि०] अपरिमित । निस्सीम । अतुल । बेअन्दाज़ । बेपरिणाम । बहुत । अधिक ।

अतिमुक्त–[वि०] अत्यन्त विस्तारवाला । वह जिसका फैलाव अधिक हो । माधवीलता । मोती से भी अधिक सफेद । जिसका मोक्ष हो गया हो । निर्वाण पद-प्राप्त । वीतराग । विषय । वासनारहित ।

अतिमृत्यु–[पु०] मोक्ष। मुक्ति । निर्वाण ।

अतियोग—[पु०] अत्यधिक मिलाव । किसी मिश्रित वस्तु में किसी एक द्रव्य की मात्रा से अधिक मिलावट ।

अतिरञ्जन–[पु०] किसी बात को बहुत बढ़ाकर कहना ।

अतिरञ्जना—[स्त्री०] किसी बात को बहुत बढ़ा कर कहने की रीति । अत्युक्ति।

अतिरञ्जित—[वि०] बहुत बढ़ा चढ़ा कर कहा हुआ । अत्युक्तिपूर्ण ।

अतिरथ—[पु०] जो अकेला ही बहुतों के साथ युद्ध कर सके । महारथी की अपेक्षा अधिक पराक्रमी । विशेष योद्धा।

अतिरथी—[पु०] देखो "अतिरथ"।

अतिरसा–[स्त्री०]बहुत रसवाली। रास्ना नामक औषधि ।

अतिरात्र—[पु०] यज्ञविशेष । चाक्षुष मनु के एक पुत्र का नाम । [वि०] वह जो रात्रि को अतिक्रमण कर गया हो ।

अतिरिक्त–[वि०] भिन्न। सिवा। अलावा। न्यारा । अलग । जुदा ।

अतिरूक्ष—[वि०] बहुत रूखा। स्नेह-शून्य । जिसमें चिकनाई का अत्यन्त अभाव हो। काँगनी। बाजरा आदि अन्न जो अत्यन्त रूखे होते हैं ।

अतिरेक—[पु०] आधिक्य । ज्यादती । बहुतायत । भेद। बड़ा। बहुत । अतिशय।

अतिरोग—[पु०] अधिक रोग । बड़ा रोग । क्षय । राजयक्ष्मा ।

अतिरोमश–[पु०] जंगली बकरा (जिसके बहुत बड़े बड़े बाल होते हैं) । [वि०] वह जिसके बहुत बड़े बाल हों । अत्यधिक रोएँ वाला ।

अतिवक्ता--[वि०] अधिक बोलनेवाला। वाचाल । बात चीत करने में कुशल ।

अतिवर्णाश्रमी—[पु०] जो चारों वर्णों और चारों आश्रमों का अतिक्रमण कर गया हो । पंचमाश्रमी । पूर्ण ज्ञानी ।

अतिवर्ती--[पु०] नियमों का उल्लंघन करनेवाला । व्यवस्था को तोड़नेवाला ।

अतिवर्तुल--[वि०] बहुत गोल । सब ओर से गोल ।

अतिवाद–[पु०] अप्रिय या कड़वी बात। खरी बात । अत्युक्ति । बात को बढ़ाकर कहना । शेखी या डींग मारना ।

अतिवादी--[पु०] सच या खरी बात कहनेवाला । कठोर या कड़वी बात कहनेवाला । डींग मारनेवाला । बात को बढ़ाचढ़ाकर कहनेवाला ।

अतिवाहिक-[पु०]पाताल में रहनेवाला। लिङ्ग शरीर ।

अतिवाहित--[पु०] बिताया हुआ । गुजारा हुआ । पाताल निवासी । सूक्ष्म शरीर ।

अतिविकट—[वि०] अति भयानक । [पु०] मस्त या दुष्ट हाथी ।

अतिविषा–[स्त्री०] विष को दूर करनेवाली एक औषधि । अतीस ।

अतिवृष्टि--[स्त्री०] अत्यधिक वर्षा । इतनी वर्षा जिसके कारण खेती नष्ट हो जाय ।

अतिवृंहित–[वि०] पुष्ट । मजबूत । दृढ़ ।

अतिवेल–[वि०] मर्यादारहित । असीम । बेहद । जो समय का उल्लंघन कर गया हो । जो समुद्र के किनारे को लाँघ गया हो । निर्लज्ज ।

अतिवेला--[स्त्री०] अत्यन्त विलम्ब । बहुत देर ।

अतिव्याप्ति—[स्त्री०] अधिक विस्तृत हो जाना । ज्यादा फैल जाना । न्यायशास्त्र में लक्षण का एक दोष । किसी वस्तु का लक्षण यदि अन्य वस्तु पर भी लागू हो जाय तो उस लक्षण में अतिव्याप्ति दोष होता है, जैसे गाय का लक्षण किया जाय कि जिसके सींग हों, वह गाय होती है तो यह 'शृंगत्व' गाय का लक्षण भैंस, हरिण आदि पर भी लागू हो जाता है, अतः गाय का उक्त लक्षण अतिव्याप्ति दोष युक्त हुआ ।

अतिशक्ति—[वि०] अत्यन्त शक्तिशाली, अपार सामर्थ्य वाला । बड़ी ताक़त । अधिक बल ।

अतिशक्वरी—[स्त्री०] पिंगल में एक छन्द का नाम जिसके प्रत्येक चरण में पन्द्रह अक्षर होते हैं ।

अतिशय--[पु०] अति अधिक । बड़ा । साहित्य में एक अलंकार का नाम (जहाँ उत्तरोत्तर किसी बात की सम्भावना या असम्भावना दिखाई जाय, वहाँ अतिशय अलंकार होता है । [वि०] जो हाथ को लाँघ जाय ।

अतिशयित–[पु०]अधिक। बहुत ज्यादा।

अतिशयोक्ति--[स्त्री०] साहित्य में एक प्रसिद्ध अलङ्कार, जिस में किसी बात को बहुत बढ़ा कर कहा गया हो ।

अतिशयोपमा—[स्त्री०] साहित्य में अलङ्कारों का एक भेद । जिस में किसी वस्तु को इतना उत्कृष्ट बताया जाय कि उसकी उपमा देने योग्य दूसरी वस्तु न मिले ।

अतिशीत—[पु०] बहुत ठंडा स्पर्श । [वि०] वह जो छूने में बहुत ठंडा लगे ।

अतिशीलन--[पु०] किसी बात का बार बार अभ्यास करना। मश्क।

अतिशूद्र--[पु०] महाशूद्र। अन्त्यज। चाण्डाल। वह शूद्र जिस के हाथ का छुआ जल भी द्विज लोग ग्रहण न करें।

अतिशोभन--[वि०] अधिक शोभा-वाला। बहुत सुन्दर। अतिश्रेष्ठ।

अतिसन्ध--[पु०] प्रतिज्ञा भंग करना। आज्ञोल्लंघन।

अतिसन्धान--[पु०] विश्वासघात। धोखा। प्रवंचना। अतिक्रमण।

अतिसन्ध्या--[वि०] सन्ध्या के लग-भग का समय। (घड़ी भर रात रहे से लेकर सूर्योदय तक और सूर्यास्त से लेकर घड़ी भर रात गए तक का समय सन्ध्या कहाता है)

अतिसर्ग--[वि०] वह जो सृष्टि-क्रम का उल्लंघन कर गया हो। [पु०] देना। चाहे जो करने की स्वतन्त्रता प्रदान करना।

अतिसर्जन—[पु०] देना। अधिक दान करना। ठगना। मारना।

अतिसामान्य—[पु०] अत्यन्त साधा-रण। मामूली। अत्यन्त सहज। जो वाक्य वक्ता के अभिप्रेत अर्थ का उल्लं-घन कर जाय।

अतिसायं—[अव्य०] सूर्यास्त काल के आस-पास का समय।

अति (ती) सार—[पु०] एक रोग जिसमें बार-बार पतला दस्त हो कर खाया हुआ पदार्थ बिना पचे ही दस्त रूप में निकल जाता है।

अति (ती) सारी—[वि०] जिसे अतिसार रोग हो।

अतिसृष्ट—[वि०] त्यागा गया। दिया गया। भेजा गया।

अति सौरभ—[पु०] आम्र नामक फल। [वि०] जिसमें अत्यधिक सुगन्ध हो।

अतिहसित—[पु०] हास का एक भेद। वह हास जिसमें हँसने वाला लोट पोट हो जाय और उसकी आँखों से आँसू निकल आवें।

अतीत—[वि०] गया हुआ। बीता हुआ। भूत काल का। साधु। विरक्त। असंग। अलग। पृथक्। न्यारा। मृत। मरा हुआ। अभ्यागत। अतिथि। [क्रि० वि०] परे। बाहर।

अतीन्द्रिय—[वि०] जो इन्द्रियों द्वारा न जाना जा सके। इन्द्रियों से परे। अव्यक्त। अगोचर। अप्रत्यक्ष।

अतीव—[अव्य०] अतिशय। अत्यन्त। बहुत।

अतुल—[पु०] साहित्य में अनुकूल नायक। तिल का वृक्ष। [वि०] जिसकी तुलना न हो सके। अनुपम। बेजोड़। अद्वितीय। जिसकी तोल न हो सके। बहुत। असीम। अपार। अत्यधिक। अपरिमित। बेअन्दाज़।

अतुलनीय—[वि०] अद्वितीय। अनु पम। बेजोड़। अपरिमित। असीम। अपार। अत्यधिक।

अतुलित—[वि०] बहुत अधिक। असंख्य। अपार। बिना तोला हुआ। जिसकी तोल-नाप न हो सके। अद्वितीय। अनुपम। बेजोड़।

अतुल्य—[वि०] जिसकी तुलना न हो सके। जिसकी उपमा न दी जा सके। निराला। अद्वितीय। अनुपम। अस-मान। बेजोड़।

अतुहिनरश्मि—[पु०] जिसकी किरणें ठंडी न हों। सूर्य।

अतृप्त—[वि०] जिसका पेट न भरा हो। भूखा। जिसका जी न भरा हो। असन्तुष्ट।

अतृप्ति—[स्त्री०] असन्तोष। तृप्त न होने की अवस्था।

अतृष्णा—[वि०] तृष्णारहित। निस्पृह। निर्लोभ।

अतेज—[वि०] तेजरहित। अंधकार-युक्त। प्रतापशून्य। हतश्री।

अतोल—[वि०] बिना तोला हुआ। बेअंदाज।

अतः–[अव्य०] इसलिए। इस कारण। इस वजह से।

अत्ता—[स्त्री०] माता। मौसी। बड़ी बहन। [पु०] ईश्वर का एक नाम। चराचर को अपने में लीन कर लेनेवाला।

अत्तार—[पु०] इत्र या सुगंधित द्रव्य बेचने और बनानेवाला। यूनानी दवाएँ बनाने और बेचनेवाला।

अत्तु—[पु०] सूर्य।

अत्यन्त—[वि०] जो अन्त (सीमा) का अतिक्रमण कर जाय। परिमाण से बाहर। बहुत अधिक। ज्यादा। बेहद। अतिशय।

अत्यन्त कोपन—[वि०] अत्यधिक क्रोधी स्वभाववाला। अत्यन्त कोपशाली।

अत्यन्त गामी—[वि०] बहुत जाने-वाला। जिसका स्वभाव बहुत चलने का हो। बहुत समय तक रहनेवाला। स्त्री० लिंग में 'अत्यन्त गामिनी' भी होता है।

अत्यन्त संयोग—[पु०] पूर्ण संयोग। अनिवार्य सम्बन्ध। बहुत अधिक मेल।

अत्यन्त भाव—[पु०] सदा रहने-वाला भाव। पूर्ण अस्तित्व। अनि-वार्य सत्ता।

अत्यन्ताभाव—[पु०] बिलकुल न होना। तीनों कालों में जिसका अस्तित्व न हो। जो न पहले हुआ, न अब है, और न आगे होगा। (जैसे बन्ध्या के सन्तान का अत्यन्ताभाव है)।

अत्यन्तिक—[वि०] बहुत चलने-वाला। चिरकाल तक रहनेवाला। बहुत

घूमनेवाला। अत्यन्त पास का। समीपी। नज़दीकी।

अत्यन्तीन—[वि०] अतिशय गमनशील। बहुत चलनेवाला। देर तक रहनेवाला।

अत्यम्ल—[पु०] इमली का वृक्ष (उभ०)। बहुत खट्टा।

अत्यम्लपर्णी—[स्त्री०] जिसके पत्ते बहुत खट्टे हों, ऐसी बेल, राम चना की बेल।

अत्यम्ला—[स्त्री०] बिजौरा नीबू।

अत्यय—[पु०] दोष। कठिन। अतिक्रमण। नियम अथवा आज्ञा का उल्लंघन। कष्ट। दण्ड। मृत्यु। विनाश। ध्वंस। नष्ट हो जाना। बल-पूर्वक व्यवहार करना। किसी काम का बिगड़ जाना।

अत्यर्थ—[वि०] अत्यन्त। अतिशय। बहुत अर्थ का भाव।

अत्यल्प—[वि०] बहुत छोटा। बहुत थोड़ा।

अत्यष्टि—[स्त्री०] एक छन्द का नाम। (जिसके प्रत्येक चरण में सत्रह अक्षर होते हैं)।

अत्याकार—[पु०] तिरस्कार। निरादर। बड़ा शरीर। [वि०] बहुत बड़े शरीरवाला।

अत्याग—[पु०] त्याग का उलटा। स्वीकार करना। ग्रहण करना। न त्यागना।

अत्यागी—[वि०] त्यागी का उलटा। न छोड़नेवाला। संचय या ग्रहण करनेवाला। दुर्गुणों या व्यसनों से विरक्त न होनेवाला। विषयासक्त।

अत्याचार—[पु०] समाज या शास्त्र के नियमों को तोड़ना। आचार का अतिक्रमण करना। विरुद्ध आचार। अन्याय। ज्यादती। जबरदस्ती। जुल्म। दुराचार। पाप। अनावश्यक आचार की अधिकता। ढोंग। ढकोसला। पाखंड। आडम्बर।

अत्याचारी—[वि०] अत्याचार करनेवाला। अन्यायी। ज़ालिम। पापी। दुर्व्यसनी। दुराचारी। उद्दण्ड। उच्छृङ्खल। पाखंडी। ढोंगी।

अत्याज्य—[त्रि०] जो त्यागने योग्य न हो। न छोड़ने लायक। जिसका त्याग न किया जा सके।

अत्याधान—[पु०] प्रत्येक प्रकार का संबंध, नियम का तोड़ना। ऊपर धरना। शास्त्राज्ञा के विरुद्ध अग्नि-स्थापन करना।

अत्याश्रम—[पु०] सब से ऊँचा आश्रम। संन्यास। [वि०] समस्त आश्रमों के नियमों और बन्धनों को त्याग देने वाला। पंचमाश्रमी। संन्यासी। अवधूत।

अत्याहित—[पु०] ऐसा संकट जिसमें प्राणों तक के जाने की सम्भावना हो। भयंकर विपत्ति। उत्पात। अत्यधिक भय।

अत्युक्त—[वि०] जो बहुत बढ़ाकर कहा गया हो।

अत्युक्ति—[स्त्री०] किसी बात को बहुत बढ़ाकर कहना। बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहने का ढंग। मुबालिग़ा। गुणहीन वस्तु में गुणों का आरोप कर उसकी प्रशंसा करना। किसी के थोड़े गुण-दोष को बहुत बढ़ाकर कहना।

अत्यूह—[पु०] विशेष वाद-विवाद। बहुत बड़ी कल्पना। तर्क या कल्पना से बाहर। नील नामक वनस्पति। नीलकण्ठ नामक पक्षी।

अत्रप—[वि०] निर्लज्ज। लज्जारहित।

अत्रि—[पु०] सप्तर्षियों में से एक ऋषि। [वि०] तीन से भिन्न।

अत्रिजात—[पु०] चन्द्रमा। (कहते हैं चन्द्रमा अत्रि मुनि के नेत्र से उत्पन्न हुए हैं)।

अत्रैगुण्य—[पु०] सत्त्व, रज और तम—तीनों गुणों का न होना। तीनों गुणों का अभाव।

अथ—[अव्य०] प्रारम्भ। यहाँ से। अब। विकल्प। सन्देह। अथवा। ग्रन्थारम्भ में मंगलसूचक भी माना गया है।

अथक—[वि०] वह जो थके नहीं। अश्रान्त।

अथ च—[अव्य०] और भी। और।

अथर्व—[पु०] चारों वेदों में से चौथे वेद का नाम।

अथवा—[अ०] या। वा। पक्षान्तर।

अथाह—[वि०] जिसकी गहराई का पता न लग सके। बहुत गहरा। अत्यन्त गम्भीर।

अदण्डनीय—[वि०] जो दण्ड देने योग्य न हो। दण्ड से मुक्त।

अदण्ड्य—[वि०] अदण्डनीय।

अदत्त—[वि०] कोई भी वस्तु जो दी गई न हो। वह वस्तु जो सदा के लिए न दी गई हो अर्थात् जो काम निकल जाने पर लौटा देनी पड़े।

अदत्ता—[स्त्री०] अविवाहिता कन्या। कोई भी स्त्रीलिंग वाची वस्तु, जो दी न गई हो।

अदन—[पु०] मुसलमानों के मतानुसार बहिश्त का एक बगीचा।

अदना—[वि०] साधारण। तुच्छ। क्षुद्र। बहुत मामूली।

अदन्त—[वि०] जिसके दाँत न निकले हों। छोटी अवस्था का। दुधमुँहा।

अदब—[पु०] शिष्टाचार।

अदबदाकर—[क्रि० वि०] जान-बूझ कर। जिद कर के। अवश्य। ज़रूर।

अदभ्र—[वि०] अत्यधिक। अकूत। अपार। अपरिमित।

अदम्य—[वि०] जिसका दमन न किया जा सके। उत्कट। प्रचण्ड। प्रबल।
अदय—[वि०] निर्दय। निष्ठुर। दयारहित।
अदर्शन—[पु०] दर्शन का अभाव। इन्द्रियों से परे। जो देखने में न आवे। न देखने योग्य। लोप। विनाश।
अदर्शनीय—[वि०] देखने के अयोग्य। कुरूप। वीभत्स।
अदल—[पु०] बिना पत्तों का। करील का वृक्ष। [स्त्री०] ग्वारपाठा। घीग्वार।
अदल-बदल—[पु०] परिवर्तन। उलट-पलट। हेर-फेर।
अदहन—[पु०] दाल-चावल आदि पकाने के लिए आग पर खौलाया हुआ पानी।
अदाता—[पु०] न देने वाला। कृपण। कंजूस।
अदालत-[स्त्री०] न्यायालय। कचहरी।
अदावत—[स्त्री०] शत्रुता। वैर।
अदाह्य—[पु०] जो जलाने योग्य न हो। जिसका जलाना शास्त्रों में वर्जित हो। (कुष्ठी आदि)। जो जलाया न जा सके। (निराकार आत्मा आदि।)
अदिति, (ती)—[स्त्री०] देवताओं की माता जो दक्ष प्रजापति की पुत्री और कश्यप मुनि की पत्नी थीं। माता। पृथिवी। द्युलोक। पुनर्वसु नक्षत्र। [वि०] जिसके विभाग न हों, वह।
अदितिज—[पु०] अदिति से उत्पन्न होनेवाले, देवता। सूर्य।
अदितिसुत—[पु०] अदिति के पुत्र। देवता। आदित्य।
अदिन—[पु०] दुर्दिन। संकट काल। दुर्भाग्य।
अदिव्य—[वि०] जो दिव्य (विशेष गुणयुक्त) न हो। साधारण। सामान्य।
अदीठ—[वि०] अदृष्ट। बिना देखा हुआ। गुप्त। एक प्रकार का फोड़ा जो प्रायः पीठ पर होता है।
अदीन—[वि०] जो दीन अर्थात् दुखी, निर्धन अथवा भयभीत न हो। निर्भय। उदार।
अदीयमान—[वि०] जो दिया न जाय।
अदूरदर्शिता—[स्त्री०] दूर या आगे की बात न सोचना। नासमझी।
अदूरदर्शी—[पु०] जो आगे की बात न सोचे। नासमझ।
अदूषित—[वि०] दोषों से रहित। निर्दोष। निष्पाप।
अदृश्य—[वि०] जो दिखाई न दे। लुप्त। गुप्त। अगोचर।
अदृष्ट—[पु०] भाग्य। तक़दीर। शुभाशुभ कर्मों का फल। [वि०] जो देखा न हो। गुप्त। छिपा हुआ।
अदृष्टपूर्व—[वि०] जो पहले कभी न देखा हो। अनोखा। अद्भुत।
अदृष्टवाद—[पु०] वह सिद्धांत जिसके द्वारा अदृष्ट वस्तुओं का निरूपण हो।
अदृष्टार्थ—[पु०] वह शब्द जिस का अर्थ (वाच्य) अदृष्ट हो। जैसे—स्वर्ग-नरक आदि।
अदृष्टि—[स्त्री०] टेढ़ी नज़र। क्रोध-पूर्वक देखना। निर्दयता से देखना। न देखना। [वि०] जो देख न सके। जिस के देखने की शक्ति न हो।
अदेय—[वि०] न देने योग्य। जो दिया न जा सके।
अदेह—[वि०] जिस के देह न हो। अतनु। कामदेव।
अदेवमातृक—[पु०] वह देश जहाँ खेती के लिए वर्षा पर निर्भर न रहना पड़े। जहाँ नदियाँ और नहरें बहुत हों।
अदोष—[वि०] दोषरहित। निर्दोष। निष्कलंक। निरपराध।
अद्भुत—[पु०] अनोखा। विलक्षण। आश्चर्यजनक। साहित्य में नौ रसों में से एक। उल्कापात आदि अचानक होने वाली घटना।
अद्भुत स्वन—[पु०] आश्चर्यजनक शब्द। महादेव। [वि०] अद्भुत शब्दवाला।
अद्भुतोपमा—[स्त्री०] साहित्य में अलङ्कारों का एक भेद।
अद्य—[अव्य०] आज। अब।
अद्यापि—[वि०] आज भी। आज तक।
अद्यावधि—[क्रि० वि०] आज तक। अब तक।
अद्रि—[पु०] पहाड़। सूर्य। वृक्ष।
अद्रिकीला—[स्त्री०] पृथिवी।
अद्रिज—[पु०] पहाड़ से उत्पन्न होने वाला। शिलाजीत, गेरू आदि।
अद्रिजा—[स्त्री०] पहाड़ से उत्पन्न होने वाली। पर्वत की पुत्री, पार्वती।
अद्रितनया—[स्त्री०] पर्वत की पुत्री, पार्वती।
अद्रिभित् (द्)—[पु०] पहाड़ों को तोड़ने-फोड़नेवाला। इन्द्र।
अद्रिभू—[स्त्री०] पर्वत पर उत्पन्न होने वाली। अपराजिता नामक लता।
अद्रिराज—[पु०] पहाड़ों का राजा। हिमालय।
अद्रिसार—[पु०] पहाड़ के समान मज-बूत। लोहा।
अद्रीश—[पु०] पहाड़ों का स्वामी। हिमालय। शिव।
अद्वितीय—[वि०] जिसके समान दूसरा न हो। जिसके दूसरा कोई न हो। एकाकी। अकेला। केवल। अनुपम। बेजोड़। [पु०] परमात्मा।
अद्वैत—[वि०] भेदशून्य। बेजोड़। अनुपम। एकाकी। अकेला। [पु०] केवल परमात्मा।
अद्वैतवाद—[पु०] वेदान्तियों का

एक सिद्धांत जिसमें जीवात्मा और परमात्मा में कोई भेद नहीं माना जाता। वह सिद्धांत जिसमें सम्पूर्ण दृश्यमान् जगत् को चैतन्य या ब्रह्मस्वरूप माना जाता है।

अद्वैतवादी—[वि०] वेदान्त के अद्वैतवाद सिद्धांत का माननेवाला।

अधकचरा—[वि०] अपूर्ण। अधूरा।

अधन—[पु०] जिसके पास बहुत थोड़ा धन हो या बिलकुल धन न हो। निर्धन। कंगाल। दरिद्र। गरीब। [वि०] जो अपने धन का स्वतन्त्रतापूर्वक उपभोग न कर सके। स्मृतियों में स्त्री, पुत्र और सेवक तीनों अधन माने गए हैं।

अधम—[वि०] पतित। निकृष्ट। नीच। पापी। खोटा। बुरे काम करनेवाला।

अधमता—[स्त्री०] अधमपना। नीचता। निकृष्टता। खोटपन। पाप।

अधमरा—[वि०] मरने के लगभग। मृतप्राय।

अधमर्ण—[पु०] ऋण लेनेवाला। ऋणी। कर्जदार।

अधमाई—[स्त्री०] देखो "अधमता"।

अधमाङ्ग—[पु०] शरीर का निचला भाग। पैर। पांव।

अधमा दूती—[स्त्री०] शृंगार रस में वर्णित दूती का एक भेद। वह दूती जो नायक-नायिका का सन्देश कटु शब्दों में एक दूसरे तक पहुँचावे।

अधमा नायिका—[स्त्री०]वह नायिका जो नायक का सद्व्यवहार होते हुए भी उसके प्रति दुर्व्यवहार करे।

अधर—[पु०] नीचे का ओठ। नीचे। तल। भूमि से अलग निराधार स्थान। अन्तरिक्ष।

अधरपान—[पु०] ओठों का चुम्बन।

अधर्म—[पु०] धर्म का उलटा। पाप। दुष्कर्म। दुराचार।

अधर्मात्मा—[पु०] जो धर्मात्मा न हो। पापी। कुकर्मी। दुराचारी। अधर्मी।

अधर्मी—[पु०]अधर्माचरण करनेवाला। अधर्मात्मा।

अधवा—[स्त्री०] जिसका पति न हो। राँड़। विधवा।

अधश्चर—[पु०] नीच कार्य करनेवाला। चोर। ज्वारी आदि।

अधस्तल—[पु०] नीचे का पेंदा। नीचे की तह। मकान के नीचे का खंड। तलगृह या तहखाना।

अधार—[पु०] 'अधार' का विकृत या संक्षिप्त रूप। आश्रय। अवलम्ब। सहारा। नींव। जड़। बुनियाद।

अधि—[अव्य०] कुछ शब्दों के पहले जोड़ने से ऊपर, ऊँचा, अधिक, मुख्य, सम्बन्ध में इत्यादि अर्थ देता है। जैसे, अधिरोहण—ऊपर या ऊँचा चढ़ना; अधिमास—अधिक मास (लोंद का महीना); अधिराज—मुख्य राजा। राजाओं का भी राजा। अध्यात्म। (अधि + आत्म)=आत्मासम्बन्धी [पु०] मन की व्यथा। आधि।

अधिक—[वि०] विशेष। बहुत। अनेक। आवश्यकता से अधिक। बचा हुआ। फालतू। साहित्य में एक अलङ्कार का नाम जिसमें आधेय को आधार से अधिक वर्णन किया जाता है।

अधिकता—[स्त्री०] अधिक का भाव। अधिकपन। ज्यादती। बहुतायत। आधिक्य। विशेषता। वृद्धि। बढ़ोतरी।

अधिकमास—[पु०] चान्द्र वर्ष में प्रति तीसरे वर्ष पड़नेवाला अधिक महीना। लोंद। मलमास। अधिमास।

अधिकरण—[पु०] आश्रय। आधार। सहारा। व्याकरण में सातवाँ कारक। न्यायशास्त्र में विषय, संशय, पूर्वपक्ष, सिद्धान्त और निर्णय स्वरूप पाँच अंगों का बोधक वाक्य-समूह। प्रकरण। शीर्षक।

अधिकर्मिक—[पु०] दुकान का स्वामी। जो अपनी दुकान किराए पर उठा कर दूकानदारों से किराया लेता हो।

अधिकांश—[पु०] विशेष भाग। अधिक हिस्सा। ज्यादातर। विशेषकर।

अधिकाङ्ग—[पु०] जिसके शरीर में कोई अङ्ग अधिक हो। अधिक अङ्गवाला।

अधिकाङ्गी—[स्त्री०] अधिक अङ्गवाली।

अधिकार—[पु०] स्वत्व। हक़। स्वामित्व। आधिपत्य। प्राप्ति। कब्ज़ा। कार्य का भार। ज़िम्मेदारी। शक्ति। सामर्थ्य। योग्यता। शीर्षक। प्रकरण। संस्कृत व्याकरण में पूर्ववर्ती सूत्र के पद-विशेष को परवर्ती सूत्रों में ग्रहण करने की सीमा।

अधिकार-विधि—[पु०] फलविशेष के अभिलाषी को उस फल के उत्पादक कर्म करने की विधि (आज्ञा)। जैसे—"स्वर्ग चाहनेवाला यज्ञ करे"।

अधिकार्थ-वचन—[पु०] स्तुत्यर्थवाद। निन्दार्थ वाद। किसी व्यक्ति या वस्तु की झूठी निन्दा अथवा प्रशंसा करने के लिए उसमें आरोपित गुण-दोषों का वर्णन करना।

अधिकारी—[पु०] हक़दार। स्वामी। मालिक। अध्यक्ष। योग्यता या सामर्थ्य रखने वाला। (कोई काम करने की)। (स्त्री० अधिकारिणी)।

अधिकृत—[पु०] अधिकारी। अध्यक्ष। आय-व्ययनिरीक्षक। [वि०] अधिकार या कब्जे में आया हुआ। प्राप्त। उपलब्ध।

अधिक्षिप्त—[वि०] जिसकी निन्दा की गई हो। निन्दित। जिसका तिरस्कार किया गया हो। तिरस्कृत। जो रक्खा गया हो।

अधिक्षेप—[पु०] निन्दा। तिरस्कार।

अपमान ।

अधिगत—[पु०] ज्ञात । जाना गया । प्राप्त । पाया गया । स्वीकृत ।

अधिगम—[पु०] जानना । ज्ञान । गति । मानना । पाना । प्राप्ति । ऐश्वर्य । बड़प्पन ।

अधित्यका—[स्त्री०] पहाड़ों के ऊपरी भाग की समतल भूमि । पहाड़ पर का मैदान ।

अधिदेव—[पु०] देवों का भी देव । वह शक्ति जिसका आश्रय प्राप्त कर अग्नि, वायु, सूर्य आदि देव अपना कार्य करते हैं । ईश्वर । इष्टदेव । कुलदेव ।

अधिदेवता-[स्त्री०] देखो "अधिदेव" ।

अधिदैव—[वि०] देवसम्बन्धी । दैविक । आकस्मिक ।

अधिदैवत—[पु०] देवों का भी देव—ईश्वर । वह मन्त्र अथवा प्रसंग जिसमें अग्नि, वायु आदि किसी देवता का नामोल्लेख करके ईश्वर की महिमा वर्णन की गई हो । देवतासम्बन्धी ।

अधिनायक—[पु०] मुखिया । सरदार । नेता । अफसर । (स्त्री० अधिनायिका) ।

अधिप—[पु०] राजा । स्वामी । मुखिया ।

अधिपति—[पु०] राजा । स्वामी । मालिक । मुखिया ।

अधिभू—[पु०] स्वामी । नायक । सरदार ।

अधि मांसक— पु०] दांतों की एक बीमारी जिसमें मसूढ़ों का मांस अधिक बढ़ जाता और उसमें पीड़ा होती है ।

अधिमास—[पु०] देखो "अधिक-मास" ।

अधियज्ञ—[पु०] यज्ञ का अधिष्ठातृ देवता—विष्णु ।

अधियोग—[पु०] ज्योतिषशास्त्र में एक शुभ मुहूर्त का नाम जिसमें यात्रा करना शुभ फलदायक होता है ।

अधिरथ—[पु०] बड़ा रथ । सारथी । रथ हाँकने वाला । रथवान ।

अधिराज—[पु०] राजाओं का भी राजा । बड़ा राजा । चक्रवर्ती राजा । सार्वभौम । सम्राट् । महाराज । बादशाह ।

अधिराज्य—[पु०] साम्राज्य । बादशाहत ।

अधिरोहण—[पु०] चढ़ना । सवार होना । सीढ़ी आदि द्वारा ऊपर जाना ।

अधिरोहिणी—[स्त्री०] सीढ़ी । नसैनी । पैड़ियाँ । ऊपर चढ़ने का साधन ।

अधिवास—[पु०] घर । रहने का स्थान । रहना । निवास । अंग-संस्कार । उबटन । सुगन्ध ।

अधिवासन—[पु०] किसी वस्तु को सुगन्धित करने के लिए उसे पुष्पादि सुगन्धित पदार्थों में बसाना । पुष्प-चन्दनादि द्वारा किसी की पूजा करना । कोई शुभ कार्य करने के पूर्व गणेशादि देवताओं का आवाहन-स्थापनादि कार्य ।

अधिवासी—[पु०] रहने वाला । निवासी ।

अधिविन्ना—[स्त्री०] वह पूर्व विवाहिता पत्नी जिसके रहते पति ने दूसरा विवाह किया हो ।

अधिवेशन—[पु०] मिलजुलकर एक स्थान में बैठना । बैठक । जलसा । मीटिंग ।

अधिश्रयण—[पु०] किसी चीज़ को पकाने के लिए आग पर रखना । पाक करने का स्थान । पाकशाला । चूल्हा ।

अधिष्ठाता—[पु०] अध्यक्ष । मुखिया । प्रबन्धक । किसी कार्य की व्यवस्था या देख-रेख करने वाला । मुन्तज़िम । प्रधान । ईश्वर ।

अधिष्ठात्री—[स्त्री०] अधिष्ठाता का स्त्रीलिंग ।

अधिष्ठान—[पु०] रहने की जगह । वासस्थान । पड़ाव । स्थान । घर । नगर । आधार । अधिकार । सहारा । प्रभाव । शासन । नेम-धर्म । पहिया । वह जिसमें भ्रान्ति का आरोप किया जाय । मृग-मरीचिका में जल की भ्रान्ति होने पर मृग-मरीचिका जल की भ्रान्ति का अधिष्ठान हुआ ।

अधिष्ठान-शरीर—[पु०] सूक्ष्म शरीर । वह शरीर जिसमें स्थूल या पार्थिव शरीर त्यागने के पश्चात् जीवात्मा (पितृ लोक में) निवास करता है ।

अधिष्ठित—[वि०] मौजूद । ठहरा हुआ । स्थित । स्थापित । नियुक्त । अधिकृत । किसी के द्वारा निवास-स्थान बनाया गया ।

अधीत—[वि०] पढ़ा हुआ [पु०] पढ़ना ।

अधीती—[वि०] जो पढ़ना समाप्त कर चुका हो ।

अधीन—[वि०] वश में आया हुआ । वशीभूत । विवश । लाचार । आश्रित । अवलम्बित [पु०] दास । सेवक ।

अधीनता-[स्त्री०] विवशता । लाचारी । आश्रय । दीनता । दासता ।

अधीर—[पु०] जिसे धीरज न रहा हो । विकल । बेचैन । उतावला । आतुर । उद्विग्न । असन्तोषी ।

अधीरा—[स्त्री०] अधीर का स्त्रीलिंग रूप । साहित्य में शृंगार रसान्तर्गत एक प्रकार की नायिका ।

अधीश [पु०] राजा । स्वामी । मालिक । अध्यक्ष । सम्राट् । शाहंशाह ।

अधीश्वर—[पु०] देखो "अधीश" ।

अधीश्वरी—[स्त्री०] अधीश्वर का स्त्रीलिंग ।

अधीष्ट—[पु०] किसी को कोई काम करने के लिए सम्मानपूर्वक प्रेरित करना । आदरपूर्वक किसी कार्य में लगाया गया ।

अधुना—[अव्य०] इस समय । अब । आजकल । सम्प्रति ।

अधुनातन—[अव्य०] आज कल का । अब का । इस समय का । वर्तमान काल का । हाल का ।

अधूत—[पु०] निर्भीक । अकम्पित । अविचल । ढीठ । उठाईगिरा । उचक्का ।

अधूरा—[वि०] अपूर्ण । असमाप्त । अधकचरा ।

अधृति—[स्त्री०] अधीरता । उतावलापन । डरपोकपन । छिछड़पन ।

अधृष्ट—[वि०] जो ढीठ न हो । विनम्र । विनीत । लज्जाशील । शिष्ट ।

अधृष्टता—[स्त्री०] विनम्रता । विनीत भाव । शिष्टता ।

अधृष्य—[वि०] जो दबाया न जा सके । स्वाभिमानी । जो अनादर या तिरस्कार करने योग्य न हो ।

अधेड़—[वि०] प्रौढ़ । जिसकी युवावस्था बीत चुकी हो ।

अधो—[अव्य०] देखो "अधः" ।

अधोंशुक—[पु०] शरीर के निचले भाग में पहनने का वस्त्र । धोती । पाजामा । लहँगा । तहमद आदि ।

अधोक्षज—[पु०] विष्णु का एक नाम । जिस का इन्द्रियों द्वारा प्रत्यक्ष नहीं होता । ईश्वर (अतीन्द्रिय होने से) ।

अधोगत—[पु०] नीचे गिरा हुआ । हीन दशा को प्राप्त । दुर्दशाग्रस्त । पतित ।

अधोगति—[स्त्री०] नीचे गिरना । दुर्गति । दुर्दशा । अवनति । पतन । गिरावट ।

अधोगमन—[पु०] पतन । गिराव । अवनति ।

अधोगामी—[पु०] नीचे जाने या गिरने वाला । अवनति की ओर जानेवाला ।

अधोगामिनी—[स्त्री०] अधोगामी का स्त्रीलिंग ।

अधोभाग—[पु०] नीचे का हिस्सा । तल । पेंदा ।

अधोभुवन—[पु०] नीचे का लोक । सब से नीचे वाला लोक । पाताल ।

अधोमार्ग—[पु०] नीचे का रास्ता । गुदा मार्ग । मलद्वार । सुरंग का रास्ता ।

अधोमुख—[वि०] जिस का मुँह नीचे की ओर हो । औंधे मुँह । नीचे को सिर झुकाए हुए । औंधा । उलटा ।

अधोलम्ब—[पु०] वह सीधी खड़ी रेखा जो किसी सीधी पड़ी रेखा से मिलकर अपने इधर-उधर दो समकोण बनावे । लम्ब ।

अधोलोक—[पु०] देखो "अधोभुवन" ।

अधोवायु—[पु०] अपान वायु । गुदा की वायु । पाद ।

अधः—[अव्य०] नीचे । [स्त्री०] नीचे की ओर । पैरों के ओर की दिशा ।

अधःक्षिप्त—[वि०] नीचे फेंका गया । औंधे मुंह किया गया । झुकाया गया । नीचे रक्खा गया ।

अधःपतन—[पु०] गिरावट । अवनति । ह्रास । विनाश । दुरवस्था । दुर्गति । नीचे गिरना ।

अधःपात-[पु०] देखो "अधःपतन" ।

अधःपुष्पी—[स्त्री०] एक वनस्पति का नाम । सुलफा नाम से प्रसिद्ध जड़ी ।

अध्यक्ष—[पु०] अधिकारी । मुखिया । अधिष्ठाता । सरदार । स्वामी । सर्वत्र फैला हुआ । व्यापक । प्रत्यक्ष ज्ञान । जो सामने दिखाई दे । मुख्य । इन्द्रियगोचर ।

अध्यग्नि—[अव्य०] अग्नि में । अग्नि के पास । [पु०] वह स्त्रीधन जो विवाह के समय अग्नि को साक्षी कर के दिया जाय ।

अध्यधीन—[पु०] जो बिलकुल ही पराश्रित हो । दास । सेवक ।

अध्ययन—[पु०] पढ़ना । पठन । पढ़ाई ।

अध्यर्ध—[वि०] अपने अर्द्ध भाग सहित अर्थात् एक और आधा—डेढ़ ।

अध्यवसाय—[पु०] दृढ़ता और लगन पूर्वक किसी कार्य के लिए प्रयत्न करना । किसी काम में निरन्तर लगे रहना । उत्साह । उद्योग । अत्यन्त प्रयास । निश्चय ।

अध्यवसायी—[वि०] किसी काम के लिए पूरा प्रयास करनेवाला । किसी काम में दृढ़तापूर्वक संलग्न रहनेवाला । उत्साही । उद्योगशील ।

अध्यवसायिनी—[स्त्री०] अध्यवसायी का स्त्रीलिंग ।

अध्यस्त—[पु०] जिसका आरोप अधिष्ठान में किया जाय । जैसे भ्रान्तिवश कहीं रस्सी में सूर्य का आरोप किया जाय तो रस्सी "अधिष्ठान" और सर्प "अध्यस्त" कहावेगा ।

अध्यात्म—[पु०] जीवात्मा । ब्रह्म । ब्रह्मज्ञान । वह विद्या जिसमें आत्मतत्त्व का विवेचन हो । ब्रह्म विचार । वेदान्त । स्वभाव । आत्मा । देह अथवा अन्तःकरण का आधार । आत्मज्ञान ।

अध्यापक—[पु०] पढ़ानेवाला । उपाध्याय । शिक्षक । गुरु । उस्ताद । टीचर ।

अध्यापकी—[स्त्री०] अध्यापक का पद या काम । पढ़ाने का कार्य । मुदर्रिसी । टीचरी ।

अध्यापन—[पु०] पढ़ाना । शिक्षा देना ।

अध्यापिका—[स्त्री०] पढ़ानेवाली । अध्यापन करानेवाली ।

अध्याय—[पु०] पुस्तक का कुछ भाग जिसमें प्रायः किसी एक विषय का विवे-

चन होता है। ग्रन्थ का भाग। पाठ। परिच्छेद। सर्ग। काण्ड। वर्ग। उच्छ्वास। निश्वास। पटल। काण्ड। प्रकरण। पर्व। उल्लास। अंक। आदि।

अध्यारूढ़—[पु०] चढ़नेवाला। अधिक।

अध्यारोप—[पु०] किसी वस्तु में अन्य वस्तु की कल्पना कर लेना। मिथ्या। ज्ञान। अन्य वस्तु में अन्य वस्तु का भ्रम। अध्यास

अध्याशन—[पु०] एक बार भर पेट भोजन करके तुरन्त ही फिर भोजन करना। खाए हुए पर खाना।

अध्यास—[पु०] भ्रान्तिवश अन्य वस्तु में अन्य वस्तु की कल्पना कर लेना। मिथ्याज्ञान। अध्यारोप। आसन। बैठने की जगह।

अध्यासन-[पु०] बैठना। आरोप करना।

अध्यासित—[पु०] जिस पर बैठा गया हो। जिसे अपना आधार बनाया हो। अधिष्ठित। जिसे आश्रय दिया हो। आश्रित। स्थापन किया गया। भले प्रकार रक्खा गया। क़ायम किया गया।

अध्याहार—[पु०] किसी वाक्य के अस्पष्ट अर्थ को स्फुट करने के लिए उसमें उपयुक्त शब्द जोड़ लेना। वाक्यार्थ पूरा करने के लिए आवश्यक शब्द की योजना कर लेना। किसी वाक्य के आकांक्षित पद की खोज या कल्पना। तर्क। ऊहा। बहस। विवाद।

अध्युषित—[पु०] जहाँ रहने का स्थान बनाया गया हो। जिसे निवासस्थान बनाया गया हो।

अध्यूढ़—[पु०] स्वामी। प्रभु। सम्पन्न। धनी। चढ़ा हुआ। चढ़नेवाला।

अध्यूढ़ा—[स्त्री०] एक स्त्री के होते हुए दूसरा विवाह करनेवाले की पहली पत्नी। ज्येष्ठा पत्नी।

अध्येता—[पु०] अध्ययन करनेवाला। पढ़नेवाला।

अध्येय—[वि०] पढ़ने लायक। पठनीय। अध्ययन करने योग्य।

अध्येषण—[पु०] किसी से कोई वस्तु देने के लिए विनीत भाव से प्रार्थना करना।

अध्येषणा—[स्त्री०] प्रार्थना। याचना।

अध्रुव—[वि०] अस्थिर। नाशवान्। अनिश्चित।

अध्वग—[वि०] मार्ग चलनेवाला। [पु०] ऊँट। सूर्य।

अध्वगा—[स्त्री०] मार्ग चलनेवाली। गंगा।

अध्वजा—[स्त्री०] मार्ग में उत्पन्न होनेवाली एक बूटी। स्वर्ण पुष्पी।

अध्वन—[पु०] पथ। मार्ग। काल।

अध्वनीन—[वि०] मार्ग चलने वाला। पथिक। यात्री।

अध्वन्य—[वि०] देखो "अध्वनीन"।

अध्वर—[पु०] यज्ञ। होम। सावधान। आठ वसुओं में से दूसरे वसु का नाम

अध्वर्यु—[पु०] यज्ञ कराने वाला वह ऋत्विग्, जो यजुर्वेद के मन्त्रों का पाठ करता हो।

अध्वान्त—[पु०] सायंकाल। अंधकार का उलटा। उजाला।

अन्—[अव्य०] यह कुछ शब्दों के आदि में लगाने पर निषेध या अभाव का अर्थ देता है।

अनकहा—[वि०] अनुक्त। बिना कहा हुआ।

अनक्षर—[पु०] जिस वाक्य में अच्छे अक्षर न हों। गुणों को छिपाकर अवगुणों को प्रकाशित करने वाला वाक्य। निन्दापूर्ण वचन। गाली।

अनगढ़—[वि०] बिना गढ़ा हुआ। प्राकृतिक रूप में। बेडौल। भद्दा। कुरूप।

अनगिन—[वि०] अनगिनती। असंख्य। बेशुमार।

अनगिनत—[वि०] बिना गिना हुआ। अनगिनती। बहुत अधिक। असंख्य।

अनगिनती—[वि०] देखो "अनगिनत"।

अनगैरी—[वि०] गैर। अपरिचित।

अनग्नि—[पु०] वह गृहस्थ जो विधिपूर्वक अग्निस्थापन करके प्रतिदिन अग्नि-होत्र नहीं करता। जो अग्नि का सर्वथा त्याग कर चुका हो। संन्यासी।

अनघ—[वि०] निष्पाप। स्वच्छ। निर्मल। व्यसनशून्य। दुःखरहित।

अनङ्ग—[पु०] कामदेव। आकाश। मन। [वि०] जिसके शरीर न हो, वह कोई भी। बिना शरीर का। देह रहित।

अनङ्गक्रीड़ा—[स्त्री०] कामक्रीड़ा। स्त्री-संभोग। रति। पिङ्गल में एक छन्द का नाम।

अनङ्गशेखर—[पु०] पिङ्गल में एक छन्दविशेष।

अनङ्गारि—[पु०] कामदेव का शत्रु, शिव।

अनङ्गी—[पु०] ईश्वर। आकाश। मन। कामदेव। [वि०] बिना देह का।

अनच्छ—[वि०] जो अच्छा (निर्मल) न हो। मैला। कलुषित। गदला। अस्वच्छ।

अनजान—[वि०] बिना जाना हुआ। अपरिचित। अज्ञात। नासमझ। मूर्ख। नादान।

अनञ्जन—[वि०] निर्दोष। [पु०] जो किसी में लिप्त नहीं होता—आकाश। ब्रह्म। जो दोषों से रहित है—ईश्वर (निरञ्जन)।

अनड्वान्—[पु०] बैल। बिजार।

अनत—[वि०] जो झुका हुआ न हो।

सरल। सीधा। [क्रि० वि०] और जगह। दूसरी जगह।

अनति—[वि०] कम। थोड़ा। अल्प।

अनदेखा—[पु०] बिना देखा हुआ।

अनद्यतन—[पु०] जो आज का न हो। गई रात के उत्तरार्ध और आने वाली रात के पूर्वार्ध सहित मौजूदा दिन 'आज' (अद्यतन) कहा जाता है, उससे भिन्न।

अनद्यतन भविष्य—[पु०] व्याकरण में भविष्य काल का एक भेद। वह भविष्य काल जो आने वाली रात का पूर्वार्ध बीतने पर आवेगा।

अनद्यतन भूत—[पु०] व्याकरण में भूतकाल का एक भेद। वह भूत काल जो आज से पहले बीत गया।

अनधिकार—[पु०] प्रभुत्व, स्वत्व, योग्यता आदि का अभाव। किसी वस्तु पर स्वामित्व न होना। किसी विषय के ज्ञान का न होना। [वि०] वह जिसका कोई अधिकार न हो। अयोग्य।

अनधिकारी—[वि०] अधिकारशून्य। अयोग्य। अपात्र।

अनध्यवसाय—[पु०] अध्यवसाय का अभाव। अनुत्साह। ढिलाइपन।

अनध्यवसायी—[वि०] जो अध्यवसायी न हो। अनुत्साही। ढिलड़।

अनध्याय—[पु०] न पढ़ना। वह दिन जिसमें पढ़ना-पढ़ाना न हो। छुट्टी का दिन।

अनन्त—[पु०] विष्णु। शेषनाग। बादल। बलराम। लक्ष्मण। आकाश। ब्रह्म। बाँह में पहनने का एक आभूषण। [वि०] निस्सीम। अपार।

अनन्त चतुर्दशी—[स्त्री०] भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की चौदस। इस तिथि को लोग व्रत रखते और सूत का बना अनन्त बाहु में धारण करते हैं।

अनन्तमूल—[पु०] एक प्रसिद्ध जड़ी जो रक्त-शोधन के लिए सेवन की जाती है।

अनन्तर—[वि०] लगातार। निरन्तर। बराबर। पश्चात्। पीछे। बाद को।

अनन्तवीर्य—[वि०] जिसमें अपार शक्ति हो। असीम बलशाली। अतुल पराक्रमी।

अनन्तव्रत—[पु०] एक प्रसिद्ध व्रत जो भाद्र शुक्ला चतुर्दशी के दिन किया जाता है।

अनन्ता—[स्त्री०] पृथिवी। पार्वती। कुशा। दूब। हरड़। आमला। गिलोय। पीपल नामक ओषधि। अनन्तमूल। श्यामलता। विशल्या, जिसका अन्त न हो।

अनन्नास—[पु०] एक प्रसिद्ध फल जो खाने में खटमीठा होता है।

अनन्य—[वि०] अभिन्न। एक निष्ठ। जो अन्य से सम्बन्ध न रखता हो। [पु०] विष्णु का एक नाम।

अनन्यगति—[वि०] जिसके लिए कहीं अन्य जगह ठौर-ठिकाना न हो।

अनन्यज—[पु०] कामदेव।

अनन्यता—[स्त्री०] अभिन्नता। एक निष्ठा।

अनन्यवृत्ति—[वि०] वह जिसका अपने लक्ष्य से भिन्न की ओर ध्यान भी न हो। एकान्त चित्त।

अनन्वय—[वि०] जिसका किसी से सम्बन्ध न हो। असंग। [पु०] साहित्य में एक अर्थालङ्कार।

अनन्वित—[वि०] अयुक्त। असङ्गत। पृथक्। असम्बद्ध।

अनपढ़—[वि०] बिना पढ़ा। अपठित। निरक्षर। मूर्ख।

अनपेक्ष—[वि०] अपेक्षारहित। जो किसी पर निर्भर न हो। बेपरवाह। निरपेक्ष।

अनपेक्षित—[वि०] अनचाहा। जिसकी अपेक्षा या परवाह न हो।

अनपेत—[वि०] युक्त। सहित।

अनबन—[पु०] विरोध। बिगाड़। मन-मुटाव।

अनबिधा—[पु०] बिना बेधा हुआ। वह जिसमें छेद न किया गया हो। (मोती आदि)।

अनबोल, अनबोला—[वि०] न बोलने वाला। मौन। चुप्पा।

अनभिज्ञ—[पु०] अनजान। अनाड़ी। अपरिचित।

अनभिज्ञा—[स्त्री०] अनभिज्ञ का स्त्रीलिङ्ग।

अनभिज्ञता—[स्त्री०] अनजानपन। अनाड़ीपन।

अनभिभूत—[वि०] जो पराजित न हुआ हो। जो किसी द्वारा रोका या दबाया न जा सका हो। जो घबराया न हो।

अनभिमत—[वि०] अमान्य। अनचाहा। नापसन्द।

अनभ्यस्त—[वि०] जिसका अभ्यास न किया गया हो। जो बार-बार दुहराकर पक्का न किया गया हो। अपरिपक्व।

अनभ्यास—[पु०] अभ्यास का अभाव।

अनमना—[पु०] उदासीन। जिसका मन न लगता हो। खिन्न। अस्वस्थ।

अनमिल—[वि०] जिनका परस्पर मेल न हो। असम्बद्ध। बेमेल।

अनमेल—[वि०] बेमेल। जो आपस में मेल न खाते हों। असम्बद्ध। ऊट-पटाँग। जिसमें कुछ मिलावट न हो। खालिस। विशुद्ध।

अनमोल—[वि०] अमूल्य। बहुमूल्य। बेशकीमत। उत्तम। बढ़िया।

अनय—[पु०] अनीति। अन्याय। दौर्भाग्य। विपत्ति। अपराध। अमङ्गल।

अनरस—[पु०] रस का अभाव। सूखापन। रुखाई। अनबन। दुःख। शोक। वह जिसमें रस न हो।

अनरीति—[स्त्री०] कुचाल। बुरी रीति। अनुचित व्यवहार। नियम-विरुद्ध आचरण।

अनर्गल—[वि०] वह जिसमें अर्गला अर्थात् अड़बंगा न हो। बिना रोक का। प्रतिबन्धरहित। निरङ्कुश। अण्ड-बण्ड। लगातार।

अनर्घ—[वि०] बहुमूल्य। बेश-कीमत। कम दामों का। सस्ता।

अनर्घ्य—[वि०] जो पूजा या सम्मान करने योग्य न हो। बहुमूल्य। अमूल्य।

अनर्थ—[वि०] वह जिसका कुछ अर्थ न हो, निरर्थक। अर्थ के विरुद्ध। उलटा अर्थ। अनचाहा अर्थात् अनिष्ट, हानि, संकट, उपद्रव, अधर्म से पैदा किया हुआ धन।

अनर्थक—[वि०] अर्थरहित। निरर्थक। बेमतलब। व्यर्थ।

अनर्थकारी—[वि०] उलटा अर्थ करनेवाला। हानि पहुँचानेवाला। अनिष्ट करनेवाला। उपद्रवी।

अनर्ह—[वि०] अयोग्य। असम्मान्य। पूजा न करने योग्य।

अनल—[पु०] अग्नि। चीता नामक ओषधि। आठ वसुओं में से पाँचवे वसु का नाम। ज्योतिष में साठ संवत्सरों में से पचासवें संवत्सर का नाम। शरीर के भीतर का पित्त नामक रस। तीन की संख्या।

अनलप्रभा—[स्त्री०] ज्योतिष्मती नाम की बूटी। जिसकी चमक अग्नि की सी होती है।

अनलमुख—[वि०] अग्निमुख। वह जो अग्नि द्वारा पदार्थों को ग्रहण करता हो। [पु०] देवता।

अनलस—[वि०] जिसे आलस्य न हो। उत्साही। फुर्तीला।

अनवच्छिन्न—[वि०] जो विभक्त न हो। जो अलग न हो। जुड़ा हुआ। अखंड। लगातार।

अनवद्य—[वि०] अनिन्द्य। निर्दोष।

अनवधान—[पु०] असावधानी। लापरवाई। प्रमाद।

अनवधानता—[स्त्री०] असावधानी। उपेक्षा। लापरवाई।

अनवधि—[वि०] अनन्त। असीम। सदैव।

अनवरत—[वि०] लगातार। निरन्तर। बिना रुके या विश्राम किये। उत्कृष्ट।

अनवसर—[पु०] अवसर या समय का अभाव। कुसमय। बेमौका।

अनवस्कर—[वि०] बिना कूड़े करकट का। साफ़। निर्मल।

अनवस्था—[स्त्री०] गड़बड़। अव्यवस्था। कुप्रबन्ध। विकलता। अधीरता। दरिद्रता। न्यायशास्त्र में एक दोष।

अनवस्थान—[पु०] न ठहरना। वायु। [वि०] वह जो स्थिर न रहे। चंचल।

अनवस्थित—[वि०] अस्थिर। चंचल। अधीर। अवलम्ब या आधाररहित। निराश्रित।

अनवस्थिति—[स्त्री०] अशान्ति। अधीरता। निरालम्ब अवस्था।

अनवांसी—[स्त्री०]भूमि का एक छोटा नाप जो बिस्वे का चारसौवाँ हिस्सा होता है।

अनशन—[पु०] न खाना। निराहार व्रत। उपवास।

अनश्वर—[वि०] अक्षर। अविनाशी। नष्ट न होनेवाला।

अनस्—[पु०] गाड़ी। छकड़ा। भात। पकाए हुए चावल। [स्त्री०] माँ। माता।

अनसमझ—[वि०] अज्ञ। नासमझ। अनजान। अबोध।

अनसुना—[वि०] अश्रुत। जो सुना न हो।

अनसूय—[वि०] अनिन्द्य। निन्दा न करनेवाला।

अनसूया—[स्त्री०] असूया (निन्दा) का न होना। छिद्रान्वेषण का अभाव। अत्रि मुनि की पत्नी का नाम।

अनहद—[पु०] अनाहत। वह शब्द जो दोनों कानों को अच्छे प्रकार बन्द कर लेने पर भी सुनाई पड़ता है। हठ-योग में वर्णित छः चक्रों में से एक।

अनहित—[पु०] हानि। अपकार। बुराई। अहित चाहनेवाला। विरोधी। शत्रु।

अनहोनी—[स्त्री०] असम्भव। अलौकिक।

अनाकुल—[वि०] जो आकुल (घबराया हुआ) न हो। अविचल। शान्त। जो गड़बड़ या घिचपिच न हो। स्पष्ट। असंकीर्ण। (वाक्यादि)

अनाक्रान्त—[वि०] जिस पर आक्रमण न किया गया हो।

अनाक्रान्ता—[स्त्री०] कटेरी नामक ओषधि।

अनागत—[वि०] आगे होनेवाला। भविष्य। होनहार। अनुपस्थित। अनजाना। अपरिचित। अभूतपूर्व। अनोखा। अनायास। अचानक। शाश्वत। अजन्मा।

अनागतार्तवा—[स्त्री०] जिसको आर्तव (स्त्रियों के हर महीने आनेवाला रज) न आया हो। जो मासिक धर्म से न हुई हो। कन्या।

अनागम—[पु०] न आना।

अनाचार—[पु०] दुराचार । बुरा आचार । कुरीति । कुप्रथा । [वि०] आचारहीन । धर्मभ्रष्ट ।

अनाचारिता—[स्त्री०] असदाचार । कुप्रथा । कुचाल ।

अनाज—[पु०] अन्न । धान्य । गल्ला ।

अनाड़ी—[वि०] जो किसी काम में दक्ष न हो । ठोठुआ । अनजान । मूर्ख । नासमझ ।

अनातप—[पु०] आतप (धूप या गर्मी) का न होना । छाया । ठंढक ।

अनातुर—[वि०] रोग-मुक्त । दुःख-रहित ।

अनात्म—[पु०] आत्मा से, भिन्न, जड़ अचेतन, शरीरादि ।

अनाथ—[वि०] निराश्रित । असहाय । जिसका कोई पालन-पोषण करनेवाला न हो । दुःखी । लावारिस ।

अनाथालय—[पु०] वह स्थान जहाँ अनाथों का पालन-पोषण किया जाता हो ।

अनाथाश्रम—[पु०] देखो 'अनाथालय' ।

अनादर—[पु०] अपमान । तिरस्कार । बेइज्जती । साहित्य में अलङ्कारों का एक भेद ।

अनादि—[पु०] जिस का आदि नहीं है अथवा जिस से पहले का कोई नहीं है—नित्य सिद्ध ईश्वर । [वि०] आदि रहित ।

अनादृत—[वि०] जिस का अनादर हुआ हो । अपमानित । तिरस्कृत ।

अनाप-शनाप—[पु०] अन्धा-धुन्ध । अंड बंड । ऊट-पटाँग । व्यर्थ । निरर्थक । असम्बद्ध ।

अनाप्त—[वि०] अविश्वसनीय । असत्य । अयथार्थवादी । जो प्राप्त न हुआ हो । अलब्ध । अकुशल । अनाड़ी । जो राग-द्वेषादि से रहित न हो ।

अनाम—[पु०] मलमास । लौंद का महीना । अर्शनामक रोग । बवासीर । [वि०] बिना नाम का । नाम रहित । अप्रसिद्ध ।

अनामय—[पु०] आरोग्य । स्वास्थ्य । नीरोगता । कुशल-क्षेम । आनन्द । आराम । सुख-चैन । [वि०] नीरोग । स्वस्थ । रोगरहित । जिस में कोई दोष न हो ।

अनामा—[स्त्री०] अनामिका नाम की उँगली जो मध्यमा और कनिष्ठिका के बीच में होती है ।

अनामिका—[स्त्री०] अनामा । सब से छोटी, और सब से छोटी उँगलियों के बीच वाली उँगली ।

अनायत्त—[वि०] जो किसी के अधीन न हो । स्वतन्त्र ।

अनायास—[क्रि० वि०] बिना परिश्रम । थोड़ा प्रयत्न करने से ही । अचानक । सहसा । [पु०] प्रयत्न का अभाव । अल्प प्रयत्न । [वि०] वह जो प्रयत्न न करे ।

अनारत—[पु०] अनवरत । लगातार । अविच्छिन्न । कभी न ठहरना । [वि०] जो कभी न ठहरे ।

अनारम्भ—[पु०] आरम्भ का न होना । प्रयत्न का अभाव । अनुद्योग ।

अनारी—[वि०] अनाड़ी ।

अनार्जव—[पु०] बाँकपन । कुटिलता । सीधे पन या सरलता का अभाव । रोग । [वि०] कुटिल । टेढ़ा ।

अनार्य—[पु०] जो आर्य (श्रेष्ठ) न हो ।

अनावश्यक—[वि०] अनपेक्षित । अप्रयोजनीय । गैरज़रूरी ।

अनाविल—[वि०] स्वच्छ । निर्मल । साफ ।

अनावृत—[वि०] जो ढका या घिरा हुआ न हो । उघड़ा हुआ । खुला हुआ ।

अनावृत्ति—[स्त्री०] अभ्यास का अभाव । किसी काम के बार-बार दुहराने की क्रिया का न होना । [वि०] जो अभ्यास न करे वह ।

अनावृष्टि—[स्त्री०] अवर्षण । वर्षा का न होना । सूखा ।

अनाशक—[पु०] इच्छानुकूल भोगों का अभाव ।

अनाश्रमी—[वि०] आश्रमों से मुक्त । पंचमाश्रमी । अवधूत । आश्रमों से पतित । आश्रम-भ्रष्ट । पतित ।

अनाश्रय—[वि०] आश्रयरहित । निरवलम्ब । निराधार । अनाथ ।

अनाश्रित—[वि०] बिना सहारे । निरवलम्ब । अनाश्रय ।

अनाश्वन—[वि०] वह जिसने भोजन न किया हो ।

अनासादित—[वि०] वह जो प्राप्त न हुआ हो । अप्राप्त । अलब्ध ।

अनास्था—[स्त्री०] अश्रद्धा । अनादर । अप्रतिष्ठा । उदासीनता ।

अनाहत—[पु०] नवीन वस्त्र । वह शब्द जो कानों को अच्छे प्रकार बन्द कर लेने पर भी सुनाई देता है । तन्त्र-शास्त्र के अनुसार हृदय में स्थित द्वादश दल कमल । हठ योगोक्त छः चक्रों में से एक । [वि०] वह जिस पर चोट न लगी हो ।

अनाहार—[वि०] वह जिसने कुछ खाया न हो । वह व्रत जिस में कुछ खाया न जाय । निराहार । [पु०] आहार का त्याग । अनशन । आहार का अभाव ।

अनाहूत—[वि०] वह जो बुलाया गया न हो । जिसे निमन्त्रित न किया गया हो ।

अनिकेत—[वि०] जिस का कोई घर-मकान न हो । अथवा जो नियमित रूप से किसी निश्चित स्थान पर न रहता हो । संन्यासी । परिव्राजक ।

अनिच्छा—[स्त्री०] न चाहना। चाह का अभाव। अरुचि।

अनिच्छित—[वि०] जिसकी चाह न हो। बिना चाहा हुआ। अकांक्षित।

अनिच्छुक—[वि०] न चाहनेवाला।

अनित्य—[वि०] नित्य का उलटा। अशाश्वत। सदा न रहनेवाला। क्षणिक। नश्वर। असत्य।

अनित्यता—[स्त्री०] अनित्यपन। अस्थिरता। क्षणभंगुरता।

अनिद्र—[पु०] एक रोग जिसमें रोगी को नींद नहीं आती। उन्निद्र। प्रजागर। [वि०] वह जिसे नींद न आवे।

अनिन्द्य—[पु०] निर्दोष। उत्तम। जो निन्दनीय न हो।

अनिमिष—[पु०] जो पलक नहीं मारता—देवता। मछली। जिसकी दृष्टि कहीं नहीं रुकती–विष्णु। सर्व-व्यापक या सर्वान्तर्यामी ईश्वर। [वि०] स्थिर दृष्टिवाला। टकटकी बाँधकर देखने वाला। [क्रि० वि०] एकटक। निरन्तर।

अनिमेष—देखो 'अनिमिष'।

अनियत—[वि०] अनिश्चित। अस्थिर। नाशवान्। स्वतन्त्र। असीम।

अनियन्त्रित—[वि०] नियम या प्रतिबन्ध से रहित। बेरोक-टोक। काबू से बाहर। मनमाना।

अनियम—[पु०] अव्यवस्था। धाँधली।

अनियमित—[वि०] अव्यवस्थित। बेकायदा। बेनियम। अनिश्चित।

अनिरुद्ध—[पु०] कामदेव का पुत्र। श्रीकृष्ण का पौत्र। [वि०] स्वतन्त्र। जो किसी से रोका न गया हो। अबाध।

अनिरुद्ध पथ—[पु०] आकाश जिसमें किसी का मार्ग नहीं रोका जा सकता। [वि०] वह मार्ग जो रोका न गया हो।

अनिर्दिष्ट—[वि०] जो निश्चित न किया गया हो। अनिश्चित। अनिर्धारित। जो बताया न गया हो।

अनिर्देश्य—[वि०] जिसके सम्बन्ध में "वह यह है", ऐसा निश्चय पूर्वक न कहा जा सके—ईश्वर। अनिर्वचनीय। निर्विशेष।

अनिर्वचनीय—[वि०] जिसका लक्षणादि द्वारा प्रतिपादन न किया जा सके। अकथनीय। ईश्वर। आकाश, काल आदि।

अनिर्वाच्य—[वि०] न बताने योग्य। न चुनने लायक।

अनिर्वृत्त—[वि०] अतृप्त। अस्वस्थ। अपूर्ण।

अनिल—[पु०] वायु। पवन। स्वाति नक्षत्र। आठ वसुओं में से पाँचवें वसु का नाम।

अनिलकुमार—[पु०] हनुमान्। पवनकुमार।

अनिलसखा—[पु०] वायु का मित्र–अग्नि।

अनिलान्तक—[पु०] वातरोग-नाशक एक ओषधिविशेष।

अनिलामय—[पु०] वायुसम्बन्धी रोग। वात रोग।

अनिवार—[वि०] जो निवारण करने योग्य न हो। अनिवार्य। जिसका निवारण न हो। आवश्यक। सतत। लगातार।

अनिवार्य—[वि०] अत्यावश्यक। बहुत ज़रूरी। जिसके बिना काम न चल सके वह।

अनिश—[वि०] सदा। नित्य। निरन्तर। लगातार। रात्रि बिना।

अनिश्चित—[वि०] अनिर्धारित। अनियत। अनिर्दिष्ट। जिसका निश्चय न हुआ हो।

अनिष्ट—[पु०] अशुभ। अमंगल। पाप। दुख। बुराई। [वि०] जो इष्ट (इच्छित) न हो। अनचाहा। अवांछित।

अनी—[स्त्री०] किसी नुकीली चीज़ का अग्रभाग। नोक। कोर। सेना। फौज। समूह।

अनीक—[पु०] सेना। युद्ध। [वि०] जो अच्छा न हो।

अनीकस्थ—[पु०] जो युद्ध में ठहरे, फौज। योद्धा।

अनीकिनी—[स्त्री०] सेना। फौज। वह सेना जिसमें २१८७ हाथी, २१८७ रथ, ६५६१ घुड़सवार और १०६३५ पैदल सिपाही हों।

अनीति—[स्त्री०] अन्याय। अत्याचार। अन्धेर।

अनीश—[पु०] ईश्वर। जीवात्मा। प्रकृति। [वि०] जिसका कोई ईश्वर (मालिक) न हो। अनाथ। लावारिस। सर्वोपरि। सर्वश्रेष्ठ।

अनीश्वर—[वि०] बिना ईश्वर (स्वामी) का–अनाथ। अशक्त। नास्तिक

अनीश्वर वाद—[पु०] ईश्वर नहीं है–ऐसा मानना। नास्तिकवाद। मीमांसा-शास्त्र का मत।

अनीश्वर वादी—[वि०] ईश्वर को न माननेवाला। मीमांसक। नास्तिक।

अनीह—[वि०] जिसे कोई चाहना न हो। उदासीन। निरीह। निश्चेष्ट। व्यापारशून्य।

अनीहा—[स्त्री०] इच्छा या चाह का न होना। अनिच्छा। उदासीनता। चेष्टा या व्यापार का अभाव।

अनु—[अव्य०] विभिन्न शब्दों के साथ मिल कर प्रति, साथ, समान, समीप, पीछे, भाग, विस्तार, हीन,

निकृष्ट आदि अर्थ देता है।

अनुक—[वि०] कामी। इन्द्रिय-लोलुप।

अनुकम्पा—[स्त्री०] कृपा। दया। अनुग्रह। किंचित् हिलना।

अनुकम्पित—[वि०] जिस पर दया की गयी हो। अनुगृहीत।

अनुकरण—[पु०] नकल। दूसरे के समान कार्य, चेष्टा आदि करना। नकल करने का साधन। पीछे करना।

अनुकरणीय—[वि०] नकल करने योग्य। आदर्श।

अनुकर्ता—[पु०] नकल करने वाला। पीछे करने वाला। आज्ञाकारी।

अनुकर्षण—[पु०] पीछे घसीटना। अनुवर्तन, अर्थात् पिछले सूत्र में आए हुए पद को आगे के सूत्रों में ले जाना।

अनुकल्प—[पु०] एक वस्तु के अभाव में काम चलाने के लिए ग्रहण की गई दूसरी वस्तु। यथा—गाय का दूध न मिले तो भैंस के से ही काम लेना। प्रतिनिधि।

अनुकामीन—[वि०] इच्छानुसार चलनेवाला। जो आने-जाने में स्वतन्त्र हो।

अनुकार—[पु०] अनुकरण।

अनुकारी—[वि०] अनुकरण करने वाला। अनुकर्ता।

अनुकूल—[वि०] उपयुक्त। हित-कारक। मुआफ़िक। सहायक। अपने पक्ष का। विरुद्ध का उलटा। प्रसन्न। साहित्य में नायक का एक भेद। काव्य में एक प्रकार का अलङ्कार।

अनुकूलता—[स्त्री०] अविरुद्धता। सहायकपन। प्रसन्नता।

अनुकृत—[वि०] नकल किया हुआ।

अनुकृति—[स्त्री०] नकल। अनुकरण। काव्य में अलङ्कारों का एक भेद।

अनुक्त—[वि०] जो कहा न गया हो। अकथित। बिना कहा हुआ।

अनुक्रम—[पु०] परम्परा। सिल-सिला। परिपाटी। क्रम। पूर्वापर सम्बन्ध। नियमानुसार।

अनुक्रमणिका—[स्त्री०] विषय-सूची। सूची। किसी ग्रन्थ में वर्णित विषयों की क्रमवार तालिका।

अनुक्रमणी—[स्त्री०] देखो "अनु-क्रमणिका"।

अनुक्रिया—[स्त्री०] अनुकरण।

अनुक्रोश—[पु०] दया। ममता।

अनुक्षण—[क्रि० वि०] प्रतिपल। बरा-बर। लगातार।

अनुग—[वि०] पीछे चलनेवाला। अनुचर। सेवक। साथ चलनेवाला। सहचर। अनुयायी।

अनुगत—[वि०] पीछे जानेवाला। साथ जानेवाला। शरणागत। अधीन। सहायक। अनुकूल।

अनुगति—[स्त्री०] पीछे जाना। साथ जाना। अनुसरण करना। एक साथ दूसरे का मरना।

अनुगम—[पु०] पीछे जाना। साथ जाना। सहायक होना। अधीन होना।

अनुगमन—[पु०] पीछे या साथ जाना। अनुगति। अनुसरण। एक साथ दूसरे का मरना।

अनुगामी—[वि०] साथ या पीछे चलनेवाला। साथी। सहचर। सेवक। अनुचर।

अनुगुण—[वि०] समान गुणोंवाला। अनुकूल। अनुगत। अनुचर। अवि-रोधी। काव्य में एक अलङ्कार।

अनुगृहीत—[वि०] जिस पर अनुग्रह किया गया हो। कृतज्ञ। उपकृत।

अनुग्रह—[पु०] वह प्रसन्नता जिस से किसी की भलाई होती हो। दया। कृपा। अनुकम्पा। प्रसाद। उपदेश। ग्रह (सूर्यादि) के पास।

अनुग्राहक—[वि०] अनुग्रह करने-वाला। उपकारक। दयालु।

अनुचर—[पु०] सेवक। पीछे चलने-वाला। साथ चलनेवाला। सहचर। साथी। [वि०] दूत के पीछे चलनेवाला।

अनुचरी—[स्त्री०] सेविका। सहा-यिका। सखी। साथिन।

अनुचित—[वि०] उचित का उलटा। बेठीक। अयुक्त। अयोग्य। बुरा।

अनुज—[वि०] जो पीछे उत्पन्न हुआ हो। [पु०] छोटा भाई।

अनुजा—[स्त्री०] पीछे उत्पन्न होने-वाली। छोटी बहन।

अनुजीवी—[पु०] सेवक। नौकर। आश्रित।

अनुज्झित—[वि०] जो छोड़ा न गया हो। न त्यागा हुआ। अपरित्यक्त।

अनुज्ञा—[स्त्री०] आज्ञा। आदेश। काव्य में एक अलङ्कार का नाम।

अनुतप्त—[वि०] तपाया हुआ। सताया हुआ। संत्रस्त। पश्चात्ताप करनेवाला। जिसे पछतावा हुआ हो।

अनुतर्ष—[पु०] मदिरा-पान। मद्य। मद्य पीने का प्याला। चाह। पीने की इच्छा।

अनुताप—[पु०] पश्चात्ताप। पछ-तावा। दुःख। रंज। शोक। ताप। तपन।

अनुत्तर—[वि०] जिससे उत्तर (बढ़-कर) कोई और न हो। अतिश्रेष्ठ। निरुत्तर। [स्त्री०] उत्तर दिशा से भिन्न कोई दूसरी दिशा।

अनुदात्त—[पु०] नीचा स्वर। क्षुद्र। तुच्छ।

अनुदार—[वि०] कंजूस। कृपण। संकीर्ण हृदय का। अत्यन्त उदार।

अनुदित—[वि०] जो उदय न हुआ हो। वह समय जिसमें सूर्य पूर्ण रूप से

उदय न हुआ हो । जो कहा गया न हो- अनुच्चारित । अनुक्त ।

अनुदिन—[वि॰] प्रतिदिन । हर रोज। दिनोदिन ।

अनुधावन—[पु॰] पीछे दौड़ना । पीछा करना । खोजना । अनुसन्धान करना ।

अनुध्या—[स्त्री॰] किसी काम में संलग्न हो जाना । किसी बात का बारबार ध्यान या चिन्तन करना । बार-बार सोचना । अनुचिन्तन । आसक्ति । अनुग्रह । कृपा ।

अनुनय—[पु॰] विनय । प्रार्थना । खुशामद । मनाना । शान्त करना । अनुकूल करना ।

अनुनासिक—[वि॰] नाक के स्वर से बोले जाने वाले अक्षर । जैसे-ङ् , ञ् , ण् , न् , म् ।

अनुपद—[अव्य॰] पीछे चलना । पैरों पर पैर रखते हुए (चलना)। क़दम बक़दम (चलना) । [वि॰] पीछे चलनेवाला ।

अनुपदी—[वि॰] अन्वेषण करने वाला । खोजनेवाला ।

अनुपपत्ति—[वि॰] युक्ति अथवा तर्क का अभाव । असंगति । असिद्धि ।

अनुपम—[वि॰] जिसकी उपमा न हो। बेजोड़ । सर्वश्रेष्ठ ।

अनुपमेय—[वि॰] जिसकी उपमा न दी जा सके । अनुपम । बेजोड़ ।

अनुपयुक्त—[वि॰] अनुचित । अयुक्त । अयोग्य । जो ठीक न हो । अन्याय्य ।

अनुपयुक्तता—[स्त्री॰] अनौचित्य । अयोग्यता ।

अनुपयोगिता—[स्त्री॰] निरर्थकता । [illegible]निकम्मापन ।

अनु[illegible]गी—[वि॰] निरर्थक। बेकाम । [illegible] । निकम्मा । बेफ़ायदा ।

अनुपरत—[वि॰] जिसकी कामनाएँ पूर्ण न हुई हों । जो संसार से विरत न हुआ हो । न हटा हुआ ।

अनुपलब्धि—[स्त्री॰] अप्राप्ति । न मिलना । प्रत्यक्ष न होना ।

अनुपसंहारी—[पु॰] न्याय-शास्त्र में वर्णित एक प्रकार का हेत्वाभास (दुष्ट हेतु) ।

अनुपस्थान—[पु॰] अविद्यमानता । ग़ैर हाज़िरी ।

अनुपस्थित—[वि॰] जो उपस्थित (मौजूद) न हो । अविद्यमान । ग़ैरहाज़िर ।

अनुपस्थिति—[स्त्री॰] उपस्थिति का अभाव । अविद्यमानता । अनुपस्थान ।

अनुपात—[पु॰] अङ्कगणित में—एक राशि से दूसरी राशि का सम्बन्ध निकालने की क्रिया (त्रैराशिक)। ज्योतिष में—अक्षांश । पीछे गिरना ।

अनुपातक—[पु॰] एक प्रकार का पाप जो ब्रह्म-हत्या के समान ही माना गया है ।

अनुपान—[पु॰] वह वस्तु जिसमें मिलाकर दवा खाई जाय, अथवा जो दवा के ऊपर से खाई जाय । औषधि का अङ्ग ।

अनुपूर्व—[वि॰] यथाक्रम । सिलसिलेवार । परम्परागत ।

अनुप्रास—[पु॰] काव्य में एक प्रसिद्ध शब्दालंकार जिसमें किसी रचना में एक अक्षर अनेक बार आता है । तुल्य वर्णों की रचना । वर्णमैत्री ।

अनुप्लव—[पु॰] सहायक । सेवक । दास ।

अनुबन्ध—[पु॰] सम्बन्ध । आरम्भ। अवस्था । अटकाव । लगाव । बन्धन । जान-बूझकर अपराध करना । कहे गए का अनुसरण करनेवाला। पुत्र अथवा शिष्य (जो माता, पिता, आचार्य आदि का अनुसरण करता है) । अविच्छिन्न वंशपरम्परा । फल का साधन । व्याकरण में धातु, प्रत्यय आदि के साथ जुड़े हुए वे अक्षर जो प्रयोग में गुण, वृद्धि आदि करने के उद्देश्य से जोड़े जाते हैं और प्रयोग-सिद्धि के समय जिनका लोप हो जाता है । मुख्य के साथ रहने वाला गौण ।

अनुबन्धी—[वि॰] व्यापक । फैला हुआ । सहचर । अनुचर । सेवक । [स्त्री॰] हिचकी (एक रोगविशेष) । चाह । लोभ । तृष्णा ।

अनुबन्ध्य—[वि॰] वह जो मारने के लिए बाँधा गया हो ।

अनुबोध—[पु॰] पीछे हुआ ज्ञान ।

अनुभव—[पु॰] साक्षात्कार । तजुर्बा। उपभोग । प्रत्यक्ष ज्ञान द्वारा निश्चित मत। सिद्धान्त ।

अनुभवी—[वि॰] वह जिसने किसी बात का साक्षात्कार किया हो । भुक्त-भोगी । जिसे अनुभव हो । तजुर्बेकार ।

अनुभाव—[पु॰] प्रभाव । सामर्थ्य। साहित्य में रस को प्रकट करनेवाले हाव-भाव ।

अनुभूत—[वि॰] अनुभव किया हुआ। जिसका प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त हो । परीक्षित । आज़मूदा ।

अनुभूति—[स्त्री॰] अनुभव । समवेदना । ज्ञान । बोध । प्रभाव ।

अनुमत—[वि॰] सम्मत । माना गया । स्वीकृत ।

अनुमति—[स्त्री॰] स्वीकृति । मंजूरी। आज्ञा । अनुज्ञा । सलाह । मान्यता ।

अनुमन्ता—[पु॰] स्वीकृति देनेवाला। अनुज्ञा करनेवाला । माननेवाला ।

अनुमरण—[पु॰] किसी प्रिय व्यक्ति के मरने पर उसके साथ ही मर जाना ।

अनुगमन। पीछे मरना। स्त्रियों का पति के साथ सती होना।

अनुमान—[पु०] अंदाज। अटकल। न्यायशास्त्र में किसी वस्तु के ज्ञान के चार साधनों में से एक। अनुमिति। तुलना से जानना।

अनुमित—[वि०] अनुमान से जाना गया। अन्दाज किया गया।

अनुमिति—[स्त्री०] अनुमान। अंदाज। अटकल। तर्क। तुलना।

अनुमेय—[वि०] जिसका अनुमान किया जाय। अनुमान करने योग्य।

अनुमोदन—[पु०] दूसरे की प्रसन्नता में प्रसन्न होना। और के किये काम को ठीक मानना या बताना। समर्थन। प्रसन्नता। आनन्द।

अनुयायी—[वि०] अनुचर। पीछे चलनेवाला। अनुगामी। सेवक। नौकर।

अनुयोग—[पु०] प्रश्न। पूछना। प्रार्थना। दूषण।

अनुरक्त—[वि०] प्रेम रखनेवाला। प्रीतियुक्त। आसक्त।

अनुरक्ति—[स्त्री०] प्रीति। तल्लीनता। आसक्ति।

अनुरञ्जन—[पु०] प्रसन्न करना। खुश रखना। प्रेम। अनुराग। मनोविनोद।

अनुराग—[पु०] प्रीति। प्रेम। अत्यधिक प्रेम। आसक्ति। लालिमा। लाली। [वि०] बहुत प्रेम करनेवाला।

अनुरागी—[वि०] प्रेमी। अनुराग रखनेवाला। अत्यधिक प्रीति करनेवाला। आसक्त।

अनुराधा—[स्त्री०] ज्योतिष में एक नक्षत्र का नाम।

अनुरूप—[वि०] समान। सदृश। एकजैसा। हूबहू। उपयुक्त। उचित। योग्य।

अनुरूपता—[स्त्री०] समता। सादृश्य। उपयुक्तता। औचित्य। योग्यता। अनुकूलता।

अनुरोध—[पु०] विनयपूर्वक हठ करना। आग्रह। रोक। रुकावट। बाधा।

अनुलाप—[पु०] बार-बार कहना।

अनुलेप—[पु०] शरीर पर तैल आदि सुगंधित द्रव्यों का मलना। उबटन या अंगराग लगाना।

अनुलेपन—[पु०] अनुलेप। लीपना।

अनुलोम—[पु०]अनुक्रम से। यथाक्रम। सिलसिले से। पीछे-पीछेवाले के क्रम से। ऊपर से नीचे की ओर का क्रम।

अनुलोमज—[पु०] अनुलोम क्रम से विवाहित स्त्रीद्वारा उत्पन्न हुई सन्तान।

अनुलोम विवाह—[पु०] उच्च वर्ण के पुरुष का अपने से नीचे वर्ण की स्त्री के साथ हुआ विवाह।

अनुवचन—[पु०] ठीक-ठीक वर्णन करना। प्रवचन।

अनुवर्तन—[पु०] किसी के समान आचरण। अनुकरण करना। अनुगमन। अनुसरण। पीछा करना। पीछे के सूत्र में कहे गए किसी नियम को आगे के सूत्रों में लागू करना (व्याकरण में)। अध्याहार। समीप रहना। साथ रहना।

अनुवर्ती—[वि०] अनुगमन करनेवाला। अनुयायी। समीप रहनेवाला। साथ रहनेवाला।

अनुवाक—[पु०] वेद का एक अंश। वेद के अध्याय का एक भाग। किसी ग्रन्थ का विभाग।

अनुवाद—[पु०] दुबारा कहना। कहे हुए को दूसरे शब्दों में कहना। एक भाषा में वर्णित विषय को दूसरी भाषा में वर्णन करना। भाषान्तर। तर्जुमा। उल्था।

अनुवादक—[पु०] अनुवाद करनेवाला। भाषान्तरकर्ता।

अनुवादित—[वि०] अनुवाद किया हुआ। अनूदित।

अनुवार—[पु०] वारंवार। पुनः पुनः।

अनुवासन—[पु०] किसी वस्तु को सुगन्धित पदार्थ में रखकर सुगन्धयुक्त करना। बसाना। अगर बत्ती आदि जलाकर धूप देना।

अनुवासित—[वि०] बसाया हुआ। सुगन्धित पदार्थों में रखकर सुवासित किया गया। धूप दिया हुआ।

अनुविद्ध—[वि०] सजाया गया। अलंकृत। जड़ाऊ।

अनुवृत्त—[वि०] फैला हुआ। प्रेमी। पाला-पोषा। पीछा करनेवाला। व्याकरण में—पिछले सूत्र में से लाया गया पद।

अनुवृत्ति—[स्त्री०] पीछे-पीछे फिरना। दूसरे की इच्छानुसार वर्तना। अनुगमन। अनुकूलता। सेवा। अनुरोध। व्याकरण में—किसी सूत्र का अर्थ स्पष्ट करने के लिए पिछले सूत्र में से किसी पद को ले आना।

अनुव्रज्या—[स्त्री०] सेवा। पीछे-पीछे चलना।

अनुशय—[पु०] पछतावा। पश्चात्ताप। पुरानी शत्रुता। खुन्स। अत्यधिक वैर। खोज करने योग्य।

अनुशयाना—[स्त्री०] साहित्य में एक प्रकार की परकीया नायिका।

अनुशयी—[वि०] पश्चात्ताप करनेवाला।

अनुशासक—[पु०] व्यवस्था करने वाला। नियन्त्रण करनेवाला। आज्ञा अथवा उपदेश देनेवाला। शिक्षक।

अनुशासन—[पु०] व्यवस्था। नियन्त्रण। समझाना। उपदेश। आज्ञा। शिक्षा। विवरण।

अनुशीलन—[पु०] विचारना। स्वय न हुआ मनन करना। बार-बार अभ्यास करनेत्म सं

भक्ति पूर्वक सेवा करना।

अनुशोक—[पु०] पश्चात्ताप। पछतावा। खेद।

अनुशोचन—[पु०] पश्चात्ताप, खेद, शोक (करना)।

अनुश्रव [पु०] जिसका गुरुपरम्परा से सुन कर अभ्यास किया जाय। वेद। जो केवल सुना जाय। बुद्धिमान्।

अनुषङ्ग—[पु०] समागम। सम्बन्ध। प्रसङ्ग। दया। प्रेम। अनुराग। आसक्ति। प्रणाम। प्रसङ्ग मिलाने के लिए किसी वाक्य या पद को दूसरे वाक्य में जोड़ लेना।

अनुषङ्गिक—[वि०] अनुषङ्ग (सम्बन्ध) से आया हुआ। प्रासङ्गिक। साथ चलने या रहने वाला।

अनुष्टुप्—[पु०] एक छन्द का नाम जिसके प्रत्येक चरण में आठ अक्षर होते हैं। [स्त्री०] सरस्वती।

अनुष्ठाता—[पु०] अनुष्ठान करनेवाला। नियमबद्ध होकर कोई कार्य करनेवाला। काम में लगनेवाला।

अनुष्ठान—[पु०] शास्त्रविहित कार्य करना। कार्यारंभ। किसी इष्ट-सिद्धि के लिए पूजा-पाठ या यज्ञ-होमादि करना। पुरश्चरण। नियमबद्ध होकर कार्य करना।

अनुष्ठित—[वि०] प्रारम्भ किया हुआ।

अनुष्ण—[वि०] जो उष्ण (गरम) न हो। ठंढा। आलसी। [पु०] कमल।

अनुसन्धान—[पु०] खोजना। तलाशना। पूछ-ताछ करना। सोचना। प्रयत्न करना।

अनुसरण—[पु०] अनुगमन। अनुकरण। पीछे चलना। अनुकूल होना। एकजैसा होना। नकल करना। परिणाम। पद्धति।

अनुसरना—[क्रि० वि०] अनुसरण करना।

अनुसार—[पु०] देखो 'अनुसरण'। अनुकूल। समान। सदृश।

अनुस्मृति—[स्त्री०] याद। स्मरण।

अनुस्वार—[पु०] स्वरों के साथ बोला जानेवाला एक अनुनासिक चिह्न (ं)।

अनुहरण—[पु०] किसी के सदृश होना। आकार, प्रकार, चेष्टा आदि द्वारा किसी का अनुसरण करना। नकल करना। समानधर्मी होना।

अनुहार—[वि०] तादृश। तुल्य। समान। आकार-प्रकार, चेष्टा आदि से किसी जैसा। अनुसार। अनुकूल। समान धर्म वाला।

अनुहारी—[वि०] अनुहरण करने वाला। मिलता-जुलता। सदृश।

अनुहारिणी—[स्त्री०] अनुहरण या अनुसरण करनेवाली। नकल करनेवाली। मिलती-जुलती।

अनूक—[पु०] पिछला जन्म। पूर्व जन्म। कुल। स्वभाव।

अनूचान—[पु०] साङ्गोपाङ्ग वेदों को पढ़नेवाला। जो वेदों का अनुवचन (ठीक-ठीक वर्णन) कर सकता हो। सदाचारी।

अनूठा—[वि०] अद्भुत। अनहोना। अनोखा। बहुत बढ़िया।

अनूठापन—[पु०] बढ़ियापन। अनोखापन।

अनूढ—[वि०] अविवाहित।

अनूढा—[स्त्री०] अविवाहिता। वह अविवाहिता स्त्री जो किसी पुरुष से प्रेम करती हो।

अनूदित—[वि०] उक्त। कथित। कहा हुआ। अनुवाद किया हुआ।

अनून—[वि०] अन्यून। पूर्ण। परिपूर्ण। भरा हुआ। जो कम न हो। अनिश्चित।

अनूप—[वि०] अनुपम। बेजोड़। अत्युत्तम। [पु०] वह देश जहाँ जल की अधिकता हो। जल-प्राय प्रदेश।

अनूपज—[पु०] अनूप देश में उत्पन्न होने वाला—अदरक। [वि०] अधिक जल में पैदा होने वाली कोई भी वस्तु।

अनूरु—[पु०] सूर्य का सारथि। अरुण। इसके ऊरु नहीं होते, ऐसा पुराणों में लिखा है।

अनूरु सारथि—[पु०] जिसका रथ हाँकनेवाला अनूरु है वह। सूर्य।

अनृच—[पु०] जिसने वेदों को नहीं पढ़ा। जिसका उपनयन (यज्ञोपवीत) न हुआ हो वह बालक।

अनृत—[पु०] जो ऋत (सत्य) न हो। असत्य। झूठ।

अनेक—[वि०] एक से भिन्न दो या बहुत से। नाना।

अनेकता—[स्त्री०] अनेकपन। भिन्न-भिन्नपन। प्रचुरता। बहुतायत।

अनेकप—[पु०] एक से अधिक अंगों से पीनेवाला-हाथी ("सूँड़ और मुँह दोनों अंगों से पीने के कारण")।

अनेकरूप—[वि०] बहुत से रूपोंवाला। चित्र-विचित्र। नाना प्रकार के रूपों वाला।

अनेकविध—[वि०] बहुत भाँति का। नाना प्रकार का।

अनेकान्त—[वि०] जिसके सम्बन्ध में एक निश्चय न हो। जिससे अधिक और दूसरा न हो।

अनेकान्तवादी—[पु०] एक निश्चित बात न कहनेवाला। यह प्रायः बौद्धों के एक सम्प्रदाय के लिए व्यवहृत होता है। जिसके अनुयायी "ईश्वर है या नहीं" ऐसा कुछ निश्चयपूर्वक नहीं मानते।

अनेकार्थ—[वि०] बहुत से अर्थोंवाला।

अनेडमूक—[वि०] बिलकुल बहरा और गूँगा। शठ। मक्कार।

अनेहस्—[पु०] काल। समय।

अनैकान्तिक--[पु०] किसी बात की सिद्धि के लिए दिया गया वह हेतु जिसकी साध्य में नियत व्याप्ति न हो। दुष्ट हेतु। व्यभिचारी हेतु।

अनैक्य--[पु०] एकता का अभाव। मत-विरोध। फूट।

अनोकह--[पु०] वृक्ष। पेड़।

अनोखा--[पु०] अद्भुत। विचित्र। अनूठा। सुन्दर। नया। जैसा पहले न देखा हो।

अनोखापन--[पु०] सुन्दरता। नवीनता। अनूठापन। विचित्रता।

अनौचित्य--[पु०] अनुचितपन। अनुपयुक्तता।

अन्त--[पु०] स्वभाव। स्वरूप। नाश। प्रलय। समाप्ति। सीमा। कोना। निश्चय। अवयव। मनोहर। निकट। परिणाम। बाहर। दूसरी जगह।

अन्तक--[पु०] अन्त करने वाला। काल। मौत। यमराज। एक प्रकार का ज्वर। ईश्वर। रुद्र।

अन्तकर--[पु०] अन्त या नाश करने वाला। काल। यम। अन्तक।

अन्तकारक--[पु०] अन्त करनेवाला। नाश करनेवाला। संहारक। मार डालनेवाला।

अन्तपाल--[पु०] ड्योढ़ीवान। द्वारपाल। दरवान। राजरक्षा करनेवाला।

अन्तकारी--[पु०] देखो "अन्तकारक"।

अन्तकाल--[पु०] अन्तिम समय। मरण। मौत।

अन्तकृत--[पु०] अन्त करनेवाला। यमराज। अन्तक।

अन्तक्रिया--[स्त्री०] मृतक-संस्कार। अन्त्येष्टि कर्म। मरने के पश्चात् किये जाने वाले शव के दाहादि कर्म।

अन्तग--[वि०] पार जानेवाला। पारंगत। किसी बात को अच्छे प्रकार जाननेवाला। निपुण।

अन्तगति--[स्त्री०] अन्तिम अवस्था। अन्तकाल। मृत्यु। मौत।

अन्तःकरण--[पु०] भीतर रहनेवाला ज्ञान का साधन। मन, बुद्धि, चित्त आदि नामों से बोली जानेवाली भीतर की इन्द्रिय जिसके द्वारा सुख-दुख आदि का ज्ञान होता है। संकल्प-विकल्प,स्मरण आदि का साधन। मन। विवेक।

अन्तःकुटिल--[पु०] भीतर से टेढ़ा। शंख-जिसके भीतर घुमावदार छिद्र होता है। जिसका मन मैला हो।

अन्तःपट--[पु०] अन्दर का पर्दा। भीतरी पर्दा।

अन्तःपटी--[स्त्री०] चित्रपट। नाटक का पर्दा।

अन्तःपवित्रा--[स्त्री०] पवित्र हृदयवाली। निर्मल चित्त की।

अन्तःपुर--[पु०] राज-महल का वह भाग जिसमें रानियां रहती हों। रनिवास। अन्तःपुर में निवास करने के कारण राज-महिलाएँ भी।

अन्तःपुरिक--[पु०] अन्तःपुर की रक्षा करनेवाला। कंचुकी।

अन्तःपुरी--[पु०] अन्तःपुर में रहनेवाला।

अन्तःशरीर--[पु०] भीतरी शरीर। लिङ्ग शरीर।

अन्तःशल्य--[पु०] मर्मवेधी। हृदय में चुभनेवाला। भीतर सालनेवाला।

अन्तःशुद्धि--[पु०] अन्तःकरण की पवित्रता। मन की शुद्धता। हृदय की स्वच्छता।

अन्तःसार--[पु०] जिसमें कुछ तत्त्व हो। जो खोखला न हो। काम का। सारगर्भित। प्रयोजनीय। तत्त्व पूर्ण।

अन्तःसंज्ञा--[पु०] वह जीव जो सुख-दुखादि का भीतर ही भीतर अनुभव करे पर उसे बाहर प्रकट न कर सके—यथा वृक्षों में।

अन्तःसत्वा--[स्त्री०] जिसके भीतर (गर्भ में) प्राणी हो वह स्त्री। गर्भिणी।

अन्तःस्वेद--[पु०] मस्त हाथी। ऐसा हाथी जिसके मद बहता हो।

अन्तर्--[पु०] मध्य। बीच। स्वीकार। प्राप्त। चित्त।

अन्तर--[पु०] अवकाश। बीच। अलगाव। दूरी। भिन्नता। आड़। परदा। छिद्र। छेद। छिप जाना। हद। सीमा। अवधि। भीतर। मन। चित्त। बिना। बाहर। पहनने का कपड़ा। विशेष।

अन्तर अयन--[पु०] एक देश का नाम। काशी का एक विशेष तीर्थस्थान, अन्तर्गृही या अन्तर्गृह जिसमें एक के भीतर एक सात परिक्रमाएँ हैं।

अन्तर अग्नि--[पु०] भीतर अर्थात् पेट में की अग्नि। जठराग्नि—जिसमें खाए हुए पदार्थ हज़म होते हैं।

अन्तरङ्ग--[वि०] अपना। निजी। आत्मीय। स्वजन। भीतरी बातों को भी जाननेवाला।

अन्तरचक्र--[पु०] तन्त्र-शास्त्रोक्त शरीर के भीतर कल्पित छः चक्र।

अन्तरछाल--[स्त्री०] भीतर की छाल। झिल्ली।

अन्तरज्ञ--[पु०] भीतर की बात जाननेवाला। हृदय का भेद समझनेवाला। भेद जाननेवाला।

अन्तर दिशा--[स्त्री०] दो दिशाओं के बीच की दिशा। उपदिशा। कोण।

अन्तर पट--[पु०] ओट। परदा। छिपाव। विवाह-संस्कार के समय कुछ विशिष्ट आहुतियाँ देने के समय अग्नि और वर-कन्या के बीच में आड़ करने के लिए ताना जाने वाला वस्त्र।

अन्तर पुरुष—[पु०] आत्मा । परमात्मा ।
अन्तर प्रभव—[पु०] वर्णसंकर ।
अन्तर शायी—[पु०] जीवात्मा ।
अन्तर सञ्चारी—[पु०] भीतर संचरण करने वाले मनोविकार-विशेष ।
अन्तरस्थ—[वि०] अन्दर रहनेवाला । भीतर का ।
अन्तरा—[अव्य०] निकट । मध्य । बिना । सिवा । पृथक् । अतिरिक्त । [पु०] गेय पद में टेक (पहली पक्ति) के अतिरिक्त अन्य पद या चरण । प्रातः काल और सन्ध्या काल के बीच का समय—दिन ।
अन्तरात्मा—[पु०] भीतर वर्तमान आत्मा । जीवात्मा । अन्तःकरण । सर्वव्यापक परमात्मा ।
अन्तरापत्या—[स्त्री०] जिस के गर्भ में बच्चा हो । गर्भिणी ।
अन्तराय—[पु०] विघ्न । रुकावट । योगसिद्धि में आनेवाले विघ्न जो नौ प्रकार के होते हैं ।
अन्तराल—[पु०] बीच । मध्य । घिरा हुआ स्थान ।
अन्तरिक्ष—[पु०] आकाश । खाली स्थान । शून्य । पृथ्वी के चारों ओर का खाली स्थान जिसमें सूर्यादि नक्षत्र घूमते हैं अथवा पक्षी और मेघ उड़ते हैं ।
अन्तरित—[वि०] बीच में किया हुआ । आड़ में लिया हुआ । छिपा हुआ । ढका हुआ । तिरस्कृत । लुप्त । गुप्त ।
अन्तरीक्ष—[पु०] देखो "अन्तरिक्ष" ।
अन्तरीप—[पु०] द्वीप । टापू । पृथ्वी का वह पतला भाग जो समुद्र में दूर तक चला गया हो ।
अन्तरीय—[पु०] धोती । अधोवस्त्र । [वि०] भीतर का । भीतरी ।
अन्तर्गडु—[वि०] निरर्थक । व्यर्थ । निष्प्रयोजन । बेकार ।
अन्तर्गत—[वि०] बीच में आया हुआ । शामिल । सम्मिलित । भीतरी । गुप्त । हृदय के भीतर का ।
अन्तर्गति—[स्त्री०] इच्छा । मन का भाव । चित्तवृत्ति । मनःकामना ।
अन्तर्गृह—[पु०] घर का भीतरी भाग । घर के भीतर घर । कोठरी । स्थान-विशेष ।
अन्तर्गृही—[पु०] तीर्थ के अन्तर्गत आने वाले स्थान । काशी का एक तीर्थ-विशेष ।
अन्तर्जठर—[पु०] पेट के भीतर ।
अन्तर्जल—[पु०] जल के भीतर । जल में खड़े होकर जपा जानेवाला अघमर्षण मन्त्र ।
अन्तर्जानु—[वि०] दोनों हाथों को घुटनों के बीच में कर के बैठना ।
अन्तर्ज्योति—[पु०] अन्तरात्मा । ज्योति के समान भीतर प्रकाश करनेवाला । परमात्मा ।
अन्तर्दशा—[स्त्री०] फलित ज्योतिष के अनुसार मनुष्य-जीवन में ग्रहों के नियत भोग-काल ।
अन्तर्दशाह—[पु०] मृत्यु के पश्चात् दश दिन तक होने वाले कर्म ।
अन्तर्दाह—[पु०] शरीर के भीतर की जलन । देह के भीतर का सन्ताप ।
अन्तर्दृष्टि—[स्त्री०] भीतरी आँख । ज्ञान की आँख । हिये की आँख । आत्म-विचार ।
अन्तर्द्वार—[पु०] घर के बीच का दरवाजा । गुप्त दरवाजा । चोर दरवाजा ।
अन्तर्धान—[पु०] छिपना । ओझल हो जाना । लोप । अदर्शन । अलक्षित होना ।
अन्तर्द्धि—[पु०] ढकना । आच्छादन । छिपना । व्यवधान । बीच में आना ।
अन्तर्निविष्ट—[वि०] भीतर बैठा हुआ । हृदय या मन में जमा हुआ । अन्तःकरण में घुसा हुआ ।
अन्तर्बोध—[पु०] आत्मज्ञान । आन्तरिक अनुभव ।
अन्तर्भाव—[पु०] शामिल होना । मिल जाना । भीतर समावेश । तिरोभाव । छिपाव । नाश । हृदय का भाव । भीतरी मतलब । हार्दिक अभिप्राय ।
अन्तर्भावना—[स्त्री०] सोच-विचार । ध्यान । चिन्तन ।
अन्तर्भावित—[वि०] भीतर किया हुआ । मिलाया हुआ । छिपाया गया । शामिल । अन्तर्गत ।
अन्तर्भूत—[वि०] बीच में आया हुआ । अन्तर्गत । शामिल ।
अन्तर्मना—[वि०] एकाग्रचित्त । व्याकुल चित्त । विकल । उदास ।
अन्तर्मल—[पु०] चित्त का विकार । मन का दोष । बुरी वासना । पेट के भीतर का मैला ।
अन्तर्मुख—[वि०] भीतर की ओर मुंह वाला । जिसका छेद भीतर की तरफ हो । जो बाहर से हट कर भीतर की ओर प्रवृत्त हो गया हो ।
अन्तर्यामी—[पु०] भीतर की जाननेवाला । ईश्वर । वायु ।
अन्तर्लापिका—[स्त्री०] पहेली का एक भेद । वह पहेली जिसका उत्तर उसी के अक्षरों में आ जाय । बहिर्लापिका का उलटा ।
अन्तर्लीन—[वि०] भीतर छिपा हुआ । विलीन । मग्न ।
अन्तर्वती—[स्त्री०] गर्भिणी । भीतर वाली ।
अन्तर्वत्नी—[स्त्री०] गर्भिणी । गर्भवती ।
अन्तर्वा (णि) णी—[पु०] अनेक शास्त्रों का ज्ञाता । विद्वान् । पण्डित ।
अन्तर्वाष्प—[पु०] भीतरी दुःख

जिसमें आँसू बाहर नहीं निकलते।

अन्तर्विकार—[पु०] भूख-प्यास आदि का अनुभव। शरीर का धर्म। भीतरी विकार।

अन्तर्वेद—[पु०] गंगा और यमुना के बीच का प्रदेश। दो नदियों के बीच का देश। दोआबा। वह देश जिस में यज्ञवेदियाँ अधिक हों।

अन्तर्वेदी—[वि०] अन्तर्वेद प्रदेश का निवासी। देखो "अन्तर्वेद"।

अन्तर्वेशिक—[पु०] अन्तःपुर-रक्षक। रनिवास की रखवाली करनेवाला।

अन्तर्हास—[पु०] मन ही मन हँसना। भीतरी हँसी। अप्रकट हास्य। गूढ़ हास्य।

अन्तर्हित—[वि०] छिपा हुआ। गुप्त। अदृश्य। अन्तर्हित। तिरोहित। अन्तर्धान।

अन्त (न्ते) वासी—[पु० शिष्य। चेला। विद्यार्थी। पास रहनेवाला।

अन्तशय्या—[स्त्री०] मृत्युशय्या। भूमि-शय्या। श्मशान। मरघट। मरना। मृत्यु।

अन्तस्—[पु०] चित्त। मन। अन्तःकरण।

अन्त समय—[पु०] मरने का समय। अन्त काल।

अन्तस्ताप—[पु०] मानसिक क्लेश। भीतरी दुःख। आन्तरिक सन्ताप।

अन्तस्थ—[वि०] भीतर ठहरा हुआ। भीतर का। भीतरी। बीचवाला। मध्यस्थित। वर्णमाला के य र ल व ये चार वर्ण।

अन्तस्थित—[वि०] हृदयस्थित। भीतरी। अन्तःकरण का। मन का।

अन्तः सलिला—[स्त्री०] जिसके जल का प्रवाह बाहर न दीख पड़े। सरस्वती अथवा फल्गू नदी।

अन्ताव (शा) सायी—[पु०] ग्राम से बाहर बसनेवाले अन्त्यज लोग। चाण्डाल। अस्पृश्य। नख-केश काटने-वाला—नाई। आत्मतुष्टि के लिए जीव-हिंसा करनेवाला। अन्त (वृद्धावस्था) में तत्त्व निश्चय करनेवाला एक मुनिविशेष।

अन्तिक—[वि०] जो पास रहे। पास। समीप। [पु०] चूल्हा। एक औषधिविशेष।

अन्तिका—[स्त्री०] बड़ी बहन के लिए बोला जानेवाला सम्बोधन-शब्द। यह प्रायः नाटकों में ही व्यवहृत होता है।

अन्तिकाश्रय—[पु०] आश्रय स्थान। पास रहनेवाला।

अन्तिम—[वि०] आखिरी। सबसे पिछला। अन्त में होने या रहनेवाला। सर्वोत्कृष्ट।

अन्तेवासी—[पु०] समीप रहनेवाला। शिष्य। विद्यार्थी।

अन्त्य—[पु०] सबसे पीछे का। आखिरी। अन्तिम। जो सबसे पीछे गिना जाय। यथा—वर्णों में चाण्डाल, नक्षत्रों में रेवती, वर्णों में 'ह', संख्याओं में (१०००००००००००००००) दस सागर। यमराज।

अन्त्य कर्म—[पु०] मृतक की अन्तिम दाह आदि क्रिया।

अन्त्यज—[पु०] जो अन्त्य वर्ण में उत्पन्न हो। शूद्र।

अन्त्य जन्मा—[पु०] जिसका अन्त में जन्म हुआ हो। ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य के पश्चात् ब्रह्मा के चरण से उत्पन्न होने के कारण—शूद्र अन्त्यज कहाता है।

अन्त्य वर्ण—[पु०] ब्राह्मणादि वर्णों में अन्त्य का वर्ण—शूद्र। अकारादि वर्णों में अन्तिम वर्ण 'ह'। किसी पद का अन्तिम अक्षर।

अन्त्य विपुला—[स्त्री०] छन्दःशास्त्र में आर्या छन्द का एक भेद।

अन्त्या—[स्त्री०] चण्डाली।

अन्त्याक्षर—[पु०] वर्णमाला, अथवा किसी शब्द का अन्तिम अक्षर।

अन्त्याक्षरी—[स्त्री०] एक प्रतियोगिता, जिसमें एक प्रतियोगी के पढ़े हुए पद्य के अन्तिम अक्षर से आरम्भ होनेवाला पद्य दूसरा प्रतियोगी पढ़ता है।

अन्त्यानुप्रास—[पु०] पद्य में पद के अन्तिम अक्षरों की समान रूपता। तुक।

अन्त्यावसायी—[पु०] श्मशान में रहकर मृतकों का कफ़न आदि लेनेवाला। मुरदाफ़रोश। चाण्डाल। वह अतिशूद्र जिनका स्मृतियों में गाँव से बाहर बसने का विधान है। स्मृतियों में चाण्डाल, श्वपच, क्षत्ता, सूत, वैदेहक, मागध और आयोगव—ये सात अन्त्यावसायी माने हैं।

अन्त्येष्टि—[पु०] मृतक के शवदाहादि कार्य। अंत्यक्रिया।

अन्त्र—[पु०] आंत। अँतड़ी। देह का बन्धन। पुरीतती नाड़ी।

अन्त्रकूजन—[पु०] आँतों का गुड़-गुड़ाना। आंतों का शब्द।

अन्त्रवृद्धि—[स्त्री०] एक रोग जिसमें आँतें बढ़ जाती हैं। आँत उतरने का रोग।

अन्दु—[पु०] स्त्रियों का पैर में पहनने का भूषण। पायजेब। पैंजना। हाथी के पैर में बाँधने की जंजीर। आलान।

अन्दुक—[पु०] देखो 'अन्दु'।

अन्दू—[स्त्री०] हाथियों के बाँधने की साँकल। निगड़। आलान। स्त्रियों के पैरों का भूषण। पायजेब।

अन्ध—[उभ०] अंधा। नेत्रहीन। जिसकी आँखों में देखने की शक्ति न हो। अंधकार। अँधेरा। जल। पानी। मूर्ख।

अविवेकी। बुद्धिहीन। मतवाला। मस्त।

अन्धक—[पु०] अंधा। एक देश का नाम। यदुवंश का एक राजा। महाताप नामक ऋषि। एक दैत्य। अँधेरा।

अन्धकरिपु—[पु०] अंधक नामक दैत्य के शत्रु-महादेव। अँधेरे के शत्रु-सूर्य। चन्द्रमा। अग्नि।

अन्धकार—[पु०] अँधेरा। अज्ञान। उदासी।

अन्धकूप—[पु०] अंधा कूआँ। वह कूआँ जिसका पानी सूख गया हो और जिसमें कूड़ा करकट भर गया हो। नरक का एक भेद। मोह।

अन्धड़—[पु०] आँधी। तूफ़ान।

अन्धतमस्—[पु०] गहरा अँधेरा। महान् अंधकार। नरक विशेष।

अन्धता—[स्त्री०] नेत्रहीनता। अंधापन।

अन्धतामिस्र—[पु०] महान् अंधकार-युक्त एक नरक। मृत्यु का भय। सांख्य-शास्त्र में इच्छाविघात के पांच भेदों में से एक का नाम।

अन्ध परम्परा—[पु०] बिना सोचे-विचारे पुरानी प्रथा के अनुसार काम करते चले जाना। भेड़ियाधसान।

अन्धमूषिका—[स्त्री०] ओषधि-विशेष जिससे अन्धापन भी जाता रहता है।

अन्ध विश्वास—[पु०] बिना समझे-बूझे किसी की बात को मान लेना। अविवेकपूर्ण धारणा।

अन्धस्—[पु०] अन्न। भात। पकाया हुआ चावल।

अन्ध सैन्य—[पु०] युद्ध कला बिना सीखी हुई सेना।

अन्धिका—[स्त्री०] रात। रात्रि। एक प्रकार का जूए का खेल। एक ओषधि। सिद्धा। आँखों का एक रोग, आदुली।

अन्धु—[पु०] कूप। कूआँ।

अन्धुल—[पु०] शिरीष का वृक्ष। सिरस का पेड़।

अन्धेर—[पु०] अन्याय। अत्याचार। अंधाधुन्धी। कुप्रबन्ध। गड़बड़।

अन्धेर खाता—[पु०] अव्यवस्था। कुप्रबन्ध। गड़बड़। अविचार।

अन्ध्र—[पु०] एक प्रदेश का नाम। एक राजवंश का नाम। बहेलिया। चिड़ीमार। शिकारी।

अन्ध्र भृत्य—[पु०] मगध देश के एक पुराने राजवंश का नाम।

अन्न—[पु०] जिसके द्वारा प्राणी जीवित रहता है। गेहूँ, जौ, चावल आदि। भात। पृथ्वी। सूर्य। प्राण। जल। विष्णु।

अन्नकूट—[पु०] अन्न का ढेर। अन्न का पहाड़। एक त्योहार जो कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा को मनाया जाता है।

अन्न कोष्ठ—[पु०] अन्न रखने का स्थान। कोठार। बुखारी। कुठीला। खास।

अन्नक्षेत्र—[पु०] जहाँ अन्न बाँटा जाता हो। अन्नसत्र। जहाँ भूखों को बिना मूल्य भोजन दिया जाय।

अन्न-जल—[पु०] भोजन और पानी। आबदाना। जीविका। संयोग। इत्तिफ़ाक़।

अन्नदाता—[पु०] अन्न देनेवाला। पालन-पोषण करनेवाला। स्वामी।

अन्नदोष—[पु०] अधिक, दूषित या निषिद्ध अन्न खाने से उत्पन्न हुआ दोष।

अन्नद्वेष—[पु०] अन्न से अरुचि। भूख न लगना।

अन्नपूर्णा—[स्त्री०] एक देवता। यह अन्न की अधिष्ठात्री मानी जाती हैं। पार्वती। दुर्गा।

अन्नप्राशन—[पु०] हिन्दुओं का एक संस्कार जिसमें बच्चे को पहले पहल अन्न चटाया जाता है। अन्नाशन। यह बालक के जन्म से छठे महीने में किया जाता है।

अन्नमय [कोश]—[पु०] स्थूल शरीर जो अन्न से ही बनता है। अन्न का विकार।

अन्न-विकार—[पु०] अन्न का विकार। खाने के बाद परिवर्तित हुआ अन्न का रूप—रस, रक्त, मांस इत्यादि।

अन्नसत्र—[पु०] वह स्थान जहाँ भूखों को अन्न बाँटा जाता है। अन्न-क्षेत्र।

अन्ना—[स्त्री०] धाय। दाई।

अन्नाद—[पु०] अन्न खानेवाला। अन्नाहारी। सबको ग्रहण करनेवाला—ईश्वर। विष्णु।

अन्नाशन—[पु०] देखो "अन्न-प्राशन"।

अन्य—[वि०] भिन्न। दूसरा। ग़ैर। पराया। और कोई। इतर।

अन्यतः—[अ०] किसी दूसरे से। अन्यस्थान से। और जगह से।

अन्यतम—[वि०] बहुतों में से एक।

अन्यतर—[वि०] दो में से एक।

अन्यत्र—[अ०] अन्यस्थान में। दूसरी जगह। बिना। अतिरिक्त।

अन्यथा—[अ०] उलटा। और का और। कुछ का कुछ। विपरीत। झूठ। असत्य। दुष्ट। नहीं तो।

अन्यथानुपपत्ति—[स्त्री०] किसी के अभाव में अन्य वस्तु के अस्तित्व की संभावना या अनुमान। जैसे कहा जाय कि यह मोटा साधु रोटी नहीं खाता, तो यहाँ अनुमान किया जाता है कि वह फल, दही, दूध आदि अवश्य खाता है, क्योंकि बिना कुछ खाए मोटा हो ही नहीं सकता।

अन्यथासिद्ध—[पु०] वह कारण जिसके

बिना भी कार्य की सिद्धि हो सके। जैसे घड़ा बनाने में कुम्हार, चाक, गधा, मिट्टी आदि कारण हैं, परन्तु कभी गधे की सहायता बिना भी घड़ा बन सकता है। कुम्हार स्वयं भी मिट्टी ला सकता है।

अन्यदा—[अ०] और समय। फिर कभी। दूसरे वक्त।

अन्यदेशीय—[वि०] विदेशी। दूसरे देश का। परदेशी।

अन्य पुरुष—[पु०] दूसरा आदमी। गैरशख्स। व्याकरण में सर्वनाम का एक भेद।

अन्यपुष्ट—[पु०]वह जिसका पालन-पोषण अन्य द्वारा हुआ हो। कोकिल। कोयल।

अन्यपूर्वा—[स्त्री०] वह स्त्री जिसका एक के साथ विवाह या वाग्दान हो चुकने पर दूसरे के साथ विवाह हुआ हो। पुनर्भू। स्वैरिणी।

अन्यभूत—[पु०] देखो "अन्यपुष्ट"।

अन्यभृत—[पु०] देखो "अन्यपुष्ट"।

अन्यमन—[वि०] उदास। चिन्तित। अनमना। जिसका कहीं मन न लगता हो।

अन्यमनस्क—[वि०]देखो "अन्यमन"।

अन्यसुरतिदुःखिता—[स्त्री०] दे० "अन्यसंभोग-दुःखिता"।

अन्यसंभोग-दुःखिता—[स्त्री०] साहित्य में नायिका का एक भेद। वह नायिका जो पति में अन्य स्त्री के साथ संभोग के चिह्न देखकर दुखी होती है।

अन्यादृश—[वि०] और प्रकार का। दूसरी तरह का।

अन्यापदेश—[पु०] वह कथन जो देखने में तो किसी और से कहा जाय, पर साधर्म्य से वह कथित व्यक्ति या वस्तु से भिन्न दूसरों पर घट सके। अन्योक्ति। व्यंग्योक्ति।

अन्याय—[पु०] न्याय के विपरीत। बेइंसाफी। जुल्म। अत्याचार। अनीति। असङ्गत। औचित्यशून्य। न्याय से उलटा।

अन्यायी—[वि०] अन्याय करनेवाला। अत्याचारी। नियमविरुद्ध करनेवाला। ज़ालिम।

अन्याय्य—[वि०] अयोग्य। अनुचित।

अन्यून—[वि०] बहुत। काफी। जो कम न हो।

अन्येद्यु—[अ०] और दिन। दूसरे दिन।

अन्योक्ति—[स्त्री०] देखो 'अन्यापदेश'। साहित्य में यह एक अलंकार होता है।

अन्योदर्य—[पु०] सौतेला भाई। दूसरी माँ के पेट से उत्पन्न हुआ।

अन्योन्य—[वि० परस्पर। आपस में। साहित्य में एक अलंकार।

अन्योन्याभाव—[पु०] आपस में एक दूसरे का अभाव। किसी एक वस्तु का दूसरी में न होना। जैसे घट में पट या पट में घट का सदा अभाव रहता है।

अन्योन्याश्रय—[पु०] परस्पर एक दूसरे का आश्रय। एक को दूसरे की अपेक्षा। आपस में सापेक्ष। एक वस्तु के ज्ञान के लिए दूसरी वस्तु के ज्ञान की आवश्यकता। जैसे प्रकाश को जानने के लिए अन्धकार का ज्ञान।

अन्वक्ष—[उभ०] आँख के सामने। प्रत्यक्ष। साक्षात्। पीछा करना। अनुपद।

अन्वय—[पु०] वंश। खानदान। परस्पर सम्बन्ध। संयोग। मेल। सिलसिला। तारतम्य। पद्यों के शब्दों को वाक्य-रचना के अनुसार यथास्थान रखना। कार्य में कारण का अनुसरण करना। भिन्न-भिन्न वस्तुओं को साधर्म्य के अनुसार एक श्रेणी में लाना।

अन्वयबोध—[पु०] पदों द्वारा उपस्थित पदार्थों का ज्ञान।

अन्वय व्यतिरेकी—[वि०] न्यायशास्त्र का एक प्रसिद्ध सिद्धांत।

अन्वय व्याप्ति—[स्त्री०] अन्वय के साथ नियमपूर्वक रहना। जैसे जहाँ धूँआ होगा वहाँ आग भी होगी।

अन्वयसर्ग—[पु०] 'जैसा चाहो वैसा करो'—ऐसी आज्ञा।

अन्ववाय—[पु०] सन्तान। वंश। कुल।

अन्वयी—[उभ०] एक ही वंश का। अपने खानदान का। सम्बद्ध।

अन्वर्थ—[उभ०] अर्थ के अनुरूप। सार्थक।

अन्वष्टका—[स्त्री०] एक प्रकार का श्राद्ध जो साग्निक लोग पौष, माघ, फाल्गुन और आश्विनमास में कृष्णपक्ष की नवमी के दिन करते हैं।

अन्वह—[पु०] प्रतिदिन। हर रोज़।

अन्वाचय—[पु०] मुख्य काम करने के साथ-साथ किसी गौण काम को भी करने की आज्ञा। जैसे—स्नान करने जाओ, यदि मार्ग में शाक बिकता हुआ मिले तो शाक भी लेते आना।

अन्वार्ज—[अ०] दुर्बल की सहायता करना।

अन्वादेश—[पु०] किसी के एक कार्य पूरा कर लेने पर उससे दूसरा काम कराने के लिए आदेश देना, यथा—'इसने हिन्दी पढ़ ली, अब इसे संस्कृत पढ़ाओ'। यहाँ हिन्दी पढ़ना समाप्त कर चुकने पर उसे संस्कृत पढ़ाने की आज्ञा देना अन्वादेश हुआ।

अन्वाधान—[पु०] यज्ञ के लिए अग्न्याधान कर चुकने पर अग्नि सुरक्षित रखने के लिए उसमें लकड़ी आदि डालने की क्रिया।

अन्वाधि—[पु०] किसी को कोई वस्तु देकर "यह वस्तु अमुक व्यक्ति को दे

देना"–ऐसा कहना।

अन्वाधेय—[पु०] स्त्रियों की सम्पत्ति-विशेष। वह धन या सामग्री जो विवाह हो चुकने पर लड़की को उसके पिता या पति की ओर से दी जाती है।

अन्वासन—[पु०] पीछे बैठना। किसी के पीछे बैठकर उसकी सेवा करना। पीछे सोचना। दुःख। पश्चात्ताप। पछतावा। काम करने का स्थान, (कारखाना)।

अन्वाहार्य—[पु०] मासिक श्राद्ध। हर महीने की अमावस को किया जानेवाला श्राद्ध। यज्ञ की दक्षिणा।

अन्वाहार्य पचन—[पु०] जिस अग्नि में श्राद्ध का अन्न पकाया जाता है। दक्षिणाग्नि।

अन्वाहित—[वि०] किसी की अमानत रखी हुई वस्तु को दूसरे के यहां अमानत रख देना।

अन्वित—[वि०] सहित। युक्त। शामिल। मिला हुआ।

अन्वीक्षण—[पु०] ध्यान से देखना। खोजना। अनुसन्धान। तलाश।

अन्वीक्षा—[स्त्री०] सुनी हुई बात पर यह ठीक है या नहीं–ऐसा विचार करना। अन्वीक्षण। खोज। तलाश।

अन्वेषक—[वि०] खोजनेवाला। अनुसन्धान करनेवाला। तलाश करनेवाला।

अन्वेषण—[पु०] खोज। ढूंढ़। तलाश। अनुसन्धान। गवेषणा। तहक़ीक़ात।

अन्वेषणा—[स्त्री०] देखो "अन्वेषण"। खोज। चौकसी।

अन्वेषित—[वि०] खोजा हुआ। ढूँढ़ा हुआ। तलाश किया हुआ।

अन्वेषी–[वि०] खोजनेवाला। अन्वेषक।

अन्वेष्टा–[वि०] खोजनेवाला। अन्वेषक।

अप्—[स्त्री०] जल। पानी।

अप—[अव्य०] विकार। दूषण। वियोग। विरुद्ध। आनन्द। निषेध। चोरी करना। निदर्शन। न्यूनता। अभाव। भेद।

अपकरण—[पु०] खोटा काम। निरादर।

अपकर्त्ता—[पु०] खोटा काम करनेवाला। निरादर करनेवाला। हानि पहुँचानेवाला।

अपकर्म—[पु०] दुराचरण। बुरा काम। पाप।

अपकर्मा—[पु०] कुकर्मी। बुरा काम करनेवाला। पापी।

अपकर्ष—[पु०] गिरावट। घटाव। अप्रतिष्ठा। निरादर। नीचे खींचना। गिराना। बिगाड़ना। किसी काम को करने के समय से पहले ही करना।

अपकार—[पु०] अनिष्ट। हानि। बुराई। वैर। अनादर। अपाय।

अपकारक–[वि०] अपकार करनेवाला।

अपकारगी—[स्त्री०] निरादरवचन। झिड़की। भर्त्सना। फटकार।

अपकारी–[वि०] अपकार करनेवाला। अपकारक।

अपकीर्ति—[स्त्री०] अयश। अपयश। निन्दा।

अपकृत—[वि०] निन्दित। अपमानित। तिरस्कृत। जिसका निरादर किया गया हो।

अपकृति—[स्त्री०] अपकार। निरादर।

अपकृष्ट—[वि०] अधम। नीच। गिरा हुआ।

अपक्रम—[पु०] गड़बड़। उलटा। क्रम के विरुद्ध। व्यतिक्रम। पलायन। भागना।

अपक्रमण—[पु०] पलायन। उलटे फिरना। भागना।

अपक्रिया—[स्त्री०] अपकार। वैर। द्रोह।

अपक्रोश—[पु०] निन्दा। कुत्सा।

अपक्व—[वि०] कच्चा। बिना पका। किसी विषय में अनभ्यस्त।

अपक्षेपण—[पु०] नीचे फेंकना। गिराना।

अपगत—[वि०] बीता हुआ। गया हुआ। मर गया। बह गया। भाग गया।

अपघन—[पु०] देह। शरीर। कोमल।

अपघात—[पु०] प्राणनाशक आघात। बुरी तरह मारना। हत्या। विश्वासघात। आत्मघात। आत्महत्या।

अपच—[पु०] अजीर्ण।

अप-चप—[पु०] ह्रास। हानि। नुकसान। खर्च। चुराना।

अपचार—[पु०] अपराध। अपमान। बुरा आचरण। बुरा काम। अपयश। निन्दा। अहिताचरण। कुपथ्य। अनिष्ट। [वि०] वह काम जो चार (दूत) के बिना हो।

अपचित—[वि०] पूजा गया। सत्कार किया गया। पूजित। सत्कृत। हीन।

अपचिति—[स्त्री०] पूजा। सत्कार। हानि। खर्च। दान।

अपच्छाया—[स्त्री०] दुर्दैव की छाया।

अपजय—[स्त्री०] हार। पराजय।

अपटान्तर—[वि०] जिसके बीच में कोई व्यवधान न हो। अव्यवहित। खुला हुआ। आसक्त। लगा हुआ।

अपटी—[स्त्री०] कपड़े का परदा। क़नात।

अपटु—[वि०] असमर्थ। रोगी। अकुशल। जो कार्य करने में कुशल न हो। सुस्त। आलसी।

अपढ़–[वि०] अनपढ़। बेपढ़ा। मूर्ख। निरक्षर।

अपत—[वि०] बिना पत्तों का। अपत्र।

आच्छादनरहित । नंगा ।

अपतर्पण—[पु०] बीमार होने पर भोजन त्याग देना । लंघन । तृप्त न होना ।

अपत्य—[पु०] सन्तान । औलाद । (लड़का-लड़की)

अपत्यदा—[स्त्री०] ओषधिविशेष जिसके सेवन से अपत्य (सन्तान) की प्राप्ति होती है ।

अपत्यशत्रु—[पु०] केंकड़ा नामक जल-जन्तु । कर्कट । कुलीरक ।

अपत्र—[पु०] बिना पत्तों का, अङ्कुर ।

अपत्रप—[वि०] निलज्ज । बेशरम ।

अपत्रापष्णु—[वि०] स्वभाव से ही लज्जाशील ।

अपथ—[पु०] बुरी राह । कुमार्ग । विकट या बीहड़ रास्ता । [वि०] जहां मार्ग न हो ।

अपथ्य—[वि०] कुपथ्य । मनुष्य के, विशेषकर रोगी के न खाने योग्य कोई वस्तु । हानिकारक । अहितकर । [पु०] वह आहार-विहार जिससे रोग में वृद्धि हो ।

अपद—[पु०] बिना पैरों का । जिस के पैर न हो । यथा—सांप,केंचुआ आदि ।

अपदान—[पु०] शुद्ध करना । साफ करना । अच्छा काम ।

अपदिश—[पु०] दिशाओं के मध्य का कोण । उपदिशा ।

अपदेश—[पु०] उद्देश्य । लक्ष्य । निमित्त । छल । कपट । बहाना । स्थान । कीर्त्ति ।

अपद्रव्य—[पु०] निकृष्ट पदार्थ । बुरी वस्तु । बुरा धन ।

अपध्वंसज—[पु०] किसी शब्द से बिगड़ कर बना हुआ शब्द । अपभ्रंश हो कर बना शब्द ।

अपध्वस्त—[वि०] बरबाद किया गया । नष्ट किया गया । त्यागा हुआ । निंदित ।

अपनयन—[पु०] दूर करना । अलग हटाना । स्थानान्तरित करना । खण्डन करना ।

अपना—[पु०] स्वकीय । निज का । आत्मीय । स्वजन । [सर्व०] स्वयं । आप ।

अपनासा मुँह लेकर रह जाना=किसी प्रयत्न में सफल न होने पर लज्जित होना ।

अपने तक रखना=किसी अन्य से न कहना ।

अपनाना—[क्रि०] शरण में लेना । अपना बनाना । अपनी ओर मिला लेना । अपने अधिकार में कर लेना ।

अपनापन—[पु०] निजत्व । आत्मीयता ।

अपनोदन—[पु०] दूर करना । हटाना । खंडन । तोड़ डालना ।

अप प्रयोग—[पु०] व्याकरण के नियम विरुद्ध प्रयोग ।

अपभय—[वि०] जिसका भय दूर हो गया हो । निडर । निर्भय । [पु०] डर । भय । व्यर्थ भय । निडरपन ।

अपभाषण—[पु०] दुर्भाषण । गाली-गलौज ।

अपभ्रंश—[पु०] विकृत या बिगड़ा हुआ शब्द । व्याकरण-सिद्ध शब्द से भिन्न अपशब्द । बिगाड़ । गिराव । पतन । पतन का कारण ।

अपमान—[पु०] निरादर । तिरस्कार । अवज्ञा ।

अपमानित—[वि०] निरादर किया हुआ । निन्दित । तिरस्कृत ।

अपमित्यक—[पु०] अपमान और दुःख का हेतु—ऋण, कर्ज़ा ।

अपमृत्यु—[स्त्री०] बुरी मौत । असमय की मौत । आकस्मिक मृत्यु । रोग या बुढ़ापे के बिना ही किसी दुर्घटना से अचानक मर जाना ।

अपयश—[पुं०] निन्दा । अपकीर्ति । बदनामी ।

अपयान—[पु०] पलायन । भागना । निकल जाना ।

अपर—[वि०] दूसरा । अन्य । भिन्न । शत्रु । पहला । पिछला ।

अपरक्त—[वि०] विरक्त । जो अनुकूल न हो । विपरीत । प्रतिकूल ।

अपरञ्च—[अव्य०] और भी, फिर भी ।

अपरता—[स्त्री०] परायापन । अपनापन । मित्र भाव ।

अपरति—[स्त्री०] विराग । विरक्ति ।

अपरत्र—[अव्य०] दूसरी जगह । परलोक में । पीछे । दूसरे समय ।

अपरत्व—[पु०] परायापन । अर्वाचीनता । शेष ।

अपर पक्ष—[पु०] पहला पाख । कृष्ण पक्ष ।

अपर रात्र—[पु०] रात का पिछला भाग । रात्रि का पिछला प्रहर ।

अपरस—[पु०] एक चर्म रोग का नाम । [वि०] अछूता । अस्पृश्य ।

अपरस्पर—[पु०] काम का लगातार होना । वह और वह । आपस में ।

अपरलोक—[पु०] परलोक । दूसरा लोक । स्वर्ग लोग।

अपरा—[स्त्री०] पश्चिम दिशा । गर्भाशय । ब्रह्मविद्या से भिन्न विद्या । ऋग्वेद से प्रारम्भ करके समस्त लौकिक विद्या । पदार्थ विद्या ।

अपराजित—[पु०] जो परास्त न हुआ हो । न हारा हुआ । एक ऋषि का नाम । शिव । विष्णु ।

अपराजिता—[स्त्री०] दूब । शेफालिका (सुहाँजना) । दुर्गा । अयोध्यापुरी का एक नाम । कोयल । विष्णुक्रान्ता नामक लताविशेष । छन्दः शास्त्र में एक छन्द का नाम जिसमें चौदह अक्षर होते हैं ।

अपराध—[पु०] दोष । भूल ।

पाप। जुर्म।

अपराधी—[पु०] अपराध करनेवाला। पापी। दोषी। मुजरिम।

अपरान्त—[पु०] पश्चिम देश। [वि०] पश्चिम देश का व्यक्ति। पश्चिम देश की कोई वस्तु।

अपराह्न—[पु०] दिन का तीसरा पहर। दिन का शेष या अन्तिम भाग।

अपरिग्रह—[पु०] दान का ग्रहण न करना। अनावश्यक संग्रह न करना। असंग्रह। विराग। पास कुछ न रखना। योग के अंगों में से पाचवाँ यम। [वि०] संन्यासी। त्यागी।

अपरिचय—[पु०] जान-पहचान का न होना।

अपरिचित—[वि०] बिना जाना हुआ। अनजान। अज्ञान।

अपरिच्छिन्न—[वि०] जिसका माप या अन्दाज़ न हो सके। असीम। जिसके टुकड़े न हो सकें, अभेद्य। अछेद्य।

अपरिणामी—[वि०] जिसमें कोई परिवर्तन न हो। सदा एक-सा रहनेवाला (ईश्वर)। परिवर्तनशून्य। निर्विकार। निरर्थक। निष्फल।

अपरिपक्व—[वि०] जो अच्छी तरह पका न हो। जो किसी काम में पका न हुआ हो। अधकचरा।

अपरिमित—[वि०] निस्सीम। असंख्य। बेकूत।

अपरिमेय—[वि०] जिसका अन्दाज़ न हो सके। अकूत।

अपरिहार—[पु०] परिहार। (निवारण, खण्डन आदि) का अभाव। निराकरण न होना। अवर्जन।

अपरिहार्य—[वि०] जो टाला या रोका न जा सके। अनिवार्य। अत्याज्य। जिसका खण्डन या निराकरण न किया जा सके। न छीनने लायक।

अपरूप—[वि०] भौंड़ा। भद्दी शकल का। कुरूप। अनोखा। अद्भुत।

अपरेद्युस्—[अव्य०] परसों। दूसरा दिन।

अपरोक्ष—[पु०] प्रत्यक्ष। समक्ष। आँखों के सामने।

अपर्णा—[स्त्री०] पार्वती। दुर्गा। बिना पत्तों वाली लता आदि।

अपर्याप्त—[वि०] अपूर्ण। जो आवश्यकता के लिए पूरा न हो। असमर्थ। अमर्याद। शक्तिरहित।

अपलक्षण—[पु०] बुरे लक्षण। अशुभ चिह्न। कुलक्षण।

अपलाप—[पु०] सचाई को छिपाना। स्वीकार न करना। प्रेम।

अपवरक—[पु०] रहने का घर। रहने का कमरा।

अपवर्ग—[पु०] मोक्ष। मुक्ति। दान। त्याग। फलप्राप्ति। समाप्ति।

अपवर्जन—[पु०] मोक्ष। दान। त्याग। निर्जन। अपने सिवा किसी दूसरे का न होना।

अपवर्तन—[पु०] परिवर्तन। लौटना। संक्षिप्त करना। गणित शास्त्र का एक नियम जिसमें भाज्य और भाजक दोनों को एक ही अङ्क से बाँटा जाता है।

अपवाद—[पु०] दोष। खोटा आरोप। निन्दा। आज्ञा। प्रतिवाद। खण्डन। विरोध। सम्मति। प्रेम। विश्वास। साधारण नियम का बाधक नियम। विशेष नियम। विरोध। भेद। भिन्नता।

अपवादक, अपवादी—[वि०] विरोधी। बाधक। निन्दा करनेवाला।

अपवारण—[पु०] अन्तर्द्धान। तिरोहित होना। छिपना। रोक। पर्दा। व्यवधान। दूर करना। हटाना।

अपवित्र—[वि०] अशुद्ध। मलिन। पवित्र का उलटा। गन्दा।

अपवित्रता—[स्त्री०] अशुद्धि। मलिनता। पवित्रता का उलटा। गन्दगी।

अपविद्ध—[वि०] त्यागा हुआ। फेंका हुआ। तिरस्कृत। बेधा हुआ।

अपविद्धपुत्र—[पु०] माता-पिता द्वारा त्याग दिये जाने पर किसी दूसरे द्वारा पाला-पोसा गया पुत्र। स्मृतियों के अनुसार बारह प्रकार के पुत्रों में से एक। सुतवन्ता।

अपव्यय—[पु०] बुरे या अनावश्यक कामों में किया गया व्यय। निरर्थक व्यय। फिजूलखर्ची।

अपव्ययी—[वि०] अपव्यय करनेवाला। व्यर्थ खर्च करनेवाला। फिजूलखर्च।

अपविषा—[स्त्री०] निर्विषी नामक बूटी। विष दूर करनेवाली। विषहारिणी।

अपवृत्त—[पु०] बुरे आचरणवाला। असच्चरित्र। मनोमुख। किसी की न माननेवाला।

अपशकुन—[पु०] असगुन। बुरा सगुन। यात्रादि के समय होनेवाली छींक आदि अशुभ-सूचक घटना।

अपशब्द—[पु०] गाली। कुवाच्य। विकृत या अशुद्ध शब्द। अर्थहीन शब्द। अपभ्रंश। अशुभ शब्द। अपान वायु का शब्द। पाद।

अपशोक—[पु०] अशोक का वृक्ष। [वि०] शोकरहित।

अपसद—[वि०] नीच। अधम।

अपसर्जन—[पु०] देना। त्यागना। मुक्ति। अपवर्ग। निर्जन।

अपसर्प—[पु०] गुप्तचर। भेदिया। खुफिया। दूत।

अपसव्य—[वि०] सव्य (दाहिने) का उलटा, बायाँ। विरुद्ध। [पु०] दक्षिण का भाग। जनेऊ को सीधे कन्धे पर से बाँई बगल में होकर पहने हुए। पितरों का तीर्थ। सीधे हाथ के अँगूठा और उसके

पासवाली उँगली के बीच का स्थान ।

अपस्कर—[पु०] मल । विष्ठा ।

अपस्नात—[वि०] मृतक-स्पर्शादि के अनन्तर न्हाया हुआ ।

अपस्नान—[पु०] मृतक-स्नान । शवस्पर्शादि के अनन्तर किया गया स्नान ।

अपस्मार—[पु०] मिरगी नाम से प्रसिद्ध रोग ।

अपस्वार्थी—[वि०] अपना मतलब साधनेवाला । मतलबी ।

अपह्—[वि०] किसी शब्द के पीछे मिलकर दूर करनेवाला या नाश करनेवाला अर्थ देता है । जैसे—'शोकापह'—शोक दूर करनेवाला ।

अपहत—[वि०] दूर किया हुआ । नष्ट किया गया । मारा हुआ ।

अपहरण—[पु०] छीन लेना । चुरा लेना । लूटना । छिपाना ।

अपहर्ता—[पु०] अपहरण करनेवाला । छीनने, चुराने या लूटनेवाला । छिपानेवाला ।

अपहस्त—[वि०] गर्दनिया देकर निकाला गया । गलहस्त देकर बाहर किया गया । अर्धचन्द्र दिया हुआ ।

अपहार—[पु०] लूटना । छीनना । चोरी । छिपाना । हानि । नुकसान ।

अपहास—[पु०] बुरी हँसी । खिल्ली उड़ाना । उपहास । अकारण या असमय की हँसी ।

अपहृत—[वि०] अपहरण किया हुआ । लुटाया चुराया गया । छीना हुआ ।

अपह्नव—[पु०] टाल-टूल । बहाना । सचाई को छिपाना । किसी वस्तु के होते हुए भी निषेध करना । प्रेम । प्यार ।

अह्न पति—[स्त्री०] छिपाना । बहाना करना । साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें प्रकृत वस्तु को छिपाकर उसमें अन्य वस्तु का आरोप किया जाता है ।

अपांनाथ—[पु०] जलों का स्वामी । समुद्र । वरुण देवता ।

अपांनिधि—[पु०] पानी का समूह । समुद्र ।

अपांपति—[पु०] समुद्र । वरुण देवता ।

अपांपित्त—[पु०] अग्नि । चित्रक वृक्ष । चीता नामक ओषधि ।

अपाक—[पु०] न पका हुआ । कच्चा । खाए हुए अन्न का न पचना । अपच । अपच के कारण उत्पन्न हुआ रोग । विशेष अजीर्ण । बदहजमी ।

अपाकरण—[पु०] दूर करना । खंडन करना । निकालना । उल्लङ्घन करना । न मानना । तिरस्कार करना ।

अपांक्त—[वि०] जो जातिवालों के साथ पंक्ति में बैठकर भोजन करने योग्य न हो । पतित । जातिबहिष्कृत । छिकैला ।

अपांक्त्य—[वि०] देखो "अपांक्त" ।

अपांक्तेय—[वि०] अपांक्त । पतित । जातिच्युत । छिका हुआ ।

अपाङ्ग—[पु०] आँख का बाहरी कोना । आँख की कोर । कटाक्ष । तिलक । [वि०] अंगहीन । विकलांग (अंधा आदि) ।

अपाङ्गक—[पु०] देखो "अपाङ्ग" । अपामार्ग नाम से प्रसिद्ध ओषधि ।

अपाङ्ग दर्शन—[पु०] आँख की कोर से देखना । तिरछी निगाह से देखना । कटाक्ष ।

अपात्र—[पु०] अयोग्य । मूर्ख । श्राद्धादि में भोजन कराने के अयोग्य । आचारहीन । कुपात्र । जो दान देने योग्य न हो । बेपढ़ा-लिखा ।

अपात्रीकरण—[पु०] स्मृतियों के अनुसार न लेने योग्य वस्तुओं का दान लेना जिसके कारण श्राद्ध में भोजन करने का अधिकारी नहीं रहता । निंदित दान लेना ।

अपादान—[पु०] हटाना । दूर करना । अलग करना । हरण करना । छीनना । व्याकरण में पाचवें कारक का नाम ।

अपान—[पु०] गुदा । मल त्यागने की इन्द्रिय । शरीर के भीतर का वह वायु जो गुदेन्द्रिय के समीप रहता और मलमूत्रादि को बाहर फेंकने का काम करता है । अधोवायु । पाद ।

अपान वायु—[पु०] गुदामार्ग के समीप रहनेवाला वायु । अधोवायु । पाद ।

अपामार्ग—[पु०] ओंगा । चिरचिटा । अपाङ्ग नामक ओषधि ।

अपाय—[पु०] विलग होना । अलगाव । नाश । दुःख । आपत्ति । पलायन । पीछे हटना । भागना ।

अपार—[वि०] जिसका पार न हो । असीम । अनन्त । असंख्य । [पु०] नदी का दूसरा किनारा ।

अपार्थ—[वि०] रचना का एक दोष जिसमें उसका अर्थ स्पष्ट नहीं होता । अर्थ शून्य । निरर्थक । असम्बद्ध वचन ।

अपार्थक—[वि०] देखो "अपार्थ" ।

अपावन—[पु०] अपवित्र । मलिन । गन्दा ।

अपावर्तन—[पु०] लौटना । मार्ग से हटना । पलायन ।

अपावृत—[वि०] उघड़ा हुआ । जो ढका न हो । खुला हुआ । स्वतन्त्र ।

अपाश्रय—[पु०] निराश्रय । निराधार । अधीन । चँदोआ । शामियाना ।

अपासन—[पु०] मारना ।

अपास्त—[वि०] दूर किया हुआ । खण्डन किया हुआ । निवारण किया हुआ । निकाला गया । तुच्छ माना गया । तिरस्कृत ।

अपाहिज—[वि०] लँगड़ा-लूला । विकलाङ्ग । काम करने के अयोग्य ।

अपि—[अव्य०] भी । ही । निश्चय । सम्भावना । सन्देह । निश्चय । फिर ।

निन्दा । प्रश्न । समुच्चय । एवं । अप-रंच । भय आदि अर्थ होते हैं ।

अपिगीर्ण—[वि०] स्तुति किया गया । वमन किया हुआ ।

अपिच्छिल—[वि०] जो गाढ़ा न हो । पतला ।

अपि तु—[अव्य०] किन्तु । यद्यपि । बल्कि ।

अपितृक—[वि०] जो पुरखाओं द्वारा उपार्जित न हो ।

अपिधान—[पु०] आच्छादन । ढक्कन । आवरण ।

अपिनद्ध—[वि०] पहना हुआ कपड़ा । वस्त्राच्छादित ।

अपीच्य—[वि०] अत्यन्त सुन्दर ।

अपुच्छ—[वि०] पूँछ रहित । बिना पूँछ का ।

अपुत्र—[वि०] पुत्रहीन । निः-सन्तान । निपूता ।

अपुनरावृत्ति—[स्त्री०] मोक्ष । मुक्ति। फिर न आना ।

अपुनर्भव—[पु०] पुनर्जन्म का न होना । निर्वाण । मुक्ति । मोक्ष ।

अपुनीत—[वि०] जो पवित्र न हो । मलिन । नापाक । अपवित्र । दूषित ।

अपुष्प-फलद—[पु०] बिना फूल के ही फल देनेवाला । कटहर या गूलर का वृक्ष ।

अपूत—[वि०] अपवित्र । अपुनीत । अशुद्ध । नापाक । दूषित ।

अपूप—[पु०] पूआ नामक पकवान ।

अपूर्ण—[वि०] अधूरा । असम्पन्न । जो पूरा न हुआ हो । अपरिपूर्ण । जो भरा न हो । कम ।

अपूर्णता—[स्त्री०] कमी । न्यूनता । अधूरापन ।

अपूर्णभूत—[पु०] व्याकरण में काल के भेदों में से एक । वह भूतकाल जिसमें क्रिया की समाप्ति न पाई जाय । यथा- वह पढ़ता था ।

अपूर्व—[वि०] आश्चर्यजनक । अद्भुत । उत्तम । जो पहले न हुआ हो ।

अपूर्वता—[स्त्री०] विचित्रता । अनोखापन । उत्तमता ।

अपेक्षा—[स्त्री०] इच्छा । आकांक्षा । आवश्यकता । सम्बन्ध । तुलना । भरोसा ।

अपेक्षाकृत—[अ०] तुलना में ।

अपेक्षित—[वि०] चाहा हुआ । आवश्यक ।

अपेय—[वि०] न पीने लायक । जिसका पीना वर्जित हो ।

अपोगण्ड—[वि०] बालक । छोटी अवस्था का, शिशु । बहुत डरपोक । कुरूप ।

अपोढ़—[वि०] बाहर किया गया । निकाला गया ।

अपौरुष—[पु०] पुरुषार्थ का उलटा । भीरुपन । कायरता ।

अप्पति—[पु०] देखो "अपांपति" ।

अप्रकट—[वि०] गुप्त । छिपा हुआ । अप्रकाश ।

अप्रकाण्ड—[पु०] शाखारहित वृक्ष । ठूंठ । डिंत्थ ।

अप्रकाश—[वि०] प्रकाशरहित । गुप्त । स्वगत । नाटक में एक प्रकार की उक्ति जिसको नाटक के अन्य पात्रों को नहीं, केवल दर्शकों को सुनाना होता है । [पु०] प्रकाश का अभाव । अन्धकार । ब्रह्म ।

अप्रकाशित—[वि०] प्रकाशरहित । गुप्त । छिपा हुआ । सर्वसाधारण के सामने न लाया गया ।

अप्रकृत—[वि०] असम्बद्ध । अनुचित । अनित्य । अस्वाभाविक । बनावटी । कृत्रिम । झूठा ।

अप्रकृष्ट गुण—[वि०] विकल । घबराया हुआ ।

अप्रखर—[वि०] जो तेज न हो । कुण्ठित । भोंथरा ।

अप्रगल्भ—[वि०] साधारण । अप्रौढ़ ।

अप्रचलित—[वि०] जो चालू न हो । सर्वसाधारण के व्यवहार में न आनेवाला । अव्यवहृत । अप्रयुक्त ।

अप्रतिकर—[पु०] घबराहट का अभाव । व्याकुलता का न होना । [वि०] विरुद्ध न करनेवाला ।

अप्रतिभ—[वि०] तेजहीन । चेष्टा-रहित । प्रतिभाशून्य । कुण्ठित बुद्धिवाला । मन्दबुद्धि । उदास । सुस्त । भ्रान्त ।

अप्रतिम—[वि०] अनुपम । अद्वि-तीय । अनुपम ।

अप्रतिरथ—[पु०] अद्वितीय योद्धा । मंगल । कल्याण । सामवेद ।

अप्रतिरूपकथा—[स्त्री०] अनुपम या या अतुल्य कथा । ऐसा कथन जिसका उत्तर न हो सके ।

अप्रतिष्ठ—[वि०] प्रतिष्ठारहित । जिसकी इज्जत न हो । अनिर्णीत ।

अप्रतिष्ठा—[स्त्री०] अनादर । अप-मान । प्रतिष्ठा का अभाव या उलटा । अपयश ।

अप्रतिहत—[वि०] निर्बाध । निर्विघ्न । बेरोक-टोक ।

अप्रतिहतगति—[वि०] जिसकी गति रुके नहीं । निर्बाध गमनशील । बेरोक-टोक चलनेवाला ।

अप्रत्यक्ष—[वि०] अतीन्द्रिय । परोक्ष । गुप्त । जो इन्द्रियों द्वारा न जाना जाय ।

अप्रत्यय—[पु०] अविश्वास ।

अप्रधान—[पु०] जो प्रधान अर्थात् मुख्य न हो । गौण । उपसर्जन ।

अप्रमत्त—[वि०] सावधान । जो मत-वाला न हो ।

अप्रमेय—[वि०] अपार। अनन्त। जिसकी नाप-तोल न हो सके। जो प्रमाणों से सिद्ध न किया जा सके।

अप्रयुक्त—[वि०] जो व्यवहार में न लाया गया हो। जिसका प्रयोग न किया गया हो।

अप्रशस्त—[वि०] जो श्रेष्ठ न हो। असुन्दर। असत्। अनिहित।

अप्रसन्न—[वि०] नाराज। असन्तुष्ट। खिन्न। उदास। रुष्ट।

अप्रसन्नता—[स्त्री०] खिन्नता। नाराज़ी। असन्तोष। रोष।

अप्रसिद्ध—[वि०] जो मशहूर न हो। अविख्यात। गुप्त।

अप्रस्तुत—[वि०] असम्बद्ध। जिसका प्रसंग न हो। जो तैयार न हो। जो उपस्थित न हो। जिसकी चर्चा न की गई हो।

अप्रस्तुत प्रशंसा—[स्त्री०] साहित्य में एक अर्थालंकार का नाम। वह अलंकार जिसमें किसी अन्य विषय का वर्णन करके वर्तमान विषय की प्रशंसा की गई हो।

अप्रहत—[वि०] विना जोती हुई भूमि।

अप्राकृत—[वि०] अस्वाभाविक। कृत्रिम। बनावटी। असाधारण।

अप्राकृतिक—[वि०] देखो "अप्राकृत"।

अप्राग्र्य—[वि०] अप्रधान। गौण।

अप्राचीन—[वि०] जो पुरातन न हो। नया। जो पश्चिम में न हुआ हो। पश्चिमेतर दिशा में उत्पन्न हुआ।

अप्राप्त—[वि०] अलब्ध। जो प्राप्त न हुआ हो।

अप्राप्तव्यवहार—[वि०] जिसे सामाजिक व्यवहार का अधिकार न मिला हो। नाबालिग।

अप्राप्ति—[स्त्री०] न मिलना। अलभ्य। अलाभ।

अप्राप्य—[वि०] अलभ्य। दुर्लभ। जो मिले नहीं। न पाने योग्य।

अप्रामाणिक—[वि०] प्रमाणरहित। जो प्रमाण द्वारा सिद्ध न हो। जो विश्वास करने या मानने योग्य न हो। जो प्रमाण न जानता हो।

अप्रासङ्गिक—[वि०] बिना प्रसंग के। जिसकी कोई चर्चा न हो। असम्बद्ध।

अप्रिय—[पु०] शत्रु। वैरी [वि०] अनचाहा। अरुचिकर। जो प्रिय न हो।

अप्सरा-[स्त्री०] स्वर्ग की नर्तकी। परी।

अफल—[पु०] बिना फल का। निष्फल। निष्प्रयोजन। वह वृक्ष जिसमें फलने के समय भी फल न लगता हो।

अफला—[स्त्री०] घृतकुमारी। ग्वारपाठा। भूम्यामलकी।

अफ़वाह—[स्त्री०] बाजारू ख़बर। उड़ती हुई ख़बर। गप्प। अप्रामाणिक ख़बर। किम्वदन्ती।

अफ़सर—[पु०] मुखिया। अधिकारी। हाकिम।

अफ़सोस—[पु०] पछतावा। दुःख।

अफेन-[वि०] विना झागों का। [पु०] अफीम।

अबद्ध—[वि०] जो बँधा न हो। मुक्त। बन्धन शून्य। स्वतंत्र। [पु०] अर्थशून्य। निरर्थक।

अबद्धमुख—[वि०] जिसका मुख बद्ध (नियन्त्रित) न हो। कुवाक्य बोलनेवाला। मुँहफट। दुर्मुख।

अबध्य—[वि०] न मारने योग्य। जिसका मारना वर्जित हो। निरर्थक वाक्य।

अबन्ध्य—[वि०] सफल। सार्थक। फलनेवाला।

अबरक—[पु०] एक खनिज पदार्थ जिसके पर्त काँच के समान पारदर्शक, चमकदार और अदहनशील होते हैं। भोडर। अबीर।

अबरा—[पु०] उपल्ला। दोहरे सिले वस्त्र का ऊपर की ओरवाला भाग। अस्तर का उलटा।

अबरी—[स्त्री०] एक प्रकार का रंगीन और चमकदार काग़ज़ जो पुस्तकों की जिल्दों पर लगाया जाता है। एक जाति का पत्थर जो पीले रंग का होता है।

अबल—[पु०] निर्बल। दुर्बल। कमजोर। वरुण नामक वृक्ष जिसके सेवन से बल क्षीण हो जाता है।

अबला—[स्त्री०] नारी। स्त्री।

अबाध—[वि०] बाधारहित। निर्विघ्न। बेरोक। जिसे कोई बाधा (पीड़ा) न हो। स्वस्थ। सुखी।

अबाधित—[वि०] अबाध। स्वच्छन्द।

अबाध्य—[वि०] अनिवार्य। जो रोका न जा सके।

अबास—[पु०] घर। मकान। आवास। रहने का स्थान।

अबिन्धन—[पु०] बड़वानल। विद्युत्। बिजली।

अबीर—[पु०] भुड़भुड़ का बारीक चूरा।

अबोध—[वि०] अनजान। नादान। मूर्ख। [पु०] अज्ञान।

अब्ज—[पु०] जल से उत्पन्न हुआ। चन्द्रमा। कमल। शंख। धन्वन्तरि। घोड़ा। अमृत। संख्या का एक प्रमाण—सौ करोड़।

अब्जभोग—[पु०] कौड़ी। पद्मकन्द। कमल की जड़। कमल ककड़ी।

अब्जयोनि—[पु०] अब्ज (कमल) जिसका उत्पत्ति-स्थान है—ब्रह्मा। विधाता।

अब्जवाहन—[पु०] जिसका वाहन कमल के समान श्वेत है, वह। शिव। महादेव।

अब्जहस्त—[पु०] सूर्य।

अब्जिनी—[स्त्री०] जिस स्थान पर

बहुत-से कमल हों। कमलों का समूह। कमलिनी। कुमोदिनी। पद्मलता।

अब्जिनीपति—[पु०] कमलसमूह का स्वामी, सूर्य।

अब्जा—[स्त्री०] लक्ष्मी। कौड़ी।

अब्द—[पु०] वर्ष। संवत्। वत्सर। एक पर्वत-विशेष। बादल। जलद। मेघ। मोथा नामक जड़ी। आकाश।

अब्दसार—[पु०] एक प्रकार का कपूर।

अब्धि—[पु०] समुद्र। सागर। सरोवर। सात की संख्या।

अब्धिकफ—[पु०] समुद्र के फेन। समुद्र के झाग।

अब्धिज—[पु०] समुद्र से उत्पन्न वस्तु। शंख। चन्द्रमा। घोड़ा। अश्वनीकुमार आदि।

अब्धिद्वीपा—[स्त्री०] सात द्वीपों-वाली पृथिवी।

अब्धि नगरी—[स्त्री०] समुद्र में बसी नगरी। द्वारका पुरी।

अब्धिनवनीतक—[पु०] समुद्र का माखन अर्थात् चन्द्रमा।

अब्धिफेन—[पु०] समुद्र के झाग। समुद्र फेन। अब्धि-कफ।

अब्धिशयन—[पु०] जिसका सोने का स्थान समुद्र में है—विष्णु।

अब्ध्यग्नि—[पु०] बड़वानल।

अब्रह्मण्य—[पु०] जिसकी वेदों में निन्दा की गई हो। ब्राह्मण के न करने योग्य कार्य। ब्राह्मण में श्रद्धा न रखने वाला। वेदज्ञान-शून्य। नाटक में "इसे न मारना चाहिये"—ऐसा वाक्य।

अब्राह्मण—[पु०] जो ब्राह्मण न हो। ब्राह्मणेतर वर्ण। पतित ब्राह्मण।

अभक्त—[वि०] अविभक्त। जो बाँटा न गया हो। भक्तिरहित। श्रद्धाहीन। जो भगवान् से विमुख हो।

अभक्ष्य—[वि०] न खाने योग्य। जिसका खाना वर्जित हो।

अभग्न—[वि०] जो टूटा न हो। समूचा। अविकल। अखण्ड।

अभद्र—[वि०] अशुभ। अमांगलिक। असभ्य। अशिष्ट। निन्दित।

अभद्रता—[स्त्री०] अशुभपन। असभ्यता। अशिष्टता।

अभय—[पु०] निर्भय। निडर। परमात्मा। ईश्वर-ज्ञान। भय का अभाव।

अभयदान—[पु०] धीरज देना। रक्षा करना। भय से रक्षा करने का वचन देना। सान्त्वना देना। शरण देना।

अभय पद—[पु०] मुक्ति। मोक्ष।

अभय वचन—[पु०] भय से रक्षा करने का प्रण।

अभया—[स्त्री०] हर्रीतकी। हरड़।

अभव्य—[वि०] अशुभ। असुन्दर। न होने योग्य।

अभागा—[पु०] भाग्यहीन। बदकिस्मत।

अभागिन—[स्त्री०] मन्दभाग्य स्त्री।

अभागी—[वि०] जो भागीदार न हो। जो किसी वस्तु के हिस्से का अधिकारी न हो। अभागा। [स्त्री०] अभागिन।

अभाग्य—[पु०] बुरा भाग्य। दुर्दैव। बदकिस्मती। भाग्यहीनता। दुर्भाग्य।

अभाजन—[वि०] जिसके पास कोई वर्तन न हो। विना पात्र का। [पु०] अपात्र। कुपात्र। अयोग्य। अनधिकारी।

अभाव—[पु०] न होना। कमी। घाटा। भावशून्य। मरण।

अभावनीय—[वि०] कल्पना करने के अयोग्य। अचिन्तनीय।

अभाषण—[पु०] मौन। न कहना।

अभि—[अव्य०] समीपता। उत्तमता। इच्छा। अच्छी तरह। समीप। सामने। बारबार। चारों ओर। दूर। ऊपर। लक्षण। चिह्न। घर्षण।

अभिक—[वि०] चाहनेवाला। इच्छुक। कामी कामुक।

अभिक्रम—[पु०] शत्रु के सामने जाना। आक्रमण करना। धावा मारना। चढ़ाई। आरोहण। आरम्भ करना। आरम्भ किया गया।

अभिक्रमण—[पु०] देखो "अभिक्रम"।

अभिकांक्षा—[स्त्री०] इच्छा। चाहना। अकांक्षा। अभिलाषा।

अभिख्या—[स्त्री०] नाम। शोभा। कीर्ति।

अभिगम—[पु०] पास जाना। आश्रय। सहवास। सम्भोग।

अभिगमन—[पु०] देखो "अभिगम"।

अभिगामिनी—[स्त्री०] पास जाने वाली। सहवास करनेवाली।

अभिगामी—[पु०] पास जानेवाला। सहवास करनेवाला।

अभिग्रस्त—[वि०] शत्रु द्वारा दबाया गया। आक्रान्त। (रोग या शत्रु द्वारा)।

अभिग्रह—[पु०] युद्ध के लिए ललकारना। चोरी। देखते-देखते चुराना। लूट। गौरव।

अभिग्रहण—[पु०] चोरी। लूट।

अभिघात—[पु०] आघात। चोट। मार। स्पर्श। संयोग। विशेषकर अक्षरों के उच्चारण में जीभ, दाँतों आदि का संयोग।

अभिघातक—[पु०] प्रहार करनेवाला। चोट मारनेवाला।

अभिघाती—[पु०] देखो "अभिघातक"।

अभिचार—[पु०] हिंसा-कार्य। तन्त्र-शास्त्रों के अनुसार मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण आदि का प्रयोग करना।

अभिचारिणी—[स्त्री०] अभिचार करनेवाली।

अभिचारी—[पु०] मारण, मोहनादि का प्रयोग करनेवाला।

अभिजन—[पु०] वंश। कुल। नौकर-चाकर। कीर्ति। जन्मभूमि। ख्याति। प्रसिद्धि।

अभिजात—[वि०] अच्छे कुल में उत्पन्न हुआ। कुलीन। विद्वान्। पण्डित। सुन्दर। प्रसिद्ध। आदरणीय। न्याययुक्त।

अभिजित्—[पु०] ज्योतिष में एक नक्षत्र का नाम। एक मुहूर्तविशेष जिसमें चढ़ाई करके शत्रु को जीता जाता है। [वि०] जीतनेवाला। विजयी।

अभिज्ञ—[वि०] जाननेवाला। जानकार। कुशल। निपुण। प्रवीण। चतुर पण्डित। विज्ञ।

अभिज्ञा—[स्त्री०] प्रथम उत्पन्न हुआ ज्ञान।

अभिज्ञात—[वि०] ठीक प्रकार से जाना हुआ।

अभिज्ञान—[पु०] चिह्न। पहँचान। याद। स्मरण। पहँचान कराने का साधन। स्मृति-चिह्न। निशानी। निश्चित ज्ञान।

अभितः—[अ०] सम्मुख। समीप। शीघ्र। दोनों ओर से। सब ओर से।

अभिताप—[पु०] अत्यधिक त्रास। अतिशय दुःख।

अभिद्रवण—[पु०] भागना। दौड़ना। वेगपूर्वक चलना।

अभिद्रोह—[पु०] बुराई। निन्दा। अपकार। किसी का अशुभ चिन्तन।

अभिधर्षण—[पु०] किसी पर भूत-प्रेतादि का आक्रमण। अच्छे प्रकार दबाना या दबोचना। सब प्रकार से दमन करना।

अभिधा—[स्त्री०] नाम। साहित्य में शब्द की वह शक्ति जिससे शब्द के वाच्यार्थ का बोध हो।

अभिधान—[पु०] नाम। कथन। शब्द-कोश।

अभिधायक—[वि०] कहनेवाला। सूचित करनेवाला।

अभिधावन—[पु०] सम्मुख दौड़ना।

अभिधेय—[पु०] अभिधान। नाम। संज्ञा। नामवाला। [वि०] सम्भाषण करने योग्य। प्रतिपाद्य। वाच्य। जो नाम लेने से ही ज्ञात हो जाय।

अभिध्या—[स्त्री०] दूसरे का द्रव्य लेने की इच्छा। अभिलाषा। लेने की चाहना।

अभिनन्द, अभिनन्दन—[पु०] प्रसन्नता प्रकट करना। सन्तोष। प्रशंसा। आनन्द। प्रोत्साहन। विनम्र निवेदन।

अभिनन्दनीय—[वि०] अभिनन्दन करने योग्य। प्रशंसनीय। प्रोत्साहन देने योग्य।

अभिनन्दित—[वि०] प्रशंसित। अभिनन्दन किया गया। प्रोत्साहित किया गया।

अभिनय—[पु०] अङ्ग-चेष्टा द्वारा मनोभावों को प्रकट करना। किसी की बोली, वेश, व्यवहारादि का अनुकरण करना। स्वाँग। नाटक। नकल। दृश्य काव्य। शोभा।

अभिनव—[वि०] नया। नवीन। ताजा। चमत्कारिक। [पु०] स्तुति।

अभिनवोद्भिद्—अङ्कुर। अँकुआ। कुल्ला।

अभिनहन—[पु०] सब ओर से बाँधना। अच्छे प्रकार बाँधना।

अभिनिर्मुक्त—[पु०] सूर्य अस्त होने के समय सोने वाला। सूर्यास्त काल में सोए रहने के कारण जो सब प्रकार संध्या समय के कर्तव्य कार्यों से छूट गया, वह।

अभिनिर्याण—[पु०] धावा बोलना। जीतने की इच्छा से यात्रा करना। यात्रा।

अभिनिविष्ट—[वि०] फँसा हुआ। घुसा हुआ। लिप्त। निमग्न। अनन्य भाव से लगा हुआ। बैठा हुआ।

अभिनिवेश—[पु०] आग्रह। हठ। दृढ़ संकल्प। एकनिष्ठता। मनोयोग। लीनता। प्रवेश। आवेश। योग-शास्त्र के मत से। मृत्यु का भय।

अभिनिवेशित—[वि०] प्रविष्ट कराया गया। घुसाया गया।

अभिनिष्क्रमण—[पु०] बाहर जाना। निकलना।

अभिनिष्ठान—[पु०] विसर्ग। अक्षर। (?)

अभिनिष्पत्ति—[स्त्री०] समाप्ति। सिद्धि।

अभिनीत—[वि०] अभिनय किया हुआ। खेला हुआ। सामने या निकट लाया हुआ। सीखा हुआ। सजाया हुआ। क्रोधी। उचित। न्यायसंगत।

अभिनेता—[पु०] अभिनय करनेवाला। नट। स्वाँगिया।

अभिनेय—[वि०] अभिनय करने लायक। खेलने योग्य।

अभिन्न—[वि०] एकमय। सम्बद्ध। मिला हुआ।

अभिन्न पद—[पु०] साहित्य में अलङ्कारों का एक भेद।

अभिपन्न—[वि०] विपद् में पड़ा हुआ। अपराधी। अभागा। शत्रु या रोग द्वारा आक्रान्त। अभिग्रस्त। स्वीकृत। सामने से गया हुआ।

अभिप्राय—[पु०] तात्पर्य। प्रयोजन। आशय। सम्मति। राय।

अभिप्रेत—[वि०] चाहा हुआ। इच्छित। अभिलषित। इष्ट। उद्दिष्ट।

अभिप्रोक्षण—[पु०] छींटे देना। मार्जन।

अभिभव—[पु०] पराजय। अनादर।

तिरस्कार। पराभव। गर्वनाश।

अभिभावक—[वि०] पराजित करनेवाला। अनादर या तिरस्कार करनेवाला। देख-रेख करनेवाला। रक्षक।

अभिभूत—[वि०] किंकर्तव्यविमूढ़। विकल। विह्वल। घबराया हुआ। दबाया हुआ। पराभूत। पीड़ित। वश में किया हुआ। पराजित। स्तम्भित। जिसका गर्व नष्ट हो गया हो।

अभिभूति—[स्त्री०]अनादर। अवज्ञा।

अभिमत—[वि०] इच्छित। चाहा हुआ मनोरथ। अभिप्राय। इष्ट। मनोनीत। वांच्छित। सम्मत। आदृत। [पु०] आशा। मनचाही बात। सम्मति। राय। स्वीकार। अनुमोदन।

अभिमति—[स्त्री०] अहंभाव। गर्व। अभिमान। राय। विचार। इच्छा। अभिलाषा।

अभिमन्त्रण—[पु०] आमन्त्रण। निमन्त्रण। बुलावा। मन्त्र पढ़कर शुद्ध करना।

अभिमन्यु—[पु०] अर्जुन के एक पुत्र का नाम जो सुभद्रा के गर्भ से पैदा हुआ था।

अभिमर—[पु०] युद्ध। लड़ाई। बध। पीड़ा पहुँचाना। शराब।

अभिमर्द—[पु०] युद्ध। संग्राम। पीड़ा देना। शराब। मद्य।

अभिमर्ष—[पु०] स्पर्श। अपमान।

अभिमर्षण—[पु०] देखो "अभिमर्ष"।

अभिमाति—[पु०] शत्रु।

अभिमान—[पु०] अहंकार। गर्व। दर्प। हिंसा। ज्ञान। बोध। प्रेम। प्रार्थना।

अभिमानित—[वि०] अभिमान युक्त। [पु०] सुरत। सम्भोग। मैथुन।

अभिमानी—[वि०] अहंकारयुक्त। अभिमानग्रस्त। गर्व करनेवाला।

अभिमाय—[वि०] देखो "अभिभूत।"

अभिमुख—[वि०] सामने। सम्मुख।

अभिमृष्ट—[वि०] सम्बद्ध। भलीभाँति मिला हुआ।

अभियाति, अभियाती—[पु०]शत्रु।

अभियुक्त—[वि०] जिस पर दोषारोपण किया या अभियोग लगाया गया हो। प्रतिवादी। आसामी। शत्रु द्वारा घेरा हुआ।

अभियोक्ता—[वि०] अभियोग लगाने वाला वादी। फर्यादी। अर्थी। मुद्दई।

अभियोग—[पु०] मुकद्दमा। किसी के विरुद्ध न्यायालय में फरियाद करना। युद्ध के लिए बुलाना। चढ़ाई। आक्रमण। आग्रह। शपथ। उत्साहपूर्ण प्रयत्न। उद्योग।

अभियोगी—[वि०] देखो 'अभियोक्ता'।

अभिराम—[वि०] सुन्दर। रूपवान्। मनोरथ। प्रिय।

अभिरुचि—[स्त्री०] पसन्द। चाह। इच्छा। प्रवृत्ति। प्रकाश।

अभिरूप—[पु०] पण्डित। कामदेव। चन्द्र। शिव। विष्णु। [वि०] मनोहर।

अभिलषित—[वि०] इच्छित। चाहा हुआ। इष्ट। मनोवांछित।

अभिलाप—[पु०] संकल्प। संभाषण। शास्त्रार्थ। विवाद। शब्द।

अभिलाव—[पु०] काटना। छेदन।

अभिलाष—[पु०] लोभ। चाह। इच्छा। आकांक्षा। वांछा। लिप्सा। कामना। स्पृहा। रुचि।

अभिलाषा—[स्त्री०] चाह, इच्छा इत्यादि।

अभिलाषी—[वि०] अभिलाषा करने वाला। इच्छुक।

अभिलास—[पु०] देखो "अभिलाष"।

अभिवचन—[पु०] प्रतिज्ञा। प्रण। वादा।

अभिवन्दन—[पु०]आदरपूर्वक प्रणाम।

अभिवन्दना—[स्त्री०] आदरपूर्वक प्रणाम।

अभिवाद—[पु०] प्रणाम। आदरपूर्वक झुकना। अप्रिय वचन। कठोर वाक्य।

अभिवादन—[पु०] प्रणाम। वन्दना। सीधे हाथ से सीधे पैर को और बाएँ हाथ से बाएँ पैर को छूते हुए अपना नाम उच्चारण पूर्वक प्रणाम करना।

अभिविधि—[पु०] मर्यादा। वहाँ से वहाँ तक ऐसी सीमा निर्धारित करना। व्याप्ति।

अभिवृद्धि—[स्त्री०] उत्कर्ष। बढ़ती। उन्नति।

अभिव्यक्त—[पु०] प्रकट। प्रत्यक्ष। स्पष्ट। प्रकाशित।

अभिव्यक्ति—[स्त्री०] प्रकटीकरण। प्रकाशन। स्पष्ट करना। साक्षात्कार। सूक्ष्म और अस्पष्ट पदार्थ या विषय का स्पष्ट होना।

अभिव्यञ्जक—[वि०] प्रकट करनेवाला। स्पष्ट या प्रकाशित करनेवाला। बोध करानेवाला। व्यञ्जना से अर्थ का ज्ञान करानेवाला (शब्द)।

अभिव्यञ्जन—[पु०] प्रकाशन, जाहिर करने की हालत।

अभिव्याप्ति—[स्त्री०] सर्वत्र व्यापक होना। सर्वत्र फैलना। पूरी तरह से मिलना।

अभिव्याहार—[पु०]दृष्टान्त। मिसाल।

अभिशपन—[पु०] अशुभ वचन बोलना। शाप। अनिष्ट कथन। झूठा दोष लगाना। मिथ्या अपवाद।

अभिशप्त—[वि०] जिसे शाप दिया गया हो। शापग्रस्त। जिस पर मिथ्या दोष लगाया गया हो।

अभिशस्त—[वि०] व्यभिचार का दोष जिसे लगाया गया हो। मैथुन के

लिए बुलाया गया। लम्पट। मिथ्या दूषित।

अभिशस्ति—[स्त्री०] लोकापवाद। मिथ्या दोषारोपण। प्रार्थना। याचना।

अभिशाप—[पु०] अनिष्ट कथन। बददुआ मिथ्या लांछन। झूठी निन्दा।

अभिषङ्ग—[पु०] पराभव। पराजय। शपथ। तिरस्कार। निन्दा। शोक। आलिङ्गन। कोसना। मिथ्या प्रवाद। भूत-प्रेतादि की बाधा।

अभिषव—[पु०] यज्ञ। स्नान। यज्ञ से प्रथम स्नान। बलि देना। शराब तैयार करना। सोमलता पीना। पीड़न। काञ्जी नामक पेय पदार्थ।

अभिषवन—[पु०] यज्ञ में नहाना। बलि देना। सोमलता कूटना।

अभिषिक्त—[वि०] जिसका अभिषेक किया गया हो। जो राजगद्दी का अधिकारी चुना गया हो।

अभिषेक—[पु०] राजगद्दी पर बैठने के समय का स्नान जो अनेक ओषधियों और अनेक तीर्थों के जल से मन्त्रोच्चारणपूर्वक कराया जाता है। सिर पर से जल डालकर स्नान कराना। यज्ञ के अनन्तर कुश-दूर्वादि द्वारा ऊपर जल छिड़कना। मार्जन। सींचना। छिड़काव।

अभिषेणन—[पु०] शत्रु को जीतने के लिए सेना लेकर उसके सामने जाना।

अभिष्टुत—[वि०] स्तुति किया गया। वर्णन किया गया।

अभिष्यन्द—[पु०] बहना। टपकना। अभिवृद्धि। बढ़ना। अधिक। आँखों का एक रोग।

अभिष्यन्दि रमण—[पु०] प्रधान नगर के उपनगर।

अभिसन्ताप—[पु०] शाप देना। युद्ध। तपना।

अभिसन्धान—[पु०] ठगना। प्रतारण। प्रवंचना। धोखा। उद्देश्य। अनुराग।

अभिसन्धि—[स्त्री०] धोखा। प्रवंचना। ठगी। षड्यन्त्र। कुचक्र।

अभिसन्धिता—[स्त्री०] साहित्य में शृङ्गार रसान्तर्गत 'कलहान्तरिता नायिका'।

अभिसम्पात—[पु०] युद्ध। पतन। शाप।

अभिसर—[वि०] मित्र। सहायक। अनुचर। सेवक।

अभिसर्जन—[पु०] देना। बध। हत्या। खून।

अभिसरण—[पु०] समीप जाना। प्रिय से मिलने के लिए जाना।

अभिसार—[पु०] पराक्रम। सेना। बल। सहाय। साधन। प्रिय से मिलने के लिए संकेतित स्थान पर जाना।

अभिसारिका—[स्त्री०] प्रिय से मिलने के लिए संकेत-स्थल पर जानेवाली स्त्री।

अभिसारिणी—[स्त्री०] देखो "अभिसारिका"।

अभिसारी—[वि०] जो प्रिय से मिलने को संकेत-स्थल पर जाय—वह। सहाय। साधक।

अभिसृष्ट—[पु०] दिया गया। छोड़ा गया।

अभिहत—[वि०] पराभूत। मारा हुआ।

अभिहार—[पु०] चुराना। देखते देखते चुरा लेना। सन्नद्ध होना। कवच आदि धारण करना। अभियोग। नालिश।

अभिहित—[वि०] कहा हुआ। कथित।

अभीक—[वि०] उत्सुक। कामी। कामुक। निर्भय। [पु०] कवि। स्वामी।

अभीक्ष्णम्—[अव्य०] नित्य। बारम्बार।

अभीप्सित—[वि०] इच्छित। चाहा हुआ। अभिलषित। प्रिय।

अभीर—[पु०] आभीर। अहीर। गोप। एक छंद।

अभीरु—[पु०] निर्भय। निडर। शतमूली नामक ओषधि। भैरव नामक देवता।

अभीषङ्ग—[पु०] निन्दा। अपवाद। शाप।

अभीषु—[पु०] लगाम। पगहा। किरण। अनुराग। इच्छा।

अभीष्ट—[वि०] वांछित। अभीप्सित। चाहा हुआ। प्रिय। मनोहर। [पु०] मनोरथ।

अभुक्त—[वि०] बिना भोगा हुआ। बिना खाया हुआ। व्यवहार में न लाया हुआ। जिसने भोजन न किया हो।

अभुक्त मूल—[पु०] ज्योतिष में गण्डान्त नामक योग जो ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम दो घड़ी और मूल नक्षत्र के प्रारम्भ की दो घड़ी मिल कर चार घड़ी का होता है।

अभुग्न—[वि०] जो टेढ़ा न हो। सीधा। सरल। स्वस्थ। नीरोग।

अभूत—[वि०] जो हुआ न हो।

अभूतपूर्व—[वि०] जो पहले न हुआ हो। अद्भुत। अनोखा। अपूर्व।

अभूमि—[वि०] अपात्र। अयोग्य। अनधिकारी। [स्त्री०] दरिद्रता। [पु०] स्थानाभाव। आधार या आश्रय का न होना।

अभेद—[वि०] भेदरहित। अविशेष। समान। [पु०] भेद का न होना। एकता। समानता। अभिन्नता। फ़र्क़ या अन्तर का न होना।

अभेदनीय—[वि०] न काटने योग्य। विभाग न करने योग्य। जिसका भेदन-छेदन न हो सके।

अभेद्य—[वि०] जो काटा-छाँटा न जा सके। विभाग न करने योग्य। [पु०] हीरा।

अभोजन—[पु०] भोजन का अभाव। उपवास। निराहार।

अभौतिक—[वि०] अगोचर। सूक्ष्म। जो पंचभूत निर्मित न हो।

अभ्यग्र—[वि०] समीप। निकट।

अभ्यङ्ग—[पु०] तैल मलना। उबटन लगाना।

अभ्यञ्जन—[पु०] तैल। तैल मलना। अभ्यंग।

अभ्यधिक—[वि०] प्रत्येक दृष्टि से अच्छा। सब ओर से अधिक।

अभ्यन्तर—[पु०] मध्य। बीच का स्थान। बीच हृदय। [वि०] भीतर। बीच में। हृदय में।

अभ्यनुज्ञा–[स्त्री०] आज्ञा। अनुमोदन। स्वीकृति। सम्मति।

अभ्यमित—[वि०] रोगी। बीमार।

अभ्यमित्रीण—[पु०] अपने ही बल-बूते पर शत्रु से युद्ध करनेवाला।

अभ्यर्ण—[वि०] समीप। निकट। पास। अभ्यग्र।

अभ्यर्थना—[स्त्री०] प्रार्थना। विनय। सम्मुख निवेदन करना। स्वागत-सत्कार। अगवानी।

अभ्यर्थनीय—[वि०] अभ्यर्थना करने योग्य।

अभ्यर्थित—[वि०] जिसकी अभ्यर्थना की गई हो।

अभ्यर्हित—[वि०] अच्छे प्रकार पूजा गया।

अभ्यवकर्षण—[पु०] सामने अपनी ओर खींचना। तलवार का म्यान से निकालना। बाण चढ़ाकर धनुष का तानना।

अभ्यवस्कन्द—[पु०] शत्रु पर प्रहार करना। आक्रमण करना। शत्रु द्वारा किया गया प्रहार।

अभ्यवस्कन्दन—[पु०] देखो "अभ्यवस्कन्द"।

अभ्यवहार—[पु०] भोजन। खाना।

अभ्यवहृत–[वि०] भुक्त। खाया हुआ।

अभ्यसन—[पु०] अभ्यास करना। किसी काम को बार-बार करना।

अभ्यसित—[वि०] जो बार-बार किया गया हो। जिसका अभ्यास किया गया हो।

अभ्यसूया—[स्त्री०] निन्दा। गुणों में दोषारोपण करना।

अभ्यस्त—[वि०] जिसका अभ्यास किया गया हो। जिसने अभ्यास किया हो। अभ्यासी। दक्ष। कुशल।

अभ्याकांक्षित– [पु०] झूठा अभियोग। झूठा दावा। मिथ्या विवाद।

अभ्याख्यान—[पु०] देखो "अभ्याकांक्षित"।

अभ्यागत—[पु०] अतिथि। पाहुना। [वि०] समीप आया हुआ। सामने आया हुआ।

अभ्यागम–[पु०] विरोध। वैर। लड़ाई। युद्ध। पास आना। सम्मुख आना। भोग। स्वीकार। फल का सम्बन्ध।

अभ्यागारिक—[पु०] घर के काम-धन्धों में व्यस्त।

अभ्याघात—[पु०] मार-पीट। चोट पहुँचाना। आक्रमण। हमला।

अभ्यादान—[पु०] आरम्भ। किसी काम का सब से पहले प्रारम्भ करना। दान लेना।

अभ्यामर्द—[पु०] युद्ध। रगड़ना। भींचना। निचोड़ना।

अभ्याश—[पु०] अवश्य। निश्चय। समीप।

अभ्यास—[पु०] किसी क्रिया को बार-बार कहना। एक ही कार्य में बार-बार लगना। स्वभाव। आदत। टेव। साधन। आवृत्ति।

अभ्यासादन—[पु०] शत्रु का मुकाबला करना। शत्रु के सामने जाना। आक्रमण करके शत्रु की शक्ति क्षीण कर देना।

अभ्यासी—[वि०] अभ्यास करनेवाला। जिसे अभ्यास (टेव) हो वह। साधक। साधना करनेवाला।

अभ्याहार—[पु०] भोजन। आहार। देखते देखते चुरा लेना।

अभ्युच्चय—[पु०] समूह। उन्नति। तरक्की। अभ्युदय। सम्पदा। लक्ष्मी।

अभ्युत्थान—[पु०] उदय होना। बढ़ती। उन्नति। समृद्धि। उद्यम। उत्पत्ति। आरम्भ। किसी के प्रति आदर प्रकट करने के लिए उठकर खड़े होना। अगवानी करना।

अभ्युदय—[पु०] उत्कर्ष। बढ़ती। उन्नति। उत्पत्ति। प्रादुर्भाव। चाहे हुए कार्य की सिद्धि। विवाहादि का शुभ अवसर। सूर्यादि का उदय होना।

अभ्युदित—[पु०] सूर्योदय काल में सोनेवाला। सूर्योदय तक सोते रहने के कारण जो प्रातःकाल के सन्ध्यादि कार्य नहीं कर सका—वह। उदय हुआ निकला। चमका।

अभ्युदीरित—[वि०] कहा हुआ। कथित। उक्त। सामने कहा गया।

अभ्युद्यत—[वि०] तैयार। उद्यत। बिना मांगे मिलनेवाला—कर्मफल।

अभ्युपगम—[पु०] प्राप्ति। स्वीकार। तर्क। युक्ति। दलील। पास आना। सामने आना।

अभ्युपगत—[वि०] समीप आया हुआ। प्राप्त। स्वीकृत। अङ्गीकार किया हुआ। निश्चित।

अभ्युपपत्ति–[स्त्री०] तर्क। सान्त्वना। स्वीकार। अनुग्रह। अनुकम्पा। देवर से सन्तान उत्पन्न कराना।

अभ्युपाय—[पु०] स्वीकार। अङ्गीकार। उपचार। उपाय। अच्छा उपाय।

अभ्युपायन—[पु०] भेंट। भेंट करने योग्य पदार्थ।

अभ्युपेत—[वि०] समीप आया हुआ। स्वीकृत। अभ्युपगत।

अभ्र—[पु०] मेघ। बादल। आकाश। स्वर्ण। सोना। भोड़र नामक खनिज द्रव्य। भुड़-भुड़। नागर मोथा।

अभ्रंलिह-[पु०] वायु (जो बहुत होने के कारण बादलों को छूता है) [वि०] अत्युच्च। बहुत ऊँचा। (पर्वतादि) बादलों को छूनेवाला।

अभ्रक—[पु०] भुड़ भुड़। अबरक।

अभ्रङ्कष - [पु०] वायु। अभ्रंलिह। [वि०] बहुत ऊँचा।

अभ्रपुष्प —[पु०] जल। वेंत का वृत्त। (इसके पुष्प अतिश्वेत होने से)

अभ्रम—[वि०] भ्रमरहित। अभ्रान्त।

अभ्रमातङ्ग—[पु०] अभ्रक के से श्वेत रंग वाला हाथी। ऐरावत। इन्द्र का हाथी।

अभ्रमाला—[स्त्री०] मेघमाला। बादलों का समूह।

अभ्रमु—[स्त्री०] ऐरावत हाथी की हथिनी।

अभ्रमु वल्लभ—[पु०] अभ्रमु का प्रिय। ऐरावत।

अभ्ररोह—[पु०] वैदूर्य नामक मणि। (यह बादल के गर्जने से प्रकट होता है ऐसी लोक प्रसिद्धि है)।

अभ्रान्त—[वि०] भ्रमरहित। स्थिर। स्थिरमति।

अभ्रि—[स्त्री०] लकड़ी का बना फावड़े के आकार का औजार। फावड़ी जिस से पशुओं का गोबर हटाते हैं।

अभ्री—[स्त्री०] देखो "अभ्रि"।

अभ्रेष-[पु०] उचित। न्याययुक्त। ठीक।

अभ्रोत्थ—[पु०] बादलों के घर्षण से उत्पन्न होनेवाला-वज्र। बिजली।

अम—[पु०] रोग। व्याधि। [वि०] कच्चा फल। [अव्य०] शीघ्रता। जल्दी। अल्प। थोड़ा।

अमङ्गल [वि०] अशुभ। अकुशल। मंगलशून्य। [पु०] अण्ड का वृत्त। अकुशल। दुःख।

अमङ्गल्य—[वि०] अशुभसूचक। अमङ्गल-जनक।

अमचूर—[पु०] सूखी हुई कच्चे आम की फाँकें। खटाई।

अमत—[पु०] रोग। मृत्यु। काल। असम्मति।

अमत्त—[वि०] जो मतवाला न हो। शान्त। घमण्ड रहित। जिसकी विचार-शक्ति ठीक हो।

अमत्र-[पु०] पात्र (थाली, लोटा आदि) बर्तन। हथियार।

अमत्सर—[वि०] डाह या जलन से शून्य। ईर्ष्यारहित।

अमन—[पु०] शान्ति। आराम। रक्षा। बचाव।

अमन्द—[वि०] जो धीमा न हो। तेज। श्रेष्ठ। उत्तम। उद्योगी। वृत्त।

अमर—[वि०] जो मरे नहीं। सदा रहनेवाला। [पु०] देवता। पारा। अस्थि-संहार (हड़जोड़ा) नामक वृत्त। अमर कोश नामक ग्रन्थ का रचयिता। हड्डियों का समूह। उनचास पवनों में से एक पवन का नाम।

अमरता —[स्त्री०] देवत्व। देवतापन। मरण का अभाव। चिरजीवीपन।

अमरत्व—[पु०] देखो "अमरता"।

अमरदा —[पु०] देवदारु।

अमरद्विज—[पु०] देवताओं की पूजा करनेवाला ब्राह्मण। पुजारी। देवल।

अमरपद—[पु०] मुक्ति। मोक्ष।

अमरपुर—[पु०] देवताओं का नगर। अमरावती। इन्द्रपुरी।

अमर पुष्पक—[पु०] काँस नामक घास।

अमरबेल—[स्त्री०] आकाशबेल।

अमरलोक—[पु०] देवलोक। स्वर्ग। इन्द्रपुरी। अमरपुर।

अमरवल्लरी, अमरवल्ली—[स्त्री०] अमरबेल। आकाशबेल।

अमरस—[पु०] आम का रस और कच्चा दूध मिलाकर तैयार किया गया एक पेय। आम का रस।

अमरा—[स्त्री०] दूब। गिलोय। ग्वारपाठा। गर्भ-की एक नाड़ी। जरायु। इन्द्रपुरी।

अमराई—[स्त्री०] आमों की वाटिका। आमवृत्तों की पंक्ति।

अमराद्रि—[पु०] सुमेरु पर्वत।

अमरालय—[पु०] देवताओं का घर। स्वर्ग। देवलोक।

अमरावती—[स्त्री०] इन्द्रपुरी। देवताओं की नगरी।

अमरूत—[पु०] अमरूद नाम से प्रसिद्ध फल या उसका वृत्त। सफरी।

अमरेश—[पु०] देवराज। देवताओं का स्वामी। इन्द्र।

अमर्त्य—[पु०] देवता। [वि०] जो मरे नहीं। अमर।

अमर्याद—[वि०] मर्यादारहित। असीम। नियमविरुद्ध। जिसकी मान-मर्यादा न हो। अप्रतिष्ठित।

अमर्ष—[पु०] क्रोध। विरोध। अक्षमा। असहनशीलता।

अमर्षण—[वि०] असहनशील। क्रोधी। गुस्सैल।

अमर्षी—[वि०] देखो "अमर्षण"।

अमल—[पु०] निर्मल। स्वच्छ। निर्दोष। कार्यरूप में लाना। कार्य।

व्यवहार । समय । वक्त । नशा । शासन । अधिकार ।

अमलता—[स्त्री०] स्वच्छता । निर्मलता । निर्दोषपना ।

अमलतास—[पु०] इस नाम से प्रसिद्ध वृक्ष जिस पर लम्बी-लम्बी गोल फलियाँ आती हैं ।

अमलबेत—[पु०] एक बेल का नाम जिसकी लकड़ी खट्टी होती है और चूर्ण में डाली जाती है ।

अमला—[स्त्री०] लक्ष्मी । भूम्यामलकी । सातला नामक वृक्ष । कचहरी के कर्मचारी । जमींदार या रईस के नौकर-चाकर ।

अमली—[वि०] क्रियात्मक । व्यावहारिक । कार्यरूप में लानेवाला । कर्मण्य । नशा पीनेवाला ।

अमा—[स्त्री०] अमावस । मावस । कृष्णपक्ष की पन्द्रहवीं तिथि । चन्द्रमा की सोलह कलाओं में से एक । (अव्य०) साथ । समीप ।

अमात्य—[पु०] मन्त्री । बन्धु ।

अमानना—[स्त्री०] अनादर । धिक्कार ।

अमानी—[वि०] निरभिमान । जो घमंडी न हो । निरहंकार । सीधा-सादा ।

अमानुष—[पु०] मनुष्य से भिन्न-देवता । राक्षस, पशु आदि । [वि०] मनुष्य-स्वभाव के विरुद्ध । मनुष्य की सामर्थ्य से बाहर ।

अमानुषिक—[वि०] मनुष्य-स्वभाव के विरुद्ध । मनुष्य की शक्ति से बाहर का । पैशाचिक । पशुओं का सा ।

अमानुषी–[वि०] देखो "अमानुषिक" ।

अमान्य—[वि०] न मानने योग्य । अमाननीय । अनादृत ।

अमाय—[वि०] मायारहित । माया से निर्लिप्त । निश्छल । निष्कपट । शुद्ध-हृदय । रोगी ।

अमाया—[स्त्री०] निष्कपटता । निश्छलता । [वि०] मायारहित । निष्कपट ।

अमायिक–[वि०] मायारहित । निर्लिप्त ।

अमावस्या, अमावास्या—[स्त्री०] मावस । अमा ।

अमिट—[वि०] जो मिटे नहीं । अनश्वर । स्थायी । जिसका होना निश्चित हो । अटल । अवश्यंभावी । अनिवार्य ।

अमित--[वि०] असीमित । अपरिमित । असीम । अनन्त । बहुत अधिक ।

अमिताभ--[पु०] बुद्ध भगवान् का एक नाम । [वि०] बहुत अधिक चमकवाला ।

अमित्र—[पु०] शत्रु । वैरी । [वि०] जिसका कोई मित्र न हो ।

अमिल—[वि०] बेमेल । बेजोड़ । जो मिले नहीं ।

अमिश्रित—[वि०] विशुद्ध । खालिस । बिना मिलावट का । जो मिलाया न गया हो । अलग ।

अमिष—[पु०] सांसारिक सुख । छल-कपट का न होना । [वि०] छल रहित । निष्कपट ।

अमी—[वि०] रोगी । [पु०] अमृत ।

अमीकर—[पु०] चन्दमा । जिसके किरणों में अमृत है । सुधाकर । सुधांशु ।

अमुक—[वि०] फलाँ ।

अमुत्र—[अव्य०]परलोक । जन्मान्तर ।

अमुष्य पुत्र—[पु०] कुलीन । जो अच्छे कुल में उत्पन्न हुआ हो ।

अमूर्त—[वि०] निराकार । मूर्तिरहित ।

अमूर्तिमान्—[वि०] जिसकी मूर्ति (आकृति) न हो । निराकार । अगोचर ।

अमूल—[वि०] बिना जड़ का । निर्मूल । निराधार । [पु०] प्रकृति । (सांख्य के मत से) ।

अमूलक--[वि०] असत्य । मिथ्या । निराधार । निर्मूल ।

अमूल्य—[वि०] बहुत कीमती । बहुमूल्य । अनमोल । जिसका मूल्य निश्चित न हो सके । बिना दाम का । मुफ्त ।

अमृत—[पु०] वह पदार्थ जिसको पीकर प्राणी अमर हो जाता है । पीयूष । सुधा । घी । जल । दूध । पारा । ब्रह्म । मुक्ति । अन्न । धन । सोना । स्वादु पदार्थ । यज्ञ-शेष पदार्थ । बिना माँगे प्राप्त हुई वस्तु । औषधि । विष । देवता । धन्वन्तरि । [वि०] जो मरे नहीं । सुन्दर । प्रिय । तेजस्वी ।

अमृतकुण्डली—[स्त्री०] एक छन्द का नाम । एक प्रकार का बाजा ।

अमृतगति—[स्त्री०] एक छन्द ।

अमृतजटा—[स्त्री०] जटामासी नामक औषधि ।

अमृत-तरंगिणी—[स्त्री०] चाँदनी । ज्योत्स्ना ।

अमृतत्व—[पु०] मोक्ष । मुक्ति । न मरना ।

अमृतदीधिति–[पु०] अमृत के समान जिसकी किरणें हैं वह, चन्द्रमा । सुधाकर ।

अमृतध्वनि—[स्त्री०] एक छन्द का नाम ।

अमृतफला—[स्त्री०] दाख । द्राक्षा । आमला । आमलकी ।

अमृत मूरि—[स्त्री०] अमर मूरि । संजीवनी बूटी ।

अमृत योग—[पु०] ज्योतिष में एक मुहूर्त जिसमें कार्य करना शुभ-दायक माना गया है ।

अमृतवल्ली—[स्त्री०] गिलोय । गुडूची । अमृता ।

अमृतसञ्जीवनी—[स्त्री०] आयुर्वेद में एक सिद्ध औषधि का नाम ।

अमृतसू—[स्त्री०] देवताओं की माता । अदिति । [पु०] चन्द्रमा ।

अमृतसोदर—[पु०] घोड़ा । उच्चैःश्रवा नामक घोड़ा । जो अमृत के साथ समुद्र से उत्पन्न हुआ था ।

अमृतस्रवा—[स्त्री०] एक लता-विशेष । उपवल्लिका । घनवल्ली । सितलता ।

अमृता—[स्त्री०] गिलोय । मदिरा । आमलकी । दूर्वा । हर्रे । तुलसी । पीपल । पिप्पली । अतिविषा नामक जड़ी ।

अमृतान्धस्—[पु०] देवता । जिसका भोजन अमृत है वह । अमृताशन ।

अमृतांशु—[पु०] चन्द्रमा ।

अमृताशन—[पु०] देवता । अमृतान्धस् ।

अमृताहरण—[पु०] गरुड़ ।

अमृताह्व—[पु०] रुचिफल । नाम-पाती नाम से प्रसिद्ध फल ।

अमेधा—[वि०] मूर्ख । कम बुद्धिवाला ।

अमेध्य—[वि०] अपवित्र । मलिन । नापाक । [पु०] विष्ठा । मल ।

अमेय—[वि०] अपार । असीम । जो नाप-तोल अथवा अन्दाज़ में न आ सके । जो जाना न जा सके । अज्ञेय ।

अमोघ—[वि०] सफल । अव्यर्थ । अचूक ।

अंब—[स्त्री०] अम्मा । माता । अंबा ।

अंबक—[पु०] नेत्र । आँख । पिता । ताँबा ।

अंबर—[पु०] आकाश । कपड़ा । अबरक । कपास । एक सुगंधित वस्तु । एक इत्र । राजपूताने का एक पुराना नगर । अमृत । बादल । मेघ । उत्तरी भारत का एक देश । रत्न ।

अंबरमणि—[पु०] आकाश की मणि—सूर्य ।

अंबराई—[स्त्री०] आमों का बगीचा ।

अंबरान्त—[पु०] कपड़े का सिरा । आकाश का छोर । क्षितिज ।

अंबरीष—[पु०] विष्णु । शिव । सूर्य । बालक । आँवले का फल या पेड़ । एक नरक का नाम । युद्ध । पश्चात्ताप । सूर्य-वंश का एक राजा । भाँड़ । भड़भूजे का वह बर्तन जिसमें डालकर वह अन्न भूनता है ।

अम्बरौक—[पु०] देवता ।

अंबष्ठ—[पु०] चिकित्सक । हकीम । एक देश का नाम । ब्राह्मण पुरुष से वैश्य स्त्री में उत्पन्न हुआ पुत्र । कायस्थ । हाथीवान । महावत ।

अम्बा—[स्त्री०] माता । जननी । काशिराज की एक कन्या का नाम । गौरी । पार्वती । अंबष्ठा नाम की लता ।

अम्बालिका—[स्त्री०] माता । अम्बा । काशिराज इन्द्रद्युम्न की एक कन्या । पाण्डु की माता । दुर्गा । अंबष्ठा लता ।

अम्बिका—[स्त्री०] माता । काशि-राज की पुत्री । धृतराष्ट्र की माता । गौरी । दुर्गा । अंबष्ठा नामक बेल ।

अम्बिकेय—[पु०] अम्बिका का पुत्र । गणेश । स्वामिकार्तिक । धृतराष्ट्र ।

अम्बु—[पु०] जल । पानी । सुगंधवाला नामक ओषधि । चार की संख्या ।

अम्बुकणा—[स्त्री०] पानी की बूँद । जलबिन्दु ।

अम्बुकिरात—[पु०] एक जलजन्तु । मगर ।

अम्बुकेशी—[पु०] एक जलजीव । ऊद ।

अम्बुचर—[पु०] जलचर । जलजन्तु । पानी के जीव ।

अम्बुचामर—[पु०] सिवार । शैवाल ।

अम्बुज—[पु०] पानी में उत्पन्न होने-वाला । कमल । शंख । चन्द्रमा । बेंत । ब्रह्मा ।

अम्बुजन्मा—[पु०] कमल ।

अम्बुजाक्ष—[उभ०] कमल जैसे नेत्रोंवाला ।

अम्बुजात—[उभ०] जल से उत्पन्न हुआ । कमल ।

अम्बुजासन—[पु०] वह जिसका कमल का आसन हो—ब्रह्मा ।

अम्बुजासना—[स्त्री०] कमल के आसनवाली, लक्ष्मी । कमला ।

अम्बुद—[पु०] बादल । मेघ । जल देनेवाला । नागरमोथा नामक ओषधि ।

अम्बुधि—[पु०] समुद्र । सागर ।

अम्बुप—[पु०] समुद्र । वरुण । शत-भिषा नक्षत्र । पानी पीनेवाला ।

अम्बुपति—[पु०] समुद्र । वरुण । जल का स्वामी ।

अम्बुपत्रा—[स्त्री०] एक सुगन्धित वृक्ष । मोथा नामक घास । नागरमोथा ।

अम्बुप्रसाद—[पु०] पानी को साफ़ करनेवाला । निर्मली नामक ओषधि । निर्मली का पेड़ । फिटकिरी ।

अम्बुप्रसादन—[पु०] देखो "अम्बु-प्रसाद" ।

अम्बुभृत—[पु०] मेघ । बादल । समुद्र । मोथा ।

अम्बुर—[पु०] दरवाजे की चौखट के नीचेवाला काष्ठ । देहर ।

अम्बुराशि—[पु०] समुद्र ।

अम्बुरुह—[पु०] कमल । पद्म । सरोज । जलज ।

अम्बुरुहा—[स्त्री०] कमलिनी । पद्मिनी । कुमुदिनी ।

अम्बुवाह—[पु०] मेघ । बादल । मोथा ।

अम्बुवेतस—[पु०] एक प्रकार का बेंत जो पानी में उत्पन्न होता है । जल-वेतस । नादेयी ।

अम्बुशायी—[पु०] जल में अथवा समुद्र में सोनेवाला । विष्णु । नारायण

अम्बुसर्पिणी—[स्त्री०] जोंक । जलौका ।

अम्बूकृत—[वि०] ऐसे बोलना । जिसमें थूक गिरता जाय । सथूत्कार ।

अम्बोह—[पु०] मनुष्यों का समूह

भीड़-भाड़। झुण्ड। जमघट।

अम्भ—[पु०] जल। पितर। देव। असुर। पितृलोक। चार की संख्या। ज्योतिष में लग्न से चौथी राशि।

अम्भसार—[पु०] मुक्ता। मोती। जौव।

अम्भस्तुष्टि—[स्त्री०] सांख्य के मतानुसार आध्यात्मिक चार तुष्टियों में से एक।

अम्भनिधि—[पु०] समुद्र। सागर।

अम्भोज—[पु०] जल से उत्पन्न होने वाला। कमल। चन्द्रमा। शंख। कपूर। सारस नामक पक्षी।

अम्भोजयोनि-[पु०] प्रजापति। ब्रह्मा।

अम्भोजिनी—[स्त्री०] कमलों का समूह। वह स्थान जहाँ कमल अधिक हों। कमलवन। पद्मिनी। पद्मलता। कमलिनी।

अम्भोद—[पु०] बादल। मोथा। जो पानी दे वह।

अम्भोधर—[पु०] मेघ। बादल। समुद्र। मोथा।

अम्भोधि—[पु०] पानी रखने का स्थान। समुद्र।

अम्भोधिवल्लभ—[पु०] प्रवाल। मूँगा।

अम्भोनिधि—[पु०] समुद्र। सागर। अम्भनिधि।

अम्भोराशि—[पु०] समुद्र। सागर।

अम्भोरुह—[पु०] कमल। जलज। सरोज।

अम्मय—[वि०] जलमय। जलका विकार—झाग आदि।

अम्र—[पु०] आम का वृक्ष। आम का फल।

अम्ल—[पु०] खट्टा। खट्टी वस्तु। मठा। छाछ। तक्र। खटाई। तेजाब।

अम्लक—[पु०] कम खट्टा।

अम्लकेशर—[पु०] चकोतरा नामक फल। बीजपुर।

अम्लपित्त—[पु०] एक रोग-विशेष।

अम्लफल—[पु०] नीबू की जाति का एक फल।

अम्लसार—[पु०] आमलासार गंधक। काँजी। अमलबेत। चूक।

अम्लान—[वि०] जो मुरझाया हुआ न हो। खिला हुआ। निर्मल। स्वच्छ।

अयं—[सर्व०] यह।

अय—[पु०] शुभ फलदायक भाग्य। पूर्वजन्म के शुभ कर्म। सौभाग्य। लोहा। अग्नि।

अयज्ञिय—[वि०] जो यज्ञ में काम आने योग्य न हो।

अयथा—[वि०] झूठ। मिथ्या। असत्य। अयोग्य।

अयथार्थ—[वि०] असत्य। असंगत। जो ठीक न हो।

अयन—[पु०] राशिचक्र का आधा भाग। काल। समय। आश्रय। स्थान। घर। गाय-भैंस के थनों का ऊपरी भाग जिसमें दूध रहता है। गति। चाल। जाना। सूर्य-चन्द्र का दक्षिण से उत्तर और उत्तर से दक्षिण में जाना।

अयनसंक्रम—[पु०] ज्योतिष में मकर और कर्क की संक्रान्तियाँ जिनमें सूर्य दक्षिणायन से उत्तरायण में और उत्तरायण से दक्षिणायन में प्रवेश करता है। अयन-संक्रांति।

अयनसम्पात—[पु०] ज्योतिष में अयनांशों का योग।

अयन्त्रित—[वि०] जो नियन्त्रण में न हो। क़ाबू से बाहर। अबाध। बेलगाम। अनर्गल।

अयश—[पु०] निन्दा। अपकीर्ति। अपयश। लोकापवाद।

अयशस्कर—[वि०] अपयश करानेवाला। ऐसा कार्य जिससे लोक में अपवाद हो।

अयस्कान्त—[पु०] चुम्बक।

अयस्कार—[पु०] लोहे का काम करनेवाला। लुहार।

अयाचक—[वि०] न माँगनेवाला। सन्तुष्ट। पूर्णकाम।

अयाचित—[वि०] बिना माँगा हुआ। अप्रार्थित। [पु०] एक मुनि का नाम।

अयाची—[वि०] जो माँगे नहीं। न माँगनेवाला।

अयाच्य—[वि०] न माँगने योग्य।

अयान—[पु०] अज्ञ। अनजान। भोला स्वभाव। न जाना।

अयानप—[पु०] अज्ञता। अनजानपन। भोलापन। नासमझी।

अयानी—[स्त्री०] भोली। अजान।

अयि—[अव्य०] स्त्रियों के लिए सम्बोधन। प्रेमपूर्वक बुलाना। प्रश्न। नम्रता। प्रार्थना। अनुराग।

अयुक्छद—[पु०] सप्तपर्ण नामक वृक्ष।

अयुक्त—[वि०] जो ठीक न हो। अनुचित। अयोग्य। जो मिला हुआ न हो। असम्बद्ध। अलग। युक्ति विरुद्ध।

अयुक्ति—[स्त्री०] युक्ति का न होना। जो युक्ति न हो। अप्रवृत्ति। योग न देना। गड़बड़। असम्बद्धता।

अयुग—[वि०] देखो "अयुग्म"।

अयुग्म—[वि०] जिसका जोड़ा न हो। बिना जोड़े का। अकेला। एकाकी। विषम। जैसे—तीन, पाँच, सात आदि।

अयुग्मच्छद—[पु०] विषम पत्तोंवाला। सप्तपर्ण नामक वृक्ष।

अयुत—[वि०] दस हज़ार की संख्या। न मिला हुआ। विभक्त। अयुक्त। अमिश्रित।

अये—[अव्य०] सम्बोधन। क्रोध। कोप। विवाद। सम्भ्रम। आश्चर्य। स्मरण।

अयोग—[पु०] प्रवृत्ति का अभाव। ध्यान का न होना। जो औषधि न हो।

संकट। कूट वाक्य। वह वाक्य जिसका अर्थ कठिनाई से लगाया जाय। असम्भव। न मिलना। असमय। कुसमय। [वि०] अनुचित। अयोग्य। बुरा।

अयोगव—[पु०] वैश्य स्त्री में शूद्र के वीर्य से उत्पन्न वर्णसंकर सन्तान।

अयोगवाह—[पु०] अनुस्वार (ं) और विसर्ग (:)।

अयोग्य—[वि०] जिसमें योग्यता न हो। निकम्मा। नालायक। अनुचित। अनुपयुक्त।

अयोग्र—[पु०] मुसल। हथौड़ा। गदा।

अयोधन—[पु०] हथौड़ा। लौह-कूट। अयोग्र।

अयोध्या—[स्त्री०] इस नाम से प्रसिद्ध नगरी। साकेत। उत्तर कोशल। कोशला। [वि०] युद्ध न करने योग्य। जिससे लड़ाई न की जाय।

अयोनि—[वि०] जन्म न धारण करनेवाला। अजन्मा। शाश्वत। नित्य। जन्मरहित।

अयोनिज—[पु०] देखो "अयोनि"।

अयोनिजा—[स्त्री०] गर्भ से न उत्पन्न होनेवाली, सीता।

अयोमल—[पु०] लोहे का मैल। मण्डूर। लौहकिट्ट।

अर—[पु०] शीघ्र। पहिये के अरा—जो धुरे से परिधि तक लम्बे-लम्बे लगे होते हैं। जैनियों के चौबीस तीर्थङ्करों में से अठारहवें तीर्थङ्कर का नाम।

अरगजा—[पु०] एक प्रकार का सुगन्धित उबटन जो केसर, कपूर, चंदन आदि वस्तुओं को मिलाकर बनाया जाता है।

अरघट्ट, अरघट्टक—[पु०] महाकूप। कूएँ से पानी निकालने का रहट नामक यन्त्र। पानी खींचने की गिर्री जो कूओं के ऊपर लगी होती है।

अरज—[वि०] रजोगुण से रहित। काम-क्रोधादि से शून्य। जिसमें धूल न हो।

अरजा—[स्त्री०] कुमारी कन्या। जिसके अभी रजोदर्शन न हुआ हो। बिना धूलवाली। काम-क्रोधादि से रहित।

अरणि—[पु०] अग्निमन्थ। लकड़ी का बना एक यन्त्र-विशेष जिसके द्वारा यज्ञ में अग्नि उत्पन्न की जाती है। एक वृक्ष-विशेष। सूर्य।

अरणी—[स्त्री०] देखो "अरणि"।

अरण्य—[पु०] वन। जंगल।

अरण्य-धान्य—[पु०] जंगली अन्न। नीवार। समा।

अरण्य-मक्षिका—[स्त्री०] वन-मक्षिका। दंश। डाँस।

अरण्य-मुद्ग—[पु०] वन मूँग। मकुष्ठक। मोंठ।

अरण्य-रोदन—[पु०] जंगल में रोना। निष्फल रुदन। ऐसा कथन जिस पर कोई ध्यान ही न दे।

अरण्यानी—[स्त्री०] बड़ा जंगल। वनी। महावन।

अरतत्रप—[पु०] कुत्ता। क्योंकि यह रति-क्रिया करने में लज्जा नहीं करता। [वि०] रति-कार्य में लाज न करनेवाला।

अरति—[स्त्री०] विराम। विरक्ति। मानसिक दुःख। घबराहट। मन का न लगना। [वि०] रतिशून्य।

अरत्नि—[पु०] कुहनी से लेकर कनिष्ठिका उँगली के अग्रभागपर्यन्त लंबाई का प्रमाण।

अरथी—[स्त्री०] बाँसों की बनी टिखटी जिस पर मुर्दे को रखकर श्मशान ले जाते हैं। [पु०] जो रथी न हो। पैदल सैनिक।

अरदली—[पु०] किसी हाकिम का वह नौकर जो दरवाजे पर या साथ में रहे।

अरब—[पु०] सौ करोड़ की संख्या। एक देश का नाम। अरब नामक देश का रहनेवाला।

अरबी—[वि०] अरब देश का (घोड़ा, ऊँट आदि)। अरब देश की भाषा।

अरमान—[पु०] चाह। इच्छा। हौसला।

अरर [वि०] द्वार। दरवाजा। कपाट। किवाड़ा। ढक्कन। आच्छादन। आश्चर्य अथवा घबराहट का सूचक शब्द।

अररु—[पु०] शत्रु। वैरी।

अरविन्द—[वि०] कमल। लाल रंग का कमल। नीला कमल। नीलोत्पल। नीलोफर। ताम्र। ताँबा। सारस नामक पक्षी। बंगला पक्षी।

अरस—[वि०] नीरस। फीका। बेस्वाद। मूर्ख। गँवार।

अरसिक—[वि०] जिसे रस का ज्ञान न हो। रुचिहीन। अरसज्ञ। अविदग्ध।

अराज—[पु०] राज्य या शासन का अभाव। [वि०] बिना राजा का।

अराजक—[वि०] राजा रहित। बिना राजा का।

अराजकता—[स्त्री०] राजा या शासन-व्यवस्था का अभाव। अशान्ति। विप्लव।

अराति—[पु०] शत्रु। वैरी। काम-क्रोधादि विकार जो आन्तरिक शत्रु कहे गये हैं।

अराल—[पु०] मतवाला हाथी। [वि०] टेढ़ा। बाँका। टेढ़ा हाथ।

अराला—[स्त्री०] वेश्या। कुलटा। व्यभिचारिणी।

अरि—[पु०] शत्रु। वैरी। चक्र। चाक। पहिया। छः की संख्या। कत्था या खैर का एक भेद। खदिर-पत्रिका। गन्धानिका। ज्योतिष में लग्न से छठा घर जिसे रिपु या शत्रु का स्थान भी कहते हैं।

अरिघ्न—[पु०] लक्ष्मण के छोटे भाई का नाम । शत्रुघ्न ।

अरित्र—[पु०] नाव चलाने का पाता । चप्पू । कर्ण । हलि ।

अरिन्दम—[वि०] प्रतापी । प्रताप-शाली । शत्रु-विजेता । शत्रुओं का दमन करनेवाला ।

अरिमर्द—[वि०] शत्रुओं का मर्दन करनेवाला । [पु०] कासमर्द नामक वृक्ष जिससे खाँसी दूर हो जाती है ।

अरि-षड्वर्ग—[पु०] काम-क्रोधादि आन्तरिक छः शत्रुओं का समूह ।

अरिष्ट—[पु०] लहसन । लशुन । सूतिका-गृह । सौरिगृह । नीम । रीठा । कौआ । एक प्रकार का मद्य जो ओष-धियों के काढ़े को सड़ाकर तैयार किया जाता है । दुःख । पीड़ा । मरण । मरण सूचक योग । अमङ्गल । अपशकुन । अशुभ । छाछ । नेत्र-जल । आँसू । भूकम्प आदि उत्पात । वृषासुर नामक राक्षस ।

अरिष्टताति—[पु०] शुभ कथन । अच्छा कहना । [वि०] क्षेमकर । कल्याण करनेवाला । शुभकर । मंगल करनेवाला ।

अरिष्टनेमि—[पु०] जैनियों के चौबीस तीर्थङ्करों से में बाईसवें तीर्थङ्कर । कश्यप प्रजापति का एक नाम ।

अरिष्टसूदन—[पु०] अरिष्ट (वृषा-सुर) को नष्ट करनेवाला । विष्णु । [वि०] अमंगल दूर करनेवाला ।

अरिष्टी—[स्त्री०] अरिष्ट (मरण) सम्बन्धी क्रिया—तेरहवीं आदि । कुटकी नामक दवा ।

अरिहन—[पु०] देखो "अरिघ्न" ।

अरिहा—[वि०] शत्रु का नाश करने-वाला । [वि०] अरिघ्न । शत्रुघ्न ।

अरुचि—[पु०] एक रोग जिसमें रोगी को भोजन की इच्छा नहीं होती । अरोचक । अनिच्छा । अश्रद्धा । घृणा । सन्तोष का न होना । प्रसन्नता का अभाव ।

अरुचिकर—[वि०] जो भावे नहीं । जो अच्छा न लगे । अनिच्छा या घृणा उत्पन्न करनेवाला ।

अरुज—[पु०] एक वृक्ष-विशेष । [वि०] नीरोग । रोगरहित ।

अरुण—[पु०] सूर्य का सारथि । अनूरु । सूर्य । आक का पेड़ । सन्ध्या समय की लालिमा जो आकाश में छा जाती है । एक दैत्य का नाम । शब्दरहित । कुष्ठ रोग का एक भेद । पुन्नाग वृक्ष । गुड़ । केसर । सिन्दूर । एक देश-विशेष का नाम । माघ मास के सूर्य का नाम ।

अरुणप्रिया—[स्त्री०] सूर्य की पत्नी । छाया । अप्सरा ।

अरुणलोचन—[पु०] लाल नेत्र [वि०] जिसके लाल नेत्र हों कबूतर । कोयल ।

अरुणशिखा—[पु०] मुर्गा । ताम्रचूड़ ।

अरुणा—[स्त्री०] मजीठ । चोंटनी । मञ्जिष्ठा । गुञ्जा । अंबा । कदम्ब का फूल । श्यामा लता । लाल गाय । नदी-विशेष ।

अरुणाई—[स्त्री०] लालिमा । लाली ।

अरुणात्मज—[पु०] अरुण का बेटा । जटायु नामक पक्षी ।

अरुणावरज—[पु०] अरुण । अरुणाग्रज ।

अरुणिमा—[स्त्री०] लालिमा । लाली । अरुणाई ।

अरुणोदय—[पु०] सूर्योदय से पूर्व चार घड़ी का समय । ब्राह्म मुहूर्त्त । उषाकाल । भोर । तड़का ।

अरुणोपल—[पु०] पद्मराग मणि । लोहितक । लक्ष्मी पुष्प । लाल रंग का रत्नविशेष । चुन्नी ।

अरुन्तुद—[वि०] मर्मबेधक । मर्म-पीड़क । मर्मान्तक क्लेश पहुँचानेवाला ।

अरुन्धती—[स्त्री०] वशिष्ठ जी की पत्नी अक्षमाला । जो कर्दम मुनि की कन्या थी । एक बहुत छोटा तारा जो सप्तर्षि-मण्डल में वशिष्ठ नामक तारे के पास दिखाई देता है । दक्ष की एक कन्या जो धर्म के साथ विवाही गई थी ।

अरुस्—[पु०] सूर्य । लाल खदिर । (कत्था) । व्रण । क्षत । घाव । मर्म । सन्धि-स्थान ।

अरुष्कर—[वि०] घाव करनेवाला । क्षत-कारक ।

अरूप—[वि०] निराकार । रूपरहित । बुरा रूप । भौंडी आकृति ।

अरे—[वि०] नीच सम्बोधन । क्रोध-पूर्वक बुलाना । आश्चर्य-सूचक अव्यय ।

अरेरे—[अव्य०] अधम सम्बोधन । क्रोधपूर्वक बुलाना ।

अरोक—[वि०] निष्प्रभ । कान्तिरहित ।

अरोचक—[पु०] एक रोग । अरुचि । [वि०] अरुचिकर । जो रुचे नहीं । अरुचि करनेवाला ।

अरोचिष्णु—[वि०] अरुचिकर । कुरूप । अप्रिय । भोंडा । काला ।

अर्क—[पु०] सूर्य । इन्द्र । पण्डित । आक का पेड़ । रविवार । ताम्र । स्फटिक । बिल्लौर । विष्णु । ज्येष्ठ भ्राता । बड़ा भाई । बारह की संख्या । भबके से निकाला हुआ दवाओं का रस ।

अर्क चन्दन—[पु०] लाल चंदन ।

अर्कज—[पु०] सूर्य का पुत्र शनि । सुग्रीव । कर्ण । अश्विनीकुमार । यम ।

अर्कजा—[स्त्री०] सूर्य की पुत्री यमुना । तापती ।

अर्कतनय—[पु०] सूर्य-पुत्र । देखो "अर्कज" ।

अर्कतनया—[स्त्री०] देखो "अर्कजा" ।

अर्कव्रत—[पु०] सूर्य का व्रत जो सूर्य-सप्तमी के दिन किया जाता है । सूर्य के जल-शोषण के समान राजा का प्रजा से कर ग्रहण करने का नियम ।

अर्कसूनु— [पु०] सूर्यपुत्र। यम।

अर्कसोदर—[पु०] ऐरावत हाथी।

अर्काश्या—[पु०] सूर्यकान्त मणि। आतिशी शीशा। अरुणोपल। लाल। पद्मराग।

अर्कोपल—[पु०] देखो "अर्काश्या"।

अर्गल--[पु०] किवाड़ें बन्द करने के बाद उनके पीछे दोनों ओर की दीवारों में तिरछी लगाई जानेवाली लकड़ी जिस से किवाड़ें खुल न सकें। अड़बंगा। हुड़का। ब्योड़ा। किवाड़। [वि०] कल्लोल।

अर्गला-[स्त्री०] ब्योड़ा। बेंड़ा। अड़-बंगा। हुड़का। बिल्ली। सांकल। चट-खनी। सिटकनी। किवाड़। रोक। अव-रोध। हाथी के पैरों में बांधने की साकल। एक स्तोत्र जो दुर्गा सप्तशती का पाठ प्रारम्भ करने से पूर्व पढ़ा जाता है।

अर्घ—[पु०] मोल। भाव। कीमत। देव-पूजा का एक उपचार जिसमें पुष्प, अक्षत, कुश, पत्र, दूब आदि मिश्रित जल, शंख, अथवा अर्घ-पात्र में भरकर देवता के आगे धार बांध कर गिराया जाता है। किसी आदरणीय व्यक्ति के अपने स्थान पर आने पर उसे हाथ धोने के लिए जल देना।

अर्घपात्र--[पु०] तांबे या चांदी का बनाया हुआ अर्घ देने का पात्र-विशेष। अर्घा।

अर्घा--[पु०] देखो "अर्घपात्र"।

अर्घ्य—[वि०] अर्घ देने की सामग्री। पुष्प, अक्षत, चन्दन, दूर्वा आदि। अर्घ देने का जल। जिसको अर्घ दिया जाय वह। पूजनीय। [पु०] मधु। शहद।

अर्चक--[वि०] पूजा करनेवाला। पूजक।

अर्चन—[पु०] पूजन। पूजा।

अर्चना—[स्त्री०] पूजा। सत्कार।

अर्चनीय—[वि०] पूजा करने योग्य। पूज्य। आदरणीय। पूजनीय।

अर्चा-[स्त्री०] पूजा। अर्चना। मूर्ति। प्रतिमा। चित्र। तसवीर।

अर्चि—[स्त्री०] आग की लपट। लौ। किरण। चमक।

अर्चित—[वि०] पूजा गया। आदर किया गया।

अर्चिष्मान—[वि०] तेजोमय। चमक-दार। [पु०] सूर्य। अग्नि।

अर्च्य—[वि०] पूज्य। पूजनीय।

अर्जक--[वि०] इकट्ठा करनेवाला। उपा-र्जन करनेवाला। संग्रह कर्ता। [पु०] बर्बुई नामक जड़ी। तुलसी।

अर्जन—[पु०] जमा करना। पैदा करना। प्राप्ति। उपार्जन। संग्रह। कमाना।

अर्जित—[वि०] जमा किया हुआ। कमाया हुआ। संग्रह किया हुआ। प्राप्त। संगृहीत।

अर्जुन—[पु०] महाराज पाण्डु के एक पुत्र का नाम। कार्तवीर्य। सहस्रा-र्जुन। एक वृक्ष-विशेष। एक नेत्र-रोग। सफेद रंग। सफेद कनेर। चित्रा रंग। मयूर पक्षी। मोर। एकलौता बेटा। [वि०] सफेद रंगवाला।

अर्जुनध्वज—[पु०] हनुमान।

अर्जुनी---[स्त्री०] करतोया नामक नदी। कुटनी। उषा।

अर्ण—[पु०] अक्षर। वर्ण। एक शाक-विशेष। जल।

अर्णव—[पु०] समुद्र। एक प्रकार का छन्द। इन्द्र। सूर्य। अन्तरिक्ष।

अर्णवज—[पु०] समुद्रफेन।

अर्णवयान—[पु०] नौका। जहाज।

अर्णोद—[पु०] मेघ। जलद। बादल।

अर्तन—[पु०] निन्दा। जुगुप्सा।

अर्ति—[स्त्री०] पीड़ा। धनुष का किनारा। धनुष्कोटि। कमान का सिरा।

अर्थ—[पु०] धन। माल। लिए। निमित्त। हेतु। अभिप्राय। प्रयोजन। उद्देश्य। कारण। प्रकार। शब्द का भाव। शब्द की शक्ति। शब्द का विषय। वस्तु। निवृत्ति। हटना। इन्द्रियों का विषय।

अर्थकर—[पु०] प्रयोजन सिद्ध करानेवाला। लाभदायक। जिसके द्वारा धन उपार्जन किया जाय।

अर्थकरी—[स्त्री०] देखो "अर्थकर"।

अर्थदण्ड---[पु०] धन का दण्ड। जुर्माना।

अर्थदूषण—[पु०] धन को दूषित करना। अर्थात् धन को जूआ, मद्यपान। वेश्यागमनादि दुष्कर्मों में लगाना। धन का चुराना।

अर्थना--[स्त्री०] याचना। मांगना। भिक्षा। प्रार्थना। निवेदन।

अर्थपति—[पु०] राजा। कुबेर।

अर्थपिशाच—[वि०] घोर कृपण। मक्खीचूस। भारी कंजूस।

अर्थप्रयोग—[पु०] वृद्धिर्जीविका। ब्याज पर रुपया देना। सूदखोरी।

अर्थमन्त्री—[पु०] वह मन्त्री जो राज्य के धन-सम्बन्धी विभागों की देख-भाल करे। अर्थ-सचिव।

अर्थवाद--[पु०] स्तुति। प्रशंसा। गुण-कथन। वह वाक्य जिससे कोई काम करने के लिए उत्तेजना प्राप्त हो।

अर्थवान्—[पु०] पुरुष। [वि०] जिसके पास धन हो। अर्थवाला।

अर्थव्ययज्ञ—[वि०] किस कार्य में किस प्रकार कितना धन व्यय करना उचित है, इस बात को भले प्रकार जाननेवाला। धनव्यय के प्रकार का ज्ञाता।

अर्थशास्त्र—[पु०] चाणक्य मुनि-रचित नीतिशास्त्र। दण्डनीति। राजनीति।

लोक-व्यवहारबोधक शास्त्र । वह शास्त्र जिसमें धन की उत्पत्ति, वृद्धि, रक्षा, वितरण और उपभोग आदि का विवेचन हो ।

अर्थशास्त्री—[वि०] अर्थशास्त्र का ज्ञाता । राजनीति का पण्डित ।

अर्थसचिव—[पु०] देखो "अर्थ-मन्त्री" ।

अर्थागम—[पु०] धन की प्राप्ति । धनागम ।

अर्थात्—[अव्य०] यानी । प्रयोजन यह, भाव यह इत्यादि अर्थसूचक शब्द ।

अर्थान्तरन्यास—[पु०] साहित्य में एक अर्थालङ्कार जिसमें प्रकृत अर्थ से विशेष अर्थ का अथवा विशेष अर्थ से प्रकृत अर्थ का साधर्म्य या वैधर्म्य द्वारा समर्थन किया जाय ।

अर्थापत्ति—[स्त्री०] न्यायशास्त्र के मत से व्यतिरेक व्याप्तिज्ञान द्वारा उत्पन्न हुआ अनुमान । जैसे यदि कहा जाय, 'मोहन जीवित तो है परन्तु घर में नहीं है' इससे अनुमान किया जा सकता है कि घर से बाहर कहीं न कहीं अवश्य होगा । मीमांसकों के मत से वह प्रमाण जिसमें एक बात से दूसरी बात की सिद्धि स्वयं हो जाय । साहित्य में एक अलङ्कार ।

अर्थालङ्कार—[पु०] साहित्य में वह अलंकार जिसमें अर्थ का चमत्कार दिखाया गया हो ।

अर्थिक—[पु०] स्तुतिपाठक । बैतालिक । भाट । सोते हुए राजा को स्तुति पढ़ के जगानेवाला । भिक्षुक । भिखारी ।

अर्थी—[वि०] भिक्षुक । याचक । सहायक । सेवक । वादी । फ़रियादी । प्रार्थी । धनी ।

अर्थ्य—[वि०] पण्डित । धनवान् । न्याययुक्त । माँगने लायक़ । प्रार्थनीय । धनी । जिससे माँगा जाय । [पु०] शिलाजतु ।

अर्दन—[पु०] पीड़ा पहुँचाना । हिंसा । याचना । जाना ।

अर्दना—[स्त्री०] देखो "अर्दन" । भिक्षा ।

अर्दनि—[पु०] अग्नि । एक रोग विशेष । भिक्षा ।

अर्दित—[पु०] पीड़ित । सताया हुआ । मारा हुआ । याचित । गया हुआ । एक प्रकार का वायु रोग ।

अर्द्ध—[पु०] समान भाग । बराबर के दो भागों में से एक भाग । आधा । खण्ड । टुकड़ा । दो हिस्से किया गया ।

अर्द्धगङ्गा—[स्त्री०] कावेरी नदी ।

अर्द्धचन्द्र—[पु०] आधा चन्द्रमा । अष्टमी का चन्द्रमा । नखक्षत । नख-चिह्न । गलहस्त । गर्दनियाँ । एक प्रकार का बाण । मोर पंख की चन्द्रिका । अनुनासिक का चिह्न । ँ

अर्द्धनयन—[पु०] देवताओं का तीसरा नेत्र जो मस्तक में होता है ।

अर्द्धनारीश्वर—[पु०] हरगौरी रूप शिव । महादेव की एक विशेष प्रतिमा जिसमें आधा भाग शिव का और आधा पार्वती का है ।

अर्द्धपारावत—[पु०] तीतर नामक पक्षी ।

अर्द्धमागधी—[स्त्री०] प्राकृत भाषा का एक भेद । काशी और मथुरा के बीच के प्रदेश में बोली जानेवाली पुरानी भाषा ।

अर्द्धरात्र—[पु०] रात का आधा भाग । दो प्रहर रात्रि । निशीथ । पिछली आधी रात ।

अर्द्धवीक्षण—[पु०] अपाङ्ग दर्शन । कटाक्ष । आँख की बाहरी कोर में से देखना । पूरा न देखना ।

अर्द्ध समवृत्त—[पु०] वह छन्द जिसके पहले, तीसरे और दूसरे, चौथे चरण समान हों ।

अर्द्धाङ्ग—[पु०] आधा अङ्ग । एक रोग विशेष जिसमें रोगी का आधा शरीर बेकाम हो जाता है । पक्षाघात । लकवा ।

अर्द्धाङ्गिनी—[स्त्री०] स्त्री । पत्नी ।

अर्द्धाङ्गी—[पु०] शिव । अर्द्धनारीश्वर । [वि०] अर्द्धाङ्गरोग-पीड़ित ।

अर्द्धाली—[स्त्री०] आधी चौपाई । चौपाई के दो चरण ।

अर्द्धाशन—[पु०] आधा भोजन ।

अर्द्धासन—[पु०] आधा आसन । आसन का अर्द्ध भाग । किसी प्रिय व्यक्ति को बैठने के लिए अपना आधा आसन छोड़ देना । अत्यधिक स्नेह प्रकट करनेवाला सम्मान ।

अर्द्धेन्दु—[पु०] देखो "अर्द्धचन्द्र" ।

अर्द्धोदय—[पु०] एक पर्व विशेष जो माघ मास की अमावस के दिन रविवार और श्रवण नक्षत्र पड़ने पर मनाया जाता है ।

अर्द्धोरुक—[पु०] स्त्रियों के पहनने का वस्त्र-विशेष जो आधी जाँघों को ढके रहता है । जांघिया । पेटीकोट । घाँघरा ।

अर्पण—[पु०] देना । भेंट करना । सौंपना । दान । स्थापन ।

अर्पित—[वि०] दिया हुआ । भेंट किया गया । सौंपा गया । स्थापित ।

अर्पिश, अर्पिस—[पु०] हृदय । दिल ।

अर्बुद—[पु०] दस करोड़ की संख्या । एक पर्वत विशेष । अरावली पहाड़ । मेघ । दो मास का गर्भ । एक राक्षस । एक रोग विशेष जिसमें रोगी के शरीर पर गाँठें उठ आती हैं ।

अर्भ, अर्भक—[पु०] बालक । मूर्ख । कृश । दुबला पतला । थोड़ा । छोटा ।

अर्य—[पु०] स्वामी । ईश्वर । वैश्य । [वि०] श्रेष्ठ । उत्तम ।

अर्यमा—[पु०] सूर्य । पितरों का एक समुदाय । द्वादश आदित्यों में से एक । आक का पेड़ । उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र ।

अर्या, अर्याणी—[स्त्री०] अर्य का स्त्रीलिंग । स्वामिनी । वैश्या । वैश्य की स्त्री ।

अर्वती—[स्त्री०] घोड़ी । इंद्राणी ।

अर्वा—[पु०] घोड़ा । इंद्र ।

अर्वाक्—[अव्य०] पीछे । समीप । निकट । पहले । पूर्व । पर । अब । आजकल ।

अर्वाचीन—[वि०] आजकल का । पीछे का । नया । नवीन । पीछे उत्पन्न हुआ ।

अर्श-[पु०] एक रोग-विशेष। बवासीर।

अर्शी—[वि०] अर्श रोगवाला ।

अर्शोघ्न—[पु०] सूरण । जिमीकन्द ।

अर्शोघ्नी—[स्त्री०] लाल मूली ।

अर्शोदित—[पु०] भल्लातक । भिलावा। अर्श रोग में हितकारक ।

अर्ह—[पु०] योग्य । अधिकारी । पूज्य । इन्द्र । ईश्वर ।

अर्हण—[पु०] बुद्ध । पूजा । पूजा की सामग्री ।

अर्हणा—[स्त्री०] पूजा । आदर । आतिथ्य ।

अर्हणीय—[वि०] पूजने योग्य । आदरणीय ।

अर्हन—[पु०] जिनदेव । बुद्ध । चपणक । [वि०] पूज्य । मान्य । स्तुति किया हुआ ।

अर्हन्त—[पु०] बुद्ध । जिनदेव । चपणक । शिव । महादेव ।

अर्हित—[वि०] पूजित । सम्मानित ।

अर्ह्य—[वि०] पूजनीय । आदरणीय । अर्हणीय ।

अलक—[पु०] केश । जुलफ । घूँघर वाले बाल । माथे के इधर-उधर लटकते हुए केश । चूर्ण कुन्तल । हरताल । आक का वृक्ष । पागल कुत्ता ।

अलकनन्दा—[स्त्री०] एक नदी का नाम । कुमारी ।

अलकप्रभा—[स्त्री०] कुबेर पुरी ।

अलका—[स्त्री०] कुबेर पुरी । अलकप्रभा । आठ से दश वर्ष तक की कन्या।

अलकाधिप—[पु०] अलका पुरी का स्वामी । कुबेर ।

अलकापति-[पु०] देखो "अलकाधिप"।

अलकावलि—[स्त्री०] बालों की लट। केश-समूह ।

अलक्त—[पु०] लाख । चमड़ा । लाखा राग । लाख का बना हुआ रंग जिसे स्त्रियाँ पैर रँगने के काम में लाती है । महावर ।

अलक्तक—[पु०] घुड़कना । झिड़कना । अलक्त ।

अलक्षण—[वि०] बुरे लक्षण । दुर्भाग्य के चिह्न । जिसका लक्षण (अनुमान) न हो सके ।

अलक्षित—[वि०] अप्रकट । अप्रकाशित । अदृश्य । अज्ञात । जिसका कुछ लक्षण न हो ।

अलक्ष्य—[वि०] जो देखा न जा सके । अदृश्य । अज्ञात ।

अलख—[वि०] जो दिखाई न दे । अगोचर । इन्द्रियातीत । अदृश्य । अप्रत्यक्ष ।

अलग्न—[वि०] भिन्न । पृथक् ।

अलङ्करण—[पु०] भूषण ।

अलङ्करिष्णु—[वि०] अलङ्कार कर्ता। भूषणशील । अलङ्कारयुक्त व्यक्ति। मण्डित । प्रसाधित। अलंकृत। परिष्कृत ।

अलङ्कर्ता—[वि०] अलङ्करिष्णु ।

अलङ्कर्मीण—[वि०] कार्य-कुशल । क्रिया-कुशल । काम करने में समर्थ ।

अलङ्कार—[पु०] भूषण । जेवर । गहना । परिष्कार । मण्डन । काव्य के वह गुण जिनसे उसमें कोई चमत्कार उत्पन्न हो जाय ।

अलंकृत—[वि०] सुशोभित । सजाया हुआ । भूषित । प्रसाधित । मण्डित ।

अलङ्कृति—[स्त्री०] शोभा । सजावट ।

अलंक्रिया—[स्त्री०] भूषित करना । सजाना । आभूषण पहनाना । भूषा ।

अलंघनीय—[वि०] जो लाँघने योग्य न हो । जिसकी उपेक्षा करना उचित न हो । जो डाला या टाला न जाय ।

अलंघ्य—[वि०] देखो "अलङ्घनीय" ।

अलज्ज—[वि०] लज्जारहित । निर्लज्ज ।

अलता—[पु०] देखो "अलक्त" ।

अलभ्य—[वि०] न मिलने योग्य । अप्राप्य । दुर्लभ ।

अलम्—[अव्य०] पर्याप्त । काफी । बस । निवारण । निषेध । भूषण । कारण । निरर्थक । शक्ति इत्यादि । [पु०] बिच्छू का डंक ।

अलर्क—[पु०] पागल कुत्ता । एक प्राचीन राजा का नाम । सफेद आक का वृक्ष ।

अलबाल—[पु०] देखो "आलबाल"।

अलस—[वि०] आलस्ययुक्त । आलसी । सुस्त [पु०] पावों का रोग-विशेष जिसमें पाँव की उँगलियों का बीच गीला रहने से उनमें जलन और खुजली होती है ।

अलसक—[पु०] पेट का रोग-विशेष ;

अलसा—[स्त्री०] हंसपदी लता ।

अलसेक्षणा—[स्त्री०] अलसाई आँखोंवाली ।

अलात—[पु०] जलती हुई लकड़ी । अङ्गारा । कोयला ।

अलान—[पु०] हाथी के पैरों में बाँधने की साँकल । हाथी बाँधने का खूंटा । बेड़ी । बन्धन । आलान ।

अलाबु—[वि०] तुम्बी । तोमरा । कद्दू । लौकी । लौकी की बेल ।

अलि—[पु०] भौंरा । कोयल । कौआ ।

विच्छू । मद्य । कुत्ता ।

अलिक—[पु०] ललाट । मस्तक । माथा । झूठ । अलीक ।

अलिङ्ग—[वि०] बिना चिह्न का । बिना पहचान का ।

अलिजिह्वा—[स्त्री०] जीभ के ऊपर की छोटी जीभ ।

अलिञ्जर—[पु०] पानी भरने का मिट्टी का बना पात्र । घड़ा । करुआ । झझर

अलिन्द—[पु०] दरवाजे के बाहर का चबूतरा ।

अलिपत्रिका—[स्त्री०] बिच्छू नामक पौधा जो पहाड़ों पर होता है ।

अलिप्रिय—[पु०] लाल कमल । रक्तोत्पल ।

अलिमक—[पु०] मेंढक । कोयल । भौंरा । कमल केसर । मधूक नामक वृक्ष ।

अलिम्बक—[पु०] देखो "अलिमक" ।

अली—[पु०] देखो "अलि" । [स्त्री०] सखी सहचरी पंक्ति । पाँत ।

अलीक—[वि०] झूठ । अप्रिय । स्वर्ग । ललाट । मस्तक । आकाश । छोटा । खोटा । थोड़ा ।

अलीन—[वि०] जो लीन (निमग्न) न हो । विरत । तटस्थ । जो लेने योग्य न हो । अग्राह्य । अनुचित । बेजा । [पु०] कमरे या बरामदे का दीवार से सटा हुआ खम्भा जिसपर सरदल या शहतीर रक्खा जाता है ।

अलुक्—[पु०] व्याकरण में एक प्रकार का समास जिसमें बीच की विभक्ति का लोप नहीं होता । यथा–सरसिज । मनसिज इत्यादि में ।

अलेख—[वि०] अलक्ष्य । अदृश्य । अज्ञेय । दुर्बोध । जिसका उल्लेख या वर्णन न हो सके ।

अलोक—[वि०] निर्जन । उजाड़ । एकान्त । जो दिखाई न दे । अदृश्य । पुण्यरहित । [पु०] अपवाद । कलंक । निन्दा । परलोक । अन्यलोक ।

अलोचन—[वि०] जिसके नेत्र न हो । नेत्रहीन ।

अलोभ—[पु०] लोभ का न होना । निर्लोभत्व । [वि०] लोभरहित व्यक्ति ।

अलोभी—[वि०] जो लालची न हो । निर्लोभ । लोभशून्य ।

अलोहित—[पु०] जो गहरा लाल न हो । कुछ लाल रंग का कमल ।

अलौकिक—[वि०] असाधारण । अद्भुत । चमत्कारयुक्त । आश्चर्य । लोक से बाहर का । जो लोक में साधारणतया न देखने में आवे । लोकोत्तर । अमानुषिक ।

अल्प—[वि०] थोड़ा किंचित् । हल्का । नीच छोटा । लव लेश । कण स्वल्प । [पु०] साहित्य में एक अलङ्कार का नाम ।

अल्पजीवी—[वि०] कम दिनों जीनेवाला कम अवस्थावाला अल्पायु ।

अल्पज्ञ—[वि०] कम जानकार । कमसमझ । थोड़ा ज्ञान रखनेवाला । नासमझ । छोटी बुद्धिवाला ।

अल्पतनु—[वि०] दुबले-पतले शरीरवाला क्षीणकाय । कृशकाय । दुर्बल

अल्पता—[स्त्री०] न्यूनता कमी । छुटाई ।

अल्पत्व—[पु०] देखो "अल्पता" ।

अल्पप्राण—[पु०] वर्णमाला में प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा तथा पाँचवाँ अक्षर और य, र, ल, व । [वि०] दुबला-पतला ।

अल्पवयस्क—[वि०] छोटी अवस्थावाला । कमउम्र का अल्पायु ।

अल्पशः—[क्रि० वि०] थोड़ा-थोड़ा । क्रमशः । धीरे-धीरे ।

अल्पसर—[पु०] छोटा ताल । तलैया । पोखर । गड़ैया ।

अल्पायु—[वि०] थोड़ी आयुवाला । कमउम्र का ।

अल्पिष्ठ—[वि०] अत्यन्त अल्प । बहुत थोड़ा ।

अल्पीयान्—[वि०] अल्पिष्ठ । बहुत कम ।

अल्ल—[पु०] वंश-परम्परागत उपाधि, जैसे–उपाध्याय, पाठक, मिश्र, तिवारी इत्यादि ।

अल्ला—[स्त्री०] माता । अम्मा ।

अव—[अव्य०] एक उपसर्ग जो भिन्न-भिन्न शब्दों के साथ मिलकर न्यूनता, हीनता, विस्तार, अनादर, निश्चय, व्याप्ति, गहराई, नियोग, पालन इत्यादि अर्थ प्रकट करता है

अवकर—[पु०] कूड़ा । बुहारते समय झाड़ू से उड़नेवाली धूल ।

अवकर्षण—[पु०] खींचना । बाहर निकालना ।

अवकलन—[पु०] इकट्ठा कर देना । जोड़ना । एक जगह मिला देना । ग्रहण ज्ञान । देखना ।

अवकलित—[वि०] देखा हुआ । जाना हुआ । ग्रहण किया गया । जोड़ा हुआ । एक जगह मिलाया गया ।

अवकाश—[पु०] स्थान खाली जगह । पात्र । आकाश । अन्तरिक्ष । अवसर । मौका । छुट्टी । फुरसत । दूरी अन्तर

अवकिरण—[पु०] बखेरना छिटकाना । फैलाना ।

अवकीर्ण—[वि०] बखेरा हुआ छिटकाया हुआ फैलाया हुआ । चूर-चूर या नष्ट किया गया । उपेक्षा किया हुआ । पिसा हुआ ।

अवकीर्णी—[वि०] धर्म-भ्रष्ट । जिसने अपना धर्म छोड़ दिया हो । पतित ।

अवकुञ्चन—[पु०] सिकोड़ना। टेढ़ा करना।

अवकुटार—[पु०] विरूपता। कुरूपता।

अवकृपा—[स्त्री०] अकृपा। कृपा का अभाव।

अवकेशी—[वि०] वह वृक्ष जिसमें फूल आने के समय भी फल न लगे। बन्ध्या। बाँझ।

अवक्तव्य—[वि०] अकथनीय। न कहने योग्य।

अवक्रय—[पु०] मूल्य। कीमत। महसूल।

अवक्रिया—[स्त्री०] दुष्कृत्य। वर्जित कर्म।

अवक्रोश—[पु०] शाप। कुत्सा। निन्दा। गाली। अपशब्द।

अवक्लेद—[पु०] पसीना। प्रस्वेद। स्राव।

अवक्षेप—[पु०] निन्दा। अपवाद।

अवगणित—[वि०] अपमानित। निरादर किया हुआ। तिरस्कृत।

अवगत—[वि०] जाना हुआ। विदित। मालूम। नीचे गया हुआ। अधोगत। पतित।

अवगति—[स्त्री०] ज्ञान। समझ। बुद्धि। अधोगति। बुरी गति। दुरवस्था।

अवगद्य—[वि०] प्रातः काल नहाया हुआ। प्रातः स्नान करनेवाला।

अवगम—[पु०] ज्ञान। जानना।

अवगाढ—[वि०] गम्भीर। गहरा। नहाया हुआ। गाढ़ा।

अवगाह—[पु०] स्नान करने का स्थान। स्नानगृह। स्नानागार। स्नान।

अवगाहन—[पु०] डुबकी लगाना। पानी में घुसकर स्नान करना। निमज्जन। विलोडन। खोजना। मथना। छानबीन करना। घुसना। प्रवेश। किसी बात को मन लगाकर विचारना।

अवगीत—[पु०] बुरा गीत। बेतुका या बेसुरा गाना। अपवाद। निन्दा। दोषारोपण। [वि०] दुष्ट। निन्दित। कलङ्कित।

अवगुण—[पु०] दुर्गुण। औगुन। दोष। ऐब।

अवगुण्ठन-[पु०] घूँघट काढ़ना। मुँह ढाँकना। मुँह ढाँकने का कपड़ा। घूँघट। बुरका। मार्जन। बुहारना।

अवग्रह—[पु०] रुकावट। अवरोध। बाधा। नदी आदि का बाँध। बन्द। वर्षा का न होना। अवर्षण। स्वभाव। निन्दा। गाली देना। कोसना। व्याकरण में सन्धि-विच्छेद। दो पदों के बीच का विराम। हाथी का गण्डस्थल। हाथियों का समूह।

अवग्रहण—[पु०] अपमान। निरादर। प्रतिरोध। रोक।

अवग्राह—[पु०] देखो "अवग्रह"।

अवघट-[वि०] विकट। कठिन। दुर्गम।

अवघात—[पु०] बुरी मौत। अपमृत्यु। चोट मारना। धान कूटना। चावलों से भूसी अलग करना।

अवघूर्णन—[पु०] चक्राकार में घूमना।

अवघोषण—[पु०] पुकार कर कहना। घोषणा करना।

अवचय—[पु०] सञ्चय। संग्रह। फल-फूल आदि का इकट्ठा करना। अपव्यय।

अवचूड—[पु०] झण्डे के नीचे बाँधा हुआ कपड़ा।

अवचूर्णित—[वि०] कूटा हुआ। चूरा किया हुआ। अवध्वस्त।

अवचूल—[पु०] देखो "अवचूड"।

अवचूलक—[पु०] चौरी। मोरछल। मयूर-चामर मोर-पंखों का बना चँवर।

अवच्छिन्न—[वि०] विभक्त। अलग किया हुआ। किसी विशेष गुणयुक्त (जिसके कारण अन्य वस्तुओं से उसकी भिन्नता प्रकट होती हो)। मिला हुआ। युक्त। विशिष्ट। संकुचित।

अवच्छेद—[पु०] अन्य वस्तुओं से भिन्नता प्रकट करनेवाला विशेष गुण। सीमा। हद। अलगाव प्रकट करनेवाला चिह्न। वाक्य-समाप्ति का चिह्न। विराम।

अवच्छेदक—[वि०] काटनेवाला। अलग करनेवाला। औरों से भिन्नता दर्शानेवाला। विशेष बोधक शब्द। विशेषण। निश्चय करानेवाला। मर्यादा या सीमा बाँधनेवाला।

अवजय—[पु०] पराजय। पराभव। विजय।

अवज्ञा—[स्त्री०] अनादर। तिरस्कार। अपमान। अवहेला। हार। पराजय।

अवज्ञात—[वि०] अपमानित। तिरस्कृत। पराजित। अवज्ञा किया हुआ।

अवज्ञेय—[वि०] अवज्ञा करने योग्य। तिरस्कार करने लायक।

अवट, अवटी—[पु०] गढ़ा। खोह। कूआँ। बाजीगर। ऐन्द्रजालिक।

अवटीट—[वि०] चपटी नाकवाला। पिचकी हुई नाकवाला।

अवडीन—[पु०] पक्षियों की उड़ान का एक भेद। नीचे उतरना।

अवतति—[स्त्री०] विस्तार। फैलाव। लंबाई-चौड़ाई।

अवतमस्—[पु०] घोर अन्धकार।

अवतर, अवतरण—[पु०] उतरना। लाँघना। पार होना। नकल। उद्धरण। किसी के लेखांश या कविता को अपने लेख में ज्यों का त्यों दे देना। प्रादुर्भाव। जन्म धारण करना।

अवतरणिका—[स्त्री०] प्रस्तावना। अनुक्रमणिका। भूमिका।

अवतंस—[पु०] कान का भूषण। कुण्डल। कर्णफूल। शिरोभूषण। मुकुट। ताज। तुर्रा। कलगी।

अवतान—[पु०] विस्तार। फैलाव।

लम्बाई-चौड़ाई।

अवतार—[पु०] प्रादुर्भाव। उतरना। रूपान्तर। नीचे आना। कुएँ आदि में घुसना। जन्म धारण करना। देवताओं का लौकिक (मनुष्यादि) प्राणियों के शरीर में जन्म लेना। गंगादि तीर्थ। घाट। सीढ़ी।

अवतारण—[पु०] उतारना। नीचे लाना। उद्धृत करना। नकल करना।

अवतारी—[वि०] अवतार लेनेवाला। विशेष शक्तियुक्त व्यक्ति। अलौकिक।

अवन्ति, अवन्तिका—[स्त्री०] उज्जयिनी नगरी। उज्जैन नाम से प्रसिद्ध नगरी।

अवतीर्ण—[वि०] उतरा हुआ। प्रादुर्भूत। अवतार रूप में प्रकट हुआ।

अवदंश—[पु०] मद्यपान के साथ खाने के गजक, मँगोड़े आदि।

अवदशा—[स्त्री०] दुर्दशा। बुरी अवस्था।

अवदात—[वि०] स्वच्छ। निर्मल। सफेद। पीला। सुन्दर। [पु०] सफेद रंग। पीला रंग।

अवदान—[पु०] खण्डन। तोड़ना। काटना। पवित्र और सिद्धि देनेवाला काम। वह काम जिसकी सब प्रशंसा करें। देवताओं को बलि देना। होम द्रव्य। उल्लंघन करना। अतिक्रमण। पवित्र करना। स्वच्छ करना। शक्ति। सामर्थ्य।

अवदान्य—[वि०] वदान्य (सर्वस्व-दान कर देनेवाला) का उलटा कंजूस। कृपण। सीमोल्लंघन करनेवाला। अतिक्रमण कर्ता। पराक्रमी। शक्तिशाली।

अवदारण—[पु०] खोदना। तोड़ना। फोड़ना। खोदने का औजार, कुदाल। फावड़ा।

अवदारित—[वि०] खोदा हुआ। तोड़ा-फोड़ा हुआ।

अवदीर्ण—[वि०] पिघलाया हुआ। विभक्त।

अवदोह—[पु०] दुहा हुआ पदार्थ। दुग्ध। दुहना।

अवद्य—[वि०] नीच। पापी। निन्द्य। निकृष्ट। बुरा। रेफ। [पु०] पाप। दुराचरण। निन्दा।

अवद्योतक—[वि०] प्रकट करनेवाला। प्रकाशित करनेवाला। जतानेवाला।

अवद्योतन—[वि०] प्रकट करना। प्रकाशित करना। प्रकाश में लाना। उजाले का फैलाव।

अवध—[पु०] अयोध्या। साकेत। कोशल। वध का अभाव।

अवधान—[पु०] ध्यान। लक्ष्य। मनोयोग। चौकसी। गौर। मन का लगाव। समाधि।

अवधारण—[पु०] निश्चय। निरूपण। निर्णय। विचारपूर्वक पक्का करना। परिच्छेद।

अवधारणीय—[वि०] निश्चय करने योग्य। निरूपण करने लायक। पक्का करने योग्य। निर्णय करने लायक।

अवधारित—[वि०] निश्चय किया हुआ। निश्चित।

अवधार्य—[वि०] अवधारणीय। निश्चय करने योग्य। निश्चय करके। सोच विचार के।

अवधि—[पु०] सीमा। हद। काल। ध्यान। मनोयोग। अन्त। अवसान। गड्ढा। गर्त। नियम। तक। पर्यन्त।

अवधिमान—[पु०] मर्यादावाला। समुद्र। (समुद्र की मर्यादा में रहने की बात प्रसिद्ध है)।

अवधी—[वि०] अवध का। अवध-सम्बन्धी भाषा आदि।

अवधीरण—[पु०] अपमान करना। अवज्ञा करना। न मानना। निरादर।

अवधीरणा—[स्त्री०] अवज्ञा। अपमान

अवधीरित—[वि०] जिसका निरादर किया गया हो। अवमानित। तिरस्कृत।

अवधूत—[वि०] कँपाया हुआ। कम्पित। निरादर किया गया। तिरस्कृत। विरक्त। एक प्रकार के साधु। संन्यासी। योगी।

अवधूनन—[पु०] कँपाना। हिलाना।

अवधेय—[वि०] निश्चय करने योग्य। ध्यान देने योग्य। स्थापना करने योग्य। श्रद्धा के योग्य। श्रद्धेय। जानने योग्य। ज्ञातव्य। [पु०] ध्यान। मनोयोग

अवधेश—[पु०] अवध (अयोध्या) के स्वामी। कोशलेश (दशरथ या राम चन्द्र जी)।

अवध्य—[वि०] न मारने योग्य। यथोचित। यथायोग्य। निरर्थक वाक्य।

अवध्वंस—[पु०] त्याग। नाश। निन्दा। कलङ्क। कुचलना। चूर-चूर करना।

अवध्वस्त—[वि०] त्यागा हुआ। नष्ट। निन्दित। कलङ्कित। कुचला हुआ। चूर-चूर किया हुआ।

अवन—[पु०] रक्षा करना। धैर्य बँधाना। तसल्ली देना। प्रसन्न करना। रक्षा। प्रीति। प्रसन्नता।

अवनत—[वि०] झुका हुआ। नीचा। प्रणाम करता हुआ। पतित। गिरा हुआ। कम।

अवनति—[स्त्री०] कमी। न्यूनता। घटती। हानि। गिरावट। अधोगति। झुकना। झुकाव। नम्रता। विनय।

अवनद्ध—[पु०] मृदङ्ग, नगाड़ा आदि बाजा। [वि०] बँधा हुआ। वस्त्रालङ्कार पहने हुए।

अवनम्र—[वि०] अत्यधिक नम्र। विनम्र। विनीत।

अवनि, अवनी—[स्त्री०] भूमि।

पृथिवी। वेद में नदी और उँगली अर्थ भी होता है।

अवनि-(नी) पति—[पु०] नृप। राजा। भूपति।

अवनीश—[पु०] राजा। भूपति। महीपति।

अवन्ति—[स्त्री०] उज्जैन नामक नगरी। मालव देश या प्रान्त का नाम।

अवन्तिका—[स्त्री०] मालव देश की प्रधान नगरी। उज्जयिनी। उज्जैन। विशाला नगरी

अवन्ती—[स्त्री०] उज्जैन नगरी। उज्जैन की रानी। नदी-विशेष। शिप्रा।

अवपतन—[पु०] गिराव। उतार। ह्रास। कमी।

अवपात—[पु०] अधःपतन। गिराव। ह्रास। नीचे गिराना। फैलाव। हाथी पकड़ने के लिए खोदा गया बड़ा गड्ढा। बिल। छेद। खड्डा। कुण्ड।

अवपीड़न—[पु०] सताना। कष्ट देना। आयुर्वेद में एक प्रकार का नस्य। सुँघनी।

अवपीड़ना—[स्त्री०] देखो 'अवपीड़न'।

अवप्लुत—[वि०] भींगा हुआ। जिस पर सब ओर जल सींचा गया हो। नीचे उतरा हुआ। अवतीर्ण। उपस्थित। मौजूद।

अवबुद्ध—[वि०] जाना हुआ। ज्ञात। जागा हुआ। प्रबुद्ध।

अवबोध—[पु०] ज्ञान। बोध। जागरण। जागना। शिक्षा। पढ़ाना। न्याय-परायणता।

अवबोधक—[पु०] ज्ञान करानेवाला गुरु। शिक्षक। जगानेवाला। चारण। वन्दी। सूत। पहरेदार। सूर्य।

अवबोधन—[पु०] जताना। ज्ञान कराना। समझाना। चेताना। जगाना। चेतावनी।

अवभास—[पु०] प्रकाश। चमक। ज्ञान। समझ। मिथ्या ज्ञान। अज्ञान। माया। स्थान। जगह।

अवभासक—[पु०] सर्वप्रकाशक चैतन्य परमात्मा। [वि०] प्रकाशक। प्रकाश देनेवाला।

अवभासित—[वि०] प्रकाशित। लक्षित।

अवभृथ—[पु०] प्रधान यज्ञ समाप्त होने पर उसमें रही त्रुटियों की पूर्ति के निमित्त किया जानेवाला होम-विशेष। यज्ञान्त में किया जानेवाला स्नान।

अवभृथस्नान—[पु०] यज्ञ के पश्चात् का स्नान। यज्ञान्त अभिषेक।

अवम—[पु०] रक्षा करनेवाला। एक प्रकार के पितर। निकृष्ट मलमास। अधिकमास। अधिक तिथि। पाप।

अवमत—[वि०] अपमानित। तिरस्कृत।

अवगणित—[वि०] अगणित। नापसन्द।

अवमताङ्कुश—[पु०] मतवाला हाथी जो अंकुश की परवा न करे।

अवमति—[पु०] अपमान। निरस्कार। घृणा। अनादर। अवज्ञा। बेइज्जती।

अवम तिथि—[स्त्री०] क्षयतिथि

अवमन्तव्य—[वि०] निरादर करने योग्य। घृणास्पद। घृणा करने लायक।

अवमर्दन—[पु०] पीड़न। सताना। मारना। विनाश करना। विध्वंस करना।

अवमर्दित—[वि०] पीड़ित। सताया हुआ। त्रस्त। ध्वस्त। पीसा हुआ। कुचला हुआ। पादाक्रान्त।

अवमर्श—[पु०] छूना। स्पर्श। संयोग।

अवमर्ष—[पु०] विचारना। आलोचना करना।

अवमान—[पु०] अपमान। निरादर।

अवमानना—[स्त्री०] अपमान।

अवमाननीय—[वि०] तिरस्कार योग्य। अवमन्तव्य।

अवमानित—[वि०] अपमान किया गया। अवमत। तिरस्कृत। अवगणित।

अवमोचन—[पु०] मुक्त करना। खोल देना। छोड़ना।

अवयव—[पु०] अंश। अंग। भाग। टुकड़ा। शरीर का अंग। उपकरण। साधन। न्याय-शास्त्र के मत से अनुमान को सिद्ध करनेवाला वाक्य, जो प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमन भेद से पाँच माने गए हैं।

अवयवी—[वि०] अवयवोंवाला। अंगी जिसके अनेक अवयव या अङ्ग हों। देह। शरीर। कुल। सम्पूर्ण। समूचा। [पु०] चिड़िया। पक्षी।

अवर—[वि०] दूसरा। और। अन्य। अन्तिम। आखिरी। नीच। अधम। छोटा। क्षुद्र। पीछे होनेवाला। आजकल का। पीछे की ओर। पीछेवाली दिशा। हाथी की जांघ का पिछला भाग

अवरज—[पु०] पीछे उत्पन्न हुआ। छोटा भाई। द्विजों से पीछे उत्पन्न होने के कारण शूद्र भी। नीच कुल में उत्पन्न हुआ। अधम।

अवरत—[वि०] विरक्त। शान्त। विश्रान्त। ठहरा हुआ। अलग। पृथक्। सतत। अनवरत। लगातार।

अवरति—[स्त्री०] विरक्ति। निवृत्ति। विराम। ठहराव। अन्त। अलगाव। पृथक्ता।

अवरवर्ण—[पु०] अन्तिम वर्ण। अन्त्यज। शूद्र।

अवराधक—[वि०] आराधक। पूजा करनेवाला। आराधना करनेवाला।

अवराधन—[पु०] आराधन। पूजन। सेवा। पूजा। उपासना।

अवराधना—[स्त्री०] पूजा। उपासना। सेवा।

अवरुद्ध—[वि०] रोका हुआ। रुका हुआ। छिपा हुआ। गुप्त। बन्द। कैद

किया हुआ।

अवरुद्धा—[स्त्री०] रखेली। रखनी। राजाओं के महलों में भोगने योग्य दासी। नीचे बैठी हुई। रोकी हुई।

अवरूढ़—[वि०] अवतीर्ण। उतरा हुआ। हटाया हुआ। उखाड़ा हुआ।

अवरूप—[वि०] कुरूप। भोंडी शकल का। वर्णसंकर। कमीना।

अवरोचक—[पु०] एक रोग-विशेष जिसमें मनुष्य को कुछ खाने की रुचि नहीं होती।

अवरोध—[पु०] रोक। घेरा। अटकाव। निरोध। कैद। ढक्कन। आच्छादन। चौकीदार। राजाओं का महल। अन्तःपुर। अन्तःपुर में रहनेवाली स्त्री।

अवरोधक—[वि०] रोकनेवाला। घेरा। ढक्कन। रक्षक। पहरेदार।

अवरोधन—[पु०] रोक। घेरा। अटकाव। रुकावट। बाँध। बाड़। राजाओं का अन्तःपुर।

अवरोधित—[वि०] रोका गया। घेरा हुआ।

अवरोधी—[वि०] देखो "अवरोधक"।

अवरोधिनी—[स्त्री०] अवरोध करनेवाली।

अवरोपण—[पु०] उखाड़ देना। हटा देना। उखाड़-पछाड़। छीन-झपट।

अवरोपित—[वि०] उखाड़ा हुआ। हटाया गया। उतारा गया। गिराया गया।

अवरोह—[पु०] नीचे उतरना। उतार। गिराव। अवनति। जहाँ से उतरते हैं वह स्थान—स्वर्ग। क्योंकि जीवात्मा पुण्य क्षय होने पर स्वर्ग से भूलोक में उतरता है।

अवरोहण—[पु०] उतरना। उतार। अवनति। पतन। चढ़ाव।

अवरोही—[वि०] उतरनेवाला। [पु०] उतरता हुआ स्वर। निषाद से षड्ज की ओर को उतरते हुए स्वर। आरोही का उलटा।

अवर्ग—[पु०] अकार के साथी (स्वर) वर्णों का समूह। स्वर-समूह। [वि०] जिसका कोई वर्ग न हो। बिना गुटवाला।

अवर्ण—[वि०] वर्ण (रंग) रहित अर्थात् जो सुन्दर वर्णवाला न हो। कुरूप। भोंड़े रूप-रंग का। जो ब्राह्मणादि चारों वर्णों में से न हो। अन्त्यज। चाण्डाल आदि। जो वर्ण (अक्षर) न हो। अक्षरों से भिन्न।

अवर्णनीय, अवर्ण्य—[वि०] न वर्णन करने योग्य। जिसका वर्णन न किया जा सके। जो वर्णनीय अर्थात् उपमा योग्य न हो।

अवर्तमान—[पु०] वर्तमान का अभाव। अनुपस्थित। अप्रस्तुत। जो मौजूद न हो। भूत या भविष्यत् काल।

अवर्षण—[पु०] वर्षा का न होना। सूखा। अनावृष्टि। अवग्रह।

अवलक्ष—[पु०] श्वेत रंग। सफेद रंग। [वि०] सफेद रंगवाला। उजला। चिट्टे रंग का। गोरा।

अवलग्न—[पु०] शरीर का बीच का भाग। धड़। कमर। [वि०] लगा हुआ। सटा हुआ। जुड़ा हुआ। लटका हुआ।

अवलम्ब—[पु०] आश्रय। सहारा। ठिकाना। शरण-स्थान।

अवलम्बन—[पु०] देखो "अवलम्ब"। उतरना।

अवलम्बित—[वि०] सहारे पर टिका हुआ। आश्रित। निर्भर। उतरा हुआ। अवतीर्ण।

अवलम्बी—[वि०] अवलम्ब लेनेवाला। आश्रय करनेवाला। भरोसा रखनेवाला। उतरनेवाला।

अवलिप्त—[वि०] सना हुआ। लिपा हुआ। गर्वयुक्त। घमण्डी। अभिमानी। अहंकारी। आसक्त। लिपटा हुआ।

अवली—[स्त्री०] पंक्ति। पाँत। कतार। समूह। झुंड।

अवलीक—[वि०] निरपराध। निष्पाप। निष्कलंक। विशुद्ध।

अवलीढ़—[वि०] चाखा हुआ। चाटा हुआ। खाया हुआ। भक्षित। आस्वादित। व्याप्त।

अवलीला—[स्त्री०] खेल। क्रीड़ा। अनायास। अनादर। अपमान।

अवलुञ्चन—[पु०] नोंचना। उखाड़ना। उत्पाटन। अलग करना। दूर करना। मूँड़ना। मोचना। छोड़ना।

अवलुञ्चित—[वि०] नोंचा हुआ। उखाड़ा हुआ। उत्पाटित। छेदन किया हुआ। दूर किया गया। अलग हटाया गया। मुक्त किया गया।

अवलुण्ठन—[पु०] लोटना। जमीन पर लोट-पोट होना।

अवलुण्ठित—[वि०] लोटा हुआ। भूमि पर लोट-पोट होता हुआ।

अवलेखन—[पु०] लकीर खींचना। चिह्न बनाना। अलग करना। खोदना। खुरचना।

अवलेप—[पु०] गर्व। घमण्ड। अभिमान। अहंकार। उबटन। लेप। भूषण। दूषण। सम्बन्ध।

अवलेपन—[पु०] लेप लगाना। उबटना। लीपना। भूषित करना। दोष लगाना। अवलेप।

अवलेह—[पु०] चाट-चाट कर खाई जानेवाली वस्तु। चटनी। चाखने योग्य पदार्थ।

अवलोकन—[पु०] देखना। दर्शन। खोजना। तलाश करना। अनुसन्धान। देखभाल। नेत्र। जिसके द्वारा देखते हैं।

अवलोकनीय—[वि०] देखने योग्य।

अवलोकित—[वि०] देखा हुआ।

अवर्षण—[पु०] अच्छे प्रकार वर्षा होना। सुवृष्टि। सब जगह बरसना।

अववाद—[पु०] अपवाद। निन्दा। विश्वास। आज्ञा। अवलम्बन।

अवश—[वि०] विवश। लाचार। जो स्ववश में न हो। पराधीन। परवश। जो किसी (अन्य) के वश न हो। स्वतन्त्र।

अवशिष्ट—[वि०] बचा हुआ। बाकी रहा। अधिक। अतिरिक्त। परिशिष्ट।

अवशेष—[वि०] बचा हुआ। शेष रहा। समाप्त। [पु०] अन्त। समाप्ति।

अवश्य—[अव्य०] निश्चय ही। निस्सन्देह। बिला शक। [वि०] जो वश में न हो। जो किसी के अधीन न हो। स्वतंत्र।

अवश्यमेव—[अव्य०] निस्सन्देह। अवश्य ही।

अवश्यम्भावी—[वि०] निश्चय रूप से होनेवाला। जिसका होना टले नहीं। अटल। ध्रुव। निश्चित।

अवश्याय—[पु०] ओस। कुहरा। शीत। ठंढक। दर्प। अभिमान।

अवष्टब्ध—[वि०] रुका हुआ। घिरा हुआ। अवलम्बित। आश्रित। बँधा हुआ। लगा हुआ। निकट। आसन्न।

अवष्टम्भ—[पु०] एक रोग विशेष। पक्षाघात। प्रारम्भ। कठोरता। आलम्बन। सहारा। खम्भा। उत्तमता। स्वर्ण। ठहरने का स्थान। पड़ाव।

अवसक्त—[वि०] लगा हुआ। संलग्न। आसक्त। लगाव।

अवसथ—[पु०] बस्ती। गाँव। घर। मकान। कुटिया। पाठशाला। विद्यालय।

अवसन्न—[वि०] दुःखी। जिसे विषाद हुआ हो। विनष्ट होनेवाला। असमर्थ। अनुचित। अनुपयुक्त। समाप्त।

अवसन्नता—[स्त्री०] विषाद। दुःख। विनाश। समाप्ति। असमर्थता। अनुत्साह।

अवसर—[पु०] मौका। उपयुक्त समय। अवकाश। फुरसत। वक्त। समय। वर्षा। प्रस्ताव। प्रसङ्ग। साहित्य में एक अलङ्कार।

अवसर्ग—[पु०] मुक्ति। छूट। छुटकारा। स्वतंत्रता। स्वेच्छाचार।

अवसर्प—[पु०] दूत। चर। जासूस। नौकर। सेवक।

अवसर्पण—[पु०] नीचे उतरना। अधःपतन।

अवसर्पी—[पु०] नीचे उतरनेवाला। नीचे जानेवाला। अधोगामी।

अवसाद—[पु०] विषाद। दुःख। नाश। असमर्थता। दीनता। थकान। शिथिलता। अन्त। समाप्ति।

अवसादक—[वि०] दुःख या विषाद पहुँचानेवाला। काम बिगाड़नेवाला। समाप्त करनेवाला।

अवसादन—[पु०] दुःख देना। काम बिगाड़ना। विनाश। बरबादी। समाप्ति।

अवसादित—[वि०] सताया हुआ। जिसे विषाद पहुँचाया गया हो। थकाया हुआ। दुखाया गया। विनष्ट। समाप्त।

अवसान—[पु०] अन्त। समाप्ति। सीमा। मृत्यु। मरण। ठहराव। विराम। ठहरने का स्थान। पड़ाव। शव जलाने की जगह। श्मशान।

अवसायी—[वि०] निवासी। रहनेवाला।

अवसिक्त—[वि०] छिड़का हुआ। सींचा हुआ। नहाया हुआ।

अवसित—[वि०] समाप्त। ढेर किया हुआ। ज्ञात। जाना हुआ। निश्चित। जुड़ा हुआ। प्रसन्न। खुश।

अवसृष्ट—[वि०] त्यागा हुआ। छोड़ा हुआ। दिया हुआ। निकाला हुआ।

अवसेक—[पु०] छिड़काव। सिञ्चन। सींचना। छींटे देना। रोगी के देह से रुधिर निकालना। रक्त-मोक्षण।

अवसेचन—[पु०] सींचना। छिड़कना। छींटे देना। रोगी के देह से पसीना या रक्त निकालना।

अवस्कन्द—[पु०] शिविर। छावनी। स्नान। अवगाहन। नदी आदि में घुस कर नहाना। आक्रमण। हमला। छापा।

अवस्कन्दन—[पु०] पानी में घुसकर नहाना। अवगाहन। आक्रमण। हमला। उतरना। घुसना।

अवस्कन्दित—[वि०] आक्रान्त। आक्रमण किया गया। मारा गया। झूठा सिद्ध किया गया। अधः पतित। नीचे गिरा हुआ। नहाया हुआ।

अवस्कर—[पु०] मल। मैला। पुरीष। गोबर। कूड़ा-करकट। विष। जहर। गुह्य स्थान। मल-मूत्र त्यागने की इन्द्रिय।

अवस्तार—[पु०] कनात। परदा। चिक। खाट। पलंग। फर्श। बिस्तर।

अवस्था—[स्त्री०] दशा। हालत। स्थिति। आयु।

अवस्थान—[पु०] रहने का स्थान। घर। ठहरना। स्थिति। ठहरने का समय।

अवस्थापन—[पु०] स्थापन। निवेशन। रखना। जमाना। ठहराना। रक्षा करना।

अवस्थापित—[वि०] स्थापित किया हुआ। निवेशित। जमाया गया। लगाया गया। रक्खा गया। रक्षित।

अवस्थित—[वि०] उपस्थित। ठहरा हुआ। मौजूद। जमा हुआ। वर्त्तमान।

अवस्थिति—[स्त्री०] मौजूदगी। विद्यमानता। सत्ता। ठहराव।

अवस्यन्दन—[पु०] गिरना। चूना। टपकना। जाना। गमन। आलिङ्गन गले मिलना। हिंसन। मारना।

अवस्रंसन—[पु०] नीचे गिरना। अधःपतन। टपकना। चूना।

अवस्रंसित—[वि०] गिरा हुआ। अधःपतित। पददलित। चुआ हुआ। टपका हुआ।

अवहत—[वि०] थोड़ा कूटा हुआ। अधकुटा।

अवहनन—[पु०] कूटना। कुटाई। मारपीट।

अवहरण—[पु०] चुराना। एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना। युद्धक्षेत्र में सेना को शिविर ले जाना।

अवहसित—[वि०] जिसकी हँसी उड़ाई गई हो। ठट्ठा किया गया।

अवहार—[पु०] चुरानेवाला। चोर। निमन्त्रण। बुलावा। पूजाद्रव्य। भेंट। उपहार। युद्ध अथवा किसी खेल का विराम। सेना को युद्धक्षेत्र से शिविर में ले जाना। नक्र। नाका। घड़ियाल। जलजन्तु-विशेष।

अवहारक—[पु०] अवहरण करनेवाला। नक्र। घड़ियाल।

अवहार्य—[वि०] चुराने योग्य। दान देने योग्य। एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाने योग्य। समाप्त करने लायक। दण्डनीय।

अवहास—[पु०] हँसी। ठट्ठा। उपहास। मन्द हास। मुस्कराना।

अवहास्य—[वि०] उपहास योग्य। हँसी करने लायक।

अवहित—[वि०] सावधान। होशियार। तत्पर। प्रसिद्ध। प्रख्यात। नियुक्त। लगाया हुआ। नियोजित।

अवहिताञ्जलि—[वि०] हाथ जोड़े हुए।

अवहित्था—[स्त्री०] वास्तविकता को छिपाना। भावों का गोपन। जमानासाज़ी। साहित्य में शृङ्गार रसान्तर्गत एक भाव-विशेष।

अवहेलन—[पु०] निरादर। उपेक्षा। अवज्ञा। बात न मानना।

अवहेलना—[स्त्री०] देखो "अवहेलन"।

अवहेलित—[वि०] जिसकी अवहेलना की गई हो। उपेक्षित। तिरस्कृत।

अवाक्—[वि०] चुप। मौन। निस्तब्ध। विस्मित। चकित। घबराया हुआ। (अव्य०) नीचे की ओर। नीचे की दिशा। दक्षिण दिशा।

अवाक्शिर—[वि०] नीचे मुँह लटकाये हुए। अधोमुख। लज्जित।

अवाङ्मनसगोचर—[पु०] जो न वाणी से कहा जाय और न मन से समझा जाय। ईश्वर। ब्रह्म।

अवाङ्मुख—[वि०] अधोमुख। नीचे मुँह किये हुए। लज्जित।

अवाची—[स्त्री०] अधोमुखी। नीचे मुँह किए हुई। दक्षिण दिशा।

अवाच्य—[पु०] न कहने योग्य। कुवाच्य। गाली-गलौज। अप्रतीत। अनिन्दित। जो बात करने लायक न हो। नीच। [वि०] दक्षिण दिशा का। दाक्षिणात्य।

अवाध—[वि०] बेरोक-टोक। बाधारहित। निर्बाध।

अवाध्य—[वि०] बाधा के अयोग्य। न रोकने लायक।

अवान्तर—[वि०] बीच का। भीतरी। प्रधान के बीच में आया हुआ। अन्तर्गत। मध्यवर्ती।

अवाप्त—[वि०] प्राप्त। उपलब्ध। जो हाथ में आ गया हो। दस्तयाब।

अवाप्ति—[स्त्री०] प्राप्ति। उपलब्धि। दस्तयाबी।

अवार—[पु०] नदी के इस ओर का किनारा।

अवार पार—[पु०] समुद्र। दोनों किनारोंवाला।

अवार पारीण—[वि०] पार उतरने वाला। पार जानेवाला। समुद्री।

अवारीण—[वि०] इस पार आनेवाला।

अवार्य—[वि०] जो रोका न जा सके। जिसे हटा न सकें। अनिवार्य।

अवासस्—[वि०] बिना कपड़ोंवाला। विवस्त्र। नङ्गा। रजस्वला।

अवि—[पु०] भेड़। मेष। सूर्य। आक का वृक्ष। पहाड़। चूहा। कम्मल। वायु। प्राचीर। [स्त्री०] ऋतुमती स्त्री।

अविकच—[वि०] अविकसित। जो फूला न हो। बड़े बालों का।

अविकट—[पु०] भेड़ों का झुण्ड। [वि०] जो विकट (भयंकर या विस्तृत) न हो। सौम्य। छोटा।

अविकत्थन—[वि०] आत्मश्लाघा न करनेवाला। श्लाघारहित। स्नेह न रखनेवाला।

अविकल—[वि०] ज्यों का त्यों। अखण्ड। पूर्ण। भरा हुआ। जो व्याकुल न हो। शान्त। निश्चिन्त।

अविकल्प—[वि०] असन्दिग्ध। निश्चित। सन्देहशून्य।

अविकार—[वि०] विकारशून्य। निर्दोष। बेऐब। [पु०] विकार का न होना।

अविकारी—[वि०] निर्दोष। जिसमें कोई विकार न हो। निर्विकार। बेऐब।

अविकृत—[पु०] जिसमें कोई विकार न हुआ हो। निर्दोष।

अविक्रीत—[वि०] जो बेचा न गया हो।

अविक्रेय—[वि०] न बेचने लायक।

अविगत—[पु०] जो विगत न हो। अज्ञेय। जानने के अयोग्य। अनिर्वचनीय। अविनाशी। नित्य।

अविगर्हित—[वि०] जिसकी निन्दा न की गई हो। अनिन्दित।

अविगीत—[वि०] अनिन्दित । अवि-गर्हित

अविग्न—[पु०] जो उद्विग्न न हो ।

अविघ्न—[पु०] विघ्न का न होना । विघ्नशून्य । निर्विघ्न ।

अविघात—[पु०] विघात (विघ्न) का अभाव ।

अविचल—[वि०] अचल । स्थिर । अटल ।

अविचार—[पु०] विचार का न होना । अविवेक । अज्ञान । अन्याय । अत्याचार । [वि०] विचारशून्य । मूर्ख । बेवकूफ ।

अविचारित—[वि०] बिना विचारा हुआ । जिसके सम्बन्ध में कुछ विचार न किया हो । अविवेचित ।

अविचारिणी—[स्त्री०] देखो "अविचारी" ।

अविचारी—[वि०] विचार न करने-वाला । बेसमझ । अत्याचारी । अन्यायी ।

अविच्छिन्न—[वि०] जिसका विच्छेद न हुआ हो । सतत । लगातार । निरन्तर । अटूट ।

अविज्ञात—[वि०] जो अच्छी तरह जाना न गया हो । अज्ञात । बिना जाना हुआ ।

अविज्ञेय—[वि०] जो जानने योग्य न हो । जो जाना न जा सके । अज्ञेय ।

अवितत—[वि०] जो विस्तृत न हो । जो व्याप्त न हो । अविस्तृत । व्याप्त । प्रतिकूल । विरुद्ध ।

अवितथ—[पु०] सत्य । सच । [वि०] जिसमें सत्य हो ।

अवितर्क्य—[पु०] जिसमें तर्क की गुंजायश न हो । जिसमें तर्क न हो सके ।

अविदग्ध—[वि०] अज्ञानी । अनजान । कच्चा । जो पका न हो ।

अविदित—[वि०] अज्ञात । बिना-जाना हुआ । अप्रकट । गुप्त ।

अविदूर—[पु०] समीप । पास । [वि०] समीपस्थ । समीपी । पास का ।

अविद्ध—[वि०] अनविधा । जो छेदा न गया हो ।

अविद्य—[वि०] अज्ञ । विद्या से शून्य । मूर्ख । बेपढ़ा ।

अविद्यमान—[वि०] अनुपस्थित । जो मौजूद न हो । असत् । असत्य । मिथ्या ।

अविद्या—[स्त्री०] अज्ञान । मोह । माया । प्रकृति ।

अविद्वान्—[पु०] मूर्ख । बेपढ़ा । अज्ञान । जो विद्वान् न हो ।

अविधि—[पु०] विधि का न होना । गड़बड़ । अनियम । [वि०] विधान-शून्य । विधान-विरुद्ध । ऊट-पटाँग । नियम के विपरीत ।

अविनय—[पु०] विनय का अभाव । विनय के विपरीत । उद्दण्डता । दुर्वि-नीतता । [वि० विनयरहित । उद्दण्ड ।

अविनश्वर—[वि०] कभी नष्ट न होनेवाला । अविनाशी । शाश्वत । [पु०] कूटस्थ परमात्मा ।

अविनाशभाव—[पु०] व्याप्य और व्यापक भाव सम्बन्ध ।

अविनाशी—[वि०] कभी नष्ट न होनेवाला । नित्य । शाश्वत । अवि-नश्वर । [पु०] परमात्मा ।

अविनीत—[वि०] विनय-शून्य । उद्दण्ड । उद्धत । अशिक्षित । मूर्ख । दुष्कर्म में आसक्त । ढीठ ।

अविनीता-[स्त्री०] कुलटा । दुश्चरित्रा ।

अविप्रकृष्ट—[वि०] निकटस्थ । समीप । जो दूर न हो ।

अविप्लुत—[वि०] जो नष्ट न हो । अविनष्ट । विप्लव से रहित ।

अविभक्त—[वि०] जो विभक्त (अलग किया गया) न हो । बिना विभाग किया हुआ । बिना बाँटा हुआ । विभाग-रहित । शामिल । संसृष्ट । एक जगह मिला हुआ । अभिन्न । भेद-रहित । एक । स्वामी ।

अविभाजित—[वि०] न बाँटा गया । अविभक्त शामिल । एक ।

अविभावित—[वि०] अलक्षित । अचिन्तित । बिना विचारा हुआ । अचा-नक होनेवाला ।

अविमुक्त—[वि०] जो मुक्त न हुआ हो । बन्धनग्रस्त । न छोड़ा गया । बन्दी । [पु०] काशी-क्षेत्र जिसे शिव-पार्वती कभी नहीं छोड़ते । ब्रह्म-रन्ध्र । कनपटी ।

अविमृश्यकारिता—[वि०] बिना सोचे-विचारे करना ।

अविमृश्यकारी—[वि०] बिना सोचे-विचारे करनेवाला ।

अविरत—[क्रि० वि०] बिना रुके । लगातार । अनवरत । अश्रान्त । सन्तत । [पु०] विराम का अभाव ।

अविरति—[स्त्री०] विरक्ति का न होना । विषयासक्ति । निवृत्ति का अभाव । विराम का अभाव । अशान्ति ।

अविरल—[वि०] घना । सघन । निबिड़ । मिला हुआ । पास-पास ।

अविराम—[वि०] विराम-शून्य । लगातार । सन्तत । निरन्तर । अनवरत । [पु०] विराम का अभाव । अविच्छेद । लगाव ।

अविरुद्ध—[वि०] जो विरुद्ध न हो । अप्रतिकूल । बन्धनरहित । जो किसी विशेष प्रकार से रोका हुआ न हो ।

अविरोध—[पु०] विरोध का न होना । द्वेष का अभाव । अनुकूलता । मेल । एकता । [वि०] जो विरोधी न हो । मित्र । अनुकूल । हितू ।

अविलम्ब—[वि०] जल्दी । शीघ्र ।

तुरन्त । सत्वर । फ़ौरन ।

अविलम्बित—[वि०] जल्दी से । शीघ्रता के साथ । [अव्य०] शीघ्र । तुरन्त । सत्वर । क्षिप्र ।

अविवक्षित—[वि०] अनावश्यक । अनपेक्षित । अनभिप्रेत । अनचाहा । जिसके कहने या देखने की इच्छा न हो ।

अविवाहित—[पु०] जिसका विवाह न हुआ हो । कुमार । कुँआरा ।

अविविक्त—[वि०] बिना विचारा हुआ । अविचारित । विवेकशून्य । अविवेकी । घना । गठा हुआ । अलग-अलग न होनेवाला । जनाकुल । बसा हुआ । जो उजाड़ न हो । अपवित्र । नापाक ।

अविवेक—[पु०] अज्ञान । अविचार । भ्रम । अन्याय । [वि०] विवेकशून्य । अविचारशील । गँवार ।

अविवेकता—[स्त्री०] अज्ञता । भ्रान्ति । बेवकूफ़ी । नादानी ।

अविवेकी—[पु०] विवेकशून्य । अज्ञानी । मूर्ख । नादान ।

अविशंका—[स्त्री०] शंका का न होना । निश्चय । निःसन्देह ।

अविशुद्ध—[वि०] जो विशुद्ध न हो । निरवालिस । अपवित्र । नापाक ।

अविशेष—[वि०] विशेषताशून्य । तुल्य । समान । भेदरहित ।

अविश्रान्त—[वि०] बिना विश्राम लिए । बिना थके । लगातार । बिना रुके ।

अविश्वस्त—[वि०] भरोसा न करने लायक । विश्वास न करने योग्य ।

अविश्वास—[पु०] विश्वास का अभाव । सन्देह । अप्रत्यय ।

अविश्वासी—[वि०] जो किसी का विश्वास न करे ।

अविषय—[वि०] अदृश्य । इन्द्रियातीत । अगोचर । जो मन या इन्द्रियों का विषय न हो ।

अविस्पष्ट—[पु०] जो स्पष्ट न हो । अस्फुट । धुँधला ।

अवीचि—[पु०] जिसमें वीचि (तरंग) न हो । बिना तरंगों का । जिसमें वीचि (सुख) न हो । एक प्रकार का नरक । जो तरंग या लहर न हो । जो सुख न हो । सुख से भिन्न अर्थात् दुःख ।

अवीर—[वि०] जो वीर न हो । जो वीर (पुत्रादि) से रहित हो । निःसन्तान ।

अवीरा—[स्त्री०] जिस स्त्री के पुत्र और पति न हों । स्वतन्त्र स्त्री ।

अवृष्टि—[स्त्री०] वृष्टि का अभाव । सूखा । अवर्षण । दुर्भिक्ष । अकाल ।

अवेक्षक—[वि०] देखनेवाला । दर्शक । आलोचक । जाँच पड़ताल करनेवाला ।

अवेक्षण—[पु०] दर्शन । देखना । निरीक्षण । जाँच-पड़ताल । चौकीदारी ।

अवेक्षित—[वि०] देखा हुआ । जाँचा गया । पर्यालोचित । देखा-भाला ।

अवेद्य—[वि०] न जानने योग्य । जो जाना न जा सके । अज्ञेय । अलभ्य । अयोग्य । जिसका विवाह न हो सके ।

अवैतनिक—[वि०] बिना वेतन लिए काम करनेवाला । वेतनशून्य । आनरेरी ।

अवैदिक—[वि०] जो वेद में न हो । जो वेद से सम्बन्ध न रखता हो । वेद-विरुद्ध ।

अवैध—[वि०] जिसका विधान न हो । नियमविरुद्ध । निषिद्ध । वर्जित । बेक़ायदा ।

अवैधानिक—[वि०] जो विधान (नियम) के विरुद्ध हो । अनियमित । ग़ैरक़ानूनी ।

अव्यक्त—[पु०] परमात्मा । आत्मा । प्रधान । ब्रह्मा । विष्णु । शिव । कामदेव । अज्ञान । सूक्ष्म शरीर । प्रकृति । [वि०] अस्पष्ट । अस्फुट । अप्रकट । अप्रत्यक्ष । अगोचर । अज्ञात । मूर्ख ।

अव्यक्तगणित—[वि०] बीज-गणित ।

अव्यक्तगति—[वि०] छिपकर जानेवाला । गुप्त रूप से जानेवाला ।

अव्यक्तलिङ्ग—[पु०] संन्यासी । जिसका कोई चिह्न स्पष्ट न हो ।

अव्यक्तवाक्—[वि०] अस्पष्ट बोलनेवाला । जो साफ़ बात न कहता हो ।

अव्यक्तराग—[पु०] थोड़े लाल रंगवाला । गुलाबी ।

अव्यक्तानुकरण—[पु०] अस्पष्ट नकल । पक्षी आदि की बोली का अनुकरण ।

अव्यग्र—[वि०] शान्त । स्थिर चित्त । सन्तुष्ट ।

अव्यङ्ग—[वि०] जो विकलांग या अंगहीन न हो । पूर्णाङ्ग । सर्वाङ्ग । सम्पन्न ।

अव्यङ्गाङ्ग—[वि०] सर्वाङ्ग-सम्पन्न । पूर्णाङ्ग । सुडौल । समूचा ।

अव्यङ्गाङ्गी—[स्त्री०] सुडौल अङ्गोंवाली ।

अव्यञ्जन—[पु०] शुभ चिह्नों से रहित । शुभ लक्षणशून्य । बिना सींगोंवाला पशु ।

अव्यभिचारी—[वि०] जो किसी भी प्रतिकूल हेतु द्वारा हटाया न जा सके । पथ-भ्रष्ट न होनेवाला । असन्मार्ग पर न चलनेवाला । जो व्यभिचारी न हो । [पु०] न्याय के मतानुसार । शुद्ध हेतु ।

अव्यय—[वि०] विकारशून्य । निर्विकार । जो व्यय न हो । अविनश्वर । [पु०] व्याकरण में वह शब्द जो सब विभक्तियों, सब वचनों और सब लिङ्गों में एक सा रहे । आद्यन्त रहित । ब्रह्मा । विष्णु । शिव । आकाश ।

अव्ययीभाव—[पु०] व्याकरण में समास का एक भेद ।

अव्यर्थ—[पु०] जो व्यर्थ (बेकाम) न हो । सार्थक । कारआमद । सफल । न चूकनेवाला । अमोघ । अचूक ।

अव्यवधान—[वि०] जिसमें कोई व्यवधान (रुकावट) न हो । बिना आड़ या पर्दे का । निकट का । मिला हुआ । समीपी । [पु०] व्यवधान का न होना । निकटता । समीपता ।

अव्यवसायी—[वि०] निरुद्यम । अनुद्योगी । आलसी । पुरुषार्थशून्य । अनिश्चयी । निश्चयरहित ।

अव्यवस्था—[स्त्री०] अनियम । गड़बड़ । अविधि । शास्त्र विरुद्ध उपदेश । अस्थिरता ।

अव्यवस्थित—[वि०] व्यवस्थारहित । अशान्त । अनियमित । शास्त्र मर्यादारहित ।

अव्यवहार्य—[वि०] जिसके साथ रोटी-बेटी का व्यवहार उचित न हो । जो व्यवहार के योग्य न हो । जातिच्युत । पतित । धर्म से गिरा हुआ । जो क्रियात्मक रूप में न लाया जा सके ।

अव्यवहित—[वि०] जिनके बीच में कोई व्यवधान (रोक या आड़) न हो । परस्पर मिले हुए । लगे हुए ।

अव्यवहृत - [वि०] जो प्रयोग में न लाया गया हो । जो उपभोग में न लाया गया हो । बिना बर्ता हुआ । अछूता । जो बोल-चाल या लिखने के काम न लाया गया हो ।

अव्यसनी—[वि०] व्यसनरहित । जिसे कोई लत न लगी हो ।

अव्यस्त—[वि०] मिला हुआ । जुड़ा हुआ । जो घबराया हुआ न हो । शान्त । जो अस्त-व्यस्त न हो । व्यवस्थित । समूचा । अविकृत । जो बिगड़ा न हो ।

अव्याकुल—[वि०] जो घबराया न हो । निराकुल । शान्त । स्वस्थ । स्वच्छन्द ।

अव्याकृत—[वि०] अभिन्न । अप्रकाशित । गुप्त । जिसमें विकार न हो । [पु०] सांख्य-शास्त्र के मत से प्रधान । मुख्य वस्तु । प्रकृति । ब्रह्म । आद्यतत्व । वेदान्त के मतानुसार बीजरूप जगत का कारण । अज्ञान ।

अव्याख्यात—[वि०] जिसकी व्याख्या न की गई हो । जो स्पष्ट करके न समझाया गया हो । गुप्त । छिपा हुआ ।

अव्याख्येय—[वि०] व्याख्यान करने योग्य । जिसे कोई समझ न सके । व्याख्या की अपेक्षा न रखने वाला । सरल ।

अव्याज—[वि०] व्याज (कपट या बहाना) का न होना । अकपट । निश्छल । सरल । शीघ्र ।

अव्यापन्न—[वि०] जीवित । जिन्दा । जो मरा न हो ।

अव्यापार—[पु०] व्यापार का न होना । काम-धन्धों का अभाव । बेकारी । निश्चेता । अकर्मण्यता । जो अपने करने का काम न हो । [वि०] व्यापार-शून्य । उद्यमरहित । बेकार ।

अव्याप्त—[वि०]जो समाया न हो ।

अव्याप्ति—[स्त्री०] व्यापकता का अभाव । न्याय-शास्त्र के मत से पूरे लक्ष्य पर लक्षण का घटित न होना ।

अव्याप्यवृत्ति—[वि०] जो अपने अधिकरण के प्रत्येक भाग में मौजूद न रहे, अथवा जो प्रत्येक काल में अधिकरण में उपस्थित न रहे । जैसे पक्षी वृक्ष की एक शाखा पर बैठा होने पर वृक्ष के अन्य भागों में उसकी अव्याप्य वृत्ति है। अथवा घड़े में इस समय पानी है, किसी समय उसमें पानी नहीं भी होता, इसलिए घड़े में पानी की अव्याप्य वृत्ति कही जायगी ।

अव्यावर्तक—[वि०] व्यावर्तन (निवारण) न करनेवाला । न रोकनेवाला । जो एक वस्तु से दूसरी का भेद न करता हो ।

अव्यावर्तन—[पु०] न रोकना । भेद न करना । न लौटना । वापस न आना । [वि०] जिसे कोई रोके नहीं । जो न लौटे ।

अव्यावृत—[वि०] संयुक्त । सम्बद्ध । लगा हुआ । लगातार । अटूट । निरन्तर । ज्यों-का-त्यों ।

अव्याहत—[वि०] निराश न होनेवाला । जो रोका न गया हो । बेरोक । नूतन । नया । सत्य ।

अव्याहित—[वि०] जिसमें कोई व्याघात न हो । निर्द्वन्द्व । निर्विवाद । जिसमें कोई झगड़ा न हो ।

अव्युत्पन्न—[वि०] अनभिज्ञ । अनुभवशून्य । मूर्ख । अनाड़ी । जो शब्दों का अर्थ न समझता हो । व्याकरण न जाननेवाला । व्याकरण की परिभाषा में वह शब्द जो व्याकरण द्वारा सिद्ध न हो सकता हो ।

अंश—[पु०] राशि का तीसवां हिस्सा । भाग । बांट । भिन्न में रेखा के ऊपर की संख्या । भूमि की परिधि का ३६० वां भाग । कंधा ।

अंशक—[पु०] भाग । टुकड़ा । दिन । हिस्सेदार । साझीदार । हिस्सा बांटनेवाला । विभाजक ।

अंशल-[वि०] बलवान् । चाणक्य मुनि ।

अंशसुता—[स्त्री०] यमुना नदी ।

अंशावतार—[पु०] पुराणों के मत से वह अवतार जिसमें परमात्मा की शक्ति का कुछ अंश ही आया हो ।

अंशी—[वि०] भाग करनेवाला । साझी । हिस्सेदार । सामर्थ्यवान् ।

अंशु—[पु०] किरण । प्रभा । चमक । वेग । लेश । बहुत सूक्ष्म भाग । एक ऋषि का नाम । सूर्य । महीन सूत का धागा ।

अंशुक [पु०] बारीक कपड़ा । रेशमी वस्त्र । उत्तरीय । दुपट्टा । तेजपात

नामक ओषधि ।

अंशुधर—[पु०] किरणों को धारण करनेवाला । सूर्य । वेगवान् ।

अंशुपति—[पु०] सूर्य ।

अंशुमत्फला—[स्त्री०] केले का वृक्ष ।

अंशुमान्—[पु०] सूर्य । सूर्यवंश में उत्पन्न एक राजा ।

अंशुमाला—[स्त्री०] किरणों का समूह ।

अंशुमाली—[पु०] सूर्य ।

अशकुन—[पु०] अशुभ शकुन । बुरा सगुन ।

अशक्त—[वि०] अयोग्य । अक्षम । असमर्थ । शक्ति न रखनेवाला ।

अशक्तता—[स्त्री०] अशक्त होने का भाव । अयोग्यता । असमर्थता । अक्षमता । निर्बलता ।

अशक्ति—[स्त्री०] अयोग्यता । असमर्थता । निर्बलता । कमज़ोरी ।

अशक्य—[वि०] न होने योग्य । न किया जा सकने लायक । असाध्य । अकरणीय । असम्भव । साहित्य में एक अलङ्कार-विशेष ।

अशङ्क—[वि०] निडर । निर्भय । बेख़ौफ़ ।

अशङ्कित—[वि०] निर्भीक । निडर । शङ्कारहित । सन्देहशून्य ।

अशन—[पु०] भोजन । आहार । अन्न । खाने की क्रिया । व्याप्ति । फैलना ।

अशनि—[पु०] बिजली । वज्र । अग्नि । उल्का-विशेष । हीरा ।

अशब्द—[वि०] शब्दहीन । निश्शब्द ।

अशरण—[वि०] जिसको कहीं शरण (आश्रय) न हो । निराश्रय । अनाथ ।

अशरीर—[वि०] विना शरीर का । विदेह । [पु०] परमात्मा । शरीर का अभिमान न रखनेवाला । जीवन्मुक्त । कामदेव ।

अशरीरी—[वि०] विना शरीरवाला । देहरहित ।

अशस्त्र—[वि०] हथियार रहित । शस्त्र-शून्य । निश्शस्त्र । बेहथियार ।

अशान्त—[वि०] चिन्तित । व्याकुल । व्यग्र । घबराया हुआ । असन्तुष्ट । अस्थिर । चंचल । भयङ्कर ।

अशान्ति—[स्त्री०] शान्ति का अभाव । अस्थिरता । चंचलता । हलचल । बेचैनी । घबराहट । व्याकुलता । असन्तोष । भय ।

अशालीन—[वि०] अशिष्ट । ढीठ । धृष्ट । निर्भय ।

अशालीनता—[स्त्री०] अशिष्टता । ढिठाई । धृष्टता । निर्भीकता ।

अशित—[वि०] खाया हुआ । भक्षित । तृप्त । पेट भरा हुआ । [पु०] भोजन । खाना ।

अशिक्षित—[वि०] विना पढ़ा-लिखा । शिक्षाशून्य । मूर्ख । अनाड़ी । अविनीत । अभद्र ।

अशिष्ट—[वि०] असभ्य । अभद्र । अविनीत । उजड्ड । बेहूदा ।

अशिष्टता—[स्त्री०] अशिष्टपन । असभ्यता । अभद्रता । उजड्डता । बेहूदगी ।

अशीतकर—[पु०] जिसकी किरणें अशीत (गरम) हों, अर्थात् सूर्य ।

अशीति—[स्त्री०] अस्सी, (८०) । दश के आठ गुने अथवा आठ के दशगुने ।

अशीतिक—[वि०] अस्सी साल की उम्रवाला ।

अशुचि—[वि०] अपवित्र । मैला-कुचैला । अस्वच्छ । गन्दा । जो शुचि (अग्नि, आषाढ़ मास, सफेद रंग का) न हो ।

अशुचिता—[स्त्री०] अपवित्रता । गन्दगी । अस्वच्छता ।

अशुद्ध—[वि०] अपवित्र । दोषयुक्त । गलत । विना शोधा हुआ । असंस्कृत ।

अशुद्धता—[स्त्री०] अपवित्रता । दोषपूर्णता । गलती । गन्दगी ।

अशुद्धि—[स्त्री०] शुद्धि का न होना । दोष । ऐब ।

अशुभ—[पु०] पाप । अमङ्गल । दुर्भाग्य । [वि०] पापी । बुरा । अमङ्गलकारक ।

अशून्य—[वि०] पूर्ण । भरा हुआ । जो खाली न हो ।

अश्रृत—[वि०] विना पका हुआ । अपक्व । कच्चा । जो मुलायम न हो । कड़ा ।

अशेष—[वि०] समग्र । समूचा । पूरा । समाप्त । अनन्त ।

अशोक—[पु०] अशोक नाम से प्रसिद्ध एक वृक्ष । वकुल । इस नाम से प्रसिद्ध एक राजा जो बौद्ध मत का अनुयायी था । पारा नामक धातु । विष्णु । [वि०] शोकरहित ।

अशोकवाटिका—[स्त्री०] अशोक वृक्षों की वाटिका । सुन्दर उपवन जिसमें रंज दूर हो जाय । लंका के राजा रावण का प्रसिद्ध बाग जिसमें उसने सीता जी को ले जाकर रक्खा था ।

अशोच्य—[पु०] जो शोक करने लायक न हो । अशोचनीय ।

अशोभन—[वि०] कुरूप । भोंड़े आकार का । बदसूरत । बुरा । खराब । कुत्सित । [पु०] अमङ्गल । आनन्द का अभाव । प्रसन्नता का न होना ।

अशौच—[पु०] शौच (पवित्रता) का अभाव । मलिनता । अशुद्धता । स्मृति-शास्त्रों के अनुसार किसी के परिवार में मृत्यु होने अथवा सन्तान उत्पन्न होने के समय की अपवित्रता जो कई दिनों तक मानी जाती है । सूतक ।

अश्म—[पु०] पत्थर । पाषाण ।

अश्मक—[पु०] भारतवर्ष के एक प्रान्त का प्राचीन नाम। प्राचीनकाल में दक्षिण भारत में अश्मक नाम का एक प्रान्त था, ऐसा महाभारत से ज्ञात होता है।

अश्मकर—[पु०] सोना। सुवर्ण।

अश्मकुट्ट—[पु०] वानप्रस्थों की एक श्रेणी। इस श्रेणी के लोग पत्थर से अन्न कुचल कर खाया करते थे। उनके पास उलूखल, चक्की आदि कुछ न रहता था। [वि०] पत्थर से कूटा हुआ। पत्थर से कूटनेवाला।

अश्मगर्भ—[पु०] एक मणि-विशेष। मरकत मणि। पन्ना।

अश्मघ्न—[पु०] पाषाण-भेद नामक वृक्ष।

अश्मज—[पु०] पत्थर से उत्पन्न होने वाला शिलाजतु। पत्थर की तरह पैदा होनेवाला। लोहा।

अश्मजतु—[पु०] शिलाजतु।

अश्मदारण—[पु०] पत्थर तोड़ने का औजार, टाँकी।

अश्मन्—[पु०] पहाड़। पत्थर। चट्टान। लोहा। बादल। बिजली। आकाश। ब्राह्मणों का एक भेद। [वि०] व्याप्त। भोजन करता हुआ।

अश्मन्त—[पु०] मृत्यु। मरण। बुरा। अशुभ। खेत। मैदान। अनन्त। असीम। चूल्हा। भट्ठी।

अश्मन्तक—[पु०] दीपक रखने की दीवट। अखरोट का वृक्ष। एक प्रकार की घास, जिसकी रस्सी बनाई जाती है। भट्ठी। चूल्हा। ढक्कन। आच्छादन।

अश्मभाल—[पु०] लोहे का बना खरल या हावन दस्ता। लोहे का उलूखल। चट्टू।

अश्मभेदक—[पु०] पाषाण भेद नामक वृक्ष जो पत्थर को भी फोड़कर पैदा होता है।

अश्मरी—[स्त्री०] मूत्र-कृच्छ्र नामक रोग। पथरी की बीमारी।

अश्मरीभेदन—[पु०] पाषाण-भेद। वरुण नामक वृक्ष जिसके सेवन से अश्मरी गल कर निकल जाती है।

अश्मलाक्षा—[स्त्री०] पत्थर की लाख। शिलाजतु।

अश्मसम्भव—[पु०] पत्थर से उत्पन्न होनेवाला। शिलाजतु।

अश्मसार—[पु०] लोहा। लोहे के समान कठोर।

अश्र—[पु०] आंसू। नेत्रजल। रुधिर। लोहू।

अश्रद्धान—[वि०] श्रद्धा न रखने-वाला। श्रद्धाहीन। अश्रद्धालु। विश्वास या एतबार न रखनेवाला। नास्तिक।

अश्रद्धा—[स्त्री०] श्रद्धा का न होना। अभक्ति। अविश्वास। बेएतबारी। नास्तिकता। अरुचि। अनिच्छा।

अश्रद्धेय—[वि०] विश्वास न करने योग्य। श्रद्धा के अयोग्य। आदर न करने लायक।

अश्राद्ध—[वि०] श्राद्ध न करनेवाला। श्राद्ध से सम्बन्ध न रखने वाला।

अश्राद्धभोजी—[वि०] जो श्राद्ध में भोजन न करता हो। श्राद्ध में न खाने वाला।

अश्रान्त—[वि०] जो थका न हो। श्रमरहित। [अव्य०] लगातार। सतत। निरन्तर। नित्य। अनवरत। सदा। बराबर।

अश्राव्य—[वि०] न सुनने लायक। न सुनने योग्य। अकथनीय। जो कहने लायक न हो।

अश्रि—[स्त्री०] हथियार की नोक। घर आदि का कोना। शोभाहीन।

अश्री—[वि०] शोभाहीन। जो देखने में अच्छा न लगे। बदरौनक। हतभाग्य। अभागा। अमंगल। अशुभ।

अश्रु—[पु०] आँसू। नेत्रजल। वाष्प।

अश्रुत—[वि०] जो सुना न हो। अनसुना। [पु०] कृष्ण के एक पुत्र का नाम।

अश्रुतपूर्व—[वि०] जो पहले न सुना हो। अनोखा। अद्भुत।

अश्रुपरिप्लुत—[वि०] आँसुओं से भीगा हुआ।

अश्रुपात—[पु०] आंसुओं का बहना। रोना। क्रन्दन। रुलाई।

अश्रुपूर्ण—[वि०] आंसुओं से भरा हुआ। (नेत्रादि) जिसमें आंसू डब-डबा रहे हों।

अश्रुलोचन—[वि०] आंखों में आंसू भरे हुए। जिसके नेत्रों में आंसू छलक रहे हों।

अश्रेय—[पु०] कल्याण का न होना। अकल्याण। अमंगल। अनिष्ट। [वि०] बुरा। हीनतर।

अश्रेष्ठ—[वि०] जो श्रेष्ठ (उत्तम) न हो। अनुत्तम। खराब। अवतर। जो भला न हो।

अश्रोत्रिय—[पु०] वह ब्राह्मण जिसने वेद न पढ़ा हो। जिसे ईश्वर का ज्ञान न हो।

अश्रौत—[वि०] वेद-विरुद्ध। वेदों में जिसकी चर्चा न हो।

अश्लाघनीय—[वि०] जो प्रशंसा करने योग्य न हो। अप्रशंसनीय। तारीफ के अयोग्य। निन्द्य। नीच।

अश्लाघा—[स्त्री०] श्लाघा का अभाव। अप्रशंसा। निन्दा। शील-सौजन्य का न होना।

अश्लाघ्य—[वि०] देखो "अश्लाघनीय"।

अश्लिष्ट—[वि०] जो मिला हुआ न हो। असंगत। बेतरतीब। असम्बद्ध। श्लेषशून्य। वह पद जो श्लेष अलंकार

से रहित हो।

अश्लील—[वि०] लज्जाजनक। ऐसी बात जो सबके आगे निःसंकोच-भाव से न कही जा सके। असभ्य। गँवारू। कुत्सित। कुरूप। गाली-गलौज। साहित्य में एक दोष का नाम।

अश्लीलता—[स्त्री०] कुरूपता। कुत्सा। असभ्यता। गँवारूपन। फूहड़पन। गाली-गलौज।

अश्लेषा—[स्त्री०] ज्योतिष में सत्ताईस नक्षत्रों में से एक। पृथकता। जुदाई।

अश्व—[पु०] घोड़ा। तुरग। तुरंग। वाजी। घोटक। हय। गंधर्व। काम-शास्त्र के अनुसार अश्व जाति का पुरुष।

अश्वकन्दक—[पु०] अश्वगन्धा। असगन्ध।

अश्वकर्ण—[पु०] घोड़े का कान। एक पर्वत-विशेष का नाम। घोड़े के कान जैसे पत्तोंवाला एक वृक्ष जिसे शालवृक्ष कहते हैं। जिसका कान घोड़े के कान जैसा हो।

अश्वकुटी—[स्त्री०] घोड़े के रहने की जगह। तबेला। अस्तबल। घुड़शाल।

अश्वखरज—[पु०] घोड़ा और गधी अथवा गधा और घोड़ी के संयोग से उत्पन्न हुआ घोड़े की जाति का एक पशु। खच्चर।

अश्वगति—[स्त्री०] घोड़े की चाल। पिंगल में एक छन्द का नाम।

अश्वगन्धा—[स्त्री०] असगन्ध। अश्वकन्दा।

अश्वगोष्ठ—[पु०] घोड़ों के रहने का स्थान। घुड़शाल। अस्तबल। तबेला। अश्वशाला। अश्वकुटी।

अश्वघोष—[पु०] घोड़ों का शब्द। घोड़े का हींसना। एक प्राचीन बौद्ध कवि का नाम।

अश्वघ्न—[पु०] सफेद कनेर का वृक्ष। कहते हैं इसके खा लेने से घोड़ा मर जाता है।

अश्वचिकित्सक—[पु०] सालोत्तरी। शालिहोत्री। घोड़ों का इलाज करने-वाला। अश्व-वैद्य।

अश्वजित्—[वि०] घोड़े को जीतने-वाला। [पु०] एक बौद्ध भिक्षु का नाम।

अश्वतर—[पु०] खच्चर। अश्व-खरज। बछेड़ा। एक सर्प विशेष। एक गन्धर्व का नाम।

अश्वतरी—[स्त्री०] खच्चरी। बछेड़ी।

अश्वत्थ—[पु०] पीपल का वृक्ष। संसार रूपी वृक्ष।

अश्वत्थामा—[पु०] महाभारत काल के एक प्रसिद्ध वीर का नाम। ये द्रोणाचार्य के पुत्र थे जो कृपी के गर्भ से उत्पन्न हुए।

अश्वदंष्ट्रा—[स्त्री०] गोखुर वृक्ष। गोखुरू का पेड़।

अश्वपति—[पु०] घोड़ों का स्वामी। घोड़ों की देख-भाल करनेवाला। साईस। रामायण में वर्णित केकय देश के राजा का नाम (ये भरत के मामा थे)। केकय देश के राजकुमारों की उपाधि।

अश्वपाल—[पु०] घोड़ों का रक्षक। साईस।

अश्वबाल—[पु०] घोड़े के बाल। घोड़े के बालों (केसर) के से आकार का फूल होने से कास नामक घास।

अश्वमार—[पु०] कनेर नामक वृक्ष। श्वेत कनेर की जड़। पालक नामक शाक।

अश्वमुख—[पु०] घोड़े के मुँह जैसा जिसका मुँह हो। देवताओं के गवैयों की एक जाति। किन्नर, जिनका मुँह घोड़े का सा और शेष शरीर मनुष्य का सा होता है।

अश्वमेध—[पु०] एक प्रकार का यज्ञ जिसे चक्रवर्ती राजा किया करते थे। इसमें एक सुन्दर घोड़े के मस्तक पर जय-पत्र बाँधकर उसे स्वतन्त्र छोड़ दिया जाता था और उसके पीछे बहुत-सी सेना चलती थी जो घोड़े के पकड़नेवाले से युद्ध करके उसे परास्त करती और घोड़े को आगे कर के फिर चल देती। इस प्रकार भू-मण्डल भर में घूमने के पश्चात् घोड़े के लौट आने पर होम किया जाता था। किन्हीं का मत है, होम में उक्त घोड़े के मांस की आहुति भी दी जाती थी।

अश्वमेधीय—[पु०] अश्वमेध यज्ञ के लिए सहायक। अश्वमेध के योग्य। अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा।

अश्वयान—[पु०] घोड़े की सवारी। घोड़े पर चढ़ना।

अश्वरक्षक—[पु०] घोड़े की देख रेख रखनेवाला। अश्वपाल। साईस।

अश्वरत्न—[पु०] उत्तम घोड़ा। श्रेष्ठ घोड़ा। उच्चैःश्रवा। इन्द्रका घोड़ा।

अश्वरथ—[पु०] वह रथ जिसमें घोड़ा जोता जाय। घोड़ा गाड़ी। बग्घी आदि।

अश्वराज—[पु०] घोड़ों में राजा के समान। उच्चैःश्रवा। इन्द्र का घोड़ा।

अश्वरोधक—[पु०] घोड़े को रोकने-वाला। सफेद कनेर का वृक्ष।

अश्ववार—[पु०] घोड़े को रोकने-वाला। घुड़सवार। अश्वारोही।

अश्ववैद्य—[पु०] अश्वचिकित्सक। शालिहोत्री। सालोत्तरी।

अश्वशाला—[स्त्री०] घुड़शाल। तबेला। अस्तबल।

अश्वसादी—[पु०] घोड़े पर चढ़ने-वाला। घुड़सवार। अश्वारोही।

अश्वस्तन—[वि०] आज का। कल के लिए शेष न रहनेवाला। केवल एक दिन के लिए निर्वाह योग्य (अन्नादि-

सामग्री)।

अश्वस्तनिक—[वि०] जो आज भर के लिए निर्वाह सामग्री रखता हो। कल के लिए सञ्चय न करनेवाला।

अश्वारि—[पु०] घोड़े का शत्रु। भैंसा।

अश्वारूढ़—[पु०] घोड़े पर चढ़ा हुआ। घुड़सवार।

अश्वारोह—[पु०] घोड़े पर चढ़नेवाला। घुड़सवार। अश्ववाहक। घोड़ा हाँकनेवाला। कोचवान।

अश्वारोहण—[पु०] घोड़े पर चढ़ना। घोड़े की सवारी।

अश्वारोही—[पु०] घुड़सवार। अश्वारोह।

अश्विन्—[पु०] देवताओं के वैद्य-अश्विनीकुमार।

अश्विनी—[स्त्री०] सत्ताईस नक्षत्रों में से पहला नक्षत्र। सूर्य की स्त्री (संज्ञा)। किरणें।

अश्विनीकुमार—[पु०] सूर्य के वीर्य द्वारा उनकी संज्ञा नामक स्त्री के गर्भ से यमज उत्पन्न हुए कुमार। ये देवताओं के वैद्य कहाते हैं।

अश्विनीसुत—[पु०] देखो "अश्विनीकुमार"।

अश्वीन—[पु०] जिसे घोड़ा एक दिन में तय कर सके उतना लम्बा मार्ग।

अश्वीय—[पु०] घोड़ों का समूह। घोड़ों का हित। [वि०] घोड़ों के लिए लाभदायक।

अश्वोरस्—[पु०] उत्तम अश्व। बढ़िया घोड़ा।

अषडक्षीण—[वि०] वह विचार जिसके करते समय छः आँखें (तीन व्यक्ति) मौजूद न रही हों अर्थात् केवल चार आँखों (दो व्यक्तियों) द्वारा किया गया विचार। वह विचार या मन्त्रणा जो तीसरे आदमी को ज्ञात न हो।

अषाढ़—[पु०] चान्द्र वर्ष का चौथा महीना। वह मास जिसमें अषाढ़ा नक्षत्र युक्त पूर्णिमा पड़े वह महीना।

अष्ट—[वि०] आठ। सात से एक अधिक। जो गिनती में आठ हो।

अष्टक—[पु०] आठ वस्तुओं का समूह। जैसे शिवाष्टक। आठ पद्यों या मन्त्रों का स्तोत्र अथवा काव्य। यथा—गंगाष्टक।

अष्ट कमल—[पु०] हठ योग में बताए गये शरीर के भीतर मूलाधार से ललाट तक कल्पित आठ कमल।

अष्टका—[स्त्री०] पौष, माघ और फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी। इन तीनों अष्टमियों में किया जानेवाला श्राद्ध-विशेष। अष्टका याग।

अष्टकाङ्ग—[पु०] चौसर खेलने का वस्त्र जिसपर चारों ओर आठ-आठ खाने बने होते हैं।

अष्ट कुल—[पु०] सर्पों के आठ कुल जिनके ये नाम पुराणों में लिखे हैं: शेष, वासुकि, कम्बल, कर्कोटक, पद्म, महापद्म, शंख और कुलिक।

अष्ट कृष्ण—[पु०] वल्लभकुल सम्प्रदाय द्वारा माने गए कृष्ण के आठ स्वरूप जिनके नाम—श्रीनाथ, नवनीतप्रिय, मथुरानाथ, विट्ठलनाथ, द्वारकानाथ, गोकुलनाथ, गोकुलचन्द्रमा और मदन मोहन हैं।

अष्ट कोण—[पु०] वह वस्तु जिसमें आठ कोने हों। अठकोना। आठ कोनेवाला।

अष्ट धान्य—[पु०] आठ सुगन्धित द्रव्यों का मिश्रण।

अष्ट दल—[वि०] आठ कोने का। अठपहलू। आठ दल का। [पु०] आठ पंखुड़ियोंवाला कमल। आठ पत्तों का।

अष्ट दिग्गज—[पु०] आठों दिशाओं के आठ हाथी, जिनके नाम—ऐरावत, पुण्डरीक, वामन, कुमुद, अञ्जन, पुष्पदन्त, सार्वभौम और सुप्रतीक हैं।

अष्ट द्रव्य—[पु०] यज्ञ में काम आने वाले आठ पदार्थ। जिनके नाम अश्वत्थ (पीपल), उदुम्बर (गूलर), प्लक्ष (पाकर या पिलखन), न्यग्रोध (बड़), तिल, सिद्धार्थ (सरसों), पायस (खीर) और आज्य (घी) हैं।

अष्टधा—[अव्य०] आठ प्रकार। आठ तरह। आठ जगह।

अष्ट धातु—[पु०] आठ मुख्य धातुएं—सोना, चाँदी, ताँबा, राँगा, जस्ता, सीसा, पारा और लोहा।

अष्टपदी—[स्त्री०] एक प्रकार का गीत, जिसके आठ चरण होते हैं।

अष्ट पर्वत—[पु०] आठ पहाड़—महेन्द्र, मलय, सह्य, शुक्तिमान, ऋक्षवान, विन्ध्य, पारियात्र और हिमालय।

अष्टपाद—[पु०] जिसके आठ पैर हों। शार्दूल नामक मृगविशेष। मकड़ी। किलनी।

अष्ट प्रकृति—[स्त्री०] राज्य-शासन के प्रधान आठ कार्यकर्ता—सुमन्त्र, पण्डित, मन्त्री, प्रधान, सचिव, अमात्य, प्राड्विवाक और प्रतिनिधि।

अष्टभुजा—[स्त्री०] आठ भुजाओंवाली। दुर्गा की मूर्ति-विशेष।

अष्टम—[वि०] आठवाँ।

अष्टमङ्गल—[पु०] मंगलकारक माने जानेवाले आठ पदार्थ। किसी ने सिंह, वृष, नाग, कलश, चवर, वैजयन्ती, भेरी और दीपक ये आठ अष्टमंगल माने हैं। और किसी ने ब्राह्मण, गो, अग्नि, स्वर्ण, जल, सूर्य, अग्नि और राजा की उक्त पदार्थों में गणना की है। सफेद मुख, वक्षःस्थल, खुर, पूँछ और केसरवाला घोड़ा भी अष्टमंगल कहलाता है।

अष्टमी--[स्त्री०] आठवीं। चान्द्र मास के शुक्ल या कृष्ण पक्ष की आठवीं तिथि। एक जड़ी का नाम।

अष्टमूर्ति [पु०] शिव। महादेव। भूमि, जल, तेज, वायु, आकाश, यज्ञ करानेवाला यजमान, सूर्य और चन्द्रमा ये आठ महादेव की मूर्ति मानी गई है।

अष्ट लौहक—[पु०] अष्ट धातु। यह सोना, चाँदी, ताँबा, राँगा, सीसा, पीतल, लोहा और फौलाद इन आठ धातुओं को उचित अनुपात में एकत्र मिलाने से बनता है।

अष्टवर्ग—[पु०] एक नियत आठ जड़ी-बूटियों का समूह, जिसमें मेदा, महा मेदा, ऋद्धि, वृद्धि, जीवक, ऋषभक, काकोली और क्षीर काकोली ये आठ ओषधियाँ ली जाती हैं। ज्योतिष के अनुसार जन्मकुण्डली में लिखे गए राहु को छोड़कर शेष सूर्यादि आठ ग्रहों का समूह। राजनीति के अनुसार कृषि, वस्ति, दुर्ग, सोना, हस्तिबन्धन, खदानें, कर-संचय और सेना-संघटन इन आठों का समूह अष्टवर्ग कहाता है।

अष्टश्रवण—[पु०] जिसके आठ कान हों अर्थात् ब्रह्मा।

अष्ट सिद्धि—[स्त्री०] योग-साधन से प्राप्त होनेवाली अणिमा, महिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, इशित्व, वशित्व और कामावसायिता ये आठ सिद्धियाँ।

अष्टाकपाल—[पु०] यज्ञ में आहुति देने के लिए आठ मिट्टी के शकोरों में तय्यार किया गया चारु-विशेष। वह यज्ञ जिसमें अष्टकपाल सिद्ध पुरोडाश की आहुतियाँ दी जाती हैं।

अष्टाक्षर—[वि०] जिसमें आठ अक्षर हों। आठ अक्षरोंवाला मंत्र या पद्य।

अष्टाङ्ग—[पु०] आठ अंगोंवाला। जिसके आठ अंग हों वह, यथा (१) अष्टांगअर्घ—जल, दूध, कुशा, दही, घी, चावल, जौ और पीली सरसों इन आठ पदार्थों को एकत्र करके अर्घ दिया जाता है। (२) अष्टांग चिकित्सा—जिसमें शल्य, शालाक्य, कार्य चिकित्सा, कौमारभृत्य, भूतविद्या, अगदतन्त्र, रसायनतंत्र, और वाजी करण ये आठ अंग माने जाते हैं। (३) अष्टाङ्ग प्रणाम—जिसमें घुटना, पैर, हाथ, छाती, मस्तक, दृष्टि, वाणी, और मन इन आठों अंगों का योग हो। (४) अष्टांग-मैथुन—मैथुन के स्मरण, कीर्तन, केलि, ताक-झाँक, गुप्त वार्तालाप, संकल्प, अध्यवसाय और क्रिया-निष्पत्ति ये आठ अङ्ग। (५) अष्टाङ्ग योग—जिसके यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि के आठ अंग हैं।

अष्टाङ्गी—[वि०] आठ अंगोंवाला। जिसके आठ अवयव हों। आठ अंग-युक्त।

अष्टादश—[वि०] अठारह। दश और आठ। अठारह संख्यावाला।

अष्टादशधान्य—[पु०] अठारह-प्रकार के अन्न अर्थात्—जौ, गेहूँ, धान, तिल, कँगनी, कुलथी, उर्द, मूँग, मसूर, निष्पाव (रमास), सरसों, अरहर, मटर, चना, समा, जंगली धान, गवेधुक और अशिक।

अष्टादश पुराण—अठारह पुराण—ब्राह्म, पाद्म, वैष्णव, शैव, भागवत, नारदीय, मार्कण्डेय, आग्नेय, भविष्य, ब्रह्मवैवर्त, लिङ्ग, वाराह, स्कान्द, वामन, कौर्म, मात्स्य, गारुड़ और ब्रह्माण्ड।

अष्टादश भुजा—[स्त्री०] अठारह भुजाओंवाली महा लक्ष्मी।

अष्टादश विद्या—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष, ऋक् यजु, साम, अथर्व, मीमांसा, न्याय, धर्म-शास्त्र, पुराण, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्व-वेद और अर्थ शास्त्र।

अष्टादश स्मृतियाँ-विष्णु, पराशर, दक्ष, संवर्त, व्यास, हारीत, शातातप, वशिष्ठ, यम, आपस्तम्ब, गौतम, देवल, शङ्ख, भरद्वाज, उशना, अत्रि, शौनक और याज्ञवल्क्य, अथवा अंगिरा, यम, आपस्तम्ब-सम्बर्त, कात्यायन, बृहस्पति, पराशर, व्यास, शङ्ख और लिखित, दक्ष, गौतम, शातातप एवं वशिष्ठ।

अष्टाध्यायी—[स्त्री०] पाणिनि मुनि-प्रणीत व्याकरण ग्रन्थ, जिसमें आठ अध्याय हैं। शतपथ ब्राह्मण का ग्यारहवाँ काण्ड जिसमें आठ शासन सम्मिलित हैं।

अष्टापद—[पु०] चौपर खेलने की बिसात जिसकी एक पंक्ति में आठ-आठ खाने बने होते हैं। आठ पैरोंवाला। शरभ नामक पक्षी-विशेष जिसके सम्बन्ध में प्रसिद्ध है कि वह हाथी को भी अपने पंजे में दबा कर उड़ जाता है। मकड़ी। कृमि। कीड़ा। धतूरा। सुवर्ण। कील, काँटा। योग की आठ सिद्धियाँ। कैलास पर्वत।

अष्टापदी—[स्त्री०] मल्लिका। चाँदनी नामक वृक्ष।

अष्टावक्र—[पु०] एक ऋषि का नाम जो टेढ़े-कुबड़े शरीर वाले थे। टेढ़े अंगों वाला मनुष्य।

अष्ठीला—[स्त्री०] एक प्रकार का वात रोग। पत्थर का गोल टुकड़ा। आघात। चोट। चोट लगने के कारण पड़ा हुआ नीला दाग। फल की गुठली। बीज के भीतर का अँकुआ। बीजगर्भ।

अंस—[पु०] कंधा। हिस्सा।

अंसकूट--[पु०] साँड़ का कंधे पर

ऊँचा उठा हुआ भाग । टाट । कूबड़ । डुड्डु ।

असकृत—[अव्य०] एक बार का उलटा-बार-बार ।

असक्त—[वि०] आसक्ति-विहीन । फल की आशा न रखनेवाला । शक्ति-शून्य । लापरवाह ।

असक्ति—[स्त्री०] विराग ।

असङ्कीर्ण—[वि०] विशुद्ध । बिना मिलावट का । अलग-अलग । जो एकत्र मिलाया गया न हो ।

असंकुल—[वि०] जो संकुचित या घिचपिच न हो । विस्तृत । चौड़ा । जो परस्पर विरुद्ध न हो ।

असंक्रान्त मास—[पु०] अधिक मास । मलमास ।

असंक्षिप्त—[पु०] न घटाया गया । संक्षेप न किया गया ।

असंख्य—[वि०] अगणित । अन-गिनत । बेशुमार । [पु०] विष्णु ।

असंख्यात—[वि०] संख्या से बाहर । बेशुमार ।

असङ्ग—[वि०] किसी से सङ्ग (लगाव) न रखनेवाला । विरक्त । निर्लिप्त । एकाकी । विषय वासना से अलग । [पु०] परमात्मा । महादेव । सङ्ग-रहित ।

असङ्गत—[वि०] अनुचित । अयुक्त । बेमेल । बेठीक । विषम । असम्बद्ध ।

असंङ्गति—[स्त्री०] सङ्गति का अभाव । औचित्य का न होना । पूर्वापरविरोध । अनुपयुक्तता । बेसिलसिलापन ।

असङ्गी—[वि०] सङ्ग-रहित । सम्बन्ध-शून्य । लगाव न रखनेवाला । [पु०] परमात्मा ।

असज्जन—[पु०] सज्जन का उलटा । बुरा आदमी । दुष्ट मनुष्य ।

असज्जित—[वि०] जो सजा हुआ न हो । जो आवश्यक सामान से युक्त न हो ।

असंज्ञा—[स्त्री०] ज्ञान का न होना । बेहोशी । [वि०] ज्ञानरहित । बेहोश ।

असती—[स्त्री०] जो सदाचारिणी न हो । कुलटा । दुश्चरित्रा । पुंश्चली । व्यभिचारिणी ।

असतीसुत—[पु०] दुराचारिणी का पुत्र । जारज । हरामजादा ।

असत—[वि०] असत्य । असाधु । बुरा । खराब । जो न हो । अविद्यमान । अनित्य । ब्रह्म से भिन्न । जड़ । निष्फल ।

असत्कर्म—[पु०] बुरा काम । निषिद्ध कार्य ।

असत्कल्पना—[स्त्री०] झूठी कल्पना । जो बात कभी न हो उसकी कल्पना ।

असत्कृत—[वि०] जिसका आदर न किया गया । अनादृत । तिरस्कृत ।

असत्ता—[स्त्री०] अविद्यमानता । अनुपस्थिति । असज्जनता । असाधुता । बदमाशी । अव्यक्तता । स्पष्ट न होने की अवस्था ।

असत्त्व—[पु०] अनुपस्थित होना । अविद्यमानत्व । किसी वस्तु का अभाव । दुष्टता । सत्त्वगुण का न होना, अर्थात् रजोगुण और तमोगुण । [वि०] वह-स्थानादि जहाँ प्राणी न हों । जीव-जन्तु-रहित । सत्त्वगुण-रहित अर्थात् राजसी या तामसी स्वभाववाला । कार्य के अयोग्य । निरर्थक । निर्बल ।

असत्पथ—[पु०] कुपथ । कुमार्ग । बुरा या निषिद्ध रास्ता ।

असत्पुत्र—[पु०] निस्सन्तान व्यक्ति । जिसके पुत्र न हो । बुरा लड़का । कुपुत्र ।

असत्य—[वि०] झूठ । मिथ्या ।

असत्यता—[स्त्री०] झुठाई ।

असत्यवादी—[वि०] झूठ बोलने-वाला । मिथ्या भाषण करनेवाला ।

असत्यसन्ध—[वि०] झूठी प्रतिज्ञा-वाला । विश्वासघाती ।

असत्सङ्ग—[वि०] कुसङ्ग । बुरा साथ । नीच सोहबत ।

असदाचार—[पु०] अच्छे आचरण का अभाव । सदाचार का उलटा । दुरा-चार । बदचलनी । [वि०] सदाचार-शून्य । दुराचारी । बदचलन ।

असदाचारिणी—[स्त्री०] सदाचार-शून्य स्त्री । बुरे आचरणवाली ।

असदाचारी—[वि०] सदाचार-शून्य । बदचलन ।

असद्ग्रह—[पु०] असत् (अविद्य-मान) वस्तु में आग्रह करना । अन-होनी चीज़ के सम्बन्ध में आग्रह । मिथ्या-ज्ञान । चालाकी । छिछोरपन । बालहठ ।

असद्भाव—[पु०] न होना । अनु-पस्थिति । बुरा भाव ।

असद्वाद—[पु०] बुरा वार्तालाप । ऊट-पटाँग बातें । किसी वस्तु की सत्ता को स्वीकार न करना ।

असदवृत्ति—[स्त्री०] बुरा व्यवहार । बुरा आचरण । बुरी जीविका । [वि०] बुरा व्यवहार करनेवाला । बुरे आचरण वाला । निन्द्य प्रकार से रोज़ी कमाने-वाला । बदमाश ।

असद्व्यवहार—[पु०] बुरा बर्ताव । दुष्ट व्यवहार ।

असन—[पु०] फेंकना । (तीर आदि का) निशाना लगाना ।

असन्त—[पु०] दुष्ट । बुरा व्यक्ति ।

असन्तति—[स्त्री०] सन्तान का न होना । धारा या प्रवाह का अभाव । [वि०] निस्सन्तान । निपूता । धारारहित ।

असन्त—[वि०] निःसन्तान । बिना बाल-बच्चोंवाला । वंशरहित । विस्तारशून्य ।

असन्ताप—[पु०] सन्ताप का अभाव । जिसे सन्ताप न हो ।

असन्तुष्ट—[वि०] सन्तोषरहित । अतृप्त ।

जिसका जी न भरा हो। नाराज़। अप्रसन्न।

असन्तुष्टि–[स्त्री०] सन्तोष का अभाव। अतृप्ति। लालच। अप्रसन्नता। नाराज़गी।

असन्तोष—[पु०] संतोष का न होना। अतृप्ति। अधैर्य। अप्रसन्नता।

असन्तोषी—[वि०] सन्तोष न करनेवाला। अधीर। लालची।

असन्दिग्ध—[वि०] सन्देह-शून्य। स्पष्ट। साफ़। विश्वसनीय। [अव्य०] निःसन्देह।

असन्दिष्ट—[वि०] जिसे कोई सूचना न दी गई हो। बेख़बर।

असन्धित—[वि०] जो बन्धन में न हो। स्वतन्त्र। उन्मुक्त। आज़ाद।

असन्नद्ध—[वि०] जो तैयार न हो जो शस्त्रास्त्रों से सजा हुआ न हो। निरस्त्र। निहत्था। अहङ्कारी। उत्पात।

असन्निहित—[वि०] जो पास न हो। दूर।

असंन्यस्त—[वि०] जिसने संन्यास न किया हो। जिसने दुनिया को त्यागा न हो। [पु०] जो त्यागा नहीं गया।

असपत्न—[वि०] जो शत्रु न हो। शत्रु का उलटा। मित्र। अविरोधी। शत्रुरहित।

असपत्नी—[स्त्री०] जो सपत्नी (सौत) न हो। वह स्त्री जिसकी कोई सौत न हो।

असपिण्ड—[वि०] जो सात पीढ़ियों में से न हो।

असभ्य—[वि०] सभा के अयोग्य। जो सभा में बैठने या वर्णन करने योग्य न हो। अशिष्ट। उजड्ड। गँवार। अश्लील वर्णन। दुष्ट। नीच।

असभ्यता—[स्त्री०] असभ्यपन। अशिष्टता। उजड्डता। अश्लीलता। दुष्टता। नीचता।

असम—[वि०] जो बराबर न हो। जो एकतार न हो। विषम। बेजोड़। ऊबड़-खाबड़। ऊँचा-नीचा। अतुल्य। अनुपम। बेमिसाल। [पु०] साहित्य में एक अलङ्कार का नाम। बुद्ध-विशेष।

असमग्र—[वि०] जो पूरा न हो। अपूर्ण। अधूरा।

असमञ्जस—[पु०] सोचविचार। दुविधा। आगा-पीछा। सकुच। खींचतान। अनुपयुक्त। इक्ष्वाकु-वंशीय महाराज सगर के बड़े बेटे का नाम। [वि०] असदृश। असमान। बेमेल।

असमनेत्र— [पु०] जिसके सम (जोड़े से) नेत्र न हों, अर्थात् तीन आखोंवाला। त्रिनेत्र-महादेव। तीसरा नेत्र।

असमय—[पु०] बुरा समय। संकटकाल। अनुपयुक्त समय। बेमौका

असमर्थ—[वि०] अशक्त। निर्बल। कमज़ोर। कार्य करने में अक्षम। सामर्थ्यहीन। अयोग्य। अनुपयुक्त वा अनुचित अर्थ (मानी) वाला।

असमवायि कारण—[पु०] न्याय के मतानुसार वह कारण जो द्रव्य से भिन्न—गुण,कर्म आदि हो। जैसे–वस्त्र के तैयार होने में सूत, जुलाहा, करघा आदि समवायि कारण और सूतों का संयोग (द्रव्य से भिन्न, गुण होने के कारण) असमवायि कारण है। वैशेषिक के मत से कार्य से नियत सम्बन्ध न रखनेवाला कारण असमवायि कारण माना गया है। जैसे–वृक्ष से पत्ते गिरने में वायु का झोंका असमवायि कारण है। क्योंकि इसका पत्र-पतन कार्य के साथ नियत सम्बन्ध नहीं। हवा के झोंके से ही पत्ते गिरते हैं, ऐसा निश्चित नहीं, वे ईट-पत्थर मारने से भी गिर सकते हैं।

असमवायी—[पु०] असम्बद्ध। अमिलित। बेमेल। बेसिलसिला। न्याय के मत से समवाय-सम्बन्ध-रहित।

असमवेत—[वि०] असम्बद्ध। असंयुक्त। जो इकट्ठा न हो। अलग-अलग।

असमशर [पु०] जिसके असमान (विषम) संख्यक बाण हैं। पाँच बाणोंवाला, कामदेव। पंचशर। पंचबाण। कन्दर्प। अनङ्ग।

असमसायक—[पु०] देखो "असमशर"।

असमस्त—[वि०] जो सम्पूर्ण न हो। अधूरा। अपूर्ण। जिसका समास न हुआ हो। अमिलित। अलग-अलग। जो एकत्र न किया गया हो।

असमान—[वि०] अतुल्य। नाबराबर। विजातीय।

असमापित—[वि०] जो पूरा न हुआ हो। अपूर्ण। अधूरा। जो अन्त या अवसान को नहीं पहुँचा।

असमाप्त [वि०] असमापित। जो भले प्रकार प्राप्त न हुआ हो।

असमाप्ति—[स्त्री०] अपूर्णता। अधूरापन। सम्यक्रूप से अप्राप्ति।

असमाहित—[वि०] जो समाधि लगाए न हो। जो एकाग्रचित्त न हो। जो रक्खा न गया हो। जिसके लिये कोई प्रतिज्ञा न की गई हो। अप्रतिज्ञात। अपूर्ण।

असमीक्ष्य—[अव्य०] विना विचारे।

असमीक्ष्यकारी—[वि०] विना सोचेविचारे काम करनेवाला।

असमीचीन–[वि०] असत्य। अयथार्थ। बेठीक। अनुचित। असाधु। गलत।

असमृद्ध—[वि०] जो सम्पन्न न हो। निर्धन। हताश। हारा हुआ। जो हराभरा न हो।

असमृद्धि—[स्त्री०] असम्पन्नता। निर्धनता। निराशा।

असम्पन्न—[वि०] सम्पत्तिशून्य। असमृद्ध।

असम्पूर्ण—[वि०] अधूरा। अनिष्पन्न। नातमाम।

असम्पृक्त—[वि०] विना मिला हुआ। असंयुक्त। अलहदा। असम्बद्ध।

असम्प्रज्ञ—[वि०] जो होनहार न हो। मन्दबुद्धि। अज्ञान।

असम्प्रज्ञात—[वि०] भलीभाँति न जाना हुआ। अच्छी तरह न समझा हुआ। जिसमें कुछ भी न समझा जा सके। योग-शास्त्र के अनुसार समाधि का एक भेद। निर्विकल्प समाधि। जिसमें ज्ञान, ज्ञेय और ज्ञाता का भेद-भाव मिट जाता है वह समाधि।

असम्बद्ध—[पु०] अर्थ को प्रकट न करनेवाला वाक्य-सम्बन्धरहित। बे-सिलेसिले। निरर्थक। ऊट-पटाँग। अय-थार्थ। अनुचित। जो मेल में न हो। बेमेल।

असम्बद्धप्रलाप—[पु०] असङ्गत बात कहना। बेसिलसिले या ऊट-पटांग बकना। निरर्थक बात कहना। अनुचित कथन।

असम्बन्ध—[पु०] सम्बन्ध का न होना। अलगाव। अलहदगी। पद के परस्पर अन्वय का न होना। [वि०] सम्बन्धरहित। बेसिलसिले।

असम्बाध—[वि०] जो घिचपिच न हो। खुला हुआ। विस्तृत। विरल। अलग-अलग। बाधारहित। संघर्षशून्य।

असम्भव—[वि०] जो हो न सके। नामुमकिन। असङ्गत। विरुद्ध। असत्। अविद्यमान। साहित्य में एक अलङ्कार का नाम।

असम्भावना—[स्त्री०] होने की आशा का अभाव। अनहोनी। न हो सकना।

असम्भावित—[वि०] जिसकी सम्भावना न हो। जो सम्भव न समझा गया हो। जिसके होने की आशा न हो। अनुमान-विरुद्ध।

असम्भाव्य—[वि०] जो सम्भव न हो। अनहोना।

असम्भाष्य—[वि०] जिससे बात करना उचित न हो। बातचीत न करने लायक। बुरा। न कहा जाने योग्य। अश्लील।

असम्भूत—[वि०] जो उत्पन्न न हुआ हो। उत्पत्तिरहित। नापैद।

असम्भूति—[स्त्री०] अनहोनी। न होने की बात। सम्भव का अभाव।

असम्भृत—[वि०] जिसका अच्छे प्रकार पालन-पोषण न किया गया हो। विना ही प्रयत्न के सिद्ध होनेवाला।

असम्भ्रम—[पु०] उत्सुकता अथवा आश्चर्य का अभाव। स्थिरता। कार्य-व्यस्तता का न होना। अवकाश। फुर-सत। भ्रम का न होना। उतावल या घबराहट का न होना। गम्भीरता। असम्मान। अनादर।

असम्मत—[वि०] अस्वीकृत। अन-भिमत। नापसन्द। अनचाहा। जिस पर किसी की राय न हो। विरुद्ध। उलटा। प्रतिद्वन्दी।

असम्मति-[स्त्री०] सम्मति का अभाव। राय या मत का न मिलना। अस्वीकृति। नाराजी। अनबन।

असम्मान—[पु०] अनादर। अपमान।

असम्मुग्ध—[वि०] सन्देह न करने-वाला। विद्वत्ता के अभिमान से शून्य। जिसे अपने पढ़े-लिखे का घमण्ड न हो।

असम्मूढ—[वि०] ठीक समझनेवाला। स्थिर। गम्भीर। विचारशील।

असम्मोह—[पु०] यथार्थ ज्ञान। ठीक समझ। [वि०] निर्भ्रान्त। स्थिर-बुद्धि। गम्भीर।

असंयत—[वि०] अनियन्त्रित। जो संयमशील न हो। बन्धनरहित। अबद्ध।

असंयतात्मा—[वि०] जिसे अपने-आप पर अधिकार न हो।

असंयमी—[वि०] इन्द्रियों को वश में न रखनेवाला। असंयत।

असंयुक्त—[वि०] जो मिला हुआ न हो। अलग-अलग। वियुक्त।

असंयुत—[वि०] देखो "असंयुक्त"।

असंयोग—[वि०] संयोग का न होना। मेल का अभाव। [वि०] संयोगरहित। जो मिला न हो। अलग।

असंरम्भ—[पु०] क्रोध का अभाव। निन्दा का न होना। उत्साह या वेग का न होना।

असंरुद्ध—[वि०] बेरोक। जो रुका या घिरा न हो। बन्धनरहित।

असर्वज्ञ—[वि०] जो सर्वज्ञ न हो। जो सब बातों का जाननेवाला न हो।

असंलग्न—[वि०] जो लगा हुआ या मिला हुआ न हो। अलग। असम्बद्ध।

असंविदान—[वि०] मूर्ख। नासमझ। अज्ञान। असम्प्रज्ञ। ठस दिमागवाला।

असंवृत—[वि०] जो ढका हुआ न हो। खुला हुआ। उघड़ा हुआ। अनावृत। अनाच्छादित।

असंव्यवहित—[अव्य०] झटपट। तुरन्त। अविलम्ब। फौरन।

असवर्ण—[वि०] जो अपने वर्ण का न हो। भिन्न वर्ण का। असजातीय।

असंशय—[पु०] सन्देह का अभाव। विकल्प का न होना। [वि०] सन्देह-शून्य। निःसंशय। निर्विकल्प। बिला शक। बेखटके।

असंश्लिष्ट—[वि०] असंगत। विना मिला हुआ। लगाव न रखनेवाला। अलग। [पु०] सबसे अलग रहने-वाला—महादेव।

असंसक्त—[वि०] जो जुड़ा हुआ या लगा हुआ न हो। भिन्न। पृथक्। अलग। असंयुक्त।

असंसक्ति—[स्त्री०] भिन्नता । अलगाव । लापरवाई ।

असंसर्ग—[पु०] संसर्ग, लगाव का न होना । असङ्गति ।

असंसारी—[वि०]अलौकिक। अद्भुत। निरीह । निस्पृह ।

असंसिद्ध—[वि०] अपूर्ण । जो पूरा न हुआ हो । नातमाम ।

असंसृष्ट—[वि०] संसर्ग रहित । जो किसी के साथ लगा हुआ न हो ।

असंस्कृत—[वि०] जिसका संस्कार (गर्भाधान आदि अथवा संशोधन) न हुआ हो । अपरिष्कृत । अशुद्ध ।

असंस्तुत—[वि०] जिससे जान पहचान न हो । जिसकी अच्छे प्रकार स्तुति न की गई हो ।

असंस्थित—[वि०] चंचल । चुलबुला । अस्थिर । निराश्रित ।

असंस्थिति—[स्त्री०] अव्यवस्था । विप्लव । न्यूनता । कमी ।

असह—[वि०] अक्षम । सहन करने में असमर्थ ।

असहन—[पु०] शत्रु । वैरी । [वि०] असहिष्णु । न सहनेवाला ।

असहनशील—[वि०] सहन न करनेवाला । असहिष्णु । चिड़चिड़े स्वभाव का ।

असहनशीलता—[स्त्री०] असहिष्णुता । चिड़चिड़ापन । सहन न करने का स्वभाव ।

असहनीय—[वि०] न सहने योग्य । असह्य । बरदाश्त न करने लायक ।

असहयोग—[पु०] किसी काम में हाथ न बटाना । किसी के साथ मिलकर काम न करना । किसी कार्य के प्रति असहमति या असन्तोष प्रकट करने के लिए उससे बिलकुल अलग रहना ।

असहाय—[वि०] अकेला । जिसका कोई साथी या सहायक न हो । निराश्रय । अनाथ । निस्सहाय ।

असहिष्णु—[वि०] जो सह न सकता हो । असह । असहनशील । अक्षम । झगड़ालू । तुनकमिज़ाज ।

असहिष्णुता—[स्त्री०] न सहने का स्वभाव । चिड़चिड़ापन ।

असह्य—[वि०] न सहने योग्य । असहनीय ।

असाक्षिक—[वि०] बिना गवाह का । साक्षिशून्य । बिना देखाभाला ।

असाक्षी—[वि०] राजनियमानुसार जिसे साक्षी देने का अधिकार न हो ।

असाधन—[वि०] साधनशून्य । असहाय । बेचारा ।

असाधारण—[वि०] असामान्य । विशेष । ग़ैर मामूली । प्रकार । भेद । [पु०] न्यायशास्त्र के मतानुसार एक प्रकार का दुष्ट हेतु जो सपक्ष और विपक्ष दोनों से निराकृत हो ।

असाधु—[वि०] जो साधु (सज्जन) न हो । दुष्ट । दुराचारी । अविनीत । अशिष्ट । बुरा । बदमाश । वह शब्द जो व्याकरण द्वारा सिद्ध न हो, अपभ्रंश । असंस्कृत ।

असाधुता—[स्त्री०] असाधुपन । दुष्टता । अशिष्टता । बदमाशी ।

असाधुत्व—[पु०] असाधुपन । खोटापन ।

असाधुवृत्ता—[स्त्री०] बुरे आचरण वाली । असदाचारिणी । दुराचारिणी ।

असाध्य—[वि०] सिद्ध न होने लायक । न हो सकने योग्य । दुष्कर । कठिन । वह रोग जिसका प्रतीकार (इलाज) न हो सके ।

असामयिक—[वि०] बे समय का । बेमौके । असमय । अकालिक । असमयोचित । स्वाभाविक ऋतु या काल से भिन्न समय में होनेवाला । अकालोद्भव ।

असामर्थ्य—[पु०] सामर्थ्य (शक्ति) का अभाव । अक्षमता । असमर्थता । निर्बलता । नाताक़ती । कमज़ोरी ।

असामान्य—[वि०] असाधारण । विशेष । गैरमामूली ।

असाम्प्रतम्—[अव्य०] अयोग्य । अनुचित । अयुक्त । नामुनासिब । असमय । बेमौके ।

असाम्य—[पु०] असमानता । अनुपयुक्तता । अयोग्यता । अप्रियता ।

असार—[पु०] सारहीन । थोथा । व्यर्थ । निर्बल । शून्य । खाली । तुच्छ । एरण्ड का वृक्ष ।

असारता—[स्त्री०] सारहीनता । व्यर्थता । थोथापन । निर्बलता । तुच्छता ।

असावधान—[वि०] जो सचेत या सतर्क न हो । ग़ाफ़िल । बेपरवा ।

असावधानता—[स्त्री०] असावधानपन ।

असावधानी—[स्त्री०] देखो "असावधानता" ।

असाहस—[पु०] साहस का अभाव । हिम्मत का न होना ।

असाहसिक—[वि०] जो साहसी न हो । बेहिम्मत । शान्त । ठंडा ।

असि—[स्त्री०] खड्ग । तलवार । कृपाण । बनारस के समीप स्थित एक छोटी नदी । श्वास । साँस ।

असिजीवी—[पु०] असि के द्वारा जीविका उपार्जन करनेवाला । वह व्यक्ति जो अस्त्र-शस्त्रों द्वारा युद्धादि करके जीविका चलाता हो ।

असित—[पु०] काला रंग । कृष्ण पक्ष । शनि नामक ग्रह । जो सित (सफेद) न हो । नील का पौधा । काला राक्षस । अगर नामक काष्ठ । नीलगिरि पर्वत । काला साँप । एक मुनि-विशेष । दुष्ट । कुटिल ।

असितगिरि—[पु०] काला पहाड़। नीलगिरि।

असितग्रीव—[पु०] काली ग्रीवावाला। नीलकण्ठ, महादेव। मोर। अग्नि।

असिता—[स्त्री०] यमुना नदी। पिङ्गला नाम की नाड़ी।

असितानन—[वि०] काले मुँहवाला। लंगूर।

असिताम्बुज, असिताम्बुरुह—[पु०] नीले रंग का कमल।

असितार्चि—[पु०] अग्नि (धुँए की काली शिखा निकलने के कारण)।

असिदंष्ट्र, असिदन्त—[पु०] जिसके दाढ़ दांत तलवार जैसे हों, मगर। घड़ियाल।

असिद्ध—[वि०] अपूर्ण। अपरिपक्व। अधूरा। बेपका। निष्फल। निरर्थक। जो सिद्ध न हो—अप्रमाणित।

असिद्धि—[स्त्री०]अपूर्णता। कच्चापन। अप्राप्ति। अनिष्पत्ति।

असिधारा—[स्त्री०] तलवार की धार। खड्ग का तीक्ष्ण अग्रभाग।

असिधाराव्रत—[पु०] वह व्रत जिसका पालन अति कठिनाई से किया जा सके। एक व्रत-विशेष जिसमें भूल होने पर नरक में असिधारा का आघात लगता है।

असिधेनु, असिधेनुका—[स्त्री०] छुरी। छुरिका।

असिपत्र—(क) [पु०] जिसके पत्ते तलवार के समान धारवाले हों—इक्षु। ईख। गन्ना। तलवार। तलवार का म्यान। एक नरक का नाम।

असिपत्रवन—[पु०] पुराणों में वर्णित एक नरक-विशेष।

असिपुत्रिका, असिपुत्री—[स्त्री०] छुरी। असिधेनुका।

असी—[स्त्री०] काशी के निकटस्थ एक नदी जो गंगा में मिलती है।

असीम—[वि०] अनन्त। अपार। सीमा-रहित। अगाध। अपरिमित।

असु—[पु०] प्राणवायु। प्राण। चित्त। हृदय।

असुख—[पु०] जो सुख न हो, दुःख। क्लेश। [वि०] सुख से रहित। दुखी।

असुखावह—[वि०] दुःख उत्पन्न करनेवाला। क्लेशोत्पादक। दुःखद।

असुखी—[वि०] सुखशून्य। दुःखी।

असुखोदर्क—[वि०] दुखदायी। कष्टप्रद।

असुधारण—[पु०] प्राणधारण करना। जीवन। जिन्दगी।

असुभृत—[वि०] प्राणी। जीवधारी।

असुर—[पु०] राक्षस। सूर्य। बादल। हाथी। राहु। उन्माद रोग। [स्त्री०] पृथ्वी। रात्रि।

असुरगुरु—[पु०] दैत्यों के गुरु—शुक्राचार्य

असुरराज—[पु०] बलि नामक राजा जो प्रह्लाद का पौत्र था। दैत्यों का राजा कोई भी।

असुररिपु—[पु०] दैत्यों का शत्रु। विष्णु। दैत्यारि।

असुरसूदन—[पु०] दैत्यों का नाश करनेवाले विष्णु।

असुरसेन—[पु०] एक राक्षस-विशेष। इसी राक्षस के शरीर पर गया नामक नगर बसा है, ऐसी कथा प्रसिद्ध है।

असुराचार्य—[पु०] असुरगुरु। शुक्राचार्य।

असुरारि—[पु०] असुरों के शत्रु—देवता।

असुलभ—[वि०] कठिनाई से प्राप्त होनेवाला। दुष्प्राप्य।

असुस्थ—[वि०] दुखी रहनेवाला। रोगी। जो आराम में न हो। अस्वस्थ।

असुहृद्—[पु०] सुहृद का उलटा—शत्रु। वैरी।

असूक्षण—[पु०] अनादर। अवज्ञा। बेइज्जती।

असूयक—[वि०] निन्दा करनेवाला। निन्दक। छिद्रान्वेषी। दोष लगानेवाला।

असूयन—[पु०] मिथ्या दोषारोपण। लाञ्छन लगाना। तोहमत लगाना। परिवाद। पैशुन्य।

असूया—[स्त्री०] गुणों में दोष लगाना। पिशुनता। ईर्ष्या। जलन। विरोध। झगड़ा। शत्रुता। साहित्य में संचारी भावों में से एक।

असूर्यम्पश्या—[स्त्री०] सूर्य को भी न देखनेवाली अथवा जिसे सूर्य भी न देख सके। अत्यन्त गुप्त रहनेवाली। पर्दानशीन। रनवास में रहनेवाली रानी आदि स्त्रियाँ। पवित्र आचरणवाली। सती-साध्वी। अत्यन्त रूपवती के लिए भी आता है।

असृक्—[पु०] रक्त। रुधिर। कुंकुम। केसर।

असृक्पात—[पु०] रक्त-प्रवाह। रुधिर का गिरना।

असृग्धरा—[स्त्री०] चर्म। चमड़ी। खाल।

असृग्धारा—[स्त्री०] रक्तप्रवाह। चर्म। चमड़ी।

असृत—[वि०] बिना पकाया हुआ। अपक्व। कच्चा। असिद्ध। जो तैयार न हो।

असृष्ट—[वि०] जो बनाया न गया हो। अरचित। जो दिया न गया हो। जो बांटा न गया हो। जो रोका न गया हो। प्रवाहित।

असेचनक—[वि०] जिसे देखते-देखते मन तृप्त न हो। जो देखने में अत्यन्त प्रिय लगे। छिड़काव का न होना। छिड़काव रहित।

असेवित—[वि०] जिसकी सेवा न की गई हो। जिसका सेवन (व्यवहार) न किया गया हो। अव्यवहृत।

असेव्य—[वि०] सेवा (शुश्रूषा) न करने योग्य। व्यवहार अथवा उपभोग में न लाने योग्य।

असौन्दर्य—[पु०] सुन्दरता का अभाव। भोंडापन। कुरूपता। [वि०] सुन्दरतारहित। कुरूप। भद्दी शक्ल का।

असौम्य—[वि०] जो मनोहर न हो। अप्रिय। डरावना। कुरूप। भोंड़ा।

असौम्यस्वर—[वि०] अप्रिय या कर्कश आवाज़वाला। कर्णकटु शब्दवाला।

असौष्ठव—[पु०] सुन्दरता का अभाव। कुरूपता। भोंड़ापन। अयोग्यता। [वि०] कुरूप। बदसूरत।

अस्कन्दित—[वि०] अखंडित। भंग न होनेवाला। अप्रतिहत। जो टूटा न हो। अखंड।

अस्कन्दितव्रत—[वि०] अखंड व्रत पालन करनेवाला। जिसका नियम टूटा न हो। व्रतशील। बात का पक्का।

अस्खलित—[वि०] स्खलनरहित। जो डिगा न हो। जो फिसला न हो। दृढ़। स्थिर। प्रमादरहित।

अस्त—[पु०] अस्ताचल जहां सूर्य अथवा चन्द्रमा अस्त होते हैं। डूबना। अन्तर्धान। अदृश्यता। न दीखना। घर। मकान। मृत्यु। [वि०] फेंका हुआ। निकाला हुआ। समाप्त। हटाया हुआ। भेजा गया। ज्योतिष में लग्न से सातवाँ घर।

अस्तङ्गत—[वि०] अस्त (अस्ताचल) को गया हुआ। डूबा हुआ। छिप गया। नष्ट। अवनत। नवा हुआ।

अस्तब्ध—[वि०] अदृढ़। अस्थिर। चंचल। विचलित।

अस्तमन—[पु०] सूर्यादि का छिपना। सूर्यादि के अस्त होने का समय।

अस्तमन बेला—[स्त्री०] सूर्यादि के अस्त होने का समय।

अस्तमय, अस्तमयन—[पु०] अस्त होना। छिपना। प्रलय।

अस्तमित—[वि०] डूबा हुआ। छिपा हुआ। अदृश्य। नष्ट। मृत।

अस्तव्यस्त—[वि०] अव्यवस्थित। तितर-बितर। गड़बड़। असम्बद्ध। ऊट-पटांग। घसर-पसर।

अस्ताचल—[पु०] वह कल्पित पहाड़ जिसकी आड़ में सूर्य छिपता है। पश्चिमाचल।

अस्ताचलावलम्बी—[वि०] अस्ताचल को प्राप्त हुआ। अस्त होनेवाला।

अस्ताद्रि—[पु०] देखो "अस्ताचल"।

अस्ति—[स्त्री०] सत्ता। विद्यमानता। होना। भाव। स्थिति। उपस्थिति।

अस्तिकाय—[पु०] जैन दर्शनों के मतानुसार विद्यमानस्वरूप पदार्थ-विशेष। अवस्था। हालत। जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म और आकाश भेदों से अस्तिकाय पांच प्रकार का होता है।

अस्तिक्षीरा—[स्त्री०] प्रचुर दूध देने वाली गाय। अधिक दूध वाली गौ।

अस्तित्व—[पु०] सत्ता। होना। विद्यमानता। मौजूदगी।

अस्ति-नास्ति [अव्य०] कदाचित्। शायद।

अस्तु—[अव्य०] जो हो। ऐसा ही हो। खैर। भला। फिर। आगे। पीड़ा। असूया। निन्दा।

अस्तुत—[वि०] जिसकी स्तुति न की गई हो। अप्रशंसित।

अस्तुति—[स्त्री०] स्तुति का उलटा। निन्दा। अपकीर्ति। बदनामी।

अस्तेन—[वि०] जो चोर न हो। भला। साधु। ईमानदार

अस्तेय—[पु०] चोरी का अभाव। चोरी न करना। चोर कर्म का त्याग।

अस्त्यान—[पु०] निन्दा। बुराई। निरादर। तिरस्कार। भर्त्सना।

अस्त्र—[पु०] फेंककर मारा जाने वाला हथियार। बाण। कोई भी हथियार। आयुध। जिसके द्वारा कोई चीज़ फेंककर मारी जाय, धनुष। बन्दूक। दूसरे के प्रहार को बचाने का साधन—ढाल। तलवार। भाला। चीर-फाड़ की चिकित्सा करने के औज़ार।

अस्त्रकार—[वि०] हथियार बनाने वाला।

अस्त्र-चिकित्सक—[पु०] अस्त्रों द्वारा चिकित्सा करने वाला। जर्राह।

अस्त्रचिकित्सा—[स्त्री०] चीर-फाड़ का इलाज, जर्राही। आयुर्वेद का एक भाग जिसमें चीरने-फाड़ने आदि का वर्णन है।

अस्त्रजीवी—[पु०] हथियारों के द्वारा अपनी जीविका चलानेवाला। सैनिक। योद्धा।

अस्त्रधारण—[पु०] हथियार बाँधना।

अस्त्रधारी—[वि०] जो हथियार बाँधे हुए हो। हथियार बाँधनेवाला। सिपाही। योद्धा। सैनिक।

अस्त्र-लाघव—[पु०] हथियार चलाने की सफ़ाई।

अस्त्र-विद्या—[स्त्री०] हथियार चलाने की जानकारी। वह पुस्तक जिसमें हथियार चलाने की विधि वर्णित हो।

अस्त्र-वृष्टि—[स्त्री०] बाणों या गोलियों की वर्षा। अत्यन्त शीघ्रतापूर्वक बाण चलाना।

अस्त्र वेद—[पु०] हथियार चलाने की विधि बतानेवाला शास्त्र। धनुर्वेद।

अस्त्र-वैद्य—[पु०] अस्त्र-चिकित्सक। जर्राह।

अस्त्र-शस्त्र—[पु०] सब प्रकार के हथियार।

अस्त्र-शाला—[स्त्री०] हथियार रखने की जगह। शस्त्रागार। सिलहखाना।

अस्त्र-हीन—[वि०] विना हथियार का। निहत्था। जो हथियार चलाना न जानता हो।

अस्त्रागार—[पु०] देखो "अस्त्र-शाला"।

अस्त्राघात—[पु०] अस्त्र का घाव। हथियार की चोट।

अस्त्राहत—[वि०] हथियार द्वारा मारा गया।

अस्त्री—[वि०] हथियार धारण किये हुए। अस्त्रधारी। सिपाही। योद्धा। [स्त्री०] जो स्त्री न हो। स्त्री-भिन्न। स्त्री-लिङ्ग से भिन्न—पुंलिङ्ग या नपुंसक लिंग।

अस्त्रीक—[वि०] स्त्रीरहित। विना पत्नी का। जिसके स्त्री न हो।

अस्थान—[पु०] अनुपयुक्त स्थान। अनुचित जगह। खराब जगह। [अव्य०] अनुचित। अयुक्त। बेमौके।

अस्थायी—[वि०] अस्थिर। चंचल। नाशवान्। थोड़े दिनों के लिए। जो सदा न रहे।

अस्थि—[पु०] हड्डी। हाड़।

अस्थित—[वि०] चंचल। अस्थिर।

अस्थिधन्वा—[पु०] जिसका धनुष हड्डी से बना है—महादेव।

अस्थि-पञ्जर—[पु०] हड्डियों का ढाँचा। कंकाल। ठठरी।

अस्थिमाला—[स्त्री०] हड्डियों की बनी माला। हड्डियों की माला, अर्थात् हड्डियाँ मात्र। अस्थिपंजर। कंकाल। हड्डियों की कतार।

अस्थिमाली—[पु०] जिसकी माला हड्डियों की बनी हो। महादेव (हड्डियों की माला धारण करने से)।

अस्थिर—[वि०] न ठहरनेवाला। नाशवान। नापायदार। चंचल। चलायमान। अनिश्चित। अविश्वसनीय।

अस्थिरता—[स्त्री०] चंचलता। नापायदारी। डावाँडोल अवस्था।

अस्थि-सञ्चय—[पु०] शव-दाह के अनन्तर चिता में से अधजली हड्डियाँ इकट्ठी करना।

अस्थिसार—[पु०] मज्जा। चर्बी। [वि०] रक्त-मांस-रहित अस्थिमात्र अवशिष्ट शरीर। अत्यन्त दुबला-पतला व्यक्ति।

अस्थैर्य—[पु०] अस्थिरपना। अचंचलता। चुलबुलापन। नापायदारी।

अस्थूल—[वि०] जो स्थूल (मोटा) न हो। दुबला-पतला। सूक्ष्म।

अस्नाविर—[वि०] नस-नाड़ियों से रहित अर्थात् जो स्थूल शरीरधारी न हो। सूक्ष्म या कारण शरीरवाला।

अस्निग्ध—[वि०] जो चिकना न हो। स्नेहरहित। रूखा। कर्कश।

अस्पर्श—[पु०] स्पर्श का अभाव। न छूना।

अस्पर्शनीय—[वि०] न छूने योग्य। जिसका छूना वर्जित हो। अशुद्ध। नापाक।

अस्पृश्य—[वि०] अस्पर्शनीय। न छूने योग्य। अशुद्ध। नापाक।

अस्पृष्ट—[वि०] जो छूआ न गया हो। अछूता।

अस्पृह—[वि०] इच्छा न रखनेवाला। अनिच्छुक। निस्स्पृह। विरक्त। जो लालची न हो। सन्तुष्ट।

अस्फुट—[वि०] जो स्पष्ट न हो। अव्यक्त। गूढ़। जटिल।

अस्मदादि—[वि०] हम लोग।

अस्मदीय—[वि०] हमारा। हम लोगों का।

अस्मन्त—[पु०] चूल्हा। भट्ठी।

अस्मित—[वि०] विकसित। खिला हुआ। फूला हुआ।

अस्मिता—[स्त्री०] अहंभाव। आत्म-श्लाघा। अहम्मन्यता। अहंकार। मोह। द्रष्टा और दर्शन को एक रूप समझना (सांख्य)।

अस्र—[पु०] कोना। किनारा। रुधिर। केश। आँसू।

अस्रप—[पु०] रुधिर पीनेवाला। राक्षस। मत्कुण। खटमल। मूल नक्षत्र।

अस्रपा—[स्त्री०] जोंक। जलौका। राक्षसी।

अस्रि—[स्त्री०] कोना। नोक। कोटि। करोड़।

अस्रु—[पु०] नेत्रजल। आँसू।

अस्वच्छ—[पु०] जो साफ़ न हो। मैला। गन्दा। धुँधला। गदला। कलुष।

अस्वप्न—[पु०] देवता, जो कभी सोता या भूलता न हो। निद्रा का अभाव। निद्रा का नाश। [वि०] निद्रारहित। जागता हुआ।

अस्वर्ग्य—[वि०] जो स्वर्ग के लिए हितकर या सहायक न हो। जिसके करने से स्वर्ग-प्राप्ति में बाधा पड़े। बुरा काम।

अस्वस्थ—[वि०] जो स्वाभाविक अवस्था में न हो। अप्रकृतिस्थ। रोगी। बीमार।

अस्वस्थता—[स्त्री०] बीमारी। रोग। व्यथा। पीड़ा। व्याधि। निर्बलता।

अस्वाभाविक—[वि०] स्वभाव या प्रकृति के विरुद्ध। सृष्टि के प्रतिकूल। कृत्रिम। बनावटी। नकली।

अस्वास्थ्य—[पु०] स्वास्थ्य का अभाव। बीमारी।

अस्वीकार—[पु०] स्वीकार का अभाव। नामंजूरी। इनकार। नाहीं।

अस्वीकृत—[वि०] जो स्वीकार न किया हो। नामंजूर। जो ग्रहण न

किया हो। अङ्गीकार न किया गया।

अस्वैरिणी—[स्त्री०] जो स्वेच्छाचारिणी न हो। परतन्त्र।

अस्वैरी—[पु०] परतन्त्र। पराधीन।

अंह—[पु०] पाप। दुष्कर्म। अपराध। विघ्न। दुख।

अह—[अव्य०] निस्सन्देह अवश्य। हाँ। अच्छा। वाह-वाह। छी-छी। अर्थात् माना, क्लेश, फेकना रोकना आदि अर्थों में आता है।

अह—[पु०] दिन। सूर्य। विष्णु।

अहङ्कार—[पु०] अभिमान। गर्व। घमण्ड। खुदी। डींग। 'मैं हूँ' ऐसी भावना।

अहङ्कारी—[वि०] अभिमानी। घमंडी। अहङ्कार करनेवाला। मगरूर।

अहंकृति—[स्त्री०] अभिमान। गर्व। घमण्ड।

अंहति—[पु०] दान। त्याग। रोग।

अहत—[पु०] नूतन वस्त्र जो धारण करने के बाद धुला न हो। [वि०] जो मारा न गया हो। जो निराश न हुआ हो। आशान्वित। जो बिगड़ा न हो। विशुद्ध।

अहद—[पु०] प्रतिज्ञा। प्रण। वादा। सङ्कल्प। विचार। नियम। व्रत।

अहदनामा—[पु०] प्रतिज्ञापत्र।

अहन्—[पु०] दिन। दिन-रात।

अहन्ता—[स्त्री०] अहम्भावना। 'मैं' पना।

अहम्—[अव्य०] मैं। अहङ्कार। आत्मविषयक अभिमान।

अहमहमिका—[स्त्री०] "मैं सबमें बड़ा हूँ" ऐसी भावना। लाग-डाट। चढ़ा-ऊपरी। हमाहमी। प्रतिस्पर्धा। मार-काट। धर-पकड़।

अहमिति—[स्त्री०] अज्ञान। अहङ्कार।

अहमेव—[पु०] अहंकार। गर्व।

अहम्पूर्विका—[स्त्री०] युद्धादि में योद्धाओं का "मैं पहले जाऊँगा", ऐसा उत्साहपूर्वक कहना। होड़ा-होड़ी। बढ़-बढ़कर आक्रमण करना।

अहम्मति—[स्त्री०] अहङ्कार। अज्ञान। अविद्या।

अहर्गण—[पु०] दिनों का समूह। मास। महीना।

अहर्दिव—[पु०] दिन-दिन। प्रतिदिन। लगातार।

अहर्निश—[वि०] दिन-रात। हर वक्त। सदा। नित्य।

अहःपति—[पु०] दिन का स्वामी। सूर्य। आक का वृक्ष। शिव।

अहर्मणि—[पु०] दिनमणि। सूर्य। अर्क वृक्ष।

अहर्मुख—[पु०] दिन का मुख—प्रातःकाल। प्रत्यूष। सवेरा। अहंयु [वि०] अहंकारी।

अहरह—[अ०] प्रतिदिन। रोज-रोज।

अहल्या—[स्त्री०] गौतम ऋषि की पत्नी। एक अप्सरा का नाम। राजा इंद्रद्युम्न की स्त्री।

अहल्यानन्दन—[पु०] शतानन्द ऋषि।

अहंवाद—[पु०] डींग हाँकना। शेखी बघारना। साहसिकता। धृष्टता।

अहंवादी—[वि०] अत्यन्त अभिमानी। धृष्ट। साहसिक।

अहश्शेष—[पु०] दिन का अन्त। सन्ध्या। सायंकाल।

अहस्कर—[पु०] दिवाकर। सूर्य। सूरज। आक का वृक्ष।

अहस्पति—[पु०] दिन का पति, सूर्य। अर्क वृक्ष।

अहह—[अव्य०] आश्चर्य, खेद, शोक आदि अर्थों में आता है।

अहा—[अव्य०] प्रसन्नतासूचक।

अहार्य—[पु०] जो चुराया न जाय। न चुराने योग्य। (पर्वत, विद्या आदि) [वि०] जो तोड़ा न जा सके। अभेद्य।

अहि—[पु०] सर्प। साँप वृत्रासुर नामक दैत्य। सूर्य। राहु। यात्री। नीच। ठग। बादल। अश्लेषा नक्षत्र। सीसा नामक धातु। पृथिवी। गौ। नाभि। ढूँड़ी। द्यौ और पृथिवी। व्यापक। फैला हुआ। आघात करनेवाला।

अहिजित्—[पु०] अहि (कालिय नाग या वृत्रासुर) को जीतनेवाला। कृष्ण। विष्णु। इन्द्र।

अहित—[पु०] शत्रु। वैरी। हानि। अमङ्गल कुपथ्य। [वि०] अयोग्य। हानिकारक। प्रतिद्वन्द्वी। प्रतिकूल।

अहितमना—[वि०] बुरा चाहनेवाला।

अहिताहार—[पु०] हानिकर पदार्थ का भोजन।

अहितुण्डिक—[पु०] सर्प के फन से खेलनेवाला। सँपेरा।

अहितेच्छु—[वि०] अनिष्ट चाहनेवाला। अशुभ चिन्तक।

अहिद्विष् (ट्)—[पु०] गरुड़। मोर। नेवला। इन्द्र।

अहिनिर्मोक—[पु०] साँप की केंचुल।

अहिपति—[पु०] सर्पों का राजा—शेषनाग। वासुकि। बड़ा सर्प।

अहिपूतना—[स्त्री०] बालकों का रोग-विशेष।

अहिफेन—[पु०] साँप की लार। अफीम।

अहिबुध्न—[पु०] साँप की सी ग्रीवावाला, शिव। चंद्रमा।

अहिभुक्—[पु०] गरुड़। मोर। नेवला।

अहिभृत्—[पु०] सर्पों को धारण करनेवाले शिव जी।

अहिमन्यु—[वि०] सर्प के समान क्रोधी स्वभाव का। साँप की तरह झपटनेवाला।

अहिमार—[पु०] साँपों को मारनेवाली बूटी विशेष। नेवला। गरुड़। मोर। अहि (वृत्रासुर) को मारने-

वाला इन्द्र।

अहिरिपु—[पु०] सर्प या वृत्रासुर का शत्रु। गरुड़। मोर। नेवला। इन्द्र।

अहिलता—[स्त्री०] गन्धनाकुली नाम से प्रसिद्ध बेल। ताम्बूली। नागवल्ली। पान की बेल।

अहिवल्ली-[स्त्री०] देखो 'अहिलता'।

अहिंसक—[वि०] हिंसा न करनेवाला।

अहिंसा—[स्त्री०] हिंसा का अभाव। अद्रोह। किसी प्राणी को न सताना। मन, वाणी और शरीर तीनों से किसी को क्लेश न पहुँचाना।

अहिंस्य—[वि०] न मारने योग्य। अवध्य। न सताने लायक।

अहिंस्र—[वि०] हिंसा न करनेवाला। अहिंसक। हिंसाशून्य व्यवहार। [पु०] एक वृक्ष-विशेष।

अहीन—[वि०] जो कम न हो। समग्र। पूरा। परिपूर्ण। भरा हुआ। जो तुच्छ न हो। सम्पन्न। अधिकारारूढ़। जिसका अधिकार छीना न गया हो। चिरस्थायी। [पु०] एक यज्ञ-विशेष। सर्पों का स्वामी-वासुकि।

अहीरणि—[पु०] दुमुँहाँ साँप।

अहीश—[पु०] सर्पों का राजा। शेषनाग। लक्ष्मण। बलराम। ये शेषनाग के अवतार माने जाते हैं।

अहुत—[पु०] जो होम न किया गया हो। विना होम के वेदपाठ। ब्रह्मयज्ञ। ध्यान-योग। जो बुलाया न गया हो।

अहृद्य—[वि०] अनचाहा। नापसंद। न रुचनेवाला।

अहेतु, अहेतुक—[वि०] विना कारण का। निर्निमित्त। अकारण। व्यर्थ। फिजूल। साहित्य में एक अलङ्कार का नाम।

अहेर-[पु०] आखेट। मृगया। शिकार।

अहेरा—[पु०] शिकारी। आखेटक। व्याध। बहेलिया।

अहैतुक-[वि०] अकारण। विना मतलब। निष्काम। फल की इच्छा के विना। निश्छल। कपटरहित।

अहो—[अव्य०] आश्चर्य, संबोधन, शोक, धिक्कार, निन्दा, शंका, खेद, प्रशंसा, हर्ष आदि अर्थों में प्रयुक्त होता है।

अहो पुरुषिका—[स्त्री०] आत्मश्लाघा। आत्म-विश्वास। अपना भरोसा।

अहोरात्र—[पु०] दिनरात। सूर्योदय से लेकर दूसरी बार सूर्योदय तक का समय। चौबीस घंटे का समय। [अव्य०] हमेशा। सर्वदा। दिन-रात।

अहोवत—[अव्य०] दया, शोक, थकान आदि व्यक्त करने में प्रयुक्त होता है।

अह्नाय—[अव्य०] शीघ्र। जल्दी। तुरन्त।

अंह्रि—[पु०] पैर। पांव। वृक्ष की जड़।

अंह्रिप—[पु०] पैरों या जड़ के द्वारा पीने वाला—वृक्ष। पेड़।

अह्रस्व—[वि०] जो छोटा न हो। बड़ा। लम्बा।

—:※:—

आ

आ—वर्णमाला का दूसरा अक्षर, यह अव्यय भी है जो दया, वाक्य, स्मरण, समुच्चय, मेल, अङ्गीकार, थोड़ा, सीमा (वहाँ से वहाँ तक) इत्यादि अर्थ प्रकट करता है।

आकत्थन—[त्रि०] आत्मश्लाघा करनेवाला। शेखी बघारनेवाला।

आकम्प-[पु०] **आकम्पन**-[न०] काँपना।

आकम्पित—[त्रि०] काँपता हुआ। विचलित। लोभ में फँसा हुआ।

आकर—[पु०] खान। भण्डार। समुदाय। श्रेष्ठ।

आकर्ण—[त्रि०] कान तक चलाने का अभ्यास।

आकर्णन—[न०] सुनना।

आकर्ष—[पु०] पासे का खेल। खिचाव। चुम्बक। इन्द्रिय। कसौटी। धनुष।

आकर्षक—[त्रि०] खींचने वाला। मोहक। [पु०] चुम्बक।

आकर्षण—[न०] खींचना। तन्त्र-शास्त्र का एक प्रयोग।

आकर्षित—[त्रि०] खींचा हुआ।

आकलन—[न०] गिनना। इच्छा। खोजना। बाँधना। सोचना चाहना।

आकष—[पु०] कसौटी का पत्थर। जूआ इन्द्रियाँ।

आकस्मिक—[त्रि०] विना किसी कारण के होने वाला। अचानक हो

जाने वाला। जिसके होने का विचार भी न हो।

आकांक्षा—[स्त्री०] इच्छा। चाह। जानने की इच्छा। याचना। खोज। कारण।

आकांक्षित—[त्रि०] इच्छित। अभिलषित। वांछित। अपेक्षित।

आकार—[पु०] स्वरूप। आकृति। बनावट। डील-डौल। चिह्न।

आकालिक—[त्रि०] असमय उत्पन्न होने वाला। क्षणिक।

आकाश [पु० न०] खाली स्थान। अन्तरिक्ष। गगन। आसमान।

आकाशकुसुम—[पु०] आकाश का फूल। जिस तरह आकाश का फूल नहीं होता, उसी तरह असम्भव। अनहोनी बात।

आकाशगंगा—[स्त्री०] मंदाकिनी। बहुत छोटे छोटे तारों का समूह, जो आकाश में सफेद सड़क जैसा दिखाई देता है। देवपथ। देवयान।

आकाशवाणी—[स्त्री०] आकाश से होनेवाली वाणी। देवताओं की आवाज़। अदृश्य पुरुष की आवाज़।

आकाशवृत्ति—[स्त्री०] अनिश्चित जीविका। वह आमदनी जो बँधी हुई न हो।

आकीर्ण—[त्रि०] फैला हुआ। बिखेरा हुआ। फेंका हुआ। अमेय। व्याप्त।

आकुञ्चन—[त्रि०] सिकोड़ना। इकट्ठा करना।

आकुल—[त्रि०] व्याकुल। घबराया हुआ।

आकूत—[न०] अभिप्राय। आशय। मतलब।

आकृति—[स्त्री०] आकार। शकल। जाति। रूप। बनावट। मूर्ति। चेहरा। शरीर।

आकृष्ट—[त्रि०] खींचा हुआ। मुग्ध।

आक्रन्द—[पु०] ऊँचे स्वर से रोना। चिल्लाना। बुलाना। मित्र। भाई। भीषण युद्ध।

आक्रम—[पु०] आक्रमण। [न०] हमला करना। चढ़ाई करना। चोट पहुँचाने के लिए झपटना। आक्षेप। निंदा।

आक्रान्त—[त्रि०] जिस पर हमला किया गया हो। घिरा हुआ। विवश। पराजित।

आक्रीड—[पु०] खेलने या विलास करने की जगह।

आक्रीड़न—[न०] खेलना। विलास करना।

आक्रोश—[पु०] कोसना। गाली देना। निन्दा करना। शाप देना। चिल्लाना पुकारना।

आक्षिप्त—[त्रि०] जिस पर आक्षेप किया गया हो। दूषित। निन्दित। फेंका हुआ।

आक्षेप—[पु०] दोष। निन्दा। गाली। ताना। उलझाना। फेंकना। गिराना।

आखण्डल—[पु०] इन्द्र। देवराज।

आखात—[पु० न०] तालाब। झील। अकृत्रिम जलाशय।

आखु—[पु०] चूहा। चोर। सूअर। सूम।

आखेट—[पु०] मृगया। शिकार। भय।

आखेटक—[पु०] शिकार। अहेर। भय।

आखेटिक—[पु०] भयजनक। शिकारी।

आख्या—[स्त्री०] नाम। संज्ञा। कहना। व्याख्या। प्रसिद्धि।

आख्यात—[त्रि०] कहा गया। वर्णन किया गया। प्रसिद्ध। प्रकाशित।

आख्याति—[स्त्री०] प्रसिद्धि। नामवरी। शुहरत।

आख्यान—[न०] कहना। समझाना। इतिहास सुनाना। वर्णन करना।

आख्यायिका—[स्त्री०] इतिहास। कहानी। उपन्यास।

आगत—[त्रि०] आया हुआ। उपस्थित। मौजूद। [न०] आगमन। आना।

आगतस्वागत—[न०] आए हुए व्यक्ति का सत्कार करना।

आगन्तु—[त्रि०] अतिथि। नियम से न रहनेवाला। आगमनशील।

आगन्तुक—[त्रि०] अचानक आ जाने वाला। अतिथि। महमान। पाहुना।

आगम—[पु० न०] आना। आनेवाला समय। तन्त्र-शास्त्र। वेद। प्राप्ति। पैदा करना। होनेवाला। होनहार।

आगमन—[न०] आना। प्राप्ति।

आगमित—[त्रि०] पढ़ा हुआ।

आगस्—[न०] अपराध। पाप। भूल। दुराचार। दण्ड।

आगामी—[त्रि०] आगे आनेवाला। भविष्यकाल।

आगार—[न०] घर। मकान। स्थान। गुप्त जगह। खज़ाना।

आग्नेय—[त्रि०] अग्नि-सम्बन्धी। सोना। घी। लाल रंग। ब्राह्मण। बारूद। कृत्तिका नक्षत्र। कार्तिकेय। एक दिशा। अग्नि पुराण।

आग्नेयास्त्र—[पु०] वह अस्त्र जिनका प्रयोग करने पर आग बरसने लगती है।

आग्रह—[पु०] अत्यन्त प्रार्थना। अनुरोध। हठ। जिद। अनुग्रह। तत्परता। लगन।

आग्रहायण—[पु०] अगहन मास। मार्गशीर्ष।

आग्रही—[त्रि०] हठी। जिद्दी।

आघात—[पु०] चोट। सदमा। धक्का। ठेस। मारना। काटना। मारने का स्थान। कसाईखाना।

आघूर्णित—[त्रि०] हिलाया गया।

चलाया गया। घुमाया गया। चक्कराया हुआ।

आघ्राण—[न०] सूँघना। तृप्त होना।

आघ्रात—[त्रि०] सूँघा हुआ। छुआ गया। दबाया हुआ। आक्रान्त। तृप्त।

आङ्गिरस—[पु०] बृहस्पति। देवगुरु।

आचमन—[न०] पानी पीना। सन्ध्यादि धार्मिक कार्य करने के समय सीधी हथेली में थोड़ा जल लेकर मन्त्रोच्चारण पूर्वक पीना।

आचमनीय—[न०] पीने अथवा मुँह धोने के योग्य जल।

आचरण—[न०] आचार। [पु०] चरित्र। व्यवहार। चाल-चलन। अनुष्ठान। चिह्न। लक्षण। रहन-सहन। शील। शुद्धि।

आचरणीय—[त्रि०] व्यवहार योग्य। करने लायक।

आचारवान्—[पु०] पवित्रता से रहनेवाला। शुद्ध आचरणवाला।

आचार्य—[पु०] गुरु। वेद पढ़ानेवाला। यज्ञ करानेवाला।

आच्छन्न-[त्रि०]ढका हुआ। छिपा हुआ।

आच्छाद, आच्छादक—[पु०] ढकनेवाला। कपड़ा। वस्त्र। पोशाक।

आच्छादन—[न०] वस्त्र। कपड़ा। परदा। ढकना।

आच्छिन्न—[त्रि०] काटा हुआ। बलपूर्वक काटा हुआ।

आजानुबाहु—[त्रि०]जिसके हाथ घुटनों तक लम्बे हों।

आजानेय—[पु० स्त्री०],बढ़िया घोड़ा। अच्छी नसल का घोड़ा।

आजीव—[पु०] जीविका। वृत्ति। रोजी। रोजगार। धन्दा।

आजीवन—[न०] जीविका। रोजगार। धन्दा। [क्रि० वि०] जीवनपर्यन्त।

आजीविका—[स्त्री०] देखो "आजीव"।

आज्ञा—[स्त्री०] हुक्म। आदेश। शासन।

आज्ञाकारी—[त्रि०] हुक्म माननेवाला। कहने में चलनेवाला। फरमाबरदार। सेवक। दास।

आज्ञापक—[त्रि०] आज्ञा देनेवाला। मालिक। स्वामी।

आज्ञापित—[त्रि०] सूचित किया हुआ। कहा हुआ। हुक्म दिया हुआ। "आज्ञप्त"।

आज्य—[न०] घी। घृत।

आञ्जनेय—[पु०] अञ्जना का पुत्र, हनुमान्।

आटोप—[पु०] अहंकार। वेग। ज़ोर। वायु से उत्पन्न हुआ एक रोग।

आडम्बर—[पु०] बाहरी दिखावट। तड़क-भड़क। ढोंग। तम्बू। नगाड़ा। हर्ष। अहंकार। आरम्भ। वेग। बादल का गर्जना। हाथी का चिग्घाड़ना। क्रोध। आँख के रोम।

आढ्य—[त्रि०] युक्त। मिला हुआ। बड़ा धनी।

आतङ्क-[पु०] सन्ताप। भय। सन्देह। रोब। दबादबा। रोग।

आतत—[त्रि०] फैला हुआ। विस्तृत।

आततायी—[त्रि०] भयङ्कर अपराधी। हत्या करने के लिए तैयार। आग लगानेवाला। विष देनेवाला। धन चुराने या छीननेवाला। घर, स्त्री या जमीन छीन लेनेवाला। दुष्ट।

आतप—[पु०] दुःख या पीड़ा पहुँचानेवाला। धूप। गर्मी। प्रकाश।

आतपत्र, आतपवारण—[न०] आतप से बचानेवाला या आतप को दूर करनेवाला। छाता। छतरी।

आतर—[पु०] नदी आदि से पार उतारने का भाड़ा।

आतापी—[पु०] इस नाम का राक्षस। चील नामक पक्षी।

आतिथेय—[न०] जो वस्तु अतिथि के लिए हो। अतिथि-पूजा। अतिथि-सत्कार करनेवाला। [त्रि०] चतुर। कुशल।

आतिथ्य—[न०] अतिथि-सेवा। अतिथि-सत्कार। महमाननवाज़ी। महमानदारी।

आतुर—[त्रि०] पीड़ित। रोगी। दुखिया। व्याकुल। घबराया हुआ। उतावला। उत्सुक। अधीर।

आतुरता—[स्त्री०] बेचैनी। व्याकुलता। जल्दी। घबराहट।

आत्त—[त्रि०] लिया। लिया हुआ।

आत्मगत—[अव्य०] अपने मन में।

आत्मगौरव—[पु०] अपनी बड़ाई। आत्म-प्रतिष्ठा।

आत्मघात—[पु०] अपनी हत्या करना। खुदकुशी।

आत्मज—[पु०] पुत्र। लड़का।

आत्मजा—[स्त्री०] पुत्री। लड़की।

आत्मज्ञान—[पु०] जीवात्मा-परमात्मा-सम्बन्धी जानकारी। ब्रह्मज्ञान।

आत्मतत्त्व—[न०] आत्मा का स्वरूप।

आत्मतुष्टि—[स्त्री०] आत्मज्ञान द्वारा उत्पन्न हुआ आनन्द।

आत्मत्याग—[पु०] दूसरों के हित के लिए स्वार्थ-त्याग।

आत्म-प्रशंसा—[स्त्री०] अपने मुँह अपनी बड़ाई करना।

आत्मम्भरि—[त्रि०] अपना ही पेट भरनेवाला। स्वार्थी।

आत्मरक्षा—[स्त्री०] अपनी रक्षा। अपना बचाव।

आत्मविक्रय—[पु०] अपने-आप को बेच डालना। गुलाम बन जाना।

आत्मविद्या—[स्त्री०] अध्यात्म विद्या। ब्रह्मविद्या।

आत्मविस्मृति—[स्त्री०] अपने-आप को भूल जाना। अपना ध्यान न रहना।

आत्मश्लाघा—[स्त्री०] अपनी प्रशंसा। आत्म गर्व।

आत्मसात्—[अव्य०] अपने में मिला लेना। अपने अधीन कर लेना। अपने काबू में।

आत्मसमर्पण—[पु०] अपना आत्मा किसी को सौंप देना। अपना सर्वस्व दे देना।

आत्मा—[पु०] जीव। ब्रह्म। स्वरूप। यत्न। देह। मन। सूर्य। बुद्धि। अग्नि। वायु। धैर्य। स्वभाव। पुत्र।

आत्मीय—[त्रि०] अपना। कुटुम्बी। सम्बन्धी। [पु०] पुत्र।

आत्मीयता—[स्त्री०] अपनापन। घनिष्ठता। मित्रता। प्रेमसंबंध।

आत्मोत्सर्ग—[पु०] दूसरों की भलाई के लिए अपने शरीर को त्याग देना।

आत्यन्तिक—[त्रि०] अधिकता से होनेवाला।

आदत्त—[त्रि०] लिया। लिया हुआ।

आददान—[त्रि०] लेनेवाला।

आदधान—[त्रि०] धारण करनेवाला।

आदरणीय—[त्रि०] आदर के योग्य। इज्जत करनेलायक। मान्य।

आदर्श—[पु०] दर्पण। शीशा। नमूना। टीका। व्याख्या। अनुकरण करने लायक।

आदान-प्रदान—[न०] लेना-देना।

आदि—[त्रि०] पहला। मुख्य। शुरू।

आदि कवि—[पु०] ब्रह्मा। वाल्मीकि।

आदिग्ध—[त्रि०] लिपटा हुआ। लिथड़ा हुआ। आलिप्त।

आदितेय—[पु०] अदिति की सन्तान। देवता।

आदित्य—[पु०] देवता। सूर्य।

आदित्यसूनु—[पु०] कर्ण। सुग्रीव। यम। शनि। सावर्णि मनु। वैवस्वत मनु।

आदि देव—[पु०] विष्णु। शिव। ब्रह्मा।

आदि पुरुष—[पु०] हिरण्यगर्भ। नारायण। विष्णु।

आदिम—[त्रि०] शुरू का। पहला।

आदिष्ट—[त्रि०] हुक्म दिया गया। आदेश किया गया। कहा गया।

आदीनव—[पु०] क्लेश। दुःख। अपराध। दोष। जो कठिनाई से रोका जाय।

आदृत—[त्रि०] जिसका आदर किया गया हो। सम्मानित। पूजित। सावधान।

आदेय—[त्रि०] लेने योग्य।

आदेश—[पु०] आज्ञा। अनुमति। शासन। उपदेश। विधि। नियम। इत्तला। व्याकरण में एक शब्द के स्थान में होनेवाला दूसरा शब्द।

आदौ—[अव्य०] पहले। प्रथम।

आद्य—[त्रि०] पहले का। खाने योग्य वस्तु।

आद्यन्त—[त्रि०] आरम्भ से लेकर अन्त तक।

आद्या—[स्त्री०] आदि शक्ति। दुर्गा।

आद्यून—[त्रि०] आदिशून्य। जिसका आरम्भ न हो। जो सब काम छोड़कर खाने ही की चिन्ता में रहे। पेटू। भुक्खड़।

आद्योपान्त—[न०] शुरू से आखीरतक।

आधान—[न०] स्थापन। रखना। अमानत। गिरवीं।

आधार—[पु०] आश्रय। सहारा। पानी का बाँध। वृक्ष का थाँवला। व्याकरण में सातवाँ कारक। स्थान। पात्र।

आधि—[पु०] मानसिक व्यथा। चिन्ता। बड़ी आशा। आश्रय। अमानत। व्यसन।

आधिक्य—[न०] अधिकता। बहुतायत।

आधिदैविक—[त्रि०] देवताओं द्वारा उत्पन्न किया हुआ दुःख। देवता-संबंधी शास्त्र।

आधिपत्य—[न०] प्रभुत्व। अधिकार। मालिकपना। श्रेष्ठता। ऐश्वर्य।

आधिभौतिक—[त्रि०] भूतों—प्राणियों (सर्प, व्याघ्र आदि) द्वारा उत्पन्न हुआ दुःख।

आधुनिक—[त्रि०] वर्तमान समय का। आजकल का। अब का। नया।

आधेय—[त्रि०] रखने योग्य। आधार में रक्खी हुई वस्तु। गिरवी रखने योग्य।

आध्मान—[न०] वायु का रोग। फूलना। बढ़ना। धौंकनी।

आध्यात्मिक—[त्रि०] आत्मा-संबंधी। जीव-ब्रह्म-संबंधी। शोक, मोह, क्रोधादि द्वारा उत्पन्न हुआ दुःख। परमार्थ-विषयक।

आन्ध्र—[पु०] इस नाम का देश। आन्ध्र देश का रहनेवाला।

आध्वनिक—[त्रि०] यात्री। यात्रा करने में चतुर।

आनक—[पु०] नगाड़ा। मृदंग। लड़ाई का धौंसा। गरजता हुआ बादल।

आनक दुन्दुभि—[पु०] वसुदेव। कृष्ण के पिता। बड़ा नगाड़ा।

आनत—[त्रि०] विनम्र। गर्व रहित। प्रणाम करता हुआ। झुका हुआ।

आनद्ध—[न०] कसा हुआ। बँधा हुआ। मढ़ा हुआ।

आनन—[न०] मुख। मुँह। चेहरा।

आनयन—[न०] लाना। उपनयन संस्कार।

आनर्त—[पु०] नाचघर। युद्ध। जल। द्वारका के समीप का देश।

आनुकूल्य—[न०] अनुकूलपना। प्रसन्नता। सहायता।

आनुगुण्य—[न०] समता। बराबरी। दयालु होना। महरबान होना।

आनुपूर्वी—[स्त्री० न०] परिपाटी।

सिलसिला। अनुक्रम। क्रमानुसार। रीति।

आनुमानिक—[त्रि०] अनुमान से जाना गया। ख़याली। अन्दाज़न।

आनुश्राविक—[त्रि०] जिसे सदा से सुनते आये हों। वेद में विधान किया गया।

आनुषङ्गिक—[त्रि०] गौण। अप्रधान। प्रासंगिक। जो किसी मुख्य कार्य के करते हुए बीच में सहज ही सिद्ध हो जाय।

आन्त्रिक—[त्रि०] आँतों में होनेवाला। आँत सम्बन्धी।

आन्दोलन—[न०] किसी कार्य की सिद्धि के लिए बार-बार प्रयत्न करना। बार-बार विचारना। बार-बार झूलना। बार-बार चलना। काँपना। खोजना। तलाश करना।

आन्दोलित—[त्रि०] आन्दोलन किया हुआ। चलाया गया। कँपाया गया। हिलाया गया।

आन्वीक्षिकी—[स्त्री०] तर्कविद्या। तर्क-शास्त्र। अध्यात्म विद्या।

आप—[न०] जल। पाप।

आपगा—[स्त्री०] नदी।

आपण—[पु० न०] दुकान। बाज़ार।

आपणिक—[पु०] व्यापारी। दुकानदार। भाव।

आपतन—[न०] आना। प्राप्त होना। नीचे गिरना। बनाना।

आपत्काल—[पु०] विपत्ति। कुसमय। बुरे दिन।

आपत्ति—[स्त्री०] दुःख। क्लेश। संकट। आफ़त। दोषारोपण। उज्र। एतराज़। प्राप्ति। तकरार।

आपद्, आपदा—[स्त्री०] विपत्ति। आपत्ति। दुःख। संकट। विघ्न।

आपद्धर्म—[पु०] विपत्ति काल के लिए बताया गया धर्म। मुसीबतके समय आचरण करने योग्य धर्म।

आपन्न—[त्रि०] विपद्ग्रस्त। मुसीबत में फंसा हुआ। प्राप्त। पाया। हासिल।

आपन्नसत्त्वा—[स्त्री०] गर्भिणी।

आपराह्णिक—[त्रि०] दिनके तीसरे पहर में होने वाला काम।

आपात—[पु०] गिराव। आना। अचानक गिरना। गिराना। तत्काल। मार्ग। आरम्भ। अन्त।

आपाततः—[अव्य०] इस समय, अब, झट, जल्दी, अकस्मात्, अचानक, आखिरकार, पहले से इत्यादि अर्थों में प्रयुक्त होता है।

आपान—[न०] मद्य पीने के लिए इकट्ठे होकर बैठना। शराबियों की गोष्ठी। चक्र। मद्य पीनेवालों की चौकड़ी।

आपीडन—[न०] सताना। आलिङ्गन करना।

आपूरण—[न०] पूरा करना। थोड़ा भरना। पूरा भरना। तृप्त।

आपूर्ति [स्त्री०] देखो 'आपूरण'।

आपृच्छा—[स्त्री०] पूछना। आलाप। बात करना।

आपेक्षिक—[त्रि०] अपेक्षा रखने वाला। दूसरों पर निर्भर रहनेवाला।

आप्त—[त्रि०] प्राप्त। पाया। सत्य वक्ता। विश्वास करने योग्य। रागद्वेषादि से रहित। किसी बात को ठीक-ठीक जाननेवाला। ऋषि। चतुर। स्नेही। आत्मीय। अधिक।

आप्तकाम—[त्रि०] जिसकी सब इच्छाएँ पूर्ण हो गई हों। सदा तृप्त रहने वाला। पूर्ण काम।

आप्ति—[स्त्री०] सम्बन्ध। योग। लाभ। प्राप्ति।

आप्यायन—[त्रि०] तृप्ति। सन्तोष। मुटापा। वृद्धि। प्रीति। तसल्ली। खुशी। तसल्ली देना। खुश करना।

आप्यायित—[त्रि०] तृप्त। प्रसन्न। बढ़ा हुआ। आनन्दित।

आप्रपद—[अव्य०] पैरों तक पहुँचने वाला। पावों तक लटकता हुआ।

आप्लव—[पु०] स्नान। मार्जन।

आप्लावन—[न०] डुबाना। बोरना।

आप्लावित [त्रि०] डुबाया हुआ। डुबाना।

आबद्ध—[त्रि०] बँधा हुआ। मजबूत बँधा हुआ। कैद। प्रेम। मुहब्बत। आभूषण। जूआ बाँधने की रस्सी।

आविद्ध—[त्रि०] टेढ़ा। फेंका हुआ। मूर्ख।

आविल—[त्रि०] बुरा। मैला। काला। दूषित।

आभरण—[न०] भूषण। जेवर। सजावट। पालन पोषण।

आभा—[स्त्री०] शोभा। चमक। सुन्दरता। कान्ति। ज्योति। प्रतिबिम्ब। छाया।

आभार—[पु०] बोझ। गृहस्थ की जिम्मेदारी। अहसान। उपकार।

आभार-प्रदर्शन—[न०] अहसान मानना। कृतज्ञता प्रकाशित करना।

आभारी—[त्रि०] उपकार मानने वाला। कृतज्ञ। अहसानमन्द।

आभास—[पु०] प्रतिबिम्ब। चमक। झलक। संकेत। भ्रम। अभिप्राय। असली जैसा। सदृश। भूमिका। अवतरणिका।

आभिजन—[न०] जन्म-सम्बन्धी। कुल से सम्बन्ध रखने वाला। रिश्तेदार। उच्च कुल।

आभिजात्य—[न०] कुलीनता। सौन्दर्य। पाण्डताई। चतुराई।

आभिमुख्य—[न०] साम्मुख्य।

अनुकूल पना।

आभीक्ष्ण्य—[न०] बार-बार। पुनः पुनः।

आभीर—[पु०] ग्वाला। गोप। अहीर। एक देश।

आभुग्न—[त्रि०] कुछ टेढ़ा।

आभूषण—[न०] अलङ्कार। आभरण। जेवर। सजावट।

आभोग—[पु०] विस्तार। पूर्णता। किसी तरह की कमी न होना। कोशिश। गीत की समाप्ति। जहाँ कविता के अन्त में कवि का नाम आता है।

आभ्यन्तर—[त्रि०] भीतर का। मन।

आभ्युदयिक—[त्रि०] अभ्युदय-सम्बन्धी। शुभ कार्यों में किया जाने वाला श्राद्ध। सम्पदा देने वा प्रसन्नता का अवसर।

आम—[त्रि०] कच्चा। बिना पका। एक प्रकार का रोग।

आमन्त्रण—[न०] बुलावा। निमंत्रण। बुलाना। न्योता देना। संम्बोधन। पूछना।

आमन्त्रित—[त्रि०] बुलाया गया। निमन्त्रित। न्योता हुआ।

आमय—[पु०] रोग। बीमारी।

आमयावी—[त्रि०] रोगयुक्त। रोगी। बीमार।

आमरण—[क्रि० वि०] मरणकाल-पर्यन्त। जीवनभर :

आमर्श—[पु०] बोध। सलाह। अभिप्राय।

आमर्शन—[न०] स्पर्श। छूना। विचारना।

आमर्ष—[पु०] क्रोध। गुस्सा। असहनशीलता।

आमलक—[पु०] आँवला। आँवले का पेड़। आँवले का फल।

आमात्य—[पु०] मन्त्री। अमात्य।

आमाशय—[पु०] पेट के भीतर का वह स्थान जिसमें खाया हुआ अन्न जाकर इकट्ठा होता है। अपक्व स्थान। कच्ची जगह।

आमिक्षा [स्त्री०] फटा हुआ दूध। फटे दूध का ठोस भाग। छैना।

आमिष—[न०] मांस। भोग्य वस्तु। रिश्वत। लाभ। रूप। भोजन। कामदेव का गुण। लोभ। विषय। मज़मून। सुन्दरता। जँभीरी फल।

आमीलन—[न०] सिकोड़ना। मींचना। मरना।

आमुक्त—[त्रि०] छोड़ा हुआ। वस्त्र पहन हुए। सजा हुआ। कवच धारण किये हुए।

आमुख [त्रि०] नाटक की प्रस्तावना।

आमूल—[न०] जड़ के पास। जड़ पर्यन्त।

आमोद—[पु०] हर्ष। प्रसन्नता। आनन्द। दिल बहलाव। सुगन्ध।

आमोद-प्रमोद—[पु०] भोग-विलास। हँसा-खुशी।

आमोदित—[त्रि०] सुगन्धित। प्रसन्न। आनन्दित।

आम्नात—[त्रि०] बार-बार कहा गया। अभ्यास किया हुआ।

आम्नाय—[पु०] वेद। गुरु-परम्परा से प्राप्त उपदेश। अभ्यास। शिक्षा देना। बार बार कहना। कुलीन। कुल। तन्त्र-शास्त्र। आन्दोलन। आलोचन। कुल-परम्परा।

आम्रेडन—[न०] एक बात को दो बार कहना। द्विरुक्ति।

आय—[पु०] आमदनी। प्राप्ति।

आयत—[त्रि०] लम्बा-चौड़ा। विस्तृत। लम्बा। खींचा गया। बहुत कोशिश करनेवाला।

आयतन—[न०] घर। मन्दिर। ठहरने की जगह। यज्ञ-स्थान।

आयति—[स्त्री०] भविष्य काल। प्रभाव। लम्बाई। फल देने का समय। मेल। ले जाना। पहुँचाना।

आयतेक्षण—[त्रि०] बड़े नेत्रोंवाला।

आयत्त—[त्रि०] अधीन। वशीभूत। मातहत। वश में आया हुआ।

आयत्ति—[स्त्री०] अधीनता। स्नेह। सामर्थ्य। सीमा। दिन। लम्बाई। सोना। भविष्य काल। प्रभाव।

आयस—[न०] लोहा। [त्रि०] लोहे से बना हुआ। लोहे का शस्त्र आदि।

आयस्त [त्रि०] फेंका गया। दुःख दिया गया। मारा गया। पैनाया गया। तेज किया गया।

आयात—[त्रि०] आया हुआ।

आयाम—[पु०] लम्बाई। रोकना। देर तक। विस्तार। नियन्त्रण।

आयास—[पु०] परिश्रम। प्रयत्न। थकान। मन की पीड़ा। दुःख। उद्यम।

आयु—[पु० न०] जीवन-काल। उम्र। अवस्था। घी। एक चन्द्रवंशीय राजा। (नहुष का पिता)

आयुध—[न०] हथियार। अस्त्र-शस्त्र।

आयुर्वेद—[पु०] वैद्यक शास्त्र। जिसके द्वारा आयु जानी जाय।

आयुष्मान—[त्रि०] दीर्घजीवी। बड़ा उम्रवाला। चिरंजीवी। [पु०] ज्योतिष में एक योग।

आयुष्य—[स्त्री०] आयु के लिए हितकर। आयु बढ़ानेवाला। पथ्य।

आयोजन—[न०] उद्योग। परिश्रम। किसी काम में लगाना। नियुक्त करना। प्रबन्ध करना। तैयारी करना। जोड़ना। जुटाना सामग्री। सामान।

आयोधन—[न०] लड़ना। मारना। लड़ाई की जगह। युद्धक्षेत्र। अखाड़ा।

आरकूट—[पु० न०] पीतल। पीतल

का वर्तन। पीतल का जेवर।

आरक्त—[स्त्री०] लाल। थोड़ा लाल। गुलाबी।

आरण्यक—[त्रि०] जंगल का। जंगली। अध्याय। न्याय। खेलने की जगह। वेद का एक भाग।

आरति—[स्त्री०] विरक्ति। निवृत्ति। हटना। ठहरना। अलग होना। कपूर या घी का दीपक जलाकर देव-मूर्ति के ऊपर घुमाना। नीराजन।

आरब्ध—[त्रि०] शुरू किया गया। आरम्भ किया गया।

आरम्भ—[पु०] आरम्भ। शुरू। उद्योग। जल्दी। अहंकार। वध।

आरात—[अव्य०] दूर। समीप। नजदीक।

आराति—[पु०] शत्रु।

आराव—[पु०] शब्द।

आरात्रिक—[न०] आरती। नीराजन।

आराधक—[त्रि०] उपासक। पूजा करनेवाला।

आराधन—[न०] प्रसन्न करना। संतुष्ट करना। साधन। प्राप्ति। उपासना। पूजन। पाना। सेवा करना। पकाना।

आराधना—[स्त्री०] साधना। सेवा। भक्ति। शुश्रूषा।

आराध्य—[न०] उपासना करने-योग्य। सेवनीय।

आराम—[पु०] बाग। उपवन। विश्राम। सुस्ताना। सुख। स्वास्थ्य।

आरूढ़—[त्रि०] चढ़ा हुआ। सवार। दृढ़। जमा हुआ। सन्नद्ध। उतारू।

आरोग्य—[न०] रोग का न होना। नीरोगता। तन्दुरुस्ती।

आरोप—[पु०] पौधे का लगाना। लगाना। मत्थे मढ़ना। झूठी कल्पना। मान लेना।

आरोपण—[न०] स्थापन। धनुष चढ़ाना। लगाना। मिथ्याज्ञान। मत्थे मढ़ना।

आरोपित—[त्रि०]लगाया हुआ। कल्पित। स्थापित किया हुआ।

आरोह—[पु०] चढ़ना। लम्बाई। ऊँचाई। आक्रमण। अंकुर का उगना। सवार होना।

आरोहण—[न०] ऊपर चढ़ना। चढ़ने का साधन। सीढ़ी।

आरोही—[त्रि०] चढ़नेवाला। ऊपर जानेवाला। सवार।

आर्जव—[पु०] सरलता। सीधा-पन। किसी को।

आर्त—[त्रि०] दुखी। पीड़ित। अस्वस्थ। आतुर। कातर।

आर्त्तनाद—[पु०] दुःखसूचक शब्द। आर्तस्वर।

आर्थिक—[त्रि०] अर्थ-सम्बन्धी। रुपये-पैसे सम्बन्धी। अर्थ को ग्रहण करनेवाला। ज्ञानी। धनी। निशान। सत्य। प्राकृतिक।

आर्द्र—[त्रि०] गीला। मुलायम। तर। सना। [स्त्री०] आर्द्रा नामक नक्षत्र।

आर्य—[त्रि०] कुलीन। सम्मान्य। श्रेष्ठ। बड़ा। पूज्य। [पु०] स्वामी। बुद्ध। मित्र। श्रेष्ठवर्ण।

आर्या—[स्त्री०] पार्वती। सम्मान्य स्त्री। सास। दादी।

आर्यपुत्र—[पु०] श्वसुर का पुत्र, पति। गुरु का पुत्र। (नाटक में)स्वामी। भर्ता। मालिक।

आर्यमिश्र—[त्रि०] श्रेष्ठ। माननीय। नेक।

आर्यावर्त—[पु०] जहां आर्य निवास करते हैं। विन्ध्याचल और हिमालय के बीच का प्रदेश। पूर्व समुद्र से पश्चिम सागर तक का प्रान्त। पुण्य-भूमि। उत्तरीय भारत।

आर्ष—[त्रि०] ऋषियों का। ऋषियों द्वारा रचा गया। वैदिक। एक प्रकार का विवाह।

आलङ्कारिक—[त्रि०] अलंकार-सम्बन्धी। अलंकारों से युक्त। अलंकार जाननेवाला।

आलम्ब—[पु०] अवलम्ब। आश्रय। सहारा। लटकने वाली चीज़।

आलम्बन—[न०]अवलम्बन। साहित्य में विभाव-विशेष।

आलम्भ—[पु०] मारना। बध करना। छूना। मिलना। पकड़ना।

आलय—[पु०] घर। छिपने की जगह। [न०] लयपर्यन्त। मृत्युतक।

आलवाल—[न०] वृक्ष के चारों ओर बनाया गया मिट्टी का घेरा। घिरौला। बाड़।

आलस्य—[न०] कार्य करने में उत्साह न होना। [त्रि०] आलसी। अनुत्साही। पड़े-पड़े पेटपर हाथ फेरते रहनेवाला।

आलात—[न०] अङ्गारे।

आलान—[न०] हाथी बांधने का खम्भा। हाथी बाँधने की रस्सी या सांकल। हर तरह का बंधन।

आलाप—[पु०] कहना। बात-चीत करना। संगीत में स्वरों का साधन।

आलि, आली—[स्त्री०] पंक्ति। लाइन। कतार। सखी। सहेली। सन्तति। पुल। खेतों का बाँध। [पु०] भौंरा। बीछू।

आलिङ्गन—[न०] परस्पर प्रेमपूर्वक मिलना। गले लगना।

आलिम्पन—[न०] लीपना। पोतना।

आलीढ—[न०] धनुष चलानेवाले का एक विशेष आसन से बैठना। [त्रि०] खाया हुआ। चाटा हुआ। क्षत। घाव

किया हुआ।

आलु—[त्रि०] आलू। झारी। सुराही।

आलेख्य—[न०] चित्र। तसवीर। मूर्ति। नक़शा। लिखने या रंग भरने की क्रिया।

आलोक—[पु०] प्रकाश। दर्शन। देखना। बड़ाई या स्तुति करना।

आलोचन [न०] सोचना। विचारना। कर्तव्याकर्तव्य का निश्चय करना। देखना। गुण-दोष का विवेचन करना। [स्त्री०] आलोचना।

आलोचक—[पु०] आलोचना करनेवाला। विवेचक। निरीक्षक।

आलोडन—[न०] मथना। हिलाना। उलटना। पलटना। विचारना।

आवरक—[न०] ढकना। ओढ़ना। परदा। आच्छादन करनेवाली वस्तु।

आवरण—[न०] आच्छादन। ढकना। बेठन। (लपेटने का कागज या कपड़ा) परदा। ढाल। ढाँकना। छिपाना।

आवर्जित—[त्रि०] लाया गया। फेंका गया। झुकाया गया। दिया गया।

आवर्त—[पु०] पानी का भँवर। एक प्रकार के बादल। चिन्ता। विचार। घूमना। लाजवर्द नामक रत्न। बालों का चक्राकार में घुमाव।

आवर्तन—[न०] घूमना। मथना। घुमाना। हिलाना। एक पात्र से दूसरे पात्र में दुग्धादि का उलट-पलट करना। बिलौना। लौटाना।

आवर्तित—[त्रि०] लौटाया गया। गुणा किया गया। अभ्यास किया गया।

आवलि, आवली—[स्त्री०] पंक्ति। लाइन। श्रेणी। परम्परा।

आवश्यक—[त्रि०] अवश्य होने योग्य। जिसके बिना काम न चले। ज़रूरी। सापेक्ष। प्रयोजनीय।

आवसथ—[पु० न०] घर। अग्नि-गृह। अग्निहोत्र करने का स्थान। निश्चय करने की जगह। एक प्रकार का व्रत।

आवह—[त्रि०] ले जानेवाला। देनेवाला। उत्पन्न करनेवाला। [पु०] एक प्रकार का वायु।

आवास—[पु०] घर। रहने की जगह।

आवाहन—[न०] समीप लाना। बुलाना। मन्त्र द्वारा देवताओं को बुलाना। निमन्त्रण।

आविद्ध—[त्रि०] बेधा गया। छेदा गया। फेंका गया। दबाया गया। टेढ़ा। मूर्ख।

आविर्भाव—[पु०] प्रकट होना। अवतीर्ण होना। प्रादुर्भाव।

आविर्भूत—[वि०] प्रकाशित। उत्पन्न। अवतीर्ण।

आविष्कार—[पु०] किसी बात का पहले-पहल पता लगाना। कोई ऐसी वस्तु बनाना जो पहले न बनी हो। ईजाद। प्रकाश।

आविष्ट—[त्रि०] भूतादि द्वारा दबाया हुआ। भरा हुआ। आवेश में आया हुआ। दबा हुआ।

आवृत—[त्रि०] ढका हुआ। लपेटा हुआ। छिपा हुआ। घिरा हुआ। व्याप्त।

आवृत्ति—[स्त्री०] अभ्यास। बार-बार दुहराना। तह करना।

आवेग—[पु०] घबराहट। चिन्ता। दुःख। शोक। जल्दी। जोश।

आवेदन—[न०] निवेदन। प्रार्थना। अपनी स्थिति प्रकट करना।

आवेश—[पु०] अहंकार। क्रोध। झोंक। वेग। जोश। भूतादि का शरीर में प्रविष्ट होना। मृगी नामक रोग। ग्रहों का भय।

आवेष्टन—[न०] लपेटना। ढकना।

आशंका—[स्त्री०] भय। सन्देह। संकोच। त्रास। वितर्क।

आशंसा—[स्त्री०] जो वस्तु अपने पास न हो उसकी इच्छा करना। चाह। ख्वाहिश। आशा। उम्मेद।

आशंसु—[त्रि०] चाहनेवाला। चाही गई वस्तु को पाने की इच्छा रखनेवाला। उम्मेदवार।

आशय—[पु०] अभिप्राय। मतलब। इच्छा। उद्देश्य। चित्त। स्थान। आधार।

आशा—[स्त्री०] उम्मेद। बड़ी लालसा। महती आशङ्का। दिशा।

आशी, आशीः—[स्त्री०] आशीर्वाद। अपने से छोटों के लिए स्नेहपूर्वक कल्याण या मंगलसूचक वाक्य कहना। साँप के दाँत। साँप का विष।

आशीर्वाद—[पु०] मंगल-प्रार्थना। आशीर्वचन। दुआ।

आशीविष—[पु०] जिसके दाँतों में विष रहता है। साँप।

आशु—[न०] शीघ्र। जल्दी।

आशुग—[पु०] जल्दी चलनेवाला। वायु। बाण। सूर्य। (शीघ्रगामी अर्थ में त्रिलिङ्ग है।)

आशुतोष—[पु०] शीघ्र सन्तुष्ट होनेवाला। जल्द खुश हो जानेवाला। महादेव।

आश्चर्य—[न०] अचम्भा। विस्मय। ताज्जुब। अचरज। [त्रि०] विस्मयजनक।

आश्चर्यान्वित—[त्रि०] चकित। विस्मित। अचरज से युक्त। ताज्जुब में पड़ा हुआ।

आश्रम [पु०] मनुष्य-जीवन की ब्रह्मचर्य, गृहस्थ आदि चार अवस्थाओं का नाम। साधु-महात्माओं के रहने की जगह। मठ। विद्यार्थियों के रहने की जगह। छात्रावास। ऋषि-मुनियों के रहने का स्थान। तपोवन। विश्राम

करने का स्थान।

आश्रय—[पु०] सहारा। आसरा। आधार। घर। शरण। जीवन-निर्वाह का हेतु। सामीप्य। प्रबल। सन्धि-विग्रह आदि गुणों में से एक गुण।

आश्रव—[पु०] स्वीकार। क्लेश। दोष। ग्लानि।

आश्रित—[त्रि०] सहारे पर टिका हुआ। भरोसे पर रहनेवाला। अधीन। शरणागत। वशवर्ती। सेवक।

आश्रुत—[त्रि०] स्वीकृत। अङ्गीकार किया हुआ। सुना हुआ।

आश्लिष्ट—[त्रि०] आलिङ्गन किया हुआ। लगा हुआ। व्याप्त। समाप्त।

आश्लेष—[पु०] आलिङ्गन। एक ओर से मिला हुआ। कर्म-स्थान।

आश्वसित—[त्रि०] जिसे आश्वासन दिया गया हो। जिसे तसल्ली दी गई हो।

आश्वास—[पु०] **आश्वासन**—[न०] सान्त्वना। ढाढस। दिलासा। तसल्ली। धैर्य। धीरज। [न०] नित्य। निरन्तर।

आसक्त—[त्रि०] फँसा हुआ। निरत। अनुरक्त। लीन। रत। आशिक। लुब्ध। मुग्ध।

आसक्ति—[स्त्री०] अनुरक्ति। समागम। लगन। प्रेम। भोग की इच्छा।

आसङ्ग—[न०] आसक्ति। लगन। लगाव। सम्बन्ध। लगातार। नित्य। सदा।

आसत्ति—[स्त्री०] संसर्ग। मेल। लाभ। निकट। न्याय में परस्पर सम्बन्ध रखनेवाले दो पदों या शब्दों को एक जगह रखना।

आसन—[न०] बैठना। चौकी। पीढ़ा। हाथी का कन्धा। सेना का शत्रु के किले को घेर डट जाना। योग के आठ अङ्गों में से एक। बैठने का ढंग।

आसन्न—[त्रि०] समीप आया हुआ। निकटस्थ। प्राप्त। अस्त होते समय का सूर्य।

आसन्न काल—[पु०] मृत्युकाल। अन्त समय।

आसन्नमृत्यु—[पु०] मृत्यु के समीप पहुंचा हुआ। मरनहार।

आसमन्तात्—[अव्य०] चारों ओर। आस-पास।

आसमुद्र—[क्रि० वि०] समुद्रपर्यन्त। समुद्रतट तक।

आसव—[पु०] मद्य। शराब। ईख के कच्चे रस से बनी हुई शराब। सिरका।

आसादन—[न०] मिलना। प्राप्त करना। सामने जाना। पूरा करना। सम्पादन। क्रम से रखना। हमला करना।

आसादित—[त्रि०] प्राप्त। लब्ध। सम्पादित। क्रम से रक्खी हुई।

आसार [पु०] जोर से बरसना। मूसलधार वृष्टि। फैलना। सेना का चारों ओर फैलना। मित्रों का बल।

आसीन [त्रि०] बैठा हुआ।

आसुर-[त्रि०]राक्षस। राक्षस-सम्बन्धी। राक्षसों का। आठ प्रकार के विवाहों में से एक प्रकार का विवाह जो कन्या के अभिभावकों को रुपये देकर किया जाय।

आसुरी—[त्रि०] असुर सम्बन्धी। असुरों का। [स्त्री०] तीन प्रकार की चिकित्सा में से एक जिसमें छेदन-भेदन की क्रिया करनी पड़ती है। राई।

आसेक—[पु०] छिड़कना। सींचना।

आसेचन—[न०] जिसे देखते-देखते मन तृप्त न हो। अत्यन्त सुन्दर। छिड़कना। सींचना। अभिषेक। छिड़कने का बर्तन।

आसेध—[पु०] प्रतिबन्ध। रोक। एक स्थान से दूसरे स्थान पर न जाने की आज्ञा। एक प्रकार की कैद। नज़रबंद।

आस्कन्दन—[न०] आक्रमण करना। निरादर करना। युद्ध। शोषण।

आस्तर—[पु०] आस्तरण। [न०] बिछौना। आसन। हाथी की झूल।

आस्तिक—[पु०] जरत्कारु का पुत्र। [त्रि०] परलोक को माननेवाला। ईश्वर और वेदों को माननेवाला। श्रद्धावान्।

आस्तीक-[त्रि०]जरत्कारु मुनि का पुत्र।

आस्तिक्य—[न०] आस्तिकता। [स्त्री०]। आस्तिकपना।

आस्तीर्ण—[त्रि०] फैला हुआ। विस्तीर्ण।

आस्था—[स्त्री०] यत्न। आदर। श्रद्धा। प्रतिष्ठा। ध्यान। आशा। सहारा। भरोसा। स्थिति। स्थान। जगह। सभा। अपेक्षा।

आस्थान—[न०] बैठने की जगह। बैठक। सभा। सहारा। चढ़ना। यत्न। उद्योग। आराम करने की जगह।

आस्पद—[न०] प्रतिष्ठा। इज्जत। कुल। अल्ल। जाति। वंश। पद। दर्जा। अधिकार। काम। बड़प्पन। स्थान। कमरा।

आस्फाल [पु०] **आस्फालन**-[न०] चलाना। हिलाना। घिसना। रगड़ना। हाथी के कानों का हिलना। आटोप। अहंकार। प्रगल्भता।

आस्फोट—[पु०] **आस्फोटन**-[न०] हथियारों की खड़-खड़ाहट। कुश्ती लड़ते समय भुजाओं और जंघाओं पर हाथ मारना। ताल ठोंकना। काँपना।

आस्य—[न०] मुख। मुँह। [त्रि०] मुखका। मुख-सम्बन्धी। मुखमें होनेवाला।

आस्वाद—[पु०] स्वाद। रस। जायका। स्वाद लेना। चाखना।

आस्वादन—[न०] स्वाद लेना। चाखना।

आहत—[त्रि०] ताड़न किया गया।

गेराया गया। जाना हुआ। भूठ कहा हुआ। गुणा किया हुआ। [पु०] ढक्का। नगाड़ा [न०] कोरा कपड़ा।

आहरण—[न०] छीनना। चुराना। एक जगह से दूसरी जगह ले जाना। प्राप्त करना ग्रहण करना। लेना

आहव—[पु०] युद्ध। यज्ञ।

आहवनीय—[पु०] यज्ञ करने के लिए शुद्ध किया हुआ अग्नि। हवन करने योग्य अग्नि।

आहार—[पु०] हरण करना। भोजन। खाना। भोजन की सामग्री।

आहार्य—[त्रि०] आहरण योग्य। लाने लायक। अतिथि। कृत्रिम। बनावटी। नेपथ्य। तमाशा करने की जगह। खाने योग्य।

आहित—[त्रि०] स्थापन किया हुआ। रक्खा गया। धरोहर। अर्पण किया गया।

आहिताग्नि—[पु०] जिसने यज्ञ करने के लिए अग्नि-स्थापन किया हो अग्निहोत्री।

आहुति—[स्त्री०] मन्त्रोच्चारणपूर्वक अग्नि में हवि डालना। हवन करना। बुलाना। हवनीय द्रव्य की वह मात्रा जो एक बार अग्नि में डाली जाती है।

आहूत—[पु०] बुलाया हुआ। निमन्त्रित।

आहूति—[स्त्री०] आवाहन। बुलाना।

आह्निक—[न०] प्रतिदिन का काम। स्नान, सन्ध्या, भोजन आदि। [न०] समूह। ग्रन्थ का भाग। नित्य-क्रिया।

आह्लाद—[पु०] आनन्द। हर्ष। प्रसन्नता।

आह्वय—[पु०] नाम। संज्ञा।

आह्वान—[न०] बुलाना। आमन्त्रण। यज्ञादि में मन्त्रों द्वारा देवताओं को बुलाना।

—:※:—

इ

इ—वर्णमाला का तीसरा अक्षर

इ—[पु०] विष्णु का बेटा, कामदेव। [अव्य०] क्रोध में कहा गया वचन। तिरस्कार। दया। खेद। विस्मय। हैरानी। निन्दा। सम्बोधन।

इक्षु—[पु०] गन्ना। पौंड़ा।

इक्षुसार—[पु०] गन्ने का सार गुड़। खाँड़।

इक्ष्वाकु—[पु०] वैवस्वत मनु का बेटा। सूर्य वंश का पहला राजा।

इङ्गित—[न०] मनोभावों को प्रकाशित करने की चेष्टा। इच्छा। अभिप्राय। संकेत। इशारा।

इङ्गितज्ञ—[त्रि०] चतुर। इशारे को समझनेवाला।

इच्छा—[स्त्री०] अभिलाषा। चाह। मन का धर्म। आत्मा का धर्म।

इच्छु, इच्छुक—[त्रि०] चाहनेवाला।

इज्य—[पु०] देवताओं के गुरु। बृहस्पति। नारायण। परमात्मा। [त्रि०] पूजनीय। पूजा के योग्य।

इज्या—[स्त्री०] यज्ञ। दान। मिलाप। गौ। पूजा। सङ्गम। कुटिनी।

इड़ा—[स्त्री०] गौ। वाणी। भूमि। स्वर्ग। बुध की स्त्री। शरीर की एक नाड़ी।

इत—[त्रि०] स्मरण किया हुआ। पाया हुआ। गया हुआ।

इतर—[त्रि०] नीचे। भिन्न। पामर। छोटे दरजे का। दूसरा।

इतरथा—[अव्य०] अन्य प्रकार से। दूसरी तरह।

इतरेतर—[त्रि०] अन्योन्य। आपस में। परस्पर।

इतः—[अव्य०] यहाँ से। इस ओर। यहाँ। इधर। इसमें। अब से।

इतस्ततः—[अव्य०] इसमें-उसमें। इधर-उधर।

इति—[अव्य०] समाप्ति, हेतु, स्वरूप, प्रकाशन, निदर्शन, प्रकार, मन आदि, प्रत्यक्ष, परामर्श, प्रकरण, निकटता, व्यवस्था, प्रारम्भ इत्यादि अर्थों में प्रयुक्त होता है।

इतिकथा—[स्त्री०] निरर्थक वाक्य। अर्थशून्य भाषण।

इतिकर्तव्यता—[स्त्री०] अवश्य कर्तव्य, इसे करके यह करना है। ऐसा कार्य करने का क्रम। समस्त कर्तव्यों का सार।

इतिवृत्त—[न०] जीवन-चरित्र। इतिहास।

इतिहास—[पु०] पुराना वृत्तान्त। प्राचीन कथा। पुरा वृत्त।

इत्थं [अव्य०] इस प्रकार। इस रीति से। ऐसे।

इत्थम्भूत—[त्रि०] ऐसा। इस तरह का।

इन्दिरा—[स्त्री०] लक्ष्मी। कमला।

धन की देवी।

इन्दिवर, इन्दीवर—[न०] लक्ष्मी का प्यारा। नीलोत्पल। नीले रंग का कमल।

इन्दु—[पु०] चन्द्रमा। कपूर। मृगशिरा नक्षत्र।

इन्दुकान्त—[पु०] चन्द्रकान्त मणि।

इन्दुकान्ता—[स्त्री०] रात्रि।

इन्दुजा—[स्त्री] नर्मदा नदी।

इन्दुपुत्र—[पु०] चन्द्रमा का पुत्र। बुध नामक ग्रह।

इन्दुमती—[स्त्री०] पूर्णिमा। सूर्यवंशी राजा अज की पत्नी।

इन्दुरेखा, इन्दुलेखा—[स्त्री०] चन्द्रमा की कला। सोमलता। अमृता।

इन्द्र—[पु०] देवराज। देवताओं के स्वामी। परमेश्वर। द्वादश आदित्यों में से एक।

इन्द्रकील—[पु०] मन्दराचल। मन्दर नामक पर्वत।

इन्द्रकुञ्जर—[पु०] इन्द्र का हाथी। ऐरावत गज।

इन्द्रगोप—[पु०] लाल रंग का एक कीड़ा जो वर्षा में पैदा होता है।

इन्द्रजाल—[न०] इन्द्रियों को (आँख, कान आदि को) भ्रम में डाल देनेवाली कला। माया। नजरबन्दी। चतुराई। छल। मन्त्र अथवा औषधि के प्रभाव से वस्तु का स्वरूप बदल देने या 'कुछ का कुछ कर दिखाने की विद्या। बाजीगरी।

इन्द्रजालिक—[त्रि०] माया रचनेवाला छलिया। मदारी। बाजीगर।

इन्द्रजित—[पु०] इन्द्र को जीतने वाला। रावण का बेटा। मेघनाद।

इन्द्रधनु—[न०] वर्षा के समय आकाश में दिखाई देने वाला अनेक रंगों का धनुषाकार मण्डल।

इन्द्रप्रस्थ—[न०] पाण्डवों की राजधानी, दिल्ली।

इन्द्रशत्रु—[पु०] वृत्रासुर।

इन्द्रसुत—[पु०] इन्द्र का बेटा। जयन्त। अर्जुन। बाली नामक वानर।

इन्द्राणी—[स्त्री०]इन्द्र की पत्नी शची।

इन्द्रायुध—[न०] इन्द्र का हथियार। वज्र।

इन्द्रिय—[न०] ज्ञान और कर्म के साधन। पाँच ज्ञानेन्द्रिय (आँख, नाक, कान, रसना और त्वचा), पाँच कर्मेन्द्रिय (हाथ, पाँव, वाणी, पायु और उपस्थ), पाँच अन्तरिन्द्रिय (प्राण, मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार)।

इन्द्रियग्राम—[पु०] इन्द्रियों का समूह।

इन्द्रियायतन—[न०] इन्द्रियों का घर। शरीर।

इन्द्रियार्थ—[पु०] इन्द्रियों का विषय (रूप, रस,गन्ध, स्पर्श,शब्द)। गोचर।

इन्धन—[न०] जिससे अग्नि जलता है। लकड़ी। ईंधन।

इभ—[पु०] हाथी। श्रेष्ठ। आठ संख्या का सूचक।

इयत्ता—[स्त्री०] सीमा। हद। परिणाम। माप। संख्या। गिनती।

इरम्मद—[पु०] बिजली। बड़वानल।

इरा—[स्त्री०] पृथिवी। मद्य। जल। वाणी। अन्न। धैर्य। कश्यप मुनि की पत्नी।

इरावत—[पु०] मेघ। बादल। समुद्र।

इरावती—[स्त्री०] इस नाम की नदी।

इला—[स्त्री०] पृथिवी। गौ। वाणी। वैवस्वत मनु की कन्या। बुध की पत्नी।

इव—[अव्य०] समता, बराबरी, मानो, की तरह, थोड़ा आदि अर्थों में व्यवहृत होता है।

इषु—[पु०] बाण। तीर।

इषुधि—[स्त्री०] तरकस। तूणीर। बाण रखने का पात्र।

इष्ट—[त्रि०] चाहा गया। प्यारा। आदर किया गया। पूजा गया। [पु०] यज्ञ। अंडी का वृक्ष। [न०] चाह। धर्म का काम। यज्ञ आदि।

इष्टका, इष्टिका—[स्त्री०] ईंट।

इष्टापूर्त—[न०] इष्ट- अपनी भलाई के काम, जैसे अग्निहोत्र, तप, सत्य, वेद-रक्षा, अतिथि-सेवा, वैश्वदेव, आदि। पूर्त—औरों की भलाई के काम जैसे—बावड़ी, कूआँ, तालाब, बाग धर्मशाला, मन्दिर आदि बनवाना तथा अन्नदान करना।

इष्टि—[स्त्री०] यज्ञ। अभिलाषा। इच्छा। चाह। ख्वाहिश।

इष्वास—[पु०, न०] जिसके द्वारा बाण फेंके जाते हैं। धनुष।

इह—[अव्य०] इस समय, इस जगह, इस दिशा में, इस विषय में आदि अर्थों में आता है।

ई

इ—[स्त्री॰] लक्ष्मी। [पु॰] कामदेव। विष्णु। इन्द्र। [अव्य॰] दर्द, शोक, गुस्सा, अनुकम्पा, पुकारना। आदि अर्थों में आता है।

ईक्षण—[न॰] दर्शन। देखना। नेत्र। आँख।

ईति—[स्त्री॰] खेती की हानि पहुँचाने वाले छह प्रकार के उपद्रव, जैसे—अतिवृष्टि, अनावृष्टि, टीड़ी, चूहे, पक्षी, राजाओं का समीप आना अथवा युद्ध करना। बाधा। पीड़ा। दुःख।

ईदृक्ष—[त्रि॰] ऐसा। इस तरह का।

ईदृश—[त्रि॰] इस तरह का। ऐसा।

ईप्सा—[स्त्री॰] चाह। इच्छा। अभिलाषा।

ईप्सित—[त्रि॰] चाहा हुआ। अपेक्षित। जरूरी।

ईर्षा, ईर्ष्या—[स्त्री॰] दूसरे की बढ़ती न देख सकना। हसद। जलन। डाह।

ईर्षालु-ईर्ष्यालु—[त्रि॰] ईर्षा करने वाला। दूसरे की बढ़ती देख कर जलनेवाला।

ईश—[पु॰] धनी। स्वामी। मालिक। समर्थ। महादेव। राजा। परमेश्वर। एक उपनिषद्। पारा। ग्यारह की संख्या।

ईशान—[पु॰] महादेव। परमेश्वर। एकादश रुद्रों में से एक। रुद्र की आठ मूर्तियों में सूर्य की मूर्ति। शमी का वृक्ष। स्वामी। [न॰] ज्योति। [त्रि॰] ज्योतियुक्त।

ईशिता—[स्त्री॰] प्रभुत्व। [पु॰] प्रभु। स्वामी। ईश्वर। अधिपति।

ईशित्व—[न॰] आठ सिद्धियों में से एक।

ईश्वर—[पु॰] परमेश्वर। महादेव। कामदेव। स्वामी। [त्रि॰] श्रेष्ठ। शक्तिमान।

ईषत्—[अव्य॰] थोड़ा। अल्प। किंचित्। कुछ।

ईषत्कर—[पु॰] लेश। अल्प। छोटा सा। [त्रि॰] थोड़े प्रयत्न से सिद्ध होने वाला काम।

ईषदुष्ण—[पु॰] कुछ गरम। गुनगुना।

ईषदून—[त्रि॰] कुछ कम।

ईहा—[स्त्री॰] इच्छा। चाह। उद्योग। प्रयत्न। कोशिश।

ईहामृग—[पु॰] दशरूपकों में से एक। कुत्ते के बराबर एक जानवर जो हरिण को मार डालता है। भेड़िया।

ईहित—[त्रि॰] चाहा गया। खोजा गया। ढूढ़ा गया। प्रार्थना किया गया। इच्छा। चाह।

-:*:-

उ

उ—वर्णमाला का पाँचवा अक्षर।

उ—[अव्य॰] सम्बोधन। क्रोध प्रकट करना, गुस्से से बोलना, दया, आज्ञा, विस्मय, हैरानी आदि अर्थों में आता है।

उ—[पु॰] शिव। ब्रह्मा।

उक्त—[त्रि॰] कहा गया। कथित। [न॰] कथन। कहना।

उक्ति—[स्त्री॰] कहना। कथन। अनोखा कथन। चमत्कारयुक्त वाक्य।

उक्षतर—[पु॰] बड़ा बैल। बिजार।

उग्र—[त्रि॰] प्रचण्ड। उत्कट। तेज। [पु॰] महादेव। वायु की मूर्ति। इस नाम का एक राजा। क्षत्रिय से शूद्रा में उत्पन्न एक जाति विशेष। केरल देश। सूर्य। विष्णु। नक्षत्रों का समूह।

उग्रता—[स्त्री॰] तेजी। प्रचण्डता।

उग्रगन्ध—[पु॰] तेज गन्धवाला। चम्पा, चमेली। लहसुन। प्याज। हींग।

उग्रधन्वा—[पु॰] इन्द्र। शिव। [त्रि॰] जिसका धनुष बहुत तेज हो।

उग्रसेन—[पु॰] जिसकी सेना जोरदार हो। कंस का पिता। मथुरा नगरी का राजा धृतराष्ट्र का पुत्र। परीक्षित का पुत्र।

उचित—[त्रि॰] योग्य। ठीक। मुनासिब। परिचित। ग्रहण करने योग्य। अभ्यस्त। जुड़ा हुआ।

उच्च—[त्रि॰] ऊँचा। उन्नत। ऊपर। जो ऊँचा हाथ करके छुआ या लिया जा सके। श्रेष्ठ। बड़ा।

उच्चण्ड—[त्रि०] जल्दबाज़। उच्छृङ्खल। जल्दी।

उच्चतम—[त्रि०] बहुत ऊँचा। सबसे ऊँचा।

उच्चय—[पु०] पहने हुए वस्त्र की गाँठ। अण्टी। आँट। नीवी। नारा। इज़ार। बन्द। फूलों का इकट्ठा करना। ढेर। समुदाय।

उच्चरण—[न०] मुँह से शब्द निकलना।

उच्चाटन—[न०] उखाड़ना। अलग करना। नोचना। किसी के मन को कहीं से हटाना। उचकाना। तन्त्रोक्त छः अभिचारों में से एक। अनमनापन। उदासीनता। अपने देश, ग्राम आदि का पतन।

उच्चार—[पु०] मुँह से शब्द निकालना। बोलना। कहना। विष्ठा। मल।

उच्चारण—[न०] बोलना। बोलने का ढंग। तलफ़्फ़ुज़।

उच्चारित—[त्रि०] बोला गया। उच्चारण किया गया।

उच्चावच—[त्रि०] छोटा-बड़ा। भाँति-भाँति का। कई तरह का। अनेक प्रकार का।

उच्चैस्—[अव्य०] ऊँचा। ऊपर।

उच्चैःश्रवा—[पु०] ऊँचे कानवाला। समुद्र से उत्पन्न इन्द्र का वाहन, घोड़ा। जो ऊँची आवाज सुनता हो। बहरा। बधिर। कम सुननेवाला।

उच्चैर्घुष्ट—[न०] ऊँचे स्वर से घोषित किया गया। ढिंढोरा। डौंडी। ऐलान। मुनादी।

उच्छन्न—[त्रि०] दबा हुआ। छिपा हुआ। लुप्त। नष्ट।

उच्छास्त्र—[त्रि०] शास्त्र विरुद्ध। मनमाना।

उच्छिन्न—[त्रि०] कटा हुआ। खण्डित। उखाड़ा हुआ। नष्ट।

उच्छिष्ट—[न०] खाने से बचा हुआ। जूठा।

उच्छीर्षक—[न०] जिसके द्वारा शिर ऊँचा रहे। उपधान। तकिया।

उच्छून—[त्रि०] ऊँचा। बढ़ा हुआ। फूला हुआ।

उच्छृङ्खल—[त्रि०] बन्धनरहित। स्वेच्छाचारी। उद्दण्ड। कर्मविहीन। नियमरहित। अंड बंड।

उच्छेद—[पु०] उच्छेदन। [न०] उखाड़ना। तोड़ना। नष्ट करना। नाश।

उच्छ्वसित—[न०] साँस लेता हुआ। जीवित। प्रफुल्लित। विकसित।

उच्छ्वास—[पु०] भीतर जानेवाला श्वास। ऊपर खींची हुई साँस। ग्रन्थ या कहानी का भाग।

उच्छ्रित—[त्रि०] ऊपर उठाया हुआ। ऊपर किया हुआ। ऊपर बाँधा या टाँगा हुआ। बढ़ा हुआ।

उज्जयनी, उज्जयिनी—[त्रि०] मालवा देश की प्राचीन राजधानी। उज्जैन। विशाला।

उज्जिहान—[त्रि०] ऊँचा करनेवाला। ऊँचा होनेवाला।

उज्जृम्भ—[त्रि०] फूलना। विकसित होना। खिलना। फटना।

उज्ज्वल—[त्रि०] निर्मल। साफ़। चमकता हुआ। प्रकाशमान। सफ़ेद। [न०] सोना। स्वर्ण। [पु०] शृङ्गार रस।

उज्ज्वलता—[स्त्री०] निर्मलता। स्वच्छता। कान्ति। दीप्ति। चमक। सफेदी।

उञ्छन—[न०] खेत या मार्ग में बिखरे हुए अन्न के दानों का बीनना।

उटज—[पु० न०] ऋषि-मुनियों की झोपड़ी। कुटिया। पर्णशाला। गृहमात्र।

उडु—[स्त्री० न०] नक्षत्र। तारा। जल। (स्त्रीलिङ्ग में उडू भी होता है)

उडुप—[पु० न०] नक्षत्रों का स्वामी। चन्द्रमा। जल में रक्षा करनेवाला। डोंगा। छोटी नाव। किश्ती।

उडुपति—[पु०] चन्द्रमा। जल का स्वामी, वरुण।

उड्डयन—[न०] उड़ना।

उड्डीन—[न०] पक्षियों का ऊपर को उड़ना।

उत—[अव्य०] और, भी, या, तो, अथवा, ऊपर, समुच्चय, विकल्प, अत्यन्त, क्या, सन्देह, प्रश्न आदि अर्थों में व्यवहृत होता है।

उत्कट—[पु०] बहुत। तेज़। अत्यन्त। मतवाला हाथी। बाण। विकट। उग्र।

उत्कण्ठा—[स्त्री०] प्रबल इच्छा। तीव्र अभिलाषा। बड़ी उत्सुकता। इच्छित वस्तु मिलने में होने वाली देरी को सहन न करना। चाव।

उत्कण्ठित—[त्रि०] उत्कण्ठायुक्त। उत्सुक। चाव से भरा हुआ।

उत्कर—[पु०] अन्न की राशि। ढेर।

उत्कर्ष—[पु०] अच्छापन। बढ़ती। वृद्धि। उन्नति। बहुत ज़ियादा। बड़ाई। प्रशंसा।

उत्कर्षता—[स्त्री०] देखो "उत्कर्ष"।

उत्कीर्ण—[त्रि०] फैलाया हुआ। बखेरा हुआ। खोदा हुआ। छेदा हुआ।

उत्कुण—[पु०] मत्कुण। खटमल। जूँ।

उत्कृष्ट—[त्रि०] उत्तम। श्रेष्ठ। अच्छा। जुता हुआ खेत।

उत्कोच—[पु०] घूँस। रिश्वत।

उत्क्रम—[पु०] उछलना। क्रम का उल्लंघन। अक्रम। बेसिलसिले। विपरीत।

उत्क्रान्ति—[स्त्री०] क्रमशः अच्छाई और पूर्णता की ओर बढ़ना। मरना।

उत्क्रोश—[पु०] ज़ोर से चिल्लाना। ऊँचे स्वर से पुकारना।

उत्क्षिप्त—[त्रि०] ऊपर को फेंका हुआ। [पु०] धतूरे का फल।

उत्क्षेपण—[न०] पंखा। व्यजन। ऊपर को फेंकना।

उत्खात—[त्रि०] उखाड़ा हुआ।

उत्तंस—[पु०] अवतंस। कान का भूषण। कुण्डल। कर्णफूल। शिर का भूषण। शेखर। शीशफूल। चूड़ामणि।

उत्तप्त—[त्रि०] खूब तपा हुआ। सन्तप्त। दुःखी। पीड़ित। चिन्ताग्रस्त नहाया हुआ। [पु०] सूखा हुआ मांस।

उत्तम—[त्रि०] बढ़िया। श्रेष्ठ। सबसे भला।

उत्तमता—[स्त्री०] श्रेष्ठता। अच्छाई। भलाई। बढ़ियापन। खूबी।

उत्तमर्ण—[पु०] ऋण देनेवाला। साहूकार। महाजन।

उत्तमाङ्ग—[न०] मस्तक। माथा। शिर। शरीर का सबसे अच्छा भाग। मुख।

उत्तर—[न०] प्रतिवाक्य। जवाब। [पु०] विराट राजा का पुत्र। शिव। विष्णु। [त्रि०] उत्तम। श्रेष्ठ। अनन्तर। इसके पश्चात्। ऊपर। उत्तर दिशा।

उत्तरा—[स्त्री०] विराट राजा की पुत्री। अभिमन्यु की पत्नी। उत्तर दिशा। पूर्णिमा।

उत्तरक्रिया—[स्त्री०] अन्त्येष्टि क्रिया। अन्तिम क्रिया।

उत्तरङ्ग—[न०] दरवाजे के ऊपर की लकड़ी। सरदल। उत्तरंगा। [त्रि०] जिसमें तरंग उठ रही हो।

उत्तरण—[न०] नदी आदि के पार उतरना।

उत्तरतः—[अव्य०] उत्तर की ओर।

उत्तरदाता—[पु०] जिसके ऊपर काम के बनने-बिगड़ने की जिम्मेदारी हो। जवाबदेह। जिम्मेदार।

उत्तरदायित्व—[पु०] जिम्मेदारी। जवाबदेही।

उत्तरपक्ष—[पु०] शास्त्रार्थ में वादी या प्रश्नकर्ता द्वारा कही गई बात के उत्तर या समाधान में कही जाने वाली बात। उत्तर में दिये गये तर्क। कृष्णपक्ष।

उत्तराधिकारी—[त्रि०] पहले अधिकारी के मरने पर उसकी सम्पत्ति का अधिकारी बननेवाला। वारिस। दायाद।

उत्तरापथ—[पु०] उत्तर दिशा का मार्ग।

उत्तराभास—[पु०] जो वस्तुतः उत्तर न हो। उत्तर-सा जान पड़े। झूठा जवाब। अंडबंड उत्तर।

उत्तरायण—[न०] सूर्य का उत्तर दिशा की ओर जाने का समय। जिस समय सूर्य मकर रेखा से लेकर कर्क रेखा तक बराबर उत्तर की ओर बढ़ता रहता है, वह उत्तरायण काल कहाता है। माघ से आषाढ़ तक छः मास सूर्य उत्तरायण होते हैं।

उत्तराशा—[स्त्री०] उत्तर दिशा।

उत्तरार्द्ध—[पु०] पिछला आधा भाग।

उत्तरासङ्ग—[पु०] बिस्तर के ऊपर बिछाया जानेवाला कपड़ा। चादर। दुपट्टा। चाँदनी।

उत्तरीय—[न०] शरीर के ऊपरी भाग में धारण किया जानेवाला वस्त्र। दुपट्टा। चादर।

उत्तरोत्तर—[त्रि०] आगे-आगे। क्रमशः। लगातार। बराबर।

उत्तंस—[पु०] कर्ण-भूषण। शिरोभूषण। कुण्डल। कँलगी। तुर्रा।

उत्तान—[त्रि०] ऊपर मुँह करके सोया हुआ। चित्त। सीधा। जिसकी गहराई या लम्बाई-चौड़ाई कम हो गई हो।

उत्तानपाद—[पु०] स्वायंभुव मनु का पुत्र। ध्रुव का पिता। एक राजा।

उत्ताप—[पु०] गर्मी। सन्ताप। कष्ट। वेदना। दुःख। शोक। क्षोभ।

उत्ताल—[त्रि०] उत्कट। श्रेष्ठ। दुःसाध्य। भयंकर। ऊँचा। मजबूत। भयानक। जल्दी। प्रतिष्ठित। इज्ज़तदार। [पु०] बन्दर।

उत्तीर्ण—[त्रि०] पार गया हुआ। मुक्त। छूट गया। पास हो गया।

उत्तुङ्ग—[त्रि०] बहुत ऊँचा।

उत्तेजक—[त्रि०] उकसानेवाला। उभाड़नेवाला। प्रोत्साहन देनेवाला। वेगों को तीव्र करनेवाला।

उत्तेजन—[न०] **उत्तेजना**—[स्त्री०] प्रोत्साहन। बढ़ावा। उकसाना। उभाड़ना। वेगों को तीव्र करना। चमकाना। तेज करना। प्रेरणा।

उत्तोलन—[न०] ऊपर उठाना। ऊँचा करना। तानना। तोलना।

उत्थान—[न०] ऊपर उठना। खड़े होना। ऊँचे उठने की कोशिश करना। उन्नति। सेना। पुरुषार्थ। उद्यम। पुस्तक। तरक्की। प्रसन्नता। शरीर की वृद्धि। उठना।

उत्थापन—[न०] उठाना। जगाना।

उत्थित—[त्रि०] उठा हुआ। सावधान। तैयार। उत्पन्न।

उत्पतन—[न०] ऊपर को जाना। उड़ना। उत्पत्ति।

उत्पत्ति—[स्त्री०] उत्पन्न होना। पैदा होना। जन्म। सृष्टि। आरम्भ। शुरू। जीविका।

उत्पथ—[पु०] कुमार्ग। बुरा रास्ता।

उत्पन्न—[त्रि०] जन्मा हुआ। पैदा हुआ।

उत्पल—[न०] कमल। नीला कमल बिना मांस का।

उत्पाटन—[न०] उखाड़ना।

उत्पाटित—[त्रि०] उखाड़ा हुआ। उत्खात। उन्मूलित।

उत्पात—[पु०] उपद्रव। अरिष्ट। अशुभ सूचक चिह्न। कूदना। लांघना। उन्नति। वृद्धि। उत्पत्ति। आफत। अशांति। हलचल। ऊधम। दंगा।

उत्पादक—[त्रि०] पैदा करनेवाला। जनक। पिता। [न०] आदि कारण। [पु०] ऊपर को पाँववाला। शरभ नामक जानवर। (इसके चार पैर ऊपर की पीठ पर होते हैं)

उत्पादन—[न०] पैदा करना। उत्पन्न करना।

उत्पीड़न—[न०] सताना। जुल्म करना। नकलीफ देना। दबाना।

उत्प्रेक्षा—[स्त्री०] असावधानी। उपेक्षा। लापरवाही। समानता। साहित्य में एक अलङ्कार।

उत्प्लवन—[न०] उल्लंघन। उछलना। कूदना। पानी में कूद कर तैरना।

उत्फुल्ल—[त्रि०] खिला हुआ। विकसित। प्रसन्न। फूला हुआ। फैला हुआ। चित्त।

उत्स—[पु०] पर्वत आदि से बहते हुए पानी के इकट्ठे होने की जगह। झरना। निर्झर। बहता हुआ पानी।

उत्सङ्ग—[पु०] गोद। क्रोड़। पर्वत के ऊपर का भाग। मकान का ऊपरी हिस्सा। भीतर की जगह। बाहर का हिस्सा। आलिङ्गन। सङ्गम। विवाह। सृजन। [त्रि०] निर्लिप्त। विरक्त।

उत्सन्न—[त्रि०] नष्ट होनेवाला। जीर्ण। पुराना।

उत्सर्ग—[पु०] त्याग। दान। छोड़ना। सामान्य विधि। एक प्रकार का वैदिक कर्म।

उत्सर्पण—[न०] लांघना। छोड़कर आगे जाना। ऊपर चढ़ना।

उत्सव—[पु०] आनन्द उत्पन्न करने वाला काम। मंगल कार्य। धूम-धाम। त्योहार। पर्व। जलसा। उछाह। राग। उतावलापन। उन्नति। अभ्युदय। कोप

उत्सादन—[न०] अलग करना। नष्ट करना। उखाड़ना। उबटन लगाना। लेप करना। सुगन्धित वस्तुओं से स्नान करना। मैल साफ करना। खेत में दो बार हल चलाना। बटना। मलना।

उत्सारण—[न०] दूर करना। चलाना। निकालना। हिलाना। एक जगह से दूसरी जगह ले जाना।

उत्साह—[पु०] उमंग। हुलास। उछाह। जोश। हौसला। उद्यम काम करने की पूरी कोशिश। सुख। इच्छा। वीर रस का स्थायी भाव।

उत्सुक—[त्रि०] इष्ट वस्तु मिलने की उत्कट चाहवाला। उत्कंठित। अत्यन्त इच्छुक। अभिलषित वस्तु पाने के लिए उद्योग में तत्पर।

उत्सुकता—[स्त्री०] उत्कण्ठा। उत्कट इच्छा। प्रबल चाहना।

उत्सृष्ट—[त्रि०] छोड़ा हुआ। दिया हुआ। नीच।

उत्सेक—[पु०] अहंकार। जियादती। वृद्धि। ऊपर छिड़कना।

उत्सेध—[पु०] ऊँचाई। शरीर। लम्बा। ऊँचा।

उदक—[न०] जल। पानी।

उदग्र—[त्रि०] ऊँचा। उन्नत। विशाल। बड़ा। भयंकर। प्रचण्ड। उदात्त।

उदधि—[पु०] समुद्र। घड़ा। बादल।

उदन्त—[पु०] बात। वृत्तान्त। समाचार। साधु।

उदन्वान—[पु०] समुद्र।

उदपान—[पु० न०] पशुओं के पानी पीने की जगह। प्याऊ। हौदी। बच्चा। गढ़ा। जलपान।

उदय—[पु०] ऊपर आना। प्रकट होना। निकलना। उत्कर्ष। वृद्धि। उठना। ऊँचा होना। चमकना। उन्नति। लाभ। उदयाचल। पूर्व दिशा का पहाड़।

उदयन—[न०] उदय। उठना। [पु०] अगस्त्य मुनि। उदयनाचार्य। (वासवदत्ता आदि ग्रन्थों के रचयिता)

उदर—[न०] पेट। नाभि और स्तनों के बीच का भाग। युद्ध। लड़ाई। [पु०] पेट का रोग।

उदरपिशाच—[त्रि०] जो पेट भरने में पिशाच की तरह हो। अनाप-शनाप खानेवाला। सब कुछ खानेवाला। सबका खानेवाला।

उदरम्भरि—[त्रि०] अपना ही पेट भरने वाला। पेटू।

उदरावर्त—[पु०]नाभि। नाफ। टूंडी।

उदरिणी—[स्त्री०] गर्भवती। गर्भिणी।

उदरिल—[त्रि०] बड़े पेटवाला। बड़ी तोंदवाला। तुन्दिल।

उदर्क—[पु०] भविष्य। आगे मिलनेवाला फल। नतीजा। परिणाम।

उदर्चिस्—[पु०] जिसकी लपट ऊपर को जाती है। अग्नि। उत्कृष्ट शोभावाला। कामदेव। विष्णु। शिव। [त्रि०] जिससे प्रभा का उद्गम होता है। सूर्य।

उदात्त—[त्रि०] दयावान्। दानी। उदार। श्रेष्ठ। बड़ा। समर्थ। मनोहर। ऊँचे स्वर से उच्चारण किया गया। [पु०] ऊँचा स्वर। ऊँचा। अच्छा। चमकनेवाला। बड़ा बाजा। साहित्य में एक अलंकार।

उदान—[पु०] कण्ठ में रहनेवाला वायु जो डकार या छींक लाता है। नाभि। एक प्रकार का साँप।

उदार—[त्रि०] दानशील। श्रेष्ठ।

सरल हृदयवाला। सीधा। सच्चा। चतुर। गम्भीर। सारयुक्त। असाधारण। खुले-दिल। फय्याज़।

उदारचरित—[त्रि०] अच्छे चरित्र-वाला। अच्छे आचरणवाला।

उदारचेता—[त्रि०] जिसका चित्त उदार हो। विशालहृदय।

उदारता—[स्त्री०] दानशीलता। फ़य्याजी।

उदास, उदासीन—[त्रि०] जिसका मन किसी कार्य में न लगता हो। विरक्त। निरपेक्ष। तटस्थ। उपेक्षा रखनेवाला। रागद्वेष-रहित रूखा। खिन्न। अनमना। दुःखी।

उदाहरण—[न०] उदाहार। [पु०] दृष्टान्त। मिसाल। कथा-प्रसङ्ग। कथन।

उदाहृत—[त्रि०] दृष्टान्तरूप में उपस्थित किया गया। मिसाल के तौर पर पेश किया गया कहा गया।

उदित—[त्रि०] कहा गया। उठा। बढ़ा। निकला। उज्ज्वल। स्वच्छ। प्रसन्न प्रफुल्ल। उत्कर्ष को प्राप्त हुआ।

उदीची—[स्त्री०] उत्तर दिशा।

उदीचीन—[त्रि०] उत्तर दिशा में उत्पन्न हुआ। उत्तर का।

उदीच्य—[त्रि०] उत्तर का। उत्तर में होनेवाला। उत्तर काल (भविष्य) में होनेवाला।

उदीरण—[त्रि०] कहना। उच्चारण करना। बोलना। भेजना। फेंकना।

उदीर्ण—[त्रि०] तीव्र। उत्तेजित। उद्धत। उदार। महान। बड़ा। श्रेष्ठ। विष्णु।

उदुम्बर—[पु०] गूलर का वृक्ष। दरवाजे की चौखट का निचला भाग। देहली। नपुंसक। एक प्रकार का कोढ़। [न०] ताम्र। ताँबा।

उदूढ़—[त्रि०] विवाहित। उठाया हुआ। धारण किया हुआ। स्थूल। मोटा।

उद्गम—[पु०] उदय। आविर्भाव। ऊपर उठना। निकलना। उगना।

उद्गाता—[पु०] साम गायन करने-वाला। सामवेदी ब्राह्मण।

उद्गार—[पु०] डकार। उबाल। उफान। वमन। मुखमें से किसी पदार्थ को बाहर फेंकना। शब्द। टपकना। चूना। मनमें घुमड़ते हुए विचारों को कह डालना।

उद्गिरण—[न०] वमन।

उद्घाटन—[न०] खोलना। उघाड़ना। प्रकट करना। कूएँ से पानी खींचने का साधन। रुकावट दूर करना। (इसी अर्थ में 'उद्घारक' भी होता है)

उद्घात—[पु०] आरम्भ। शस्त्र। ग्रन्थ के हिस्से। ठोकर। आघात। धक्का। ऊँचा। मुद्गर। पैर का फिसलना।

उद्दण्ड—[त्रि०] जिसे दण्ड का भय न हो, अक्खड़। उद्धत। प्रचण्ड।

उद्दाम—[त्रि०] बन्धनरहित। स्वतन्त्र। स्वेच्छाचारी। निरंकुश। उद्दण्ड। [पु०] वरुण।

उद्दिष्ट—[त्रि०] उपदेश किया गया। चाहा गया। इच्छित। दिखाया हुआ।

उद्दीपक—[त्रि०] उभाड़नेवाला। भड़कानेवाला। तेज करनेवाला। उत्तेजित करनेवाला।

उद्दीपन—[न०] उभाड़ना। भड़काना। बढ़ाना। उत्तेजित करना। जगाना। चमकाना। प्रकाशन।

उद्दीप्त—[त्रि०] प्रकाशित।

उद्देश—[पु०] खोजना। तलाश करना। कहना। विवरण। स्थान। अभिलाषा। चाह। मंशा। कारण। हेतु। निशान। नामपर। संक्षेप। लिये। संकेत। उदाहरण।

उद्देश्य—[त्रि०] लक्ष्य। वह वस्तु जिस पर ध्यान रखकर कोई कार्य किया जाय। इष्ट। मतलब। मंशा। प्रयोजन। चाहा हुआ। मन में निश्चय किया हुआ।

उद्धत—[त्रि०] अविनीत। उद्दण्ड। अहंकारी। ऊपर फेंका हुआ। चोट खाया हुआ। हठी। क्षुब्ध। घना। बिना विचारे बोलनेवाला। बदतमीज़। बहशी। उजड्ड। [पु०] पहलवान। राजमल्ल।

उद्धरण—[न०] दुःख अथवा व्यसन से मुक्त करना। छुटकारा। कर्ज उतारना। उखाड़ना। ऊपर उठना। किसी लेखांश अथवा पद्य को दूसरे लेख में देना।

उद्धर्ष—[न० पु०] उत्सव। त्यौहार। प्रसन्नता। खुशी।

उद्धर्षण—[न०] रोमाञ्च होना। रोओं का खड़े होना।

उद्धव—[पु०] यज्ञ का अग्नि। उत्सव। कृष्ण का सखा।

उद्धार—[पु०] ऊपर उठाना। छुटकारा। बचाना। उबारना। बाहर निकालना। लड़ाई में लूटा या जीता हुआ सामान। निस्तार। उन्नति। दुरुस्ती। कर्ज़ से छुटकारा। उधार—बिना ब्याज का कर्ज़। अंश। तात्पर्य।

उद्धृत—[त्रि०] कँपाया हुआ। उठाया हुआ। ऊपर फेंका हुआ।

उद्धृत—[त्रि०] दूसरी जगह से ज्यों-का-त्यों लिया हुआ। ऊपर उठाया हुआ। उछाला गया। छुड़ाया गया। उबारा गया। पृथक् किया गया। नष्ट किया गया। रक्षा किया हुआ।

उद्बाहु—[त्रि०] हाथ ऊपर को किये हुए।

उद्बुद्ध—[त्रि०] जागा हुआ। सचेत।

फूला हुआ । खिला हुआ ।

उद्बोध—[पु०] थोड़ा ज्ञान । जागना । सचेत होना । स्मरण । याददाश्त ।

उद्बोधक—[त्रि०] बोध करानेवाला । चेतानेवाला । जगानेवाला । सूचित करनेवाला । उत्तेजित करनेवाला ।

उद्बोधन—[न०] चेताना । सावधान करना । जगाना । बोध कराना । उत्तेजित करना ।

उद्भट—[पु०] कछुआ । सूर्य । सूप । अनाज । [त्रि०] उदाराशय । श्रेष्ठ । महात्मा । प्रसिद्ध । प्रचंड ।

उद्भव—[पु०] उत्पत्ति । वृद्धि । बढ़ती । उदारता ।

उद्भावना—[स्त्री०] कल्पना । मन की उपज । उत्पत्ति ।

उद्भास—[पु०] ज्ञान । हृदय में किसी बात का उदय होना । प्रकाश । आभा ।

उद्भासित—[त्रि०] विदित । प्रकाशित । उत्तेजित ।

उद्भिज, उद्भिज्ज, उद्भिद्—[त्रि०] पृथिवी को भेदकर पैदा होनेवाले तरु, लता, गुल्म, वल्ली, घास, मेंढक, इन्द्रगोप आदि ।

उद्भूत—[त्रि०] उत्पन्न । पैदा हुआ । प्रकट । जिसे आँख से देख सकें ऐसा । प्रत्यक्ष ।

उद्भेद—[पु०] उत्पन्न होना । विकसित होना । प्रकट होना । रोमांच होना । फुरना ।

उद्भेदन—[पु०] तोड़ना । फोड़ना । छेदकर पार जाना । फोड़कर निकलना ।

उद्भ्रम—[पु०] उद्वेग । व्याकुलता । घबराहट । भूल । फिकर । घूमना ।

उद्भ्रान्त—[न०] तलवार का घुमाना । घूमता हुआ । चक्कर काटता हुआ । भूला-भटका । घबराया हुआ । चकित । भौचक्का ।

उद्यत—[त्रि०] तैयार । उठाया हुआ । तत्पर । मुस्तैद । लगा हुआ ।

उद्यम—[पु०] उद्योग । परिश्रम । उत्साह । दिलेरी । मेहनत । कोशिश । प्रयास । प्रयत्न । काम-धन्धा । रोजगार ।

उद्यान—[न०] बाग । सैर करने की जगह । चौक । जाना । घूमना । सैर करना । प्रयोजन ।

उद्यापन—[न०] व्रत की समाप्ति पर किया जाने वाला कार्य ।

उद्युक्त—[त्रि०] प्रवृत्त । लगा हुआ । तत्पर । उत्साहित ।

उद्योग—[पु०] प्रयत्न । चेष्टा । कोशिश । उद्यम । उत्साह । व्यापार । धंधा । मेहनत ।

उद्योगी—[त्रि०] मेहनती । प्रयत्नशील । उद्यमी ।

उद्योत—[पु०] आलोक । ज्योति । प्रकाश । चमक । झलक ।

उद्रेक—[पु०] वृद्धि । बढ़ती । प्रारम्भ । शुरू ।

उद्वर्त—[त्रि०] अधिक । पुष्कल । [पु०] अतिरिक्त । बचा हुआ ।

उद्वर्तन—[न०] उबटन । लेपन । चन्दन लगाना । उछलना । पिसना । उठना । उत्कर्ष ।

उद्वहन—[न०] ऊपर ले जाना । खींचना । ले चलना । उठना । विवाह । मनोव्यथा ।

उद्वासन—[न०] मारना । विदा करना । छोड़ना । भगाना । खदेड़ना । नष्ट करना । उजाड़ना ।

उद्वाह—[पु०] विवाह । शादी ।

उद्वाहन—[न०] विवाह । ऊपर ले जाना । उठाना । दो बार जोता हुआ खेत ।

उद्विग्न—[त्रि०] घबराया हुआ । आकुल । व्यग्र । उत्कण्ठित ।

उद्वृत्त—[त्रि०] जिसका चाल-चलन अच्छा न हो । दुराचारी । ऊपर फेंका गया । ऊपर उठाया गया । खाकर छोड़ा हुआ । कै किया हुआ ।

उद्वेग—[पु०] व्याकुलता । घबराहट । वियोग से उत्पन्न हुआ दुःख । डर । चमत्कार । ऊपर जाना । [त्रि०] जिसमें से वेग जाता रहा हो । निश्चल । जो हिले नहीं । शीघ्रगामी ।

उद्वेजन—[न०] उद्वेग । मनोव्यथा ।

उद्वेल—[त्रि०] जो मर्यादा को लाघ जाय । किनारा से बाहर हो जाय ।

उद्वेष्टन—[न०] घेरा । बन्धन । जुर्राब । दलाने । पगड़ी । साफा । [त्रि०] बन्धन से मुक्त । खुला हुआ ।

उन्दरु, उन्दुर, उन्दुरु—[पु०] चूहा । मूसा ।

उन्नत—[त्रि०] बढ़ा हुआ । ऊँचा उठा हुआ । उत्तुङ्ग । समृद्ध । श्रेष्ठ । ऊँचा । महान । बड़ा ।

उन्नति—[स्त्री०] ऊँचाई । वृद्धि । समृद्धि । तरक्की । बढ़ती । उदय । गरुड़ की स्त्री ।

उन्नतोदर—[पु०] जो बीच में से ऊपर को उठा हुआ हो । जिसका पेट उभरा हुआ हो ।

उन्नयन—[न०] ऊपर ले जाना । उठाना । उन्नत बनाना । अनुमान । उन्नति । तर्क । दलील ।

उन्नायक—[त्रि०] ऊपर ले जानेवाला । उन्नत करनेवाला । बढ़ानेवाला ।

उन्निद्र—[त्रि०] जिसकी नींद जाती रही हो । जागता हुआ । खिला हुआ । एक प्रकार का रोग जिसमें नींद नहीं आती ।

उन्मत्त—[त्रि०] पागल । उन्मादयुक्त । मतवाला । बेसुध । बावला । [पु०] धतूरा ।

उन्मन—[त्रि०] जिसका मन उचटा हुआ हो । अनमना । जिसका मन कहीं दूसरी जगह लगा हो । उत्कण्ठित ।

उन्माद—[पु०] पागलपन। वायुजनित रोग। चित्त विभ्रम। [त्रि०] पागल।

उन्मार्ग—[पु०] कुमार्ग। बुरा रास्ता। उलटा रास्ता। बुरा ढंग।

उन्मिषित—[त्रि०] फूला हुआ। खिला हुआ। खुली आँखवाला।

उन्मीलन—[न०] आँख खोलना। विकसित होना। खिलना।

उन्मुख—[त्रि०] उद्यत। तैयार। उत्सुक। ऊपर मुँह उठाए हुए। ऊपर को देखता हुआ।

उन्मूलन—[न०] उत्पाटन। उखाड़ना। नष्ट करना।

उन्मेष—[न०] आँख का खोलना। विकास। थोड़ा प्रकाश। खिलना।

उन्मोचन—[न०] खोलना। छोड़ना। मुक्ति।

उप—[अव्य०] समीपता, अधिकता, कमी, बराबरी, पूजा, सामर्थ्य, आरम्भ, आश्चर्य, दान, मारना, पीछे होना आदि अर्थों में आता है।

उपकण्ठ—[त्रि०] समीप। निकट। गले के पास। [न०] ग्राम के समीप।

उपकरण—[न०] किसी कार्य की सहायक चीजें। सामग्री। जैसे, भोजन में मसाले। पूजा में धूप, दीप, पुष्पादि। राजा के लिए छत्र, चँवर आदि।

उपकर्ता—[त्रि०] भलाई करनेवाला। हित साधन करनेवाला। उपकारक।

उपकार—[पु०] दूसरों की भलाई करना। नेकी करना। लाभ पहुँचाना। फैले हुए पुष्प आदि।

उपकारिका—[स्त्री०] उपकार करनेवाली। राजा का घर। कपड़े का बना हुआ घर। तम्बू। खेमा। पट-भवन। कुटिया।

उपकार्या—[स्त्री०] उपकार के योग्य। राजगृह। पट-भवन। डेरा। तम्बू। कुटिया।

उपकृत—[त्रि०] जिसके साथ उपकार किया गया हो। उपकार को माननेवाला। कृतज्ञ।

उपकृति—[स्त्री०] उपकार।

उपक्रम—[पु०] कार्यारंभ करने से पहले की तैयारी। प्रारम्भ। चिकित्सा। पराक्रम। हिकमत। भागना।

उपक्रमणिका—[स्त्री०] ग्रन्थ के आरम्भ में दिया हुआ ग्रन्थ का परिचय।

उपक्रोश—[पु०] निन्दा। एक कोस के लगभग। [त्रि०] घुड़कना। झिड़कना।

उपगत—[त्रि०] प्राप्त। उपस्थित। स्वीकृत। जाना हुआ। माना गया। पहुँचा। मिला।

उपगम—[पु०] पास जाना। स्वीकार। परिचय

उपगूहन—[न०] आलिङ्गन। मिलना। पकड़ना। ग्रहण करना।

उपग्रह—[पु०] जेलखाना। गिरफ्तारी। कैद। बन्धन। ग्रहों के आस-पास घूमनेवाला छोटा ग्रह। अनुकूल। मददगार।

उपग्राह्य—[पु० न०] भेंट। नजराना। उपायन। उपदा। अनुग्रह करने योग्य।

उपघात—[पु०] रोग। विनाश। अपकार। चोट। इन्द्रियों का अपने काम करने में असमर्थ हो जाना। अशक्तता। स्मृति-शास्त्र में पाँच पातकों का समूह।

उपचक्षु—[न०] दिव्य चक्षु। चश्मा। उपनेत्र।

उपचय—[पु०] वृद्धि। बढ़ती। उन्नति। संचय। जमा करना। ज्योतिष में लग्न से तीसरा, छठा, दसवाँ और ग्यारहवाँ स्थान।

उपचर्या—[स्त्री०] सेवा। चिकित्सा। उपचार। तीमारदारी।

उपचार—[पु०] चिकित्सा। इलाज। सेवा। तीमारदारी। खुशामद। चापलूसी। घूस। रिश्वत। धर्मानुष्ठान। पूजा के सोलह अंग। षोडशोपचार।

उपचारक—[त्रि०] उपचार करने वाला। चिकित्सक। तीमारदार। चापलूस। खुशामदी।

उपचित—[त्रि०] बढ़ा हुआ। इकट्ठा किया हुआ। समृद्ध। भरा हुआ।

उपजाप—[पु०] अलग होना। भिन्नता। विच्छेद। धीरे-धीरे जाप करना।

उपजीविका—[स्त्री०] पेट पालन का साधन। जीवन-निर्वाह का सहारा। जीविका। रोज़ी। गुजारा।

उपजीवन—[न०] अन्न। जीवन का सहारा।

उपजीवी—[त्रि०] सहारे से जीने वाला। आश्रित। नौकर।

उपढौकन—[न०] भेंट। घूस। रिश्वत। इनाम। उपायन। उपदा। उपहार।

उपताप—[पु०] रोग। पीड़ा। दुःख। अशुभ। जल्दी। गर्मी। [त्रि०] कष्ट देनेवाला।

उपत्यका—[स्त्री०] पहाड़ के निकट की भूमि। तराई।

उपदंश—[पु०] मद्यपान के साथ अच्छी लगने वाली खाने की चीजें-गजक, चाट। डंक मारना। दंशन। एक प्रकार का रोग (गरमी, आतशक, फिरंग)।

उपदा—[स्त्री०] इनाम भेंट। रिश्वत।

उपदिष्ट—[त्रि०] जिसे उपदेश दिया गया हो। बताया हुआ। जताया हुआ। [न०] उपदेश।

उपदेश—[पु०] मन्त्र देना। दीक्षा

देना। भलाई की बात कहना। सिखाना। पढ़ाना। सीख। नसीहत।

उपदेशक—[पु०] उपदेष्टा। [त्रि०] उपदेश देनेवाला। शिक्षक। गुरु।

उपद्रव—[पु०] उत्पात। ऊधम। हलचल। विप्लव। लड़ाई-झगड़ा। उत्पात। भूकम्प आदि। प्रधान रोगके साथ उत्पन्न हो जानेवाले दूसरे विकार।

उपधा—[स्त्री०] छल। कपट। व्याकरण में अन्तिम अक्षर से पहला वर्ण।

उपधान—[न०] सिरहाना। तकिया। गेंडुवा। धार। विष। व्रत।

उपनय—[पु०] समीप ले जाना। बालक को पढ़ाने के लिए गुरु के समीप ले जाना। उपनयन संस्कार।

उपनयन—[न०] यज्ञोपवीत धारण-संस्कार। जिस क्रिया द्वारा बालक पढ़ने के लिए आचार्य के पास ले जाया जाता है। उपनय।

उपनाम—[पु०] दूसरा नाम। तखल्लुस।

उपनिधि—[पु०] धरोहर। अमानत। थाती।

उपनिविष्ट—[त्रि०] दूसरी जगह से आकर बसा हुआ।

उपनिवेश—[पु०] एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर बसना। दूसरे स्थान से आकर बसे हुए लोगों की बस्ती।

उपनिषद्—[स्त्री०] जिसके द्वारा ब्रह्म के निकट बैठा जाय। ब्रह्म-ज्ञान। वेदों का वह अन्तिम भाग जिसमें ब्रह्म का विवेचन किया गया है। ब्रह्म-विद्या की पुस्तकें। वेदान्त। परा विद्या। धर्म। ज्ञान।

उपनीत—[पु०] जिसका उपनयन संस्कार हो गया हो। समीप लाया हुआ।

उपनेत्र—[न०] नेत्र के समीप आया हुआ। नेत्रों को सहायता देनेवाली चीज़। चश्मा।

उपन्यास—[पु०] वाक्य रचना। विचार। समीप रखना। कल्पित कथा। नावेल। दान। अमानत। छल। बहाना।

उपपति—[पु०] पति के सदृश माना गया। गौण पति। जार। दूसरा पति।

उपपत्ति—[स्त्री०] युक्ति। दलील। सिद्धि। निष्पत्ति। विषय का पूरा करना। सङ्गति। विषय को ठीक ठीक मिलाना। विषय को युक्तिपूर्वक सिद्ध करना। उत्पत्ति। सम्बन्ध।

उपपद—[न०] थोड़ा। समीप में उच्चारण किया गया पद। नाम के साथ पीछे से बोला गया शर्मा, वर्मा आदि शब्द। गौण पद। खिताब। उपनाम।

उपपन्न—[त्रि०] युक्तियुक्त। दलील से भरा हुआ। उचित। पास आया हुआ। शरणागत। प्राप्त। मिला हुआ। सम्पन्न। सिद्ध हुआ।

उपपादन—[न०] युक्तियों से सिद्ध करना। दलीलों से साबित करना। समझाकर कहना। कार्य को पूरा करना। सम्पादन।

उपपुर—[न०] उपनगर। बड़े शहर के समीप बसे छोटे शहर। शाखानगर।

उपपुराण—[न०] पुराणों के समान माने गये छोटे पुराण। व्यास मुनि-रचित अठारह पुराणों से अतिरिक्त सनत्कुमार आदि के बनाए हुए पुराण।

उपप्रदान—[न०] उत्कोच। घूस। रिश्वत।

उपप्लव—[पु०] उत्पात। विपत्ति। राजद्रोह। सूर्य-चन्द्र-ग्रहण। उल्कापात।

उपभुक्त—[त्रि०] काम में लाया हुआ। भोगा हुआ। जूठा। खाने से बचा हुआ। उच्छिष्ट।

उपभोग—[पु०] किसी वस्तु के व्यवहार में लाने का सुख। काम में लाना। बर्तना। भोगना। खाना। स्वाद लेना। अनुभव। सम्भोग।

उपम—[त्रि०] सदृश। तुल्य। सरीखा। जैसा।

उपमा [स्त्री०] समता। तुलना। मिलान। किसी वस्तु, कार्य अथवा गुण को दूसरी वस्तु, कार्य या गुण के तुल्य प्रकट करना। दृष्टान्त। यथा—कमल-जैसे नेत्र। यहाँ कमल से नेत्रों की उपमा दी गई है।

उपमाता—[स्त्री०] माता के समान। मौसी। दाई।

उपमान—[न०] जिससे किसी की उपमा दी जाय। जैसे—चाँद सा मुँह। यहाँ मुँह को चन्द्रमा-जैसा बनाया गया है इसलिए चांद उपमान है। न्याय-शास्त्र के चार प्रमाणों में से एक।

उपमिति—[स्त्री०] सदृशता। उपमा।

उपमेय [न०] जिसकी उपमा दी गई हो। जैसे—चाँद-सा मुँह में, मुँह उपमेय है।

उपयम—[पु०] विवाह। शादी। उपयाम।

उपयुक्त—[त्रि०] योग्य। उचित। ठीक। वाजिब। मुनासिब। रचा गया। खाया हुआ।

उपयोग—[पु०] आचरण। इष्ट-सिद्धि के लिए किया गया व्यापार। भोजन। काम में लाना। व्यवहार करना। इस्तेमाल करना। जोड़ना। लगाना। प्रयोजन। आवश्यकता। काम।

उपयोगिता—[स्त्री०] लाभदायक होना। कारआमदपना। लायक होना। मौका। ज़रूरत। कृपा। मतलब।

उपयोगी—[त्रि०] काम का। कारआमद। अनुकूल। योग्य। काम देने लायक। फायदेमन्द। ठीक।

उपरक्षण—[न०] रक्षा के लिए सेना स्थापित करना। पहरा। चौकी।

उपरत—[त्रि०] विरक्त। मृत। उदासीन। मरा हुआ। छूट गया। चला गया।

उपरति—[स्त्री०] विरक्ति। निवृत्ति। त्याग। उदासीनता। मौत। विषय-भोगादि से अलग होना।

उपराग—[पु०] सूर्य-चन्द्रमा का ग्रहण। विपत्ति। निन्दा। बुरी नीति। व्यसन। राहु। उपद्रव। वासना। विषयों में प्रेम।

उपराम—[पु०] विरति। विषय-भोगों से उदासीन होना। हटना। अलग होना। आराम। विश्राम। शान्ति।

उपरि, उपरिष्टात—[अव्य०] ऊपर। ऊँचे।

उपरोध—[पु०] अनुरोध। प्रतिबन्ध। संरक्षण। रुकावट। अटकाव। आच्छादन। ढकना। बड़ाई। सहायता। आसरा। इकरार। विघ्न। अड़चन।

उपर्युक्त—[त्रि०] ऊपर कहा हुआ।

उपल—[पु०] पत्थर। रत्न। बालू। ओला। मेघ। बादल।

उपलक्षक—[त्रि०] अनुमान करनेवाला। ताड़नेवाला।

उपलक्षण—[न०] अपना और अपने सदृश दूसरों का भी बोध करानेवाली शब्द की शक्ति। जिस शब्द के कहने से उस शब्द-वाच्य तथा तद्वाच्य सरीखे औरों का भी बोध हो। जैसे—"देखना बिल्ली दूध न पी जावे", इस वाक्य में कहनेवाले का प्रयोजन बिल्ली से और दूध पी जानेवाले कुत्ता आदि अन्य जीवों से भी है। बिल्ली शब्द केवल "उपलक्षण" मात्र है। संकेत। इशारा।

उपलक्ष्य—[पु०] आश्रय। अवलम्बन। सम्बन्ध। संकेत। चिह्न। उद्देश्य।

उपलब्ध—[त्रि०] प्राप्त। पाया हुआ। ज्ञात। जाना हुआ।

उपलब्धि—[स्त्री०] मति। प्राप्ति। ज्ञान।

उपवन—[न०] कृत्रिम वन। बाग। बगीचा। वाटिका। उद्यान। फुलवाड़ी। वन-जैसा।

उपवर्ह—[पु०] तकिया।

उपवसथ—[पु०] गाँव। यज्ञ या संस्कार करने से पहले का दिन जिस रोज व्रत किया जाता है।

उपवास—[पु०] व्रत। अनाहार। समीप रहना।

उपविष्ट—[त्रि०] बैठा। बैठा हुआ। बसा।

उपवीत—[न०] यज्ञसूत्र। जनेऊ

उपवेश—[पु०] उपवेशन। [न०] बैठना। बसना। ठहरना। जमना।

उपशम—[पु०] शान्ति। इन्द्रियों को वश में रखना। तृष्णा का नाश। निवृत्ति। रोग का नाश। आराम। विराम।

उपशमन—[पु०] शान्त रखना। दबाना। उपाय द्वारा दूर करना। निवारण।

उपश्रुत—[त्रि०] अंगीकार। स्वीकार।

उपश्रुति—[स्त्री०] अंगीकार। स्वीकार। भाग्य-सम्बन्धी प्रश्न। शुभाशुभ पूछना।

उपसंग्रह—[पु०] पैर छूकर प्रणाम करना। अभिवादन।

उपसंख्यान—[न०] गिनना। संग्रह। व्याकरण में समान अर्थवाला पद।

उपसंहार—[पु०] समाप्ति। इकट्ठा करना। अन्त। खींचना। समुदाय। सारांश का संग्रह। ग्रंथ का अन्तिम भाग, जिसमें ग्रंथ का उद्देश्य बताया गया हो।

उपसर्ग—[पु०] रोग का विकार। उपद्रव। शुभाशुभ को सूचित करनेवाला, शकुन। भूत प्रेतादि की बाधा। दैवी उत्पात। क्रियाओं के साथ जुड़कर उसका अर्थ बदल देनेवाले प्र, परा, उप आदि २१ अव्यय।

उपसर्जन—[न०] अप्रधान। गौण। विशेषण। त्याग। उपद्रव। विपत्ति। प्रतिनिधि।

उपसृष्ट—[न०] मैथुन। मिला हुआ। दबाया हुआ। भोग। ग्रह-ग्रस्त सूर्य-चन्द्र। [त्रि०] विपद्-ग्रस्त।

उपसेक—[पु०] सींचना। छिड़कना। गीला करना।

उपसेचन—[न०] पानी में भिगोना। सींचना। पानी छिड़कना। गीली चीज। रसा। शोरुआ।

उपसेवन—[न०] सेवा। व्यसन। चटक।

उपस्कर—[पु०] मसाला। अन्नादि साफ करने का साधन—सूप। मसाला पीसने का साधन, सिल-लोढ़ी। घर की वस्तुएँ। साधन। सामग्री। भूषण। निन्दा। दोष।

उपस्थ—[पु० न०] जननेन्द्रियाँ। लिङ्ग। भग। नीचे या मध्य का भाग। पेड़ू। गोद। [त्रि०] समीप ठहरा हुआ। निकटस्थ।

उपस्थान—[न०] समीप पहुँचकर ठहरना। उपासना। खड़े होकर स्तुति करना। नमस्कार। प्रार्थना। प्राप्ति। पूजा का स्थान। सभा। समाज।

उपस्थित—[त्रि०] समीप बैठा हुआ। पास आया हुआ। निकट पहुंचा हुआ। हाज़िर। प्राप्त। विद्यमान। मौजूद। ध्यान में आया हुआ। शुद्ध किया हुआ। उपासना किया गया। याद।

उपस्थिति—[स्त्री०] समीपता। प्राप्ति। ज्ञान। आगमन। हाज़िरी। मौजूदगी। अभ्यास करने की स्फूर्ति।

उपस्पर्शन—[न०] छूना। आचमन करना। स्नान करना।

उपस्पृष्ट—[त्रि०] नहाया हुआ। छूआ गया। आचमन किया हुआ। पास स्पर्श किया गया।

उपहत—[त्रि०] नष्ट किया गया। बर्बाद किया हुआ। ध्वंसित। बिगाड़ा हुआ। मलिन। संकट में पड़ा हुआ।

उपहरण—[न०] भेंट। नज़राना। बलि देना। अन्नदान करना।

उपहार—[पु०] भेंट। नज़राना। इनाम। समर्पण। अन्नदान। [न०] हार के पास।

उपहास—[पु०] हँसी। दिल्लगी। ठट्ठा। निन्दा। बुराई। फ़जीहत।

उपहासास्पद—[त्रि०] उपहास करने योग्य। हँसी उड़ाने लायक। निन्दनीय। खराब। बुरा।

उपांशु—[अव्य०] निर्जन। एकान्त। अप्रकट। छिपा हुआ। धीरे से बोलना।

उपाकरण, उपाकर्म—[न०] संस्कार कराकर वेद पढ़ना। वेदाध्ययन का आरम्भ। श्रावण की पूर्णिमा के दिन द्विजों के करने का विहित कर्म। संस्कार करके यज्ञार्थ पशु मारना।

उपाख्यान—[न०] कल्पित वृत्तान्त। प्राचीन वृत्तान्त सुनाना। पुराना हाल कहना। आख्यान। वर्णन।

उपागम—[पु०] स्वीकार। समीप आना। पास आना। मान लेना। पहुचना। अनुभव। अकल्पित घटना।

उपाङ्ग—[न०] अंग के समान। प्रधान अंग का सहायक। अंग का अवयव। जैसे—हाथों में उँगलियाँ, टीका, तिलक।

उपात्त—[त्रि०] प्राप्त। गृहीत। लिया गया। हासिल किया गया। स्वीकार किया हुआ। [पु०] वह हाथी जिसका मद प्रकट नहीं हुआ।

उपादान—[न०] ग्रहण करना। प्राप्ति। स्वीकार। परिचय। ज्ञान। बोध। विषयों से इन्द्रियों को हटाना, कार्य का वह कारण जो सदा कार्य में मिला रहता है। जैसे—घट कार्य का मिट्टी कारण। प्रथम से कार्य के रूप रहनेवाला कारण। मूल कारण।

उपादेय—[त्रि०] ग्रहण करने योग्य। श्रेष्ठ। उत्तम। [illegible]। प्रधान। मुख्य। मनोहर। उम्दा।

उपाधान—[न०] रखना। स्थापित करना।

उपाधि—[पु०] उपद्रव। उत्पात। छल। कपट। प्रतिष्ठासूचक पद। विशेषण। धर्म का चिन्ता। कुटुम्ब का पालन करनेवाला। कर्तव्य का विचार।

उपाध्याय—[पु०] जिसके पास पढ़ा जाय। आचार्य। गुरु। अध्यापक। जीविका के लिए वेद-वेदाङ्ग पढ़ानेवाला।

उपाध्याया—[स्त्री०] अध्यापिका। पढ़ानेवाली।

उपाध्यायानी, उपाध्यायी—[स्त्री०] उपाध्याय की स्त्री।

उपानह्—[स्त्री०] जूता। पनही।

उपान्त—[त्रि०] अन्त के समीप का। आस पास का हिस्सा। प्रान्त। किनारा। निकट। नजदीक। [पु०] आंख की कोर।

उपान्त्य—[त्रि०] अन्त वाले के समीप का। आखिरी से पहला।

उपाय—[पु०] पास पहुँचना। निकट आना। अभीष्ट तक पहुँचने का साधन। युक्ति। तदबीर। तरकीब। इलाज। राजनीति में शत्रु को वश में करने के साम, दाम, दण्ड, भेद—ये चार साधन।

उपायन—[न०] समीप जाना। भेंट। उपहार।

उपार्जन—[न०] लाभ करना। पैदा करना। कमाना। इकट्ठा करना। संग्रह करना।

उपार्जित—[त्रि०] कमाया हुआ। पैदा किया हुआ। संगृहीत। इकट्ठा किया हुआ।

उपालम्भ—[पु०] उलाहना। शिकायत। निन्दा। दोष लगाना। उपहास। तिरस्कार। स्तुति या निन्दापूर्वक दुर्वचन कहना।

उपावर्तन—[न०] चक्राकार घूमना। चक्कफेरी देना।

उपावृत्त—[पु०] घोड़े का लोटना। थकान उतारने के लिए लोटनेवाला घोड़ा। अलग हुआ। लौट गया।

उपाश्रय—[पु०] आधार। आश्रय। विश्वास।

उपासक—[त्रि०] सेवक। पूजा करने वाला। भक्त।

उपासंग—[पु०] बाण रखने का पात्र। तरकस। तूणीर। भाथा। आसक्ति।

उपासन—[न०] तीर चलाने का अभ्यास। शुश्रूषा। सेवा।

उपासना—[स्त्री०] देवता आदि की आराधना। सेवा। पूजा।

उपासीन—[त्रि०] समीप बैठा हुआ। पास रहने वाला।

उपास्य—[त्रि०] पूजा करने योग्य। उपासनीय। देवता। सेवा करने लायक। जिसकी सेवा की जाती हो। आराध्य।

उपेक्षक—[त्रि०] उदासीन। तटस्थ। लापरवाह।

उपेक्षण—[न०] विरक्त होना। उदासीन होना। किनाराकशी। घृणा करना। तिरस्कार करना।

उपेक्षा—[स्त्री०] विरक्ति। उदासीनता। लापरवाही। घृणा। तिरस्कार।

उपेक्षित—[त्रि०] जिसकी उपेक्षा की गई हो। तिरस्कृत।

उपेक्ष्य—[त्रि०] उपेक्षा के योग्य।

उपेत—[त्रि०] समीप। पाया हुआ। युक्त।

उपेन्द्र—[पु०] इन्द्र से छोटा। इन्द्र से पीछे उत्पन्न हुआ। विष्णु।

उपेय—[त्रि०] उपाय से सिद्ध होने योग्य। पाने लायक।

उपोढ—[त्रि०] समीप का। नजदीकी। विवाहित। [पु०] व्यूह-रचना। किलेबन्दी।

उपोद्घात—[पु०] प्रस्तावना। प्रारम्भ। उदाहरण। असली बात सिद्ध करने की चिन्ता।

उपोषण—[पु०] उपवास। निराहार व्रत।

उपोषित—[त्रि०] जिसने उपवास किया हो। व्रती। [न०] उपवास।

उभय—[त्रि०] दोनों। जोड़ा।

उभयतः—[अव्य०] दोनों ओर से।

उभयत्र—[अव्य०] दोनों जगह।

उभयथा—[अव्य०] दोनों प्रकार। दोनों तरह।

उभयद्युः, उभयेद्युः—[अव्य०] दोनों दिन। दो दिन।

उम्—[अव्य०] रोष, स्वीकार, प्रश्न, क्रोध इत्यादि अर्थों में आता है।

उमा—[स्त्री०] पार्वती। दुर्गा। हल्दी। कीर्ति। सुन्दरता। कान्ति। शान्ति। अलसी।

उमापति—[पु०] शिवजी।

उमासुत—[पु०] कार्तिकेय। षडानन।

उमेश—[पु०] शिव। महादेव।

उरग—[पु०] साँप।

उररी—[अव्य०] स्वीकार। विस्तार।

उरस्—[न०] वक्षःस्थल। छाती। हृदय। चित्त।

उरस्थल—[न०] छाती।

उरसिज—[पु०] हृदय में उत्पन्न होनेवाला। छाती पर पैदा होनेवाला। स्तन।

उरीकृत—[त्रि०] स्वीकार किया गया। माना गया। फैलाया गया।

उरु—[त्रि०] विशाल। बड़ा। विस्तृत। लम्बा-चौड़ा। पुष्कल। बहुत मोटा। श्रेष्ठ। [पु०] जंघा। जाँघ।

उरोज—[पु०] स्तन। कुच।

उर्णनाभ—[पु०] मकड़ी। लूता।

उर्णा—[स्त्री०] ऊन। भेड़ आदि के रोम।

उर्वरा—[स्त्री०] उपजाऊ भूमि। जरखेज ज़मीन।

उर्वशी—[स्त्री०] एक अप्सरा। स्वर्ग की वेश्या।

उर्वास, उर्वासक—[पु०] खरबूज। ककड़ी। फूट। सेंद।

उर्वी—[स्त्री०] भूमि। पृथिवी। जमीन।

उलूक—[पु०] उल्लू नामक पक्षी। इन्द्र। दुर्योधन का एक दूत शकुनि का का पुत्र। वैशेषिक शास्त्र के रचयिता कणाद मुनि का नाम [न०] दाभ। कुश।

उलूखल—[न०] ओखली। धान्य आदि कूटने का साधन। ऊखल। खरल। गुग्गुल। गूगुल।

उलूत—[पु०] बड़ा सर्प। अजगर।

उलूपी—[स्त्री०] कौरव्य नामक नाग की पुत्री। अर्जुन की पत्नी।

उल्का—[स्त्री०] तेज का समूह। अग्नि की ज्वाला। मशाल। दीपक। आकाश से गिरती हुई आग। वे ज्योतिःपुञ्ज जो कभी कभी आकाश में बड़े वेग से दौड़ते या नीचे को गिरते दिखाई देते हैं। इसे तारा टूटना भी कहते हैं।

उल्कापात—[पु०] तारा टूटना। लूका गिरना। उत्पात। विघ्न।

उल्कामुख—[पु०] गीदड़। एक प्रकार का प्रेत जिसके मुँह से आग निकलती है। अगिया बैताल। महादेव का नाम।

उल्कामुखी—[स्त्री०] गीदड़ी।

उल्मुक—[न०] अंगारा। दहकता कोयला। वृष्णि वंश का एक राजा।

उल्बण—[त्रि०] स्पष्ट। साफ़। पुष्कल। बहुत।

उल्लंघन—[पु०] लांघना। अतिक्रमण। न मानना। आज्ञा या नियम का पालन न करना। कूदना। फांदना। उलाघना।

उल्लसन—[न०] हर्षित होना। खुशी मनाना। रोमाञ्च।

उल्लसित—[त्रि०] प्रसन्न। हर्षित। आनन्दित। खुश। सुशोभित।

उल्लाघ—[त्रि०] नीरोग। रोगमुक्त। पवित्र। साफ़। चतुर। प्रसन्न।

उल्लाप—[पु०] रोग, शोक, क्रोध, भय अथवा हर्ष के कारण स्वर बदल जाना। आवाज़ का भर्रा जाना।

उल्लास—[पु०] आनन्द। हर्ष। प्रकाश। ग्रन्थ का भाग। साहित्य में एक अलङ्कार। वृद्धि।

उल्लिखित—[त्रि०] ऊपर लिखा गया। खोदा गया। चित्रित किया गया। छोटा किया गया। लिखा गया। छीला गया।

उल्लुञ्चन—[न०] बालों का नोचना। केशों का उखाड़ना।

उल्लुण्ठन—[न०] लोटना।

उल्लेख—[पु०] लिखना। वर्णन। कहना। उच्चारण। चर्चा। जिक्र। चित्र खींचना। साहित्य में एक अलङ्कार।

उल्लेखन—[न०] लिखना। चित्र बनाना।

उल्लेखनीय—[त्रि०] लिखने योग्य। कहना। खोदना। वमन करना।

उल्लोच—[पु०] छत। चाँदनी। पाल। शामियाना। चँदोवा।

उल्लोल—[पु०] बड़े बड़े तरंग। कल्लोल। ऊँची-ऊँची लहरें।

उल्व—[न०] गढ़ा। गर्त। गर्भाशय को ढकनेवाला चमड़ा। जरायु।

उल्वण—[त्रि०] व्यक्त। स्पष्ट। जाहिर। साफ। प्रकाश। निर्विघ्न।

उशना—[पु०] दैत्यों के गुरु, शुक्राचार्य।

उशीर—[पु० न०] खस।

उष—[पु०] काजी। गुग्गुल। प्रातः काल। खारी मिट्टी।

उषस्—[न०] प्रातःकाल। दिन का मुँह। सुबह। सवेरा।

उषा—[स्त्री०] प्रातःकाल। ब्राह्ममुहूर्त। सूर्योदय होने से पूर्व की लालिमा। गाय। बटलोई। बाणासुर की कन्या जिसका अनिरुद्ध के साथ विवाह हुआ था।

उषापति—[पु०] अनिरुद्ध, कामदेव का बेटा। 'उषाकान्त'। सूर्य।

उषित—[त्रि०] बासी। जला हुआ। ठहरा हुआ। स्थित रहा।

उष्ट्र—[पु०] बाहर का रथ। ऊँट।

उष्ण—[पु०] गरम। फुर्तीला। तेज। गरमी का मौसम। प्याज। धूप। एक नरक। [त्रि०] चतुर। दक्ष।

उष्णक—[पु०] ग्रीष्मकाल। ज्वर। बुखार। सूर्य [त्रि०] तप्त। गरम। तेज। फुर्तीला। जिसे ज्वर चढ़ा हो। आतुर। क्रुद्ध।

उष्णता—[स्त्री०] गर्मी। ताप।

उष्णरश्मि—[पु०] सूर्य।

उष्णीष—[पु० न०] साफा। पगड़ी। पटका। मुकुट। ताज।

उष्म—[पु०] गरमी। ग्रीष्मकाल। वसन्तकाल। गरम। क्रोध। धूप।

उष्मा—[पु०] ग्रीष्मकाल। गरमी। धूप। गुस्सा। क्रोध। रिस।

उस्र—[पु०] सूर्य की किरणें। सूर्य। अश्विनीकुमार। बैल।

उस्रा—[स्त्री०] सुरभी। कामधेनु। एक प्रकार की लता—उपचित्रा।

उह्यमान—[त्रि०] ले जाया गया। खींचा गया। उठाया गया।

ऊ

ऊ—वर्णमाला का छठा अक्षर। [अव्य०] वाक्य का आरम्भ। रक्षा। दया। सम्बोधन।

ऊ—[पु०] महादेव। चन्द्रमा। [त्रि०] रक्षा करनेवाला।

ऊढ—[त्रि०] विवाहित। ले जाया गया।

ऊढा—[स्त्री०] विवाहिता।

ऊत—[त्रि०] सिला हुआ। बुना हुआ।

ऊधस्—[न०] पशुओं का वह अंग जिसमें दूध भरा होता है। ऐन। थन।

ऊधस्य—[न०] ऊध में होनेवाला। दूध। दुग्ध।

ऊन—[त्रि०] थोड़ा। कम। हीन। न्यून। निर्बल।

ऊररी, ऊरी—[अव्य०] विस्तार। फैलाव। अंगीकार। स्वीकार। मंजूर।

ऊरीकृत—[त्रि०] अङ्गीकृत। विस्तृत।

ऊरु—[पु०] जंघा। जाँघ।

ऊर्ज—[पु०] कार्तिक मास। उत्साह। बल। वीर्य। स्वारोचिष मनु का पुत्र। तेज। [त्रि०] बलवान। शक्ति-सम्पन्न। तेजस्वी।

ऊर्जस्—[न०] शक्ति। उत्साह। पराक्रम। तेज।

ऊर्जस्वल—[त्रि०] पराक्रमी। बहुत बलशाली। बलिष्ठ। तेजस्वी। ऊर्जस्वी। प्रतापी।

ऊर्जित—[त्रि०] अत्यन्त बली। बलिष्ठ। मशहूर। प्रसिद्ध। वर।

ऊर्ण—[पु०] ऊन। भेड़ या बकरी के रोम।

ऊर्णनाभ—[पु०] मकड़ा। लूता। धृतराष्ट्र का एक पुत्र। एक दैत्य का नाम। इसी अर्थ में "ऊर्णनाभि" भी होता है।

ऊर्णा—[स्त्री०] ऊन। भौहों के बीच में रोमों का घुमाव। (यह चिह्न महा-पुरुषों के होता है) चित्ररथ की पत्नी। पानी का भँवर। आवर्त।

ऊर्णायु—[पु०] ऊनवाला-भेड़। बकरी। कम्बल। मकड़ी। एक गन्धर्व। शीघ्र नष्ट होनेवाला।

ऊर्द्ध, ऊर्द्धव—[त्रि०] ऊपर। ऊँचा। उन्नत। उच्छ्रित। [पु०] डंडे की तरह

सीधा खड़ा हुआ।

ऊर्ध्वगति—[स्त्री०] मुक्ति। मोक्ष।

ऊर्ध्वगामी—[त्रि०] ऊपर को जाने-वाला। मुक्त। निर्वाण-पदप्राप्त।

ऊर्ध्वपाद—[पु०] जिसके पैर ऊपर को हों। शरभ नामक हाथियों का शत्रु। इसके चार पैर पीठ पर होते हैं।

ऊर्ध्वबाहु—[पु०] ऊपर को हाथ उठाए हुए। एक प्रकार के तपस्वी जो अपना एक हाथ सदा ऊपर उठाए रहते हैं।

ऊर्ध्वरेता—[पु०] जो अपने वीर्य को नीचे की ओर न गिरने देकर ऊपर को ले जाता है। आजन्म ब्रह्मचारी। महादेव। भीष्म पितामह। सनकादिक अठासी हज़ार ऋषि। संन्यासी।

ऊर्ध्वलोक—[पु०] ऊपर का लोक। स्वर्ग लोक। इन्द्र लोक।

ऊर्ध्वश्वास—[पु०] ऊपर को चढ़ती हुई साँस। साँस की कमी। अधूरी साँस। मृत्यु समय की साँस।

ऊर्मि—[स्त्री० पु०] लहर। तरङ्ग। प्रकाश। वेग। दुःख। कपड़े की सलवटें।

ऊर्मिका—[स्त्री०] उत्कंठा। भौंरे का शब्द। अँगूठी। लहर। तरंग।

ऊर्मिमाली—[पु०] समुद्र।

ऊर्मिला—[स्त्री०]लक्ष्मणजी की पत्नी।

ऊर्वरा—[स्त्री०] उर्वरा। जिस जमीन में खूब खेती-बाड़ी होती हो। उपजाऊ भूमि।

ऊर्वशी—[स्त्री०] उर्वशी। स्वर्ग की एक वेश्या। "उर्वसी" भी इसी अर्थ में होता है।

ऊलूक—[पु०] उलूक। उल्लू।

ऊष—[पु०] खारी मिट्टी। खारी नदी। [न०] प्रभात। प्रातः काल। चन्दन।

ऊषर—[त्रि०] खारी ज़मीन। लोनिया भूमि। वह ज़मीन जिसमें बोई हुई चीज़ नहीं उगती। खारी नदी वाली जगह। ऊसर। कल्लर।

ऊष्मा—[पु०] गरमी। गरमी का मौसम।

ऊह—[पु०] तर्क। अनुमान। विचार। अन्दाज़ लगाना। अर्थ लगाने के लिए कुछ ऊपरी शब्दों की कल्पना कर लेना—"अध्याहार"।

ऊहा—[स्त्री०] तर्क। कल्पना। अध्याहार।

ऊहापोह—[पु०] तर्क-वितर्क। सोच-विचार।

ऊहिनी—[स्त्री०] सेना। राशि। ढेर। समुदाय। मण्डल।

:❀:

ऋ

ऋ—वर्णमाला का सातवाँ अक्षर।

ऋक्—[स्त्री०] ऋचा। वेद-मन्त्र। ऋग्वेद।

ऋक्थ—[न०] धन। सोना। सम्पत्ति। पुरखाओं की उपार्जित धन-सम्पत्ति।

ऋक्थभागी—[त्रि०] वारिस। बड़ों के उपर्जित धन का हकदार।

ऋक्ष—[पु०] रीछ। भालू। एक पर्वत। श्योनक नामक वृक्ष। [न०] तारा। नक्षत्र। राशि।

ऋक्षराज—[पु०] जामवन्त। चन्द्रमा।

ऋक्षेश—[पु०] चन्द्रमा।

ऋच्, ऋचा—[स्त्री०] वेद-मन्त्र। कंडिका। स्तोत्र। गीत।

ऋजु—[त्रि०] सीधा। सरल। सुगम। सरल स्वभाव। अनुकूल। प्रसन्न।

ऋण—[न०] उधार। कर्ज। जलदुर्ग। दुर्ग की भूमि। [त्रि०] जानेवाला। अवश्य करने योग्य काम।

ऋणग्रह—[पु०] कर्ज लेनेवाला। अधमर्ण।

ऋण-मत्कुण, ऋणमार्गण—[पु०] ज़ामिन। प्रतिभू। जमानतदार।

ऋण-मुक्ति—[स्त्री०] ऋण उतारना। कर्ज चुकाना।

ऋणी—[त्रि०] कर्जदार। ऋणग्रस्त। उपकारबद्ध। उपकार माननेवाला। अनुगृहीत।

ऋत—[न०] सत्य। मार्ग या खेतों में से अन्न बीन-बीन कर जीवन-निर्वाह करना। जल। कर्म-फल। भाग्य। विष्णु। सूर्य। ब्रह्म। सत्याचरण। यज्ञ। [त्रि०] सम्मानित। पूजित। दीप्त। प्रकाशित।

ऋतम्—[अव्य०] सत्य। सच।

ऋतम्भरा—[स्त्री०] जो सत्य को धारण करती है। योग-शास्त्र में मिथ्या-ज्ञान-शून्य चित्त की वृत्ति।

ऋति—[स्त्री०] कल्याण। मार्ग।

निन्दा। स्पर्धा। होड़। जाना। अशुभ। [पु०] शत्रु।

ऋतु—[पु०] वसन्त, ग्रीष्म आदि वर्ष के छः भाग। मौसम। रज। आर्तव। शिव। विष्णु। चमक। महीना।

ऋतुचर्या—[स्त्री०] ऋतुओं के अनुसार आहार-विहार की व्यवस्था।

ऋतुदर्शन—[न०] स्त्रियों का मासिक धर्म। रजोदर्शन।

ऋतुमती—[स्त्री०] रजस्वला। पुष्पवती। मासिकधर्म-युक्ता।

ऋतुराज—[पु०] ऋतुओं का राजा वसन्त।

ऋतुस्नान—[न०] रजोदर्शन के चौथे दिन स्नानादि द्वारा शुद्ध होने की विधि।

ऋते—[अव्य०] विना। सिवा।

ऋत्विज—[पु०] यज्ञ करानेवाला। पुरोहित।

ऋद्ध—[न०] पका हुआ अन्न। पकने के पश्चात् मींड़, फटककर भूसे में से अलग किया हुआ अन्न। सिद्धान्त। विष्णु। [त्रि०] सम्पन्न। समृद्ध। धनी।

ऋद्धि—[स्त्री०]समृद्धि। बढ़ती। लक्ष्मी। धन। इस नाम की एक जड़ी। एक देवता। दुर्गा।

ऋद्धि-सिद्धि—[स्त्री०] समृद्धि और सफलता। ये दोनों गणेशजी की सेविकाएँ कही जाती हैं।

ऋभुक्ष—[पु०] स्वर्ग। इन्द्र। वज्र। देवमात्र।

ऋभुक्षिन—[पु०] इन्द्र।

ऋषभ—[पु०] बैल। श्रेष्ठ। अच्छा। संगीत के सात स्वरों में से एक जड़ी। कान का छिद्र। जैनियों का पहला अवतार। राम की सेना का एक बन्दर।

ऋषभध्वज—[पु०] जिसके झण्डे पर बैल का चिह्न है। शिवजी। महादेव।

ऋषि—[पु०] वेदमन्त्रों का प्रकाश करनेवाला। मन्त्रद्रष्टा। शास्त्रों की रचना करनेवाला। गोत्र और प्रवर के चलानेवाला। आचार्य।

ऋषियज्ञ—[पु०] पंच महायज्ञों में से एक। वेदों का पढ़ना।

ऋष्यमूक—[पु०] दक्षिण का एक पर्वत।

ऋष्यशृंग—[पु०] एक मुनि।

ए

ए—वर्णमाला का ग्यारहवाँ अक्षर।

ए—[अव्य०] याद करना, घृणा करना, बुलाना, निमन्त्रण देना, सम्बोधन आदि अर्थों में आता है।

ए—[पु०] विष्णु।

एक—[त्रि०] पहला अंक। मुख्य। केवल। अद्वितीय। बेजोड़। कोई। समान। भेद-रहित। सम्मिलित। अल्प। थोड़ा।

एकचक्र—[पु०] सूर्य का रथ। सूर्य।

एकच्छत्र—[त्रि०] ऐसा राज्य या शासन जिसमें किसी दूसरे का अधिकार न हो।

एकतम—[त्रि०] बहुतों में से एक।

एकतर—[त्रि०] दो में से एक।

एकतस्—[अव्य०] एक ओर से।

एकता—[स्त्री०] एका। मेल। समानता। बराबरी।

एकतान—[त्रि०] तन्मय। लीन। दत्तचित्त। मनोयोगपूर्वक कार्य में लगा हुआ। एकाग्र।

एकतीर्थी—[पु०] एक साथ पढ़ा हुआ। गुरुभाई।

एकत्र—[अव्य०]एक स्थान में। इकट्ठे।

एकत्व—[न०] एकता। एका। मेल।

एकदन्त—[पु०] गणेश। 'एकदंष्ट्र' भी इसी अर्थ में होता है।

एकदा—[अव्य०] एक समय। किसी समय। एक बार।

एकदेशीय—[त्रि०] जो एक ही जगह और एक ही समय हो।

एकदृक्—[त्रि०] एक आँखवाला। काना। [पु०] कौआ। शुक्राचार्य। सबको एक (अभिन्न) देखनेवाला। महादेव। शिव।

एकधा—[अव्य०]एक तरह। एक प्रकार।

एकनयन—[त्रि०] एक आँखवाला। काना। एकाक्ष। [पु०] कौआ। कुबेर। शुक्र।

एकनिष्ठ—[त्रि०]जिसकी निष्ठा एक ही में हो। एक ही में श्रद्धा रखनेवाला।

एकपत्नी—[स्त्री०] जिसका एक ही पति हो—पतिव्रता। जिसका एक (समान) पति हो—सौत।

एकपत्नीव्रत—[त्रि०] एक ही पत्नी से प्रेम करनेवाला।

एकपद—[अव्य०] तत्क्षण। अकस्मात्। उसी समय।

एकपदी—[स्त्री०] रास्ता। मार्ग। पगडंडी।

एकमत—[त्रि०] एक (समान) मत रखनेवाले। एक राय के।

एकमात्रिक—[त्रि०] एक मात्रावाला।

एकमुखी—[त्रि०] एक मुँहवाला।

एकरस—[त्रि०] सदा एकसा रहनेवाला।

एकरूप—[त्रि०] समान रूपवाला। एक ही ढंग का। ज्यों-का-त्यों। हूबहू।

एकरूपता—[स्त्री०] समता। एकता।

एकलिङ्ग—[पु०] महादेव जी का एक नाम।

एकवाक्यता—[स्त्री०] एकमत हो जाना। आपस में राय मिल जाना।

एकवेणी—[स्त्री०] एक ही चोटी गूथनेवाली। वियोगिनी। विधवा।

एकशेष—[पु०] व्याकरण में द्वन्द्व समास का एक भेद। अधिकता। बहुतायत।

एकसर्ग—[त्रि०] जिसका एक ही में निश्चय हो। एकाग्र मनवाला। एकचित्त।

एकसूत्र—[पु०] डमरू नामक बाजा।

एकाकार—[पु०] मिलकर एक होने की अवस्था। एकमय हो जाना। [त्रि०] एक आकार का। समान।

एकाकी—[त्रि०] अकेला। असहाय। जिसका साथी या सहायक कोई न हो। तनहा।

एकाक्ष—[पु०] जिसकी एक आँख हो—कौआ। शुक्राचार्य। [त्रि०] काना।

एकाग्र—[त्रि०] जिसका एक ओर मन लगा हो। एकतान। एक सर्ग। स्वस्थ चित्त। स्थिर चित्त।

एकाग्रय—[न०] एकाग्रता। एकाग्र।

एकाङ्गी—[त्रि०] एक पक्ष का। एक तरफा।

एकातपत्र—[न०] एकच्छत्र। वह राज्य जिसमें किसी दूसरे का अधिकार न हो।

एकात्मता—[स्त्री०] एकाकार। एकता। अभेद। मिलकर एक हो जाना। एकजी।

एकादश—[त्रि०] ग्यारह। दश और एक।

एकादशी—[स्त्री०] ग्यारहवीं। ग्यारहवीं तिथि। विष्णु का दिन। हरि-वासर।

एकाधिपत्य—[त्रि०] एकमात्र अधि-कार। पूरा प्रभुत्व।

एकान्त—[त्रि०] अत्यन्त। बहुत। जरूरी। अकेला। दृढ़। अलग। निर्जन। सूना।

एकान्ततः—[अव्य०] न रुकनेवाला। जरूर होनेवाला। केवल। मात्र। सिर्फ। अधिक।

एकान्तिक—[त्रि०] एकदेशीय। जो एक ही स्थान के लिए हो। ब्रह्म में रत।

एकान्न—[त्रि०] दिन में एक बार खाने का व्रत।

एकार्थक—[त्रि०] समान अर्थवाला। समानार्थक।

एकावली—[स्त्री०] जिसमें एक ही पंक्ति हो। एक लड़ का हार। कमलों की वाटिका। साहित्य में एक अर्थालङ्कार।

एकाश्रय—[त्रि०] जिसका एक ही सहारा हो। अनन्यगति।

एकाह—[पु०] एक दिन। [त्रि०] एक दिन में पूरा होनेवाला।

एकाहार—[पु०] एक दिन में एक बार भोजन करना। [त्रि०] दिन में एक बार खानेवाला।

एकीकरण—[पु०] मिलाकर एक करना।

एकीभाव—[पु०] मिलकर एक होना। एकता। एकपन। एका।

एकीभूत—[त्रि०] मिला हुआ। जो मिलकर एक हो गया हो।

एकोद्दिष्ट—[न०] एक के उद्देश्य से किया गया श्राद्ध। वार्षिक श्राद्ध।

एडक—[पु०] मेंढ़ा। भेड़ा।

एडका—[स्त्री०] भेड़। भेड़ी।

एण—[पु०] काले रंग का हरिण। मृग। [स्त्री०] एणी।

एणाजिन—[न०] मृगचर्म।

एतत्—[त्रि०] यह।

एतद्देशीय—[त्रि०] इस देश का।

एतादृश—[त्रि०] ऐसा। इस तरह का।

एतावत्—[त्रि०] इतना।

एध्य—[स्त्री०] बढ़ती। वृद्धि। समृद्धि।

एनस्—[न०] पाप। अपराध। निन्दा।

एनस्वी—[त्रि०] पापी। अपराधी।

एरण्ड—[पु०] अंडी का वृक्ष।

एला—[स्त्री०] इलायची।

एव—[अव्य०] निश्चय ही, सादृश्य, बराबरी, तिरस्कार आदि अर्थों में आता है।

एवम्—[अव्य०] इस तरह, ऐसा, निश्चय, स्वीकार, समता, प्रश्न आदि अर्थों में आता है।

एषण—[पु०] लोहे का बाण। सुनार का काँटा।

एषणा—[स्त्री०] धन, पुत्रादि की कामना।

एषा—[स्त्री०] इच्छा। कामना।

ऐ

ऐ—वर्णमाला का बारहवाँ अक्षर।
ऐ—[अव्य०] बुलाना। याद करना।
ऐ—[पु०] महादेव।
ऐकपत्य—[न०] श्रेष्ठ अधिकार।
ऐकमत्य—[न०] एकता। एका। एकमत होना।
ऐकागारिक—[त्रि०] एकान्त में जिसका काम बनता है। अकेले में जिसका मतलब सिद्ध हो। चोर। जिसका मन एक ओर लगा हो।
ऐकाग्रय—[न०] एकाग्रता।
ऐकात्म्य—[न०] एका करना। एक-स्वरूप होना।
ऐकाहिक—[त्रि०] एक दिन में होनेवाला। एक निश्चित समय पर होनेवाला। एक दिन छोड़कर (तीसरे दिन) होनेवाला।
ऐक्य—[न०] एकता। मेल। अभेद।
ऐच्छिक—[त्रि०] अपनी इच्छा का।
ऐण—[त्रि०] काले मृग का चर्म।
ऐणेय—[त्रि०] काली हरिणी का चर्म।
ऐतिहासिक—[त्रि०] इतिहास-सम्बन्धी। इतिहास जाननेवाला।
ऐतिह्य—[पु०] परम्परा से सुना हुआ उपदेश। लोकपरम्परा से सुना गया। आप्तजनों का उपदेश-वेदादि।
ऐन्दव—[न०] मृगशिरा नक्षत्र। [त्रि०] चन्द्रमा-सम्बन्धी।
ऐन्द्र—[त्रि०] ज्येष्ठा नक्षत्र।
ऐन्द्रजालिक—[त्रि०] माया करनेवाला। छलिया। बाजीगर। मायावी।
ऐन्द्रि—[पु०] इन्द्र का पुत्र जयन्त, अर्जुन, सुग्रीव। काक। कौआ।
ऐन्द्री—[स्त्री०] इन्द्र की शक्ति। इन्द्राणी।
ऐरावत—[पु०]इन्द्र का हाथी। [न०] इन्द्रधनुष।
ऐरेय—[न०] मद्य। शराब।
ऐल—[पु०] इला का बेटा। पुरूरवा।
ऐश—[त्रि०] महादेव का। महादेव-सम्बन्धी।
ऐशानी—[स्त्री०] उत्तर-पूर्व के बीच की दिशा।
ऐश्वर्य—[न०] धन। विभूति। प्रभुत्व। सम्पत्ति। अणिमादि आठ सिद्धियाँ। प्रताप।
ऐश्वर्यवान, ऐश्वर्यशाली—[त्रि०] वैभवशाली। धनवान। सम्पन्न। प्रतापी।
ऐहलौकिक—[त्रि०] इस लोक में होनेवाला। इस लोक का।
ऐहिक—[त्रि०] इस लोक से सम्बन्ध रखनेवाला। सांसारिक। दुनियावी।

—:※:—

ओ

ओ—वर्णमाला का तेरहवाँ अक्षर।
ओ—[अव्य०] स्मरण, सम्बोधन, बुलाना, दया आदि अर्थों में आता है।
ओ—[पु०] ब्रह्मा।
ओं—[अव्य०] ओम। प्रणव।
ओक—[पु०] पक्षी। शूद्र। [न०] घर। मकान। आश्रय। निवासस्थान। रहने की जगह। नक्षत्रों का समूह।
ओकपति—[पु०] सूर्य। चन्द्रमा।
ओकारान्त—[त्रि०] जिसके अन्त में 'ओ' होवे।
ओघ—[पु०] समूह। ढेर। समुदाय। पानी का प्रवाह। जल्दी से गाना-बजाना। नाचना।
ओङ्कार—[पु०] प्रणव।
ओज—[पु०] बल। प्रताप। तेज। उजाला। चमक। रोक। सामर्थ्य। शस्त्रास्त्र चलाने का कौशल। वैद्यक में शरीर-स्थित आठवीं धातु। कविता का वह गुण जिससे श्रोता के हृदय में वीरता आदि के भाव पैदा हों।
ओजस्विता—[स्त्री०] तेज। कान्ति। दीप्ति। चमक। प्रभाव।
ओजस्वी—[त्रि०] तेजस्वी। शक्ति-शाली। प्रतापी। पराक्रमी। प्रभावशाली।
ओत—[त्रि०] अन्तर्व्याप्त। भीतर फैला हुआ। कपड़ा।
ओतप्रोत—[त्रि०] भीतर व्याप्त। सब में मिला हुआ।
ओतु—[पु० स्त्री०] बिडाल। बिल्ली। मार्जार।
ओदन—[पु० न०] पके हुए चावल। भात।

ओम्—[अव्य०] ओंकार, प्रणव, स्वीकार, आरम्भ, हटाना, निकालना, जानने योग्य आदि अर्थों में आता है।

ओम्—[न०] ब्रह्मा का एक नाम।

ओषधि—[स्त्री०] दवा। वह वनस्पति जो एक बार फलने के पश्चात् नष्ट हो जाती है—केला, गेहूँ, जौ आदि। 'ओषधी' भी इसी अर्थ में होता है।

ओषधिपति, ओषधीश—[पु०] ओषधियों का स्वामी। चन्द्रमा। कपूर।

ओष्ठ—[पु०] ओठ। होंठ। दशनच्छद। दाँतों का ढकना।

ओष्ठ्य—[त्रि०] ओठ से उच्चारण किया जानेवाला।

—:※:—

औ

औ—वर्णमाला का चौदहवाँ अक्षर।

औ—[अव्य०] बुलाना, सम्बोधन, विरोध, निर्णय आदि अर्थों में आता है।

औक्थ—[न०] मन्त्रों की माला।

औक्ष, औक्षक—[न०] बैलों का समूह। बैलों का झुण्ड।

औख्य—[त्रि०] जो उखा (बटलोई) में बनाया गया हो। दाल। भात।

औचिती—[स्त्री०] **औचित्य**—[न०] उपयुक्तता। योग्यता। सचाई। लायकी।

औजसिक—[पु०] शूरवीर। योद्धा।

औडव—[पु०] संगीत में रागों की एक जाति। वह राग जिसमें केवल पाँच स्वरों का उपयोग होता है। नक्षत्र-सम्बन्धी। नक्षत्रों का। तारों का।

औत्कण्ठ्य—[न०] उत्कण्ठा का भाव। इच्छा। बड़ी चाह। खेद।

औत्कर्ष्य—[न०] उत्कर्षता। वृद्धि। बढ़ती।

औत्पत्तिक—[त्रि०] उत्पत्ति-सम्बन्धी। स्वभावसिद्ध। जन्मसिद्ध।

औत्तानपादी—[पु०] उत्तानपाद का बेटा। ध्रुव।

औत्सर्गिक—[त्रि०] प्राकृतिक। स्वाभाविक। त्याज्य। छोड़ने लायक।

औत्सुक्य—[न०] उत्कण्ठा। उत्सुकता। प्रबल इच्छा। बेआरामी।

औदनिक—[पु०] भात बनानेवाला। रसोइया। स्वयंपाकी।

औदरिक—[त्रि०] केवल पेट की चिन्ता में लगा हुआ। पेट भरने की इच्छावाला। पेटू। बहुत खानेवाला।

औदर्य—[त्रि०] उदर-सम्बन्धी।

औदार्य—[न०] उदारता। फय्याजी। खुला दिल। बड़प्पन।

औदासीन्य, औदास्य—[न०] उदासीनता। मन न लगना। अलग हो बैठना। वैराग्य। बेपरवाही।

औदुम्बर—[त्रि०] गूलर की लकड़ी का बना हुआ। ताँबे का बना हुआ।

औद्धत्य—[न०] उद्धतपना। अक्खड़ता। उजड्डपन। धृष्टता। ढिठाई। बहादुरी के काम।

औद्वाहिक—[त्रि०] विवाह-सम्बन्धी।

औपचारिक—[त्रि०] लाक्षणिक। उपचार-सम्बन्धी। जो केवल कहने-सुनने के लिए हो। जो वास्तविक न हो।

औपनिवेशिक—[त्रि०] उपनिवेश-सम्बन्धी। उपनिवेशों का-सा।

औपनिषदिक—[त्रि०] उपनिषद्-सम्बन्धी। उपनिषदों का। उपनिषदों में कहा गया।

औपन्यासिक—[त्रि०] उपन्यास-विषयक। उपन्यास-सम्बन्धी। उपन्यासों में वर्णित। [पु०] उपन्यास-लेखक।

औपम्य—[न०] उपमा। सादृश्य। बराबरी। एकसापन।

औपसर्गिक—[पु०] सन्निपात नामक रोग। [त्रि०] उपसर्ग-सम्बन्धी।

औरस, औरस्य—[पु० स्त्री०] सन्तान। अपनी पत्नी में अपने द्वारा उत्पन्न की गई सन्तान।

और्ध्वदेहिक—[त्रि०] मृतक-सम्बन्धी क्रिया। मरने के दिन से पीछे किया जानेवाला कर्म।

औशन—[न०] शुक्राचार्य-प्रणीत नीतिशास्त्र।

औषध—[न०] रोगनाशक द्रव्य। दवा। ओषधि। भेषज।

औष्ट्र—[न०] ऊँटों का दूध, आदि।

औष्ट्रक—[न०] ऊँटों का समूह।

औष्ठ्य—[त्रि०] ओष्ठ से उच्चारण किया गया। ओठ से निकला।

क

क—वर्णमाला का पहला व्यञ्जन वर्ण ।

क—[पु०] ब्रह्मा । विष्णु । कामदेव । अग्नि । यम । सूर्य । प्रकाश । धन । राजा । मोर । शरीर । मन । मस्तक । जल । केश । शब्द । पक्षी । परलोक । किरण ।

कंस—[पु०] उग्रसेन का पुत्र । श्री कृष्ण का मामा । काँसा नामक धातु । काँसे, सोने या चाँदी का बना हुआ पानी पीने का पात्र । कटोरा या गिलास । मद्य पीने का प्याला ।

कंसकार—[पु०] काँसे के पात्र बनानेवाला । कसेरा ।

कंसजित्—[पु०] कंस को जीतनेवाला । श्रीकृष्ण । कंसाराति । कंसहा ।

कंसपात्र—[पु०] काँसे का बरतन । गिलास । प्याला । एक नाप-विशेष जिसमें चार सेर दूध आता है ।

कंसहनन—[पु०] कंसवध । कंस का संहार ।

कंसहा—[पु०] कंस को मारनेवाला । श्रीकृष्ण ।

कंसाराति—[पु०] कंस का शत्रु । श्रीकृष्ण । विष्णु का एक नाम ।

कंसारि—[पु०] देखो "कंसाराति" ।

कंसासुर—[पु०] कंस नामक राक्षस ।

ककुत्—[पु०] बैल के कंधे पर उठा हुआ मांस-पिण्ड । टाँट । डुड्ड । पहाड़ की चोटी । राजा के चिह्न छत्र, चामरादि । ध्वज । एक प्रकार का सर्प ।

ककुद्मान्—[पु०] ककुद्वाला । बैल । वृषभ । पहाड़ । लहर ।

ककुद्मती—[स्त्री०] कमर । कटि । नितम्ब । चूतड़ । एक छन्द का नाम ।

ककुद्वती—[स्त्री०] **ककुद्वान्**—[पु०] देखो 'ककुद्मती' । 'ककुद्मान्' ।

ककुभ—[स्त्री०] दिशा । शोभा । एक रागिनी । [पु०] अर्जुन नामक वृक्ष । शास्त्र । महादेव । एक पक्षी-विशेष । प्रेत । शैतान । वीणा, सितार आदि के नीचे की तोंबी । एक तीर्थ-विशेष ।

ककुभा—[स्त्री०] दिशा । ओर । एक रागिनी ।

कक्ष—[पु०] काँख । बगल । काँछ । लाँग । सूखे तिनके । वन । पाप । वस्त्र का अञ्चल । सूखी घास । सूखा वन । कच्छ । कछार । घर । दीवार । घर का भीतरी भाग । भाग । राजा का अन्तःपुर । हाथी बाँधने का रस्सा । बगल का फोड़ा । दर्जा । श्रेणी । पाप । रुद्र । फाटक । गोट । किनारी ।

कक्षा—[स्त्री०] समता । बराबरी । श्रेणी । दर्जा । ग्रहों का पृथिवी के आस-पास घूमने का मार्ग । काँख । बगल । पौरी । दहलीज । मकान की दीवार । रथ का भाग । वस्त्र का अञ्चल । काछ—धोती की अंटी, लाँग, पटली आदि । हाथी बाँधने की रस्सी ।

कक्षान्तर—[पु०] अन्तःपुर । जनानखाना ।

कङ्क—[पु०] एक पक्षी । सफेद रंग की चील । यमराज । क्षत्रिय । युधिष्ठिर का अज्ञातवास के समय रक्खा हुआ नाम । चन्दन । एक प्रकार का आम का फल ।

कङ्कण—[न०] एक प्रकार का आभूषण जो हाथ में पहना जाता है । कंगन । कड़ा । ऊन या रेशम का वह धागा जो विवाह के समय वर-कन्या के हाथों में बाँधा जाता है ।

कङ्कत—[न०] बाल काढ़ने का उपकरण । कंघा । एक विषैला जन्तु ।

कङ्कतिका, कङ्कनी—[स्त्री०] केशप्रसाधनी । कंघी ।

कङ्कपत्र—[पु०] वह बाण जिसमें कङ्क पक्षी का पर लगा हो । तीर ।

कङ्कपत्री—[पु०] देखो 'कङ्कपत्र' ।

कङ्कपुरी—[स्त्री०] काशीपुरी । बनारस ।

कङ्कमाला—[स्त्री०] करताली । ताली बजाने की क्रिया ।

कङ्कमुख—[पु०] संड़ासी । चिमटा । शास्त्र-चिकित्सा में काम आने का औज़ार-विशेष । जम्बूर । एक प्रकार का बाण ।

कङ्काल—[पु०] ठठरी । अस्थि-पञ्जर । हाड्डियों का ढांचा ।

कङ्कालमाली—[पु०] हड्डियों की माला धारण करनेवाला । महादेव ।

कङ्काली—[स्त्री०] महाकाली की प्रतिमा-विशेष । कर्कशा स्त्री ।

कच—[पु०] केश । बाल । बृहस्पति का पुत्र । बादल । बाँधना । सजावट । सूखा हुआ घाव । बच्चा । बछड़ा । वस्त्र का छोर ।

कचाकचि—[अव्य०] परस्पर एक-दूसरे के बालों को पकड़ कर लड़ना ।

कच्चर—[त्रि०] मलिन । मैला । कचरा । [न०] छाछ । मठा ।

कच्चित्—[अव्य०] विकल्प, हर्ष, मंगल, क्या, कौन, क्यों, अपनी इच्छा प्रकट करने का प्रश्न आदि अर्थों में आता है ।

कच्छ—[त्रि०] वह स्थान जहाँ पानी ही पानी हो । खाड़ी । समुद्र या नदी का किनारा । केसर का वृक्ष । पहाड़ के समीप का भाग । नाव का हिस्सा ।

पहनने के वस्त्र का अंचल। मकान के अन्दर का भाग। [पु०] काछ। काछनी। एक नगर का नाम।

कच्छप—[पु०] कछुआ। कुबेर का खज़ाना। शराब बनाने का यन्त्र। पहलवानों का एक दाव। तुन का पेड़। एक सर्प-विशेष। तालु का एक रोग।

कच्छपी—[स्त्री०] कछुए की स्त्री। सरस्वती की वीणा।

कज्जल—[न०] काजल। अञ्जन। कालौंछ। लज्जा। [पु०] बादल। मेघ। नील कमल। एक पर्वत-विशेष।

कज्जली—[स्त्री०] पारा और गन्धक को मिलाकर घोटी हुई ओषधि-विशेष। स्याही।

कञ्चुक—[पु०] सांप की कांचली। युद्ध में पहनने का लोहनिर्मित चोला। जिरह-बख्तर। सन्नाह। कवच। जामा। अचकन। चोला। अँगरखा। एक दवा। छेद करने का बरमा। चोली। अँगिया।

कञ्चुकी—[पु०] दरबान। द्वारपाल। राजाओं के रनवास की रक्षा करनेवाला। दास-दासियों का अध्यक्ष। सांप। जौ, चने का पेड़। एक प्रकार का घोड़ा। लम्पट। [स्त्री०] चोली। अंगिया। एक दवा।

कञ्ज—[त्रि०] जल में उत्पन्न होने वाला। [पु०] कमल। अमृत। ब्रह्मा। केश। बाल।

कञ्जनाभ—[पु०] विष्णु।

कञ्जमूल—[न०] कमल की जड़। कमल ककड़ी।

कट—[पु०] हाथी का गण्डस्थल। कमर। छबड़ा। चटाई। बहुत। समय। बाण। मुर्दा। श्मशान। मुर्दा ले जाने की गाड़ी। तख्ता। तृण। एक राक्षस। रस्सी। घुड़दौड़ का मैदान।

कटक—[पु०] सेना। पर्वत का मध्य भाग। मेखला। कौंधनी। पेटी। भुजाओं का आभूषण। कड़ा। चूड़ी। पहिया। हाथी के दाँतों में पहनाया जानेवाला आभूषण। समुद्र का नौन। राजधानी। नगरी। पर्वत के समीप का समतल भूमि-भाग। सेना। सेना रहने का स्थान। शिविर या छावनी। एक शहर। रस्सी।

कटकार—[वि०] चटाई बनानेवाला। एक जति जो रस्सी, चटाई बनाने का काम करती है।

कटकोल—[पु०] थूकने का पात्र। पीकदान।

कटाग्नि—[पु०] घास-फूस की आग।

कटाक्ष—[पु०] आँख की कोर से देखना। अपाङ्गदर्शन। तिरछी नज़र। औरों के दोष देखना।

कटार—[पु०] कामी। लम्पट। वन-बिलाव। जंगली बिल्ली। छुरी।

कटाह—[पु०] कड़ाही। खप्पर। नरक। कूंआ। भैंस का बच्चा। सूर्य। सूप। द्रह। टीला। कछुए की खोपड़ी।

कटि—[पु० स्त्री०] कमर। नाभि के नीचे का भाग। श्रोणि। जिस स्थान पर धोती की कांछ बाँधी जाती है। देव-मन्दिर का द्वार। हाथी का गण्डस्थल। स्त्री। पत्नी। घुंघुची। चींटनी।

कटितट—[पु०] चूतड़। नितम्ब। कमर। पीठ।

कटिबद्ध—[त्रि०] तैयार। सन्नद्ध। कमर कसे हुए।

कटिबन्ध—[पु०] कमरबन्द। पेटी। नाड़ा। भूमि का भाग-विशेष जो सर्दी और गर्मी के विचार से निर्धारित किये हैं।

कटिभूषण—[पु०] कमर का गहना। कौंधनी।

कटिशूल—[पु०] कमर का दर्द।

कटिसूत्र—[न०] नारा। कमरबन्द। कौंधनी। मेखला।

कटी—[स्त्री०] देखो 'कटि'। हाथी। पीपल नामक दवा। खदिर का वृक्ष।

कटीर, कटीरक—[पु०] गुफा। गुहा। कमर। चूतड़। जंघा। पेड़ू। कूल्हा।

कटु, कटुक—[पु०] कड़ुआ। चरपरा। दूषण। बुरा। दुर्गन्ध। सुगन्ध। भयङ्कर। अप्रिय। तेज। विरस। बद ज़ायका। आक का पेड़। चम्पा का वृक्ष। पीली सरसों। दूसरों की उन्नति न देख सकनेवाला। [स्त्री०] लता। बेल। राई।

कटुता—[स्त्री०] कड़ुआपन। तीखापन। कटुत्व। तीव्रता। तेज़ी। कड़ापन। कर्कशता। नाराज़गी। अप्रियता।

कटुतुम्बी—[स्त्री०] कड़वी लौकी। कटुकालावु।

कटुत्रय—[पु०] तीन कड़वी चीजों का समूह। सोंठ। मिर्च और पीपल (कटुत्रिक)।

कटुभाषी—[त्रि०] कड़ुवा या कर्कश बोलनेवाला। अप्रिय बात कहनेवाला।

कटुर—[पु०] देखो "कट्वर"।

कटूक्ति—[स्त्री०] अप्रिय कथन। कड़वी बात।

कटोरा—[स्त्री०] कटोरा नामक बर्तन।

कट्वर—[न०] छाछ। मठा। चटनी। मसाला। दही की मलाई।

कठ—[पु०] एक ऋषि का नाम। ऋग्वेद की एक शाखा। कठ शाखा का पढ़नेवाला। ब्राह्मण। एक उपनिषद्। एक प्रकार का स्वर।

कठिन—[त्रि०] कठोर। कड़ा। बेरहम। क्रूर। दृढ़। मजबूत। रोका हुआ। बूढ़ा। मिट्टी की हाड़ी। दुर्बोध। तीक्ष्ण। पैना। असत्य। घनी झाड़ी।

कठिनता—[स्त्री०] कड़ापन। दृढ़ता।

क्रूरता। तीक्ष्णता। दुःसहता। दुर्बोधता। भयानकता।

कठोर—[त्रि०] कठिन। कड़ा। निर्दय। पूर्ण। पूरा। भरा हुआ। पका हुआ। पुराना। कठिनाई से समझ में आनेवाला। रोक लगानेवाला।

कठोरता—[स्त्री०] कठिनाई। कड़ापन। निर्दयता। दुर्बोधता। भयानकता।

कडङ्गर—[पु०] भुस। भूसा।

कडङ्गरीय—[त्रि०] भूसा खानेवाला। पशु। डांगर।

कण—[पु०] धान्य आदि का सूक्ष्म अंश। कन। लेश। बहुत थोड़ा।

कणाद—[पु०] तर्क-शास्त्र के रचयिता एक ऋषि।

कणिक—[पु०] मैदा। कनिक। सूक्ष्म अंश। वैरी। धान्य।

कणिका—[स्त्री०] किनका। टुकड़ा। बारीक हिस्सा।

कण्व—[पु०] शकुन्तला का पालन करनेवाले ऋषि। [न०] पाप।

कण्टक—[पु० न०] काँटा। रोमांच। सुई की नोक। छोटा शत्रु। विघ्न। विघ्नकर्ता। कवच।

कण्टकित—[त्रि०] रोमाञ्चित। पुलकित। काँटेदार।

कण्ठ—[पु०] गला। गले का शब्द। समीप।

कण्ठगत—[त्रि०] गले में अटका हुआ।

कण्ठाग्र—[त्रि०] कण्ठस्थ। जुबानी।

कण्ठीरव—[पु०] सिंह। मस्त हाथी। कबूतर।

कण्डन—[न०] कूटना। छरना। धान से भुसी अलग करना।

कण्डनी—[स्त्री०] जिसमें धान्यादि कूटे जाते हैं। ओखली। उलूखल।

कण्डिका—[स्त्री०] वेद का एक भाग।

कण्डु, कण्डू—[स्त्री०] खाज। खुजली। खुजाना।

कण्डूति—[स्त्री०] **कण्डूयन**—[न०] खुजली। खुजाना।

कतम—[त्रि०] बहुतों में से एक। कौन सा।

कतर—[त्रि०] दो में से कौन।

कति—[त्रि०] कितने। (संख्या और परिमाण दोनों में)

कतिचित्—[अव्य०] कुछ। थोड़े से।

कतिपय—[त्रि०] कितने ही। कई एक। कुछ थोड़े से।

कथक—[त्रि०] कथा कहनेवाला। कहानी सुनानेवाला। पुराण सुनाकर जीविका करनेवाला। वक्ता। कहनेवाला। [पु०] पौराणिक।

कथन—[पु०] कहना। बखान। वर्णन। बात। उक्ति।

कत्थन—[त्रि०] बड़ाई करनेवाला। प्रशंसा करनेवाला।

कथम्—[अव्य०] कैसे। किस प्रकार।

कथङ्कारम्—[अव्य०] किस प्रकार। किस तरह से।

कथञ्चन—[अव्य०] किस तरह। कैसे।

कथञ्चित्—[अव्य०] कठिनता से। मुश्किल से। किसी तरह। बड़ी सावधानी से।

कथमपि—[अव्य०] किसी तरह। बड़े यत्न से। बड़ी कोशिश के साथ।

कथनीय—[त्रि०] कहने योग्य। वर्णन करने योग्य। निन्दनीय। बुरा।

कथा—[स्त्री०] कहानी। इतिहास। बात। चर्चा। समाचार। हाल। कहासुनी। धर्म-विषयक व्याख्यान।

कथानक—[न०] आख्यान। कहानी। छोटी कहानी। नाटक या उपन्यास का सार।

कथाप्रसङ्ग—[त्रि०] अधिक बात करनेवाला। बहुत बोलनेवाला। विषवैद्य। साँप काटे आदि का इलाज करनेवाला। वार्ता। कहानी का सिलसिला। कहानी। पागल।

कथामुख—[पु०] कथा-ग्रंथ की प्रस्तावना।

कथावस्तु—उपन्यास, नाटक या कहानी का ढाँचा।

कथित—[त्रि०] कहा हुआ। उक्त।

कथोपकथन—[न०] परस्पर बातचीत करना। कहना और सुनना। वाद-विवाद।

कदध्वा—[पु०] कुपथ। कुमार्ग। बुरा रास्ता। विपथ।

कदन—[न०] लड़ना। मारना। नष्ट करना। पाप। दुःख। विनाश। मृत्यु। मर्दन। युद्ध।

कदन्न—[न०] बुरा अन्न। मोटा अनाज। कोदो, मटर आदि।

कदम्ब—[पु०] एक प्रसिद्ध वृक्ष। [न०] झुण्ड। समूह। समुदाय।

कदम्बक—[न०] समूह। झुण्ड।

कदर्थ—[त्रि०] निरर्थक व्यर्थ। कूड़ा-करकट। निकम्मा। बुरा। कुत्सित। बुरा अर्थ। बुरे अर्थवाला।

कदर्थित—[त्रि०] घृणित। तिरस्कृत। दुर्गति किया हुआ। जिसकी दुर्दशा की गई हो।

कदर्य—[त्रि०] जो सम्पन्न होकर भी दान न करे। जो धर्माधर्म का विचार न करके धन एकत्र करता है। नीच। कमीना। क्षुद्र। लोभी। कंजूस।

कदली—[स्त्री०] केला। रम्भा। पताका। झण्डी। एक प्रकार की हरिणी।

कदा—[अव्य०] किस समय। कब।

कदाकार—[त्रि०] बुरी सूरत का। बदशकल।

कदाचन—[अव्य०] किसी न किसी समय। किसी वक्त। कभी। शायद।

कदाचार—[पु०] बुरा चालचलन।

बुरा आचरण।

कदाचित—[अव्य०] कभी। शायद।

कदापि—[अव्य०] कभी। किसी समय भी। किसी तरह भी। हर्गिज़।

कदुष्ण—[न०] थोड़ा गरम। गुनगुना

कनक—[न०] स्वर्ग। सोना। धतूरा। टेसू। नागकेसर। खजूर।

कनिष्ठ—[त्रि०] सबसे छोटा। बहुत छोटा। बहुत थोड़ा। पीछे पैदा होनेवाला।

कनिष्ठा—[स्त्री०] छोटी। बहुत छोटी। सबसे छोटी। छोटी बहिन। अनेक विवाहित स्त्रियों में सबसे पीछे विवाही गयी स्त्री। वह नायिका जिस पर नायक का सबसे कम प्रेम हो। सबसे छोटी अँगुली। कनी अंगुली। छिगुनी।

कनिष्ठिका—[स्त्री०] छोटी अंगुली। छिगुनी।

कनीनिका—[स्त्री०] आँख की पुतली। कनिष्ठा अंगुलि। कन्या।

कनीयान्[त्रि०] अत्यन्त युवा। बहुत थोड़ा। दो में से छोटा।

कन्द—[पु० न०] ओषधियों की जड़। जड़ में उत्पन्न होनेवाली गूदेदार और बिना रेशे की वस्तु, जैसे—आलू, शकरकन्द आदि। शकर का एक भेद। [पु०] बादल।

कन्दर—[पु० न०] गुफा। खोह। [पु०] अंकुश। [न०] अदरख। [स्त्री०] कन्दरा। पहाड़ की गुफा।

कन्दर्प—[पु०] मदन। कामदेव। अनङ्ग।

कन्दुक—[पु०] गेंद। गोल तकिया। गेंदुआ। सुपारी। [न०] अंकुर।

कन्धर—[पु०] मेघ। बादल। कन्धा। गर्दन। कन्धरा। [स्त्री०] गर्दन। ग्रीवा।

कन्यका, कन्या—[स्त्री०] पुत्री। बेटी; कुमारी। लड़की। अविवाहिता पुत्री। देवी। एक तीर्थ-विशेष। एक तरह की नायिका। बड़ी इलायची।

कपट—[पु० न०] छल। धोखा। दम्भ। ठगी। लुचपना। धूर्तता। मतलब सिद्ध करने के लिए मन के भाव को छिपाना।

कपटी—[त्रि०] कपट करनेवाला। धूर्त। मायावी। लुच्चा। छलिया।

कपर्द, कपर्दक—[पु०] शिवजी का जटाजूट। कौड़ी।

कपर्दिका—[स्त्री०] कौड़ी।

कपर्दिनी—[स्त्री०] दुर्गा। देवी।

कपर्दी—[पु०] महादेव। एकादश रुद्रों में से एक।

कपाट—[पु०] किवाड़। फाटक।

कपाटघ्न—[पु०] किवाड़ तोड़नेवाला। चोर।

कपाल—[पु० न०] घड़े का टुकड़ा। खपरा। खप्पर। खोपड़ी। ललाट। मस्तक। भाग्य। यज्ञ में देवताओं के लिए पुरोडाश पकाने का पात्र।

कपालभृत्, कपालमाली—[पु०] जो खोपड़ियों की माला पहनता है। जो हड्डी का पात्र धारण करता है, महादेव।

कपालिका—[स्त्री०] खोपड़ी। छोटा खप्पर। फूटे घड़े के छोटे टुकड़े; काली। रणचंडी। दाँतों में होनेवाला एक प्रकार का रोग।

कपालिनी—[स्त्री०] कपाल धारण करनेवाली। खप्परधारिणी। दुर्गा। काली।

कपाली—[पु०] महादेव। भैरव। खप्पर लेकर माँगनेवाला। एक वर्ण-संकर जाति।

कपि—[पु०] वानर; बन्दर; हाथी। सूर्य। बराह। विष्णु। लाल चन्दन। धूप।

कपिकेतन—[पु०] जिसकी ध्वजा में कपि (हनुमान) का चिह्न हो। अर्जुन। कपिध्वज।

कपिञ्जल—[पु०] चातक। पपीहा। सफेद तीतर। एक मुनि।

कपित्थ—[पु०] कैथ का वृक्ष। [न०] कैथ का फल।

कपिध्वज—[पु०] कपिचिह्नित ध्वजा-वाला। अर्जुन।

कपिल—[पु०] सांख्य-शास्त्र के बनाने-वाले मुनि। अग्नि। वामदेव। कुत्ता। पीला रंग। एक दैत्य। [त्रि०] पीले रंगवाला। [स्त्री०] कपिला—पीले रंग की गौ। एक नदी। सुगन्धित वस्तु। पुण्डरीक नामक दिग्गज की हथनी। दक्ष कन्या।

कपीन्द्र, कपीश—[पु०] हनुमान। सुग्रीव। बन्दरों का स्वामी।

कपूय—[त्रि०] निन्द्य। अधम। कमीना।

कपोत—[पु०] कबूतर। पक्षी। चिड़िया।

कपोल—[पु०] गण्ड। गाल।

कपोलकल्पना—[स्त्री०] मनगढ़न्त। बनावटी बात। गप्प।

कबन्ध—[पु०] शिररहित धड़। रुण्ड। राहु। इस नाम का एक राक्षस। [न०] जल।

कबरी—[स्त्री] स्त्रियों के बालों की वेणी।

कमठ—[पु०] कछुआ। कच्छप। [न०] संन्यासियों का जलपात्र।

कमण्डलु—[पु० न०] संन्यासियों का जलपात्र। मिट्टी, तूम्बी अथवा दरियाई नारियल का बना वर्तन, जिसे संन्यासी लोग रखते हैं।

कमनीय—[त्रि०] कामना करने योग्य। चाहने लायक। मनोहर। सुन्दर।

कमनीयता—[स्त्री०] सुन्दरता।

ख़ूबसूरती । मनोहरता ।

कमल—[न०] इस नाम का एक फूल जो पानी में होता है । जल । ताम्बा । औषध । एक प्रकार का मृग । सारस नामक पक्षी ।

कमलयोनि—[पु०] ब्रह्मा ।

कमला—[स्त्री०] लक्ष्मी । सम्पत्ति । सुन्दरी स्त्री । नींबू की जाति का एक बड़ा फल । सन्तरा ।

कमलालया—[स्त्री०] कमल जिसका आलय (घर) है, लक्ष्मी ।

कमलासन—[पु०] ब्रह्मा । योग का एक आसन—पद्मासन ।

कमलिनी—[स्त्री०] छोटा कमल । स्त्रीजाति का कमल । वह तालाब जिसमें बहुत से कमल हों ।

कम्प—[पु०] । कम्पन । [न०] काँपना । हिलना । थरथराना ।

कम्पायमान—[त्रि०] हिलता हुआ । काँपता हुआ । डरा हुआ ।

कम्पित—[त्रि०] काँपता हुआ । चञ्चल । भयभीत । डरा हुआ ।

कम्बु—[पु० न०] शंख । हाथी । घोंघा । हाथ में पहनने का भूषण । कड़ा । चूड़ी । रंग-विरंगा ।

कम्बुक—[त्रि०] नीच । अधम । [पु०] शंख ।

कम्बू—[त्रि०] चोर । [पु०] कंकड़ ।

कम्बोज—[पु०] एक देश का नाम । एक प्रकार का शंख । एक प्रकार का हाथी ।

कर—[पु०] हाथ । किरण । हाथी की सूँड़ । ओला । पत्थर । टैक्स । महसूल । छल । पाखण्ड ।

करक—[पु०] वर्षोपल । ओला । कमण्डलु । अनार । कचनार । मौलसिरी । करील ।

करका—[स्त्री०] ओला ।

करण—[न०] क्रिया का साधन । इन्द्रियाँ । व्याकरण में तीसरा कारक । हथियार । औज़ार । शरीर । क्रिया । कार्य । ज्योतिष में तिथियों का एक भाग ।

करतल—[पु०] हाथ की हथेली ।

करपल्लव—[पु०] हाथ की उँगलियाँ ।

करपाल—[पु०] तलवार ।

करपालिका, करपाली—[स्त्री०] छोटी तलवार । छुरी ।

करपुट—[न०] दोनों हथेलियों का मिलाना । हाथ जोड़ना । अञ्जलि बनाना ।

करपृष्ठ—[पु०] हथेली के पीछे का भाग ।

करभ—[पु०] हाथी का बच्चा । ऊँट का बच्चा । पौंचे से लेकर छिगुनी उँगली तक हथेली का बाहरी हिस्सा ।

करभोरु—[पु०] हाथी की सूँड़ जैसी जंघा । [स्त्री०] सुन्दर जाँघवाली ।

करमाला—[स्त्री०] हाथ की उँगलियों की पोर, माला के अभाव में जिन पर गिनकर जप किया जाता है ।

करमाली—[पु०] सूर्य ।

करमूल—[न०] हाथ का मूल । मणिबन्ध । पौंहचा ।

कररुह—[पु०] नख । नाखून । नह ।

करवाल—[पु०] तलवार ।

करशाखा—[स्त्री०] हाथ की उँगलियाँ ।

कराल—[त्रि०] भयङ्कर । विकट । भयानक । डरावना । बड़े-बड़े दाँतों वाला । लम्बा-चौड़ा ।

कराली—[स्त्री०] चण्डिका । अग्नि की ज्वाला ।

करावलम्ब—[त्रि०] दूसरे के हाथ का सहारा ।

करिणी [स्त्री०] हथिनी ।

करी—[पु०] हाथी ।

करीष—[पु० न०] सूखा गोबर । अरना कण्डा ।

करुण—[त्रि०] दयालु । करुणायुक्त । [पु०] काव्य में एक रस । दीन । अनाथ । दुःखी ।

करुणा—[स्त्री०] दया । रहम । तरस । वह मनोभाव जो दूसरों को दुःखी देखकर उत्पन्न होता है ।

करुणादृष्टि—[स्त्री०] दयादृष्टि ।

करुणानिधान—[त्रि०] जिसका हृदय करुणा से भरा हो । अत्यन्त दयालु ।

करुणामय—[त्रि०] बहुत दयावान् । अत्यन्त दयालु ।

करेणु—[पु०] हाथी । [स्त्री०] हथिनी ।

कर्क—[पु०] केंकड़ा । बारह राशियों में से चौथी राशि । अग्नि । दर्पण । सफेद घोड़ा । घड़ा । कण्टक । काँटा ।

कर्कट—[पु०] कर्क राशि । केंकड़ा । एक प्रकार का सारस । छोटा आँवला । सेमर का पेड़ । लौकी । घीया । कमल की जड़ । भसींड़ा ।

कर्कन्धु, कर्कन्धू—[पु० स्त्री०] बेर का फल । उन्नाव ।

कर्कश—[त्रि०] कठोर । तेज़ । क्रूर । प्रचण्ड । ईख । गन्ना । तलवार । निर्दय । बेरहम ।

कर्कशता—[स्त्री०] कठोरता । क्रूरता । कड़ापन । खरखरापन ।

कर्कशा—[स्त्री०] झगड़ालू । लड़ाका । क्रूर स्वभाववाली ।

कर्ण—[पु०] कान । सुनने की इन्द्रिय । अंग देश का राजा । कुन्ती का पुत्र जो दान के लिए प्रसिद्ध है । चौकोर क्षेत्र में आमने सामने के एक कोने से दूसरे कोने तक खींचा गई रेखा । नाव चलाने की लकड़ी—पतवार ।

कर्णकटु—[त्रि०] जो सुनने में कड़ुवा लगे । जो कान को अप्रिय लगे । कर्कश ।

कर्णकुहर—[पु०] कान का छेद । कान

के भीतर की पोल।

कर्णगूथ—[न०] कान का मैल। ठेक।

कर्णधार—[पु०] माँझी। नाव खेनेवाला।

कर्णपूर—[पु०] कान का आभूषण। नीले रंग का कमल। सिरस का फूल।

कर्णवेध—[पु०] वह संस्कार जिसमें बालकों के कान छेदे जाते हैं। कनछेदन।

कर्णशष्कुली—[स्त्री०] कान का छेद कान के भीतर का पोल।

कर्णाट—[पु०] एक देश जिसे कर्णाटक भी कहते हैं। एक राग जिसमें सातों स्वरों का प्रयोग होता है।

कर्णाटी—[स्त्री०] कर्णाट (कर्णाटक) देश की स्त्री। कर्णाट देश की भाषा। एक रागिनी। शब्दालंकार की एक वृत्ति जिसमें कवर्ग का ही प्रयोग होता है।

कर्णान्तिक—[त्रि०] कान के समीप। कान के पास।

कर्णिका—[स्त्री०] हाथी के सूँड़ की नोंक। हाथ की बीचवाली उँगली। कान का भूषण। करनफूल। कमल-पुष्प के बीच का भाग जिसमें बीज होते हैं। लेखनी। कलम। सफेद रंग का गुलाब-सेवती। एक योनि-रोग।

कर्णिकार—[पु०] कनेर का वृक्ष। कनेर का फूल। कनकचम्पा।

कर्णेजप—[त्रि०] कान में धीरे से कहनेवाला। चुगलखोर। बुरी सलाह देनेवाला। खल। नीच।

कर्णोपकर्णिका—[स्त्री०] गप्प। अफवाह। खबर।

कर्तन—[न०] कतरना। काटना। सूत कातना। कर्तनी। [स्त्री०] कैंची। कतरनी।

कर्तरिका, कर्तरी—[स्त्री०] छुरी। बर्छी। कटारी। कैंची। कतरनी। काती।

कर्तव्य—[त्रि०] करने योग्य। धर्म। फ़र्ज़। अवश्य करने लायक।

कर्तव्यता—[स्त्री०] कर्तव्य का भाव। कर्मकाण्ड कराने की विधि।

कर्तव्यमूढ़—[त्रि०] जिसे यह न सूझ पड़े कि क्या करना चाहिए। भौचक्का।

कर्ता—[त्रि०] करनेवाला। रचनेवाला। बनानेवाला। ईश्वर। व्याकरण में पहला कारक।

कर्तृक—[त्रि०] किया हुआ। सम्पादित। बनाया हुआ।

कर्तृत्व—[न०] कर्ता का भाव। कर्ता का धर्म। करने की शक्ति।

कर्दम—[पु०] कीचड़। पाप। इस नाम के एक मुनि। कपिल मुनि के पिता। स्वायंभुव मन्वन्तर में हुए एक प्रजापति। [न०] मांस।

कर्पट—[पु० न०] जीर्ण वस्त्र। फटे हुए कपड़े। गूदड़। चिथड़े। चिंधी। हाथ में रखने का कपड़ा। रूमाल।

कर्पर—[पु०] खोपड़ी। खप्पर। कड़ाही। अंजीर का वृक्ष। एक प्रकार का शस्त्र।

कर्पास—[पु० न०] कपास।

कर्पूर—[पु० न०] कपूर।

कर्बुर—[त्रि०] अनेक रंग का। चितकबरा। [पु०] राक्षस। पाप। धतूरा। साठी धान [न०] स्वर्ण। सोना। जल।

कर्म—[न०] जो किया जाय। कार्य। काम। व्याकरण में दूसरा कारक। भाग्य। प्रारब्ध। मृतक-संस्कार।

कर्मकर—[पु०] यमराज। [त्रि०] नौकर। वेतन लेकर काम करनेवाला।

कर्मकाण्ड—[पु०] कर्म-समूह। कर्म को बतानेवाला वेद का भाग। धर्म-सम्बन्धी काम। यज्ञादि कर्म। वह शास्त्र जिसमें यज्ञादि की विधि हो।

कर्मकाण्डी—[त्रि०] यज्ञादि कर्म करनेवाला या करानेवाला।

कर्मकार—[त्रि०] शिल्पी। लुहार, सुनार आदि। बैल। नौकर। सेवक। बिना मजदूरी के काम करनेवाला। बेगारी।

कर्मक्षेत्र—[न०] काम करने के लिए उपयुक्त स्थान। भारतवर्ष। हिन्दुस्तान।

कर्मठ—[त्रि०] काम करने में चतुर। नियमपूर्वक धर्म-सम्बन्धी कार्य करनेवाला। क्रियाकुशल। काम करने में चालाक। डटकर काम करनेवाला। कर्मशूर।

कर्मण्य—[त्रि०] सब काम करनेवाला। उद्योगी। प्रयत्नशील। काम में चतुर।

कर्मदोष—[पु०] भूल-चूक। किए हुए काम का बुरा परिणाम।

कर्मनिष्ठ—[त्रि०] नियम से धार्मिक कार्य करनेवाला। काम में संलग्न।

कर्मभूमि—[स्त्री०] कर्मक्षेत्र। भारतवर्ष। आर्यावर्त। हिमालय और विन्ध्याचल के बीच का प्रदेश।

कर्मयोग—[पु०] चित्त को निर्मल करनेवाला वेदविहित कार्य। फल की इच्छा न रखकर किया गया कर्तव्य कर्म।

कर्मविपाक—[पु०] पूर्वजन्म के भले-बुरे कर्मों का शुभाशुभ फल।

कर्मशील—[पु०] यत्नवान्। निष्काम भाव से कर्म करनेवाला।

कर्मशूर—[पु०] प्रारम्भ किये हुए काम को फल-प्राप्ति कालतक करनेवाला। साहस और दृढ़ता के साथ कार्य समाप्त करनेवाला। कर्मठ।

कर्मसचिव—[पु०] सहकारी मन्त्री। सहायक मन्त्री।

कर्मसंन्यास—[पु०] कर्म का त्याग। कर्म के फल का त्याग।

कर्मसाक्षी—[त्रि०] जिसके सामने कर्म किया गया हो। काम का गवाह। पृथ्वी, सूर्य, चन्द्र, वायु, यम, काल, तेज, जल, आकाश ये नौ

कर्मसाक्षी कहलाते हैं।

कर्महीन—[त्रि०] जिसने शुभ कर्म न किये हों। अभागा। बदकिस्मत।

कर्मिष्ठ—[त्रि०] कर्मनिष्ठ। काम करनेवाला। काम में चतुर।

कर्मीर—[त्रि०] अनेक वर्ण का। चित्र-विचित्र। चितकबरा।

कर्मेन्द्रिय—[न०] कर्म करने में सहायक इन्द्रियाँ। हाथ, पाँव, वाणी, पायु, उपस्थ इन पाँच इन्द्रियों से पकड़ना, चलना आदि क्रियाएँ की जाती हैं।

कर्षक—[पु०] खींचनेवाला। किसान। हल जोतनेवाला।

कर्षण—[न०] खींचना। हल जोतना। सुखाना।

कर्हिचित्—[अ०] किसी समय। कभी।

कल—[पु०] मधुर और अव्यक्त शब्द। मीठी और धीमी आवाज। साल का पेड़। अजीर्ण। बदहज़मी।

कलकण्ठ—[पु०] जिसका कण्ठ-स्वर मीठा हो। कोयल। हंस। पारावत। कबूतर।

कलकल—[पु०] कोलाहल। बहुत से धीमें धीमें शब्दों को मिलकर उत्पन्न हुआ शब्द।

कलङ्क—[पु०] बदनामी। ऐब। दोष। दाग़। लांछन। कालिख। चिह्न। अपयश। बेइज्जती।

कलङ्कित—[त्रि०] जिसे कलङ्क लगा हो। लांछित। दोषयुक्त। धब्बोंवाला। दोषी। अपराधी। कलङ्की।

कलत्र—[न०] पत्नी। भार्या। अपनी स्त्री। नितम्ब। चूतड़।

कलधौत—[न०] जिसका मैल धुल गया हो। निर्मल। सोना। चाँदी।

कलन—[पु०] गिनना। पकड़ना। चिह्न। दाग। एक महीने का गर्भ। बेंत का वृक्ष।

कलभ—[पु०] हाथी का बच्चा। धतूरे का पेड़। साँप। जो दमन न किया जा सके। दुर्दान्त।

कलम—[पु०] लेखनी। चोर। लाल रंग के चावल। साठी चावल।

कलरव—[पु०] मधुर शब्द। मीठे शब्दवाला। कोयल। मोर। कबूतर।

कलश—[पु०] घड़ा। गगरा। जल का पात्र।

कलह—[पु० न०] लड़ाई। झगड़ा। विवाद। युद्ध। तलवार का म्यान।

कलहंस—[पु०] मीठी आवाजवाला हंस। राजहंस। राजाओं में श्रेष्ठ। चक्रवर्ती राजा। ब्राह्मण। परमेश्वर।

कला—[स्त्री०] अंश। भाग। चन्द्रमा का सोलहवाँ भाग। सूद। ब्याज। नौका। स्त्री का रज। कपट। राशि के तीसवें अंश का साठवाँ भाग। छन्दः शास्त्र में मात्रा। किसी कार्य के करने की चतुराई। कौशल। फ़न। कामशास्त्र की चौंसठ कलाएँ। जिह्वा। विभूति। शोभा। तेज। छटा। छल। कपट। सामर्थ्य। संख्या। मरीचि ऋषि की पत्नी।

कला-कौशल—[पु०] हुनर। दस्तकारी। कारीगरी। शिल्प।

कलाधर—[पु०] चन्द्रमा। शिवजी। कलाओं का जानने वाला।

कलानिधि—[पु०] चन्द्र।

कलाप—[पु०] समूह। झुण्ड। आभूषण। चन्द्रहार। कोंधनी। मेखला। मोर की पूछ। तरकस। चन्द्रमा। संस्कृत का एक व्याकरण।

कलापी—[पु०] मयूर। मोर। बड़ का पेड़। कोयल।

कलापिनी—[स्त्री०] मोरनी। मयूरी। रात्रि।

कलापूर्ण—[त्रि०] कारीगरी से युक्त। कुशलतापूर्वक बनाया गया। [पु०] चन्द्रमा।

कलावती—[स्त्री०] तुम्बुरु नामक गन्धर्व की वीणा। अप्सरा। गंगा। द्रुमिल नामक राजा की पत्नी। राधा की माता।

कलि—[पु०] चौथा युग। झगड़ा। लड़ाई। शूर। बहादुर। बहेड़ा।

कलिका—[स्त्री०] बिना खिला हुआ फूल।

कलित—[त्रि०] युक्त। कहा गया। गिना गया। बाँधा हुआ। विचारा हुआ। जाना हुआ। लिया हुआ। पाया हुआ। मुँह ही मुँह में बोला हुआ। निकाला हुआ। फाड़ा हुआ।

कलिन्द—[पु०] सूर्य। एक पर्वत जिसमें से यमुना निकली है। बहेड़ा।

कलिन्द-कन्या—[स्त्री०] यमुना। कलिन्दजा। कालिन्दी।

कलुष—[पु०] पाप। मैलापन। क्रोध भैंसा। [त्रि०] मलिन। मैला। पापी। दोषी। निन्दित। बुरा।

कलुषित—[त्रि०] मैला। पापी। दूषित। दुःखी। असमर्थ। क्षुब्ध। काला।

कलेवर—[न०] देह। शरीर। जिस्म। चोला।

कल्क—[पु०न०] पाखण्ड। पाप। मैल। विष्ठा। ढोंग। गर्व। पीसा हुआ पदार्थ। चूर्ण। चटनी। पिट्ठी। बहेड़ा। तुरुष्क नामक सुगन्धित पदार्थ।

कल्कि, कल्की—[पु०] विष्णु का दशवां अवतार जो आगे होनेवाला है।

कल्प—[पु०] विधि। विधान। प्रलय। ब्रह्मा का एक अहोरात्र जिसमें चार अरब बत्तीस करोड़ मानव वर्ष होते हैं। सदृश। तुल्य। छः वेदाङ्गों में से एक। आयुर्वेद में चिकित्सा का एक प्रकार। विकल्प।

कल्पवृक्ष । प्रतिज्ञा । गहन । कला-कुशल ।

कल्पतरु—[पु०] इच्छित फल देनेवाला कल्पवृक्ष । कल्पद्रु । कल्पद्रुम । सुरतरु । देवताओं का वृक्ष ।

कल्पन—[न०] **कल्पना**—[स्त्री०] अनुमान । मान लेना फ़र्ज़ कर लेना । रचना । बनाना । काटना । विचारना । मनगढ़न्त ।

कल्पान्त—[पु०] प्रलय । नाश ।

कल्पित—[त्रि०] मनमाना । मनगढ़न्त । बनावटी । नकली । फ़र्ज़ी । बनाया हुआ । तयार किया हुआ । रचा हुआ ।

कल्मष—[न०] पाप । [पु०] एक नरक । [त्रि०] मैला । पापी ।

कल्माष—[पु०] एक राक्षस । चित-कबरा । रंग-बिरंगा । काला ।

कल्य—[न०] प्रातःकाल । सवेरा । मधु । शराब । [त्रि०] तैयार । मंगल-वचन । स्वस्थ । नीरोग ।

कल्याण—[न०] शुभ । मंगल । प्रसन्नता । सोना । [त्रि०] प्रसन्न । खुश । अच्छा ।

कल्याणी—[त्रि०] कल्याण करनेवाली । मंगल करनेवाली । सुखदायक । सुन्दरी ।

कल्लोल—[पु०] बड़ी-बड़ी लहरें । ऊँची-ऊँची तरंगें । आनन्द । प्रसन्नता । हर्ष । [त्रि०] शत्रु । वैरी ।

कल्लोलिनी—[स्त्री०] नदी ।

कवच—[पु०] युद्ध के समय शरीररक्षा के लिये पहना जानेवाला लोहे का बना कुरता । सन्नाह । जिरह-बक्तर । सँजोआ । वर्म । युद्ध के समय बजनेवाला बड़ा नगाड़ा । तन्त्रशास्त्र में शरीर-रक्षा के लिए पढ़े जानेवाले कुछ मन्त्रों का समूह । रक्षा-मन्त्र लिखा हुआ ताबीज ।

कवल—[पु०] ग्रास । गस्सा । कौर । एक तरह की मछली ।

कवलित—[त्रि०] खाया हुआ । ग्रास किया हुआ । भक्षित । फैला हुआ । व्याप्त ।

कवाट—[न०] किवाड़ ।

कवि—[पु०] काव्य रचनेवाला । सूक्ष्म अर्थ को देखनेवाला । वाल्मीकि मुनि । शुक्राचार्य । सूर्य । ब्रह्मा । [त्रि०] विद्वान् । [स्त्री०] घोड़े की लगाम ।

कविता—[स्त्री०] काव्य । कवित्व । वह सुन्दर पद्यात्मक वर्णन जिसे पढ़ने या सुनने से हृदय पर प्रभाव पड़ता है ।

कवोष्ण—[न०] थोड़ा गरम । गुनगुना ।

कव्य—[न०] पितरों के निमित्त दिया गया भोजन-द्रव्य ।

कश—[पु०] **कशा**—[स्त्री०] चाबुक । कोड़ा । हण्टर ।

कशिपु—[पु०] अन्न । भोजन । वस्त्र-कपड़ा ।

कश्चन—[अव्य०] कोई । **कश्चित्**—[अव्य०] कोई ।

कश्मल—[न०] पाप । मूर्छा । मोह । [स्त्री०] मैल ।

कश्मीरजन्मा—[पु०] कश्मीर में उत्पन्न होता है । कुंकुम । केसर । कश्मीरज ।

कष—[न०] कसौटी । शान ।

कषाय—[त्रि०] कसैला । रँगा हुआ । लाल रंग का । [पु०] क्रोध । गाढ़ा रस । गोंद । काढ़ा ।

कषायित—[त्रि०] लाल पीले रंगवाला । जो कसैला हो गया हो ।

कष्ट—[न०] क्लेश । दुःख । संकट । मुसीबत । व्यथा । पीड़ा । [त्रि०] जंगल ।

कष्टकल्पना—[स्त्री०] खींच-तान कर के किसी बात को सिद्ध करने की विधि । अभीष्ट अर्थ सिद्ध करने के लिए किसी चीज़ का उलटा सीधा सम्बन्ध मिलाना ।

कष्टसाध्य—[त्रि०] जो कठिनाई से किया जा सके । मुश्किल से होनेवाला ।

कस्तूरिका—[स्त्री०] कस्तूरी । मृग-नाभि में से निकला हुआ सुगन्धित द्रव्य ।

काक—[पु०] कौआ । काग । लंगड़ा ।

काकतालीय—[न०] अचानक हो जाने-वाली बात । जिस घटना के हो जाने की किसी ने कल्पना भी न की हो । ताल वृक्ष पर बैठे हुए कौए के उड़कर जाते ही ताल वृक्ष गिर पड़े—यह काकतालीय न्याय कहाता है । संयोगवश होने-वाली घटना ।

काकपक्ष—[पु०] छोटे बालकों के रखाए हुए बाल । कुल्ला । पट्टे । जुल्फें ।

काकपद—[पु०] वह चिह्न जो लिखी हुई पंक्ति में से छूटे हुए शब्द का स्थान बनाने के लिए पंक्ति के नीचे बनाया जाता है (‸) ।

काकपुष्ट—[पु०] काक द्वारा पुष्ट किया गया । कौआ द्वारा पाला गया । कोयल ।

काकली—[स्त्री०] धीमी और मीठी आवाज़ । मधुर कण्ठ-स्वर ।

काकाक्षिगोलकन्याय—[पु०] जैसे कौआ की एक आँख (देखनेवाली पुतली) दोनों अक्षिगोलकों में घूम जाती है । उसी तरह किसी एक शब्द या वाक्य को घुमा-फिराकर दो अर्थों में लगाना ।

काकु—[स्त्री०] वक्रोक्ति । व्यंग्य । छिपी हुई चुटीली बात । अलङ्कार का एक भेद जिसमें शब्द के उच्चारण के ढंग से उसका दूसरा अर्थ लगाया जाता है । भय अथवा शोक के कारण कण्ठ-स्वर का बदल जाना ।

काकुत्स्थ—[पु०] सूर्यवंशी राजा (ककुत्स्थ) जो अयोध्या में राज्य करते थे । उनके वंशधर रघु, अज, दशरथ, रामचन्द्र आदि सब काकुत्स्थ कहाते हैं ।

काकुद—[न०] तालु । तलुआ ।

मुख के भीतर का वह स्थान जहाँ जीभ रहती है।

काकोदर—[पु०] साँप। सर्प।

काकोलूकीय—[न०] कौआ और उल्लू का सा वैर। पंचतन्त्र नामक ग्रन्थ का एक तन्त्र। जिसमें कार्को और उल्लुओं के युद्ध का वर्णन है।

कांक्षा—[स्त्री०] चाह। इच्छा।

काच—[पु०] काँच। शीशा। मोम। छींका। एक प्रकार की मणि। एक नेत्र रोग। खार।

काञ्चन—[पु०] सोना। कमलकेशर नागकेशर का फूल। धतूरा। चम्पा। गूलर। [न०] दीप्ति। चमक।

काञ्ची—[स्त्री०] स्त्रियों की कमर का भूषण। कौंधनी। एक लर का हार। चोंटनी। गुञ्जा। प्रसिद्ध सात पुरियों में से एक। नलैया।

काठिन्य—[न०] कठिनता। कठिनाई। निष्ठुरता। दुर्बोधपना।

काण—[त्रि०] एक आँखवाला। काना। [पु०] कौआ।

काण्ड—[पु० न०] थम्भा। खम्भा। वृक्ष की मोटी शाखा। बाण। अवसर। पत्थर। निर्जन स्थान। ग्रन्थ का एक भाग। तिनके आदि का गुच्छा। व्यापार। [पु०] अखरोट का वृक्ष। [न०] सेना।

कातर—[त्रि०] अधीर। डरा हुआ। व्याकुल। डरपोक। दुःखी। बेबस। चञ्चल। छोटी नौका। डोंगा। फूल।

कातरता—[स्त्री०] अधीरता। चञ्चलता। डरपोकपना।

कात्यायन—[पु०] धर्म-शास्त्र के रचयिता एक मुनि। कात्यायन व्याकरणकर्ता। वररुचि।

कात्यायनी—[स्त्री०] दुर्गा। पार्वती। प्रौढ़ा स्त्री। विधवा स्त्री।

कादम्ब—[पु०] कलहंस। बलाका। बगला। बाण। ईख। गन्ना।

कादम्बरी—[स्त्री०] सरस्वती। कोयल। मद्य। बाणभट्टरचित एक प्रसिद्ध ग्रन्थ।

कादम्बिनी—[स्त्री०] मेघमाला। बादलों की कतार। वह काली घटाएँ जिनमें बलाकाओं (सफेद पक्षियों) की पाँति उड़ती है।

कानन—[न०] वन। जंगल। घर। ब्रह्मा का मुख।

कानीन—[पु०] अविवाहिता लड़की की सन्तान। व्यास। कर्ण।

कान्त—[न०] कुङ्कुम। एक प्रकार का लोहा। [त्रि०] मनोहर। सुन्दर। बहुत प्यारा। [पु०] श्रीकृष्ण। चन्द्रमा। विष्णु। वसन्त ऋतु। शिवजी। हिज्जल नामक वृक्ष। कार्तिकेय। पति। [स्त्री०] नारी (कान्ता)।

कान्तार—[पु० न०] बहुत बड़ा वन। बीहड़ वन। कठिन मार्ग। बिल। छिद्र। गर्त। गढ़ा। [पु०] एक प्रकार का गन्ना। कचनार का पेड़। [न०] एक प्रकार का कमल।

कान्ति—[स्त्री०] शोभा। छवि। चमक। तेज। सौन्दर्य। अभिलाष। चाह।

कापटिक—[त्रि०] कपटी। छलिया।

कापट्य—[न०] कपटीपना। शठता। छल।

कापथ—[पु०] बुरा रास्ता। निन्दनीय मार्ग।

कापालिक—[पु०] शिव-भक्त। शैव। तांत्रिक साधु जो आदमी की खोपड़ी लिए रहते और मद्य-मांस का सेवन करते हैं।

कापुरुष—[पु०] कायर। डरपोक। भीरु। बुरा आदमी। नीच।

काम—[न०] शुक्र। वीर्य। प्रिय वस्तु की चाहना। विषय-भोग की इच्छा। धर्मादि चार पदार्थों में से एक। [पु०] कामदेव।

कामकला—[स्त्री०] कामदेव की स्त्री। रति।

कामचर, कामचार—[पु०] स्वेच्छाचारी। अपनी इच्छा से करनेवाला। [त्रि०] कामी।

कामजित्—[त्रि०] काम को जीतनेवाला। [पु०] महादेव। शिव। स्वामी कार्तिक। जिनदेव।

कामद—[त्रि०] इच्छा पूरी करनेवाला। इच्छानुसार देनेवाला। कामना पूर्ण करनेवाला।

कामदुघ—[त्रि०] इच्छित वस्तु देनेवाला।

कामदुघा—[स्त्री०] इच्छित वस्तु देनेवाली। कामधेनु।

कामदेव—[पु०] स्त्री-पुरुष के संयोग की प्रेरणा करनेवाला देवता। शुक्र। संयोग की इच्छा।

कामरूप—[त्रि०] मनचाहा रूप धारण करनेवाला। सुन्दर रूपवाला। [पु०] आसाम प्रान्त का एक जिला।

कामवाण—[पु०] कामदेव के वाण जो मोहन, उन्मादन, संतपन, शोषण और निश्चेष्टकरण ये पाँच हैं। जहाँ काम के वाण फूलों के माने गए हैं वहाँ लाल कमल, नील कमल, अशोक, आम्रमञ्जरी और चमेली ये पाँच वाण हैं।

कामशर—[पु०] काम के वाण। आम की मञ्जरी।

कामसू—[त्रि०] इच्छित वस्तु देनेवाला।

कामिनी—[स्त्री०] संभोग की इच्छा वाली स्त्री। स्त्री। सुन्दरी। मदिरा। डरपोक स्त्री।

कामी—[त्रि०] विषय-भोग की इच्छा

वाला। [पु०] चन्द्रमा। सारस। चिड़िया। कबूतर। चकवा।

कामुक—[त्रि०] विषयी। जिसे संभोग की अधिक इच्छा हो। [पु०] अशोक। माधवी लता। चिड़िया। चक्रवाक पक्षी।

कम्बोज—[पु०] कम्बोज देश का रहनेवाला। कम्बोज देश में उत्पन्न घोड़ा। पुन्नाग वृक्ष। म्लेच्छ-जाति-विशेष। सफेद कत्था।

काम्य—[न०] चाहने योग्य। चाहा गया काम। फल की इच्छा से किया गया काम। जिससे कामना की सिद्धि हो। [त्रि०] सुन्दर।

काम्यक—[न०] एक वन का नाम।

काय—[पु०] देह। शरीर। समूह। लक्ष्य। स्वभाव। मूल धन। प्राजापत्य विवाह। [न०] प्रजापति-सम्बन्धी। प्रजापति का हवि। प्रजापति तीर्थ या ब्राह्म तीर्थ जो कनिष्ठिका उँगली के मूल में है।

कायस्थ—[पु०] शरीर में ठहरने वाला। परमात्मा। मनुष्यों की एक बिरादरी।

कायिक—[त्रि०] जो शरीर द्वारा किया जाय। शरीर-सम्बन्धी। दैहिक।

कार—[पु०] करने वाला, जैसे–कुम्भकार। स्वर्णकार। कार्य, जैसे–उपकार। स्वीकार। एक शब्द जिसको अक्षर के आगे लगाने से केवल उसी अक्षर का बोध होता है, जैसे–ककार। ओकार। एक शब्द जिसे अनुकृत ध्वनि के आगे लगाने से ध्वनि का संज्ञा की भांति बोध होता है। जैसे–चीत्कार। फूत्कार। मारने लायक। निश्चय। बरफ से ढँका। पहाड़। बलि। पति।

कारक—[त्रि०] करनेवाला। [न०] व्याकरण में संज्ञा अथवा सर्वनाम का क्रिया से सम्बन्ध जोड़नेवाल। यह कर्ता, कर्म आदि भेद से सात प्रकार का है।

कारण—[न०] हेतु। निमित्त। साधन। इन्द्रियाँ। मूलतत्त्व। वजह। विष्णु। शिव।

कारणशरीर—[न०] लिंग देह। सुषुप्तावस्था का वह कल्पित शरीर जिसमें इन्द्रियों के विषय व्यापार का तो अभाव रहता है पर अहंकार रह जाते हैं।

कारण्डव—[पु०] हंस की जाति का एक पक्षी। बत्तख।

कारा—[स्त्री०] जेलखाना। कैदखाना। बन्दीगृह। दूती। वीणा का तुम्बा। पीड़ा। क्लेश।

कारागार—[न०] बन्दीखाना। जेलखाना।

कारिका—[स्त्री०] शिल्प। कारीगरी। पीड़ा। दर्द। नाई आदि का काम। नट की स्त्री। सूद। टीका।

कारी—[पु०] करनेवाला। बनानेवाला।

कारु—[त्रि०] शिल्पी। कारीगर। करनेवाला। [पु०] विश्वकर्मा।

कारुणिक—[त्रि०] दयालु। कृपालु। दयाशील। दया करनेवाला।

कारुण्य—[न०] करुणा का भाव। दया। मेहरबानी।

कार्कश्य—[न०] कठोरता। कर्कशपना। निर्दयता। क्रूरता।

कार्तवीर्य—[पु०] माहिष्मती नगरी का राजा। कृतवीर्य का पुत्र सहस्रार्जुन।

कार्तिकेय—[पु०] कार्तिक स्वामी। षडानन।

कार्पण्य—[न०] कृपणता। कंजूसपना। सूमपना। दीनता दुर्बलपना।

कार्मुक—[न०] धनुष। चाप। [पु०] बाँस। श्वेत खदिर। [त्रि०] काम करने में चतुर।

कार्य—[न०] काम। कर्त्तव्य। करने लायक। हेतु। कारण। प्रयोजन। विनश्वर। अवयववाला। विवाद। [त्रि०] कर्त्तव्य। करने योग्य।

कार्यकर्ता—[पु०] काम करनेवाला। कर्मचारी।

कार्यार्थी—[त्रि०] कार्य की सिद्धि चाहनेवाला। जिसे काम पूरा करने की धुन हो।

कार्श्य—[न०] दुबलापन। निर्बलता। [पु०] साल का वृक्ष। लकुच का वृक्ष।

काल—[पु०] समय। यम। मृत्यु। अवसर। मौका। दुर्भिक्ष। महँगी। शिवजी। शनि। कोयल। राल। विष्णु। [त्रि०] काले रंगवाला।

कालकूट—[पु० न०] एक प्रकार का जहर। भयंकर विष जो काल (शिवजी) को भी जला दे। मानो काल (मृत्यु) का समूह है। [पु०] एक देश का नाम।

कालक्षेप [पु०] दिन काटना। समय बिताना। गुजर-बसर करना।

कालचक्र—[पु०] समय का हेर-फेर। जमाने की गर्दिश।

कालपाश—[पु०] मृत्यु का फांस। यमराज का बन्धन। यमपाश।

कालयवन—[पु०] एक राक्षस का नाम।

कालयापन—[पु०] कालक्षेप। समय बिताना। वक्त गुज़ारना।

कालरात्रि—[स्त्री०] कल्प समाप्ति की रात जिसमें समस्त सृष्टि नष्ट हो जाती है। प्रलय की रात। भयंकर अँधेरी रात। दिवाली की रात। दुर्गा की एक मूर्ति। यमराज की बहन जो प्राणियों का संहार करती है।

कालाग्नि—[पु०] कालरूपी अग्नि। प्रलय की आग।

कालान्तर—[न०] दूसरा समय। आनेवाला या बीता हुआ समय।

कालिक—[त्रि०] काल-सम्बन्धी। समयोचित। जिसका समय नियत हो।

कालिका—[स्त्री०] देवी की एक मूर्ति। काली। नए बादल। स्त्री काक (काकी)। घंटा। स्याही। मदिरा।

आँख की काली पुतली। पटोल की शाखा। वृश्चिकपत्र वृक्ष। गीदड़ी। हरद।

कालिन्दी—[स्त्री०] यमुना नदी। कलिन्द नामक पर्वत से निकलनेवाली नदी।

कालिमा—[स्त्री०] कालौंछ। कालापन। कलङ्क। दोष। लांछन। अँधेरा।

काली—[स्त्री०] काले रंगवाली। देवी-विशेष। व्यासजी की माता सत्यवती। नए बादलों की कतार। निन्दा। गाली-गलौज। रात्रि। आग की जीभ।

कालीन—[त्रि०] काल-सम्बन्धी। जिसका समय नियत हो—जैसे सायंकालीन। वर्षाकालीन।

कालुष्य—[न०] मैलापन। कालापन।

काल्पनिक—[त्रि०] कल्पित। माना हुआ। मनगढ़न्त। [पु०] कल्पना करनेवाला।

काव्य—[पु०] शुक्राचार्य। स्तुतिपाठक। [न०] रसयुक्त वाक्य। वह ग्रन्थ जिसमें कवि की रचनाएँ हों। कवि का कार्य। कविता।

काश—[पु०] क्षत। घाव। एक घास—कास। खाँसी।

काश्मीर—[पु०] कश्मीर नामक देश। [न०] कश्मीर में होनेवाला, केसर। कमल की जड़। सुहागा। कश्मीर में रहनेवाला।

काश्यप—[पु०] कश्यप मुनि का बेटा या कश्यप के गोत्रमें उत्पन्न हुआ।

काश्यपि—[पु०] कश्यप का पुत्र अरुण। गरुड़।

काष्ठा—[स्त्री०] दिशा। सीमा। हद। समाप्ति। चिह्न। निशान। जल। सूर्य-चन्द्रमा की एक कला। समय का परिमाण जो कला का तीसवाँ भाग अर्थात् १८ निमिष के बराबर है। उत्कर्ष।

कास—[पु०] खाँसी।

कासार—[पु०] सरोवर। तालाब।

कासारि—[पु०] काश (श्वास) का शत्रु। काश-नाशक।

कासी—[त्रि०] कास रोगवाला। जिसे दमे की बीमारी हो।

कासीस—[पु०] एक उपधातु। कासीस नाम से प्रसिद्ध द्रव्य। तूतिया।

कासू—[स्त्री०] विकलता या घबराहट की आवाज़। बरछी। भाला। चमक। भाषा। बोली। बुद्धि। रोग।

कासृति—[स्त्री०] टेढ़ी चाल। बुरा आचरण।

काहल—[पु०] मुरगा। कुक्कुर। बिलाव। ढक्का। नगाड़ा। अस्फुट शब्द। विशाल। बड़ा। सूखा। शुष्क। कुत्सित। बुरा।

काहलि—[पु०] महादेव।

काहली—[पु०] एक ऋषि का नाम। [स्त्री०] युवती। जवान स्त्री।

किंवदन्ति (न्ती)—[स्त्री०] कहावत। लोकवार्ता। जनश्रुति। अफ़वाह।

किंवा—[अव्य०] अथवा। या। वा। विकल्प।

किंशारु—[पु०] बाण। तीर। रोटी। कङ्क नामक पक्षी।

किंशुक—[पु०] पलाश। ढाक। पुराणों में वर्णित एक वन का नाम।

किंस्वित्—[अव्य०] क्या? प्रश्नार्थ-बोधक शब्द। सन्देहसूचक शब्द।

किकीदिव—[पु०] नीलकण्ठ नामक पक्षी। चाष।

किङ्कर—[पु०] नौकर। दास। भृत्य।

किङ्करी—[स्त्री०] दासी। नौकरानी। टहलनी।

किङ्कर्तव्य—[वि०] क्या करना उचित है।

किङ्कर्तव्यता—[स्त्री०] क्या करना होगा, ऐसी विचारणा।

किङ्कर्तव्यविमूढ—[वि०] क्या करना चाहिए, क्या नहीं, ऐसा निर्णय करने में असमर्थ। घबराया हुआ। भौंचक्का। हक्का-बक्का।

किङ्किणी—[स्त्री०] कोंधनी। क्षुद्र घण्टिका। कटिभूषण। घुँघुरू। खट्टे अङ्गूर। एक वृक्ष-विशेष।

किङ्किर—[पु०] हाथी का गण्डस्थल। भौंरा। कोयल। घोड़ा। कामदेव। लाल रङ्ग। लाल रङ्गवाला।

किञ्च—[अव्य०] और। कुछ। आरम्भ। समुच्चय। सम्भवतः।

किञ्चन—[अव्य०] अल्प। थोड़ा। अपूर्ण। [पु०] बड़ा ढाक।

किञ्चित्—[अव्य०] थोड़ा। कम। अल्प। असम्पूर्ण। कोई अनिर्दिष्ट वस्तु। [वि०] चौथाई भाग। चतुर्थांश।

किञ्चित्कर—[वि०] थोड़ा काम करनेवाला।

किञ्चिन्मात्र—[वि०] थोड़ा। कुछ। बहुत थोड़ी मात्रा में।

किञ्जल्क—[पु०] पुष्प का पराग। कमल का केसर। नागकेसर। कमल।

किटि—[पु०] जङ्गली सूअर। वाराह।

किटि दँष्ट्रा—[स्त्री०] सूअर की डाढ़। सूअर की कौंप।

किटिभ—[पु०] जूँ। डींगर नामक कीड़े जो वस्त्रों तथा बालों में हो जाते हैं। एक प्रकार का कुष्ठ रोग। तूतिया।

किटी—[पु०] देखो "किटि"।

किट्ट—[पु०] कान का मैल। तेल का मैल। कीचट। मल। विष्ठा। लोह आदि धातुओं का मैल। शुक्र। वीर्य।

किण—[पु०] घाव का निशान। गूथ। घुन, जो लकड़ी या अनाज में लग जाता है। ईख नामक पौधा। गन्ना। करील नामक वृक्ष। रगड़ का चिह्न। एक-रोग विशेष।

कितव—[पु०] कपटी । छलिया । धूर्त । जुआरी । ठग । मत्त । मतवाला । धतूरा ।

किन्तनु—[पु०] मकड़ी नामक कीड़ा ।

किन्तमाम्—[अव्य०] बुरी वस्तुओं में सबसे बुरी वस्तु । सबसे खराब । बदतर ।

किन्तु—[अव्य०] लेकिन । परन्तु । तथापि । फिर क्या । वरन् ।

किन्नर—[पु०] एक प्रकार के देवता । देवताओं के गायक जिनका शरीर मनुष्यों का-सा और मुख घोड़ों का-सा होता है । गाने-बजाने का व्यवसाय करने वाली एक प्राचीन जाति ।

किन्नरी—[स्त्री०] किन्नर जाति की स्त्री । एक प्रकार की वीणा । किंगरी ।

किन्नरेश—[पु०] किन्नरों का राजा । कुबेर ।

किन्निमित्त—[वि०] किस कारण । किस लिए ।

किम्—[अव्य०]निन्दा, क्या, निषेध, वितर्क, त्याग, प्रश्न, आदि अर्थों में प्रयुक्त होता है ।

किमाकार—[वि०] किस आकार वाला । कैसे रूप का । किस प्रकार का ।

किमुत—[अव्य०] किंवा । अथवा । यद्यपि । क्योंकि । क्यों । क्या । अतिशय ।

किम्परिमाण—[वि०] कितने परिमाण में । कितनी मात्रा में । कितना ।

किम्पुरुष—[पु०] किन्नर । देवताओं के गायक । हिमालय और हेमकूट पर्वत के के बीचवाले प्रदेश का प्राचीन नाम । खराब आदमी ।

किम्भूत—[वि०] कैसा । किस प्रकार का ।

कियत्—[वि०] कितना । कितने परिमाणवाला ।

कियद्दूर—[वि०] कितनी दूर । कुछ दूर ।

किरण—[पु०] सूर्य अथवा चन्द्रमा के प्रकाश की लहरें । किरनें । रश्मियाँ । प्रकाश-धारा । मरीचि । मयूख । सूर्य ।

किरणमय—[वि०] किरणोंवाला । किरण-विशिष्ट ।

किरणमाली—[पु०] सूर्य ।

किरात—[पु०] एक जंगली जाति । भील । कोल । व्याध । बहेलिया । चिरायता नाम से प्रसिद्ध औषधि । पुराणकालीन भूगोल के अनुसार विन्ध्य पर्वत पर अवस्थित तप्तकुण्ड से लेकर रामक्षेत्र पर्यन्त जनपद का नाम । छोटे शरीरवाला । नाटा ।

किरातिनी—[स्त्री०] किरात जाति की स्त्री ।

किरि—[पु०]शूकर । सूअर । वाराह

किरीट—[पु०] मुकुट । ताज । पगड़ी । साफ़ा । कसूम का पेड़ । एक छन्द का नाम ।

किरीटमाली—[पु०] अर्जुन का एक नाम ।

किरीटी—[पु०] किरीट धारण करने-वाला—अर्जुन । (अर्जुन को इन्द्र ने एक दिव्य किरीट (मुकुट) दिया था । जिसे वह धारण करते थे । इसी से अर्जुन का नाम किरीटी पड़ा)

किर्मीर—[पु०] रंग-विरंगा । विचित्र वर्ण का । चितकबरा । एक राक्षस का नाम । नीबू का वृक्ष ।

किर्मीरजित्—[पु०] किर्मीर राक्षस को युद्ध में जीतनेवाला—भीमसेन । (भीम ने वनवास के समय किर्मीर को युद्ध में परास्त किया था)

किर्मीरनिसूदन, किर्मीरसूदन, किर्मीरहा, किर्मीरारि—[पु०] भीमसेन ।

किल—[अव्य०] निश्चय, सचमुच, वस्तुतः, असल में, सम्भवतः, अर्थात् इत्यादि अर्थों में आता है ।

किलकिञ्चित्—[पु०] साहित्य में शृङ्गार रसान्तर्गत नायिकाओं का एक भाव-विशेष ।

किलकिला—[स्त्री०] हर्षध्वनि । किलकारी । वीरों का सिंहनाद । ललकार ।

किलाट, किलाटक—[पु०] फटे हुए दूध को वस्त्र में निचोड़कर बनाया हुआ मावा के रूप का पदार्थ । छेना । यह बंगाली मिठाई बनाने के उपयोग में आता है । दूध का विकार, मलाई, खोवा, मावा, खुरचन आदि ।

किलास—[पु०] एक प्रकार का कुष्ठ रोग ।

किलासी—[वि०] किलास रोगयुक्त । कुष्ठी । कोढ़ी ।

किल्विष—[पु०] पाप । रोग । दोष । अपराध । अनिष्ट । वेदना ।

किल्विषी—[वि०] पापी । रोगी । दोषी । अपराधी ।

किंवदन्ती—[स्त्री०] लोकवार्ता । अफवाह । जनश्रुति ।

किंवा—[अव्य०] अथवा ।

किशलय—[पु०] नवपल्लव । नया पत्ता । कोमल पत्ता ।

किंशुक—[पु०] पलास । ढाक । टेसू । पलाश का फूल ।

किशोर—[पु०] ग्यारह से पन्द्रह वर्ष तक की अवस्था । किशोर अवस्था का बालक । घोड़े का बछेड़ा । हाथी का बच्चा । सूर्य । जवान । लड़का । बेटा ।

किशोरी—[स्त्री०] किशोर अवस्था वाली लड़की ।

किष्किन्ध (न्ध्य)—[पु०] मैसूर प्रान्त के एक पर्वत का प्राचीन नाम । उक्त पर्वत की एक गुफा ।

किष्किन्धा (न्ध्य)—[स्त्री०]

किष्किन्ध पर्वतमाला। वानरराज वालि अथवा सुग्रीव की राजधानी। किष्किन्ध पर्वत की गुफा।

किष्किन्धाकाण्ड—[पु०] रामायण का चौथा काण्ड जिसमें किष्किन्धा-सम्बन्धी घटनाएँ वर्णित हैं।

किष्किन्धाधिप—[पु०] किष्किन्धापुरी का स्वामी—वालि अथवा सुग्रीव।

किसलय—[पु०] देखो "किशलय"।

कीकट—[पु०] घोड़ा। वैदिक कालीन भूगोल के अनुसार आजकल के चुनार से लेकर गिद्धौर पर्यन्त प्रान्त का नाम। उक्त कीकट प्रान्त की रहनेवाली एक अनार्य-जाति। ऋषभ के एक पुत्र का नाम। [वि०] गरीब। निर्धन। कृपण। कंजूस।

कीकश (स)—[पु०] एक प्रकार का कीड़ा। कीड़ा-मकोड़ा। अस्थि। हड्डी। चण्डाल। हत्यारा। [वि०] कड़ा। कर्कश।

कीकसमुख—[पु०] कीकस (हड्डी) निर्मित मुखवाला—पक्षी। चिड़िया।

कीकि—[पु०] नीलकण्ठ नामक पक्षी।

कीचक—[पु०] एक प्रकार के बाँस जो तेज हवा चलने के समय अनेक प्रकार के शब्द करते हैं। छेदवाले बाँस। राक्षसों की एक जाति। एक प्रकार की घास। विराट राजा के साले का नाम जो विराट का सेनापति भी था।

कीचकजित्—[पु०] कीचक (विराट के साले) को जीतनेवाला—भीमसेन।

कीट—[पु०] कीड़ा-मकोड़ा। कृमि। लोहे का मैल—किटी। मगध जाति। कड़ा। कठोर। निर्दय।

कीटक—[पु०] देखो "कीट"।

कीटघ्न—[पु०] कीड़ों को मारनेवाला। गन्धक।

कीटज—[पु०] रेशम। कीड़ों से उत्पन्न होनेवाली वस्तु।

कीटजा—[स्त्री०] लाख। लाक्षा।

कीटमणि—[पु०] जुगनू। खद्योत। पटबीजना।

कीटाणु—[पु०] अत्यन्त सूक्ष्म कीड़े। आँख से न दीख सकनेवाले कीड़े।

कीटाद—[वि०] कीड़े खानेवाला।

कीदृस—[पु०] किस प्रकार का। कैसा। किस तरह का।

कीनाश—[पु०] यमराज। एक प्रकार का बन्दर। एक राक्षस का नाम। पशुओं का बध करनेवाला। क्षुद्र। किसान। लालची। गुप्त हत्याकारी।

कीर—[पु०] तोता नामक पक्षी। शुक। सूआ। सुग्गा। मांस। काश्मीर देश। काश्मीर देश में उत्पन्न होनेवाला व्यक्ति या पदार्थ। काश्मीरवासी। व्याध। बहेलिया।

कीरनासा—[स्त्री०] तोते की नाक।

कीर्ण—[वि०] फैला हुआ। बिखरा हुआ। पूर्ण। भरा हुआ। ढका हुआ। छिपा हुआ। मारा हुआ। सताया हुआ। पीड़ित।

कीर्तक—[वि०] कीर्तन करनेवाला। वर्णन करनेवाला।

कीर्तन—[पु०] वर्णन। बखान। गुणकथन।

कीर्तनीय—[वि०] वर्णन करने योग्य। बखान करने लायक। गुणगान करने योग्य। गिनने लायक।

कीर्ति—[स्त्री०] यश। प्रशंसा। प्रसिद्धि। ख्याति। बड़ाई। पुण्य। प्रसन्नता। चमक। शब्द। विस्तार। कीचड़। छन्दःशास्त्र में एक छन्द का नाम।

कीर्तिकर—[वि०] यश दिलानेवाला। कीर्ति पैदा करनेवाला (कार्यादि)।

कीर्तित—[वि०] प्रशंसित। जिसकी तारीफ की गई हो। कहा गया। वर्णन किया गया। ख्यातिप्राप्त। प्रसिद्ध। नियत किया हुआ। ठहरा हुआ।

कीर्तिधर—[वि०] प्रसिद्ध। मशहूर। विख्यात। नामवर। व्यक्ति-विशेष का नाम।

कीर्तिमान्—[वि०] कीर्तिधर। यशस्वी। विख्यात। प्रसिद्ध। नामी।

कीर्तिशेष—[पु०] कीर्तिमात्र शेष रह जाना। मरण। मृत्यु। मर गया। मृत।

कीर्तिस्तम्भ—[पु०] किसी के यश-विशेष की स्मृति दिलाने के लिए स्थापित स्तम्भ। ऐसा कार्य जिसके कारण किसी की कीर्ति चिरस्थायी रहे।

कील—[पु०] खूँटी। कील। परेग। मेख। वह कीली जिस पर चक्की का पाट या कुम्हार का चाक घूमता है। हाथ की कुहनी। आग की लपट। भाला। लकड़ी का फाना। सुश्रुत के मतानुसार एक विशेष प्रकार का गर्भ।

कीलक—[पु०] पशु बाँधने का खूँटा। तन्त्रशास्त्रोक्त एक देवता का नाम। दुर्गा सप्तशती के अन्तर्गत एक स्तोत्र-विशेष। ज्योतिष में प्रभवादि साठ संवत्सरों में एक संवत्सर का नाम।

कीलाक्षर—[पु०] प्राचीन कालीन एक लिपि जिसके अक्षर कील के आकार के होते थे।

कीलाल—[पु०] जल। पानी। अमृत। मधु। शहद। रुधिर। रक्त। कील (खूँटे) से बाँधा जानेवाला-पशु। बन्धन-मुक्त करनेवाला।

कीलालधि—[पु०] जलधि। समुद्र।

कीलित—[वि०] बँधा हुआ। स्थिर किया हुआ। बाँधा गया। बंधन।

कीश—[पु०] बन्दर। वानर। सूर्य। चिड़िया। पक्षी। [वि०] नंगा। विवस्त्र। नग्न।

कु—[अव्य०] बुरा, पाप, निन्दा, थोड़ा, निवारण, भाँरे भाँरे आदि अर्थों में प्रयुक्त होता है । [स्त्री०] पृथ्वी । भूमि । [वि०] निन्दनीय । कुत्सित । बदनाम ।

कुकर—[वि०] खराब हाथवाला । टोंटा ।

कुकर्म—[पु०] बुरा काम । कुत्सित कार्य । निन्दनीय कर्म । [वि०] कुकर्मी । बुरा काम करनेवाला ।

कुकर्मा—[पु०] बुरा काम करनेवाला । पापी ।

कुकर्मी—[पु०] कुकर्मा । बुरा काम करनेवाला । पापी ।

कुकार्य—[पु०] बुरा काम । कुकर्म । पाप ।

कुकीर्ति—[स्त्री०] कुप्रसिद्धि । निन्दा । बदनामी ।

कुकुभ—[पु०] एक पक्षि-विशेष । जंगली मुरगा । पिंगल में एक छन्द का नाम ।

कुकुभा—[स्त्री०] संगीत में एक रागिनी का नाम ।

कुकुर—[पु०] कूकुर । कुत्ता । एक प्राचीन जनपद का नाम । एक प्रकार का सर्प । यदुवंशीय । यादव ।

कुकुरी—[स्त्री०] कुत्ती । कुतिया ।

कुकृत्य—[पु०] कुत्सित कार्य । बुरा काम ।

कुक्कुट—[पु०] मुरगा । आग की चिनगारी । शूद्र के वीर्य से निषादी में उत्पन्न एक संकर जाति ।

कुक्कुटाण्ड—[पु०] मुरगी का अण्डा । एक धान्य-विशेष ।

कुक्कुटासन—[पु०] हठयोग के अनुसार एक प्रकार का आसन । शरीर की नाड़ियाँ शुद्ध करने के लिए इस आसन का उपयोग किया जाता है ।

कुक्कुटी—[स्त्री०] मुरगी । छिपकली । गूठी-चाल । सेमर का पेड़ ।

कुक्कुर—[पु०] कुत्ता ।

कुक्कुरी—[स्त्री०] कुतिया ।

कुक्कोक—[पु०] रतिरहस्य अथवा कामशास्त्र नामक ग्रन्थ के रचयिता का नाम ।

कुक्रिय—[वि०] कुकर्मी । बुरा काम करनेवाला । पापी ।

कुक्रिया—[स्त्री०] कुत्सित काम । कुकार्य । कुकर्म । पाप ।

कुक्ष—[पु०] कोख । पेट । उदर ।

कुक्षि-[पु०] पेट । कोख । [पु०] मध्य । बीच का भाग । एक दानव का नाम । सन्तान । औलाद । खोह । गुफा । महाराज इक्ष्वाकु के एक पुत्र का नाम । राजा बलि का एक नाम । रामायणकालीन एक जनपद का नाम ।

कुक्षिम्भरि—[वि०] केवल अपना पेट पालनेवाला । जो अपनी कमाई में से देव और अतिथि आदि किसी को न देकर आप ही खाता हो । आत्मम्भरि ।

कुख्यात—[वि०] निन्दित । बदनाम । बुरे कामों के लिए प्रसिद्ध ।

कुख्याति—[स्त्री०] निन्दा । बदनामी ।

कुगणी—[वि०] कुसङ्गी । बुरे लोगों के साथ रहनेवाला । जिसकी गणना बुरे आदमियों में की जाय ।

कुगति—[स्त्री०] दुर्दशा । बुरी हालत । दुर्गति ।

कुग्राम—[पु०] बुरा गाँव ।

कुङ्कुम—[पु०] केसर । केसर का पेड़ । बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार बोधिवृक्ष के समीपस्थ एक स्तूप का नाम । रोली ।

कुङ्कुमाक्त—[वि०] केसर का लेप किये हुए । केसर का तिलक लगाए हुए ।

कुच—[पु०] स्तन । स्त्रियों के पयोधर । [वि०] सङ्कुचित । सिकुड़ा हुआ ।

कुचक्र—[पु०] षड्यन्त्र । बुरा फेर ।

कुचक्री—[वि०] बुरे फेर में पड़नेवाला । बुरी सलाह करनेवाला । षड्यन्त्र रचनेवाला ।

कुचतट—[पु०] बड़े-बड़े कुच । स्तनों का किनारा ।

कुचतटाग्र—[पु०] कुचों का अग्रभाग । स्तनों के ऊपर की घुण्डी । चूचक ।

कुचफल—[पु०] कुचों के आकार का फल—अनार । दाड़िम ।

कुचमुख—[पु०] स्तनों के ऊपर की घुण्डी । चूचक । कुचतटाग्र ।

कुचर—[वि०] पराई निन्दा करनेवाला । बुरा आचरण करनेवाला । दुराचारी । बुरी जगह घूमनेवाला । आवारा । कुसंगी ।

कुचर्या—[स्त्री०] दुराचरण । बुरी चाल-चलन । नीच व्यक्ति की सेवा ।

कुचाग्र—[पु०] स्तनों का अग्रभाग । चूचक ।

कुचेल—[वि०] मैला या फटा-पुराना वस्त्र पहने हुए । मैला या फटा-पुराना कपड़ा ।

कुचेष्टा—[स्त्री०] किसी को हानि पहुचाने की कोशिश । बुरा विचार । बुरा काम । बुरा प्रयत्न ।

कुज—[पु०] मंगल नामक ग्रह । वृक्ष । कमल । नरकासुर ।

कुजा—[स्त्री०] भूमि से उत्पन्न होनेवाली । सीता । कात्यायनी देवी ।

कुजाति—[स्त्री०] नीच जाति । बुरी जाति । नीच व्यक्ति । पतित । अधम ।

कुज्झटि,कुज्झटिका—[स्त्री०] ओस । कुहरा । पाला ।

कुञ्चन—[पु०] आँखों की एक बीमारी । पैरों का रोग-विशेष । सिकुड़ना । सिमटना । सङ्कोच । कुटिलता । अनादर ।

कुञ्चिका—[स्त्री०] गुञ्जा । चौंटनी । चाबी । ताली । काला जीरा । मेथी । वच नामक ओषधि । बाँस की टहनी ।

एक प्रकार की मछली।

कुञ्चित—[वि०] सिकुड़ा हुआ। सिमटा हुआ। मुड़ा हुआ। टेढ़ा। घुघराला। निरादर किया गया। [पु०] तगर का फूल।

कुञ्ज—[पु०] वेलवृक्षादि से ढका हुआ स्थान। लता-मंडप। लता-गृह। ठोढ़ी। हाथी का दाँत। एक ऋषि का नाम।

कुञ्जकुटीर—[पु०] वृक्षों पर सघन वेलें छा जाने से बना हुआ मण्डपाकार स्थान। कुंज। कुञ्जगृह।

कुञ्जर—[पु०] हाथी। केश। बाल। पीपल का वृक्ष। हनुमान जी के नाना का नाम। पद्म पुराण के अनुसार इस नाम का एक तोता।

कुञ्जरकर—[पु०] हाथी की सूड़।

कुञ्जराराति—[पु०] हाथी का शत्रु-शेर। सिंह। शरभ या शार्दूल नाम से प्रसिद्ध आठ पैरवाला पक्षि-विशेष।

कुञ्जराशन—[पु०] हाथी द्वारा (विशेष रूप से) खाया जाने वाला—पीपल का वृक्ष। बड़ का पेड़।

कुञ्जविहारी—[पु०] श्रीकृष्ण।

कुट—[पु०] कलश। घड़ा। किला। दुर्ग। वृक्ष। पहाड़। हथौड़ा। घन। काम। घर।

कुटज—[पु०] पहाड़ पर उत्पन्न होनेवाला वृक्ष-विशेष। इन्द्रजौ। कमल। द्रोणाचार्य। कुम्भज ऋषि।

कुटप—[पु०] घर के समीप का बाग। नज़र बाग। तोले भर का परिमाण। कमल। एक मुनि का नाम।

कुटरु—[पु०] कपड़े की दीवार जो तम्बुओं में लगाई जाती है। कनात। पटगृह।

कुटि—[स्त्री०] छोटा घर। झोंपड़ी। कुटिया।

कुटिल—[वि०] टेढ़ा। मुड़ा हुआ। वक्र। कुंचित। धूर्त। छली। कपटी। शङ्ख। घोंघा। तगर का फूल।

कुटिलता—[स्त्री०] टेढ़ापन। वक्रता। मोड़। घुमाव। धूर्तता। छल। कपट। धोखा।

कुटिला—[स्त्री०] धूर्त स्त्री। कपटिन। सरस्वती नदी।

कुटी—[स्त्री०] देखो 'कुटि'।

कुटीचर—[पु०] कुटी में रहनेवाला। संन्यासी। साधु।

कुटीर—[पु०] छोटी झोंपड़ी। छोटी कुटिया।

कुटुम्ब—[पु०] परिवार। भाई-बन्धु। कुनबा। नाते-रिश्तेदार। जाति। बिरादरी। बाल-बच्चे। पोष्य वर्ग।

कुटुम्बिता—[स्त्री०] पारिवारिक सम्बन्ध। घरेलूपन। नातेदारी। कुटुम्बीपन। कुटुम्बी का काम। परिवार के साथ किया जानेवाला बर्ताव।

कुटुम्बिनी—[स्त्री०] परिवारवाली। भरे पूरे कुनबेवाली।

कुटुम्बी—[पु०] कुटुम्ब का। परिवार का। भाई-बन्धु। परिवारवाला। जिसका बड़ा कुनबा हो। गृही। घरानेवाला। किसान।

कुट्टन—[पु०] कूटना। कुटाई। काटना। कोसना। गाली देना। तापना। नाच की एक भाव-भंगी।

कुट्टनी—[स्त्री०] कुटिनी। धूर्त स्त्री। पराई स्त्री को पर-पुरुष से मिलानेवाली।

कुट्टमित—[पु०] साहित्य में नायिका के स्वाभाविक दस अलङ्कारों में से एक। नायक द्वारा कुच-कपोलादि का स्पर्श करने पर हृदय में प्रसन्न होते हुए भी ऊपर से उसके विरोध की चेष्टा करना कुट्टमित कहाता है।

कुट्टाक—[पु०] कूटनेवाला। काट-पीट करनेवाला।

कुट्मल—[पु०] फूल की वह कली जो खिलने ही वाली हो। मुकुल। एक नरक-विशेष।

कुठार—[पु०] कुल्हाड़ा। परशु। फरसा। एक वृक्ष-विशेष।

कुठाराघात—[पु०] कुल्हाड़े की चोट। गहरी चोट। किसी चीज को अत्यधिक हानि पहुँचाने का व्यापार।

कुठारिका—[स्त्री०] कुल्हाड़ी।

कुठारु—[पु०] हथियार बनानेवाला। शस्त्रकार।

कुड्मल—[पु०] देखो "कुट्मल"।

कुड्मलदन्ती—[स्त्री०] मुकुल के समान दाँतोंवाली। जिसके दाँत कली के सदृश सुन्दर हों।

कुड्य—[पु०] भीत। दीवार। लीपना। आश्चर्य। शौक।

कुड्यच्छेदी—[पु०] भीत फोड़नेवाला। सेंध लगानेवाला—चोर आदि।

कुणक—[सं०] सद्योजात शिशु। हाल का उत्पन्न हुआ बालक।

कुणप—[पु०] मुर्दा देह। लाश। शव। शव के समान चेतनाशून्य। भाला। बरछी। दुर्गन्ध। राँगा।

कुणपाशी—[वि०] मुर्दा खानेवाला। अघोरी। मुर्दाखोर।

कुणाल—[पु०] एक जनपद का नाम। महाराज अशोक के एक पुत्र का नाम। एक प्रकार का पक्षी।

कुणि—[पु०] शरीर का एक मर्मस्थान। तुन नाम का वृक्ष। एक राजा। एक ऋषि। [वि०] लुञ्जे हाथोंवाला।

कुण्ठ—[वि०] मूर्ख। निकम्मा। संकुचित। मन्दबुद्धि।

कुण्ठता—[स्त्री०] मूर्खता। सङ्कोच। सकुच। असमर्थता।

कुण्ठित—[वि०] भोथरा। जो तेज न हो। कुन्द। निकम्मा। सकुचाया हुआ।

लज्जित। अप्रतिभ। अक्षम।

कुण्ड—[पु०] जलाशय। तालाब। एक पुरानी तोल। वह स्थान-विशेष जिसमें यज्ञादि के लिए अग्नि जलाई जाती है। एक बर्तन। हाँड़ी। पति के जीवित रहते व्यभिचार से उत्पन्न हुआ पुत्र।

कुण्डल—[पु०] कानों का आभूषण। पाश। फाँस। कान का बाला। ग्रहण। एक छन्द का नाम।

कुण्डलाकार—[त्रि०] कुण्डल के समान गोल। गोलाकार।

कुण्डलिका—[स्त्री०] एक छन्द का नाम। कुण्डलिका। जलेबी।

कुण्डलिनी—[स्त्री०] तन्त्र-शास्त्र के अनुसार एक कल्पित शक्ति। जलेबी। इमरती। गिलोय।

कुण्डिका—[स्त्री०] लोटा। हाँड़ी। कूँड़ी। थाली।

कुण्डी—[पु०] शिवजी। घोड़ा। [स्त्री०] थाली। हाँड़ी। कूँड़ी।

कुण्डोघ्नी—[स्त्री०] बड़े थनवाली गाय-भैंस। बड़े-बड़े स्तनोंवाली स्त्री।

कुतः—[अव्य०] कहाँ से, किस स्थान से, क्यों, किस हेतु से, कैसे, क्योंकि इत्यादि अर्थों में प्रयुक्त होता है।

कुतप—[पु०] सूर्य। अग्नि। गौ। भानजा। देवता। ब्राह्मण। अतिथि। मेहमान। कुश। दर्भ। एक प्रकार का बाजा। छोटा घड़ा। ज्योतिष में एक मुहूर्त-विशेष। दिन का आठवाँ भाग। [वि०] थोड़ा गरम। गुनगुना।

कुतर्क—[पु०] बेढंगी दलील। वितण्डा। कुत्सित तर्क।

कुतर्की—[पु०] ऊट-पटाँग तर्क करनेवाला। बेढंगी दलील देनेवाला। वितंडावाद करनेवाला। [वि०] कुतर्क-विशिष्ट।

कुतुक—[पु०] कौतुक। आश्चर्य। तमाशा।

कुतुकी—[वि०] आश्चर्यचकित। अचम्भे में पड़ा हुआ।

कुतुप—[पु०] चमड़े की बनी तेल आदि रखने की कुप्पी।

कुतू—[स्त्री०] देखो "कुतुप"।

कुतूहल—[पु०] किसी अद्भुत वस्तु देखने की उत्सुकता। उत्कण्ठा। आश्चर्य। खेल। तमाशा। साहित्य में नायिका का अलङ्कार-विशेष।

कुतूहली—[वि०] कुतूहलयुक्त। किसी अद्भुत वस्तु को देखने के लिए उत्कण्ठायुक्त। खिलाड़ी। तमाशा करनेवाला।

कुत्र—[अव्य०] कहाँ। कब। किस जगह।

कुत्रचित—[अव्य०] कहीं। किसी जगह।

कुत्सन—[पु०] निन्दा। बदनामी। गर्हण। निन्दा करना।

कुत्सा—[स्त्री०] निन्दा। अपवाद। कुत्सन।

कुत्सित—[पु०] निन्दित। नीच। गर्हित। एक सुगन्धित घास। कूठ नामक ओषधि।

कुथ—[पु०] हाथी की भूल। कन्था। कथरी।

कुदर्शन—[वि०] कुरूप। जो देखने में भद्दा लगे। अप्रिय दर्शन।

कुदान—[पु०] बुरा दान। अनधिकारी को दिया गया दान।

कुदार—[पु०] जमीन खोदने का औजार। फावड़ा।

कुदाल—[पु०] देखो "कुद्दाल"।

कुदिन—[पु०] बुरा दिन। दुर्दिन। संकटकाल। ऋतुकाल के प्रतिकूल घटना-युक्त दिन। सूर्योदय से प्रारम्भ करके दुबारा सूर्योदय होने तक का समय।

कुदृश्य—[वि०] बुरा दृश्य। देखने के अयोग्य।

कुदृष्टि—[स्त्री०] बुरी निगाह। पाप दृष्टि।

कुदेव—[पु०] भूदेव। ब्राह्मण। बुरा देव। राक्षस।

कुद्दाल—[पु०] भूमि खोदने का औज़ार। फावड़ा। कोविदार का वृक्ष। कचनार का पेड़।

कुद्मल—[पु०] मुकुल। विकासोन्मुख कलिका।

कुधर—[पु०] भूधर। पर्वत। पहाड़। शेषनाग।

कुधातु—[पु०] बुरी धातु। लोहा।

कुधान्य—[पु०] कुत्सित धान्य—कोदों, सवाँ, तूअर आदि। अनुचित रूप से प्राप्त किया हुआ धान्य। अग्राह्य दान आदि में प्राप्त धान्य।

कुधी—[वि०] बुरी समझ का। मूर्ख। बेवकूफ़। निर्लज्ज।

कुध्र—[पु०] देखो "कुधर"।

कुनख—[वि०] बुरे नखोंवाला। [पु०] नखों में होनेवाला एक रोग।

कुनखी—[वि०] कुनख-रोगयुक्त।

कनाल—[पु०] कोकिल। कोयल। देखो "कुणाल"।

कुनीति—[स्त्री०] बुरी नीति। दुर्व्यवहार। बुरा तरीक़ा।

कुन्त—[पु०] भाला। बरछा। क्रोध। जोश। एक छोटा कीड़ा। जूँ। एक प्रकार का धान्य। मल।

कुन्तल—[पु०] शिर के बाल। केश। जौ। प्याला। गिलास। हल। महाभारतकालीन एक जनपद का नाम। ह्रीवेर नामक ओषधि। बहुरूपिया। हाथ।

कुन्ति—[पु०] एक जनपद और वहाँ निवास करनेवाली क्षत्रिय जाति का नाम।

कुन्तिभोज—[पु०] कुन्तिजाति में

उत्पन्न भोज देश के राजा जिन्होंने महाराज शूरसेन की पुत्री पृथा को गोद ले पाला था। कुन्तिभोज द्वारा पालित होने से पृथा का नाम कुन्ती पड़ा।

कुन्ती—[स्त्री०] कुन्तिभोज की पालिता पुत्री। पाण्डवों की माता। गुग्गुल का वृक्ष।

कुन्द—[पु०] विष्णु। एक पुष्प-विशेष जिसकी दाँतों और देहकान्ति के लिए उपमा दी जाती है। कमल। नौ निधियों में से एक का नाम। नौ की संख्या। खराद यन्त्र। फावड़ा। एक पहाड़। कनेर का पेड़। एक सुगन्धित द्रव्य। एक फूलोंवाली लता।

कुन्दलता—[स्त्री०] इस नाम से प्रसिद्ध एक बेल। एक छन्द का नाम।

कुन्दमाला—[स्त्री०] कुन्द पुष्पों की माला। एक पुस्तक का नाम।

कुन्दिनी—[स्त्री०] कमलों का समूह। कमलवन। पद्मिनी। कमलिनी।

कुप—[पु०] एक पक्षी।

कुपट—[पु०] बुरा वस्त्र। फटा-पुराना कपड़ा। कुचैल। चिथड़ा।

कुपथ—[पु०] निन्दित मार्ग। बुरा रास्ता। कापथ। एक राजा का नाम। जनपद-विशेष।

कुपथ्य—[पु०] अहितकर भोजन। स्वास्थ्यनाशक आहार।

कुपाठ—[पु०] कुत्सित पाठ। बुरी शिक्षा। बुरी सलाह।

कुपाणि—[वि०] बुरे या विकृत हाथोंवाला। लूला। लुञ्जा।

कुपात्र—[पु०] भोंड़े आकार का या फूटा हुआ बरतन। कुत्सित पात्र। कोई वस्तु देने के अयोग्य व्यक्ति। नालायक। अनधिकारी।

कुपित—[वि०] क्रुद्ध। अप्रसन्न। नाखुश।

कुपिन्द—[पु०] जुलाहा। कोली। तन्तुवाय। कपड़ा बुननेवाला।

कुपुत्र—[पु०] अयोग्य पुत्र। नालायक बेटा। पृथिवी का पुत्र मंगल नामक ग्रह। भूमिसुत। नरकासुर।

कुपुरुष—[पु०] बुरा आदमी। कोई भला काम न करनेवाला व्यक्ति।

कुपूय—[वि०] बुरा। दुराचारी। निन्दित।

कुप्य—[पु०] सोना और चाँदी को छोड़कर कोई भी धातु। जस्ता नामक धातु।

कुप्य-शाला—[स्त्री०] धातु के बरतनों की दुकान। धातु के बरतन बनाने का कारखाना।

कुप्रावरण—[वि०] फटे, पुराने वस्त्रोंवाला। मैले-कुचैले कपड़े पहने हुए।

कुप्रिय—[वि०] अप्रिय। नापसन्द।

कुबुद्धि—[वि०] मूर्ख। मन्द-बुद्धि। बुरी समझवाला। [स्त्री०] कुत्सित बुद्धि। बुरी अक्ल। नासमझी। मूर्खता। बुरी सलाह।

कुबेर—[पु०] यक्षों का राजा। धनाधिप। धनेश्वर। नन्दी नामक वृक्ष-विशेष। [वि०] विकृत शरीरवाला।

कुबेरक—[पु०] देखो "कुबेर"।

कुबेर बान्धव—[पु०] कुबेर के भाई शिवजी। महादेव।

कुबेराचल—[पु०] कैलाश पर्वत।

कुब्ज—[वि०] कुबड़ा। टेढ़ी कमरवाला। अपामार्ग। ओंगा। लटजीरा। एक प्रकार का वात रोग जिसमें कमर (आगे या पीछे को) झुक जाती है।

कुब्जा—[स्त्री०] कैकेयी की दासी। मन्थरा। कंस की एक दासी जो श्रीकृष्ण से प्रेम करती थी। कुबड़ी स्त्री।

कुब्जित—[वि०] टेढ़ा। झुका हुआ। मुड़ा हुआ। अवनत।

कुभा—[स्त्री०] बुरी चमक। पृथिवी की छाया। एक नदी का प्राचीन नाम (वर्तमान काबुल नदी)। [वि०] कम चमकवाला। मन्द दीप्तियुक्त।

कुभार्य—[पु०] बुरी पत्नीवाला। दुराचारिणी स्त्रीवाला।

कुभार्या—[स्त्री०] बुरी स्त्री। बुरे आचरणवाली।

कुभृत्—[पु०] पृथिवी की रक्षा करनेवाला। पहाड़। शेषनाग। सात की संख्या।

कुभृत्य—[पु०] बुरा सेवक। निन्दनीय नौकर।

कुमति—[स्त्री०] बुरी समझ। मन्द बुद्धि। बुरी सलाह। बुरा प्रयोजन। [वि०] बुरी समझवाला। कमअक्ल। मूर्ख।

कुमंत्र—[पु०] बुरी सलाह। कुमंत्रणा। खोटी सम्मति।

कुमार—[पु०] पाँच वर्ष का लड़का। अविवाहित। क्वाँरा। स्वामी कार्तिक। षडानन। युवराज। राजा का बड़ा पुत्र। सोलह से ऊपर तीस वर्ष की आयु तक का पुरुष। घोड़ों की देख-रेख करनेवाला। साईस। अग्नि। मंगल नामक ग्रह। सनकादि ऋषि। शुक। तोता। भारतवर्ष। सिन्धुनद। पुत्र। बेटा। आँख का तारा। विशुद्ध सोना। एक जनपद का नाम। वरुण नामक वृक्ष।

कुमारतन्त्र—[पु०] आयुर्वेद का वह भाग जिसमें छोटे बच्चों के रोग-निदान और चिकित्सा का वर्णन है। रावण द्वारा रचित बालरोग-चिकित्सा-शास्त्र।

कुमारभृत्या—[स्त्री०] प्रसव-काल के समय प्रसूता और नवजात शिशु की परिचर्या। धात्री विद्या। प्रसूता और शिशु के रोगों की चिकित्सा।

कुमारललिता—[स्त्री०] एक छन्द का नाम। बालक्रीड़ा। बच्चों का खेल।

कुमारलसिता—[स्त्री०] एक

छन्द-विशेष ।

कुमारवाहन—[पु०] कार्तिकेय का वाहन —मयूर । मोर ।

कुमारसम्भव—[पु०] महाकवि कालिदास रचित एक काव्य । इसमें कार्तिकेय की उत्पत्ति का वर्णन है ।

कुमारिका—[स्त्री०] अविवाहिता लड़की । वह लड़की जिसको रजोदर्शन न हुआ हो । बड़ी इलायची । चमेली । आँख की पुतली । भरत-खण्ड । श्यामा पक्षी ।

कुमारी—[स्त्री०] देखो "कुमारिका" । इस नाम से प्रसिद्ध एक अन्तरीप । घृत-कुमारी । ग्वारपाठा । पार्वती । दुर्गा । सीताजी का एक नाम । पृथिवी का मध्य भाग (भारतवर्ष) ।

कुमार्ग—[पु०] कुपथ । बुरा रास्ता । नीति या धर्मविरुद्ध मार्ग ।

कुमार्गगामी—[वि०] कुमार्ग में चलनेवाला । कुचाली ।

कुमार्गी—[वि०] देखो "कुमार्गगामी" ।

कुमित्र—[पु०] कुत्सित मित्र । खराब दोस्त ।

कुमुद—[पु०] कैरव । कोका । कमल की जाति का एक फूल जो रात में खिलता है । लाल कमल । चाँदी । कपूर । दक्षिण दिशा का दिग्गज । विष्णु । राम की सेना के एक वानर का नाम । एक दैत्य का नाम ।

कुमुदप्रिय—[पु०] चन्द्रमा ।

कुमुदबन्धु—[पु०] चन्द्रमा । कपूर ।

कुमुद्वती—[स्त्री०] कुमुद जिसमें हों । ऐसी जगह (पुष्करिणी, तलैया आदि) । बहुत से कुमुदों से युक्त स्थान । कुमुदिनी ।

कुमुदिनी—[स्त्री०] कोका । कैरव । कमलिनी । कुमुदों का समूह । बहुत से कुमुदों से युक्त तालाब आदि । चाँदनी । चन्द्रिका ।

कुमुदिनीनायक—[पु०] चन्द्रमा ।

कुमुदिनीपति—[पु०] देखो "कुमुदिनी नायक" ।

कुमुद्वती—[स्त्री०] देखो "कुमुदवती"

कुमुद्वतीश—[पु०] चन्द्रमा । कुमुदिनी-नायक । कुमुदनीपति ।

कुमेरु—[पु०] दक्षिणी ध्रुव । पुराणों के अनुसार पाताल ।

कुम्भ—[पु०] घड़ा । मिट्टी का बना जलपात्र । ज्योतिष में एक राशि का नाम । हाथी का मस्तक । प्राचीन काल की एक तौल जो डेढ़ मन के लगभग होती थी । गुग्गुल नामक औषधि । अगस्त्य मुनि के पिता का नाम । योग की एक प्रक्रिया । वेश्या का पति । जायफल का वृक्ष । एक प्रसिद्ध पर्व जो १२ वर्ष बाद हरिद्वार, उज्जैन, प्रयाग आदि तीर्थों में मनाया जाता है ।

कुम्भक—[पु०] प्राणायाम की वह विधि जिसमें प्राणवायु को शरीर के भीतर रोका जाता है ।

कुम्भकर्ण—[पु०] इस नाम से प्रसिद्ध रावण का भाई ।

कुम्भकार—[पु०] कुम्हार । मिट्टी के बरतन या खिलौने बनानेवालों की एक जाति । मुर्गा नामक पक्षी ।

कुम्भज—[पु०] अगस्त्य मुनि । द्रोणाचार्य । वशिष्ठ । घड़े से पैदा होनेवाला । अगस्त का पेड़ ।

कुम्भजन्मा—[पु०] देखो "कुम्भज" ।

कुम्भजात—[पु०] देखो "कुम्भज" ।

कुम्भयोनि—[पु०] अगस्त्य मुनि । वशिष्ठ मुनि । द्रोणाचार्य । अगस्त का पेड़ । [स्त्री०] एक अप्सरा का नाम ।

कुम्भराशि, कुम्भलग्न—[पु०] मेषादि बारह राशियों में से ग्यारहवीं राशि ।

कुम्भसम्भव—[पु०] कुम्भ से उत्पन्न होनेवाला । अगस्त्य । वशिष्ठ । द्रोणाचार्य । विष्णु ।

कुम्भा—[स्त्री०] वेश्या । रण्डी । गणिका । बटलोई । तुम्बी । तोंबी ।

कुम्भिका—[स्त्री०] छोटी घड़िया । गगरी । वेश्या । आँख के पलक में होनेवाली फुड़िया—गुहेरी । गुहाञ्जनी । कायफल । पाटल वृक्ष । परवल का पेड़ । जलकुम्भी । गुग्गुल । शूक रोग ।

कुम्भिनी—[स्त्री०] पृथ्वी । जायफल का वृक्ष । घड़ेवाली स्त्री ।

कुम्भिमद—[पु०] हाथी का मद ।

कुम्भिल—[पु०] चोर । लेख या कविता चुरानेवाला । साला । पत्नी का भाई । प्रकृति निर्धारित समय से पूर्व उत्पन्न होनेवाला (सतमासा-अठमासा) लड़का । शाल मत्स्य । एक प्रकार की मछली ।

कुम्भी—[पु०] हाथी । हस्ती । नक्र । घड़ियाल । एक प्रकार की मछली । एक विषैला कीड़ा या पतंगा । गुग्गुल । गुग्गुल का वृक्ष । [स्त्री०] छोटा घड़ा । वृक्ष-विशेष । मटका । कुठिया । गोल ।

कुम्भीधान्य—[पु०] एक मिट्टी के पात्र-विशेष में रक्खा हुआ अन्न (जो एक परिवार को छः मास या एक वर्ष के लिए पर्याप्त हो) । मटका या कुठिया भर अन्न ।

कुम्भीनस—[पु०] एक प्रकार का भयङ्कर साँप । एक विषैला कीड़ा । रावण ।

कुम्भीनसी—[स्त्री०] रावण की बहन ।

कुम्भीपाक—[पु०] पुराणों के मतानुसार एक नरक विशेष । आयुर्वेद में एक रोग का नाम जिसमें रोगी की नाक

से काले रंग का गाढ़ा रक्त गिरता है।

कुम्भीर—[पु०] मगर। घड़ियाल। ग्राह।

कुम्भीरक—[पु०] चोर।

कुम्भोदर—[पु०] शिवजी के एक अनुचर का नाम। [वि०] कुम्भ के समान बड़े पेटवाला।

कुयोग—[पु०] बुरा मुहूर्त। कुसमय। अनिष्टकर समय या संयोग।

कुरङ्ग—[पु०] हरिण। हिरन। एक छन्द-विशेष। अकरकरा नामक ओषधि। विशुद्ध लोहा। बुरा रंग। बुरा हाल। लाल रंग का घोड़ा।

कुरङ्गनाभि—[पु०] मृगनाभि। मृगमद। कस्तूरी।

कुरङ्गम—[पु०] हरिण। हिरन।

कुरङ्गाक्षी—[स्त्री०] मृगनयनी। हरिण के से नेत्रोंवाली स्त्री।

कुरङ्गी—[स्त्री०] हरिणी। हिरनी। मृगी।

कुरर—[पु०] एक पक्षी। क्रौञ्च। पानी की एक चिड़िया। भागवत में वर्णित एक पहाड़ का नाम।

कुररव—[पु०] कबूतर। पारावत। कपोत।

कुररी—[स्त्री०] कुरर पक्षी की मादा। पिंगल में आर्या छन्द का एक भेद।

कुरल—[पु०] कुरर नामक पक्षी। पृथिवी। भूमि। काकुल। जुल्फें। काक-पक्ष।

कुरव—[पु०] साठी धान। तिल्ल का वृक्ष। पीले फूल की कटैरी। सफेद आक। केश। बाल। शृगाल। गीदड़। बुरा शब्द। [वि०] बुरे शब्दवाला। बुरी बोली बोलनेवाला।

कुरस—[पु०] बुरा रस। एक प्रकार की शराब। [वि०] बुरे स्वादवाला।

कुरसा—[स्त्री०] गोजिह्वा नामक जड़ी। गोभी।

कुरीति—[स्त्री०] बुरी प्रथा। कुचाल। कदाचार। बुरा रिवाज़।

कुरु—[पु०] एक चन्द्रवंशीय राजा का नाम (इन्हीं के वंश में जन्म लेने के कारण दुर्योधनादि कौरव कहाए)। प्राचीन समय में भारतवर्ष के एक जनपद का नाम जो कुरुक्षेत्र के दक्षिण और पाञ्चाल प्रान्त के पूर्व में हस्तिनापुर तक माना जाता था। पकाये हुए चावल। भात। उत्तर कुरु नामक जनपद। पुरोहित। कुरु नामक जनपद के निवासी।

कुरुक्षेत्र—[पु०] कौरव-पाण्डवों के 'महाभारत' नामक युद्ध का स्थान (यह दिल्ली और अम्बाला के बीच अवस्थित है)। एक प्राचीन तीर्थ-स्थान।

कुरुजाङ्गल—[पु०] एक जनपद का नाम। पुराणों के मतानुसार स्थाण्वीश्वर या स्थाणुतीर्थ (वर्तमान थानेश्वर) के आस-पास का प्रदेश कुरुजाङ्गल कहलाता है।

कुरुतीर्थ—[पु०] कुरुक्षेत्र के अन्तर्गत एक तीर्थ का नाम।

कुरुविन्द—[पु०] कुलत्थ-कुरथी या ग्वार नाम से प्रसिद्ध धान्य। उरद। नागरमोथा। पद्मराग मणि। माणिक। कचलोना। दर्पण। मुकुर।

कुरुवृद्ध—[पु०] भीष्म पितामह।

कुरूप—[वि०] बुरे रूपवाला। बदसूरत। कुडौल। [पु०] बुरा रूप। भोंडी शक्ल।

कुरूपता—[स्त्री०] भोंडापन। बदसूरती।

कुरूप्य—[पु०] रांगा नामक धातु।

कुर्कुट—[पु०] मुर्गा। कुक्कुट।

कुर्कुर—[पु०] कुक्कुर। कुत्ता।

कुर्चिका—[स्त्री०] देखो "कूर्चिका"।

कुर्दन—[पु०] खेल-कूद। क्रीड़ा।

कुर्पर—[पु०] कुहनी। घुटना।

कुर्पास—[पु०] अँगिया। चोली।

कुर्वत—[वि०] काम करनेवाला। भृत्य : नौकर।

कुल—[पु०] वंश। खान-दान। घराना। जाति। अपनी जाति के लोग। घर। देश। शरीर। समूह। झुण्ड। शक्ति। वंशमर्यादा। समस्त। सम्पूर्ण। [वि०] श्रेष्ठ। बड़ा।

कुलक—[पु०] समूह। ढेर। वल्मीक। दीमक द्वारा बनाया गया मिट्टी का टीला। काव्य की परिभाषा में ऐसे पाँच श्लोकों का समूह जिनका अर्थ परस्पर सम्बद्ध हो। गद्य-लेखन की एक शैली। भोग्य पदार्थ। मरुआ का वृक्ष।

कुलकण्टक—[पु०] वंश के लिए काँटे के समान। वह व्यक्ति जो अपने खान-दान के लिए काँटे की भाँति क्लेशदायक हो।

कुलकन्या—[स्त्री०] अच्छे वंश की लड़की।

कुलकलङ्क—[पु०] अपने कुल को कलङ्कित करनेवाला। अपने कुकर्मों द्वारा वंश को धब्बा लगानेवाला।

कुलकानि—[स्त्री०] कुल की लाज। वंश की मर्यादा।

कुलक्षण—[पु०] बुरे चिह्न। विघ्न। आचरण। कुचाल। बुरी आदतें। [वि०] बुरी आदतोंवाला। कुचाली। दुराचारी।

कुलक्षणा—[स्त्री०] बुरे चिह्नोंवाली। बुरी आदतोंवाली।

कुलक्षय—[पु०] वंश-विनाश। कुल का अधःपतन। घराने की बर्बादी।

कुलघ्न—[वि०] वंशनाशक। खान-दान को गिरानेवाला।

कुलच्युत—[वि०] कुल, जाति अथवा समाज से बहिष्कृत।

कुलज—[वि०] अच्छे कुल में उत्पन्न हुआ। कुलीन। परवल।

कुलजा—[स्त्री०] अच्छे कुल में उत्पन्न हुई स्त्री। खानदानी औरत।

कुलजात—[वि०] देखो "कुलज"।

कुलट—[पु०] पितृकुल को छोड़ अन्य कुल में आश्रय पानेवाला। गोद लिया हुआ अथवा क्षेत्रज पुत्र। क्रीत। व्यभिचारी। अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध रखनेवाला। लम्पट। बदचलन।

कुलटा—[स्त्री०] व्यभिचारिणी। पुंश्चली। छिनाल। साहित्य में परकीया नायिका का एक भेद। भिखारिणी।

कुलतन्तु—[पु०] वंश का सूत्र (सिलसिला बढ़ानेवाला) अर्थात् सन्तान।

कुलतिलक—[पु०] वंश में तिलक के समान अर्थात् शुभ गुणों द्वारा वंश की प्रतिष्ठा बढ़ानेवाला।

कुलदीप—[पु०] वंश को दीपक के समान प्रकाशित या उज्ज्वल करनेवाला।

कुलदूषक—[वि०] अपने दुर्गुणों द्वारा कुल को कलङ्कित करनेवाला।

कुलदूषण—[वि०] कुल को दूषित करनेवाला। कुलकलङ्क। कुलांगार [पु०] कुल का दोष।

कुलदेवता—[स्त्री०] कुल में प्रधान रूप से पूजा जानेवाला देव। पौराणिक मतानुसार गौरी आदि सोलह मातृकाओं में से एक।

कुलधर्म—[पु०] वंशपरम्परा से पालन किया जानेवाला धर्म।

कुलनन्दन—[पु०] अपने शुभ गुणों द्वारा वंश को आनन्दित करनेवाला।

कुलपति—[पु०] घर का मालिक। परिवार का मुखिया। वह व्यक्ति जो पढ़ाने के साथ ही विद्यार्थियों के भरण-पोषण की व्यवस्था भी करे। वह आचार्य जो दश हजार ब्रह्मचारियों की शिक्षा-दीक्षा और भरण-पोषण की व्यवस्था करे।

कुलपर्वत—[पु०] भारतवर्ष के सात प्रधान पर्वत। कुलाचल। कुलगिरि।

कुलपालक—[वि०] वंश की रक्षा करनेवाला। परिवार का पालन-पोषण करनेवाला।

कुलपुरोहित—[पु०] किसी कुल में वंश-परम्परा से चला आनेवाला पुरोहित।

कुलपूज्य—[वि०] कुल में पूजा जानेवाला।

कुलवधू—[स्त्री०] भले घर की स्त्री। लज्जाशीला सतीसाध्वी स्त्री। कुलीन स्त्री।

कुलबाला, कुलबालिका—[स्त्री०] खानदानी लड़की। अच्छे कुल में उत्पन्न हुई बालिका।

कुलभार्या—[स्त्री०] देखो "कुलवधू"।

कुलभूषण—[वि०] कुलतिलक। घराने की शोभा।

कुलमार्ग—[पु०] कुलीन व्यक्तियों द्वारा ग्रहण किया गया मार्ग। सुमार्ग। भला रास्ता। घराने की चाल।

कुलयोषित्—[स्त्री०] कुलीन स्त्री। अच्छे घराने की स्त्री। सती-साध्वी नारी। खानदानी औरत।

कुलवान्—[वि०] कुलीन। खानदानी। अच्छे घराने का।

कुलव्रत—[पु०] कुलधर्म। वंश परम्परा से पालन किया जानेवाला नियम।

कुलसंख्या—[स्त्री०] कुलकीर्ति। वंश की बड़ाई।

कुलसंभव—[वि०] सत्कुल में उत्पन्न हुआ। अच्छे घराने का पैदा।

कुलाङ्गना—[स्त्री०] सती-साध्वी स्त्री। कुलयोषित्। कुलीन स्त्री।

कुलाङ्गार—[पु०] कुल के लिए अङ्गारस्वरूप। कुलगौरव नाश करनेवाला। घराने की इज्जत बिगाड़नेवाला।

कुलाचल—[पु०] देखो "कुलपर्वत" पुराणों के मत से भिन्न-भिन्न वर्षों के मिलाकर समस्त कुल पर्वत तीस हैं। भारतवर्ष में सात हैं।

कुलाचार—[पु०] कुलधर्म। कुलमार्ग। तन्त्रशास्त्र में वर्णित आचार विशेष।

कुलाचार्य—[पु०] कुलगुरु। कुलपुरोहित।

कुलाद्रि—[पु०] कुलाचल। कुलपर्वत। कुलगिरि।

कुलाय—[पु०] पक्षियों का घोंसला। देह। शरीर। मकड़ी का जाला। कोई भी रहने का स्थान।

कुलाल—[पु०] कुम्भकार। कुम्हार। जंगली मुर्गा। उल्लू नामक पक्षी। मगर। घड़ियाल।

कुलाली—[स्त्री०] कुम्हारिन। जंगली कुरथी। सुरमा नामक उपधातु।

कुलिक—[पु०] कुलीन। अच्छे खानदानवाला। कुल में सबसे अच्छा या मुख्य व्यक्ति। शिल्पी। कारीगर। केंकड़ा। ज्योतिष के अनुसार एक निषिद्ध मुहूर्त।

कुलि (ली) र—[पु०] कर्कट। केंकड़ा।

कुलिश—[पु०] वज्र। बिजली। कुल्हाड़ा। परशु। फरसा। हीरा। शकरकन्द। हड़फोड़ नामक वृक्ष। एक मछली जो हीरे के समान चमकती है।

कुलिशधर—[पु०] इन्द्र (वज्र धारण करनेवाला)।

कुलिशपाणि—[पु०] कुलिशधर। इन्द्र।

कुली—[पु०] पर्वत। पहाड़। [स्त्री०] कटेरी वृक्ष। तालमखाना। पत्नी की बड़ी बहन। [वि०] सत्कुलोत्पन्न। अच्छे कुलवाला।

कुलीन—[वि०] सत्कुलोत्पन्न। खानदानी। [पु०] पृथ्वी में घुसा हुआ।

भूमिलग्न। अच्छी नसल का घोड़ा। सफेद घोड़ा।

कुलीर—[पु०] कर्कट। केकड़ा।

कुलोद्वह—[वि०] कुल का पालन-पोषण करनेवाला। वंशप्रतिपालक।

कुल्या—[स्त्री०] नहर। बम्बा। नाली। मोरी। पनाला नदी। बड़ा-बेंगन। भाटा। कुलीन स्त्री।

कुवलय—[पु०] कमल। सफेद रंग का कमल। नीले रंग का कमल। नीलोत्पल। श्वेत कुमुद। भूमण्डल। एक प्रकार के राक्षस।

कुवलयापीड़—[पु०] नील कमल के आभूषणों वाला। कंस के एक हाथी का नाम जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।

कुवलयेश—[पु०] भूपति। राजा।

कुवाक्य—[पु०] बुरा वचन। गाली-गलौज। कुत्सित बात।

कुवाच्य—[वि०] न कहने योग्य। [पु०] दुर्वचन। गाली-गलौज।

कुवाद—[वि०] पराए दोष कहने वाला। [पु०] बुरी बात। बुरी चर्चा।

कुवासना—[स्त्री०] कुत्सित अभिप्राय। दुर्भावना।

कुविचार—[पु०] बुरे विचार।

कुविन्द—[पु०] जुलाहा। कोरी। तन्तुवाय।

कुविन्दक—[पु०] कसेरा।

कुवेणी—[स्त्री०] मछलियाँ रखने की टोकरी।

कुवेर—[पु०] एक प्रसिद्ध देवता। यक्षों का राजा। देवराज इन्द्र का खजांची। [वि०] सुस्त। आलसी। अनोखा। अस्वाभाविक।

कुश—[पु०] इस नाम से प्रसिद्ध एक प्रकार की घास। दाभ। दर्भ। रामचन्द्रजी के पुत्र का नाम। जल। साँप का पेट। सात द्वीपों में से एक द्वीप का नाम। [वि०] पापी। पागल। प्रमत्त।

कुशध्वज—[पु०] विदेहराज जनक के छोटे भाई का नाम। माण्डवी और श्रुतकीर्ति के पिता।

कुशमुष्टि—[वि०] जो हाथ में कुशाओं का मुठा रखता हो। [पु०] कुशाओं का मुठा। मुट्ठीभर कुशा।

कुशल—[पु०] मङ्गल। क्षेम। कल्याण। आनन्द। [वि०] चतुर। होशियार। दक्ष। जो कुश हाथ में लिए हो। पुण्यशील। श्रेष्ठ। गुणी।

कुशलता—[स्त्री०] चतुराई। निपुणता। दक्षता।

कुशहस्त—[वि०] हाथ में कुशा रखनेवाला। कुशमुष्टि।

कुशा—[स्त्री०] कुशनामक घास। लगाम। रस्सी। एक प्रकार का मीठा नीबू।

कुशाग्र—[पु०] कुश का अग्रभाग (नोंक)। बृहद्रथ के पुत्र का नाम। [वि०] कुशा की नोंक के समान सूक्ष्म या तीक्ष्ण।

कुशाग्रीय—[वि०] कुशा की नोंक-जैसा सूक्ष्म या तेज़। अति महीन।

कुशाङ्गुरीय—[पु०] कुशानिर्मित अँगूठी। पवित्रा। पैंती। यह श्राद्धादि कार्य करते समय अनामिका अँगुली में पहनी जाती है।

कुशावती—[स्त्री०]रामचन्द्र जी के पुत्र कुश की राजधानी। एक नगरी।

कुशाश्व—[पु०] इस नाम से प्रसिद्ध एक राजा जो विशाला नगरी में राज्य करते थे।

कुशासन—[पु०] (कुश + आसन) कुश नामक घास का बनाया हुआ आसन। (कु + शासन) बुरा राज्य। बुरी अमलदारी।

कुशिक—[पु०] विश्वामित्र के बाबा। कुशिक के वंश में उत्पन्न होने से ही विश्वामित्र 'कौशिक' कहलाए।

कुशि (शी) नगर—[पु०] एक प्रसिद्ध प्राचीन नगर जहाँ बुद्ध भगवान् का निर्वाण हुआ था।

कुशी—[पु०] वाल्मीक मुनि। (स्त्री०) लोहे की बनी हल की फाल। [वि०] कुशाओं से युक्त। कुशाओंवाला।

कुशीद—[पु०] ब्याज की जीविका। सूदखोरी। हल का फाल। लाल चन्दन।

कुशील—[वि०] बुरे स्वभाववाला। बदमिजाज़।

कुशीलव—[पु०] नट। भाट। गवैया। कत्थक। वाल्मीक मुनि। रामचन्द्रजी के कुश और लव दोनों पुत्र।

कुशूल—[पु०] अन्न रखने का मिट्टी आदि का बना पात्र या स्थान। कोठा। आग। कुठीला। पुआरी। भत्ती। स्थान। कड़ाही। भूसे की आग। कोई राक्षस-विशेष। बुरा दर्द।

कुशूलधान्य, कुशूलधान्यक—[पु०] वह गृहस्थ जिसके पास कुशूलपरिमित (तीन वर्ष तक के व्यवहारोपयुक्त) अन्न सञ्चित हो। कोठा या कुठीला भरा अन्न।

कुशेशय—[पु०] कमल। सारस नामक पक्षी। करना या कनियारी का वृक्ष। पुराणों के अनुसार कुशद्वीपस्थित पर्वत-विशेष।

कुशोदक—[पु०] कुशाओं से छुआ हुआ जल। संकल्प के निमित्त कुशों सहित हाथ में लिया हुआ जल।

कुश्रुत—[वि०] भले प्रकार न सुना हुआ। जो स्पष्ट न सुना हो।

कुषल—[वि०] पटु। होशियार। चतुर। दक्ष।

कुषाकु—[पु०] वानर। सूर्य।

अग्नि । शरीर । [वि०] तपानेवाला । उत्तापजनक ।

कुषीद—[पु०] वृत्ति । आयका । ब्याज पर रुपये देना । सूदखोरी । [वि०] उदासीन । निष्क्रिय । निठल्ला । निर्दय ।

कुष्ठ—[पु०] एक प्रकार का रोग । कोढ़ । कूठ नामक ओषधि । [illegible] विष । कुलंजन का वृक्ष ।

कुष्ठगन्धा—[स्त्री०] अश्वगन्धा । आसगन्ध ।

कुष्ठघ्न—[वि०] कोढ़ रोग को मिटानेवाला । [पु०] खादिर वृक्ष ।

कुष्ठघ्नी—[स्त्री०] काकोदुम्बर । काकुम्बा । काकमाची ।

कुष्ठविद्—[वि०] कुष्ठ रोग को लक्षणादि द्वारा पहचाननेवाला । [स्त्री०] कुष्ठ के स्वरूप का ज्ञान । कोढ़ की पहचान ।

कुष्ठित—[वि०] जिसको कुष्ठ रोग हो रहा हो । कोढ़ी । कोढ़ से उत्पन्न ।

कुष्ठी—[वि०] कुष्ठ रोगयुक्त । कोढ़ी ।

कुष्माण्ड, कुष्माण्डक—[पु०]कुम्हड़ा । काशीफल । शिवगण । एक पार्षद का नाम ।

कुष्माण्डी—[स्त्री०] कुम्हड़े की लता । काशी फल की बेल । एक प्रकार की योग-क्रिया । एक प्रकार का प्रायश्चित्त । दुर्गा । उमा ।

कुसंस्कार—[पु०] बुरे संस्कार । कुत्सित स्वभाव ।

कुसङ्ग—[पु०] बुरा साथ ।

कुसङ्गति—[स्त्री०] कुसंग । बुरा साथ ।

कुसचिव—[पु०] बुरा मन्त्री । वह मन्त्री जो अनुचित मन्त्रणा देता हो ।

कुसमय—[पु०] बुरा समय । संकट काल । खोटे दिन । दुर्दिन । किसी काम के लिए अनुपयुक्त अवसर । नियत समय से पहले या पीछे का समय ।

कुसरित्—[स्त्री०] कुत्सित नदी । छोटी नदी । वह नदी जिसमें थोड़ा जल हो ।

कुसल—[पु०] देखो 'कुशल' ।

कुसली—[वि०] देखो 'कुशली' । [स्त्री०] आम की गुठली । गुझा । गुझिया ।

कुसवसर—[पु०] कुसमय । कुअवसर । अनुपयुक्त अवसर ।

कुसित—[पु०] जनपद । बस्ती । ब्याज पर रुपया उधार देनेवाला । वार्धुषिक ।

कुसितायी—[स्त्री०] ब्याज खानेवाले की स्त्री । सूदखोर की जोरू । वार्धुषिकी ।

कुसीद—[पु०] ब्याज । सूद । वृद्धि । ब्याज पर दिया हुआ धन । [वि०] महाजन । वार्धुषिक । सूद पर रुपया देनेवाला ।

कुसीदायी—[स्त्री०] देखो 'कुसितायी' ।

कुसीदी—[वि०] वार्धुषिक । सूदखोर ।

कुसुम—[पु०] पुष्प । फूल । एक नेत्र-रोग । स्त्रीरज । मासिकधर्म । रज । छोटे-छोटे वाक्यों में लिखा हुआ गद्य । फल । मेवा । एक प्रकार का छन्द ।

कुसुमकार्मुक—[पु०] कामदेव । कन्दर्प ।

कुसुमधन्वा—[पु०] कामदेव । कुसुमकार्मुक ।

कुसुमपुर—[पु०] पटना नाम से प्रसिद्ध नगर । पाटलिपुत्र ।

कुसुमफल—[पु०] जायफल । जातीफल ।

कुसुमरेणु—[पु०] पराग । फूल की धूल ।

कुसुमवती—[स्त्री०] ऋतुमती स्त्री । रजस्वला । फूलोंवाली लता ।

कुसुमबाण—[पु०] पुष्पबाण । कामदेव । कामदेव के पाँच पुष्प बाण—१ अरविन्द, २ अशोक, ३ आम्रमञ्जरी, ४ नवमल्लिका । ५ नीलकमल ।

कुसुमविचित्रा—[स्त्री०] एक छन्द-विशेष ।

कुसुमशर—[पु०] कामदेव ।

कुसुमसार—[पु०] मधु । शहद ।

कुसुमाकर—[पु०] फूलों का ढेर । वसन्त ऋतु ।

कुसुमागम—[पु०] जिस समय में बहुत से फूल खिलें वह—वसन्त ऋतु ।

कुसुमाञ्जलि—[स्त्री०] फूलों से भरी हुई अञ्जलि । पुष्पाञ्जलि ।

कुसुमाधिप—[पु०] चम्पक वृक्ष । चम्पा का पेड़ ।

कुसुमायुध—[पु०] कामदेव । कन्दर्प । मदन । मन्मथ ।

कुसुमावचय—[पु०] पुष्पचयन । फूलों का चुनना ।

कुसुमावलि—[स्त्री०] फूलों की लड़ी । फूलों का गुच्छा । पुष्प-समूह ।

कुसुमासव—[पु०] कुसुमसार । मधु । शहद ।

कुसुमित—[वि०] फूला हुआ । प्रफुल्लित । पुष्पित । खिला हुआ ।

कुसुमेषु—[पु०] कामदेव ।

कुसुमोच्चय—[पु०] फूलों का समूह । फूलों का गुच्छा ।

कुसुमोद्यान—[पु०]पुष्पवाटिका । फुलवाड़ा । फुलबाग़ ।

कुसुम्भ—[पु०] एक प्रकार का फूल । कुसुम, जिससे लाल रंग बनाया जाता है । अफ़ीम और भांग को मिलाकर बनाया हुआ एक मादक द्रव्य । कुङ्कुम । केशर । स्वर्ण । सोना । एक पर्वत-विशेष । साहित्य में शृंगार रसान्तर्गत पूर्वराग का एक भेद ।

कुसुम्भवान्—[वि०] कमण्डलुधारी ।

कुसुम्भा—[स्त्री०] आषाढ़ शुक्ला षष्ठी । असाढ़ सुदि छठ । [दि० पु०] मादक द्रव्य-विशेष जो भाँग और अफ़ीम मिलाकर बनाया जाता है । अफ़ीम का घोल ।

कुसूल—[पु०] अन्न भरने का मिट्टी का बना गोल स्तम्भाकार पात्र। कोठला। कुठिला। भुसी की आग।

कुसृति—[स्त्री०] शठता। पाजीपन। हस्तलाघव। हाथ की सफाई। जादूगरी। [वि०] शठ। पाजी। दुराचारी।

कुस्तुभ—[पु०] विष्णु। वाराह। समुद्र।

कुस्तुम्बरु—[पु०] कुबेर के एक अनुचर का नाम। धनियाँ।

कुस्तुम्बुरु—[पु०] हरा धनियाँ। गन्धर्व-विशेष का नाम।

कुस्त्री—[स्त्री०] बुरी स्त्री। दुश्चारिणी। छिनाल।

कुस्वप्न—[पु०] दुःस्वप्न, बुरा सपना। [illegible]

कुहक—[वि०] ऐन्द्रजालिक। धूर्त। मायावी। छली। [पु०] मेंढक। मुर्गे की बोली। इन्द्रजाल। माया। छल। [illegible]। धोखा। धूर्तता।

कुहकजीवी—[वि०] इन्द्रजाल से जीविका करनेवाला। बाजीगर। जादूगर।

कुहकवृत्ति—[स्त्री०] इन्द्रजाल विद्या। बाजीगरी। हाथ की सफाई।

कुहकस्वन—[पु०] जंगली मुर्गा। वन-कुक्कुट।

कुहकस्वर—[पु०] देखो "कुहकस्वन"।

कुहकी—[वि०] बाजीगर। ऐन्द्रजालिक। मायावी। छलिया। प्रतारक।

कुहन—[पु०] चूहा, मूषक। गर्व, साँप। मिट्टी का पात्र विशेष। काँच का बर्तन। [वि०] ईर्ष्यालु। डाह करनेवाला।

कुहना—[स्त्री०] धोखा। प्रतारणा। छल। [हि० क्रि०] मारना पीटना। मार-मार के कचूमर निकालना।

कुहप—[पु०] राक्षस। निशाचर।

कुहर—[पु०] एक प्रकार का साँप। छेद। गुहा। गुफा। गड्ढा। कान। [illegible]। गला। [illegible]। समीप। भुना हुआ अन्न। रति-क्रिया।

कुहरा—[पु०] कोहरा। कुहासा। कुज्झटिका।

कुहराम—[पु०] [illegible]। आर्तनाद। हाय-हाय। उपद्रव। हलचल।

कुहरित—[पु०] [illegible]। कोयल की बोली। कोकिल-कूजित। [illegible]।

कुही—[स्त्री०] एक शिकारी पक्षी। [illegible]

घोड़ा।

कुहू—[स्त्री०] अमावास्या। [illegible] [illegible] जिसमें [illegible] दर्शन न हो। कोयल का [illegible]। [illegible] नदी विशेष।

कुहुक—[स्त्री०] पक्षियों का मधुर कूजन। कोयल का शब्द। [illegible]

कुहुकना—[क्रि०] पक्षियों का मधुर शब्द करना। कूकना। [illegible] स्वर में बोलना।

कुहुकबान—[पु०] [illegible] बाण जिसके चलने से [illegible] शब्द होती है।

कुहुकण्ठ—[पु०] कोकिल। [illegible]

कुहू—[स्त्री०] देखो "कुहु"।

कुहूकण्ठ—[पु०] कोकिल। [illegible]

कू—[स्त्री०] डाइन। चुड़ैल। पिशाची।

कूँड़—[पु०] लोहे की बनी टोपी। युद्धकाल में योद्धा लोग इसे शिर पर धारण करते हैं। मिट्टी का बना पात्र-विशेष। खेत में हल चलाने से बननेवाली रेखा।

कूँथना—[क्रि०] काँखना। कराहना।

कूँई—[स्त्री०] कुमुदिनी। कुमुद। कमल की जाति का एक छोटा फूल जो रात्रि में फूलता है।

कूक—[स्त्री०] मोर अथवा कोयल का मधुर शब्द। कूजन। रोदन। आर्तनाद।

कूकुद—[पु०] वस्त्रालङ्कारों से भूषित कन्या का दान करनेवाला। चिह्न। निशान।

कूकुर—[पु०] कुक्कुर। कुत्ता।

कूच—[पु०] [illegible]। प्रस्थान। [illegible]।

कूचा—[पु०] [illegible] गली। [illegible]। कूँचा।

कूचिका—[स्त्री०] चित्रादि बनाने में काम आनेवाली बालों की बनी छोटी कलम। कूची। तूलिका। दूध में पका [illegible] हुआ [illegible]।

कूची—[स्त्री०] देखो "कूचिका"।

कूजन—[पु०] पक्षियों की ध्वनि। [illegible]

कूजा—[पु०] [illegible] [illegible] काम आता है। [illegible] मिट्टी के [illegible] में जमाया हुआ मिश्री का [illegible]। [illegible]

कूजित—[पु०] पक्षियों की ध्वनि। पक्षियों की चहचहाहट। [illegible] से पूर्ण स्थान।

कूट—[पु०] पर्वत-शिखर। पहाड़ का कँगूरा। ताज। मुकुट। अग्रभाग। समूह। ढेर। लोहे का मुद्गर। हल का फाल। हिरनों के पकड़ने का फन्दा। गूढ़। कठिन। भेदपूर्ण। श्लेषयुक्त बात। व्यंग्योक्ति। असत्य। छल। धोखा। तुच्छ। छोटा। नगर का द्वार। घर। गृह। जल का पात्र। अगस्त्य मुनि का एक नाम। टूटे सींगवाला बैल। बूढ़ा। [वि०] मिथ्याभाषी। छलिया। बनावटी। निश्चल। ठहरा

हुआ। असम्मानित। भ्रष्ट किया हुआ। [स्त्री०] एक औषधि।

कूटकर्म—[पु०] छल। धोखा। कपट।

कूटकर्मा—[पु०] छली। कपटी। मक्कार।

कूटकार, कूटकारक—[वि०] झूठी गवाही देनेवाला। वंचक। ठगनेवाला।

कूटकृत्—[पु०] कायस्थ। शिव। [वि०] झूठ बोलनेवाला। झूठी डींग मारनेवाला। मिथ्याभिमानी। धूर्त। विरोधी।

कूटता—[स्त्री०] कठिनाई। छल। कपट।

कूटतुला—[स्त्री०] धोखा देनेवाली तराजू। पासंग या बट्टेवाली तराजू।

कूटनीति—[स्त्री०] कपट नीति। धोखे की चाल। छल कपट का बर्ताव। दाँव। धोखेबाज़ी। [illegible]-नीति।

कूटपाश—[पु०] [illegible] पकड़ने का फन्दा। गुप्त पाश।

कूटयुद्ध—[पु०] धोखे की लड़ाई। कपट युद्ध। [वि०] धोखे से लड़नेवाला।

कूटयोधी—[वि०] छिपकर लड़नेवाला। धोखे से युद्ध करनेवाला।

कूटरचना—[स्त्री०] किसी को फसाने के लिए बनाया गया जाल। मृगादि के पकड़ने का फन्दा।

कूटलेख—[पु०] झूठा या बनावटी लेख। ऐसा लेख जिसका स्पष्ट अर्थ न समझा जाय। जाली दस्तावेज।

कूटलेखक—[पु०] जाली दस्तावेज बनानेवाला। झूठा या गूढ़ लेख लिखनेवाला। जिसकी लिखाई समझ में न आवे।

कूटसाक्षी—[पु०] झूठा गवाह। अथवा साक्ष्य देनेवाला।

कूटस्थ—[वि०] परिणामादिशून्य। सब कालों में एकरूप रहनेवाला। अटल। अचल। ब्रह्म। अविनाशी। व्याघ्रनख नाम का सुगंधित द्रव्य।

कूटस्वर्ण—[पु०] बनावटी सोना। खोटा सोना।

कूटाक्ष—[पु०] जाली पासा।

कूटागार—[पु०] क्रीड़ा-गृह। खेलने का स्थान। घर की ऊपरी अटारी। चित्रशाला।

कूटायु—[पु०] [illegible]।

कूटार्थ—[पु०] गूढ़ अर्थ। कालिदास।

कूटू—[पु०] पौदा-विशेष। इसके बीजों का आटा फलाहार में खाया जाता है।

कूड़ी—[स्त्री०] लोहे की टोपी जो प्रायः युद्ध में पहनी जाती है।

कूढ़—[वि०] मूर्ख। अनभिज्ञ। बेवकूफ़।

कूत—[स्त्री० अनुमान। अन्दाज़।

कूणि—[वि०] टोंटा। वक्रहस्त।

कूणिका—[स्त्री०] वीणा या सितार की खूँटी। शृंग। सींग।

कूप—[पु०] कुआँ। गर्त। चाह। इनारा।

कूपमण्डूक—[पु०] कुएँ का मेढक। वह मनुष्य जो अपना घर छोड़कर बाहर न गया हो। अल्पज्ञ।

कूपकार—[पु०] कुआँ खोदनेवाला।

कूपज—[पु०] लोम। केश। बाल।

कूपाङ्ग—[पु०] रोमांच। रोंगटे खड़े होना।

कूपार—[पु०] समुद्र। सागर।

कूपी—[स्त्री०] छोटा कूआ। कुइयाँ। नाभि। कुप्पा। पात्र-विशेष। कोषकच्छू नामक औषधि।

कूपोदक—[पु०] कुए का पानी।

कूबड़—[पु०] पीठ का टेढ़ापन।

कूबड़ी (री)—[स्त्री०] राजा कंस की एक दासी जो कृष्ण पर मुग्ध थी। काठ या बाँस की मुड़ी हुई मूठवाली छड़ी। रथ। गाड़ी।

कूभ—[पु०] सरोवर। तालाब। काष्ठविशेष।

कूर—[पु०] क्रूर। निर्दय। भयङ्कर। मनहूस।

कूरता—[स्त्री०] निर्दयता। कठोरता। बेरहमी।

कूरम, कूर्म—[पु०] कछुआ। कच्छप।

कूरा—[पु०] हिस्सा। भाग। राशि। ढेर।

कूर्च—[वि०] मुट्ठी भर कुश। दोनों भौंहों के बीच की जगह। दाढ़ी। मूँछ। मुट्ठीभर मोरपंख। दम्भ। घमण्ड। धोखा। फरेब। कड़ापन। योग के आसनों में से एक आसन। कूँची। मस्तक। भाण्डार।

कूर्चक—[पु०] कूँचा। कलम। भाण्ड के ऊपरी हिस्से और निचले हिस्से का कपड़ा।

कूर्चकी—[वि०] स्थूल। मोटा-ताजा। भरा-पूरा।

कूर्चभाक्—[पु०] भोजपत्र।

कूर्चल—[पु०] प्राणियों के दूसरी बार दाँत निकलने का समय।

कूर्चशीर्ष—[पु०] नारियल का वृक्ष।

कूर्चशेखर—[पु०] देखो 'कूर्चशीर्ष'।

कूर्चिका—[स्त्री०] कुंजी। तूलिका। कलम। कुंजी। चाबी। सुई। फूल की कली। फटा हुआ दूध, छेना।

कूर्चिकापिण्ड—[पु०] फटे दूध का छेना।

कूर्द—[पु०] कूदना। फाँदना।

कूर्दन—[पु०] शिशु-क्रीड़ा। उछल-कूद। लड़कों का खेल।

कूर्दनी—[स्त्री०] चैत मास की पूर्णिमा। मदनोत्सव दिवस।

कूर्पर—[पु०] घुटना। पारया। जानु।

कूर्पास—[पु०] कञ्चुकी। अँगिया। चोली। आधा तोला। वस्त्र। कपड़ा।

कूर्पासक—[पु०] देखो 'कूर्पास'।

कूर्म—[पु०] कच्छप। कछुआ। पृथिवी। प्रजापति का अवतार-विशेष।

वह वायु जिससे पलक खुलते और बन्द होते हैं। विष्णु का दूसरा अवतार। रुद्र का पुत्र-विशेष। तन्त्रशास्त्र की एक मुद्रा। योग का एक आसन-विशेष।

कूर्म-पुराण—[पु०] अठारह पुराणों में से एक पुराण।

कूर्मपृष्ठ—[पु०] कछुए की पीठ।

कूर्मभट्ट—[पु०] बालभागवत के रचयिता।

कूर्मराज—[पु०] कच्छपराज। कूर्म रूपी विष्णु जिन्होंने पीठ पर पृथिवी को धारण किया है।

कूर्मावतार—[पु०] विष्णु का कूर्म देह-धारण। कच्छपावतार।

कूर्मासन—[पु०] हठयोग का एक आसन-विशेष।

कूल—[पु०] किनारा। तीर। तट। स्तूप। खम्भा। तालाब। सेना का पिछला हिस्सा। नहर। नाला।

कूलक—[पु०] किनारा। खम्भा। वल्मीक। दीमक की पहाड़ी। पटोल-पत्र।

कूलङ्कष—[पु०] समुद्र।

कूलभू—[स्त्री०] तटवर्ती भूमि।

कूलवती—[स्त्री०] नदी।

कूलिका—[स्त्री०] वीणा या सितार का नीचे का हिस्सा।

कूलिनी—[स्त्री०] नदी, सरिता।

कूली—[वि०] किनारेदार। कूलयुक्त। [स्त्री०] एक प्रकार की मछली।

कूल्हना—[क्रि०] कराहना, कोंखना।

कूल्हा—[पु०] पेड़ के दोनों ओर उभरी हुई हड्डियाँ। कुश्ती का एक पेच।

कूष्माण्ड—[पु०] कुम्हड़ा, पेठा। एक ऋषि का नाम। मन्त्र-विशेष। गण देवता विशेष।

कूष्माण्डा—[स्त्री०] देवी का एक नाम।

कूही—[स्त्री०] एक शिकारी चिड़िया।

कृकर—[पु०] शरीर में स्थित वह वायु जो छींक लाती है। शिव। पक्षी-विशेष। कनेर वृक्ष। चकोर।

कृकला—[स्त्री०] [illegible] मागधिका। पीपल, पिप्पली।

कृकलाश—[पु०] गिरगिट, करकैंटा।

कृकलास—[पु०] देखो 'कृकलाश'।

कृकवायु—[पु०] मुर्गा, मोर। गिरगिट। [स्त्री०] छिपकली। गृह गोधा।

कृच्छ्र—[पु०] दुःख, कष्ट। पाप मोचनार्थ सान्तपनादि व्रत। तपस्या।

कृच्छ्रकर्म—[पु०] कठिनाई से होनेवाला काम। कष्टसाध्य।

कृच्छ्रप्राण—[पु०] विपद्ग्रस्त, संकटापन्न।

कृच्छ्रसाध्य—[पु०] कष्टसाध्य। कठिनाई से अच्छा होनेवाला।

कृच्छ्र सान्तपन—[पु०] पाप निवारणार्थ व्रत विशेष।

कृच्छ्रातिकृच्छ्र—[पु०] एक व्रत विशेष।

कृत—[वि०] किया हुआ, विहित, सम्पादित, प्रस्तुत। [illegible]। [illegible]। समीपवर्त्ती। अभ्यस्त। यथेष्ट, पर्याप्त। अलम्। वर। फल। फायदा। लूट का माल। दाव पर लगाया हुआ धन। सतयुग।

कृतक—[वि०] कृत्रिम। बनावटी। नकली।

कृतकर्तव्य—[वि०] जो अपना कर्तव्य पूरा कर चुका हो।

कृतकर्मा—[वि०] दक्ष। होशियार। निपुण। जो अपना कार्य कर चुका हो।

कृतकल्प—[वि०] सांसारिक व्यवहार में कुशल। दुनिया का काम-काज समझनेवाला।

कृतकाम—[वि०] सफलमनोरथ। जिसकी इच्छाएँ पूरी हो चुकी हों।

कृतकार्य—[वि०] जो अपना कार्य सिद्ध कर चुका हो।

कृतकाल—[पु०] नियत समय। निश्चित समय। मुकर्रर वक्त।

कृतकीर्ति—[वि०] प्रसिद्ध। विख्यात। ख्यातनामा।

कृतकृत्य—[वि०] सफलमनोरथ। जो पूरी तरह अपना काम समाप्त कर चुका हो। प्रवीण। दक्ष। सन्तुष्ट। [पु०] किया हुआ काम।

कृतकृत्यता—[स्त्री०] सफलता। कामयाबी।

कृतकोप—[वि०] क्रुद्ध। नाराज।

कृतकौतुक—[वि०] खिलाड़ी। खेलनेवाला।

कृतक्रय—[पु०] खरीददार। मोल-लेनेवाला। क्रेता।

कृतक्रिय—[वि०] जो कार्य कर चुका हो। शास्त्रविहित कार्य करनेवाला।

कृतघ्न—[वि०] उपकार को भूल जानेवाला। गुनमेंटा। अहसानफरामोश।

कृतघ्नता—[स्त्री०] उपकार न मानना। गुनचोरापन। अहसानफरामोशी।

कृतज्ञ—[वि०] उपकार माननेवाला। अहसानमन्द।

कृतज्ञता—[स्त्री०] उपकार मानना। अहसानमन्दी।

कृततीर्थ—[वि०] अनेक तीर्थ कर चुकनेवाला। उपदेष्टा।

कृतदार—[पु०] विवाहित। जिसका विवाह हो चुका हो।

कृतदास—[पु०] निर्दिष्ट समय तक दासत्व स्वीकार करनेवाला।

कृतधी—[त्रि०] सफलता के सम्बन्ध में सन्देह न रखनेवाला। शिक्षित। विद्वान्। शास्त्रादि के विचार से बुद्धि को स्थिर करनेवाला।

कृतध्वंस—[वि०] विजित। पराजित। आहत। नष्टभ्रष्ट।

कृतनाशक—[वि०] कृतघ्न। गुनमेंटा।

कृतनित्यक्रिय—[वि०] सन्ध्योपासनादि नित्य कर्म कर चुकनेवाला ।

कृतनिन्दक—[वि०] किये की निन्दा करनेवाला । कृतघ्न ।

कृतनिश्चय—[वि०] इरादा बांध लेनेवाला । निस्सन्देह होकर काम करनेवाला ।

कृतपर्व—[पु०] कृतयुग । सतयुग ।

कृतपश्चात्ताप—[वि०] पश्चात्ताप करनेवाला । पछतानेवाला ।

कृतपुंख—[वि०] तीर चलाने में कुशल ।

कृतपुण्य—[वि०] पुण्य कार्य कर चुकनेवाला । जिसने बहुत से पुण्य कार्य किये हों ।

कृतपूर्व—[वि०] पहले किया हुआ । जो पेश्तर किया जा चुका हो ।

कृतपूर्वी—[वि०] जो पहले ही कर चुका हो । निष्पन्नकर्म्मा ।

कृतप्रतिज्ञ—[वि०] प्रतिज्ञा करनेवाला । दृढ़निश्चयी । जिसने प्रण किया हो ।

कृतप्रयत्न—[वि०] चेष्टा करनेवाला । जो कोशिश में लगा हो ।

कृतबुद्धि—[वि०] इरादा बांध लेनेवाला । दृढ़-निश्चयी ।

कृतभोजन—[वि०] भोजन कर चुकनेवाला । जो भोजन कर चुका हो ।

कृतमति—[वि०] देखो 'कृतबुद्धि' ।

कृतमार्ग—[वि०] जो रास्ता तैयार कर चुका हो ।

कृतमुख—[पु०] पण्डित । होशियार ।

कृतयुग—[पु०] सतयुग ।

कृतरुप—[वि०] क्रुद्ध । नाराज ।

कृतविद्य—[वि०] ज्ञानी । पण्डित ।

कृतविवाह—[पुं०] देखो 'कृतदार' ।

कृतवीर्य—[वि०] बलिष्ठ । वीर्यवान् । ताकतवर । एक नामविशेष ।

कृतवेतन—[वि०] नियमित वेतन पानेवाला । जिसे बँधी तनख्वाह मिलती हो ।

कृतवेदी—[वि०] देखो 'कृतज्ञ' ।

कृतवेश—[वि०] अलंकृत । जो सज चुका हो ।

कृतव्रत—[वि०] जो व्रत कर चुका हो ।

कृतशिल्प—[वि०] शिल्पी । कारीगर ।

कृतश्रम—[वि०] जो मेहनत कर चुका हो ।

कृतसङ्केत—[वि०] संकेत किया हुआ । संकेत द्वारा अपना मनोभाव बतानेवाला । जो ठहराया जा चुका हो ।

कृतस्थिति—[वि०] ठहरा हुआ ।

कृतस्नेह—[वि०] प्यार करनेवाला ।

कृतहस्त—[वि०] क्रियाकुशल । अभ्यस्त । निपुण ।

कृताङ्क—[वि०] चिन्हित । निशान किया हुआ ।

कृताञ्जलि—[वि०] बद्धाञ्जलि । हाथ जोड़े हुए ।

कृतात्मा—[वि०] शुद्धचित्त । साफदिल । शिक्षित । बुद्धिमान् । सिद्ध । पहुँचा हुआ ।

कृतानति—[वि०] जो विनय से झुक गया हो ।

कृतान्त—[वि०] समाप्त करनेवाला । खतम करनेवाला । [पु०] यमराज । सिद्धान्त । मृत्यु । पाप । शनिवार ।

कृतान्न—[पु०] पक्वान्न, पकवान, लड्डू आदि । [वि०] भोजन बनानेवाला ।

कृतापकार—[वि०] आहत । पराजित । दबा हुआ । अपकार करनेवाला ।

कृतापराध—[वि०] अपराधी । दोषी । मुजरिम ।

कृताभरण—[वि०] अलंकृत । सजा हुआ ।

कृताभिषेक—[वि०] जो गद्दी पर बैठ चुका हो । जिसका अभिषेक हो चुका हो ।

कृताभ्यास—[वि०] जिसने अभ्यास किया हो । अभ्यस्त ।

कृतायास—[वि०] परिश्रम करनेवाला । मेहनती ।

कृतार्थ—[वि०] सफल । कृतकार्य । अपना काम कर चुकनेवाला । सन्तुष्ट । दक्ष । प्रवीण । मुक्त ।

कृतार्थता—[स्त्री०] सफलता । कामयाबी ।

कृतावमर्ष—[वि०] विस्मृत । भूला हुआ । असहनशील ।

कृतावास—[वि०] घर बना लेनेवाला ।

कृतास्त्र—[वि०] जो हथियार चलाना सीख चुका हो । हथियारबन्द ।

कृताहार—[वि०] भोजन कर चुकनेवाला ।

कृति—[स्त्री०] क्रिया । काम । रचना । हिंसा । मारकाट । माया । बाजीगरी । पिंगल में एक छन्द-विशेष । बीस की संख्या । एक प्रकार का अस्त्र । विष्णु ।

कृतिकर—[पु०] बीस हाथोंवाला रावण ।

कृतिमान्—[वि०] अनेक शुभ कार्य कर चुकनेवाला । पुण्यशील । वंशस्थापक ।

कृती—[वि०] शिक्षित । सुबोध । साधु । सरल । सीधा । पुण्यवान । उद्देश्य पूरा करनेवाला । कुशल । होशियार ।

कृत्ति—[स्त्री०] त्वचा । छाल । खाल । भोजपत्र ।

कृत्तिका—[स्त्री०] तीसरा नक्षत्र । चन्द्र की पत्नी । शकट । गाड़ी । मृगचर्म । भोजपत्र ।

कृत्तिवास—[पु०] शिव । महादेव । बँगला के एक प्रसिद्ध कवि ।

कृत्य—[वि०] कर्त्तव्य । कार्य । बहकाया हुआ । रिश्वत लेकर हत्या करनेवाला ।

कृत्यका—[स्त्री०] मायाविनी । डाकिनी । चुड़ैल ।

कृत्या—[स्त्री०] क्रिया । काम । जादू-टोना । जादू-टोना के देव । अभिचारादि कार्य के लिए आराधित देवता । मारण विधि ।

कृत्रिम—[वि०] बनावटी । कल्पित । [illegible] द्रव्य-विशेष । एक प्रकार का लवण ।

कृत्स—[पु०] समुदाय । कोष । जल ।

कृत्स्न—[वि०] सम्पूर्ण । सब । जल । समुदाय । कोष ।

कृदन्त—[पु०] व्याकरण में कृत् प्रत्यय के योग से बना हुआ शब्द ।

कृन्तन—[पु०] छेदन । काटना ।

कृन्तनिका—[स्त्री०] छुरी । चाकू ।

कृपणता—[स्त्री०] कंजूसी ।

कृपणधी—[वि०] मन्दबुद्धि । [illegible] मन । ओछे दिलवाला ।

कृपया—[अ०] कृपा करके । मेहरबानी से ।

कृपा—[स्त्री०] दया । मेहरबानी । नदी विशेष ।

कृपाकर—[वि०] दयालु । मेहरबान ।

कृपाचार्य—[पु०] महाभारत के प्रसिद्ध पात्र ।

कृपाण—[स्त्री०] कटार । तलवार । दण्डक वृत्त का एक भेद ।

कृपाणिका—[स्त्री०] छुरी । कटारी । चाकू ।

कृपानिधान, कृपानिधि—[वि०] मेहरबान । दयालु । कृपालु ।

कृपापात्र—[वि०] जिसपर कृपा की जाय । दयाभाजन । मेहरबानी करने योग्य ।

कृपायतन—[वि०] दयालु । मेहरबान ।

कृपालु—[वि०] दयालु । मेहरबान ।

कृपालुता—[स्त्री०] दयालुता । मेहरबानी ।

कृपावलोकन—[पु०] कृपादृष्टि । मेहरबानी की नज़र ।

कृपावान्—[वि०] कृपायुक्त । मेहरबान ।

कृपासिन्धु—[पु०] दयासागर । मेहरबान ।

कृपि—[स्त्री०] द्रोणाचार्य की पत्नी । कृपाचार्य की बहन । अश्वत्थामा की माता ।

कृपीपति—[पु०] द्रोणाचार्य ।

कृपीसुत—[पु०] अश्वत्थामा ।

कृमि—[पु०] कीट । कीड़ा । चींटी । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । किरमिजी । पेट में पैदा होनेवाले कीड़ों का रोग ।

कृमिक—[पु०] छोटा कीड़ा । [illegible] । कृमि । अहारी ।

कृश, कृशक—[वि०] थोड़ा । दुबला-पतला । अल्प । धीमा । दरिद्र । [illegible] । [illegible] ।

कृशरा—[स्त्री०] खिचड़ी ।

कृशाङ्गी—[स्त्री०] [illegible] । [illegible] । निर्बलता ।

कृशानु—[पु०] आग ।

कृशानुरेता—[पु०] महादेव । आग की लपट ।

कृशित—[वि०] दुबला-पतला ।

कृशोदरी—[स्त्री०] पतली कमरवाली स्त्री । [illegible] नामक ओषधि ।

कृष—[पु०] [illegible] ।

कृषक—[पु०] किसान । हल का फाल । बैल ।

कृषर—[स्त्री०] खिचड़ी ।

कृषाण—[पु०] किसान ।

कृषाणु—[पु०] आग ।

कृषि—[स्त्री०] खेती ।

कृषिक—[पु०] किसान । फाल ।

कृषिकर्म—[पु०] खेती का काम । खेती करनेवाला ।

कृषिजीवी—[पु०] खेती के सहारे जीनेवाला किसान ।

कृषीवल—[पु०] किसान ।

कृष्ण कर्म—[पु०] पाप कार्य—हिंसादि । काले काम । घाव की चिकित्सा । फल की कामना छोड़ ईश्वर के लिए [illegible] । कुकर्म ।

कृष्णकाय—[पु०] काला शरीर । भैंसा । कृष्ण का शरीर ।

कृष्णग्रीव—[पु०] नीलकण्ठ । महादेव ।

कृष्णचन्द्र—[पु०] भगवान श्रीकृष्ण । विष्णु के अवतारों में से एक ।

कृष्णच्छवि—[पु०] [illegible] । [illegible] ।

कृष्णद्वैपायन—[पु०] वेदव्यास । पराशर के पुत्र ।

कृष्ण धन—[पु०] निन्दित धन । [illegible] आदि काम करके कमाया हुआ धन ।

कृष्ण पक्ष—[पु०] अंधियारा पाख । [illegible] से अमावस्या पर्यन्त ।

कृष्ण मुख—[वि०] कलमुँहा । काले मुँहवाला । लंगूर ।

कृष्ण मृग—[पु०] काला हिरण ।

कृष्ण वर्त्मा—[पु०] अग्नि । आग । [illegible] नामक ओषधि । भिलावाँ । बुरा काम करनेवाला ।

कृष्णसर्प—[पु०] काला साँप ।

कृष्णसार—[पु०] काला हिरण । शीशम । खैर ।

कृष्णसारथि—[पु०] अर्जुन । अर्जुन वृक्ष ।

कृष्णा—[स्त्री०] द्रौपदी । एक नदी । दाख । किशमिश । नील का पौदा । जीरा । काली तुलसी । कस्तूरी । श्यामा चिड़िया ।

कृष्णाजिन—[पु०] काले मृग का चर्म ।

कृष्णाजिनी—[पु०] काले हिरण का चर्म धारण करनेवाला ।

कृष्णाञ्जन—[पु०] काला सुरमा ।

कृष्णाभिसारिका—[स्त्री०] रीति-शास्त्र में नायिका का एक भेद ।

कृष्णाभ्र—[पु०] [illegible] काला [illegible] ।

कृष्णाष्टमी—[स्त्री०] [illegible] कृष्ण पक्ष [illegible] ।

कृष्णी—[स्त्री०] [illegible] ।

कृष्य—[illegible] कृषि-कार्य के अनुकूल भूमि ।

केंचुल, केंचुली—[स्त्री०] [illegible] खाल जो साल भर में [illegible] आपसे आप उतर जाती ।

केकय—[पु०] देश-विशेष । [illegible] के निवासी । कैकय देश के राजा, जो महाराज दशरथ के श्वसुर [illegible] ।

केकयी—[स्त्री०] [illegible] ।

केका—[illegible] ।

केकिक—[पु०] मोर । मयूर ।

केकिशिखा—[स्त्री०] मोर की चोटी ।

केकी—[पु०] मयूर । मोर ।

केकेयी—[स्त्री०] कैकेयी ।

केचित—[अ०] कोई कोई ।

केत—[पु०] घर । बस्ती । बुद्धि । संकल्प । मन्त्रणा । सलाह । पताका । अन्न । अच्छी तरह समझनेवाला ।

केतक—[पु०] केतकी का फूल । केतकी का पेड़ ।

केतकी—[स्त्री०] इस नाम से प्रसिद्ध पौदा ।

केतन—[पु०] निमन्त्रण । बुलावा । झण्डा । चिह्न । घर । कृत्य । स्थान ।

केतु—[पु०] समझ । चमक । पताका । चिह्न । रोग । पीड़ा । उत्पात । ग्रह-[illegible] जिनके [illegible] [illegible] तारा ।

केतुमती—[स्त्री०] सुमाली राक्षस की स्त्री । छन्द-विशेष ।

केतुमान्—[पु०] [illegible] । मार्कण्डेय । धन्वन्तरि के पुत्र ।

केतुयष्टि—[स्त्री०] झण्डे की लकड़ी । पताका [illegible] ।

केदार—[पु०] [illegible] । खेत । [illegible] । एक प्रकार का [illegible] । एक [illegible] का नाम ।

केदारक—[पु०] [illegible] ।

केदारनाथ—[illegible] पर्वत [illegible] ।

केनिपात—[पु०] [illegible] चलाने की [illegible] । डाँड़ ।

केन्द्र—[पु०] वृत्त के बीच की जगह । ज्योतिष में लग्न के पहले, चौथे, सातवें [illegible] स्थान की संज्ञा । [illegible] ।

केन्द्रग—[illegible] से [illegible] ।

केन्द्रीभूत—[illegible] । एक-[illegible] ।

केयूर—[पु०] भुजा में धारण करने के आभूषण । बाजूबन्द । अंगद । अनन्त । भुजबन्द । [illegible] ।

केरल—[पु०] मालाबार देश । कनारा (?) का एक भाग । क्षत्रिय जाति का एक भेद । केरल देश के निवासी ।

केराना—[पु०] हल्दी, धनियाँ, मिर्चा आदि मसाले । [क्रि०] अनाज में से विजातीय द्रव्य सूप से फटक कर अलग करना ।

केरानी—[पु०] यूरेशियन । किरण्टा ।

केरा—[पु०] केला । का, की, के ।

केरी—[स्त्री०] आम के कच्चे छोटे फल । अँबिया ।

केला—[पु०] [illegible] ।

केलास—[पु०] स्फटिक मणि । बिल्लौर पत्थर । कैलास ।

केलि—[स्त्री०] परिहास, विहार, क्रीड़ा, [illegible] । [illegible] ।

केलिक—[पु०] अशोक वृक्ष ।

केलिकला—[स्त्री०] रति-क्रीड़ा । [illegible] ।

केलिकला—[स्त्री०] कामदेव की [illegible] ।

केलिगृह—[पु०] रति-क्रीड़ा-भवन । रंगशाला ।

केलिमण्डप—[पु०] केलिगृह ।

केवका—[पु०] प्रसूता स्त्री को खिलाया जानेवाला मसाला ।

केवट—[पु०] नाव चलानेवाला । मल्लाह ।

केवड़ा—[पु०] इस नाम से प्रसिद्ध पौधा जिस [illegible] सुगन्धित [illegible] ।

केवर्त—[पु०] मछुवा । मछली पकड़ने का व्यवसाय करनेवाली जाति ।

केवल—[वि०] मात्र । अकेला । सिर्फ । शुद्ध । निर्मल । निश्चय किया हुआ ।

केवलज्ञान—[पु०] इन्द्रियों की सहायता बिना केवल आत्मा से उत्पन्न हुआ ज्ञान ।[पु०] शुद्धज्ञान । भ्रान्ति-रहित ज्ञान ।

केवलदर्शन—[पु०] केवल ज्ञान के साथ होनेवाला दर्शन ।

केवलात्मा—[पु०] शुद्धस्वभाव । सीधासादा । ईश्वर जो पाप-पुण्य से रहित है ।

केवली—[पु०] ज्ञान । विवेक । जैनियों की मुक्ति । मुक्ति का अधिकारी ।

केवलव्यतिरेकी—[पु०] कार्य के द्वारा

कारण का ज्ञान। जैसे नदी की बाढ़ से वर्षा का।

केवलान्वयी—[पु०] कारण को देखकर कार्य का ज्ञान। जैसे मेघों को देख पानी बरसने का।

केश—[पु०] बाल (शिर के)। वरुण। एक दैत्य का नाम। किरण। विष्णु। वरुण। विश्व। ब्रह्म की एक शक्ति। सूर्य।

केशक—[पु०] बाल सम्हालनेवाला।

केशकर्म—[पु०] बालों का बनाव। मुण्डन-संस्कार।

केशकलाप—[पु०] बालों का जूड़ा। लट।

केशकीट—[पु०] जूआ।

केशग्रह—[पु०] बलपूर्वक बालों को पकड़कर खींचना।

केशच्छिद्—[पु०] बाल काटनेवाला। नापित। नाई।

केशपक्ष—[पु०] जुल्फ। काकुल। बालों की लट। काकपक्ष।

केशपाश—[पु०] देखो "केशपक्ष"।

केशप्रसाधिनी—[स्त्री०] कंघी। कंकतिका।

केशभू—[पु०] शिर। माथा।

केशमार्जक—[पु०] कंघा।

केशमार्जनी—[स्त्री०] कंघी।

केशर—[पु०] केसर। नागकेसर। मौलश्री। सिंह या घोड़े की गर्दन के बाल। कदम्ब। हींग का पेड़। फूलों के बीच के पतले पतले रेशे। सुपारी का पेड़।

केशरचना—[स्त्री०] बालों की सवार।

केशरञ्जन—[पु०] भाँगरा। भृंगराज।

केशराज—[पु०] भृंगराज। भाँगरा। केशरञ्जन।

केशरिया—[पु०] केशर का रंग। केशर के रंग से रँगा हुआ। वह बाना जिसे वीर राजपूत अन्तिम युद्ध के समय पहनते थे।

केश(स) री—[पु०] सिंह। घोड़ा। नागकेशर। हनुमान जी के पिता का नाम। बिजौरा नीबू।

केशरीसुत—[पु०] हनुमान।

केशलुञ्च—[पु०] जैन आचार्य। जैन मतानुसार साधु होने समय हाथों से केश उखाड़ने की क्रिया।

केशव—[पु०] विष्णु। कृष्ण। केशी का वध करनेवाला—ब्रह्मा। जल में पड़ा हुआ मुर्दा। कौआ। सुन्दर बालवाला परमेश्वर। सुन्दर केशोंवाला।

केशविन्यास—[पु०] केशों का प्रसाधन। बालों का सवारना।

केशवेश—[पु०] बालों की सजावट।

केशाकेशी—[पु०] एक दूसरे के बाल खींचते हुए होनेवाला द्वन्द्व युद्ध।

केशान्त—[पु०] मुण्डन संस्कार। गोदान कर्म। बाल का सिरा।

केशि—[पु०] एक दानव जिसे कृष्ण ने मारा था।

केशिक—[पु०] बालदार। केशयुक्त। कसेरू।

केशिनिसूदन—[पु०] केशि दैत्य को मारनेवाले कृष्ण।

केशिनी—[स्त्री०] सुन्दर और घने बालोंवाली। जटामांसी। रावण की माता। पार्वती की सखी। बाँझ।

केशी—[पु०] सुन्दर और घने बालों वाला। घोड़ा। सिंह। विष्णु।

केसर—[पु०] देखो "केशर"।

केसरिया—[वि०] देखो 'केशरिया'।

केसरी—[पु०] देखो 'केशरी'।

केसू—[पु०] किंशुक। टेसू। ढाक। पलाश।

केहरी—[पु०] शेर। घोड़ा।

केहा—[पु०] मोर।

कैकय—[पु०] कैकय देश।

कैकयी—[स्त्री०] कैकेयी। भरत की माता।

कैकस—[पु०] एक राक्षस।

कैकसी—[स्त्री०] सुमाली नामक राक्षस की पुत्री जो रावण की माँ थी।

कैकेय—[पु०] केकय राजा का पुत्र। केकय देश की भाषा।

कैकेयी—[स्त्री०] केकय राजा की पुत्री। दशरथ की मँझली रानी। भरत की माता।

कैङ्कर्य—[पु०] सेवकाई।

कैट—[वि०] कीड़ों से सम्बन्ध रखने वाला। कीट-संबंधी।

कैटभ—[पु०] दैत्य-विशेष।

कैटभजित्—[पु०] विष्णु।

कैटभा—[स्त्री०] दुर्गा।

कैटभी—[स्त्री०] दुर्गा। महाकाली। योगनिद्रा।

कैटभारि—[पु०] कैटभजित। विष्णु।

कैतव—[पु०] छल। कपट। शठता। जुआ। वैदूर्य। धतूरा। लहसुनिया। [वि०] छलिया। धोखेबाज। शठ। जुआरी।

कैतवापह्नुति—[स्त्री०] साहित्य में एक अलङ्कार-विशेष। जिसमें असली बात व्याज से छिपाई जाती है।

कैदारक, कैदारिक—[पु०] खेतों का समूह। हार।

कैधों—[अव्य०] अथवा। किंवा।

कैरव—[पु०] कुमुद। सफेद कमल। बगुला। ज्वारी। शत्रु।

कैरविका—[स्त्री०] कुमुदिनी।

कैरवी—[पु०] चन्द्रमा। [स्त्री०] चन्द्रिका। चाँदनी। मेथी।

कैलास—[पु०] एक पर्वत का नाम। महादेव और कुबेर का निवास-स्थान।

कैलासनाथ—[पु०] शिवजी। कुबेर।

कैलासपति—[पु०] कैलासनाथ।

कैलासी—[वि०] कैलास के रहनेवाले।
कैवर्त, कैवर्तक—[पु०] मल्लाह। केवट। धीवर। नाव चलानेवाला।
कैवल्य—[पु०] मुक्ति-विशेष। निर्वाण। शुद्धता। खालिसपन। एक उपनिषद्।
कैशिक—[पु०] केशसमूह। बालों का गुच्छा। लट। शृंगार रस। नाच की एक चाल।
कैशोर—[पु०] ग्यारह से पन्द्रह वर्ष तक की अवस्था। लड़कपन।
कैश्य—[पु०] केशसमूह। बालों की लट। जूड़ा।
कोंपल—[स्त्री०] अंकुर। पेड़ की नई और कोमल पत्तियाँ।
कोक—[पु०] चक्रवाक। चकवा। खजूर। मेंढ़क। विष्णु। भेड़िया। कोक शास्त्र के रचयिता। संगीत-भेद।
कोकई—[वि०] एक प्रकार का रंग। वह नीला रंग जिसमें गुलाबी झलक मारती हो। कोड़ियाला।
कोककला—[स्त्री०] रतिविद्या।
कोकदन्ता—[स्त्री०] मेंहदी की पत्ती।
कोकदेव—[पु०] कबूतर। कपोत। कोक शास्त्र के रचयिता।
कोकनद—[पु०] लाल कमल। लाल कुमुद।
कोकबन्धु—[पु०] सूर्य।
कोकशास्त्र—[पु०] कोक नामक पण्डित का बनाया रतिशास्त्र। कामशास्त्र।
कोकावेली—[स्त्री०] नीली कुमुदिनी।
कोकिल—[पु०] कोयल नामक पक्षी। जलता हुआ अंगारा। एक विषैला कीड़ा। चूहा। बदरीफल। बेर। एक छन्द-विशेष।
कोकिला—[स्त्री०] कोयल (मादा)।
कोकिलाक्ष—[पु०] तालमखाना।
कोकिलावास—[पु०] आम्र वृक्ष। आम का पेड़।
कोकिलोत्सव—[पु०] आम का पेड़।
कोच—[पु०] सिकुड़ना। संकुचित होना।
कोजागर—[पु०] आश्विन मास की पूर्णिमा। शरत्पूर्णिमा।
कोट—[पु०] कुटिलता। दुर्ग। किला। प्राचीर। नगर के चारों ओर की दीवार। कोढ़ रोग। सुपारी का पेड़।
कोटर—[पु०] वृक्ष की खोखली जगह। वृक्षगह्वर। तरु-विवर। खखोडर। दुर्ग की रक्षा करने के लिए उसके चारों ओर लगाया हुआ जंगल। कुटिया। समूह। झुण्ड।
कोटवी—[स्त्री०] नग्न स्त्री। चण्डिका। दुर्गा।
कोटि—[स्त्री०] तलवार आदि की धार या नोंक। अगला हिस्सा। धनुष का सिरा। बड़ाई। करोड़ की संख्या। एक खुशबूदार सब्ज़ी। संशय का अवलम्बन। पूर्व पक्ष। राशिचक्र का तृतीय अंश। श्रेणी। राशि। ढेर। त्रिभुज की आधार और कर्ण से भिन्न रेखा।
कोटिक—[पु०] वीरबहूटी। विषैला मेंढक।
कोटिक—[वि०] करोड़ों। असंख्य।
कोटिजित्—[पु०] कवि कालिदास।
कोटिपात्र—[पु०] पतवार। डाँड़।
कोटिपाल—[पु०] कोटपाल। किलादार।
कोटिमान—[वि०] नोकदार।
कोटिर—[पु०] इन्द्र। नेवला। बीरबहूटी।
कोटिशः—[अव्य०]कोटि-कोटि। करोड़ों।
कोटी—[स्त्री०] हथियार की नोक। कुटज वृक्ष।
कोटीर—[पु०] किरीट। जटा। रेशा।
कोटीश्वर—[पु०] करोड़पति।
कोट्ट—[पु०] दुर्ग। किला। राजधानी।
कोट्टपाल—[पु०] पुररक्षक। कोतवाल। दुर्गाध्यक्ष।
कोट्टवी—[स्त्री०] नंगी स्त्री। बाणासुर की माता। दुर्गा। मुक्तकेशी।
कोट्टार—[पु०] कुआँ। नागरिक। तालाब की सीढ़ियाँ। किले का शहर। लुच्चा।
कोट्यर्ध—[वि०] आधा करोड़। पचास लाख।
कोठार—[पु०] भाण्डार। अन्न, रुपया-पैसा आदि रखने की जगह।
कोठारी—[पु०] भाण्डारी। कोठेदार। जाति-विशेष।
कोठी—[स्त्री०] हवेली। थोक बिक्री की बड़ी दुकान। कुठिला। ईंटों से बनाई हुई कुएँ की दीवार जो पीछे भूमि में बैठाई जाती है। बँगला।
कोठीवाल—[पु०] महाजन। बड़ा साहूकार। मुड़िया लिपि।
कोण—[पु०] कोना। वीणा आदि बजाने का साधन, अर्थात्—मिजराब, कमानी, गज आदि। हथियार की नोक। दो दिशाओं के बीच की दिशा। मंगल और शनि ग्रह। लट्ठ।
कोणकुण—[पु०] जूँआ। खटमल आदि।
कोणी—[वि०] टेढ़े हाथवाला। टोंटा।
कोथला—[पु०] बड़ा थैला।
कोथली—[स्त्री०] लम्बी या बड़ी थैली।
कोद—[स्त्री०] ओर। तरफ़। दिशा। कोना।
कोदण्ड—[पु०] धनुष। कमान। भौंह। देश-विशेष। धनु राशि।
कोद्र, कोद्रव—[पु०] कोदों नाम से प्रसिद्ध अन्न।
कोन फल—[पु०] रतालू। रक्तालु।

कोना—[पु०] कोण। गोशा। नोक। अनी। कपड़े का सिरा। एकान्त स्थान।

कोप—[पु०] क्रोध। गुस्सा। रिस।

कोपनक—[त्रि०] कोपशील। क्रोधी। [पु०] एक सुगन्धित द्रव्य—चोबा।

कोपनीय—[वि०] जिस पर क्रोध किया जाय।

कोपभवन—[पु०] जहाँ रूठ कर जा बैठते हैं, उस स्थान का नाम।

कोपर—[पु०] एक प्रकार का थाल। डाल का पका आम। कटोरा-कटोरी। तर्पण करने का पात्र।

कोपवती—[स्त्री०] नाराज औरत। क्रुद्ध स्त्री।

कोपवान्—[पु०] क्रुद्ध।

कोपान्वित—[वि०] क्रुद्ध। नाराज़।

कोपित—[वि०] क्रुद्ध। नाराज़।

कोपी—[त्रि०] नाराज़। भड़काने-वाला। जल पारावत।

कोपीन—[स्त्री०] लंगोटी। लँगोट।

कोमल—[पु०] मृदुल। मुलायम। नरम। मनोहर। हृदयग्राही। जल, पानी। सूक्ष्म और मीठा स्वर।

कोमलक—[वि०] कमल की नाल। मृणाल। मृदु। मुलायम।

कोमलता—[स्त्री०] नरमी। सुन्दरता। माधुर्य। लालित्य।

कोमलदल—[पु०] कमल। पद्म।

कोयल—[स्त्री०] कोकिला। लता-विशेष।

कोया—[पु०] आँख का कोना।

कोर—[स्त्री०] सिरा। हाशिया। किनारी। नोक। छोर।

कोरक—[पु०] कमल की डण्डी। चकोर पक्षी। चोबा नामक सुगन्धित द्रव्य। शीतल चीनी। अर्ध विकसित फूल। कली।

कोरंगी—[स्त्री०] छोटी इलायची।

कोरा—[वि०] काम में न लाया हुआ। नया। अछूता। बेदाग। शून्य। रहित। निरक्षर। दरिद्र। केवल।

कोल—[पु०] शूकर। सूअर। गोद। शनि नामक ग्रह। चित्रक। आलिंगन। मिर्च। चव्य। एक तोले की तोल। एक जंगली जाति। बेर नामक फल। बेड़ा। घरनई।

कोविद—[वि०] पण्डित। विद्वान्। ज्ञानी।

कोविदार—[पु०] कचनार का पेड़।

कोश—[पु०] अण्डा। खान से निकला हुआ खालिस सोना या चाँदी। फूल की बिना खिली कली। तलवार का म्यान। समूह। पात्र। जावित्री। खज़ाना। शब्दसंग्रह। रेशम या कोया। वेदान्त में कहे अन्नमयादि पाँच कोश।

कोशकार—[पु०] म्यान तैयार करने-वाला। रेशम का कीड़ा। शब्द-संग्रह करनेवाला।

कोशचञ्चु—[पु०] सारस पक्षी।

कोशनायक—[पु०] कोशाध्यक्ष। खज़ानची।

कोशपाल—[पु०] कोश की रक्षा करनेवाला।

कोशल, कोसल—[पु०] काशी के उत्तर अयोध्यासहित सरयूतीरवर्ती प्रदेश। अयोध्या नगरी। क्षत्रियों की एक जाति। राग-विशेष।

कोशला—[स्त्री०] अयोध्या नगरी। राम की राजधानी।

कोशलात्मजा—[स्त्री०] कौशल्या। दशरथ की बड़ी रानी।

कोशाध्यक्ष—[पु०] खज़ानची। कोश का मालिक। कोशनायक।

कोष—[पु०] देखो "कोश"।

कोष्ठ—[पु०] घर का भीतरी हिस्सा। कोठा। खत्ती। पेट के भीतर मल रहने का स्थान। उदर। चहारदीवारी। लिखने का एक चिह्न जिन्हें अँगरेजी में ब्रैकिट कहते हैं। आत्मीय।

कोष्ठक—[पु०] देखो "कोष्ठ"।

कोष्ठपाल—[पु०] चहारदीवारी का रक्षक। कोटपाल।

कोष्ठबद्ध—[पु०] मल की रुकावट। कब्ज़ियत।

कोष्ठशुद्धि—[स्त्री०] मलाशय का अच्छे प्रकार परिष्कार। कोठे की सफ़ाई।

कोष्ठागार—[पु०] कोठार। धान्यादि रखने का घर। खत्ती—खास।

कोष्ठाग्नि—[पु०] जठराग्नि। शरीर के भीतर की वह अग्नि जो खाए हुए अन्न को पचाती है।

कोष्ठी—[स्त्री०] जन्म-पत्रिका।

कोष्ण—[पु०] गुनगुना। थोड़ा गरम।

कोसल—[पु०] देश विशेष।

कोसी—[स्त्री०] एक नदी-विशेष।

कोह—[पु०] क्रोध। गुस्सा।

कोहनूर—[पु०] एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक हीरा।

कोहरा—[पु०] कुहासा, ओस का एक भेद।

कोही—[पु०] क्रोधी, गुस्सैल।

कौंध—[स्त्री०] बिजली की चमक।

कौंधना—[क्रि०] बिजली का चमकना।

कौक्कुटिक—[पु०] घमण्डी। पाखण्डी। मुर्गे बचन या पालनेवाला। जीवहत्या के भय से देख-देख कर सावधानी से पैर रखनेवाला।

कौक्षक—[पु०] कोख से उत्पन्न। कोख से निकला हुआ।

कौक्षेयक—[पु०] खड्ग, तलवार, जो सदा बगल में दबी रहती है।

कौञ्जर—[पु०] हाथी सम्बन्धी। हाथी से सम्बन्ध रखनेवाला।

कौटल्य—[पु०] वात्स्यायन मुनि।

कौट साक्षी—[पु०] झूठा गवाह।

कौटिक—[वि०] व्याध। बहेलिया।

मांसविक्रेता।

कौटिलिक—[वि०] व्याध। चिड़ीमार। लुहार।

कौटिल्य—[पु०] कुटिलता। चाणक्य का एक नाम। एक प्रकार की मूली।

कौटुम्बिक—[वि०] खानदानी। कुटुम्बिका। परिवार-सम्बन्धी। जो परिवार के पालन में लगा रहे।

कौड़ा—[पु०] अलाव, तापने की जगह। जमीन में बना एक गढ़ा, जिसमें आग सुलगती रहती है।

कौणप—[पु०] राक्षस। वासुकि-वशीय सर्प। पापी। मुर्दे खानेवाला।

कौणपदण्ड—[पु०] भीष्म।

कौतुक—[पु०] कुतूहल। किसी वस्तु को देखने या समझने की उत्सुकता। उत्सव। खेल। अभिलाषा। परिहास। आनन्द। नृत्य-गीतादि। खाने का समय। आश्चर्य। अचम्भा।

कौतुकागार—[पु०] कौतुक या खेल की जगह।

कौतूहल—[पु०] कुतूहल। किसी नए या अज्ञात विषय को जानने, देखने या सुनने की इच्छा। उत्सुकता। आश्चर्य।

कौन्तिक-[पु०] भाले से लड़नेवाला।

कौन्ती—[पु०] एक सुगन्धित वस्तु-रेणुका।

कौन्तेय-[पु०] कुन्ती के पुत्र—युधिष्ठिर आदि। अर्जुन नामक वृक्ष।

कौप—[पु०] कुएँ का पानी। कूप-सम्बन्धी।

कौपीन—[पु०] न करने योग्य कार्य। पाप। गुह्य देश। उपस्थ। लंगोटी।

कौबेर—[वि०] कुबेर-सम्बन्धी। कुबेर का।

कौमार-[पु०] कुमारी का पति। कुमारावस्था। कुमार से सम्बन्ध रखनेवाला।

कौमारभृत्य—[पु०] धातृविद्या। दाई का काम। बच्चों के पालन-पोषण की विद्या।

कौमुदिका—[स्त्री०] चाँदनी, चन्द्रिका, ज्योत्स्ना।

कौमुदी—[स्त्री०] ज्योत्स्ना। चाँदनी। कार्तिक मास की पूर्णिमा। शरत्पूर्णिमा। उत्सव। संस्कृत व्याकरण का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ। कुमुदिनी।

कौमुदीजीवन—[पु०] चकोर पक्षी।

कौमुदीपति—[पु०] चन्द्रमा।

कौमोदकी, कौमोदी—[स्त्री०] विष्णु की गदा।

कौम्भघृत—[पु०] सौ वर्ष का पुराना घी।

कौर—[पु०] ग्रास। गस्सा। कवल। निवाला। खाने की वस्तु का वह भाग जो एक बार में मुँह में डाला जाय। चक्की में पीसने के लिए एक बार डाला जानेवाला अन्न। एक झाड़।

कौरव—[पु०] कुरु की सन्तान। [वि०] कुरु-सम्बन्धी।

कौरियाना—[क्रि०] कौरी भरना। दोनों हाथों से पकड़ कर छाती से लगाना।

कौर्म—[पु०] कूर्म पुराण। विष-विशेष। कछुए से सम्बन्ध रखनेवाला।

कौल—[वि०] सत्कुल में उत्पन्न हुआ। कुलीन। खानदानी। तान्त्रिक। कुलाचार को समझनेवाला। एक ग्रन्थ-विशेष। राजा-विशेष।

कौलटेय—[पु०] कुलटा का पुत्र। छिनाल का लड़का। भिखारिन का लड़का।

कौला—[पु०] कमला। मीठी नारंगी। गोद।

कौलाल—[पु०] कुलाल। कुम्हार।

कौलालचक्र—[पु०] कुम्हार का चाक।

कौलिक—[वि०] कुल-परम्परागत। खानदानी। कुल-तन्त्र समझनेवाला (शाक्त)। जुलाहा। पाखण्डी। शाक्त धर्म।

कौलीन—[वि०] भूमि से लगा हुआ। कुलीन। खानदानी। कुलपरम्परा से आया हुआ। [पु०] बदनामी। बुरा काम। वाममार्ग में शक्ति का उपासक। पशुओं, पक्षियों या सर्पों का युद्ध।

कौलीन्य—[पु०] कुलीनता। कुल-प्रतिष्ठा। वंश-मर्यादा।

कौलेय—[पु०] सत्कुलोत्पन्न। कुलीन।

कौलेयक—[पु०] कुलीन। कुत्ता।

कौवा—[पु०] कौवा नामक पक्षी। चालाक आदमी। बड़ेरा। घाँटी। कण्ठ के भीतर तालु में लटकता हुआ मांसपिण्ड।

कौवापरी—[स्त्री०] काली-कलूटी स्त्री। कुरूपा।

कौवेर—[वि०] कुवेर-सम्बन्धी। कुवेर का उपासक। कुष्ठ। कोढ़।

कौवेरी—[स्त्री०] उत्तर दिशा। कुवेर सम्बन्धिनी। कुवेर की शक्ति।

कौशल—[पु०] कुशलता। चतुराई। कारीगरी। मंगल। भलाई। अवध देश। अवध देश के रहनेवाले।

कौशलायन—[पु०] कुशला का युवा पुत्र।

कौशली—[स्त्री०] कुशल-प्रश्न। कुशल स्त्री की कन्या।

कौशलेय—[पु०] श्रीराम।

कौशल्य—[पु०] कुशलता। दक्षता। कोशलराज के पुत्र।

कौशल्या—[स्त्री०] कोशल देश में उत्पन्न होनेवाली। दसरथ की पटरानी। राम की माता। जनमेजय की माता। पुरुराज की पत्नी।

कौशल्यायनि—[पु०] कौशल्या के पुत्र, रामचन्द्र।

कौशाम्बी—[स्त्री०] एक प्राचीन प्रसिद्ध नगरी। वर्तमान 'कोसाम'। वत्सराज की नगरी जो गंगातट पर है।

कौशिक—[पु०] इन्द्र । उल्लू । गूगुल । नेवला । साँप । ग्राह । रेशम का कीड़ा । चरबी । खज़ानची । शृंगार रस । विश्वामित्र ।

कौशिकप्रिय—[पु०] रामचन्द्र ।

कौशिकात्मज—[पु०] इन्द्र का लड़का—जयन्त । अर्जुन । विश्वामित्र मुनि के पुत्र ।

कौशिकी—[स्त्री०] एक नदी का नाम—वर्तमान कुशी । चण्डिका । एक रागिनी । काव्य की प्रथमवृत्ति, जिसमें सरल शब्दों में शृङ्गार, हास्य और करुण रसों का वर्णन हो । कोई नाटकीय रचना ।

कौशीर—[पु०] जस नामक सुगन्धित द्रव्य ।

कौशेय—[पु०] रेशमी कपड़ा ।

कौष—[पु०] कमल ।

कौषिकी—[स्त्री०] देखो 'कौशिकी' ।

कौषीतकी—[स्त्री०] अगस्त्यमुनि की पत्नी । ऋग्वेदान्तर्गत ब्राह्मण और उपनिषद् का भेद ।

कौसल—[पु०] देखो 'कौशल' ।

कौसलेय—[पु०] देखो 'कौशलेय' ।

कौसल्यायनि—[पु०] देखो 'कौशल्यायनि' ।

कौसल्य—[पु०] देखो 'कौशल्य' ।

कौसल्या—[स्त्री०] देखो 'कौशल्या' ।

कौसीद—[वि०] ब्याज से जीविका चलानेवाला । वृद्धिजीवी । सूदखोर ।

कौसीद्य—[पु०] आलस । सुस्ती । तन्द्रा । सूदखोरी ।

कौसुम—[पु०] बनावटी सुरमा । कुसुम-सम्बन्धी ।

कौसुमायुध—[पु०] कामदेव । पंचबाण । अनङ्ग ।

कौसुम्भ—[पु०] जंगली कुसम । फूलों का सुरमा । शाक-विशेष । कुसुम्भ के रंग में रँगा हुआ ।

कौस्त—[पु०] दश वर्ष का पुराना घी ।

कौस्तुभ—[पु०] विष्णु का हृदय-भूषण मणि-विशेष । यह समुद्र-मन्थन काल में अन्य रत्नों के साथ समुद्र से प्राप्त हुआ था ।

कौस्तुभलक्षक, कौस्तुभलक्षण, कौस्तुभवक्षा—[पु०] विष्णु ।

क्रकच—[पु०] एक वृक्ष-विशेष । केतकी । आरा । ज्योतिष-शास्त्र में एक योग । एक नरक का नाम ।

क्रकचपाद—[पु०] गिरगिट ।

क्रकर—[पु०] करील का वृक्ष । तीतर नामक पक्षी ।

क्रतु—[पु०] सप्त ऋषियों में एक ऋषि । सोमरस । संकल्प । अतिशय अभिलाष । स्तुति । प्रज्ञा । निश्चय । पहचान । आषाढ़ मास । अश्वमेध यज्ञ । इन्द्रियाँ । जीव । कृष्ण के एक पुत्र का नाम ।

क्रतुकर्म—[पु०] याग-यज्ञ ।

क्रतुद्रुह—[पु०] असुर । राक्षस ।

क्रतुद्विट्—[पु०] असुर । नास्तिक ।

क्रतुध्वंसी—[पु०] यज्ञ का ध्वंस करनेवाला । राक्षस । शिव । महादेव । इन्होंने भी दक्ष प्रजापति के यज्ञ का ध्वंस किया था ।

क्रतुपति—[पु०] यज्ञ का स्वामी । विष्णु ।

क्रतुपशु—[पु०] अश्व । घोड़ा ।

क्रतुपा—[वि०] यज्ञरक्षक ।

क्रतुपुरुष—[पु०] यज्ञ पुरुष । विष्णु ।

क्रतुफल—[पु०] यज्ञ का फल—स्वर्गादि । यज्ञ के फल को न चाहनेवाला ।

क्रतुभुज—[पु०] देवता । यज्ञ में देवताओं के उद्देश्य से अर्पण किया गया द्रव्य ।

क्रतुमान्—[पु०] यज्ञानुष्ठान करनेवाला । विश्वामित्र के पुत्र का नाम ।

क्रतुराज—[पु०] यज्ञों का राजा । राजसूय यज्ञ ।

क्रतुविद्—[वि०] यज्ञविधान जाननेवाला ।

क्रतूत्तम—[पु०] राजसूय यज्ञ ।

क्रत्वर—[पु०] यज्ञ करनेवाला । यजनशील ।

क्रन्द—[पु०] घोड़े की हिनहिनाहट । चीत्कार । चीख ।

क्रन्दन—[पु०] रुलाई । रोना । युद्ध में विपक्षी को ललकारना । बिड़ाल । बिल्ला ।

क्रम—[पु०] शक्ति । चरण । पग । रुद्र । विष्णु । आक्रमण । पाँव रखना । पारपाटी । तरतीब । सिलसिला । बनाव ।

क्रमण—[पु०] चरण । पाँव । पाँव रखने की क्रिया ।

क्रमप्राप्त—[वि०] क्रमागत । सिलसिले से आया हुआ ।

क्रमभङ्ग—[पु०] नियमभङ्ग । कायदे का टूटना ।

क्रमयोग—[पु०] सिलसिले का जोड़ । क्रम-सम्बन्ध ।

क्रमशः—[अ०] धीरे-धीरे ।

क्रमागत—[पु०] क्रम से आया हुआ । क्रमप्राप्त । जो सिलसिले से मिला हो । वंश-परम्परा क्रम से प्राप्त ।

क्रमानुयायी—[वि०] सिलसिले से चलनेवाला ।

क्रमानुसार—[पु०] सिलसिलेवार । क्रमशः ।

क्रमान्वय—[पु०] यथाक्रम । सिलसिलेवार । तरतीब से ।

क्रमि—[पु०] कीड़ा । देखो "कृमि" ।

क्रमिक—[वि०] कुलक्रमागत । खानदानी । सिलसिलेवार । क्रमयुक्त ।

क्रमुक—[पु०] सुपारी । नागरमोथा । पठानी लोध । शहतूत ।

क्रमेल, क्रमेलक—[पु०] ऊँट ।

क्रय—[पु॰] दाम देकर कोई चीज़ लेना। खरीदना।

क्रयकर्ता—[पु॰] खरीददार। माल लेनेवाला।

क्रयविक्रय—[पु॰] खरीदना-बेचना। वाणिज्य-व्यापार।

क्रयविक्रयी—[पु॰] खरीदने और बेचनेवाला। व्यापारी। व्यवसायी।

क्रय्य—[वि॰] बेचने के लिए रक्खा हुआ। बिकनेवाला।

क्रव्य—[पु॰] मांस। गोश्त। (बिना पकाया हुआ)।

क्रव्यभुज—[पु॰] मांसभोजी। रुरु-मृग। कच्चा मांस खानेवाला।

क्रव्याद्—[पु॰] राक्षस। चिता की अग्नि। कच्चा मांस खानेवाला। शेर। बाज़।

कृशता, कृशिमा—[स्त्री॰] कमजोरी। दुबलापन।

क्रशिष्ठ—[वि॰] अत्यन्त दुबला-पतला।

क्रान्त—[वि॰] घोड़ा। पैर। चुन्नी। आक्रमण। चढ़ाई। दबा हुआ। गया बीता।

क्रान्तदर्शी—[वि॰] अतीत, अनागत और सूक्ष्म पदार्थ देख सकनेवाला। जो बीती बातें देख सकता हो। सर्वज्ञ। परब्रह्म।

क्रान्ता—[स्त्री॰] बड़ी इलायची। कटेहरी।

क्रान्ति—[स्त्री॰] पाद-विक्षेप। पाँव रखना। नक्षत्र की गति। राशिचक्र की मध्य रेखा। परिवर्तन। उलटफेर। आक्रमण। चढ़ाई करना। उपद्रव। दीप्ति। प्रकाश।

क्रान्तिमण्डल—[पु॰] राशिचक्र।

क्रान्तिवृत्त—[पु॰] सूर्य का मार्ग।

क्रिमि—[पु॰] घुन। लाख का कीड़ा। कीड़ा-मकोड़ा। चिनूना जो बच्चों के पेट में हो जाता है।

क्रिमिजा—[स्त्री॰] लाक्षा, लाख।

क्रिमिशैल—[पु॰] वल्मीक। दीमक की पहाड़ी।

क्रियमाण—[पु॰] जो किया जा रहा हो। वर्तमान कर्म जिसका फल आगे मिलेगा।

क्रिया—[स्त्री॰] आरम्भ। निबटारा। शिक्षा। पूजा। उपाय। उछाल, गिराव, सिकोड़, फैलाव और चाल—पाँचों कर्म। चेष्टा। यत्न। चिकित्सा। अनुष्ठान। श्राद्ध। शौच-सफ़ाई। प्रयोग। व्याकरण में धातु का अर्थ।

क्रियाकलाप—[पु॰] काम-काज। क्रिया-समूह।

क्रियाकल्प—[पु॰] चिकित्सा का नियम।

क्रियाकार—[पु॰] नया विद्यार्थी। नौसिखुआ। काम करनेवाला।

क्रियानिष्ठ—[वि॰] सन्ध्योपासनादि नित्यकर्म करनेवाला।

क्रियान्वित—[वि॰] भला काम करनेवाला।

क्रियापटु—[वि॰] चतुर। कार्यदक्ष। क्रिया-चतुर।

क्रियापद—[पु॰] क्रिया का सिद्ध रूप, यथा—खाता है, हँसता है इत्यादि।

क्रियापर—[पु॰] कर्मठ, काम का पाबन्द।

क्रियाफल—[पु॰] कर्मफल। काम का नतीजा। वेदान्त की परिभाषा में उत्पत्ति, प्राप्ति, विकृति और संस्कृति को क्रियाफल कहते हैं।

क्रियाभ्युपगम—[पु॰] आध बटाई पर खेती करना।

क्रियायोग—[पु॰] देवपूजन। देव-मन्दिर बनवाना।

क्रियार्थ—[पु॰] यज्ञादि क्रिया का प्रतिपादक विधि-वाक्य।

क्रियावश—[वि॰] काम से मजबूर। क्रिया के अधीन।

क्रियावसन्न—[वि॰] साक्षी अथवा प्रमाण द्वारा अपना पक्ष समर्थन न कर सकने के कारण मुकदमा हार जानेवाला।

क्रियावस्ति—[स्त्री॰] वमनादि पञ्च कर्मों में प्रयोज्य वस्ति।

क्रियावादी—[पु॰] व्यवस्थापक। जो काम बताता हो। फ़रियादी।

क्रियावान्—[वि॰] कामकाजी। कर्त्ता। बा-अमल। कर्मठ। कर्मनिष्ठ।

क्रियाविदग्धा—[स्त्री॰] साहित्य में नायिका का एक भेद—वह नायिका जो क्रिया द्वारा नायक को अपना भाव बताती है।

क्रियाविशेषण—[पु॰] क्रिया का विशेषण। क्रिया का भाव अथवा उसकी अवस्था प्रकाशित करनेवाला पद जैसे—शीघ्र चलता है, बहुत खाता है, में शीघ्र और बहुत क्रियाविशेषण हैं।

क्रियाशक्ति—[स्त्री॰] परमेश्वर की वह शक्ति जिसके द्वारा वह अनन्त ब्रह्माण्ड का सृजन करता है।

क्रियासमभिहार—[पु॰] किसी काम को बार-बार करना।

क्रियासाधन—[वि॰] अभ्यास करना। चिकित्सा-साधन।

क्रिवि—[पु॰] कूआँ। कूप। करनेवाला। एक राक्षस। हिंसक।

क्रीट—[पु॰] किरीट।

क्रीड—[पु॰] क्रीड़ा। खेल।

क्रीडक—[पु॰] खेलनेवाला। खिलाड़ी। दरबान।

क्रीडनक—[पु॰] खेलने का साधन। खिलौना।

क्रीडनिका—[स्त्री॰] धात्री। दाई।

क्रीड़ा—[स्त्री॰] देखो "क्रीड"।

क्रीडाकानन—[पु०] उपवन। बाग़।
क्रीडागृह—[पु०] खेलने का मकान।
क्रीड़ानारी—[स्त्री०] वेश्या।
क्रीत, क्रीतक—[वि०] मोल लिया हुआ। खरीदा हुआ लड़का।
क्रीतदास—[पु०] खरीदा हुआ नौकर। गुलाम।
क्रुञ्च—[पु०] वक पक्षी। एक तरह का बगुला। पर्वत-विशेष।
क्रुञ्चा—[स्त्री०] वीणा-विशेष।
क्रुद्ध—[पु०] नाराज़। क्रोध-युक्त।
क्रुमुक—[पु०] सुपारी।
क्रूर—[वि०] निर्दय। कठोर। उष्ण। परद्रोही—दूसरों से वैर करनेवाला। बाज पक्षी। लालकनेर। मच्छर। भात। कुकुरमुत्ता। काला धतूरा। सफेद सोंठ।
क्रूरकर्मा—[वि०] निर्दयता का काम करनेवाला। हत्यारा।
क्रूरकोष्ठ—[वि०] बद्धकोष्ठ का रोगी कड़े कोठेवाला।
क्रूरता—[स्त्री०] निर्दयता। निष्ठुरता। दुष्टता। कठोरता। बेरहमी। सख़्ती। नीलापन। तेज़ी। गरमी।
क्रूरलोचन—[पु०] शनि ग्रह।
क्रूराकृति—[पु०] अति भयङ्कर सूरत-वाला। डरावनी शक्ल। भयानक रूप।
क्रूराक्ष—[पु०] सख़्त नज़रवाला। क्रूर दृष्टिवाला।
क्रूरात्मा-[वि०] अत्यन्त कुटिल स्वभाव-वाला। कड़े मिजाज़वाला।
क्रूराशय-[वि०] दुर्भावयुक्त। बदनीयत।
क्रूच—[पु०] दाढ़ी। मूँछ। श्मश्रु।
क्रेतव्य—[वि०] खरीदने के योग्य।
क्रेता—[वि०] खरीदनेवाला। खरीदार।
क्रेय—[वि०] खरीदने योग्य।
क्रोड़—[पु०] सूअर। गोद। वृक्ष की कोटर। घोड़े का सीना। शनि ग्रह। वाराही कन्द।
क्रोड़पत्र—[पु०] अतिरिक्त पत्र। ज़मीमा। सप्लीमेण्ट। पुस्तक वा समाचार पत्र का वह अंश जो विषय की पूर्ति के पीछे से छाप कर लगाया गया हो। परिशिष्ट पत्र।
क्रोड़पात्, क्रोड़पाद्—[पु०] कछुआ, कच्छप।
क्रोड़ाङ्घ्रि, क्रोड़ांघ्रि—[पु०] जिसके पाँव गोद में हों। कछुआ। कच्छप।
क्रोड़ीकरण—[पु०] आलिंगन। अंकवार।
क्रोध—[पु०] कोप। गुस्सा। द्वेष। डाह। रोष। कोई प्रतिकूल घटना उप-स्थित होने पर चित्तवृत्ति का तीक्ष्ण होना।
क्रोधकृत्—[वि०] क्रोधकारी। गुस्सा करनेवाला।
क्रोधज—[पु०] क्रोध से उत्पन्न होने वाला—मोह। अज्ञान। चुगलखोरी, दिलेरी, वैर, ईर्ष्या, असूया, पारुष्य, वाग्दण्ड (गाली गलौज) और अर्थ दूषण (धन बर्बाद करना) ये आठ क्रोधज हैं।
क्रोधन—[वि०] क्रोधयुक्त। आग-बबूला। कौशिक का एक पुत्र।
क्रोधनीय—[वि०] गुस्सा दिलाने वाला। क्रोध-कारण।
क्रोधमय—[वि०] गुस्सावर। क्रोधी।
क्रोधमूर्च्छित—[वि०] अति क्रुद्ध। निहायत नाराज़। गुस्से से बेहोश। चोया।
क्रोधवन्त—[वि०] नाराज़।
क्रोधवर्द्धन—[वि०] गुस्सा बढ़ानेवाला। राक्षस विशेष।
क्रोधसम्भव—[पु०] मोह। अज्ञान। गुस्से का उठान। कोप की उत्पत्ति।
क्रोधहा—[पु०] गुस्से को मिटानेवाला। विष्णु।
क्रोधान्वित—[वि०] क्रोधयुक्त। नाराज़।
क्रोधालु—[वि०] क्रोधशील। गुस्सावर।
क्रोधित—[वि०] क्रुद्ध। नाराज़। कुपित।
क्रोधी—[वि०] क्रोध करनेवाला। गुस्सावर। भैंसा।
क्रोश—[पु०] रोदन। पुकारना। कोस (दो मील के लगभग की दूरी), यह आठ हज़ार हाथ का होता है। मुहूर्त।
क्रोष्ट, क्रोष्टक—[पु०] गीदड़। शृगाल। स्यार।
क्रौञ्च—[पु०] वक नामक पक्षी। सारस। कमल गट्टा। एक पर्वत-विशेष। एक राक्षस। एक द्वीप-विशेष।
क्रौञ्चदारण, क्रौञ्चदारक—[पु०] स्वामी कार्तिक। इन्होंने क्रौञ्च दैत्य को मारा था। परशुरामजी का एक नाम।
क्रौञ्चसूदन—[पु०] स्वामी कार्तिक।
क्रौर—[पु०] क्रूरता।
क्रोशशतिक—[वि०] सौ कोस जाने-वाला। सौ कोस से आया हुआ।
क्लंग—[वि०] रोनेवाला। रोदन।
क्लान्त—[वि०] थका माँदा। मुर-झाया हुआ।
क्लान्ति—[स्त्री०] मेहनत। थकावट।
क्लिन्न—[वि०] गीला। भीगा। तर। आर्द्र।
क्लिशित—[वि०] क्लेशयुक्त। कष्ट में पड़ा हुआ।
क्लिष्ट—[वि०] कष्ट में पड़ा हुआ। पीड़ित। विरुद्ध। बेमेल। पूर्वापर-विरुद्ध वाक्य। कठिन।
क्लीव—[पु०] नपुंसक। नामर्द। षंड। हीजड़ा। अधीर। निरुत्साह। विक्रम-हीन। कायर। भीरु।
क्लीवता—[स्त्री०] क्लीव का भाव।
क्लीवत्व—[पु०] क्लीव का भाव।
क्लेद—[पु०] शरीर की आर्द्रता। जिस्म की तरी। पसीना। गीलापन। मैल। कफ़। सड़ाव। उपद्रव। कष्ट।
क्लेदक—[वि०] तरी या पसीना लाने-वाला। शरीरस्थ दस अग्नियों में से एक।

क्लेदन—[पु०] शरीरस्थ श्लेष्मा। कफ। पसीना लानेवाला।

क्लेश—[पु०] कष्ट। दुःख। तकलीफ। क्रोध। व्यवसाय। पापेच्छा।

क्लेशक, क्लेशकारी—[वि०] क्लेश उत्पन्न करनेवाला। दुःखजनक।

क्लेशवान्—[पु०] दुःखी। कष्टग्रस्त। तकलीफज़दा।

क्लेशापहर—[वि०] कष्टनाशक। दुःख दूर करनेवाला।

क्लेशित—[वि०] देखो "क्लिशित"।

क्लेशी, क्लेष्टा—[वि०] तकलीफ देनेवाला। दुःखद।

क्लैव्य—[पु०] क्लीव का भाव। नपुंसकता। निरुत्साह।

क्वण—[पु०] एक आवाज। वीणा का शब्द। सितार आदि बाजों की झनकार।

क्वणन—[पु०] छम-छम, कन-कन, झन-झन, रुनझुन आदि ध्वनियां। छोटी हांडियां।

क्वणित—[पु०] झन-झन, छम-छम की आवाज करनेवाला। झन-झन, कन-कन या छम-छम।

क्वथ—[पु०] क्वाथ। काढ़ा। जोशाँदा।

क्वथन—[पु०] काढ़ा बनाने की विधि।

क्वथिका—[स्त्री०] काढ़ा।

क्वथित—[वि०] पक्व। पकाया हुआ। उबाला हुआ। महुए की शराब। काढ़ा।

क्वथिता—[स्त्री०] कढ़ी। औषधि-विशेष।

क्वाथ—[पु०] काढ़ा। कषाय। जोशाँदा। अतिदुःख। आदत। व्यसन।

क्वार—[पु०] आश्विन मास।

क्वारा—[पु०] बिना ब्याहा। अविवाहित। कुमार।

क्ष—[पु०] प्रलय। कयामत। राक्षस। नृसिंह। बिजली। खेत। खेत रक्षक। नाश।

क्षण, क्षणक—[पु०] काल। शुभ मुहूर्त। काल का अंश-विशेष। मुहूर्त। उत्सव। बेकारी। पर्व। अवसर। पराधीनता। मध्य। लोबान। ज्योतषी।

क्षण-क्षण—[अव्य०] बार-बार। छिन-छिन। पल-पल।

क्षणदा—[स्त्री०] रात्रि। हल्दी।

क्षणदाकर—[पु०] चन्द्रमा।

क्षणदाचर—[पु०] निशाचर। राक्षस।

क्षणदाचरी—[स्त्री०] राक्षसी। चुड़ैल।

क्षणद्युति—[स्त्री०] बिजली। विद्युत।

क्षणन—[पु०] हिंसा। बध। मार-काट। पिसाई।

क्षणप्रकाश, क्षणप्रभा—[स्त्री०] बिजली। विद्युत्।

क्षणभङ्गवाद—[पु०] देखो 'क्षणिकवाद'।

क्षणभङ्गुर—[पु०] शीघ्र नष्ट हो जानेवाला। थोड़ी देर में ही बिगड़ जानेवाला।

क्षणरुचि—[स्त्री०] बिजली।

क्षणिक—[वि०] अस्थिर। थोड़ी देर ठहरनेवाला। अनित्य।

क्षणिकवाद—[पु०] बुद्धमत का एक सिद्धान्त जिसमें प्रत्येक वस्तु उत्पत्ति के दूसरे क्षण नष्ट हो जानेवाली मानी जाती है।

क्षणिका—[स्त्री०] बिजली।

क्षणिनी—[स्त्री०] रात।

क्षणी—[पु०] थका-माँदा।

क्षत—[वि०] चीरा-फाड़ा हुआ। मारा-काटा। घिसा-पिसा। जिसका नुकसान हुआ हो। [पु०] घाव। दुःख। पीड़ा। व्रण। फोड़ा। रोग विशेष।

क्षतक्षीण—[पु०] छाती के फोड़े की बीमारी। उरक्षत।

क्षतघ्न—[पु०] घाव या फोड़े को नष्ट करनेवाला। कुरौंदा।

क्षतज—[पु०] रक्त। लोहू। पीब। शोथ। सूजन। एक प्रकार की खाँसी। कुंकुम।

क्षतयोनि—[स्त्री०] वह स्त्री जिसका पुरुष के साथ समागम हो चुका हो।

क्षतविक्षत—[वि०] घायल। लोहू-लुहान। जख्म से भरा हुआ।

क्षतव्रण—[पु०] चोट से आया हुआ घाव।

क्षतव्रत—[वि०] जिसका नियम भङ्ग हो गया हो। नष्टव्रत।

क्षता—[स्त्री०] विवाह से पूर्व पर-पुरुष से भोगी हुई कन्या।

क्षति—[स्त्री०] हानि। नुकसान। नाश। कमी। क्षय।

क्षत्ता—[पु०] सारथी। द्वारपाल। वर्णसङ्कर। दासीपुत्र। मछली। खज़ानची। ब्रह्मा।

क्षत्र—[पु०] क्षत्रिय। राष्ट्र। राज्य। शरीर। जल। धन। बल। तगर नामक औषधि।

क्षत्रकर्म—[पु०] क्षत्रियों का काम। शौर्य, तेज, धैर्य, दक्षता, युद्ध में अपलायन, दान और ऐश्वर्य ये क्षत्र कर्म कहलाते हैं।

क्षत्रधर्म—[पु०] देखो 'क्षत्रकर्म'।

क्षत्रधर्मा—[पु०] क्षत्रिय धर्मयुक्त। राजा-विशेष।

क्षत्रप—[पु०] सौराष्ट्र का प्राचीन राजवंश। क्षत्रियों का पालन करनेवाला।

क्षत्रपति—[पु०] क्षत्रियों का पालक।

क्षत्रबन्धु—[पु०] निन्दित क्षत्रिय। क्षत्रिय।

क्षत्रवर्द्धन—[वि०] धन तथा बल बढ़ानेवाला। दौलत और ताक़त बढ़ानेवाला।

क्षत्रवेद—[पु०] धनुर्वेद।

क्षत्रान्तक—[पु०] परशुराम।

क्षत्रिय—[पु०] द्विजातियों के अन्तर्गत द्वितीय वर्ण। राजा। जाति का पुरुष।

क्षत्रिया—[स्त्री०] क्षत्राणी, क्षत्रिय-पत्नी। ठकुराइन। क्षत्रियाणी।

क्षन्तव्य—[वि०] क्षमा के योग्य। माफ़ कर देने लायक़।

क्षन्ता—[वि०] माफ़ी देनेवाला। क्षमा करनेवाला। क्षमाशील।

क्षपकण—[पु०] बौद्ध संन्यासी। विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक कवि का नाम। निर्लज्ज।

क्षपा—[स्त्री०] रात्रि, रात। हल्दी। दारु हल्दी।

क्षपाकर—[पु०] चन्द्रमा। कपूर।

क्षपाचर—[पु०] निशाचर, राक्षस।

क्षपाचरी—[स्त्री०] निशाचरी। राक्षसी।

क्षपाट—[पु०] निशाचर, राक्षस। नरभक्षक।

क्षपानाथ—[पु०] चन्द्रमा। कपूर।

क्षपान्त—[पु०] प्रातःकाल। सवेरा।

क्षपापति—[पु०] चन्द्रमा। कपूर।

क्षम—[वि०] युक्त। रखनेवाला। समर्थ। शक्त। भला। हित। क्षमा करनेवाला।

क्षमणीय—[वि०] क्षमा करने योग्य, क्षन्तव्य।

क्षमता—[स्त्री०] सामर्थ्य। योग्यता। ताकत। शक्ति। शब्द का अर्थ प्रकाश करने की शक्ति।

क्षमा—[स्त्री०] सहारना। तितिक्षा। दुःखों को सहने की सामर्थ्य। सहिष्णुता। पृथिवी। दुर्गा। द्रौपदी। अपराध मार्जन। दया। रात्रि। माफ़ी। राधिका की एक सखी। एक वर्णवृत्ति।

क्षमावान्—[पु०] क्षमायुक्त। सहनशील। माफ़ करनेवाला।

क्षमाशील—[पु०] देखो 'क्षमावान्'।

क्षमितव्य—[वि०] माफ़ करने योग्य।

क्षमिता—[वि०] क्षमाशील। सहिष्णु। माफ़ करनेवाला।

क्षमी—[वि०] सहिष्णु। क्षमिता।

क्षम्य—[वि०] पृथिवी से उत्पन्न। क्षमा करने योग्य।

क्षय—[पु०] रोग-विशेष। तपेदिक। नाश। ह्रास। घाटा। हानि। घर। धीरे धीरे घटना। प्रलय। ज्योतिष में साठ संवत्सरों में अन्तिम संवत्सर। एक मास जिसमें दो संक्रान्तियाँ पड़ती हैं।

क्षयकर—[वि०] नाशकारी। मिटा देनेवाला।

क्षयकास—[पु०] तपेदिक की खाँसी।

क्षयङ्कर—[वि०] क्षयकारक। नाशक। दुश्मन।

क्षयज—[पु०] एक प्रकार की खाँसी जो क्षय रोग से उत्पन्न होती है।

क्षय-ज्वर—[पु०] तपेदिक का बुखार।

क्षयथु—[पु०] क्षय की खांसी।

क्षय पक्ष—[पु०] कृष्ण पक्ष।

क्षय मास—[पु०] मलमास। वह चन्द्र महीना जिसमें दो संक्रान्तियाँ पड़ें।

क्षयरोग—[पु०] तपेदिक की बीमारी।

क्षयरोगी—[पु०] तपेदिक का मरीज़।

क्षयी—[वि०] तपेदिक का बीमार। बरबाद होनेवाला। तपेदिक। [पु०] चन्द्रमा।

क्षर—[पु०] जल। बादल। जीवात्मा। शरीर। अज्ञान। [वि०] नाशवान्।

क्षरण—[पु०] मोचन। छुटकारा। स्राव। चुआव। टपकना। बहना।

क्षरणशील—[वि०] टपकनेवाला। चूनेवाला।

क्षाति—[स्त्री०] ज्वाला। लपट।

क्षात्र—[पु०] क्षत्रिय-कर्म—शौर्य, तेज, धृति, दक्षता, युद्ध में पीठ न दिखाना, दान और ऐश्वर्य। क्षत्रिय-सम्बन्धी। क्षत्रियों का। क्षत्रियत्व।

क्षान्त—[वि०] सहिष्णु। क्षमाशील।

क्षान्ति—[स्त्री०] सहिष्णुता। सहनशीलता। क्षमा। तितिक्षा।

क्षाम—[वि०] कृश। दुर्बल। कमजोर। दुबला। [पु०] विष्णु।

क्षामा—[वि०] क्षयशील। घटनेवाला। [पु०] निवास। ठिकाना।

क्षाम्य—[वि०] क्षमा के योग्य। माफ़ करने लायक।

क्षार—[पु०] खार। भस्म। राख। शोरा। काँच। सुहागा। गुड़। धूर्त। चन्द्र। सज्जी। [वि०] क्षरणशील। चू जानेवाला।

क्षारपत्र—[पु०] बथुआ का शाक। वास्तुक शाक।

क्षारभूमि—[स्त्री०] खारयुक्त भूमि। नमक निकलने की जगह। समुद्र के पास की जमीन।

क्षारमृद्—[स्त्री०] ऊसर भूमि।

क्षारमृत्तिका—[स्त्री०] खारी मिट्टी। लोनी मिट्टी।

क्षारराज—[पु०] सुहागा।

क्षारलवण—[पु०] खारी नमक।

क्षारसिन्धु—[पु०] लवण का समुद्र।

क्षारित—[वि०] दूषित। बदनाम।

क्षारोदक—[पु०] खारी पानी।

क्षारोदधि—[पु०] लवण-समुद्र। क्षार सिन्धु।

क्षाल—[वि०] साफ़ कर देनेवाला। शोधक।

क्षालन—[पु०] धोना। साफ़ करना।

क्षालित—[वि०] धोया हुआ। साफ़ किया हुआ। परिष्कृत।

क्षित—[वि०] बरबाद किया हुआ। [पु०] हिंसा। मारपीट।

क्षिता—[स्त्री०] देखो "क्षिति"।

क्षितायु—[वि०] क्षीणायु।

क्षिति—[स्त्री०] पृथ्वी । ज़मीन । निवास-स्थान । क्षय । प्रलय । खैर का पेड़ । गोरोचन ।
क्षितिकण—[पु०] धूल । गर्द ।
क्षितिकम्प—[पु०] भूकम्प । भूडोल ।
क्षितिज—[पु०] भूमि से उत्पन्न हुआ—मंगल ग्रह । भूमिसुत । वृक्ष । केंचुआ । नरकासुर । धातु-उपधातु जो खान से उत्पन्न होते हैं । वह स्थान जहाँ पर आकाश और पृथिवी मिले दिखाई देते हैं ।
क्षितिदेव—[पु०] ब्राह्मण ।
क्षितिधर—[पु०] पहाड़ । भूधर । कछुआ जिसकी पीठपर शेषनाग अवस्थित हैं । हाथी । दिग्गज । शेषनाग ।
क्षितिनाथ, क्षितिप, क्षितिपति, क्षितिपाल—[पु०] राजा ।
क्षितिभुक्—[पु०] राजा ।
क्षितिभृत्—[पु०] पर्वत । राजा ।
क्षितिरन्ध्र—[पु०] गड्ढा । गर्त ।
क्षितिरुह्—[पु०] वृक्ष । पेड़ ।
क्षितिवर्द्धन—[पु०] शव । लाश । भूमि को बढ़ानेवाला ।
क्षितिमण्डन—[पु०] ब्रह्मा । आदर्श पुरुष ।
क्षितिवृत्ति—[स्त्री०] सहिष्णुता । सहनशीलता ।
क्षितिसुत—[पु०] भूमिसुत । मंगलग्रह । नरकासुर ।
क्षितीश, क्षितीश्वर—[पु०] भूमिपति । जमीन का मालिक । राजा । विष्णु ।
क्षिद्र—[पु०] रोग । सूर्य । सींग ।
क्षिपक—[वि०] फेंकनेवाला ।
क्षिपण—[पु०] फेंकना । फेंकने की क्रिया ।
क्षिप्त—[वि०] छोड़ा हुआ । फैलाया हुआ । अपमानित किया हुआ । उगला हुआ । गिरा हुआ । मारा हुआ । ढीला किया हुआ । रक्खा हुआ । वायु रोग से ग्रस्त । फेंका हुआ । पागल ।
क्षिप्तचित्त—[वि०] जिसका जी ठिकाने न हो । डाँवाडोल चित्तवाला । घबराया हुआ ।
क्षिप्तनिवास—[पु०] पागलखाना ।
क्षिपा—[स्त्री०] रात्रि । रात ।
क्षिप्र—[वि०] शीघ्र । जल्दी । तुरन्त । [पु०] ज़ोरवाला । वेगवान ।
क्षिप्रकारी—[वि०] शीघ्र काम करनेवाला ।
क्षिप्रजव—[वि०] अति वेगशाली । द्रुतगामी । तेज रफ्तार ।
क्षिप्रहस्त—[वि०] शीघ्र काम करनेवाला । तेज हाथोंवाला ।
क्षीण—[वि०] सूक्ष्म । दुर्बल । मरामिटा । दुबला-पतला । गरीब ।
क्षीणकर—[वि०] कमजोर कर देनेवाला ।
क्षीणता—[स्त्री०] कृशता । सूक्ष्मता । कमज़ोरी । दुर्बलता ।
क्षीणमध्य—[वि०] जिसकी कमर पतली हो ।
क्षीणबल—[वि०] कमजोर । निर्वीर्य । निर्बल ।
क्षीणशक्ति—[वि०] अशक्त । कमताक़त । निर्बल ।
क्षीयमाण—[वि०] जिसका क्षय हो रहा हो ।
क्षीर—[पु०] दूध । जल । अर्क । गोंद । खीर ।
क्षीरकण्ठ—[पु०] बच्चा । बालक । दुधमुहाँ । दूध पीनेवाला बच्चा । स्तनन्धय ।
क्षीरज—[पु०] दधि । दही । दूध से बना हुआ । चन्द्रमा । कमल ।
क्षीरजा—[स्त्री०] लक्ष्मी ।
क्षीरद्रुम—[पु०] पीपल का पेड़ । उदुम्बर ।
क्षीरधि—[पु०] क्षीर समुद्र । क्षीर सागर ।
क्षीरनिधि—[पु०] क्षीर समुद्र ।
क्षीरनीर—[पु०] आलिङ्गन । हमागोशी । दूध-पानी । अभेदभाव । प्रगाढ़ मैत्री ।
क्षीरप—[वि०] दुध-मुहाँ बालक । क्षीरकण्ठ । स्तनन्धय ।
क्षीरपर्णी—[स्त्री०] अर्कवृक्ष । मदार का पेड़ ।
क्षीरपाक—[पु०] दूध में पका हुआ । दूध का एक पाक । जिस द्रव्य के साथ क्षीरपाक करना हो, उससे अठगुना दूध और दूध से चौगुना जल मिलाकर औटाना चाहिए । पानी जल जाने पर जब दुग्ध मात्र शेष रह जाय । तब उतार लें । यही क्षीरपाक है ।
क्षीरपायी—[वि०] दूध पीने की आदतवाला ।
क्षीरव्रत—[पु०] वह व्रत जिसमें केवल दूध पीकर रहा जाय ।
क्षीरशाक—[पु०] फटा हुआ दूध ।
क्षीरस—[पु०] दूध या दही की मलाई ।
क्षीरसन्तानिक—[स्त्री०] फटे दूध का मावा । छेना ।
क्षीरसमुद्र—[पु०] क्षीर सागर । दूध का समुद्र ।
क्षीरसागर—[पु०] क्षीर समुद्र ।
क्षीरसागरसुता—[स्त्री०] लक्ष्मी । कमला ।
क्षीरसार—[पु०] नवनीत । मक्खन । छेना ।
क्षीरस्फटिक—[पु०] बिल्लौरी पत्थर । दूध के समान सफेद ।
क्षीरहिण्डीर—[पु०] दूध का झाग ।
क्षीराद—[पु०] दूध पीनेवाला बच्चा । दुधमुँहा बालक । स्तनन्धय ।
क्षीराब्धि—[पु०] क्षीर सागर । दूध

का समुद्र ।

क्षीराब्धिज—[पु०] चन्द्रमा । मोती । लवण ।

क्षीराब्धिजा—[स्त्री०] लक्ष्मी ।

क्षीरिका—[स्त्री०] वंशलोचन । खीर ।

क्षीरिणी—[स्त्री०] खिरनी । क्षीर काकोली । कुटुम्बिनी । अनन्तमूल ।

क्षीरी—[स्त्री०] सोमलता । वंशलोचन ।

क्षीव—[वि०] उन्मत्त । मतवाला ।

क्षीवता—[स्त्री०] क्षीव का भाव । पागलपन । उन्मत्तता ।

क्षुणि—[स्त्री०] पृथिवी ।

क्षुण्ण—[वि०] अभ्यस्त । चूर चूर किया हुआ । पीसा गया । मारा हुआ । पीछा किया गया । दुःखित । सन्तप्त ।

क्षुत—[पु०] छींक । क्षुधा ।

क्षुति—[स्त्री०] छींक । छिक्का ।

क्षुत्क्षाम—[वि०] क्षुधा से क्षीण । भूख से मारा हुआ ।

क्षुद्र—[वि०] कृपण । अधम । तुच्छ । अल्प । दरिद्र । क्रूर । चावल का कण । लुकाट । घोंघा ।

क्षुद्रक—[वि०] छोटा । एक तोले की तोल । शाक-विशेष । जाति-विशेष ।

क्षुद्रकण्टिका—[स्त्री०] छोटी कटेरी । भटकटैया ।

क्षुद्रघण्टिका—[स्त्री०] कौंधनी । कटिभूषण । घुँघरुदार ।

क्षुद्रजन्तु—[पु०] कनखजूरा । कीड़े-मकोड़े ।

क्षुद्रता—[स्त्री०] ओछापन । क्रूरता । कमीनापन । दरिद्रता ।

क्षुद्रत्व—[पु०] ओछापन । क्षुद्रता । तुच्छता । दरिद्रता । कमीनापन ।

क्षुद्रदंशिका—[स्त्री०] छोटा मच्छर ।

क्षुद्रदंशी—[वि०] मच्छर ।

क्षुद्रदृष्टि—[स्त्री०] ओछी निगाह ।

क्षुद्रप्रकृति—[वि०] खोटे स्वभाववाला । नीच प्रकृति का ।

क्षुद्रप्राण—[वि०] निर्बल । कमज़ोर । अल्पप्राण । थोड़े में ही मर जानेवाला ।

क्षुद्रबुद्धि—[वि०] कमसमझ । मूर्ख । मन्दबुद्धि ।

क्षुद्ररोग—[पु०] छोटी बीमारियां । आयुर्वेद में ४४ प्रकार के क्षुद्ररोग बताये गए हैं ।

क्षुद्रा—[स्त्री०] वेश्या । मधुमक्खी । मक्खी । लड़नेवाली औरत । मेंढकी । हिचकी ।

क्षुद्रावली—[स्त्री०] क्षुद्रघण्टिका । घुंघरुदार कौंधनी ।

क्षुद्राशय—[वि०] नीच । कमीन । संकीर्ण हृदय ।

क्षुद्राशयता—[स्त्री०] क्षुद्राशय का भाव । कमीनापन । ओछापन ।

क्षुधा—[स्त्री०] बुभुक्षा । भूख ।

क्षुधातुर—[वि०] भूखा । क्षुधार्त ।

क्षुधार्त—[वि०] भूखा । भूख से पीड़ित । जिसे बहुत भूख लगी हो ।

क्षुधालु—[वि०] भुक्खड़ ।

क्षुधित—[वि०] भूखा । जिसे भूख लगी हो ।

क्षुप, क्षुपक—[पु०] छोटी डालियों का पौदा । गुल्म । झाड़ी ।

क्षुपा—[स्त्री०] देखो 'क्षुप' ।

क्षुब्ध—[पु०] घबराया हुआ । अधीर । मथानी ।

क्षुभ—[वि०] प्रवर्तक । संचालक । चलानेवाला ।

क्षुमान—[वि०] अन्नयुक्त । स्तुति करने योग्य । स्तुत्य । तारीफ़ के योग्य ।

क्षुर—[पु०] छुरा । खुर । गोखरू । बाण-विशेष ।

क्षुरकर्म—[पु०] हजामत ।

क्षुरक्रिया—[स्त्री०] हजामत । क्षुरकर्म ।

क्षुरधान—[पु०] नाई की पेटी । किसबत । छुरे रखने की सन्दूकची ।

क्षुरधार—[वि०] एक नरक का नाम । अस्त्र विशेष ।

क्षुरधारा—[स्त्री०] छुरे की धार । उस्तरे की बाढ़ ।

क्षुरपत्र—[पु०] छुरे जैसा पैना तीर । उस्तरे जैसे पत्ते । बेपड़ ।

क्षुरप्र—[पु०] खुरपी । बाण-विशेष । पैना तीर । घास खोदने का औजार ।

क्षुरमर्दी, क्षुरमुण्डी—[पु०] नाई । नापित ।

क्षुरिका—[स्त्री०] छुरी । चाकू ।

क्षुरिणी—[स्त्री०] नाइन । नाई की स्त्री ।

क्षुरी—[पु०] नाई । नापित । हज्जाम ।

क्षुरी—[स्त्री०] छुरी ।

क्षुल्ल—[वि०] अल्प । कम । लघु । छोटा । कनिष्ठ । हलका ।

क्षुल्लक—[वि०] क्षुद्र । अल्प । नीच । कनिष्ठ । दरिद्र । पामर । दुःखी । खल । छोटा शंख ।

क्षुल्लतात—[पु०] पिता का छोटा भाई । चचा । काचा ।

क्षेत्र—[पु०] खेत । शरीर । अन्तःकरण । पत्नी । तीर्थ-स्थान । ज्योतिष में मेषादि राशियाँ । समतल भूमि ।

क्षेत्रगणित—[पु०] पैमायश ।

क्षेत्रगत—[वि०] खेतपर गया हुआ । खेत से सम्बन्ध रखनेवाला ।

क्षेत्रज—[पु०] बारह प्रकार के पुत्रों में से एक, जो अपनी स्त्री में दूसरे के वीर्य से उत्पन्न हुआ हो । खेत में उत्पन्न होनेवाला ।

क्षेत्रज्ञ—[पु०] शरीर का अधिष्ठाता—जीवात्मा । परमेश्वर । विष्णु । अन्तर्यामी । किसान ।

क्षेत्रदेवता—[स्त्री०] क्षेत्र की अधिष्ठात्री देवता । इसकी आराधना करने से खेत में खूब अन्न उत्पन्न होता है ।

क्षेत्रप, क्षेत्रपति—[पु०] ईश्वर । खेत का रखवाला । किसान ।

क्षेत्रपाल—[वि०] खेत का रखवाला । देवता-विशेष । द्वारपाल विशेष ।

क्षेत्रफल—[पु०] रकबा जो लम्बाई और चौड़ाई को गुणा करने से प्राप्त होता है ।

क्षेत्रजीवी—[वि०] कृषक । किसान । खेती से जीविका चलानेवाला ।

क्षेत्राधिप—[पु०] खेत का मालिक । द्वादश राशियों के अधिपति-ग्रह ।

क्षेत्रिय—[पु०] शाक । सब्ज़ी । घास । खेतवाला । व्यभिचारी ।

क्षेत्री—[पु०] किसान । स्वामी ।

क्षेत्रीकरण—[पु०] देह को आयुर्वेदोक्त पञ्च कर्मों से शुद्ध करना ।

क्षेप—[पु०] निन्दा । बुराई । विक्षेप । लिपाई । लंघन । घमण्ड । विलम्ब । गुच्छा । फेंका जानेवाला । प्रेरण । खेप । फेंकाजानेवाला ।

क्षेपक—[वि०] फेंकनेवाला । किसी पुस्तक में ऊपर से मिलाया हुआ पाठ । गुच्छा । अङ्क । अदद ।

क्षेपण—[पु०] लंघन । बदनामी । कत्ल । विक्षेप । गुज़ारा । फेंकना । बिताना । गोफन । त्याग । मल्लों का एक दाव ।

क्षेपणि—[स्त्री०] डाँड़ । नाव चलाने की बल्ली । बन्दूक की गोली ।

क्षेपणिक—[पु०] बल्ली से नाव चलानेवाला । मल्लाह ।

क्षेपणिका—[स्त्री०] नौका । नाव ।

क्षेपणी—[स्त्री०] बंदूक की गोली । गुल्ला । फेंककर मारा जानेवाला हथियार ।

क्षेपणीय—[वि०] फेंकने लायक । बड़ी तलवार । खड्ग । भिन्दिपाल ।

क्षेम—[पु०] कुशल-मंगल । मुक्ति । चोबानामक सुगन्धित द्रव्य । प्राप्त वस्तु की रक्षा । मंगलयुक्त । भला ।

क्षेमकर—[वि०] भलाई करनेवाला । मंगलकारक ।

क्षेमकर्ण—[पु०] अर्जुन के नाती का नाम ।

क्षेमकाम—[वि०] शुभाकांक्षी । शुभचिन्तक । मंगल चाहनेवाला ।

क्षेमकार—[वि०] भलाई करनेवाला ।

क्षेमतर—[वि०] अत्यन्त हितकारी ।

क्षेमवान्—[वि०] मंगलयुक्त । भला ।

क्षेमा—[स्त्री०] मूर्तिविशेष । कात्यायनी । अप्सरा-विशेष ।

क्षेम्य—[वि०] मंगलकर । हितकर । अच्छा ।

क्षेय—[पु०] क्षय करने योग्य । नाश करने लायक । बरबाद कर देने लायक ।

क्षैण्य—[वि०] क्षीणता । क्षय । बरबादी । क्षीण का भाव ।

क्षोणि—[स्त्री०] पृथिवी । ज़मीन । संख्या ।

क्षोणिप, क्षोणीपति—[पु०] राजा । भूपति । महीपति ।

क्षोदित—[वि०] पिसा हुआ । चूर्ण किया हुआ । जो खोदा गया हो ।

क्षोभ—[पु०] हलचल । खलबली । घबराहट । विकार । बिगाड़ ।

क्षोभजनक—[वि०] हलचल पैदा करनेवाला ।

क्षोभन—[वि०] घबरा जानेवाला । सनसनी पैदा करनेवाला । कामदेव के पाँच बाणों में से एक बाण ।

क्षोम—[पु०] अटारी । अट्टालिका । सन का कपड़ा । चोबा नामक सुगन्धित द्रव्य ।

क्षौणि, क्षौणी—[स्त्री०] पृथिवी । जमीन । संख्या ।

क्षौणीप्राचीर—[पु०] समुद्र । सागर ।

क्षौणीमय—[वि०] मिट्टी का । मृन्मय ।

क्षौद्र—[पु०] मधु । शहद । जल । धूल । क्षुद्रता । ओछापन । चम्पकवृक्ष । चम्पा का पेड़ ।

क्षौद्रज—[पु०] शहद से उत्पन्न हुआ । मोम ।

क्षौद्रजा—[स्त्री०] शहद से बनी चीनी ।

क्षौद्रेय—[पु०] मोम ।

क्षौम—[पु०] रेशमी कपड़ा । सन से बना हुआ कपड़ा । वह गाड़ी जिस पर रेशमी परदा पड़ा हो । हवेली के आगे का घर । अटारी ।

क्षौर—[पु०] मुण्डन । हजामत ।

क्षौरिक—[पु०] नाई । नापित । हज्जाम ।

क्ष्णुत—[वि०] पैनाया हुआ । शान पर चढ़ा हुआ ।

क्ष्णात्र—[पु०] शान रखने का यन्त्र । जिसके द्वारा हथियार पैने किये जाँय ।

क्ष्मा—[स्त्री०] पृथिवी । जमीन । एक की संख्या ।

क्ष्माज—[पु०] मंगल ग्रह । नरकासुर ।

क्ष्मातल—[पु०] पृथिवीतल । जमीन की सतह ।

क्ष्मापति—[पु०] राजा । भूपति ।

क्ष्मायित—[वि०] जो काँप उठा हो । कम्पित ।

क्ष्मायिता—[पु०] कपाँनेवाला । कम्पक ।

क्ष्वेड़—[पु०] अव्यक्त ध्वनि । समझ में न आनेवाली आवाज । कान का रोग । विष । ओषधि-विशेष । चिकनाई । मोचन । त्याग । छिछोरा । कुटिल ।

क्ष्वेड़ा—[स्त्री०] बाँस की छड़ । शेर का गर्जन ।

क्ष्वेला—[स्त्री०] क्रीड़ा । खेल ।

—:o:—

ख

ख—[पु०] आकाश। मेघ। सूर्य। इन्द्रिय। पुर। खेत। शून्य। बिन्दु। देवलोक। सुख। कर्म। अभ्रक। छिद्र। ब्रह्मा। मोक्ष। निर्वाण।

खक्क—[वि०] खाली। खोखला।

खङ्ख—[वि०] रिक्त। छूछा। खाली। निर्जन। उजाड़।

खङ्ग—[पु०] खड्ग। तलवार। गैंडा।

खङ्गर—[पु०] एक साथ पकी हुई कई ईंटों का ढिम्मा।

खँगालना—[क्रि०] केवल जल डालकर धो डालना। पानी से साफ करना। चोरी करना। सब कुछ चुरा ले जाना।

खञ्जरी—[स्त्री०] छोटी डफली।

खण्डना—[क्रि०] तोड़ना। टुकड़े करना। काटना। रद करना।

खण्डपुरी—[स्त्री०] एक प्रकार की मीठी पूरी।

खँडर—[पु०] खँडहर। टूटा-फूटा मकान।

खँडसार—[पु०] खाँड़ तैयार करने की जगह।

खँडहर—[पु०] देखो 'खँडर'।

खण्डा—[पु०] चावल का कण। छोटी तलवार।

खकक्षा—[स्त्री०] आकाशमण्डल की परिधि।

खक्खाशाह—[पु०] चतुर व्यापारी। लाट साहब। नवाब।

खखार—[पु०] थूक। कफ़।

खखेटना—[क्रि०] खदेड़ना। भगाना। आहत करना। दबाना।

खखोरना—[क्रि०] रत्ती-रत्ती ढूँढ़ डालना।

खग—[पु०] सूर्य। देव। बाण। पक्षी। हवा। चकई-चकवा। पारा। आकाश में चलनेवाला। बादल। ग्रह-नक्षत्र। पतंगे।

खगकेतु—[पु०] गरुड़ध्वज। विष्णु।

खगखान—[पु०] वृक्ष। कोटर। पेड़ की खोह।

खगङ्गा—[स्त्री०] आकाश-गङ्गा। मन्दाकिनी।

खगपति—[पु०] गरुड़।

खगम—[वि०] आकाशगामी। पक्षी-विशेष।

खगवती—[स्त्री०] पृथिवी। ज़मीन।

खगशत्रु—[पु०] श्येन। बाज़। शिकरा।

खगस्थान—[वि०] वृक्ष। कोटर। पेड़ की खोह।

खगहा—[पु०] गैंड़ा।

खगाधिप—[पु०] गरुड़।

खगान्तक—[पु०] श्येन। बाज़। शिकरा।

खगासन—[पु०] विष्णु।

खगेन्द्र—[पु०] गरुड़। गीध।

खगेन्द्रध्वज—[पु०] विष्णु। गरुड़-ध्वज।

खगेश्वर—[पु०] देखो 'खगपति'।

खगोल—[पु०] आकाशमण्डल।

खग्ग—[पु०] खड्ग। तलवार।

खग्रास—[पु०] सम्पूर्ण ग्रहण। चन्द्र या सूर्य का वह ग्रहण जिसमें उनका समस्त बिम्ब काला पड़ जावे और अन्धकार छा जावे।

खङ्क—[वि०] खाली। खोखला।

खङ्ख—[वि०] रिक्त। छूँछा। खाली। निर्जन। उजाड़।

खङ्ग—[पु०] खड्ग। तलवार। गैंडा

खङ्गर—[पु०] ईंटें पकाने में कई ईंटों का पिघल कर बना हुआ ढिम्मा।

खचना—[क्रि०] जड़ना। बनना। हिकटना। रहना।

खचर—[पु०] बादल। मेघ। हवा। सूर्यादि ग्रह। राक्षस। ताल-विशेष। कसीस। पक्षी। आकाश में विचरनेवाला।

खचाखच—[क्रि० वि०] ठसाठस। बिल्कुल।

खचारी—[पु०] आसमान में विचरण करने वाला। कार्तिकेय।

खचित—[वि०] संयुक्त। खींचा हुआ।

खच्चर—[पु०] घोड़े और गधे के मेल से उत्पन्न हुआ जानवर।

खजला—[पु०] एक प्रकार का पकवान। खाजा नाम की मिठाई।

खजुराही—[स्त्री०] वह स्थान जहाँ खजूर अधिक हों। खजूर का बाग या जंगल।

खज्योति—[पु०] खद्योत। जुगनू।

खञ्ज, खञ्जक—[पु०] लँगड़ा। वात रोग का भेद।

खञ्जन—[पु०] लँगड़ापन। खञ्जन नामक पक्षी। ममोला।

खञ्जनी, खञ्जरी—[स्त्री०] छोटी डफली।

खञ्जरीट, खञ्जरीटक—[पु०] खञ्जन नामक पक्षी।

खञ्जरीटी—[स्त्री०] मादा खञ्जन।

खट—[पु०] अन्धकूप। कफ। टङ्क। शस्त्र विशेष। हल। घास।

खट—[पु०] खाट। राग-विशेष। छह।

खटक—[स्त्री०] सन्देह। खटका। आवाज़-विशेष।

खटकना—[क्रि०] बजाना। झगड़ना। लड़ना। चिन्ता होना। अच्छा न लगना। सन्देह करना। भय करना। रह रह कर पीड़ा करना।

खटका—[पु०] खटखट शब्द। आशङ्का। डर। चिन्ता। किवाड़ आदि

में लगाने की चिटकनी। पक्षियों को उड़ाने के लिए पेड़ में डोरी से बँधा हुआ फटे बाँस का टुकड़ा।
खटकाना—[क्रि०] खटखट करना। बजाना। छोड़ना। आहट करना। डराना। चलाना। फेंकना।
खटकोरा—[पु०] खटमल।
खटखटा—[पु०] पक्षियों को उड़ाने के लिए पेड़ में डोरी से बँधा हुआ फटे बाँस का टुकड़ा।
खटखटाना—[क्रि०] बार बार चोट करना। चेताना। सुझाना।
खटपट—[स्त्री०] लड़ाई-झगड़ा। अनबन। वाद विवाद। खटपट शब्द।
खटपटिया-[पु०] लड़ाकू। झगड़ालू।
खटमल—[पु०] खाट का कीड़ा।
खटमिट्ठा—[पु०] जिसमें खट्टा-मीठा दोनों प्रकार का स्वाद हो।
खटराग—[पु०] झगड़ा। झंझट। बेजोड़। सामग्री। सामान।
खटाई—[स्त्री०] खट्टापन। खट्टी वस्तु। अनबन।
खटाका—[पु०] धड़ाका। जोर का खटका।
खटाखट—[स्त्री०] खटखट। फटपट।
खटिका—[स्त्री०] खड़िया मिट्टी। कान का छेद। खस।
खट्टी—[पु०] मुर्दा ले जाने की ठठरी। अरथी। काठी।
खट्वा—[स्त्री०] खाट। चारपाई। पलँग। शय्या।
खट्वाङ्ग—[पु०] खाट का पाया या पाटी। शिवजी का एक हथियार। मनुष्य का अस्थिपिंजर। रीढ़ की हड्डी या पृष्ठवंश।
खट्वारूढ़—[पु०] बदनाम। निन्दित। भूलाभटका। जालिम। प्रमादी। पलँग पर बैठा हुआ।
खड़ाऊँ—[स्त्री०] पादुका। काठ के पादत्राण।
खड़िया—[स्त्री०] सफेद मिट्टी। खरिया।
खड़ीबोली—[स्त्री०] वह बोली जिसमें वर्तमान हिन्दी-गद्य लिखा जाता है।
खड़े-खड़े—[क्रि० वि०] शीघ्र। तुरन्त।
खड्ग—[पु०] गेंडा। गेंडे का सींग। तलवार। चोवा नामक सुगन्धित द्रव्य।
खड्गकोश—[पु०] तलवार का म्यान। लता-विशेष।
खड्गपत्र—[पु०] ढाल। म्यान। तलवार की धार।
खड्गपरीक्षा—[स्त्री०] तलवार की जाँच।
खड्गपाणि—[वि०] तलवार हाथ में लिए हुए। प्रहार के लिए उद्यत। मारने को उतारू। क्रुद्ध। नाराज़।
खड्गपिधान—[पु०] म्यान।
खड्गपुत्र—[पु०] कटार। छुरी।
खड्गपुत्रिका—[स्त्री०] कटार। छुरी।
खड्गहस्त—[वि०] देखो 'खड्गपाणि'।
खड्गी—[पु०] खड्ग धारण किये हुए। गेंडा।
खड्ड—[पु०] गड्ढा। गढ़ा।
खण्ड—[पु०] खाँड़। अंश। हिस्सा। टुकड़ा। भेद। काला नमक। देश। ईख। वर्ष। दिशा। नौ की संख्या।
खण्डक—[पु०] बताशे। इलायची के दाने। गट्टे। मिस्री के कूँजे। काटनेवाला।
खण्ड कथा—[स्त्री०] कथा का एक भेद, जिसमें चार प्रकार का विरह वर्णित होता है और करुण रस प्रधान रहता है तथा मन्त्री और ब्राह्मण नायक रक्खा जाता है।
खण्डकालु—[पु०]शकरकन्द।
खण्ड काव्य—[पु०] जो काव्य सम्पूर्ण काव्य लक्षणों से युक्त न हो। छोटा काव्य।
खण्ड-खण्ड—[पु०] टुकड़े टुकड़े किया हुआ।
खण्डज—[पु०] खाँड़। शकर। गुड़।
खण्डधारा—[स्त्री०] कैंची। कतरनी।
खण्डन—[पु०] काँट-छाँट। किसी बात को गलत सिद्ध करना। बात का काटना। तोड़ना-फोड़ना। छिन्न-भिन्न करना।
खण्डना—[स्त्री०] खण्डन। काट-छाँट। चीर-फाड़। रद्द करना। तोड़ना। टुकड़े टुकड़े करना।
खण्डनीय—[वि०] काटने लायक। खण्डन करने योग्य।
खण्डपरशु—[पु०] विष्णु। जामदग्न्य। शिव। खण्डपर्शु।
खण्डपाल—[पु०] हलवाई। मोदक।
खण्डपुष्प—[पु०] बताशे। छेना।
खण्डपूरी—[स्त्री०] एक प्रकार की मीठी पूरी।
खण्डप्रलय—[पु०] छोटा प्रलय। जो ब्रह्मा का एक दिन अर्थात् चतुर्युगी बीत जाने पर होता है।
खण्डमय—[वि०] टुकड़ा-टुकड़ा।
खण्डमेरु—[पु०] पिंगल भेद।
खण्डमोदक—[पु०] ओले के लड्डू।
खण्डशः—[अ०] खण्ड-खण्ड। टुकड़ा-टुकड़ा।
खण्डशीला—[स्त्री०] दुष्टानारी। वेश्या। रण्डी।
खण्डसर, खण्डसार—[पु०] शकर। चीनी। शकर बनाने का कारखाना।
खण्डा—[पु०] टूटा हुआ चावल। खाँड़। छोटी तलवार।
खण्डिका—[स्त्री०] शकर। शर्करा। खाँड़।
खण्डित—[वि०] कटा हुआ। भिन्न। अलग। टुकड़े-टुकड़े किया हुआ। हीनाङ्ग।

खण्डिता—[स्त्री०] नायिका विशेष। किसी नायिका का पति जब अन्य स्त्री के सम्भोग-चिह्नों से चिह्नित हो, उसके पास जाता है, तब उस नायिका का हृदय अत्यन्त ईर्ष्या-कलुषित दीखता है। इसी नायिका को खण्डिता कहते हैं।

खतमाल—[पु०] धूप। धूँआ। बादल। मेघ।

खतियाना—[क्रि०] रोज़ाना के आय-व्यय को अलग अलग खानों में लिखना।

खत्ता—[पु०] गड्ढा। गर्त। अनाज रखने का ज़मीन में खोदकर बनाया गया स्थान। नील और शोरा भरने की जगह

खदान—[स्त्री०] खान।

खदिर, खदिरक—[पु०] खैर का पेड़। कत्था। चन्द्रमा। इन्द्र।

खदिरिका—[स्त्री०] लाख। लाजवन्ती।

खदेरना—[क्रि०] भगाना। पीछे पड़ना। हटाना।

खद्दर—[पु०] हाथ से कता और बुना गया कपड़ा।

खद्योत-[पु०] जुगुनू। पटबीजना। सूर्य।

खन—[पु०] क्षण। समय। खण्ड अर्थात् मकान का तल्ला। तुरन्त।

खनक—[पु०] खोदनेवाला। चूहा। सेंध लगानेवाला, चोर। जमीन खोदनेवाला। भू-तत्वज्ञ।

खनन—[क्रि०] खोदना। खुदाई। खान से धातु आदि निकालना।

खनना—[क्रि०] खोदना। जोड़ना।

खनि—[स्त्री०] खान।

खनिज—[वि०] खान से निकला हुआ।

खनित्र—[पु०] खोदने का अस्त्र—फावड़ा। खन्ती।

खन्ती—[स्त्री०] खनित्र। फावड़ा। वह गड्ढा जिससे मिट्टी निकाली गई हो।

खन्य—[वि०] खोदा जाने योग्य। खननीय।

खपड़ै (रै) ल—[स्त्री०] खपड़ों की छत। खपरैल।

खपत—[स्त्री०] समाई। गुंजाइश। बिक्री। कटती।

खपना—[क्रि०] खर्च होना। निकलना। बिकना। कम होना। मरना। मिटना। निभना।

खपरिया—[स्त्री०] खान से निकलनेवाली एक धातु। कीट-विशेष।

खपाना—[क्रि०] लगाना। खर्च कर डालना। बेच डालना। समाप्त कर देना।

खपुष्प—[पु०] आकाश-कुसुम। असम्भव कार्य। मिथ्या। कटहल का पेड़।

खप्पर—[पु०] मिट्टी का बरतन-विशेष। काली के रुधिर पान का पात्र। भीख माँगने का बरतन। खोपड़ा।

खमणि—[पु०] सूर्य। सूरज।

खर—[पु०] गधा। खच्चर। एक राक्षस। कठिन। कड़ा। निष्ठुर। निर्दय। तीक्ष्ण। तेज धारवाला। तृण। घास। बगला। कौआ।

खरकर—[पु०] सूर्य। सूरज। तीक्ष्ण किरणोंवाला।

खरज—[पु०] षडज। सात स्वरों में से एक। गाने का प्रधान स्वर।

खरतल—[वि०] स्पष्टवादी। स्वच्छ हृदय का। खरा। प्रचंड। उग्र।

खरदण्ड—[पु०] पद्म। कमल।

खरदूषण—[पु०] इन नामों के प्रसिद्ध राक्षस। धतूरे का पेड़ या फल। तीव्र दोषयुक्त।

खरध्वंसी—[पु०] खर राक्षस को मारनेवाले—श्रीराम।

खरनादी—[वि०] जो गधे की तरह बोलता हो।

खरपत्र—[पु०] छोटी तुलसी। मरुआ। भोजपत्र।

खरपात्र—[पु०] लोहे का बर्तन।

खरप्रिय—[पु०] पारावत। कबूतर।

खरबूजा—[पु०] प्रसिद्ध फल।

खरभर—[पु०] खटपट। कोलाहल। गुलगपाड़ा। हलचल। खलबली।

खरमास—[पु०] चैत्र और पौष के महीने। ये मास शुभ कार्यों के लिए अच्छे नहीं हैं।

खररश्मि—[पु०] तेज किरणोंवाला सूर्य। सूरज।

खरल—[पु०] पत्थर का पात्र जिसमें औषधियाँ कूटी या घोटी जाती हैं।

खरशब्द—[पु०] गधे का रेंकना। तीखी आवाज़।

खरस—[पु०] भालू। भल्लूक। रीछ।

खरसैला—[वि०] खुजलीवाला। खजैला। यह शब्द पशुओं के लिये व्यवहृत होता है।

खरहरा—[पु०] बड़ी झाड़ू।

खरहा—[पु०] खरगोश। शशक।

खरा—[पु०] तीक्ष्ण। तीखा। विशुद्ध। खालिस। करारा। कुरकुरा। निश्छल। नक़द। साफ कहनेवाला।

खरांशु—[पु०] तीक्ष्ण किरणोंवाला। सूर्य। सूरज।

खराग्नि—[पु०] तेज। आंच।

खराद—[स्त्री०] एक यन्त्र-विशेष जिस पर काठ अथवा धातु आदि को चढ़ाकर गोल और सुडौल बनाया जाता है।

खरादी—[पु०] खरादनेवाला।

खरी—[स्त्री०] खालिस। शुद्ध। स्पष्ट। साफ़।

खरु—[पु०] शिव। अश्व। कामदेव। दाँत। शुक्लवर्ण। [वि०] जिसे बुरा काम करना अच्छा लगे। क्रूर। कुपद।

तीक्ष्ण। पैदा। पतिंवराकन्या।

खरोंच—[स्त्री०] खराश। खुरसट। छिलन। रगड़। पतौर नामक शाक।

खरोष्ट्री—[स्त्री०] लिपि विशेष जो अशोक के राज्य काल में भारत के पश्चिमोत्तर भाग में प्रचलित थी। यह गन्धार लिपि भी कहलाती है। यह फारसी की तरह बाईं ओर से दाहिनी ओर को लिखी जाती थी।

खर्खोद—[पु०] इन्द्रजाल। बाजीगरी।

खर्जु—[पु०] खाज। खुजली। कण्डू। पिण्डखजूर। खजूर का पेड़।

खर्जुर—[पु०] चाँदी। हरताल। विच्छू।

खर्जूर—[पु०] खजूर का पेड़। चाँदी।

खर्पर—[पु०] तस्कर। चोर। धूर्त। धोखेबाज। भीख मांगने का पात्र। खप्पर। खपरा। कपाल। खोपड़ा। छाता। खपरिया नामक उपधातु। तवा। आँखों का सुरमा विशेष। एक प्रकार का तूतिया।

खर्व, खर्वक—[पु०] कुबेर का निधि विशेष। संख्या विशेष। छोटा। बौना। बावन। कुबड़ा।

खर्म—[पु०] रेशम। कपड़ा। पौरुष। मर्दानगी। परम्परा शुद्ध।

खर्रा—[पु०] लम्बी चिट्ठी। बड़ा कागज़ जो खूब लिखा हुआ हो। रोग-विशेष।

खल—[वि०] नीच। कमीना। नाला-यक। पाजी। [पु०] खलियान। गर्द का ढेर। जमीन। स्थान। खली। सूर्य। तमालवृक्ष। खरल। धतूरे का पेड़। व्यञ्जन-विशेष।

खलक—[पु०] कुम्भ। घड़ा। गुग्गुल।

खलड़ी—[स्त्री०] चर्म। चमड़ा। त्वक्। छाल।

खलता—[स्त्री०] अमर बेल। दुष्टता। पाजीपन। नीचता।

खलति—[पु०] गञ्जापन [वि०] गञ्जापन।

खलधान, खलधान्य [पु०] खलियान।

खलना—[क्रि०] चुभना। लगना। अखरना। नागवार समझ पड़ना। मोड़ना। झुकाना।

खलबल—[पु०] हलचल। दौड़धूप। व्याकुलता। घबराहट।

खलबली—[स्त्री०] देखो 'खलबल'।

खलि—[स्त्री०] खल। सरसों आदि में से तेल निकल लेने पर शेष रह जाने वाला पदार्थ।

खलिन—[पु०] लगाम। बागडोर। [वि०] आकाश में लीन।

खलियान—[पु०] फसल काटकर रखने और उसमें से भूसा व अनाज अलग अलग करने का स्थान। राशि। ढेर।

खली—[स्त्री०] देखो 'खलि'।

खलीन—[पु०] देखो 'खलिन'।

खलु—[अ०] नहीं। खबरदार। क्या। कृपा करके। नियमित रूप से। सोच समझ कर। निश्चय। अवश्य। अब। इस समय। कविता में पाद पूर्त्यर्थ भी 'खलु' का प्रयोग किया जाता है।

खलूरिका—[स्त्री०] व्यायाम-भूमि। अखाड़ा। शस्त्राभ्यास करने की जगह।

खले कपोत न्याय, खले कपोतिका न्याय—[पु०] खलियान में सब कबूतरों के एक साथ उतर पड़ने की तरह समुदय पदार्थ को एक ही विषय पर ढाल देने का नाम 'खले कपोत' 'खले कपोतिका' न्याय है।

खल्लिका—[स्त्री०] कड़ाही। पिट्ठी आदि का भूँजने का पात्र।

खल्ली—[स्त्री०] एक रोग जिसमें हाथ पाँव अकड़ते हैं। एँठन। देवदारु।

खल्लीट—[वि०] गंजा। जिसके सिर के बाल उड़ गए हों [पु०] गंज नामक रोग।

खल्व—[पु०] गंज नामक रोग। चना आदि अन्न।

खल्वट—[पु०] कास रोग। खाँसी।

खल्वाट—[वि०] गंजा। [पु०] इन्द्र-लुप्त रोग। गंज।

खवा—[पु०] स्कन्ध। कन्धा।

खवाष्प—[पु०] ओस।

खसखस—[पु०] पोस्त नामक दाना। अफीम के बीज।

खसखसा—[पु०] भुरभुरा। मुलायम।

खसीस—[वि०] कृपण। कंजूस।

खस्ता—[वि०] भुरभुरा। खूब मोयन डालकर बनाया गया।

खस्फटिक—[पु०] काँच। सूर्यकान्त-मणि।

खाँच [स्त्री०] सन्धि। जोड़।

खाँचा—[पु०] बड़ा टोकरा जो पतली लकड़ियों का बना होता है। बड़ा पिंजड़ा। खन्दक। गड्ढा।

खाँड़—[स्त्री०] कच्ची शक्कर।

खाँड़ा—[पु०] खड्ग। तलवार। छुरा। टुकड़ा। विशेषतः—चौथाई भाग को खाँड़ा कहते हैं।

खाई—[स्त्री०] किसी बाग या किले में बचाव के लिए उसके चारों ओर खोदा गया गहरा गढ़ा।

खाक—[स्त्री०] राख। धूल। भस्म। [क्रि० वि०] कुछ नहीं।

खाका—[पु०] ढाँचा। डौल। नक़शा। रूपरेखा। मसविदा।

खाकी—[वि०] भूरा। मटमैला। धूसरित।

खागा—[पु०] खड्ग। तलवार।

खाज—[स्त्री०] खुजली नामक रोग।

खाजा—[पु०] एक पकवान। खजला।

खाड़—[पु०] गर्त । गड्ढा ।

खाड़ी—[स्त्री०] समुद्र का वह भाग जिसके तीन ओर स्थल हो । आखात ।

खाण्डव—[पु०] एक प्राचीन वन का नाम । यह वन इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) के समीप था । इन्द्र का वन ।

खात—[पु०] पोखर । तालाब । कूँआ । बावड़ी । खोदा हुआ ।

खाता—[पु०] वह बही जिसमें अलग-अलग ब्योरेवार हिसाब लिया जाय । विभाग । मद ।

खातिर—[स्त्री०] वास्ते । लिए । आदर । सम्मान ।

खातिरजमा—[स्त्री०] विश्वास । सन्तोष । तसल्ली । भरोसा ।

खाती—[ ] खत्ती । गड्ढा । पोखरा । तालाब । भूमि खोदनेवाली जाति विशेष । बढ़ई

खाद—[पु०] खेतों में उपज बढ़ाने के लिए डाला जानेवाला सड़ा हुआ गोबर कूड़ा आदि । पाँस ।

खादक—[पु०] खानेवाला । ऋणी । ऋणलेनवाला ।

खादर—[पु०] तराई । कछार । नीची ज़मीन । चरागाह । गोचर भूमि ।

खादिर—[वि०] खैर की लकड़ी का बना हुआ । कत्थे का-सा । कत्थई ।

खादी—[वि०] खानेवाला । भक्षक । हिंसक ।

खादी—[स्त्री०] हाथ कता और हाथ का बुना कपड़ा । खद्दर ।

खाद्य—[वि०] भक्षण करने योग्य । खाया जानेवाला । भोज्य । खाने की वस्तु । भोजन ।

खान—[स्त्री०] खदान । आकर । वह स्थान जहाँ से धातु आदि खोदकर निकालते हैं । भोजन । भोजन सामग्री । भोजन करने का ढंग ।

खानगी—[पु०] निजू । अपना । प्राइवेट । घरेलू । [स्त्री०] छोटी रण्डी ।

खानदान—[पु०] वंश । घराना ।

खानिल—[वि०] सेंध लगानेवाला ।

खापगा—[स्त्री०] गंगा । सुरसरि ।

खाबड़, खूबड़—[वि०] ऊँचा-नीचा ।

खाम—[पु०] लिफ़ाफ़ा । टाँका । जोड़ । खम्भा । मस्तूल ।

खार—[पु०] क्षार । नमक । सज्जी । रेह । धूल । झाड़ी ।

खारा—[पु०] नमकीन । खारी । कड़वा । वस्त्र विशेष । भूसा आदि बाँधने की जाली—पासी । फल तोड़ने के लिए जाली का बना झोला । झाँवा । आसन-विशेष ।

खारुआ—[पु०] रंग विशेष जो आल से बनता है । उक्त रंग से रँगा हुआ मोटा कपड़ा ।

खाल—[स्त्री०] त्वचा । चमड़ा । धौंकनी । मुर्दा । नीची ज़मीन । खाड़ी । गहराई । नाला ।

खास—[वि०] मुख्य । बड़ा । अपना । निजी । विशुद्ध । अन्न भरने का कोठा ।

खासा—[पु०] अच्छा । चोखा । तन्दुरुस्त । मझोला । सुडौल । राजभोग । राजा की निजी सवारी का घोड़ा या हाथी । एक हलका सफेद कपड़ा ।

खिद्यमान—[वि०] खेद युक्त । रंजीदा । सेना द्वारा घिरा हुआ । उत्तप्त । उबला हुआ ।

खिन्न—[वि०] दीन । दरिद्र । निर्धन । सुस्त । उदास । खेद युक्त ।

खिरनी—[स्त्री०] क्षीरिणी । वृक्ष-विशेष । उक्त वृक्ष के फल जो निबौली के आकार से होते हैं ।

खिल—[वि०] बिना जोता हुआ खेत । उखड़ा हुआ । परिशिष्ट । विष्णु ।

खिलअत—[स्त्री०] सरोपाव । बादशाह या राजाओं से मिलनेवाली पोशाक ।

खिलवाड़ी—[स्त्री०] खेल-कूद । हँसी दिल्लगी । खिलवाड़ ।

खिलाल—[पु०] ताश आदि खेल में बाज़ी हार जाना ।

खिसारा—[पु०] नुकसान । घाटा हानि ।

खिसियाना—[क्रि०] लज्जित होना । क्रोध करना ।

खीज—[स्त्री०] चिढ़ । झल्लाहट । झुंझलाहट ।

खीझ—[स्त्री०] देखो 'खीज' ।

खीर—[स्त्री०] दूध में पकाए हुए चावल । पायस । दूध । क्षीर ।

खीरचटाई—[स्त्री०] अन्न प्राशन । पसनी । छोटे बालक को सर्व प्रथम दिन अन्न खिलाना ।

खीरमोहन—[स्त्री०] एक बंगाली मिठाई ।

खील—[स्त्री०] भुना हुआ धान । लाई ।

खीस—[वि०] नष्ट । बरबाद । उजाड़ । [स्त्री०] चिढ़ । लज्जा । दाँत निपोरने का भाव । ब्याने के बाद सात दिन तक होनेवाला गाय भैंसका दूध जो प्रायः फटजाता है । पेवसी ।

खीसा—[पु०] थैला । थैली । जेब । पाकेट ।

खुगार—[पु०] नमदा । जीन । चारजामा । निरर्थक वस्तुओं का जमाव खुगीर की भर्ती कहलाता है ।

खुनस—[स्त्री०] बिगाड़ । नाराज़गी । अनबन । शत्रुता ।

खुभना—[क्रि०] चुभना । धँसना । लगना ।

खुमार—[पु०] नशा । मद । नशे का उतार ।

खुरण्ड—[स्त्री०] घाव के ऊपर की पपड़ी ।

खुरचन—[पु०] दूध से बनी मिठाई-विशेष । खुरचने का औज़ार । वह चीज

जो खुरच कर निकाली गयी हो।

खुरजी—[स्त्री०] कपड़े का बना बड़ा थैला जिसमें सामान भरकर कंधे या घोड़ेपर रखकर ले जाते हैं।

खुरमा—[पु०] एक पकवान जो मीठा और नमकीन दोनो प्रकार का बनाया जाता है। छुहारा।

खुराफात—[स्त्री०] बुरी बात। गाली-गलौज। अश्लील या बेहूदा बकवास। उपद्रव। झगड़ा।

खुर्दबीन—[स्त्री०] सूक्ष्म दर्शक यन्त्र। बारीक चीजों के देखने का औज़ार।

खुर्दबुर्द—[वि०] नष्ट-भ्रष्ट। टूटा-फूटा।

खुर्दा—[संज्ञा] छोटी मोटी चीजें। सामान्य द्रव्य।

खुर्दाफ़रोश—[पु०] छोटी-मोटी चीजें बेचनेवाले। थोड़ा-थोड़ा सामान बेचनेवाला।

खुर्राट—[पु०] बुड्ढा। पुराना। अनुभवी। काइयाँ। होशियार।

खुलासा—[पु०] निचोड़। सार। अभिप्राय। मतलब। स्पष्ट।

खुल्लक—[पु०] घोड़ा। नीच। छोटा। दरिद्र। निष्ठुर। खल।

खुल्लतात—[पु०] चचा। पिता का छोटा भाई।

खुल्लमखुल्ला—[वि०] प्रकाश रूप में। खुले तौर पर। सबके सामने।

खुशहाल—[वि०] सम्पन्न। सुखी। जिसे कोई कष्ट न हो।

खूँख्वार—[वि०] रक्तपायी। खून पीनेवाला। भयानक। क्रूर।

खूँट—[पु०] प्रान्त-भाग। छोर। सिरा। चौकोर पत्थर। हिस्सा। देवी-देवता का प्रसाद। लकड़ी का महसूल। रोक टोक।

खूँशफारी—[स्त्री०] बिगाड़। मनमुटाव। अलगाव। द्वेषमूलक बात।

खूँद—[स्त्री०] चौपायों का थोड़ी जगह में घूमना या पैर मारना।

खूँदना—[क्रि०] रौंदना। कुचलना।

खूनी—[वि०] हत्यारा। हिंसक। क्रूर। लाल। रक्तवर्ण।

खूबड़खाबड़—[वि०] नीचा-ऊँचा। असमतल।

खूबी—[स्त्री०] गुण। विशेषता। भलाई। उम्दगी। अच्छापन।

खूसट—[पु०]उल्लू। घुग्घू। गँवार। बेसमझ। बूढ़ा।

खृष्टान—[पु०] ईसाई। क्रिश्चियन।

खृष्टीय—[वि०] ईसवी। ईसासम्बन्धी। ईसाइयों का।

खेचर—[पु०] शिव, विद्याधर, पारा, सूर्य, मेष आदि १२ राशियाँ। कसीस। पक्षी। घास। घोड़ा। [वि०] आकाशगामी।

खेचरा—[स्त्री०] आकाशवल्ली। अमर बेल।

खेचरी—[स्त्री०] योग की मुद्रा-विशेष। इसमें साधक जीभ को उलटकर तालू से लगाता है और दृष्टि अपने मस्तक पर रखता है।

खेचरी गुटिका—[स्त्री०] मन्त्रसिद्ध गोली-विशेष। कहते हैं इस गोली को मुँह में रख लेने से मनुष्य पक्षी की भाँति आकाश में उड़ सकता है।

खेट—[पु०] सूर्य आदि ग्रह। खेड़ा। हथियार-विशेष। चमड़ा। शिकार। घास। बलराम की गदा। कफ। निन्दक। अधम। सूदखोर। भक्षक।

खेटक—[पु०] किसानों का गाँव। ढाल। अस्त्र-विशेष। सूदखोर।

खेटकी—[पु०] ज्योतिषी। भड्डुरी। शिकारी। बहेलिया। बधक।

खेड़ा—[पु०] छोटा गाँव। पुरवा। नगला। किसी प्राचीन नगर या ग्राम का ध्वंस-विशेष। टीला।

खेत—[पु०] क्षेत्र। भूमि का वह छोटा भाग जिसमें अन्नादि उत्पन्न किया जाता है। खेत की फसल। समरभूमि।

खेतिहर—[पु०] कृषक। किसान।

खेती—[स्त्री०] कृषि। काश्त। खेत में उपजी हुई फसल।

खेतीबाड़ी—[स्त्री०] कृषिकार्य। किसानी।

खेद—[पु०] शोक। अफसोस। अवसाद। थकावट। रोग। बीमारी।

खेदना—[क्रि०] खदेड़ना। भगाना। पीछा करना।

खेदर—[पु०] सिंह आदि जंगली जन्तु को पकड़ने या वध करने के लिए, खदेड़कर निश्चित स्थान पर लाने का प्रकार। इसमें बहुत से लोग ढोल ढप बजाते और हल्ला मचाते हुए जानवर को घेर कर लाते हैं।

खेदि—[पु०] किरण। झलक।

खेना—[क्रि०] नाव आदि जलयान चलाना। निर्वाह करना। पार लगाना।

खेप—[स्त्री०] भरती। लदान। चालान। एक बार में जितनी चीज ले जाई जा सके।

खेरी—[स्त्री०] एक प्रकार का लोहा। जिसकी तलवार आदि बनती हैं। इसपात।

खेलवाड़—[पु०] हँसी-दिल्लगी। मनबहलाव।

खेवट—[पु०] पटवारियों के रजिस्टर जिसमें पट्टीदारों की जमीन और उनकी मालगुजारी का ब्यौरा लिखा जाता है। मल्लाह। माँझी।

खेवा—[पु०] नाव का किराया। नाव की खेप। बार। मर्त्तबा। नाव द्वारा नदी पार करने का काम।

खेस—[पु०] वस्त्र-विशेष। देशी मोटे सूत का बना चादरा।

खेह—[स्त्री०] धूल। मिट्टी। खाक। राख।

खैर—[पु०] खदिर। कत्थे का पेड़। कत्था। कुशल। भलाई। अस्तु। अच्छा। क्या चिन्ता। परवा नहीं। छोड़ो।

खैरसार—[पु०] खदिरसार। कत्था।

खैरा—[वि०] खैर के रंग का। कत्थई। धान का एक रोग। मछली-विशेष। बाँया। करारा सिका हुआ।

खैला—[पु०] छोटी उम्र का बैल। नया बैल।

खोंता—[पु०] घोंसला। किसी चीज में उलझकर कपड़े की फटन। हानि।

खोंप—[स्त्री०] सिलाई का लम्बा टाँका। फटन।

खोंसना—[क्रि०] घुसेड़ना। अटकाना। खसोटना। छीन लेना।

खोई—[स्त्री०] ईख का रस निकाल लेने पर बची हुई छूछ। छोई। कम्बल या कपड़े की घूघी जो बरसात से बचने के लिए ओढ़ी जाती है। धान की खील। लाई।

खोट—[स्त्री०] दुर्गुण। अवगुण। दोष।

खोटा—[वि०] दूषित। खराब।

खोपड़ा—[पु०] नारियल की गिरी। गोला। सिर की हड्डी। कपाल। सिर।

खोय—[स्त्री०] आदत। टेव। स्वभाव। बान।

खोया—[पु०] मावा। खोवा। यह दूध को औंटाते औंटाते पिण्ड समान गाढ़ा कर लिया जाता है।

खोर—[वि०] लँगड़ा। [स्त्री०] सकरी गली। जानवरों के चारा खाने की नाँद। लड़ावनी। भूत या किसी देवता का कोप। दोहरा सिला हुआ मोटा वस्त्र जिसमें रूई भरकर रज़ाई बना लेते हैं।

खोरि—[स्त्री०] सँकरी गली। दूषण। ऐब। दुर्गुण। बुराई।

खोवा—[पु०] देखो "खोया"।

खोह—[स्त्री०] गुफा। पहाड़ का गहरा गड्ढा। दो पहाड़ों के बीच का संकीर्ण स्थान।

खौर—[स्त्री०] त्रिपुण्ड्र। चन्दन का टीका। स्त्रियों का आभूषण-विशेष। मछली पकड़ने का जाल।

ख्यात—[वि०] कथित। कहा हुआ। सुना हुआ। प्रसिद्ध।

ख्याति—[स्त्री०] प्रशंसा। प्रसिद्धि। कथन। प्रकाश। ज्ञान।

ख्यातिकर—[वि०] प्रशंसक। तारीफ़ करनेवाला।

ख्यापक—[वि०] ज्ञापक। बतलानेवाला। प्रकाशक। प्रकट करनेवाला।

ख्यापन—[क्रि०] प्रकाशन। विज्ञापन। प्रसिद्धि।

ख्रिष्टान—[पु०] देखो 'खृष्टान'।

ख्रिष्टीय—[वि०] देखो 'खृष्टीय'।

ख्रीष्ट—[पु०] क्राइस्ट। हज़रत ईसामसीह।

—:※:—

ग

ग—हिन्दी वर्णमाला में कवर्ग का तीसरा अक्षर जिसका उच्चारण स्थान कण्ठ है।

ग—[वि०] गीत। गणेश। गन्धर्व। छन्दःशास्त्र में गुरु वर्ण का बोधक।

गँजेड़ी—[वि०] गाँजा पीनेवाला।

गँठकटा—[पु०] गाँठ काटनेवाला।

गँठजोड़ा, गँठबन्धन—[पु०] ग्रन्थि-बन्धन। विवाह आदि कार्य में पति-पत्नी के उत्तरीय वस्त्रों के छोरों में परस्पर गाँठ बाँधने की प्रथा। विवाह। मैत्री।

गँड़ासा—[पु०] कुट्टी काटने का औजार।

गँड़ेरी—[स्त्री०] छिले हुए पोंडे के छोटे छोटे टुकड़े।

गँधाना—[क्रि०] दुर्गन्ध उठना। बास आना।

गँवई—[स्त्री०] छोटा गाँव।

गँवरदल—[पु०] गँवारों की भीड़।

गँवाना—[क्रि०] खोना। नष्ट करना। भूलना। काटना। बिताना।

गँवार—[पु०] ग्रामीण। देहाती। मूर्ख। अनजान।

गँवारी—[स्त्री०] गँवार स्त्री। भद्दी। बेढंगी।

गँवारू—[वि०] ग्रामीण, देहाती। बेढंगा।

गँसना—[क्रि०] जकड़ के बाँधना। बड़ा करना। चुभना। छिदना। घुसना।

गँसीला—[वि०] नोंकदार। चुभीला। ठोस।

गइया—[स्त्री०] गाय। गौ।

गई करना—[क्रि०] टालना। सुनी अनसुनी करना। बहराना।
गऊ—[स्त्री०] गाय। गौ।
गकार—[पु०] ग अक्षर।
गगन—[पु०] आकाश। पोल। शून्य। ज्योतिष में लगन से दसवाँ स्थान। अभ्रक। बादल। छन्द-विशेष।
गगनगति—[वि०] आकाशगामी। हवा में उड़नेवाला। [पु०] देवता। सूर्यादि ग्रह। [स्त्री०] आसमानी चाल। उड़ान।
गगनचर—[वि०] आकाशचारी। आसमान में चलने फिरनेवाला [पु०] पक्षी। विद्याधर।
गगन धूल—[स्त्री०] एक प्रकार का कुकुरमुत्ता। केवड़े की बाल की धूल।
गगनध्वज—[पु०] मेघ। बादल। सूर्य।
गगनमण्डल—[पु०] आकाश-मण्डल। आसमान का घेरा।
गगनविहारी—[वि०] आसमान में विचरण करनेवाला। [पु०] पक्षी। सूर्यादि ग्रह।
गगनसद्—[वि०] आकाशगामी। हवा में उड़नेवाला। [पु०] सूर्यादि ग्रह।
गगनसिन्धु—[स्त्री०] मन्दाकिनी। आकाश-गंगा।
गगनस्पर्शी—[वि०] आकाश छूनेवाला। बहुत ऊँचा।
गगनाङ्गना—[स्त्री०] अप्सरा। परी।
गगनाम्बु—[पु०] बरसाती पानी।
गगनेचर—[पु०] देवता। सूर्यादि ग्रह। [वि०] गगनचारी। आसमान में उड़नेवाला।
गगरा—[पु०] कलश। घड़ा।
गगरी—[स्त्री०]छोटा घड़ा। कलसिया।
गङ्ग—[स्त्री०] गङ्गा।
गङ्गा—[स्त्री०] इस नाम से प्रसिद्ध नदी। हिमवंत और मैना की बड़ी पुत्री। शान्तनु की स्त्री और भीष्म की माता।
गङ्गाक्षेत्र—[पु०] गंगातीर से दोनों पार्श्व की दो-दो कोस तक की भूमि गङ्गाक्षेत्र कहलाता है।
गङ्गाज—[पु०] गङ्गा से उत्पन्न हुआ-भीष्म। कार्तिकेय।
गङ्गाजमुनी—[वि०] मिला हुआ। दुरङ्गा। सोना-चाँदी। पीतल ताँबा आदि में से दो धातुओं के सुनहले, रूपहले तारों से मिलकर बना हुआ। काला-उजला। स्याह सफेद।
गङ्गाजल—[पु०] गङ्गा का पानी। एक प्रकार का वस्त्र।
गङ्गाजली—[स्त्री०] गङ्गाजल भरने का पात्र विशेष। यह धातु या काँच का बना सुराही के आकार का होता है।
गङ्गातीर—[पु०] गङ्गा के जल-तट से १५०हाथ दूर तक की भूमि।
गङ्गादत्त—[पु०] भीष्म। एक प्राचीन संस्कृत-कवि का नाम।
गङ्गाद्वार—[पु०] हरद्वार। मायापुर। यहां से गङ्गा पहाड़ों से निकल कर मैदान में आई है।
गङ्गाधर—[क्रि०] शिव। महादेव। समुद्र। संस्कृत का एक महाकवि।
गङ्गापथ—[पु०] गगन। आकाश।
गङ्गापुत्र—[पु०] भीष्म। कार्तिकेय। घटवारिया अर्थात् गङ्गा के घाटों पर दान लेनेवाला।
गङ्गाप्राप्ति—[स्त्री०] गङ्गालाभ। गङ्गा में जाना। मृत्यु।
गङ्गाम्भ—[पु०] गङ्गा का पानी। गङ्गाजल।
गङ्गाम्बु—[पु०] गङ्गाजल।
गङ्गायात्रा—[स्त्री०] मरणासन्न मनुष्य का मरने के लिए गङ्गा तीर जाना।
गङ्गायात्रिक—[वि०] मरणासन्न को गंगातीर पर ले जानेवाला। योगादि के उपलक्ष्य में गङ्गास्नान को जानेवाला। [पु०] गङ्गा देवी का उत्सव।
गङ्गायात्री—[वि०] गङ्गा-स्नानार्थ जानेवाला।
गङ्गाल—[पु०] पानी रखने का बड़ा पात्र।
गङ्गालाभ—[पु०] गङ्गा की प्राप्ति। मृत्यु। गङ्गा-तट पर ज्ञानपूर्वक प्राणत्याग।
गङ्गावतार—[पु०] तीर्थ-विशेष। गङ्गा-द्वार। ब्रह्मलोक से गङ्गा का पृथ्वी पर आगमन।
गङ्गासागर—[पु०] वह स्थान जहाँ गङ्गा नदी समुद्र में मिलती है। एक प्रकार का टोंटीदार पात्र जो पानी पिलाने के काम आता है।
गङ्गासुत—[पु०] भीष्म। कार्त्तिकेय।
गङ्गास्नान—[पु०] गङ्गा में नहाना।
गङ्गास्नायी-[वि०] गङ्गास्नान करनेवाला।
गङ्गिका—[स्त्री०] गङ्गा।
गङ्गीभूत-[वि०] पवित्र। पावन।
गङ्गोत्तरी—[स्त्री०] उत्तरी भारत का तीर्थ-विशेष। जहाँ से गङ्गा गोमुखी हो कर भारतवर्ष में प्रविष्ट हुई है।
गङ्गोदक—[पु०] गङ्गाजल। गङ्गा का पानी।
गच—[पु०] पक्की छत। स्थूल। मोटा।
गच्छ—[पु०] वृक्ष। गाह। जैन सम्प्रदाय के साधुओं की एक श्रेणी। गणित का एक भेद।
गज—[पु०] हाथी। इन्द्र के विमानों में से उन्तीसवाँ विमान। आठ की संख्या। दो हाथ लम्बाई का नाप। धातु आदि भस्म करने के लिए एक प्रकार का गढ़ा। राक्षस।
गजकर्ण—[पु०] यक्ष-विशेष। एक राक्षस।

गजकुम्भ—[पु०] हाथी का उभरा हुआ मस्तक। हाथी के माथे पर दोनों ओर उठे हुए भाग।

गजकूर्माशिन—[पु०] गरुड़।

गजगति—[स्त्री०] हाथी की चाल। पिंगल में एक छन्द।

गजगमन—[पु०] हाथी के समान मन्द गति से चलना। हाथी की सी मन्द गति।

गजगामिनी—[स्त्री०] हाथी के समान मन्द गति से चलने वाली स्त्री।

गजगामी—[पु०] हाथी की तरह झूम-झूम कर चलनेवाला।

गजगाह—[पु०] हाथी की झूल। पाखर।

गजचर्म—[पु०] एक प्रकार का रोग जिसमें शरीर का चर्म हाथी के चर्म जैसा मोटा और कड़ा हो जाता है।

गजच्छाया—[स्त्री०] आश्विन मास की मघा नक्षत्र युक्त त्रयोदशी। सूर्य-ग्रहण काल। हाथी की छाया।

गजता—[स्त्री०] हाथियों का झुण्ड। हस्ति-समूह।

गजदन्त—[पु०] गणेश। कपड़े आदि टाँगने के लिए भीत में गाड़े हुए खूँटे। हाथी दाँत (आयवरी)। दाँत के ऊपर उगनेवाला दाँत। [वि०] हाथी दाँत के समान दाँतवाला।

गजदन्तमय—[वि०] हाथी दाँत की बनी हुई।

गजदान—[पु०] हाथी का मद। हाथी का दान।

गजनासा—[स्त्री०] हाथी की सूँड़।

गजपति—[पु०] बढ़िया या बड़ा हाथी। उत्कल और कलिंग देश के राजाओं की उपाधि। वह राजा जिसके पास बहुत से हाथी हों।

गजपाटल—[पु०] कज्जल। काजल। सुरमा।

गजपाल—[पु०] महावत। हाथी-वान। हाथी को चलानेवाला।

गज-पुङ्गव—[पु०] बड़ा और सुन्दर हाथी।

गजपुट—[पु०] एक निश्चित नाप का गढ़ा जो ओषधियाँ फूंकने के काम आता है।

गजपुर—[पु०] युधिष्ठिर की राजधानी-हस्तिनापुर।

गजबदन—[पु०] गणेश।

गजबन्ध—[पु०] एक प्रकार का चित्र काव्य।

गजबन्धनी, गजबन्धिनी—[स्त्री०] हाथी बाँधने की जगह। हस्तिशाला। हथसार।

गजबला—[स्त्री०] एक प्रकार की बड़ी झाड़ी।

गजबाग—[पु०] हाथी का अङ्कुश।

गजमणि—[वि०] गजमुक्ता। गज मोती।

गजमण्डन—[पु०] हाथी के अलङ्कार।

गजमद—[पु०] हाथी का मद।

गजमात्र—[वि०] हाथी के आकार का। हाथी के बराबर।

गजमुक्ता—[स्त्री०] एक प्रकार का मोती जिसका हाथी के मस्तक में होना प्रसिद्ध है। गजमोती।

गजमुख—[पु०] गणेश। हाथी का मुँह।

गजमोचन—[पु०] पुराणों के अनु-सार विष्णु का एक रूप जिसे धारण कर उन्होंने ग्राह से गज को छुड़ाया था।

गजमौक्तिक—[पु०] गजमोती। गज-मुक्ता।

गजयूथ—[पु०] हाथियों का झुण्ड।

गजरथ—[पु०] वह रथ जिसे हाथी खींचते हैं।

गजर प्रबन्ध—[पु०] बाजों का मिलान करके उनमें कोई राग बजाकर सुनाना। नृत्य, गानादि के प्रारम्भ में बाजों की गत बजाना।

गजरा—[पु०] फूलों की घनी गुथी हुई माला। हाथों में पहनने का एक आभूषण। रेशमी वस्त्र-विशेष। गाजर की पत्ती।

गजराज—[पु०] बड़ा और श्रेष्ठ हाथी।

गजवदन—[पु०] गणेश। हाथी का मुँह।

गजवल्लभा—[स्त्री०] पहाड़ी केला। गिरिकदली।

गजवान—[पु०] महावत। हाथी को हाँकनेवाला।

गजवाजिप्रिया—[स्त्री०] कद्दू। लौकी।

गजवीथी—[स्त्री०] ज्योतिष में रोहिणी, आर्द्रा और मृगशिरा नक्षत्रों को गज-वीथी कहते हैं। हाथियों की पंक्ति।

गजशाला—[स्त्री०] हाथी बाँधने का स्थान। हस्तिशाला। हथसार।

गजशिर—[पु०] गणेश। एक राक्षस का नाम।

गजसाह्वय—[पु०] हस्तिनापुर। वारणा-वत। दिल्ली।

गजस्कन्ध—[पु०] एक दैत्य-विशेष। एक राक्षस का नाम।

गजाग्रणी—[पु०] ऐरावत।

गजाजीव—[पु०] हाथियों को पालने-वाला। हस्तिपालक। हाथी पालकर जीविका चलानेवाला।

गजाध्यक्ष—[पु०] हाथियों का स्वामी। हाथियों की देख-भाल करनेवाला।

गजाधर—[पु०] देखो 'गदाधर'।

गजानन—[पु०] गणेश। पार्वती-पुत्र। हाथी के से मुखवाला।

गजारि—[पु०] सिंह। व्याघ्र। शेर। एक प्रकार का शाल-वृक्ष।

गजारोह—[पु०] हस्तिपाल। महा-वत। हाथी पर चढ़नेवाला।

गजाशन—[पु०] जिसके पत्ते हाथी प्रसन्नतापूर्वक खाता है—पीपल का पेड़। बड़ का वृक्ष।

गजास्य—[पु०] गणेश। हाथी का मुख।

गजाह्व, गजाह्वय—[पु०] हस्तिनापुर। वारणावत। दिल्ली।

गजेन्द्र—[पु०] ऐरावत। बड़ा और श्रेष्ठ हाथी।

गजेन्द्रमोक्षण—[पु०] पुराणोक्त एक कथा जिसमें विष्णु द्वारा ग्राह से गज के छुड़ाने की कथा वर्णित है।

गञ्ज—[पु०] अवज्ञा। अपमान। भण्डार। कोश। खान। वह स्थान जहां पशु रक्खे जाते हैं। एक रोग जिसमें सिर के बाल उड़ जाते हैं।

गञ्जन—[वि०] तिरस्कार। निन्दा। अनादर।

गञ्जना—[स्त्री०] यातना। वेदना। पीड़ा।

गञ्जवर [पु०] कोषाध्यक्ष। खज़ाञ्ची।

गञ्जा—[स्त्री०] वह स्थान जहाँ हाट लगती हो। मदिरा रखने का पात्र। शराब की दूकान। भंग। गाँजा। वह स्थान जहाँ चावल-धान रक्खे जाते हों। गञ्ज रोगवाला।

गञ्जिका—[स्त्री०] मदिरागृह। गांजा।

गञ्जित—[पु०] अपमानित। कलङ्कित। दुखित।

गटी—[स्त्री०] गाँठ। ग्रन्थि। समूह। राशि। यूथ।

गट्टा—[पु०] हथेली और पहुचे के मध्य का योग—कलाई।

गठन—[स्त्री०] बनावट।

गठबन्धन—[पु०] देखो "गँठ-बन्धन"।

गठाव—[पु०] गठन। बनावट।

गठित—[वि०] गठा हुआ।

गठिया—[स्त्री०] घोड़े, गधे आदि पर बोझ लादने का बोरा या थैला। एक प्रकार का वायु का रोग।

गठीला—[वि०] सुडौल। पुष्ट। गठा हुआ। मजबूत। गाँठदार। जिसमें बहुत सी गाँठें हों।

गड्डर—[पु०] मेष। मेंढ़ा।

गड्डरिक—[पु०] गड़रिया। हिन्दुओं की एक जाति जो प्रायः भेड़-बकरियाँ पालती है।

गड्डरिका—[स्त्री०] भेड़ों की कतार। मेष पंक्ति।

गड्डल—[पु०] मेष। मेंढ़ा।

गड्डलिका—[स्त्री०] भेड़ों की कतार। मेषपंक्ति। धारावाही। क्रमागत।

गड्डलिकाप्रवाह [पु०] भेड़ियाधसान।

गड्डालिका—[स्त्री०] नदी-विशेष। वह नदी जिसका प्रवाह अधिक प्रबल हो।

गड्डालिका—[स्त्री०] मेष पंक्ति। भेड़ों की पांति।

गढ़—[पु०] किला। दुर्ग। खाई।

गढ़ता—[स्त्री०] आकृति। बनावट।

गढ़न—[स्त्री०] गठन। बनावट।

गढ़पति—[पु०] किलादार। दुर्गाध्यक्ष। राजा।

गण—[पु०] समूह। ढेर। प्रमथ। शिवजी के सेवक। सेना की संख्या-विशेष जिसमें २७ रथ, २७ हाथी, ८१ घोड़े और १३५ पैदल होते हैं। व्याकरण में प्रसिद्ध भ्वादि प्रभृति ६ गण। ज्योतिष में देव, नर आदि गण। सेवक। दूत। पिंगल में।

गणक—[पु०] ज्योतिषी। जाति-विशेष।

गणकार—[पु०] गणना करनेवाला। गिननेवाला। भीमसेन।

गणता—[स्त्री०] समूहत्व। समूह का भाव। समूह। ढेर।

गणदास—[पु०] नृत्यकार।

गणदेवता—[स्त्री०] आदित्य १२, विश्वेदेवा १०, वसु ८, तुषित ३६, अभास्वर ६४, वायु ४९, महाराजिक २२०, साध्य १२, रुद्र ११ इन सबको गण-देवता कहते हैं।

गणद्रव्य—[पु०] सर्व साधारण की सम्पत्ति। वह धन जिसपर बहुत से लोगों का समान अधिकार हो।

गणधर—[पु०] आचार्य। अध्यापक। जैनाचार्य।

गणन—[पु०] गिनना। गिनती। निश्चय।

गणना—[स्त्री०] गिनती। हिसाब। संख्या।

गणनाथ [पु०] गणेश। शिव। महादेव। गणों का स्वामी।

गणनायक—[पु०] गणेश। शिव। महादेव।

गणनायिका—[स्त्री०] दुर्गा। भगवती।

गणनापति—[पु०] गणेश। शिव। महादेव। गणों का स्वामी। अङ्कशास्त्रवेत्ता। गणितज्ञ।

गणनामहापात्र—[पु०] आय और व्यय का मन्त्री। आमद और खर्च का हिसाब रखनेवाला।

गणनीय—[वि०] गिनने योग्य। प्रसिद्ध। नामी।

गणप—[पु०] गणेश।

गणपति—[पु०] गणेश। शिव। बहु स्वामी।

गणपूर्व—[पु०] गाँव का मुखिया या मालिक।

गणप्रमुख—[पु०] जाति या समाज में श्रेष्ठ व्यक्ति।

गणमुख—[पु०] ग्राम का मुखिया या मालिक।

गणराज्य—[पु०] लोकनिर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा संचालित राज्य।

गणाग्रणी—[पु॰] गणेश । बहुतों में श्रेष्ठ गिना जानेवाला । अगुआ ।

गणाचार्य—[पु॰] लोकगुरु । शिक्षक ।

गणाधिप—[पु॰] गणेश । शिव । गणों का स्वामी । जैन मतानुसार साधुओं के संघ में सबसे श्रेष्ठ, वृद्ध और विद्वान् ज्ञानी साधु ।

गणाध्यक्ष—[पु॰] गणेश । शिव ।

गणान्न—[पु॰] वह अन्न जिसपर बहुतों का अधिकार हो ।

गणि—[स्त्री॰] गिनती । गणना ।

गणिका—[स्त्री॰] वेश्या । रण्डी ।

गणित—[पु॰] गणना । गिनती । अङ्कशास्त्र । [वि॰] जो गिना जा चुका हो ।

गणितज्ञ—[वि॰] ज्योतिषी । गणित जाननेवाला ।

गणीभूत—[वि॰] जो किसी पक्ष या समुदाय में स्थित हो ।

गणेय—[वि॰] गिनने योग्य । गणनीय । प्रतिष्ठित ।

गणेरु—[वि॰] हथिनी । वेश्या । कंचनी । कनेर का वृक्ष ।

गणेश—[पु॰] इस नाम से प्रसिद्ध देवता । एक प्रसिद्ध ज्योतिषी ।

गणेशक्रिया—[स्त्री॰] योग की क्रिया-विशेष जिसमें उँगली आदि की सहायता से गुदा का मल साफ करते हैं ।

गणेशचतुर्थी—[स्त्री॰] भादों और माघ के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि । इस रोज गणेश जी का व्रत किया जाता है ।

गणेश्वर—[पु॰] गणेश । शिव । ११ रुद्र, १२ आदित्य, ८ वसु और २ अश्विनी कुमार—इन ३३ देवताओं को गणेश्वर कहते हैं ।

गणोत्साह—[पु॰] गैंडा । गण्डक ।

गण्ड—[पु॰] गाल । कपोल । हाथी की कनपटी । गैंडा । चिह्न । वीर-बहादुर । बुलबुला । बुद्बुद् । ग्रन्थि । घोड़े के आभूषण ।

गण्डक—[पु॰] गैंडा । भेद । भूषण । मूर्ख । छन्द-विशेष । ग्रन्थि । स्फोटक रोग । नदी-विशेष । विघ्न । ज्योतिर्विद्या-विशेष ।

गण्डकुसुम—[पु॰] हाथी का मद ।

गण्डकूप—[पु॰] पहाड़ की चोटी ।

गण्डगात्र—[पु॰] शरीफ़ा नामक फल । सीताफल ।

गण्डदेश—[पु॰] कपोल । गात्र । कनपटी ।

गण्डमाला—[स्त्री॰] एक प्रकार का रोग । कण्ठमाला ।

गण्डमूर्ख—[वि॰] अत्यन्त मूढ़ । घोर मूर्ख ।

गण्डली—[स्त्री॰] शिव । महादेव । छोटी पहाड़ी ।

गण्डलेखा—[स्त्री॰] सुन्दर कपोल । अच्छी कनपटी ।

गण्डशैल—[पु॰] पर्वत से गिरी हुई बड़ी चट्टान । छोटी पहाड़ी । भाल । ललाट ।

गण्डस्थल—[पु॰] गाल । हाथी की कनपटी ।

गण्डस्थली—[स्त्री॰] कपोल प्रदेश । कनपटी ।

गण्डान्त—[पु॰] ज्योतिषमें—तिथि । नक्षत्र और योग लग्न का सन्धिकाल ।

गण्डि—[पु॰] वृक्ष का तना ।

गण्डूष—[पु॰] कुल्ली । मुँह का पानी । हाथी की सूंड़ की नोंक । तोल का एक मान जो १६ तोले के बराबर होता है ।

गण्य—[वि॰] गिनने योग्य । प्रतिष्ठित । जिसकी पूछ हो । आदरणीय ।

गत—[वि॰] बीता हुआ । गया हुआ । पाया हुआ । पूरा किया हुआ । पतित । जाना हुआ । गमन । चलना । आना ।

गतण्ड—[पु॰] हिजड़ा । नपुंसक ।

गतकलुष—[वि॰] जिसका पाप दूर हो गया हो । निष्पाप ।

गतकल्मष—[वि॰] निष्पाप ।

गतका—[पु॰] खेलने का लकड़ी का डंडा जिसके ऊपर चमड़े का खोल चढ़ा रहता है ।

गतकीर्ति—[वि॰] जिसकी कीर्ति समाप्त हो गई हो ।

गतक्लम—[वि॰] जिसकी थकान दूर हो गई हो । सुस्ताया हुआ ।

गतकुल—[पु॰] जिसका कुल नष्ट हो गया हो । वह सम्पत्ति जिसका कोई अधिकारी न बचा हो । लावारिसी माल ।

गतत्रप—[वि॰] निर्लज्ज । बेशर्म ।

गतनासिक—[वि॰] जिसके नाक न हो । नकटा ।

गतपाप—[वि॰] जिसके पाप दूर हो गए हों । गतकल्मष ।

गतपुण्य—[वि॰] जिसके पुण्य क्षीण या नष्ट हो गए हों ।

गतप्रत्यागत—[वि॰] जो जाकर लौट आया हो । संगीत में एक ताल भेद ।

गतप्रभ—[वि॰] निष्प्रभ । तेजरहित । जिसकी कान्ति नष्ट हो गई हो ।

गतप्राण—[वि॰] मृतक । मुर्दा ।

गतबुद्धि—[वि॰] बुद्धिशून्य । मूर्ख । अजान ।

गतभर्तृका—[स्त्री॰] विधवा । जिसका पति दूर देश गया हो । प्रोषितपतिका ।

गतरस—[वि॰] जिसका रस नष्ट हो गया हो । बेस्वाद । नीरस ।

गतव्यथ—[वि॰] जिसका कष्ट दूर हो गया हो ।

गतांक—[सं॰ पु॰] पिछला अंक । किसी समाचार पत्र का पिछला अंक ।

गति—[सं॰ स्त्री॰] चाल । अवस्था । चेष्टा । मोक्ष । पैतरा । वेष । पहुँच ।

गमन। प्रयत्न की सीमा।

गत्ता—[हि॰ पु॰] पट्ठा। बसली। दफ़्ती।

गद—[सं॰ पु॰] कृष्णजी का छोटा भाई। विष। रोग।

गदर-[पु॰] फौजी विद्रोह। सैनिक-क्रांति।

गदराना—[हि॰ क्रि॰] पकने की अवस्था को प्राप्त होना। युवावस्था की अन्तिम सीमा।

गदह-पचीसी—[हि॰ स्त्री॰] अनुभवशून्य अवस्था। मनुष्य की १६ से २५ वर्ष तक की अवस्था।

गदहा—[सं॰ पु॰] चिकित्सक।

गदा—[सं॰ स्त्री॰] एक प्राचीन हथियार जो भीम और हनुमान को अति प्रिय था।

गदाधर—[सं॰ पु॰] विष्णु भगवान्।

गदेला—[हि॰ पु॰] तकिया। बच्चा।

गद्गद—[सं॰ वि॰] प्रेम व हर्ष का भाव।

गद्दर—[हि॰ वि॰] जो भली-भाँति पका न हो।

गद्य—[सं॰ पु॰] वह लेख जिसमें मात्रा और वर्ण की संख्या, गति, स्थानादि का कोई नियम न हो परन्तु शब्दों का क्रम व्याकरणानुसार ठीक हो।

गनगौर—[हि॰ स्त्री॰] चैत्र शुक्ल तृतीया जिस दिन स्त्रियाँ गणेश और गौरी की पूजा करती हैं।

गनियारी—[हि॰ स्त्री॰] गणिकारी। एक प्रकार का पौधा।

गन्ना—[हि॰ पु॰] ईख।

गपड़चौथ—[हि॰ स्त्री॰] अव्यवस्था। व्यर्थ की बातचीत।

गप्प—[हि॰ स्त्री॰] गप। झूठी-सच्ची बात।

गप्पी—[हि॰ वि॰] गप मारनेवाला। झूठ-सच सुनानेवाला।

गबाशन—[हि पु॰] म्लेच्छ। चंडाल।

चमार।

गभस्ति—[सं॰ पु॰] प्रकाश। रश्मि। बाहु। सूर्य। पाताल। अग्नि की स्त्री।

गभस्तिमान—[सं॰ पु॰] एक द्वीप। सूर्य्य। एक पाताल।

गभुआर—[हि॰ वि॰] वह बालक जिसके गर्भ के केश न कटे हों। अबोध। जिसका मुंडन न हुआ हो।

गम—[हि॰ स्त्री॰] पहुँच। प्रवेश।

गमक—[सं॰ पु॰] जाने वाला। बोध करानेवाला। सूचक। [हि॰] महक। तबले की गूँज।

गमन—[सं॰पु॰] चलना। प्रस्थान करना। संभोग। मैथुन।

गमी—[सं॰ पु॰] गमनकर्त्ता। चलनेवाला।

गम्भारी—[सं॰ पु॰] औषधि के काम आनेवाला। वृक्ष-विशेष।

गम्भीर-[सं॰स्त्री॰] अथाह। गहन। गूढ़।

गम्य—[सं॰ वि॰] जाने योग्य। संभोग या मैथुन करने योग्य।

गयंद—[हि॰ पु॰] बड़ा हाथी।

गय-[सं॰ पु॰] घर। आकाश। प्राण। धन। पुत्र। एक राजा। एक दैत्य। एक तीर्थ।

गयशिर—[सं॰ पु॰] आकाश। गया के निकट एक पहाड़।

गर—[सं॰ पु॰] विष। रोग।

गरारा—[हि॰ वि॰] प्रचण्ड। गर्वयुक्त। [पु॰] कुल्ली।

गरिमा—[सं॰ स्त्री॰] महिमा। आत्मश्लाघा। आत्मगौरव। गुरुत्व। आठ सिद्धियों में से एक जिससे साधक अपने को यथेष्ट रूप से भारी कर सकता है।

गरिष्ठ—[सं॰ वि॰] जो जल्दी न पच सके। भारी।

गरी—[हि॰ स्त्री॰] मींगी। नारियल के फल के भीतर का मुलायम गूदा। गोला। गुलिका।

गरीयस—[सं॰ वि॰] महान। गुरु। अतिभारी।

गरुड़—[सं॰ पु॰] वैनतेय। विष्णु भगवान् का वाहन। पक्षीराज।

गरुड़गामी—[सं॰ पु॰] विष्णु। श्रीकृष्ण।

गरुड़ध्वज—[सं॰ पु॰] विष्णु भगवान्।

गरुड़-पुराण—[सं॰ पु॰] १८ पुराणों में से एक पुराण।

गरुड़रुत—[सं॰ पु॰] १६ वर्णों का एक वर्णिक वृत्त।

गरुड़व्यूह—[सं॰ पु॰] लड़ाई के मैदान में सेना के जमाव का एक नाम।

गरुता—[सं॰ स्त्री॰] भारीपन।

गर्ग—[सं॰ पु॰] एक ऋषि। एक गोत्र। बैल। साँड़।

गर्जन—[सं॰ पु॰] भीषण ध्वनि। बादल या सिंह आदि का गम्भीर नाद।

गर्जित—[सं॰ वि॰] गर्जा हुआ। बादल या सिंह आदि के शब्द-युक्त।

गर्त्त—[सं॰ पु॰] गढ़ा। गड्ढा।

गर्दभ—[सं॰ पु॰] गधा। गदहा।

गर्द्ध—[सं॰ पु॰] स्पृहा। चाह। लिप्सा।

गर्भ—[सं॰ पु॰] पेट के भीतर का बच्चा या भ्रूण। आन्तरिक भाग। अज्ञात स्थल।

गर्भ केसर—[सं॰ पु॰] फूलों में वे पतले सूत जो गर्भ-नाल के भीतर होते हैं।

गर्भ-गृह—[सं॰ पु॰] घर के बीच की कोठरी। मन्दिर में प्रतिमा-गृह। आँगन।

गर्भ-ताल—[सं॰ स्त्री॰] फूलों के भीतर की वह पतली नाल जिसके सिरे पर गर्भ-केसर रहता है।

गर्भपात—[सं॰ पु॰] गर्भ गिरना। अवधि से पूर्व ही बच्चे का क्षत अवस्था में निकल जाना।

गर्भवती—[सं॰ स्त्री॰] गर्भिणी स्त्री।

गर्भ-सन्धि—[सं॰ स्त्री॰] नाटक की संधियों के पाँच भेदों से एक।

गर्भस्थ—[सं० वि०] जो गर्भ में हो।

गर्भ-स्राव—[सं० पु०] चार मास के भीतर होनेवाला गर्भ-पात।

गर्भ-स्थापन—[सं० पु०] गर्भ-स्थिति के लिये मैथुन।

गर्भांक—[सं० पु०] नाटक के बीच किसी घटना विशेष का सूक्ष्म दृश्य।

गर्भाधान—[सं० पु०] गर्भस्थिति। गर्भधारण। मनुष्य के सोलह संस्कारों में से प्रथम।

गर्भाशय—[सं० पु०] स्त्रियों के पेट की बच्चे दानी।

गर्भिणी—[सं० वि०] गर्भवती स्त्री।

गर्भित—[सं० वि०] परिपूर्ण। भरा हुआ। गर्भ युक्त।

गर्व—[सं० वि०] अहंकार। मद। अभिमान। आत्म-श्लाघा।

गर्वित—[सं० वि०] गर्वयुक्त। गर्वीला।

गर्विता—[सं० स्त्री०] वह नायिका जिसे अपने रूप, गुण या पति-प्रेम पर अभिमान हो।

गर्विष्ट—[सं० पु०] अभिमानी।

गर्वी—[सं० पु०] अभिमानी।

गर्वीला—[सं० वि०] अभिमानी। आत्मश्लाघी।

गर्हण—[सं० पु०] निन्दा। शिकायत।

गर्हणीय—[सं० पु०] निन्दनीय। तिरस्कार करने योग्य। दुष्ट।

गर्हा—[सं० स्त्री०] निन्दा। अनादर। तिरस्कार।

गर्हित—[सं० वि०] निन्दित। तिरस्कृत।

गल—[सं० पु०] कंठ। गला।

गल-कंबल—[सं० पु०] गाय के गले के नीचे लटकनेवाली झालर। सास्ना। झालर।

गलका—[हि० पु०] एक प्रकार का फोड़ा जो हाथ की उंगलियों में होता है। चाबुक। कोड़ा।

गलगंज—[हि० पु०] कोलाहल करना।

गलगंड—[सं० पु०] एक रोग जिसमें गला फूल कर लटक आता है। कंठमाला।

गलगुच्छ—[हि० पु०] गालों तक मूछें।

गलग्रह—[सं० पु०] ऐसी विपत्ति जो कठिनाई से दूर हो। मछली का कांटा।

गलझंप—[हि० पु०] हाथी के गले की लोहे की झूल या जंजीर।

गलतंस—[हि० स्त्री०] निस्संतान पुरुष या उसका धन।

गलतकिया—[हि० पु०] गालों के नीचे रखने का एक गोल मुलायम तकिया।

गलतनी—[हि० स्त्री०] गुलबन्द। गल-बन्धन।

गलथैली—[हि० स्त्री०] मर्कट कोष। बन्दरों के गालों के नीचे की थैली।

गलन—[सं० पु०] गलना। गिरना। पतन। [हि०] अत्यंत शीत।

गलन्दा—[हि० पु०] दुर्मुख। कटुभाषी।

गलबांही—[हि० स्त्री०] कंठालिंगन। गले में हाथ डालना।

गलभंग—[सं० पु०] बैठा हुआ कंठ। स्वरबद्ध।

गलमंदरी—[हि० स्त्री०] शिवजी के पूजन के समय गाल बजाना। गलमुद्रा।

गलमुद्रा—[सं० स्त्री०] गलमंदरी।

गलशुंडी—[सं० स्त्री०] छोटी जीभ। जीभ जैसा मांस का एक छोटा टुकड़ा जो जीभ की जड़ के पास रहता है।

गलसुआ—[हि० पु०] वह रोग जिसमें गाल के नीचे सूजन आ जाती है।

गलस्तन—[सं० पु०] गले के थन।

गलस्तनी—[हि० स्त्री०] बकरी जिसके गले में थन होते हैं।

गला—[हि० पु०] गल। कंठ। गर्दन।

गलाव—[हि० पु०] पिघलना। द्रव होना।

गलित—[सं० वि०] जीर्ण-शीर्ण। नष्ट-भ्रष्ट। गिरा हुआ।

गलितकुष्ट—[सं० पु०] ऐसा कोढ़ जिसमें शरीर के अंग गल-गलकर गिरने लगते हैं।

गलितयौवन—[सं० पु०] वह पुरुष जिसकी जवानी बीत चुकी हो। बूढ़ा। नपुंसक।

गली—[सं० स्त्री०] घरों की पंक्तियों के बीच से जानेवाली संकीर्ण राह। खोरी। कूचा।

गल्प—[हि० स्त्री०] छोटी कहानी। उपन्यास। कल्पित कथा। प्रलाप।

गवय—[सं० पु०] नील गाय। एक छंद।

गवाक्ष—[सं० पु०] झरोखा। गोख। एक ओषधि। एक बानर।

गवामयन—[सं० पु०] एक यज्ञ।

गवास—[हि० पु०] गो-भक्षक। कसाई।

गवाह—[पु०] साक्षी।

गवीश—[सं० पु०] साँड़। विष्णु। श्रीकृष्ण। शिव।

गवेधु—[सं० पु०] कसेई। कौडिल्ला। गंगेरुआ।

गवेषण—[सं० स्त्री०] अन्वेषण। खोज।

गवेषी—[सं० वि०] अन्वेषक। खोज-करनेवाला।

गव्य—[सं० वि०] गाय से उत्पन्न दूध, दही, घी आदि।

गव्यूति—[सं० स्त्री०] दो कोस की दूरी।

गह्वर—[सं० पु०] कंदरा। गुफा। दुर्भेद्य स्थान। निकुंज। जंगल। वन।

गांग—[सं० त्रि०] गंगासम्बन्धी। गंगा का।

गांगेय—[सं० पु०] गंगा का पुत्र। भीष्म। कार्त्तिकेय। हेल मछली। कसेरू।

गांजा—[हि० पु०] एक मादक वस्तु।

गांडीव—[सं० पु०] अर्जुन का धनुष।

गांधर्व—[सं० वि०] गंधर्वजाति का। [पु०] सामवेद का उपवेद जिसमें सामगान के ताल-स्वर आदि का वर्णन है।

गांधर्ववेद—[सं० पु०] सामवेद का उपवेद जिसमें संगीत का वर्णन है।

गांधार—[सं० पु०] सिन्ध नदी के पश्चिम का देश। कंधार प्रान्त। संगीत के सात स्वरों में से तीसरा।

गांधारी—[सं० स्त्री०] धृतराष्ट्र की पत्नी। दुर्योधन की माँ। गांधार देश की राजकन्या। गाँजा।

गांधिक—[सं० पु०] गंधयुक्त पदार्थ।

गांधा—[सं० स्त्री०] हींग। एक घास। एक कीड़ा। [सं० पु०] गुजराती वैश्यों की एक जाति।

गांभीर्य—[सं० पु०] गहराई। गंभीरता। हर्ष। क्रोध। भय। स्थिरता। धीरता। गूढ़ता।

गाजर—[हिं० स्त्री०] एक सब्जी जो मीठी होती है।

गाणपति—[सं० वि०] गणपतिसम्बन्धी। [पु०] गणेश की पूजा करनेवाला एक सम्प्रदाय।

गाणहार—[सं० पु०] गणेश जी का उपासक।

गात—[हिं० पु०] शरीर। अङ्ग।

गाता—[हिं० स्त्री०] वह चद्दर जिसे गले में बाँधते हैं।

गात्र—[सं० पु०] शरीर अङ्ग। देह

गाथ—[हिं० पु०] प्रशंसा। यश।

गाथा—[सं० स्त्री०] वह श्लोक जिसमें स्वर का नियम न हो। स्तुति। वर्णन। प्राचीन काल का ऐतिहासिक घटना। वृत्तान्त। एक प्रकार की प्राचीन भाषा। आर्य्या छन्द।

गादुर—[हिं० पु०] चमगादर।

गाध—[सं० पु०] जल के नीचे का स्थल। नदी का बहाव। थाह। स्थान।

गाधि—[सं० पु०] विश्वामित्र के पिता।

गान—[सं० पु०] गाना। गीत। संगीत। गाने की क्रिया।

गान्धिक—[सं० पु०] सुगन्धित द्रव्य। व्यवहारी।

गाभ—[हिं० पु०] पशुओं का गर्भ।

गाभिन—[हिं० स्त्री०] गर्भिणी।

गामी—[हिं० वि०] चलनेवाला। संभोग करनेवाला।

गाय—[हिं० स्त्री०] गैया। गो। बैल की मादा।

गायक—[सं० पु०] गवैया। गानेवाला। [स्त्री०] गायिका।

गायगोठ—[हिं० स्त्री०] गोशाला।

गायत्री—[सं० पु०] एक वेदमंत्र। एक वैदिक छन्द। [स्त्री०] दुर्गा। गंगा। एक वर्णवृत्त।

गायन—[सं० पु०] गानेवाला। गायक। गवैया। कार्तिकेय।

गायिनी—[सं० स्त्री०] गानेवाली। एक मात्रिक छन्द।

गार—[हिं० स्त्री०] गाली। अभिशाप।

गारुड़—[सं० पु०] गरुड़सम्बन्धी। सर्पविषनाशक मंत्र। सेना की एक व्यूहरचना। सुवर्ण।

गारुड़ी—[सं० पु०] मंत्र द्वारा सर्पविष उतारनेवाला।

गारुत्मत—[सं० पु०] गरुड़का अस्त्र। गरुड़सम्बन्धी। पन्ना।

गार्गी—[सं० स्त्री०] गर्ग गोत्र में उत्पन्न, एक ब्रह्मवादिनी प्रसिद्ध स्त्री।

गार्हपत्याग्नि—[सं० स्त्री०] छः प्रकार की अग्नियों में से पहली और प्रधान अग्नि।

गार्हस्थ्य—[सं० पु०] गृहस्थाश्रम। गृहस्थ के मुख्य कृत्य।

गालव—[सं० पु०] एक ऋषि। एक प्राचीन वैयाकरण। लोध वृक्ष।

गास—[हिं० पु०] संकट। आपत्ति।

गाहक—[सं० पु०] ग्रहण करनेवाला। मोल लेनेवाला। क्रयकर्ता।

गाहकी—[हिं० स्त्री०] बिक्री।

गाहन—[सं० पु०] गोता लगाना। स्नान।

गाहा—[हिं० स्त्री०] वर्णन। वृत्तान्त। चरित्र। आर्य्या छन्द।

गिद्ध—[हिं० पु०] शकुनि। एक बड़ा मांसाहारी पक्षी। छप्पय छन्द का बावनवाँ भेद।

गिद्धराज—[हिं० पु०] जटायु।

गिरा—[सं० स्त्री०] वाणी की शक्ति। जिह्वा। वचन। सरस्वती।

गिरि—[सं० पु०] पर्वत। परिव्राजकों की एक उपाधि।

गिरिजा—[सं० स्त्री०] गौरी। पार्वती। गंगा।

गिरिधर—[सं० पु०] श्रीकृष्ण।

गिरिधारी—[सं० पु०] श्रीकृष्ण।

गिरिनंदिनी—[सं० स्त्री०] पार्वती। गंगा नदी।

गिरिनाथ—[सं० पु०] महादेव। शंभु। शिव।

गिरिराज—[हिं० पु०] हिमालय। बड़ा पर्वत। सुमेरु पर्वत।

गिरिव्रज—[सं० पु०] केकय देश की राजधानी। जरासंध की राजधानी जिसे राजगृह कहते हैं।

गिरिसुत—[सं० पु०] मैनाक पर्वत।

गिरिसुता—[सं० स्त्री०] पार्वती।

गिरीन्द्र—[सं० पु०] हिमालय। सुमेरु। शिव।

गिरी—[हिं० स्त्री०] नरियल का गूदा। गोला। मिंगी।

गिरीश—[सं० पु०] हिमालय सुमेरु। कैलाश पर्वत। शिव। महादेव

गिलौरी—[हिं० स्त्री०] पानों का बीड़ा।

गी—[सं० स्त्री०] सरस्वती। वाणी।

गीत—[सं० पु०] गाना। वह वाक्य, पद या छन्द जो गाया जाय।

गीता—[सं० स्त्री०] ज्ञानमय उपदेश। श्रीमद्भगवद्गीता नामक व्यासरचित प्रसिद्ध काव्यग्रन्थ। २६ मात्राओं का एक छन्द। वृत्तान्त। कथा।

गीति—[सं० स्त्री०] गान। गति। आर्या छन्द एक छन्द-भेद।

गीतिका—[सं० स्त्री०] २६ मात्राओं का एक मात्रिक छन्द। गाना।

गीत-रूपक—[सं० पु०] एक प्रकार का नाटक जिसमें पद्य अधिक हों।

गीर—[हि० स्त्री०] वाणी। सरस्वती।

गीर्देवी—[सं० स्त्री०] सरस्वती।

गीपति—[सं० पु०] बृहस्पति। विद्वान्।

गीर्वाण—[सं० पु०] सुर। देवता।

गीष्पति—[सं० पु०] बृहस्पति। विद्वान्।

गुंज—[सं० स्त्री०] गुंजार। कलरव। आनन्द ध्वनि। भौंरे की भन-भन।

गुंजन—[सं० स्त्री०] कोमल, मधुर ध्वनि भौंरों की भन-भन।

गुंजनिकेत—[सं० पु०] मधुकर। भ्रमर। भौंरा।

गुंजा—[सं० स्त्री०] घुंघची की लता।

गुंजायमान—[सं० वि०] गुंजारता हुआ।

गुंजार—[सं० पु०] गुंजन।

गुंठा—[हि० पु०] छोटे डील का मनुष्य। एक प्रकार का घोड़ा।

गुंडा—[हि० वि०] कुमार्गी। धूर्त्त।

गुंफ—[सं० पु०] उलझन।

गुंफन—[सं० पु०] उलझन। फँसाव। गुत्थमगुत्था।

गुंबद—[हि० पु०] गुंबज।

गुंबा—[हि० पु०] चोट लगने से उत्पन्न सूजन। गुमड़ा।

गुइयाँ—[हि० स्त्री०] सहेली। मित्र। [पु०] साथी।

गुग्गुल—[सं० पु०] एक काँटेदार वृक्ष जिसका गोंद औषधि और सुगन्धि के काम आता है।

गुच्छ—[सं० पु०] फूलों, पत्तियों और फलों का एक में बँधा होना। समूह। गुच्छा।

गुच्छी—[हि० स्त्री०] करंज। रीठा। एक सब्जी।

गुजरात [हि० पु०] भारतवर्ष के दक्षिण-पश्चिम प्रान्त का एक देश। सौराष्ट्र।

गुजरी—[हि० स्त्री०] एक रागिनी। गूजरी।

गुझिया—[हि० स्त्री०] खोये की एक मिठाई।

गुटिका—[सं० स्त्री०] गोली। बटी। बटिका। छोटी पुस्तक।

गुट्ट—[हि० वि०] समुदाय। दल झुंड।

गुड़ [सं० पु०] पकाकर जमाया हुआ ईख या खजूर का रस।

गुड़ाकेश [सं० पु०] शिवजी।

गुड़ूची—[सं० स्त्री०] गिलोय। गुरच। गुरुच।

गुड्डी [हि० स्त्री०] पतंग। चङ्ग। कनकौआ।

गुढ़ा—[हि० पु० छिपने की जगह।

गुण—[सं० पु०] किसी वस्तु या व्यक्ति में पाई जानेवाली विशेषता। निपुणता। कुशलता। शील। सद्‌वृत्ति।

गुणक—[सं० पु०] वह अंक जिससे किसी अंक को गुणा करें।

गुणकारक [सं० वि०] लाभदायक।

गुणगौरि—[सं० स्त्री०] पतिव्रता। सोहागिन स्त्री।

गुणग्राहक [सं० पु०] गुणी जनों या गुणशाली वस्तुओं का पारखी।

गुणज्ञ—[सं० पु०] गुणों या गुणियों का आदर करनेवाला।

गुणन—[सं० पु०] गुणा करना।

गुणनफल—[सं० पु०] एक अंक को दूसरे में गुणा करने पर प्राप्त अंक।

गुणवन्त—[हि० वि०] गुणी। गुणवान्।

गुणवाचक [सं० वि०] जो गुण प्रकट करे।

गुणवान्—[सं० वि०] गुणी। कुशल। निपुण। सद्‌वृत्तिवान्।

गुणांक—[सं० पु०] वह अंक जिसे गुणा करना हो।

गुणा [सं० पु०] गणित की एक क्रिया। गुना।

गुणाकर [सं० पु०] गुणों की खान। गुणवान्। गुणागार।

गुणागार—[सं० पु०] बहुत गुणी। गुणाकर।

गुणागुण—[सं० पु०] गुण दोष। भलाई बुराई।

गुणाढ्य [सं० वि०] गुणी। एक प्राचीन कवि जिन्होंने बृहत्कथा नामक ग्रन्थ रचा था।

गुणातीत—[सं० पु०] परब्रह्म गुणों से परे। निर्गुण।

गुणानुवाद [सं० पु०] प्रशंसा। बड़ाई।

गुणित—[सं० वि०] गुणा किया हुआ।

गुणी—[सं० वि०] गुणवान्। गुणशाली।

गुणीभूत व्यंग्य—[सं० पु०] काव्य में अप्रधान व्यंग्य।

गुणेश्वर [सं० पु०] परमेश्वर। गुणों का स्वामी। चित्रकूट पर्वत।

गुणोपेत—[सं० वि०] गुणी। गुण-युक्त कलानिपुण।

गुणोत्कर्ष [सं० पु०] गुणों की प्रधानता। गुणों की सुन्दरता।

गुणोत्कीर्तन— सं० पु०] गुणगान। स्तुति। प्रशंसा।

गुणौघ—[सं० पु०] गुणों का समूह ।
गुण्य—[सं० पु०] वह अंक जिसे गुणा करना हो ।
गुत—[हि० पु०] उदासीन ।
गुत्थमगुत्था—[हि० पु०] उलझाव । भिड़न्त ।
गुत्थी—[हि० स्त्री०] गाँठ । उलझन ।
गुदड़ी—[हि० स्त्री०] फटे-पुराने कपड़ों के टुकड़ों को जोड़कर बनाया हुआ वस्त्र ।
गुदभ्रंश—[सं० पु०] काँच निकलने का रोग ।
गुदा—[सं० स्त्री०] मलद्वार ।
गुना—[हि० पु०] गुणा । गुणन ।
गुप्त—[सं० वि०] छिपा हुआ । गूढ़ ।
गुप्तचर—[सं० पु०] जासूस । भेदिया ।
गुप्तदान—[सं० पु०] वह दान जिसे देते समय दाता ही जाने ।
गुप्ता—[सं० स्त्री०] रखी हुई स्त्री । स्वप्रेम को छिपाने का उद्योग करनेवाली नायिका ।
गुप्तार—[हि० पु०] अयोध्या में सरयू नदी का एक घाट । छिपा ।
गुप्ति—[सं० पु०] गुफा । छिपाने की क्रिया । कारागार ।
गुप्ती—[सं० स्त्री०] वह पोली छड़ी जिसमें छुरा या तलवार घुसी हो ।
गुफा—[हि० स्त्री०] कन्दरा । गुहा ।
गुबरैला—[हि० पु०] गोबर का एक छोटा कीड़ा ।
गुर—[सं० पु०] मूलमंत्र । युक्ति । भेद ।
गुरु—[सं० वि०] भारी भरकम । गरिष्ट । [पु०] बृहस्पति । आचार्य । शिक्षक । मंत्रों का उपदेष्टा । ब्रह्मा । विष्णु । महेश ।
गुरुआनी—[हि० स्त्री०] गुरु-पत्नी ।
गुरुकुल—[सं० पु०] शिक्षक या आचार्य का वासस्थान जहाँ वह विद्यार्थियों को शिक्षा देता है । विद्यालय ।
गुरुच—[हि० स्त्री०] गिलोय । गुड़च ।
गुरुजन—[सं० पु०] आचार्य । माता पिता आदि पूज्य जन ।
गुरुता—[सं० स्त्री०] बड़प्पन । भारीपन । महत्त्व ।
गुरुतोमर—[सं० पु०] एक छन्द ।
गुरुत्व—[सं० पु०] भारीपन । बोझा । बड़प्पन ।
गुरुत्वकेन्द्र—[सं० पु०] किसी पदार्थ का वह बिन्दु जिस पर उसका बोझा एकत्र हो कार्य्य करे ।
गुरुत्वाकर्षण—[सं० पु०] वह आकर्षण जिसके कारण वस्तुएँ पृथ्वी पर खिंच आती हैं ।
गुरुदक्षिणा—[सं० स्त्री०] विद्या प्राप्त कर लेने पर गुरु को दी गई भेंट या दक्षिणा ।
गुरुद्वारा—[हि० पु०] सिक्खों का मन्दिर । आचार्य का निवास ।
गुरुभाई—[सं० पु०] एक गुरु के शिष्य । सतीर्थ ।
गुरु-मुख—[सं० वि०] गुरु से मंत्र-प्राप्त । दीक्षित ।
गुरुमुखी—[सं० स्त्री०] गुरु नानक द्वारा चलायी गयी एक लिपि ।
गुरुवार—[सं० पु०] बृहस्पतिवार ।
गुर्विनी—[सं० वि०] गर्भिणी स्त्री ।
गुरू—[सं० पु०] आचार्य्य । अध्यापक ।
गुरूपदिष्ट—[सं० वि०] गुरु से उपदेश-प्राप्त ।
गुरूपदेश—[सं० पु०] गुरु की शिक्षा ।
गुजर—[सं० पु०] गुजरात देश का निवासी । एक गूजर जाति ।
गुर्जरी—[सं० स्त्री०] भैरव राग की रागिनी । गुजरात देश की स्त्री ।
गुर्विणी—[सं० स्त्री०] गर्भवती स्त्री ।
गुल्फ—[सं० पु०] एड़ी के ऊपर की गाँठ ।
गुल्म—[सं० पु०] ईख जैसा पौधा । सेना का एक भाग । पेट का एक रोग ।
गुललाला—[हि० पु०] एक लाल फूल जिसका पौधा पोस्त के पौधे जैसा होता है ।
गुवा—[हि० पु०] सुपारी ।
गुवाक—[सं० पु०] सुपारी का पेड़ ।
गुह—[सं० पु०] कार्तिकेय । घोड़ा । गुफा । विष्णु का एक नाम ।
गुहक—[सं० पु०] एक केवट जिसने रामचन्द्रजी को गंगा पार उतारा था ।
गुहर—[हि० पु०] छिपा । ढका ।
गुहा—[हि० स्त्री०] कंदरा । गुफा ।
गुहिल—[हि० पु०] विभव । निधि । धन ।
गुहेरी—[हि० स्त्री०] गुहाँजनी । आँख का एक रोग ।
गुह्य—[सं० वि०] गोपनीय । गूढ़ । छिपाने योग्य ।
गुह्यक—[सं० पु०] कुबेर-कोष-रक्षक यक्ष ।
गुह्यकेशर—[सं० पु०] यक्षराज कुबेर ।
गूँज—[हि० स्त्री०] गुंजार । गुंजन ।
गूढ़—[सं० वि०] गुप्त । छिपा । गम्भीर । गहन ।
गूढ़गेह—[हि० पु०] गुप्त-भवन ।
गूढ़ता—[सं० स्त्री०] छिपाव । गंभीरता । गुप्तता ।
गूढ़ोक्ति—[सं० स्त्री०] एक अलङ्कार जिसमें कोई गुप्त बात किसी दूसरे के ऊपर छोड़ किसी तीसरे के प्रति कही जाय ।
गूढ़ोत्तर—[सं० पु०] वह काव्यालंकार जिसमें प्रश्न का उत्तर किसी गूढ़ अभिप्राय से दिया जाय ।
गूप—[सं० वि०] छिपा । गुप्त ।

गूलर—[हि० पु०] उदुम्बर । एक विशाल वृक्ष जिसमें गोल फल लगते हैं।
गूह—[हि० पु०] मैला । विष्ठा ।
गृद्ध—[हि० पु०] गीध पक्षी ।
गृध्नु—[सं० पु०] लोभी।
गृध्नुता—[सं० स्त्री०] लालच । लोलुपता । आकांक्षा ।
गृध्र—[सं० पु०] गीध । जटायु। गिद्ध ।
गृष्टी—[सं० स्त्री०] एक बार की ब्याई गाय । बाराही कंद ।
गृह—[सं० पु०] घर । मकान । कुटुम्ब । वंश ।
गृहजात—[सं० पु०] घर की दासी से उत्पन्न दास।
गृहप—[सं० पु०] गृहपति । घर का स्वामी । अग्नि ।
गृहयुद्ध—[सं० पु०] किसी देश में आपस की लड़ाई ।
गृहस्थ—[सं० पु०] चार आश्रमों में से दूसरे आश्रमवाला व्यक्ति । स्त्री और बाल-बच्चोंवाला व्यक्ति । घर का साज-समाज । विवाहित जीवन ।
गृहस्थाश्रम—[सं० पु०] विवाहित जीवन । चार आश्रमों में से दूसरा जो ब्रह्मचर्याश्रम के पश्चात् आता है।
गृहस्थी—[सं० स्त्री०] गृहस्थ का कर्त्तव्य । कुटुम्ब । घर-बार । गृहस्थाश्रम ।
गृहिणी—[सं० स्त्री०] भार्य्या । स्त्री । पत्नी । घर की स्वामिनी ।
गृही—[सं० पु०] गृहस्थ । कुटुम्बी ।
गृहीत—[सं० पु०] स्वीकृत । पकड़ा हुआ ।
गृह्य—[सं० वि०] गृहस्थों के कर्त्तव्य । ग्रहण करने योग्य । धर्म-संहिता ।
गृह्यसूत्र—[सं० पु०] वह वैदिक पद्धति जिसके अनुसार गृहस्थ लोग मुंडन आदि संस्कार करते हैं ।
गेय—[सं० वि०] गाने के योग्य ।
गैंड़ा—[हि० पु०] जंगली दलदलों और कछारों में रहनेवाला एक भैंसे जैसा हृष्ट-पुष्ट पशु
गैया—[हि० स्त्री०] गाय । धेनु ।
गैरक—[सं० पु०] गेरू । सोना ।
गैरेय—[सं० पु०] शिलाजीत ।
गोंड—[सं० पु०] मध्यप्रदेश की एक असभ्य जाति । बंग और भुवनेश्वर के बीच का देश ।
गोंदी—[हि० स्त्री०] मौलसिरी जैसा एक पेड़ । हिंगोट ।
गो—[सं० स्त्री०] गाय । धेनु । इन्द्रिय । वाणी । सरस्वती । आँख । पृथ्वी । [पु०] बैल । सूर्य्य । जल । वज्र । नौका । शब्द । अंक ।
गोकर—[सं० पु०] सूर्य्य ।
गोकर्ण—[सं० पु०] मालाबार में एक शिवमूर्ति ।
गोकर्णी—[सं० स्त्री०] एक लता ।
गोकुल—[सं० पु०] गोशाला । एक प्राचीन प्रसिद्ध व्रज-ग्राम ।
गोकुलेश—[सं० पु०] श्रीकृष्ण । गोकुल का स्वामी ।
गोक्षुर—[सं० पु०] गोखरू ।
गोखग—[सं० पु०] थलचारी पशु ।
गोग्रास—[सं० पु०] वह पक्वान्न जो भोजन से पूर्व गाय के लिए निकाला जाता है ।
गोघात—[सं० स्त्री०] गोहत्या ।
गोचर—[सं० पु०] वह विषय जिसका ज्ञान इन्द्रियों द्वारा हो सके । चारागाह ।
गोचर्म—[सं० पु०] गाय का चमड़ा ।
गोचारण—[सं० पु०] गोपालन । गाय चराना ।
गोचिकित्सा—[सं० स्त्री०] गाय की दवा करना ।
गोचिकित्सक—[सं० पु०] गायों का वैद्य या चिकित्सक ।
गोजिह्वा—[सं० स्त्री०] गोभी ।
गोणी—[सं० स्त्री०] टाट का दोहरा बोरा । गोन ।
गोत—[हि० पु०] कुल । वंश । समूह ।
गोतम—[सं० पु०] एक ऋषि ।
गोतमी—[सं० स्त्री०] अहिल्या । गोतम ऋषि की पत्नी ।
गोतीत—[सं० पु०] इन्द्रियों द्वारा न जानने योग्य ।
गोत्र—[सं० पु०] संतति । राजा का छत्र । भाई । समूह । जाति-विभाग । वंश ।
गोदन्ती—[सं० स्त्री०] सफेद हरताल । एक रत्न ।
गोदनहारी—[हि० स्त्री०] गोदना गोदने-वाली स्त्री ।
गोदान—[सं० पु०] गाय को संकल्प कर ब्राह्मण को देने का कार्य्य । केशान्त संस्कार ।
गोदावरी—[सं० स्त्री०] दक्षिण भारत की एक नदी ।
गोदोहन—[सं० पु०] गाय दुहना ।
गोदोहनी—[सं० स्त्री०] गाय का दूध निकालने का पात्र । दुधेड़ी ।
गोधन—[सं० पु०] गायों का समूह । गायों की सम्पत्ति ।
गोधा—[सं० स्त्री०] गोह जन्तु ।
गोधिका—[सं० स्त्री०] गोह जन्तु ।
गोधूम—[सं० पु०] गेहूँ ।
गोधूलि—[सं० स्त्री०] संध्या काल ।
गोधेनु—[सं० स्त्री०] दुधार गाय ।
गोनर्द—[सं० पु०] नागरमोथा । सारस पक्षी । पतंजलि ऋषि की जन्म-भूमि ।
गोनर्दीय—[सं० पु०] पतंजलि ऋषि । गोनर्द देश का ।
गोप—[सं० पु०] ग्वाला । गोरक्षक । भूपति । राजा । गाँव का मुखिया ।
गोपक—[सं० पु०] बहुत ग्रामों का।

[वि०] छिपाने वाला।

गोपति—[सं० पु०] साँड़। गोरक्षक।

गोपद—[सं० पु०] गायों के रहने का स्थान। गाय के खुर का चिह्न।

गोपन—[सं० पु०] छिपाव। दुराव।

गोपनीय—[सं० वि०] छिपाने योग्य।

गोपर—[सं० पु०] इन्द्रियों से परे।

गोपांगना—[सं० स्त्री०] गोप की स्त्री।

गोपा—[सं० स्त्री०] ग्वालिन। महात्मा बुद्ध की स्त्री। श्यामा लता।

गोपालय—[सं० पु०] गोपगृह। अहीरों का घर।

गोपाष्टमी—[सं० स्त्री०] कार्त्तिक शुक्ला अष्टमी। इस दिन गायों की पूजा होती है।

गोपिका—[सं० स्त्री०] ग्वालिन। गोप-पत्नी।

गोपित—[सं० वि०] रक्षित। पालित। गुप्त।

गोपी—[सं० स्त्री०] ग्वालिन।

गोपीचन्द्र—[सं० पु०] एक प्राचीन राजा।

गोपीत—[हि० पु०] खंजन पक्षी का एक भेद।

गोपीनाथ—[सं० पु०] श्रीकृष्ण।

गोपुच्छ—[सं० पु०] गो की पूँछ।

गोपुर—[सं० पु०] नगरद्वार। स्वर्ग।

गोपेन्द्र—[सं० पु०] श्रीकृष्ण। नन्दजी।

गोप्ता—[सं० पु०] रक्षक। पालक।

गोप्य—[सं० वि०] गोपनीय। रक्षणीय।

गोप्रकांड—[सं० पु०] उत्तम गौ।

गोफण—[सं० पु०] छींके जैसा एक जाल जिससे ढेले आदि फेंके जाते हैं।

गोबरगणेश—[हि० वि०] मूर्ख। भोंदा।

गोभिल—[सं० पु०] सामवेदीय गृह्य-सूत्र के रचयिता एक प्रसिद्ध ऋषि।

गोमती—[सं० स्त्री०] एक नदी। एक देवी। ११ मात्राओं का एक छन्द।

गोमन्त—[सं० पु०] एक पहाड़।

गोमय—[सं० पु०] गोबर।

गोमर—[हि० पु०] कसाई। गाय-घातक।

गोमक्षिका—[सं० स्त्री०] वन मक्खी।

गोमायु—[सं० पु०] गीदड़। शृगाल।

गोमिथुन—[सं० पु०] गायों की जोड़ी।

गोमुख—[सं० पु०] गाय का मुख। नरसिंहा बाजा।

गोमुखी—[सं० स्त्री०] जप गुथली। एक थैली जिसमें हाथ डालकर जप-माला फेरते हैं।

गोमूढ़—[सं० पु०] बहुत अधिक अज्ञानी।

गोमूत्र—[सं० पु०] गाय का मूत्र।

गोमूत्रिका—[सं० स्त्री०] चित्र काव्य में एक छंद रचना। तृण-विशेष।

गोमेद—[सं० पु०] शीतल चीनी। एक रंगीन मणि। राहु-रत्न।

गोमेध—[सं० पु०] एक यज्ञ जिसमें गाय से हवन किया जाता है।

गोरक्षनाथ—[सं० पु०] गोरखनाथ।

गोरखइमली—[सं० स्त्री०] इमली का शाल वृक्ष। कल्पवृक्ष।

गोरखधंधा—[सं० पु०] उलझन। माया। एक उलझनदार खिलौना।

गोरखनाथ—[हि० पु०] एक प्रसिद्ध हठयोगी।

गोरखपन्थी—[हि० वि०] गोरखनाथ के अनुयायी।

गोरखमुंडी—[हि० पु०] एक प्रकार की घास।

गोरखा—[हि० पु०] नैपाल का एक प्रदेश और इसके निवासी।

गोरज—[सं० पु०] गोधूलि। गायों के खुरों से उड़ी हुई धूल।

गोरस—[सं० पु०] इन्द्रियों का सुख। दूध। दही। घी।

गोरसी—[सं० स्त्री०] दूध गरम करने की अंगीठी।

गोरिल्ला—[पु०] बड़े आकार का एक वन-मानुष।

गोरी—[हि० स्त्री०] सुन्दरी स्त्री। श्वेतवर्णवाली।

गोरुत—[सं० पु०] दो कोस।

गोरू—[हि० पु०] चौपाया।

गोरोचन—[सं० पु०] पीले रंग का एक सुगन्धित द्रव्य।

गोल—[सं० पु०] वृत्ताकार। चक्र के आकार का।

गोलक—[सं० पु०] गोलोक। गोल पिंड। गुम्बद। गल्ला। गुल्लक।

गोलमिर्च—[हि० स्त्री०] काली मिर्च।

गोलयोग—[सं० पु०] ग्रहों का एक बुरा रोग।

गोलाकार—[सं० वि०] गोल आकृति-वाला।

गोलाध्याय—[सं० पु०] ज्योतिष का एक ग्रन्थ।

गोलार्द्ध—[सं० पु०] पृथ्वी का आधा भाग। गोले का आधा।

गोलोक—[सं० पु०] स्वर्ग। श्रीकृष्णजी का निवास-स्थान।

गोलोमा—[सं० स्त्री०] बच। एक औषधि।

गोवध—[सं० पु०] गोहत्या।

गोवर्द्धन—[सं० पु०] वृन्दावन का एक पवित्र पर्वत जिसे श्रीकृष्णजी ने व्रज की रक्षा के लिए अंगुली पर उठाया था।

गोवर्द्धनधारी—[सं० पु०] गिरधारी। श्रीकृष्णजी।

गोवर्द्धनाचार्य—[सं० पु०] संस्कृत के एक शृङ्गाररस-सिद्ध कवि।

गोवशा—[सं० स्त्री०] बंध्या गाय।

गोविंद—[सं० वि०] वेदान्तवेत्ता। श्रीकृष्ण।

गोशाला—[सं० स्त्री०] गायों के रहने का स्थान।

गोष्ट—[सं० पु०] मंडली। परामर्श। गोशाला।

गोष्टी—[सं० स्त्री०] सभा। मंडली। वार्तालाप।

गोस्तन—[सं० पु०] गुच्छा। गाय का थन।

गोस्तनी—[सं० पु०] अंगूर। द्राक्षा।

गोस्वामी—[सं० पु०] जितेन्द्रिय। वैष्णव सम्प्रदाय में आचार्यों के वंशधर।

गोहत्या—[सं० पु०] गोवध।

गोहुवन—[हि० पु०] लाल रंग का सर्प।

गौ—[सं० स्त्री०] गाय।

गौड—[सं० पु०] बंगाल का प्राचीन विभाग। ब्राह्मणों का वर्ग।

गौड़ी—[सं० स्त्री०] गुड़ से बनी मदिरा। एक राग।

गौण—[सं० वि०] साधारण। सहचारी। अप्रधान।

गौणी—[सं० वि०] अप्रधान। [स्त्री०] एक लक्षण जिसमें किसी एक वस्तु का गुण दूसरी पर आरोपित किया जाय।

गौतम—[सं० पु०] गोतम ऋषि के वंशज। बुद्धदेव। सप्तर्षि-मंडल के तारों में से एक तारा।

गौतमी—[सं० स्त्री०] अहल्या। गौतम ऋषि की पत्नी। कृपाचार्य की स्त्री। गोदावरी नदी। दुर्गा।

गौना—[हि० पु०] विवाह की एक रीति। द्विरागमन। वधू को उसकी ससुराल ले आने की रीति।

गौर—[सं० वि०] उज्ज्वल। गोरे वर्ण का।

गौरता—[सं० स्त्री०] गोरापन।

गौरव—[सं० पु०] महत्त्व। सम्मान। बड़प्पन। उत्कर्ष। अभ्युत्थान।

गौरांग—[सं० पु०] गोरे वर्णवाला। चैतन्य महाप्रभु। विष्णु।

गौरिका—[सं० स्त्री०] आठ वर्ष की कन्या। पार्वती।

गौरला—[सं० स्त्री०] पृथ्वी। धरती।

गौरी—[सं० स्त्री०] पार्वती। गिरिजा। गोरे रंग की स्त्री। आठ वर्ष की कन्या। हल्दी। तुलसी।

गौरीशंकर—[सं० पु०] हिमालय की सबसे ऊँची चोटी। महादेवजी। शिव-पार्वती।

गौरीश—[सं० पु०] महादेव। शिव।

गौल्मिक—[सं० पु०] एक गुल्म या ३० सैनिकों का नायक।

गौशाला—[सं० स्त्री०] गायों का आश्रम।

ग्रन्थ—[सं० पु०] बड़ी पुस्तक। धन।

ग्रन्थक—[सं० पु०] ग्रन्थ रचनेवाला।

ग्रन्थकर्ता—[सं० पु०] ग्रन्थ रचनेवाला।

ग्रन्थचुम्बक—[सं० पु०] ग्रन्थों और पुस्तकों का केवल पाठ करनेवाला।

ग्रन्थन—[सं० पु०] गूथना। जोड़ना।

ग्रन्थसन्धि—[सं० स्त्री०] ग्रन्थ का विभाग। सर्ग। अध्याय।

ग्रन्थि—[सं० स्त्री०] बन्धन। गाँठ। मायाजाल। एक रोग।

ग्रन्थपर्णी—[सं० स्त्री०] दूब।

ग्रन्थिबन्धन—[सं० पु०] विवाह के समय वर-कन्या के वस्त्रों के कोनों को परस्पर गाँठ लगाने की क्रिया।

ग्रंथिमान—[सं० पु०] हरसिंगार। टूटी हुई हड्डी जोड़नेवाली औषधि।

ग्रसन—[सं० पु०] भक्षण। निगलना। बुरी तरह से पकड़ना।

ग्रस्त—[सं० वि०] पीड़ित। जकड़ा हुआ। खाया हुआ।

ग्रस्ताग्रस्त—[सं० पु०] ग्रहण लगने पर चन्द्रमा या सूर्य का बिना मोक्ष हुए अस्त होना।

ग्रस्तोदय—[सं० पु०] चन्द्रमा या सूर्य का ग्रहण लगने पर उदय होना।

ग्रह—[सं० पु०] आकाश के वे तारे जिनकी गति, उदय और अस्तकाल आदि का पता प्राचीन ज्योतिषियों ने लगा लिया था। वह तारा जो अपने सौर जगत् में सूर्य की परिक्रमा करे।

ग्रहण—[सं० पु०] सूर्य, चन्द्रमा या किसी दूसरे आकाशचारी पिंड की ज्योति का आवरण जो दृष्टि और उस पिंड के बीच किसी अन्य आकाशचारी पिंड के आ जाने या छाया पड़ने से होता है। स्वीकार। अंगीकार।

ग्रहणी—[सं० स्त्री०] अतिसार रोग।

ग्रहणीय—[सं० वि०] ग्रहण करने के योग्य।

ग्रहदशा—[सं० स्त्री०] ग्रहों की स्थिति के अनुसार किसी मनुष्य की अच्छी या बुरी अवस्था।

ग्रहपति—[सं० पु०] सूर्य। शनि। आकाश वृक्ष।

ग्रहबंध—[सं० पु०] ग्रह की स्थिति आदि का जानना।

ग्रहस्थापन—[सं० पु०] नवग्रहों की स्थापना। एक पूजा विशेष।

ग्रहीत—[सं० वि०] गृहीत। पकड़ा हुआ।

ग्रहीता—[सं० वि०] ग्राहक। ग्रहण-कर्त्ता।

ग्राम—[सं० पु०] छोटी बस्ती। गांव।

ग्रामणी—[सं० पु०] गाँव का मुखिया।

ग्रामदेवता—[सं० पु०] किसी एक ग्राम में पूजा जानेवाला देवता।

ग्रामिक—[सं० वि०] देहाती। ग्रामीण।

ग्रामीण—[सं० वि०] गाँव का। गँवार।

ग्रामेश—[सं० पु०] ज़मींदार। ग्राम का चौधरी।

ग्राम्य—[सं० वि०] ग्राम-सम्बन्धी। ग्रामीण।

ग्राम्यधर्म्म—[सं० पु०] स्त्री-प्रसंग। मैथुन।

ग्राव—[सं० पु०] पत्थर। ओला। पर्वत

ग्रास—[सं० पु०] निवाला। गस्सा।

ग्रासक—[सं० वि०] पकड़ने या निगलनेवाला। छिपानेवाला।

ग्राह—[सं० पु०] ग्रहण। घड़ियाल। मगर।

ग्राहक—[सं० पु०] खरीदनेवाला। ग्रहणकर्त्ता। चाहनेवाला।

ग्राही—[सं० पु०] स्वीकार करनेवाला। मलावरोधक पदार्थ।

ग्राह्य—[सं० वि०] स्वीकार करने योग्य।

ग्रीवा—[सं० स्त्री०] गला। गर्दन।

ग्रीष्म—[सं० स्त्री०] उष्ण। गरमी की ऋतु।

ग्रैवेय—[सं० पु०] कंठभूषण।

ग्लपित—[सं० वि०] श्रान्त। अवसन्न। थका हुआ।

ग्लह—[सं० पु०] पण। दाँव। जुए की बाज़ी।

ग्लान—[सं० वि०] रोगी। उद्विग्न। रोग से निर्बल। लांछन।

ग्लानि—[सं० स्त्री०] लज्जा। खेद। खिन्नता। मानसिक शिथिलता। कार्य की बुराई में उत्पन्न अनुत्साह।

ग्वारपाठा—[हि० पु०] घीकुवार। घृत कुमारी।

ग्वारफली—[हि० स्त्री] एक सब्जी।

ग्वाल—[सं० पु०] गोपाल। अहीर। एक छन्द।

ग्वालिन—[हि०स्त्री०] ग्वाले की स्त्री।

ग्लौ—[सं०पु०] चन्द्रमा। विष्णु। कपूर।

—:❀:—

घ

घंट—[सं० पु०] घड़ा। मृतक क्रिया में पीपल से बाँधा जानेवाला जल-पात्र।

घंटा—[सं० पु०] धातु का एक बाजा, घड़ियाल जो समय के सूचनार्थ बजाया जाता है। मन्दिरों में बजाया जानेवाला घंटा।

घंटाघर—[हि० पु०] किसी नगर में बनी हुई ऊँची मीनार जिसमें बड़ी बड़ी घड़ियाँ लगी हों और जिनके घंटों की आवाज दूर दूर तक सुनाई दे।

घंटिका—[सं० स्त्री०] घुंघरू। छोटा घंटा। किंकिणी।

घटंत—[हि० स्त्री०] उतार। अल्पता। न्यूनता। ह्रास।

घट—[सं० पु०] घड़ा। कलश। जलपात्र। पिंड।

घटक—[सं० पु०] मध्यस्थ। दलाल। चारण। भाट।

घटकर्ण—[सं० पु०] कुंभकर्ण।

घटकर्पर—[सं० पु०] राजा विक्रमादित्य की सभा के एक पंडित जिन्होंने 'यमक प्रधान' नामक काव्य रचा था।

घटका—[हि० पु०] कंठावरोध। मरने के पूर्व साँस की दशा।

घटन—[सं० पु०] गढ़ा जाना। उपस्थित होना।

घटना—[सं० क्रि०] होना। लगना। [स्त्री०] वारदात। वाक़या।

घटनीय—[सं० वि०] संभाव्य। घटने योग्य। योजनीय।

घटयोनि—[सं० पु०] अगस्त्य मुनि।

घटवारिया—[हि० पु०] घाट पर बैठ कर दान लेनेवाला ब्राह्मण। केवट।

घट-संभव—[सं० पु०] अगस्त्यमुनि।

घटस्थापन—[सं० पु०] नवरात्र का प्रथम दिवस। कलशस्थापन। मंगल कार्य में जल पूर्ण घड़ा रखना।

घटहा—[हि० पु०] अपराधी। नाम। घाट का ठेकेदार।

घटा—[सं० स्त्री०] मेघमाला। बादलों का उमड़ता हुआ समूह।

घटाकाश—[सं० पु०] घड़े के भीतर की खाली जगह।

घटाटोप—[सं० पु०] बादलों की भारी घटा जो चारों ओर से घिरी हो। पर्दा। यवनिका।

घटिक—[सं० पु०] घड़ियाली। घंटा पूरा होने पर घंटा बजानेवाला।

घटिका—[सं० स्त्री०] घड़ी। छोटा घड़ा। एक घड़ी या २४ मिनट का समय।

घटित—[सं० वि०] निर्मित। रचित। रचा हुआ।

घटूका—[हि० पु०] भीमपुत्र घटोत्कच।

घटोत्कच—[सं० पु०] हिडिंबा राक्षसी से उत्पन्न भीम का पुत्र।

घटोत्कर्ण—[सं० पु०] शिवजी का अनुचर जो शाप-वश उज्जैन में मनुष्य हुआ था और जिसने तपस्या करके विक्रमादित्य के सब रत्नों के जीतने का वरदान पाया था। एक राक्षस।

घड़िया—[हिं० स्त्री०] सोना-चाँदी गलाने का मिट्टी का बरतन।

घड़ियाल—[हिं० पुं०] एक हिंसक जल-जंतु। मन्दिर में पूजार्थ बजनेवाला घंटा। समय बताने के लिए प्रति घंटा बाद बजनेवाला घंटा।

घड़ौंची—[हिं० स्त्री०] पानी से भरे घड़ा के रखने की तिपाई।

घतिया—[हिं० पुं०] धोखा देनेवाला। घात करनेवाला।

घन—[सं० पुं०] बादल। समूह। कपूर। घंटा। लोहे का बड़ा हथौड़ा। ठोस। एक गुणनफल।

घन-गरजन—बादलों की ध्वनि।

घनघोर—[सं० पुं०] भीषण ध्वनि। गहरा। बादलों की गरज।

घनचक्कर—[हिं० पुं०] मूर्ख। चंचल बुद्धिवाला। आवारा।

घनत्व—[सं० पुं०] सघनता। ठोसपन। लम्बाई, चौड़ाई और मोटाई तीनों का भाव।

घननाद—[हिं० पुं०] मेघनाथ। बादल की गरज।

घनबान—[हिं० पुं०] बादल उत्पन्न करनेवाला बाण।

घनमूल—[सं० पुं०] गणित में किसी घनराशि का घनमूल अंक।

घनश्याम—[सं० पुं०] श्रीकृष्ण। काला बादल। रामचन्द्र जी।

घनसार—[सं० पुं०] कपूर।

घना—[हिं० वि०] सघन। ठोस। अति निकट का।

घनाक्षरी—[सं० स्त्री०] १६ और १५ के विराम से ३१ वर्णों का दंडक या मनहर छंद जिसे कवित्त भी कहते हैं।

घनात्मक—[सं० वि०] जिसकी लम्बाई, चौड़ाई और मोटाई, गहराई या ऊँचाई तीनों बराबर हों। इन तीनों का गुणनफल। घनफल।

घनानन्द—[सं० पुं०] एक हिन्दी के कवि। गद्य-काव्य का एक भेद। बहुत प्रसन्नता।

घनाहृ—[सं० पुं०] नागरमोथा।

घनिष्ठ—[सं० पुं०] अतिप्रिय गाढ़ा। घना। निकटवर्त्ती।

घमंड—[हिं० पुं०] अभिमान। शेखी।

घमंडी—[हिं० वि०] अभिमानी। अहंकार करनेवाला।

घघरा—[सं० स्त्री०] घाघरा नदी। सरयू नदी।

घर्म—[सं० पुं०] धूप। घाम।

घर्पण—[सं० पुं०] रगड़।

घर्षित—[सं० वि०] घिसा हुआ। रगड़ा हुआ।

घस्मर—[सं० वि०] पेटार्थी। खाऊ। पेटू।

घस्र—[सं० पुं०] दिवस। दिन।

घस्रा—[सं० पुं०] क्रूर। हिंसक। नृशंस।

घाटी—[हिं० स्त्री०] दर्रा। पर्वतों के बीच का संकीर्ण मार्ग।

घात—[सं० पुं०] आघात। प्रहार। हत्या। चोट। वध। गुणनफल।

घातक—[सं० पुं०] हत्यारा। मारडालनेवाला। वधिक।

घातिनी—[सं० स्त्री०] विनाशिनी। वध करनेवाली।

घाती—[हिं० वि०] नाश करनेवाला। संहारक।

घात्य—[सं० पुं०] मारने योग्य। हनन योग्य।

घान—[हिं० पुं०] मात्रा। समूह।

घायल—[हिं० वि०] चुटीला। आहत। जख्मी।

घालक—[हिं० पुं०] नाश करनेवाला।

घाव—[हिं० पुं०] क्षत। चिरा या कटा अंग। ज़ख्म।

घास—[सं० स्त्री०] तृण। चारा।

घासी—[हिं० पुं०] घासयारा।

घिग्घी—[हिं० स्त्री०] भय के कारण बोलने में रुकावट।

घुग्घू—[हिं० पुं०] उल्लू पक्षी।

घुटरू—[हिं० पुं०] घुटना।

घुड़की—[हिं० स्त्री०] फटकार। डाँट। क्रोध में कही गयी बात।

घुड़चढ़ी—[हिं० स्त्री०] विवाह में दूल्हे के घोड़े पर चढ़ने की एक रीति।

घुणाक्षर-न्याय—[सं० पुं०] ऐसी कृति या रचना जो अनजान में उसी प्रकार हो जाय जिस प्रकार घुनों के खाते खाते लकड़ी में अक्षर से बन जाते हैं।

घुन—[हिं० पुं०] अनाज, लकड़ी आदि में लगने वाला कीड़ा।

घुनिया—[हिं० वि०] काटी। छली।

घुन्ना—[हिं० वि०] जो अपने क्रोध, द्वेष आदि भावों को मन में रखे रहे। चुप्पा।

घुप—[हिं० वि०] गहरा अंधकार।

घुमक्कड़—[हिं० वि०] बहुत घूमने वाला।

घुस्टराज—[सं० पुं०] कुंकुम। गंध द्रव्य-विशेष।

घूँघट—[हिं० पुं०] कुल वधू का मुख ढकने वाला वस्त्र। ओट।

घूँघर—[हिं० पुं०] बालों में पड़े छल्ले।

घूर्णन—[सं० पुं०] भ्रमण। घूमना-फिरना।

घूर्णित—[सं० वि०] भ्रमित। घुमाया हुआ।

घूस—[हिं० स्त्री०] रिश्वत। चूहे की जाति का एक बहुत बड़ा जन्तु।

घृणा—[सं० स्त्री०] घिन। उपेक्षा। नफरत।

घृणित—[सं० वि०] घृणा करने योग्य। जिसे सुनकर या देखकर घृणा की जाय।

घृण्य—[सं० वि०] निन्दनीय। उपेक्षणीय। घृणा के योग्य।

घृत—[सं०वि०] पका हुआ मक्खन। घी।

घृतकुमारी—[सं० स्त्री०] घीकुवार।

घृताची—[सं० स्त्री०] एक अप्सरा।

घृष्ट—[सं० वि०] घर्षित। घिसा-पिसा। रगड़ा हुआ।

घोर—[सं० वि०] विकराल। भयानक। घना। दुर्गम।

घोष—[सं० पु०] गरजने की ध्वनि। शब्दों के उच्चारण में एक प्रयत्न। गोशाला। अहीरों की बस्ती। किनारा। नाद।

घोषणा—[सं० स्त्री०] ढिंढोरा। राजाज्ञा का प्रचार। ऊँची आवाज़ में सूचना।

घोषणा-पत्र—[सं० पु०] जनसाधारण के सूचनार्थ राजाज्ञा पत्र।

घोषणीय—[सं० वि०] प्रकाशनीय। प्रचारित करने योग्य।

घोसी—[हि० पु०] अहीर।

घ्राण—[सं० स्त्री०] नासिका से सूँघने की शक्ति। सुगन्धि।

घ्राणेन्द्रिय—[सं० पु०] नासिका। नाक।

घ्रात—[सं० वि०] कुसुम आदि की गंध लेना। गृहीत गंध।

घ्रायक—[सं० वि०] सूँघनेवाला। गन्ध-ग्राहक।

—:※:—

ङ

ङ—संस्कृत और हिन्दी में कवर्ग का अंतिम स्पर्श वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान कंठ और नासिका है।

ङ—[सं० पु०] गंध। दुर्गन्धि। भेख। सूँघने की शक्ति।

—:※:—

च

चंक—[सं० वि०] समस्त। समूचा। पूरा।

चंक्रमण—[सं० पु०] इधर उधर घूमना।

चंग—[हि० स्त्री०] डफ की तरह का एक बाजा।

चंगा—[सं० वि०] नीरोग। स्वस्थ। निर्मल।

चंगुल—[हि० पु०] बकोटा। चिड़ियों का टेढ़ा पंजा। जकड़।

चंचरी—[सं० स्त्री०] भ्रमरी। भँवरी।

चंचरीक—[सं० पु०] भौंरा। भ्रमर।

चंचरीकावली—[सं० स्त्री०] भौंरों का झुंड। १३ अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

चंचल—[सं० वि०] अधीर। अस्थिर। चलायमान। चुलबुला।

चंचलता—[सं० स्त्री०] अधीरता। अस्थिरता। चपलता।

चंचु—[सं० पु०] पक्षियों की चोंच। रेंड़ का पेड़। मृग।

चंड—[सं० वि०] प्रखर। प्रचंड। क्रोधी। कठोर।

चंडकर—[सं० पु०] रवि। सूर्य्य।

चंडता—[सं० स्त्री०] उग्रता। प्रताप। प्रबलता।

चंडमुंड—[सं० पु०] दुर्गा देवी द्वारा मारे गये दो राक्षस।

चंडरसा—[सं० स्त्री०] एक वर्णवृत्त।

चंडवृष्टि-प्रताप—[सं० पु०] एक दंडक वृत्त।

चंडांशु—[सं० पु०] सूर्य्य।

चंडाल—[सं० पु०] भंगी। मेहतर। चांडाल।

चंडालिका—[सं० स्त्री०] एक प्रकार की वीणा। दुर्गा।

चंडालिनी—[सं० स्त्री०] मेहतरानी। दुष्टा। एक प्रकार का दोहा।

चंडावल—[सं० पु०] बहादुर सैनिक। संतरी। सेना के पीछे का भाग।

चंडिका—[सं० स्त्री०] लड़ाकू स्त्री। दुर्गा। गायत्री।

चंडी—[सं० स्त्री०] महिषासुर का वध

करने के लिए दुर्गा का रूप। कर्कशा स्त्री। १३ अक्षरों का एक वर्णवृत्त।
चंडीश—[सं० पु०] चंडीपति। शिवजी।
चंडू—[हि० पु०] एक नशीला पदार्थ।
चडूल—[हि० पु०] खाकी रंग की एक छोटी पालतू चिड़िया।
चंडोल—[हि० पु०] डोली। एक पालकी।
चंदक—[हि० पु०] माथे का एक गहना।
चंदन—[सं० पु०] श्रीखंड। संदल। एक सुगन्धित वृक्ष जिसकी लकड़ी देव-पूजन और तिलक के काम आती है। छप्पय छन्द का एक भेद।
चंदन-गिरि—[सं० पु०] मलयाचल।
चंदनहार—[हि० पु०] चन्द्रहार।
चंदिर—[सं० पु०] चन्द्रमा।
चंदेरी—[हि० स्त्री०] चेदि देश की राजधानी। ग्वालियर राज्य का एक प्राचीन नगर।
चंदेरीपति—[सं० पु०] शिशुपाल।
चंदेल—[सं० पु०] क्षत्रियों की एक शाखा।
चंदोवा—[हि० पु०] शामयाना। चाँदनी।
चंद्र—[सं० पु०] चन्द्रमा। सोना। जल। कपूर। एक पौराणिक द्वीप। अनुनासिक वर्ण के ऊपर का विन्दु। टगण का दसवाँ भेद। [वि०] सुन्दर। आनन्द-दायक।
चंद्रक—[सं० पु०] नाखून। कपूर। चन्द्रमा। चन्द्रिका।
चंद्रकला—[सं० स्त्री०] चन्द्रमा की किरणें या ज्योति। एक वर्णवृत्त। मस्तक का एक आभूषण।
चंद्रकान्त—[सं० पु०] एक मणि जो चन्द्रमा के सम्मुख पसीजता है।
चंद्रकान्ता—[सं० स्त्री०] चन्द्रमा की पत्नी। निशा। रात्रि। १५ अक्षरों का एक वर्ण-वृत्त।
चंद्रगुप्त—[सं० पु०] गुप्त वंश का प्रसिद्ध राजा। मगध देश का प्रथम मौर्य्य सम्राट।
चंद्र-ग्रहण—[सं० पु०] चन्द्रमा का ग्रहण।
चंद्रचूड़—[सं० पु०] शिवजी।
चंद्रधनु—[सं० पु०] रात में चन्द्रमा के प्रकाश में प्रगट इन्द्र-धनुष।
चंद्रधर—[सं० पु०] शशिधर। शिवजी।
चंद्रप्रभा—[सं० स्त्री०] चाँदनी। चंद्रिका। चंद्र-ज्योति।
चंद्रबाण—[सं० पु०] अर्द्ध चन्द्राकार फणवाला बाण।
चंद्रबिम्ब—[सं० पु०] चन्द्रमा का मंडल।
चंद्रभागा—[सं० स्त्री०] पंजाब की चिनाब नदी।
चंद्रभाल—[सं० पु०] शिवजी।
चंद्रभूषण—[सं० पु०] शंकरजी। महादेवजी।
चंद्रमणि—[सं० पु०] चन्द्रकान्त-मणि। एक छन्द।
चंद्रमा—[सं० पु०] शशि। चाँद। सुधाकर।
चंद्रमा-ललाम—[सं०पु०] महादेवजी।
चंद्रमाला—[सं० स्त्री०] २८ मात्राओं का एक छन्द।
चंद्रमौलि—[सं० पु०] शिवजी।
चंद्ररेखा—[सं० स्त्री०] द्वितीया का चन्द्रमा। चन्द्रकला। एक वर्णवृत्त।
चंद्रलोक—[सं० पु०] चन्द्रमा का संसार।
चंद्रवंश—[सं० पु०] क्षत्रियों का एक आदि वंश।
चंद्र-विंदु—[सं० पु०] अर्ध अनुस्वार की विन्दी।
चंद्रवर्त्म—[सं० पु०] एक वर्णवृत्त।
चंद्रवधू—[सं० स्त्री०] वीर बधूटी नामक एक लाल रंग का कीट।
चंद्रवार—[सं० पु०] सोमवार।
चंद्रशाल—[सं० स्त्री०] सबसे ऊपर की अटारी। चाँदनी।
चंद्रशेखर—[सं० पु०] शिवजी।
चंद्रहार—[सं० पु०] गले की एक सुन्दर माला।
चंद्रहास—[सं० पु०] रावण की तलवार।
चंद्रा—[हि० स्त्री०] मरने के समय टकटकी बँध जाने की दशा।
चंद्रातप—[सं० पु०] चन्द्रिका। चाँदनी।
चंद्रापीड़—[सं० पु०] उज्जयिनी के राजा तारापीड़ के पुत्र।
चंद्रायण—[सं० पु०] एक व्रत-विशेष।
चंद्रावर्ती—[सं० पु०] एक वर्णवृत्त।
चंद्रिका—[सं० स्त्री०] चाँदनी। कौमुदी। मोरपंख का चंद्राकार। जूही। चमेली। इलायची। बेंदी। एक देवी। एक वर्णवृत्त।
चंद्रोदय—[सं० पु०] एक रसायन। चन्द्रमा का निकल आना।
चंपक—[सं० पु०] चंपा के फूल। सांख्य में एक सिद्धि।
चंपकमाला—[सं०स्त्री०] एक वर्ण वृत्त।
चंपत—[हि० वि०] अन्तर्द्धान। भागा हुआ।
चंपाकली—[हि० स्त्री०] स्त्रियों के गले का एक गहना।
चंपारण्य—[सं० पु०] बिहार प्रान्त का वर्तमान चम्पारन।
चंपू—[सं० पु०] गद्य-पद्य युक्त काव्य।
च—[सं० पु०] चन्द्रमा। कछुआ। चोर। दुर्जन।
चकचौंध-[हि० स्त्री०] अधिक प्रकाश के सम्मुख आँखों का मुंद जाना।

चकलेदार—[हि॰पु॰] किसी प्रदेश का शासक या कर संग्रह करनेवाला।

चकवा—[हि॰ पु॰] चकवाक। एक पत्ती।

चकित—[सं॰ वि॰] विस्मित। दंग। चकपकाया हुआ। हक्का-बक्का।

चकोर—[सं॰ पु॰] चन्द्रमा का प्रेमी और अग्नि-भक्षक एक पहाड़ी तीतर।

चक्र—[सं॰ पु॰] पहिया। चरखा। कुम्हार का चाक। चक्की। भ्रमण। प्रपंच। पानी का भँवर। बवंडर। एक व्यूह। साम्राज्य।

चक्रधर—[सं॰ वि॰] चक्र धारण करने वाला। [पु॰] श्रीकृष्ण। विष्णु। जादूगर। राजा।

चक्रपाणि-[सं॰ पु॰] विष्णु। श्रीकृष्ण।

चक्रपूजा—[सं॰ स्त्री॰] तांत्रिकों की एक पूजा-विधि।

चक्रमर्द—[सं॰ पु॰] चकवँड़।

चक्रमुद्रा—[सं॰ स्त्री॰] विष्णु के आयुधों के चिह्न जो वैष्णव अपने बाहु आदि अंगों पर छपवाते हैं।

चक्रवर्त्ती—[सं॰ वि॰] सार्वभौम राजा।

चक्रवाक—[सं॰ पु॰] चकवा पत्ती।

चक्रवात—[सं॰ पु॰] वातचक्र। वेग से चक्र खाती हुई वायु।

चक्रवृद्धि—[सं॰ स्त्री॰] ब्याज पर ब्याज लगाने का विधान।

चक्रव्यूह—[सं॰ पु॰] युद्ध में सेना की एक व्यवस्था।

चक्रांकित—[सं॰पु॰] रामानुजानुयायी।

चक्रायुध—[सं॰ पु॰] विष्णु। चक्रधारी। कृष्ण।

चक्रित—[सं॰ वि॰] चकित।

चक्री—[सं॰ पु॰] विष्णु। कुम्हार। चर। सर्प। गाँव का पुरोहित। चक्रवर्ती।

चक्रेला—[सं॰ वि॰] गोल। चक्राकार।

चक्षु—[सं॰ पु॰] आँख।

चक्षुष्य—[सं॰ वि॰] नेत्रहितकारी औषधि। नेत्र सम्बन्धी।

चटकारी—[हि॰स्त्री॰] कलियों के चटखने का शब्द।

चटियल—[हि॰ वि॰] चट्टानवाला मैदान।

चटु—[सं॰ पु॰] उदर। खुशामद। मनोहर। बिजली। एक आसन।

चटुल—[सं॰ वि॰] चचल। मनोहर। चपल।

चणक—[सं॰ पु॰] चना।

चतुरंग—[सं॰ पु॰] सेना के चार अंग। शतरंज। चार प्रकार के बोलोंवाला गान।

चतुरंगिणी—[सं॰ वि॰] चारों अंग वाली सेना जिसमें हाथी, घोड़े, रथ और पैदल हों।

चतुर—[सं॰ पु॰] चालाक। निपुण। धूर्त्त। टेढ़ी चालवाला।

चतुरता—[सं॰ स्त्री॰] प्रवीणता। चतुराई।

चतुरस्र—[सं॰ वि॰] चौकोर।

चतुरानन—[सं॰ पु॰] ब्रह्माजी। चार मुखवाले।

चतुराश्रम—[सं॰ पु॰] जीवन के चार आश्रम। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास।

चतुरास—[सं॰ स्त्री॰] चारों ओर।

चतुरासी—[हि॰ वि॰] चौरासी लाख योनि।

चतुरिन्द्रिय—[सं॰ पु॰] मक्खी आदि चार इन्द्रियोंवाले जीव।

चतुरुपवेद—[सं॰ पु॰] धनुर्वेद, आयुर्वेद, गंधर्वेद और शिल्पवेद।

चतुर्गुण—[सं॰ वि॰] चार गुणोंवाला।

चतुर्थ—[सं॰ वि॰] चौथा।

चतुर्थाश्रम—[सं॰ पु॰] संन्यास।

चतुर्थी—[सं॰ स्त्री॰] चौथ। चौथी तिथि। विवाह के चौथे दिन का संस्कार।

चतुर्दश—[सं॰ पु॰] चौदह की संख्या।

चतुर्दशी—[सं॰ स्त्री॰] किसी पक्ष का चौदहवीं तिथि।

चतुर्दिक—[सं॰ पु॰] चारों दिशायें।

चतुर्भुज—[सं॰ वि॰] चार भुजाओंवाला।

चतुर्भुजा—[सं॰ स्त्री॰] एक देवी। गायत्री रूप में दुर्गा।

चतुर्भुजी—[सं॰ पु॰] चार भुजाओंवाला। एक वैष्णव संप्रदाय।

चतुर्भोजन—[सं॰ पु॰] चारों प्रकार के भोजन--भक्ष्य, भोज्य, चोष्य, लेह्य।

चतुर्मास—[सं॰ पु॰] चौमासा।

चतुर्मुक्ति-[सं॰ स्त्री॰] सायुज्य, सामीप्य, सारूप्य, सालोक्य—चार प्रकार की मुक्तियाँ।

चतुर्मुख—[सं॰ पु॰] ब्रह्मा।

चतुर्युगी—[सं॰ स्त्री॰] चारों युगों का काल १४३२०००० वर्ष।

चतुर्योनि—[सं॰ पु॰] चार प्रकार से उत्पन्न-अंडज, पिंडज, स्वेदज, जरायुज।

चतुर्वर्ग—[सं॰ पु॰] चार पदार्थ-अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष।

चतुर्वर्ण—[सं॰ पु॰] चार जातियाँ—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र।

चतुर्विंश—[सं॰ वि॰] चौबीस।

चतुर्विंशति-[सं॰ पु॰] चौबीस की संख्या।

चतुर्विधि—[सं॰ वि॰] चार प्रकार।

चतुर्वेद—[सं॰ पु॰] चारों वेद।

चतुर्वेदी—[सं॰ पु॰] ब्राह्मणों की एक जाति। चारों वेदों का ज्ञाता।

चतुर्व्यूह—[सं॰ पु॰] चार मनुष्यों अथवा चार पदार्थों का समूह।

चतुष्क—[सं॰ वि॰] एक प्रकार का भवन। चौपहला।

चतुष्कल—[सं० वि०] चार मात्राओं या कलाओंवाला ।

चतुष्कोण—[सं० वि०] चौकोर ।

चतुष्टय—[सं० पु०] चार वस्तुओं का समूह ।

चतुष्पथ—[सं० पु०] चौराहा ।

चतुष्पद—[सं० पु०] चौपाया । चार पैरोंवाला ।

चतुष्पदा—[सं० स्त्री०] चौपैया छन्द ।

चतुष्पदी—[सं० स्त्री०] १५ मात्राओं का चौपाई छन्द । चार पदों का गीत ।

चतुस्सम्प्रदाय—[सं० पु०] वैष्णवों के चार प्रधान सम्प्रदाय ।

चत्वर—[सं० पु०] वेदी । चबूतरा । चौमुहानी ।

चदिर—[सं० पु०] कपूर । चन्द्रमा । सर्प । हाथी ।

चपड़ा—[हि० पु०] एक लसदार पदार्थ । साफ किया हुआ लाह का पत्तर ।

चपल—[सं० त्रि०] चंचल । अधीर । नटखट ।

चपलता—[सं० स्त्री०] शीघ्रता । चंचलता । ढिठाई ।

चपला—[सं०स्त्री०] लक्ष्मी । बिजली । छंदभेद । जीभ । [वि०] चंचला । फुर्तीली ।

चप्पा—[सं० पु०] स्वल्प स्थान । थोड़ी जगह ।

चप्पू—[हि० पु०] पतवार ।

चन्या—[सं० स्त्री०] औषधि-विशेष ।

चमत्कार—[सं० पु०] विस्मय । अनूठापन । विचित्र घटना ।

चमत्कारी—[सं० वि०] विलक्षण । आश्चर्य-जनक ।

चमत्कृत—[सं० वि०] विस्मित ।

चमत्कृति—[सं० स्त्री०] आश्चर्य ।

चमन—[पु०] छोटा बगीचा ।

चमरख—[हि० स्त्री०] मूंज या चमड़े की बनी हुई चकती जिसमें से चरखे का तकला घूमता है ।

चमू—[सं० स्त्री०] सेना ।

चय—[सं०पु०] समूह । राशि । गढ़ ।

चयन—[सं० पु०] संचय । संग्रह करने का काम ।

चर—[सं० पु०] जासूस । दूत । राजदूत । अनुचर । कौड़ी । प्राणी । खंजन पक्षी । दलदल । चलनेवाला ।

चरक—[सं० पु०] आयुर्वेद के एक प्राचीन आचार्य । पथिक । दूत ।

चरखपूजा—[हि० स्त्री०] चैत की संक्रांति में एक उग्र देवी की पूजा ।

चरखा—[हि० पु०] ऊन और कपास आदि से सूत कातने का देसी यंत्र । रहँट ।

चरचित—[सं० पु०] पोता या लेप लगाया हुआ ।

चरट—[सं० पु०] खंजन पक्षी । खंजरीट ।

चरण—[सं० पु०] पैर । पद । किसी छन्द का पाद । जड़ । क्रम । किरण । भक्षण करने का काम ।

चरण-गुप्त—[सं० पु०] एक प्रकार का चित्रकाव्य ।

चरण-चिह्न—[सं० पु०] पैर के तलवे की रेखा ।

चरणदास—[सं० पु०] चरणसेवक, नाई आदि ।

चरण-दासी—[सं० स्त्री०] जूता । पत्नी ।

चरण-पादुका—[सं० स्त्री०] खड़ाऊँ । पावड़ी । पत्थर आदि पर अंकित पूजनीय चिह्न ।

चरण-पीठ—[सं० पु०] चरण-पादुका । खड़ाऊँ ।

चरणसेवक—[सं० पु०] पैर दबानेवाला । नाई ।

चरणामृत—[सं० पु०] महात्मा या पूज्यजनों के पैरों का धोवन ।

चरणायुध—[सं० पु०] अरुण-शिखा । मुर्गा ।

चरणोदक—[सं० पु०] चरणामृत ।

चरपराहट—[हि० स्त्री०] जलन । डाह । द्वेष ।

चरम—[सं० वि०] अन्तिम । अति उत्कृष्ट ।

चरवाहा—[हि० पु०] गाय-भैंस चरानेवाला ।

चराचर—[सं०त्रि०] जड़ और चेतन । स्थावर और जंगम ।

चरित—[सं० पु०] चरित्र । कृत्य । आचरण । जीवन की घटनाओं और कृत्यों का वर्णन । जीवनी ।

चरितनायक—[सं० पु०] प्रधान पुरुष जिसका चरित्र लिखा जाय ।

चरितार्थ—[सं० वि०] जो ठीक-ठीक घटे । कृतार्थ । कृतकृत्य ।

चरित्र—[सं० पु०] चरित । करतूत । आचरण ।

चरित्रवान्—[सं०वि०] आचरणवाला ।

चरु—[सं० पु०] यज्ञ की आहुति के लिये पका अन्न । हविषान्न ।

चरुपात्र—[सं० पु०] यज्ञ में हविषान्न पात्र ।

चर्चक—[सं० पु०] चर्चा करनेवाला ।

चर्चन—[सं० पु०] लेपन । चर्चा ।

चर्चरिका—[सं० स्त्री०] किसी एक विषय की समाप्ति और यवनिका-पतन पर नाटकीय गान ।

चर्चरी—[सं० स्त्री०] वसंत ऋतु का गान । फाग ।

चर्चा—[सं०स्त्री०] बातचीत । वर्णन । लेपन । किंवदन्ती ।

चर्चिका—[सं०स्त्री०] दुर्गा देवी । चर्चा ।

चर्चित—[सं० वि०] लेपित । लगाया

हुआ।

चर्पट—[सं० पु०] थप्पड़।

चर्म—[सं०पु०] चमड़ा। ढाल। चाम।

चर्मकशा—[सं० स्त्री०] एक प्रकार का सुगन्धित द्रव्य।

चर्मकार—[सं० पु०] चमार। मोची।

चर्मकील—[सं० स्त्री०] बवासीर। अर्श। एक बुरा रोग।

चर्मचक्षु—[सं० पु०] पार्थिव नेत्र। संकुचित दृष्टि।

चर्मण्वती—[सं०स्त्री०] चंबल नदी। केले का पेड़।

चर्मदंड—[सं० पु०] चमड़े का कोड़ा। कषा।

चर्मदृष्टि—[सं० स्त्री०] साधारण दृष्टि। नेत्र।

चर्मवसन—[सं० पु०] चर्माम्बर। महादेव।

चर्मी—[सं० पु०] शिव।

चर्य—[सं० वि०] जो करने योग्य हो।

चर्या—[सं० स्त्री०] आचरण। चाल-चलन। जीविका। सेवा।

चर्री—[हि० स्त्री०] व्यंगपूर्ण बात। चुटीली बात।

चर्वण—[सं० पु०] चबाना।

चर्वित-चर्वण—[सं० पु०] किसी किये काम को फिर करना।

चर्व्य—[सं० वि०] चबाने योग्य।

चल—[सं० वि०] चर। अस्थिर। चंचल।

चलचाल—[सं० वि०] चपल। चंचल।

चलचूक—[सं० स्त्री०] छल। कपट। धोखा।

चलदल—[सं० पु०] पीपल।

चलन-कलन—[सं० पु०] दिन-रात के घटने बढ़ने की गणित।

चलपत्र—[सं० पु०] पीपल का पेड़।

चलपूँजी—[हि० स्त्री०] रुपया-पैसा। चल सम्पत्ति।

चलविचल—[सं० वि०] अव्यवस्थित। घबड़ाया हुआ।

चलविधरा—[हि० वि०] मचलनेवाला। अड़ियल।

चला—[सं० स्त्री०] पृथ्वी। बिजली। लक्ष्मी।

चलायमान—[सं० वि०] चंचल। विचलित। चलनेवाला।

चलित—[सं० वि०] चलायमान। अस्थिर। चलता हुआ।

चलितव्य—[सं० वि०] चलने योग्य। गमन करने के उपयुक्त।

चलित्री—[हि० स्त्री०] चपल। रसिक। खिलाड़ी। चंचल।

चलेन्द्रिय—[सं० वि०] कामासक्त। लम्पट। इन्द्रियाधीन।

चवर्ग—[सं० पु०] च से लेकर ञ तक के अक्षरों का समूह।

चव्य—[सं० पु०] चरब औषधि।

चषक—[सं० पु०] मदिरा पीने की प्याली।

चषाण—[सं० पु०] भोजन। मारण। [स्त्री०] मदान्धता। वध।

चषाल—[सं० पु०] मधु-कोष। मधु-स्थान। यज्ञ के खंभे पर रखा एक काष्ठ।

चाँदमारी—[हि० स्त्री०] गोली चलाने का अभ्यास।

चाँदी—[हि० स्त्री०] एक सफेद और चमकदार खनिज पदार्थ। रजत।

चांद्र—[सं० वि०] चंद्रमासम्बन्धी। [पु०] अदरख। चान्द्रायण व्रत।

चांद्रमास—[सं० पु०] पूर्णिमा से पूर्णिमा या अमावस्या से अमावस्या तक का समय।

चांद्रायण—[सं० पु०] एक मास का कठिन व्रत जिसमें चन्द्रमा के घटने-बढ़ने के अनुसार आहार घटाना-बढ़ाना पड़ता है। एक मात्रिक छन्द।

चाउर—[हि० पु०] चावल।

चाकचक्य—[सं० स्त्री०] चमक-दमक। शोभा।

चाक्रायण—[सं० पु०] एक ऋषि के वंशज।

चाक्षुष—[सं० वि०] आँख सम्बन्धी। छठे मनु।

चाटु-[सं० पु०] प्रिय बात। चापलूसी।

चाटुकार—[सं० पु०] चापलूस। खुशामदी।

चाणक—[सं० पु०] मुनिविशेष। गोत्र-विशेष। क्रोध पैदा करनेवाली बात।

चाणक्य—[सं० पु०] कौटिल्य। चंद्रगुप्त मौर्य के प्रमुख मंत्री। राजनीति के प्राचीन आचार्य।

चाणूर—[सं० पु०] श्रीकृष्णजी द्वारा मारा गया कंस का एक पहलवान।

चातक-[सं० पु०] पपीहा। एक पक्षी।

चातुर—[सं० वि०] चापलूस। चतुर। नेत्रों से दिखाई देनेवाला।

चातुरी—[सं० स्त्री०] चालाकी। व्यवहार-कुशलता। चतुरता।

चातुर्भद्र—[सं० पु०] चतुर्वर्ग। अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष—चार पदार्थ।

चातुर्मासिक—[सं० वि०] चार मास में होनेवाले यज्ञ कर्म आदि।

चातुर्मास्य—[सं० पु०] चार मास में होनेवाला एक वैदिक यज्ञ। वर्षा के चार मास का एक पौराणिक व्रत।

चातुर्य्य—[सं० पु०] चतुराई।

चातुर्वर्ण्य—[सं० पु०] ब्राह्मण। क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र। चार वर्ण।

चातुर्वैद्य—[सं० पु०] चार वेदों के ज्ञाता। चतुर्वेदी ब्राह्मणों का एक भेद।

चात्वाल—[सं० पु०] अग्निहोत्र। गढ़ा। गर्त।

चाप—[सं० पु०] कमान। धनुष। धनु राशि। अर्धवृत्त क्षेत्र। [स्त्री०] पैर की आहट।

चापल्य—[सं० पु०] अधीरता। चपलता। चंचलता।

चाव—[हि०स्त्री०]गजपिप्पली की जाति का एक पौधा जिसकी जड़ औषधि के काम आती है। चव्य।

चाम—[हि० पु०] चमड़ा। खाल।

चामर—[सं० पु०] एक वर्णवृत्त। चौर। चँवर। मोरछल।

चामरी—[सं० स्त्री०] सुरागाय।

चामीकर—[सं० पु०] स्वर्ण। धतूरा।

चामुंडराय—[हि० पु०] पृथ्वीराज के एक सामन्त राजा।

चामुंडा—[सं० स्त्री०] एक देवी जिसने शुंभ निशुंभ के चंड, मुंड नामक दो दैत्य सेनापतियों का वध किया था।

चाम्पेय—[सं० पु०] चम्पा का फूल। नागकेसर।

चारण—[सं० पु०] भाट। वंदीजन। यशोगान करनेवाला।

चारिणी—[सं० स्त्री०] चलनेवाली। आचरण करनेवाली।

चारित—[सं० वि०] चलाया हुआ।

चारित्र—[सं०पु०] व्यवहार। चालचलन। आचार। स्वभाव। संन्यास।

चारित्र्य—[सं० पु०]चरित्र। चरित्र सम्बन्धी।

चारी—[सं० वि०] चलनेवाला। आचरण करनेवाला। [पु०] पैदल सिपाही। संचारी भाव।

चारु—[सं० वि०] मनोहर। सुन्दर।

चारुहासिनी—[सं० वि०] सुन्दर हँसनेवाली। [स्त्री०] वैताली छन्द का एक भेद।

चारेक्षण—[सं० पु०] राजनीतिज्ञ। राजमन्त्री।

चार्वंगी—[सं० स्त्री०] सुन्दर नारी।

चार्वाक—[सं० पु०] तार्किक। एक नास्तिक। अनीश्वरवादी। भोगवादी।

चालक—[सं० वि०] चलानेवाला। संचालक।

चालुक्य—[सं० पु०] दक्षिण का एक प्राचीन पराक्रमी राजवंश।

चाष—[सं० पु०] नीलकंठ। पक्षी।

चाह—[हि० स्त्री०] प्रीति। अभिलाषा।

चिंघाड़—[हि० स्त्री०] घोर शब्द। हाथी की बोली।

चिंत—[हि० स्त्री०] चिंता।

चिंतक—[सं० वि०] विचारनेवाला। ध्यान करनेवाला।

चिंतन—[सं० पु०] आराधना। ध्यानमग्नता। बार-बार स्मरण।

चिंतनीय—[सं० वि०] ध्यान करने योग्य। संदिग्ध।

चिंता—[सं० स्त्री०] ध्यान। सोच। फिक्र। खटका।

चिंतामणि—[सं०पु०] एक मंत्र। एक कल्पित रत्न जिसमें मनोकामना तुरन्त पूर्ण होती है।

चिंतित—[सं० वि०] चिंतायुक्त।

चिंत्य—[सं० वि०] विचारणीय। संदिग्ध। भावनीय।

चिंदी—[हि० स्त्री०] टुकड़ा। चिथड़ा।

चिकित्सक—[सं० पु०] वैद्य। रोगी का रोग नष्ट करनेवाला।

चिकित्सा—[सं० स्त्री०] वैद्य का व्यवसाय। इलाज।

चिकित्सालय—[सं० पु०] शफाखाना। जहाँ इलाज होता है। अस्पताल।

चिकित्सित—[सं० वि०] चिकित्सा किया हुआ। इलाज किया हुआ।

चिकीर्षा—[सं० स्त्री०] अभिलाषा। करने की इच्छा।

चिकीर्षु—[सं० पु०] अभिलाषी। करने का इच्छुक।

चिकुर—[सं० पु०] सिर के बाल। पर्वत। छछूँदर। साँप। गिलहरी।

चिक्कण—[सं० वि०] चिकना।

चिट्ठा—[हि० पु०] लेख। बहीखाता। सूची।

चित—[सं० स्त्री०] ज्ञान। चेतना।

चित—[सं० पु०] मन। चित।

चितचोर—[हि० पु०] प्रिय। मन पर प्रभाव डालनेवाला।

चितवन—[हि० स्त्री०] देखने या ताकने की मुद्रा। दृष्टि।

चिता—[सं० स्त्री०] शव-दाह के लिए लकड़ियों का ढेर।

चितावनी—[हि० स्त्री०] चेतावनी। सावधान करने की क्रिया।

चिति—[सं० स्त्री०] चुनाई। चैतन्य। चिता। दुर्गा देवी।

चितेरा—[हि० पु०] चित्रकार।

चित्त—[सं० पु०] अंतःकरण का एक भेद। मन। हृदय।

चित्तभूमि—[सं० स्त्री०] योग में चित्त की पाँच अवस्थाएँ। क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र, निरुद्ध।

चित्तविक्षेप—[सं० पु०] चित्त की अस्थिरता।

चित्तविभ्रम—[सं० पु०] उन्माद। भ्रम। भ्रांति। भौचक्कापन।

चित्तवृत्ति—[सं० स्त्री०] मनोवृत्ति। चित्त की अवस्था या गति।

चित्ता—[हि०पु०] चीता। एक पौधा।

चित्तोद्वेग—[सं० पु०] व्याकुलता। विरक्ति। मन का उद्वेग।

चित्तोन्नति—[सं० स्त्री०] गर्व। अहंकार। अभिमान।

चित्तौर—[हि० पु०] उदयपुर के महाराणाओं की प्राचीन राजधानी।

चित्य—[सं० पु०] समाधि का स्थान।

चित्र—[सं० पु०] तिलक। चंदन का माथे पर चिह्न। तसवीर। कलम या कूची से बना किसी वस्तु या व्यक्ति का आकार।

चित्रक—[सं० पु०] चीते का वृक्ष। बाघ। चिरायता। चित्रकार।

चित्रकला—[सं० स्त्री०] तसवीर बनाने की विद्या।

चित्रकार—[सं० पु०] चितेरा। चित्र बनानेवाला।

चित्रकारी—[हि० स्त्री०] चित्र बनाने की क्रिया या कला।

चित्रकूट—[सं० पु०] एक प्रसिद्ध रमणीय पर्वत जहाँ वनवास-काल में राम, सीता और लक्ष्मण ने निवास किया था।

चित्रगुप्त—[सं० पु०] १४ यमराजों में से एक जो प्राणियों के पाप-पुण्य का लेखा रखते हैं।

चित्रपट—[सं० पु०] चित्राधार। वह आधार जिस पर चित्र निर्मित हो। चल-चित्र। छायाचित्र।

चित्रपदा—[सं० स्त्री०] एक छन्द।

चित्रमद—[सं० पु०] किसी स्त्री का अपने प्रियतम के चित्र को देखने पर विरह-भाव दिखाना।

चित्रमृग—[सं० पु०] चीतल। चित्तीदार हरिण।

चित्रयोग—[सं० पु०] बुड्ढे को जवान और जवान को बुड्ढा या नपुंसक बना देने की कला या विद्या।

चित्ररथ—[सं० पु०] सूर्य्य।

चित्रलेखा—[सं० स्त्री०] चित्र बनाने की कूची। तूलिका। एक वर्णवृत्त।

चित्रविचित्र—[सं०वि०] रंग-बिरंगा।

चित्रविद्या—[सं० स्त्री०] चित्र बनाने की विद्या।

चित्रशाला—[सं० स्त्री०] वह भवन जहाँ भिन्न भिन्न भावों और रंगों के चित्र सजे हों। विलास-भवन। चित्रसारी।

चित्रसारी—[हि० स्त्री०] विलास-भवन। चित्रशाला।

चित्रहस्त—[सं० पु०] हथियार चलाने का हाथ।

चित्रांग—[सं० वि०] जिसके शरीर पर चित्तियाँ या धारियाँ हों।

चित्रांगद—[सं० पु०] राजा शान्तनु के पुत्र जो सत्यवती के गर्भ से उत्पन्न हुए और चित्रांगद नामक गंधर्व से युद्ध में मारे गये।

चित्रांगदा—[सं० स्त्री०] बभ्रुवाहन की माता। अर्जुन की स्त्री।

चित्रा—[सं० स्त्री०] ककड़ी। मूषिकपर्णी। गंडदूर्वा। वायविडंग। मजीठ। दंती वृक्ष। अखुपर्णी। अजवाइन। एक रागिनी। १५ अक्षरों का एक वर्णवृत्त। २७ नक्षत्रों में से १४वाँ नक्षत्र।

चित्रणी—[सं० स्त्री०] स्त्रियों के चार भेदों में से एक भेद।

चित्रित—[सं० वि०] बेल-बूटेदार। चित्रों से भरा हुआ। चित्र में दिखाया हुआ।

चित्रोक्ति—[सं० स्त्री०] अलंकारयुक्त भाषा में कहना। आकाश।

चिद्—[सं० पु०] सजीव। चैतन्य। जीवधारी।

चिदाकाश—[सं० पु०] चैतन्य। ब्रह्म। परमात्मा। शिव। आकाश।

चिदात्मा—[सं०पु०] ज्ञानस्वरूप। ब्रह्म।

चिदानन्द—[सं० पु०] आनन्दरूप ब्रह्म। शिव।

चिदाभास—[सं० पु०] चैतन्य स्वरूप परमात्मा का आभास या प्रतिबिम्ब जो अंतःकरण पर पड़ता है। जीवात्मा।

चिद्रूप—[सं० पु०] ज्ञानमय। ब्रह्म। परमेश्वर।

चिनक—[हि० स्त्री०] चुन-चुनाहट। जलन युक्त पीड़ा।

चिनगारी—[हि० स्त्री०] ज्वाला।

चिनिया-बादाम—[हि० पु०] मूँगफली।

चिन्मय—[सं० वि०] ज्ञानरूप। ज्ञानमय। [पु०] परमात्मा।

चिन्मात्र—[सं० वि०] ज्ञानमय ब्रह्म।

चिह्न—[सं० पु०] निशान। संकेत। लक्षण।

चिह्नित—[सं० वि०] सांकेतिक। अंकित। मनोनीत। चिह्नयुक्त।

चिपचिपा—[हि० वि०] लसदार। चुपकानेवाला।

चिबुक—[सं० पु०] ठोढ़ी। हनु।

चिरंजीव—[सं० वि०] आशीर्वाद का शब्द। बहुत समय तक जीये।

चिरंतन—[सं० वि०] पुराना।

चिर—[सं० वि०] बहुत दिनों तक रहनेवाला।

चिरजीवी—[सं० वि०] अमर। अनिश्चित काल तक जीनेवाला। [पु०] विष्णु। व्यास। हनुमान।

चिरस्थायी—[सं० वि०] दृढ़। बहुत काल तक रहनेवाला।

चिरस्मरणीय—[सं० वि०] पूजनीय। बहुत दिनों तक स्मरण रखने योग्य।

चिरायता—[हि० वि०] एक कड़वा पौधा जो औषधि के काम आता है।

चिरायु—[सं० वि०] दीर्घायु। बड़ी उम्रवाला।

चिरौंजी—[हि० स्त्री०] पियाल वृक्ष के फलों की गिरी। एक मेवा।

चिरौरी—[हि० स्त्री०] विनती। विनय। प्रार्थना। अनुनय। खुशामद।

चिलगोजा—[पु०] चीड़ या सनोवर का फल। एक मेवा।

चिल्ला—[पु०] कठिन सर्दी।

चिल्ली—[सं० स्त्री०] झिल्ली कीड़ा।

चीतल—[हि० पु०] चित्तीदार हरिण ।

चीता—[हि० पु०] बाघ की जाति का हिंसक पशु । एक पेड़ जिसकी छाल और जड़ ओषधि के काम आती है ।

चीत्कार—[सं० पु०] चिल्लाहट । चिंघाड़ ।

चीन—[सं० पु०] पताका । झंडी । एक देश ।

चीनांशुक—[सं० पु०] चीन देश का रेशमी कपड़ा ।

चीर—[सं० पु०] वस्त्र । कपड़ा । चिथड़ा । वृक्ष की छाल ।

चीर्ण—[सं० वि०] चीरा हुआ । फाड़ा हुआ ।

चील्ही—[हि० स्त्री०] एक तंत्रोपचार ।

चीवर—[सं० पु०] बौद्ध संन्यासियों के पहनने का वस्त्र । भिक्षुकों का फटा-पुराना कपड़ा ।

चीवरी—[सं० पु०] भिक्षुक । बौद्ध भिक्षुक ।

चुंगी—[हि० स्त्री०] शहर में आनेवाले बाहरी माल पर महसूल ।

चुंधी—[हि० वि०] छोटी आखोंवाला । जिसे दिखाई न पड़े ।

चुंबक—[सं० पु०] आकर्षित करने-वाला । कामी । कामुक । चुंबन करनेवाला ।

चुंबन—[सं० पु०] प्रेमावेश में किसी के गाल आदि अंगों को अधर से स्पर्श करना । प्यार करना ।

चुंबित—[सं० वि०] प्यार किया हुआ । स्पर्श किया हुआ ।

चुंबी—[सं० पु०] चूमनेवाला ।

चुकन्दर—[पु०] गाजर की तरह एक सब्जी ।

चुक्कड़—[हि०पु०] करई । मदिरा पीने का मिट्टी का वर्त्तन ।

चुचकारी—[हि० स्त्री०] चुमकारने की क्रिया या भाव ।

चुटकुला—[हि०पु०] चमत्कार उक्ति । रहस्यमय बात । व्यंग्य ।

चुटीला—[हि० वि०] पीड़ित । चोट खाया हुआ ।

चुड़ैल—[हि० स्त्री०] दुष्टा या क्रूर स्त्री । पिशाचिनी । डाइन ।

चुनचुनी—[हि० स्त्री०] खुजली । खुजलाहट ।

चुनरी—[हि० स्त्री०] छींटदार रंगीन कपड़ा ।

चुनाव—[हि० पु०] बहुतों में से कुछ को किसी काम के लिये चुनना ।

चुनौती—[हि० स्त्री०] ललकार । उत्तेजना । छूट ।

चुन्नी—[हि० स्त्री०] बहुत छोटा नग या रत्न । सितारा ।

चूची—[हि० स्त्री०] स्तन । कुच ।

चूड़ांत—[सं० स्त्री०] चरम सीमा ।

चूड़ा—[सं० स्त्री०] शिखा । चोटी । बाँह का एक गहना । कंकन । हाथी दांत की चूड़ियाँ ।

चूड़ाकरण—[सं० पु०] बच्चे का प्रथम मुंडन-संस्कार जिसमें सिर पर चोटी रखना दी जाती है ।

चूड़ाकर्म—[सं० पु०] मुंडन । चूड़ाकरण ।

चूड़ामणि—[सं० पु०] शिरोमणि । सर्वश्रेष्ठ । शीशफूल ।

चूत—[सं० पु०] आम्र वृक्ष । आम का पेड़ ।

चूर्ण—[सं० पु०] पिसा हुआ मसाला या ओषधियाँ । बुकनी ।

चूर्णक—[सं० पु०] छोटे शब्दों से युक्त तथा लंबी समासों से मुक्त गद्य रचना । धान ।

चूर्णा—[सं० स्त्री०] आर्य्या छन्द का दसवाँ भेद ।

चूर्णित—[सं० वि०] चूर्ण किया हुआ । तोड़ फोड़ कर बारीक किया हुआ ।

चूल—[सं० पु०] शिखा । बाल ।

चूलिका—[सं० स्त्री०] नाटक में नेपथ्य से किसी घटना की सूचना ।

चूषण—[सं० पु०] चूसने की क्रिया ।

चूष्य—[सं० वि०] चूसने योग्य ।

चेचक—[स्त्री०] शीतला रोग ।

चेट—[सं० पु०] दास । स्वामी । नायक और नायिका को मिलानेवाला ।

चेटक—[सं० पु०] सेवक । दूत । इन्द्रजाल की विद्या । जादू ।

चेटकी—[सं० पु०] कौतुकी । जादूगर ।

चेटी—[सं० स्त्री०] दासी ।

चेत्—[सं० अव्य०] यदि । कदाचित् ।

चेत—[सं० पु०] चेतना । चित्तवृत्ति ।

चेतन—[सं० वि०] जीवधारी । मनुष्य । प्राणी । परमेश्वर ।

चेतनता—[सं० स्त्री०] चैतन्यता । सजीवता । ज्ञान ।

चेतना—[सं० स्त्री०] बुद्धि । सुधि । मनोवृत्ति ।

चेतावनी—[हि० स्त्री०] सतर्क होने की सूचना ।

चेदि—[सं० पु०] एक प्राचीन देश और उसका राजा । चंदेरी ।

चेदिराज—[सं० पु०] शिशुपाल ।

चेरी—[हि० स्त्री०] दासी ।

चेल—[सं० पु०] वस्त्र । कपड़ा ।

चेला—[हि० पु०] धार्मिक उपदेश लेने वाला शिष्य । विद्यार्थी ।

चेल्हवा—[हि०स्त्री०]एक छोटी मछली ।

चेष्टा—[सं० स्त्री०] शरीर के अंगों द्वारा मन के भावों को प्रगट करने की अवस्था । प्रयत्न । उद्योग । कामना । श्रम ।

चैत—[हि० पु०] चैत्र मास । फाल्गुन मास के बाद का मास ।

चैतन्य—[सं० पु०] चेतन । आत्मा ।

जीव। ज्ञान। प्रकृति। ब्रह्म। एक प्रसिद्ध महात्मा।

चैत्य—[सं० पु०] मंदिर। मकान। घर। देवालय। यज्ञशाला। भिक्षुमठ। बौद्ध संन्यासी। किसी देवता का चबूतरा।

चैत्ररथ—[सं० पु०] कुबेर के उपवन का नाम।

चैद्य—[सं० पु०] शिशुपाल। चेदि देश का राजा।

चैन—[हिं० पु०] सुख। आराम।

चैल—[सं० पु०] वस्त्र। कपड़ा।

चोकर—[हिं० पु०] भूसी। अनाजों का छुकला।

चोड़—[सं० पु०] एक प्राचीन प्रान्त। उत्तरीय। अँगिया। कुरती।

चोदक—[सं० वि०] प्रेरणा करनेवाला।

चोदना—[सं० स्त्री०] वह वाक्य जिसमें किसी काम के करने का विधान हो। प्रेरणा।

चोर—[सं० पु०] चोरी करनेवाला। तस्कर।

चोरदंत—[हिं० पु०] बत्तीस दाँतों के अतिरिक्त कष्ट से निकलनेवाला एक दाँत।

चोरपुष्पी—[सं० स्त्री०] अंधाहुली।

चोरमहल—[हिं० पु०] परकीया नायिका के रहने का पृथक् स्थान।

चोल—[सं० पु०] दक्षिण भारत का एक प्राचीन प्रदेश। स्त्रियों का एक वस्त्र। चोली।

चोली—[हिं० स्त्री०] अँगिया। कुरती।

चोषण—[सं० पु०] चूसना।

चोष्य—[सं० वि०] चूसने योग्य।

चौतारा—[हिं० पु०] तँबूरे जैसा तारों का एक बाजा।

चौताल—[हिं० पु०] मृदंग का एक ताल। होली का एक गीत।

चौतुका—[हिं० वि०] चार तुकवाला। [पु०] एक छन्द जिसमें चरणों के तुक मिलते हों।

चौथ—[हिं० स्त्री०] किसी पक्ष की चतुर्थी तिथि।

चौदंती—[हिं० स्त्री०] वीरता। शूरता। अल्हड़पन।

चौधरी—[हिं० पु०] प्रधान। मुखिया।

चौपड़—[हिं० स्त्री०] चौसर। एक भारतीय खेल।

चौपाई—[हिं० स्त्री०] १६ मात्राओं का छन्द। चारपाई।

चौपैया—[हिं० पु०] एक मात्रिक छन्द।

चौबँसा—[हिं० पु०] एक वर्ण-वृत्त।

चौबरसी—[हिं० स्त्री०] चौथे वर्ष का श्राद्ध या उत्सव।

चौबारा—[हिं० पु०] कोठे के ऊपर की खुली अटारी।

चौमासा—[हिं० पु०] वर्षा ऋतु। आषाढ़ से क्वार तक का समय।

चौमुख—[हिं० वि०] जिसका चारों ओर मुख हो।

चौरंग—[हिं० पु०] तलवार का एक हाथ।

चौरंगा—[हिं० वि०] चार रंगों का।

चौरस—[हिं० वि०] समतल। एक प्रकार का वर्ण वृत्त।

चौरी—[हिं० स्त्री०] छोटा चबूतरा।

चौरीठा—[हिं० पु०] पानी में पिसा चावल।

चौर्य—[सं० पु०] चोरी।

चौलुक्य—[हिं० पु०] चालुक्य।

चौहट्टा—[हिं० पु०] वह स्थान जिसके चारों ओर दूकानें हों। चौराहा।

चौहान—[हिं० पु०] क्षत्रियों की एक प्रसिद्ध शाखा।

च्यवन—[सं० पु०] एक ऋषि का नाम। झरना। टपकना।

च्यवनप्राश—[सं० पु०] एक प्रसिद्ध पौष्टिक अवलेह।

च्युत—[सं० वि०] विमुख। भ्रष्ट। अपने स्थान से हटा हुआ।

च्युति—[सं० स्त्री०] कर्तव्यविमुखता। चूक। झड़ना। गिरना।

छ

छंद—[सं० पु०] पद्य। वर्ण या मात्रा की गणना के अनुसार पद या वाक्य रखने की व्यवस्था। बन्धन। जाल। वेदवाक्य।

छंदोबद्ध—[सं० वि०] जो पद्य के रूप में हो। श्लोक-बद्ध।

छंदोभंग—[सं० पु०] छंद रचना का एक दोष जो मात्रा, वर्णादि के नियम-पालन न करने से होता है।

छः—[हि० वि०] छह की संख्या।

छ—[सं० पु०] ढाँकना। काटना। खंड। घर।

छटा—[सं० स्त्री०] शोभा। प्रकाश।

छत्र—[सं० पु०] एक राज-चिह्न। सोने या चाँदी की छतरी।

छत्रक—[सं० पु०] छाता। मन्दिर। मण्डप। शहद का छत्ता। कुकरमुत्ता।

छत्रधारी—[सं० वि०] जो छत्र धारण करे। राजा।

छत्रपति—[सं० पु०] राजा।

छत्रभंग— [सं० पु०] राजा का नाश। अराजकता।

छत्रा—[सं० स्त्री०] मजीठ। धनिया। सोवा। धरती का फूल।

छत्राक—[सं० पु०] कुकरमुत्ता। बलवबूला।

छत्री—[हि० वि०] क्षत्रिय। राजा।

छदि—[सं० स्त्री०] छप्पर। छानी। गृहाच्छादन।

छदिकारिपु—[सं० पु०] वमन रोकने की औषधि। छोटी इलायची।

छद्म—[सं० पु०] गोपन। छल-कपट। बहाना। व्याज।

छद्मवेश—[सं० पु०] कृत्रिम वेश। बनावटी वेश।

छद्मिका—[सं० स्त्री०] मजीठ। गुरिच।

छद्मी—[सं० वि०] कपटी। बनावटी वेश धारण करनेवाला।

छन्द-पावन—[सं० पु०] तपस्वीवेश में धूर्त्त।

छन्दवंद—[हि० पु०] कपट। छल-बल। प्रतारण।

छन्दानुवर्त्ती—[सं० वि०] आज्ञाकारी।

छन्दी—[हि० वि०] कपटी। धूर्त।

छबि—[हि० स्त्री०] छटा। शोभा। सौंदर्य।

छबीला-[हि० वि०] सुन्दर। शोभावान्।

छमिच्छत—[सं० स्त्री०] समस्या। संकेत।

छर्दन—[सं० पु०]वमन। उलटी करना।

छर्दोयन -[हि० पु०] ककड़ी। खीरा।

छर्दि—[सं० स्त्री०] वमन। उलटी।

छल—[सं० पु०] धूर्तता। वंचना। धोखा।

छलछन्द—[हि० पु०] धूर्तता। कपट-जाल।

छलछिद्र—[सं० पु०] धोखेबाजी। धूर्त्तता। कपट व्यवहार।

छलना—[हि० क्रि०] धोखा देना।

छल-विनय—[सं० पु०] धोखा देने के लिए प्रशंसा।

छलित—[सं० वि०] जो ठगा गया हो। वंचित।

छवि -[सं० स्त्री०] सौंदर्य। शोभा। प्रभा।

छाग—[सं० पु०] बकरा।

छागल—[हि० पु०] पैर का एक गहना। बकरे की खाल की वस्तु।

छात्र—[सं० पु०] विद्यार्थी। शिष्य। चेला।

छात्रवृत्ति—[सं० स्त्री०] वह धन जो विद्यार्थी को विद्याध्ययन के लिए मिले।

छात्रालय—[सं० पु०] विद्यार्थियों के रहने का स्थान।

छापाखाना—[हि० पु०] मुद्रणालय। प्रेस।

छाया—[सं० स्त्री०] परछाई। प्रतिबिम्ब। प्रतिकृति। अनुकरण। अंधकार। प्रभाव। सूर्य की एक पत्नी। आर्य छन्द का एक भेद।

छायाग्राहिणी—[सं० स्त्री०] समुद्र फाँदते समय हनुमान जी की छाया पकड़ कर खींचनेवाली राक्षसी।

छायादान—[सं० पु०] घी या तेल से भरे काँसे के कटोरे में अपनी परछाहीं देखकर दिया जानेवाला दान।

छायापथ—[सं० पु०] देव-पथ। आकाश गंगा।

छायापुरुष—[सं० पु०] हठ योग की एक क्रिया जिसमें मनुष्य को अपनी आकृति सम्मुख दिखाई देने लगती है।

छावनी—[हि० स्त्री०] पड़ाव। लशकर। सेना के रहने का स्थान। छप्पर।

छिद्र—[सं०पु०] सूराख। विवर। छेद।

छिद्रान्वेषण—[सं० पु०] दोष ढूढ़ना।

छिद्रान्वेषी—[सं० वि०] किसी के दोषों की खोज करनेवाला।

छिद्रित—[सं० वि०] दूषित। छेद किया हुआ।

छिनार—[हि० स्त्री०] पर-पुरुष-गामिनी। कुलटा स्त्री।

छिनारा—[हि० पु०] व्यभिचार। स्त्री-पुरुष का अनुचित सहवास।

छिन्न—[सं० वि०] खण्डित।

छिन्न-भिन्न—[सं० वि०] खण्डित। अस्त-व्यस्त।

छिन्नमस्ता—[सं० स्त्री०] महाविद्याओं में छठीं।

छिन्ना—[सं० स्त्री०] गुड़िच। गुडूची।

छिन्नोद्भवा—[सं० स्त्री०] गुडूची। गुड़िच।

छू—[हि० पु०] मन्त्र पढ़कर फूँक मारने का शब्द।

छेकानुप्रास—[सं० पु०] वह अनुप्रास जिसमें वर्णों की आवृत्ति केवल एक बार हो।

छेकापह्नुति—[सं० स्त्री०] एक अलंकार जिसमें वास्तविक बात का अयथार्थ उक्ति से खण्डन किया गया हो।

छेकोक्ति—[सं० स्त्री०] अर्थांतर गर्भित उक्ति सम्बन्धी अलंकार।

छेद—[सं० पु०] छेदन। काटने की क्रिया। नाश। भाजक।

छेमण्ड—[हि० पु०] अनाथ । बिना माँ-बाप का लड़का ।

छैल-छबीला—[हि० पु०] सजावट वाला युवक । शौकीन जवान ।

छोलदारी—[हि० स्त्री०] खेमा । तंबू ।

छौना—[हि० पु०] पशु का बच्चा । लड़का ।

—:※:—

ज

जंगम—[सं० वि०] चर । चलायमान । मनुष्य, पशु, पक्षी । चल सम्पत्ति ।

जंगल—[सं० पु०] मरुभूमि । वन । रेगिस्तान ।

जंगाल—[हि० पु०] बड़ा बरतन ।

जंघा—[हि० स्त्री०] जाँघ । पिंडुली । रान ।

जंजाल—[हि० पु०] झंझट । बन्धन ।

जंतु—[सं०पु०] प्राणी । जीव ।

जंतुघ्न—[सं० वि०] जंतुनाशक ।

जंत्र-मंत्र—[हि० पु०] जादू-टोना । यंत्र । मंत्र । जंतर-मंतर ।

जंबु—[सं० पु०] जामुन ।

जंबुक—[सं० पु०] केवड़ा । सियार । बड़ा जामुन ।

जंबुद्वीप—[सं० पु०] सात द्वीपों में से एक । पौराणिक भारत ।

जंबुमत्—[हि० पु०] जांबवान् ।

जंभ—[सं० पु०] जबड़ा । दाढ़ । एक दैत्य । जँभाई ।

जंभारि—[सं० पु०] विष्णु । इन्द्र । अग्नि । वज्र ।

ज—[सं० पु०] पित । विष्णु । जन्म । मृत्युंजय । आद्यन्त में लघु और मध्य में गुरु वर्णवाला एक गण । [वि०] जीतनेवाला । तेज् ।

जगड्वाल—[सं० पु०] आडम्बर । प्रपंच । दिखावा ।

जगण—[सं० पु०] आद्यन्त लघु और मध्यम वर्ण गुरुवाला एक गण ।

जगत्—[सं० पु०] विश्व । महादेव । वायु । चर । चैतन्य प्राणी ।

जगत—[सं० स्त्री०] कुयें के चारों ओर का चबूतरा ।

जगत्-सेठ—[सं० पु०] विश्वश्रेष्ठ । महाजन । धनी ।

जगत्पिता—[सं० पु०] परमात्मा । संसार का स्वामी ।

जगती—[सं० स्त्री०] विश्व । पृथ्वी । संसार । भूमि ।

जगदंबा—[सं० स्त्री०] सरस्वती । लक्ष्मी । दुर्गा देवी ।

जगदाधार—[सं० पु०] परमेश्वर ।

जगदानन्द—[सं० पु०] परमेश्वर ।

जगदीश—[सं० पु०] परमेश्वर ।

जगदीश्वर—[सं० पु०] परमेश्वर । जगन्नायक ।

जगदीश्वरी—[सं०स्त्री०] दुर्गा जी । भगवती ।

जगद्गुरु—[सं० पु०] लोक-शिक्षक । परमेश्वर । शिव । नारद ।

जगच्चक्षु—[सं० पु०] सूर्य्य ।

जगज्जनक—[सं० पु०] विश्व-पिता ।

जगज्जननी—[सं० स्त्री०] संसार की माता ।

जगद्धाता—[सं० पु०] विष्णु । शिव । ब्रह्मा ।

जगद्धात्री—[सं० स्त्री०] सरस्वती । लक्ष्मी । भगवती ।

जगद्योनि—[सं० पु०] ब्रह्मा । विष्णु । शिव । जल । पृथ्वी ।

जगद्वंद्य—[सं० वि०] पूज्य । ईश्वर ।

जगद्विख्यात—[सं० वि०] संसार में प्रसिद्ध ।

जगन्नाथ—[सं० पु०] परमेश्वर । एक प्रसिद्ध विष्णु-मूर्त्ति ।

जगन्नियंता—[सं० पु०] परमात्मा । ईश्वर ।

जगन्निवास—[सं० पु०] विष्णु ।

जगन्माता—[सं० स्त्री०] जगदम्बा । सरस्वती । लक्ष्मी । दुर्गा ।

जगन्मोहिनी—[सं० स्त्री०] महामाया । दुर्गा । विश्वविमोहिनी ।

जघन—[सं० पु०] पेडू । जंघा । नितंब ।

जघनचपला—[सं० स्त्री०] आर्य्या छन्द का एक भेद ।

जघन्य—[सं० वि०] नीच । निकृष्ट । त्याज्य । अंतिम ।

जटा—[सं० स्त्री०] उलझे हुए सिर के लम्बे बाल । पेड़ की जड़ों के पतले सूत । जूट ।

जटाजूट—[सं० पु०] बहुत से लम्बे बालों का झुंड । शिव की जटा ।

जटाधर—[सं० पु०] महादेव । शंकर ।

जटाधारी—[सं० वि०] महादेव। शिव। केशवाला साधु।

जटामासी—[सं० स्त्री०] एक वनस्पति की जड़ जो सुगन्धित होती है।

जटायु—[सं० पु०] एक प्रसिद्ध गिद्ध।

जटित—[सं० वि०] जड़ा हुआ।

जटिल—[सं० वि०] उलझा हुआ। दुरूह। जटाधारी। क्रूर।

जठर—[सं० पु०] शरीर। पेट। एक उदर रोग। [वि०] कठिन।

जठराग्नि—[सं० स्त्री०] पेट की वह गरमी जिससे अन्न पचता है।

जड़—[हि० वि०] स्तब्ध। मूर्ख। शीतल। अचेतन। पृथ्वी के भीतर दबा हुआ वृक्षों का आहार-साधन। मूल। नींव।

जड़ता—[सं०स्त्री०] मूर्खता। स्तब्धता। अचेतनता।

जड़ाव—[सं० पु०] अचेतन। अज्ञता। मूर्खता।

जड़भरत—[सं० पु०] अंगिरस गोत्रीय एक ब्राह्मण जो जड़वत् रहते थे।

जड़ीभूत—[सं० पु०] चकित। स्तंभित।

जतु—[सं० पु०] शिलाजीत। लाख। वृक्ष का गोंद।

जतुक—[सं० पु०] हींग। लाख।

जतुका—[सं० स्त्री०] चिमगादड़। पहाड़ी नमक।

जतुगृह—[सं० पु०] लोह या लाख का बना घर। कुटी।

जन—[हि० पु०] प्रजा। अनुयायी। दास। लोक। भवन। मजदूरी।

जनक—[सं० पु०] पिता। सीता के पिता। मिथिला के प्राचीन राज-वंश की उपाधि।

जनकनन्दिनी—[सं०स्त्री०] सीताजी। जनक-पुत्री।

जनकपुर—[सं० पु०] मिथिला की प्राचीन राजधानी।

जनता—[सं० स्त्री०] सर्वसाधारण। जनसमूह। प्रजा।

जनन—[सं० पु०] जन्म। आविर्भाव। एक संस्कार।

जननी—[सं० स्त्री०] माता। उत्पन्न करनेवाली। कुटकी।

जननेन्द्रिय—[सं० स्त्री०] गुह्येन्द्रिय। योनि। भग।

जनपद—[सं० पु०] बस्ती। आबादी। प्रान्त।

जनप्रवाद—[सं० पु०] लोकापवाद। निन्दा। लोक-निन्दा।

जनप्रिय—[सं० वि०] सर्वप्रिय।

जनमेजय—[सं० पु०] राजा परीक्षित के पुत्र जिन्होंने सर्पयज्ञ किया था।

जनयिता—[सं० पु०] पिता।

जनयित्री—[सं० स्त्री०] माता।

जनरव—[सं० पु०] लोक-निन्दा। किंवदन्ती। कोलाहल।

जनलोक—[सं० पु०] ऊपर के सात लोकों में से एक लोक।

जनवाद—[सं० पु०] किंवदन्ती। जन-श्रुति। समाचार।

जनवास—[हि० पु०] बरात या सर्व-साधारण के ठहरने या टिकने का स्थान। सभा। समाज।

जनश्रुति—[सं० स्त्री०] किंवदन्ती। अफवाह।

जन-संख्या—[सं० स्त्री०] आबादी। जनता की संख्या।

जनस्थान—[सं० पु०] दण्डकारण्य के समीप खरदूषण का स्थान।

जनहरण—[सं० पु०] एक दण्डक वृत्त।

जनातिग—[सं० पु०] मनुष्य की शक्ति से बाहर। अतिमानुष।

जनाधिनाथ—[सं० पु०] राजा। विष्णु।

जनान्तिक—[सं० पु०] छिपा संवाद। नाटक में आपस में बात करने की एक मुद्रा। हाथ के संकेत से एक व्यक्ति को बुलाकर धीरे धीरे बात करना।

जनि—[सं० स्त्री०] माता। स्त्री। पत्नी। जन्मभूमि। उत्पत्ति। एक गन्धद्रव्य।

जनिका—[हि० स्त्री०] पहेली। लोकोक्ति। दो अर्थवाले शब्द।

जनित—[सं० वि०] जन्मा हुआ। उत्पन्न।

जनिता—[सं० वि०] पिता।

जनित्री—[सं० वि०] माता।

जनोदाहरण—[सं० पु०] गौरव। कीर्ति। मान।

जन्म—[सं० पु०] उत्पत्ति। नया जीवन धारण करना।

जन्मकाल—[सं० पु०] उत्पत्ति का समय।

जन्मकुण्डली—[सं० स्त्री०] जन्म समय में ग्रह-स्थिति का चक्र।

जन्मतिथि—[हि० स्त्री०] जयंती। जन्म-दिवस।

जन्मभूमि—[सं० स्त्री०] वह स्थान जहाँ किसी का जन्म हुआ हो।

जन्मान्तर—[सं० पु०] दूसरा जन्म।

जन्मान्ध—[सं० वि०] जन्म से अंधा।

जन्माष्टमी—[सं० स्त्री०] श्रीकृष्ण की जन्म तिथि।

जन्मेजय—[सं० पु०] जनमेजय।

जन्मोत्सव—[सं० पु०] किसी के जन्म का उत्सव या पूजन।

जन्य—[सं० पु०] जनसाधारण। राष्ट्र। पुत्र। पिता। जन्म। युद्ध।

जन्या—[सं० स्त्री०] माता की संगिनी। वधू की सखी।

जन्तु—[सं० पु०] सप्त ऋषियों में से एक। ब्रह्मा। प्राणी। अग्नि। जन्म।

जप—[सं० पु०] किसी मंत्र या वाक्य

का बार-बार धीरे-धीरे दोहराना। पूजा-पाठ।

जपमाला—[सं० स्त्री०] जप करने की माला।

जपा—[सं० स्त्री०] जवा। अड़हुल।

जपीतपी-[सं० पु०] तपस्वी। पूजक। अर्चना करनेवाला।

जमदग्नि—[सं० पु०] परशुराम के पिता। एक प्राचीन ऋषि।

जयंत—[सं० पु०] इन्द्र के पुत्र। स्कन्द। कार्तिकेय। रुद्र। उपेन्द्र का नाम।

जयंती—[सं० स्त्री०] विजयनी। पताका। ध्वजा। पार्वती। हल्दी। किसी पूज्य का जन्म-उत्सव। बैजन्ती वृक्ष।

जय—[सं० स्त्री०] जीत।

जयकरी—[सं०स्त्री०] चौपाई छन्द। [वि०] विजय करानेवाली।

जयदेव—[सं० पु०] गीतगोविन्द के रचयिता एक संस्कृत कवि।

जयद्रथ—[सं० पु०] दुर्योधन का बहनोई। एक राजा।

जयपत्र—[सं० पु०]वह पत्र जो हारा हुआ मनुष्य अपनी पराजय के प्रमाण में विजयी को लिख देता है।

जयपाल—[सं० पु०] जमालगोटा। राजा।

जयमंगल—[सं० पु०] राजा की सवारी का हाथी।

जयमाल—[[सं० स्त्री०] विजयी व्यक्ति को पहनाई जानेवाली माला। स्वयंवर में कन्या द्वारा स्वयंवर के गले में डाली गयी माला।

जयस्तंभ—[सं० पु०] विजय का स्मारक स्तंभ या खंभ।

जया—[सं० स्त्री०] पार्वती। हरी दूब। हरपताका। गुड़हल का फूल। [वि०] जयकारिणी।

जरठ—[सं० वि०] जीर्ण। वृद्ध। कर्कश। पुराना।

जरा—[सं० स्त्री०] बुढ़ापा।

जराग्रस्त—[सं० वि०] वृद्ध। बुड्ढा।

जरातुर—[सं० वि०] दुर्बल। जीर्ण। बूढ़ा।

जरायु—[सं० पु०] गर्भवेष्टन। वह झिल्ली जिसमें बंधा हुआ बच्चा उत्पन्न होता है।

जरायुज—[सं० पु०] वह प्राणी जो जरायुसहित उत्पन्न हो।

जरावस्था—[सं० स्त्री०] बुढ़ापा। वृद्धावस्था।

जरासंध—[सं० पु०] मगध देश का एक प्राचीन प्रसिद्ध राजा।

जर्जरी—[सं० स्त्री०] जीर्ण। निर्बल।

जलंधर—[सं० पु०]एक राक्षस जिसकी सुन्दरी पत्नी को भगवान् ने राक्षस के बन्धन से मुक्त किया। एक रोग। जलोदर।

जल—[सं०पु०]पानी। एक नक्षत्र। खस।

जल-अलि—[सं० पु०] पानी पर तैरनेवाला एक कीड़ा।

जलकर—[हिं० पु०] जलाशयों या तालाबों में होनेवाले पदार्थ। पानी का कर। पानी बनानेवाली वायु।

जलक्रीड़ा—[सं० स्त्री०] जल-विहार।

जलघड़ी—[हिं० स्त्री०] समय बताने का एक प्राचीन यंत्र।

जलचर—[सं० पु०] पानी में रहनेवाले जंतु।

जलज—[सं० वि०] जल में उत्पन्न होनेवाला। कमल। मछली। मोती। शंख।

जलजात—[हिं० पु०] कमल।

जलडमरूमध्य—[सं० पु०] दो बड़े समुद्रों को जोड़नेवाला समुद्र का पतला भाग।

जलतरंग—[सं० पु०] पानी की लहरों पर स्वर देनेवाला एक बाजा।

जलत्रास—[सं० पु०] जलातंक। जल देखने से उत्पन्न भय।

जलद—[सं० वि०] जल देने वाला। [पु०] मेघ। बादल। कपूर।

जलधर—[सं० पु०] बादल। समुद्र।

जलधरी—[सं० स्त्री०] शिवलिंग का अर्घ। जलहरी।

जलधि—[सं० पु०] समुद्र। दस शंख की संख्या।

जलनिधि—[सं० पु०] समुद्र।

जलपति—[सं० पु०] वरुण। समुद्र।

जलपाटल—[हिं० पु०] काजल।

जलपान-[सं० पु०] कलेवा। अल्पाहार।

जलपीपल—[सं० स्त्री०] पीपल जैसी एक ओषधि।

जलप्रपात—[सं० पु०] झरना। निर्झर। ऊँचाई से गिरनेवाली नदी।

जलप्रवाह—[सं० पु०] पानी का बहाव।

जलप्लावन—[सं० पु०] एक प्रकार का प्रलय। पानी की बाढ़।

जलभृत—[सं० पु०] बादल।

जलमानुष—[सं० पु०] एक जल-जंतु जिसका नाभि के ऊपर का भाग मनुष्य जैसा और नीचे का भाग मछली जैसा होता है।

जलयान—[सं० पु०] जहाज। नाव।

जलराशि—[सं० पु०] समुद्र। जल-समूह।

जलशायी—[सं० पु०] जल पर सोनेवाला। विष्णु।

जलसेना—[सं० स्त्री०] समुद्री जहाजों पर लड़नेवाली सेना।

जलस्तंभ—[सं० पु०] समुद्र आदि जलाशयों में दिखाई देनेवाले स्तंभ। जल गति के अवरोध की विद्या।

जलहरण—[सं० पु०] बत्तीस अक्षरों

की एक वर्णवृत्ति या दंडक छंद ।

जलांजलि—[सं० स्त्री०] प्रेतादि के लिए अंजली में भर के जल देना ।

जलांतक—[सं० पु०] जलत्रास ।

जलाधार—[सं० पु०] जलाशय । पुष्करणी । वापी । तालाब । झील ।

जलाधिप—[सं० पु०] वरुण । जलेश ।

जलाधीश—[सं० पु०] वरुण ।

जलामय—[सं० वि०] गीला । जल में डूबा । आर्द्र ।

जलावर्त—[सं० वि०] पानी का भँवर ।

जलाशय—[सं० पु०] तालाव । नदी ।

जलेचर—[सं० पु०] जल-जंतु । जलपक्षी ।

जलेन्धन—[सं० पु०] वड़वानल । बाड़वाग्नि ।

जलेश—[सं० पु०] समुद्र । वरुण ।

जलेशय—[सं० पु०] जल-जंतु । विष्णु ।

जलोच्छ्वास—[सं० पु०] पानी की लहरी या तरंग ।

जलोत्सर्ग—[सं० पु०] तालाब । कूप । बावली ।

जलोदर—[सं० पु०] पेट का एक भयङ्कर रोग । जलंधर ।

जलौका—[सं० स्त्री०] जोंक ।

जल्प—[सं० पु०] प्रलाप । कथन । बकवाद ।

जल्पक—[सं० वि०] वाचाल । बकवादी ।

जहत्स्वार्था—[सं० स्त्री०] वह लक्षणा जिसमें पद या वाक्य अपने वाच्यार्थ को छोड़े हुए हो । लक्ष्य ।

जह्नु—[सं० पु०] विष्णु । एक ऋषि जिन्होंने गंगा को पीकर कान से निकाल दिया था ।

जह्नुकन्या—[सं० स्त्री०] गंगाजी ।

जा—[सं० स्त्री०] माता । देवरानी ।

जागरण—[सं० पु०] जागना । जागने का उत्सव ।

जागरित—[सं० पु०] जागरण । नींद न आना ।

जागरूक—[सं० पु०] जाग्रत अवस्थावाला । जगा हुआ ।

जागर्त्ति—[सं० स्त्री०] जागरण ।

जाग्रत—[सं० वि०] जो जागा हुआ हो । सब बातों की परिज्ञानावस्था ।

जाग्रति—[सं० स्त्री०] चैतन्यता । जागरण ।

जाज्वल्य—[सं० वि०] प्रकाशयुक्त । प्रज्वलित ।

जाज्वल्यमान—[सं० वि०] दीप्तिवान् । तेजस्वी । प्रकाशित । प्रज्वलित ।

जाड्य—[सं० पु०] जड़ता । मूर्खता । कठोरता ।

जात—[सं० पु०] जीव । प्राणी । पुत्र । बेटा ।

जातक—[सं० स्त्री०] भिक्षु । फलित ज्योतिष का एक भेद । बालक । बौद्ध ग्रन्थ जिनमें महात्मा बुद्ध के पूर्व जन्म की कथायें हों ।

जातकर्म्म—[सं० पु०] बाल-जन्म-काल का एक संस्कार ।

जातरूप—[सं० पु०] धतूर । सोना ।

जातवेद—[सं० पु०] सूर्य्य । अग्नि ।

जातांध—[सं० वि०] जन्म से अंधा ।

जाता—[सं० स्त्री०] कन्या । पुत्री । [वि०] उत्पन्न ।

जाति—[सं० स्त्री०] जन्म । हिन्दुओं में समाज की एक व्यवस्था । वर्ण, कुल, गोत्र आदि ।

जातिच्युत—[सं० वि०] जातिबहिष्कृत । जाति से निकाला हुआ ।

जाती—[सं० स्त्री०] जुही । मालती । छोटा आँवला । चमेली की जाति का एक फूल ।

जातीफल—[सं० पु०] जायफल ।

जातीय—[सं० वि०] जाति-सम्बन्धी ।

जातीयता—[सं० स्त्री०] जाति का मोह । जातित्व ।

जातु—[सं० अव्य०] कदाचित् । कभी । संभावनार्थ ।

जातुधान—[सं० पु०] राक्षस ।

जातेष्टि—[सं० पु०] पुत्र-जन्मकाल का एक योग । नाँदी मुख—श्राद्ध ।

जात्य—[सं० वि०] प्रधान । मनोहर । सुन्दर । श्रेष्ठ ।

जानकी—[सं० स्त्री०] सीता । जनक-पुत्री ।

जानकीजानि—[सं० पु०] श्रीरामचन्द्रजी ।

जानकी-जीवन—[सं० पु०] श्रीरामचन्द्रजी ।

जानकीनाथ—[सं० पु०] श्रीरामचन्द्रजी ।

जानपद—[सं० पु०] लोक । देश । मनुष्य । निवासी । प्रान्तीय ।

जानु—[सं० पु०] घुटना । जाँघ और पिंडली के मध्य का भाग ।

जानुपाणि—[सं० वि०] घुटनों और हाथों से चलनेवाला ।

जानुफलक—[सं० पु०] खूँटी । घुटना । चकित ।

जाप—[सं० पु०] नाम, मंत्र आदि जपने की क्रिया ।

जापक—[सं० पु०] जाप करनेवाला ।

जामदग्न्य—[सं० पु०] परशुराम । जमदग्नि का पुत्र ।

जामवंत—[हि० पु०] जामवन्त ।

जायपत्री—[हि० स्त्री०] जावित्री ।

जायफल—[हि० पु०] अखरोट-सा एक छोटा सुगंधित फल जो औषधि और मसाले के काम आता है ।

जाया—[सं० स्त्री०] पत्नी । विवाहिता स्त्री ।

जारकर्म्म—[सं० पु०] व्यभिचार ।

जारजयोग—[सं० पु०] स्त्री के उपपति से पुत्र की उत्पत्ति के जानने का नियम ।

जारण—[सं० पु०] जलाना। भस्म कराना।

जारिणी—[सं० स्त्री०] व्यभिचारिणी।

जालंध—[सं० पु०] झरोखे की जाली।

जाल—[सं० पु०] किसी पक्षी, मछली या अन्य जन्तु को फँसाने का जालीदार यंत्र। समूह। इन्द्रजाल। जादू। प्रपंच। एक तोप।

जालगोणिका—[सं० स्त्री०] मथनी।

जालरंध्र—[सं० पु०]जाली का झरोखा।

जाला—[सं० पु०] आँख का एक रोग। मकड़ी का जाल।

जालिक—[सं० पु०] केवट। मछुआ। मकड़ी। मदारी। जादूगर।

जालिका—[सं० स्त्री०] जाली। समूह। दल।

जिगमिषा—[सं० स्त्री०] गमनेच्छा। जाने की अभिलाषा।

जिगमिषु—[सं० पु०] जाने की इच्छावाला।

जिगीषा—[सं०स्त्री०] विजयलालसा। जीतने की इच्छा।

जिगीषु—[सं० वि०] जीतने की इच्छावाला।

जिघत्सा—[सं० स्त्री०] भोजन की इच्छा।

जिघत्सु—[सं० वि०] भूखा। क्षुधित।

जिघांसु—[सं० वि०] वध करने की इच्छावाला। घातक। क्रूर।

जिघासा—[सं० स्त्री०] क्षुधा। भूख। भोजन की इच्छा।

जिजीविषा—[सं० स्त्री०] जीने की इच्छा।

जिजीविषु—[सं० वि०] जीवनेच्छुक।

जिज्ञासा—[सं० स्त्री०] पूछ-ताछ। प्राप्त करने की इच्छा।

जिज्ञासु—[सं० वि०] किसी रहस्य को जानने की इच्छा रखनेवाला। ज्ञानपिपासु।

जिज्ञास्य—[सं० वि०] जानने योग्य। पूछने योग्य।

जित्—[सं० वि०] जीतनेवाला।

जित—[सं० वि०] जीता हुआ।

जितशत्रु—[सं० पु०] विजयी।

जितामित्र—[सं० वि०] विष्णु। विजयी।

जिताष्टमी—[सं० स्त्री०] आश्विन कृष्ण अष्टमी के दिन पुत्रवती स्त्रियों का व्रत।

जिताहार—[सं० पु०] अन्न को स्वाधीन करनेवाला।

जितेन्द्रिय—[सं० वि०] इन्द्रियों को वश में करनेवाला। शांत।

जित्वर—[सं० वि०] विजयी।

जिह्वा—[सं० स्त्री०] रसना। जीभ।

जिह्वाग्र—[सं० पु०] जीभ की नोक।

जिह्वामूल—[सं० पु०] जीभ की जड़।

जिह्वामूलीय—[सं० पु०] वह वर्ण जिसका उच्चारण जिह्वामूल से हो।

जीमूत—[सं० पु०] एक दंडक वृत्त। सूर्य। इन्द्र। बादल। पर्वत। शाल्मली द्वीप का एक वर्ष।

जीमूतवाहन—[सं० पु०] इंद्र।

जीर्ण—[सं० वि०] टूटा-फूटा। पुराना। जर्जर।

जीर्णज्वर—[सं० पु०] पुराना बुखार। बारह दिन से अधिक का ज्वर।

जीर्णता—[सं० स्त्री०] बुढ़ापा। पुरानापन।

जीर्णोद्धार—[सं० पु०] पुनःसंस्कार। मरम्मत। सुधार।

जीव—[सं० पु०] आत्मा। प्राणियों का चेतन तत्व। प्राण। जीवन-तत्व। जीवधारी। राजा। मनुष्य। बृहस्पति।

जीवक—[सं० पु०] सेवक। ब्याज पर बसर करनेवाला। एक वृक्ष। क्षपणक। प्राण धारण करनेवाला।

जीवखानि—[सं० पु०] परमेश्वर।

जीवधारी—[सं० पु०] प्राणी। जन्तु।

जीवन—[सं० पु०] पानी। वायु। ज़िन्दगी। जन्म-मृत्यु के बीच का काल।

जीवन-चरित्र—[सं० पु०] किसी के जीवन की घटनाओं और सेवाओं का वर्णन।

जीवनधन—[सं० पु०] प्राण-प्रिय। सबसे प्रिय व्यक्ति या वस्तु। पति। स्वामी।

जीवनबूटी—[सं० स्त्री०] संजीवन मूरि। मरे को जीवित करनेवाली एक जड़ी।

जीवनमूरि—[सं० स्त्री०] जीवनबूटी। अति प्रिय वस्तु।

जीवनी—[सं० स्त्री०] जीवनभर का वृत्तांत। जीवन।

जीवनोपाय—[सं० पु०] जीविका। रोज़गार।

जीवनौषधि—[सं० पु०] जीवन की रक्षा करनेवाली औषधि।

जीवन्मुक्त—[सं० वि०] जीवित अवस्था में ही आत्मज्ञान द्वारा सांसारिक बन्धनों से मुक्त प्राणी।

जीवन्मृत—[सं० वि०] दुःखी। जिसका जीवन सुखी न हो।

जीवमन्दिर—[सं० पु०] शरीर।

जीवयोनि—[सं० स्त्री०] जीव। जन्तु।

जीवलोक—[सं० पु०] भूमि। जीवों का संसार।

जीवहत्या—[सं० स्त्री०] जीवों को मार डालना।

जीवा—[सं० स्त्री०] पृथ्वी। जीवन। धनुष की डोरी।

जीवात्मा—[सं० पु०] जीव। परमात्मा से भिन्न।

जीवाधार—[सं० पु०] हृदय। प्राणों का अवलंब।

जीवानुज—[सं० पु०] बृहस्पति के छोटे भाई। गर्ग मुनि।

जीवान्तक—[सं० पु०] राक्षस। जीवों को मारनेवाला। कसाई।

जीविका—[सं० स्त्री०] उद्यम। रोजगार।

जीवित—[सं० वि०] सजीव।

जीविता—[सं० वि०] जीवधारी।

जीवी—[सं० वि०] उद्यमी। जीववाला।

जीवेश—[सं० पु०] परमेश्वर। स्त्री का स्वामी।

जुगुप्सक—[सं० वि०] व्यर्थ निन्दा करनेवाला।

जुगुप्सा—[सं० स्त्री०] निन्दा। तिरस्कार।

जुगुप्सित—[सं० वि०] तिरस्कृत। निन्दित।

जूही—[हिं० स्त्री०] जुही। एक फूल।

जृंभ—[सं० पु०] जँभाई।

जृंभा—[सं० स्त्री०] जँभाई।

जृंभिका—[सं० वि०] एक बाण। जँभाई लेनेवाला।

जेय—[सं० वि०] विजय के योग्य। जीतने योग्य।

जैमिनि—[सं० पु०] एक ऋषि।

ज्ञ—[सं० पु०] एक संयुक्ताक्षर। ज्ञान। बोध। नीतिज्ञ।

ज्ञप्त—[सं० वि०] ज्ञापित। समझा हुआ। जाना हुआ।

ज्ञप्ति-[सं० स्त्री०] बुद्धि। समझदारी।

ज्ञात—[सं० वि०] विदित। प्रगट। जाना-समझा।

ज्ञातयौवना—[सं० स्त्री०] अपनी युवावस्था को जाननेवाली एक नायिका।

ज्ञातव्य—[सं० वि०] जानने योग्य।

ज्ञाता—[सं० वि०] जाननेवाला।

ज्ञाति—[सं० पु०] एक जाति के लोग। जाति।

ज्ञान—[सं० पु०] समझ। यथार्थ ज्ञान। तत्त्व ज्ञान। बोध।

ज्ञानकांड—[सं० पु०] उपनिषद्। वेद का एक अंग जिसमें ज्ञान का वर्णन है।

ज्ञानगम्य—[सं० पु०] जो ज्ञान से जाना जा सके।

ज्ञानगोचर—[सं० पु०] जो ज्ञान से जाना जाय।

ज्ञानयोग—[सं० पु०] ज्ञान-प्राप्ति द्वारा मुक्ति-प्राप्ति का साधन।

ज्ञानवान्—[सं० वि०] बुद्धिमान्। ज्ञानी।

ज्ञानवृद्ध—[सं० वि०] ज्ञान में बड़ा।

ज्ञानी—[सं० वि०] ज्ञाता। समझदार। बुद्धिमान।

ज्ञानेन्द्रिय—[सं० स्त्री०] विषयबोधक इन्द्रियाँ—आँख, नाक, कान आदि।

ज्ञापक—[सं० वि०] ज्ञात करानेवाला। सूचना देनेवाला।

ज्ञापन—[सं० पु०] समझाने या सूचना देने का काम।

ज्ञापित—[सं० वि०] सूचना दिया हुआ। समझाया हुआ।

ज्ञेय—[सं० वि०] जानने योग्य।

ज्यायान्—[सं० पु०] श्रेष्ठ। ज्येष्ठ।

ज्येष्ठ—[सं० वि०] बड़ा। जेठा।

ज्येष्ठा—[सं० स्त्री०] पतिप्रिया स्त्री। तीन तारों से बना एक नक्षत्र। छिपकली। बड़ी उँगली।

ज्येष्ठाश्रम—[सं० पु०] गृहस्थाश्रम। श्रेष्ठ आश्रम।

ज्योतिःशिखा—[सं० स्त्री०] एक विषम वर्णवृत्त।

ज्योति—[सं० स्त्री०] परमेश्वर। प्रकाश। लौ।

ज्योतिरिंगण—[सं० पु०] जुगनू। खद्योत।

ज्योतिर्मय—[सं० वि०] तेजोमय। कांतिमान्। चमकता हुआ।

ज्योतिर्लिंग—[सं० पु०] शिव। शंकर जी।

ज्योतिर्लोक—[सं० पु०] ध्रुवलोक।

ज्योतिर्विद्—[सं० पु०] ज्योतिषी।

ज्योतिर्विद्या—[सं० स्त्री०] ज्योतिष विद्या।

ज्योतिर्वेत्ता—[सं० पु०] ज्योतिषी।

ज्योतिश्चक्र—[सं० पु०] ग्रहों और राशियों का गोला या मण्डल।

ज्योतिष—[सं० पु०] खगोल विद्या। ज्योतिष शास्त्र।

ज्योतिषी—[सं० पु०] ज्योतिष-ज्ञाता।

ज्योतिष्क—[सं० पु०] नक्षत्रों, तारागणों और ग्रहों का समूह। चितावरी।

ज्योतिष्टोम—[सं० पु०] एक यज्ञ।

ज्योतिष्पथ—[सं० पु०] आकाश।

ज्योतिष्पुंज—[सं० पु०] तारागण।

ज्योतिष्मती—[सं० स्त्री०] रात्रि। कँगुनी। एक ओषधि।

ज्योतिष्मान्—[सं० वि०] प्रकाशवान्। [पु०] सूर्य्य।

ज्योतीरथ—[सं० पु०] ध्रुवतारा।

ज्योत्स्ना—[सं० स्त्री०] चन्द्रमा का प्रकाश। चाँदनी रात।

ज्यौतिष—[सं० वि०] ज्योतिष-संबंधी।

ज्वर—[सं० पु०] ताप। बुखार।

ज्वरांकुश—[सं० पु०] ज्वर की एक दवा।

ज्वरति—[सं० वि०] बुखार से पीड़ित।

ज्वरित—[सं० वि०] जिसे बुखार हो।

ज्वलंत—[सं० वि०] स्पष्ट। दीप्तिमान। प्रकट। प्रकाशित।

ज्वल—[सं० पु०] आग की लपट।

ज्वलन—[सं० पु०] दाह। लपट। जलन।

ज्वलित—[सं० वि०] प्रकाशित। जला हुआ।

ज्वारभाटा—[सं० पु०] समुद्र का बढ़ाव-घटाव।

ज्वालादेवी—[सं० स्त्री०] काँगड़ा की

प्रसिद्ध देवी-मूर्त्ति ।

ज्वालामुखी--[सं० पु०] वह पर्वत जिससे धूँआ, आग और भूगर्भ से पिघलते हुए पदार्थ निकलते हैं ।

—:ꕥ:—

झ

झंकार--[सं० स्त्री०] झन झन का शब्द । वाद्य यंत्रों या छोटे जन्तुओं के बोलने का शब्द ।

झंगा—[हि० पु०] छोटे बच्चों का अंगरखा ।

झंझट—[हि० स्त्री०] झगड़ा । बखेड़ा ।

झंझरी—[हि० स्त्री०] झरोखे की जाली ।

झंझा—[सं० पु०] आँधी । प्रचंड वायु ।

झझी—[हि० स्त्री०] फूटी हुई कौड़ी ।

झंडा—[हि० पु०] ध्वजा । पताका । चिह्न । निशान ।

झंडूला—[हि० वि०] बिना मुंडन का लड़का ।

झंप—[सं० पु०] छलांग । उछाल । छिपा ।

झंपन—[हि० वि०] ढक्कन ।

झ—[सं० पु०] वृहस्पति । आँधी ।

झक्कड़—[हि० पु०] आँधी ।

झख—[हि० स्त्री०] झींखने की क्रिया । छोटी मछली ।

झखकेतु—[सं० पु०] कामदेव ।

झखराज—[सं० पु०] मगर ।

झखी [हि० स्त्री०] मछली ।

झगला—[हि० पु०] अंगरखा । कोट ।

झंझर—[हि० पु०] सुराही । मिट्टी का पानी रखने का बर्तन ।

झटका—[हि० पु०] झोंका । धक्का । तलवार के एक ही हाथ में बकरे का गला काट देना ।

झड़प—[हि० स्त्री०] मुठभेड़ । क्रोध । झगड़ा ।

झड़बेरी—[हि० स्त्री०] वन के या झाड़ के बेर ।

झन्ना—[हि० पु०] सेव आदि गिराने का करछुल ।

झपताल—[हि० पु०] संगीत की एक ताल ।

झप्पान—[हि० पु०] एक प्रकार का पालकी ।

झबरा—[हि० वि०] जिसके बाल लम्बे और बिखरे हुए हों ।

झब्बा—[हि० पु०] गुच्छा ।

झमक—[हि० स्त्री०] प्रकाश । मटक कर चलने का ढंग ।

झमका—[हि० पु०] प्रताप । प्रभाव ।

झमकारा [हि० वि०] बरसनेवाले काले बादल ।

झर—[हि० स्त्री०] झड़ी । सोता । झरना । झुंड ।

झरना—[हि० पु०] निर्झर । सोता । छन्ना ।

झरी—[हि० स्त्री०] पानी की झड़ी । बाजार के सौदे पर कर ।

झर्झरी—[हि० स्त्री०] वेश्या । रंडी ।

झलक—[हि० स्त्री०] चमक । प्रतिबिंब । परछाईं ।

झलझलाना—[हि० क्रि०] चमचमाना । छलकना ।

झलमल—[हि० पु०] हलका प्रकाश ।

झलमला—[हि० वि०] चमकीला ।

झल्लाना—[हि० क्रि०] खीझना । चिढ़ना । क्रोध से बकना ।

झष—[सं० पु०] छोटी मछली ।

झषकेतु—[सं० पु०] कामदेव ।

झषनाथ—[सं० पु०] मगर । बड़ा मच्छ ।

झांकी—[हि० स्त्री०] दर्शन । झरोखा ।

झांझ—[हि० स्त्री०] कांसे का एक बाजा ।

झांझड़ी—[हि० स्त्री०] पैर का एक गहना ।

झांझन—[हि० स्त्री०] पैर का एक गहना ।

झाड़—[हि० पु०] घना वृक्ष । कांच का कंडील ।

झाड़खंड—[हि० पु०] वन । जंगल ।

झाड़फूँक—[हि० स्त्री०] रोग या प्रेत-बाधा दूर करने के लिए मंत्र पढ़कर फूँकना ।

झापड़—[हि० पु०] तमाचा । थप्पड़ ।

झायँ-झायँ—[हि० स्त्री०] बकवाद । वायु का शब्द । झन झन शब्द ।

झिल्लिका—[सं० स्त्री०] झींगुर । झिल्ली ।

झिल्ली—[हि० पु०] झींगुर । पतली खाल ।

झींक—[हि० पु०] छींका । पछतावा । चक्की का एक कौर ।

झींगुर—[हि० पु०] झिल्ली । एक कीड़ा ।

झीना—[हि० वि०] महीन । पतला । बारीक ।

झील—[हि० स्त्री०] सरोवर । बड़ा ताल ।

झुंड—[हि० पु०] समूह ।

झुटपुटा—[हि० पु०] संध्या काल ।

झुटुंग—[हि० वि०] जिसके बाल

खड़े और फैले हों।

झुमका—[हि॰ पु॰] झूमक। कर्ण-भूषण।

झुरझुरी—[हि॰ स्त्री॰] थोड़ा सा ज्वर।

झुरमुट—[हि॰ पु॰] पेड़ों का समूह। थोड़ा अंधेरा।

झुर्री—[हि॰ स्त्री॰] सिकुड़न।

झूठ—[हि॰ पु॰] असत्य।

झूठा—[हि॰ वि॰] मिथ्याभाषी। असत्य बोलनेवाला।

झूमर-[हि॰ पु॰] सिर का एक गहना।

झूला—[हि॰ पु॰] हिंडोला। रस्से या तारों का पुल।

झेंपना—[हि॰ क्रि॰] शरमाना। लज्जित होना।

झोंक—[हि॰ स्त्री॰] झुकाव। धूम-धाम से काम उठाना। उमंग।

झोंका—[हि॰ पु॰] हवा का झटका। पानी की लहर। सजावट।

झोटियाना—[हि॰ क्रि॰] चोटी पकड़ कर घसीटना।

झोल—[हि॰ पु॰] कढ़ी। शोरवा। शाक भाजी का रस।

झोली—[हि॰ स्त्री॰] थैली। घास बांधने का जाल।

—:※:—

ञ

ञ—हिन्दी की वर्णमाला के चवर्ग का पाँचवाँ व्यंजन जिसका उच्चारण नासिका है।

———

ट

टक—[हि॰ स्त्री॰] गड़ी हुई नज़र। स्थिर दृष्टि। बड़े तराजू का चौखूंटा पलड़ा।

टकटकी—[हि॰ स्त्री॰] स्थिर दृष्टि।

टकसाल—[हि॰ स्त्री॰] सिक्के ढालने का कारखाना। यह 'टङ्कशाला' का अपभ्रंश है।

टकसाली—[हि॰ वि॰] टकसाल का बना हुआ। खरा। चोखा। सर्वसम्मत। परीक्षित। प्रामाणिक। जँचा हुआ। पक्का। टकसाल का मालिक या निरीक्षक।

टङ्क—[सं पु॰] कोप। क्रोध। कोश। खजाना। खड्ग। तलवार। पत्थर काटने का औज़ार। टाँकी। एक तोल जो चार माशे की होती है। कोई २४ रत्ती की भी मानते हैं। जाँघ। अहङ्कार। कुदाल। एक बड़ा आम पहाड़ की चोटी। पत्थर का कटा हुआ टुकड़ा। राग-विशेष। काँटेदार पेड़। मुद्रा। सिक्का।

टङ्कक—[सं॰ पु॰] चाँदी का सिक्का। रुपया।

टङ्कण—[सं॰ पु॰] खार विशेष। सुहागा।

टङ्कशाला—[सं॰ स्त्री॰] टकसाल।

टङ्का—[सं॰ स्त्री॰] जङ्घा। जाँघ। तारा देवी।

टङ्कार—[सं॰ स्त्री॰] धनुष में चिल्ले चढ़ाने की आवाज़। विस्मयध्वनि। ठनाका। झङ्कार। कीर्ति।

टङ्किका—[सं॰ स्त्री॰] एक प्रकार का औज़ार जिससे पत्थर काटा जाता है। टाँकी। छेनी।

टङ्कित—[सं॰ त्रि॰] उल्लिखित। जो टाँका गया हो। धनुष की टङ्कार।

टट्टी—[हि॰ स्त्री॰] चिक। पर्दा। चिलमन। पाखाना। बरात की फुलवाड़ी। अंगूर आदि की बेलें चढ़ाने के लिए बाँस की टट्टियाँ।

टपका—[हि॰ पु॰] बूँद-बूँद गिरने का भाव। पककर आप से आप गिरा हुआ फल। वह पीड़ा जो ठहर ठहर कर उठती है। टीस। पशुओं का खुर पका रोग।

टपका टपकी—[हि० स्त्री०] बूँदा-बूँदी। भूलाभटका। एक-आध। किसी वस्तु की प्राप्ति के लिए मनुष्यों का एक पर एक टूटना। एक के बाद दूसरे का मरना।

टपना—[हि० क्रि०] बिना खाये-पिये पड़े रहना। व्यर्थ किसी दूसरे की आशा में बैठे रहना। आच्छादित करना। ढकना।

टर—[हि० स्त्री०] कर्कश शब्द। मेंढक की बोली। घमण्ड से भरी बात। हठ। जिद्द। अड़। क्षुद्र वचन।

टरकना—[हि० क्रि०] चला जाना। हट जाना।

टरकाना—[हि० क्रि०] हटाना। खिसकना। टाल देना। धताबताना।

टरटराना—[हि० क्रि०] व्यर्थ बात बोलना बक-बक करना। टर-टर करना।

टर्रा—[हि० वि०] धृष्ट। कटुवादी।

टर्राना—[हि० क्रि०] घमण्ड के साथ चिड़ चिड़ करना।

टर्रापन—[हि० वि०] कटुवादिता। ऐंठ कर बातें करना।

टलना—[हि० क्रि०] अपनी जगह से सरकना। हटना। मुल्तवी या स्थगित होना। पूरा न किया जाना। समय गुज़रना।

टसक—[हि० स्त्री०] ठहर-ठहर कर होने वाला दर्द। टीस।

टहना—[हि० पु०] पतली शाखा। पतली डाल।

टहनी—[हि० स्त्री०] देखो 'टहना'।

टहल—[हि० स्त्री०] शुश्रूषा। सेवा। नौकरी। चाकरी।

टहलनी—[हि० स्त्री०] दासी।

टहलाना—[हि० क्रि०] धीरे-धीरे चलाना। घुमाना। हवा खिलाना। हटा देना। दूर कर देना।

टहलुआ—[हि० पु०] नौकर। चाकर। सेवक।

टहोका—[हि० पु०] झटका। धक्का।

टाँकना—[हि० क्रि०] सिलाई द्वारा जोड़ना।

टाँका—[हि० पु०] जोड़ मिलानेवाली चीज। धातुओं के जोड़ने का मसाला। सिलाई का अलग अलग भाग। सिलाई। सीवन।

टाँगन—[हि० पु०] कम ऊँचाई का घोड़ा। पहाड़ी टट्टू।

टाँच—[हि० स्त्री०] दूसरे का काम बिगाड़नेवाली बात। टाँका।

टान—[हि० स्त्री०] विस्मृति। फैलाव। खिंचाव। मचान। टाँड़।

टापना—[हि० क्रि०] घोड़ों का पैर पटकना। निष्प्रयोजन इधर-उधर फिरना। कूदना। उछलना। निराहार पड़े रहना। पछताना।

टापू—[हि० पु०] चारों ओर पानी से घिरा हुआ भूखण्ड।

टाल—[हि० स्त्री०] भारी राशि। ऊँचा ढेर। लकड़ी-भुस आदि की बड़ी दूकान। टालने का भाव। गाय-बैल आदि के गले में बाँधने की घंटी।

टिकैत—[हि० पु०] राजा का उत्तराधिकारी। कुमार। युवराज। सरदार। अधिष्ठाता।

टिटिभ—[सं० पु०] टिटहरी नामक पक्षी।

टिट्टिभ—[सं० पु०] पक्षी-विशेष। टिटहरी।

टिड्डी—[हि० स्त्री०] एक प्रकार का उड़नेवाला कीड़ा जो दल बाँधकर उड़ता और वनस्पतियों को बहुत हानि पहुँचाता हैं। टीड़ी।

टिप्पणी—[हि० स्त्री०] देखो "टिप्पनी"।

टिप्पन—[सं० पु०] व्याख्या। टीका। जन्मकुण्डली।

टिप्पनी—[सं० स्त्री०] व्याख्या। टीका।

टिमटिमाना—[हि० क्रि०] कम प्रकाश देना। मंद मंद जलना। झिलमिलाना। मरणासन्न होना।

टीका—[सं० स्त्री०] व्याख्या-ग्रन्थ। किसी वाक्य या पद का अर्थ स्पष्ट करनेवाला वाक्य।

टीका—[हि० पु०] तिलक। विवाह सम्बन्ध स्थिर करने की एक रीति। राज्याभिषेक। भेंट। चिह्न। दाग। धब्बा। प्लेग या शीतला का टीका लगाना।

टीकाकार—[सं० पु०] व्याख्याकार। वह जो किसी ग्रन्थ का अर्थ लिखता है।

टीप—[हि० पु०] टङ्कार। ध्वनि। घोर शब्द। जोर की तान। स्मरण रखने के लिए किसी बात को लिख लेना। नोट कर लेना। वह लकीर जो बिना पलस्तर की दीवार में ईंटों के जोड़ों में मसाला देकर बनाई जाती है।

टीप-टाप—[हि० स्त्री०] दिखावट। ठाट-बाट।

टीपना—[हि० क्रि०] अङ्कित करना। दर्ज कर लेना। लिख लेना।

टीम-टाम—[हि० स्त्री०] बनावट। शृङ्गार। सजावट।

टीला—[हि० पु०] पृथिवी के तल से ऊँचा भाग। मिट्टी या बालू का ऊँचा ढेर। छोटी पहाड़ी।

टीस—[हि० स्त्री०] ठहर ठहर कर होनेवाली पीड़ा। टसक। चसक।

टुइयाँ—[हि० पु०] छोटी जाति का तोता। नाटा। बौना।

टुक—[हि० वि०] किञ्चित्। तनक। जरा। थोड़ा।

टुच्चा—[हि० वि०] तुच्छ। नीच।

टुटपुँजिया—[हि० पु०] थोड़ी पूंजी-वाला। कम औकात का।

टुटरूँटूँ—[हि० पु०] पण्डुकी की बोली। अकेला। कमज़ोर। दुबला-पतला।
टूँगना—[हि० क्रि०] कोमल पत्तियों को दाँत से काटना। कुतरना। कुतर कर चबाना।
टेक—[हि० स्त्री०] आश्रय। अवलम्ब। दृढ़ सङ्कल्प। हठ। संस्कार। आदत। गीत का बार-बार गाया जानेवाला पद। स्थायी।
टेर—[हि० स्त्री०] गाने में ऊँचा स्वर। तान। टीप। पुकारने की आवाज़। बुलाहट। निर्वाह। गुज़र।
टेरना—[हि० क्रि०] तान लगाना। ज़ोर से गाना। पुकारना। बुलाना। पूरा करना। निबाहना। बिताना। गुज़रना।
टेव—[हि० स्त्री०] अभ्यास। आदत। बान।
टेवा—[हि० स्त्री०] जन्मपत्री। जन्म-कुण्डली। लग्नपत्रिका।
टोक—[हि० स्त्री०] प्रश्न आदि द्वारा किसी कार्य में बाधा। पूछ-ताछ। कुदृष्टि का प्रभाव। नज़र। बीच में बोल उठना।
टोटका—[हि० पु०] तान्त्रिक प्रयोग। यन्त्र। मन्त्र। टोना। लटका।
टोटकहाई—[हि० स्त्री०] जादू करने-वाली।
टोनहाई—[हि० स्त्री०] जादू करने-वाली। नज़र लगानेवाली। वह स्त्री जो झाड़-फूँक करती है।
टोना—[हि० पु०] जन्त्र-मन्त्र का प्रयोग। जादू।
टोला—[हि० पु०] आदमियों की बड़ी बस्ती का एक भाग। मुहल्ला। पत्थर या ईंट का टुकड़ा। रोड़ा।
टोली—[हि० स्त्री०] समूह। झुण्ड। जत्था। मण्डली। छोटा मुहल्ला। सिल।
टोह—[हि० स्त्री०] अन्वेषण। खोज। तलाश। देखभाल।

ठ

ठण्ठ—[सं० वि०] ठूँठ। सूखा पेड़।
ठण्ड—[हि० स्त्री०] सर्दी। जाड़ा।
ठण्डक—[हि० स्त्री०] देखो "ठण्ड"।
ठण्डा—[हि० वि०] शीतल। सर्द। उद्गाररहित। शान्त। नपुंसक। नामर्द।
ठकुरसुहाती—[हि० स्त्री०] दूसरों की प्रसन्नता के लिए कही जानेवाली बात। खुशामद।
ठक्कर—[हि० स्त्री०] देखो "ठक्कुर"।
ठक्कुर—[सं० पु०] ब्राह्मणों की एक उपाधि। वह मनुष्य जिसका सम्मान ब्राह्मणों और देवताओं जैसा किया जाय। देव-प्रतिमा।
ठग—[हि० पु०] धूर्त्त। छली।
ठगविद्या—[हि० स्त्री०] धूर्त्तता। धोखेबाज़ी। छल।
ठट—[हि० पु०] समूह। पुंज। भीड़। पंक्ति। रचना। सजावट।
ठटना—[हि० क्रि०] स्थिर करना। ठहराना। तैयार करना। सजाना। डटना। अड़ना।
ठटरी—[हि० स्त्री०] अस्थिपञ्जर। हड्डियों का ढाँचा। अरथी।
ठट्ट—[हि० पु०] समूह। झुण्ड। भीड़।
ठट्ठा—[हि० पु०] उपहास। हँसी।
ठठोली—[हि० स्त्री०] उपहास। हँसी। दिल्लगी।
ठनकना—[हि० क्रि०] ठहर-ठहरकर रोना। ठन-ठन शब्द करना।
ठनगन—[हि० क्रि०] वह हठ जो पुरस्कार पानेवाले विवाहादि मंगल अव-सरों पर करते हैं।
ठनठनगोपाल—[हि०] निर्धन मनुष्य। गरीब आदमी।
ठनना—[हि० क्रि०] निश्चित होना। छिड़ना। स्थिर होना।
ठनाका—[हि० पु०] ठन-ठन शब्द। ठनकार।
ठप्पा—[हि० पु०] छापा। वह साँचा जिससे गोटे-पट्टे पर बेल-बूटे उभारे जाते हैं। एक प्रकार का चौड़ा नक्काशी-दार गोटा।
ठमक—[हि० क्रि०] चलने में हाव-भाव दिखाना। लचक के साथ चलना।
ठर्रा—[हि० पु०] मोटा सूत। कम पकी ईंट। महुए की घटिया शराब। बन्द या तनी। भद्दा और बेडौल मोती।
ठवन—[हि० स्त्री०] एक स्थिति। बैठक। मुद्रा। आसन।
ठस—[हि० वि०] कठिन। ठोस। कड़ा। गाढ़ा। कफ़। सुस्त। आलसी। जो खोटा होने के कारण ठीक आवाज़ न दे। कंजूस। मन्द बुद्धिवाला।

ठसक—[हि० स्त्री०] अभिमानपूर्ण चेष्टा। नखरा। शान। दर्प। तड़क-भड़क।

ठसका—[हि० पु०] सूखी खाँसी। ठोकर। धक्का।

ठहरौनी—[हि० स्त्री०] क़रारदाद। वह प्रतिज्ञा जो विवाह में लेन-देन के संबंध में की जाती है।

ठहाका—[हि० पु०] अट्टहास। जोर की हँसी।

ठाँव—[हि० पु०] स्थान। जगह। ठिकाना।

ठाकुर—[हि० पु०] देवमूर्ति। देवता। ईश्वर। पूज्य व्यक्ति। नायक। सरदार। ज़मींदार। गाँव का मालिक। क्षत्रियों की उपाधि और नाइयों की उपाधि।

ठाकुरद्वारा—[हि० पु०] देवालय। देवस्थान। पुरी में जगन्नाथ का मन्दिर।

ठाट—[हि० पु०] शृङ्गार। वेष-विन्यास। सजावट। धूम-धाम। सुख। आराम। शैली। तरीका। आयोजन। तैयारी। सामग्री। सामान। कुश्ती में खड़े होने का ढङ्ग। वह मांसपिंड जो बैल या साँड़ की गर्दन पर होता है। छप्पर के लिए बाँस या लकड़ियों से बनाया गया टट्टर।

ठाठर—[हि० पु०] नदी का गहरा स्थान जहाँ पर लग्गी या बल्ली न लगती हो।

ठान—[हि० स्त्री०] दृढ़ संकल्प। चेष्टा। अन्दाज।

ठानना—[हि० क्रि०] स्थिर करना। पक्का करना। किसी काम को मुस्तैदी से शुरू करना।

ठाला—[हि० पु०] देखो "ठाली"।

ठाली—[हि० पु०] बेकाम, निरुद्यम।

ठिंगना—[हि० पु०] कम ऊँचाई का। छोटे कद का। नाटा।

ठिकाना—[हि० पु०] स्थान। ठौर। जगह। पता। निर्वाह करने का ठौर। प्रमाण। ठीक। प्रबन्ध। आयोजन। अन्त। हद।

ठिठकना—[हि० क्रि०] एकदम ठहर जाना। स्तम्भित होना। न हिलना न डोलना।

ठिठरना—[हि० क्रि०] अधिक शीत से संकुचित होना। जाड़े से अकड़ना।

ठिनकना—[हि० क्रि०] छोटे बालकों का ठहर-ठहरकर रोने के जैसा शब्द निकालना। रोने का नखरा करना।

ठिर—[हि० स्त्री०] कठिन शीत। भयङ्कर सर्दी।

ठिरना—[हि० क्रि०] अधिक शीत से सिकुड़ना। जाड़े से अकड़ना।

ठिलिया—[हि० स्त्री०] गगरी। छोटा घड़ा।

ठीक—[हि० वि०] प्रामाणिक। उचित। सच। सही। शुद्ध। उपयुक्त। सज्जन। सीधा। निर्दिष्ट। निश्चित। पक्का।

ठीकरा—[हि० पु०] खपरा। भिक्षापात्र।

ठीकरी—[हि० स्त्री०] मिट्टी के बर्तन का टूटा टुकड़ा। निकम्मी चीज़। चिलम में रक्खा जानेवाला मिट्टी का तवा।

ठुण्ठ—[हि० पु०] सूखा पेड़। शुष्क वृक्ष। लूला।

ठुमक—[हि० संज्ञा] नखरेबाजी। ठसकभरी।

ठुमकना—[हि० क्रि०] कूदते हुए चलना। पैर के घुँघरू बजाते हुए चलना।

ठुमरी—[हि० स्त्री०] छोटा सा गीत। इसमें चार मात्रा का ताल लगता है, दो ताल और दो ठाँ।

ठुर्री—[हि० स्त्री०] वह दाना जो भूनने पर भी खिला न हो।

ठूँठ—[हि० पु०] सूखा पेड़। कटा हुआ हाथ। फ़सल को नष्ट करनेवाला एक कीड़ा।

ठेंगा—[हि० पु०] अँगूठा। सोटा। डंडा। चुङ्गी का महसूल। जितेन्द्रिय।

ठेंगुर—[हि० पु०] नटखट पशुओं के गले में बाँधने का लकड़ी का कुन्दा।

ठेका—[हि० पु०] बैठक। अड्डा। तबले की जोड़ी में बायाँ। ठोकर। धक्का। कुछ धन आदि के बदले में किसी काम को पूरा करने का जिम्मा। किसी वस्तु या जायदाद को कुछ काल के लिए दूसरे को इस शर्त पर सौंप देना कि वह उनकी आमदनी वसूल करके निश्चित धन-राशि उनके मालिक को देता जाय।

ठेठ—[हि० वि०] निपट। बिलकुल। शुद्ध। ख़ालिस।

ठेस—[हि० स्त्री०] आघात। चोट। ठोकर।

ठोट—[हि० पु०] जड़। मूर्ख। गावदी।

ठोस—[हि० पु०] जो पोला या खोखला न हो। दृढ़। मज़बूत।

ठौर—[हि० पु०] स्थान। ठिकाना। अवसर। दाव-घात।

ड

डङ्क—[हि० पु०] वह विषैला काँटा जो भिड़, बिच्छू आदि की पूँछ में रहता है। निब। कलम की जीभ।

डङ्का—[हि० पु०] ताँबे या लोहे के बर्तनों पर चमड़ा मढ़कर बनाया गया एक प्रकार का बाजा जो पुराने समय में युद्धक्षेत्र में बजाया जाता था। जहाज का लंगर डालने का स्थान।

डङ्किनी—[हि० स्त्री०] देखो "डाकिनी"

डङ्गर—[हि० पु०] मवेशी। चौपाया।

डङ्गरी—[हि० स्त्री०] लम्बी ककड़ी। एक प्रकार की चुड़ैल। डायन। एक प्रकार का मोटा बेंत।

डण्ड—[हि० पु०] लाठी। सोटा। डंडा। बाहुदण्ड। एक प्रकार का व्यायाम।

डण्डी—[हि० स्त्री०] छोटी पतली-लंबी लकड़ी। तराजू की लकड़ी जिसमें पलड़े बाँधे जाते हैं। पत्ता, फूल या फल लगा हुआ लम्बा डण्ठल। फूल के नीचे का लम्बा हिस्सा। पहाड़ों पर चलनेवाली एक प्रकार की सवारी।

डकैत—[हि० पु०] बलपूर्वक दूसरों का माल छीननेवाला लुटेरा।

डग—[हि० स्त्री०] कदम। पैंड़।

डगमगाना—[हि० क्रि०] इधर-उधर हिलना-डोलना। लड़खड़ाना। किसी बात पर कायम न रहना।

डगर—[हि० स्त्री०] मार्ग। रास्ता।

डगा—[हि० पु०] दुबला-पतला घोड़ा।

डपट—[हि० स्त्री०] डाँट। झिड़की। सरपट चाल।

डपोरशंख—[हि० पु०] शेखीखोर। डींग हाँकनेवाला। युवक होकर बच्चों की-सी बातें करनेवाला।

डफ—[हि० पु०] एक चमड़ा मढ़ा हुआ बाजा।

डफली—[हि० स्त्री०] छोटा डफ। खंजड़ी।

डबडबाना—[हि० क्रि०] अश्रु-पूर्ण होना। आँखों में आँसू भर आना।

डबरा—[हि० पु०] कुण्ड। हौज। खेत जोतते जाने में छूटा हुआ कोना।

डबरी—[हि० स्त्री०] छोटा गड्ढा।

डभका—[हि०पु०] वह पानी जो कुएँ से तुरन्त निकाला गया हो।

डमरू—[सं० पु०] वाद्य-विशेष। एक बाजा। डौरू।

डमरूमध्य—[सं० पु०] भूमि का वह पतला भाग जो बड़े भूमिखण्डों को मिलाता हो।

डमरूयन्त्र—[सं० पु०] औषधियाँ तैयार करने का यन्त्र-विशेष।

डम्बर—[सं० पु०] समूह। आयोजन। आडम्बर। धूमधाम। विस्तार। विलास। चँदोवा।

डयन—[सं० कर्म०] पालकी। डोली। आकाश में उड़ने की क्रिया।

डरपोक—[हि० पु०] भीरु। कायर।

डरावना—[हि० वि०] भयङ्कर। भयानक।

डसना—[हि० क्रि०] साँप आदि विषैले जीव का काटना। डंक मारना।

डहकना—[हि० क्रि०] छल करना। धोखा देना। ललचाना। बिलखना। फैलाना। गरजना।

डहडहा—[हि० वि०] लहलहाता हुआ। हरा-भरा। ताजा। आनन्दित।

डहन—[हि० पु०] पंख। पर। डैना।

डहर—[हि० पु०] पथ। मार्ग। आकाशगङ्गा। झील।

डाँगर—[हि० पु०] चौपाया। कृश। दुबला-पतला। मूर्ख। जड़।

डाँगा—[हि० पु०] जहाज के मस्तूल में आड़ी लगी हुई धरन जिस पर रस्सियाँ फैलाई जाती हैं।

डाँड़—[हि० पु०] डंडा। सीधी लकड़ी। वह लम्बा डंडा जिससे नाव खेई जाती है। चप्पू। रीढ़ की हड्डी। जुरमाना। कम ऊँचाई की दीवार जो आड़ आदि के लिए उठाई जाती है।

डाँड़ना—[हि० क्रि०] जुरमाना। अर्थदण्ड।

डाँडी—[हि० पु०] लम्बा पतला काठ। तराजू की डंडी। फूल या फल लगा हुआ लम्बा डंठल। फूल के नीचे का भाग जो लम्बा और पतला होता है। पालकी के दोनों ओर निकले हुए लम्बे डंडे जिन पर कहार कंधा लगाकर चलते हैं। पालकी। पहाड़ी सवारी। झप्पान।

डाँवरा—[हि० पु०] पुत्र। लड़का। बेटा।

डाँवरी—[हि० स्त्री०] पुत्री। कन्या। बेटी।

डाँवरू—[हि० पु०] बाघ का बच्चा।

डाँवाडोल—[हि० वि०] चञ्चल। विचलित।

डाँस—[हि०पु०] बड़ा मच्छर। दंश।

डाकिनी—[सं० स्त्री०] काली के एक गण का नाम। पिशाची। डायन। शिव और पार्वती का अनुचर।

डाकी—[हि०पु०] बहुत खानेवाला। पेटू। वमन। कै।

डाकोर—[हि० पु०] विष्णु भगवान्। ठाकुर। इस शब्द का प्रयोग केवल

गुजरात में होता है।

डाबर—[हि॰ पु॰] नीची ज़मीन। पोखर। गड्ढा। हाथ धोने और कुल्ली करने का बर्तन। मैला पानी या मटमैला और गदला।

डामर—[सं॰ पु॰] महादेवकथित तन्त्र-शास्त्र-विशेष। योगडामर, शिव-डामर, दुर्गडामर, सारस्वतडामर आदि। चमत्कार। आडम्बर। ठाट-बाट।

डायन—[हि॰ स्त्री॰] पिशाचिनी। डाकिनी। कुरूप औरत।

डार—[हि॰ स्त्री॰] शाखा। डाल।

डाल—[हि॰ स्त्री॰] शाखा।

डाली—[हि॰ स्त्री॰] फूल-फल या खाने-पीने की वस्तुएँ जो डलिया में सजाकर किसी को भेंट की जायँ। टोकरी। चंगेरी।

डासन—[हि॰ पु॰] बिछौना। बिस्तर।

डाह—[हि॰ स्त्री॰] ईर्ष्या। जलन।

डिङ्गल—[हि॰ वि॰] राजपूताने की एक भाषा जिसमें भाट और चारण काव्य तथा वंशावली लिखते हैं। दूषित। घृणित। नीच।

डिगना—[हि॰ क्रि॰] अपनी बात पर कायम न रहना। प्रतिज्ञा तोड़ना। स्थान छोड़ना।

डिग्गी—[हि॰ स्त्री॰] तालाब। पोखरा। हिम्मत। साहस।

डिठौना—[हि॰ पु॰] काजल का टीका जो स्त्रियाँ बच्चों के माथे पर नजर से बचाने के लिए लगा देती हैं।

डिडका—[सं॰ स्त्री॰] मुँहासे जो यौवन काल में मुँह पर निकलते हैं।

डिण्डिम—[सं॰ पु॰] बाजा विशेष। डिमडिमी। डुगडुगी। करौंदा।

डिम—[सं॰ पु॰] नाटक का एक भेद।

डिम्ब—[सं॰ पु॰] भय। डर। कलल अर्थात गर्भाशय में रज और वीर्य की एक अवस्था। फेफड़ा। अण्डा। उपद्रव। कीड़ा। कीड़े का छोटा बच्चा।

डिम्बज—[सं॰ पु॰] अण्डज। वह जिसकी उत्पत्ति अण्डे से हो।

डिम्बिका—[सं॰ स्त्री॰] मदमाती स्त्री। जल की परछाईं। स्योनाक। पारा।

डिम्भ—[सं॰ पु॰] शिशु। बच्चा। मूर्ख।

डिम्भचक्र—[सं॰ पु॰] मनुष्यों के शुभाशुभ का निर्णय करनेवाला एक चक्र।

डिम्भज—[सं॰ त्रि॰] जिसकी उत्पत्ति अण्डे से हो।

डिम्भर—[सं॰ स्त्री॰] स्त्री। शिशु। कौए का बच्चा।

डींग—[हि॰ स्त्री॰] अभिमान की बात। शेखी।

डीठ—[हि॰ स्त्री॰] दृष्टि। नजर। ज्ञान। सूझ।

डीठबन्ध—[हि॰ पु॰] इन्द्रजाल। नजरबन्दी। इन्द्रजाल करनेवाला। जादूगर।

डीन—[सं॰ क्ली॰] पक्षियों की गति। उड़ान। आगमशास्त्र।

डील—[हि॰ पु॰] शरीर का विस्तार। कद। देह। जिस्म। व्यक्ति। प्राणी।

डुक—[हि॰ पु॰] मुक्का। घूँसा।

डुण्डु—[सं॰ पु॰] द्विमुख सर्प। दो मुँहवाला साँप। दुमुही।

डुण्डुम—[सं॰ पु॰] पानी में रहने-वाला साँप। पनिहा साँप, इसमें बहुत कम विष होता है।

डुबकी—[हि॰ स्त्री॰] गोता। बुड़की। एक प्रकार का बटेर। पक्षी।

डैना—[हि॰ पु॰] पक्ष। पंख। पर।

डोंगा—[हि॰ स्त्री॰] वह नाव जिसमें पाल नहीं रहता।

डोंगी—[हि॰ स्त्री॰] बिना पाल की छोटी नाव।

डोई—[हि॰ स्त्री॰] बड़ी कलछी जो लकड़ी में जड़ी रहती है। यह कड़ाही में से घी, दूध या चाशनी निकालने के काम आती है।

डोम—[हि॰ पु॰] भारतवर्ष की एक अस्पृश्य और नीच जाति।

डोला—[हि॰ पु॰] शिविका। पालकी। डोली।

डोली—[हि॰ स्त्री॰] देखो 'डोला'।

डौंड़ी—[हि॰ स्त्री॰] घोषणा। मुनादी।

डौल—[हि॰ पु॰] प्रारम्भिक रूप। ढाँचा। ठाट। ढव। शैली। उपाय। रंग-ढंग। खेतों की मेंड़।

ड्योढ़ी—[हि॰ स्त्री॰] फाटक। दर-वाजा। चौखट। पौरी।

ड्योढ़ीवान—[हि॰ पु॰] द्वारपाल। दरबान।

ढ

ढँग—[हि० पु०] रीति। तरीका। रचना। गढ़न। युक्ति। उपाय। लक्षण। आसार। स्थिति। अवस्था।

ढंगउजाड़—[हि० पु०] घोड़ों के दुम के नीचे की एक भौंरी। ऐसे चिह्नवाले घोड़े ऐबी समझे जाते हैं।

ढिंढोरा—[हि० पु०] डुगडुगी। डौंड़ी। घोषणा। मुनादी।

ढकोसला—[हि० पु०] आडम्बर। पाखण्ड। मिथ्या जाल।

ढक्का—[सं० स्त्री०] नगाड़ा। बड़ा ढोल। डंका।

ढक्कण—[सं० क्ली०] शैवाल। सिवार।

ढचर—[हि० पु०] आयोजन। प्रपञ्च। आडम्बर। बहुत दुबला-पतला और बूढ़ा।

ढटींगड़—[हि० पु०] हृष्ट-पुष्ट मोटा-ताजा।

ढरका—[हि० पु०] आँख का एक रोग। इसमें आँख से पानी बहा करता है।

ढर्रा—[हि० पु०] मार्ग। पथ। रास्ता। शैली। ढंग। तरीका। आचरण। पद्धति। चाल-चलन।

ढहाना—[हि० क्रि०] ध्वस्त करना। गिराना।

ढाँचा—[हि० पु०] किसी रचना की प्रारम्भिक अवस्था। पञ्जर। ठठरी। प्रकार। भाँति।

ढाक—[हि० पु०] पलाश। टेसू। एक वृक्ष-विशेष।

ढाटा—[हि० पु०] दाढ़ी बाँधने की कपड़े की पट्टी।

ढाढस—[हि० पु०] धैर्य। आश्वासन। सान्त्वना। तसल्ली। दृढ़ता। साहस।

ढाढ़ी—[हि० पु०] एक प्रकार की नीच जाति। इस जाति के लोग जन्मोत्सव पर लोगों के यहाँ जाकर बधाई आदि के गीत गाते हैं।

ढाबा—[हि० पु०] रोटी की दुकान।

ढाल—[सं० पु०] चमड़े या धातु का बना एक अस्त्र जिससे तलवार, भाले आदि का वार रोका जाता है। यह थाली के आकार की गोल होती है और गेंड़े के पुट्ठे, कछुए की खोपड़ी, धातु आदि से बनाई जाती है। उतार। ढलाव। तिरपट ज़मीन। तरीका। ढंग।

ढालना—[हि० क्रि०] एक बर्तन से दूसरे बर्तन में गिराना। उड़ेलना। शराब पीना। पिघली हुई धातु को साँचे में डालकर कोई चीज़ बनाना।

ढिंढोरना—[हि० क्रि०] खोजना। तलाश करना।

ढिग—[हि० क्रि० वि०] समीप। निकट। नजदीक।

ढिठाई—[हि० स्त्री०] धृष्टता। गुस्ताखी। निर्लज्जता। अनुचित साहस।

ढीठ—[हि० पु०] धृष्ट। बेअदब। शोख। उद्दण्ड। दुस्साहसी।

ढुण्ढा—[सं० स्त्री०] राक्षसी विशेष। यह हिरण्यकशिपु की बहन थी। शिवजी के बर के कारण यह अग्नि में भी न जलती थी। जब हिरण्यकशिपु प्रह्लाद को मारने में असफल हुआ तो उसने उसे ढुण्ढा की गोद में अग्नि में बैठाया। पुराणों में लिखा है कि ऐसा करने पर भी प्रह्लाद तो नहीं जला परन्तु ढुण्ढा भस्मीभूत हो गई।

ढुण्ढि—[सं० पु०] गणेश, जो सब प्रकार की सिद्धियाँ प्रदान करते हैं।

ढेंक—[हि० पु०] एक पक्षी जो जल के किनारे रहता है।

ढेंकली—[हि० स्त्री०] एक यन्त्र जिसके द्वारा कुओं से पानी निकालते हैं। एक प्रकार की सिलाई। अर्क निकालने का भबका।

ढोंग—[हि० पु०] पाखण्ड। आडम्बर। ढकोसला।

ढोटा—[हि० पु०] पुत्र। बेटा। बालक। लड़का।

ढोना—[हि० क्रि०] किसी वस्तु को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना।

ढोर—[हि० पु०] चौपाया। मवेशी।

ढोरा—[हि० पु०] एक प्रकार की ऊँची मेंड़ जो खेत या बाग के चारों ओर बनाई जाती है।

ढोल—[सं० पु०] एक वाद्य यन्त्र। कान का पर्दा। रागविशेष।

ढोला—[हि० पु०] कृमि-विशेष। एक प्रकार का गीत। प्रियतम। पति।

ढोली—[हि० स्त्री०] पानों की गड्डी। हँसी-दिल्लगी।

ण

ण—[सं०पु०] बिन्दुदेव। एक बुद्ध का नाम। भूषण। निर्णय। शिव का एक नाम। पानी का घर। दान। ज्ञान। गुणशून्य।

णगण—[सं० पु०] दो मात्राओं का एक मात्रिक गण।

णमोकार मन्त्र—[सं० पु०] जैनों का महामन्त्र।

ण्य—[सं० पु०] ब्रह्मलोकस्थित एक सरोवर।

णट्—[सं० क्रि०] नाचना। नट का काम करना।

णद्—[सं० क्रि०] अव्यक्त शब्द करना। अस्पष्ट बोलना।

णश्—[हि० क्रि०] अदर्शन होना। छिपना।

णह्—[सं० क्रि०] बाँधना।

—:*:—

त

तईं—[हि० पु०] प्रति। को। लिए।

तई—[हि० स्त्री०] कम गहराई की चपटे तले की कड़ाही जो जलेबी आदि बनाने के काम आती है।

तण्ड—[हि० पु०] नृत्य। नाच।

तन्त—[हि० पु०] प्रबल कामना। इच्छा। अधीनता। एक प्रकार का बाजा। क्रिया। तन्त्रशास्त्र। सार।

तमार—[हि० स्त्री०] घुमेर सिर का चक्कर।

तम्बूरा—[हि० पु०] एक बाजा जो सितार की तरह का होता है।

तक—[हि० अ०] पर्यन्त। [स्त्री०] बड़ी तराजू।

तकन—[हि० स्त्री०] दृष्टि। नज़र। देखना।

तकना—[हि० क्रि०] देखना। अवलोकन करना। निहारना।

तकरी—[सं० स्त्री०] दुराचारिणी स्त्री।

तकिल—[सं० त्रि०] धूर्त। चालबाज। ओषधि।

तक्र—[सं० पु०] चतुर्थांश जल के साथ मथा हुआ दही। मठा। छाछ।

तक्रपिण्ड—[सं० पु०] फटा हुआ दूध। छेना।

तक्रसार—[सं० पु०] मक्खन।

तक्ष—[सं० पु०] एक राजा का नाम (रामचन्द्र के भाई भरत के बड़े पुत्र)। तक्षक के एक पुत्र का नाम। पतला करने की क्रिया।

तक्षक—[सं० पु०] आठ नागों में से एक। सर्प-विशेष। विश्वकर्मा। छाँटने या छीलनेवाला—बढ़ई।

तक्षण—[सं० क्ली०] रन्दा करना। छीलना। लकड़ी, पत्थर आदि गढ़कर मूर्तियाँ बनाने का काम।

तक्षणी—[सं० स्त्री०] रन्दा। लकड़ी को छीलकर चिकनी करने का औजार-विशेष।

तक्षशिला—[सं० स्त्री०] देश-विशेष। भरत के पुत्र तक्ष की इस स्थान पर राजधानी थी।

तक्षा—[सं० पु०] बढ़ई। विश्वकर्मा। चित्रा नक्षत्र।

तगड़ा—[हि० वि०] बलवान। मज़बूत। सबल। अच्छा और बड़ा।

तगण—[सं० पु०] छन्दःशास्त्र में तीनों वर्णों का एक समूह। इसमें पहले दो वर्ण गुरु और तीसरा लघु होता है। इसका सांकेतिक चिह्न (SSI) है।

तगार—[हि० पु०] चूना या गारा सानने का गड्ढा। गारा। खाँड को साफ करके बनाया गया शरबत जो चाशनी बनाने के उपयोग में आता है।

तगारी—[हि० स्त्री०] देखो 'तगार'।

तङ्क—[सं० पु०] पत्थर काटने की छेनी। टाकी। दुःखी जीवन। वियोगजन्य दुःख। भय। डर। पहनने का कपड़ा।

तङ्का—[?] एक प्रकार का सिक्का। मुद्रा-विशेष। वृत्ति। वेतन।

तचाना-[हि० क्रि०] जलाना। तपाना।

तच्छील—[सं०] फल की अपेक्षा न करके स्वभावानुसार काम करना।

तजना—[हि० क्रि०] त्यागना। छोड़ना।

तज्ज—[सं० पु०] उसी से उत्पन्न। उसी में लगा हुआ। शीघ्र। तुरन्त।

तज्ञ—[सं० त्रि०] तत्त्वज्ञ। ज्ञानी।

तटङ्क—[हि० पु०] कर्णफूल। कान में पहनने का आभूषण-विशेष।

तट—[सं० स्त्री०] किनारा। कूल। ऊँची जमीन। शिव। उन्नत। उठा हुआ।

तटग—[सं० पु०] तड़ाग। तालाब। सरोवर। तालाब पर जानेवाला।

तटस्थ—[सं० त्रि०] समीप रहनेवाला। किनारे पर रहनेवाला। उदासीन। निरपेक्ष। व्यस्त। चमत्कृत।

तटाक—[सं० पु०] तड़ाग। सरोवर। तालाब।

तटाघात—[सं०] पशुओं का अपने सींगों या दाँतों से जमीन खोदना।

तटिनी—[सं० स्त्री०] नदी। सरिता।

तटी—[सं०] तीर। तट। किनारा। नदी। तराई। घाटी।

तट्य—[सं० पु०] शिव। महादेव।

तड़का—[हि० पु०] प्रभात। प्रातःकाल। छौंक। बघार।

तड़ग—[सं० पु०] तड़ाग। सरोवर।

तड़पना—[हि० क्रि०] व्याकुल होना। छटपटाना।

तड़ाक—[सं० पु०] तड़ाग। तालाब।

तड़ाक—[हि० पु०] किसी वस्तु के फटने का शब्द। शीघ्र। तुरन्त। चटपट।

तड़ाका—[सं० स्त्री०] नदी और समुद्र का तट भाग। आघात। चोट। प्रभा। दीप्ति।

तड़ाग—[सं० पु०] तालाब। पुष्कर। हरिण पकड़ने का फन्दा।

तड़ागज—[सं० पु०] एक प्रकार का कन्द।

तड़ावा—[हि० स्त्री०] आडम्बर। ऊपरी तड़क-भड़क। धोखा। कपट। छल।

तड़ित्—[सं० स्त्री०] विद्युत। बिजली।

तड़ित्पति—[सं० पु०] मेघ। बादल।

तड़ित्प्रभा—[सं० स्त्री०] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

तड़िन्मय—[सं० त्रि०] तड़ित स्वरूप। बिजली के सदृश।

तड़िया—[हि० स्त्री०] समुद्र तट की वायु।

तड़ी—[हि० स्त्री०] चपत। धौल। धोखा। छल। बहाना।

तण्ड—[सं० पु०] एक ऋषि का नाम। [स्त्री०] चोट। मार।

तण्डक—[सं० पु०] खंजन पक्षी। फेन। पेड़ का तना। शुद्धि। सफाई। बहुरूपिया। रोग।

तण्डि—[सं० पु०] सत्ययुग के एक ऋषि का नाम।

तण्डु—[सं० पु०] महादेवजी के द्वारपाल। नन्दिकेश्वर।

तण्डुरीण—[सं० पु०] कीड़ा मकोड़ा।

तण्डुल—[सं० पु० क्ली०] चावल। बायबिडङ्ग।

तण्डुला—[सं० स्त्री०] बायबिडङ्ग। ककहा नामक वृक्ष।

तण्डुलिकाश्रम—[सं० पु० क्ली०] एक तीर्थ का नाम।

तण्डुलीघ—[सं० पु०] चावल का ढेर। एक प्रकार का बाँस।

तण्डेश्वर—[सं० पु०] शिवभक्तों में से एक प्रधान भक्त।

तत—[सं० अव्य०] विस्तारक। [क्ली०] ब्रह्म का नाम-विशेष।

तत—[सं० क्ली०] एक प्रकार का तार का बाजा।

ततक—[सं० पु०] जैन मतानुसार द्वितीय पृथ्वी के ग्यारह इन्द्रकों में से पहला इन्द्रक।

ततपत्री—[सं० स्त्री०] कदली वृक्ष। केले का पेड़।

ततरी—[हि० स्त्री०] एक फलदार पेड़।

ततहड़ा—[हि० पु०] मट्टी का एक बर्त्तन।

ततारना—[हि० क्रि०] उष्ण जल से धोना। धार देकर धोना।

ततैया—[हि० स्त्री०] बर्रे। भिड़। जवा मिर्च। तेज। फुरतीला। बुद्धिमान्। चालाक।

तत्काल—[सं० पु०] वर्त्तमान काल। तुरन्त। फौरन।

तत्कालीन—[सं० त्रि०] उसी समय का।

तत्क्रिय—[सं० त्रि०] जो बिना कुछ लिए भार ढोता हो।

तत्क्षण—[सं० पु०] उसी समय। तत्काल।

तत्तुल्य—[सं० त्रि०] उसके समान।

तत्त्व—[सं० क्ली०] यथार्थता। वास्तविकता। स्वरूप। ब्रह्म।

तत्त्वज्ञानी—[सं० पु०] दार्शनिक।

तत्त्वज्ञापन—[सं० क्ली०] तत्त्वज्ञान।

तत्त्वदृष्टि—[सं० स्त्री०] दिव्यदृष्टि। ज्ञानचक्षु। वह दृष्टि जो तत्त्व का ज्ञान प्राप्त करने में सहायक हो।

तत्त्वनिरूपण—[सं० क्ली०] ईश्वरनिरूपण। ब्रह्मनिर्णय।

तत्त्वभाव—[सं० पु०] प्रकृति। स्वभाव।

तत्त्वभाषी—[सं० त्रि०] यथार्थवादी।

तत्त्वरश्मि—[सं० पु०] तंत्र के अनुसार सर्वदेवता का बीज। वधूबीज।

तत्त्वरायर—१७ वीं शताब्दी के एक प्रसिद्ध तामिल शैव-संन्यासी।

तत्त्ववेत्ता—[सं० पु०] दार्शनिक।

तत्त्वावधान—[सं० क्ली०] निरीक्षण। देख-रेख।

तत्पत्री—[सं० स्त्री०] वंशपत्री नाम की घास। केले का पेड़।

तत्पद—[सं० क्ली०] विष्णु का परम पद। निर्वाण।

तत्पर—[सं० त्रि०] सन्नद्ध। उद्यत। जो कोई काम करने के लिए तैयार हो। निपुण। सतर्क।

तत्पुरुष—[सं० पु०] एक प्रकार का

समास। एक रुद्र का नाम।

तत्फल—[सं० पु०] नीलकमल। कूट नाम की दवा।

तत्रक—[हिं० पु०] एक प्रकार का अनार से मिलता जुलता पेड़।

तथागत—[सं० पु०] गौतम बुद्ध।

तथागतगर्भ—[सं० पु०] बौद्धधर्म के शास्त्र का नाम।

तथापि—[सं० अव्य०] तो भी। तिस पर भी।

तथाभूत—[सं० त्रि०] उसी प्रकार से सम्पन्न।

तथारूप—[सं० त्रि०] उसी प्रकार।

तथास्तु—[अव्य०] वैसाही हो।

तथ्य—[सं० क्ली०] यथार्थता। सचाई।

तदनन्तर—[सं० क्ली०] इसके उपरान्त। उसके पीछे।

तदनुसार—[सं० पु०] उसके अनुकूल।

तदर्थ—[सं० त्रि०] उसके लिए।

तदोजस—[सं० त्रि०] उसी के समान बलवान।

तद्बल—[सं०पु०] एक प्रकार का बाण।

तद्यपि—[सं०अव्य०] तथापि। तो भी।

तद्रूप—[सं० त्रि०] सदृश। समान।

तन—[सं० पु०] धन। वंशज। सन्तान।

तन—[हिं० पु०] शरीर। देह। योनि।

तनक—[सं० पु०] वेतनक।

तनक—[हिं० पु०] एक रागिणी का नाम।

तनकपुर—अल्मोड़ा जिले की चम्पावत तहसील का एक ग्राम।

तनतना—[हिं० पु०] रोबदाब। हुकूमत। क्रोध।

तनना—[हिं० क्रि०] ज़ोर से खिंचना। अकड़कर खड़ा होना।

तनपोषक—[हिं० पु०] स्वार्थी।

तनय—[सं० पु०] पुत्र। बेटा।

तनय—चन्द्रवंशी राजा कुश के पुत्र।

तनया—[सं० स्त्री०] कन्या। बेटी। स्वरपाठा।

तनवाल—[हिं० पु०] वैश्यों की एक जाति।

तनसल—[हिं०पु०] स्फटिक। बिल्लौर।

तनसुख—[हिं० पु०] एक प्रकार का बढ़िया फूलदार कपड़ा।

तना—[सं० स्त्री०] धन। दौलत।

तनिक—[हिं०वि०] थोड़ा। कम। छोटा।

तनिका—[सं० स्त्री०] कोई चीज़ बांधी जाने की रस्सी।

तनिया—[हिं०स्त्री०] लँगोटी। चोली। जांघिया।

तनिष्ठ—[सं० त्रि०] क्षुद्र। जो बहुत दुबला और कमजोर हो।

तनी—[हिं० स्त्री०] बन्धन। बन्द।

तनु—[सं० स्त्री०] शरीर। स्त्री। केंचुली। [त्रि०] कृश। अल्प। सुन्दर। कोमल।

तनुक—[सं० क्ली०] शरीर। देह। त्वचा। दालचीनी।

तनुकूप—[सं० पु०] रोमकूप।

तनुक्षीर—[सं०पु०] आमड़े का पेड़।

तनुगृह—[सं० क्ली०] ज्योतिष के अनुसार एक प्रकार का पेड़।

तनुज—[सं० पु०] पुत्र। बेटा।

तनुजा—[सं०स्त्री०] कन्या। बेटी।

तनुता—[सं० स्त्री०] कृशता। दुबलापन। लघुता। छोटाई।

तनुत्र—[सं० क्ली०] कवच। वर्म।

तनुत्राण—[सं० क्ली०] कवच। बख्तर।

तनुपात—[सं० पु०] मौत।

तनुरस—[सं० पु०] घर्म। पसीना।

तनुराग—[सं० पु०] एक प्रकार का सुगंधित उबटन।

तनुरुह—[सं० पु०] लोम। रोम।

तनुल—[सं० त्रि०] विस्तृत। फैला हुआ।

तनुवात—[सं० पु०] एक नरक का नाम।

तनुवार—[सं० क्ली०] कवच।

तनू—[सं० पु०] पुत्र। बेटा। शरीर। गाय। प्रजापति। पात्री।

तनूजा—[सं० स्त्री०] कन्या। बेटी।

तनूपा—[सं० पु०] जठराग्नि।

तनूपान—[सं० त्रि०] शरीरपालक। अंगरक्षक।

तनूरुह—[सं० क्ली०] लोम। रोम। पंख। पुत्र।

तनेना—[हिं० वि०] वक्र। टेढ़ा। तिरछा।

तनैला—[हिं० पु०] एक प्रकार का छोटा पेड़।

तन्ति—[सं० स्त्री०] बहुत लम्बी रस्सी। गाय। विस्तार। फैलाव।

तन्तु—[सं० पु०] सूत। तागा। सन्तान। ताँत।

तन्तुक—[सं० पु०] सरसों। जंगली सूअर।

तन्तुकी—[सं० स्त्री०] नाड़ी। शिरा। राई।

तन्तुकीट—[सं० पु०] रेशम का कीड़ा।

तन्तुनाग—[सं० पु०] ग्राह। मगर।

तन्तुनाभ—[सं० पु०] लता। मकड़ी।

तन्तुभ—[सं० पु०] सरसों। बछड़ा।

तन्तुर—[सं० क्ली०] कमल की जड़।

तन्त्रक—[सं० क्ली०] नूतन वस्त्र। नया कपड़ा।

तन्त्रणा—[सं०स्त्री०] शासन या प्रबंध आदि करने का काम।

तन्त्रस्कन्द—[सं० पु०] ज्योतिषशास्त्र का एक अंग।

तन्त्रा—[सं० स्त्री०] अल्प निद्रा। थोड़ी नींद।

तन्त्रि—[सं० स्त्री०] तन्द्रा। वीणा,

सितार आदि में लगा हुआ तार।

तन्त्री—[सं० स्त्री०] नाड़ी। रस्सी। सितार आदि बाजे में लगा हुआ तार।

तन्द्र—[सं० क्ली०] एक प्रकार का छन्द।

तन्द्रा—[सं० स्त्री०] ऊँघ। आलस्य।

तन्द्री—[सं० स्त्री०] भृकुटी। भौंह।

तन्नी—[हि० स्त्री०] एक प्रकार की अँकुसी। तराजू में जोतों की रस्सी।

तन्मय—[सं० त्रि०] दत्तचित्त। लवलीन।

तन्वु—[सं० त्रि०] अनादेश। वायु। हवा।

तन्वि—कास्मीर की एक नदी का नाम।

तन्वी—[सं० स्त्री०] कृशाङ्गी। शाल पर्णी। एक छन्द का नाम। श्रीकृष्ण की स्त्री का नाम।

तप—[सं० पु०] तपस्या। ज्वर। ग्रीष्म। ज्येष्ठ और आषाढ़ मास।

तपकना—[हि० क्रि०] उछलना। धड़कना।

तपचाक—[हि० पु०] एक प्रकार का तुर्की घोड़ा।

तपड़ी—[हि० स्त्री०] ढूह। छोटा टीला।

तपती—[सं० स्त्री०] सूर्य की कन्या। एक नदी का नाम।

तपन—[सं० पु०] सूर्य। आक। मदार। गरमी का समय। सूरजमुखी। शिव। महादेव। धूप। ताप। जलन। आँच।

तपनक—[सं० पु०] एक प्रकार का धान।

तपनकर—[सं० पु०] रश्मि। सूर्य की किरण।

तपनतनया—[सं० स्त्री०] शमीवृक्ष। यमुना।

तपनी—[सं० स्त्री०] गोदावरी नदी। एक लता। पाठा।

तपनीय—[सं० क्ली०] स्वर्ण। सोना। धतूरा।

तपनीयक—[सं० क्ली०] सोना।

तपनेष्ट—[सं० क्ली०] ताम्र। ताँबा।

तपस—[सं० पु०] सूर्य। चन्द्रमा। पक्षी।

तपसी—[हि० पु०] तपस्वी। तपस्या करनेवाला।

तपस्या—[सं० स्त्री०] व्रतचर्या। तप।

तपस्विनी—[सं० स्त्री०] तपस्या करनेवाली स्त्री। कटुरोहिणी। कुटकी। पतिव्रता स्त्री।

तपा—[सं० पु०] माघ मास।

तपिया—[हि० पु०] चिरमी। मध्य-भारत, बंगाल तथा आसाम में होने-वाला एक वृक्ष।

तपी—[हि० पु०] तपस्वी। सूर्य।

तपु—[सं० त्रि०] तप्त। गरम। आग। सूर्य। शत्रु।

तपोड़ी—[हि० स्त्री०] काठ का एक बर्तन।

तपोद—[सं० पु०] मगध का एक तीर्थ।

तपोभूमि—[सं० स्त्री०] तप करने का स्थान।

तपोमय—[सं० पु०] परमेश्वर। यथेष्ट। तपस्या।

तपोवट—[सं० पु०] ब्रह्मावर्त्त देश।

तपोवन—[सं० क्ली०] मुनियों का आश्रय-स्थान।

तपोबल—[सं० क्ली०] तपस्या का बल। तपस्या का प्रभाव।

तपोनी—[हि० स्त्री०] ठगों की एक रसम। जब वे मुसाफिरों को लूटमार-कर उनका माल घर ले जाते हैं तब यह रसम की जाती है।

तप्तकुम्भ—[सं० पु०] एक भयानक नरक का नाम।

तप्तमाष—[सं० पु०] प्राचीनकाल की एक प्रकार की परीक्षा। यह परीक्षा किसी मनुष्य को अपराधी या निरपराधी साबित करने के लिए की जाती थी।

तप्तलोमश—[सं० पु०] कसीस। एक प्रकार की धातु।

तप्ताम्भ—[सं० क्ली०] गरम जल।

तप्तायनी—[सं० स्त्री०] वह भूमि जो दीन दुखियों को बहुत सताकर प्राप्त की जाय।

तप्य—[सं० पु०] शिव। महादेव।

तबाशीर—[हि० पु०] वंशलोचन।

तभ—[सं० पु०] बकरा।

तम—[सं० क्ली०] अन्धकार। पैर का अगला भाग। राहु। पाप। अज्ञान। कालिमा। नरक। मोह। क्रोध।

तमकना—[हि० क्रि०] क्रोध का आवेश दिख जाना।

तमका—[सं० स्त्री०] तमाल वृक्ष।

तमङ्ग—[सं० पु०] मंचस्थान।

तमचर—[हि० पु०] राक्षस। उल्लू।

तमता—[सं० स्त्री०] तम का भाव। अन्धकार।

तमरंग—[हि० पु०] एक प्रकार का नीबू।

तमर—[सं० स्त्री०] रांगा। शीशा।

तमराज—[सं० पु०] एक प्रकार की खाँड़।

तमलेट—[हि० पु०] एक प्रकार का टीन या लोहे का बरतन। फौजी सिपाहियों का लोटा।

तमसा—[सं० स्त्री०] एक नदी का नाम।

तमस्विनी—[सं० स्त्री०] रात्रि। हरिद्रा। हल्दी।

तमा—[सं० स्त्री०] रात। तमाल वृक्ष।

तमाई—[हि० स्त्री०] खेत जोतने के पहले उसमें की घास आदि साफ करने की क्रिया।

तमाचारी—[सं० पु०] राक्षस। दैत्य।

तमारि—[हि० पु०] सूर्य। दिनकर।

तमाल—[सं० पु० क्ली०] तेजपात।

तमाल का वृक्ष ।

तमाली—[सं० स्त्री०] मजीठ । वरुणवृक्ष ।

तमाशबीन—[हि० पु०] सैलानी । वेश्यागामी ।

तमिस्र—[सं० क्ली०] अँधेरा । क्रोध । नरक-विशेष ।

तमिस्रा—[सं० स्त्री०] अमावास्या की रात । हरिद्रा । हलदी ।

तमीपति—[सं० पु०] चन्द्रमा ।

तमीश—[सं० पु०] चन्द्रमा ।

तमोगु—[सं० पु०] राहु ।

तमोगुण—[सं० पु०] प्रकृति का तृतीय गुण । इस गुण का प्राधान्य होने से मनुष्य क्रोध में आकर खराब से खराब काम करते हैं ।

तमोघ्न—[सं० पु०] सूर्य । आग । चन्द्रमा । बुद्ध । विष्णु । शिव । ज्ञान । दीप ।

तमोज्योतिस्—[सं० पु०] खद्योत । जुगनू ।

तमोभिद्—[सं० पु०] जुगनू ।

तमोभूत—[सं० त्रि०] अज्ञानी । नादान । अँधेरा किया हुआ ।

तमोमणि--[सं० पु०] खद्योत । जुगनू ।

तमोरि—[सं० पु०] सूर्य ।

तमोलिन—[हि० स्त्री०] तँबोलिन ।

तमोहरि—[सं० पु०] सूर्य । चन्द्रमा । ज्ञान । अग्नि ।

तम्बिका—[सं० स्त्री०] गामी । गाय ।

तरक—[हि० स्त्री०] सोच-विचार । उधेड़बुन । तर्क । व्यतिक्रम । भूलचूक ।

तरकना—[हि० क्रि०] कूदना । उछलना ।

तरकस—[हि० पु०] तूणीर ।

तरकुला—[हि० पु०] एक प्रकार का गहना जो कान में पहना जाता है ।

तरखा—[हि० स्त्री०] तीव्र प्रवाह ।

तरखान—[हि० पु०] बढ़ई । वह जो लकड़ी का काम करता हो ।

तरगुलिया—[हि० स्त्री०] एक प्रकार का छिछला बर्तन जिसमें अक्षत रखा जाता है ।

तरंग—[सं० पु०] लहर । हिलोर । एक प्रकार की चूड़ी । वस्त्र । कपड़ा । चित्त की उमंग । स्वरलहरी ।

तरंगवती—[सं० स्त्री०] नदी ।

तरंगिणी—[सं० स्त्री०] नदी ।

तरचखी—[हि० स्त्री०] एक प्रकार का पौधा जो सजावट के लिए उद्यान में लगाया जाता है ।

तरछा—[हि० पु०] वह स्थान जहाँ तेली गोबर जमा करता है ।

तरजना—[हि० क्रि०] ताड़न करना । डपटना ।

तरजनी—[हि० स्त्री०] अँगूठे के पास की उँगली । भय । डर ।

तरण—[सं० पु०] बेड़ा । स्वर्ग । [क्ली०] उद्धार । पार गमन ।

तरणि—[सं० पु०] सूर्य । बेड़ा । किरण । ताँबा । [स्त्री०] नौका ।

तरणिजा—[सं० स्त्री०] सूर्य की कन्या । यमुना ।

तरणिधन्य-[सं० पु०] शिव । महादेव ।

तरणी—[सं० स्त्री०] नौका । नाव । ग्वारपाठा ।

तरणीवल्ली—[सं० स्त्री०] एक प्रकार का गुलाब का पौधा ।

तरण्ड—[सं० पु० क्ली०] मछली मारने की डोरी में बँधी हुई एक छोटी-सी लकड़ी । नाव खेने का डाँड़ा । नौका ।

तरद्-[सं०स्त्री०] बेड़ा । कारण्डव पक्षी । एक प्रकार का बतक ।

तरद्वटी—[सं० स्त्री०] एक प्रकार का पकवान ।

तरद्वेषस्—[सं० पु०] शत्रु के आक्रमणकारी । इन्द्र ।

तरनतार—[हि० पु०] निस्तार । मोक्ष । मुक्ति ।

तरनतारन—[हि० पु०] मोक्ष । वह जो भवसागर से पार करता हो ।

तरनाग—[हि० पु०] एक पक्षी का नाम ।

तरनाल—[हि० पु०] पाल को बाँधने का रस्सा ।

तरन्त—[सं० पु०] समुद्र । बेड़ा । मेढक । राक्षस ।

तरपर—[हि० पु०] सुविधा । सुख । आराम ।

तरपत—[हि० क्रि०] नीचे ऊपर । क्रमानुगत ।

तरपू—[हि० पु०] मलाबार और पश्चिमघाट के पहाड़ों में मिलनेवाला एक प्रकार का पेड़ ।

तरब—[हि० पु०] सारंगी के तार ।

तरबहना—[हि० पु०] ठाकुरजी के स्नान कराने का एक बरतन ।

तरबालिका—[सं० स्त्री०] एक प्रकार की कटार ।

तरमानी—[हि० स्त्री०] वह तरी जो जोती हुई भूमि में आती है ।

तरल—[सं० पु०] हार के बीच की मणि । हार । तल । पेंदा । चंचल । कामुक । घोड़ा । मधुमक्खी ।

तरलनयन—[सं० पु०] एक छन्द का नाम ।

तरललोचन—[सं० त्रि०] चंचल नेत्र ।

तरला—[सं० स्त्री०] जौ का माँड़ । सुरा ।

तरवट—[सं० क्ली०] एक पेड़ का नाम ।

तरवड़ी—[हि० स्त्री०] छोटी तराजू का पलड़ा ।

तरवन—[हिं० पु०] कर्णफूल।
तरवर—[हिं० पु०] बड़ा वृक्ष।
तरवाँची—[हिं० स्त्री०] जुए के नीचे की लकड़ी। मचेरी।
तरवाना—[हिं० क्रि०] बैलों का लँगड़ाना।
तरस—[सं० क्ली०] माँस। करुणा।
तरसान—[सं० पु०] नौका। नाव।
तरसाना—[हिं० क्रि०] दुख देना। व्यर्थ ललचाना।
तरस्थान—[सं० क्ली०] घाट। वह स्थान जहाँ उतराई ली जाती है।
तरस्वत—[सं० त्रि०] शूर। तेज।
तरहटी—[हिं० स्त्री०] नीची भूमि। पहाड़ की तराई।
तरहा—[हिं० पु०] एक हाथ की माप जो प्रायः कुआ खोदने में आती है।
तरहेल—[हिं० त्रि०] पराजित। अधीन।
तराई—[हिं० स्त्री०] पहाड़ की घाटी।
तरापा—[हिं० पु०] जल में तैरता शहतीर। बेड़ा।
तरारा—[हिं० पु०] उछाल। छलाँग।
तरिन्दा—[हिं० पु०] समुद्र में किसी स्थान पर लंगर के द्वारा बाँधे जाने का एक पीपा।
तरि—[सं० स्त्री०] नौका। कपड़ों का पेटारा।
तरिक—[सं० पु०] बेड़ा। केवट।
तरिका—[सं० स्त्री०] नौका। नाव।
तरिकिन्—[सं० पु०] नाविक। माँझी।
तरित्—[सं० त्रि०] पार किया हुआ।
तरिता—[सं० स्त्री०] तर्जनी। गाँजा। रसोन। लशुन।
तरिवन—[हिं० पु०] एक प्रकार का गहना। कर्णफूल।
तरी—[सं० स्त्री०] नाव। गदा। पेटी। धुआँ।

तरीष—[सं० पु०] बेड़ा। नाव। व्यवसाय। समुद्र। समर्थ। स्वर्ग।
तरीपी—[सं० स्त्री०] इन्द्र की कन्या।
तरु—[सं० पु०] वृक्ष। पेड़।
तरुआ—[हिं० पु०] उबले हुए धान का चावल।
तरुकूणि—[सं० पु०] एक प्रकार की चिड़िया।
तरुज—[सं० त्रि०] जो पेड़ से उत्पन्न हो। [पु०] सफेद कत्था।
तरुण—[सं० क्ली०] मोतिया। बड़ा जीरा। [त्रि०] युवा। जवान। नूतन। नया।
तरुणज्वर—[सं० पु०] नवज्वर। वह ज्वर जो सात दिन का हो गया हो।
तरुणसूर्य—[सं० पु०] दोपहर का सूर्य।
तरुणाभास—[सं० पु०] [illegible]।
तरुणी—[सं० स्त्री०] युवती स्त्री।
तरुतूलिका—[सं० स्त्री०] चमगादड़।
तरुनख—[सं० पु०] काँटा।
तरुनापा—[हिं० पु०] युवावस्था। जवानी।
तरुमृग—[सं० पु० स्त्री०] शाखामृग। वानर।
तरुराग—[सं० क्ली०] किसलय। नया कोमल पत्ता।
तरुराज—[सं० पु०] ताड़ का पेड़। कल्प वृक्ष।
तरुविलासिनी—[सं० स्त्री०] नवमल्लिका। चमेली।
तरुष—[सं० क्ली०] युद्ध। लड़ाई।
तरुसार—[सं० पु०] कर्पूर। कपूर। गोंद।
तरूट—[सं० पु०] कमल की जड़।
तरेंदा—[हिं० पु०] बेड़ा। तैरनेवाली वस्तु।
तरेटी—[हिं० स्त्री०] घाटी। तराई।

तरेरना—[हिं० क्रि०] दृष्टि कुपित करना।
तरेला—[हिं० पु०] किसी स्त्री का वह पुत्र जो उसके दूसरे पति से जन्मा हो।
तरोच—[हिं० स्त्री०] कंघी के नीचे की लकड़ी।
तरौंड़ा—[हिं० पु०] फसल का वह परिमित अन्न जो मजदूरों को देने के लिए निकाल दिया जाता है।
तरौंछी—[हिं० स्त्री०] बैलगाड़ी में जुआठे के नीचे लगी हुई लकड़ी।
तरौंटा—[हिं० पु०] चक्की के नीचे का पत्थर।
तर्क—[सं० पु०] आकांक्षा। चाह। मीमांसा का विचार या शास्त्रार्थ। मानस [illegible]।
तर्कण—[सं० क्ली०] चिन्तन। तर्क करने की क्रिया।
तर्कणा—[सं० स्त्री०] विवेचना। विचार। युक्ति। उपाय।
तर्कवितर्क—[सं० पु०] वादविवाद। [illegible]।
तर्कारी—[सं० स्त्री०] जयन्ती वृक्ष। जैत का पेड़।
तर्कुटी—[सं० स्त्री०] तकला। टेकुआ।
तर्कुल—[हिं० पु०] ताड़ का पेड़। ताड़ का फल।
तर्कुलासक—[सं० पु०] चरखा।
तर्कुशाण—[सं० पु०] सानक। वह छोटा पत्थर जिसपर तकले की फिरकी पर सान चढ़ाई जाती है।
तर्क्षु—[सं० पु०] तेंदुआ या चीता।
तर्क्ष्य—[सं० पु०] जवाखार नमक। यवक्षार।
तर्णक—[सं० पु०] शिशु। बच्चा। तुरत का जन्मा गाय का बछड़ा।
तर्णि—[सं० पु०] बेड़ा। सूर्य।
तर्पण—[सं० क्ली०] जलदान देकर

देकर देवर्षि, पितृ, मनुष्य आदि को तृप्त करने का कार्य।

तर्पणी—[सं० स्त्री०] खिरनी का पेड़। गंगा।

तर्रा—[हि० पु०] चाबुक का फीता।

तर्री—[हि० स्त्री०] प्रत्येक ऋतु में होने-वाली एक प्रकार की घास।

तर्ष—[सं० पु०] इच्छा। प्यास। सूर्य। समुद्र।

तल—[सं० पु० क्ली०] अधोभाग। पेंदा। पाताल। हथेली। पैर का तलवा। जंगल। तमाचा। ताड़ का पेड़।

तलक—[सं० क्ली०] ताल। पोखरा। एक फल का नाम।

तलगू—[हि० स्त्री०] तैलंग देश की भाषा।

तलघरा—[हि० पु०] तहखाना।

तलछट—[हि० स्त्री०] गाद। किसी पदार्थ के नीचे बैठी हुई तलौंछ।

तलत्र—[सं० क्ली०] नसों का बना हुआ दस्ताना।

तलना—[हि० क्रि०] खदकते हुए घी या तेल में छानकर पकाना।

तलपट—[हि० वि०] नाश। चौपट।

तलफना—[हि० क्रि०] छटपटाना। विकल होना।

तलबेली—[हि० स्त्री०] उत्कण्ठा। बेचैनी।

तलमल—[सं० पु०] तलछट। गाद।

तलमलाहट—[हि० स्त्री०] व्याकुलता। बेचैनी।

तलयुद्ध—[सं० क्ली०] मुक्का-मुक्की से लड़ाई करने की क्रिया।

तललोक—[सं० पु०] पाताल।

तलवकार—[सं० पु०] सामवेद की एक शाखा। एक उपनिषद् का नाम।

तलवा—[हि० पु०] पैर के नीचे का भाग।

तलहटी—[हि० स्त्री०] घाटी। पहाड़ की तराई।

तला—[सं० स्त्री०] गोधा। चमड़े का बना जो धनुष की डोरी की रगड़ से बचने के लिए बाईं बाँह में पहना जाता है।

तलाई—[हि० स्त्री०] तलैया। बावली।

तला—[हि० पु०] पेंदा। जूते के नीचे का चमड़ा।

तलामणि—[सं० पु०] प्रबाल। मूँगा।

तलिका—[सं० स्त्री०] वह रस्सी जिसमें घोड़े की छाती बँधी रहती है।

तलिन—[सं० क्ली०] शय्या। सेज। पलंग।

तलिया—[हि० स्त्री०] समुद्र की थाह।

तलुन—[सं० पु०] वायु। युवा पुरुष।

तले—[हि० क्रि० वि०] नीचे।

तलक्षण—[सं० पु०] सूअर।

तलैया—[हि० पु०] इमारत का वह भाग जो मेहराब से ऊपर और छत से नीचे रहता है।

तलोदरी—[सं० स्त्री०] भार्या। स्त्री।

तलोदा—[सं० स्त्री०] नदी।

तल्क—[सं० क्ली०] जंगल। वन।

तल्प—[सं० पु० क्ली०] शय्या। पलंग। अटारी। स्त्री।

तल्पकीट—[सं० पु०] खटमल।

तल्लज—[सं० पु०] कुत्ता।

तल्ला—[सं० पु०] पास। अस्तर। भितल्ला।

तल्ली—[सं० स्त्री०] तरुणी। नौका।

तव—[सं० त्रि०] तुम्हारा।

तवरक—[हि० पु०] समुद्र और नदियों के तटपर होनेवाला एक पेड़।

तवाखीर—[हि० पु०] बंशलोचन।

तवाना—[हि० क्रि०] गरम कराना।

तवारा—[हि० पु०] जलन। दाह।

तविष—[सं० पु०] स्वर्ग। समुद्र। व्यवसाय। शक्ति। स्वर्ण।

तविषी—[सं० स्त्री०] भूमि। देव-कन्या। बल। नदी।

तष्टा—[सं० पु०] विश्वकर्मा। छीलनेवाला।

तस्कर—[सं० पु०] चोर। मदनवृक्ष। कान।

तहरी—[हि० स्त्री०] पेठे की बरी और चावल की खिचड़ी। मटर की खिचड़ी।

तहसनहस—[हि० वि०] नष्टभ्रष्ट। बरबाद।

ताई—[हि० स्त्री०] ताप। ज्वर। बाप के बड़े भाई की स्त्री। जेठी।

ताईं—[हि० अव्य०] तक। समीप। वास्ते।

ताँत—[हि० स्त्री०] धनुष की डोरी। चमड़े या नसों की बनी हुई डोरी।

ताँतवा—[हि० पु०] आँत उतरने का रोग।

ताँता—[हि० पु०] श्रेणी। पंक्ति। कतार।

ताँती—[हि० स्त्री०] पंक्ति। औलाद। [पु०] जुलाहा।

ताँबी—[हि० स्त्री०] ताँबे की करछी।

ताँबेकारी—[हि० स्त्री०] एक प्रकार का लाल रंग।

ताँबेल—[पु०] कछुआ।

ताँवर—[हि० स्त्री०] ज्वर। हरारत। मूर्च्छा।

ताक—[हि० स्त्री०] अवलोकन। खोज। घात। दाँव। टकटकी।

ताकीली—[हि० स्त्री०] एक पौधे का नाम।

ताक्षण्य—[सं० पु० स्त्री०] बढ़ई की सन्तान।

तागड़—[हि० स्त्री०] तख्तों की बनी हुई एक प्रकार की सीढ़ी जो जहाजों

पर चढ़ने को लगी रहती है।

तागड़ी—[हि० स्त्री०] करधनी।

तागना—[हि० क्रि०] सूई में तागा डालकर सिलाई करना।

तागपहनी—[हि० स्त्री०] एक पतली लकड़ी।

तागपाट—[हि० पु०] रेशम के तागे में सोने के तीन जंतर डालकर बनाया हुआ गहना।

तागा—[हि० पु०] सूत। डोरा। प्रति मनुष्य के हिसाब से लगनेवाला एक कर।

ताटक—[सं० पु०] करनफूल। तरकी। एक प्रकार का छन्द।

ताटङ्क—[सं० पु०] करनफूल।

ताटस्थ्य—[सं० क्ली०] उदासीनता। नैकट्य।

ताड़—[सं० पु०] प्रहार। चोट। शब्द। धमाका। घास। पर्वत। ताल-वृक्ष। हाथ का एक गहना।

ताड़का—[सं० स्त्री०] एक राक्षसी का नाम।

ताड़काफल—[सं० क्ली०] बड़ी इलायची।

ताड़कायन—[सं० पु०] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

ताड़कारि—[सं० पु०] ताड़का के शत्रु। श्रीरामचन्द्र।

ताड़केय—[सं० पु०] ताड़का का पुत्र मारीचि।

ताड़घ—[सं० पु०] बेंत या कोड़ा मारनेवाला। जल्लाद।

ताड़ङ्क—[सं० पु०] करनफूल।

ताड़न—[सं० क्ली०] आघात। दण्ड। घुड़की। कष्ट।

ताड़ना—[हि० क्रि०] दण्ड देना। हाँकना।

ताड़नी—[हि० स्त्री०] कोड़ा। चाबुक।

ताड़पत्र—[सं० क्ली०] कान का एक गहना।

ताड़बाज—[हि० त्रि०] ताड़नेवाला। समझ जानेवाला।

ताड़ाग—[सं० त्रि०] तालाब का पानी।

ताड़ि—[सं० स्त्री०] वृक्ष-विशेष। ताल-रस।

ताड़ित—[सं० त्रि०] आहत। दण्डित। [क्ली०] बिजली।

ताड्य—[सं० त्रि०] ताड़ने योग्य।

ताण्ड—[सं० क्ली०] नृत्य-शास्त्र।

ताण्डव—[सं० क्ली०] नाच। पुरुष का नृत्य। शिव का नृत्य।

ताण्डवतालिक—[सं० पु०] शिवजी के द्वाररक्षक नन्दी।

ताण्डवी—[सं० पु०] संगीत में चौदह तालों में से एक।

ताण्डि—[सं० क्ली०] नृत्यशास्त्र।

ताण्डिन—[सं० पु०] यजुर्वेद का एक कल्पसूत्रकार।

ताण्डी—[सं० स्त्री०] तण्डि मुनि की स्त्री के वंशज।

तात—[सं० पु०] पिता। स्नेहास्पद अल्पवयस्क के प्रति सम्बोधन में व्यवहृत शब्द। दया।

तातगु—[सं० पु०] पितृव्य। चाचा।

तातन—[सं० पु०] खंजन पक्षी।

ताततरी—[हि० स्त्री०] एक पेड़ का नाम।

तातल—[सं० पु०] रोग। पाक। लोहे का काँटा। मन के समान जिसका वेग हो।

ताताथेई—[हि० स्त्री०] नृत्य में एक प्रकार का बोल।

तात्पर्यक—[सं० त्रि०] अर्थबोधक। तत्पर।

तात्त्विक—[सं० त्रि०] यथार्थ। तत्त्व-ज्ञानयुक्त।

तादर्थिक—[सं० त्रि०] उसी तरह।

तादात्म्य—[सं० क्ली०] तत्स्वरूपता। एक वस्तु का मिलकर दूसरी वस्तु के रूप में हो जाना।

तादुरी—[सं० स्त्री०] मेढक का एक नाम।

तादृश—[सं० त्रि०] उसी के जैसा।

तान—[सं० पु०] विस्तार। फैलाव। ज्ञान का विषय। गाने का एक अंग।

तान-तरंग—[सं० स्त्री०] लय की लहर।

तानना—[हि० क्रि०] जोर से खींचना। कारागार भेजना।

तानपूरा—[हि० पु०] एक प्रकार का बाजा जो सितार के आकार का होता है।

तानव—[सं० क्ली०] शरीर की तनुता।

ताना—[हि० पु०] दरी या कालीन बुनने का करघा।

ताना—[हि० क्रि०] गरम करना। पिघलाना। परीक्षा करना।

तानारीरी—[हि० स्त्री०] साधारण गाना।

तानी—[हि० स्त्री०] कपड़े की बुनावट में वह सूत जो लम्बाई के बल हो।

तानीयक—[सं० पु०] भुई का पौदा।

तानूर—[सं० पु०] पानी का भँवर। वायु का भँवर।

तान्त—[सं० त्रि०] म्लान। सूखा हुआ। थका हुआ।

तान्तव—[सं० क्ली०] वस्त्र।

तान्तव्य—[सं० पु० स्त्री०] जुलाहे की सन्तान।

तांत्रिक—[सं० त्रि०] जो सिद्धान्त जानता हो। मारण, मोहन, उच्चाटन आदि का प्रयोग करनेवाला।

तान्दन—[सं० पु०] वायु। हवा।

तान्व—[सं० पु०] पुत्र। तनु नामक ऋषि के वंशज।

ताप—[सं० पु०] दुःख। आँच।

लपट। ज्वर। यातना।

तापक—[सं० पु०] ज्वर। रजोगुण।

तापतिल्ली—[हि० स्त्री०] ज्वरयुक्त प्लीहा रोग।

तापत्रय—[सं० क्ली०] त्रिविधदुःख-आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक।

तापन—[सं० पु०] सूर्य। मदार। कामदेव के पाँच बाणों में से एक बाण। ढोल।

तापनी—[सं० क्ली०] एक उपनिषद् का नाम। स्वर्णमय।

तापस—[सं० त्रि०] तपस्वी। तमाल पत्र। दाक्षिणात्य के अन्तर्गत एक पौराणिक जनपद।

तापसद्रुम—[सं० पु०] इंगुआ का पेड़।

तापसप्रिया—[सं० स्त्री०] द्राक्षा। दाख। मुनक्का।

तापसा—[सं० स्त्री०] द्राक्षा। दाख।

तापसी—[सं० स्त्री०] तपस्या करनेवाली स्त्री।

तापहर—[सं० त्रि०] तापनाशक। बुखार को दूर करनेवाला।

तापहरी—[सं० स्त्री०] एक प्रकार का पकवान।

तापा—[हि० पु०] मुरगी का दरबा। मछली मारने का तरवा।

तापिच्छ—[सं० पु०] तमाल वृक्ष।

तापी—[सं० स्त्री०] तापती नदी।

तापीज—[सं० पु०] सोना मक्खी।

तापेन्द्र—[सं० पु०] सूर्य।

तापेश्वर—[सं० पु०] एक तीर्थ का नाम।

ताम—[सं० पु०] भीषण। दोष। व्याकुलता। ग्लानि।

ताम—[हि० पु०] क्रोध। अन्धकार।

तामजान—[हि० पु०] एक प्रकार की छोटी खुली पालकी।

तामड़ा—[हि० वि०] जिसका रंग ताँबे सा हो। एक तरह का कागज। गंजे की खोपड़ी।

तामर—[सं० क्ली०] जल। घी।

तामरस—[सं० क्ली०] कमल। सोना।

तामरसी—[सं० स्त्री०] पद्मिनी।

तामस—[सं० पु०] सर्प। साँप। खल। दुष्ट। उलूक। उल्लू। क्रोध। अन्धकार। अज्ञान। [त्रि०] तमोगुण युक्त।

तामसकीलक—[सं० पु०] शिव का एक अनुचर।

तामसमद्य—[सं० क्ली०] कई बार की खींची हुई शराब।

तामसबाण—[सं० पु०] एक शस्त्र का नाम।

तामसी—[सं० स्त्री०] अँधेरी रात। महादानी। एक प्रकार की माया विद्या।

तामिल—दक्षिणापथ की दक्षिणप्रान्त-वासी एक विस्तीर्ण जाति और उसकी भाषा।

तामिस्र—[सं० पु०] एक नरक का नाम।

तामी—[हि० स्त्री०] ताँबे का तसला।

ताम्बूल—[सं० क्ली०] पान।

ताम्बूलपत्र—[सं० पु०] अरुआ नाम की लता।

ताम्बूलपात्र—[सं० क्ली०] पानदान।

ताम्बूलराग—[सं० पु०] पान की पीक। मसूर।

ताम्बूलिक—[सं० त्रि०] पान बेचनेवाला। तमोली।

ताम्र—[सं० क्ली०] ताँबा।

ताम्र—महिषासुर का एक प्रसिद्ध सेनापति।

ताम्रकिलि—[सं० पु०] बीरबहूटी।

ताम्रकूट—[सं० पु० स्त्री०] धतूरा। कालकूट।

ताम्रचक्षु—[सं० पु०] लाल नेत्रवाला। कबूतर।

ताम्रचूड़—[सं० पु० स्त्री०] मुरगा। ककरौंधा। कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम।

ताम्रतनु—[सं० वि०] जिस शरीर का रंग ताँबे का-सा हो।

ताम्रतुण्ड—[सं० पु०] एक प्रकार का बन्दर।

ताम्रद्रु—[सं० पु०] रक्तचन्दन।

ताम्रपक्षा—[सं० स्त्री०] सत्यभामा के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण की एक कन्या का नाम।

ताम्रध्वज—[सं० पु०] रत्ननगर के राजा मयूरध्वज के पुत्र। इन्होंने युद्ध में अर्जुन और श्रीकृष्ण को पराजित किया था।

ताम्रपत्र—[सं० पु०] एक प्रकार का साग। ताँबे की चद्दर का टुकड़ा। लाल रंग की नई पत्तियाँ।

ताम्रपर्ण—सिंहलद्वीप का नामान्तर।

ताम्रपादी—[सं० स्त्री०] हंसपदी लता।

ताम्रपुष्प—[सं० पु०] लाल फूल का कचनार।

ताम्रपुष्पी—[सं० स्त्री०] धव का पेड़। नारंगी का पेड़।

ताम्रमुख—[सं० त्रि०] अरुण बदन।

ताम्रवृक्ष—[सं० पु०] रक्तचन्दन वृक्ष।

ताम्रशिखिन—[सं० पु० स्त्री०] मुरगा।

ताम्रसार—[सं० क्ली०] लालचन्दन।

ताम्रा—[सं० स्त्री०] घुँघची की नाम की लता। दक्ष प्रजापति की कन्या। पीपल।

ताम्राक्ष—[सं० पु० स्त्री०] कोयल।

ताम्रायण—[सं० पु०] याज्ञवल्क्य के एक शिष्य का नाम।

ताम्रावती—[सं० स्त्री०] एक नदी का नाम।

ताम्रिक—[सं० पु०] कसेरा।

ताम्रिका—[सं० स्त्री०] एक प्रकार का बाजा।

ताम्री—[सं० स्त्री०] प्राचीनकाल की एक प्रकार की धर्मघड़ी।

ताम्रेश्वर [सं० पु०] तांबे की राख।

तायन—[सं० क्लीं०] वृद्धि। अच्छी चाल।

तायना—[हिं० क्रि०] तपाना।

तायु—[सं० पु०] चोर।

तारक—[सं० क्लीं०] चक्षु। आँख [पु०] तारा। नक्षत्र।

तारकटोड़ी—एक राग का नाम।

तारकमानी—[हिं० स्त्री०] धनुष के आकार का यंत्र।

तारका—[सं० स्त्री०] तारा। आँख की पुतली। बालिका। स्त्री। मोती।

तारकाक्ष—[सं० पु०] एक असुर का नाम।

तारकान्तक—[सं० पु०] कार्तिकेय।

तारकामय-[सं० पु०] शिव। महादेव।

तारकायण—[सं० पु०] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

तारकासुर—[सं० पु०] एक असुर का नाम।

तारांकिनी—[सं० स्त्री०] तारों से भरी रात।

तारण [सं० पु०] तेली। विष्णु।

तारणि—[सं० स्त्री०] नौका। नाव।

तारतम्य—[सं० क्लीं०] कमं बेशी के हिसाब से सिलसिला। गुण। परिमाण आदि का परस्पर मिलान।

तारतार—[हिं० वि०] टुकड़ा-टुकड़ा। उधड़ा हुआ।

तारतोड़—[हिं० पु०] कारचोबी। कपड़े पर किया हुआ सुई का एक प्रकार का काम।

तारदी—[सं० स्त्री०] एक प्रकार का काटेदार वृक्ष।

तारन—[हिं० पु०] छत की ढाल। छप्पर का वह बाँस जो कड़ियों के नीचे रहता है।

तारना—[हिं० क्रि०] पार लगाना। उद्धार करना। निस्तार करना। मुक्त करना।

तारनाद—[सं० पु०] उच्चनाद। जोर की आवाज।

तारपुष्प—[सं० पु०] कुंद का पेड़।

तारल—[सं० क्लीं०] तरल। संतुष्ट।

तारसार—[सं० पु०] एक उपनिषद् का नाम।

तारा—[सं० स्त्री०] बौद्धों का एक देव। वानरराज बाली की पत्नी।

तारास—[सं० पु०] एक दैत्य का नाम।

ताराग्रह [सं० पु०] मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, और शनि इन पाँच ग्रहों का समूह।

तारादेवी—[सं० स्त्री०] एक महाविद्या। जैनों की एक शासनदेवी।

ताराधिप—[सं० पु०] चन्द्रमा। शिव। वृहस्पति। बालि और सुग्रीव।

तारानाथ—[सं० पु०] चन्द्रमा। तिब्बत के एक सुप्रसिद्ध बौद्ध पंडित।

तारापथ—[सं० पु०] आकाश।

तारापीड़—[सं० पु०] चन्द्रमा। काश्मीर के एक विख्यात राजा।

ताराभ—[सं० पु०] नारद।

ताराभूषा—[सं० स्त्री०] रात।

ताराभ्र—[सं० पु०] कपूर।

तारामण्डल—[सं० क्लीं०] एक प्रकार का देवमन्दिर। नक्षत्रमण्डल।

तारायण—[सं० पु०] आकाश।

तारावर्ष—[सं० क्लीं०] ताराओं का गिरना।

तारावली—[सं० स्त्री०] मणिभद्र यक्ष की कन्या।

तारिक—[सं० क्लीं०] नदी आदि पार उतारने का भाड़ा।

तारिका—[सं० स्त्री०] ताड़ी नाम का मद्य।

तारिणी—[सं० स्त्री०] बौद्धों की एक देवी।

तारी—[हिं० स्त्री०] एक प्रकार की चिड़िया। समाधि। ध्यान।

तारुण—[सं० पु० स्त्री०] तरुण ऋषि के वंशज। [त्रि०] तरुण। छोटी उम्र का।

तारुण्य—[सं० क्लीं०] यौवन। जवानी।

तारेय—[सं० पु०] बालि के पुत्र अंगद। वृहस्पति की स्त्री तारा के पुत्र बुध।

तार्किक—[सं० त्रि०] तर्क शास्त्र का जाननेवाला।

तार्क्षी [सं० स्त्री०] पाताल गरुड़ लता। छिरेंटी।

तार्क्ष्य—[सं० पु०] गरुड़ के बड़े भाई अरुण। अश्व। गरुड़। सर्प। सोना।

तार्क्ष्यी—[सं० स्त्री०] एक बनलता का नाम।

तार्ण—[सं० त्रि०] जो घास से बना हो। घास से उत्पन्न अग्नि।

ताल—[सं० पु०] करतल। हथेली। [क्लीं०] हरताल। दुर्गा के सिंहासन का नाम। ताली। करतलध्वनि।

तालकन्द—[सं० क्लीं०] मूसली।

तालकरीर—[सं० पु०] ताड़ का कोपल।

तालकाम—[सं० पु०] पीला रंग। हल्दी का रंग।

तालकी—[सं० स्त्री०] ताड़ी।

तालकूटा—[हिं० पु०] वह जो झाँझ बजाकर भजन इत्यादि गाता हो।

तालकेतु—[सं० पु०] भीष्म। बलराम। वह जिसकी पताका पर ताड़ के पेड़ का चिह्न हो।

तालकेश्वर—[सं० पु०] एक प्रकार की दवा।

तालक्कोश—[सं० पु०] एक वृक्ष का नाम।

तालक्षीरक—[सं० क्ली०] ताड़ की चीनी।

तालङ्क—[सं० पु०] एक प्रकार का आभूषण।

तालध्वज—[सं० पु०] बलराम।

तालपत्र—[सं० क्ली०] एक प्रकार का गहना जो कान में पहना जाता है।

तालपत्रिका—[सं० स्त्री०] मूसली।

तालपर्ण—[सं० क्ली०] कपूरकचूरी।

तालपर्णी—[सं० स्त्री०] सौंफ। सोया नामक साग। मूसली।

तालपुष्प—[सं० क्ली०] ताड़ के पेड़ की जटा।

तालबन्द—[हि० पु०] वह हिसाब जिसमें आमदनी की हर एक मद दिखलाई गई हो।

तालबैताल—[हि० पु०] दो देवता या यक्ष। प्रवाद है कि राजा विक्रमादित्य ने इन्हें सिद्ध किया था।

तालमखाना—[हि० पु०] गोली या सीड़ जमीन पर होनेवाला एक पौधा।

तालमर्दक—[सं० पु०] एक प्रकार का बाजा।

तालमेल—[हि० पु०] ताल सुर का मिलान।

तालरेचनक—[सं० पु०] नट।

ताललक्षण—[सं० पु०] बलराम।

तालवन—[सं० क्ली०] वृन्दावन में स्थित ताड़बहुल एक वन।

तालवाही—[सं० त्रि०] वह बाजा जिससे ताल दिया जाता है।

तालवृन्त—[सं० क्ली०] ताड़ के पत्ते का पंखा।

तालव्य—[सं० त्रि०] तालु से उच्चारण किया जानेवाला वर्ण।

तालसत्व—[सं० क्ली०] हरताल की भस्म।

तालमांस—[हि० पु०] ताड़ के भीतर का गूदा।

ताला—[हि० पु०] कपाट अवरुद्ध करने का यंत्र।

ताला-कुञ्जी—[हि० स्त्री०] किवाड़, संदूक आदि बन्द करने का यंत्र। बच्चों का एक खेल।

तालाख्या—[सं० स्त्री०] कपूर।

तालाङ्क—[सं० पु०] बलदेव। करपत्र। पुस्तक। महादेव।

तालादि—[सं० पु०] पाणिनि के एक गण का नाम।

तालाब—[हि० पु०] जलाशय। सरोवर।

तालावचर—[सं० पु०] नट।

तालिक—[सं० पु०] फैली हुई हथेली।

तालिका—[सं० स्त्री०] चपेट। चपत। मजीठ ताली। सूची।

तालित—[सं० क्ली०] एक प्रकार का बाजा। रँगा हुआ कपड़ा। रस्सी।

तालियामार—[हि० पु०] पानी काटने वाला जहाज या नाव का अगला भाग।

तालिश—[सं० पु०] पहाड़।

ताली—[सं० स्त्री०] एक प्रकार का पेड़। अरहर।

ताली—[हि० स्त्री०] तलैया। चाबी। करतल ध्वनि।

तालीयक—[सं० पु० क्ली०] करताल।

तालुक—[सं० क्ली०] तालू। तालू का एक प्रकार का रोग।

तालुजिह्व—[सं० पु०] घड़ियाल। गले का कौवा।

तालुपात—[सं० पु०] एक रोग जो छोटे बच्चों के तालु में होता है।

तालुयंत्र—[सं० क्ली०] बारह उँगली का एक यंत्र जो मछली के तालु सा होता है।

तालुविशोषण—[सं० क्ली०] तालु का सूख जाना।

तालू—[हि० पु०] दिमाग। घोड़ों का एक ऐब।

तालूफाड़—[हि० पु०] हाथियों का एक रोग।

तालूर—[सं० पु०] जल का भँवर।

तालेवर—[हि० वि०] धनी।

ताव—[हि० पु०] अधिकारयुक्त क्रोध का आवेश। कागज का एक तख्ता। वह गरमी जो किसी वस्तु को तपाने के लिए पहुँचाई जाय।

तावत्—अवधि। मान। निश्चय।

तावबन्द—[हि० पु०] एक प्रकार की औषध जिसके प्रयोग से चाँदी का खोटापन तपाने पर भी प्रकाश न हो।

तावभाव—[हि० पु०] परिस्थिति। मौका।

तावर—[सं० क्ली०] धनुष की डोरी।

तावरी—[हि० स्त्री०] जलन। कृप। ज्वर। मूर्च्छा।

ताविष—[सं० पु०] स्वर्ग। समुद्र।

ताविषी—[सं० स्त्री०] देवकन्या। नदी।

तावीष—[सं० पु०] स्वर्ग। समुद्र। सोना।

तावीषी—[सं० स्त्री०] इन्द्रकन्या। चन्द्रकन्या।

तासला—[हि० पु०] भालुओं के गले की वह रस्सी जिसे पकड़कर कलन्दर उसे नचाते हैं।

तासुनी—[सं० स्त्री०] मेखला। सन की डोरी।

तास्कर्य—[सं० क्ली०] चोरी। तस्करता।

तिक—[सं० पु०] एक ऋषि का नाम।

तिकड़ी—[हि० स्त्री०] वह जिसमें कड़ियाँ हों।

तिकानी—[हि० स्त्री०] एक प्रकार की तिकोनी लकड़ी जो पहिये के बाहर धुरी के पास पहिए को रोकने को लगी होती है।

तिकुरा—[हि० पु०] फसल की तीन

बराबर राशि जिनमें से एक राशि जमींदार लेते हैं।

तिकोना—[हि० वि०] जिसमें तीन कोने हों। [पु०] एक नमकीन पकवान।

तिक्त—[सं० पु०] रसभेद। [क्ली०] सुगन्ध।

तिक्तक—[सं० पु०] परबल। चिरायता।

तिक्तगन्धा—[सं० स्त्री०] सफेद सरसों।

तिक्तता—[सं० स्त्री०] तिताई।

तिक्तपत्र—[सं० पु०] कर्कोटक। ककोड़ा। खेखसा।

तिक्तदुग्धा—[सं० स्त्री०] खिरनी।

तिक्तपर्णी—[सं० स्त्री०] कचरी।

तिक्तपुष्पा—[सं० स्त्री०] पाठा।

तिक्तरोहिणी—[सं० स्त्री०] कुटकी।

तिक्तसार—[सं० पु०] खैर।

तिक्तिका—[सं० स्त्री०] कुटकी।

तिक्तिरी—आर्य लोगों का एक प्राचीन वाद्ययंत्र।

तिखा—[हि० वि०] जो तीन बार जोता गया हो।

तिखाई—[हि० स्त्री०] तीखापन। तेजी।

तिगना—[हि० क्रि०] देखना। दृष्टि डालना।

तिगित—[सं० त्रि०] चोखा। तेज।

तिग्म—[सं० क्लीं०] वज्र। पिप्पली।

तिग्मकर—[सं० पु०] सूर्य।

तिग्मकेतु—[सं० पु०] ध्रुववंशीय वत्सर के औरस और सुवीथी के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्र का नाम।

तिग्मता—[सं० स्त्री०] तीक्ष्णता।

तिग्मन्मय—[सं० त्रि०] जिसे बहुत क्रोध हो। [पु०] शिव। महादेव।

तिग्मरुच—[सं० त्रि०] तेज। कान्ति।

तिग्मात्मन—[सं० पु०] उर्घ के पुत्र। एक राजकुमार।

तिग्मानीक—[सं० त्रि०] तीक्ष्ण मुख।

तिग्मायुध—[सं० त्रि०] तेज हथियार।

तिजरा—[हि० पु०] वह बुखार जो तीसरे दिन आता है।

तिजवाँसा—[हि० पु०] किसी स्त्री के तीन महीने का गर्भ होने पर जो उत्सव मनाया जाता है।

तिजित—[सं० पु०] चन्द्रमा।

तिजिल—[सं० पु०] चंद्रमा। राक्षस।

तिण्टी—[सं० स्त्री०] निशीथ।

तितउ—[सं० पु०] चलनी। छाता।

तितर-बितर—[हि० वि०] बिखरा हुआ।

तितरीखी—[हि० स्त्री०] एक छोटी चिड़िया।

तितली—[हि० स्त्री०] एक उड़नेवाला सुंदर कीड़ा।

तितारा—[हि० पु०] एक प्रकार का बाजा जो सितार से मिलता जुलता है। फसल की तीसरी बार की सिंचाई।

तितिक्ष—[सं० त्रि०] शीतोष्णादि द्वन्द्वसहनशील। जो सरदी गरमी समान भाव से सह सकता हो [पु०] ऋषिभेद। एक ऋषि का नाम।

तितिक्षा—[सं० स्त्री०] क्षमा। क्षान्ति। शीतोष्णादि द्वन्द्वसहन। सरदी गरमी आदि सहने की सामर्थ्य। अप्रतिकार-पूर्वक चिन्ता और विलाप-रहित होकर सब प्रकार के दुःखों का सहना ही तितिक्षा है। जब तितिक्षा साधी जाती है, तब सुख से हृदय न तो प्रफुल्लित होता है और न दुःख से संतप्त ही होता है।

तितिक्षित—[सं० त्रि०] शान्त। सहिष्णु।

तितिक्षु—[सं० त्रि०] क्षमाशील। शान्त। सहिष्णु। [पु०] पुरुवंशीय एक राजा।

तितिभ—[सं० पु०] इन्द्रगोपकीट। खद्योत। जुगनू।

तितिर—[सं० पु० स्त्री०] तीतर नाम की चिड़िया।

तितिल—[सं० क्ली०] नन्दक। नाद नाम का मिट्टी का बर्तन। तिलपिप्पट। एक प्रकार का पकवान। ज्योतिष में सात करणों में से एक।

तितीर्षा—[सं० त्रि०] तैरने की इच्छा। तरजाने की इच्छा।

तितीर्षु—[सं० त्रि०] जो तैरने की इच्छा करता हो। जो तैयार या उद्धार पाने की कामना करता हो।

तित्तिर—[सं० पु०] तीतर नाम का पक्षी। तितली नाम की घास।

तित्तिरि—[सं० पु०] तीतर चिड़िया। यजुर्वेद की एक शाखा का नाम। नाग-विशेष। एक सूर्य का नाम। यास्क मुनि के एक शिष्य।

तित्तिरीक—[सं० क्ली०] एक प्रकार का अंजन जो तीतर पक्षी के पंख के जलाने से तैयार किया जाता है।

तिथ—[सं० पु०] अग्नि। काम। काल। वर्षा का समय।

तिथि—[सं० पु० स्त्री०] पन्द्रह चंद्र-कलाओं की क्रियारूप प्रतिपदा आदि तिथियां। अमावस्या से लेकर पूर्णिमा तक और पूर्णिमा से लेकर अमावस्या तक की चन्द्रमा की कलाओं को तिथि कहते हैं।

तिथिप्रणी—[सं० पु०] चन्द्रमा।

तिथियुग्म—[सं० क्लीं०] दो तिथि। तिथि का जोड़।

तिथिसन्धि—[सं० पु०] तिथि की सन्धि। दो तिथियों का एक में मिलना।

तिदरी—[हि० स्त्री०] वह कोठरी जिसमें तीन दरवाजे या खिड़कियाँ हों।

तिदारी—[हि० स्त्री०] एक प्रकार की चिड़िया। यह बतक की तरह होती है।

और सदा जल के किनारे रहती है। यह उड़ने में बहुत तेज होती है।

तिधर—[हि० क्रि० वि०] उधर। उस ओर।

तिधारः—[सं० पु०] एक प्रकार का थूहर। इसमें पत्ते नहीं होते और उँगलियों की तरह शाखाएँ ऊपर को को निकलती हैं।

तिनकना—[हि० क्रि०] क्रोधित होना। चिढ़ना। नाराज होना।

तिनका—[हि० पु०] तृण। सूखी घास।

तिनगरी—[हि० स्त्री०] एक पकवान।

तिनतिहिया—[हि०पु०] मनुवा कपास।

तिनधरा—[हि० स्त्री०] एक प्रकार की रेती जिसमें तीन धार रहती है। यह आरी के दाँतों को तेज़ करने के काम में आती है।

तिनपहला—[हि०वि०] जिसमें तीन पार्श्व हों। जिसमें तीन पहल हों।

तिनमिना—[हि० पु०] वह माला जिसके बीच में सोने का या जड़ाऊ जुगनू हो।

तिनवा—[हि० पु०] बरमा और छोटा नागपुर में होनेवाला एक प्रकार का बाँस।

तिनाशक—[सं० पु०] तिनिश वृक्ष।

तिनिश—[सं० पु०] सीसम की जाति का एक वृक्ष। इसकी पत्तियाँ शमी या खैर की-सी होती हैं।

तिन्तिड़—[सं० पु०] इमली।

तिन्तिड़ीद्यूत—[सं० क्ली०] चुचुंरी। वह जुआ जो इमली के चिओं से खेला जाय।

तिन्तिराङ्ग—[सं० पु०] वज्रलौह। इसपात।

तिन्तिलीफल—[सं० क्ली०] जयपाल-बीज। जमालगोटे का बीया।

तिन्दिश—[सं० पु०] डेंढसी। टिंडसी नामक तरकारी।

तिन्दु—[सं० पु०] तेंदू का पेड़।

तिन्दुक—[सं० क्ली०] कर्ष-परिमाण। दो तोला। [पु० स्त्री०] तेंदू का वृक्ष।

तिन्दुकतीर्थ—एक तीर्थ का नाम। यह व्रजमंडल के अन्तर्गत है।

तिन्दुकाकृतफल—[सं० पु०] एक प्रकार का खजूर।

तिन्दुकिनी—[सं० स्त्री०] आवर्तकी लता। भगवत वल्ली।

तिन्दुव—[सं० पु०] लोध का पेड़।

तिपड़ा—[हि० पु०] कमख़ाब बुननेवालों के घर की एक लकड़ी।

तिपल्ला—[हि० वि०] जिसमें तीन तागे हों। जिसमें तीन पर्त या पार्श्व हों,

तिपाई—दक्षिण आसाम की एक नदी।

तिपाड़—[हि० पु०] तीन पाट जोड़-कर बनाई हुई चीज। वह जिसमें तीन पल्ले हों।

तिपारी—[हि० स्त्री०] बरसात में आप से आप होनेवाला एक प्रकार का छोटा झाड़। मकोय। परपोटा। छोटी। रसभरी।

तिपैरा—[हि० पु०] बड़ा कुआँ जिसमें तीन चरसे एक साथ चल सकें।

तिबद्धी—[हि० वि०] जिसमे तीन रस्सियाँ एक साथ एक एक बार खींची जायँ।

तिबारा—[हि० वि०] तीसरी बार। [पु०] वह मद्य जो तीन बार उतारा गया हो। वह घर या कोठरी जिसमें तीन द्वार हों।

तिबासी—[हि० त्रि०] तीन दिन का बासी।

तिबी—[हि० स्त्री०] खेसारी।

तिमंजिला—[हि० वि०] तीन खण्डों का।

तिम—[हि० पु०] नगारा। डंका।

तिमाशी—[हि० स्त्री०] एक तौल जो तीन माशे के बराबर मानी गई है। पहाड़ी देशों में प्रचलित ४० जौ की एक तौल।

तिमि—[सं० पु०] समुद्रतट। स्तन पीनेवाला मत्स्य के आकार का सुवृहत जीव-विशेष। क्या जलचर और क्या स्थलचर, तिमि की अपेक्षा बृहदाकार जीव आज तक आविष्कृत नहीं हुआ।

तिमिङ्गिलाशन—[सं० पु०] दक्षिण का एक देश-विभाग जिसके अन्तर्गत लंका आदि हैं।

तिमिज—[सं० क्ली०] मुक्ताभेद। तिमि नामक मछली से निकलने-वाला एक मोती।

तिमित—[सं० त्रि०] निश्चल। स्थिर। आर्द्र। भींगा।

तिमितिमिङ्गिल—[सं० पु०] एक प्रकार की बड़ी मछली।

तिमिध्वज—[सं० पु०] दानविशेष। शम्बर नामक दैत्य जिसे मार कर राम-चन्द्र ने ब्रह्मा से दिव्यास्त्र प्राप्त किया था।

तिमिर—[सं० क्ली० पु०] अंधकार। अंधेरा। चक्षु रोग-विशेष। आँख का एक रोग।

तिमिरनुद्—[सं० पु०] सूर्य। [त्रि०] अंधकारनाशक। अंधकार का नाश करनेवाला।

तिमिरभिद्—[सं० पु०] सूर्य। [त्रि०] अंधकारनाशक।

तिमिररिपु—[सं० पु०] सूर्य [त्रि०] अंधकार दूर करनेवाला।

तिमिरहर—[सं० पु०] सूर्य। दीपक।

तिमिरा—[सं० स्त्री०] हरिद्रा। हल्दी।

तिमिरारि—[सं० पु०] सूर्य। अंध-कार का शत्रु।

तिमिरावलि—[सं० स्त्री०] अंधकार का समूह।

तिमिरि—[सं० पु०] तिमि नाम की मछली ।

तिमिरिन—[सं० पु०] अंधकार करनेवाला । जुगनू ।

तिमिष—[सं० पु०] ककड़ी । कूट । तरबूज ।

तिमी—[सं० स्त्री०] दक्ष की एक कन्या । यह कश्यप की स्त्री और तिमिङ्गलों की माता थी ।

तिमीर—[सं० पु०] वृक्षभेद । एक पेड़ का नाम ।

तिमुहानी—[हि० स्त्री०] वह स्थान जहाँ से तीन ओर तीन राहें गई हों । वह स्थान जहाँ तीन ओर से नदियाँ आकर मिली हों ।

तियल—[हि०पु०] स्त्रियों की पोशाक ।

तिया—[हि० पु०] तीन बूटियों का एक ताश का पत्ता । नक्कीपुर के खेल का एक दाँव ।

तिरकट—[पु०] अगला पाल ।

तिरकटगावी—[पु०] ऊपर का पाल ।

तिरकटतवर—[पु०] छोटा और चौकोर अगला पाल । यह सबसे बड़े मस्तूल के ऊपर आगे की ओर लगाया जाता है ।

तिरकाना—[हि० क्रि०] ढीला छोड़ना । रस्सा ढीला करना ।

तिरकुटा—[हि० पु०] सोंठ, मिर्च, पीपल इन तीन कडुई दवाइयों का समूह ।

तिरखूँटा—[हि० वि०] त्रिकोणयुक्त । जिसमें तीन कोने हों ।

तिरच्छ—[सं० पु०] तिनिश वृक्ष ।

तिरछउड़ी—[हि० स्त्री०] मालखम्भ की एक कसरत ।

तिरछा—[हि० त्रि०] जो ठीक सामने की ओर न जाकर इधर-उधर हट गया हो । अस्तर के काम में आनेवाला एक प्रकार का रेशमी कपड़ा ।

तिरछाना—[हि० क्रि०] तिरछा होना ।

तिरछौहैं—[हि० क्रि० वि०] वक्रता । तिरछापन लिए हुए ।

तिरना—[हि० क्रि०] पानी की सतह के ऊपर रहना । उतराना । तैरना । पैरना । पार होना । मुक्त होना । उद्धार पाना ।

तिरनी—[स्त्री०] एक डोरी जिससे घाघरा या धोती नाभि के पास बाँधते हैं । नीवी । तिन्नी । नाभि के नीचे लटकता हुआ घाघरे या धोती का एक भाग ।

तिरप—[हि० स्त्री०] नाच में एक प्रकार का ताल ।

तिरपटा—[हि० वि०] जो तिरछी आँख करके देखता हो । ऐंचाताना ।

तिरपन—[हि० वि०] जिसकी संख्या पचास से तीन अधिक हो । वह संख्या जो पचास और तीन के योग से बनी हो ।

तिरपाई—[हि० स्त्री०] वह चौकी जिसमें तीन पाए लगे रहते हैं । स्टूल ।

तिरपाल—[हि० पु०] छाजन में खपड़े के नीचे दिए जाने का फूस या सरकण्डों के लम्बे पूले । वह कनवस जिसमें रोगन चढ़ा रहता है ।

तिरपौलिया—[हि०पु०]वह बड़ा स्थान जिसमें तीन फाटक हों और जिसमें होकर हाथी, घोड़े, ऊँट इत्यादि सवारियाँ अच्छी तरह से निकल सकें ।

तिरबी—[हि० स्त्री०] सिन्धु देश में एक प्रकार की नाव का नाम ।

तिरमिरा—[हि० पु०] कमज़ोरी के कारण नजर का एक दोष । तीक्ष्ण प्रकाश में नजर का न ठहरना । चकाचौंध । घी तेल इत्यादि के छींटे जो पानी, दूध, तरल पदार्थ के ऊपर तैरते हुए दिखाई देते हैं ।

तिरवट—[हि० पु०] तिल्लाने की जाति का एक प्रकार का राग ।

तिरश्च—[सं० क्ली०] चारपाई के तिरछे पाए ।

तिरश्चथा—[सं० अव्य०] गुप्त रूप से । छिप के ।

तिरश्चिराज—[सं० पु०] आंगिरा वंश के एक ऋषि का नाम ।

तिरश्ची—[हि० स्त्री०] पशु पक्षियों की स्त्री । मादा ।

तिरश्चीन—[सं० त्रि०] तिरछा । कुटिल । टेढ़ा ।

तिरश्चीनगति—[सं० स्त्री०] मल्लयुद्ध की एक गति । कुश्ती का एक पेंच ।

तिरश्चीननिधन—[सं०क्ली०]सामभेद ।

तिरस्—[सं० अव्य०] अन्तर्धान । गायब । तिरछा । निरस्कार ।

तिरसा—[हि० पु०] एक तरह का पाल जिसका एक सिरा चौड़ा और दूसरा तंग हो ।

तिरस्कर—[सं० त्रि०] आच्छादक । परदा करनेवाला । ढांकनेवाला ।

तिरस्करिणी—[सं० स्त्री०] परदा । कनात । चिक । ओट । आड़ । मनुष्य को अदृश्य करने की एक प्रकार की विद्या ।

तिरस्करी—[हि० पु०] आच्छादक । परदा ।

तिरस्कार—[सं० पु०] अनादर । अपमान । भर्त्सना । फटकार । अनादर पूर्वक त्याग । [त्रि०] अवज्ञाकारक । अपमान करनेवाला ।

तिरस्कृत—[सं० त्रि०] अनाहत । जिसका निरस्कार किया गया हो । परदे में छिपा हुआ । [क्ली०] तंत्रसार का एक मंत्र ।

तिरस्क्रिया—[सं० स्त्री०] अनादर । तिरस्कार । आच्छादन । वस्त्र । पहरावा ।

तिरस्य—[सं० पु०] अन्तर्धान । गायब ।

तिरा—[हि० पु०] एक प्रकार का पौधा । इसके बीजों से तेल निकलता है ।

तिराटी—[सं० स्त्री०] निसोत।
तिरानवे—[हि० वि०] जिसकी संख्या नब्बे से तीन अधिक हो।
तिराना—[हि० वि०] पानी के ऊपर ठहराना। तैरना। पार करना। तारना। विस्तार करना।
तिरासी—[हि० वि०] जिसकी संख्या अस्सी से तीन अधिक हो।
तिराहा—[हि० पु०] वह स्थान जहा से तीन रास्ते तीन ओर गए हों।
तिराही—[हि० स्त्री०] तिराह नामक स्थान की बनी हुई कटार या तलवार।
तिर्रिजह्निक—[सं० पु०] वृक्षभेद। एक पेड़ का नाम।
तिरिटि—[सं० पु०] ईख की गिरह या गांठ।
तिरिणीकण्ट—[सं० पु०] पारिजात का पेड़।
तिरिन्दिर—[सं० पु०] एक राजा का नाम।
तिरिम—[सं० पु०] शालि भेद। एक प्रकार का धान।
तिरिया—[हि० स्त्री०] स्त्री। औरत।
तिरिश—[सं० पु०] एक प्रकार का धान।
तिरीट—[सं० क्ली०] किरीट मुकुट। स्वर्ण। सोना। लोध का पेड़।
तिरीटी—[सं० त्रि०] जिसका सिर ढका हो।
तिरीफल—[हि० पु०] दन्तीवृक्ष।
तिरीपशालि—[सं० पु०] तीन महीने में होनेवाला एक प्रकार का धान।
तिरेंदा—[हि० पु०] समुद्र में तैरता हुआ पीपा। मछली मारने को वं में बँधी हुई पाँच छः अंगुल की लक .।
तिरै—[हि० पु०] फीलवानों का एक शब्द जिसे वे नहाते हुए हाथियों को लिटाने में प्रयोग करते हैं।

तिरोगत—[सं० त्रि०] अदृश्य। गायब।
तिरोजन—[सं० त्रि०] मनुष्य से पृथक्।
तिरोध—[सं० स्त्री०] अन्तर्धान।
तिरोधातव्य—[सं० त्रि०] आच्छादन योग्य। ढाकने लायक।
तिरोधान—[सं० क्ली०] अन्तर्धान। अदर्शन। गोपन।
तिरोधायक—[सं० पु०] गुप्त करनेवाला। छिपानेवाला। आड़ करनेवाला।
तिरोभाव—[सं० पु०] अन्तर्धान। लोप। आच्छादन। गुप्तभाव। छिपाव।
तिरोभूत—[सं० त्रि०] अन्तर्हित। गुप्त। छिपा हुआ।
तिरोवर्ष—[सं० त्रि०] वृष्टि से रक्षित। जिसका वर्षा से बचाव हुआ हो।
तिरोहित—[सं० त्रि०] अन्तर्हित। छिपा हुआ। आच्छादित। ढका हुआ।
तिर्य—[सं० त्रि०] तिल-निर्मित। जो तिल का बना हो।
तिर्यक—[सं० त्रि०] वक्र। टेढ़ा। आड़ा। तिरछा। [पु०] चंचल धातु। पारा।
तिर्यक्त्व—[सं० क्ली०] तिरछापन। वक्रत्व।
तिर्यक .—[सं० स्त्री०] तिरछी चाल।
तिर्य .ती—[सं० त्रि०] वक्र प्रसारि आड़ा फैलाया हुआ। जो कुटिल (का हो।
.र्यक्प्रमाण—[सं० क्ली०] विस्तार-प्रमाण। चौड़ाई।
तिर्यक्प्रेक्षण—[सं० त्रि०] तिरछी नजर से देखनेवाला।
तिर्यक्भेद—[सं० पु०] दो आधार पर रखी हुई वस्तु का बीच में दबाव पड़ने से टूटना।
र्यक्-लोक—[सं० पु०] जैनमतानुसार वह लोक जहाँ मनुष्य, देव और नारकियों का अस्तित्व न हो। यह लोकस्थित नाड़ी के बाहर है।

तिर्यग—[सं० पु०] कुटिलगामी पशु-पक्षी आदि। वे पशुपक्षी जिनकी चाल टेढ़ी हो।
तिर्यगतिक्रम—[सं० पु०] जैनमतानुसार दिग्व्रत के पाँच अतीचारों में से तीसरा अतीचार। पर्वतादि की गुफाओं तथा सुरंग आदि में टेढ़ा जाना जिससे व्रत में दोष लगे।
तिर्यगन्तर—[सं० क्ली०] दो द्रव्यों के मध्यस्थान या परिमाण।
तिर्यगमन—[सं० क्ली०] वक्रगति। टेढ़ी चाल।
तिर्यगागत—[सं० त्रि०] जो वक्रभाव से आता हो।
तिर्यगीक्ष—[सं० त्रि०] जो तिरछी नजर से देखता हो।
तिर्यगीश—[सं० पु०] कृष्ण का एक नाम।
तिर्यगेकादश—जैनमतानुसार ग्यारह तिर्यक प्रकृतियों का नाम। एकेन्द्रियादि जाति।
तिर्यग्ज—[सं० त्रि०] जो पक्षी इत्यादि से उत्पन्न हो।
तिर्यग्जन—[सं० पु०] कुटिल। कपटी मनुष्य।
तिर्यग्जाति—[सं० स्त्री०] पक्षिजाति।
तिर्यग्दिश्—[सं० स्त्री०] उत्तर दिशा।
तिर्यग्धार—[सं० पु०] वक्रधार। जिसका किनारा तेज हो।
तिर्यग्नासा—[सं० स्त्री०] वह जिसकी नाक टेढ़ी हो।
तिर्यग्वोदर—[सं० क्ली०] जौ का दाना।
तिर्यग्योन—[सं० पु०] तोता और मैना पक्षी की जाति।
तिर्यग्योनि—[सं० स्त्री०] गृहस्थ यदि

ब्रह्मचारियों का वेश धारण कर भिक्षादि द्वारा जीविका निर्वाह करें, तो वे तिर्यग्योनि को प्राप्त होते हैं।

तिर्यग्विद्ध—[सं० त्रि०] एक प्रकार का शिरावेध।

तिर्यन्च—[सं० पु०] जैनमतानुसार मनुष्य, देव और नारियों के सिवा जितने भी जीव हैं, वे सब तिर्यन्च हैं।

तिर्यन्ची—[सं० क्ली०] पशुपक्षियों की स्त्री। मादा पशु या पक्षी।

तिल—[सं० पु०] होमधान्य। पवित्र। पितृतर्पण। पापघ्न। स्नेह फल। आँख की पुतली के बीचोबीच की गोल बिन्दी।

तिलंगनी—[हि० स्त्री०] एक प्रकार की मिठाई जो चीनी में तिल को पाग कर बनाई जाती है।

तिलंगना—[हि० पु०] तैलंग देश।

तिलंगी—[हि० वि०] तिलंगना का रहने वाला। तैलङ्ग।

तिलक—[सं० क्ली०] चन्दनादि द्वारा ललाट आदि द्वादश अंगों पर धारणीय चिह्न।

तिलककामोद—[सं० पु०] एक रागिणी का नाम।

तिलकट—[सं० क्ली०] तिल का चूर्ण।

तिलकना—[हि० क्रि०] ताल आदि की मिट्टी का सूखकर दरार के साथ फटना।

तिलकहार—[हि० पु०] वह मनुष्य जो कन्या की ओर से वर को तिलक चढ़ाने के लिए जाता है।

तिलका—[सं० स्त्री०] कण्ठ में पहनने का एक आभूषण। एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में ६ अक्षर होते हैं।

तिलकालक—[सं० पु०] देहस्थित तिल। रोग विशेष। वह मनुष्य जिसके तिल हो।

तिलकाश्रय—[सं० पु०] वह स्थान जहाँ तिलक लगाया जाता है। ललाट।

तिलकिट्ट—[सं० क्ली०] तिलमल। तिल की खली।

तिलकित—[सं० त्रि०] अंकित। छाया हुआ।

तिलकी—[सं० त्रि०] तिलक युक्त। जो तिलक लगाता हो।

तिलखा—[हि० पु०] एक चिड़िया का नाम।

तिलचटा—[हि० पु०] एक प्रकार का झींगुर।

तिलचावली—[हि० स्त्री०] तिल और चावल की खिचड़ी। [वि०] जो कुछ सफेद और कुछ काला हो।

तिलच्छक—[सं० पु०] कोक। भेड़िया।

तिलज—[सं० क्ली०] तैल। तेल।

तिलजटा—[सं० क्ली०] तिल मंजरी। तिल का मंजर।

तिलजा—[सं० स्त्री०] एक प्रकार का धान जिसकी सुगन्ध तिल जैसी होती है।

तिलछना—[हि० क्रि०] बेचैन होना। विकल रहना।

तिलड़ा—[हि० वि०] जिसमें तीन लड़ें हों। [पु०] पत्थर गढ़नेवालों की एक छेनी इससे वे लहरदार नकाशी बनाते हैं।

तिलड़ी—[हि० स्त्री०] तीन लड़ों की एक माला।

तिलतेजा—[सं० स्त्री०] लताभेद। एक प्रकार की बेल।

तिलदानी—[हि० स्त्री०] दरजी की सुई, तागा आदि रखने की कपड़े की थैली।

तिलनामा—[सं० स्त्री०] एक प्रकार का धान।

तिलनाभूति—[सं० स्त्री०] तिल का क्षार। तिल की राख।

तिलनी—[सं० स्त्री०] एक प्रकार का धान।

तिलपट्टी—[हि० स्त्री०] खाँड़ या गुड़ में पगे हुए तिलों का कतरा।

तिलपर्ण—[सं० पु०] श्रीवेष्ट सरल का गोंद। (क्ली०) रक्तचन्दन। तिल के पेड़ का पत्ता।

तिलपर्णी—[सं० स्त्री०] रक्तचन्दन। एक नदी का नाम।

तिलपिच्चट—[सं० क्ली०] तिलों की पीठी।

तिलपिंज—[सं० पु०] निष्फल तिलवृक्ष। वह तिल का पौधा जिसमें फूल फल नहीं लगते।

तिलपिण्डी—[सं० स्त्री०] तिल का चूर्ण।

तिलपीड़—[सं० पु०] तैलिक। तेली।

तिलपुष्प—[सं० क्ली०] तिल का फूल। बघनखी। व्याघ्रनखवृक्ष।

तिलपुष्पक—[सं० पु०] बहेड़ा। तिल का फूल। नाक।

तिलपेज—[सं० पु०] निष्फल तिल। श्वेत तिल।

तिलबटा—[हि० पु०] चौपायों का एक रोग। इसमें गले के भीतर के माँस के बढ़ जाने से वे कुछ खा-पी नहीं सकते।

तिलबर—[हि० पु०] एक प्रकार का पक्षी।

तिलभाविनी—[सं० स्त्री०] चमेली का पेड़।

तिलमयूर—[सं० पु०-स्त्री०] एक प्रकार का मोर जिसके शरीर पर तिल के समान काले चिह्न होते हैं।

तिलमापट्टी—[हि० स्त्री०] एक प्रकार की कपास जो दक्षिण में बिलारी और करनूल में होती है।

तिलमिल—[हि० स्त्री०] चकाचौंध। तिरमिराहट।

तिलरा—[हि० पु०] कसेरे की एक छेना जिससे वे टेढ़ी लकीर बनाते हैं।

तिलवट—[हि० पु०] तिलपट्टी। तिलपपड़ी।

तिलवन—[हि० स्त्री०] जंगलों और बगीचों में मिलनेवाला एक पौधा।

तिलवा—[हि० पु०] तिलों का लड्डू।

तिलवासिनी—[सं० पु०–स्त्री०] एक प्रकार का धान जिसकी सुगन्ध तिल सी होती है।

तिलशस—[सं० अव्य०] धीरे धीरे।

तिलशालि—[सं० पु०-स्त्री०] एक प्रकार का सुगन्धित धान।

तिलस्तुद—[हि० त्रि०] तेली।

तिलस्म—[हि० पु०] इन्द्रजाल। जादू। चमत्कार। करामात।

तिलस्मी—[हि० वि०] इन्द्रजाल सम्बन्धी। जादू का।

तिलहन—[हि० पु०] एक प्रकार का पौधा। इसके बीजों से तेल निकलता है।

तिला—[हि० पु०] लिङ्गलेप। वह जो लिङ्गेन्द्रिय पर उसकी शिथिलता दूर करने के लिए लगाया जाय।

तिलाक—[हि० स्त्री०] स्त्री-पुरुष के सम्बन्ध का टूटना।

तिलांजली—[सं०स्त्री०] मृतक-संस्कार का एक अंग। मुरदे के जल चुकने पर स्नान करके यह क्रिया की जाती है।

तिलान्न—[सं० क्ली०] कृशर। तिल की खिचड़ी।

तिलपत्या—[सं० स्त्री०] काला जीरा।

तिलाम्बु—[सं० क्ली०] तिल मिला हुआ पानी।

तिलार्द्ध—[सं० क्ली०] तिल का आधा। बहुत छोटा पदार्थ।

तिलावा—[हि० पु०] बड़ा कुआँ। रात के समय कोतवाल आदि का शहर में गश्त लगाना।

तिलित्स—[सं० पु०] गोनस सर्प। एक प्रकार का साँप।

तिलिया—[हि० पु०] सरपत।

तिलोकपति—[हि० पु०] विष्णु।

तिलोत्तमा—[सं० स्त्री०] स्वर्ग की एक वेश्या।

तिलोरी—[हि० स्त्री०] एक प्रकार की मैना।

तिलौंछना—[हि० क्रि०] तेल लगाकर चिकना करना।

तिलौंछा—[हि० वि०] जिसका स्वाद या रंग तेल जैसा हो।

तिलौरी—[हि० स्त्री०] तिल मिली हुई उरद या मूँग की बरी।

तिल्य—[सं० क्ली०] तिल का खेत।

तिल्लना—[हि० पु०] तिलका नामक वर्णवृत्त।

तिल्लर—[हि० पु०] एक प्रकार की चिड़िया। [वि०] तिलड़ा।

तिल्ली—[हि० स्त्री०] पेट के भीतर का एक अवयव। तिल नाम का अन्न। एक प्रकार का बाँस।

तिल्व—[सं० पु०] लोध वृक्ष।

तिल्वनी—[सं० स्त्री०] कर्णस्फोटा। एक प्रकार की बेल।

तिष्ठा—[सं० स्त्री०] तिस्ता नाम की नदी।

तिष्य—[सं०पु०] पुष्य नक्षत्र। [क्ली०] कलियुग।

तिष्यफला—[सं० स्त्री०] आमलकी।

तिष्या—[सं० स्त्री०] आँवले का पेड़।

तिसरायत—[हि० स्त्री०] तीसरा होने का भाव।

तिसरैत—[हि० पु०] मध्यस्थ। तीसरे हिस्से का मालिक।

तिस्रा—[सं० स्त्री०] शंखपुष्पी।

तिस्स—[हि० पु०] सम्राट् अशोक के सगे भाई का नाम।

तिहत्तर—[हि० वि०] वह संख्या जो सत्तर और तीन के योग से बनी हो।

तिहद्दा—[हि० पु०] वह स्थान जहाँ तीन सीमाएँ मिलती हों।

तिहन्—[सं० पु०] रोग। पीड़ा। धान। धनुष। सद्भाव।

तिहरा—[हि० वि०] मिट्टी का बरतन जिसमें दही जमाया जाता है।

तिहराना—[हि० क्रि०] तीन बार करना।

तिहरी—[हि० स्त्री०] तीन लड़ों की माला। दूध जमाने का मिट्टी का बरतन।

तिहवार—[हि० पु०] पर्व का दिन।

तिहाई—[हि० पु०] तीसरा हिस्सा। [स्त्री०] खेत की उपज। फसल।

तिहानी—[हि० स्त्री०] चूड़ी बनाने का काम में आनेवाली एक प्रकार की लकड़ी।

तिहायत—[हि० पु०] मध्यस्थ।

तिहाली—[हि० स्त्री०] एक प्रकार की कपास की बोंड़ी।

तिहैया—[हि० पु०] तीसरा भाग।

तीकुर—[हि० पु०] खेत की उपज की बँटाई।

तीक्ष्ण—[सं० क्ली०] उष्णता। गरमी। विष। इस्पात। युद्ध। मरण। हथियार। मोखा। चाव। महामारी। [त्रि०] तीखे स्वादवाला। आत्मत्यागी। तेज धारवाला। तीव्र। प्रखर। उग्र। कर्ण-कटु। असह्य। [पु०] जवाखार। श्वेतकुश। योगी।

तीक्ष्णक—[सं० पु०] सफेद सरसों। मोखा वृक्ष।

तीक्ष्णकंटक—[सं० पु०] धतूरा। बबूल का पेड़। करील का पेड़।

तीक्ष्णकन्द—[सं० पु०] प्याज।

तीक्ष्णकल्क—[सं० पु०] धनिया।

तीक्ष्णकान्ता—[सं० स्त्री०] तारा-

देवी । उग्रतारा ।

तीक्ष्णकील—[सं० क्ली०] अकरकरा । सफेद मदन का पेड़ ।

तीक्ष्णक्षीरी—[सं०स्त्री०] वंशलोचन ।

तीक्ष्णगंध—[सं० पु०] सँहजन का पेड़ । लाल तुलसी ।

तीक्ष्णगंधा—[सं० स्त्री०] सफेद वच । राई । वच । जीवन्ती । छोटी इलायची । सफेद जीरा ।

तीक्ष्णतण्डुला—[सं० स्त्री०] पीपल ।

तीक्ष्णतरु—[सं० पु०] पिलुवृक्ष ।

तीक्ष्णता—[सं०स्त्री०] तीव्रता । तेजी ।

तीक्ष्णताप—[सं० स्त्री०] महादेव । शिव ।

तीक्ष्णतैल—[सं०क्ली०] राल । शराब । सरसों का तेल । सेहुँड़ का दूध ।

तीक्ष्णत्वक—[सं० पु०] धनिया ।

तीक्ष्णदग्धा—[सं० स्त्री०] यावनाल वृक्ष ।

तीक्ष्णधार—[सं० पु०] खड्ग ।

तीक्ष्णपत्र—[सं० पु०] धनिया । लाल मिर्च का पेड़ ।

तीक्ष्णपुष्प—[सं० क्ली०] लवंग । लौंग ।

तीक्ष्णपुष्पा—[सं० स्त्री०] केतकी ।

तीक्ष्णप्रिय—[सं० पु०] यव । जौ ।

तीक्ष्णफल—[सं० पु०] धनिया । तेजाफल ।

तीक्ष्णफला—[सं० स्त्री०] राई ।

तीक्ष्णमंजरी—[सं० स्त्री०] पर्णलता । पान का पौधा ।

तीक्ष्णमूल—[सं० पु०] कुलांजन ।

तीक्ष्णलौह—[सं० क्ली०] इस्पात ।

तीक्ष्णवल्क—[सं० पु०] धनिया ।

तीक्ष्णसारा—[सं० स्त्री०] शीश का पेड़ । महुवे का पेड़ । लोहा ।

तीक्ष्णा—[सं० स्त्री०] वच । केवाँच । महाज्योतिमती लता । बड़ी मालकंगनी । जोंक । मिर्च । तारादेवी का एक नाम ।

तीक्ष्णांशु—[सं० पु०] सूर्य ।

तीक्ष्णाग्नि—[सं० पु०] छाती का एक रोग । अजीर्ण रोग । जठराग्नि ।

तीक्ष्णेपु—[सं० पु०] असह्य बाण-युक्त ।

तीखा—[हि० वि०] तीक्ष्ण । जिसकी धार या नोक बहुत तेज हो । उग्र । प्रचण्ड । बढ़िया । अच्छा । अप्रिय वचन । जिसका स्वाद बहुत तेज या चरपरा हो ।

तीखी—[हि० स्त्री०] एक प्रकार का काठ या औजार जो रेशम फेरनेवालों के काम में आता है ।

तीज—[हि० स्त्री०] प्रत्येक पक्ष की तीसरी तिथि ।

तीजा—[हि० पु०] मुसलमानों में किसी के मरने के दिन से तीसरा दिन । [हि० वि०] तीसरा ।

तीतर—[हि० पु०] समस्त एशिया और युरोप में मिलनेवाला एक प्रसिद्ध पक्षी ।

तीता—[हि० वि०] तिक्त । जिसका स्वाद तीखा और चरपरा हो । कड़ुआ । गीला । नम ।

तीनपान—[हि० पु०] एक प्रकार का बहुत मोटा रस्सा ।

तीपड़ा—[हि० पु०] एक प्रकार का औजार जो रेशम बुननेवालों के काम आता है ।

तीय—[हि० स्त्री०] स्त्री । औरत ।

तीर—[सं० पु०] सीसा नामक धातु । बाण । शर । समीप । निकट ।

तीरवर्ती—[सं० त्रि०] जो तट पर रहता हो । पड़ोसी ।

तीरस्थ—[सं० त्रि०] तट पर रहने-वाला । नदी के तट पर पहुँचाया हुआ मरणासन्न व्यक्ति ।

तीरान्तर—[सं० क्ली०] दूसरे पार ।

तीरित—[सं० त्रि०] कार्य-समाप्ति ।

तीरु—[सं० पु०] शिव । महादेव । शिव की स्तुति ।

तीर्ण—[सं० त्रि०] उत्तीर्ण । जो पार हो गया हो । हराया हुआ । भीगा हुआ ।

तीर्णपदा—[सं० स्त्री०] मूसली । तालमूल ।

तीर्णा—[सं० स्त्री०] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक नगण और एक गुरु होता है ।

तीर्थ—[सं० क्ली०] शास्त्र । यज्ञ । क्षेत्र । स्थान । उपाय । स्त्री का रज । अव-तार । पात्र । उपाध्याय । गुरु । मंत्री । योनि । भग । दर्शन । घाट । विप्र । आगम । निदान । अग्नि ।

तीर्थकाक—[सं० पु०] तीर्थस्थित काक की भाँति व्यवहारी ।

तीर्थकृत—[सं० पु०] जिनदेव । [त्रि०] शास्त्रकार ।

तीर्थवाक—[सं० पु०] केश । बाल ।

तीर्थशिला—[सं० स्त्री०] किसी तीर्थ के स्नान करने की पत्थर की सीढ़ी ।

तीर्थसेनि—[सं० पु०] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम ।

तीर्थाटन—[सं० पु०] तीर्थयात्रा ।

तीर्थिक—[सं०पु०] तीर्थकारी ब्राह्मण । बौद्धमतानुसार । बौद्ध धर्म विद्वेषी ब्राह्मण । तीर्थङ्कर ।

तीर्थिया—[हि० पु०] जैनी ।

तीर्थ्य—[सं० पु०] एक रुद्र का नाम । सहपाठी ।

तीलखा—[हि० पु०] एक प्रकार की चिड़िया ।

तीवर—[सं० पु०] समुद्र । व्याध । बहेलिया ।

तीवरी—[सं० स्त्री०] व्याध की पत्नी ।

तीव्र—[सं० त्रि०] अत्यन्त । तीक्ष्ण ।

कड़ुवा । प्रचंड । तीखा । असह्य । तेज ।

तीव्रकण्ठ—[सं० पु०] जमीकन्द । ओल ।

तीव्रकन्द—[सं० पु०] सूरण । जमीकन्द । प्याज ।

तीव्रगन्धा—[सं० स्त्री०] यवानी । अजवायन ।

तीव्रज्वाला—[सं० त्रि०] धव का फूल ।

तीव्रसंताप—[सं० पु०] श्येन पक्षी । बाज ।

तीव्रसव—[सं० पु०] एक दिन में होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ ।

तीव्रसूत—[सं० त्रि०] सोम का अवयवभूत प्रातः सवनिक ।

तीव्रा—[सं० स्त्री०] कटुरोहिणी । राजिका । राई । महाज्योतिष्मती । बड़ी मालकंगनी । तरकी का वृक्ष । तुलसी । एक नदी का नाम । षडजेश्वर की चार श्रुतियों में से पहली श्रुति । मदकारिणी । [त्रि०] तीव्र वेगयुक्त । जिसमें बहुत तेज गति हो ।

तीव्रानन्द—[सं० पु०] शिव । महादेव ।

तीव्रान्त—[सं० त्रि०] तीव्र या तीक्ष्ण फल ।

तीव्रानुराग—[सं० पु०] जैनमतानुसार एक प्रकार का अतीचार ।

तीस—[हि० वि०] जो इकतिस से एक कम हो । [पु०] वह संख्या जो बीस और दस के योग से बनी हो ।

तीसट—[सं०पु०] एक वैद्यक ग्रंथकार ।

तीसी—[हि० स्त्री०] एक प्रकार का तेलहन-अनाज ।

तु—[सं० अव्य०] निरर्थक पादपूरण । भेद । अवधारण । समुच्चय । पक्षान्तर । नियोग । प्रशंसा । निग्रह । सम्पर्क । किन्तु ।

तुंजाल—[हि० पु०] फुँदने लगे हुए एक प्रकार का जाल ।

तुंदैला—[हि० वि०] लम्बोदर । लम्बे पेटवाला, तोंदवाला ।

तुबड़ी—[हि० स्त्री०] एक प्रकार का छोटा पेड़ ।

तुअर—[हि० पु०] अरहर । आढ़की ।

तुई—[हि० स्त्री०] एक प्रकार की बेल जो कपड़े पर बुनी रहती है ।

तुक्—[सं० पु०] अपत्य । संतान ।

तुक—[हि० स्त्री०] किसी पद्य या गीत का कोई खंड । कड़ी । वह अक्षर जो किसी पद्य के अन्त में रहता है । अक्षरमैत्री । पद्य के दोनों चरणों के अन्तिम अक्षरों का परस्पर मेल ।

तुकबन्दी—[हि० स्त्री०] भद्दी कविता करने की क्रिया । ऐसा पद्य जिसमें काव्य के गुण न हों ।

तुकान्त—[हि० स्त्री०] अन्त्यानुप्रास । काफिया ।

तुकाक्षीरी—[सं० स्त्री०] वंशलोचन ।

तुकारना—[हि०क्रि०] अशिष्ट सम्बोधन करना, तू तू कहकर पुकारना ।

तुकाराम—महाराष्ट्र के एक प्रसिद्ध भक्त कवि ।

तुक्कड़—[हि० पु०] वह जो भद्दी कविता बनाता हो ।

तुख—[सं० पु०] छिलका । भूसी । अंडे के ऊपर का छिलका ।

तुग्र—[सं० क्लीं०] वैदिक काल के पनिवंशीय एक राजर्षि ।

तुग्रा—[सं० स्त्री०] जल, पानी । तुग्र के पुत्र भुज्यु ।

तुग्वन—[सं० त्रि०] हिंसक, हिंसा करने वाला ।

तुंग—[सं० पु०] पर्वत । नारिकेल । बुधग्रह । गण्डक । [त्रि०] ऊँचा ।

तुङ्गक—[सं०पु०] नागकेसर । [क्ली०] एक तीर्थ का नाम

तुङ्गकूट—[सं० पु०] ऊँची चोटी का एक पहाड़ ।

तुङ्गता—[सं०स्त्री०] उच्चता । ऊँचाई ।

तुङ्गनाथ—[सं० पु०] हिमालय पर एक शिवलिंग और तीर्थस्थान ।

तुङ्गनाभ—[सं० पु०] एक प्रकार का विषैला कीड़ा

तुङ्गप्रस्थ—[सं० पु०] रामगढ़ के निकटस्थ एक पर्वत ।

तुङ्गभद्र—[सं० पु०] मतवाला हाथी ।

तुङ्गभद्रा—[सं० स्त्री०] एक नदी का नाम ।

तुङ्गमुख—[सं० पु०] गण्डक । गैंडा ।

तुङ्गबाहु—[सं० पु०] तलवार के बत्तीस हाथों में से एक ।

तुङ्गबीज—[सं० क्ली०] पारद । पारा ।

तुङ्गवृक्ष—[सं० पु०] नारिकेल वृक्ष । नारियल का पेड़

तुङ्गा—[सं० स्त्री०] । वंशलोचन । शमी वृक्ष ।

तुङ्गारण्य—[सं० पु०] यह जंगल झाँसी से ६ कोस दूर ओड़छा के पास है ।

तुङ्गारि—[सं० पु०] सफेद कनेर का पेड़ ।

तुङ्गिन—[सं० स्त्री०] उच्चस्थित ग्रह ।

तुङ्गिनी—[सं० स्त्री०] बड़ी शतावर । महाशतावरी ।

तुङ्गी—[सं० स्त्री०] हरिद्रा । हल्दी । बर्बरी वृक्ष ।

तुङ्गीनास—[सं० पु०] एक विषैला कीड़ा ।

तुङ्गीपति—[सं० पु०] चन्द्रमा ।

तुङ्गीश—[सं० पु०] शिव । कृष्ण । सूर्य । चन्द्रमा ।

तुच—[सं० पु०] अपत्य । सन्तान ।

तुच्छ—[सं० क्ली०] पुलाक । भूसी । छिलका । हीन । क्षुद्र । [त्रि०] शून्य । निस्सार । खोखला । अल्प । थोड़ा । [पु०] नील का पौधा ।

तूतिया।

तुच्छद्रु—[सं० पु०] एरण्ड वृक्ष। रेंडी का पेड़।

तुच्छधान्यक—[सं० क्ली०] पुलाक। भूसी। छिलका।

तुच्छा—[सं० स्त्री०] तूतिया। नील का पेड़। छोटी इलायची।

तुच्छीकृत—[सं० त्रि०] अवज्ञात। जिसका अपमान किया गया हो।

तुच्छातितुच्छ—[सं० त्रि०] अत्यन्त क्षुद्र। छोटे से छोटा।

तुज—[सं० स्त्री०] रक्षण-समर्थ, वह जो रक्षा करने में समर्थ हो।

तुजि—[सं० त्रि०] बलवान्, ताकतवर।

तुजि—[सं० पु०] एक राजा का नाम।

तुज़ह—[हि० स्त्री०] धनुष, कमान।

तुज्य—[सं० त्रि०] हिंसा करने योग्य।

तुज—[सं० पु०] वज्र। उक्त फलदान कर्त्ता।

तुंजीन—[सं० पु०] काश्मीर के एक राजा का नाम।

तुटितुट—[सं० पु०] शिव।

तुटुम—[सं० पु०—स्त्री०] इन्दूर, चूहा।

तुड़ाना—[हि० क्रि०] तोड़ने का काम किसी दूसरे से कराना। बन्धन छुड़ाना। सम्बन्ध तोड़ना। रुपया तुड़ाना।

तुड़ि—[सं० स्त्री०] तोड़ने की क्रिया।

तुड़ुम—[हि० पु०] तुरही, बिगुल।

तुणि—[सं० पु०] तुन का पेड़।

तुण्ड—[सं० क्ली०] मुख। [पु०] महादेव। एक राक्षस का नाम। [क्ली०] चोंच। थूथन, निकला हुआ मुँह। तलवार का अगला हिस्सा।

तुण्डकेरिका—[सं० स्त्री०] कपास का वृक्ष।

तुण्डकेरी—[सं० स्त्री०] कपास। बिम्बिका। कुन्दरू।

तुण्डकेशरी—[सं० पु०] मुख का एक रोग

तुण्डदेव—[सं० पु०] एक राजा का नाम।

तुण्डि—[सं० पु०] मुख। मुँह। चोंच। बिंबाफल। बन्दा। [स्त्री०] नाभि।

तुण्डिका—[सं० स्त्री०] नाभि। बिम्बिका।

तुण्डिभ—[सं० त्रि०] जिसकी नाभि निकली हुई हो।

तुण्डिल—[सं० त्रि०] जिसकी नाभि निकली हुई हो। तोंदवाला। बकवादी।

तुण्डी—[सं० त्रि०] मुँहवाला। चोंचवाला। थूथनवाला। [पु०] गणेश। [स्त्री०] नाभि।

तुतलाना—[हि० क्रि०] साफ न बोलना, शब्दों और वर्णों का अस्पष्ट उच्चारण करना।

तुतान—[सं० पु०] मीमांसक भेद।

तुत्थ—[सं० पु०] प्रस्तर, पत्थर। अग्नि। नील का पौधा। छोटी इलायची। तूतिया।

तुत्था—[सं० स्त्री०] नील का पौधा। छोटी इलायची।

तुत्थांजन—[सं० क्ली०] तूतिया। नीलाथोथा।

तुथ—[सं० पु०] मारनेवाला। ब्रह्म। दक्षिणाविभाजक; ब्रह्मरूप ऋत्विग्भेद।

तुदन—[सं० पु०] व्यथा देने की क्रिया। व्यथा, पीड़ा। चुभाने या गड़ाने की क्रिया।

तुन—[हि० पु०] एक बहुत बड़ा पेड़।

तुनकामौज—[लश० पु०] छोटा समुद्र।

तुनतुनी—[हि० स्त्री०] तुन तुन शब्द देनेवाला एक प्रकार का बाजा।

तुनी—[हि० स्त्री०] तुन का पेड़।

तुन्तुभ—[सं० पु०] सरसों का पौधा।

तुन्द—[सं० क्ली०] उदर, पेट।

तुन्दकूपिका—[सं० स्त्री०] नाभि, क्षुद्र कूप।

तुन्दपरिमार्ज—[सं० त्रि०] मन्द, सुस्त। अलस, आलसी।

तुन्दि—[सं० क्ली०] एक गन्धर्व का नाम।

तुन्दिकफला—[सं० स्त्री०] खीरे की बेल।

तुन्दिन—[सं० त्रि०] निकले हुए पेटवाला।

तुन्दिफला—[सं० स्त्री०] त्रिपुष्पी,खीरा।

तुन्न—[सं० पु०] तुन का पेड़। फटे हुए कपड़े का टुकड़ा। [त्रि०] व्यथित, दुःखित। छिन्न, कटा या फटा हुआ।

तुन्नकारिका—[सं० स्त्री०] भुआँवला।

तुन्नवाय—[सं० पु०] कपड़ा सीनेवाला, दरजी।

तुन्नसेवनी—[सं० स्त्री०] सूचीभेद, एक प्रकार का दरजी।

तुपक—[हि० स्त्री०] छोटी तोप। बन्दूक। कड़ाबीन।

तुफंग—[हि० स्त्री०] हवाई बन्दूक।

तुभना—[हि० क्रि०] स्तब्ध रहना, ठक रह जाना।

तुमड़ी—[हि० स्त्री०] कड़ुए गोल कद्दू का सूखा फल। सूखे कद्दू का एक बाजा जिसे मुँह से बजाते हैं।

तुमुती—[हि० स्त्री०] एक प्रकार की चिड़िया।

तुमुर—[सं० क्ली०] तुमुल, सेना का कोलाहल। क्षत्रियों की एक जाति।

तुमुल—[सं० क्ली०] लड़ाई की हलचल। बहेड़े का पत्ता। गहरी मुठभेड़।

तुमुलयुद्ध—[सं० त्रि०] घोरतर संग्राम। घमासान लड़ाई।

तुम्ब—[सं० पु० स्त्री०] अलाबू। लौकी।

तुम्बक—[सं० पु०] लौकी। धनिया

तुम्बर—[सं० क्लो०] एक प्रकार का बाजा। तुम्बरु गन्धर्व।
तुम्बवन—[सं० पु०] बृहत्संहिता के अनुसार एक देश।
तुम्बा—[सं० स्त्री०] कड़ुआ कद्दू। एक प्रकार का जंगली धान।
तुम्बि—[सं० स्त्री०] कड़ुआ कद्दू।
तुम्बिनी—[सं० स्त्री०] तितलौकी, कड़ुआ कद्दू।
तुम्बीतैल—[सं० क्लो०] कद्दू का तेल।
तुम्बुकी—भारतवर्ष का एक प्राचीन बाजा।
तुम्बुर—[सं० पु०] विन्ध्य पहाड़ पर रहनेवाली एक जाति।
तुम्बुरी—[सं० स्त्री०] कुतिया। धनिया।
तुम्बरु-[सं० क्लो०] धनिया। [पु० क्लो०] एक तपस्वी का नाम। एक जिन उपासक का नाम।
तुम्बुरु—[सं० पु०] एक गंधर्व का नाम।
तुम्र-[सं० त्रि०] प्रेरक, भेजनेवाला। हिंसक, मारनेवाला।
तुरन्त—[हि० त्रि०] अत्यन्त शीघ्र। फौरन।
तुरन्ता—[हि० पु०] गांजा।
तुर—[सं० त्रि०] जल्दी चलनेवाला।
तुर—[हि० पु०] जुलाहे की वह लकड़ी जिस पर वे कपड़ा बुनकर लपेटते जाते हैं।
तुरई—[हि० स्त्री०] एक प्रकार की बेल।
तुरकटा—[हि० पु०] तुर्कों का देश या बस्ती।
तुरग—[सं० पु० स्त्री०] घोड़ा। चित्त।
तुरगगन्धा-[सं० स्त्री०] अश्वगन्धा, असगन्ध।
तुरगप्रिय—[सं० पु०] यव, जौ।
तुरगमेध—[सं० पु०] अश्वरक्षक। वह जो घोड़े की रक्षा करता हो।
तुरगलीलक—[सं० पु०] संगीत दामोदर के अनुसार एक ताल का नाम।
तुरगानन—[सं० पु०] एक प्रकार के देवता, जिनका मुख घोड़े के समान और शेष अंग मनुष्य जैसा हो।
तुरगारोह—[सं० पु०] अश्वारोही, घुड़सवार।
तुरगी-[सं० स्त्री०] असगन्धा। घोड़ी।
तुरगुला—[हि० पु०] लोलक, भुमक, कर्णफूल नामक कान के गहने में लटकाए जाने का लटकन।
तुरङ्ग—[सं० पु० स्त्री०] घोड़ा। [क्ली०] चित्त। सैन्धव नमक। सात की संख्या। [त्रि०] शीघ्रगामी।
तुरङ्गगौड़—[सं० पु०] गौड़राग का एक भेद। यह वीर या रौद्ररस का राग है।
तुरङ्गद्वेषिणी—[सं० स्त्री०] महिषी, भैंस।
तुरङ्गम—[सं० पु० स्त्री०] घोड़ा। चित्त। एक वृत्त का नाम।
तुरङ्गमेध—[सं० पु०] अश्वमेध।
तुरङ्गारि—[सं० पु०] कनेर। भैंस।
तुरङ्गिका-[सं० स्त्री० [देवदाली लता, घघरबेल।
तुरङ्गिन—[सं० त्रि०] अश्वारोही, घुड़सवार।
तुरङ्गी—[सं० स्त्री०] घोड़ी।
तुरण—[सं० क्ली०] जल्दी से जाने की क्रिया।
तुरण्य—[सं० पु०] शीघ्र।
तुरत—[हि० अव्य०] चटपट।
तुरपन-[हि० स्त्री०] एक प्रकार की सिलाई।
तुरपना—[हि० क्रि०] लुठियाना।
तुरम—[हि० पु०] तुरही।
तुरमती—[हि० स्त्री०] एक चिड़िया जो बाज की तरह शिकार करती है।
तुरमनी—[हि० स्त्री०] नारियल रेतने की रेती।
तुरया—[सं० त्रि०] शीघ्र, जल्द।
तुरही—[हि० स्त्री०] एक प्रकार का बाजा जो मुँह से फूंककर बजाया जाता है।
तुरावती—[हि० वि०] वेगवाली, झोंक के साथ बहने वाली।
तुराषाट्—[सं० पु०] इन्द्र।
तुरासाह—[सं० पु०] इन्द्र।
तुरि—एक युद्धप्रिय जाति।
तुरी—[सं० स्त्री०] जुलाहों का तोड़िया नाम का यंत्र।
तुरी-[हि० स्त्री०] घोड़ी। लगाम। [पु०] अश्वारोही, सवार। [अ० स्त्री०] फूलों का गुच्छा।
तुरीयक—[सं० पु०] चतुर्थ, चौथा।
तुरीयंत्र—[सं० पु०] सूर्य की गति जानने का एक यंत्र।
तुरुप—[हि० पु०] ताश का एक खेल।
तुर्क—[हि० पु०] तुर्किस्तान का निवासी।
तुर्फरी—[सं० त्रि०] हन्ता। अंकुश मारनेवाला भाग जो सामने सीधी नोक की ओर होता है।
तुर्य—[सं० त्रि०] चतुर्थ। चौथा।
तुर्यगोल—[सं० पु०] समय जानने का एक यंत्र।
तुर्यवाह—[सं० पु०] चार वर्ष का पशु।
तुर्या—[सं० स्त्री०] तुरीय ज्ञान, वह ज्ञान जिससे मुक्ति हो जाती है।
तुर्याश्रम—[सं० पु०] चतुर्थ आश्रम। संन्यासाश्रम।
तुर्वणि—[सं० त्रि०] तूर्णसंभक्ता।
तुर्वन्—[सं० क्ली०] दुश्मन का मारना।
तुर्वशे—[सं० अव्य०] निकट। पास।
तुलना—[हि० क्रि०] तौला जाना।

उद्यत होना। उतारू होना। गाड़ी के पहिए का ओंगा जाना। पूरित होना। भरना। नियमित होना। ठीक अन्दाज के साथ टिकना। तुल्य होना।

तुलना—[सं० स्त्री०] समता। बराबरी। तारतम्य। मिलान।

तुलनी—[हि० स्त्री०] वह लोहा जो तराजू या काँटे की डाँड़ी में गुई के दोनों ओर लगा रहता है।

तुलबुली—[हि० स्त्री०] जल्दबाजी।

तुलभ—[सं० पु०] आयुधजीविसङ्घभेद।

तुलव—महाराष्ट्र सम्प्रदायी ब्राह्मण जाति का एक भेद।

तुलवाई—[हि० स्त्री०] तौलने की मजदूरी। पहिए को ओंघने की मजदूरी।

तुलसारिणी—[सं० स्त्री०] तूण। घास।

तुलसी—[सं० स्त्री०] स्वनाम ख्यात वृक्ष।

तुलसीवास—[हि० पु०] अगहन में होनेवाला एक प्रकार का धान।

तुलसीवन—[सं० पु०] वृन्दावन। तुलसी का जंगल।

तुलाकूट—[सं० क्ली०] डांडी मारनेवाला मनुष्य।

तुलाकोटि—[सं० स्त्री०] नूपुर। एक तौल का नाम। तराजू के डंडी के दोनों छोर जिनमें पलड़े की रस्सी बनी रहती है।

तुलादण्ड—[सं० पु०] मानदण्ड। नापने की डंडी।

तुलादान—[सं० क्ली०] एक प्रकार का दान जिसमें किसी मनुष्य के तौल के बराबर द्रव्य का दान होता है।

तुलाधर—[सं० पु०] वाणिजक। वनिकधर्मा पुरुष। तुलाराशि। सूर्य। तराजू की डोरी। [त्रि०] तराजू को पकड़नेवाला।

तुलाधार—[सं० पु०] तुलाराशि। वाराणसीनिवासी एक व्याध।

तुलापुरुषकृच्छ्र—[सं० पु०] एक प्रकार का व्रत।

तुलाप्रग्रह—[सं० पु०] तुलादण्ड। तराजू में बँधी हुई डोरी।

तुलावत्—[सं० त्रि०] तराजू पकड़नेवाला।

तुलावा—[हि० पु०] गाड़ी की एक लकड़ी।

तुलि—[सं० स्त्री०] तुरी। जुलाहों की कूँची। चित्र बनाने की कूँची।

तुलिका—[सं० स्त्री०] खंजन पक्षी। कूँची।

तुलित—[सं० त्रि०] परिमित। बराबर। समान।

तुलिनी—[सं० स्त्री०] शाल्मली। सेमर का पेड़।

तुली—[हि० स्त्री०] छोटा तराजू। काँटा।

तुलूली—[हि० स्त्री०] पेशाब इत्यादि की बँधी हुई धार जो कुछ दूर पर जाकर पड़े।

तुल्य—[सं० स्त्री०] सादृश्य। बराबरी।

तुल्यज्ञ—[सं० पु०] तुल्यज्ञानी। बराबर बराबर ज्ञानवाले।

तुल्यता—[सं० स्त्री०] समता। बराबरी।

तुल्यपान—[सं० क्ली०] स्वजातिवालों के साथ मिलजुलकर खाना पीना।

तुल्यबल—[सं० त्रि०] समान ताकतवाला।

तुल्यभावन—[सं० क्ली०] एक प्रकार की राशि का मिलान।

तुल्ययोगिता—[सं० स्त्री०] एक अलंकार जिसमें प्रस्तुत या अप्रस्तुत का अर्थात् बहुत से उपमेय और उपमानों का एक ही धर्म बतलाया जाय।

तुल्ययोगी—[सं० त्रि०] समान संबंध रखनेवाला।

तुल्यरूप—[सं० त्रि०] एक रूप। सदृश।

तुल्यवृत्ति—[सं० त्रि०] एक व्यवसायी। एक रोजगार के।

तुल्याकृति—[सं० त्रि०] समान आकृति के।

तुल्वल—[सं० पु०] एक ऋषि का नाम।

तुवर—[सं० पु० क्ली०] कसैला रस। एक प्रकार का धान। अरहर। वह गाय जिसके सींग नहीं निकले हों। [त्रि०] बिना दाढ़ी मूँछ का।

तुवरयावनाल—[सं०पु०] लाल ज्वार।

तुवरिका—[सं० स्त्री०] गोपी चंदन। अरहर।

तुवरी—[सं० स्त्री०] अरहर। एक प्रकार का धान।

तुवरीशिम्ब—[सं० पु०] चकवड़ का पेड़। पँवार।

तुवि—[सं० स्त्री०] तूँबी। जिसके कई अर्थ हों।

तुविकूर्मि—[सं० त्रि०] युद्ध में अनेक प्रकार के काम करनेवाला।

तुविग्र—[सं० त्रि०] बहुत जल्द जानेवाला। बहुत जोर से शब्द करनेवाला। बहुत खानेवाला।

तुविग्राम—[सं० त्रि०] बहुग्राहक। जोर से पकड़नेवाला।

तुविम्र—[सं० त्रि०] बहुत प्रशंसनीय।

तुविजात—[सं० त्रि०] ओजस्वी। ताकतवर। जो बहुतों की रक्षा के लिए उत्पन्न हुआ हो। जिससे बहुतों की उत्पत्ति हो।

तुविनृम्न—[सं० त्रि०] जो बहुत ताकत रखता हो।

तुविप्रति—[सं० त्रि०] बहुतों से भेंट करनेवाला। बहुतों से मुक़ाबिला

करनेवाला ।

तुविबाध—[सं० त्रि०] बहुतों को कष्ट पहुँचानेवाला ।

तुविमन्यु—[सं० त्रि०] जिसका पक्का विचार हो ।

तुविस—[सं० क्ली०] वृद्धि । बढ़ती । बुद्धि । ज्ञान । बल ।

तुविवाज—[सं० त्रि०] बलशाली । ताकतवर ।

तुविशग्मस—[सं० त्रि०] बहुत सुखी ।

तुविष्वणस—[सं० त्रि०] जिससे बहुत शब्द निकलता हो ।

तुवीमघ—[सं० त्रि०] बहुत धनी ।

तुवीरवत्—[सं० त्रि०] जिसमें अनेक स्रोत हों ।

तुशियार—[हि० पु०] पश्चिम हिमालय में होनेवाला एक झाड़ ।

तुष—[सं० पु०] भूसी । बहेड़े का पेड़ । अंडे के ऊपर का छिलका ।

तुषग्रह—[सं० पु०] आग ।

तुषज—[सं० त्रि०] वह आग जो भूसी से निकली हो ।

तुषार—[सं० पु०] हिम, बरफ । हिमकण, पाला ।

तुषारकण—[सं० पु०] हिमकण ।

तुषाकर—[सं० पु०] हिमकर । चन्द्रमा । एक प्रकार का कपूर ।

तुषारकाल—[सं० पु०] शीतकाल ।

तुषारकिरण—[सं० पु०] चन्द्रमा ।

तुषारगिरि—[सं० पु०] हिमालय ।

तुषारगौर—[सं० वि०] जो हिमसा उजला हो । [क्ली०] कपूर ।

तुषारपाषाण—[सं० पु०] ओला । हिम । बरफ ।

तुषारमूर्ति—[सं० पु०] हिमकर, चन्द्रमा ।

तुषाराद्रि—[सं० पु०] हिमालय पर्वत ।

तुषाराम्बु—[सं० क्ली०] नीहार का जल, कुहरे का पानी । ओस ।

तुषोत्थ—[सं० क्ली०] कांजी ।

तुषोदक—[सं० पु०] छिलके समेत कूटे हुए जौ को पानी में सड़ाकर बनाई हुई काँजी ।

तुष्ट—[सं० त्रि०] संतोषयुक्त, तृप्त । प्रसन्न । [पु०] विष्णु ।

तुष्टिमत्—[सं० त्रि०] संतुष्ट । [पु०] उग्रसेन के पुत्र, कंस के भाई ।

तुष्टु—[सं० पु०] वह मणि जो कान में पहनी जाती है ।

तुष्य—[सं० पु०] महादेव, शिव ।

तुसी—[हि० स्त्री०] भूसी ।

तुस्त—[सं० क्ली०] धूल, गर्द ।

तुहिन—[सं० क्ली०] हिम, बरफ । चाँदनी । कुहरा । पाला । [त्रि०] शीतल । ठण्डा ।

तुहिनकण—[सं० पु०] हिमकण, बरफ ।

तुहिनकर—[सं० पु०] चन्द्रमा । कपूर ।

तुहिनगिरि—[सं० पु०] हिमालय पर्वत ।

तुहिनगु—[सं० पु०] शीत । चन्द्रमा ।

तुहिनांशु—[सं० पु०] चन्द्रमा ।

तुहिनाचल—[सं० पु०] हिमालय ।

तुहिनाद्रि—[सं० पु०] हिमालय ।

तुहिनश्रु—[सं० पु०] चन्द्रमा । कपूर ।

तुहुण्ड—[सं० पु०] दनुवंश के एक दानव का नाम ।

तूंबा—[हि० पु०] कड़ुआ गोल कद्दू । कमण्डल ।

तूण—[सं० पु०] तरकश ।

तूणक—[सं० क्ली०] एक प्रकार का छन्द ।

तूणधार—[सं० पु०] वह जो तीर धारण करता हो ।

तूणव—[सं० पु०] एक प्रकार का बाजा जिसका आकार तूण सा होता है ।

तूणवत्—[सं० पु०] जो तीर चलाकर अपनी जीविका चलाता हो ।

तूणी—[सं० स्त्री०] तरकश । नील का पौधा । वातरोग विशेष ।

तूणीक—[सं० पु०] नन्दी वृक्ष । तुनका पेड़ ।

तूणीर—[सं० पु०] तरकश ।

तूतक—[सं० क्ली०] तूतिया, नीला थोथा ।

तूतुजि—[सं० स्त्री०] तेजी । दाता ।

तूद—[सं० पु०] शहतूत ।

तून—[हि० पु०] तुन नाम का एक पेड़ । तूल नाम का लाल कपड़ा ।

तूना—[हि० क्रि०] चूना । टपकना । खड़ा न कर सकना । गिरना । गर्भ गिरना ।

तूबर—[सं० पु० स्त्री०] बिना सींग का बैल । बिना दाढ़ी मूँछ का मनुष्य । कसैला रस ।

तूमड़ी—[हि० स्त्री०] तूँबी । सपेरों के बजाने का तूँबी का बना हुआ एक बाजा ।

तूमना—[हि० क्रि०] रुई के गाले से बटे हुए रेशों को अलग अलग करना । उधेड़ना । हाथ से मसलना । रहस्य खोलना । पोल खोलना ।

तूमारिया सूत—[हि० पु०] खूब बारीक कता हुआ सूत ।

तूय—[सं० क्ली०] तेज । पानी ।

तूया—[हि० स्त्री०] काली सरसों ।

तूर—[सं० क्ली०] नगारा । तुरही ।

तूर—[हि० स्त्री०] जुलाहों के करघे की गज डेढ़ गज लम्बी लकड़ी । जनानी पालकी के चारों ओर बँधी हुई एक रस्सी । अरहर ।

तूरन्त—[हि० पु०] एक प्रकार का पक्षी ।

तूरना—[हि० पु०] एक चिड़िया का नाम।
तूरी—[सं० स्त्री०] धतूरे का पेड़।
तूर्णाश—[सं० क्ली०] जल। पानी।
तूर्णि—[सं० पु०] मल। विष्ठा। शीघ्रता। जल्दी।
तूर्त—[सं० क्ली०] शीघ्रता। जल्दी।
तूर्य—[सं० क्ली०] तुरही। सिंहा।
तूर्यखंड—[सं० पु०] एक प्रकार का बाजा।
तूर्यजीव—[सं० त्रि०] जो बाजा बजाकर अपनी जीविका निर्वाह करता हो।
तूर्याचार्य—[सं० पु०] वह जो वाद्य के विषय में शिक्षा देता हो।
तूतर्याव—[सं० त्रि०] तेज चलनेवाला। [पु०] एक राजा का नाम।
तूर्वि—[सं० क्ली०] क्षिप्र। शीघ्रता।
तूल—[सं० क्ली०] आकाश। शहतूत का पेड़। [पु०] कपास, मदार, सेमर आदि के डोडे के भीतर का घूआ।
तूल—[हि० पु०] गहरा लाल रंग। सूती कपड़ा जो गहरे लाल रंग का होता है।
तूलक—[सं० क्ली०] तूल, कपास।
तूलकार्मुक—[सं० क्ली०] रूई धुनने का यंत्र। धुनकी। फटका।
तूलचाप—[सं० पु०] धुनकी।
तूलता—[हि० स्त्री०] समता।
तूलनालिका—[सं० स्त्री०] पूनी।
तूलपिचु—[सं० स्त्री०] रूई का पौधा।
तूलफल—[सं० पु०] अर्कवृक्ष, अकवन का पेड़।
तूलफला—[सं० स्त्री०] सेमर का पेड़।
तूलशर्करा—[सं० स्त्री०] कपास का बीया, बिनौला।
तूलसंचम—[सं० क्ली०] रूई से सूत कातने का काम।
तूला—[सं० स्त्री०] कपास।
तूलि—[सं० स्त्री०] चित्रकार की कूँची।
तूलिका—[सं० स्त्री०] रंग भरने की कूँची। गलाया हुआ सोना ढारने का बरतन। लालटेन आदि की बत्ती। तोशक।
तूलिनी—[सं० स्त्री०] सेमर का पेड़। लक्ष्मणाकन्द।
तूलिफला—[सं० स्त्री०] सेमर का पेड़।
तूली—[सं० स्त्री०] नीलवृक्ष। रंग भरने की कूँची। जुलाहों का लकड़ी का एक यंत्र।
तूवर—[सं० पु०] कसैला रस।
तूवरक—[सं० पु०] बिना सींग का बैल। बे-दाढ़ी मूँछ का मनुष्य। कसैला रस।
तूवरिका—[सं० स्त्री०] अरहर। गोपीचन्दन।
तूष्णीशील—[सं० त्रि०] मौनावलम्बी, मौन, चुप।
तूस—[हि० पु०] भूसी, भूसा। हिमालय पहाड़ पर काश्मीर से लेकर नेपाल तक पाई जानेवाली एक पहाड़ी बकरी का ऊन। पशमीना।
तूसा—[हि० पु०] चोकर, भूसी।
तूसी—[हि० वि०] करंजई। [पु०] करंज या स्लेट के रंग की तरह का एक रंग।
तूस्त—[सं० क्ली०] रेणु, धूल। जटा। चाप, धनुष। सूक्ष्म पदार्थ।
तृंहण—[सं० क्ली०] हत्या, कतल।
तृक्ष—[सं० पु०] कश्यप ऋषि।
तृक्षाद—[सं० पु०] एक ऋषि का नाम।
तृख—[सं० क्ली०] जातीफल, जायफल।
तृच—[सं० क्ली०] समान देवता और समान छंदक के तीन ऋक।
तृण—[सं० क्ली०] नरकट, घास आदि।
तृणक—[सं० क्ली०] थोड़ी घास। चीनाक, चेना धान।
तृणकर्ण-[सं० पु०] एक ऋषि का नाम।
तृणकाण्ड—[सं० क्ली०] तृणसमूह, घास का ढेर।
तृणकीय—[सं० त्रि०] जो घास से उपजा हो।
तृणकुंकुम—[सं० क्ली०] एक सुगन्धित घास।
तृणकुटी—[सं० स्त्री०] वह घर जो खड़ से छाया रहता है।
तृणकूट—[सं० क्ली०] घास का ढेर।
तृणकूर्य—[सं० पु०] सफेद कद्दू या लौकी।
तृणकेतकी—[सं० स्त्री०] वंशलोचन। एक प्रकार का तीखुर।
तृणकेतु—[सं० पु०] वंशवृक्ष, बाँस। ताल का पेड़।
तृणकेतुक—[सं० पु०] वंश, बाँस।
तृणकेसर—[सं० क्ली०] रोहिस घास।
तृणगड़—[सं० पु०] समुद्र का एक प्रकार का केकड़ा। कीड़ा।
तृणगन्धा—[सं० स्त्री०] विदारी, शालपर्णी।
तृणगोधा—[सं० स्त्री०] छिपकली। एक प्रकार का जोंक।
तृणगीर—[सं० क्ली०] एक सुगन्धित घास। रोहिस घास।
तृणग्रंथि—[सं० स्त्री०] स्वर्ण जीवन्ती वृक्ष।
तृणग्राही—[सं० पु०] एक रत्न का नाम, नीलमणि।
तृणचर—[सं० पु०] गोमेदमणि। [त्रि०] तृण चरनेवाला।
तृणजलौका—[सं० स्त्री०] एक प्रकार की जोंक।
तृणजीवन—[सं० त्रि०] जो प्राणी

घास खाकर जीवन धारण करते हैं।

तृणज्योतिष—[सं॰ क्ली॰] तिष्मती लता।

तृणता—[सं॰ स्त्री॰] धनु, चाप, कमान। तृण का भाव।

तृणदुह्—[सं॰ पु॰] वड़वाग्नि।

तृणद्रुम—[सं॰ पु॰] नारियल। ताड़ का पेड़। गुवाक। सुपारी। ताली। एक प्रकार का छोटा ताड़। केतकी। खजूर का पेड़। हिन्ताल।

तृणधान्य—[सं॰ क्ली॰] तिन्नी का धान। तिन्नी का चावल। सावाँ।

तृणध्वज—[सं॰ पु॰] बाँस। ताड़ का पेड़।

तृणनिम्ब—[सं॰ पु॰] चिरायता। नेपालनिम्ब।

तृणप—[सं॰ पु॰] एक गन्धर्व का नाम।

तृणपति—[सं॰ पु॰] राजघास। काला कपूर।

तृणपत्रिका—[सं॰ स्त्री॰] एक प्रकार की घास।

तृणपदी—[सं॰ स्त्री॰] वह लता जिसकी जड़ घास की जैसी होती है।

तृणपाणि—[सं॰ पु॰] एक ऋषि का नाम।

तृणपीड़—[सं॰ क्ली॰] एक प्रकार की लड़ाई।

तृणपुष्प—[सं॰ क्ली॰] तृणकेशर। ग्रन्थिपर्णी।

तृणपुष्पिका—[सं॰ स्त्री॰] सिन्दूर पुष्पी नामक घास।

तृणपूली—[सं॰ स्त्री॰] घास की बनी हुई चटाई।

तृणप्राय—[सं॰ त्रि॰] निकम्मा। बुरा। बेमसरफ।

तृणमणि—[सं॰ पु॰] एक रत्न का नाम।

तृणमल्लिका—[सं॰ स्त्री॰] एक प्रकार का चमेली का फूल।

तृणमुद्र—[सं॰ पु॰] श्यामाक धान्य। एक प्रकार का धान।

तृणमुस्तिका—[सं॰ स्त्री॰] मोथा नाम की घास।

तृणमेरु—[सं॰ पु॰] रुद्राक्ष वृक्ष।

तृणराज—[सं॰ पु॰] ताड़ का पेड़। नारियल का पेड़। बाँस। ईख। खजूर।

तृणराजवर्ग—[सं॰ पु॰] वृक्षसमूह। सुपारी, ताड़, हिन्ताल, केतकी, खजूर, नारियल और ताड़ी ये सात वृक्ष तृणराजवर्ग हैं।

तृणविन्दु—[सं॰ पु॰] एक ऋषि का नाम।

तृणवीज—[सं॰ क्ली॰] तिन्नी का धान।

तृणवृक्ष—[सं॰ पु॰] नारियल। ताड़। सुपारी। केतकी। खजूर। हिन्ताल।

तृणशय्या—[सं॰ स्त्री॰] घास का बिछौना। चटाई।

तृणशीत—[सं॰ क्ली॰] रोहित घास जिसमें से नीबू की सी सुगन्ध आती है।

तृणशीता—[सं॰ स्त्री॰] जल पिप्पली।

तृणशून्य—[सं॰ क्ली॰] केतकी पुष्प। मल्लिका। चमेली। नारंगी। [त्रि॰] बिना घास का।

तृणशूली—[सं॰ स्त्री॰] एक लता का नाम।

तृणशोणित—[सं॰क्ली॰] रोहिस घास।

तृणशोशक—[सं॰ पु॰ स्त्री॰] एक प्रकार का साँप।

तृणसारा—[सं॰ स्त्री॰] कदली वृक्ष। केला का वृक्ष।

तृणसिंह—[सं॰ पु॰] कुल्हाड़ी।

णस्कन्द—[सं॰ पु॰] चंचल स्वभाव-युक्त। जिसका स्वभाव तृण सा चंचल हो।

तृणहर्म्य—[सं॰ पु॰ क्ली॰] तृणयुक्त अट्टालिका। वह भारी अटारी जिसके ऊपर खड़का घर बना हुआ हो।

तृणाग्नि—[सं॰ पु॰] अग्नि। घास-फूस की आग। करसी की आँच।

तृणांजन—[सं॰ पु॰] गिरगिट।

तृणाटवी—[सं॰ स्त्री॰] तृणमय वन।

तृणान्न—[सं॰ क्ली॰] तंत्रि चावल का भात।

तृणामल्ल—[सं॰ क्ली॰] तृणवल्लीतीर्थ।

तृणावर्त्त—[सं॰ पु॰] वात्यारूप वात समूह। घूर्णवायु। बवण्डर। कंसराज के एक दैत्य का नाम।

तृणेन्द्र—[सं॰ पु॰] तृणराज। ताड़ का पेड़।

तृणोत्तम—[सं॰ पु॰] ऊखल घास।

तृणोलुप—[सं॰ क्ली॰] एक प्रकार की घास।

तृणोल्का—[सं॰ स्त्री॰] घास-फूस की मशाल।

तृणोकस्—[सं॰ क्ली॰] घास-फूस का घर।

तृणोषध—[सं॰ क्ली॰] एलुवा।

तृण्या—[सं॰स्त्री॰] घास-फूस का ढेर।

तृतीय—[सं॰ त्रि॰] तीसरा।

तृतीयक—[सं॰ पु॰] विषम ज्वर-विशेष। तीसरे दिन आनेवाला ज्वर। तिजारा।

तृतीयप्रकृति—[सं॰ स्त्री॰] नपुंसक। क्लीव। हिजड़ा।

तृतीया—[सं॰ स्त्री॰] तिथि-विशेष, प्रत्येक पक्ष या तीसरा दिन। तीज।

तृतीयाकृत—[सं॰ त्रि॰] वह खेत जो तीन बार जोता गया हो।

तृतीयाश्रम—[सं॰ पु॰ क्ली॰] वानप्रस्थाश्रम।

तृतीयासमास—[सं॰ पु॰] समास

विशेष, तृतीया तत्पुरुष समास ।

तृतीयी—[सं० त्रि०] तीसरे हिस्से का हकदार ।

तृत्सु—[सं० त्रि०] हिंसक, कतल करनेवाला ।

तृदिल—[सं० त्रि०] भेदक, फूट करानेवाला । भिन्न, अलग ।

तृपत्—[सं० पु०] चन्द्रमा । छतरी । इन्द्र ।

तृपल—[सं० त्रि०] क्षिप्र, तेज, चंचल ।

तृपला-[सं० स्त्री०] लता । त्रिफला । [त्रि०] जो बहुत तेजी से मारता हो । जो पत्थर आदि से चोट करता हो ।

तृपाना—[सं० स्त्री०] लता ।

तृप्त—[सं० त्रि०] तुष्ट, अघाया हुआ । जिसकी इच्छा पूरी हो गई हो । प्रसन्न । खुश ।

तृप्ता—[सं० स्त्री०] एक प्रकार की गायत्री ।

तृप्तांशु—[सं० त्रि०] जिसका शरीर तृप्त हो गया हो ।

तृप्ति—[सं० स्त्री०] इच्छा पूरी होने से प्राप्त आनन्द और शान्ति, संतोष ।

तृप्तिकर-[सं० त्रि०] प्रीतिप्रद । आह्लाद-जनक । खुश करनेवाला ।

तृप्तिदा—[सं० स्त्री०] एक प्रकार की गायत्री ।

तृप्तिन—[सं० त्रि०] प्रसन्न । खुश ।

तृप्तिमत्-[सं० त्रि०] आह्लादविशिष्ट । [क्ली०] उदक, जल ।

तृप्र—[सं० पु०] घृत, घी । पुरोडास । [क्ली०] दुःख, कष्ट । [त्रि०] तर्पक, तृप्त करने वाला ।

तृप्रालु-[सं० त्रि०] जो दुख सहन न कर सकता हो ।

तृफला—[सं० स्त्री०] त्रिफला । हड़, बहेड़ा । आँवला ।

तृफू—[सं० स्त्री०] एक प्रकार का साँप ।

तृषा—[सं० स्त्री०] आकांक्षा, इच्छा, अभिलाषा । प्यास । कामकन्या । कामदेव की लड़की । कलिहारी, लाङ्गली वृक्ष । लोभ, लालच ।

तृषाभू—[सं० स्त्री०] पेट में जल रहने का स्थान ।

तृषालु—[सं० त्रि०] पिपासित, प्यासा ।

तृषावान्—[सं० त्रि०] प्यासा । तृषित ।

तृषाह्—[सं० क्ली०] जल । पानी । मधुरिका । एक प्रकार की सौंफ ।

तृषित—[सं० त्रि०] प्यासा । लोभी । लालची । इच्छुक । अभिलाषी ।

तृषितोत्तरा—[सं० स्त्री०] पटसन ।

तृषु—[सं० क्ली०] तेजी । शीघ्रता ।

तृष्टामा—[सं० स्त्री०] नदी ।

तृष्णज—[सं० त्रि०] लोभी । प्यासा ।

तृष्णा—[सं० स्त्री०] प्यास । लिप्सा । लोभ । लालच । अप्राप्त । अभिलाषा । एक बीमारी ।

तृष्णाक्षय—[सं० पु०] शांति । प्यास का दूर होना ।

तृष्णाघ्न—[सं० त्रि०] जल । पानी । तृष्णानाशक । जिससे तृष्णा जाती रहती हो ।

तृष्णार्त्त—[सं० पु०] पिपासाकातर । वह जो प्यास से छटपटाता हो ।

तृष्णारि-[सं० पु०] पर्पट । पित्तपापड़ा । [त्रि०] प्यास दूर करनेवाला ।

तृष्णालु—[सं० त्रि०] प्यासा । लुब्ध । लोभी । लालची ।

तेंतरा—[हि० पु०] वह लकड़ी जो बैलगाड़ी के फड़ के नीचे लगी हो ।

तेंदुआ-[हि० पु०] अफ्रीका और एशिया के घने जंगलों में मिलनेवाला एक हिंसक पशु ।

तेंदू—[हि० पु०] भारतवर्ष, लंका, बरमा और पूर्व बंगाल के पहाड़ों और जंगलों में होनेवाला एक प्रकार का वृक्ष ।

तेगा—[सं० स्त्री०] एक सामान्य देवता का नाम ।

तेजःपुंज—[सं० पु०] आग का समूह ।

तेजफल—[सं० क्ली०] एक पेड़ का नाम ।

तेजधारी-[हि० त्रि०] तेजस्वी । प्रतापी ।

तेजन—[सं० पु०] बंश । बाँस । मूँज । रामशर । सरपत । [क्ली०] दीपन । भोजन । चटाई । सिर के बाल का गुच्छा ।

तेजनी—[सं० स्त्री०] चाव । तेजबल । ज्योतिष्मती । मालकंगनी ।

तेजपत्ता—[हि० पु०] दारचीनी की जाति का एक पेड़ ।

तेजपत्र—[सं० क्ली०] तेजपत्ता ।

तेजबल—[हि० पु०] हरिद्वार तथा उसके आस पास के प्रान्तों में अधिकता से होनेवाला एक काँटेदार जंगली वृक्ष ।

तेजल—[सं० पु०] चातक । पपीहा ।

तेजवान्—[हि० वि०] तेजस्वी, जिसमें तेज हो । वीर्यवान् । बली । कान्तिमान्, चमकीला ।

तेजस—[सं० क्ली०] दीप्ति, कान्ति, चमक । प्रभाव, रोबदाब । पराक्रम, बल । शुक्र, वीर्य । नवनीत, मक्खन । आग । स्वर्ण, सोना । पित्त । साहस । अश्व का वेग, घोड़े की चलने की तेजी ।

तेजसी—मारवाड़ के एक राजपूत कवि ।

तेजस्य—[सं० त्रि०] तेजःसाधन । महादेव ।

तेजस्व—[सं० पु०] महादेव, शिव ।

तेजस्विनी—[सं० स्त्री०] मालकँगनी ।

तेजस्वी—[सं० त्रि०] प्रतापी । [पु०] इन्द्र के पुत्र का नाम ।

तेजोद्वेष—[सं० पु०] वह रोग जो पित्त बिगड़ने से हुआ हो ।

तेजोधातु—[सं० पु०] पित्त ।

तेजोमण्डल—[सं० क्ली०] चन्द्र वा सूर्यमण्डल।

तेजोमन्थ—[सं० पु०] गनियारी का पेड़।

तेजोमय—[सं० त्रि०] तेज से पूर्ण। पित्त। ज्योतिर्मय, जिसमें खूब कान्ति या चमक दमक हो।

तेजोमूर्ति—[सं० पु०] सूर्य। [त्रि०] तेज से पूर्ण।

तेजोरूप—[सं० क्ली०] ब्रह्म। जो अग्नि या तेज रूप हो।

तेजोवती—[सं० स्त्री०] गजपिप्पली। चविका, चव्य। महाज्योतिष्मती। अग्नि का विमान।

तेजोबिंदु—[सं० पु०] एक उपनिषद् का नाम।

तेजोवीज—[सं० क्ली०] मज्जा।

तेजोवृक्ष—[सं० पु०] छोटी अरणी का वृक्ष।

तेजोवृत्त—[सं० क्ली०] वीर्यानुरूप।

तेदनी—[सं० स्त्री०] एक देवता का नाम।

तेन—[सं० पु०] गान का एक अंग।

तेमन—[सं० क्ली०] गीला करने की क्रिया। पका हुआ भोजन।

तेमनी—[सं० स्त्री०] चूल्हा।

तेमरू—[हि० पु०] तेंदू का वृक्ष, आबनूस का पेड़।

तेरस—[हि० स्त्री०] त्रयोदशी, किसी पक्ष की तेरहवीं तिथि।

तेरही—[हि० स्त्री०] किसी मनुष्य की मृत्यु के दिन से तेरहवीं तिथि। इसमें पिण्डदान और ब्रह्मभोज करके दाह करने वाला और मृतक के घर के लोग शुद्ध होते हैं।

तेलगू—[हि० स्त्री०] तैलंग देश की भाषा।

तेलंग—[सं० पु०] तैलंग देश। तैलंग देश के मनुष्य।

तेलवाई—[हि० पु०] तेल लगाना, तेल मलना। विवाह की एक प्रथा।

तेलसुर—[हि० पु०] एक जंगली वृक्ष।

तेलहँड़ा—[हि० पु०] मिट्टी का बड़ा बरतन जिसमें तेल रखा जाता है।

तेलहन—[हि० पु०] वे बीज जिनमें से तेल निकलता है।

तेलिन—[हि० स्त्री०] तेली की स्त्री। एक बरसाती कीड़ा।

तेलियट—[हि० पु०] काले रंग का एक पक्षी।

तेलिया—[हि० वि०] जो तेल की तरह चिकना और चमकीला हो। [पु०] वह रंग जो काला, चिकना और चमकीला हो। इसी रंग का घोड़ा। एक प्रकार का बबूल। एक प्रकार की छोटी मछली। सींगिया नामक विष।

तेलियाकुमैत—[हि० पु०] घोड़े का एक रंग। इसी रंग का एक घोड़ा।

तेली—हिन्दुओं की एक जाति जिसकी गणना शूद्रों में होती है।

तेवट—[हि० स्त्री०] सात दीर्घ अथवा १४ लघु मात्राओं का एक ताल।

तेवन—[सं० क्ली०] क्रीड़ा, खेल। केलिकानन, प्रमोदकानन।

तेवर—[हि० पु०] कुपित दृष्टि। भृकुटी, भौंह।

तेवरसी—[हि० स्त्री०] ककड़ी। खीरा। फूट।

तेवरा—[हि० पु०] दून में बजाया हुआ रूपक ताल।

तेवरना—[हि० क्रि०] भ्रम में पड़ना। सन्देह में पड़ना। विस्मित होना। आश्चर्य करना। मूर्छित हो जाना।

तेहरा—[हि० वि०] तीन परत किया हुआ, तीन लपेटका। जिसकी एक साथ तीन प्रतियाँ हों।

तेहराना—[हि० क्रि०] तीन लपेट या परत का करना। त्रुटि आदि दूर करने के लिए किसी काम का तीसरी बार करना।

तेहा—[हि० पु०] गुस्सा, क्रोध। अहंकार, शेखी।

तैकायन—[सं० पु०] तिक ऋषि के वंशज।

तैक्त—[सं० पु०] तीतापन, चरपराहट।

तैक्ष्ण्य—[सं० क्ली०] तीक्ष्णता, तेजी। कठोरता, कड़ाई। क्रूरता। निष्ठुरता।

तैजनित्वच—[सं० स्त्री०] एक प्रकार की छोटी वीणा।

तैजस—[सं० क्ली०] घृत, घी। तीर्थ-विशेष।

तैजसावर्तनी—[सं० स्त्री०] मूषा, चाँदी, सोना गलाने की घरिया।

तैजसी—[सं० स्त्री०] गजपिप्पली।

तैतल—[सं० पु०] एक ऋषि का नाम।

तैतिक्ष—[सं० त्रि०] क्षमाशील।

तैतिर—[सं०पु० स्त्री०] तीतर। गैंडा।

तैतिल—[सं० पु०] गैंडा। [क्ली०] देवता।

तैत्तिरीय ब्राह्मण-[सं० पु०] कृष्ण-यजुर्वेदीय ब्राह्मण।

तैन्तिड़ीक—[सं० स्त्री०] इमली का रस।

तैमिर—[सं० पु०] आँख की एक बीमारी।

तैमिरिक—[सं० त्रि०] जिसको तिमिर रोग हुआ हो।

तैया—[हि० पु०] मट्टी का छोटा बरतन।

तैयारी—[हि० स्त्री०] दुरुस्ती। तत्परता। शरीर की पुष्टता। समारोह। सजावट।

तैररीम—[सं० स्त्री०] एक प्रकार का क्षुप ।

तैरना—[हि० क्रि०] पानी के ऊपर ठहरना ।

तैर्थ—[सं० त्रि०] तीर्थ-सम्बन्धी ।

तैर्थगयनिक—[सं० त्रि०] एक प्रकार का यज्ञ ।

तैलकल्कज—[सं० पु०] खली ।

तैलनिर्यास—[सं० पु०] गन्धराज ।

तैलनी—[सं० स्त्री०] खली ।

तैलपर्णी—[सं० स्त्री०] चन्दन । श्रीवास । सलई का गोंद ।

तैलपा—[सं० स्त्री०] तेल का कीड़ा ।

तैलपायिका—[सं० स्त्री०] झींगुर, चपड़ा ।

तैलपिंज—[सं० पु०] बंझा तिल-वृक्ष ।

तैलपिपीलिका—[सं० स्त्री०] एक प्रकार की चींटी ।

तैलफल—[सं० पु०] बहेड़ा । इंगुदी ।

तैलभाविनी—[सं० स्त्री०] चमेली का पेड़ ।

तैलमाली—[सं० स्त्री०] तेल की बत्ती, पलीता ।

तैलयंत्र—[सं० पु०] कोल्हू ।

तैलवल्ली—[सं० स्त्री०] लघुशतावरी । शतमूली ।

तैलसाधन—[सं० क्ली०] शीतल चीनी, कबाब चीनी ।

तैलस्फटिक—[सं० पु०] तृणमणि, कहरुबा । अम्बर नामक गन्धद्रव्य ।

तैलस्यन्दा—[सं० स्त्री०] श्वेत-गोकर्णी । मुरहटी । काकोली, एक प्रकार की दवा । भूआँवला ।

तैलाक्त—[सं० त्रि०] तैलमर्दित, जिसमें तेल लगा हो ।

तैलाख्य—[सं० पु०] तुरुष्क नामक गन्धद्रव्य, शिलारस नाम का गन्धद्रव्य ।

तैलागुरु—[सं० क्ली०] दाहगुरु नामक गन्धद्रव्य, अगर की लकड़ी ।

तैलाङ्ग—[सं० पु०] बकुल वृक्ष, मौलश्री का पेड़ ।

तैलाटी—[सं० स्त्री०] वरटा नाम का कीट । बर्र, भिड़ ।

तैलाभ्यङ्ग—[सं० पु०] शरीर में तेल मलने की क्रिया ।

तैलाम्बुका—[सं० स्त्री०] तैलपायिका । झींगुर ।

तैलिक—[सं० पु०] तेली ।

तैलिनी—[सं० स्त्री०] एक प्रकार का कीड़ा । तेल की बत्ती ।

तैलीन—[सं० क्ली०] तिल का खेत ।

तैल्वक—[सं० पु०] लोध ।

तैल्वणपूग—[सं० क्ली०] पूगफल, सुपारी ।

तैष—[सं० पु०] शुक्ल प्रतिपद से लेकर अमावस्या तक चान्द्र पौष मास का नाम तैष है ।

तैषी—[सं० स्त्री०] पूस की पूर्णिमा ।

तोंद—[हि० स्त्री०] पेट का फुलाव, पेट के आगे का बढ़ा हुआ भाग ।

तोंदा—[हि० पु०] वह मार्ग जिसमें होकर तालाब का पानी निकलता हो ।

तोई—[हि० स्त्री०] कुरते आदि में कमर पर लगी हुई पट्टी या गोट । लहँगे का नेफा ।

तोक—[सं० क्ली०] अपत्य, लड़का या लड़की । शिशु, बालक, बच्चा । श्रीकृष्णचन्द्र के सखाओं में से एक ।

तोकक—[सं० पु०] चाषपक्षी, नील कण्ठ ।

तोकरा—[हि० स्त्री०] एक प्रकार की लता । यह प्रायः अफीम के पौधों पर लिपट कर उन्हें सुखा देती है ।

तोक्म—[सं० पु०] हरा और कच्चा जौ । हरा रंग । मेघा । बादल । [क्ली०] कान का मैल । जौ का नया अंकुर ।

तोतृंक—[सं० क्ली०] बारह अक्षर का वर्णवृत्त । शङ्कराचार्य के चार प्रधान शिष्यों में से एक ।

तोड़—[हि० पु०] तोड़ने की क्रिया । नदी आदि के जल की तेजधारा । दुर्ग की दीवालों आदि का वह अंश जो गोले की मार से टूट फूट गया हो । मारक । दही का पानी । कुश्ती का एक पेंच । बार । झोंक ।

तोड़ जोड़—[हि० पु०] युक्ति । चाल ।

तोड़न—[सं० क्ली०] छेद करने की क्रिया । चीरने या फाड़ने का काम । मारने का काम ।

तोड़ना—[हि० क्रि०] खण्डित करना । किसी संगठन व्यवस्था को नष्ट कर देना । खरीदने के लिए किसी पदार्थ का दाम घटाकर निश्चित करना । सेंध लगाना । किसी का कुमारित्व भंग करना । दुर्बल करना । निश्चय के विरुद्ध आचरण करना । स्थिर न रहने देना ।

तोड़ल—[सं० क्ली०] एक तंत्र ।

तोड़ा—[हि० पु०] सोने-चाँदी आदि की सिकरी । रुपये रखने की टाट आदि की थैली । तट । किनारा । घाटा । कमी । टोटा । रस्सी आदि का खण्ड । नाव का एक टुकड़ा । हल की लम्बी लकड़ी । हरिस । पलीता । वह लोहा जिसके चकमक पर मारने से आग निकलती है । तीन बार तक ब्याई हुई भैंस ।

तोड़ी—[सं० स्त्री०] एक प्रकार का धान । वसन्तराग की स्त्री ।

तोड़ी—[हि० स्त्री०] एक प्रकार की सरसों ।

तोतरंगी—[हि० स्त्री०] एक प्रकार की चिड़िया।

तोत्र—[सं क्ली०] वह छड़ी या चाबुक जिससे जानवर हाँके जाते हैं।

तोत्रवेत्र—[सं० क्ली०] विष्णुदंड।

तोद—[सं० पु०] पीड़ादायक। कष्ट पहुँचानेवाला।

तोदन—[सं० क्ली०] चाबुक। कोड़ा। व्यथा। पीड़ा। एक प्रकार का फलदार पेड़।

तोदपत्री—[सं० स्त्री०] एक प्रकार का खराब धान।

तोदो—[हि० स्त्री०] एक प्रकार का ख्याल।

तोपड़ा—[हि० पु०] एक प्रकार का कबूतर। एक प्रकार की मक्खी।

तोपा—[हि० पु०] एक प्रकार की सिलाई।

तोपास—[हि० पु०] वह जो झाड़ू देता हो।

तोम—[हि० पु०] समूह। ढेर।

तोमर—[सं० पु० क्ली०] प्राचीन भारतीय युद्ध-यंत्र विशेष। वह। बरछा जिसकी मूँठ बाँस की हो। एक देश का नाम। पिंगल छंदशास्त्रोक्त। एक प्रकार का छंद जिसमें ९ मात्राएँ रहती हैं।

तोमर राजस्थान का एक प्राचीन राजपूत क्षत्रिय राजवंश।

तोमरिका—[सं० स्त्री०] तुवरिका। गोपीचंदन।

तोय—[सं० क्ली०] जल। पानी। पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र।

तोयकर्म—[सं० क्ली०] तर्पण।

तोयकाम—[सं० पु०] बानीर, एक प्रकार का बेंत जो जल के समीप उत्पन्न होता है। [त्रि०] जो जल चाहता हो।

तोयकुम्भ—[सं०पु०] शैवाल। सेवार।

तोयडिम्ब—[सं०पु०] मेघोपल। ओला।

तोयद—[सं० पु०] नागरमोथा। [क्ली०] घी। [त्रि०] जो विधिपूर्वक जल देता हो।

तोयदागम—[सं० पु०] वर्षाऋतु। बरसात।

तोयधर—[सं० पु०] मेघ, मोथा। एक प्रकार का साग।

तोयधि—[सं० पु०] समुद्र।

तोयधिप्रिय—[सं० क्ली०] लवङ्ग। लौंग।

तोयनीबी—[सं० स्त्री०] पृथ्वी।

तोयपर्णी—[सं० स्त्री०] एक प्रकार का धान। करेला।

तोयपुष्पी—[सं० स्त्री०] पाटलावृक्ष। पाडर।

तोयप्रसादन—[सं० क्ली०] कतकफल। निर्मली।

तोयफला—[सं० स्त्री०] तरबूज की बेल। ककड़ी।

तोयमल—[सं०क्ली०] समुद्र का फेन।

तोयमुच—[सं०पु०] बादल। मस्तक। मोथा।

तोयराज—[सं० पु०] सागर।

तोयवल्लिका—[सं० स्त्री०] करेला।

तोयवृक्ष—[सं० पु०] सेवार।

तोयवृत्ति—[सं० पु०] एक प्रकार की दवा।

तोयशुक्तिका—[सं० स्त्री०] सीप।

तोयसर्पिका—[सं०स्त्री०] भेक। मेंढ़क।

तोयस्राव—[सं० पु०] घोड़े का एक रोग।

तोयाधार—[सं० पु०] तालाब। पुष्करिणी।

तोयाशय—[सं० पु०] जलाशय। तालाब।

तोयेश—[सं० पु०] वरुण। शतभिषा नक्षत्र।

तोर—[हि० पु०] अरहर।

तोरण—[सं० पु० क्ली०] किसी घर या नगर का बाहरी फाटक। बन्दनवार। ग्रीवा। गला। शिव। महादेव।

तोरणमाल—[सं० क्ली०] तीर्थ-विशेष। अवन्तिकापुरी।

तोरणस्फाटिका—[सं०स्त्री०] दुर्योधन की सभा का नाम।

तोरश्रवा—[सं० पु०] अङ्गिरा ऋषि का नाम।

तोरिया—[हि० स्त्री०] गोटा, किनारी आदि बुनने वालों का बेलन। वह गाय या भैंस जिसका बच्चा मर गया हो। एक प्रकार की सरसों।

तोल—[हि० पु०] नाव का डाँड़ा।

तोला—[हि० पु०] एक तौल जो बारह माशे या ९६ रत्ती की होती है।

तोश—[सं० पु०] हिंसा। हिंसक।

तोष—[सं० पु०] संतोष। आनन्द। एक देवता का नाम। श्रीकृष्ण के एक सखा का नाम। [त्रि०] अल्प। थोड़ा।

तोषनिधि—हिन्दी के एक सुकवि।

तोषल—[सं० पु०] कंस के एक मल्ल का नाम। [क्ली०] मूसल।

तौंस—[हि० स्त्री०] धूप से उत्पन्न प्यास जो किसी प्रकार न बुझे।

तौंसा—[हि० पु०] अधिक ताप। कड़ी गर्मी।

तौचा—[हि० पु०] सिर पर पहनने का एक प्रकार का गहना।

तौतिक—[सं० क्ली०] मोती। मोती की सीप।

तौदी—[सं० स्त्री०] घृतकुमारी। विषनाशक वृक्षभेद।

तौन—[हि० स्त्री०] गाय दुहते समय उसके बच्चे को उसी के अगले पैर में बाँधने की रस्सी।

तौर—[सं० क्ली०] योगभेद। एक

प्रकार का यज्ञ ।

तौरा—[हि० पु०] वह रस्सी जिससे मथानी मथी जाती है ।

तौरश्रवस—[सं० क्ली०] एक प्रकार का साग ।

तौर्य—[सं० क्ली०] ढोल, मँजीरा आदि बाजे ।

तौल—[हि० स्त्री०] वजन ।

तौलना—[हि० क्रि०] जोखना । मिलान करना । गाड़ी का पहिया औंगना । गाड़ी के पहिए में तेल देना ।

तौला—[हि० पु०] मट्टी का बरतन जिससे दूध मापा जाता है । महुए की शराब ।

तौलिक—[सं० पु०] चित्रकार ।

तौलिन्—[सं० पु०] तुलाराशि ।

तौलिया—[हि० स्त्री०] एक प्रकार का मोटा अँगोछा ।

तौली—[हि० स्त्री०] मट्टी की एक प्रकार की छोटी प्याली ।

तौली—[सं० पु०] तुलाराशि । बंगाल की तिली जाति ।

तौविलिका—[सं० स्त्री०] एक प्रकार की दवा ।

तौषार—[सं० पु०] तुषार का जल । पाले का पानी ।

त्मन—[सं० पु०] आत्मा ।

त्यक्त—[सं० त्रि०] त्यागा हुआ ।

त्यगल—[सं० पु०] ग्रंथकर्ता । वह जो किताब बनाता हो ।

त्यद्—[सं० त्रि०] आकाश । वायु ।

त्याग—[सं० पु०] उत्सर्ग । किसी पदार्थ पर से अपना स्वत्व हटा लेना अथवा उसे अपने पास से अलग करने की क्रिया । दान । विवेकी पुरुष । ज्ञानी मनुष्य । सर्व कर्मफल विसर्जन ।

त्यागपत्र—[सं० क्ली०] दानपत्र । वह पत्र जिसमें किसी प्रकार के त्याग का उल्लेख हो । तिलाक नामा । इस्तीफा ।

त्यागशील—[सं० त्रि०] उदार । दानी ।

त्याज्य—[सं० त्रि०] वर्जनीय । जो छोड़ देने योग्य हो । दान के योग्य ।

त्यों—[हि० क्रि० वि०] उस प्रकार । उस तरह । तत्काल । उसी समय ।

त्योरी—[हि० स्त्री०] अवलोकन । दृष्टि ।

त्योहार—[हि० पु०] पर्व दिन । धार्मिक या जातीय उत्सव दिन ।

त्योहारी—[हि० स्त्री०] त्योहार के उपलक्ष में छोटों, नौकरों या लड़कों आदि को दिया जाने का धन ।

त्यौनार—[हि० पु०] ढंग । तर्ज ।

त्रङ्ग—[सं० पु०] एक प्राचीन नगर का नाम जो पहले राजा हरिश्चंद्र का राज नगर था ।

त्रपमान—[सं० त्रि०] लज्जावान । जिसने लज्जा पाई हो ।

त्रपा—[सं० स्त्री०] लज्जा । लाज । शर्म । कुलटा । छिनाल स्त्री । कीर्ति । यश । कुल । वंश । [त्रि०] लज्जित । शरमिन्दा ।

त्रपाक—[सं० पु०] म्लेच्छ विशेष । नीच जाति ।

त्रपानिरस्त—[सं० त्रि०] निर्लज्ज । बेहया ।

त्रपान्वित—[सं० त्रि०] शरमिन्दा । लज्जायुक्त ।

त्रपारण्डा-[सं० स्त्री०] वेश्या । रंडी ।

त्रपित-[सं० त्रि०] लज्जित । शरमिन्दा ।

त्रपीयस—[सं० त्रि०] अत्यन्त लज्जित ।

त्रपु—[सं० क्ली०] सीसा । रंग । टीन ।

त्रपुटी—[सं० स्त्री०] छोटी इलायची ।

त्रपुल—[सं० क्ली०] रङ्ग । राँगा ।

त्रपुष-[सं० क्ली०] रङ्ग । रांगा । खीरा ।

त्रपुषी—[सं० स्त्री०] ककड़ी । खीरा ।

त्रपुसा—[सं० क्ली०] महेन्द्र वारुणी । बड़ा इन्द्रायण ।

त्रपुसी—[सं० स्त्री०] खीरा । ककड़ी ।

त्रप्सा—[सं० स्त्री०] जमा हुआ कफ ।

त्रपस्य—[सं० क्ली०] पतला दही ।

त्रयी—[सं० स्त्री०] ऋक्, यजु, और साम तीनों वेद । ब्रह्मा, विष्णु, महेश । पुरन्ध्री-पति, पुत्र, कन्या आदि से भरी पूरी स्त्री । सुमति, सोमराजी लता । भवानी । दुर्गा ।

त्रयीतनु—[सं० पु०] सूर्य ।

त्रयीमय—[सं० पु०] सूर्य । [त्रि०] वराह रूप । [पु०] परमेश्वर ।

त्रयीमुख—[सं० पु०] ब्राह्मण ।

त्रयोदशी—[सं० स्त्री०] किसी पक्ष की तेरहवीं तिथि, तेरस ।

त्रय्यारुण—[सं० पु०] मान्धाता वंश के त्रिधर्मा के पुत्र का नाम । पन्द्रहवें द्वापर के एक व्यास का नाम । भरतवंशीय एक राजा का नाम ।

त्रस—[सं० क्ली०] वन । जंगल । जङ्गम । सूक्ष्मकण ।

त्रसन—[सं० क्ली०] भय । डर । उद्वेग ।

त्रसरेणु—[सं० पु०] सूक्ष्म कण । [स्त्री०] सूर्य की स्त्री का नाम ।

त्रसित—[हि० वि०] भयभीत । डरा हुआ ।

त्रसुर—[सं० त्रि०] भीरु । डरपोक ।

त्रस्त—[सं० त्रि०] भीत । डरा हुआ । चकित । शीघ्र । पीड़ित । जिसे कष्ट पहुँचा हो ।

त्राटक—[सं० पु०] योग के षट्कर्मों में से छठा कर्म वा साधन । इसमें अनिमेष रूप से किसी बिन्दु पर दृष्टि रखी जाती है ।

त्राण—[सं० क्ली०] रक्षण । रक्षा ।

बचाव। रक्षिता। जिसकी रक्षा की गई हो। कवच।

त्रात—[सं० त्रि०] रक्षित। [क्ली०] रक्षण। बचाव।

त्राता—[हि० पु०] रक्षक। बचानेवाला।

त्रापुष—[सं० पु०] रांगे का बना हुआ बरतन या और कोई पदार्थ।

त्रिमन—[सं० त्रि०] रक्षक। बचानेवाला।

त्रायवृन्त—[सं० पु०] गंडीर या गुंडिरी नाम का साग।

त्रास—[सं० पु०] भय। डर। मणि का एक दोष। कष्ट। तकलीफ।

त्रासकर—[सं० त्रि०] भयजनक। निवारक। दूर करने वाला।

त्रासदिष्ट—[सं० पु०] वह रोग जो कुत्ते के काटने से उत्पन्न हो।

त्राहि—[सं० क्रि०] रक्षा करो, बचाओ।

त्रिंश—[सं० त्रि०] तीसवाँ।

त्रिंशत्पत्र—[सं० क्ली०] कुमुद, कोईं का फूल।

त्रिक—[सं० क्ली०] तीन का समूह। रीढ़ के नीचे का भाग जहाँ कूल्हे की हड्डियाँ मिलती हैं। कटिभाग। कमर। त्रिफला। गोखरू। त्रिमद। तीसरे दिन आनेवाला ज्वर। शरीर का जोड़ या गिरह।

त्रिककुद्—[सं० त्रि०] त्रिकूट पर्वत। विष्णु। दश दिनों में होने वाला एक प्रकार का यज्ञ।

त्रिककुभ—[सं० पु०] उदानवायु जिससे डकार या छींक आती है। नौ दिनों में होने वाला एक प्रकार का यज्ञ।

त्रिकग्रह—[सं० पु०] एक प्रकार का वात रोग।

त्रिकट—[सं० पु०] गोखरू।

त्रिकण्ट—[सं० पु०] गोखरू। स्नुही वृक्ष। टेंगरा मछली। तिधारा। थूहर।

त्रिकर्मन्—[सं० पु०] यज्ञ करना, यज्ञ कराना, दान लेना, दान देना, पढ़ना और पढ़ाना ये ६ ब्राह्मणों के धर्म हैं।

त्रिकल—[सं० पु०] दोहे का एक भेद। [त्रि०] जिसमें तीन कलाएँ हों।

त्रिकाम—[सं० पु०] बुद्धदेव।

त्रिकाल—[सं० क्ली०] भूत, वर्त्तमान और भविष्यत् काल। प्रातः, मध्याह्न और सायंकाल।

त्रिकालज्ञ—[सं० पु०] जिनेंद्र। बुद्ध। भूत, भविष्यत् और वर्त्तमान का ज्ञाता।

त्रिकूट—[सं० पु०] तीन शिखर वाला पर्वत। सुमेरु का पुत्र। [क्ली०] सिन्धुलवण। सेंधा नमक।

त्रिकूटा—[सं० स्त्री०] तांत्रिकों की एक भैरवी।

त्रिकूर्चक—[सं० क्ली०] सुश्रुत के अनुसार फोड़े आदि चीरने का एक शस्त्र।

त्रिकोण—[सं० क्ली०] योनि, भग। कामरूप के अन्तर्गत एक तीर्थ जो सिद्धपीठ माना जाता है। तीन कोने का क्षेत्र। मोक्ष।

त्रिकोणफल—[सं० क्ली०] सिंघाड़ा। त्रिभुज का क्षेत्रफल।

त्रिकोणमण्डलभूमि—[सं० स्त्री०] डेलटा।

त्रिकोणा—[सं० स्त्री०] योनि, भग। सिंघाड़े की बेल।

त्रिक्षुर—[सं० पु०] कोकिलाक्ष वृक्ष, ताल मखाना।

त्रिख—[सं० क्ली०] खीरा।

त्रिखर्व—[सं० पु०] सामवेद की शाखा के विशेषाध्यायी।

त्रिगंभीर—[सं० पु०] वह जिसका आचरण, स्वर और नाभि गंभीर हो। लोगों का विश्वास है कि ऐसा आदमी सदा सुखी रहता है।

त्रिगर्त—[सं० पु०] देश विशेष। इसका वर्तमान नाम जालंधर है।

त्रिगर्ता—[सं० स्त्री०] कामुकी स्त्री। छिनाल। घुरघुरा।

त्रिगुणाख्यरस—[सं० पु०] वातरोग का रस।

त्रिगुणी—[सं० स्त्री०] बेल का पेड़।

त्रिगूढ़—[सं० पु०] स्त्रियों के वेष में पुरुषों का नृत्य।

त्रिचक्र—[सं० पु०] अश्विनी कुमारों का रथ।

त्रिचक्षु—[सं० पु०] त्रिनेत्र महादेव।

त्रिजगत्—[सं० क्ली०] स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल के तीनों लोक।

त्रिजट—[सं० पु०] महादेव।

त्रिजटा—[सं० स्त्री०] विभीषण की बहन। बेल का पेड़।

त्रिजटी—[सं० पु०] महादेव, शिव।

त्रिजड़—[हि० पु०] कटारी, तलवार।

त्रिजातक—[सं० क्ली०] इलायची। दारचीनी और तेजपत्ता इन तीनों का समूह।

त्रिण—[सं० क्ली०] घास।

त्रिणता—[सं० स्त्री०] धनुष। [त्रि०] जो तीन जगह झुका हुआ हो।

त्रिणयन—[सं० पु०] शिव, महादेव।

त्रित—[सं० पु०] एक देवता का नाम। गौतम मुनि के पुत्र।

त्रितय—[सं० क्ली०] धर्म, अर्थ और काम इन तीनों का समूह। सन्निपात।

त्रितल—[सं० त्रि०] तीन खाने का घर।

त्रिदण्ड—[सं० पु०] संन्यास आश्रम का चिह्न।

त्रिदल—[सं० पु०] बिल्ववृक्ष, बेल

का पेड़ ।

त्रिदला—[सं० स्त्री०] हंसपदी ।

त्रिदशगुरु—[सं० पु०] देवगुरु, बृहस्पति ।

त्रिदशगोप—[सं० पु०] बीरबहूटी ।

त्रिदशदीर्घिका—[सं० स्त्री०] स्वर्गंगा । आकाशगंगा ।

त्रिदशमंजरी—[सं० स्त्री०] तुलसी ।

त्रिदशवधू—[सं० स्त्री०] अप्सरा ।

त्रिदशवर्त्मन्—[सं० क्ली०] आकाश ।

त्रिदशसर्षप—[सं० पु०] एक प्रकार की सरसों ।

त्रिदशांकुश—[सं० पु०] वज्र ।

त्रिदशाचार्य—[सं० पु०] देवताओं के गुरु बृहस्पति ।

त्रिदशाधिप—[सं० पु०] इन्द्र ।

त्रिदशाध्यक्ष—[सं० पु०] विष्णु ।

त्रिदशायुध—[सं० पु०] वज्र । इन्द्र का धनुष ।

त्रिदशारि—[सं० पु०] असुर ।

त्रिदशालय—[सं० पु०] स्वर्ग । सुमेरु पर्वत ।

त्रिदशाहार—[सं० पु०] अमृत । सुधा ।

त्रिदशेश्वर—[सं० पु०] इन्द्र ।

त्रिदशेश्वरी—[सं० स्त्री०] दुर्गा

त्रिदिवा—[सं० स्त्री०] एक नदी का नाम । एला । इलायची ।

त्रिदिवाधीश—[सं० पु०] इन्द्र ।

त्रिदिवोद्भवा—[सं० स्त्री०] गंगा । बड़ी इलायची ।

त्रिदोषसम्भव—[सं० पु०] सन्निपात ।

त्रिधनि—[सं० पु०] एक प्रकार की रागिणी ।

त्रिधर्मा—[सं० पु०] महादेव । शिव ।

त्रिधा—[अव्य०] तीन प्रकार से ।

त्रिधातु—[सं० पु०] गणेश । [क्ली०] सोना, चाँदी और ताँबा ।

त्रिधामन्—[सं० पु०] विष्णु । शिव । अग्नि । मृत्यु ।

त्रिधारक—[सं० पु०] बड़ा नागर मोथा । कसेरू का पेड़ ।

त्रिधारा—[सं० स्त्री०] तीनों लोकों में बहनेवाली गंगा ।

त्रिनयना—[सं० स्त्री०] दुर्गा ।

त्रिनाक—[सं० पु०] स्वर्ग । उत्तम स्थान ।

त्रिनाम—[सं० पु०] विष्णु ।

त्रिनेत्र—[सं० पु०] महादेव । शिव । स्वर्ग । सोना ।

त्रिनेत्रा—[सं० स्त्री०] वाराही कन्द ।

त्रिपटु—[सं० पु०] काँच । शीशा ।

त्रिपताक—[सं० क्ली०] माथा या ललाट जिस पर तीन बल पड़े हों ।

त्रिपत्र—[सं०पु०] विल्ववृक्ष । बेल का पेड़ । तीन तीन दल लगे हुए बेल के पत्ते ।

त्रिपत्रक—[सं० पु०] पलाश वृक्ष । ढाक का पेड़ । [क्ली०] तुलसी, कुन्द और बेल के पत्तों का समूह ।

त्रिपत्रा—[सं० स्त्री०] अरहर का पेड़ । तिपतिया घास ।

त्रिपथ—[सं० क्ली०] कर्म, ज्ञान और उपासना इन तीनों मार्गों का समूह । तिमुहानी ।

त्रिपथगा—[सं० स्त्री०] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल इन तीनों लोकों में गंगा बहती हैं । इसीलिये इन्हें त्रिपथगा कहते हैं ।

त्रिपद—[सं० पु०] परमेश्वर । तिपाई । त्रिभुज । यज्ञ की वेदी नापने की प्राचीन काल की एक माप जो प्राय: तीन हाथ से कुछ कम होती थी । [त्रि०] जिसके तीन पद या चरण हों ।

त्रिपदा—[सं० स्त्री०] हंसपदीलता । लाल रंग का लज्जू । [त्रि०] त्रिपाद-युक्त गायत्री ।

त्रिपदिका—[सं० स्त्री०] पूजा कालीन शंख रखने का पात्र । तिपाई । संकीर्ण-राग का एक भेद ।

त्रिपदी—[सं० स्त्री०] त्रिपाद युक्त । गायत्री छन्द । वह रस्सी जिसमें हाथियों के पैर बाँधे जाते हैं । तिपाई । एक प्रकार का छन्द ।

त्रिपन्न—[सं० पु०] चन्द्रमा के दस घोड़ों में से एक ।

त्रिपर्ण—[सं० पु०] पलास का पेड़ । [त्रि०] जिसमें तीन पत्ते हों ।

त्रिपर्णिका—[सं० स्त्री०] कन्द विशेष । एक प्रकार की मूली । यवास ।

त्रिपर्णी—[सं० स्त्री०] शालपर्णी । वनकार्पासी । वन कपास । पिठवनलता ।

त्रिपर्याय—[सं० त्रि०] जिसमें तीन तह लगी हों ।

त्रिपला—[सं० स्त्री०] त्रिफला ।

त्रिपाठ—[सं० पु०] तीन पदक्रम संहिता का पाठ ।

त्रिपाठी—[सं० पु०] तीन वेदों का जाननेवाला पुरुष । त्रिवेदी । ब्राह्मणों की एक जाति । तिवारी ।

त्रिपाण—[सं० क्ली०] वह सूत जो तीन बार भिगोया गया हो । बल्कल । छाल ।

त्रिपाद—[सं० पु०] परमेश्वर । ज्वर । बुखार ।

त्रिपिटक—[सं० क्ली०] बौद्धों का धर्म ग्रंथ ।

त्रिपिण्ड—[सं० स्त्री०] श्राद्ध में पिता, पितामह और प्रपितामह के उद्देश्य से दिए हुए तीन पिण्ड ।

त्रिपिच—[सं० पु०] लम्बे कानवाला बड़ा बकरा ।

त्रिपिष्टम—[सं० क्ली०] स्वर्ग । आकाश ।

त्रिपु—[सं० पु०] स्तेन, चोर ।

त्रिपुट—[सं॰ पु॰] सतीलक, मटर। तीर। किनारा। हस्तभेद, एक हाथ का माप। ताला। गोखरू का पेड़। शर। खेसारी।

त्रिपुटक—[सं॰ पु॰] फोड़े का एक आकार। त्रिभुज।

त्रिपुटा—[सं॰ स्त्री॰] मल्लिका, चमेली। बेली का फूल। बेल का पेड़। छोटी इलायची। बड़ी इलायची। निसीथ। कनफोड़ा बेल। कुलथी। तांत्रिकों की एक देवी जो अभीष्टदात्री मानी जाती हैं।

त्रिपुटिन—[सं॰ पु॰] एरण्ड वृक्ष, रेंड़ का पेड़। खेसारी।

त्रिपुटी—[सं॰ स्त्री॰] निसीथ। छोटी इलायची। ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय रूप तीनों पुट।

त्रिपुण्ड—[सं॰ क्ली॰] तिलक भेद, भस्म की तीन आड़ी रेखाओं का तिलक जो शैव या शाक्त लोग ललाट पर लगाते हैं।

त्रिपुर—[सं॰ स्त्री॰] मयदानव के बनाए हुए असुरों के तीनों नगर।

त्रिपुरघ्न—[सं॰ पु॰] महादेव।

त्रिपुरदहन—[सं॰ पु॰] महादेव, शिव।

त्रिपुरभैरवी—[सं॰ स्त्री॰] एक देवी का नाम।

त्रिपुरमल्लिका—[सं॰ स्त्री॰] एक प्रकार की चमेली का पेड़।

त्रिपुरा—[सं॰ स्त्री॰] त्रिपुरादेवी कामाख्या की एक मूर्ति का नाम।

त्रिपुरा—पूर्व बंगाल का एक प्रान्त—भूभाग।

त्रिपुरान्तक—[सं॰ पु॰] शिव, महादेव।

त्रिपुरारि-[सं॰ पु॰] शिव। एक टीकाकार का नाम, पार्वतीनाथ के पुत्र।

त्रिपुराररिस—[सं॰ पु॰] एक प्रकार की दवा।

त्रिपुरुष—[सं॰ क्ली॰] भोगभेद, सम्पत्ति का वह भोग जो तीन पीढ़ियाँ अलग अलग करें। पिता, पितामह और प्रपितामह।

त्रिपुरेशाद्रि—[सं॰ पु॰] काश्मीर का एक पर्वत।

त्रिपुष-[सं॰ पु॰] ककड़ी। खीरा। गेहूँ।

त्रिपुषा—[सं॰ स्त्री॰] काला निसीथ।

त्रिपुष्कर—[सं॰ क्ली॰] ब्रह्मकृत तीर्थभेद। [पु॰] नक्षत्र, वार, तिथि-रूप अशुभयोगभेद।

त्रिप्रश्न [सं॰ पु॰] दिक्, देश और काल विषयक प्रश्न।

त्रिप्रस्रुत—[सं॰ पु॰] वह हाथी जिसके मस्तक, कपोल और नेत्र इन तीनों स्थानों से मद झड़ता हो।

त्रिफला—[सं॰ स्त्री॰] आँवले, हड़ और बहेड़े का समूह।

त्रिबन्धन—[सं॰ पु॰] हर्यस्व के पौत्र एक राजा का नाम। जाग्रदादि तीनों अवस्था के जीव।

त्रिबन्धु—[सं॰ पु॰] त्रिलोक का बन्धु।

त्रिबलि—[सं॰ स्त्री॰] वे तीन बल जो पेट पर पड़ते हैं।

त्रिबलीक-[सं॰ क्ली॰] वायु। मल-द्वार। गुदा।

त्रिबाहु—[सं॰ पु॰] रुद्र के एक अनुचर का नाम। तलवार का एक हाथ।

त्रिभ—[सं॰ क्ली॰] लग्न इत्यादि तीनों राशि। तीन राशि। [त्रि॰] जिसमें तीन नक्षत्र हों।

त्रिभङ्ग—[सं॰ त्रि॰] श्रीकृष्ण की एक मूर्ति जिसमें भगवान् की ग्रीवा, कटि और जानु कुछ वक्र भाव से बने होते हैं।

त्रिभङ्गी—[सं॰ स्त्री॰] एक मात्रिक छन्द का नाम। शुद्ध राग का एक भेद।

त्रिभजीवा—[सं॰ स्त्री॰] व्यास की आधी रेखा।

त्रिभद्र—[सं॰ क्ली॰] प्रसङ्ग, भोग, रतिक्रिया।

त्रिभानु—[सं॰ पु॰] तुर्वसु वंश के एक राजा का नाम।

त्रिभुक्ति—[सं॰ पु॰] तिरहुत या मिथिला देश।

त्रिभुज—[सं॰ क्ली॰] त्रिबाहुक, तीन भुजाओं का क्षेत्र।

त्रिभुवन—[सं॰ क्ली॰] त्रिलोक, स्वर्ग, पृथ्वी, और पाताल।

त्रिभुवनसुन्दरी-[सं॰ स्त्री॰] दुर्गा। पार्वती।

त्रिभूम—[सं॰ पु॰] तीन खण्डोंवाला मकान, तिमहला घर।

त्रिमंगल-एक विख्यात द्राविड़ पण्डित।

त्रिमण्डला—[सं॰ स्त्री॰] लता भेद। एक प्रकार की जहरीली मकड़ी।

त्रिमद—[सं॰ पु॰] विद्यामद, धन-मद और अभिजनमद इन तीन कारणों से होनेवाला अभिमान। मुस्ता. चित्रक, विडङ्ग, मोथा, चीता और बायविडङ्ग का समूह।

त्रिमधु—[सं॰ क्ली॰] दूध, चीनी और शहद इन तीनों का समूह। [पु॰] ऋग्वेद के एक अंश का नाम।

त्रिमार्ग—[सं॰ क्ली॰] तीन पथ, तिमुहानी।

त्रिमार्गगा—[सं॰ स्त्री॰] गङ्गा।

त्रिमुकुट—[सं॰ पु॰] वह पहाड़ जिसकी तीन चोटियाँ हों।

त्रिमुख—[सं॰ पु॰] शाक्यमुनि। गायत्री जपने की चौबीस मुद्राओं में से एक मुद्रा।

त्रिमुखा—[सं॰ स्त्री॰] मायादेवी।

त्रिमुखी—[सं॰ स्त्री॰] बुद्ध की माता। मायादेवी। महायान शाखा के बौद्ध देवीरूप से इनकी उपासना करते हैं।

त्रिमुनि—[सं॰ क्ली॰] पाणिनि, कात्यायन और पतंजलि ये तीनों मुनि। पाणिनि आदि तीनों मुनियों के बनाए हुए व्याकरण।

त्रिमूर्ति—[सं॰ पु॰] ब्रह्मा, विष्णु और शिव ये तीनों देवता। सूर्य। [स्त्री॰] ब्रह्मा की एक शक्ति। बौद्धों की एक देवी।

त्रियम्बक—[सं॰पु॰] त्रिनेत्र, महादेव।

त्रियव—[सं॰ क्ली॰] एक परिमाण जो तीन जौ के बराबर या एक रत्ती के लगभग होता है।

त्रियष्टि—[सं॰ स्त्री॰] क्षुपभेद। पित्तपापड़ा। शाहतरा। त्रिगुच्छहार।

त्रियान—[सं॰ क्ली॰] बौद्धों के तीन प्रधान भेद या यान—महायान, हीनयान और मध्यमयान।

त्रियामक—[सं॰ क्ली॰] पाप।

त्रियामा—[सं॰ स्त्री॰] निशा। रात्रि। हल्दी। यमुना नदी। नील का पेड़।

त्रियुग—[सं॰ पु॰] विष्णु। वसन्तादि कालत्रय। वसन्त, वर्षा और शरद ये तीनों ऋतुएँ। सत्य, त्रेता और द्वापर ये तीनों युग। [त्रि॰] जिसे छवों प्रकार के ऐश्वर्य प्राप्त हों।

त्रियूह—[सं॰ पु॰] कपिलाश्व। सफेद रंग का घोड़ा।

त्रिरत्न—[सं॰क्ली॰] बौद्धधर्म के प्रधान तीन धन—बुद्ध, धर्म और संघ।

त्रिरसक—[सं॰ क्ली॰] वह मदिरा जिसमें तीन प्रकार के रस या स्वाद हों। तीन बार मधुपान।

त्रिरूप—[सं॰ पु॰] अश्वमेध यज्ञ के लिए एक विशेष प्रकार का घोड़ा।

त्रिरेख—[सं॰ पु॰] शंख। [क्ली॰] तीन रेखाएँ।

त्रिलघु—[सं॰ त्रि॰] छन्दोग्रंथप्रसिद्ध एक नगण। पुरुष-विशेष। वह पुरुष जिसकी गर्दन, जाँघ और मूत्रेन्द्रिय छोटी हो।

त्रिलवण—[सं॰ त्रि॰] सेंधा। साँभर और सोचर नमक।

त्रिलिङ्ग—पुंस्त्वादि तीनों लिङ्गयुक्त शब्द। अहङ्कार आदि। वात इत्यादि धातुदोष से उत्पन्न एक प्रकार का रोग। तैलङ्ग देश का बना संस्कृत रूप।

त्रिलोक—[सं॰ क्ली॰] त्रिभुवन। स्वर्ग, मर्त्य और पाताल ये तीनों लोक। [पु॰] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल के अधिवासी।

त्रिलोकधृत—[सं॰ पु॰] परमेश्वर।

त्रिलोकपति—[सं॰ पु॰] परमेश्वर।

त्रिलोकी—[सं॰ स्त्री॰] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल ये तीनों लोक।

त्रिलोकेश—[सं॰ पु॰] परमेश्वर। सूर्य।

त्रिलोचन—[सं॰ पु॰] शिव। महादेव। काशी के चौदह लिंगों में से एक लिंग। एक संस्कृत ग्रन्थकार।

त्रिलोचना—[सं॰ स्त्री॰] दुर्गा।

त्रिलोचनाष्टमी—[सं॰ स्त्री॰] ज्येष्ठ मास की गौणचान्द्र कृष्णाष्टमी।

त्रिलोचनी—[सं॰ स्त्री॰] दुर्गा।

त्रिलोह—[सं॰ क्ली॰] सोना, चाँदी और ताँबा।

त्रिवण—[सं॰ पु॰] सम्पूर्ण जाति का एक राग। यह दोपहर के समय गाया जाता है। कोई कोई इसे हिंडोल राग का पुत्र मानता है।

त्रिवणी—[हि॰ स्त्री॰] एक संकर रागिणी।

त्रिवास—[सं॰ पु॰] तीन वर्ष का पशु।

त्रिवर्ग—[सं॰ पु॰] अर्थ, धर्म और काम। त्रिफला। वृद्धि, स्थिति और क्षय। सत्व, रज और तम ये तीनों गुण। ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ये तीनों प्रधान जातियाँ। सुनीति। गायत्री।

त्रिवर्ण—[सं॰ क्ली॰] तीन रंग।

त्रिवर्णक—[सं॰ क्ली॰] ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ये तीनों प्रधान जातियाँ। त्रिफला। काला, लाल और पीला रंग। गोखरू। त्रिकटु।

त्रिवर्णकृत—[सं॰ पु॰] सरट। गिरगिट। ये तीनों रंग धारण कर सकता है।

त्रिवर्णा—[सं॰ स्त्री॰] बन कपास।

त्रिवर्त—[सं॰ पु॰] एक प्रकार का मोती। कहा जाता है कि जिसके पास यह मोती होता है उसे दरिद्र कर देता है।

त्रिवर्त्मगा—[सं॰ स्त्री॰] त्रिपथगा। गंगा।

त्रिवर्त्मन—[सं॰ क्ली॰] त्रिपथ। देवयान, पितृयान और दक्षिणायन इन तीनों मार्गों के जीव।

त्रिवर्ष—[सं॰ त्रि॰] तीन वर्ष के जीव। [पु॰ क्ली॰] तीन वर्ष।

त्रिवर्षा—[सं॰ स्त्री॰] तीन वर्ष की गाय।

त्रिवल्ली—[सं॰ स्त्री॰] इन्दीवर, नील कमल।

त्रिवल्य—[सं॰ पु॰] बहुत प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा जिस पर चमड़ा मढ़ा होता था।

त्रिवार—[सं॰ त्रि॰] तीन बार। [पु॰] गरुड़ के एक पुत्र का नाम।

त्रिवाहु—[सं॰ पु॰] तलवार के ३२ हाथों में से एक हाथ।

त्रिविक्रम—[सं॰ पु॰] विष्णु। वामन का अवतार।

त्रिविद्—[सं॰ त्रि॰] तीनो वेदों के

जानने वाले ।

त्रिविध—[सं० त्रि०] तीन प्रकार का।

त्रिविनत—[सं० त्रि०] जो देवता, ब्राह्मण और गुरु के प्रति बहुत श्रद्धा और भक्ति रखता हो।

त्रिविष्टप—[सं० क्ली०] स्वर्ग। तिब्बत देश।

त्रिविस्त—[सं० त्रि०] जिसका दाम तीन स्वर्ण कर्ष हो।

त्रिवीज—[सं० पु०] श्यामाक, सावाँ।

त्रिवृत—[सं० पु०] लता विशेष, निसौथ।

त्रिवृत्त—[सं० त्रि०] तिगुना।

त्रिवृत्तिका—[सं० स्त्री०] निसोथ। [त्रि०] जिसकी तीन वृत्तियाँ हों।

त्रिवृत्तपर्णी—[सं० स्त्री०] हिलमीचिका, हुरहुर।

त्रिवृन्त—[सं० पु०] पलाश वृक्ष। ढाक का पेड़।

त्रिवृष—[सं० पु०] पुराणानुसार ग्यारहवें द्वापर के व्यास का नाम।

त्रिवेणी—[सं० स्त्री०] इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना रूप पारिभाषिक तीनों नदियों का संगम स्थान।

त्रिवेद—[सं० पु०] तीनों वेदों के जानने वाले।

त्रिशक्ति—[सं० स्त्री०] काली, तारा और त्रिपुरा ये तीनों देवियाँ। इच्छा, ज्ञान और क्रिया रूपी तीनों ईश्वरीय शक्तियाँ। राजाओं की प्रभाव, उत्साह और मंत्र ये तीनों शक्तियाँ। गायत्री।

त्रिशङ्कु—[सं० पु०] बिल्ली। शलभ, पतंग, टिड्डी। चातक, पपीहा। खद्योत, जुगनू। एक पहाड़ का नाम। सूर्यवंशीय एक राजा। नक्षत्र-विशेष, एक तारा।

त्रिशङ्कुज—[सं० पु०] हरिश्चन्द्र राजा।

त्रिशत—[सं० क्ली०] तीन सौ।

त्रिशरण—[सं० क्ली०] बुद्ध। जैनियों के एक आचार्य का नाम।

त्रिशला—[सं० स्त्री०] महावीर स्वामी की माता का नाम।

त्रिशाखपत्र—[सं० पु०] बेल का पेड़।

त्रिशालक—[सं० क्ली०] वह इमारत जिसके उत्तर में और कोई इमारत न हो।

त्रिशिख—[सं० क्ली०] त्रिशूल। किरीट। रावण के एक पुत्र का नाम। बेल। तामस नामक मन्वन्तर के इन्द्र का नाम।

त्रिशिखर—[सं० पु०] वह पहाड़ जिसकी तीन चोटियाँ हों।

त्रिशिखिदला—[सं० स्त्री०] माला कन्द नामक मूल।

त्रिशिरस—[सं० पु०] कुबेर। रावण के एक पुत्र का नाम। खर के एक सेनापति का नाम। ज्वर पुरुष। चैत्ररथ। असुर विशेष।

त्रिशीर्षक—[सं० क्ली०] त्रिशूल।

त्रिशुच—[सं० पु०] धर्म, जिसका प्रकाश स्वर्ग, अन्तरिक्ष और पृथ्वी तीनों स्थानों में है।

त्रिशूल—[सं० पु०] एक प्रकार का अस्त्र जिसके सिरे पर तीन फल होते हैं। यह शिव का अस्त्र माना जाता है। दैहिक, दैविक और भौतिक दुख। तंत्र के अनुसार एक प्रकार की मुद्रा।

त्रिशूली—[सं० पु०] शिव, महादेव। [स्त्री०] दुर्गा। [क्ली०] पारद, पारा।

त्रिशृङ्ग—[सं० पु०] त्रिकूट पर्वत। इसी पहाड़ पर लंका बसी है। त्रिकोण।

त्रिष्टोम—[सं० पु०] एक प्रकार का यज्ञ।

त्रिष्ठ—[सं० पु०] तीन पहियों का रथ या गाड़ी।

त्रिसन्धि—[सं० स्त्री०] एक प्रकार का फूल जो लाल, सफेद और काला तीन रंगों का होता है।

त्रिसन्ध्या—[सं० क्ली०] प्रातः, मध्याह्न और सायं के तीन काल।

त्रिसम—[सं० क्ली०] सोंठ, गुड़ और हड़ इन तीनों के बराबर बराबर भागों का समूह।

त्रिसर—[सं० पु०] खिचड़ी।

त्रिसरक—[सं० क्ली०] तीन बार मधुपान।

त्रिसरी—[सं० पु०] एक प्रकार का घोड़ा जिसके सर्वाङ्ग भिन्न भिन्न वर्ण के के हों केवल सिर काला हो।

त्रिसामन—[सं० पु०] परमेश्वर।

त्रिसामा—[सं० स्त्री०] महेन्द्र पर्वत से निकली हुई एक नदी का नाम।

त्रिसत्य—[सं० क्ली०] वह भूमि जो तीन बार जोती गई हो।

त्रिस्तनी—[सं० स्त्री०] एक राक्षसी का नाम जिसके तीन स्तन थे। गायत्री।

त्रिस्थली—[सं० स्त्री०] काशी, गया, और प्रयाग ये तीन पुण्य स्थान।

त्रिस्पृशा—[सं० स्त्री०] एकादशी भेद।

त्रिस्रोता—[सं० स्त्री०] गंगा।

त्रिहल्य—[सं० क्ली०] वह खेत जो तीन बार जोता गया हो।

त्रिहायण—[सं० त्रि०] तीन वर्ष का बछड़ा। तीन वर्ष।

त्रिहायणी—[सं० स्त्री०] द्रौपदी।

त्रीषु—[सं० त्रि०] तीन बाणों तक की दूरी का स्थान।

त्रीषुक—[सं० क्ली०] तीन बाणवाला धनुष।

त्रुटि—[सं० स्त्री०] छोटी इलायची। अल्प। थोड़ा। संशय। संदेह। अभाव। भूल। चूक। वचन भंग।

त्रुटित—[सं० त्रि०] छिन्न। कटा या टूटा हुआ। भग्न। आहत। गिरा हुआ।

त्रेता—[सं० स्त्री०] द्यूत विशेष। दक्षिण, गार्हपत्य और आहवनीय नामक तीन प्रकार की अग्नि। चार युगों में से दूसरा युग।

त्रेताय—[सं० पु०] द्यूत भेद। पासा खेलने का एक प्रकार।

त्रैककुद—[सं० क्ली०] एक प्रकार का काजल या सुरमा।

त्रैककुभ—[सं० क्ली०] उदात्त सम्बन्धीय। एक प्रकार का यज्ञ जो नौ दिन में समाप्त होता है।

त्रैकालज्ञ—[सं० त्रि०] तीनों काल का।

त्रैकालिक—[सं० त्रि०] तीनों काल में या सदा होनेवाला।

त्रैगर्त्त—[सं०पु०] त्रिगर्त्त देश के राजा।

त्रैगुणिक—[सं० त्रि०] जो तीन बार गुणा किया गया हो। जिसमें तीनों प्रकार के गुण हों।

त्रैगुण्य—[सं० क्ली०] सत्व, रज, तम इन तीन गुणों का धर्म वा भाव।

त्रैत—[सं० पु०] वह पशु जिसके साथ साथ दो और पशु पैदा हुए हों। किसी तीन चीजों का समूह।

त्रैधातवी—[सं० स्त्री०] एक प्रकार का यज्ञ।

त्रैधातुक—[सं० त्रि०] जो तीन धातुओं से बनाया गया हो। [पु०] तीनों लोक।

त्रैपारायणिक—[सं० त्रि०] जिसने तीन बार वेद पढ़ा हो।

त्रैपुर—[सं० पु०] त्रिपुर देश। उस देश के निवासी। उस देश के राजा। त्रिपुरासुर नाम का राक्षस।

त्रैबलि—[सं० पु०] एक ऋषि का नाम जिनका उल्लेख महाभारत में आया है।

त्रैमातुर—[सं० पु०] लक्ष्मण। ये कौशिल्या, केकयी और सुमित्रा के स्नेह भाजन थे।

त्रैमासिक—[सं० त्रि०] जिसकी उम्र तीन मास की हो। हर तीसरे महीने होने वाला।

त्रैमास्य—[सं० क्ली०] तीन महीने।

त्रैयम्बक—[सं० पु०] त्रयम्बक देवता के उद्देश्य से ग्रहण किया हुआ एक पशु। एक प्रकार का होम। रुद्र देवता की धनुर्विद्या भेद।

त्रैयम्बका—[सं० स्त्री०] गायत्री।

त्रैरूप्य—[सं० क्ली०] जिसका आकार तीन प्रकार का हो।

त्रैलोक्यविजया—[सं० स्त्री०] सिद्धि। भाँग।

त्रैवर्ग्य—[सं० त्रि० [वह धन जिससे अर्थ, धर्म और काम इन तीनों की साधना हो।

त्रैवर्णिक—[सं० पु०] ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य इन तीन जातियों का धर्म। [त्रि०] तीन वर्ण सम्बन्धी।

त्रैविक्रम—[सं० त्रि०] त्रिविक्रम सम्बन्धी। [पु०] त्रिविक्रमावतार विष्णु।

त्रैविद्य—[सं० पु०] तीन वेदों का जाननेवाला पुरुष। तीन विद्याएँ। एक प्रकार का व्रत।

त्रैविष्टप—[सं० पु०] स्वर्ग में रहने वाला देवता।

त्रैसानु—[सं० पु०] तुर्वसुवंश के राजा गोभानु के पुत्र का नाम।

त्रैस्वर्य—[सं० क्ली०] उदात्त, अनुदात्त और स्वरित तीनों प्रकार के स्वर।

त्रोटक—[सं० त्रि०] छेदक। [क्ली०] नाटक का एक भेद। एक राग का नाम। एक विषैला कीड़ा। शङ्कराचार्य के एक शिष्य का नाम।

त्रोटकी—[सं० स्त्री०] एक रागिणी का नाम।

त्रोटि—[सं० स्त्री०] जायफल। चोंच। एक प्रकार की चिड़िया। एक प्रकार की मछली।

त्रोटिहस्त—[सं० पु०] पक्षी, चिड़िया।

त्रोटी—[सं० स्त्री०] टोंटी। चिड़िया की चोंच।

त्रोतल—[सं० क्ली०] तोडल तंत्र। [त्रि०] तोतला।

त्रोत्र—[सं० क्ली०] चाबुक। अस्त्र। आरूप क्रिया। एक प्रकार का रोग।

त्र्यक्ष—[सं० पु०]त्रिनेत्र, शिव। एक दैत्य का नाम।

त्र्यक्षर—[सं० पु०] प्रणव। [क्ली०] एक प्रकार का छन्द। घटक।

त्र्यङ्गर—[सं० क्ली०] छींका, सिकहर। धीवाजंनी। [पु०] ईश्वर। चन्द्रमा।

त्र्यधिपति—[सं० पु०] तीनों लोकों के अधिपति कृष्ण, विष्णु।

त्र्यधिष्ठान—[सं० पु०] जीव। चैतन्य, चेतनता।

त्र्यध्वगा—[सं० स्त्री०] गङ्गा।

त्र्यनीक—[सं० पु०] हाथी, घोड़े और रथ की सेना।

त्र्यम्बक—[सं० क्ली०] शिव, महादेव। शिव के अंग से उत्पन्न चन्द्रशेखर नामक पौष्य राजा के पुत्र। ग्यारह रुद्रों में से एक रुद्र।

त्र्यम्बका—[सं० स्त्री०]दुर्गा, जिनके नेत्र सोम, सूर्य और अनल ये तीनों माने जाते हैं।

त्र्यवर—[सं० त्रि०] जिसके तीन नौकर हों।

त्र्यवि—[सं० पु०] अठारह महीने का पशु।

त्र्यब्द—[सं० क्ली०] तीन वर्ष। [त्रि०] जिसकी उमर तीन वर्ष की हो।

त्र्यशीत—[सं० त्रि०] संख्या का पूरण। तिरासीवाँ।

त्र्यष्टक—[सं० क्ली०] सुश्रुत के अनुसार वह स्थान जहाँ जल फेंका जाता है।

त्र्यष्टन—[सं० त्रि०] चौबीस की संख्या।

त्र्यस्त्र—[सं० क्ली०] त्रिकोण। मटर का गाछ। बाघ का नाखून। [स्त्री०] चमेली।

त्र्यस्त्रफल—[सं० स्त्री०] शल्लकी वृक्ष। सेमर का पेड़।

त्र्यहस्पर्श—[सं० पु०] वह सावन का दिन जिसे तीन तिथियाँ स्पर्श करती हों। दिनक्षय। दिन का घटना।

त्र्यहीन—[सं० पु०] तीन दिनों में होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ।

त्र्यहैहिक—[सं० त्रि०] वह गृहस्थ जिसके यहाँ तीन दिन तक निर्वाह करने के लिए यथेष्ट सामग्री हो।

त्र्यायुष—[सं० क्ली०] बाल्य, यौवन और स्थविर ये तीन अवस्थाएँ।

त्र्यार्षेय—[सं० पु०] वह गोत्र जिसके तीन प्रवर हों।

त्र्याहण—[सं० पु० स्त्री०] सुश्रुत के अनुसार एक पक्षी।

त्र्याहिक—[सं० पु०] हर तीसरे दिन आनेवाला ज्वर। [त्रि०] तीन दिनों में होनेवाला।

त्र्युधन्—[सं० पु०] पालने योग्य साँड़।

त्र्युषण—[सं० क्ली०] त्रिकटु; सोंठ, पीपल और मिर्च।

त्र्यृच—[सं० क्ली०] ऋग्वेद के तीन मंत्र।

त्र्येणी—[सं० स्त्री०] कबुरा स्त्री। वह स्त्री जिसके शरीर पर तीन जगह चितकबरे दाग हों।

त्व—[सं० त्रि०] भिन्न। दूसरा। एक।

त्वक् कण्डुर—[सं० पु०] व्रण। फोड़ा।

त्वक्क्षीरा—[सं० स्त्री०] वंशलोचन।

त्वक्छद—[सं० पु०] क्षीरकंचुकी।

त्वकत्र—[सं० क्ली०] वर्म। कवच।

त्वक्पत्र—[सं० क्ली०] दारचीनी। तेजपत्र।

त्वक्पत्री—[सं० स्त्री०] कारवी। केले का पेड़। तेजपत्र के समान पत्ता।

त्वक्परिपुटन—[सं० क्ली०] चमड़े का खींचना। शरीर से चमड़े का अलग करना।

त्वक्पाक—[सं० पु०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का रोग जिसमें पित्त कुपित होने से शरीर में फुन्सियाँ निकल आती हैं।

त्वक्पारुष्य—[सं० क्ली०] चमड़े का कड़ापन।

त्वक्पुष्प—[सं० क्ली०] रोमांच, रोएँ खड़े हो जाना। किलास, सेहुआ, रोग।

त्वक्पुष्पिका—[सं० स्त्री०] एक प्रकार का चमड़े का रोग।

त्वक्स—[सं० क्ली०] बल, ताकत।

त्वक्षीयस—[सं० त्रि०] दीप्त। चमकता हुआ।

त्वक्सार—[सं० पु०] वंश, बाँस। बाँस का छिलका। दारचीनी। सन का पौधा।

त्वक्सारा—[सं० स्त्री०] बंसलोचन।

त्वकसुगन्ध—[सं० पु०] नारंगी, नीबू। लवंग, लौंग।

त्वकसुगन्धा [सं० स्त्री०] एलुवा। छोटी इलायची।

त्वकस्वाद्वी—[सं० स्त्री०] दारचीनी।

त्वगङ्कुर—[सं० पु०] रोमांच।

त्वगाक्षीरी—[सं० स्त्री०] बंसलोचन।

त्वगगन्ध—[सं० पु०] नागरङ्ग, नारंगी नीबू।

त्वगज—[सं० क्ली०] रोम, रोआँ। रुधिर, लोहू।

त्वग्दोष—[सं० त्रि०] कुष्ठरोग, कोढ़।

त्वग्भेद—[सं० पु०] चमड़े का फटना।

त्वग्भेदक—[सं० पु०] वह जो चमड़ा छेदता हो।

त्वच्—[सं० स्त्री०] वल्कल, छाल। चर्म, चमड़ा। पाँच इन्द्रियों में से एक। दारचीनी। कंचुक, केंचुल।

त्वचस्य—[सं० त्रि०] हितकर।

त्वचा—[सं० स्त्री०] चर्म। चमड़ा। मिष्ट वल्कल। दारचीनी।

त्वचापत्र—[सं० क्ली०] दारचीनी। तेजपत्ता।

त्वचिष्ठ—[सं० त्रि०] ज्यादा चमड़ावाला।

त्वचिसार—[सं० पु०] वंश।

त्वज्ज्ञान—[सं० क्ली०] स्पर्श इन्द्रिय से उत्पन्न ज्ञान।

त्वत्—[सं० त्रि०] भिन्न।

त्वम्पदलक्ष्यार्थ [सं० पु०] चैतन्य, चेतनता।

त्वरण—[सं० क्ली०] शीघ्रता, जल्दी।

त्वरणीय—[सं० त्रि०] द्रुतगमनशील, जल्दी जानेवाला।

त्वरमाण—[सं० त्रि०] सत्वर, तेज।

त्वरायण—[सं० त्रि०] शीघ्रता करनेवाला, जल्दबाज़।

त्वरारोह—[सं० पु०] कपोत, कबूतर।

त्वरि—[सं० स्त्री०] शीघ्रता, जल्दी।

त्वरित—[सं० क्ली०] शीघ्र, जल्दी। [त्रि०] तेज।

त्वरितक—[सं० पु०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का चावल जिसे तूर्णक भी कहते हैं।

त्वरितगति [सं० स्त्री०] छन्दोभेद, एक वर्णवृत्त का नाम।

त्वरिता—[सं० स्त्री०] तंत्र के अनुसार एक देवी।

त्वरितोदित—[सं० क्ली०] बहुत जल्द उच्चारण किया हुआ वाक्य।

त्वलग—[सं० त्रि०] जलसर्प, पानी का साँप।

त्वष्ट—[सं० त्रि०] जो पतला या सूक्ष्म किया गया हो।

त्वष्टि—[सं० पु०] मनु के अनुसार एक संकर जाति।

त्वष्टीमती—[सं० स्त्री०] विश्वकर्मा की दयालु स्त्री।

त्वष्टृ—[सं० पु०] बारह आदित्यों में से ग्यारहवें आदित्य। विश्वकर्मा। विश्वकर्मा के एक पुत्र का नाम। एक प्रजापति का नाम। महादेव। सूत्रधार नाम की वर्णसंकर जाति। चित्रा नक्षत्र के अधिष्ठात्री देवता का नाम। बढ़ई। एक वैदिक देवता। ताँबा।

त्वष्टृमत—[सं० त्रि०] एक देवता जो वीर्य के अधिष्ठातृ देवता माने जाते हैं।

त्वाचप्रत्यक्ष—[सं० क्ली०] स्पर्शज्ञान। छूकर किसी चीज का अनुभव करना।

त्वायत—[सं० त्रि०] आत्माभिलाषी, जो अपनी प्रतिष्ठा चाहता हो।

त्वायु—[सं० त्रि०] जो तुम्हें चाहता हो।

त्वाष्टी—[सं० त्रि०] दुर्गा।

त्वाष्ट्र—[सं० त्रि०] वृत्रासुर। वज्र। चित्रा नक्षत्र। विश्वरूप।

त्विष—[सं० स्त्री०] शोभा, प्रभा, चमक। वाक्य। व्यवसाय।

त्विषा—[सं० स्त्री०] दीप्ति। प्रभा।

त्विषामीश—[सं० पु०] सूर्य। आक का पेड़।

त्विषि —[सं०स्त्री०] किरण।

त्विषित—[सं० त्रि०] ज्वलित, चमकता हुआ।

त्वेष—[सं० त्रि०] दीप्त, जगमगाता हुआ।

त्वेषनृम्न—[सं० त्रि०] प्रदीप्त बल, जिसे खूब ताकत हो।

त्वेषप्रतीक—[सं० त्रि०] जिसका मुँह बहुत चमकता हो।

त्वेषरथ—[सं० त्रि०] चमकीला रथ।

त्वै—[सं० अव्य०] विशेष। वितर्क।

त्वैषीरथी—[सं० पु०] कुशिक।

त्वोत—[सं० त्रि०] तुमसे रक्षित।

त्सरु—[सं० पु०] तलवार की मूठ। सर्प। साँप।

त्सारिन—[सं० त्रि०] बहुत डरपोक।

त्सारुक—[सं० त्रि०] जो तलवार चलाने में बहुत निपुण हो।

—:o:—

थ

थ—थकार, संस्कृत और हिन्दी वर्णमाला का सत्रहवाँ व्यंजन और तवर्ग का दूसरा अक्षर।

थ—[सं० पु०] पर्वत, पहाड़। व्याधिभेद। एक रोग। भय। भक्षण। आहार। रक्षण। मंगल। साध्वस। [त्रि०] भयरक्षक।

थंका—[हि० पु०] बिलमुकता।

थंब—[हि० पु०] खंभा। सहारा। राजपूतों का एक भेद।

थंबी—[हि० स्त्री०] खड़ी लकड़ी। सहारे की बल्ली, चाँड़, थूनी।

थंभ—[हि० पु०] खंभा।

थंभन—[हि० पु०] स्तम्भन। रुकावट। ठहराव। तंत्र के छः प्रयोगों में से एक। एक प्रकार की दवा जो शरीर से निकली हुई वस्तु, जैसे मल, मूत्र, शुक्र इत्यादि को रोके रहे।

थकना—[हि० क्रि०] शिथिल होना, क्लान्त होना। ऊब जाना, हैरान हो जाना। मुग्ध होना, लुभाना। बुढ़ापे से अशक्त होना। चलता न रहना, धीमा पड़ जाना।

थकरी—[हि० स्त्री०] खस की कूँची जिससे स्त्रियाँ बाल झाड़ती हैं।

थकान—[हि० स्त्री०] शिथिलता, थकावट।

थकित—[हि० वि०] श्रान्त, शिथिल, थका हुआ। मुग्ध, मोहित।

थकिया—[सं० स्त्री०] वह मोटी, तह जो किसी गाढ़ी चीज के जम जाने से हो जाती है। गली हुई धातु का जमा हुआ लोंदा।

थकौहाँ—[हि० त्रि०] शिथिल, कुछ थका हुआ।

थक्का—[हि० पु०] गली हुई धातु का जमा हुआ कतरा। किसी गाढ़ी चीज की मोटी तह, जमा हुआ कतरा।

थगर—निम्न ब्रह्म के तौङ्गु जिले के अन्तर्गत एक नगर।

थगित—[हि० वि०] ठहरा हुआ, रुका हुआ। शिथिल, ढीला। मन्द, सुस्त।

थड़ा—[हि० पु०] बैठने का स्थान, बैठक। दूकान की गद्दी।

थत्ती—[हि० स्त्री०] राशि, ढेर, पुंज।

थन—[हि० पु०] चौपायों का स्तन।

थनकुदी—[हि० पु०] एक प्रकार

का छोटा पक्षी।

थनगन—[हि० पु०] बरमा, बरार और मलबार में होने वाला एक बड़ा पेड़। इसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती है और इमारत बनाने के काम में आती है।

थनटुट्टू—[हि० स्त्री०] वह स्त्री जिसके स्तन से दूध नहीं निकलता हो।

थनी—[हि० स्त्री०] बकरियों के गले के नीचे लटकती हुई दो थैलियाँ जिनका आकार स्तन सा होता है; गलथना। थन के आकार का निकला हुआ माँस का अंकुर जो हाथियों के कान के पास होता है। इस तरह का हाथी ऐबी समझा जाता है। वह लटकता हुआ माँस जो घोड़े की लिङ्गेन्द्रिय में होता है और जिसका आकार थन का सा होता है।

थनेला—[हि० पु०] स्त्रियों के स्तन पर होनेवाला एक प्रकार का फोड़ा। एक प्रकार का कीड़ा। यह गुबरैल की जाति का होता है और गाय-भैंस आदि के थन में डंक मार देता है जिससे दूध सूख जाता है।

थनैत—[हि० पु०] ग्राम का प्रधान। गाँव का मुखिया। जमींदार की ओर से गाँव का लगान वसूल करनेवाला मनुष्य।

थपकना—[हि० क्रि०] स्नेहवश किसी के शरीर पर धीरे धीरे हाथ मारना। बच्चे को सुलाने के लिए उसे धीरे धीरे ठोंकना। ढाढ़स बँधाना। दम दिलासा देना। किसी का गुस्सा ठंडा करना। शान्त करना।

थपकी—[हि० स्त्री०] वह आघात जो प्यार से किसी के शरीर पर हथेली द्वारा धीरे धीरे पहुँचाया जाता है। हाथ से आहिस्ता आहिस्ता ठोंकने की क्रिया। वह कड़ा आघात जो हाथ के झटके से पहुँचाया जाता है। वह मुँगरी जिससे जमीन पीटकर चौरस की जाती है। थापी। मोटे मोटे कपड़े पीटने का धोबी का मुंगरा।

थपड़ी—[हि० स्त्री०] करतलों का परस्पर आघात। ताली बजाने की आवाज। जीरा, नमक और हींग मिली हुई बेसन की पूरी।

थपना—[हि० क्रि०] स्थापित होना। ठहरना। प्रतिष्ठित होना। धीरे धीरे पीटना या ठोंकना।

थपना—[हि० पु०] किसी धातु को पीटने का पत्थर। थापी।

थपुआ—[हि० पु०] चौड़ा, चौरस और चिपटा छाजन का खपड़ा।

थपेड़ा—[हि० पु०] धक्का। टक्कर। ठोंकर। थप्पड़।

थप्पड़—[हि० पु०] तमाचा। चपेट। धक्का। टक्कर। दाद या फुन्सियों का छत्ता। चकत्ता।

थप्पा—[हि० पु०] एक प्रकार का जहाज।

थंभ—[हि० पु०] स्तम्भ, थूनी। केले का पेड़। देवी को चढ़ाने की छोटी छोटी पूरियाँ और हलुआ।

थर—[हि० स्त्री०] तह। परत। [पु०] बाघ की माँद।

थरकाना—[हि० क्रि०] भय से कँपाना।

थरथर-कंपनी—[हि० स्त्री०] एक प्रकार की छोटी चिड़िया। जब यह बैठती है तो काँपती हुई मालूम पड़ती है।

थरना—[हि० क्रि०] हथौड़ी आदि से धातु पर आघात करना। [पु०] पत्ती की नक्काशी बनाने का सुनारों का औजार।

थरहरी—[हि० स्त्री०] वह कँपकँपी जो डर के कारण हुई हो।

थरि—[हिं० स्त्री०] बाघ आदि की माँद, गुर।

थल—[हि० पु०] स्थल, जगह। सूखी धरती। थल का मार्ग। घोड़े का लाल और सूजा हुआ घेरा। चवन्नी के बराबर का बादले का गोल साज। रेगिस्तान, भूड़। बाघ की माँद। ऊँची धरती, टीला।

थलकना—[हि० क्रि०] झोल पड़ने के कारण ऊपर नीचे हिलना। थलथल करना। मोटाई के कारण शरीर का मांस हिलना।

थलचर—[हि० पु०] वह जीव जो पृथ्वी पर रहते हैं।

थलबेड़ा—[हि० पु०] वह जगह जहाँ नाव या जहाज आकर ठहरता है। नाव या जहाज लगने का घाट।

थलभारी—[हि० पु०] कहारों की एक बोली। इससे वे पिछले कहारों को आगे रेतीले मैदान का होना सूचित करते हैं।

थली—[हि० स्त्री०] स्थान। ठिकाना। ऊँची जमीन। टीला। परती जमीन। बालू का मैदान। बैठक। जल के नीचे का तल।

थलई—[हि० पु०] वह जो मकान बनाता हो। कारीगर। राज।

थवन—[हि० पु०] बधू की तीसरी बार अपने पति के घर की यात्रा।

थवना—[हि० पु०] कच्ची मट्टी का एक गोला। इसमें लगी हुई लकड़ी के छेद में चरखी की लकड़ी पड़ी रहती है।

थहराना—[हि० क्रि०] कमजोरी के कारण अंगों का काँपना। गहराई का पता लगाना। थाह लेना। किसी की विद्या या आन्तरिक इच्छा का पता लगाना।

थहारना—[हि० क्रि०] जहाज को ठहराना।

थाँग—[हि० स्त्री०] वह गुप्त स्थान जहाँ चोर या डाकू आकर ठहरते हैं। खोज। पता। अनुसन्धान। भेद। गुप्त रूप से किसी बात का पता लगाना।

थाँगी—[हि॰ पु॰] वह मनुष्य जो चोरी का माल लेता हो या अपने पास रखता हो। चोरों का भेदिया। वह मनुष्य जो चोरी के माल का पता लगाता हो। जासूस। चोरों के गोल का सरदार।

थाँभ—[हि॰ पु॰] खंभा। थूनी। चाँड़।

थाँवला—[हि॰ पु॰] किसी लगे हुए पौधे का घेरा या गड्ढा। थाला।

थाई—[हि॰ वि॰] स्थिर रहनेवाला। जो बहुत दिनों तक बना रहे। [पु॰] बैठने का स्थान। बैठक। ध्रुवपद। स्थायी। यह पद गाने में बार बार कहा जाता है।

थाक—[हि॰ पु॰] ग्रामसीमा। गाँव की सरहद। पुंज। राशि, ढेर।

थाति—[हि॰स्त्री॰] स्थिरता, ठहराव।

थाती—[हि॰ स्त्री॰] वह वस्तु जो समय पर काम आने के लिये रखी जाती है। धरोहर। अमानत। संचित धन। जमा। पूँजी।

थान—[हि॰ पु॰] स्थान। जगह। ठौर। घोड़े या चौपाये बाँधने का स्थान। निवास स्थान। डेरा। मन्दिर। देवल। लिंगेन्द्रिय। संख्या। अदद। घोड़े के नीचे बिछाई जाने की घास। कपड़े, गोटे आदि का पूरा टुकड़ा।

थान—[हि॰ पु॰] हिंदी के एक कवि।

थानक—[हि॰ पु॰] स्थान। जगह। बबूला। फेन। थाला। नगर।

थानापति—[हि॰ पु॰] ग्राम देवता।

थानी—[हि॰ पु॰] स्थान का मालिक। लोकपाल। दिक्पाल। [वि॰] सम्पूर्ण। पूर्ण।

थानैत—[हि॰ पु॰] किसी स्थान का मालिक। ग्राम देवता या किसी स्थान का देवता।

थाप—[हि॰ स्त्री॰] शपथ, कसम। मान, कदर। प्रतिष्ठा, धाक। स्थिति, जमाव। पंचायत। छाप, निशान। थप्पड़, तमाचा। तबले, मृदंग आदि पर पूरे पंजे का आघात, ठोंक।

थापन—[हि॰ पु॰] स्थापित करने की क्रिया। प्रतिष्ठित करने का कार्य, रखने का काम।

थापना—[हि॰ क्रि॰] स्थापित करना। बैठाना। हाथ या साँचे से पीट या दबाकर किसी गीली वस्तु को कुछ बनाना। [स्त्री॰] प्रतिष्ठा, स्थापन। नवरात्रि में दुर्गा पूजा के लिए घट स्थापना। किसी प्रतिमा की स्थापना या प्रतिष्ठा करना।

थापरा—[हि॰ पु॰] छोटी नाव, डोंगी।

थापा—[हि॰ पु॰] पंजे का छापा निशान जिसे स्त्रियाँ किसी मंगल के अवसर पर दीवार आदि पर बनाती हैं। पुंज, राशि, ढेर। गीली सामग्री दबा कर या डालकर कोई वस्तु बनाने का साँचा। नेपालियों की एक जाति। चन्दा जो गाँव में देवी देवता की पूजा के लिए संग्रह किया जाता है, चाँदी। रंग आदि पोत कर कोई चिह्न अंकित करने का साँचा, छापा।

थापी—[हि॰ स्त्री॰] काठ की बनी हुई चौड़े, सिरे की एक मुँगरी। गच पीटने की राज या कारीगर की चिपटी मुँगरी।

थाम—[हि॰ पु॰] स्तंभ, खंभा। मस्तूल। [स्त्री॰] थामने की क्रिया या ढंग, पकड़।

थामना—[हि॰ क्रि॰] गति अवरुद्ध करना। गिरने पड़ने से बचाना। किसी कार्य का भार ग्रहण करना। हाथ में लेना, पकड़ना। सहायता देना, सहारा देना। चौकसी में रखना, पहरे में करना।

थाली—[हि॰ स्त्री॰] बड़ी तश्तरी। नाच की एक गति।

थाह—[हि॰ स्त्री॰] गहराई का अन्त, जलाशय का तट भाग। कम गहरा पानी। गहराई का पता। किसी संख्या या परिमाण का अनुमान। परिमिति, अन्त। हद। चित्त की बात का पता। गुप्त रीति से लगाया हुआ किसी बात का पता।

थिगली—[हि॰ स्त्री॰] कपड़े आदि का छोटा टुकड़ा जो किसी बड़े कपड़े आदि का छेद बन्द करने के लिए जोड़ कर सी दिया जाता है, चकती।

थिति—[हि॰ स्त्री॰] स्थायित्व, ठहराव। रहन, रहाइश। रक्षा। अवस्था, दशा।

थिबाऊ—[हि॰ पु॰] दाहिने अंग का फड़कना। इसे ठग लोग अपने लिए अशुभ समझते हैं।

थिर—[हि॰ वि॰] अचल, ठहरा हुआ। शान्त, धीर। स्थायी, दृढ़।

थिरक—[हि॰ पु॰] नृत्य में पैरों का हिलना-डोलना।

थिरकना—[हि॰ क्रि॰] ठमक ठमक कर नाचना।

थिरता—[हि॰ स्त्री॰] अचलत्व, ठहराव। शान्ति।

थिरथिरा—[हि॰ पु॰] भारतवर्ष का एक प्रकार का बुलबुल। यह प्रायः जाड़े के दिनों में ही दिखाई देता है।

थिरना—[हि॰ क्रि॰] पानी का हिलना डोलना। पानी छन जाना, निथरना। थिर कर साफ होना। पानी में मिली हुई गन्दी वस्तु का उसके पेंदे में जाकर जमना।

थीकरा—[हि॰ पु॰] आपत्ति के समय रक्षा या सहायता का भार।

थुकहाई—[हि॰ वि॰] थूकी जाने योग्य स्त्री, जिसकी निन्दा सब करते हों।

थुक्की—[हि० स्त्री०] रेशम के तागों में उन्हें सुलझाने के लिए थूक का लगाना।

थुड़ी—[हि० स्त्री०] धिक्कार। लानत।

थुथाना—[हि० क्रि०] अप्रसन्न होना। मुँह फुलाना।

थुन्नी—[हि० स्त्री०] खंभा। चाँड़।

थुपरना—[हि० क्रि०] गरमी पहुँचाने के लिए महुवे की बालों का ढेर लगा-कर दबाना।

थुपरा—[हि० पु०] महुवे की बालों का ढेर।

थुरना—[हि० क्रि०] कूटना। मारना। पीटना।

थुरहथा—[हि० वि०] छोटे हाथ वाला, जिसकी हथेली में कम चीज आवे। किफायत करने वाला।

थुर्वण—[सं० क्री०] हनन, हत्या, कतल।

थुलना—[हि० पु०] पहाड़ी ऊनी कपड़ा या कम्बल।

थुली—[हि० स्त्री०] दल कर कई टुकड़े किया हुआ अनाज। दलिया।

थूथन—[हि० पु०] लम्बा निकला हुआ मुंह।

थूथनी—[हि० स्त्री०] हाथी के मुँह का एक रोग। इसमें उसके तालू में घाव हो जाता है।

थूथरा—[हि० वि०] वह मुँह जो थूथन के जैसा बाहर निकला रहता है। भद्दा चेहरा।

थून—[हि० स्त्री०] खंभा। चाँड़। मद्रास में होने वाला एक प्रकार का गन्ना।

थूना—[हि० पु०] मट्टी का लौंदा। यह परेता खोंस कर सूत या रेशम फेरने के काम में आता है।

थूनी—[हि० स्त्री०] खंभा। थम। चाँड़, सहारे का खंभा। गड़ी हुई लकड़ी जिसमें रस्सी का फन्दा लगाकर मथानी का डंडा अटकाया जाता है।

थूनी—[हि० स्त्री०] साँप का विष दूर करने की एक युक्ति। इसमें लोहे से काटे हुए स्थान को दागते हैं।

थूरना—[हि० क्रि०] कूटना। ठूस ठूस कर खाना। मारना, पीटना। कस कर भरना, ठूसना।

थूर्त—[सं० त्रि०] विनाशित, जिसकी हानि हुई हो।

थूला—[हि० वि०] हृष्ट-पुष्ट, मोटा ताजा।

थूली—[हि० स्त्री०] अनाज का वह मोटा कण जो दल कर अलग किया जाता है। गाय को बच्चा जनने पर दिया जाने वाला पकाया हुआ दलिया। सूजी।

थूवा—[हि० पु०] ऊँची भूमि, टीला। मट्टी का लोंदा। डूह के आकार का काला रँगा हुआ पिण्डा। गीली मट्टी का पिंडा, धोधा। सीमा सूचक स्तूप। [स्त्री०] धिक्कार का शब्द।

थूहर—[हि० पु०] एक प्रकार का छोटा पेड़।

थूहा—[हि० पु०] राशि, ढेर, ढूह। टीला, ऊँची भूमि।

थेंथर—[हि० वि०] श्रान्त, सुस्त, हैरान।

थेवा—[हि० पु०] अंगूठी का नगीना। मुहर खोदी जाने का धातु का पत्र। नगीना जड़ने का अंगूठी का एक घर।

थैचा—[हि० पु०] वह छप्पर जो खेत में मचान के ऊपर रखा जाता है।

थोक—[हि० पु०] पुंज, राशि, ढेर। समूह, झुण्ड, जत्था। वह स्थान जहाँ कई ग्रामों की सीमाएँ मिलती हों। इकट्ठा बेचने की चीज। एकत्रित वस्तु, कुल। किसी खास एक आदमी का जमीन का टुकड़ा।

थोकदार—[हि० पु०] वह व्यापारी जो इकट्ठा माल बेचता हो।

थोड़न—[सं० क्ली०] सम्बरण, आच्छादान, ढकना।

थोती—[हि० स्त्री०] मवेशी के मुख का अग्रभाग, थूथन।

थोथ—[हि० स्त्री०] निःसारता, खोखलापन। तोंद, पेटी।

थोथरा—[हि० वि०] खोखला, खाली। पोला। व्यर्थ का, निकम्मा।

थोथा—[हि० वि०] जो बिना सार का हो, खोखला। कुंठित, भोथा, जिसकी धार तेज न हो। बिना पूँछ का, बाँड़ा। व्यर्थ का, निकम्मा। [पु०] मट्टी का वह साँचा जिसमें बरतन ढाला जाता है।

थोथी—[हि० स्त्री०] एक प्रकार की घास।

थोपड़ी—[हि० स्त्री०] थप्पड़, चपत, धौल।

थोपना—[हि० क्रि०] पानी में सनी हुई वस्तु के लौंदे को चिपकाने के लिए दूसरी वस्तु पर फैलाकर डालना। आक्रमण आदि से रक्षा करना। बचाना। मोटा लेप चढ़ाना। मत्थे मढ़ना।

थोबड़—[हि० पु०] थूथन।

थोब रखना—[हि० क्रि०] जहाज को धार पर चढ़ाना।

थोटी—[हि० स्त्री०] एक हीन आर्य जाति।

—:०:—

द

द—दकार, संस्कृत एवं हिंदी वर्णमाला का अठारहवाँ व्यंजनवर्ण और तवर्ग का तीसरा अक्षर।

द—[सं० पु०] अचल, पर्वत, पहाड़। दन्त, दाँत। दाता। [स्त्री०] भार्या, स्त्री। [क्ली०] खण्डन। रक्षा।

दई—[हि० पु०] ईश्वर, विधाता। दैव, संयोग, प्रारब्ध।

दईमारा—[हि० वि०] जिस पर ईश्वर का कोप हो, अभागा।

दंगई—[हि० वि०] उपद्रवी, लड़ाका, झगड़ालू।

दंगवारा—[हि० पु०] किसानों की आपस में हल बैल देकर सहायता। जिता।

दँतिया—[हि० स्त्री०] छोटे छोटे दाँत।

दंद—[हि० स्त्री०] वह गरमी जो किसी पदार्थ से निकलती है। [पु०] द्वन्द, लड़ाई-झगड़ा। गुलगपाड़ा।

दंदारु—[हि० पु०] छाला, फफोला।

दंदी—[हि० त्रि०] उपद्रवी, झगड़ालू।

दँवरी—[हि स्त्री०] बैलों से रौंद-वाने का काम जिससे अनाज के सूखे डंठलों में से दाने झड़ जाते हैं।

दंश—[सं० पु०] कीट विशेष, डाँस, बगदर। वर्म। दंशन। दोष। साँप के काटने का भाव। दाँत काटने से उत्पन्न घाव। द्वेष, वैर। विषैले जन्तुओं का डंक। आक्षेप वचन, कटूक्ति। एक असुर।

दंशक—[सं० पु०] डाँस नाम की मक्खी। एक राजा का नाम। [त्रि०] जो दाँत से काट खाय।

दंशन—[सं० पु०] दाँत से काटना, डसना। वर्म, कवच।

दंशनाशिनी—[सं० स्त्री०] एक प्रकार का तेल का कीड़ा।

दंशभीरु—[सं० पु०] महिष, भैंसा।

दंशमूल—[सं० पु०] सहजन का पेड़।

दंशवदन—[सं० पु०] सफेद चील, काँक।

दंशिका—[सं० स्त्री०] वनमक्षिका, डाँस।

दंशी—[सं० स्त्री०] छोटा डाँस। कुकुर, कुत्ता। [त्रि०] डसने वाला। कटूक्ति कहने वाला। द्वेषी। वैर रखने वाला।

दंशूक—[सं० त्रि०] दंशनशील, डसने योग्य।

दंशेर—[सं० त्रि०] अपकारक, बुराई करने वाला।

दंष्ट्र—[सं० पु०] दाँत। सूअर।

दंष्ट्रा—[सं० स्त्री०] बड़े बड़े दाँत, दाढ़, चौभर। बिछुआ नाम का पौधा।

दंष्ट्रायुध—[सं० पु०] बराह, सूअर।

दंष्ट्राल—[सं० त्रि०] बड़े बड़े दाँतों वाला। [पु०] एक राक्षस का नाम।

दंष्ट्राविष—[सं० पु०] वह साँप जिसके दाँतों में विष रहता है।

दंष्ट्रिका—[सं० स्त्री०] दाढ़।

दंष्ट्री—[सं० पु०] शूकर, सूअर। सर्प, साँप। [त्रि०] बड़े बड़े दाँत वाला।

दंसना—[सं० स्त्री०] कर्म ,काम।

दंसनावत्—[सं० त्रि०] कर्मयुक्त। अलौकिक शक्तिमान्।

दंसि—[सं० पु०] कर्म, काम।

दंसिष्ठ—[सं० त्रि०] जो खूब काम करता हो। देखने योग्य। अत्यन्त शत्रुहिन्सक।

दंसु—[सं० क्ली०] अलौकिक शक्ति, अद्भुत ताकत।

दंसुजूत—[सं० त्रि०] जो खूब तेज घोड़े से भेजा गया हो।

दंसुपत्नी—[सं० स्त्री०] वह जिसे अलौकिक शक्ति-सम्पन्न मालिक हो। दमन करने वाले असुरों के पति।

दक—[सं० क्ली०] जल, पानी।

दकोदर—[सं० क्ली०] एक तरह की पेट की बीमारी।

दक्ष—[सं० पु०] ताम्रचूड़, मुरगा। अत्रि ऋषि। महादेव का बैल। एक तरह का पेड़। दक्ष संहिता के कर्त्ता कोई मुनि। महेश्वर। एक राजा जो उशीनर के पुत्र थे। विष्णु। बल। [क्ली०] वीर्य। [त्रि०] चतुर, कुशल, निपुण। दक्षिण भाग, दाहना। [पु०] एक प्रजापति, जिनसे देवताओं की उत्पत्ति हुई।

दक्षकन्या—[सं० स्त्री०] दक्ष की कन्या सती।

दक्षक्रतु—[सं० पु०] दक्ष का वह यज्ञ जिसमें उन्होंने शिवजी को नहीं बुलाया था। चक्षुरादि इन्द्रियरूप प्राण।

दक्षक्रतुध्वंसी—[सं० पु०] महादेव। महादेव के अंश से उत्पन्न वीरभद्र, इन्होंने दक्ष का यज्ञ विध्वंस किया था।

दक्षजा—[सं० स्त्री०] दक्ष की कन्या, सती, दुर्गा।

दक्षजापति—[सं० पु०] चन्द्र, महादेव प्रभृति।

दक्षता—[सं० स्त्री०] नैपुण्य, पटुता, योग्यता।

दक्षताति-[सं० स्त्री०] मानसिक शक्ति।

दक्षनिधन—[सं० क्ली०] सामभेद।

दक्षपति—[सं०पु०] बलाधिपति, जिनमें सबसे अधिक बल हो।

दक्षपितृ—[सं० पु०] दक्ष प्रजापति से उत्पन्न प्राणाभिमानी देव। वीर्योत्पादक। [स्त्री०] अश्विनी प्रभृति, इनके उत्पादक दक्ष हैं।

दक्षयागापहारी—[सं० पु०] शिव, महादेव।

दक्षविहिता—[सं० स्त्री०] एक प्रकार का गीत [त्रि०] दक्ष से किया हुआ।

दक्षवृध—[सं० त्रि०] जिसने अपनी योग्यता से उन्नति की हो।

दक्षस्—[सं० क्ली०] बल, ताकत।

दक्षसुत—[सं० पु०] देवता। हर्यश्वादि पुत्र। [स्त्री०] अश्विनी आदि दक्ष कन्याओं के नाम।

दक्षा—[सं० स्त्री०] पृथ्वी।

दक्षाय्य—[सं० पु०] गरुड़। गृध्र पक्षी। [त्रि०] बढ़ाने या उन्नति करने वाला। पूजनीय।

दक्षि—[सं० त्रि०] दहनशील, जलाये जाने योग्य।

दक्षिण—[सं० त्रि०] जो दक्षिण दिशा में हो। जो दूसरे के अभिप्राय से चलता हो। वह दिशा जो सूर्य की ओर मुँह करके खड़े होने से दाहने हाथ की ओर पड़ती है। अपसव्य, दाहना। नायकभेद, दक्षिणनायक। प्रदक्षिण। विष्णु। दक्षिणाग्नि। उदर,पेट। समर्थ, निपुण।

दक्षिणकालिका—[सं०स्त्री०] जिन्होंने शिवजी की छाती पर दाहिना पैर रखा है, कालिका देवी।

दक्षिणधुरीय—[सं० त्रि०] शकट के दक्षिण भाग का धुरायुक्त, बैलगाड़ी के दाहिनी ओर का धुरा।

दक्षिणपूर्वा—[सं०स्त्री०] पूर्व दक्षिण कोण, अग्निकोण।

दक्षिणमानस—[सं० क्ली०] गया के एक तीर्थ का नाम।

दक्षिणमार्ग—[सं० पु०] तंत्रोक्त आचार भेद। पितृयान नामक मार्गभेद।

दक्षिणमेरु—[सं० पु०] दक्षिणकेन्द्र।

दक्षिणराय—सुन्दरवन के सिद्ध वन देवता।

दक्षिणा—[सं० स्त्री०] यज्ञादि-विधि दान। प्रतिष्ठा, सम्मान। यज्ञादि के अवसानपर ब्राह्मणों को दिये जाने का धन। नायिका-विशेष। नायक के अन्य स्त्रियों पर आसक्त होने पर भी जो स्त्री पहले की तरह नायक के प्रति गौरव, भय प्रेम, सद्भाव आदि परित्याग नहीं करती, उसे दक्षिणा नायिका कहते हैं। पुरस्कार। भेंट।

दक्षिणाकपर्द—[सं० पु०] वसिष्ठ।

दक्षिणाचल—[सं० पु०] मलय पर्वत, मलयाचल।

दक्षिणाचार-[सं०पु०]तंत्रोक्त आचार-भेद। शुद्ध और उत्तम आचरण। जिसकी गति दक्षिण की ओर हो।

दक्षिणान्तिका—[सं० स्त्री०] वैतालीय छन्द।

दक्षिणापथ—[सं० पु०] एक देश का नाम। वह रास्ता जो दक्षिण की ओर गया हो।

दक्षिणापुष्टि—[सं० पु०] धुर्य के मध्य दक्षिण स्थित अश्वभेद। वह घोड़ा जो तीन घोड़ों के रथ की गाड़ी में आगे जोता जाता है।

दक्षिणारण्य—[सं० क्ली०] एक जंगल का नाम।

दक्षिणारुरु—[सं० पु०] वह मृग जिसके दाहिने अंग में व्याध के तीर मारने से घाव हो गया हो।

दक्षिणार्ह—[सं० पु०] वह जो दक्षिण के उपयुक्त हो।

दक्षिणावर्त्त—[सं० त्रि०] दक्षिण में जो दाहिनी ओर घुमा हुआ हो। जो दक्षिण की ओर अवस्थित हो। [पु०] एक प्रकार का शंख जिसका घुमाव दाहिनी ओर होता है।

दक्षिणावर्त्तकी—[सं० स्त्री०] वृश्चिकाली नाम का पौधा।

दक्षिणावर्त्ता—[सं० स्त्री०] मेढ़े के सींग।

दक्षिणावह—[सं० पु०] दक्षिणानिल, दक्षिण से आने वाली हवा।

दक्षिणाशापति—[सं० पु०] यम। मंगलग्रह।

दक्षिणी—[हि० स्त्री०] दक्षिण देश की भाषा। [पु०] दक्षिण देश का निवासी। [त्रि०] दक्षिण देश सम्बन्धी।

दक्षिणेतर—[सं० त्रि०] दक्षिण से इतर। बायें। बायाँ।

दखमा—[हि० पु०] पारसी लोगों के मुर्दे रखने का स्थान।

दगड़—[हि० पु०] एक प्रकार का ढोल जो लड़ाई में बजायी जाती है, जंगी ढोल।

दगड़ना—[हि० क्रि०] सत्य वचन का विश्वास न करना।

दगदगाना—[हि० क्रि०] चमकना, दमदमाना।

दगना—[हि० क्रि०] बन्दूक या तोप का छूटना। दग्ध होना, जलना।

दगरी—[हि० स्त्री०] बिना मलाई का दही।

दगलफसल—[हि० पु०] धोखा फरेब।

दगला—[हि० पु०] रुईदार या मोटे कपड़े का अँगरखा।

दगहा—[हि० वि०] दागवाला। जिसने प्रेतक्रिया की हो। जो दग्ध किया गया हो।

दग्ध—[सं० त्रि०] जो जल गया हो, जला या जलाया हुआ। दुःखित, जिसे कष्ट पहुँचा हो। [क्ली०] एक प्रकार की घास। तिथिभेदयुक्त चन्द्राश्रित राशि। वारभेदयुक्त नक्षत्र भेद।

दग्धकाक—[सं० पु० स्त्री०] द्रोण काक, डोम कौवा।

दग्धमत्सा—[सं० पु०] भुनी हुई मछली।

दग्धरथ—[सं० पु०] इन्द्र के एक सारथी।

दग्धरुह—[सं०पु०] तिलकृष्ण। तिलक वृक्ष।

दग्धवर्णक—[सं० पु०] रोहिष नामक घास।

दग्धा—[सं० स्त्री०] सूर्य के अस्त होने की दिशा। पश्चिम। एक तरह का पेड़। इसे कुरु कहते हैं।

दग्धाक्षर—[सं० पु०] पिङ्गल के अनुसार झ, ह, र, भ और प ये पाँचों अक्षर। इनका छन्द के आरंभ में रखना वर्जित है।

दग्धास्य—[सं० पु०] लालमिर्च का पौधा।

दग्धाह्व—[सं० पु०] एक प्रकार का पेड़।

दग्धिका—[सं० स्त्री०] जला हुआ भात। कुरु नाम का पेड़।

दग्धेष्टका—[सं० स्त्री०] जली हुई ईंट। झावाँ।

दग्धोदर—[सं० क्ली०] हतोदर। जला हुआ पेट।

दचक—[हि० स्त्री०] धक्का। ठोकर। दबाव। वह चोट जो झटके या दबाव से आ जाती है।

दचना—[हि० क्रि०] गिरना। पड़ना।

दड़घल—[हि० पु०] सहदेई नाम का पौधा।

दड़ोकना—[हि०क्रि०] दहाड़ना। बाघ, साँड़ आदि का बोलना।

दणियर—[हि० पु०] सूर्य।

दण्ड—[सं० क्ली०] लाठी, डंडा। एक प्रकार का व्यूह। दमन, शासन। शरणागतत्राण। प्रकाण्ड। घोड़ा। कोना। मथानी। सेना। सूर्य का एक परिषद्। यम, दण्डकर्त्ता। जमीन मापने का एक प्रकार का दण्ड या गज अभिमान। एक ग्रह जो दंड के आकार का होता है। इक्ष्वाकुराज के एक पुत्र। साठ पल के बराबर समय। विष्णु। शिव। राज्य की रक्षा के लिए राजाओं की ओर से किया जानेवाला चौथा उपाय। साम, दाम, भेद और दण्ड। कौरव पक्षीय एक वीर। द्वापर के एक राजा का नाम। धर्म के पुत्र का नाम। राजा। दंडविधानकर्त्ता। हल की लम्बी लकड़ी।

दण्डक—[सं० पु० क्ली०] छन्दोभेद। इस छन्द के प्रत्येक चरण में २७ अक्षर होते हैं। इक्ष्वाकु राजा के एक पुत्र का नाम। एक प्रकार का वातरोग। डंडा। शासक। दण्डकारण्य। शुद्धराग का एक भेद।

दण्डकन्दक—[सं० पु०] सेमर का मुसला।

दण्डकल—[सं० पु०] एक छन्द का नाम।

दण्डका—[सं० स्त्री०] नागवला लता।

दण्डकाक—[सं० पु०] द्रोणकाक। काला कौआ। डोम कौआ।

दण्डकारण्य—दंडक नामक राजा का राज्य।

दण्डकी—[सं० स्त्री०] ढोलक।

दण्डगौरी—[सं० स्त्री०] एक अप्सरा का नाम।

दण्डग्रहण—[सं०क्ली०] संन्यासाश्रम। अवलम्बन।

दण्डघ्न—[सं० त्रि०] डंडे से मारनेवाला। वह मनुष्य जो राजा के दिए हुए दण्ड को न मानता हो।

दण्डढक्का—[सं० स्त्री०] दमामा। नगारा। धौंसा।

दण्डताम्री—[सं० स्त्री०] वह जल-तरंग बाजा जिसमें ताँबे की कटोरियाँ काम में लाई जाती हैं।

दण्डदेवकुल—[सं० क्ली०] धर्माधिकरण। पुलिस अदालत।

दण्डधर—[सं० पु०] यमराज। राजा। संन्यासी।

दण्डन—[सं० क्ली०] दण्ड देने की क्रिया। शासन।

दण्डनायक—[सं० पु०] सेनापति। दंडविधान करनेवाला राजा। सूर्य के एक अनुचर का नाम। विचारपति। हाकिम। दण्ड देने के अधिकारी।

दण्डनिपातन—[सं० क्ली०] दण्ड देने की क्रिया। शासन।

दण्डनीति—[सं० स्त्री०] अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र। वह शास्त्र जिसमें राज्य-शासन-सम्बन्धी समस्त नियम और उपदेश हों। चाणक्य आदि के नीतिशास्त्र।

दण्डनीय—[सं० त्रि०] दंड देने योग्य।

दण्डनेतृ—[सं० त्रि०] दण्डविधाता। सजा देनेवाला।

दण्डप—[सं० पु०] दण्ड के द्वारा शासन करनेवाला राजा।

दण्डपांशुल—[सं० पु०] द्वारपाल। दरवान।

दण्डपाणि—[सं० पु०] यम, ये अपने हाथ में हमेशा दण्ड लिए रहते हैं। काशी में भैरव की एक मूर्ति। चन्द्रवंश के एक राजा का नाम। बुद्धदेव की एक मूर्ति का नाम।

दण्डपात—[सं० पु०] सन्निपात रोग विशेष। इसमें रोगी को नींद नहीं आती। वह इधर उधर पागल की तरह घूमता है।

दण्डपारुष्य—[सं० क्ली०] दुष्ट कार्य; मारपीट। राजाओं के सात व्यसनों में से एक। अठारह विवादों में से एक।

दण्डपाल—[सं० पु०] दांडिका मछली। द्वारपाल। ड्योढ़ीदार। दरबान।

दण्डपालक—[सं० पु०] बाम मछली।

दण्डपाली—[सं० स्त्री०] तुलायंत्र। तराजू।

दण्डपाशक—[सं० पु०] प्रधान दण्ड-दाता। दण्ड देनेवाला प्रधान कर्मचारी। घातक। जल्लाद।

दण्डपिङ्गलक—[सं० पु०] एक देश का नाम जो उत्तर की ओर पड़ता है।

दण्डप्रणाम—[सं० पु०] दंडवत्। भूमि में डंडे के समान पड़कर प्रणाम करने की क्रिया।

दण्डबध—[सं० पु०] प्राणदण्ड।

दण्डबालधि—[सं० पु०] हस्ती, हाथी।

दण्डबाहु—[सं० त्रि०] जिसकी बाहु डंडे के आकार की सी हो।

दण्डभीति—[सं० स्त्री०] सजा पाने का डर।

दण्डभृत्—[सं०पु०] कुम्हार। [त्रि०] डंडा रखने वाला।

दण्डमत्सा—[सं० पु०] एक प्रकार की मछली जो देखने में डंडे या साँप के आकार की होती है, बाम मछली।

दण्डमातङ्ग—[सं० पु०] तगर, एक प्रकार का पेड़।

दण्डमाथ—[सं० पु०] प्रधान पथ, सीधा रास्ता।

दण्डमाथिक—[सं० पु०] वह मनुष्य जो सीधे रास्ते से जाता है।

दण्डमानव—[सं० पु०] वह जिसे दंड देने की अधिक आवश्यकता पड़ती हो। बालक, लड़का।

दण्डमुद्रा—[सं० स्त्री०] तंत्र की एक मुद्रा। इसमें मुट्ठी बाँधकर बीच की उँगली ऊपर को खड़ी करते हैं।

दण्डयात्रा—[सं० स्त्री०] दिग्विजय। सेना की चढ़ाई। बरयात्रा, बारात।

दण्डयाम—[सं० पु०] यमराज। दिवस, दिन। अगस्त्य मुनि।

दण्डयोग—[सं० पु०] दंडविधान। शान्तिप्रदान।

दण्डरी—[सं० स्त्री०] डंगरी वृक्ष, एक प्रकार की ककड़ी।

दण्डवत्—[सं० त्रि०] दंडधारी। [स्त्री०] साष्टांग प्रणाम।

दण्डवादिन्—[सं० पु०] द्वारपाल। [त्रि०] दंडवक्ता, जो सजा देने का डर दिखलाता हो।

दण्डत्राक्ष्य—[सं० क्ली०] आसनभेद।

दण्डवासिक—[सं० पु०] द्वारपाल, दरबान।

दण्डवासी—[सं० पु०] द्वारपाल। एक ग्राम का शासनकर्त्ता, गाँव का हाकिम या मुखिया।

दण्डग्राही—[सं० पु०] दंडधारक, पुलिस कर्मचारी।

दण्डविष्कम्भ—[सं० पु०] मट्ठा मथने का खंभा।

दण्डवृक्ष—[सं० पु०] थूहर, सेंहुड़।

दण्डव्रतधर—[सं० पु०] दंड रूप व्रतधारी राजा। यम।

दण्डसेन—[सं० पु०] पुरुवंश के एक राजा जो विष्वक्सेन के पुत्र थे। द्वापरयुग के एक राजा का नाम।

दण्डहस्त—[सं० क्ली०] तगरपुष्प, तगर का फूल।

दण्डा—[सं० स्त्री०] गँगेरन, गुलसकरी।

दण्डाक्ष—[सं० क्ली०] एक तीर्थ-स्थान जो चंपा नदी के किनारे अव-स्थित है।

दण्डाजिन—[सं० क्ली०] साधु-संन्यासियों के धारण करने का दंड और मृगचर्म। शठता, कपट वेश, झूठमूठ का आडम्बर।

दण्डादि—[सं० क्ली०] पाणिनि का एक गण।

दण्डाधिप—[सं० पु०] राजा, दण्डाधिपति।

दण्डापतनिक—[सं० क्ली०] एक प्रकार की वात-व्याधि।

दण्डायमान—[सं० त्रि०] जो डंडे की तरह सीधा खड़ा हो।

दण्डार—[सं० पु०] वाहन, गाड़ी, नाव आदि। मतवाला हाथी। कुम्हार का चाक। यंत्रभेद। धनुष।

दण्डालय—[सं० पु०] न्यायालय, जहाँ से दण्ड का विधान हो। दंड दिए जाने का स्थान। एक छन्द। कोई कोई इसे दंडकला भी कहता है।

दण्डासन—[सं० क्ली०] एक प्रकार का आसन।

दण्डाहत—[सं० क्ली०] तक्र, छाछ, मट्ठा। [त्रि०] डंडे से मारा हुआ।

दण्डिक—[सं० पु०] दंडधारक, वह जो डंडा रखता हो। एक प्रकार की मछली। [त्रि०] दण्डदाता, मारने वाला।

दण्डिका—[सं० स्त्री०] हार विशेष। रज्जु, डोरी, रस्सी। श्योणाक वृक्ष। बीस अक्षरों का एक वर्ण वृत्त।

दण्डिन—[सं० पु०] यम। राजा। द्वारपाल। मूँज। सूर्य के एक पार्श्वचर का नाम। जिनदेव। दमनक वृक्ष। दंडा-श्रयी। दंड धारण करने वाला व्यक्ति। महादेव। धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। संस्कृत साहित्य के एक प्रधान कवि। काव्यप्रकाश के एक टीकाकार। नाम-माला नामक संस्कृत कोष के रचयिता।

दण्डोत्पल—[सं० क्ली०] एक पौधे का नाम।

दण्डोत्पला—[सं० स्त्री०] सफेद फूल वाला दंडोत्पल।

दत्—[सं० पु०] दन्त, दाँत।

दतारा—[हिं० त्रि०] दाँतवाला, जिसमें दाँत हो।

दत्त—[सं० त्रि०] रक्षित, बचाया हुआ। दिया हुआ। दान। एक ऋषि। जैनियों के नौ वासुदेवों में से एक। एक राजा का नाम। वैश्यों की एक उपाधि। एक प्रकार के बंगाली कायस्थों की उपाधि। पुत्रभेद, दत्तक।

दत्तक—[सं० पु०] गोद लिया हुआ लड़का।

दत्तचित्त—[सं० त्रि०] जिसने किसी काम में खूब जी लगाया हो।

दत्तनृत्योपहार—[सं० त्रि०] नाच द्वारा की हुई स्तुति।

दत्तप्राण—[सं० त्रि०] जिसने अपना जीवन उत्सर्ग किया हो।

दत्तमार्ग—[सं० त्रि०] राह से अलग हो जाना।

दत्तवर—[सं० त्रि०] जिससे वर दिया गया हो। वह वर जो प्रार्थना करने पर मिला हो।

दत्तशत्रु—[सं० पु०] राजाविशेष शूर के एक पुत्र का नाम।

दत्तशुल्का—[सं० स्त्री०] वह कन्या जिसके लिए शुल्क वा पण दिया गया हो।

दत्तहस्त—[सं० त्रि०] जिसने रक्षा के लिए हाथ दिया हो, रक्षित।

दत्तात्रेय—[सं० पु०] विष्णु अवतार के ऋषिभेद।

दत्तावधान—[सं० त्रि०] एकाग्रचित्त, सावधान।

दत्तासन—[सं० त्रि०] जिसे आसन दिया गया हो।

दत्ति—[सं० स्त्री०] दान।

दत्तिक—[सं० त्रि०] थोड़ा दिया हुआ।

दत्ती—[हिं० स्त्री०] सगाई का पक्का होना।

दत्तेय—[सं० पु०] इन्द्र।

दत्र—[सं० क्ली०] धन। हिरण्य, सोना।

दत्रिम—[सं० त्रि०] दान द्वारा निष्पन्न। [पु०] दत्तक पुत्र।

ददन—[सं० क्ली०] दान।

ददमर—[सं० पु०] एक प्रकार का पेड़।

ददरा—[हिं० पु०] छानने का कपड़ा। छन्ना, साफी।

ददरी—[हिं० स्त्री०] वह दाग जो पके हुए तम्बाकू के पत्ते पर पड़ जाता है।

ददि—[सं० त्रि०] दाता। दान देनेवाला।

ददिहाल—[हिं० पु०] दादा का घर।

दद्रु—[सं० पु०] कछुआ। दाद का रोग।

दद्रुनाशिनी—[सं० स्त्री०] तैलिनी कीट, एक प्रकार का वृक्ष।

दधि—[सं० पु०] दही।

दधि—[हिं० पु०] समुद्र, सागर।

दधिक—[सं० पु०] श्रीवेष्टक वृक्ष, सलाई का पेड़।

दधिकर्म—[सं० पु०] दधिसंस्कारक वैदिक कर्मभेद।

दधिकांदो—[हिं० पु०] एक प्रकार का उत्सव जो प्रायः जन्माष्टमी के समय होता है।

दधिकूर्चिका—[सं० स्त्री०] फटे हुए दूध का वह अंश जो पानी निकलने पर बच जाता है। छेना।

दधिक्रा—[सं० पु०] एक वैदिक देवता जो घोड़े के आकार के माने जाते हैं। अश्व, घोड़ा।

दधिग्राम—श्रीकृष्ण का एक लीलास्थल।

दधिज—[सं० क्ली०] नवनीत, मक्खन।

दधिजात—[सं० पु०] नवनीत, मक्खन। उदधिसुत, चन्द्रमा।

दधित्थ—[सं० पु०] कपित्थ, कैथ।

दधिनाम—[सं० क्ली०] कैथ का फल। कैथ का वृक्ष।

दधिपुष्पिका—[सं० स्त्री०] श्वेता-पराजिता, सफेद अपराजिता।

दधिपुष्पी—[सं० स्त्री०] कोलसिम्बी, सेम। सफेद अपराजिता। कठभी वृक्ष, छोटी रनजीत।

दधिफल—[सं० पु०] कपित्थ, कैथ।

दधिभव—[सं० क्ली०] नवनीत, मक्खन।

दधिमण्ड—[सं० पु०] दही का पानी।

दधिमण्डोद—[सं० पु०] दधि-समुद्र, दही का समुद्र। इस समुद्र का जल दही के जल के समान होता है।

दधिमुख—[सं० पु०] रामचन्द्र का एक बन्दरसैन्य।

दधियार—[हिं० पु०] एक लता जो जीवन्तिका की जाति की होती है।

दधिलेह—[सं० पु०] दही का ऊपरी भाग, छाली, मलाई।

दधिवामन—[सं० क्ली०] शालग्राम-मूर्ति के मध्य वामन मूर्ति भेद।

दधिवास्तुका—[सं० स्त्री०] गोदन्त हरिताल। जवासा, धमासा।

दधिवाहन—[सं० पु०] अङ्ग नामक राजा के पुत्र।

दधिशोण—[सं० पु०] सफेद वानर।

दधिषाय्य—[सं० पु०] घृत, घी।

दधिसर—[सं० पु०] छाली, मलाई।

दधिसागर—[सं० पु०] पुराण के अनुसार दही का समुद्र।

दधिसार—[सं० पु०] नवनीत, मक्खन।

दधिसुत—[हिं० पु०] कमल। मोती। चन्द्रमा। जालन्धर दैत्य। विष।

दधिस्नुत—[सं० पु०] नवनीत, मक्खन।

दधिस्यन्द—[सं० पु०] एक तीर्थ का नाम।

दधिस्नेह—[सं० पु०] दधि का सर, दही की मलाई।

दधीच—[सं० पु०] दधीचि मुनि,

शुक्राचार्य के एक पुत्र।

दधीचास्थ—[सं०पु०] वज्र। हीरक, हीरा।

दधीचि—[सं०पु०]एक पौराणिक ऋषि।

दधीमुख-[सं०पु०]एक बन्दर का नाम।

दधृष—[सं० त्रि०] निर्लज्ज, बेहया। दमन करने वाला, साहसी।

दध्न-[सं०पु०] चौदह यमों में से एक।

दध्यग्र—[सं० क्ली०] दही की मलाई।

दध्यङ्क—[सं०पु०] सरल,द्रव, लोबान।

दध्यानी—[सं० स्त्री०] सुदर्शन वृक्ष, मदन मस्त।

दध्याह्व—[सं० पु०] कैथ का पेड़।

दध्युत्तर-[सं०क्ली०] दही की मलाई।

दध्योदन—[सं० पु०] दही मिला हुआ भात।

दन—[हि० पु०] दिन।

दनकर—[हि० पु०] सूर्य।

दनगी-[हि०पु०] खेत का छोटा टुकड़ा।

दनु—[सं० स्त्री०] दक्ष की एक कन्या जो कश्यप को ब्याही थी। एक दानव का नाम।

दनुज—[सं० पु०] असुर, राक्षस।

दनुजदलनी—[सं० स्त्री०] असुर-नाशिनी, दुर्गा।

दनुजराय—[हि० पु०] दानवों का राजा हिरण्यकश्यप।

दनुजेन्द्र—[सं० पु०] दानवों का राजा रावण।

दनुजेश—[सं० पु०] रावण। हिरण्यकश्यप।

दनुष—[सं० पु०] राक्षस।

दन्त—[सं०पु०] पर्वत का मध्य भाग। हाथी का दाँत। पहाड़ का ढालुवां किनारा। ऊँचा पथरीला मैदान। मुख के भीतर चर्वण साधन अस्थिभेद।

दन्तक—[सं० पु०] वह पीप जो दाँत मलने से निकलती है। पहाड़ की चोटी। पहाड़ से निकलने वाला एक प्रकार का पत्थर। दाँत।

दन्तकथा—[सं० स्त्री०] जनश्रुति। ऐसी बात जिसे बहुत दिनों से लोग एक दूसरे से सुनते चले आये हों।

दन्तकराल—[सं० पु०] दाँत का एक प्रकार का रोग।

दन्तकर्षण—[सं० पु०] जंभीरी नीबू।

दन्तकाष्ठक—[सं० क्ली०] आहुल्य वृक्ष, तरवट का पेड़।

दन्तकूर—[सं० पु०] संग्राम, युद्ध, लड़ाई।

दन्तकेतु—[सं० पु०] छोटा नींबू का पेड़।

दन्तक्रूर—[सं० पु०] एक देश का नाम। दन्तक्रूर देश के राजा।

दन्तघर्ष—[सं० पु०] दाँत का किरकिराना।

दन्तघात—[सं० पु०] दाँत से काटना। नींबू का पेड़।

दन्तचाल—[सं० पु०] दाँत का हिलना।

दन्तच्छद—[सं० पु०] ओष्ठ, ओंठ।

दन्तच्छदी—[सं० स्त्री०] बिंबा फल, कुंदरु।

दन्तताल—[सं० पु०] ताल देने का एक प्रकार का प्राचीन बाजा।

दन्तदर्शन—[सं० क्ली०] युद्ध या चिड़चिड़ाहट में दाँत निकालने की क्रिया।

दन्तधावन—[सं० क्ली०] दातुन करने की क्रिया। दतून

दन्तपत्र—[सं० क्ली०] कान का एक गहना।

दन्तपत्रक—[सं० क्ली०] कुन्दपुष्प, मकरन्द।

दन्तपार—[हि० स्त्री०] दाँत की पीड़ा। दाँत का दर्द।

दन्तपीठक—[सं० क्ली०] मसूड़ा।

दन्तपुष्प—[सं० क्ली०] कतक फल, निर्मली। कुन्द, कुन्द का फूल। पीपल का पेड़।

दन्तफला—[सं० स्त्री०] पिप्पली।

दन्तमूलिका—[सं० स्त्री०] जमाल-गोटे का पेड़।

दन्तरंजन—[सं० क्ली०] काशीष, कसीस।

दन्तलेखन-[सं० क्ली०] अस्त्र-विशेष।

दन्तवक्र—[सं० पु०] नृप-विशेष।

दन्तवल—[सं० पु०] हस्ति, हाथी।

दन्तवल्क—[सं० क्ली०] मसूड़ा।

दन्तवस्त्र—[सं० क्ली०] ओष्ठ, ओंठ।

दन्तविघात—[सं० पु०] दंताघात, दाँत का आघात।

दन्तविद्रधि—[सं० पु०] दांत का एक रोग।

दन्तबीज—[सं० पु०] दाड़िम, अनार।

दन्तवीणा—[सं० स्त्री०] एक प्रकार की वीणा जिसे दाँत में लगाकर बजाया जाता है।

दन्तवेदना—[सं० स्त्री०] दन्तव्यथा, दाँत का दर्द।

दन्तवेष्ट—[सं० पु०] दांत का एक रोग। मसूड़ा।

दन्तव्यसन—[सं० क्ली०] दांत का बरबाद होना।

दन्तशङ्कु—[सं० पु०] चीर-फाड़ का एक औजार, यह जौ के पत्तों के आकार का होता है।

दन्तशठ—[सं० पु०] जंबीरी नीबू। कपित्थ, कैथ। कर्मरङ्गक, कमरख। नारंगी। खटाई। जिनके खाने से खटाई के कारण दाँत गुठले हो जायँ वे ही दन्तशठ हैं।

दन्तशठा—[सं० स्त्री०] चाङ्गेरी, अमलोनी, खट्टानोनिया। चूक।

दन्तशर्करा—[सं० स्त्री०] दाँतों का एक रोग जो मैल जमकर बैठ जाने के

कारण होता है।

दन्तशाण—[सं० पु०] स्त्रियों के दाँत में लगाने का एक रंगीन मंजन, मिस्सी।

दन्तशिरा—[सं० स्त्री०] मसूड़ा।

दन्तशुद्धि—[सं० स्त्री०] दाँत की विशुद्धता, दाँतों की सफाई।

दन्तशूल—[सं० पु०] दाँत की पीड़ा।

दन्तशोफ—[सं० पु०] दाँत के मसूड़ों में होनेवाला एक प्रकार का फोड़ा।

दन्तहर्ष—[सं० पु०] दंतरोग विशेष। जिसके दाँत शीत और उष्ण सह्य न कर सकें उसे दन्तरोग समझना चाहिए।

दन्तहर्षक—[सं० पु०] जंबीरी नीबू।

दन्ताग्र—[सं० क्ली०] दाँत का अगला भाग।

दन्ताघात—[सं० पु०] नीबू। दाँत का आघात।

दन्ताद—[सं० पु०] दाँत की जड़ या सन्धि में पड़ने वाले कीड़े। ये रक्त से उत्पन्न होते और बाल, नाखून तथा दाँत खाते हैं।

दन्तायुध—[सं० पु०] शूकर, सूअर।

दन्तावुर्द—[सं० पु० क्ली०] मसूड़े में होने वाला एक प्रकार का फोड़ा।

दन्तालिका—[सं० स्त्री०] बल्गा, लगाम।

दन्ताली—[सं० स्त्री०] बल्गा, लगाम।

दन्तावल—[सं० पु०] हस्ती, हाथी।

दन्तिका—[सं० स्त्री०] दंती वृक्ष, जमालगोटा।

दन्तिजा—[सं० स्त्री०] दंतिका, जमालगोटा।

दन्तिदन्त—[सं० पु०] हाथी के दाँत।

दन्तिन—[सं० पु०] हस्ती, हाथी।

दन्तिमूलिका—[सं० स्त्री०] दन्ती वृक्ष, जमालगोटा।

दन्ती—[सं० स्त्री०] अंडी की जाति का एक पेड़।

दन्तीफल—[सं० क्ली०] पिप्पली। दन्ती के बीज।

दन्तीफलसमाकृति—[सं० पु०] पिस्तावृक्ष, पोस्ता।

दन्तीबीज—[सं० क्ली०] जैपालबीज, जमालगोटे का बीज।

दन्तुर—[सं० त्रि०] उन्नतदन्त, जिसके दाँत आगे निकले हों, दाँतू। [पु०] हाथी। सूअर।

दन्तुरक—[सं० पु०] एक देश जो पूर्व दिशा में अवस्थित माना गया है।

दन्तुरच्छद—[सं० पु०] बिजौरा नीबू।

दन्तोच्छिष्ट—[सं० क्ली०] वह जो दाँत से जूठा किया गया हो।

दन्तोज्वला—[सं० क्ली०] जायफल का पेड़।

दन्तोत्पाटन—[सं० क्ली०] दाँत का उखाड़ना।

दन्तोद्भेद—[सं० पु०] दाँत का निकलना।

दन्तौष्ठ्य—[सं० पु०] वह वर्ण जिसका उच्चारण दाँत और ओष्ठ से हो।

दन्त्य—[सं० त्रि०] दाँतों का हितकारी। दंत सम्बन्धी। जिसका उच्चारण दाँत की सहायता से हो, तवर्ग।

दन्तश—[सं० पु०] दंत, दाँत।

दन्दशूक—[सं० पु०] सर्प, साँप। राक्षस। [त्रि०] हिंसा करने वाला।

दन्दह्यमान—[सं० त्रि०] दग्ध, दहकता हुआ।

दन्दम्यमाण—[सं० त्रि०] टेढ़ी चाल वाला।

दन्न—[हि० पु०] तोप आदि के छूटने का दन्न शब्द।

दपट—[हि० स्त्री०] घुड़की, डपेट।

दपु—[हि० पु०] दर्प, अहंकार, शेखी।

दफरा—[हि० पु०] नाव के दोनों ओर लटकता हुआ काठ का टुकड़ा। होंस।

दफराना—[हि० क्रि०] नाव को आपस में टक्कर लड़ने से बचाना। पाल खड़ा करना। रक्षा करना, बचाना।

दबंग—[हि० वि०] प्रभावशाली, दबाव वाला।

दबक—[हि० स्त्री०] छिपने का भाव। सिकुड़ना। धातु आदि को लंबा करने के लिए पीटने की क्रिया।

दबका—[हि० पु०] कामदानी का सुनहला चिपटा तार।

दबकी—[हि० स्त्री०] मिट्टी का एक बरतन। इसका आकार सुराही सा होता है। दबकने या छिपने का भाव।

दबकैया—[हि० पु०] वह जो सोने चाँदी के तारों को पीटकर बढ़ाता और चौड़ा करता है, दबकगर।

दबगर—[हि० पु०] वह जो ढाल बनाता हो। वह जो चमड़े के कुप्पे बनाता हो।

दबड़ घुसड़—[हि० वि०] कायर, डरपोक।

दबना—[हि० क्रि०] बीच के नीचे आना। दाब या पंजे में आना। ऐसी अवस्था में आ जाना जिसमें कुछ बस न चल सके। शान्त रहना। किसी बात का जहाँ का तहाँ रहना। अपनी जगह पर डटा न रहना। पीछे हटना। किसी के दबाव या प्रभाव में आकर विवश होना। अच्छा न जँचना। संकोच करना। मन्द पड़ना।

दबमी—[हि० पु०] हिमालय पहाड़ पर मिलनेवाला एक प्रकार का बकरा।

दबस—[हि० पु०] वह माल जो जहाजी गोदाम में रहता है। जहाज पर की रसद तथा दूसरा सामान।

दबाई—[हिं० स्त्री०] रौंदवाने का काम।

दबाबा—[हिं० पु०] एक प्रकार का बहुत लंबा चौड़ा सन्दूक जो काठ का बना होता है। यह युद्ध की एक सामग्री है। इसमें कुछ आदमियों को बिठाकर गुप्त रूप से सुरंग खोदने अथवा और कोई उपद्रव करने के लिए दुश्मन के किले में उतार देते हैं।

दबिल—[हिं० पु०] हलवाइयों का एक औजार।

दबूसा—[हिं० पु०] जहाज का पिछला भाग। पिछला जहाज का कमरा।

दबोस—[हिं० स्त्री०] चमकीला पत्थर।

दबीनी—[हिं०स्त्री०] बरतनों पर फूल, पत्ती आदि उतारने का औजार जो लोहे का बना होता है। जुलाहों की वह लकड़ी जो भजनी के ऊपर की ओर लगी रहती है।

दभ्य—[सं० त्रि०] हन्तव्य, मारने योग्य।

दभ्र—[सं० त्रि०] अल्प, थोड़ा। [पु०] समुद्र। [स्त्री०] उत्तर दिशा।

दम—[सं० पु०] दण्ड, दमन। इन्द्रियों को वश में रखना। कर्दम, कीचड़। गृह, घर। एक प्राचीन महर्षि का नाम। मरुत्त राज के पुत्र। विष्णु। बुद्ध का एक नाम।

दम—[हिं० पु०] एक प्रकार की तिकोनी कमाची जो दरी बुननेवालों के काम में आती है।

दमक—[सं० त्रि०] दमनकर्त्ता। शासनकारी।

दमकना—[हिं० क्रि०] चमकना। चमचमाना।

दमकला—[हिं० पु०] एक प्रकार का बड़ा पात्र जो दमकल के जैसा बना होता है। इसमें पिचकारी लगी रहती है। जिससे बड़ी बड़ी महफिलों में लोगों पर गुलाब जल अथवा रंग आदि छिड़का जाता है। पाल खड़ा करने का एक जहाज।

दमघोष—[सं० पु०] चंद्रवंशीय एक राजा।

दमचा—[हिं० पु०] खेत के कोने पर बनी हुई मचान।

दमजोड़ा—[हिं० पु०] असि, तलवार।

दमड़ा—[हिं० पु०] धन, रुपया, दाम।

दमड़ी—[हिं० स्त्री०] पैसे के आठ भागों में से एक भाग। एक प्रकार का पक्षी।

दमथ—[सं० पु०] दम, दण्ड, सजा।

दमन—[सं० पु०] दबाने या रोकने की क्रिया। इन्द्रियों की चंचलता रोकना। एक प्रकार का पेड़। कुन्द पुष्प वृक्ष। एक ऋषि का नाम। दम राजा के एक पुत्र का नाम। विष्णु। महादेव, शिव।

दमनक—[सं० पु०] वृक्ष-विशेष, दौना। [क्ली०] एक छन्द का नाम। [त्रि०] दमनशील।

दमनन्दि—आर्य तिलक नामक प्राकृत जैन ग्रन्थ के रचयिता।

दमनी—[सं०स्त्री०] अग्निदमनी वृक्ष।

दमनी—[हिं० स्त्री०] संकोच, लज्जा।

दमयन्ती—[सं० स्त्री०] भद्रमल्लिका। नल राजा की पत्नी।

दमान—[हिं० पु०] दामन, पालकी। चादर।

दमानक—[हिं० स्त्री०] तोपों की बाढ़।

दमाह—[हिं० पु०] बैलों का एक रोग। इसमें बैल हांफने लगता है।

दमित—[सं० त्रि०] शासित, जो वश में किया गया हो। कष्ट सहने वाला।

दमितृ—[सं० पु०] शासनकर्त्ता।

दमीसारथि—[सं० पु०] बुद्ध का नामान्तर।

दमोड़ा—[हिं० पु०] मूल्य, कीमत।

दम्भ—[सं० पु०] कपट, छल, धोखा। शरारत। महत्व दिखाने या प्रयोजन सिद्ध करने के लिए झूठा आडम्बर, पाखण्ड। वह काम जो लोभ और वंचना से किया गया हो। अभिमान, घमंड, धर्म के प्रति अनुत्साह, पाप।

दम्भचर्या—[सं० स्त्री०] शठता, ठगी।

दम्भन—[सं० पु०] पाखण्ड, दंभ। मोहन, लुभाने की क्रिया।

दम्भोद्भव—[सं० पु०] सार्वभौम नामक एक राजा। [त्रि०] जो दंभ या ठगी से किया गया हो।

दम्भोलि—[सं० पु०] वज्र, इन्द्रास्त्र।

दम्य—[सं० स्त्री०] वह बछड़ा जिसकी अवस्था बोझ ढोने की हो गई हो [त्रि०] दमनीय। [पु०] वह बैल जो बधिया करने योग्य हो।

दया—[सं० स्त्री०] करुणा, दुःखित जीव के प्रति अनुकम्पा। दक्ष की एक कन्या जो धर्म को ब्याही गयी थी। शान्तरस का व्यभिचारिभाव।

दयाकूर्च—[सं० पु०] बुद्धदेव।

दयानिधि—[सं० पु०] वह मनुष्य जिसके चित्त में बहुत दया हो। ईश्वर का एक नाम।

दयापात्र—[सं० पु०] वह जिस पर दया करना उचित हो।

दयार—[हिं० पु०] देवदार का पेड़।

दयार्द्र—[सं० त्रि०] दया से भीगा हुआ, दयालु।

दयाल—[सं० पु०] मीठी बोली बोलने वाली एक चिड़िया।

दयालु—[सं० त्रि०] दयावान्।

दयावीर—[सं० पु०] दयायुक्त वीर। दयायुक्त नायकभेद।

दयित—[सं० पु०] पति। [त्रि०] प्रियपात्र, प्यारा।

दयिता—[सं० स्त्री०] भार्या, पत्नी, स्त्री।

दयिताधीन—[सं० पु०] स्त्री के वशीभूत, जोरू का गुलाम।

दर—[सं० क्ली०] शंख। गर्त्त, दरार। भय, डर। कन्दरा, गुफा। [पु० स्त्री०] पहाड़ की कन्दरा।

दर—[हि० पु०] सेना, समूह। स्थान, जगह। जुलाहों की ताने की डंडियाँ गाड़ने का स्थान। [स्त्री०] भाव, निर्ख। प्रमाण, ठीक ठिकाना। [त्रि०] किंचित, थोड़ा।

दरक—[सं० त्रि०] भीरु, डरपोक, कायर।

दरक—[हि० स्त्री०] वह दरार जो जोर या दाब पड़ने से हो जाता है।

दरकंटिका—[सं० स्त्री०] शतावरी, सतावर नाम की औषध।

दरकच—[हि० स्त्री०] वह चोट जो जोर से रगड़ या ठोकर खाने से लगे।

दरकटी—[हि० स्त्री०] भाव का ठहराव।

दरकना—[हि० क्रि०] विदीर्ण होना, चिरना।

दरज—[हि० स्त्री०] दरार, दराज।

दरण—[सं० पु०] दलने वा पीसने की क्रिया। ध्वंस, विनाश।

दरणि—[सं० पु० स्त्री०] नदी के किनारे का टूटना।

दरथ—[सं० पु०] प्रसरण, चारों ओर का फैलाव। गर्त्त, गड्ढा, दरार।

दरद्—[सं० स्त्री०] पर्वत, पहाड़। प्रपात। झरना। भय, डर। म्लेच्छ जाति। एक देश का नाम। तीर, किनारा।

दरपना—[हि० क्रि०] क्रोध करना। अहंकार करना।

दरपनी—[हि० स्त्री०] छोटा आइना।

दरब—[हि० पु०] धन, दौलत। धातु। एक प्रकार की चादर जिसका किनारा मोटा हो।

दरबर—[सं० पु०] पांचजन्य शंख।

दरबहारा—[हि० पु०] सड़े हुए बनस्पतियों का एक प्रकार का मद्य।

दरमा—[हि० स्त्री०] बाँस की एक प्रकार की चटाई। इससे बंगाल में झोपड़ियों की दीवार बनाई जाती है।

दरवी—[हि० स्त्री०] साँप का फन। सँड़सी। करछुल, पौना।

दरस—[हि० पु०] दर्शन, देखा देखी। भेंट। रूप, सुन्दरता, छबि।

दरसान—[सं० पु०] द्योत, प्रकाश।

दरारा—[हि० पु०] धक्का, दरेरा, रगड़ा।

दरि—[सं० स्त्री०] कन्दरा, गुहा। तक्षककुलजात सर्पभेद।

दरित—[सं० त्रि०] भीत, डरपोक।

दरिद्र—[सं० पु०] निर्धन।

दरिद्रता—[सं० स्त्री०] निर्धनता, कंगाली।

दरिद्रत्व—[सं० क्ली०] निर्धनता, गरीबी।

दरिद्रायक—[सं० त्रि०] दरिद्र, दीन, गरीब।

दरिन्—[सं० त्रि०] भीरु, डरपोक। विदारणशील, फाड़नेवाला।

दरी—[सं० स्त्री०] पर्वत की गुहा, खोह। पहाड़ के बीच वह नीचा स्थान जहाँ कोई नदी बहती या गिरती हो।

दरीबा—[हि० पु०] झरोखा, खिड़की। खिड़की के पास बैठने की जगह।

दरीभृत—[सं० पु०] पर्वत, पहाड़।

दरीमुख—[सं० क्ली०] गिरिगुहा का मुख। राम की सेना का एक बन्दर।

दरीवत्—[सं० त्रि०] वह पहाड़ जिसमें बहुत सी गुहाएँ हों।

दरेक—[हि० पु०] बकाइन का पेड़।

दरेरा—[हि० पु०] रगड़ा, धक्का। मेंह का झाला। तोड़, बहाव का जोर।

दरेस—[हि० स्त्री०] एक प्रकार की छींट। [वि०] तैयार, बना बनाया।

दरेसी—[हि० स्त्री०] तैयारी, दुरुस्ती, मरम्मत।

दर्ज—[हि० वि०] लिखा हुआ, कागज पर चढ़ा हुआ।

दर्दर—[सं० पु०] पर्वत, पहाड़। वह पात्र जो कुछ कुछ भग्न हो गया हो।

दर्दरीक—[सं० क्ली०] एक प्रकार का बाजा। भेक, बेंग।

दर्दुर—[सं० पु०] भेक, मेढ़क। मेघ, बादल। एक प्रकार का बाजा। मलय पर्वत से लगा हुआ एक पर्वत। एक राक्षस का नाम। अबरक नाम की धातु। पननवा, एक प्रकार का छोटा पौधा। बीरबहूटी। एक प्रकार का धान।

दर्दुरक—[सं० पु०] एक प्रकार का बाजा। भेक, मेढ़क।

दर्दुराच्छदा—[सं० स्त्री०] ब्राह्मी बूटी।

दर्दुरदला—[सं० स्त्री०] मण्ड कपर्णी, खुलकुड़ी।

दर्दुरपर्णी—[सं० स्त्री०] वृक्षभेद, एक पेड़ का नाम।

दर्दुरा—[सं० स्त्री०] चण्डिका, दुर्गा।

दर्द्रु—[सं० पु०] दाद नामक रोग।

दर्प—[सं० पु०] अहंकार। एक प्रकार का हरिण। रिस, कोप। उद्दण्डता, अक्खड़पन। धर्म-मर्यादातिक्रम। उत्साह। कस्तूरी। आतंक। दबाव, रोब।

दर्पक—[सं० पु०] कामदेव। ये सभी व्यक्तियों को मोहित करते हैं, इसी से इनका नाम दर्पक पड़ा है।

दर्पण—[सं० क्ली०] नेत्र, आँख। उत्तेजना, उभारने का कार्य। आरसी। आइना, रूपदर्शनाधार। एक पहाड़ का नाम। एक नदी का नाम।

दर्पद—[सं० त्रि०] अभिमान उत्पन्न करनेवाला। [पु०] विष्णु।

दर्पपत्रक—[सं० पु०] कुश। डाभ।

दर्पहन्—[सं० त्रि०] गर्वहारक। घमंड दूर करनेवाला। [पु०] विष्णु।
दर्पा—[सं० स्त्री०] कस्तूरी।
दर्पी—[सं० त्रि०] घमंडी, अहंकारी।
दर्भ—[सं० पु०] कुश।
दर्भक—[सं० पु०] घोड़े के पाँव का एक रोग।
दर्भकुसुम—[सं० पु०] कृम जाति। कीड़े की एक जाति।
दर्भकेतु—[सं० पु०] राजा जनक के भाई।
दर्भपत्र—[सं० पु०] काश, काँच।
दर्भट—[सं० क्ली०] निभृत गृह। भीतरी कोठरी।
दर्भपुष्प—[सं० पु०] सर्पभेद। एक प्रकार का साँप।
दर्भमूला—[सं० स्त्री०] एक प्रकार की दवा। कुश की जड़।
दर्भर—[सं० पु०] कुश आदि के निकटस्थ स्थान। लाव पक्षी।
दर्भवट—[सं० क्ली०] अन्तर्गृह। भीतरी कोठरी।
दर्भसमष्ट्र—[सं० पु०] कुश का बिछौना।
दर्भस्तम्ब—[सं० पु०] कुश का गुच्छा।
दर्भासन—[सं० पु०] कुशासन, कुश का बना हुआ बिछावन।
दर्भि—[सं० पु०] एक ऋषि का नाम।
दर्म—[सं० त्रि०] दारक, फाड़नेवाला।
दर्य—[सं० त्रि०] भयसाधन।
दर्रा—[हि० पु०] मोटा आटा। कँकरीली मट्टी। दरार, दरज।
दर्व—[सं० पु०] हिंसा करनेवाला मनुष्य। राक्षस।
दर्वट—[सं० पु०] दण्डवादी। सजा देने की धमकी। द्वारपाल, दरबान।
दर्वरीक—[सं० पु०] इन्द्र। वायु। एक प्रकार का बाजा।
दर्वि—[सं० स्त्री०] व्यंजनादि कारक, करछी। डौआ। साँप का फन।
दर्विका—[सं० स्त्री०] करछी, डौवा। आँख में लगाने का एक प्रकार का काजल। वनगोभी, गोजिया।
दर्वीकर—[सं० पु०] सर्प, फनवाला साँप।
दर्श—[सं० पु०] सूर्य और चन्द्रमा का संगम काल, अमावस्या तिथि। वह यज्ञ जो अमावस्या के दिन किया जाय। दर्शन।
दर्शक—[सं० पु०] द्वारपाल, ड्योढ़ीदार। [त्रि०] द्रष्टा, देखनेवाला, प्रधान, मुख्य। निपुण। दिखाने वाला।
दर्शत—[सं० पु०] सूर्य। चन्द्रमा। [त्रि०] दर्शनीय, देखने लायक।
दर्शन—[सं० क्ली०] नयन, आँख। स्वप्न। बुद्धि। धर्म। दर्पण। इज्या। वर्ण। भेंट। अवलोकन, साक्षात्कार। अध्यात्म वेदक शास्त्र-भेद, जिसके द्वारा यथार्थ तत्त्व का ज्ञान होता है।
दर्शना-[सं० स्त्री०] एक नदी का नाम।
दर्शनीय—[सं० त्रि०] देखने लायक मनोहर, सुंदर।
दर्शयामिनी—[सं० स्त्री०] तमिस्रा, अँधेरी रात, अमावस्या की रात।
दर्शविपद्—[सं० पु०] चन्द्रमा।
दर्शित—[सं० त्रि०] दिखलाया हुआ, प्रकाशित।
दर्शिन—[सं० त्रि०] देखने वाला। विवेचक, विचार करने वाला। दर्शन या मुलाकात कराने वाला।
दल—[सं० क्ली०] उत्सेध। टुकड़ा। पौधों का पत्ता। धन, दौलत। तमालपत्र। आधा भाग। कोष, म्यान। बुरी चीज। समूह, झुण्ड। जल में होने वाली एक घास। फूल की पखड़ी। मंडली, गुट। सेना। तेजपत्र।
दलक—[हि० पु०] नक्काशी साफ करने का राजगीरों का एक यंत्र। [स्त्री०] कम्प, थरथराहट। टीस, चमक।
दलकोमल—[सं० क्ली०] पद्म, कमल।
दलकोष—[सं० पु०] कुन्द का पौधा। चमेली का पेड़।
दलगंजन—[सं० त्रि०] सेना को मारने वाला। [पु०] एक प्रकार का धान।
दलघुसरा—[हि० पु०] एक प्रकार की रोटी। इसमें पिसी हुई दाल नमक मसाले के साथ भरी रहती है।
दलदल—[हि० स्त्री०] कीचड़। बहुत गहराई तक की गीली जमीन। बुड्ढी स्त्री। यह पालकी के कहारों की बोली है।
दलदार—[हि०वि०] मोटा दल वाला।
दलन—[सं० पु०] पीस कर खंड खंड करने का काम। विनाश, संहार।
दलनिर्मोक—[सं० पु०] भोजपत्र का पेड़।
दलप—[सं० पु०] स्वर्ण, सोना। हथियार का छोड़ना। विदारक मात्र। दलपति।
दलपति-[सं०पु०] सरदार। सेनापति।
दलपुष्प—[सं० स्त्री०] केतकी।
दलबल—[सं० पु०] सैन्य, फौज।
दलवा—[हि० पु०] एक निर्बल पक्षी जिसे तीतरबाज, बटेरबाज अपने पास रखते हैं। वे इसे दूसरे पक्षियों से लड़कर और मार खिलाकर उन पक्षियों का साहस बढ़ाते हैं।
दलबादल—[हि० पु०] बादलों का समूह। भारी सेना। बहुत लम्बा चौड़ा शामियाना। बड़ा भारी खेमा।
दलमलना-[हि० क्रि०] कुचल डालना। रौंदना, मीड़ डालना। विनष्ट कर देना। मार डालना।
दलशालिनी—[सं० स्त्री०] करचू का साग।
दलसायसी—[सं० स्त्री०] सफेद

तुलसी का पौधा ।

दलसारिणी—केमुक, केमुआ, कच्चू ।

दलसूचि—[सं० पु०] कंटक, काँटा। कंटक वृक्ष । वह पौधा जिसके पत्तों में काँटे हों। पत्तों का काँटा ।

दलस्थ—[सं० त्रि०] दलयुक्त । जिसमें दल हों ।

दलस्नुसा—[सं० स्त्री०] पत्रशिरा । पत्ते की नस ।

दलहन—[हि० पु०] वह अनाज जिसकी दाल बनाई जाती है ।

दलहरा—[हि० पु०] दाल बेचनेवाला।

दलहीनफला—[सं० स्त्री०] सुलेमानी खजूर ।

दलाक्रान्त—[सं० त्रि०] दलस्थ । जिसमें दल हों ।

दलाढक—[सं० पु०] जंगली तिल । गेरू । नागकेशर पुष्पवृक्ष । कुन्द पुष्प वृक्ष । एक प्रकार का पलाश । सिरिस का पेड़ । अंधड़ । मद्दार, प्रतिध्वनि । फेन । घातक । माहुत । जलकुंभी ।

दलाढकी—[सं० स्त्री०] पिठवन लता।

दलाढ्य—[सं० पु०] पंक । कीचड़ । कुन्द पुष्प वृक्ष ।

दलामल—[सं० क्ली०] मरुवे का पौधा । दौने का पौधा । मैनफल का पेड़।

दलाम्ल—[सं० क्ली०] चुकशाक । अमलोनी । लोनिया साग ।

दलारा—[हि० पु०] एक प्रकार का झूलनेवाला बिस्तरा । मल्लाह लोग इसका व्यवहार जहाज पर करते है ।

दलि—[सं० पु० स्त्री०] लोष्ट्र, ढेला ।

दलिक—[सं० क्ली०] काष्ठ, काठ ।

दलित—[सं० त्रि०] प्रस्फुटित, प्रफुल्ल । खंडित, टुकड़ा किया हुआ । [क्ली०] दाल।

दलिन—[सं० त्रि०] दलयुक्त, जिसमें दल या मोटाई हो । जिसमें पत्ता हो ।

दलेपंज—[हि० पु०] बूढ़ा घोड़ा, वह घोड़ा जो जवान न रह गया हो । वह आदमी जिसकी उमर ढल गई हो ।

दलेल—[हि० स्त्री०] ड्रिल, कवायद।

दलै—[हि० क्रि०] हाथीवानों की एक बोली, इसमें हाथी मुँह खोलता और खाने लगता है ।

दल्भ—[सं० पु०] प्रतारणा, धोखा । पाप, गुनाह । चक्र, पहिया । एक मुनि का नाम ।

दल्मि—[सं० पु०] इन्द्र । वज्र ।

दव—[सं० पु०] वन, जंगल । वह आग जो वन में आप से आप लग जाती है । अग्नि, आग । उष्णता गरमी । उपताप, दुःख, कष्ट ।

दवथु—[सं० पु०] परिताप, दुःख । दाह, जलन ।

दवदग्धक—[सं क्ली०] रोहिस नाम की घास ।

दवदहन—[सं० पु०] दावाग्नि, दवारि, दावा ।

दवन—[हि० पु०] नाश । दौना नाम का पौधा ।

दवना—[हि० क्रि०] दग्ध करना, जलाना ।

दवनी—[हि० स्त्री०] मिसाई, मँड़ाई।

दविष्ठ—[सं० त्रि०] गहरा, बहुत दूरवर्ती ।

दश—[सं० त्रि०] संख्या विशेष, पाँच का दूना ।

दशकण्ठ—[सं० पु०] रावण ।

दशकण्ठजहा—[सं० पु०] रावण-संहारक, श्रीरामचन्द्र ।

दशकन्ध—[हि० पु०] रावण ।

दशकुमारचरित—[सं० क्ली०] महाकवि दण्डी का बनाया हुआ एक गद्यग्रन्थ ।

दशग्रीव—[सं० पु०] रावण । एक राक्षस का नाम । दमघोष का एक पुत्र, शिशुपाल का भाई । ग्यारहवें मन्वन्तर में इन्द्र के एक शत्रु का नाम ।

दशजटा—[सं० स्त्री०] दशमूल ।

दशन—[सं० क्ली०] कवच । [पु०] शिखर ।

दशनबीज—[सं० पु०] अनार ।

दशनांशु—[सं० पु०] दाँतों की शोभा ।

दशनाङ्क—[सं० पु०] दाँतों से कटा हुआ जख्म या चिह्न ।

दशनोच्छिष्ट—[सं० क्ली०] नाक या मुँह से बाहर निकलने वाला श्वास । अधर-चुंबन, होठों का चूमना ।

दशपारमिताधर—[सं० पु०] बुद्ध ।

दशपुर—[सं० क्ली०] केवटी मोथा । मालवे का एक प्राचीन विभाग ।

दशपेय—[सं० पु०] एक प्रकार का यज्ञ ।

दशबल—[सं पु०] बुद्ध । दान, शील, क्षमा, वीर्य, ध्यान, प्रज्ञा, बल, उपाय, प्रणिधि और ज्ञान बुद्ध के ये दस बल थे, इसी से इनका नाम दशबल हुआ है ।

दशबाहु—[सं० स्त्री०] दशभुजा, दुर्गा । [त्रि०] दशबाहुयुक्त, जिसके दश भुजाएँ हों ।

दशभूमिग—[सं० पु०] बुद्धदेव ।

दशमदशा—[सं० स्त्री०] साहित्य के रस निरूपण में वियोगी की एक दशा । इसमें वह प्राण छोड़ देता है ।

दशमलव—[हि० पु०] भिन्न का एक भेद । इसके हर में दस या उसका कोई घात होता है ।

दशवाजिन्—[सं० पु०] चन्द्रमा ।

दशवाहु—[सं० पु०] महादेव ।

दशव्रज—[सं० पु०] एक ऋषि का नाम।

दशशतनयन—[सं० पु०] इन्द्र ।

दशशतरश्मि—[सं० पु०] सूर्य ।

दशशताक्ष—[सं० पु०] इन्द्र ।

दशशीर्ष—[सं० पु०] रावण । एक प्रकार का अस्त्र जिससे चलाए हुए अस्त्र निष्फल किए जाते हैं ।

दशहरा—[सं० स्त्री०] ज्येष्ठ मास की शुक्ला दशमी । इसी दिन गंगा का जन्म हुआ था ।

दशाकर्ष—[सं० पु०] प्रदीप, चिराग । कपड़े का छोर या अंचल ।

दशाक्षर—[सं० क्लीं०] पंक्ति नामक छन्दोभेद । [त्रि०] दशाक्षरयुक्त मंत्रभेद ।

दशानन—[सं० पु०] रावण ।

दशानिक—[सं० पु०] दण्डी वृक्ष, जमालगोटा ।

दशान्त—[सं० पु०] वार्द्धक्य, बुढ़ापा । बत्ती का पिछला भाग ।

दशामय—[सं० पु०] रुद्र ।

दशारुहा—[सं० स्त्री०] कैवर्त्तिका, एक प्रकार की लता । यह मालव देश में बहुत होती है और इससे कपड़े रँगाए जाते हैं ।

दशार्ण—[सं०पु०] देशविशेष, एक देश जो विन्ध्य पर्वत के पूर्व दक्षिण में अवस्थित है । [त्रि०] उक्त देश के निवासी । उक्त देश के राजा । [स्त्री०] एक नदी जिसका वर्त्तमान नाम दसान है । जैनपुराण के अनुसार एक राजा ।

दशार्णेयु—[सं० पु०] पौरव्य रौद्राश्व राजा के एक पुत्र का नाम ।

दशार्ह—[सं० पु०] क्रोष्टृवंशीय धृष्ट राजा के पुत्र । राजा वृष्णि के पौत्र । [पु०] विष्णु ।

दशाश्व—[सं० पु०] चन्द्रमा, इनके रथ में दश घोड़े लगते हैं । इक्ष्वाकु के दशवें लड़के ।

दशाश्वमेध—[सं० क्ली०] काशी के अन्तर्गत एक तीर्थ ।

दशास्य—[सं० पु०] रावण ।

दशास्यजित्—[सं० पु०] श्रीराम ।

दशाह—[सं० पु०] दसदिन । मृतक के कृत्य का दसवाँ दिन ।

दशिन्—[सं० त्रि०] दस अङ्कवाला । [पु०] राजा से नियुक्त दशग्रामाधिपति । वह चिराग जिसमें दस बत्तियाँ हों । झालरदार कपड़ा ।

दशेन्धन—[सं० पु०] प्रदीप, चिराग ।

दशेर—[सं० पु०] हिंसक जीव ।

दशेरक—[सं० पु०] मरुभूमि । वर्त्तमान मारवाड़ देश । उक्त देश के निवासी । उक्त देश के राजा ।

दशेरुक—[सं० पु०] मरुदेश ।

दशोणि—[सं० पु०] बहु-हविष्य, वह जिसके पास बहुत घृतादि हो ।

दशोनशि—[सं० पु०] वेद के अनुसार एक साँप का नाम ।

दष्ट—[सं०त्रि०] दाँत से काटा हुआ ।

दस—[सं० पु०] उपक्षेप, आक्षेप ।

दसठौन—[हि० पु०] प्रसवकाल की एक रात ।

दसना—[हि० क्रि०] विस्तृत होना, फैलना । बिछाना । [पु०] बिस्तर, बिछौना ।

दसमरिया—[हि० स्त्री०] एक प्रकार की बरसाती नाव । यह बहुत बड़ी होती है ।

दसरंग—[हि० पु०] मलखंभ की एक कसरत ।

दसरान—[हि० पु०] कुश्ती का एक पेंच ।

दसारी—[हि० स्त्री०] पानी के किनारे रहनेवाली एक चिड़िया ।

दसी—[हि० स्त्री०] कपड़े के किनारे पर का सूत, छोर । कपड़े का पल्ला । बैलगाड़ी की पटरी । एक प्रकार का औजार जिससे चमड़ा छीला जाता है ।

दसेरक—[सं० पु०] दसेरक देश के निवासी और राजा । गर्दभ, गदहा ।

दसौंधी—[हि० पु०] बन्दियों वा चारणों की एक जाति । ये लोग अपने को ब्राह्मण बतलाते हैं, ब्रह्मभट्ट ।

दस्म—[सं० पु०] उपक्षेपक, आक्षेप करने वाला । दर्शनीय, देखने योग्य । यजमान । चोर । हुताशन, अग्नि । खल, दुष्ट मनुष्य ।

दस्मन्—[सं० त्रि०] दर्शनीय, देखने योग्य ।

दस्मवर्चस्—[सं० त्रि०] जिसका प्रभाव खूब बढ़ा चढ़ा हो । [पु०] इन्द्र । मरुत ।

दस्म्य—[सं० पु०] दर्शनीय, देखने योग्य ।

दस्येवसह—[सं० पु०] उपद्रव के लिए चोर का अभिभावक ।

दस्यु—[सं०पु०] महासाहसिक, डकैत । खल, दुष्ट । चोर । कर्मवर्जित, वह जो अपने कर्मों से च्युत हो गया हो । असुर, राक्षस । [त्रि०] उपक्षेपक, उपेक्षा करने वाला, विरक्त रहने वाला ।

दस्युतर्हण—[सं० त्रि०] डकैतों का दमन करने वाला ।

दस्युता—[सं० स्त्री०] लुटेरापन, डकैती । दुष्टता, क्रूर स्वभाव ।

दस्युवृत्त—[सं० स्त्री०] चोरी, डकैती, लुटेरापन ।

दस्युहत्य—[सं० क्ली०] वह संग्राम जिसमें डकैत मारे जाते हैं ।

दस्युहन्—[सं० त्रि०] असुर-विघातक इन्द्र ।

दस्र—[सं० पु०] खर, गदहा । अश्विनी-कुमार । दोहरी संख्या । जोड़ा, दो का समूह । अश्विनी नक्षत्र । [क्ली०] दर्शनीय, देखने योग्य । हिंसा करने वाला ।

दस्रदेवता—[सं० स्त्री०] अश्विनी नक्षत्र।

दस्रसू—[सं० स्त्री०] संज्ञा, सूर्य की स्त्री। इनके गर्भ से अश्विनी कुमार ने जन्म ग्रहण किया है।

दह—[हि० पु०] नदी के भीतर का गड्ढा, पाल। कुण्ड, हौज। [स्त्री०] ज्वाला, लपट, लौ।

दहक—[हि० स्त्री०] धधक, दाह। ज्वाला, लपट। शर्म, लज्जा।

दहकन-[हि० स्त्री०] दहकने की क्रिया।

दहकाना—[हि० क्रि०] धधकना। क्रोध दिखाना। भड़काना।

दहड़ दहड़—[हि० क्रि० वि०] लपट फेंकते हुए। धाँय धाँय।

दहन—[सं० पु०] अग्नि, आग। चित्रक वृक्ष। चीता। भिलावाँ। दुष्ट या क्रोधी मनुष्य। [पु०] कपोत, कबूतर। एक रुद्र का नाम। कृत्तिका नक्षत्र। तीन की संख्या। ज्योतिष में एक योग। ज्योतिष में एक वीथी। दाह, जलने की क्रिया। [त्रि०] दाहक मात्र। [क्ली०] गुग्गुल। अगुरु। एक प्रकार की काँजी।

दहनप्रिया—[सं० स्त्री०] स्वाहादेवी। अग्नि की प्रिया।

दहनबहुल—[सं० पु०] अग्नि, आग।

दहनावटपी—[सं० स्त्री०] लांगलिका, एक प्रकार का वृक्ष।

दहनर्क्ष—[सं० क्ली०] कृत्तिका-नक्षत्र।

दहनशील—[सं० पु०] जलनेवाला।

दहनसारथि—[सं० पु०] वायु, हवा।

दहना—[हि० क्रि०] जलना, बलना। भस्म करना। क्रोध दिखाना। कुढ़ना। धँसना। नीचे बैठना।

दहनागुरु—[सं० पु०] दाहागुरु। एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य।

दहनाराति—[सं० पु०] जल। अग्नि में जल देने से वह बुझ जाती है। इसी से अग्नि को दहनाराति कहते हैं।

दहनीय—[सं० त्रि०] जलने वा जलाए जाने योग्य।

दहनोपल—[सं०पु०] सूर्य कान्तिमणि। इस मणि में सूर्य की किरण लगने से आग निकल आती है।

दहनोल्का—[सं० स्त्री०] अग्नि के विस्फुलिंग रूप उल्का।

दहर—[सं० पु०] मूषिका, चुहिया। भ्राता, भाई। बालक। नरक। वरुण। कुक्कुट, मुर्गा। [त्रि०] स्वल्प, छोटा। सूक्ष्म। दुर्बोध।

दहर—[हि० पु०] दह, नदी का गहरा स्थान। कुण्ड, हौज।

दहरसूत्र—[सं० क्ली०] बौद्धों का एक ग्रन्थ वा सूत्र।

दहराकाश—[सं० पु०] चिदाकाश। ईश्वर।

दहलना—[हि० क्रि०] डर से काँप उठना। भय से स्तब्ध होना।

दहिङ्गल—[हि० पु०] एक प्रकार की चिड़िया। यह आठ अंगुल लम्बी होती है और कीड़े मकोड़े खाती है।

दहेंगर—[सं० पु०] दही का बड़ा।

दहेंड़ी—[हि० स्त्री०] मट्टी का बरतन जिसमें दही रखा जाता है।

दहेला—[हि० वि०] दग्ध, जला हुआ। संतप्त, दुखी। आर्द्र, भीगा हुआ।

दहोतरसो—[हि० पु०] एक सौ दश।

दह्यमान-[सं० त्रि०] जो जल रहा हो।

दह्र—[सं० पु०] दावानल, दावाग्नि। नरक। अग्नि। वरुण। हृदयाकाश।

दहाग्नि—[सं० पु०] जठराग्नि।

दा—[सं० स्त्री०] दान। रक्षा। छेद। उत्ताप, गर्मी।

दा—[हि० पु०] सितार का एक बोल।

दाई—[हि० वि०] दाहिनी। [स्त्री०] बार, दफा।

दाई—[हि० स्त्री०] धात्री, धाय। वह स्त्री जो प्रसूता के उपचार के लिए नियुक्त होती है, वह स्त्री जो स्त्रियों को बच्चा जनने में सहायता देती है। वह दासी जो छोटे छोटे बच्चों की देखभाल करने के लिए रखी जाती है। पिता की माता, दादी। बड़ी बूढ़ी स्त्री।

दां—[हि० पु०] बार, दफा, बारी।

दांक—[हि० स्त्री०] दहाड़, गरज।

दाँग—[हि० पु०] नगाड़ा, डंका। टीला, छोटी पहाड़ी। पहाड़ का शिखर।

दाँगी—[हि० स्त्री०] जुलाहों की एक लकड़ी जो कंघी में लगी रहती है।

दाँड़ना—[हि० क्रि०] दण्ड देना, सजा देना। जुरमाना देना।

दांडिक—[हि० पु०] जल्लाद।

दाँतघुँघुनी—[हि० स्त्री०] पोस्त के दाने की घुँघुनी। यह बच्चे का पहला दाँत निकलने पर बाँटी जाती है।

दाँतली—[हि० स्त्री०] काग, डाट।

दाँता—[हि० पु०] एक प्रकार का कँगूरा जो दाँत के आकार का होता है।

दाँताकिटकिट—[हि० स्त्री०] वाग्युद्ध, झगड़ा। गाली गलौज।

दाँतिया—[हि० पु०] रेह का नमक जिसे पीने के तंबाकू में उसकी तेजी बढ़ाने के लिए डालते हैं।

दाँती—[हि० स्त्री०] घास या फसल काटने का हँसिया। नाव के घाट पर गड़ा हुआ खूँटा। इससे नाव का रस्सा बाँध दिया जाता है। भिड़ की जाति का एक काला कीड़ा। दाँतों की पंक्ति। दो पहाड़ों के बीच का तंग स्थान, दर्रा। घाटी।

दाँना—[हि० क्रि०] पकी फसल के डंठलों को दाना अलग कर देने के लिए रौंदवाना।

दाँवनी—[हि० स्त्री०] दामिनी नाम का आभूषण।

दाँवरी—[हि० स्त्री०] रज्जु, डोरी।

दाक—[सं० पु०] यजमान। दाता।

दाक्ष—[सं० पु०] दक्ष सम्बन्धीय यज्ञादि। दाक्षिसमुदाय। उसका अंग। उसका लक्षण। दाक्षिका छात्र समूह। [त्रि०] दाक्षिका दण्ड प्रधान मानव का अन्तेवासी।

दाक्षायण—[सं० पु० स्त्री०] दक्ष का युवा गोत्रापत्य। सोने आदि का आभूषण। भूषण, गहना। दक्ष द्वारा किया गया एक यज्ञ जिसकी कथा शतपथ ब्राह्मण में है। [त्रि०] दक्ष से उत्पन्न। दक्ष के गोत्र का। दक्ष सम्बन्धी।

दाक्षायणिन—[सं० त्रि०] सुवर्णयुक्त, सोने का।

दाक्षायणी—[सं० स्त्री०] अश्विनी से लेकर रेवती तक २७ नक्षत्र। दुर्गा। रोहिणी नक्षत्र। दक्ष की कन्या। दन्ती वृक्ष। कश्यप की स्त्री, अदिति। कद्रु। विनता।

दाक्षायणीपति—[सं० पु०] चन्द्रमा।

दाक्षायण्य—[सं० पु०] सूर्य, आदित्य।

दाक्षाय्य—[सं० पु०] गिद्ध।

दाक्षि—[सं० पु० स्त्री०] दक्ष का अपत्य, दक्ष की सन्तान।

दाक्षिकन्था—[सं० स्त्री०] बाह्लीक देश।

दाक्षिण—[सं० पु०] एक होम का नाम। [त्रि०] दक्षिण सम्बन्धी।

दाक्षिणक—[सं० पु०] दक्षिणातत्पर। चन्द्रलोकगामी।

दाक्षिणशाल—[सं० त्रि०] वह घर जिसका दरवाजा दक्षिण की ओर हो।

दाक्षिणात्य—[सं० त्रि०] जो दक्षिण देश में उत्पन्न हो। [पु०] नारियल। दक्षिण देशवासी। दक्षिण देश के अन्तवर्ती। दक्षिण राज्य।

दाक्षिणापथक—[सं० त्रि०] दक्षिणापथ देश का।

दाक्षिणिक—[सं० पु०] एक प्रकार का बंधन जो दक्षिणाप्रधान इष्टापूर्त आदि कर्मों को कामनावश करने से होता है।

दाक्षिण्य—[सं० क्ली०] अनुकूलता, प्रसन्नता। दूसरे के चित्त को फेरने या प्रसन्न करने का भाव। सरलता, सुशीलता, उदारता। साहित्य में नाटक का एक अंक।

दाक्षी—[सं० स्त्री०] दक्ष की कन्या। पाणिनि मुनि की माता।

दाक्षीपुत्र—[सं० पु०] पाणिनि मुनि।

दाक्ष्य—[सं० क्ली०] दक्षता, निपुणता, पटुता।

दाख—[हि० स्त्री०] अंगूर। मुनक्का। किशमिश।

दाग—[हि० पु०] दग्ध, दाह। मृतक का दाह कर्म, मुर्दा जलाने की क्रिया। जलन, डाह। जलने का चिह्न।

दागना—[हि० क्रि०] जलाना। शरीर पर चिह्न देने के लिए तपे हुए लोहे से किसी के अंग को जलाना। भरी हुई बन्दूक में बत्ती देना। रंग आदि से अंकित करना। तप्त मुद्रा से अंकित करना।

दाघ—[सं० पु०] दाह, जलन, गरमी।

दाड्स—[हि० पु०] एक प्रकार का साँप।

दाड़िम—[सं० क्ली०] एला, इलायची। अनार।

दाड़िमपत्रक—[सं० पु०] रोहितक वृक्ष। रोहेड़ा।

दाड़िमपुष्प—[सं० पु०] रोहितक वृक्ष। [क्ली०] दाड़िम या अनार का फूल।

दाड़िमप्रिय—[सं० पु०] कीट पक्षी। सुग्गा। यह अनार खाना बहुत पसन्द करता है।

दाड़िमभक्षण—[सं० पु०] सुआ, तोता।

दाड़िमी—[सं० स्त्री०] अनार का पेड़।

दाड़ी—[सं० स्त्री०] दाड़िम, अनार। अनार का फल।

दाढ़—[सं० स्त्री०] चौभर,। भीषण शब्द। गरज, दहाड़।

दाढ़ा—[सं० स्त्री०] चौभर, दंष्ट्रा। प्रार्थना, विनती। समूह, जत्था।

दाढ़ी—[हि० स्त्री०] चिबुक। ठुड्डी और दाढ़ पर के बाल।

दाण्ड—[सं० पु० क्ली०] दण्डराजा का अपत्य। [क्ली०] दण्डभाव। वह जो हथियार चलाकर अपनी जीविका निर्वाह करता हो। दण्ड समूह।

दाण्डपाता—[सं० स्त्री०] जिस तिथि में केवल एक दंड रहता है उसे दांडपाता कहते हैं।

दाण्डपायन—[सं० पु०] दंडप का अपत्य।

दाण्डमाथिक—[सं० त्रि०] जो डंडे से मथने लायक हो।

दाण्डाजिनिक—[सं० त्रि०] कुहक। वह जो दंड और अजिन धारण करके अपना अर्थ साधन करता फिरे। छली। धार्मिक।

दाण्डिक—[सं० त्रि०] जो दंड धारण करके अपनी जीविका चलाता हो। वह जो दंड देने के लिए नियुक्त हो। जल्लाद।

दाण्डिन—[सं० पु०] दंड के कहे हुए कल्पसूत्र के अध्याय।

दाण्डिनायन—[सं० पु० स्त्री०] दंडी का गोत्रापत्य।

दात—[सं० त्रि०] लून, खंडित, छिन्न। शुद्ध, पवित्र।

दातव्य—[सं० त्रि०] दान योग्य। देने योग्य। [पु०] दान देने का काम। दानशीलता। उदारता।

दातापन—[हिं० पु०] दानशीलता।

दातार—[हिं० पु०] दाता, देनेवाला।

दाति—[सं० स्त्री०] शुद्धि, सफाई। छेदन। दान।

दातु—[सं० क्ली०] दान।

दातून—[हिं० स्त्री०] दन्ती की जड़। जमालगोटे की जड़।

दातृ—[सं० त्रि०] दान देनेवाला। दानशील।

दातृत्व—[सं० क्ली०] दातृता, देने की प्रवृत्ति।

दात्यूह—[सं० पु०] पक्षी विशेष, पपीहा, चातक। जलकाक। मेघ, बादल।

दात्र—[सं० क्ली०] छेदनसाधन-अस्त्रभेद, दाँती, हँसिया। दान। दानकर्त्ता।

दात्री—[सं० स्त्री०] वह जो दान देती हो। गंगा। हँसिया, दाँती।

दात्व—[सं० पु०] दाता। यज्ञकर्म।

दाद—[सं० पु०] दान।

दादमर्दन—[हिं० पु०] हिन्दुस्तान के उद्यानों में मिलनेवाला एक प्रकार का चकवँड़।

दादरा—[हिं० पु०] एक प्रकार का चलता गाना। एक प्रकार का ताल, जिसमें दो अर्द्धमात्राएँ रहती हैं। इसमें केवल एक आघात होता है।

दादस—[हिं० स्त्री०] सास की सास, ददिया सास।

दादुर—[हिं० पु०] मेंढ़क, बेंग।

दादू—[हिं० पु०] दादा के प्रति प्यार का शब्द। भाई आदि के समान एक साधारण संबोधन। एक साधु का नाम, इनके नाम पर एक पंथ चला है।

दाधृवि—[सं० स्त्री०] पृथ्वी, धरनी।

दाधृषि—[सं० त्रि०] दमन करने-वाला, दबानेवाला। अत्यंत धर्षक।

दान—[सं० क्ली०] हाथी का मद। पालन। छेदन। वह वस्तु जो दान में दी जाय। कर, महसूल। राजनीति के चार उपायों में से एक। शुद्ध। वह मधु जो पेड़ के कोटर कीड़ों से बनता हो। त्याग, विसर्जन।

दानक—[सं० क्ली०] कुत्सित दान, बुरा दान।

दानकुल्या—[सं० स्त्री०] हाथी का मद।

दानच्युत—[सं० पु० स्त्री०] गोत्र-प्रवर ऋषिभेद।

दानपति—[सं० पु०] सदा दान देने वाला। अक्रूर का नामान्तर, शत-धन्वा ने स्यमन्तक मणि को चुराकर इन्हीं के पास रखा था। दैत्यभेद, एक दैत्य का नाम।

दानपत्र—[सं० क्ली०] त्यागपत्र, वह लेख या पत्र जिसके द्वारा कोई सम्पत्ति किसी को प्रदान की जाय।

दानप्रतिभाव्य—[सं० क्ली०] ऋण परिशोध करने के लिये जामिन।

दानव—[सं० पु०] कश्यप के वे पुत्र जो दनुनाम की पत्नी से उत्पन्न हुए। असुर, राक्षस।

दानवगुरु—[सं० पु०] दानवों के गुरु, शुक्राचार्य।

दानवज्र—[सं० पु०] एक प्रकार का घोड़ा। महाभारत में लिखा है कि इस प्रकार के घोड़े देवताओं और गन्धर्वों की सवारी में रहते, कभी बूढ़े नहीं होते और मन की तरह वेगशाली होते हैं।

दानवप्रिया—[सं० स्त्री०] नागवल्ली लता, पान की बेल।

दानवारि—[सं० पु०] देवता। विष्णु। इन्द्र। [क्ली०] हाथी का मद।

दानवी—[सं० स्त्री०] दानव की स्त्री। राक्षसी।

दानवी—[हिं० वि०] दानवसंबन्धी, दानवों की।

दानवीर—[सं० पु०] अत्यन्त दाता। वीररस भेद। नायक भेद।

दानवेन्द्र—[सं० पु०] राजा बलि।

दानवेय—[सं० पु०] दक्ष की कन्या दनु का अपत्य।

दानशूर—[सं० पु०] दानवीर, शाक्यमुनि।

दानशौण्ड—[सं० त्रि०] अत्यन्त वदान्य, बहुत दानी।

दानसागर—[सं० पु०] एक प्रकार का महादान।

दानादेश—[हिं० पु०] चोगे के पहने जाने का एक प्रकार का जरदोजी का कपड़ा।

दानाध्यक्ष—[सं० पु०] दान का प्रबन्ध करने वाला कर्मचारी, वह व्यक्ति जिसके द्वारा दान किया हुआ द्रव्य ब्राह्मणों में बाँटा जाय।

दानापानी—[हिं० पु०] अन्न-जल, खान-पान। जीविका, भरण-पोषण का आयोजन। रहने का संयोग।

दानि—[हिं० वि०] दान करने वाला, उदार। [पु०] वह जो कर संग्रह करता हो। पहाड़ी नेपालियों की एक जाति।

दानीय—[सं० त्रि०] दानपात्र, दान करने के योग्य।

दानु—[सं० पु०] दाता। विक्रान्त। सुख। वायु, हवा। दानव, राक्षस। [क्ली०] दान। बरसने का काम। देने योग्य धन।

दानुद—[सं० त्रि०] धनदाता, धन देनेवाला।

दानुमत्—[सं० त्रि०] हिंसायुक्त।

दान्त—[सं० त्रि०] जिसने इन्द्रियों को वश में कर लिया हो। जिसका दमन किया गया हो। जो दाँत के बने हों। दाँत सम्बन्धी। [पु०] पहाड़ पर की बावली। मैनफल। विदर्भ के राजा भीमसेन के दूसरे पुत्र जो दमयन्ती के भाई थे। दाना।

दान्ता—[सं० स्त्री०] एक अप्सरा का नाम जिसका उल्लेख महाभारत में आया है।

दान्ति—[सं० स्त्री०] वह जिसमें क्लेश आदि सहने की शक्ति है। इंद्रियों का दमन। अधीनता। नम्रता, विनय।

दान्तिक—[सं० त्रि०] जो हाथी दाँत के बने हों।

दाप—[हि० पु०] दर्प, अहंकार, घमंड। शक्ति, बल, जोर। उत्साह, उमंग। आतंक। रोब। क्रोध, गुस्सा। जलन, ताप।

दापक—[हि० पु०] दबाने वाला।

दापनीय—[सं० त्रि०] सजा देने योग्य।

दापित—[सं० त्रि०] साधित, जो साधन किया गया हो। दण्डित, जिसे सजा मिली हो। जो धन आदि देकर वशीभूत किया गया हो। [पु०] शोधित द्रव्य।

दाबा—[हि० पु०] कलम लगाने का काम। इसमें पौधों की टहनी को मट्टी में गाड़ते व दबाते हैं। एक प्रकार की मछली।

दाबिल—[हि० पु०] एक प्रकार का सफेद पक्षी। इसकी चोंच दश बारह अंगुल लंबी और छोर पर पैसे की तरह गोल और चिपटी होती है।

दाबी—[हि० स्त्री०] कटी हुई फसल के पूले जो बराबर बराबर बाँधे हुए रहते हैं और मजदूरी में दिए जाते हैं।

दाभ—[हि० पु०] एक प्रकार का कुश, डाभ।

दाभी—[सं० स्त्री०] अनिष्टजनक, वह जो हानि पहुँचाता हो।

दाभ्य—[सं० त्रि०] शासन के योग्य, जो शासन में आ सके। बाधा देने योग्य।

दाम—[सं० क्ली०] पशु आदि को बाँधने की रस्सी। माला, हार। समूह, राशि। विश्व, लोक। सन्धान, खोज। [त्रि०] दाता, देनेवाला।

दाम—[हि० पु०] एक दमड़ी का तीसरा भाग। धन, पैसा। दान-नीति, राजनीति का एक चाल। मूल्य, कीमत। सिक्का, रुपया।

दामक—[सं० पु०] वह रस्सी जो गाड़ी के जुए में लगी रहती है। बाग-डोर, लगाम।

दामग्रन्थि—[सं० पु०] मत्स्यराज विराट् का सेनापति।

दामचन्द्र—[सं० पु०] द्रुपद राजा के एक पुत्र का नाम।

दामजातश्री—[सं० पु०] सुराष्ट्र के शकवंश का एक राजा।

दामन—[सं० क्ली० स्त्री०] वह डोरी जो गाय के दुहते समय उसके पैर में बाँधी जाती है। माला, हार। रस्सी। वह रस्सी जिससे अनेक पशु बाँधे जायँ। दमकन वृक्ष।

दामनी—[सं० स्त्री०] रस्सी, डोरी।

दामर—[हि० स्त्री०] दरार भरने के लिए नावों में लगाई जाने की राल। वह भेंड़ जिसके कान छोटे होते हैं।

दामरी—[हि० स्त्री०] रस्सी, डोरी।

दामांजन—[सं० क्ली०] वह रस्सी जिससे घोड़ा आदि के पैर बाँधे जाते हैं।

दामासाह—[हि० पु०] वह दिवालिया महाजन जिसकी सम्पत्ति उसके लहने-दारों के बीच हिस्से के मुताबिक बँट जाय।

दामिनी—[सं० स्त्री०] विद्युत, बिजली। स्त्रियों का एक शिरोभूषण, दांवनी।

दामी—[हि० स्त्री०] मालगुजारी, कर।

दामोद—[सं० पु०] अथर्ववेद की एक शाखा।

दामोदर—[सं० पु०] यशोदानन्दन कृष्ण।

दाम्पत्य—[सं० क्ली०] दम्पती से सम्बन्ध रखने वाले अग्नि होत्रादि कर्म। स्त्री-पुरुष के बीच का प्रेम का व्यव-हार। स्त्री-पुरुष-सम्बन्धी।

दाम्भिक—[सं० त्रि०] वंचक, पाखण्डी। घमंडी। [पु०] वक, बगला।

दाय—[सं० पु०] दान आदि में दिया जाने वाला धन। वारिसों में बाँटा जाने वाला धन। लय, वह जो लेने लायक हो। खंडन। विभाग। देने योग्य धन। दान। दाता।

दायक—[सं० त्रि०] देने वाला।

दायजा—[हि० पु०] यौतुक, दहेज।

दायागत—[सं० त्रि०] मौरूसी हिस्से में पड़ा हुआ। [पु०] पन्द्रह प्रकार के दासों में से एक।

दायाद—[सं० पु०] हिस्सेदार। पुत्र। सपिण्ड कुटुम्बी। [त्रि०] धना-धिकारी। कन्या।

दायादवत्—[सं० त्रि०] पुत्र, लड़का।

दायादी—[सं० स्त्री०] कन्या, लड़की।

दायित—[सं० त्रि०] दिया हुआ।

दायित्व—[सं० पु०] देनदार होने का भाव। जिम्मेदारी, जवाबदेही।

दायिनी—[सं० स्त्री०] देनेवाली।

दार—[सं० पु०] भार्या, स्त्री, पत्नी।

औषध-भेद, एक प्रकार की दवा। विदारण, फाड़ने का काम।

दारक—[सं० त्रि०] पुत्र, बेटा। बालक, लड़का। कन्या। ग्राम्यशूकर, घरेलू सूअर। [त्रि०] विदारक। फाड़नेवाला।

दारकर्मन्—[सं० क्ली०] विवाह, शादी।

दारकाचार्य—[सं० पु०] शाक्यबुद्ध के शिक्षागुरु।

दारक्रिया—[सं० स्त्री०] दारकर्म। विवाह।

दारग्रहण—[सं० क्ली०] पत्नीग्रहण। विवाह।

दारण—[सं० क्ली०] कतक फल, निर्मली का फल। यह फल जल में देने से जल का मैल दूर हो जाता है। विदारण, चीर-फाड़। चीरने फाड़ने का अस्त्र या औजार। वह दवा जिसके लगाने से फोड़ा आप से आप फूट जाता है।

दारद—[सं० क्ली०] एक प्रकार का विष जो दरद देश में होता है। पारद, पारा। हिंगुल, ईंगुर। समुद्र।

दारपरिग्रह—[सं० पु०] दारकर्म, विवाह।

दारपरिग्रही—[सं० त्रि०] जिसने पाणिग्रहण किया हो।

दारबलिभुज—[सं० पु०] बक पक्षी, बगला।

दारव—[सं० त्रि०] लकड़ी का बना हुआ। काष्ठ-सम्बन्धी।

दारा—[हि० स्त्री०] भार्या, पत्नी, स्त्री। हिन्दुस्तान में समुद्र के किनारे मिलने-वाली एक प्रकार की मछली।

दाराधिगमन—[सं० क्ली०] विवाह, शादी।

दाराधीन—[सं० त्रि०] स्त्रैण, जो स्त्री के वशीभूत हो।

दारि—[सं० त्रि०] दारक, फाड़नेवाला।

दारिका—[सं० स्त्री०] कन्या, बेटी। बालिका।

दारिकादान—[सं० क्ली०] कन्यादान।

दारित—[सं० त्रि०] चीरा या फाड़ा हुआ।

दारिद्र—[सं० क्ली०] दरिद्रता, निर्धनता, गरीबी।

दारी—[सं० स्त्री०] क्षुद्र रोग विशेष। बिवाई, खरुवा।

दारी—[हि० स्त्री०] दासी, लड़ाई में जीतकर लाई हुई लौंडी।

दारीजार—[हि० पु०] लौंडी का स्वामी। दासी पुत्र, गुलाम।

दारु—[सं० पु० क्ली०] काष्ठ, काठ, लकड़ी। पित्तल, पीतल। देवदारु। शिल्पी, बढ़ई, कारीगर। दारक, वह जो चीर फाड़ करता हो। [त्रि०] दानशील, देनेवाला। खंडनशील, टूटने फटनेवाला।

दारुक—[सं० क्ली०] देवदारु। [पु०] श्रीकृष्ण के एक सारथी का नाम। एक योगाचार्य जो शिव के अवतार कहे जाते हैं। काठ का पुतला।

दारुकदली—[सं० स्त्री०] बनकदली, जंगली केला। काष्ठकदली, कठकेला।

दारुका—[सं० स्त्री०] कठपुतली।

दारुकावन—[सं० क्ली०] एक वन का नाम जो पवित्र तीर्थ माना जाता है।

दारुकि—[सं० पु०] दारुक का अपत्य।

दारुकेश्वर—[सं०पु०] शिवलिंग-भेद।

दारुगन्धा—[सं० स्त्री०] चीड़ा नामक गन्धद्रव्य, बिरोजा।

दारुगर्भा—[सं० स्त्री०] कठपुतली।

दारुचीनी—[सं० स्त्री०] एक प्रकार का तज।

दारुज—[सं० पु०] एक प्रकार का बाजा। [त्रि०] लकड़ी का बना हुआ। काष्ठ से उत्पन्न, लकड़ी में पैदा होनेवाला।

दारुण—[सं० पु०] चित्रक वृक्ष, चीते का पेड़। भयानक रस। रौद्र नामक नक्षत्र। विष्णु। शिव। एक नरक का नाम। राक्षस। [त्रि०] विदारक, फाड़ने वाला। भीषण, घोर। दुःसह, प्रचण्ड, कठिन।

दारुणक—[सं० क्ली०] शिर में होनेवाला एक क्षुद्र रोग जिसमें चमड़ा रुखा होकर सफेद भूसी की तरह छूटता है।

दारुणता—[सं० स्त्री०] दारुण का भाव, कठोरता।

दारुणा—[सं० स्त्री०] तिथि-भेद, अक्षय तृतीया। नर्मदा खण्ड की अधिष्ठात्री देवी।

दारुणात्मन—[सं० त्रि०] दुरात्मा, दुष्ट, खोटा।

दारुणारि—[सं० पु०] विष्णु।

दारुण्य—[सं० क्ली०] क्रूरता, कठोरता। उग्रता, भीषणता।

दारुनटी—[सं० स्त्री०] कठपुतली।

दारुनारी—[सं० स्त्री०] कठपुतली।

दारुनिशा—[सं० स्त्री०] दारुहरिद्रा, दारुहल्दी।

दारुपत्री—[सं० स्त्री०] हिङ्गुपत्री।

दारुपात्र—[सं० क्ली०] काठ का बरतन।

दारुफल [सं० पु०] पिस्ता।

दारुब्रह्म—जगन्नाथ।

दारुमय—[सं० त्रि०] काठ का बना हुआ।

दारुमुखाह्वया—[सं० स्त्री०] गोधा, गोह नामक जन्तु।

दारुमुच—[सं० पु०] एक स्थावर विष का नाम।

दारुमूषा—[सं० स्त्री०] एक स्थावर विष का नाम।

दारुयंत्र—[सं० क्ली०] काठ का बना

हुआ एक औजार।
दारुयोषिता—[सं० स्त्री०] कठपुतली।
दारुवध—[सं० स्त्री०] कठपुतली। काष्ठमयी स्त्री-प्रतिमा।
दारुवह—[सं० त्रि०] दारुवाहक, लकड़ी ढोने वाला।
दारुसार—[सं० पु०] चन्दन।
दारुसिता—[सं० स्त्री०] दारचीनी।
दारुहस्तक—[सं० पु०] काठ का बना हुआ हाथ।
दार्त्तेय—[सं० त्रि०] चमड़े का। जो चमड़े में रहता हो।
दार्दुर—[सं० पु०] दक्षिणावर्त्त शंख का एक भेद। [क्ली०] लाक्षा, लाह, लाख। जल, पानी।
दार्दुरिक—[सं० त्रि०] कुम्हार।
दार्भ—[सं० त्रि०] कुश-सम्बन्धी।
दार्भायण—[सं० पु० स्त्री०] दर्भ ऋषि का गोत्रापत्य।
दार्भ्य—[सं० त्रि०] कुश का।
दार्व—[सं० पु०] देश-भेद, एक देश जो कूर्म विभाग के ईशान कोण में आधुनिक काश्मीर के अन्तर्गत पड़ता था। [स्त्री०] उसी देश की एक नदी।
दार्वक—[सं० त्रि०] दार्व देश का।
दार्वट—[सं० क्ली०] चिन्तागृह, वह कोठरी जहाँ एकान्त में बैठकर किसी बात का विचार किया जाय।
दार्वण्ड—[सं० पु०] मयूर, मोर। इसका अंडा काठ की तरह कठोर होता है।
दार्वाघाट—[सं० पु०] शतपत्रक पक्षी, कठफोड़वा नाम की चिड़िया।
दार्वाघात—[सं० पु०] दार्वाघाट पक्षी। [त्रि०] काठ पर आघात करने वाला।
दार्वादि—[सं० पु०] एक प्रकार की दवा।
दार्विका—[सं० स्त्री०] दार्वी, दारुहल्दी। दारुहल्दी से निकाला हुआ तूतिया। रसायन। बनगोभी, गोभिया।
दार्विपत्रिका—[सं० स्त्री०] बनगोभी।
दार्वी—[सं० स्त्री०] दारु हल्दी। वनगोभी। देवदारु। हलदी।
दार्श—[सं० त्रि०] जो देखने से उत्पन्न हो।
दार्शनिक—[सं० त्रि०] दर्शन शास्त्र जानने वाला। दर्शन-शास्त्रसम्बन्धी।
दार्षद—[सं० त्रि०] पत्थर का बना हुआ।
दार्षद्वत—[सं० क्ली०] एक यज्ञ जो दृषद्वती नदी के किनारे किया जाता था।
दार्ष्टान्त—[सं० त्रि०] जिसमें उदाहरण देकर समझाया गया हो।
दाल—[सं० क्ली०] पेड़ की खोतर में मिलने वाला शहद। [पु०] कोदो नाम का अन्न। दलन, चूर चूर करने का काम।
दाल—[हि० स्त्री०] दली हुई अरहर, मूँग आदि जो सालन की तरह खाई जाती है। दाल के आकार की कोई वस्तु। हल्दी मसाले के साथ पानी में उबाला हुआ दला अन्न। किरणों का समूह जो सूर्यमुखी शीशे से होकर आता है। चेचक, फोड़े, फुन्सी आदि के ऊपर का चमड़ा जो सूख कर फूट जाता है, पपड़ी। अंडे की जरदी। [पु०] हिमालय पर, सिमला तथा पंजाब में मिलने वाला एक प्रकार का पेड़। यह तुन जाति का होता है।
दालन—[सं० पु०] दांत का एक रोग।
दालभ्य—[सं० पु०] एक ऋषि का नाम।
दालव—[सं० पु०] स्थावर विष।
दाला—[सं० स्त्री०] महाकाल नाम की लता।
दालि—[सं० स्त्री०] दाल। दाडिम्ब, अनार। देवदाली लता।
दालिका—[सं० स्त्री०] महाकाल लता।
दालिम—[सं० पु०] दाड़िम, अनार।
दाल्मि—[सं० पु०] इन्द्र।
दाँवना—[हि० क्रि०] दाना झाड़ने के लिए माँड़ना।
दाँवनी—[हि० स्त्री०] एक प्रकार का गहना जिसे स्त्रियाँ अपने माथे पर पहनती हैं।
दाँवरी—[हि० स्त्री०] रज्जु, रस्सी।
दाव—[सं० पु०] वन, जंगल। वन की आग। अग्नि, आग। उपताप, जलन।
दाव—[हि० पु०] एक प्रकार का हथियार। एक वृक्ष का नाम।
दावन्—[सं० पु०] वह जो देने योग्य हो। दान।
दावन—[हि० पु०] दमन, नाश। हँसिया। खुखड़ी।
दावरा—[हि० पु०] धावरा नाम का पेड़।
दावसु—[सं० पु०] अंगिरा मुनि के एक पुत्र का नाम।
दावा—[हि० स्त्री०] वन के बाँस तथा पेड़ों की डालियों की रगड़ से उत्पन्न आग।
दावाग्नि—[सं० पु०] वन में लगने वाली आग।
दाविक—[सं० त्रि०] जो देवका नदी में होता है।
दाविनी—[सं० स्त्री०] बिजली। एक गहना जिसे स्त्रियाँ माथे पर पहनती हैं।
दावी—[हि० पु०] धव का पेड़।

दाश—[सं० पु०] धीवर, केवट, मछुवाहा। भृत्य, नौकर।

दाशक—[सं० पु०] दाश, धीवर।

दाशग्राम—[सं० पु०] वह ग्राम जिसमें धीवरों की ही चलती बनती है।

दाशनन्दिनी—[सं० स्त्री०] धीवर कन्या, व्यास की माता, सत्यवती।

दाशपुर—[सं० पु० क्ली०] एक प्रकार का मोथा। धीवरों की बस्ती।

दाशफली—[सं० स्त्री०] एक प्रकार की दवा।

दाशरथ—[सं० पु०] श्रीरामचन्द्र।

दाशरात्रिक—[सं० पु०] एक प्रकार का यज्ञ जो दश दिनों में समाप्त होता है। [त्रि०] दश रात्रिसम्बन्धी।

दाशार्ह—[सं० पु०] यदुवंशीय कृष्णादि। आयुधजीविसंघ-भेद। यदुवंशीय राजा।

दाशु—[सं० त्रि०] दाता, देनेवाला। दत्त, जो दिया गया हो।

दाशुरि—[सं० त्रि०] हिंसक, मारने वाला।

दाशेय—[सं० पु० स्त्री०] धीवर का अपत्य। व्यास की माता सत्यवती।

दाशेर—[सं० पु० स्त्री०] धीवर की सन्तति।

दाशेरक—[सं० पु०] मारवाड़। मरुभूदेश के राजा। उक्त देश का निवासी।

दाश्व—[सं० त्रि०] दाता, दानी।

दाश्वस—[सं० त्रि०] जो दिया गया हो। जो हिंसा की गई हो।

दास—[सं० पु०] ज्ञातात्मा, आत्मज्ञानी। शूद्र। धीवर, मछुआ। भृत्य, नौकर। वृत्रासुर। दस्यु।

दासता—[सं० स्त्री०] दासत्व, सेवा वृत्ति।

दासत्व—[सं० क्ली०] पराधीनता, गुलामी।

दासपुर—[सं० क्ली०] एक प्रकार का मोथा।

दासमेय—[सं० पु०] पुराण के अनुसार एक प्राचीन जनपद।

दासराज—एक अनार्य राजा। इनकी पालित कन्या से महाराज शान्तनु का विवाह हुआ था।

दासवेश—[सं० पु०] दस्युनाश, डकैतों का सत्यानाश।

दासा—[हि० पु०] वह बाँध या पुश्ता जो दीवार से सटाकर उठाया जाता है। वह चबूतरा जो आँगन के दीवार से सटाकर उठाया जाता है। वह पत्थर जो दीवार की कुरसी के ऊपर बैठाया जाता है। वह लकड़ी या पत्थर जो दरवाजे के ऊपर दीवार के आरपार रहता है। हंसिया।

दासिका—[सं० स्त्री०] दासी, लौंडी।

दासी—[सं० स्त्री०] दास की पत्नी, नीच जाति की स्त्री। परिचारिका, टहलनी, लौंडी। धीवर या शूद्र की स्त्री। धीवरी। मल्लाहिन। काला कारोठा नाम का पौधा। नीली कट सरैया। पीली कट सरैया। वेदी।

दासीसभ—[सं० क्ली०]दासी की सभा, दासियों का झुण्ड।

दासेय—[सं० पु०] दास। कैवर्त्त, धीवर। [त्रि०] जो दास से उत्पन्न हुआ हो।

दासेयी—[सं० स्त्री०] सत्यवती, व्यास की माता।

दासेर—[सं० पु०] दास, गुलाम। धीवर। ऊँट। दासी की सन्तति।

दासेरक—[सं० पु०] ऊँट। दासीपुत्र। एक जाति का नाम।

दास्र—[सं० क्ली०] अश्विनी नक्षत्र।

दाह—[सं० पु०] दहन, भस्मीकरण। शव जलाने की क्रिया। जलन, ताप। शोक, सन्ताप, डाह।

दाहक—[सं० त्रि०] दाहकर्त्ता, जलाने वाला [पु०] चित्रक वृक्ष, चीता।

दाहकाष्ठ—[सं० क्ली०] दाहागुरु, अगर जिसे सुगन्ध के लिए जलाते हैं।

दाहक्रिया—[सं० स्त्री०] मुर्दा जलाने का काम।

दाहघ्न—[सं० क्ली०] देहदाहनाशक औषधादि।

दाहदा—[सं० स्त्री०] नागवल्ली लता।

दाहन—[सं० स्त्री०] भस्म कराने की क्रिया। जलाने का काम।

दाहना—[हि० क्रि०] भस्म करना, जलाना, फूँकना। सताना, दुःख पहुँचाना।

दाहनागुरु—[सं० क्ली०] दाहगुरु नामक गन्धद्रव्य विशेष, अगर।

दाहनिश्वास—[सं० पु०] सुगन्ध अर्जक वृक्ष।

दाहसर—[सं० पु०] श्मशान, मुर्दा जलाने का स्थान।

दाहहरण—[सं० क्ली०] वीरणमूल, खस।

दाहिन—[सं० त्रि०] दाहक, जलाने वाला।

दाहिकाशक्ति—[सं० त्रि०] दहन करने की शक्ति।

दाह्य—[सं० त्रि०] दहनीय, जलाने योग्य।

दिअली—[हि० स्त्री०] एक प्रकार का बहुत छोटा दीया जो मट्टी का बना होता है। मूल के नीचे की हरे रंग की कटोरी जो कई भागों में बँटी होती है।

दिक्—[सं० स्त्री०] दिशा, ओर, तरफ।

दिक्खन—[हि० पु०] एक प्रकार की ईख। इसका गुड़ बहुत अच्छा बनता है।

दिकोड़ी—[हि० स्त्री०] बरें, हड्डा।

दिक्क—[सं० पु०] करभ, बीस बर्ष का हाथी का बच्चा।

दिकन्या—[सं० स्त्री०] दिशा रूपी कन्या।

दिकर—[सं० पु०] युवा, जवान मनुष्य। महादेव, शिव।

दिकरिका—[सं० स्त्री०] नदी विशेष। युवती, जवान औरत।

दिकरिन्—[सं० पु०] ऐरावत आदि आठ हाथी, दिग्गज।

दिकरी—[सं० स्त्री०] युवती स्त्री।

दिकुमार—[सं० पु०] जैनियों के मतानुसार भवनपति नामक देवताओं में से एक।

दिक्चक्र—[सं० क्ली०] चक्रवाल। आठों दिशाओं का समूह।

दिक्पाल—[सं० पु०] पुराणानुसार दशों दिशाओं का पालन करने वाले देवता। चौबीस मात्राओं का एक छन्द।

दिक्शूल—[सं० क्ली०] कुछ विशिष्ट दिनों में कुछ विशिष्ट दिशाओं में काल का वास। दिक्शूल के दिन नहीं जाना चाहिए।

दिक्साधन—[सं० क्ली०] वह उपाय जिससे दिशाओं का ज्ञान हो।

दिक्सुन्दरी—[सं० स्त्री०] दिक्कन्या।

दिगंश—[सं० पु०] क्षितिज वृत्त का ३६०वाँ अंश।

दिगन्त—[सं० पु०] दिशाओं का छोर। क्षितिज, आकाश का छोर। चारों दिशाएँ। दशों दिशाएँ।

दिगन्त—[हि० पु०] आँख का कोना।

दिगम्बर—[सं० पु०] शिव, महादेव। क्षपणक, नंगा रहने वाला जैन यति। एक प्रसिद्ध वैयाकरण। दिशाओं का वस्त्र, तम, अँधेरा। [स्त्री०] जिसका वस्त्र केवल दिशाएँ हों, उलंग, नंगा।

दिगम्बरता—[सं० स्त्री०] नग्नता, नंगापन।

दिगम्बरी—[सं० स्त्री०] दुर्गा, पार्वती। [त्रि०] नग्ना, नंगी।

दिगिभ—[सं० पु०] दिग्गज।

दिगीश्वर—[सं० पु०] इन्द्रादि दिक्पाल। सूर्य, चन्द्रमा आदि ग्रह।

दिग्गज—[सं० पु०] आठों दिशाओं में अवस्थित ऐरावत आदि आठ हाथी। ये पृथ्वी को दबाए रखने और उन दिशाओं की रक्षा के लिए स्थापित हैं। [त्रि०] बहुत बड़ा, अतुल भारी।

दिग्गयन्द—[सं० पु०] दिग्गज।

दिग्जय—[सं० पु०] जिगीष, राजा से दिक् स्थित राजाओं को जीतना। विद्या द्वारा नाना स्थान के मनुष्यों को जीतना।

दिग्ज्ञान—[सं० क्ली०] जिससे सभी दिशाओं का ज्ञान हो।

दिग्ज्या—[सं० स्त्री०] दिगंश, दिशा का छोर।

दिग्दाह—[सं० पु०] उत्पात-विशेष, एक दैवी घटना। इसमें सूर्यास्त होने पर भी दिशाएँ लाल जलती हुई सी मालूम पड़ती हैं।

दिग्देवता—[सं० स्त्री०] सभी दिशाओं के साक्षीभूत देवता।

दिग्ध—[सं० पु०] विषाक्त बाण, जहर मिला हुआ बाण। स्नेह, प्रेम। अग्नि। प्रबन्ध, निबन्ध। तैल, तेल। [त्रि०] विषाक्त, जहर में बुझा हुआ। लिप्त।

दिग्घ—[हि० वि०] दीर्घ, लम्बा, बड़ा।

दिग्पट—[हि० पु०] दिशारूपी वस्त्र। वह जो दिशारूपी वस्त्र धारण करता हो, दिगम्बर, नंगा।

दिग्बल—[सं० क्ली०] लग्नादि में स्थित ग्रहों का बल।

दिग्बलिन—[सं० पु०] वह ग्रह जो किसी दिशा के लिए बली हो। वह राशि जिस पर किसी ग्रह का बल हो।

दिग्भ्रम—[सं० पु०] दिशाओं का भ्रम होना, दिशा भूल जाना।

दिग्मण्डल—[सं० पु०] सम्पूर्ण दिशाएँ। दिशाओं का समूह।

दिग्वस्त्र—[सं० पु०] महादेव। जैनभेद, क्षपणक। [त्रि०] नग्न, नंगा।

दिग्वान्—[सं० पु०] चौकीदार, पहरेदार।

दिग्वारण—[सं० पु०] ऐरावत आदि दिग्गज।

दिग्वास—[सं० पु०] महादेव, शिव। जैनभेद, नंगा रहने वाला, जैन यति। [त्रि०] उलङ्ग, नंगा।

दिग्विजय—[सं० पु०] अपनी वीरता दिखलाने और महत्व स्थापित करने के लिए राजाओं का देश देशान्तरों में अपनी सेना के साथ जाकर युद्ध करना और विजय प्राप्त करना। विद्या द्वारा चतुर्दिक जयकरण।

दिग्विदिक्—[सं० स्त्री०] सब दिशाएँ।

दिग्विभाग—[सं० पु०] दिशा, ओर, तरफ।

दिग्विलोकन—[सं० क्ली०] शून्यदृष्टि।

दिग्व्यापी—[सं० त्रि०] जो सब दिशाओं में व्याप्त हो।

दिग्व्रत—[सं० पु०] जैनियों का एक व्रत। इसमें वे कुछ समय के लिए प्रतिज्ञा करते हैं कि अमुक दिशा में इतनी दूर से अधिक न जायेंगे।

दिग्शिखा—[सं० पु०] पूर्व दिशा।

दिग्सिन्धुर—[सं० पु०] दिग्गज ।

दिघोंच—[हि० पु०] एक प्रकार का पक्षी । इसकी छाती सफेद, डैने काले और सुनहले होते हैं ।

दिक्कु—[सं० पु०] जूँ नाम का एक छोटा कीड़ा जो सिर के बालों में पड़ता है ।

दिङ्नाग—[सं० पु०] दिग्गज । एक विख्यात बौद्ध ग्रन्थकार ।

दिङ्नारि—[सं० स्त्री०] वेश्या, रंडी । कुलटा, व्यभिचारिणी ।

दिङ्मातङ्ग—[सं० पु०] दिग्गज ।

दिङ्मात्र—[सं० क्ली०] उदाहरण-मात्र, केवल नमूना ।

दिङ्मूढ़—[सं० त्रि०] जिसे दिग्भ्रम हुआ हो । मूर्ख, बेवकूफ ।

दिङ्मोह—[सं० पु०] दिशा भूल जाना ।

दिण्डि—[सं० पु०] वाद्यभेद । एक तरह का बाजा ।

दिण्डिर—[सं० पु०] प्राचीन काल का एक बाजा ।

दिण्डी—[सं० पु०] उन्नीस मात्राओं का एक छन्द ।

दिण्डीर—[सं० पु०] समुद्रफेन ।

दित—[सं० त्रि०] छिन्न, चीरा हुआ ।

दिति—[सं० स्त्री०] दैत्यमाता, कश्यप ऋषि की एक स्त्री । खंडन, तोड़ने-फोड़ने का काम । [पु०] राज विशेष, एक राजा का नाम । [त्रि०] दाता, देनेवाला ।

दितिकुल—[सं० स्त्री०] दैत्यवंश ।

दितिज—[सं० पु०] दैत्य, दिति के पुत्र ।

दितितनय—[सं० पु०] दैत्य, असुर ।

दितिसुत—[सं० पु०] दैत्य, राक्षस ।

दित्य—[सं० पु०] असुर, राक्षस । [त्रि०] जो छेदने या काटने योग्य हो ।

दित्यवाह—[सं० पु०] दो वर्ष का पशु ।

दित्सा—[सं० स्त्री०] दान करने की इच्छा ।

दित्सु—[सं० त्रि०] जो दान करना चाहता हो ।

दिदम्भिषु—[सं० त्रि०] ठगने की इच्छा ।

दिदित्सु—[सं० त्रि०] छोड़ देने की इच्छा ।

दिदृक्षा—[सं० स्त्री०] दर्शनेच्छा, देखने का अभिलाष ।

दिदृक्षु—[सं० त्रि०] दर्शन करने का इच्छुक, जो देखना चाहता हो ।

दिद्यु—[सं० पु०] वज्र । वाण ।

दिद्युत—[सं० पु०] दीप्तिशील, जिसमें खूब चमक दमक हो ।

दिधक्षमाण—[सं० त्रि०] जिसने दाह करने की इच्छा की हो ।

दिधक्षा—[सं० स्त्री०] दग्ध करने की इच्छा ।

दिधक्षु—[सं० पु०] दग्ध करने की इच्छा ।

दिधि—[सं० पु०] धैर्य । धारण ।

दिधिषु—[सं० पु०] पहले एक बार ब्याही हुई स्त्री का दूसरा पति । गर्भाधान करनेवाला मनुष्य ।

दिधिषू—[सं० स्त्री०] वह स्त्री जिसके दो ब्याह हुए हों । वह स्त्री या कन्या जिसका विवाह उसकी बड़ी बहन के विवाह के पहले हुआ हो । [त्रि०] धारक, धारण करनेवाला ।

दिन—[सं० क्ली०] सूर्य के उदय से लेकर अस्त तक का समय ।

दिनकर—[सं० पु०] अर्कवृक्ष, आक ।

दिनकरकन्या—[सं० स्त्री०] यमुना ।

दिनकरतनय—[सं० पु०] शनि । यम । कर्ण । सुग्रीव । तपती ।

दिनकरात्मजा—[सं० स्त्री०] सूर्य-कन्या, यमुना, तपती ।

दिनकर्तृ—[सं० पु०] सूर्य । आक का पेड़ ।

दिनकेशर—[सं० पु०] अन्धकार, अँधेरी ।

दिनक्षय—[सं० पु०] तिथिक्षय ।

दिनचर्या—[सं० स्त्री०] दिवस का कर्तव्य कर्म ।

दिनचारी—[हि० पु०] दिन को चलने-वाला, सूर्य ।

दिनज्योति—[सं० क्ली०] आतप, धूप ।

दिनदीप—[सं० पु०] सूर्य ।

दिनदुःखित—[सं० पु० स्त्री०] चकवा पक्षी ।

दिननाथ—[सं० पु०] सूर्य ।

दिननायक—[सं० पु०] दिन के स्वामी, सूर्य ।

दिनप—[सं० पु०] सूर्य । आक । दिन वा वार के पति ।

दिनपात—[सं० पु०] दिनक्षय ।

दिनपाल—[सं० पु०] सूर्य ।

दिनप्रणी—[सं० पु०] सूर्य । अर्क वृक्ष । आक ।

दिनबन्धु—[सं० पु०] सूर्य । अर्क वृक्ष आक, मदार ।

दिनमणि—[सं० पु०] सूर्य । अर्क वृक्ष । आक, मंदार ।

दिनमल—[सं० क्ली०] मास, महीना ।

दिनमान—[सं० क्ली०] सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक के समय का मान ।

दिनमाली—[सं० पु०] सूर्य ।

दिनमुख—[सं० क्ली०] प्रभात, सवेरा ।

दिनयौवन—[सं० क्ली०] मध्याह्न, दोपहर ।

दिनरत्न—[सं० क्ली०] सूर्य । अर्कवृक्ष, आक ।

दिनशेष—[सं० पु०] दिनान्त, संध्या, शाम ।

दिनागम—[सं० पु०] प्रभात काल, तड़का ।

दिनाण्ड—[सं० क्ली०] अन्धकार, अँधेरा ।

दिनाती—[हि॰ स्त्री॰] मजदूरों आदि का एक काम। मजदूरों की एक दिन की मजदूरी।

दिनादि—[सं॰ पु॰] प्रभातकाल, सवेरा।

दिनाधीश—[सं॰ पु॰] सूर्य। अर्क वृक्ष, आक।

दिनान्त—[सं॰पु॰] सायंकाल, शाम।

दिनान्तक—[सं॰ पु॰] अन्धकार, अँधियारा।

दिनारम्भ—[सं॰ पु॰] प्रभातकाल, सवेरा।

दिनार्द्ध—[सं॰ पु॰] मध्याह्न, दोपहर।

दिनावसान—[सं॰क्ली॰] संध्या, शाम।

दिनावा—[हि॰ स्त्री॰] हिमालय तथा आसाम की नदियों में मिलने वाली एक प्रकार की मछली जो प्रायः हाथ भर लम्बी होती है।

दिनास्त—[सं॰ पु॰] सूर्यास्त, संध्या।

दिनास्त्र—[सं॰ क्ली॰] यंत्रभेद, एक प्रकार का यंत्र।

दिनिका—[सं॰ स्त्री॰] एक दिन का वेतन या मजदूरी।

दिनी—[हि॰ वि॰] प्राचीन, पुराना।

दिनेर—[हि॰ पु॰] दिनकर, सूर्य।

दिनेश—[सं॰ पु॰] सूर्य। अर्क वृक्ष, आक, मँदार। दिन के अधिपति ग्रह।

दिनेशपुष्प—[सं॰ क्ली॰] कैरव पुष्प, कुमुद, बघोला।

दिनेशात्मज—[सं॰पु॰] शनि। यम। कर्ण। सुग्रीव।[स्त्री॰]तापती। यमुना।

दिनौंधी—[हि॰ स्त्री॰] आँख का एक प्रकार का रोग। इसमें दिन के समय सूर्य की प्रखर किरणों के कारण बहुत कम दिखाई देता है।

दिप्सु—[सं॰ त्रि॰] जो हानि वा कष्ट पहुँचाना चाहता है।

दिब—[हि॰ पु॰] निर्दोषिता या अपने कथन की सत्यता प्रमाणित करने की परीक्षा। जैसे, अग्नि-परीक्षा।

दियरा—[हि॰ पु॰] एक प्रकार का पकवान।

दिर—[हि॰पु॰] सितार का एक बोल।

दिरिपक—[सं॰ पु॰] कन्दुक, गेंद।

दिरेस—[हि॰ पु॰] एक प्रकार की छींट जो महीन कपड़े पर छपी होती है। दरेस। ठीक करने की क्रिया। [वि॰] दुरुस्त, लैस। ठीक किया हुआ।

दिलचोर—[हि॰ वि॰] जो अच्छी तरह काम न करता हो, कामचोर।

दिलमल—[हि॰ पु॰] एक प्रकार का पेड़।

दिलीप—[सं॰ पु॰] सूर्यवंशीय नृप-विशेष।

दिलीर—[सं॰ क्ली॰] गोबर छत्ता, भुईंफोड़।

दिल्लीवाल—[हि॰ वि॰] दिल्ली सम्बन्धी, दिल्ली का। [पु॰] एक प्रकार का देशी जूता जो दिल्ली में तैयार होता है।

दिव—[सं॰ स्त्री॰] स्वर्ग, सोना। आकाश। दिन।

दिवक्ष—[सं॰ त्रि॰] स्वर्गीय। [पु॰] इन्द्र।

दिवंगम—[सं॰ त्रि॰] आकाश-गामी। स्वर्गगामी।

दिवराज—[सं॰पु॰] स्वर्ग के राजा, इंद्र।

दिवस—[सं॰ पु॰ क्ली॰] दिन, वासर, रोज।

दिवसमुख—[सं॰ क्ली॰] प्रभात, सवेरा।

दिवसमुद्रा—[सं॰ स्त्री॰] एक दिन का वेतन, एक दिन की मजदूरी।

दिवसविगम—[सं॰ पु॰] दिवावसान, संध्याकाल, शाम।

दिवसान्तर—[सं॰ त्रि॰] अन्य दिन, दूसरा दिन।

दिवसपुत्र—[सं॰ पु॰] द्युलोक प्रिय। द्युलोक पालक, सूर्य।

दिवा—[सं॰ पु॰] दिन, दिवस। २२ अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

दिवाकर—[सं॰ पु॰] सूर्य। अर्क वृक्ष, आक। काक, कौवा। पुष्प-विशेष, एक तरह का फूल।

दिवाकीर्ति—[सं॰ पु॰] नापित, नाई। चाण्डाल। उलूक, उल्लू।

दिवाचर—[सं॰ पु॰] पक्षी, चिड़िया। चाण्डाल।

दिवातर—[सं॰ क्ली॰] बहुत उजला दिन।

दिवानिशम्—[सं॰ अव्य॰] दिन-रात।

दिवानी—[हि॰ स्त्री॰] बरमे में होने वाला एक प्रकार का पेड़।

दिवान्ध—[सं॰ पु॰-स्त्री॰] पेचक, उल्लू। वह जिसे दिन में न सूझता हो। [स्त्री॰] बल्गुला पक्षी। [त्रि॰] जिसे दिन में न सूझे।

दिवान्धकी—[सं॰ स्त्री॰] छुछुन्दर।

दिवापृष्ठ—[सं॰ पु॰] सूर्य, दिनकर।

दिवाप्रदीप—[सं॰ पु॰] कुत्सित मनुष्य, खराब आदमी।

दिवाभिसारिका—[सं॰ स्त्री॰] वह नायिका जो दिन में अपने प्रेमी से मिलने के लिए शृंगार करके किसी निर्दिष्ट स्थान में जाय।

दिवाभीत—[सं॰ पु॰ स्त्री॰] पेचक, उल्लू। [पु॰] सफेद कमल। चोर।

दिवावसान—[सं॰ क्ली॰] दिन का शेष भाग, सन्ध्या, शाम।

दिवाल—[हि॰ वि॰] देने वाला।

दिवाला—[हि॰ पु॰] पूँजी या आय न रह जाने के कारण ऋण परि-शोध में असमर्थता, कर्ज न चुका सकना।

टाट उलटना।

दिवाली—[हिं० स्त्री०] दीपावली। [पु०] खराद या सान में लपेटने का एक तस्मा, जो उसे खींचने के काम में आता है, दयाली।

दिवावसु—[सं० पु०] सूर्य। अर्क वृक्ष, आक, मदार। द्युलोकवासी इन्द्र।

दिवाशय—[सं० पु०]वह जो दिन में सोता हो। अन्धेरा दिन।

दिवास्वप्न—[सं० पु०] दिवानिद्रा, दिन को सोना।

दिवास्वाप—[सं० पु०] दिवा निद्रा, दिन में सोना।

दिवास्वापा—[सं० स्त्री०] वल्गुला पक्षी, बगला।

दिवि—[सं० पु०] चाष पक्षी, नीलकंठ।

दिविक्षय—[सं० त्रि०] स्वर्गवासी।

दिविक्षित—[सं० त्रि०] स्वर्ग में रहने वाला।

दिविचर—[सं० त्रि०] आकाश में घूमने वाला।

दिविज—[सं० पु०] वह जो स्वर्ग में उत्पन्न हुआ हो। केशरयुक्त, अगर-चन्दन।

दिविजात—[सं० त्रि०] जो स्वर्ग में पैदा हुआ हो।

दिविता—[सं० स्त्री०] दीप्ति।

दिविदिवि—[हिं० पु०] एक प्रकार का छोटा पेड़।

दिविरथ—[सं० पु०] पुरुवंशी राजा भूमन्यु के एक पुत्र का नाम। अंग-देश के अधिपति दधिवाहन के एक पुत्र का नाम।

दिविषद्—[सं० पु०] देवता। स्वर्गवासी।

दिविष्टि—[सं० क्ली०] यज्ञ।

दिवी—[सं० स्त्री०] एक प्रकार का कीड़ा।

दिवेश—[सं० पु०] दिग्पाल।

दिवोकस्—[सं० पु०] देवता। चातक पक्षी, चकवा। [त्रि०] आकाशवासी।

दिवोजा—[सं० त्रि०] जो स्वर्गलोक में उत्पन्न हुआ हो।

दिवोदास—[सं० पु०] वध्रश्व के एक पुत्र का नाम। मनुवंशीय रिपुंजय नामक एक राजा। चिकित्सा दर्पणकार।

दिवोदुह—[सं० त्रि०] स्वर्ग से दूध का गिरना।

दिवोद्भव—[सं० त्रि०] जो स्वर्ग में उत्पन्न हुआ हो।[स्त्री०] एला,इलायची।

दिवोरुच—[सं० त्रि०] जो आकाश में चमकता हो।

दिवोल्का—[सं० स्त्री०] वह उल्का या चमकीला पिण्ड जो दिन के समय आकाश से गिरता है।

दिवौकस—[सं० पु०] देवता। चातक पक्षी। [त्रि०] स्वर्ग में रहनेवाला।

दिव्य—[सं० त्रि०] स्वर्ग से सम्बन्ध रखनेवाला। आकाश से सम्बन्ध रखने-वाला। प्रकाशमान, चमकीला। अत्यन्त सुन्दर। [पु०] यम। गुग्गुल। तांत्रिक आचार विशेष। आकाश में होनेवाला एक प्रकार का उत्पात। वह नायक जो स्वर्गीय या अलौकिक हो। लवंग, लौंग। [क्ली०] हरिचन्दन। तत्ववेत्ता [स्त्री०] आँवला। बाँझ ककोड़ा। शतावर। महामेदा। ब्राह्मी। सफेद दूब। हड़। मुरा। गन्धवती। [पु०] बड़ा जीरा। [क्ली०] दैव-दिन। द्युलोकजात। सूअर। कपूर कचरी। जौ। वह स्नान जो धूप में बरसते हुए पानी से किया जाय।

दिव्यक—[सं० पु०] सर्पभेद, एक प्रकार का साँप। एक प्रकार का जंतु।

दिव्यगन्ध—[सं० पु०] गन्धक। मनोहर गन्ध। [क्ली०] लवंग, लौंग।

दिव्यगन्धा—[सं० स्त्री०] बड़ी इलायची। बड़ी चेंच का साग।

दिव्यगाय—[सं० पु०] स्वर्गगायक, गन्धर्व।

दिव्यचक्षु—[सं० त्रि०] ज्ञानचक्षु। स्वर्गीय चक्षु। सुन्दर लोचन, अच्छी आंख। चश्मा। मर्कट, बन्दर। एक प्रकार का गन्धद्रव्य। [त्रि०] अन्धा, जिसे कुछ भी दिखाई न दे।

दिव्यता—[सं० स्त्री०] देव-भाव। उत्तमता, सुन्दरता।

दिव्यदेवी—[सं० स्त्री०] पुराण के अनुसार एक देवी का नाम।

दिव्यधर्मी—[सं० पु०] सुशील, नेक, अच्छा।

दिव्यनगर—[सं० पु०] ऐरावती नगरी।

दिव्यनदी—[सं० स्त्री०] आकाश गंगा।

दिव्यनारी—[सं० स्त्री०] अप्सरा।

दिव्यपुष्प—[सं० पु०] कनेर। [क्ली०] मनोहर पुष्प, सुन्दर फूल।

दिव्यपुष्पा—[सं० स्त्री०] महाद्रोणा, बड़ा गूमा। इसका पेड़ मनुष्य के बराबर ऊँचा और फूल लाल होता है।

दिव्यमान—[सं० क्ली०] दैवमान।

दिव्यरत्न—[सं० क्ली०] चिन्तामणि। इसके विषय में प्रसिद्ध है कि यह सब कामनाएँ पूरी करता है।

दिव्यरथ—[सं० पु०] देवताओं का विमान।

दिव्यरस—[सं० पु०] पारद, पारा। मनोज्ञ रस। [त्रि०] जिसका रस मीठा हो।

दिव्यलता—[सं० स्त्री०] मूरहरी, चुरनहार। मनोज्ञ लतामात्र।

दिव्यवस्त्र—[सं० पु०] सूर्य का प्रकाश। [क्ली०] मनोहर वस्त्र। स्वर्गीय वस्त्र।

दिव्यवास्य—[सं० पु०] आकाशवाणी, देववाणी।

दिव्यश्रोत—[सं० क्ली०] वह कान जिससे

सब कुछ सुना जाय।

दिव्यसरित्-[सं॰ स्त्री॰] आकाशगंगा।

दिव्यांशु—[सं॰ पु॰] सूर्य।

दिव्या—[सं॰ स्त्री॰] धाय। बाँझ, ककोड़ा। शतावर। महामेदा। ब्राह्मी जड़ी। बड़ा जीरा। सफेद दूब। हड़। तीन प्रकार की नायिकाओं में से एक।

दिव्यासन—[सं॰ क्ली॰] तंत्र के अनुसार एक प्रकार का आसन।

दिव्यास्त्र—[सं॰ पु॰] देवताओं का दिया हुआ हथियार। वह हथियार जो मंत्रों से चलाया जाता है।

दिव्योदक—[सं॰ क्ली॰] आकाशजल।

दिव्योलक—[सं॰ पु॰] सर्पभेद, एक साँप का नाम।

दिव्यौघ—[सं॰ पु॰] गुरु-विशेष, एक प्रकार का गुरु।

दिव्यौषधि-[सं॰ स्त्री॰] मनःशिला। मैनसिल।

दिशा—[सं॰ स्त्री॰] नियत स्थान के अतिरिक्त शेष विस्तार। ओर, तरफ। रुद्र की एक स्त्री का नाम।

दिशाचक्षु—[सं॰ पु॰] गरुड़ के एक पुत्र का नाम।

दिशेभ—[सं॰ पु॰] दिग्गज।

दिशोदण्ड—[सं॰ पु॰] अनादर द्वारा दण्ड।

दिष्ट—[सं॰ क्ली॰] भाग्य। [पु॰] काल। वैवस्वत मनु के एक पुत्र का नाम। दारुहल्दी। उपदिष्ट, जिसे उपदेश दिया गया हो। प्रदर्शित, जो दिखलाया गया हो। जो दिया गया हो।

दिष्टान्त—[सं॰ पु॰] मरण, मौत।

दिष्टि—[सं॰ स्त्री॰] हर्ष, खुशी। परिमाण। उपदेश। कथन। उत्सव। भाग्य।

दिष्ट्या—[सं॰ अव्य॰] हर्ष, प्रसन्नता। मङ्गल।

दिष्णु—[सं॰ त्रि॰] दाता, देनेवाला।

दिसाबल—[हि॰ पु॰] वैश्यों की एक जाति।

दिसावर—[हि॰ पु॰] देशान्तर, दूसरा देश।

दिसावरी—[हि॰ वि॰] जो विदेश से आता हो, बाहरी।

दिहाड़ा—[हि॰ पु॰] दुर्गत, बुरी हालत।

दिहाड़ी—[हि॰ स्त्री॰] दिन भर की मजूरी।

दिहुला—[हि॰ पु॰] पूर्व के जिलों में होने वाला एक प्रकार का धान।

दीक—[हि॰ पु॰] काटू या हिजली के पेड़ के छिलके से निकलने वाला एक प्रकार का तेल।

दीक्षक—[सं॰ त्रि॰] उपदेष्टा, दीक्षा देने वाला।

दीक्षणीया—[सं॰ स्त्री॰] इष्टिभेद, एक प्रकार का यज्ञ।

दीक्षा—[सं॰ स्त्री॰] यजन, यज्ञकर्म। पूजन। व्रतसंग्रह। नियम। उपनयन संस्कार।

दीक्षापति—[सं॰ पु॰] दीक्षापालक, सोम।

दीक्षित—[सं॰ त्रि॰] जिसने सोम यज्ञादि का संकल्पपूर्वक अनुष्ठान किया हो। जिसने आचार्य से दीक्षा ली हो।

दीघी—[हि॰ स्त्री॰] पोखरा, तालाब।

दीठ—[हि॰ स्त्री॰] नेत्र की ज्योति, देखने की शक्ति। नजर, निगाह। आँख की ज्योति का प्रसार। देखने के लिए खुली हुई आँख। अच्छी वस्तु पर ऐसी दृष्टि जिसका प्रभाव बुरा पड़े। निरीक्षण, देखभाल, देखरेख। संकल्प, उद्देश्य, विचार। पहचान, परख, तमीज। कृपादृष्टि।

दीठबन्द—[हि॰ पु॰] नजर, जादू।

दीप्ति—[सं॰स्त्री॰] प्रकाश, रोशनी।

दीदिवि—[सं॰ पु॰-क्ली॰] अन्न, अनाज। बृहस्पति। स्वर्ग। खाने की चीज। [त्रि॰] पुनः पुनः, फिर फिर।

दीधिति—[सं॰ स्त्री॰] सूर्य-चन्द्रमा आदि की किरण। उँगली।

दीन—[सं॰ त्रि॰] दुःखित, दरिद्र। कातर। उदास। हीन। क्षुब्ध। संतप्त। नम्र, विनीत। [क्ली॰] नगरपुष्प।

दीनदयालु—[सं॰ त्रि॰] दीनों पर दया करने वाला। [पु॰] ईश्वर का एक नाम।

दीनसाधक—[सं॰ पु॰] महादेव।

दीना—[सं॰ स्त्री॰] मूषिका, मूसा, चूहा। [त्रि॰] दरिद्रा, गरीब।

दीनार—[सं॰ पु॰] सोने का गहना। निष्क की तौल। मोहर। माशा।

दीपकमाला—[सं॰ स्त्री॰] दशाक्षर-युक्त छन्दोभेद।

दीपकर्पूरज—[सं॰पु॰] कर्पूर, कपूर।

दीपकली—[हि॰ स्त्री॰] दीपशिखा, चिराग की लौ।

दीपकवृक्ष—[सं॰ पु॰] एक प्रकार का बड़ा दीवट। झाड़।

दीपकसुत—[सं॰ पु॰] कज्जल, काजल।

दीपकाल—[सं॰ पु॰] दीया बालने का समय, संध्या।

दीपकावृत्ति—[सं॰ पु॰] दीपक अलंकार का एक भेद। पनसाखा।

दीपकिट्ट—[सं॰ क्ली॰] काजल।

दीपकूपी—[सं॰स्त्री॰] दीए की बत्ती।

दीपङ्कर—बुद्ध के अवतारों में से एक अवतार।

दीपदान—[सं॰ पु॰] किसी देवता के सामने दीपक जलाने का काम। मरणासन्न व्यक्ति का एक काम। इसमें

उसके हाथ से आटे के जलते हुए दीये का संकल्प कराया जाता है।

दीपध्वज—[सं०पु०] कज्जल, काजल।

दीपन—[सं० पु०] तगर की जड़। कुंकुम, केसर। मयूर शिखा वृक्ष। एक प्रकार का साग। कसौंदा। प्याज। प्रकाशन, प्रकाशित करने का काम। रसेश्वर दर्शन के अनुसार पारे का सातवाँ संस्कार। भूख को उभारने का काम। उत्तेजन, आवेग उत्पन्न करना।

दीपनी—[सं० स्त्री०] मेथी। अजवायन। पाठा। ककड़ी।

दीपपादप—[सं० पु०] दीपवृक्ष, दीवट।

दीपपुष्प-[सं०पु०] चम्पक वृक्ष। चम्पा।

दीपमाला—[सं० स्त्री०] जलते हुए दीयों की पंक्ति।

दीपवृक्ष—[सं०पु०] दीपाधार, दीवट।

दीपशत्रु—[सं० पु०] पतंग, फतिंगा।

दीपशिखा— [सं० स्त्री०] काजल। चिराग की लौ।

दीपसंज्ञ-[सं०पु०] चित्रक वृक्ष। चीता।

दीपसुत—[सं० पु०] काजल।

दीपान्वित—[सं० त्रि०] दीपयुक्त।

दीपावती—[सं० स्त्री०] रागिणी-विशेष। यह दीपक और सरस्वती के संयोग से उत्पन्न हुई है।

दीपावलि—[सं० स्त्री०] दीयों की पंक्ति। दीवाली।

दीपिका—[सं० स्त्री०] महिन्तापनीय श्रीनिवासकृत ज्योतिर्ग्रन्थ। रागिणी-विशेष। प्रकाश करनेवाली, उजाला फैलानेवाली।

दीपितृ-[सं०त्रि०] प्रकाश करने वाला। प्रकाशित। चमकता हुआ। उत्तेजित।

दीप्त—[सं० त्रि०] जगमगाता हुआ। जलता हुआ। [क्ली०] स्वर्ण, सोना। हींग। नीबू। सिंह। नाक का एक रोग। [त्रि०] उज्वल, सफेद। आलोकमय, प्रकाशमय।

दीप्तकंस—[सं० क्ली०] शुद्ध कांसा।

दीप्तक—[सं० क्ली०] स्वर्ण, सोना।

दीप्तकिरण—[सं० पु०] सूर्य। अर्क वृक्ष, आक, मदार।

दीप्तकीर्त्ति—[सं० त्रि०] जिसका यश बहुत दूर तक फैल गया हो। कार्तिकेय।

दीप्तजिह्वा—[सं० स्त्री०] मादा गीदड़, सियारिन।

दीप्तपिंगल—[सं० पु०] सिंह।

दीप्तपुष्पा—[सं० स्त्री०] लाङ्गली वृक्ष, कलियारी।

दीप्तमूर्ति—[सं० त्रि०] जो मूर्ति बहुत सफेद हो। [पु०] विष्णु।

दीप्तरस—[सं० पु०] केंचुआ। रात के समय अँधेरे में केंचुए के शरीर के रस से एक प्रकार की चमक सी निकलती है, इसी से इसका नाम दीप्त-रस पड़ा।

दीप्तरोम—[सं० पु०] एक विश्वेदेव का नाम।

दीप्तलोचन—[सं० पु०] बिड़ाल, बिल्ली।

दीप्तलोह—[सं० क्ली०] काँसा। तपाया हुआ लाल लोहा।

दीप्तवर्ण—[सं० त्रि०] जिसका वर्ण सोने सा चमकता हो। [पु०] कार्त्ति-केय।

दीप्तशक्ति—[सं० त्रि०] जिसका प्रभाव बहुत फैल गया है। [पु०] कार्त्तिकेय।

दीप्तांशु—[सं० पु०] सूर्य। आक, मदार।

दीप्ता—[सं० स्त्री०] लाङ्गलिका वृक्ष, कलियारी। ज्योतिष्मती लता, माल-कँगनी। सातला नामक थूहर। [वि०] चमकती हुई। सूर्य से प्रकाशित।

दीप्ताक्ष—[सं० पु०] बिड़ाल, बिल्ली। [त्रि०] जिसकी आँखें चमकती हों।

दीप्ताग्नि—[सं० पु०] अगस्त्य मुनि। इन्होंने समुद्र को पी लिया था और वातापि नामक राक्षस को पचा डाला था। [त्रि०] जिसकी पाचन शक्ति बहुत प्रबल हो। जिसको भूख लगी हो, भूखा।

दीप्ताङ्ग—[सं० त्रि०] जिसका शरीर चमकता हो। [पु०] मयूर, मोर।

दीप्ति—[सं० पु०] उजेला, रोशनी। स्त्रियों का अयत्नज गुण। अभिव्यक्ति, ज्ञान का प्रकाश जिससे विवेक उत्पन्न होता है और अज्ञानरूपी अंधकार दूर हो जाता है। लाक्षा, लाख। कांस्य, कांसा। कान्ति, शोभा, छवि। एक विश्वेदेव का नाम।

दीप्तिक—[सं० पु०] दुग्धपाषाण वृक्ष, शिरशोला।

दीप्तिमत्—[सं० त्रि०] चमकता हुआ। कान्तियुक्त, शोभायुक्त। [पु०] सत्यभामा के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

दीप्तोद—[सं० पु०] एक तीर्थ का नाम।

दीप्तोपल—[सं०पु०] सूर्यकान्तिमणि।

दीप्य—[सं० त्रि०] जो जलाया जाने को हो। जो जलाने योग्य हो। [पु०] यमानी, अजवायन। जीरक, जीरा। मयूरशिखा। रुद्रजटा।

दीप्यक—[सं० क्ली०] अजमोदा। यमानी, अजवायन। मयूर-शिखा। लाचमस्तक वृक्ष, रुद्रजटा। रक्तचित्रक, लाल चीता। कुंकुम, केसर। तगर। नीबू का पेड़। श्येन पक्षी।

दीप्यका—[सं० स्त्री०] यमानी, अज-वायन।

दीप्यमान—[सं० त्रि०] प्रज्वलित, चमकता हुआ।

दीप्यवल्ली—[सं० स्त्री०] अजमोदा।

दीप्या—[सं० स्त्री०] पिण्ड खजूर। एक प्रकार का काला जीरा। यमानी, आजवायन।

दीप्र—[सं० त्रि०] प्रकाशयुक्त।

दीर्घ—[सं० त्रि०] आयत, लम्बा। लताशाल वृक्ष। उत्कट, एक प्रकार का क्षुप। माड़ वृक्ष। ऊँट। रामशर, नरकट। द्विमात्रवर्ण, वह वर्ण जिसका उच्चारण खींचकर हो।

दीर्घकणा—[सं० स्त्री०] गौरजीरक, सफेद जीरा।

दीर्घकण्टक—[सं० पु०] बबूल का पेड़।

दीर्घकण्ठ—[सं० पु० स्त्री०] वक पक्षी, बगला। एक दानव का नाम। [त्रि०] जिसकी गरदन लम्बी हो।

दीर्घकण्ठक—[सं० पु०] वकपक्षी, बगला।

दीर्घकन्द—[सं० क्ली०] मूलक, मूली। मालाकन्द।

दीर्घकन्दक—[सं० स्त्री०] मूलक, मूली।

दीर्घकन्दिका—[सं० स्त्री०] तालमूली, मूसली।

दीर्घकन्धर—[सं० पु०] वकपक्षी, बगला। [त्रि०] जिसकी गरदन लम्बी हो।

दीर्घकर्ण—[सं० त्रि०] जिसके कान बड़े बड़े हों। [पु०] एक जाति का नाम।

दीर्घकाण्ड—[सं० पु०] गुण्ड तृण, गोंदला।

दीर्घकाण्डा—[सं० स्त्री०] छिरहिटा। एक प्रकार की बेल।

दीर्घकाय—[सं० त्रि०] लम्बे चौड़े शरीर वाला।

दीर्घकाल—[सं० क्ली०] अनेक दिन।

दीर्घकील—[सं० पु०] अंकोल का पेड़।

दीर्घकुल्या—[सं० स्त्री०] गजपिप्पली।

दीर्घकूरक—[सं० क्ली०] आन्ध्र देश में होने वाला एक प्रकार का धान।

दीर्घकेश—[सं० पु० स्त्री०] भालू। एक देश का नाम। [त्रि०] जिसके लंबे लंबे बाल हों।

दीर्घकोशिका—[सं० स्त्री०] झिनाशिका, सुतुही।

दीर्घस्वरच्छन्द—[सं० पु०] उत्कट, एक प्रकार का क्षुप।

दीर्घगति—[सं० पु०] ऊँट। यह लम्बे लम्बे डग रखता है इसीसे इसका नाम दीर्घगति हुआ।

दीर्घग्रन्थि—[सं० पु०] गजपिप्पली।

दीर्घग्रीव—[सं० पु०] ऊँट। सारस। एक देश का नाम। [त्रि०] जिसकी गरदन लम्बी हो।

दीर्घघाटिक—[सं० पु० स्त्री०] ऊँट। बगला। [त्रि०] लंबी गरदन वाला।

दीर्घचंचु—[सं० पु०] एक किस्म की चिड़िया।

दीर्घच्छन्दस—[सं० क्ली०] छन्दोविशेष। बड़ा छन्द।

दीर्घजंगल—[सं० पु०] मत्स्यविशेष। बड़ा झींगा।

दीर्घजंघ—[सं० पु०] वक। बगला। ऊँट। [स्त्री०] लम्बी टाँग। [त्रि०] जिसकी टाँगें लम्बी हों।

दीर्घजिह्व—[सं० पु०] सर्प। साँप। एक दानव का नाम। [त्रि०] जिसकी लंबी जीभ हो।

दीर्घजिह्वा—[सं० स्त्री०] राक्षसीभेद। विरोचन की पुत्री एक राक्षसी जिसे इन्द्र ने मारा था। मातृगणों में से एक जो कार्तिकेय की अनुचरी है।

दीर्घजिह्वी—[सं० पु०] कुक्कुर। कुत्ता।

दीर्घतन्तु—[सं० पु०] वह देवादि जिसमें अनेक स्तव हों। दीर्घकालव्यापी सन्तानक। लम्बा तागा।

दीर्घतपस्—[सं० पु०] हरिवंश के अनुसार आयुवंशीय एक राजा। इन्होंने बहुत काल तक तप किया था। [त्रि०] जिसने बहुत दिनों तक तपस्या की हो।

दीर्घतरु—[सं० पु०] तालवृक्ष। ताल का पेड़। लंबा पेड़।

दीर्घता—[सं० स्त्री०] आयति। लम्बाई।

दीर्घतिमिषा—[सं० स्त्री०] कर्कटी। ककड़ी।

दीर्घतुण्डा—[सं० स्त्री०] छछूंदर। [त्रि०] जिसका मुँह लंबा हो। जैसे हाथी आदि। [क्ली०] लंबा मुँह।

दीर्घतृण—[सं० पु०] एक प्रकार की घास जिसको खाने से पशु दुर्बल हो जाते हैं। [क्ली०] लम्बी घास।

दीर्घदण्ड—[सं० पु०] अंडी का पेड़। ताड़ का पेड़।

दीर्घदण्डी—[सं० स्त्री०] गोरक्षी। गोरख इमली।

दीर्घदर्शिता—[सं० स्त्री०] बहुदर्शिता। बहुत दूर तक की बात या विचार।

दीर्घदर्शी—[सं० पु०] पंडित। वह जो दूर तक सब बातों का परिणाम सोचता हो। भालू। गीध। [त्रि०] दूरदर्शक। बहुत दूर र तक सोचनेवाला।

दीर्घदल—[सं० पु०] मालाकन्द।

दीर्घदृष्टि—[सं० पु०] पंडित। वह जो दूरतक की बात सोचता हो। दूरबीन।

दीर्घद्रु—[सं० पु०] ताड़ का पेड़।

दीर्घद्रुम—[सं० पु०] सेमर का पेड़।

दीर्घनाद—[सं० पु०] शंख। जोर की आवाज। [त्रि०] जिससे भारी

शब्द निकले।

दीर्घनाल—[सं० पु०] ज्वार। गोंदला घास। [क्ली०] रोहिस घास।

दीर्घनास—[सं० त्रि०] जिसकी नाक लंबी हो। लम्बी नाक।

दीर्घनिद्रा—[सं० स्त्री०] मृत्यु, मौत। बहुत देर तक रहने वाली नींद।

दीर्घनिस्वन—[सं० पु०] शंख।

दीर्घपक्ष—[सं० पु०] कलिंग पक्षी। वह पक्षी जिसके डैने लम्बे हों।

दीर्घपत्र—[सं० पु०] राजपलाण्डु, लाल प्याज। विष्णुकन्द। हरिदर्भ, एक प्रकार का कुश। कुपीलुवृक्ष, कुचला। एक प्रकार की ईख।

दीर्घपत्रक—[सं० पु०] लाल लहसुन। एरण्ड, अंडी। समुद्रफल। वेतसवृक्ष, बेंत। करीर वृक्ष, टेंटी का पेड़। जलमहुआ। लहसुन।

दीर्घपत्रा—[सं० स्त्री०] मंजीठ। छोटा जामुन का पेड़। पिठवन। गन्धपत्रा। केतकी। सरिवन। एक प्रकार की लता।

दीर्घपत्रिका—[सं० स्त्री०] सफेद वच। घृतकुमारी, घीकुआर। शालपर्णी, सरिवन। सफेद गदहपुरना।

दीर्घपर्णी—[सं० स्त्री०] खिरनी। एक प्रकार का साग।

दीर्घपर्णा—[सं० त्रि०] जिसके लंबे पत्ते हों।

दीर्घपल्लव—[सं० पु०] सन का पेड़। [त्रि०] जिसकी पत्तियाँ लंबी हों। [पु० क्ली०] लंबा पत्ता।

दीर्घपादु—[सं० पु०] कंकपक्षी। सारस। [त्रि०] लंबी टाँगवाला।

दीर्घपादप—[सं० पु०] ताल, ताड़ का पेड़। पूग, सुपारी का पेड़।

दीर्घपृष्ठ—[सं० पु०] सर्प, साँप।

दीर्घप्रज्ञ—[सं० पु०] द्वापर के एक राजा वृषपर्वा जो असुर के अवतार थे। [त्रि०] दूरदर्शी।

दीर्घफल—[सं० पु०] अमलतास।

दीर्घफलक—[सं० पु०] अगस्त्य का पेड़।

दीर्घफला—[सं० स्त्री०] मालव देश प्रसिद्ध जतुका नाम की लता। कपिलद्राक्षा, अंगूर।

दीर्घफलिका—[सं० स्त्री०] लम्बा अंगूर। जतुका। मेषशृंग नाम की लता। तीता कद्दू।

दीर्घबाला—[सं० स्त्री०] चमरी, मूरागाय।

दीर्घबाहु—[सं० पु०] शिव के एक अनुचर का नाम। धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। [त्रि०] जिसकी भुजा लंबी हो।

दीर्घबाहुगर्वित—[सं० पु०] दैत्यभेद, एक असुर का नाम।

दीर्घभुज—[सं० पु०] शिव के एक अनुचर का नाम। [त्रि०] जिसकी भुजा लंबी हो।

दीर्घमारुत—[सं० पु०] हस्ती, हाथी।

दीर्घमुख—[सं० पु०] एक यक्ष का नाम। जिसका मुँह लंबा हो।

दीर्घमुल—[सं० पु०] मोरटलता। एक प्रकार की बेल। बिल्वान्तर वृक्ष। [क्ली०] एक पोली घास जो बेना की तरह होती है। जवास। बेल का पेड़। विभीतक वृक्ष। इन्द्रयव, कुड़ा। मूलक, मूली।

दीर्घमूलक—[सं० क्ली०] मूलक, मूली।

दीर्घमूला—[सं० स्त्री०] श्यामालता, कालीसर। शालपर्णी, सरिवन।

दीर्घमूलिका—[सं० स्त्री०] दुरालभा, जवास, धमासा।

दीर्घयज्ञ—[सं० त्रि०] जिसने बहुत काल तक यज्ञ किया हो। [पु०] द्वापर युग के एक अयोध्याधिपति।

दीर्घयाथ—[सं० त्रि०] बहुत काल तक जाने योग्य।

दीर्घरंगा—[सं० स्त्री०] हरिद्रा, हलदी।

दीर्घरत—[सं० पु०] कुक्कुर, कुत्ता।

दीर्घरद—[सं० पु०] शूकर, सूअर। लम्बा दाँत। [त्रि०] जिसके निकले हुए लम्बे दाँत हों।

दीर्घरसन—[सं० पु०] सर्प, साँप।

दीर्घरागा—[सं० स्त्री०] हरिद्रा, हलदी।

दीर्घरात्र—[सं० क्ली०] चिरकाल, अधिक समय।

दीर्घराव—[सं० त्रि०] जो भारी शब्द करता हो।

दीर्घरोगिन्—[सं० त्रि०] चिररोगी, जो सदा रोग से ग्रसित रहता हो।

दीर्घरोम—[सं० पु०] भालू। शिव के एक अनुचर का नाम।

दीर्घलोचन—[सं० त्रि०] बड़ी आँखवाला। [पु०] शिव के एक अनुचर का नाम। धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। [क्ली०] लम्बी आँख।

दीर्घलोहितयष्टिका—[सं० स्त्री०] लाल ऊख।

दीर्घवंश—[सं० पु०] नरकट। सन्तत कुल। वह जो प्राचीन वंश से उत्पन्न हुआ हो।

दीर्घवच्छिका—[सं० स्त्री०] कुम्भीर, घड़ियाल।

दीर्घवर्षाभू—[सं० पु० स्त्री०] चिराटिका।

दीर्घवल्ली—[सं० स्त्री०] महेन्द्रवारुणी, बड़ा इन्द्रायन। छिंटा, पातालगरुड़ीलता। पलाशी लता।

दीर्घवृक्ष—[सं० पु०] शालवृक्ष, साल का पेड़। ताल वृक्ष, ताड़ का पेड़।

दीर्घवृन्त—[सं० पु०] सोनापाठा। लताशाल।

दीर्घवृन्तिका—[सं० स्त्री०] एलापर्णी।
दीर्घशर—[सं० पु०] ज्वार, जुन्हरी।
दीर्घशस्य—[सं० पु०] गाव फल।
दीर्घशाख—[सं० पु०] सन का पेड़। साखू का पेड़।
दीर्घशाखिका—[सं० स्त्री०] नलव-नगुड़।
दीर्घशिम्बिक—[सं० पु०] यव, एक प्रकार की राई।
दीर्घशूक—[सं० पु०] एक प्रकार का धान।
दीर्घश्मश्रु—[सं० त्रि०] जिसकी बड़ी बड़ी दाढ़ी हो।
दीर्घश्रवस—[सं० पु०] दीर्घतमा ऋषि के एक पुत्र का नाम। इन्होंने अनावृष्टि होने पर जीविका के लिए वाणिज्य कर लिया था। [क्ली०] दीर्घकर्ण, लंबा कान। [त्रि०] जिसके लंबे कान हों।
दीर्घश्रुत—[सं० त्रि०] जो दूर तक सुनाई पड़े। जिसका नाम दूर तक विख्यात हो।
दीर्घसत्र—[सं० क्ली०] एक यज्ञ जो बहुत दिनों में समाप्त होता था। एक तीर्थ का नाम। यावज्जीवन कर्त्तव्य। अग्निहोत्र यज्ञ। जिसने दीर्घसत्र यज्ञ किया हो।
दीर्घारण्य—[सं० क्ली०] निबिड़ वन, घना जंगल।
दीर्घालर्क—[सं० पु०] सफेद मदार।
दीर्घासा—[सं० त्रि०] बड़े मुँहवाला। शिव के एक अनुचर का नाम। हस्ती, हाथी। पश्चिमोत्तर देशभेद।
दीर्घाहन—[सं० पु०] निदाघ समय। ग्रीष्मकाल।
दीर्घिका—[सं० स्त्री०] बावली। छोटा तालाब। जलाशय मात्र। हिङ्गुपत्र।
दीर्घवारु—[सं० पु०] लंबी ककड़ी। बड़ा कद्दू।
दीर्घोच्चारण—[सं० क्ली०] गुरु उच्चारण।
दीर्ण—[सं० त्रि०] विदारित, फटा हुआ, दरका हुआ।
दीवट—[हि० स्त्री०] दीया रखने का आधार, चिरागदान।
दीवालदण्ड—[हि० पु०] एक प्रकार की कसरत।
दीर्घसुरत—[सं० पु०] कुक्कुर, कुत्ता। शूकर, सूअर। [त्रि०] देर तक रति करने वाला।
दीर्घसूक्ष्म—[सं० पु०] प्राणायाम भेद।
दीर्घसूत्र—[सं० त्रि०] प्रत्येक काम में विलम्ब करने वाला। [क्ली०] लम्बा सूत।
दीर्घसूत्रता—[सं० स्त्री०] प्रत्येक काम में विलम्ब करने की आदत।
दीर्घसूत्री—[सं० त्रि०] देर से काम करने वाला।
दीर्घस्कन्ध—[सं० पु०] तालवृक्ष, ताड़ का पेड़।
दीर्घा—[सं० स्त्री०] पिठवन।
दीर्घाङ्कुर—[सं० पु०] राजशाली, राजान्न।
दीर्घाङ्गी—[सं० स्त्री०] शालपर्णी।
दीर्घाध्वग—[सं० पु०] पत्रवाहक। ऊँट।
दीर्घायु—[सं० त्रि०] चिरजीवी, बहुत दिनों तक जीने वाला। [पु०] सेमर का पेड़। काक, कौवा। मार्कण्डेय। जीवक वृक्ष।
दीर्घायुध—[सं० पु०] कुम्भास्त्र। शूकर, सूअर।
दीवि—[सं० पु०] नीलकंठ नाम का पक्षी।
दुंका—[हि० पु०] छोटा कण, दाना।
दुंगरी—[हि० स्त्री०] एक प्रकार का मोटा कपड़ा।
दुंद—[हि० पु०] युद्ध, झगड़ा। युग्म, जोड़ा; उत्पात, हलचल। दुंदुभि, नगाड़ा।
दुःकुल—[सं० पु०] चोर नामक गन्धद्रव्य।
दुःख—[सं० क्ली०] संसार। व्याधि, रोग। कष्ट, क्लेश।
दुःखकोद्रवा—[सं० स्त्री०] एक प्रकार का मसूर।
दुःखग्राम—[सं० पु०] संसार। दुःख-समुदाय, दुःख का समूह।
दुःखजात—[सं० त्रि०] जिससे कष्ट हो। [क्ली०] दुःख का ढेर।
दुःखजीवी—[सं० त्रि०] जो कष्ट से समय व्यतीत करता हो।
दुःखता—[सं० स्त्री०] दुःख का भाव।
दुःखत्रय—[सं० क्ली०] त्रिविध दुःख, आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक ये तीन प्रकार के दुःख।
दुःखद—[सं० वि०] क्लेश पहुंचाने वाला।
दुःखदग्ध—[सं० त्रि०] परितप्त, कष्ट में पड़ा हुआ।
दुःखदर्शन—[सं० पु०] गृध्र, गीध।
दुःखदाता—[सं० पु०] वह मनुष्य जो दुःख पहुँचाता हो।
दुःखदायक—[सं० त्रि०] कष्ट पहुंचाने वाला।
दुःखदिर—[सं० पु०] महासार खदिर-भेद, एक प्रकार का खैर।
दुःखदोह्या—[सं० स्त्री०] करकटा, वह गाय जो कठिनता से दुही जा सके।
दुःखनिवह—[सं० त्रि०] दुःसह, अत्यन्त कष्टदायक।
दुःखप्रद—[सं० पु०] दुःखद, कष्ट देनेवाला।
दुःखबहुल—[सं० पु०] दुःखपूर्ण, क्लेश से भरा हुआ।

दुःखभाग—[सं० त्रि०] दुःखभोगी। जो कष्ट भोगता हो।

दुःखभोग—[सं० पु०] दुःखानुभव, दुःख का सहना।

दुःखमय—[सं० त्रि०] दुःखस्वरूप। क्लेश से भरा हुआ।

दुःखलभ्य—[सं० त्रि०] दुःखसाध्य, जो कठिनता से मिल सके।

दुःखलब्धिका—[सं० स्त्री०] वह वस्तु जो कठिनता से प्राप्त हो। एक रानी।

दुःखलोक—[सं० पु०] वह लोक जहाँ दुःख भोगना पड़े, संसार।

दुःखवर्द्धन—[सं० पु०] कर्णपाली रोग, कान की लौ में होने वाली एक बीमारी।

दुःखशील—[सं० त्रि०] जिसका दुःख भोगने का स्वभाव हो, अर्थात् जो सर्वदा दुःख अनुभव करता हो।

दुःखसंचार—[सं० पु०] कष्ट से समय बिताना। कष्ट-भोग।

दुःखसागर—[सं० पु०] दुःख का समुद्र, अत्यन्त क्लेश।

दुःखसाध्य—[सं० त्रि०] जिसका करना कठिन हो।

दुःखहरा—[सं० स्त्री०] दुःखनाशिनी दुर्गा।

दुःखाकर—[सं० पु०] दुःख की खान, संसार। [त्रि०] दुःखदायक, कष्ट पहुँचाने वाला।

दुःखाचार—[सं० त्रि०] दुःस्वभाव। दुःशासन।

दुःखान्त—[सं० पु०] क्लेश की समाप्ति। [त्रि०] जिसके अन्त में दुःख हो। जिसके अन्त में दुःख का वर्णन हो।

दुःखायतन—[सं० पु०] संसार।

दुःखार्त—[सं० त्रि०] कष्ट से व्याकुल।

दुःखित—[सं० त्रि०] जिसे कष्ट या तकलीफ हो।

दुःखिनी—[सं० स्त्री०] जिस पर दुःख पड़ा हो, दुःखिया।

दुःखप्राप्त—[सं० त्रि०] जिस पर दुःख पड़ा हो।

दुःशकुन—[सं० क्ली०] बुरा शकुन।

दुःशला—[सं० स्त्री०] राजा धृतराष्ट्र की एकमात्र कन्या।

दुःशासन—[सं० त्रि०] जिसपर शासन करना कठिन हो, जो किसी का दबाव न माने। [पु०] धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक।

दुःशील—[सं० त्रि०] बुरे स्वभाव का।

दुःशीलता—[सं० स्त्री०] अविनय, दुष्टता।

दुःशोध—[सं० त्रि०] जिसका सुधार कठिन हो। जिस धातु आदि का शोधना कठिन हो।

दुःश्रव—[सं० त्रि०] जिसके सुनने से दुःख उत्पन्न हो। [पु०] काव्य का एक दोष, यह कानों को कर्कश लगने वाले वर्णों के आने से होता है।

दुःषन्धि—[सं० पु०] दिखावटी मेल।

दुःषमस—[सं० क्ली०] गर्ह, निन्दा।

दुःषेध—[सं० त्रि०] जिसका निवारण कठिन हो।

दुःसंकल्प—[सं० पु०] दुष्ट विचार। बुरा इरादा। जो बुरा संकल्प करता हो। बुरी नियत का।

दुःसंग—[सं० पु०] बुरा साथ, बुरी सोहबत।

दुःसंधान—[सं० पु०] केशवदास के अनुसार काव्य में एक रस। यह उस जगह पर होता है जहाँ एक तो अनुकूल होता है दूसरा प्रतिकूल, एक तो मेल की बात करता है दूसरा बिगाड़ की।

दुःसह—[सं० त्रि०] जिसका सहन करना कठिन हो [धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

दुःसाध्य—[सं० त्रि०] जिसका साधन कठिन हो। जिसका उपाय कठिन हो।

दुःसाधिन्—[सं० त्रि०] दुष्ट साधक। [पु०] द्वारपाल। ड्योढ़ीदार।

दुःसाहस—[सं० पु०] अनुचित साहस, ऐसी बात करने की हिम्मत जो अच्छी न समझी जाती हो। व्यर्थ का साहस, ऐसी हिम्मत जिसका परिणाम कुछ न हो।

दुःसाहसिक—[सं० त्रि०] अगम साहसिक, जिसके लिए हिम्मत करना बुरा हो।

दुःस्त्री—[सं० स्त्री०] खराब औरत।

दुःस्थ—[सं० त्रि०] जिसकी स्थिति बुरी हो। मूर्ख। दरिद्र। लोभी।

दुःस्थित—[सं० त्रि०] दरिद्र, गरीब।

दुःस्पर्श—[सं० त्रि०] दुरालभ, जिसे पाना कठिन हो। जिसका छूना कठिन हो। [स्त्री०] लताकरंज। केंवाच। आकाशगंगा। कंटकारी, भटकटैया।

दुःस्फोटक—[सं० पु०] अस्त्र-विशेष, एक प्रकार का हथियार।

दुःस्वप्न—[सं० पु०] अशुभसूचक स्वप्नभेद। बुरा स्वप्न, ऐसा सपना जिसका फल बुरा माना जाता है।

दुःस्वभाव—[सं० पु०] बुरा स्वभाव। [त्रि०] दुष्ट स्वभाव का।

दुःस्वरनाम—[सं० पु०] एक प्रकार का पापकर्म। इसके उदय होने से प्राणियों के कठोर और हीनस्वर होते हैं।

दु—[हिं० वि०] 'दो' शब्द का छोटा रूप।

दुआला—[हिं० पु०] लकड़ी का एक बेलन।

दुकड़हा—[हि० वि०] जिसका दाम दो दमड़ी या एक छदाम हो। तुच्छ, नाचीज़। नीच, कमीना।

दुकड़ा—[हि० पु०] एक में लगी हुई दो वस्तु, जोड़ा। दो दमड़ी, छदाम। वह जिसमें किसी वस्तु का जोड़ा हो।

दुकड़ी—[हि० वि०] जिसमें किसी वस्तु का जोड़ा हो। [स्त्री०] दो बूटियों वाला ताश का पत्ता। चारपाई की बुनावट। वह बग्घी जिसमें दो घोड़े जोते जाते हैं। दो कड़ियों की लगाम।

दुकाल—[हि० पु०] अन्नकष्ट का समय, अकाल।

दुकुली—[हि० स्त्री०] चमड़ा मढ़ा हुआ एक प्रकार का पुराना बाजा।

दुकूल—[सं० क्ली०] सन या तीसी के रेशे का बना हुआ कपड़ा। सूक्ष्म वस्त्र, महीन कपड़ा। वस्त्र, कपड़ा।

दुकेला—[हि० वि०] जो अकेला न हो।

दुक्कड़—[हि० ०] एक प्रकार का बाजा जो तबले की तरह होता है और शहनाई के साथ बजाया जाता है। एक में जुड़ी हुई या साथ पटी हुई दो नावों का जोड़ा।

दुखण्डा—[हि० वि०] दो तल्ला, जिसमें दो खण्ड हों।

दुखड़ा—[हि० पु०] दुःख की कथा। कष्ट। विपत्ति।

दुखारा—[हि० वि०] पीड़ित, दुखी।

दुखी—[हि० वि०] जिसे कष्ट हो। जिसे मानसिक कष्ट हुआ हो।

दुगदुगी—[हि० स्त्री०] गरदन के नीचे और छाती के ऊपर का भाग जो कुछ गहरा सा होता है। एक प्रकार का आभूषण जो गले में पहना जाता है और छाती के ऊपर तक लटका रहता है।

दुगना—[हि० त्रि०] दूना।

दुगाड़ा—[हि० पु०] वह बन्दूक जिसमें दो नलियाँ लगी रहती हैं। दोहरी गोली।

दुगासरा—[हि० पु०] किसी दुर्ग के किनारे का गाँव।

दुग्ध—[सं० क्ली०] दूध। क्षीर। पीयूष।

दुग्धतालीय—[सं० क्ली०] दूध का फेन। मलाई।

दुग्धतुम्बी—[हि० वि०] सफेद कद्दू।

दुग्धदा—[सं० स्त्री०] वह जो दूध देती है। एक प्रकार की घास।

दुग्धपाचन—[सं० क्ली०] दूध गरम करने का बरतन।

दुग्धपुच्छी—[सं० स्त्री०] एक वृक्ष का नाम।

दुग्धपोष्य—[सं० त्रि०] जो केवल दूध पीकर रहता हो। [पु०] शिशु। बच्चा।

दुग्धवटी—[सं० स्त्री०] शोथवटी।

दुग्धबीजा—[सं० स्त्री०] ज्वार। जुन्हरी।

दुग्धाक्ष—[सं० पु०] एक प्रकार का नग या पत्थर। इस पर सफेद सफेद छींटे होते हैं।

दुग्धाब्धि—[सं० पु०] क्षीरसागर।

दुग्धाब्धितनया—[सं०स्त्री०] लक्ष्मी।

दुग्धाश्मन—[सं० पु०] एक पेड़।

दुग्धिका—[सं० स्त्री०] खिरनी।

दुग्धिनिका—[सं० स्त्री०] लालचिचड़ा।

दुग्धी—[सं० स्त्री०] दुधिया नाम की घास। [त्रि०] दूधवाला। जिसमें दूध हो।

दुघड़िया—[हि० वि०] दो घड़ी का।

दुचल्ला—[हि०पु०] वह छत जिसके दोनों ओर ढाल हो।

दुचित—[हि० वि०] अस्थिर चित्त। चिन्तित।

दुचिता—[हि० वि०] सन्देह में पड़ा हुआ। जिसके चित्त में खटका हो।

दुच्छक—[सं० पु०] कपूर कचहरी। तालिशपत्र। मुरा नामक गन्ध-द्रव्य-विशेष।

दुच्छुन—[सं० त्रि०] जो बहुत फूल गया हो।

दुच्छुन्—[सं० पु०] पगला कुत्ता।

दुजड़—[हि० स्त्री०] तलवार

दुजड़ी—[हि० स्त्री०] कटारी।

दुटुक—[हि० वि०] खण्डित। दो टुकड़ों में किया हुआ।

दुडि—[सं० स्त्री०] कच्छपी। कछुई।

दुण्डुक—[सं० त्रि०] दुष्ट चित्त। खोटा दिलवाला।

दुण्डुभ—[सं० पु०] डेड़हा साँप।

दुण्डुभा—[सं० स्त्री०] एक प्रकार की सरसी।

दुत—[सं० त्रि०] पीड़ित। जिसे तकलीफ हो।

दुत—[हि० वि०] घृणासूचक शब्द।

दुतकार—[हि० स्त्री०] तिरस्कार। फटकार।

दुतारा—[हि० पु०] दो तार लगा हुआ एक प्रकार का बाजा। यह उँगली से सितार की तरह बजाया जाता है।

दुतिया—[हि० स्त्री०] पक्ष की दूसरी तिथि। दूज।

दुतिवन्त—[हि० वि०] आभायुक्त। चमकीला। मनोहर। सुंदर।

दुथरी—[हि० स्त्री०] एक प्रकार की मछली।

दुदल—[हि० वि०] द्विदल। जिसके टूटने या फूटने पर दो बराबर दल या खण्ड हो जाय। [पु०] दाल। हिमालय के कम ठण्डे स्थानों तथा

नीलगिरि पर्वत पर होनेवाला एक प्रकार का पौधा।

दुदामी [हि० स्त्री०] एक प्रकार का सूती कपड़ा।

दुदुह—[सं० पु०] यदुवंश के एक राजा का नाम।

दुद्धी—[हि० स्त्री०] एक प्रकार की घास जो जमीन पर बहुत दूर तक फैल जाती है। मन्द्राज, मध्यप्रदेश और राजपूताने में होनेवाला एक प्रकार का पेड़। खड़िया मट्टी। सारिवा लता। जंगली नील।

दुद्रुम—[सं० पु०] हरा प्याज। कन्द-विशेष।

दुधपिठवा—[हि० पु०] एक प्रकार का पकवान।

दुधार—[हि० वि०] दूध देनेवाली। जिसमें दूध हो।

दुधारा—[हि० त्रि०] जिसमें दोनों तरफ धार हो। [पु०] दो तेज धारों का एक प्रकार का चौड़ा खाँड़ा या तलवार।

दुधि—[सं० त्रि०] हिंसक। मारनेवाला।

दुधित—[सं० त्रि०] विरक्त। उदास।

दुधिया—[हि० वि०] दूध मिला हुआ। जिसमें दूध पड़ा हुआ हो। दूध सा सफेद। **दुद्धी** नाम की घास। बड़ौदे की तरफ होनेवाली एक प्रकार की ज्वार। खड़िया मट्टी। कलियारी की जाति का एक विष। एक प्रकार की चिड़िया।

दुधैल—[हि० वि०] जो बहुत दूध देती हो।

दुध्र—[सं० त्रि०] हिंसक। मारनेवाला। प्रेरक। भेजनेवाला। प्रचण्ड। प्रबल। जिसका दमन करना कठिन हो। दुष्ट व्यवस्थापक।

दुध्रकृत्—[सं० त्रि०] खराब काम करनेवाला।

दुध्रवाच—[सं० त्रि०] कटु वचन।

दुनया—[हि० पु०] दो नदियों का संगमस्थान।

दुनियाई—[हि० वि०] सांसारिक। [स्त्री०] संसार। जगत्।

द्वादशमासिक—[सं० क्ली०] वह श्राद्ध जो किसी के मरने के बारहवें मास में किया जाता है।

द्वादशरात्र—[सं० पु०] बारह दिनों में होने वाला यज्ञ।

द्वादशलोचन—[सं० पु०] कार्तिकेय।

द्वादशवार्षिक—[सं० त्रि०] जो बारह वर्ष तक किसी सत्कार्य में लगाया गया हो। ब्रह्महत्यानाशक व्रतभेद।

द्वादशसंग्राम—[सं० पु०] देवताओं के साथ असुरों के बारह प्रकार के युद्ध।

द्वादशाक्षर—[सं० पु०] विष्णु का एक मंत्र जिसमें बारह अक्षर हैं। जैसे, 'ओं नमो भगवते वासुदेवाय'।

द्वादशाध्यायी—[सं० स्त्री०] जैमिनि की सूत्र रूप द्वादश लक्षणी। मनुसंहिता।

द्वादशी—[सं० स्त्री०] प्रत्येक पक्ष की बारहवीं तिथि।

द्वापर—[सं० पु०] बारह युगों में तीसरा युग। संशय।

द्वामुष्यायण—[सं० पु०] वह मनुष्य जो दो पुरुषों का पुत्र हो।

द्वार—[सं० स्त्री०] दरवाजा। उपाय। [क्ली०] इन्द्रियों के मार्ग। अंग।

द्वारक—[सं० क्ली०] द्वारकापुरी।

द्वारकंटक—[सं० पु० क्ली०] कपाट, किवाड़।

द्वारका—अमरेली प्रान्त का एक बन्दर। हिन्दू तीर्थ। यहाँ द्वारकानाथ का मन्दिर है।

द्वारकादास—[सं० पु०] शेखावती के एक राजा का नाम।

द्वारकाधीश—[सं० पु०] श्रीकृष्णचन्द्र। कृष्ण की वह मूर्ति जो द्वारका में है।

द्वारगोप—[सं० पु०] द्वारपाल।

द्वारचार—[सं० पु०] लड़की वाले के द्वार पर पहुँचने पर विवाह की एक रीति।

द्वारछेंकाई—[हि० स्त्री०] वर-बधू के घर आने पर बहिन द्वारा दरवाज़ा रोकने की एक वैवाहिक रीति।

द्वारदारु—[सं० पु०] शाक वृक्ष, भूमिसह वृक्ष।

द्वारप—[सं० पु०] द्वाररक्षक, विष्णु।

द्वारपण्डित—[सं० पु०] किसी राजा के दरबार में रहने वाला प्रधान पण्डित।

द्वारपति—[सं० पु०] द्वारपाल।

द्वारपाल—[सं० पु०] द्वाररक्षक। प्रतीहार, दौवारिक।

द्वारपिण्डी—[सं० स्त्री०] देहली, ड्योढ़ी, दहलीज।

द्वारपूजा—[हि० स्त्री०] विवाह की एक रीति।

द्वारयन्त्र—[सं० क्ली०] तालक, ताला।

द्वारवती—[सं० स्त्री०] द्वारका।

द्वारवृत्त—[सं० पु०] काली पीपल।

द्वारसमुद्र—महिसुर राज्य के अन्तर्गत हसन ज़िले का एक प्राचीन शहर।

द्वारस्थ—[सं० पु०] द्वारपाल।

द्वारा—[हि० अव्य०] साधन से, जरिये से।

द्वारादि—[सं० पु०] द्वार, स्वर, स्वाध्याय, व्यल्क कश, स्वस्ति, स्वर, स्फ्यकृत, स्वादु, मृदु, श्वस् और स्व ये ही द्वारादि हैं।

द्वाराधिप—[सं० पु०] द्वाराध्यक्ष,

दरवाजे का स्वामी।

द्वाराध्यक्ष—[सं० पु०] प्रतीहार, द्वारपाल।

द्वारावती—[सं० स्त्री०] द्वारका।

द्वारिक—[सं० पु०] द्वारपाल, दरबान।

द्वारिका—[सं० स्त्री०] द्वारकापुरी।

द्वारिकादास—एक हिन्दी-कवि जिसने 'माधव निदान भाषा' नामक एक वैद्यक ग्रन्थ की रचना की।

द्वाविंश—[सं० त्रि०] बाईसवाँ।

द्वाविंशति—[सं० स्त्री०] बाईस की संख्या। २२।

द्वाषष्टि—[सं० स्त्री०] बासठ की संख्या। ६२।

द्वासप्तति—[सं० स्त्री०] बहत्तर की संख्या। ७२।

द्वारस्थ—[सं० पु०] द्वारपाल, दरबान।

द्वास्थित—[सं० पु०] द्वारपाल।

द्वास्थितदर्शक—[सं० पु०] दौवारिक, द्वारपाल।

द्वि—[सं० त्रि०] द्वित्व संख्या। दो।

द्विक—[सं० त्रि०] द्वय, दो। दूसरा।

द्विककार—[सं० पु०] काक, कौवा। कोक, चकवा।

द्विककुद्—[सं० पु०] उष्ट्र, ऊँट।

द्विकर—[सं० त्रि०] दोभुजा, दो हाथ।

द्विकर्मक—[सं० त्रि०] जिसके दो कर्म हों।

द्विकल—[सं० पु०] छन्दःशास्त्र में दो मात्राओं का समूह।

द्विक्षार—[सं० पु०] शोरा और सज्जी।

द्विगु—[सं० त्रि०] जिसके दो गायें हों। समासविशेष।

द्विगुण—[सं० त्रि०] दुगना। दूना।

द्विगुणाकृत—[सं० त्रि०] जो ज़मीन दो बार जोती गई हो।

द्विगुणित—[सं० त्रि०] दूना, दुगुना।

द्विघटिका—[सं० स्त्री०] दो घड़ियों के हिसाब से निकला हुआ मुहूर्त।

द्विचक्र—[सं० पु०] एक असुर का नाम। [त्रि०] जिसमें दो पहिये हों।

द्विचत्वारिंशत्—[सं० स्त्री०] बयालीस की संख्या।४२। बयालीसवाँ।

द्विचरण—[सं० त्रि०] जिसके दो पाँव हों। [क्ली०] एक राशि का नाम। दो पाँव।

द्विज—[सं० पु०] वह ब्राह्मण जिसका संस्कार हुआ हो।

द्विज—हिन्दी के एक कवि। इन्होंने 'सभा प्रकाश' नामक पुस्तक रची थी।

द्विजत्व—[सं० क्ली०] ब्राह्मणत्व, द्विज का धर्म या भाव।

द्विजदास—[सं० पु०] जो द्विज की सेवा करता है।

द्विजदेव—एक हिन्दी-कवि।

द्विजन्मन्—[सं० पु०] ब्राह्मण। दन्त। पक्षी। चिड़िया। क्षत्रिय वैश्य। [त्रि०] जिसका दो बार जन्म हुआ हो।

द्विजपति—[सं० पु०] चन्द्रमा। कपूर। ब्राह्मण। गरुण।

द्विजप्रपा—[सं० स्त्री०] पानी का वह कुण्ड जिसमें पक्षी और मवेशी आकर पीते हैं।

द्विजप्रिया—[सं० स्त्री०] सोम। जो द्विज का प्रिय हो।

द्विजबन्धु—[सं० पु०] कर्म और संस्कार हीन ब्राह्मण।

द्विजमुख्य—[सं० पु०] द्विजश्रेष्ठ। ब्राह्मण।

द्विजराज—[सं० पु०] चन्द्रमा, कपूर। द्विजश्रेष्ठ। ब्राह्मण। गरुण।

द्विजलिंगिन्—[सं० पु०] ब्राह्मण का वेशधारण करने वाला।

द्विजवर—[सं० पु०] द्विजश्रेष्ठ, ब्राह्मण।

द्विजवाहन—[सं० पु०] नारायण। विष्णु।

द्विजव्रण—[सं० पु०] दन्तार्बुद, दाँत का एक रोग।

द्विजसेवक—[सं० पु०] शूद्र।

द्विजस्नेह—[सं० पु०] पलाशवृक्ष। ढाक का पेड़।

द्विजा—[सं० स्त्री०] रेणुका नामक गन्ध द्रव्य। संभालू का बीज। रेणुका। राजपुत्री, नन्दिनी, कपिला। भस्मगंधा। भार्गी। पालक का शाक।

द्विजाग्रज—[सं० पु०] ब्राह्मण।

द्विजाग्र—[सं० पु०] विप्र, ब्राह्मण।

द्विजाङ्गिका—[सं० स्त्री०] कुटकी।

द्विजाति—[सं० पु०] ब्राह्मण। ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य। अण्डज, दाँत। पक्षी।

द्विजानि—[सं० पु०] वह पुरुष जिसके दो स्त्रियाँ हों।

द्विजायनी—[सं० स्त्री०]यज्ञोपवीत।

द्विजालय—[सं० पु०] तरु कोटर। ब्राह्मणों का घर।

द्विजिह्व—[सं० पु०] सर्प। सूचक, चुगलखोर। खल, दुष्ट। चोर। दुःसाध्य। रोगविशेष। जिसके दो जीभें हों।

द्विजेन्द्र—[सं० पु०] द्विजश्रेष्ठ। ब्राह्मण। चन्द्रमा। कपूर।

द्विजेन्द्रक—निम्बू का पेड़।

द्विजेश—[सं० पु०] गरुण। चन्द्रमा। कपूर। ब्राह्मण।

द्विट्सेवी—[सं० त्रि०] राज-शत्रु-सेवी। गद्दार।

द्वित—[सं० पु०] एक ऋषि का नाम। एक देवता का नाम।

द्वितय—[सं० क्ली०] दो की संख्या। दोहरा।

द्वितीय—[सं० त्रि०] दूसरा। पुत्र।

द्वितीयक—[सं० क्ली०] वह रोग जो प्रत्येक दूसरे दिन होता है।

द्वितीया—[सं० स्त्री०] प्रत्येक पक्ष की दूसरी तिथि। दूज

द्वितीयाकृत—[सं० त्रि०] वह खेत जो दो बार जोता गया हो।

द्वितीयाभा—[सं० स्त्री०] दारु हल्दी।

द्वितीयाश्रम—[सं० पु०] गार्हस्थ्य आश्रम।

द्वित्व—[सं० क्ली०] दोहरे होने का भाव।

द्विदश—[सं० पु०] बारह की संख्या। १२।

द्विदिव—[सं० पु०] वह यज्ञ जो दो दिनों में समाप्त होता हो।

द्विदेह—[सं० पु०] गणेश।

द्विधा—[सं० अव्य०] दो प्रकार से। दो खण्डों में।

द्विधागति—[सं०पु०] कुम्भीर, घड़ियाल, जिसकी चाल दो प्रकार की हो।

द्विधातु—[सं० पु०] दो धातुओं के मेल से बनी हुई मिश्रित धातु।

द्विनवति—[सं० स्त्री०] बानबे की संख्या। ९२।

द्विप—[सं० पु० स्त्री०] हाथी।

द्विपक्ष—[सं० पु० स्त्री०] चिड़िया। [पु०] एक मास। [त्रि०] जिसके दो पर हों।

द्विपंचाशत—[सं० स्त्री०] बावन की संख्या। ५२।

द्विपथ—[सं० क्ली०] वह स्थान जहाँ दो राह मिलते हों।

द्विपद—[सं० पु०] मनुष्य। पक्षी। जहाँ दोनों पद में समास हो। ज्योतिष के अनुसार मिथुन, तुला, कुम्भ, कन्या और धनु लग्न का पूर्व भाग। [क्ली०] दो पैर। वास्तुमंडल का एक कोठा।

द्विपदा—[सं० स्त्री०] वह ऋचा जिसमें केवल दो पाद हों।

द्विपदिका—[सं० स्त्री०] वह जिसके दो पाँव हों।

द्विपदी—[सं० स्त्री०] वह छन्द जिसमें दो पद हों। एक प्रकार का चित्रकाव्य।

द्विपाख्य—[सं० पु०] नागकेशर का वृक्ष।

द्विपाद—[सं० पु०] मनुष्य, पक्षी आदि दो पैरवाले जन्तु। एक प्रकार का ग्रह। [त्रि०] जिसमें दो पद या चरण हों।

द्विपाधिप—[सं० पु०] ऐरावत, गजश्रेष्ठ।

द्विपायिन्—[सं० पु०] गज, हाथी।

द्विबन्धु—[सं० पु०] दो लोकों के बन्धु। अग्नि।

द्विबाहु—[सं० पु०] जिसके दो भुजाएँ हों।

द्विभाव—[सं० त्रि०] जिसमें दो भाव हों। कपटी।

द्विभाषी—[सं० पु०] दुभाषिका।

द्विभुज—[सं० त्रि०] दो हाथवाला।

द्विमातृ—[सं० पु०] दो माताओं के गर्भ से उत्पन्न जरासन्ध।

द्विमातृज—[सं० पु०] गणेश। राजा जरासन्ध।

द्विमात्र—[सं० पु०] जिसके उच्चारण करने में अधिक समय लगे।

द्विमाषा—[सं० त्रि०] दो माशे तौल का।

द्विमुख—[सं० पु० स्त्री०] राजसर्प, दो मुँहवाला साँप। गूँगा। [त्रि०] जिसके दो मुँह हों। [पु०] एक प्रकार का बनावटी रोग। धेनु, गाय।

द्विमुषली—[सं० अव्य०] दो मुसलों का प्रहार।

द्विर—[सं० पु०] मधुकर, भ्रमर।

द्विरद—[सं० पु०] हाथी। दुर्योधन का एक भाई। [त्रि०] दो दाँतवाला।

द्विरदान्तक—[सं० पु० स्त्री०] सिंह, शेर।

द्विरदाशन—[सं० पु० स्त्री०] सिंह, पीपल का पेड़।

द्विरशन—[सं० क्ली०] दो बार भोजन।

द्विरागमन—[सं० क्ली०] विवाह के बाद स्त्रियों का पिता के घर से स्वामी के घर में दूसरी बार आना।

द्विरात्र—[सं० त्रि०] दो रातों में में होनेवाला एक यज्ञ। [क्ली०] दो रात।

द्विराप—[सं० पु०] हाथी।

द्विरुक्त—[सं० त्रि०] जो दो बार कहा गया हो।

द्विरुक्ति—[सं० स्त्री०] दो बार कथन।

द्विरूढ़ा—[सं० स्त्री०] वह स्त्री जिसका एक बार एक पति से और दूसरी बार दूसरे पति से विवाह हुआ हो।

द्विरेतस्—[सं० पु०] दो भिन्न भिन्न पशुओं से उत्पन्न पशु। दोगला।

द्विरेफ—[सं० पु० स्त्री०] भ्रमर, भौंरा। बर्बर, एक प्रकार की मक्खी।

द्विर्वचन—[सं० क्ली०] द्विरुक्त, दोबार कथन।

द्विवाहिका—[सं० स्त्री०] दोला, हिंडोला, झूला।

द्विविद—[सं० पु०] रामयण के अनुसार एक बन्दर जो रामचन्द्र की सेना का सेनापति था।

द्विविध—[सं० त्रि०] दो प्रकार का।

द्विवितस्त—[सं० त्रि०] दो बिलस्त का।

द्विवृन्त—[सं० पु०] मेंहदी का पेड़।

द्विवेद—[सं० त्रि०] दो वेद पढ़नेवाला।

द्विवेदी—[सं० पु०] ब्राह्मणों की एक जाति। दुबे।

द्विव्रण—[सं० पु०] शारीर और आगन्तुक नाम के दो प्रकार के घाव।

द्विशत—[सं० क्ली०] दो सौ। दो संख्या का पूरण।

द्विशतक—[सं० त्रि०] जो दो सौ में खरीदा गया हो।

द्विशती—[सं० स्त्री०] दो सौ का समूह।
द्विशफ—[सं० पु०] दो खुरवाला पशु।
द्विशाण—[सं० त्रि०] जो दो शाण में खरीदा गया हो।
द्विशीर्ष—[सं० पु०] जिसके दो सिर हों।
द्विशृङ्गिन्—[सं० त्रि०] जिसके दो सींग हों।
द्विष—[सं० पु०] द्वेष्टा, द्वेष करनेवाला। विरोधी।
द्विष—[सं० त्रि०] शत्रु, दुश्मन।
द्विषत—[सं० त्रि०] शत्रु, दुश्मन।
द्विषन्तप—[सं० त्रि०] शत्रुओं को पीड़ा पहुँचानेवाला।
द्विषट्—[सं० त्रि०] द्वादश, बारह।
द्विषष्टिक—[सं० त्रि०] जो बासठ दिन में हुआ हो।
द्विषा—[सं० स्त्री०] इलायची। एला।
द्विषेण्य—[सं० त्रि०] द्वेषशील, ईर्ष्या करना ही जिसका स्वाभाव हो।
द्विष्ट—[सं० त्रि०] जिससे दोष हो। [क्ली०] ताम्र। ताँबा।
द्विसप्तत—[सं० त्रि०] बहत्तर। ७२।
द्विसप्तति—[सं० स्त्री०] बहत्तरवाँ।
द्विसप्तधा—[सं० अव्य०] बहत्तर प्रकार से।
द्विसहस्र—[त्रि०] जो दो सौ में खरीदा गया हो। दो हजार।
द्विसीत्य—[सं० त्रि०] वह खेत जो दो बार जोता गया हो।
द्विहन—[सं० पु०] हाथी।
द्विहरिद्रा—[सं० स्त्री०] दारुहल्दी।
द्विहल्य—[सं० त्रि०] वह खेत जो दो बार हल से जोता गया हो।
द्विहायन—[सं० त्रि०] दो वर्ष का बछड़ा।
द्विहृदया—[सं० स्त्री०] गर्भिणी स्त्री। गर्भवती।
द्वीन्द्रिय—[सं० पु०] वह जन्तु जिसके दो ही इन्द्रियाँ हों।
द्वीप—स्थल का वह भाग जो चारों ओर जल से घिरा हो।
द्वीपकर्पूर—[सं० पु०] चीनी कपूर।
द्वीपिन्—[सं० पु०] व्याघ्र, बाघ। चित्रक, चीता।
द्वीपिपलाश—[सं० पु०] ढाक का पेड़ जिसके पत्ते हाथी के कान के समान होते हैं।
द्वीप्य—[सं० त्रि०] जो द्वीप में उत्पन्न हो। [पु०] रुद्र। काक। कौवा।
द्वीप्या—[सं० स्त्री०] शतावरी, शतावर।
द्वेष—[सं० पु०] शत्रुता। वैर। विरोध।
द्वेषण—[सं० क्ली०] द्वेष। शत्रुता। [त्रि०] शत्रु। दुश्मन।
द्वेषिन—[सं० त्रि०] शत्रु, दुश्मन।
द्वैगुणिक—[सं० क्ली०] दूना ब्याज लेनेवाला।
द्वैत—[सं० क्ली०] द्वय, युगल, दो का भाव, भेद, अन्तर, भेद-भाव, भ्रम, दुबधा। अज्ञान। द्वैतवाद।
द्वैतवन—[सं० क्ली०] एक तपोवन जिसमें युधिष्ठिर ने वनवास के समय कुछ काल तक निवास किया था।
द्वैतवाद—[सं० पु०] जीव और ईश्वर को पृथक् पृथक् मानना ही द्वैतवाद का चरम सिद्धान्त है।
द्वैतवादिन्—[सं० त्रि०] ईश्वर और जीव में भेद मानने वाला।
द्वैताद्वैत—[सं० क्ली०] जीव और ईश्वर का भेद और अभेद। जो जीव और ईश्वर का भेद तथा अभेद दोनों को ही मानते हैं, उन्हें द्वैताद्वैतवादी कहते हैं।
द्वैधीभाव—[सं० पु०] परस्पर विरोध भाव। भीतर कुछ और बाहर कुछ। भाव।
द्वैपायन—[सं० पु०] व्यासदेव। इनका जन्म यमुना नदी के किनारे एक द्वीप में हुआ था। इसीसे इनका नाम द्वैपायन पड़ा है।
द्वैभाव्य—[सं० त्रि०] द्विभावयुक्त। जो दो भागों में विभक्त हो।
द्वैरथ—[सं० क्ली०] वह लड़ाई जो दो रथों द्वारा की जाय।
द्व्यक्ष—[सं० त्रि०] जिसके दो आँखें हों।
द्व्यशीति—[सं० स्त्री०] बयासी की संख्या।
द्व्यष्ट—[सं० क्ली०] ताम्र, ताँबा।
द्व्यह—[सं० पु०] दो दिन।
द्व्याचित—[सं० त्रि०] पाचक, पकानेवाला। अवहारक, ले जानेवाला।
द्व्यामुष्यायण—[सं० पु०] वह पुत्र जो एक से तो उत्पन्न हो और दूसरे के द्वारा दत्तक के रूप में ग्रहण किया हो।

—:०:—

ध

ध—हिन्दी या संस्कृत का उन्नीसवाँ व्यंजन और तवर्ग का चौथा वर्ण।

ध—[सं० क्ली०] धन, दौलत। [पु०] ब्रह्मा। कुबेर। धर्म।

धंगर—[हि० पु०] ग्वाल, अहीर। चरवाहा।

धंदर—[हि० पु०] एक प्रकार का धारीदार कपड़ा।

धंधलाना—[हि० क्रि०] छल-छन्द करना। ढंग रचना। आम्बर रचना।

धंधा—[हि० पु०] व्यवसाय, उद्यम, पेशा।

धंधाला—[हि० स्त्री०] कुटनी, दूती, दलाल।

धक—[हि० स्त्री०] हृदय के जल्दी जल्दी कूदने का भाव या शब्द।

धक—[हि० क्रि० वि०] अचानक, एकबारगी।

धकपकाना—[हि० क्रि०] भय खाना। डरना।

धगड़—[हि० पु०] उपपति, जार।

धगड़बाज—[हि० वि०] व्यभिचारिणी, कुलटा।

धगरिन—[हि० स्त्री०] धाँगर जाति की स्त्री। यह नवजात शिशु का नाल काटती है।

धज—[हि० स्त्री०] सुन्दर रचना। सुन्दर ढङ्ग। ठसक। रूपरंग।

धजबड़—[हि० स्त्री०] तलवार।

धजा—[हि० स्त्री०] ध्वजा। पताका। आकृति। कतरन।

धज्जी—[हि० स्त्री०] कटा हुआ लम्बा पतला टुकड़ा।

धटिका—[सं० स्त्री०] पाँच सेर की एक तौल। पसेरी। कोपीन, लंगोट।

धटीदान—[सं० क्ली०] गर्भाधान के पश्चात् स्त्रियों को जो चीरवस्त्र दान दिया जाता है, उसी को धटीदान कहते हैं।

धड़ंग—[हि० वि०] नंगा।

धड़कन—[हि० स्त्री०] हृदय का स्पन्दन।

धड़ाबन्दी—[हि० स्त्री०] धड़ा बाँधने का काम। लड़ाई के पहले दो पक्षों का अपनी अपनी सेना का बल एक दूसरे के बराबर करना।

धड़ी—[हि० स्त्री०] चार या पाँच सेर की तौल।

धत्—[हि० अव्य०] दुतकारने की आवाज़। हाथी को पीछे हटानेवाला शब्द।

धतूरा—[हि० पु०] एक प्रकार का विषैला वृक्ष।

धत्तूर—[सं० पु०] धतूरा।

धधक—[हि० स्त्री०] आग की लपट।

धन—[सं० क्ली०] जीवनोपाय, गोधन, द्रविण, सम्पत्ति, दौलत।

धनक—[सं० पु०] धन की इच्छा। राजा कृतवीर्य के पिता।

धनक—[हि० पु०] धनुष, कमान। गोटा। एक प्रकार की ओढ़नी।

धनकुट्टी—[हि० स्त्री०] धान कूटने का काम। ओखली, मूसल।

धनकुबेर—[हि० पु०] अत्यन्त धनी मनुष्य।

धनकोटा—[हि० पु०] एक प्रकार का पहाड़ी पौधा जिससे नैपाली कागज बनता है।

धनञ्जय—[सं० पु०] आग। चित्रक-वृक्ष, चीता। अर्जुन। अर्जुन वृक्ष। विष्णु। शरीरस्थ पाँच वायुओं में से एक। एक नाग जो जलाशयों का अधिपति माना गया है। एक जैन कवि।

धनद—[सं० पु०] कुबेर।

धनदण्ड—[सं० पु०] एक प्रकार का दण्ड जिसमें अपराधी से धन लिया जाता है।

धनदत्त—[सं० पु०] धन देनेवाला। नामभेद, किसी का नाम।

धनदा—[सं० त्रि०] धन देनेवाली। [स्त्री०] देवी का एक नाम। आश्विन कृष्णा एकादशी का नाम।

धनदानुज—[सं० पु०] रावण, कुम्भकर्ण आदि।

धनदायिन्—[सं० त्रि०] धनदाता। अग्नि।

धनधान्य—[सं० पु०] धन और अन्न आदि सामग्री और सम्पत्ति।

धनपति—[सं० पु०] कुबेर। शरीर की एक वायु का नाम।

धनपत्र—[सं० पु०] बही-खाता।

धनपिशाचिका—[सं० स्त्री०] धनाशा। धन का लोभ।

धनप्रिया—[सं० स्त्री०] एक प्रकार का जामुन।

धनमद—[सं० पु०] धन का घमंड।

धनअर्च—[सं० पु०] जिसकी आराधना करने से धन मिलता है।

धनलुब्ध—[सं० त्रि०] अर्थलोभी। धन का लालची।

धनवा—[हि० पु०] एक प्रकार की घास।

धनसार—[हि० पु०] अनाज रखने की कोठरी या घेरा।

धनस्यक—[सं० त्रि०] धन की इच्छा करने वाला। [पु०] गोखरू।

धनहर—[सं० त्रि०] धन चुराने वाला। [क्ली०] चोर नामक गन्ध द्रव्य।

तस्कर, चोर।

धना—[सं० स्त्री०] एक रागिणी विशेष। धनिया।

धनाढ्य—[सं० त्रि०] धनवान्। कोषाध्यक्ष। भंडारी।

धनाना—[हि० क्रि०] गाय का गर्भवती होना।

धनाश्री—[सं० स्त्री०] रागिणी-विशेष।

धनिष्ट—[सं० त्रि०] बहुत धनी।

धनी—[सं० स्त्री०] युवती स्त्री। बहू। [हि० वि०] धनवान्। पति। स्वामी।

धनु—[सं० पु०] चाप, धनुष, कमान। पियाल का वृक्ष। फलित ज्योतिष में एक लग्न। [त्रि०] धनुर्द्धर। धनुष धारण करनेवाला। बहुत तेज चलनेवाला।

धनुआ—[हि० पु०] धनुष। कमान।

धनुःकाण्ड—[सं० क्ली०] तीर और कमान।

धनुर्गुण—[सं० पु०] धनुष की डोरी। चिल्ला।

धनुद्रुम—[सं० पु०] बाँस। वंशवृक्ष।

धनुर्द्धर—[सं० पु०] धनुष धारण करने वाला। धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

धनुर्धारिन्—[सं० त्रि०] धनुष धारण करने वाला।

धनुर्भृत—[सं० त्रि०] धनुष धारण करने वाला योद्धा।

धनुर्मह—[सं० पु०] धनुर्यज्ञ।

धनुर्मार्ग—[सं० पु०] वक्र, टेढ़ा।

धनुर्यज्ञ—[सं० पु०] धनुष सम्बन्धी उत्सव। मिथिला के राजा जनक ने अपनी कन्या सीता के विवाहार्थ वर चुनने के लिये इस प्रकार का यज्ञ किया था।

धनुर्यास—[सं० पु०] धन्वयास, दुरालभा, जवासा। [स्त्री०] सोमवल्ली, सोमलता।

धनुर्वात—[सं० पु०] एक वायु रोग। इसमें शरीर धनुष की तरह झुक कर टेढ़ा हो जाता है।

धनुर्विद्या—[सं० स्त्री०] धनुषी विद्या। धनुष चलाने की विद्या।

धनुर्वीज—[सं० पु०] भिलावाँ।

धनुर्वेद—[सं० पु०] धनुर्विद्या बोधक शास्त्र।

धनुष—[सं० पु०] एक ऋषि का नाम। कुक्कुर। कुत्ता।

धनुषाक्ष—[सं० पु०] एक ऋषि का नाम।

धनुष्पाणि—[सं० त्रि०] जिसके हाथ में धनुष हो।

धनुस्—[सं० क्ली०] चाप, धन्व, शरासन, कोदण्ड, कार्मुक, स्थावर।

धनुस्तम्भ—[सं० पु०] जिस वायु रोग में सारा शरीर धनुष की तरह टेढ़ा हो जाता है, उसे धनुस्तम्भ कहते हैं।

धनुहाई—[हि० स्त्री०] धनुष की लड़ाई।

धनुही—[हि० स्त्री०] लड़कों के खेलने की कमान।

धनू—[सं० स्त्री०] धनुष, चाप। धान्य-संचय।

धनेयक—[सं० क्ली०] धनिया।

धनेश—[सं० पु०] विष्णु, कुबेर, धन का स्वामी।

धनेश्वरी—आसाम की एक नदी।

धनैश्वर्य—[सं० क्ली०] धनसम्पत्ति।

धनैषिन—[सं० त्रि०] धन चाहनेवाला।

धनोष्मन—[सं० पु०] धन का लालच।

धन्नासिका—[सं० स्त्री०] वीर और शृंगार रस के लिये गायी जाने वाली एक रागिनी-विशेष।

धन्य—[सं० पु०] एक प्रकार का शाल वृक्ष। [त्रि०] पुण्यवान्। सुकृती। जो अपने नाम, यश और कीर्ति आदि द्वारा विख्यात हों।

धन्यवाद—[सं० पु०] साधुवाद, प्रशंसा। कृतज्ञता सूचक शब्द।

धन्या—[सं० स्त्री०] छोटा आँवला। धनिया। मनु की एक कन्या।

धन्याक—[सं० क्ली०] धनिया।

धन्व—[सं० क्ली०] धनुष, चाप। धन्वन्तरि के पिता। जवासा।

धन्वज—[सं० त्रि०] मरु देश में उत्पन्न।

धन्वन—[सं० क्ली०] धनुष, कमान। जलहीन प्रदेश। आकाश।

धन्वन्तर—[सं० क्ली०] चार हाथ की एक माप।

धन्वन्तरि—[सं० पु०] देवताओं के वैद्य जो पुराणानुसार समुद्रमन्थन के समय समुद्र से निकले थे,

धन्वायन—[सं० त्रि०] जिससे मरु देश पार किया जाय।

धन्वायिन—[सं० त्रि०] धनुर्द्धर। [पु०] रुद्रदेव।

धन्विन—[सं० त्रि०] धनुर्द्धर। वीर। विदग्ध। [पु०] जवारस, दुरालभा। अर्जुन वृक्ष। वकुल। मौलश्री वृक्ष। पार्थ, धनंजय, अर्जुन। विष्णु। महादेव।

धबला—[हि० पु०] एक प्रकार का ढीला ढाला पहनावा जिससे कमर के नीचे का अंग ढाँका जाता है।

धब्बा—[हि० पु०] दाग, कलङ्क, दोष।

धमधूसर—[हि० वि०] स्थूल और बेडौल आदमी।

धमनि—[सं० स्त्री०] धमनी, नाड़ी। गति कर्ता। वाक। शब्द।

धमनी—[सं० स्त्री०] नाड़ी। शरीर के भीतर की वह छोटी या बड़ी नली

जिसमें रक्त आदि का संचार होता रहता है।

धमसा—[हि० पु०] नगाड़ा, धौंसा।

धमार—[हि० स्त्री०] उपद्रव। नटों की कलाबाजी। होली का एक गीत।

धमि—[सं० स्त्री०] अँतड़ी, अन्त्र। धमनी।

धर—[सं० पु०] पर्वत, पहाड़। कपास का डोंड़। कच्छप। विष्णु। व्यभिचारी पुरुष।

धरण—[सं० क्ली०] परिमाण भेद। ग्रहण करने की क्रिया। [पु०] लोक। संसार। स्तन। धान। सूर्य। पुल। अर्कवृक्ष।

धरणि—[सं० स्त्री०] पृथ्वी। धमनी नाड़ी। शाल्मली वृक्ष।

धरणिधर—[सं० पु०] पर्वत। पहाड़। कच्छप। विष्णु। शिव। महादेव। शेषनाग।

धरणी—[सं० स्त्री०] पृथ्वी। शाल्मली वृक्ष। नाड़ी। कन्दविशेष। पुनर्नवा।

धरणीकीलक—[सं० पु०] पर्वत। पहाड़। पुराण में लिखा है कि पहाड़ पृथ्वी को कील की नाई दबाकर सँभाले हुए हैं।

धरणीश्वर—[सं० पु०] शिव। विष्णु। राजा।

धरणीसुता—] सं० स्त्री०] सीता।

धरती—[हि० स्त्री०] पृथ्वी। संसार।

धरहरिया—[हि०पु०] रक्षक। बीच बचाव करा देने वाला।

धरा—[सं० स्त्री०] धरती। पृथ्वी। जमीन।

धरातल—[सं० पु०] पृथ्वी। धरती। सतह। लम्बाई-चौड़ाई का गुणनफल।

धराधर—[सं० पु०] पर्वत। अनन्त। शेषनाग।

धराधीश—[सं० पु०] नृप। राजा।

धरापुत्र—[सं० पु०] मंगलग्रह।

धराहर—[हि० पु०] मिनार। वह ऊँचा खंभा जिसके भीतर सीढ़ियाँ हों।

धरित्री—[सं० स्त्री०] पृथ्वी। भूमि।

धरेल—[हि० स्त्री०] रखेली स्त्री।

धरोहर—[हि० स्त्री०] थाती। अमानत।

धर्त्ता—[सं० पु०] धारण करनेवाला। कोई का काम ऊपर लेनेवाला।

धत्तूर—[सं० पु] धतूरा।

धर्म—[सं० क्ली०] वह आचरण या वृत्ति जिससे जाति या समाज की रक्षा और सुख-शान्ति की वृद्धि हो। सत्कर्म। सदाचार।

धर्मकीलक—[सं० पु०] ब्रह्म-शासन।

धर्मकेतु-[सं० पु०] बुद्ध। एक व्याध।

धर्मग्रन्थ—[सं० पु०] वह ग्रंथ जिसमें किसी जन-समाज के आचार-व्यवहार और उपासना आदि के संबंध में शिक्षा हो।

धर्मघट—[सं० पु०] सुगन्धित जल से भरा हुआ घड़ा जो वैशाख में दान किया जाता है।

धर्मघोष—एक जैन ग्रन्थकार।

धर्मघ्न—[सं० त्रि०] धर्मनाशक। धर्मद्वेषी।

धर्मचक्र—[सं० क्ली०] धर्मसमूह। बुद्ध। अस्त्र-विशेष।

धर्मचर्या—[सं० स्त्री०] धर्म का अनुष्ठान।

धर्मचारिणी—[सं० स्त्री०] सहधर्मिणी। स्त्री।

धर्मचारिन्—[सं० त्रि०] धर्म का आचरण करनेवाला।

धर्मज—[सं० पु०] धर्मपत्नी से उत्पन्न प्रथम औरस पुत्र।

धर्मज्ञ-[सं० त्रि०] धर्म को जाननेवाला।

धर्मतः—[सं० अव्य०] धर्मानुसार। धर्म को साक्षी करके।

धर्मतत्त्व-[सं० क्ली०] धर्मरहस्य। धर्म का निगूढ़ मर्म।

धर्मदान—[सं० पु०] सात्विक बुद्धि की प्रेरणा से किया गया दान।

धर्मदार—[सं० क्ली०] धर्मपत्नी।

धर्मद्रोहिन्—[सं० पु०] राक्षस। धर्म द्वेषकारी।

धर्मधातु—[सं० पु०] बुद्धदेव।

धर्मध्वज—[सं० पु०] मिथिला नगर के जनकवंशीय एक राजा।

धर्मन्—[सं० पु०] धर्म। पुण्य-कर्म। [त्रि०] धारण करनेवाला।

धर्मनन्दन—[सं० पु०] धर्मपुत्र। युधिष्ठिर।

धर्मनन्दिन्—[सं० पु०] एक बौद्ध-पंडित। इन्होंने कई बौद्ध शास्त्रों का चीनी भाषा में अनुवाद किया था।

धर्मनिष्ठा—[सं० त्रि०] धर्मपरायणता। धर्म में जिसकी आस्था हो। धार्मिक।

धर्मनीति—[सं० स्त्री०] जिस शास्त्र से कर्त्तव्याकर्त्तव्य का अवधारण और उसके फलाफल का हाल मालूम हो उसे धर्मनीति कहते हैं।

धर्मपट्ट—[सं० पु०] वह पत्र जो किसी राजा या धर्माधिकारी की ओर से दिया जाय।

धर्मपति—[सं० पु०] धर्मात्मा पुरुष। वरुणदेवता। धर्मशील।

धर्मपत्र—[सं० क्ली०] यज्ञोडुम्बर। गूलर। इसके पत्ते यज्ञादि धर्म-कार्यों में काम आते हैं।

धर्मपरायण—[सं० त्रि०] जो यथा शक्ति धर्मकार्य का अनुष्ठान करता है। धर्मात्मा। धर्मशील।

धर्मपाल—[सं० पु०] धर्म की रक्षा करनेवाला। राजा दशरथ के एक मंत्री का नाम।

धर्मपुरी—मन्द्राज के अन्तर्गत सलेम जिले का एक तालुक।

धर्मप्रतिरूपक—[सं० पु०] यमपुरी। न्यायालय। कचहरी।

धर्मप्रदीप—[सं० पु०] धर्मालोक। धर्म का प्रकाश। धर्मज्ञ।

धर्मप्रवचन-[सं० पु०] शाक्य मुनि।

धर्मबुद्धि—[सं० स्त्री०] भले-बुरे का विचार। धर्मज्ञान।

धर्मभगिनी—[सं० स्त्री०] धर्म के अनुसार मानी हुई बहन। गुरुकन्या।

धर्मभाणक—[सं० पु०] कथा-पुराण बाचनेवाला। कथकड़।

धर्मभिक्षुक—[सं० पु०] वह जिसने धर्मार्थ नौ प्रकार की भिक्षावृत्ति ग्रहण की हो।

धर्मभीरु—[सं० पु०] जिसे धर्म का भय हो। जो अधर्म करते हुए बहुत डरता हो।

धर्मभृत—[सं० त्रि०] जो धर्म की रक्षा करता हो। तेरहवें मनु के एक पुत्र का नाम।

धर्मभ्रातृ—[सं० पु०] जिनके साथ एक ही आश्रम में अवस्थान किया जाय। एकाश्रमी।

धर्ममहामात्र—[सं० पु०] धर्म-विषयक मंत्री।

धर्ममित्र—[सं० पु०] एक बौद्धाचार्य।

धर्ममूल-[सं० क्ली०] धर्म का प्रमाण। मनु के मतानुसार समस्त वेद।

धर्ममेघ—[सं० पु०] पातञ्जलोक्त असंप्रज्ञात समाधि।

धर्मयुग—[सं० क्ली०] सत्ययुग।

धर्मयुद्ध—[सं० पु०] वह युद्ध जिसमें किसी प्रकार का अन्याय या नियम का भंग न हो।

धर्मराज—[सं० पु०] जिन। इनके मत से अहिंसा ही परम धर्म है। यम। नरपति, राजा। युधिष्ठिर। धर्मप्रधान। धर्म्मठाकुर।

धर्मरातृ—[सं० त्रि०] धर्मदाता। अप, जल, पानी।

धर्मवर्द्धन—[सं० त्रि०] धर्मपोषक। धर्म का प्रतिपादक। [पु०] महादेव।

धर्मवर्म—[सं० त्रि०] जिसका धर्म वर्म (कवच) स्वरूप हो। [क्ली०] धर्मरक्षक।

धर्मवत्सल—[सं० त्रि०] धर्मप्रिय। कर्त्तव्यनिष्ठ।

धर्मवाद-[सं०पु०] धर्म-सम्बन्धीय तर्क।

धर्मवादिन्—[सं० त्रि०] धर्मवक्ता। धर्मोपदेश देनेवाला।

धर्मवासर—[सं० पु०] इस दिन पुण्य कार्यादि किये जाते हैं। पूर्णिमा।

धर्मवाहन - [सं० पु०] शिव, महादेव। [क्ली०] धर्म का प्रावण। भैंसा।

धर्मवाह्य—[सं० त्रि०] जो किसी धर्म को नहीं मानता हो।

धर्मविद्—[सं० त्रि०] धर्मज्ञ। धर्म जाननेवाला।

धर्मविदुत्तम—[सं० पु०] विष्णु।

धर्मविद्या—[सं० स्त्री०] मीमांसादि विद्या। धर्मोपचलित शास्त्र। [त्रि०] धर्मशास्त्र जाननेवाला।

धर्मविप्लव—[सं० पु०] धर्म का व्यतिक्रम। जब कभी धर्म का विप्लव उपस्थित होता है, तभी भगवान् लोकस्थिति के निमित्त अवतीर्ण होते हैं। उनके अवतार से ही धर्मविप्लव निवृत्त हो जाता है।

धर्मविवेचन—[सं० क्ली०] धर्म-निर्णय, धर्म-अधर्म का विचार। धर्म के सम्बन्ध में चिंतन। किसी के दोषी वा निर्दोष होने का निर्णय।

धर्मवीर—[सं० पु०] वीररस के अनुसार वह जो धर्म करने में साहसी हो।

धर्मव्याध—[सं० पु०] एक धार्मिक व्याध। मिथिलापुरवासी एक व्याध। इसका विषय वराहपुराण में मिलता है।

धर्मवृक्ष—[सं०] पीपल का पेड़।

धर्मशासन—[सं० क्ली०] धर्म का अनुशासन। धर्मशास्त्र।

धर्मशास्त्र—[सं० क्ली०] धर्मशासन, मन्वादि-प्रणीत धर्मप्रतिपादक ग्रंथ-भेद। वह ग्रंथ जिसमें समाज के शासन के निमित्त नीति और सदाचारसंबंधी नियम हों।

धर्मसंश्रित—[सं० त्रि०] धर्मत्व का अभिलाषी।

धर्मसंहिता—[सं० स्त्री०] धर्मशास्त्र। जिस शास्त्र में धर्म का निरूपण हो। जिसमें इहलौकिक और पारलौकिक विषय मीमांसित हुआ हो।

धर्मसभा—[सं० स्त्री०] वह स्थान जहाँ बैठकर न्यायाधीश न्याय करे।

धर्मसार—[सं० पु०] श्रेष्ठ पुण्य कर्म। पुण्य कर्म का साधन।

धर्मसिंह—चौहानराज हम्मीर के प्रधान सेनापति।

धर्मसुत—[सं० पु०] युधिष्ठिर।

धर्मसूत्र—[सं० क्ली०] जैमिनी का बनाया हुआ एक प्रकार का ग्रंथ जिसमें धर्म की मीमांसा की गई है।

धर्मस्थ-[सं०पु०] विचारक, न्यायकर्त्ता। [त्रि०] जो केवल धर्म में अवस्थित या लगा रहता हो।

धर्महन्तृ—[सं० त्रि०] धर्म-कर्म का विरोधक। जो धर्म के कामों में बाधा डालता हो।

धर्मागम—[सं० पु०] धर्मशास्त्र।

धर्माङ्ग—[सं० पु० स्त्री०] वक, बगला। इसका अंग धर्म के समान शुभ्र होता है।

धर्माचार्य—[सं० पु०] धर्मशिक्षक। ऋग्वेदियों में उन ऋषियों में से एक,

जिनके निमित्त तर्पण किया जाता है। नैमित्तिकादि प्रलयहर, वैदिक धर्माचार की शिक्षा के निमित्त बीजस्वरूप धर्म-प्रवर्त्तक एक ऋषि का नाम।

धर्मात्मन्—[सं० त्रि०] धर्मशील। धार्मिक।

धर्माधर्म—[सं० पु०] पुण्य और पाप।

धर्माधिकरण—[सं० क्ली०] विचारालय। वह स्थान जहाँ राजा मुकद्दमों पर विचार करता है।

धर्माधिकरणिन्—[सं० पु०] विशिष्ट विचारक। धर्माध्यक्ष। धार्मिक अक्षदर्शक। प्राड्विवाक।

धर्माधिकारिन्—[सं० पु०] धर्म-अधर्म की व्यवस्था देने वाला। विचारक। न्यायाधीश।

धर्माधिष्ठान—[सं० क्ली०] विचारालय।

धर्मानुयायिन्—[सं० त्रि०] जो धर्मपथ के अनुसार चलते हों।

धर्मार्थ-[सं० अव्य०] धर्म के निमित्त। परोपकार के लिये।

धर्मालोक—[सं० त्रि०] छद्म वेशी, कपटाचारी, पाखण्डी।

धर्मावतार—[सं० पु०] धर्म का अवतार। साक्षात् धर्म। धर्मात्मा।

धर्माशोक—[सं० पु०] राजा अशोक बौद्धधर्म ग्रहण करने के बाद 'धर्माशोक' नाम से विख्यात हुए।

धर्मासन—[सं० क्ली०] वह आसन या चौकी जिस पर बैठकर न्यायाधीश न्याय करता है।

धर्मिन्—[सं० त्रि०] धर्मविशिष्ट, जिसमें धर्म हो। धार्मिक। विष्णु। धर्म का आधार। रेणुका। जाया। स्त्री।

धर्मिष्ठ—[सं० पु०] अत्यन्त धार्मिक, पुण्यात्मा। विष्णु।

धर्मीपुत्र—[सं० पु०] अभिनयकर्त्ता। नाटक का कोई पात्र।

धर्मेन्द्र—[सं० पु०] धर्मराज। यम।

धर्मेश्वर—[सं० पु०] यम। धर्मराज।

धर्मोत्तराचार्य-एक बौद्ध आचार्य और ग्रन्थकार।

धर्मोपदेश—[सं० पु०] धर्मशास्त्र, मन्वादिशास्त्र। धर्म की शिक्षा।

धर्मोपाध्याय—[सं० पु०] पुरोहित।

धर्मविवाह—[सं० पु०] धर्मयुक्त विवाह। ब्राह्म, आर्ष, गान्धर्व और प्राजापत्य।

धर्ष—[सं० पु०] अमर्ष, क्रोध, रिस। शक्तिबन्धन। अविनीत व्यवहार। गुस्ताखी। असहनशीलता। अधीरता। रोक। दबाव। नपुंसक। हिंसा। जी दुखाने का काम। अनादर। सतीत्वहरण।

धर्षकारिणी—[सं० त्रि०] दूषिता कन्या। व्यभिचारिणी।

धर्षणा—[सं० स्त्री०] अवमानना। अवज्ञा। अपमान। हतक। नीचा दिखाने का काम। सतीत्वहरण। संभोग। रति।

धर्षणी—[सं० स्त्री०] असती नारी। कुलटा।

धर्षिन्—[सं० त्रि०] धर्षणा करने वाला। आक्रमण करने वाला। पराभवकारी। नीचा दिखानेवाला। अपमान करनेवाला।

धव—[सं० त्रि०] कम्पनकारक। कँपाने या डराने वाला। [पु०] पति, स्वामी। नर, पुरुष। धूर्त्त आदमी। एक जंगली पेड़। दृढ़ तरु। शुष्क वृक्ष। पाण्डु तरु। कषाय तरु।

धवनि—[सं० स्त्री०] अनल। आग।

धवनी—[हि० स्त्री०] लोहारों की धौंकनी। भाथी।

धवरहर—[हि० पु०] मकान का एक भाग जो खंभे की तरह ऊपर दूर तक चला जाता है। इस पर चढ़ने के लिए भीतर सीढ़ियाँ बनी रहती हैं।

धवरी—[हि० वि०] सफेद, उजली। [स्त्री०] धवर पक्षी की मादा। सफेद रंग की गाय।

धवल—[सं० पु०] धव वृक्ष। धव का पेड़। चीनकपूर। सिन्दूर। सफेद मिर्च। एक प्रकार का राग। वृषश्रेष्ठ, भारी बैल। पक्षि-विशेष। धवर पक्षी। छप्पय छन्द का ४५ वाँ भेद। अर्जुन वृक्ष। सफेद कोढ़। शंख। [त्रि०] श्वेत, उजला। निर्मल। मनोहर, सुन्दर।

धवलपक्ष—[सं० पु० स्त्री०] हंस। [पु०] शुक्ल पक्ष। उजला पाख।

धवलमृत्तिका—[सं० स्त्री०] दुद्धी। खरिया मिट्टी।

धवला—[सं० स्त्री०] सफेद गाय। वृन्दावन का एक पहाड़। [पु०] सफेद बैल। [त्रि०] श्वेत, उजली। श्वेतशारिवा। अनन्तमूल। वचा। श्वेतापराजिता। पापरोगान्तक रस।

धवलागिरि—हिमालय पहाड़ की एक प्रख्यात चोटी जो नैपाल राज्य में है। यह समुद्र पृष्ठ से २६८२६ फुट ऊँची है।

धवलाङ्ग—[सं० पु०] हंस।

धवली—[सं० स्त्री०] सफेद गाय। सफेद मिर्च। एक रोग जिसमें बाल सफेद हो जाते हैं।

धवलेक्षु—[सं० पु०] सफेद ऊँख।

धवलोत्पल—[सं० क्ली०] कुमुद। एक फूल।

धवाना—[हि० क्रि०] दौड़ाना।

धवित्र—[सं० क्ली०] हरिण के चमड़े का बना हुआ एक प्रकार का पंखा। [त्रि०] हटानेवाला। अपनयन कारक।

धस—[हि० पु०] डुबकी । गोता । भुरभुरी जमीन ।

धांक—[हि० पु०] एक जंगली जाति । इसका आचार-व्यवहार भीलों से बहुत कुछ मिलता जुलता है ।

धाँगड़—[हि० पु०] अनार्य जंगली जाति । कुएँ और तालाब खोदने का काम करने वाली एक जाति ।

धांधा—[हि० स्त्री०] इलायची ।

धांधली—[हि० स्त्री०] उपद्रवी, पाजी । नटखट । धोखे बाज ।

धा—[सं० पु०] ब्रह्मा । बृहस्पति । [त्रि०] धारक । धारण करनेवाला ।

धा—[हि० पु०] संगीत में धैवत शब्द या स्वर का संकेत । तबले का एक बोल ।

धाक—[सं० पु०] वृष, बैल । आहार, भोजन । अन्न, अनाज । खंभा । आधार ।

धाक—[हि० स्त्री०] आतङ्क, रोब । प्रसिद्ध । ढाक, पलास ।

धाड़—[हि० स्त्री०] डाकुओं का आक्रमण । झुण्ड, जत्था ।

धातकी—[सं० स्त्री०] पुष्प-विशेष । धव का फूल । ताम्रपुष्पी । धव का फूल । कुमुदा । बहुपुष्पिका ।

धाता—[सं० पु०] विधाता । ब्रह्मा

धातु—[सं० पु०] परमात्मा । शरीर को धारण करने वाला द्रव्य । वात, पित्त और कफ । खनिज द्रव्य । स्वर्ण, रौप्य, ताम्र, रंग, यशद, सीस तथा लौह इत्यादि ।

धातुक—[सं० पु०] शैलज, शिलाजीत ।

धातुक्षय—[सं० पु०] खाँसी का रोग । प्रमेह आदि रोग ।

धातुगर्भ—[सं० पु०] वह कंगूरेदार डिब्बा या पात्र जिसमें बौद्ध लोग बुद्ध या अपने दूसरे भारी साधु-महात्माओं के दाँत या हड्डियाँ आदि रखते हैं ।

धातुघ्न—[सं० क्ली०] धातुनाशन शील । वह पदार्थ जिससे शरीर का धातु नष्ट हो । काँजी ।

धातुचैतन्य—[सं० त्रि०] धातु या वीर्य को उत्पन्न या चैतन्य करनेवाला ।

धातुप—[सं० पु०] रस रूप प्रथम धातु । शरीर में वह रस या पतला धातु जो भोजन के उपरान्त शीघ्र तैयार हो जाता है ।

धातुपुष्ट—[सं० त्रि०] वीर्य्य को गाढ़ा करनेवाला ।

धातुप्रदान—[हि० पु०] शुक्र । वीर्य ।

धातुबैरी—[हि० पु०] गंधक ।

धातुवादिन्-[सं० पु०] कारन्धमी । रसायन की सहायता से सोना या चाँदी बनानेवाला । रसायनी ।

धातुशेखर—[सं० क्ली०] सीसक । सीसा । धातुकाशीष । कसीस ।

धातुसेन-एक मौर्य वंशीय बौद्ध राजा ।

धातुस्तम्भक [सं० त्रि०] वीर्य को रोकनेवाला ।

धातुहन—[सं० पु०] गंधक ।

धातृ—[सं० त्रि०] धारक । धारण करनेवाला । पोषक । पालन करनेवाला । [पु०] ब्रह्मा । विष्णु । आत्मा । वायु भेद । आदित्यभेद । ब्रह्मा के एक पुत्र का नाम । भृगुमुनि के एक पुत्र का नाम । प्रजा सर्गकारक सप्तर्षि ।

धातृपुत्र—[सं० पु०] ब्रह्मा के पुत्र सनत्कुमार ।

धात्री—[सं० स्त्री०] माता । मा ।

धात्रेयिका—[सं० स्त्री०] धात्री । धाय । दाई । आमलकी । आँवला ।

धान—[सं० क्ली०] धारण । पोषण । धारणाधार ।

धान—[हि० पु०] तृण जाति का एक पौधा ।

धानक—[हि० पु०] धनिया । एक रत्ती का चौथाई भाग ।

धानक—[हि० पु०] धनुर्धारी । तीरन्दाज ।

धानकी—[हि० पु०] धनुर्धारी । कामदेव ।

धानाचूर्ण—[सं० क्ली०] सत्तू ।

धानुष्क—[सं० पु०] धनुर्धर । धनुष चलाकर अपनी जीविका का निर्वाह करनेवाला ।

धानुष्य—[सं० पु०] वंश । बाँस ।

धान्धा—[सं० स्त्री०] पृथ्विका । इलायची ।

धान्य-[सं० क्ली०] धान । भोग्य । भोज्य । भोगार्ह । अन्न । अद्य । जीव साधन । स्तम्बकरि । व्रीहि ।

धान्यकञ्चकी—[सं० पु०] धान का छिलका ।

धान्यकतण्डुल—[सं० पु०] धान का चावल ।

धान्यकल्प—[सं० पु०] तुष । भूसी ।

धान्यमालिनी—[सं० स्त्री०] रावण के यहाँ रहनेवाली एक राक्षसी । इसे रावण ने जानकी को समझाने के लिए नियुक्त किया था ।

धान्यराज—[सं० पु०] यव । जौ ।

धान्यवीज—[सं० क्ली०] धान का बीज । धनिया ।

धान्यवीर-[सं० पु०] माष । उरद ।

धान्याभ्र—[सं० क्ली०] भस्म बनाने के लिए धान की सहायता से शोधा और साफ किया हुआ अभ्रक ।

धाप—[हि० पु०] लम्बा चौड़ा मैदान । दूरी की एक माप । पानी की धार । तृप्ति । सन्तोष । जी भरना ।

धाम—[सं० पु०] महाभारत के अनुसार एक प्रकार के देवता । विष्णु । चम्पक गोत्रीय एक राजा ।

धामक—[सं० पु०] एक मापक परिमाण । एक माशा तौल । कत्तृण । एक प्रकार की सुगंध घास ।

धामकेशिन्—[सं० पु०] ज्योतिर्मय किरण । किरणयुक्त सूर्य ।

धामन्—[सं० क्ली०] गृह । घर । देह । शरीर । शोभा । प्रमाण । रश्मि । स्थान । जन्म । विष्णु । तेज । दृगोपलक्षित । बागडोर । लगाम । देवस्थान । ज्योति । परलोक । स्वर्ग । अवस्था । गति ।

धामन—[हि० पु०] साल आदि के जंगलों में मिलनेवाला एक प्रकार का पेड़ । एक प्रकार का बाँस ।

धामनिका—[सं० स्त्री०] धमनी । नाड़ी ।

धामनिधि—[सं० पु०] सूर्य ।

धामनी—[सं० स्त्री०] धमनी । नाड़ी ।

धामा—[हि० पु०] भोजन का निमंत्रण । खाने की दावत ।

धामिन—[हि० स्त्री०] एक प्रकार का साँप । यह कुछ हरापन या पीलापन लिये सफेद रंग का होता है । दक्षिण भारत, राजपूताने तथा आसाम की पहाड़ियों में मिलनेवाला एक प्रकार का पेड़ ।

धाय—[सं० त्रि०] धारण कर्त्ता, धारण करने वाला ।

धाय—[हि० स्त्री०] वह स्त्री जो पराये के बालक को दूध पिलाने और उसका पालन-पोषण करने के लिये नियुक्त हो । दाई । धवई का पेड़ ।

धायस—[सं० त्रि०] धारण कर्त्ता । धारण करने वाला । पालने वाला ।

धार—[सं० क्ली०] वर्षोद्भव जल । इकट्ठा किया हुआ वर्षा का जल ।

धारक—[सं० पु०] कलश, घड़ा ।

धारका—[सं० स्त्री०] योनि, स्त्री की मूत्रेन्द्रिय ।

धारण—[सं० क्ली०] विधारण, ग्रहण, थामना । अपने ऊपर लेना या ठहरना । पहनना । सेवन, रक्षण, जैसे विष धारण करना, औषध धारण करना । निवारण, सम्वरण । वहन, ले जाना । स्थापन । ऋण लेना । [पु०] कश्यप के एक पुत्र का नाम । शिवाजी का एक नाम ।

धारणक—[सं० पु०] कर्जदार, ऋणी ।

धारणा—[सं० स्त्री०] बुद्धि । संस्था, मर्यादा, स्थिति । योग के एक अंग का नाम । अद्वितीय वस्तु के विषय में अन्तरिन्द्रिय धारण का नाम धारणा है ।

धारणावत्—[सं० त्रि०] मेधाशाली । जिसकी धारण शक्ति बहुत प्रबल हो ।

धारणी—[सं० स्त्री०] नाड़िका, नाड़ी । श्रेणी, पंक्ति । धारण करने वाली । पृथ्वी । सीधी लकीर । महाकन्द शाकविशेष । धारणी कन्द ।

धारन—[हि० पु०] एक प्रकार की दवा जो हाथी को खिलाई जाती है ।

धारयितव्य—[सं० त्रि०] धारण करने योग्य । सहनीय ।

धारयित्री—[सं० स्त्री०] धारण करने वाली । पृथ्वी ।

धारागृह—[सं० क्ली०] वह स्थान या घर जिसमें फुहारा लगा हो ।

धाराङ्कुर—[सं० पु०] शीकर । वर्षा की बूँद । घनोपल, ओला, करका । नाशीर । लघुवृष्टि । सरल का गोंद ।

धाराङ्ग—[सं० पु०] एक तीर्थ का नाम । खड्ग । तलवार ।

धाराट—[सं० पु०] चातक । मेघ, बादल । तुरङ्ग, घोड़ा । मतवाला हाथी ।

धाराधर—[सं० पु०] मेघ, बादल । तलवार ।

धारापात—[सं० पु०] पानी का गिरना ।

धाराफल—[सं० पु०] मदनवृक्ष । मैनफल का पेड़ ।

धारावर्ष—[सं० पु०] लगातार बरसना ।

धारावाही—[सं० त्रि०] जो धारा के रूप में आगे बढ़ता हो । अविच्छेद रूप से जायमान ।

धाराश्रु—[सं० क्ली०] अश्रु-प्रवाह । आँसू का गिरना ।

धारि—[सं० क्ली०] आयु, उमर ।

धारिन्—[सं० पु०] पीलू वृक्ष । पीलू का पेड़ । एक वर्ण वृत्त । इसके प्रत्येक चरण में पहले तीन जगण और तब एक यगण होता है । [त्रि०] धारण करनेवाला । किसी ग्रन्थ के तात्पर्य को भली प्रकार जाननेवाला । ऋण लेनेवाला कर्जदार ।

धारिणी—[सं० स्त्री०] धरणी । पृथ्वी । भूमि । सेमर का पेड़ । शाल्मली वृक्ष । चौदह देवताओं की स्त्रियाँ—शची, वनस्पति, गार्गी, धूम्रोर्णा, रुचिराकृति, सिनिवाली, कुहू, राका, अनुमति, आयति, प्रज्ञा, सेला और बेला । आधारस्वरूप । धारणकर्त्री । धारण करने वाली ।

धारी—[हि० स्त्री०] सेना, फौज । समूह, झुण्ड । रेखा, लकीर । पुश्ता ।

धारु—[सं० त्रि०] पानकर्त्ता, पीने वाला ।

धारुजल—[हि० पु०] खड्ग । तलवार ।

धारोष्ण—[सं० क्ली०] थन से निकला हुआ ताजा दूध ।

धार्त्तराष्ट्र—[सं० पु० स्त्री०] धृतराष्ट्र के अपत्य दुर्योधनादि । दुःशला । [पु०] धृतराष्ट्र के वंश का उत्पन्न एक नाम । काले रंग की चोंच और पैरों वाला हंस ।

धार्मपत्तन—[सं० त्रि०] जो अच्छे

स्थान में उत्पन्न हुआ हो। कील। खूँटी।

धार्मिक—[सं० त्रि०] धर्मशील। धर्मात्मा। पुण्यात्मा।

धार्मिकता—[सं० स्त्री०] धर्मशीलता। धार्मिक का भाव।

धार्मिक्य—[सं० क्ली०] धर्मानुशील। धार्मिक होने का भाव।

धार्य—[सं० त्रि०] धारणीय। धारण करने के योग्य। [पु०] वस्त्र। कपड़ा।

धार्ष्ट—[सं० त्रि०] धृष्ट का भाव। धृष्टता।

धार्ष्ट्य—[सं० क्ली०] प्रागल्भ्य। निर्लज्जत्व। बेशर्मी।

धाव—[हि० पु०] एक प्रकार का लम्बा और सुन्दर पेड़। इसे गोलरा, धंवरा, बकली और खरधाया भी कहते हैं।

धावक—[सं० त्रि०] धावनकर्त्ता, दौड़कर चलने वाला। हरकारा। वस्त्रादि प्रक्षालक। रजक, धोबी।

धावड़ा—[हि० पु०] धव का पेड़।

धावण—[हि० पु०] दूत, हरकारा।

धावन—[सं० क्ली०] शीघ्र गमन। प्रक्षालन। धोने या साफ करने का काम। शुद्धि। वह चीज जिससे कोई पदार्थ धोया या साफ किया जाय। दूत। हरकारा।

धावनिका—[सं० स्त्री०] काण्टकारिका। कटेरी। पृश्निपर्णी, पिठवन। कँटीली मकोय।

धावनी—[सं० स्त्री०] पृश्निपर्णी, पिठवन। कण्टकारी, भटकटैया। धातकी। धव का फूल। कौंछ। शणवृक्ष। सन का पेड़।

धावा—[हि० पु०] आक्रमण। चढ़ाई। किसी काम के लिए जल्दी जल्दी जाना।

धाह—[हि० स्त्री०] जोर से चिल्लाकर रोना। धाड़।

धिंगा—[हि० पु०] उपद्रवी, शरारती, निर्लज्ज।

धिआ—[हि० स्त्री०] कन्या, बेटी। कोई छोटी लड़की।

धिक्—[सं० अव्य०] घृणासूचक एक शब्द। लानत। भर्त्सना। तिरस्कार। निंदा, शिकायत।

धिक्कार—[सं० पु०] तिरस्कार, लानत, फटकार।

धिक्क्रिया—[सं० स्त्री०] निन्दा। शिकायत।

धिग्वण—[सं० पु०] मनूक्त सङ्कीर्ण जाति भेद। एक संकर जाति। शूद्र के औरस और वेश्या के गर्भ से जो उत्पन्न होता है, उसे आयोगव कहते हैं। ब्राह्मण पिता और आयोगवी माता से जो जाति उत्पन्न होती है, उसे धिग्वण कहते हैं। यह जाति चर्मकार्य द्वारा अपनी जीविका निर्वाह करती है।

धिमचा—[हि० पु०] एक प्रकार की इमली।

धित—[सं० त्रि०] निहित, स्थापित। रखा हुआ।

धिय—[हि० स्त्री०] कन्या, बेटी। बालिका, लड़की।

धिषण—[सं० पु०] बृहस्पति। ब्रह्मा। नारायण। विष्णु। शिक्षक। गुरु। बुद्धिमान्। समझदार।

धिषणा—[सं० स्त्री०] बुद्धि, अक्ल। स्तुति, प्रशंसा। वाक, वाकशक्ति। प्रस्तर, पत्थर। द्यावापृथिवी, पृथ्वी। स्थान। हविर्द्धान की स्त्री। [त्रि०] धारयित्री, धारण करनेवाली।

धिषणाधिप—[सं० पु०] बृहस्पति। देवताओं के गुरु।

धिषण्य—[सं० त्रि०] आत्मश्लाघी, जो अपनी स्तुति या बड़ाई करने की इच्छा करता हो।

धिष्ट्य—[सं०क्ली०] स्थान, जगह। गृह, घर। नक्षत्र। अग्नि। शक्ति। शुक्राचार्य।

धिष्ण्य—[सं० क्ली०] स्थान। जगह। गृह, घर। अग्नि। नक्षत्र। शक्ति। उल्काभेद। प्राणाभिमानी। [त्रि०] स्थानार्ह। स्तुत्य। स्तुति करने योग्य।

धींग—[हि० पु०] हृष्ट-पुष्ट आदमी। हट्टा कट्ठा आदमी। [वि०]दृढ़, मजबूत। उपद्रवी। शरीर। कुमार्गी। पापी।

धींगरा—[हि०पु०] हृष्ट-पुष्ट। हट्टा-कट्टा मुसंड, मोटा-ताजा। कुकर्मी। गुंडा।

धींगामुश्ती—[हि०स्त्री०]उपद्रव, बदमाशी, बलपूर्वक लड़ना।

धी—[सं० स्त्री०] बुद्धि, ज्ञान, अक्ल। मन, कर्म।

धी—[हि० स्त्री०] लड़की। बेटी।

धीगुण—[सं० पु०] बुद्धि का गुण। कामन्दकी वर्णित बुद्धि के अष्ट गुण, अर्थात्—शुश्रूषा, श्रवण; ग्रहण, धारण, ऊह, अपोहार्थ, विज्ञान और तत्वज्ञान।

धीति—[सं० स्त्री०] पान। पीना। पिपासा। प्यास। अनादर। आराधना। उँगली।

धीदा—[सं० स्त्री०] कन्या। कुंआरी पुत्री, बेटी। [त्रि०] बुद्धिदायक।

धीन्द्रिय—[सं० क्ली०] ज्ञानेन्द्रिय। जैसे—मन, आँख, कान, त्वक्, जीभ, नाक।

धीमति—[सं० स्त्री०] बुद्धिमती।

धीमा तिताला—[हि० पु०] इसमें तीन आघात और एक खाली होता है।

धीमान्—[सं० पु०] बुद्धिमान्, समझदार। बृहस्पति। एक विख्यात भास्कर शिल्पी।

धीमोदिनी—[सं०स्त्री०] मद्य, शराब।

धीया—[हि० स्त्री०] लड़की, बेटी।

धीर—[सं० क्ली०] कुङ्कुम, केसर।

घुसृण, रक्त, काश्मीर, पीतक, वर, संकोच, पिशुन, धीर, वाह्लीक और शोणिताभिध है। ऋषभ नाम की औषध, वलिराज। मन्त्र। चिदाभास द्वारा बुद्धिवृत्तिप्रेरक चिदात्मा। धैर्यान्वित। जिसमें धैर्य हो। बलवान्। विनीत। नम्र। गम्भीर। मनोहर। मन्द।

धीरज—[हि० पु०] देखो 'धैर्य'।

धीरट—[हि० पु०] हंस पक्षी।

धीरता—[सं०स्त्री०] चित्त की स्थिरता, मन की दृढ़ता। स्थैर्य, सन्तोष। पाण्डित्य। नायक गुणभेद।

धीरपत्री—[सं० स्त्री०] धरणीकन्द, जमीकन्द। [त्रि०] मनोहर पत्रयुक्त, जिसके अच्छे अच्छे पत्ते हों।

धीरप्रशान्त—[सं० पु०] नायकभेद। जहाँ नायक बहुगुणयुक्त ब्राह्मणादि हों, वहाँ धीरप्रशान्त होता है। जिस प्रकार 'मालती माधव' ग्रन्थ में माधव धीरप्रशान्त नायक है।

धीरललित—[सं० पु०] नायकभेद। साहित्यदर्पण में लिखा है कि जो चिन्ता रहित, मृदु और सर्वदा कलापरायण रहता हो उसे धीरललित नायक कहते हैं। छन्दो-विशेष। इसके प्रत्येक चरण में १६ अक्षर होते हैं। १।४।६।१०। १२।१४।१६वाँ अक्षर गुरु और अन्य वर्ण लघु होते हैं।

धीरशान्त—[सं० पु०] साहित्य में वह नायक जो सुशील, दयावान्, गुणवान् और पुण्यवान् हो।

धीरस्कन्द—[सं० पु०] महिष, भैंस। बनशूकर, जंगली सूअर।

धीरा—[सं० स्त्री०] काकली। महाज्योतिष्मती, मालकंगनी। गिलोय। साहित्य में वह नायिका जो अपने नायक के शरीर पर स्त्री-रमण के चिह्न देखकर व्यंग से कोप प्रकाशित करे। ताने से अपना क्रोध प्रकट करने वाली नायिका।

धीराज—[हि० पु०] प्रधान राजा, अधिराज।

धीराधीरा—[सं० स्त्री०] नायिका भेद। साहित्य में वह नायिका जो अपने नायक के शरीर पर पर-स्त्री-रमण के चिह्न देख कर कुछ गुप्त और कुछ प्रगट रूप से अपना क्रोध दिखावे।

धीरावी—[सं० स्त्री०] शिंशपावृक्ष, शीशम का पेड़।

धीरी—[हि०स्त्री०] आँख की पुतली।

धीरोदात्त—[सं० पु०] साहित्यदर्पणोक्त नायक-विशेष। जो अपनी श्लाघा नहीं करते। जो अत्यन्त बलशाली हैं। जो हर्ष वा शोकादि से अभिभूत नहीं होते। जो विनीत हैं। जिसका अहंकार लक्ष्य नहीं किया जा सकता और जो अपनी प्रतिज्ञा का प्राणपण से निर्वाह करते हैं, वे ही धीरोदात्त पदवाच्य हैं। रामचन्द्र, युधिष्ठिर आदि धीरोदात्त नायक के अन्तरभुक्त हैं। वीर रस प्रधान नाटक का मुख्य नायक।

धीरोद्धत—[सं० पु०] साहित्य दर्पणोक्त नायक-विशेष। मायापटु, प्रचण्ड, चंचल, अहंकारादियुक्त।

धीर्य—[सं० त्रि०] कातर। डरपोक।

धीवत्—[सं० त्रि०] बुद्धियुक्त, बुद्धिमान्, अक़्लमन्द।

धीवन्—[सं० पु० स्त्री०] धीवर, मल्लाह, मछुआ। [स्त्री०] धीवर की स्त्री।

धीवर—[सं० पु०] कैवर्त्त। ये लोग मछली पकड़ने और बेचने का कार्य करते हैं। मत्स्य पुराण के अनुसार एक देश और उस देश का निवासी। सेवक। काला मनुष्य।

धीवरी—[सं० स्त्री०] धीवर पत्नी। मल्लाहिन। मत्स्य बेचिनी। मछली मारने की कटिया। शतमूली।

धीशक्ति—[सं० स्त्री०] बुद्धि का गुण। बुद्धि शक्ति।

धीहरा—[सं० स्त्री०] एक प्रकार का मीठा कटहल। कुन्दुरु, विरोजा।

धु—[सं० स्त्री०] कंपन, थरथराहट। कँपकँपी।

धुंकार—[हि० स्त्री०] जोर का शब्द, गरज, गड़गड़ाहट।

धुंगारना—[हि० क्रि०] बघारना, छौंकना।

धुंदा—[हि० वि०] अन्धा।

धुंदुल—[हि० पु०] बंगाल और मलवार में मिलनेवाला एक प्रकार का उपयोगी पेड़।

धुंध—[हि० स्त्री०] हवा में उड़ती हुई धूल। वह अँधेरा जो हवा में मिली धूल के कारण हो। आँख का एक रोग।

धुंधकार—[हि० पु०] धुंकार, गरज, गड़गड़ाहट। अन्धकार। अन्धेरा।

धुआँकश—[हि० पु०] वह जहाज या नाव जो भाप के जोर से चलती है। अग्निबोट, स्टीमर।

धुआँधार—[हि० वि०] धूममय। धुएं से भरा। प्रचण्ड, घोर। काला। स्याह। भड़कीला, गहरे रंग का। [क्रि० वि०] बहुत वेग से।

धुआँयध—[हि० वि०] जो धूएँ की तरह महकता हो। वह डकार जो अन्न अच्छी तरह परिपाक न होने के कारण आती है।

धुँआरा—[हि० वि०] वह छेद जो धूँआ निकलने के लिये छत आदि में बनाया जाता है। चिमनी।

धुक—[सं० पु०] भूमिवदर वृक्ष। बेर का पेड़।

धुकड़ी—[हि० स्त्री०] छोटी थैली। बटुआ।

धुकधुकी—[हि० स्त्री०] पेट और छाती के बीच का भाग। हृदय, कलेजा। कलेजे की धड़कन। कम्प। भय, डर। गले में पहनने का एक गहना जो छाती पर लटका रहता है। जुगनू।

धुकन्धुक—[सं० क्ली०] बदरी फल। बेर।

धुन—[सं० त्रि०] कम्पन। काँपने की क्रिया या भाव।

धुन—[हि० स्त्री०] किसी काम को निरन्तर करते रहने की अनिवार्य प्रवृत्ति। मन की तरंग। मौज। चिन्ता। गाने की तर्ज। सम्पूर्ण जाति का एक राग। इसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

धुनकी—[हि० स्त्री०] धनुष के आकार का धुनियों का एक औजार। रूई धुनने का यन्त्र। एक प्रकार का छोटा धनुष।

धुनि—[सं० स्त्री०] नदी। एक दैत्य का नाम। जल प्रतिरोधक असुर-भेद। कम्पक। कँपानेवाला।

धुनिया—[हि० पु०] वह जो रूई धुनने का काम करता है। बेहना।

धुनी—[सं० स्त्री०] नदी।

धुनीनाथ—[सं० पु०] समुद्र।

धुन्धु—[सं० पु०] मधुराक्षस का पुत्र।

धुन्धुमार—[सं० पु०] महाराज वृहदश्व के पुत्र। राजा त्रिशङ्कु का पुत्र। गृह-धूम। घर की कालिख। इन्द्रगोपकीट। बीरबहूटी। गृहगोधा। छिपकली।

धुर—[हि० स्त्री०] वह जुआ जो बैलों के कंधे पर रखा जाता है। गंगा का एक नाम। भाग। अंश। चिनगारी। उँगली। बोझा। भार। अक्ष, गाड़ी आदि का धुरा। खूँटी। अच्छी और ऊँची जगह। शीर्ष स्थान। धन। सम्पत्ति।

धुर—[सं० पु०] गाड़ी या रथ आदि का धुरा। शीर्ष का प्रधान स्थान। भार। बोझ। आरंभ। जुआ जो बैलों आदि के कंधों पर रखा जाता है। जमीन की माप जो बिस्वे का बीसवाँ भाग होता है। बिस्वांसी। [वि०] पक्का। दृढ़। [अव्य०] न इधर न उधर। बिलकुल ठीक। सटीक। सीधे।

धुरन्धर—[सं० पु०] बोझ ढोनेवाला। जैसे—खच्चर, गधा आदि। आदित्य राजा के मंत्री। रामायण में वर्णित एक राक्षस। धव वृक्ष, धौ का पेड़। भार ढोनेवाला। श्रेष्ठ। प्रधान। जो सब में बहुत बड़ा भारी या बली हो।

धुरा—[हि० पु०] पहिए के बीचो बीच पिरोया हुआ वह डंडा जिस पर पहिया घूमता है।

धुरियाना—[हि० क्रि०] किसी चीज का धूल से ढका जाना। ऊख के खेत का पहले पहल गोड़ा जाना। किसी ऐब या बदनामी का किसी प्रकार दबना या दबाया जाना।

धुरियामल्लार—[हि० पु०] सम्पूर्ण जाति का एक मल्लार।

धुरीण—[सं० त्रि०] भारवाहक। बोझ ढोनेवाला। श्रेष्ठ। प्रधान। मुख्य। धुरन्धर।

धुर्य—[सं० त्रि०] धुरन्धर। श्रेष्ठ। भारवाहक।

धुलेंडी—[हि० स्त्री०] हिन्दुओं का एक त्यौहार।

धुवन—[सं० पु०] अग्नि। आग। [त्रि०] चालक। चलानेवाला।

धुस्तूर—[सं० पु०] धतूरा।

धुस्स—[हि० पु०] मट्टी आदि का ऊँचा ढेरा। टीला। नदी आदि के किनारे पर बाँधा हुआ बाँध।

धू—[हि० पु०] ध्रुवतारा। राजा उत्तानपाद का पुत्र जो भगवान् का भक्त था। धुरी।

धूक—[सं० पु०] वायु। हवा। धूर्त्त मनुष्य। काल। वकुल वृक्ष। मौलसरी का पेड़। विड़ाल। बिलाव।

धूत—[सं० त्रि०] कम्पित। थरथराता हुआ। भर्त्सित। जो धमकाया गया हो। जो डाँटा गया हो। त्यक्त। छोड़ा हुआ। तर्कित।

धूतपाप—[सं० पु०] जिसके पाप दूर हो गए हों।

धूता—[सं० स्त्री०] भार्या। स्त्री।

धूधू—[हि० पु०] आग की लपट उठने की आवाज।

धूनी—[हि० स्त्री०] देवपूजन में या सुगन्ध के लिए कपूर, अगर, गुग्गुल आदि गन्धद्रव्यों को जलाकर उठाया हुआ धुँआ। साधुओं के तापने की आग।

धूपछाँह—[हि० स्त्री०] एक प्रकार का रंगीन कपड़ा। उसमें एक ही स्थान पर कभी एक रंग और कभी दूसरा रंग दिखाई देता है।

धूपदान—[हि० पु०] वह बरतन या डिब्बा जिसमें धूप रखा जाता है।

धूपपात्र—[सं० क्ली०] वह बरतन जिसमें गन्ध द्रव्य जलाकर धूप देते हैं।

धूपबत्ती—[हि० स्त्री०] मसाला लगी हुई सींक या बत्ती, इसे जलाने से सुगन्धित धुँआ उठकर फैलता है।

धूपवास—[सं० पु०] स्नान के पश्चात् सुगन्धित धुँए से शरीर, बाल आदि सुगन्धित करने का कार्य।

धूपसरला—[सं० स्त्री०] एक प्रकार का गुग्गुल का पेड़।

धूपाह्व—[सं० क्ली०] काला अगर। [त्रि०] धूपदान के योग्य।

धूपित—[सं० त्रि०] सन्तप्त। थका

हुआ। श्रान्त। सन्तापित। धूप दिया हुआ। [क्ली०] धूप।

धूम—[सं० पु०] धुआँ। मरुद्वाह, खतमाल। शिखिध्वज, अग्निवाह, तरी। उद्गारज वायुविशेष, डकार। सुश्रुतोक्त धूम्रपान।

धूमकेतु—[सं० पु०] संध्या के कुछ बाद अथवा सुबह के कुछ पहले कभी कभी आकाश में लम्बे दुमदार सफेद तारे दीख पड़ते हैं। वेही धूमकेतु हैं।

धूमगन्धि—[सं० क्ली०] रुसा घास। वह आग जो धूएँ से अनुमान की जा सके।

धूमज—[सं० पु०] मेघ, बादल। मुस्तक, मोथा।

धूमदर्शी—[सं० पु०] जिसकी आँख के सामने धूँआ सा दिखाई पड़ता हो।

धूमधड़क्का—[हि० पु०] समारोह, भारी आयोजन। ठाट-बाट।

धूमधर—[सं० पु०] अग्नि, आग।

धूमध्वज—[सं० पु०] अग्नि, आग।

धूमनाड़ी—[सं० स्त्री०] नल के आकार का एक यंत्र जिससे रोगी को धूँआ सेवन कराया जाता है।

धूमपान—[सं० क्ली०] सुश्रुतोक्त नेत्र और व्रणरोगनाशक धूम-विशेष पान। तमाकू पीने में धूम पान करना होता है, इसीसे इसका धूमपान नाम पड़ा।

धूमपोत—[सं० पु०] अग्नि बोट। धुँआकश।

धूममहिषी—[सं० स्त्री०] नीहार, कुहासा।

धूमयोनि—[सं० पु०] मेघ, बादल। मुस्तका। मोथा।

धूमल—[सं पु०] लालिमायुक्त काला रंग। [त्रि०] कृष्ण लोहित वर्णयुक्त।

धूमला—[हि० वि] ललाई लिये काले रंग का। धूँए के रंग का। धुँधला। मलिन।

धूमवर्ण—[सं० पु०] धूल, रज, गर्द। एक नागराज।

धूमस—[सं० पु०] शाक, साग।

धूमसी—[सं० स्त्री०] उरद का आटा।

धूमाङ्ग—[सं० पु०] शीशम का वृक्ष। जिसका अंग धूँए के समान हो।

धूमाभ—[सं० पु०] धूम्रवर्ण, धूँए का रंग। [त्रि०] धूँए के रंग का।

धूमिता—[सं० स्त्री०] वह दिशा जिसमें सूर्य जाने वाला हो।

धूमोर्णा—[सं० स्त्री०] यम पत्नी। मार्कण्डेय की पत्नी।

धूम्र—[सं० पु०] ललाई लिए काला रंग। धूमल, कृष्ण लोहित। शिलारस नाम का गन्ध द्रव्य। तुरुष्क गन्ध द्रव्य। एक असुर का नाम। शिव। महादेव। मेघ। कुमार के एक अनुचर का नाम। राम की सेना का एक भालू।

धूम्रक—[सं० पु०] उष्ट्र। ऊँट।

धूम्रकेतु—[सं० पु०] भरत राजा के एक पुत्र का नाम। तृणविन्दु के एक पुत्र का नाम। [त्रि०] जिसकी पताका धूँए के रंग की हो।

धूम्रकेश—[सं० पु०] पृथु राजा के एक पुत्र का नाम। कृशाश्व का पुत्र जो अर्चि नाम की स्त्री से उत्पन्न हुआ।

धूम्रलोचन—[सं० पु०] कपोत। कबूतर। दानवराज शुम्भ का एक सेनापति।

धूम्रवर्णा—[सं० स्त्री०] अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

धूम्रशूक—[सं० पु० स्त्री०] उष्ट्र, ऊँट।

धूरडांगर—[हि० पु०] सींग वाला चौपाया। ढोर।

धूर्जटि—[सं० पु०] शिव। महादेव।

धूर्त—[सं० क्ली०] लोहे की मैल। धतूरा। चोरक, चोर नामक गन्धद्रव्य। खण्डलवण, एक प्रकार का नमक। द्यूतकृत, जुआरी। जो जूआदि खेलता है उसे धूर्त्त कहते हैं क्योंकि वह दूसरे पर दाव-पेंच खेलने का अवसर ढूंढ़ता रहता है इसीसे उसका नाम धूर्त्त पड़ा है। [त्रि०] वञ्चक, धोखा देने वाला, दगाबाज, मायावी, छली, चालबाज।

धूर्त्तर—[सं० पु०] पारद, पारा।

धूर्धर—[सं० पु०] धुरन्धर, बोझा ढोने वाला।

धूर्य—[सं० पु०] विष्णु। ऋषभक।

धूल—[हि० स्त्री०] मिट्टी, रेत आदि का महीन चूर। रेणु, रज, गर्द। धूल के समान तुच्छ वस्तु।

धूलक—[सं० क्ली०] विष।

धूलधानी—[हि० स्त्री०] ध्वंस, विनाश।

धूलि—[सं० स्त्री०] पार्थिव चूर्ण, मिट्टी, रेत आदि का महीन चूर्ण। रेणु। पांशु। रजस। धूली। क्षितिकण। क्षोद। चूर्ण। तूस्त। महीद्रव। वातकेतु। नाम केतु। कण और क्षिति, कण। व्याकुली भाव। पराग। गर्दभ। गधा।

धूलिध्वज—[सं० पु०] पवन। वायु। हवा।

धूलिपुष्पिका—[सं० स्त्री] केतकी पुष्प। इसमें बहुत पराग रहता है।

धूलीकदम्ब—[सं० पु०] एक प्रकार का कदम्ब।

धूसर—[सं० पु०] मटमैला रंग। गर्दभ। गदहा। उष्ट्र, ऊँट। कपोत, कबूतर। बनियों की एक जाति।

धूसरित—[सं० त्रि०] धूल से भरा

हुआ। जिसमें धूल लिपटी हो।

धूसरी—[सं॰ स्त्री॰] गर्दभी। गधी। एक किन्नरी।

धूस्तूर—[सं॰ पु॰] धतूरा।

धृत—[सं॰ त्रि॰] धारण किया हुआ। स्थिरीकृत, निश्चित। पतित। पतन। स्थिति। तेरहवें मनु रौच्य के पुत्र का नाम। द्रुह्यु-वंशीय धर्म का पुत्र।

धृतकेतु—[सं॰ पु॰] वसुदेव के बहनोई।

धृतमाली—[सं॰ पु॰] अस्त्रों को निष्फल करने का एक अस्त्र। शस्त्रों का एक संहार।

धृतराष्ट्र—[सं॰ पु॰] सौराज्य देश। वह देश जो अच्छे राजा के शासन में हो। वह जिसका राज्य दृढ़ हो। एक नाग का नाम। एक कौरव राजा जो दुर्योधन के पिता और विचित्रवीर्य के पुत्र थे। इनकी कथा महाभारत में वर्णित है।

धृतराष्ट्री—[सं॰ स्त्री॰] धृतराष्ट्र की स्त्री। हंस पत्नी। कश्यप ऋषि की पत्नी ताम्रा से उत्पन्न ५ कन्याओं में से एक।

धृति—[सं॰ स्त्री॰] धारण। धरने या पकड़ने की क्रिया। तुष्टि, सन्तोष, तृप्ति। धैर्य। मन की दृढ़ता। फलित ज्योतिष में एक योग। सुख। मुँह। १६ मातृकाओं में से एक। अठारह अक्षरों के वृत्तों की संज्ञा। मानस धारणा भेद।

धृतिहोम—[सं॰ पु॰] विवाह हो जाने के बाद यह धृति होम करना पड़ता है। यह आठ प्रकार का है।

धृत्वन्—[सं॰ पु॰] विष्णु। धर्म। गगन। समुद्र। मेधावी। विप्र। धारण करने वाला।

धृत्वरी—[सं॰ स्त्री॰] भूमि।

धृषण—[सं॰ त्रि॰] धर्षक, दमन करनेवाला। दबाने वाला। अभिभव। पराजय, हार।

धृषु—[सं॰ त्रि॰] दक्ष, निपुण। प्रगल्भ। चतुर।

धृष्ट—[सं॰ त्रि॰] प्रगल्भ। चतुर। निर्लज्ज, बेहया। निर्दय। उद्धत। अनुचित साहस करने वाला। नायक विशेष। चेदिवंशीय कुन्ती का पुत्र। सप्तम मनु के एक पुत्र का नाम। अस्त्रों का संहार।

धृष्टकेतु—[सं॰ पु॰] सन्नति राजवंशीय सुकुमार के एक पुत्र का नाम। नवें मनु रोहित के पुत्र। जनक वंशीय सुधृति के पुत्र। सत्यकेतु के एक पुत्र। चेदि देश के राजा शिशुपाल के पुत्र।

धृष्टता—[सं॰ स्त्री॰] निर्लज्जता, संकोच का भाव। बेहयाई। अनुचित साहस। ढिठाई।

धृष्टद्युम्न—[सं॰ पु॰] द्रुपद राजा के पुत्र।

धृष्टधी—[सं॰ स्त्री॰] कठोर स्वभाव।

धृष्टमानिन्—[सं॰ त्रि॰] उच्चाभिमानी। घमंडी।

धृष्टा—[सं॰ स्त्री॰] असती स्त्री। कुलटा नारी।

धृष्णता—[सं॰ स्त्री॰] धृष्टता।

धृष्णु—[सं॰ त्रि॰] धृष्ट। प्रगल्भ, उद्धत। ढीठ। कंचिका, बाँस की टहनी। एक रुद्र का नाम। सावर्णि मनु के एक पुत्र। वैवस्वत मनु के एक पुत्र।

धृष्य—[सं॰ त्रि॰] धर्षणीय। धर्षण योग्य। दमन करने योग्य।

धेन—[सं॰ पु॰] समुद्र, नद।

धेनु—[सं॰ स्त्री॰] गोमात्र, गाय। नवप्रसूता गाभी। नवसूतिका। नव प्रसूतिका। वह गाय जिसे बच्चा जने हुए बहुत दिन न हुए हों।

धेनुक—[सं॰ पु॰] एक असुर का नाम। बलराम ने इस असुर को मारा था।

धेनुका—[सं॰ स्त्री॰] हस्तिनी, हथिनी। गाभी, गाय। धनिया।

धेनुदुग्धकर—[सं॰ पु॰] गर्जर, गाजर। इसके खिलाने से गाय अधिक दूध देती है। मज्जरतृण, एक प्रकार की घास।

धेनुमती—[सं॰ स्त्री॰] गोमती नदी। भरतवंशीय देवद्युम्न की भार्या।

धेनुमूल्य—[सं॰ क्ली॰] धेनुदान द्वारा प्रायश्चित्त।

धेनुष्या—[सं॰ स्त्री॰] वह गाय जो बन्धक रखी हो।

धेनुष्ठित—[सं॰ त्रि॰] जिसने अपनी गाय का दूध दूसरे को देने का वचन दिया है और इस कारण वह उसे अपने काम में नहीं लाता।

धेय—[सं॰ त्रि॰] धारण करने योग्य। पेय। पीने योग्य। [क्ली॰] धारण, पोषण, पान।

धैताल—[हि॰ वि॰] चपल, चंचल। उजड्ड।

धैनव—[सं॰ पु॰ स्त्री॰] गाय का बच्चा। गाय से उत्पन्न।

धैनुक—[सं॰ क्ली॰] धेनु समूह। गाय का झुंड। स्त्रियों का करण भेद।

धैर्य—[सं॰ क्ली॰] धीरता, चित्त की स्थिरता। धीरज। अप्रमाद। अव्याकुलत्व। नायक-नायिका का गुण भेद। पुरुष का गुण भेद।

धैर्यकलित—[सं॰ त्रि॰] स्थिर, अटल।

धैर्यच्युत—[सं॰ त्रि॰] धैर्यहीन, अस्थिर।

धैर्यशालिन्—[सं॰ त्रि॰] धैर्ययुक्त, शान्त।

धैवत—[सं॰ पु॰] संगीत के सात स्वरों में से छठा स्वर।

धैवर—[सं० पु० स्त्री०] धीवर का अपत्य, मल्लाह की संतान ।

धोखा—[हि० पु०] धूर्तता या छल । भ्रम, भुलावा । अनिष्ट की संभावना, जोखों । अन्यथा होने की संभावना । फलदार पेड़ों पर रस्सी लगी हुई लकड़ी । खटखटा । प्रमाद । भूल, चूक । अज्ञान, जानकारी का अभाव । माया । असत्-धारणा, भ्रम, भ्रान्ति, भूल । बिजूखा, भुलुकाक । बेसन का एक पकवान ।

धोतर—[हि० पु०] गाढ़े की तरह का एक मोटा कपड़ा । अधोतर ।

धोबिन—[हि० स्त्री०] धोबी की स्त्री । जल के किनारे रहनेवाली एक प्रकार की चिड़िया ।

धोबीघास—[हि० स्त्री०] बड़ी दूब, दूबा ।

धोबीपछाड़—[हि० पु०] कुश्ती का एक पेंच ।

धोर—[हि० स्त्री०] सामीप्य । पास । धार, किनारा । बाढ़ ।

धोरण—[सं० क्ली०] यानमात्र, हाथी-घोड़े आदि की सवारी । अश्व की सरपट चाल । दौड़ । धौर्य ।

धोरणि—[सं०क्ली०] परम्परा, श्रेणी । धोरित ।

धोरित—[सं० क्ली०] धोरण । घोड़े की सरपट चाल । बध, कत्ल ।

धोरी—[हि० पु०] भार उठानेवाला । श्रेष्ठ पुरुष । वृषभ, बैल । प्रधान । मुखिया, सरदार ।

धौंकनी—[हि० स्त्री०] आग फूँकने की नली जो बाँस या धातु की बनी होती है । भाथी ।

धौंटा—[हि० पु०] वह ढकन जो कोल्हू के बैल की आँखों में लगाया जाता है ।

धौंस—[हि० स्त्री०] धमकी, घुड़की, डाँट । अधिकार, धाक । रोबदाब । छल, धोका, भुलावा ।

धौ—[हि० पु०] भारतवर्ष में प्रायः सर्वत्र जंगलों में मिलनेवाला एक ऊँचा झाड़ ।

धौत—[सं० त्रि०] मार्जित, साफ किया हुआ । प्रक्षालित, धोया हुआ । स्नात, नहाया हुआ । शोधित, शुद्ध किया हुआ । [क्ली०] रौप्य, रूपा, चाँदी । नीलकषीस ।

धौतशिल—[सं० क्ली०] स्फटिक, बिल्लौर ।

धौति—[सं० स्त्री०] शुद्ध, विशुद्ध । हठयोग की एक क्रिया जो शरीर को भीतर और बाहर से शुद्ध करने के लिये की जाती है ।

धौम्र—[सं० पु०] एक ऋषि का नाम । धूम्रवर्ण, धुएँ का रंग । [त्रि०] धूम्र वर्ण युक्त, जो धूएँ के रंग का हो । [पु०] धूम्रवर्ण का भाव । वास्तु-स्थान भेद ।

धौरा—[हि० वि०] सफेद, उजला । [पु०] धौ का पेड़ । एक पक्षी । सफेद रंग का बैल ।

धौराहर—[हि० पु०] ऊँची अटारी, धरहरा । बुर्ज ।

धौरी—[हि० स्त्री०] कपिला, सफेद रंग की गाय ।

धौर्त्तेय—[सं० पु० स्त्री०] धूर्त का अपत्य । छली की सन्तति ।

धौल—[हि० स्त्री०] हानि का आघात; नुकसान का धक्का, टोटा । एक प्रकार की ईख । ज्वार का हरा डंठल । [पु०] धौ का पेड़, धौरा, बकली । धौराहर, धरहरा । श्वेत, उजला, सफेद ।

ध्माङ्क्षनाशिनी-[सं० स्त्री०] हाऊबेर ।

ध्माङ्क्षनासा—[सं० स्त्री०] काकनासा लता ।

ध्माङ्क्षपुष्ट—[सं०पु०] कोकिल, कोयल ।

ध्मापित—[सं० त्रि०] जलाकर खाक किया हुआ ।

ध्यात—[सं० त्रि०] चिन्तित, विचारा हुआ । ध्यान किया हुआ ।

ध्यान—[सं० क्ली०] चिन्ता, सोच-विचार । अद्वितीय वस्तु में चित्त की एकाग्रता । अन्तःकरण में उपस्थित करने की क्रिया या भाव । भावना । प्रत्यय, विचार । चेतना की प्रवृत्ति । बोध करने वाली वृत्ति, बुद्धि, समझ । धारणा, स्मृति, याद, चित्त को एकाग्र करने की क्रिया ।

ध्यानगोचर—[सं० पु०] ध्यान-प्रत्यक्ष, जो ध्यान करके मालूम किया जाय ।

ध्यानमय—[सं० त्रि०] ध्यान स्वरूप ।

ध्यानयोग—[सं० पु०] वह योग जिसमें ध्यान ही प्रधान अंग हो । इंद्र-जाल की एक क्रिया । इसके द्वारा मन में किसी आकृति की कल्पना करके शत्रु का नाश किया जाता है । ध्यान और योग

ध्यानवदरी-हिमालयस्थ गढ़वाल राज्य के अन्तर्गत एक प्रसिद्ध शिवमन्दिर ।

ध्यानविन्दूपनिषद—[सं० स्त्री०] अथर्व वेदीय एक उपनिषद । नारायण ने इसकी वृत्ति की है ।

ध्यानिन्—[सं० त्रि०] ध्यानयुक्त । समाधिस्थ ।

ध्यामक—[सं० क्ली०] रोहिष-तृण । रोहिस घास । एक सुगन्धित घास । सोंधिया ।

ध्यामन्—[सं० पु०] परिमाण । अन्दाज । तेज । चिन्ता । विचार ।

ध्येय—[सं० त्रि०] ध्यातव्य । ध्यान करने योग्य । जिसका ध्यान किया जाय ।

ध्राजि—[सं० स्त्री०] गति । चाल ।

ध्रुपद—ध्रुपद से उत्पन्न संगीत स्वर

विशेष। इसका संस्कृत नाम ध्रुवक है। इसके चार भेद या तुक होते हैं— अस्थायी, अन्तरा, संचारी और आभोग।

ध्रुव—[सं० त्रि०] निश्चित। दृढ़। पक्का। स्थिर। अचल। [पु०] सन्तति। शाश्वत। तर्क। आकाश। शंकु। कील। विष्णु। हर। वट। बरगद। आठ वसुओं में से एक। योग-भेद। फलित ज्योतिष में एक शुभ योग। खम्भा। थून। शरारि नामक पक्षी। ध्रुवक पद। आकाशस्थित तारा द्वय। ध्रुवतारा। रोहिणी और वसुदेव से उत्पन्न एक पुत्र। पांडवपक्षीय एक क्षत्रिय वीर। नहुष के एक पुत्र। पुरुवंशीय रन्तिनार के एक पुत्र। एक यज्ञ-पात्र। नाका का अगला भाग। उत्तानपाद राजा के पुत्र।

ध्रुवकेतु—[सं० पु०] केतुभेद। एक प्रकार का केतु तारा।

ध्रुवक्षेम—[सं० त्रि०] स्थिर निवास।

ध्रुवघाट—तीर्थ-विशेष। मधुवन के जिस स्थान में महात्मा ध्रुव ने तपस्या की थी उस स्थान को ध्रुवघाट कहते हैं।

ध्रुवतारा—मेरु के अग्रभाग में विद्यमान तारका। वह तारा जो सदा ध्रुव अर्थात् मेरु के उत्तर में रहता है।

ध्रुवधेनु—[सं० स्त्री०] वह गाय जो दुहते समय चुपचाप खड़ी रहे।

ध्रुवमत्स्य—[सं० पु०] दिशाओं का ज्ञान जानने का एक यंत्र। कुतुबनुमा।

ध्रुवरेखा—[सं० स्त्री०] विषुवत्‌रेखा।

ध्रुवलोक—[सं० पु०] सत्यलोक के अन्तर्गत एक लोक जहाँ ध्रुव स्थित हैं।

ध्रुवा—[सं० स्त्री०] एक प्रकार का यज्ञपात्र जो वैकण्ड की लकड़ी का बनता है।

ध्रुवाश्व—[सं० पु०] एक प्रकार का बड़ा घोड़ा।

ध्रौव्य—[सं० क्ली०] स्थिरत्व, दृढ़ता, मजबूती। [त्रि०] स्थिर, दृढ़। ध्रुव स्थान को प्राप्त करनेवाला।

ध्वंस—[सं० पु०] विनाश, क्षय, हानि। मद्यविकाररोग।

ध्वंसकला—[सं० अव्य०] हिंसा, कत्ल।

ध्वंसन—[सं० क्ली०] नाश। [त्रि०] ध्वंसकारक, नाश करनेवाला। [क्ली०] ध्वंसकरण, नाश करने की क्रिया। भ्रंश, नाश, तबाही। अधःपतन।

ध्वंसित—[सं० त्रि०] विनाशित, नष्ट किया हुआ।

ध्वंसिन—[सं० त्रि०] नाश प्रतियोगी, जिसका नाश हो।

ध्वज—[सं० पु०] शौण्डिक। ध्वजा लेकर चलनेवाला आदमी खाट की पट्टी। लिङ्ग। चिह्न। गर्व, दप, अभिमान। पताकादण्ड। झंडा। निशान।

ध्वजद्रुम—[सं० पु०] ताल वृक्ष, ताड़ का पेड़।

ध्वजप्रहरण—[सं० पु०] वायु, हवा।

ध्वजभङ्ग—[सं० पु०] क्लीवताजनक रोगविशेष, क्लीवता। नपुंसकता। नामर्दी की बीमारी।

ध्वजा—[हि० स्त्री०] पताका, झंडा, निशान। छन्दःशास्त्रानुसार ठगण का पहला भेद। एक प्रकार की कसरत।

ध्वजारोपण—[सं० क्ली०] देवप्रासादि में ध्वजोत्तोलन। देवालय तथा अट्टालिकाओं में पताका का फहराया जाना।

ध्वजिक—[सं० त्रि०] धर्मध्वजी, पाखण्डी।

ध्वजिनी—[सं० स्त्री०] पाँच प्रकार की सीमाओं में से एक। इस सीमा पर निशान के लिए पेड़ आदि लगे रहते हैं। सेना का एक भेद। इसका परिमाण वाहिनी का दूना माना जाता है।

ध्वन—[सं० पु०] शब्द, आवाज़।

ध्वनमोदिन्—[सं० पु०] भ्रमर, भौंरा।

ध्वनि—[सं० पु०] मृदङ्गादि शब्द। नाद, आवाज। हिन्दी में इसे स्त्रीलिंग माना है। उत्तम काव्य भेद। जहाँ व्यंजनाशक्ति द्वारा बोधित अर्थ जो गुणीभूत और अत्यन्त प्रशस्त होता है। उसका नाम ध्वनि है। शब्द का स्फोट, शब्द का फूटना, आवाज की गूंज, नाद का तार। आशय, गूढ़ अर्थ, मतलब।

ध्वनिकार—ध्वन्यालोक ग्रन्थ के सूत्र-समूह के प्रणेता।

ध्वनिकाव्य—[सं० क्ली०] उत्तम काव्य।

ध्वनिग्रह—[सं० पु०] श्रोत्र, कर्ण, कान।

ध्वनित—[सं० त्रि०] शब्दित, व्यंजित, प्रकट किया हुआ। वादित, बजाया हुआ। [पु०] मृदङ्गादि बाजा।

ध्वनिनाला—[सं० स्त्री०] वीणा, वेणु, बाँसुरी। एक प्रकार का बड़ा ढोल।

ध्वनिविकार—[सं० पु०] विकृत ध्वनि। शोक भयादि के द्वारा ध्वनि का अन्यथा भाव।

ध्वन्यात्मक—[सं० त्रि०] ध्वनिमय, ध्वनिस्वरूप। जिसमें व्यंग्य प्रधान हो।

ध्वन्यार्थ—[हि० पु०] वह अर्थ जिसका बोध वाच्यार्थ न होकर केवल ध्वनि या व्यंजना से हो।

ध्वसन्—[सं० त्रि०] ध्वंसकारक, नाश करनेवाला।

ध्वसनि—[सं० पु०] मेघ, बादल।

ध्वसन्ति—[सं० पु०] ऋग्वेद प्रसिद्ध एक ऋषि का नाम।

ध्वस्त—[सं० त्रि०] च्युत, गलित, गिरा हुआ। नष्ट-भ्रष्ट। खंडित, भग्न,

टूटा-फूटा। परास्त, पराजित।

ध्वस्ति—[सं० स्त्री०] ध्वंस। नाश। क्षय। कर्मक्षय का आधार विद्याभेद।

ध्वस्र—[सं० त्रि०] नष्ट, बरबाद। ध्वंसक, नाश करनेवाला।

ध्वाङ्क्ष—[सं० पु०] काक, कौवा। मत्स्यभक्षक पक्षी, बगला। तक्षक, भिक्षुक।

ध्वाङ्क्षनखी—[सं० स्त्री०] काकतुंडी, कौआ टोंटी।

ध्वान—[सं० पु०] शब्द, आवाज।

ध्वान्त—[सं० क्ली०] तम, अन्धकार। एक नरक जहाँ सदा अँधेरा रहता है।

ध्वान्तचर—[सं० पु०] राक्षस, निशाचर।

ध्वान्तवित्त—[सं० पु०] खद्योत, जुगनू।

ध्वान्तशात्रव—[सं० पु०] सूर्य, अग्नि। चन्द्रमा। श्योनकवृक्ष। श्वेतवर्ण।

ध्वान्ताराति—[सं० पु०] चन्द्र, सूर्य, अग्नि।

ध्वान्तोन्मेष—[सं० पु०] खद्योत, जुगनू।

—:०:—

न

न—संस्कृत और हिन्दी व्यंजनवर्ण का बीसवाँ वर्ण। तवर्ग का पंचम अक्षर। इसका उच्चारण स्थान दन्त है। अनुबन्ध विशेष। 'न' यह शब्द मुग्धबोध के मुचादि गण का बोधक है।

न—[सं० अव्य०] निषेध, नहीं, मत। पर्याय—नहि, अ, नो, अभाव, अना, ना। कि नहीं, या नहीं। उपमा स्वरूप वर्ण। बन्ध। सुगत। हिरण्य, सोना। रत्न। स्तुत।

नइहर—[हि० पु०] माता का गृह, स्त्रियों की माता का घर, पीहर, मायका।

नउरंग—[हि० स्त्री०] नारंगी।

नंग—[हि० पु०] नग्नता, नंगापन। नंगे होने का भाव। गुप्त अंग। शरीर का छिपा भाग। [वि०] लुच्चा, नंगा, बदमाश, बेहया।

नंगरवारी—[हि० पु०] एक प्रकार की साधारण नाव।

नंगा—[हि० वि०] वस्त्रहीन, विवस्त्र। दिगम्बर। लुच्चा, पाजी, निर्लज्ज, बेहया। [पु०] शिव, महादेव। एक बड़ा पर्वत जो काश्मीर की सीमा पर अवस्थित है।

नंगाझोली—[हि० स्त्री०] किसी के पहने हुए वस्त्रों को उतरवा कर या यों ही अच्छी तरह देखना जिसमें छिपाई हुई वस्तु का पता लग जाय। जामातलाशी।

नंदना—[हि० स्त्री०] पुत्री, बेटी, लड़की।

नंदिन—[हि० स्त्री०] एक प्रकार की मछली। यह बंगाल और आसाम में पाई जाती है।

नंदोई—[हि० पु०] पति का बहनोई। ननद का पति।

नंबरदार—[हि० पु०] ग्राम का वह जमींदार जो अपनी पट्टी के और हिस्सेदारों से मालगुजारी वसूल करने में सहायता दे।

नंबूरी—[हि० पु०] मलबार प्रान्त के ब्राह्मणों की एक जाति।

नंश—[सं० पु०] नाशन, ध्वंस, बरबादी।

नंष्टव्य—[सं० क्ली०] नाश के योग्य। बरबाद होने लायक।

नःक्षुद्र—[सं० त्रि०] क्षुद्रनासिक, छोटी नाक वाला।

नक—[सं० अव्य०] रात्रि, रात।

नकंद—[हि० पु०] एक प्रकार का बढ़िया चावल जो कांगड़ा में पैदा होता है।

नकसीर—[हि० स्त्री०] आपसे आप नाक से रक्त बहना। यह बीमारी विशेषकर गर्मी के दिनों में हुआ करती है।

नकार—[सं० पु०] नस्वरूप वर्ण, नहीं। अस्वीकृति, इनकार।

नकिंचन—[सं० त्रि०] अकिंचन, दरिद्र, कंगाल।

नकीम—[सं० अव्य०] निवारण, वर्जन, रोकने की क्रिया।

नकुटी—[सं० क्ली०] नासिका। नाक।

नकुल—[सं० पु०] नेवला। पिङ्गल, सर्पहा, बभ्र, कोटिर, सर्पतृण, सूचीवदन, सर्पारि और लोहितानन। न्यौला, नेवार, बिज्जी।

नकुला—[सं० स्त्री०] पार्वती।

नकुलारि—[सं० पु०] बिड़ाल, बिलाव ।

नकुली—[सं० स्त्री०] कुक्कुटी, मुर्गी, मांसी, जटामांसी । कुङ्कुम, केसर । नेवले की मादा । शङ्खिनी । शाल्मली वृक्ष ।

नक्कार—[हि० पु०] अवज्ञा, तिरस्कार, अपमान, अवहेलना ।

नक्त—[सं० पु०] रात्रि, रात । एक प्रकार का व्रत ।

नक्तञ्चर्या—[सं० स्त्री०] रात्रि में विचरणादि । रात को इधर उधर घूमने की क्रिया ।

नक्तञ्जात—[सं० त्रि०] रात्रिजात । जो रात को उत्पन्न हो । [पु०] ओषधि-भेद ।

नक्तन्दिव—[सं० त्रि०] दिन-रात ।

नक्तभोजिन्—[सं० त्रि०] रात को भोजन करने वाला । नक्त नामक व्रत करने वाला ।

नक्ता—[सं० स्त्री०] कलिकारी नामक विषैला पौधा । हरिद्रा, हल्दी । रात्रि, रात । एक प्रकार की घास ।

नक्तान्ध—[सं० त्रि०] जिसे रात को दिखाई न दे, जिसे रतौंधी होती है ।

नक्ति—[सं० स्त्री०] रात्रि, रात ।

नक्र—[सं० पु०] कुम्भीर, नाक नामक जलजन्तु । द्वारशाखा का अग्रभाग । मगर । घड़ियाल । नासिका, नाक ।

नक्रा—[सं० स्त्री०] नासिका, नाक । मधुमक्खी आदि का डंक ।

नक्षत्र—[सं० क्ली०] अश्विनी आदि सप्तविंशति तारा । पर्याय—ऋक्ष, भ, तारा, तारका, उडु, तारक, तार, दाक्षायणी । पुराणानुसार ये सभी दक्ष की कन्याएँ हैं । चन्द्र के साथ इनका विवाह हुआ है ।

नक्षत्रगण—[सं० पु०] नक्षत्र-विशेष का समूहात्मक गण-भेद । ध्रुव-गण । तीक्ष्णगण । उग्रगण । लघु-गण । मृदुगण । मृदु-तीक्ष्ण-गण और चरगण आदि ।

नक्षत्रचिन्तामणि—[सं० पु०] एक प्रकार का कल्पित रत्न । इसके विषय में प्रसिद्ध है कि इससे जो कुछ मांगा जाय वह मिलता है ।

नक्षत्रदर्श—[सं० त्रि०] नक्षत्र-वीक्षक, जो नक्षत्र देखता हो । [पु०] गणक । ज्योतिषी ।

नक्षत्रनाथ—[सं० पु०] चन्द्रमा ।

नक्षत्रनेमि—[सं० पु०] ध्रुवतारा । चन्द्रमा । रेवती । विष्णु ।

नक्षत्रप—[सं० पु०] चन्द्र । चन्द्रमा ।

नक्षत्रपति—[सं० पु०] चन्द्र । चन्द्रमा ।

नक्षत्रपुरुष—[सं० पु०] व्रतविशेष । नक्षत्रसमूह को पुरुष मानकर यह व्रत किया जाता है । इसी से इसका नाम नक्षत्र-पुरुष-व्रत पड़ा है ।

नक्षत्रमाला—[सं० स्त्री०] वह हार जिसमें सत्ताईस मोती हों । नक्षत्रश्रेणी । हाथियों की माला ।

नक्षत्रयाजक—[सं० पु०] वह ब्राह्मण जो ग्रहों और नक्षत्रों आदि के दोषों की शान्ति करता हो । महाभारत के अनु-सार ऐसा ब्राह्मण निकृष्ट और प्रायः चाण्डाल के समान होता है ।

नक्षत्रयोनि—[सं० स्त्री०] वह नक्षत्र जो विवाह के लिए निषिद्ध हो ।

नक्षत्रराज—[सं० पु०] चन्द्र । नक्षत्रों के अधिपति ।

नक्षत्रविद्या—[सं० स्त्री०] ज्योतिष-विद्या । जिस विद्या द्वारा नक्षत्र आदि के विषय का ज्ञान हो उसे नक्षत्रविद्या कहते हैं ।

नक्षत्रवृष्टि—[सं० पु०] तारापतन । उल्कापात होना । तारा टूटना ।

नक्षत्रशूल—[सं० पु०] फलित ज्योतिष में काल का वह वास जो किसी विशिष्ट दिशा में कुछ विशिष्ट नक्षत्रों के होने के कारण माना जाता है ।

नक्षत्रसाधक—[सं० पु०] महा-देव । शिव ।

नक्षत्रसूचक—[सं० पु०] वह ज्योतिषी जो स्वयं भारी गणना आदि न कर सकता हो । केवल दूसरों के मत के अनुसार ज्योतिषसम्बन्धी साधारण काम करता हो ।

नक्षत्रामृत—[सं० क्ली०] बारह निर्दिष्ट नक्षत्रों का जब योग होता है तब उसे नक्षत्रामृत योग कहते हैं ।

नक्षत्रिन्—[सं० पु०] चन्द्रमा । विष्णु ।

नक्षत्री—[हि० वि०] जो अच्छे नक्षत्र में उत्पन्न हुआ हो । भाग्यवान् । खुशकिस्मत ।

नक्षत्रेश—[सं० पु०] चन्द्रमा । कर्पूर । कपूर । शुक्ति । सीप ।

नक्षत्रेश्वर—[सं० पु०] नक्षत्रों द्वारा काशी में स्थापित शिवलिंग भेद ।

नक्षत्रेष्टि—[सं० स्त्री०] जो यज्ञ नक्षत्रों के उद्देश्य से किया जाता है उसे नक्षत्रेष्टि कहते हैं ।

नक्ष्य—[सं० त्रि०] उपगमनीय । उपगन्तव्य । निकट पहुँचने के योग्य ।

नख—[सं० क्ली०] उँगली के अगले भाग की हड्डी । नाखून । पर्याय—पुनर्भव । करुरुह । नखर । कामाङ्कुश । करज । पाणिज । अङ्गुलिसम्भूत । कराग्रज । करकंटक । स्मरांकुश । रति-पथ । करचन्द्र । करांकुश ।

नखकर्त्तनि—[सं० स्त्री०] वह हथि-यार जिससे नाखून काटा जाता है । नहरनी ।

नखकुट्ट—[सं पु०] नापित । नाई । हज्जाम ।

नखक्षत—[सं० पु०] नाखून के गड़ने के कारण बना हुआ चिह्न । स्त्री के शरीर पर विशेषतः स्तन आदि पर का वह चिह्न जो पुरुष के मर्दन आदि के कारण उसके नाखूनों से बन जाता है।

नखचारिन्—[सं० त्रि०] पंजे के बल चलनेवाला ।

नखदारण—[सं० क्ली०] नाखून काटने का औजार । नहरनी ।

नखफलिनी—[सं० स्त्री०] एक प्रकार की सेम ।

नखमुच—[सं० क्ली०] धनु । धनुष । चिरौंजी का पेड़ । [त्रि०] नखमोचक । नाखून काटनेवाला ।

नखरायुध—[सं० पु० स्त्री०] सिंह, व्याघ्र । बाघ । कुक्कुर । कुत्ता । ताम्रचूड़ ।

नखरी—[सं० स्त्री०] नखी नामक गन्ध द्रव्य । क्षुद्रनखा ।

नखरेखा—[सं० स्त्री०] नखक्षत, नाखून का दाग । कश्यप ऋषि की एक पत्नी । यह बादलों की माता थी ।

नखवृक्ष—[सं० पु०] नील वृक्ष । नील का पेड़ ।

नखशिख—[हि० पु०] नख से लगाकर शिख तक के सभी अंग । सब अंगों का वर्णन ।

नखशूल—[सं० पु०] नाखून का एक रोग । इसमें उसके आसपास या जड़ में पीड़ा होती है ।

नखानखि—[सं० अव्य०] वह लड़ाई जो केवल नख गड़ाकर की जाती है ।

नखायुध—[सं० पु०] व्याघ्र । बाघ । सिंह । कुक्कुर । कुत्ता ।

नखालि—[सं० पु०] नखश्रेणी । नाखून की पंक्ति ।

नग—[सं० पु०] पर्वत । पहाड़ । वृक्ष । पेड़ । सात की संख्या । सर्प । साँप । सूर्य । [त्रि०] न गमन करने वाला । न चलने फिरने वाला । अचल । स्थिर ।

नगकर्णी—[सं० स्त्री०] श्वेत अपराजिता ।

नगज—[सं० पु०] हस्ती । हाथी । [त्रि०] जो पर्वत से उत्पन्न हो ।

नगजा—[सं० स्त्री०] पार्वती । पाषाण भेदी लता ।

नगण—[सं० पु०] पिङ्गल । छन्दः-शास्त्र में तीन लघु अक्षरों का एक गण।

नगण्य—[सं० त्रि०] अगणनीय । जो गणना करने योग्य न हो । बहुत ही साधारण । तुच्छ । घृणार्ह । घृणा करने योग्य ।

नगदन्ती—[सं० स्त्री०] विभीषण की स्त्री का नाम ।

नगधर—[सं० पु०] पर्वत के धारण करनेवाले । श्रीकृष्णचन्द्र । गिरिधर ।

नगनदी—[सं० स्त्री०] वह नदी जो किसी पर्वत से निकली हो ।

नगनन्दिनी—[सं० स्त्री०] हिमालय कन्या । पार्वती ।

नगनी—[हि० स्त्री०] वह कन्या जो रजोधर्म को प्राप्त न हुई हो । कन्या । पुत्री । बेटी । नंगी स्त्री ।

नगपति—[सं० पु०] हिमालय पर्वत । चन्द्रमा । ताड़ का पेड़ । कैलाश के स्वामी, शिव । सुमेरु ।

नगमूर्द्धन—[सं० पु०] पहाड़ की चोटी ।

नगरपाल—[सं० पु०] नगर रक्षक । चौकीदार ।

नगरमुस्ता—[सं० स्त्री०] नागर मोथा ।

नगरवायस—[सं० पु०] नगर काक । घृणा सूचक शब्द ।

नगरवासिन्—[सं० स्त्री०] नागरिक । नगर में बसनेवाला ।

नगरस्थ—[सं० त्रि०] नागरिक । शहर में रहनेवाला ।

नगराधिकृत—[सं० पु०] नगराध्यक्ष । नगर के शासन कर्त्ता ।

नगराध्यक्ष—[सं० पु०] नगर का वह स्वामी जिस पर नगर की रक्षा आदि का पूरा पूरा भार हो ।

नगरिन्—[सं० पु०] शहर में रहने वाला मनुष्य । नागरिक ।

नगरी—[सं० स्त्री०] नगर । शहर ।

नगरौषधि—[सं० स्त्री०] कदली । केला ।

नगवाहन—[सं० पु०] महादेव का एक नाम ।

नगस्वरूपिणी—[सं० स्त्री०] छन्द-विशेष । एक प्रकार का वर्णवृत्त । इसके प्रत्येक चरण में एक जगण, एक रगण एक लघु और एक गुरु होता है । इसे कोई कोई प्रमाणी और प्रमाणिका भी कहते हैं ।

नगाटन—[सं० पु०] बानर । बन्दर । [त्रि०] पर्वतचारी, पहाड़ पर विचरण करनेवाला ।

नगाधिप—[सं० पु०] हिमालय पर्वत । सुमेरु पर्वत ।

नगानिका—[सं० स्त्री०] छन्दोभेद । एक प्रकार का वर्ण वृत्त । इसके प्रत्येक चरण में चार अक्षर होते हैं जिनमें से प्रति चरण का दूसरा और चौथा वर्ण गुरु होता है ।

नगारि—[सं० पु०] इन्द्र ।

नगावास—[सं० पु०] पेड़ पर रहने की जगह । मयूर, मोर ।

नगाश्रय—[सं० पु०] हाथीकन्द । [त्रि०] जो पहाड़ और पेड़ पर

रहता हो।

नगी—[हि० स्त्री०] एक रत्न। मणि। नगीना। नग। पहाड़ी औरत। पार्वती।

नगौकस्—[सं०पु०] पक्षी। चिड़िया। शरभ। सिंह। शेर। काक। कौवा। [त्रि०] वृक्ष और पर्वतवासी मात्र। पेड़ और पहाड़ पर रहनेवाला।

नग्न—[सं० त्रि०] विवस्त्र। जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो। नंगा।

नग्नक्षपणक—[सं० पु०] एक प्रकार का बौद्ध संन्यासी या भिक्षु।

नग्नधर—रघुवंश के एक टीकाकार।

नग्नमुषित—[सं० त्रि०] जिसका धन चुराया गया है और वह नंगा होकर सो रहा है उसे नग्नमुषित कहते हैं।

नग्नयोषित—[सं० स्त्री०] नंगी स्त्री।

नग्नहू—[सं० पु०] वह शराब जो छब्बीस प्रकार के द्रव्यों के मेल से तैयार होती है।

नग्ना—[सं० स्त्री०] विवस्त्रा नारी। नंगी औरत। कोटवी। नग्निका। अनुद्गतकुचा स्त्री। वह स्त्री जिसके स्तन उठे न हों।

नग्नाटक—[सं० पु०] दिगम्बर योगी। वह साधु जो सदा नंगा घूमा करता है।

नग्रोध—[हि० पु०] वट वृक्ष। बड़ का पेड़।

नघमार—[सं० पु०] कुष्ठ की बीमारी। कोढ़ का रोग।

नघारीव—[सं० पु०] कुष्ठ रोग।

नंग—[सं० पु०] जार, उपपति। एक असभ्य जाति जो विशाखपत्तन के प्राय: ५० ग्रामों में वास करती है। इस जाति के स्त्री-पुरुष सब नंगे रहते हैं। इन लोगों का विश्वास है कि मस्तक नग्न रखने से बाघ पकड़ता है अतः ये लोग मस्तक को ढके रहते हैं। नंगे लोग शव को गाड़ते हैं और दस दिन के बाद एक गौ या भैंस को काटकर अपने बन्धु-बान्धवों को खिलाते हैं।

नंगपर्वत—काश्मीर में हिमालय पर्वत का एक शृंग जो २६६२९ फुट ऊँचा है।

नचनिया—[हि० पु०] नृत्य करनेवाला। नाचनेवाला।

नचनी—[हि० स्त्री०] करघे का एक अंगविशेष।

नचिकेतस्—[सं० पु०] अग्नि। आग।

नचिर—[सं० क्ली०] शीघ्रकाल। थोड़ा समय।

नजमुद्दौला—बंगाल के नवाब मीरजाफर के पुत्र।

नजराना—[हि० क्रि०] बुरी दृष्टि के प्रभाव में आना। नजर लग जाना।

नट—[सं० पु०] नर्त्तक। वह जो नाट्य करता है। पर्याय–शैलाली, शैलूष, जायाजीव, कृशाश्वी, भरत, सर्ववंशी आदि। अशोक वृक्ष। किष्कुपर्वा, नल नाम की घास। वर्णसंकर, जाति विशेष। रागविशेष। नृत्यगीत। व्यवसायी जातिविशेष।

नटकमेलक—[सं० क्ली०] हास्यरस प्रधान दृश्यकाव्य भेद। साहित्यदर्पण में इस पुस्तक का उल्लेख मिलता है।

नटखट—[हि० वि०] ऊधमी। उपद्रवी। चंचल। मक्कार।

नटगति—[सं० स्त्री०] छन्दोभेद। एक वर्णवृत्त। इसके प्रतिचरण में १४ अक्षर रहते हैं।

नटचर्या—[सं० स्त्री०] अभिनय। नाटक।

नटन—[सं० क्ली०] नृत्य, नाच।

नटना—[हि० क्रि०] नाट्य करना। अस्वीकार करना। मुकरना। नृत्य करना। नष्ट करना।

नटनारायण—[सं० पु०] छः रागों में से एक राग विशेष।

नटनी—[हि० स्त्री०] नट की स्त्री। नट जाति की स्त्री।

नटपर्ण—[सं० क्ली०] दाल चीनी।

नटवटु—[सं० पु०] अभिनेता का पुत्र। युवक अभिनेता।

नटवर—[सं० पु०] प्रधान अभिनेता। नट जैसा अंग भंगी और बोलने में चतुर। श्रीकृष्ण, जो नाट्यकला और नाट्यशास्त्र के आचार्य थे। [त्रि०] बहुत चतुर।

नटान्तिका—[सं० स्त्री०] लज्जा। शरम। लज्जा होने से नाट्य नहीं हो सकता इसलिये नटान्तिका लज्जा के लिए प्रयुक्त होता है।

नटिन्—[हि० स्त्री०] नट की स्त्री। नट जाति की स्त्री।

नटी—[सं० स्त्री०] नली नामक गन्ध द्रव्य। वेश्या। नट जाति की स्त्री। रागिणी भेद। एक रागिणी का नाम। नर्त्तकी। अभिनेत्री। अशोकवृक्ष।

नटेश्वर—[सं०पु०] शिव। महादेव।

नड्—[सं० पु०] एक जाति जिसका पेशा शीशे की चूड़ियाँ बनाना है। एक ऋषि का नाम। नरसल। नलतृण।

नड्मीन—[सं० पु०] झींगा मछली।

नड़ादि—[सं० पु०] पाणिनि उक्त गण शब्द समूह।

नत—[सं०त्रि०] नम्रीभूत। झुका हुआ। कुटिल। वक्र। टेढ़ा।

नतनाड़िका—[सं० स्त्री०] दोपहर से लेकर रात के दोपहर तक का समय।

नतपाल—[हि० पु०] प्रणतपाल। प्रणाम करनेवाले का पालन करनेवाला।

नतराम—[सं० अव्य०] नितरां। सर्वदा। सदा।

नताङ्गी—[सं० स्त्री०] नारी। औरत।

कर्कटशृंगी । काकड़ासिंगी ।

नति—[सं० स्त्री०] नमन । नमस्कार । प्रणाम । सात प्रकार के नमस्कार ।

नतु—[सं०अव्य०] अन्यथा । नहीं तो ।

नतैत—[हि० पु०] सम्बन्धी । रिश्तेदार । नातेदार ।

नथ—[हि० स्त्री०] एक प्रकार का गहना जिसे स्त्रियाँ नाक में पहनती हैं ।

नथना—[हि० पु०] नाक का अगला भाग । नासिका छिद्र ।

नद—[सं० क्रि०] पूजा करना । स्तुति करना । सन्तोष करना ।

नद—[सं० पु०] बड़ी नदी अथवा ऐसी नदी जिसका नाम पुलिङ्गवाची हो ।

नदन—[सं० पु०] शब्दकरण । शब्द करना । आवाज करना ।

नदनदीपति—[सं०पु०] समुद्र । सागर ।

नदाल—[सं० त्रि०] भाग्ययुक्त । सौभाग्यवान् । तकदीरवाला ।

नदि—[सं० पु०] स्तुति । प्रशंसा । तारीफ ।

नदीकान्त—[सं०पु०] समुद्र । सागर । जामुन का पेड़ । सिन्धुवार नाम का पेड़ ।

नदीगूलर—[हि० पु०] लिसोढ़ा ।

नदीज—[सं० क्ली०] काला सुरमा । सेंधा नमक । [पु०] अर्जुन वृक्ष । खजूर का पेड़ । भीष्म गंगा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे इस कारण इनका नाम नदीज पड़ा ।

नदीधर—[सं० पु०] गंगाधर । शिव । महादेव ।

नदीन—[सं० पु०] समुद्र । सागर । वरुण देवता ।

नदीश—[सं० पु०] समुद्र । सागर ।

नदीष्ण—[सं० त्रि०] जो नदी-स्नान में खूब दक्ष हो ।

नद्ध—[सं० त्रि०] बद्ध, बँधा हुआ । नधा हुआ ।

ननद—[हि० स्त्री०] पति की बहिन ।

ननदोई—[हि०पु०] पति का बहनोई ।

ननिहाल—[हि० पु०] नाना का घर । ननसार ।

ननु—[सं०अव्य०] प्रश्न । अवधारण । अनुज्ञा । विनय । आमन्त्रण । अनुनय । विनिग्रह । परकृति । अधिकार । सम्भ्रम । आक्षेप । प्रत्युक्ति । वाक्यारम्भ ।

नन्त्व—[सं० त्रि०] नमनीय । आदरणीय । पूजनीय ।

नन्द—[सं० पु०] हर्ष । आनन्द । खुशी । हर्षात्मक परमेश्वर । मेंढक । वेणु-विशेष । एक प्रकार का मृदङ्ग । यक्षेश्वर का अनुचर-विशेष । गोकुल के गोपों के मुखिया । धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम । एक नाग का नाम । विष्णु । एक राग का नाम । कपिलवस्तु के राजा शुद्धोदन के पुत्र । मगध के सुप्रसिद्ध राजा । उत्कल के श्रोत्रिय ब्राह्मणों की एक श्रेणी ।

नन्दक—[सं० पु०] विश्वामय विष्णु का खड्ग । मेक, मेंढक । नन्दगोप । एक नाग का नाम । धृतराष्ट्र का एक पुत्र । नन्दीवृक्ष । सन्तोषकारक । कुलपालक । आनन्ददायक ।

नन्द कवि—हिन्दी के एक प्रसिद्ध कवि ।

नन्दकुमार—[सं० पु०] नन्द के पुत्र । श्रीकृष्ण ।

नन्दकुमार राय—ईसा की १८ वीं शताब्दी से बंगाल के एक प्रसिद्ध महाराजा ।

नन्दकूप—एक कूप । कालिय सर्पदमन के रोज नन्दादि गोपों ने इसे खनन कर जल पिया था ।

नन्दगाँव—भरतपुर गिरिमाला के शिखर देश पर अवस्थित एक ग्राम । यहाँ श्रीकृष्ण के पालक पिता नन्दघोष रहते थे ।

नन्दग्राम—[सं० पु०] अयोध्या के समीप एक गाँव जहाँ बैठकर राम के वनवास काल में भरत ने तपस्या की थी ।

नन्दन—[सं० क्ली०] इन्द्रवन । इन्द्र का उद्यान जो स्वर्ग में माना जाता है ।

नन्दननन्दिनी—[हि० स्त्री०] योगमाया । योगमाया ने नन्द की कन्या होकर उनके घर में जन्म लिया था ।

नन्दनवन—[सं० पु०] इंद्र की वाटिका । कर्पास । कपास ।

नन्दन्त—[सं० पु०] पुत्र । बेटा । लड़का । राजा । मित्र ।

नन्दयन्त—[सं० पु०] आनन्द-जनक । प्रसन्न करने वाला ।

नन्दवंश—युक्तप्रदेश तथा बिहार के ग्वालों का एक विभाग । मगध का एक विख्यात राजवंश ।

नन्दा—[सं० स्त्री०] दुर्गा ।

नन्दादेवी—[सं० स्त्री०] दक्षिण हिमालय की एक चोटी ।

नन्दार्क—बिहार में शाकद्वीपी ब्राह्मणों का एक समुदाय ।

नन्दि—[सं० पु०] विष्णु, परमेश्वर । शिव के द्वारपाल बैल का नाम । एक प्रकार का जुआ । एक गन्धर्व का नाम । महादेव । शिव ।

नन्दिका—[सं० स्त्री०] वह स्थान जहाँ इन्द्र क्रीड़ा करते हैं । नन्दनवन ।

नन्दिन—[सं०त्रि०] जो प्रसन्न हो । [पु०] शिव का द्वारपाल । एक मुनि का नाम । शिव के एक गण ।

नन्दिनी—[सं० स्त्री०] गंगा । ननद । रेणुका नाम का गन्ध द्रव्य । कन्या । पुत्री । बेटी । जटामांसी । वशिष्ठ की कामधेनु जो सुरभि की कन्या थी ।

नन्दिमुख—[सं० पु० स्त्री०] एक

प्रकार का पक्षी। एक प्रकार का चावल। महादेव। शिव।
नन्दीट—[सं० पु०] गंजा सिरवाला। इन्द्रलुप्त व्यक्ति।
नन्दीपति—[सं०पु०] शिव। महादेव।
नन्नय (नन्नभट्ट)—एक वैयाकरण, इन्होंने सबसे पहले तैलङ्ग भाषा में व्याकरण तथा महाभारत का अधिकांश अनुवाद किया था।
नपात—[सं० पु०] जिस राह होकर चलने से पतन न हो, उसे नपात अर्थात् देवयान कहते हैं।
नपुंसक—[सं० क्ली०] क्लीव, हिजड़ा, नामर्द।
नपुंसकत्व—[सं० पु०] नपुंसकता, नामर्दी।
नप्ता--[हि० स्त्री०] लड़की या लड़के की सन्तान। नाती या पोता।
नप्तृ—[सं० पु०] पुत्र या कन्या का पुत्र। नाती या पोता।
नप्तृका—[सं० स्त्री०] गौरैया नाम की चिड़िया। गिलोय।
नब्बे—[हि० वि०] वह संख्या जो चालीस और पचास के मेल से बनती हो।
नभ—[सं० त्रि०] हिंसक। मारनेवाला। [पु०] श्रावण मास। भादों का महीना। आकाश। शून्य स्थान। चाक्षुष मुनि के एक पुत्र का नाम। महादेव। रामचन्द्र के वंश के एक राजा का नाम। शून्य। आश्रय। आधार। निकट। राजा नल के एक पुत्र का नाम। अभ्रक। जल। मेघ। वर्षा। विषतन्तु। मृणालसूत्र।
नभःकेतन—[सं० क्ली०] सूर्य।
नभःप्राण—[सं० पु०] पवन, हवा।
नभःसुत—[सं० पु०] पवन, हवा।
नभग—[सं० पु०] वैवस्वत मनु के एक पुत्र का नाम। पक्षी। पवन। मेघ। आकाशगामी। अभागा।
नभगनाथ—[सं० पु०] गरुड़।
नभमीरप—[हि० पु०] चातक, पपीहा।
नभम्— [सं० क्ली०] कमल।
नभश्चर—[सं० त्रि०] गगनचारी। आकाश में चलनेवाला। पक्षी। मेघ। पवन, हवा। देवता। गन्धर्व और ग्रहादि।
नभसङ्गम—[सं० पु० स्त्री०] खग, पक्षी, चिड़िया।
नभाक—[सं० क्ली०] तमस, अन्धकार, अँधेरा। राहु।
नभि—[सं० स्त्री०] चक्र, पहिया।
नभीत—[सं० त्रि०] निडर, जिसे डर न हो।
नभोगज—[सं० पु०] मेघ, बादल।
नभोद्वीप—[सं० पु०] मेघ, बादल।
नभोधूम—[सं० पु०] मेघ, बादल।
नभोध्वज—[सं० पु०] मेघ, बादल।
नभोनदी—[सं० स्त्री०] स्वर्गंगा। आकाशगंगा। मन्दाकिनी।
नभोमणि—[सं० पु०] सूर्य।
नभोयोनि—[सं० पु०] महादेव, शिव।
नभोरूप—[सं० त्रि०] नीलवर्ण का (पशु आदि)। [क्ली०] नीला रंग।
नभ्य—[सं० पु०] अक्ष, धुरी। वह चिकनाई जो पहिये में दी जाय।
नमन—[सं० क्ली०] प्रणाम, नमस्कार। झुकाव।
नमस्कतृ—[सं० पु०] महादेव, शिव।
नमस्कार—[सं० पु०] एक प्रकार का विष। नति, प्रणाम। प्रणाम अथवा नमस्कार तीन प्रकार के होते हैं—१ कायिक, २ वाचिक और ३ मानसिक।
नमस्कार्य—[सं० त्रि०] पूज्य, वन्दनीय।
नमस्ते—एक वाक्य जिसका अर्थ है—आप को नमस्कार है।
नमस्य—[सं० त्रि०] पूज्य, आदरणीय।
नमामः—[सं० त्रि०] हम प्रणाम करते हैं।
नमित—[सं० वि०] नीचा, झुका हुआ।
नमुचि—[सं० पु०] एक ऋषि, शुंभ-निशुंभ का छोटा भाई एक दैत्य।
नम्र—[सं० वि०] विनीत, झुका हुआ।
नम्रता—[सं० स्त्री०] नम्र होने का भाव।
नय—[सं० पु०] नीति, न्याय, नम्रता।
नयन—[सं० पु०] नेत्र, चक्षु, आँख, ले जाना।
नयनगोचर—[सं० त्रि०] प्रत्यक्ष। सम्मुख।
नयनपट—[सं० पु०] आँख की पलक। लोचनपट।
नयनागर—[सं० वि०] नीति में निपुण।
नयनी—[सं० स्त्री०] मक्खन, एक पतला वस्त्र। [त्रि०] नेत्रवाली।
नयशील—[सं० वि०] निपुण। नीति में कुशल।
नर—[सं० पु०] शिव। पुरुष। विष्णु। अर्जुन। शंकु। एक प्रकार का दोहा। छप्पय। नारायण के भाई।
नरक—[सं० पु०] अपवित्र स्थान। दुःखद लोक।
नरकुंड—[सं० पु०] कुकर्म का फल भोगने का कुण्ड।
नरकगामी—[सं० वि०] नरक जानेवाला।
नरक चतुर्दशी--[सं० स्त्री०] छोटी दिवाली। कातिक वदी चौदस।
नरकाधिकारी—[सं० वि०] नरक जानेवाला।
नरकांतक—[सं० पु०] श्रीकृष्ण। विष्णु।
नरकामय—[सं० पु०] प्रेत। कुष्ट

रोग। नरक रोग।

नरकासुर—[सं० पु०] एक दैत्य जिसे विष्णु ने मारा था।

नरकुल—[सं० पु०] मनुष्य का वंश। तृणविशेष।

नरकेशरी—[सं० पु०] नरहरि। नृसिंह। नरसिंह।

नरकेहरि—[सं० पु०] नरनाहर। नर केसरी।

नरतात—[सं० पु०] राजा।

नरत्व—[सं० पु०] पुरुषत्व। नर होने का भाव।

नरदारा—[सं० पु०] क्लीव। नपुंसक। कायर।

नरदेव—[सं० पु०] ब्राह्मण। राजा।

नरनाथ—[सं० पु०] राजा।

नरनारायण—[सं० पु०] विष्णु के अवतार। दो धर्मपुत्र।

नरनारी—[सं० स्त्री०] द्रौपदी। अर्जुन की स्त्री।

नरनाह--[सं० पु०] राजा।

नरपति—[सं० पु०] राजा।

नरपाल—[सं० पु०] राजा।

नरपिशाच—[सं० पु०] पिशाचों जैसे कार्य करनेवाला पुरुष।

नरभक्षी--[सं० पु०] राक्षस। नर मांसाहारी।

नरमा--[हि० स्त्री०] एक प्रकार की कपास।

नरमेध-[सं० पु०] अतिथिसत्कार करना। चींटी, कुत्ते, कौवे आदि को खिलाना। वलिवैश्वदेव।

नरलोक—[सं० पु०] संसार।

नरसल—[हि० पु०] नरकुल, एक प्रकार की घास, नरकट।

नरसिंघा—[हि० पु०] तुरही की तरह एक सींग का बाजा।

नरसिंह—[सं० पु०] विष्णु का अवतार।

नरहरि—[सं० पु०] नरसिंह।

नरहरी—[सं० पु०] एक छन्द।

नरांतक—[सं० पु०] रावण का लड़का जिसे अंगद ने मारा था।

नराच—[सं० पु०] वाण, तीर। एक छन्द।

नराचिका--[सं० स्त्री०] एक छन्द।

नराधिप—[सं० पु०] राजा।

नरेन्द्र—[सं० पु०] नरेश, नृप, राजा।

नरेश-[सं०पु०] राजा, नृपाल, नरेन्द्र।

नरोत्तम—[सं० पु०] परमेश्वर।

नर्त्तक—[सं० पु०] नाचने वाला। नट, चारण, शिव।

नर्त्तकी—[सं० स्त्री०] नटी, नाचने वाली।

नर्त्तन—[सं० पु०] नाच। नृत्य।

नर्दन—[सं० स्त्री०] भयंकर शब्द।

नर्म—[सं० पु०] परिहास, रूपक।

नर्मद—[सं० पु०] मसखरा, भाँड़।

नर्मदा—[सं० स्त्री०] एक नदी। नर्वदा नदी।

नर्मदेश्वर—[सं० पु०] नर्वदा नदी से प्राप्त शिवलिंग।

नर्मद्युति—[सं० स्त्री०] नाटक का एक अंग।

नर्म-सचिव—[सं० पु०] विदूषक।

नल—[सं० पु०] कमल, नरकट, निषध देश का राजा। राम दल का एक बन्दर।

नलकूबर—[सं० पु०] कुबेर के पुत्र।

नलसेतु—[सं०पु०] नल द्वारा निर्मित पुल जिससे राम की सेना लंका पहुँची।

नलिका—[सं०स्त्री०] तरकश, तूणीर। नली। एक गंध द्रव्य। एक पुराना हथियार।

नलिनी-[सं०स्त्री०] कमलिनी। नदी। एक छन्द, अधिक कमल उत्पन्न करने वाला देश।

नव—[सं० वि०] नया, नूतन।

नवक—[सं० पु०] नौ वस्तुओं का समूह।

नवकुमारी—[सं० स्त्री०] नवरात्रि में पूजनीय नौ कुमारी कन्याएँ।

नवग्रह—[सं० पु०] सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु ये नौ ग्रह हैं।

नवदुर्गा—[सं० स्त्री०] नौ देवियाँ। शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघंटा, कूष्माण्डा, स्कन्दमाता, कात्यायिनी, कालरात्रि, महागौरी, सिद्धिदा।

नवधाभक्ति—[सं० स्त्री०] नौ प्रकार की भक्ति। श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वंदन, सख्य, दास्य, आत्मनिवेदन, ये नौ हैं।

नवनीत—[सं० पु०] मक्खन।

नवपदी—[सं० स्त्री०] नौ चरण वाला एक छन्द।

नवम—[सं० वि०] नवमी।

नवमल्लिका—[सं० स्त्री०] नवमालिनी छन्द।

नवमी—[सं० स्त्री०] नौमी तिथि।

नवयज्ञ—[सं० पु०] वह यज्ञ जो नवीन यज्ञ के निमित्त किया जाय।

नवयुवक—[सं० पु०] तरुण। जवान।

नवयुवा—[सं० पु०] तरुण। जवान।

नवयौवना—[सं० स्त्री०] मुग्धा नायिका, नवयुवती।

नवरंग—[हि०वि०] नवेला, सुन्दर। नये ढंग का।

नवरत्न—[सं० पु०] नौ मूल्यवान पदार्थों, वस्तुओं या व्यक्तियों का समूह। राज-सभासद।

नवरस—[सं० पु०] काव्य के नौ रस।

नवरात्रि—[सं० पु०] नवदुर्गा। क्वार और चैत सुदी प्रतिपदा से नवमी तक की नौ रातें।

नवल—[सं० वि०] नवीन, नूतन, उज्ज्वल, युवा। सुन्दर।

नवलअनंगा—[सं० स्त्री०] एक प्रकार की मुग्धा नायिका। नवयौवना।

नवलकिशोर—[सं० पु०] श्रीकृष्ण।

नवलवधू—[सं० स्त्री०] एक मुग्धा नायिका

नवला—[सं० स्त्री०] युवती।

नवशिक्षित—[सं० पु०] नौसिखिया। आधुनिक शिक्षा प्राप्त।

नवसप्त—[सं० पु०] सोलह शृंगार।

नवसर—[हि० पु०] नौ लड़ों का हार।

नवागत—[सं० वि०] नया आया हुआ।

नवान्न—[सं० पु०] नया अन्न। नया अनाज।

नवाप्त—[सं० पु०] ९ से भाग देने पर प्राप्त।

नवाह—[सं० पु०] ९ दिनों में पूरा होने वाला पाठ।

नवीन—[सं० स्त्री०] नया, नूतन, अनोखा।

नवीनता—[सं० स्त्री०] नव्यता, नयापन, नूतनता।

नवोढ़ा—[सं० स्त्री०] नववधू, समान लज्जा और शीलवाली नायिका।

नव्य—[सं० वि०] नवीन, नूतन, नया।

नश्वर—[सं० वि०] नाश होने योग्य, नष्ट होने वाला।

नष्ट—[सं० वि०] जो समाप्त हो गया हो, नीच, व्यर्थ।

नष्टता—[सं० स्त्री०] व्यर्थता, दुराचारिता, नष्ट होने का भाव।

नष्टबुद्धि—[सं० वि०] मूर्ख।

नष्टभ्रष्ट—[सं० वि०] जो बिल्कुल बरबाद हो गया हो।

नष्टा—[सं० स्त्री०] कुलटा, व्यभिचारिणी, कुलटा, वेश्या।

नस्य—[सं० पु०] सुंघनी, नाश।

नहछू—[हि० पु०] ब्याह में वर के नाखून काटने की एक रीति।

नहन—[हि० पु०] पुर खींचने की मोटी रस्सी।

नहरुआ—[हि० पु०] एक रोग जिसमें घाव से सूत जैसे कीड़े निकलते हैं।

नहुष—[सं० पु०] विष्णु, एक राजा, एक नाग।

नाँगा—[हि० वि०] नग्न, नंगा। [पु०] दिगंबर साधु। नागा साधु।

नांदिया—[हि० पु०] शिवजी का बैल।

नांदी—[सं० स्त्री०] मंगलाचरण, उदय, समृद्धि।

नांदीमुख—[सं० पु०] जातकर्म, बालक के जन्म काल का श्राद्ध।

नांदीमुखी—[सं० स्त्री०] एक वर्णवृत्त।

नाक्षत्र—[सं० वि०] नक्षत्र सम्बन्धी।

नाग—[सं० पु०] सर्प, साँप।

नागारि—[सं० पु०] गरुड़, सिंह, नागशत्रु।

नागकन्या—[सं० स्त्री०] नाग जाति की सुन्दरी कन्या।

नागकेशर—[सं० पु०] नाग चंपा, औषधि के काम आने वाला पौधा।

नागगर्भ—[सं० पु०] सिंदूर।

नागचम्पेय—[सं० पु०] नागकेसर।

नागज—[सं० पु०] सिंदूर। रंग।

नागदंत—[सं० पु०] हाथी दांत। खूंटी।

नागदंतक—[सं० पु०] आला, ताख, घर की दीवालों के खूंटे।

नागदंती—[सं० स्त्री०] इन्द्र, वारुणी, विशल्या।

नागदमन—[सं० पु०] नाग दौन।

नागदमनी—[सं० स्त्री०] छोटा नाग दौन।

नागदौन—[हि० पु०] एक पहाड़ी पौधा जिसके निकट सांप नहीं आता।

नागनग—[सं० पु०] गज मोती, गजमुक्ता।

नागपंचमी—[सं० स्त्री०] सावन शुक्ला पंचमी।

नागपति—[सं० पु०] सर्पराज, ऐरावत, वासुकी, नागेन्द्र।

नागपाश—[सं० पु०] एक प्राचीन अस्त्र जिससे शत्रुओं को बांधा जाता था।

नागबला—[सं० स्त्री०] गंगेरन, एक औषधि।

नागभाषी—[सं० स्त्री०] प्राकृत भाषा, पाताल की बोली।

नागमाता—[सं० स्त्री०] कद्रू, कश्यप की स्त्री, नागों की मां।

नागर—[सं० वि०] चतुर मनुष्य, सभ्य, शिष्ट। नगर वासी, गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति।

नागरबेल—[हि० स्त्री०] पान, नाग-वल्ली।

नागरमुस्ता—[सं० स्त्री०] नागर मोथा। एक जड़ी।

नागराज—[सं० पु०] शेषनाग, ऐरावत, एक छन्द।

नागरिक—[सं० वि०] सभ्य, नगरवासी। चतुर।

नागरिकता—[सं० स्त्री०] चतुरता, शहरातीपन।

नागरिपु—[सं० पु०] मोर, न्योला, नकुल, गरुड़।

नागरी—[सं० स्त्री०] प्रवीण स्त्री,

नगर वासिनी स्त्री । हिन्दी, देवनागरी लिपि ।

नागलोक—[सं० पु०] पाताल ।

नाग-वंश—[सं० पु०] नाग जाति की एक शाखा जिसका भारत में कई स्थानों पर राज्य था ।

नागवल्ली—[सं० स्त्री०] पान, नागरबेल ।

नागाह्वा—[सं० स्त्री०] नागदौन, मरुआ ।

नागारि—[सं० पु०] गरुड़, न्योला, नकुल ।

नागार्जुन—[सं० पु०] एक प्राचीन बौद्ध महात्मा ।

नागाशन—[सं० पु०] गरुड़, मोर, सिंह, नकुल ।

नागेंद्र—[सं० पु०] बड़ा सांप, नाग-पति, ऐरावत । वासुकी ।

नागोद—[हि० पु०] छाती का कवच ।

नागौर—[हि० पु०] नव नगर, एक नगर ।

नाट—[सं० पु०] नृत्य, नाच, स्वांग, एक देश ।

नाटक—[सं० पु०] नट, अभिनय करने वाला, रूपक, दृश्य काव्य ।

नाटकशाला—[सं० पु०] नाटक-कार, रंगमंच ।

नाटकावतार—[सं० पु०] एक नाटक के मध्य दूसरे नाटक का अवतार ।

नाटकीय—[सं० पु०] नाटक सम्बन्धी ।

नाटिका—[सं०स्त्री०] छोटा नाटक । चार अंकों वाला रूपक, नाड़ी ।

नाट्य—[सं० स्त्री०] अभिनय ।

नाट्यकला—[सं० स्त्री०] अभिनय कला ।

नाट्यकार—[सं० पु०] अभिनेता ।

नाट्यमन्दिर—[सं० पु०] रंगशाला, नाट्य शाला, प्रेक्षागृह ।

नाट्यरासक—[सं० पु०] वह रूपक जिसमें एक ही अंक हो ।

नाट्यशास्त्र—[सं० पु०] भरत मुनि प्रणीत एक प्राचीन नाट्य ग्रन्थ । अभिनय और नृत्य-संगीत संबंधी पुस्तक ।

नाट्यालंकार—[सं० पु०] नाटक में मनोरमता बढ़ाने वाला विधान ।

नाट्योक्ति—[सं० स्त्री०] नाटक में आने वाले सम्बोधन ।

नाड़ी—[सं० स्त्री०] रग, धमनी, नस ।

नाड़ीचक्र—[सं० पु०] शरीर का वह केन्द्र जहां से नाड़ियां अंग प्रत्यंगों को जाती हैं ।

नाड़ीमंडल—[सं०पु०] विषुवत् रेखा । शरीर का नाड़ी समूह ।

नाड़ीवलय—[सं० पु०] समय जानने का एक यंत्र ।

नाथ—[सं० पु०] प्रभु, पति, स्वामी ।

नाथद्वारा—[सं० पु०] जयपुर राज्य में वल्लभ संप्रदाय का एक तीर्थ ।

नाद—[सं० पु०] शब्द, संगीत, वर्णोच्चारण-स्थान, अर्ध चन्द्र ।

नादविंदु—[सं० पु०] योगियों के ध्यान करने का तत्त्व, विन्दु सहित अर्ध चन्द्र ।

नादित—[सं० पु०] ध्वनित ।

नानक—[हि० पु०] सिक्ख सम्प्र-दाय के आदि गुरु ।

नाना—[सं० वि०] अनेक रूप से । माता के पिता ।

नानाकार—[सं० पु०] अनेक रूप के । विविध ।

नानात्मा—[सं० पु०] आत्मभेद, भिन्न भिन्न आत्मा ।

नानामत—[सं० पु०] बहुविधि सिद्धान्त, भिन्न भिन्न मत ।

नानार्थ—[सं० पु०] अनेक अर्थ ।

नानाशास्त्रज्ञ—[सं० पु०] विविध-विद्या-विशारद ।

ननिहाल—[हि० पु०] नाना या नानी का घर ।

नापित—[सं० पु०] नाई, नाऊ । हज्जाम ।

नाभादास—[हि० पु०] एक वैष्णव साधु, भक्तमाल के लेखक ।

नाभि—[सं० स्त्री०] तोंदी,कस्तूरी, चक्रमध्य, कस्तूरी ।

नाम—[सं० पु०] किसी पदार्थ या व्यक्ति का बोधक शब्द, संज्ञा । आख्या ।

नामक—[सं० वि०]नाम वाला, नाम से विख्यात ।

नामकरण—[सं० पु०] बच्चे का नाम रखने का एक संस्कार । नाम-कर्म ।

नामकीर्त्तन—[सं० पु०] भगवान् का नाम लेना, नवधा भक्ति का एक भेद ।

नामदेव—[सं० पु०] मरहठी के एक विख्यात कवि ।

नाम-धाम—[हि० पु०] नाम और स्थान ।

नामधेय—[सं० पु०] नाम वाला, नाम का ।

नामशेष—[सं० वि०] नष्ट, ध्वस्त, जिसका केवल नाम ही शेष हो ।

नामावली—[सं० स्त्री०] रामनामी वस्त्र, नामों की सूची या पंक्ति ।

नामित—[सं० वि०] नवाया हुआ ।

नाम्ना—[सं० वि०] नाम वाला ।

नायक—[सं० पु०] सरदार, नेता,

अगुआ, वह पुरुष जिसके चरित्र पर नाटक की रचना हुई हो। एक छन्द। अभिनेता।

नायिका—[सं० स्त्री०] वह प्रधान स्त्री जिसका चरित्र नाटक में व्यक्त हो। अति सुन्दरी, अभिनेत्री।

नायिकी—[सं०स्त्री०] दूती, नायकी, पत्नी, कुटनी। नायक का भाव।

नारंग—[सं० पु०] नारंगी नामक फल।

नारक—[सं० वि०] नरक सम्बन्धी।

नारकी—[सं० वि०] पापी, नरक के योग्य।

नारद—[सं० पु०] ब्रह्मा के पुत्र, एक देवर्षि।

नारद-पुराण—[सं० पु०] तीर्थ-व्रत-महात्म्य पूर्ण एक पुराण।

नारदीय—[सं० वि०] नारद सम्बन्धी।

नाराच—[सं० पु०] बाण, तीर, दुर्दिन, एक वर्ण-वृत्त।

नारायण—[सं० पु०] विष्णु, परमेश्वर। एक उपनिषद्, एक बाण।

नारायणी—[सं० स्त्री०] गंगाजी, दुर्गादेवी, श्रीकृष्ण, लक्ष्मीजी, दुर्योधन को दी गई श्री कृष्णजी की सेना। शतावरि नामक ओषधि।

नाराशंस—[सं० वि०] स्तुति सम्बन्धी पुस्तक, पितर, सोम-पान देने का एक चमचा।

नाराशंसी—[सं० स्त्री०] वह पुस्तक जिसमें मनुष्यों की प्रशंसा हो।

नारि—[सं० स्त्री०] नारी, स्त्री।

नारिकेल—[सं० पु०] नारियल।

नारी—[सं० स्त्री०] स्त्री। एक वृत्त।

नालंद—[सं० पु०] पटना के निकट बौद्धों का एक प्राचीन विश्वविद्यालय।

नाल—[सं० स्त्री०] कमल आदि कुसुमों की पोली डंडी, पौधों का डंठल, नली, फुंकनी, [पु०] नारा, हरताल, लिंग।

नालकी—[हि० स्त्री०] पालकी, डोली, शिविका।

नालिक—[हि० पु०] तोप, बन्दूक, अग्न्यास्त्र।

नालिका—[सं० स्त्री०] नली, छोटा डंठल।

नालीक—[सं० पु०] कमल।

नावक—[पु०] बाण, किरात, एक छोटा तीर।

नाविक—[सं० पु०] मल्लाह, केवट, माझी।

नाश—[सं० पु०] ध्वंस, लय, प्रलय, किसी वस्तु का लोप हो जाना, बर्बाद हो जाना।

नाशक—[सं० वि०] ध्वंस करने वाला, नष्ट करने वाला।

नाशन—[सं० पु०] मारण, हनन।

नाशनीय—[सं० वि०] नष्ट करने योग्य।

नाशवान—[सं० वि०] नश्वर, अनित्य।

नाशित—[सं० वि०] ध्वंस किया हुआ। हत।

नाशितव्य—[सं० वि०] नष्ट करने योग्य।

नाशी—[सं० वि०] नाशकारी, नश्वर।

नासत्य—[सं० पु०] अश्विनी कुमार।

नासा—[सं० स्त्री०] नासिका। नथुना।

नासापाक—[सं० पु०] नाक का एक रोग।

नासापुट—[सं० पु०] नथुना।

नासाभेदन—[सं० पु०] नाक छेदने वाला, नक छिंकनी घास।

नासावामावर्त्त—[सं० पु०] नथ, नथुनी, नथ बेसर।

नासायोनि—[सं० पु०] नपुंसक।

नासिक—[सं० पु०] महाराष्ट्र देश का एक तीर्थ।

नासीर—[सं० पु०] सेनापति के आगे चलने वाली सेना, अग्रगामी।

नासूर—[सं० पु०] नाड़ी-व्रण। नस का पुराना घाव।

नास्ति—[सं० पु०] अभाव, अविद्यमानता, नहीं है।

नास्तिकता—[सं० स्त्री०] परमेश्वर, वेद और परलोक को न मानने का ज्ञान।

नास्तिकवाद—[सं० पु०] परमात्मा, वेद और परलोक को न स्वीकार करने का सिद्धान्त।

नास्य—[सं० वि०] नाक का। [पु०] नाथ, नाक में पैदा होने वाला।

नाहुषि—[सं० पु०] ययाति, राजा नहुष का पुत्र।

निंदक—[सं० पु०] निंदा करने वाला।

निंदन—[सं० पु०] निंदा करने का कार्य।

निंदनीय—[सं० वि०] बुरा, निंदा करने के योग्य।

निंदा—[सं० स्त्री०] बदनामी, किसी की बुराई करना।

निंदास्तुति—[सं० स्त्री०] स्तुति के बहाने निंदा।

निन्दित—[सं० वि०] दूषित, खोटा। बुरा।

निंद्य—[सं० वि०] निंदा करने के योग्य।

निंब—[सं० स्त्री०] नीम का पेड़।

निंबार्क—[सं० पु०] आचार्य

निंबादित्य ।

निंबू—[सं० पु०] निम्बू ।

निः—एक उपसर्ग, विना, नहीं ।

निःशंक—[सं० वि०] निर्भय, अशंक, निडर ।

निःशब्द—[सं० वि०] शान्त, शब्द-रहित ।

निःशेष—[सं० वि०] सम्पूर्ण, समस्त ।

निःश्रेणी—[सं० स्त्री०] सीढ़ी, नसेनी ।

निःश्रेयस—[सं० वि०] मोक्ष, मुक्ति, कल्याण, विज्ञान ।

निःश्वास—[सं० पु०] साँस, नाक से निकली साँस ।

निःसंकोच—[सं० वि०] बेधड़क । विना संकोच ।

निःसर्ग—[सं० वि०] विना स्वार्थ, निर्लिप्त ।

निःसन्तान—[सं० वि०] निपूता ।

निःसन्देह—[सं० वि०] बेशक, विना सन्देह ।

निःसंशय—[सं० वि०] निःसन्देह ।

निःसत्व—[सं० वि०] सार रहित । रिक्त ।

निःसरण—[सं० पु०] निकास, मार्ग, मुक्ति, निर्वाण, मरण ।

निःसीम—[सं० वि०] असीम, अनंत ।

निःसृत—[सं० वि०] वहिर्भूत, निकला हुआ ।

निःस्पृह—[सं० वि०] निर्लिप्त, इच्छा रहित, निर्लोभ ।

निःस्वार्थ—[सं० वि०] परोपकार, स्वार्थ रहित ।

नि—[सं०] एक उपसर्ग जो अनेक अर्थों का कारण है ।

निकंदन—[सं० पु०] वध, नाश ।

निकट—[सं० वि०] समीप, पास ।

निकटता—[सं० स्त्री०] समीपता ।

निकटवर्ती—[सं० वि०] पास वाला ।

निकटस्थ—[सं० वि०] समीप का ।

निकर—[सं० पु०] समूह । निधि ।

निकुंज—[सं० पु०] लताभवन ।

निकुंभ—[सं० पु०] कुंभकरण का पुत्र, रावण का मंत्री, एक शिव-गण, एक विश्वेदेव ।

निकुंभिला—[सं० स्त्री०] राक्षसों का देवालय, मेघनाद का यज्ञस्थान ।

निकुच—[हि० पु०] बड़हल ।

निकुही—[सं० स्त्री०] छोटी इला-यची ।

निकृति—[सं० स्त्री०] अधर्म ।

निकृष्ट—[सं० वि०] नीच, अधम ।

निकृष्टता—[सं० स्त्री०] नीचता, बुराई ।

निकेत—[सं० पु०] भवन, मंदिर ।

निकेतन—[सं० पु०] भवन, स्थान, आश्रम, मन्दिर ।

निक्कण—[सं० पु०] वीणा, सितार का स्वर ।

निक्षिप्त—[सं० वि०] धरोहर, अर्पित, त्यक्त, न्यस्त ।

निक्षेप—[सं० पु०] समर्पण, धरोहर, त्याग ।

निक्षेपक—[सं० वि०] त्याग करने-वाला, समर्पणकर्त्ता, स्थापनकर्त्ता ।

निक्षेपण—[सं० पु०] समर्पण, त्यागना ।

निखर्व—[सं० पु०] दश खर्व की संख्याएँ ।

निखात—[सं० पु०] खाई, परिखा, खत्ती ।

निखिल—[सं० वि०] सम्पूर्ण, समग्र ।

निगड—[सं० स्त्री०] हाथी की जंजीर ।

निगडित—[सं० वि०] बेड़ी पहनाया हुआ, कैदी ।

निगद—[सं० पु०] भाषण, कथन, एक ओषधि ।

निगदित—[सं० पु०] वर्णित, कथित, भाषित ।

निगम—[सं० पु०] ज्ञान, वेद, निश्चय, मार्ग, मेला, व्यापार ।

निगमन—[सं० पु०] परिणाम, फल ।

निगमागम—[सं० पु०] वेदशास्त्र ।

निगालिका—[सं० स्त्री०] नग स्वरूपिणी छन्द ।

निगूढ़—[सं० वि०] रहस्यमय, छिपा ।

निगृहीत—[सं० वि०] आक्रांत, पीड़ित, आक्रमित ।

निग्रह—[सं० पु०] अवरोध, बंधन, रोक, दमन ।

निग्रहस्थान—[सं० पु०] तर्क की एक स्थिति ।

निग्रही—[सं० वि०] रोकने या दबाने वाला, दंड देने वाला ।

निघंटु—[सं० पु०] वेद के शब्दों का कोश । शब्द-संग्रह मात्र ।

निघ्न—[सं० वि०] शिष्ट, वशीभूत, आधीन ।

निचय—[सं० पु०] संचय, समूह, निश्चय ।

निज—[सं० वि०] अपना, स्वकीय ।

निटिलाक्ष—[सं० पु०] शिवजी ।

नितंब—[सं० पु०] कमर के पीछे का उभड़ा भाग, चूतड़ ।

नितंबिनी—[सं० स्त्री०] सुन्दर नितम्ब वाली स्त्री, सुन्दरी ।

नित—[सं० अव्य०] प्रतिदिन ।

नितल—[सं० पु०] सात पातालों में से एक ।

नितांत—[सं० वि०] सर्वथा, अधिक, सदैव ।

नित्य—[सं० वि०] अविनाशी, शाश्वत,

जो सदा रहे ।

नित्यकर्म—[सं० पु०] प्रतिदिन का कार्य, स्नान, पूजनादि ।

नित्यकृत्य—[सं० पु०] नित्यकर्म ।

नित्यक्रिया—[सं० स्त्री०] नित्य-कर्म ।

नित्यगति—[सं० पु०] पवन, वायु ।

नित्यता—[सं० स्त्री०] अनश्वरता, विद्यमानता ।

नित्यत्व—[सं० पु०] नित्यता ।

नित्यदान—[सं० पु०] प्रतिदिन का कर्त्तव्य ।

नित्यनियम—[सं० पु०] प्रतिदिन की रीति । अचल ।

नित्यनैमित्तिककार्य—[सं० पु०] सन्ध्योपासन, शुभ कर्म ।

नित्यप्रति—[सं० अव्य०] नियम से । प्रतिदिन ।

नित्यप्रलय—[सं० पु०] चार प्रकार के प्रलयों में से एक ।

नित्यमुक्त—[सं० वि०] क्रियावान, चिरमुक्त, जीवनमुक्त ।

नित्ययौवन—[सं० पु०] सदा युवा रहने वाला ।

नित्ययौवना—[सं० स्त्री०] चिर-यौवना, द्रौपदी, कुन्ती, तारा आदि ।

नित्यशः—[सं० अव्य०] सदा, सर्वदा, प्रतिदिन ।

नित्यसम—[सं० पु०] अयुक्त, निर्वि-कार, खंडन ।

नित्यानित्यविवेक—[सं० पु०] नश्वर और अनश्वर का विचार ।

नित्यानंद—[सं० पु०] परमेश्वर, जो सदा आनन्दमय रहे ।

निदग्धिका—[सं० स्त्री०] श्वेत, छोटी चटाई ।

निदर्शन—[सं० पु०] दृष्टांत, उदाहरण ।

निदर्शन-पत्र—[सं० पु०] उदा-हरण-पत्र ।

निदर्शनमुद्र—[सं० स्त्री०] प्रतिष्ठा-सूचक भाव या मुद्रा ।

निदर्शना—[सं० स्त्री०] एक अलंकार जिसमें एक बात दूसरी की पुष्टि करती है ।

निदाघ—[सं० पु०] गरमी, ग्रीष्म ऋतु । धूप ।

निदान—[सं०पु०] रोग का निर्णय, मूल कारण ।

निदारुण—[सं० वि०] भयंकर, कठोर, निर्दय ।

निदाह—[सं० पु०] गरमी, ग्रीष्म ।

निदिध्यासन—[सं० पु०] परमार्थ चिन्तन, बारम्बार ध्यान ।

निदेश—[सं० पु०] आज्ञा, शासन, अनुमति ।

निद्र—[सं० पु०] एक हथियार ।

निद्रा—[सं० स्त्री०] सुप्ति, नींद, स्वप्न ।

निद्रायमान—[सं० वि०] जो सो रहा हो ।

निद्रालु—[सं० वि०] सोनेवाला, निद्राशील ।

निद्रित—[सं० वि०] सोया हुआ ।

निधन—[सं० पु०] मरण, नाश । कुल, वंश, कुल पति ।

निधान—[सं०पु०] आधार, आश्रय, निधि, कोष ।

निधि—[सं० स्त्री०] कोष, ९ निधियाँ, समुद्र, स्थान, विष्णु, शिव । ९ की संख्या ।

निधिनाथ—[सं० पु०] कुबेर, निधियों के स्वामी ।

निनाद—[सं०पु०] आवाज़, शब्द ।

निनादी—[सं० वि०] शब्द करने वाला ।

निपट—[हि० अव्य०] केवल, एक मात्र, निरा ।

निपतन—[सं० पु०] गिराव, अधः-पतन ।

निपात—[सं० पु०] पतन, मृत्यु, गिराव ।

निपाती—[सं० वि०] मारने वाला । गिरानेवाला ।

निपीड़क—[सं० वि०] पेरने वाला ।

निपीड़न—[सं० पु०] दुख देना, मलना, कुचलना, पेरना ।

निपुण—[सं० वि०] कुशल, प्रवीण, दक्ष, चतुर ।

निपुणता—[सं० स्त्री०] दक्षता, कुश-लता, चतुरता ।

निबन्ध—[सं० पु०] बन्धन, प्रबन्ध, गीत, लेख ।

निबन्धन-[सं०पु०] व्यवस्था, नियम, बन्धन, कारण ।

निबद्ध—[सं०वि०] बद्ध, गुथा हुआ, जकड़ा हुआ, ग्रथित ।

निबिड़—[सं० वि०] घोर, गहन, गहरा ।

निभ—[सं० पु०] प्रभा, कांति । [वि०] समान, तुल्य ।

निभृत—[सं० वि०] निश्चल, शांत, धीर, एकाकी ।

निमंत्रण—[सं० पु०] आह्वान, न्योता, दावत, बुलावा ।

निमंत्रणपत्र—आह्वान-पत्र, बुलावे का पत्र । न्योता ।

निमंत्रित—[सं० वि०] जिसे बुलाया गया हो, न्योता दिया गया हो ।

निम—[सं० पु०] शलाका, सूची, कतरनी ।

निमग्न—[सं० वि०] तन्मय, लीन, डूबा हुआ, प्रवृत्त ।

निमग्ना—[हि॰ वि॰] ढलवाँ, निम्न, विनीत, कोमल।

निमज्जन—[सं॰ पु॰] डुबकी लगाकर किया जाने वाला स्नान।

निमज्जित—[सं॰ वि॰] नहाया हुआ, डूबा हुआ, मग्न।

निमय—[सं॰ पु॰] बदला, विनियम, परिवर्त्तन।

निमात्ता—[हि॰ वि॰] सावधान, सचेत।

निमि—[सं॰ पु॰] पलकों का बन्द होना, खुलना। इक्ष्वाकुवंश का एक राजा।

निमित्त—[सं॰ पु॰] कारण, हेतु, साधन। उद्देश्य।

निमित्तक—[सं॰ वि॰] किसी कारण या उद्देश्य से होने वाला।

निमित्तिकरण—[सं॰ पु॰] एक कारण, जिसके द्वारा कोई पदार्थ बनाया जाय।

निमिराज—[सं॰ पु॰] राजा जनक।

निमिष-निमेष, पलकों का बन्द करना और खोलना।

निमीलन—[हि॰पु॰] आँख मूँदना।

निमीलित—[सं॰ वि॰] बन्द पलकें।

निमेष—[सं॰ पु॰] क्षण, पल, निमिष, पलकों का बन्द करना और खोलाना।

निम्न—[सं॰वि॰] नीचा, तले, नीचे।

निम्नगा—[सं॰ स्त्री॰] नदी।

नियन्ता—[सं॰ पु॰] शासक, नियम पर चलने वाला, व्यवस्था करने वाला।

नियंत्रण—[सं॰ पु॰] नियमित करना, काबू रखना।

नियंत्रित—[सं॰ वि॰] नियमबद्ध, नियमित, संयत।

नियत—[सं॰ वि॰] नियोजित, निश्चित, बँधा हुआ, स्थापित।

नियताप्ति—[सं॰स्त्री॰] अन्य उपायों को छोड़कर एक ही उपाय से फल की प्राप्ति का निश्चय।

नियतात्मा—[सं॰ वि॰] जितेन्द्रिय, यती, यमी।

नियताहार—[सं॰ वि॰] अल्पाहार, नियमित भोजन। परिमित भोजन।

नियति—[सं॰ स्त्री॰] भाग्यफल, भाग्य, स्थिरता, बन्धेज। अवश्यंभावी बात।

नियतेन्द्रिय—[सं॰ वि॰] प्रशान्त चित्त, संयत शरीर, जितेंद्रिय।

नियम—[सं॰ पु॰] रीति, विधान, परम्परा, व्यवस्था, प्रतिज्ञा योग का एक अंग।

नियमन—[सं॰ पु॰] शासन, रीति।

नियमबद्ध—[सं॰ वि॰] पाबन्द, नियमों से बंधा हुआ।

नियमशाली—[सं॰ वि॰] नियमानुसार, कार्यकर्त्ता।

नियमसेवा—[सं॰ स्त्री॰] नियम पालन, कर्त्तव्य पालन।

नियमित—[सं॰ वि॰] नियमबद्ध, क्रमबद्ध।

नियर—[हि॰ अव्य॰] समीप, पास।

नियामक—[सं॰ पु॰] व्यवस्थापक, नियम बनाने वाला, मारने वाला।

नियुक्त—[सं॰ वि॰] स्थिर, नियोजित, तैनात, तत्पर किया हुआ।

नियुक्ति—[सं॰ स्त्री॰] तैनाती, नियोजन, नियुक्त होने का भाव।

नियुत—[सं॰ पु॰] दस लाख की संख्या।

नियुद्ध—[सं॰ पु॰] मल्ल युद्ध, कुश्ती।

नियोक्ता—[सं॰ पु॰] नियोग करने वाला।

नियोग—[सं॰ पु॰] नियोजित करने का काम, द्वितीय पति बनाना, तैनाती।

नियोजक—[सं॰ पु॰] काम में लगाने वाला। तैनाती करने वाला।

नियोजन—[सं॰ पु॰] तैनात करना। किसी को किसी काम में लगाना।

नियोजित—[सं॰ वि॰] नियुक्त, संयोजित।

निरंकार—[हि॰ पु॰] ईश्वर, आकाश, निराकार

निरंकुश—[सं॰ वि॰] स्वतंत्र,स्वच्छन्द, निडर।

निरंग—[सं॰ वि॰] अंगहीन, [पु॰] रूपकालंकार का एक भेद।

निरंजन—[सं॰ वि॰] निर्दोष, कालिमारहित।

निरंतर—[सं॰ वि॰] स्थायी, अविचल, घना। लगातार।

निरंतराभ्यास—[सं॰ पु॰] स्वाध्याय, लगातार अभ्यास।

निरंतराल—[सं॰ वि॰] निरवकाश, अविच्छेद। लगातार।

निरंध—[सं॰ वि॰] अति अंधकार, मूर्ख, अंधा।

निरंभ—[सं॰ वि॰] निर्जल। विना पानी।

निरंश—[सं॰ वि॰] निरक्षांश, जिसका भाग न हो।

निरक्षदेशी—[सं॰ पु॰] विषुवत् रेखा के निकटवर्त्ती देश।

निरक्षर—[सं॰ वि॰] मूर्ख, अपढ़, अक्षरशून्य।

निरक्षरेखा—[सं॰ स्त्री॰] क्रान्तिवृत्त, नाड़ी-मंडल।

निरक्षि—[सं॰ वि॰] अन्धा।

निरत—[सं॰ वि॰] लीन, तत्पर,

प्रवृत्त ।

निरति—[सं० स्त्री०] अप्रीति, उदासीनता ।

निरतिशय—[सं० वि०] सर्वोत्कृष्ट, सबसे अच्छा ।

निरनुनासिक—[सं० वि०] नाक की सहायता से उच्चरित वर्ण ।

निरन्न—[सं० वि०] निराहार ।

निरपत्य—[सं० वि०] निस्सन्तान ।

निरपराध—[सं० वि०] अपराधरहित, निर्दोष ।

निरपेक्ष—[सं० वि०] उदासीन, स्वतंत्र, तटस्थ ।

निरभिमान—[सं० वि०] अहंकाररहित । गर्वहीन ।

निरभियोग—[सं० वि०] अभियोगरहित ।

निरभिलाष—[सं० वि०] आकांक्षारहित ।

निरभ्र—[सं० वि०] बिना बादल, मेघरहित ।

निरय—[सं० पु०] नरक ।

निरयण—[सं० पु०] बेघर का । गणनाहीन ।

निरर्गल—[सं० वि०] बेरोकटोक, अबाध ।

निरर्थक—[सं० वि०] व्यर्थ, निष्फल, अर्थरहित ।

निरवच्छिन्न—[सं० वि०] क्रमबद्ध, लगातार ।

निरवद्य—[सं० वि०] शुद्ध, निर्दोष ।

निरवधि—[सं० वि०] असीम, सीमा रहित ।

निरवयव—[सं० वि०] निराकार, निरंग ।

निरवलंब—[सं० वि०] निराश्रय, बिना सहारे ।

निरशन—[सं० पु०] लंघन, उपवास ।

निरस—[सं० वि०] फीका, विना स्वाद ।

निरसन—[सं० पु०] निकालना, फेंकना, रद करना ।

निरस्त—[सं० वि०] त्यागा हुआ, निवारित ।

निरस्त्र—[सं० वि०] अस्त्ररहित, खाली हाथ ।

निरहंकार—[सं० वि०] अभिमान रहित ।

निराकरण—[सं० पु०] निपटारा, निवारण, सन्देह मिटाना ।

निराकांक्षी—[सं० वि०] निःस्पृह, शान्त, सन्तुष्ट, आकाश, ईश्वर ।

निराकार—[सं० वि०] ब्रह्म, परमेश्वर, निरंग, विना आकार ।

निराकुल—[सं० वि०] सावधान, अविकल ।

निराकृत—[सं० वि०] अस्वीकृत, हटाया हुआ, अपमानित ।

निराकृति—[सं० वि०] आकार हीन, निरंग ।

निराचार—[सं० वि०] आचार-भ्रष्ट ।

निरातंक—[सं० वि०] निर्भय, निःशंक ।

निरादर—[सं० पु०] अपमान ।

निराधार—[सं० वि०] मिथ्या, जो प्रमाणों से पुष्ट न हो सके ।

निरानंद—[सं० वि०] दुखी ।

निरापद—[सं० वि०] सुरक्षित, निर्विघ्न ।

निरामय—[सं० वि०] स्वस्थ, निरोग ।

निरामिष—[सं० वि०] मांसरहित, मांस न खाने वाला ।

निरायुध—[सं० वि०] खाली हाथ, विना अस्त्र के ।

निरालंब—[सं० वि०] निराश्रय, निराधार ।

निरालय—[सं० वि०] एकान्त, निर्जन, घरविहीन, निराला ।

निरालस्य—[सं० वि०] तत्पर, स्फूर्तिवान्, आलस रहित ।

निराला—[हिं० पु०] विलक्षण, अनूठा, उत्तम, अपूर्व ।

निरावलंब—[सं० वि०] निराश्रय, निराधार ।

निराश—[सं० वि०] आशारहित, हताश ।

निराशा—[सं० स्त्री०] हताश, आशाहीनता । नाउम्मेदी ।

निराश्रय—[सं० वि०] असहाय, आश्रयरहित ।

निराहार—[सं० वि०] आहाररहित, निरन्न ।

निरिंद्रिय—[सं० वि०] विना इन्द्रिय का ।

निरिच्छा—[सं० वि०] इच्छारहित ।

निरीक्षक—[सं० पु०] देखनेवाला, जाँच करने वाला ।

निरीक्षण—[सं० पु०] निगरानी, देख-रेख ।

निरीक्षा—[सं० स्त्री०] देखना ।

निरीश्वरवाद—[सं० पु०] परमेश्वर के अस्तित्व को न माननेवाला सिद्धांत ।

निरीश्वरवादी—[सं० पु०] नास्तिक, परमात्मा को न मानने वाला ।

निरीह—[सं० वि०] उदासी, चेष्टा रहित ।

निरुक्त—[सं० वि०] नियुक्त, निश्चित रूप से कहा हुआ । [पु०] वेद का एक अंग ।

निरुक्ति—[सं० स्त्री०] शब्दों या वाक्यों की व्युत्पत्ति-बोधक व्याख्या । एक अलंकार ।

निरुत्तर—[सं० वि०] जिसका उत्तर न हो सके, लाजवाब।

निरुत्सुक—[सं० वि०] निरुद्वेग, उत्सुकता रहित।

निरुत्साह—[सं० वि०] उत्साह-रहित। सुस्त।

निरुद्ध—[सं० वि०] घिरा हुआ। बँधा हुआ।

निरुद्यत—[सं० वि०] जो तत्पर न हो।

निरुद्यम—[सं० वि०] बेकार, उद्यम-हीन। बे रोज़गार।

निरुद्यमी—[सं० पु०] निरुद्योगी, बेकार, निकम्मा।

निरुद्योग—[सं० वि०] उद्योग रहित, प्रयत्नरहित, बेकार।

निरुपद्रव—[सं० वि०] शान्त, उप-द्रव रहित।

निरुपद्रवी—[सं० वि०] झगड़ा न करने वाला, शान्त।

निरुपम—[सं० वि०] अनुपम, अनोखा, उपमारहित।

निरुपयुक्त—[सं० वि०] अनुचित, अनुपयुक्त।

निरुपयोगी—[सं० वि०] निरर्थक, व्यर्थ, बेकार।

निरुपाधि—[सं० वि०] उपाधि रहित, मायारहित।

निरुपाय—[सं० वि०] उपायरहित, लाचार। विवश।

निरूढ़-लक्षणा-एक लक्षणा-भेद जिसमें शब्द का ग्रहण किया हुआ अर्थ रूढ़ हो गया हो।

निरूढ़ा—[सं० स्त्री०] निरूढ़ लक्षणा।

निरूपक—[सं० वि०] निरूपण करने वाला।

निरूपण—[सं० पु०] निर्णय, विचार, दर्शन, प्रकाश, बखान।

निरूपित—[सं० वि०] जिसका बखान या निरूपण हो चुका हो।

निरोग—[सं० पु०] स्वस्थ।

निरोध—[सं० पु०] बंधन, रोक, अवरोध।

निरोधक—[सं० वि०] रोकने वाला।

निरोधन—[सं० पु०] रोक, अवरोध, बंधन।

निर्गंध—[सं० वि०] गंध रहित।

निर्गत—[सं० वि०] बाहर आया हुआ।

निर्गम—[सं० पु०] उद्गम, निकास।

निर्गुंडी—[सं० स्त्री०] सिंधवार, सँभालू।

निर्गुण—[सं० पु०] परमेश्वर। [वि०] जिसमें कोई गुण न हो।

निर्गुणिया—[सं० वि०] निर्गुण ब्रह्म का उपासक।

निर्गुणी—[सं० वि०] मूर्ख।

निर्घंट—[सं० पु०] शब्द कोष।

निर्घृण—[सं० वि०] निन्दित, घृणा रहित, निर्दय।

निर्घोष—[सं० पु०] शब्द, आवाज़।

निर्जन—[सं०वि०] एकान्त, विजन।

निर्जल—[सं० वि०] जलरहित।

निर्जलाएकादशी—[सं० स्त्री०] ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी जिस दिन बिना पानी पिये व्रत किया जाता है।

निर्जित—[सं० वि०] पराजित, हारा हुआ।

निर्जीव—[सं० वि०] जड़, जीव-रहित। मृत। उत्साह-रहित।

निर्झर—[सं० पु०] झरना, सोता।

निर्झरिणी—[सं० स्त्री०] नदी।

निर्णय—[सं० पु०] निश्चय, फैसला, निबटारा।

निर्णयोपमा—[सं० स्त्री०] एक अर्थालंकार। उपमेय और उपमान के गुण-दोष की विवेचना करनेवाला।

निर्णीत—[सं० वि०] निर्णय किया हुआ।

निर्णेता—[सं० पु०] निश्चयकर्त्ता, निर्णय करने वाला, न्यायाधीश।

निर्दय—[सं० वि०] निठुर, दया-रहित।

निर्दयता—[सं० स्त्री०] निठुरता।

निर्दहन—[सं० पु०] जलाना।

निर्दिष्ट—[सं० वि०] नियत किया हुआ।

निर्दूषण—[सं० वि०] दोषरहित। निर्दोष।

निर्देश—[सं० पु०] आदेश, निर्णय, आज्ञा, कथन।

निर्दोष—[सं० वि०] निरपराध, दोष रहित।

निर्दोषता—[सं० स्त्री०] निरपराधता।

निर्दोषी—[सं० वि०] दोषरहित।

निर्द्वंद—[सं० वि०] स्वच्छन्द, स्वतंत्र, अकेला, आवारा।

निर्धन—[सं० वि०] कंगाल, धनहीन।

निर्धनता—[सं० स्त्री०] कंगाली। ग़रीबी।

निर्धारण—[सं० पु०] निश्चय करना, ठहराना, छाँटना।

निर्धारित—[सं० वि०] निश्चित किया हुआ।

निर्बंध—[सं० पु०] अड़चन, रुकावट, हठ।

निर्बल—[सं० वि०] बलहीन, कमज़ोर।

निर्बलता—[सं० स्त्री०] अशक्ति, कमज़ोरी।

निर्वासन—[सं० पु०] देश निकाला, नगर निकाला, दूर करना।

निर्बुद्ध—[सं० वि०] मूर्ख, अज्ञानी।

निर्बोध—[सं० वि०] अज्ञान, अबोध।
निर्भय—[सं० वि०] अशंक, निडर, बेधड़क, निर्भीक।
निर्भयता—[सं० स्त्री०] निडरता, निर्भीकता।
निर्भर—[सं० वि०] आश्रित, परिपूर्ण, भरा हुआ।
निर्भीक—[सं०वि०] निडर, बेधड़क।
निर्भीकता—[सं० स्त्री०] निर्भयता।
निर्भीत—[हि० वि०] निडर।
निर्भ्रम—[सं० वि०] शंका या संदेह रहित।
निर्भ्रामक—[सं० वि०] भ्रम रहित, निर्भय।
निर्भ्रांत—[सं० वि०] निस्सन्देह।
निर्मम—[सं० वि०] त्याग, निर्मोही, मोह, ममता रहित।
निर्मर्याद—[सं० वि०] अपमानकारी, मान्यताहीन।
निर्मल—[सं० वि०] शुद्ध, स्वच्छ, निष्कलंक।
निर्मलता—[सं० स्त्री०] शुद्ध, स्वच्छता।
निर्मला—[सं० स्त्री०] पवित्रा, शुद्धा। [पु०] एक प्रकार के साधु।
निर्मली—[सं० पु०] रीठा का पेड़ या फल।
निर्मलोत्पल—[सं० पु०] संगमरमर, स्फटिक।
निर्माण—[सं० पु०] गठन, विधान, रचना, सृष्टि-करण।
निर्माता—[सं० पु०] रचयिता, बनाने वाला।
निर्मात्रिक—[सं० वि०] मात्रा रहित।
निर्माल्य—[सं० पु०] देवता पर चढ़ी हुई वस्तु।
निर्मित—[सं० वि०] सृजित, रचित, बनाया हुआ।
निर्मूल—[सं० वि०] निराधार, बेबुनियाद, नाश, नष्ट।
निर्मूलन—[सं० पु०] नष्ट, विनाश, निर्मूल होना।
निर्मोक—[सं० पु०] आकाश, शरीर की त्वचा, साँप की केंचुली।
निर्मोह—[सं० वि०] निर्दय, मोह, ममता रहित।
निर्मोहिनी—[स्त्री० वि०] निर्दया, ममता रहित।
निर्मोही—[सं० वि०] कठोर, निर्दय, मोह रहित।
निर्यात—[सं० पु०] विदेश भेजा गया माल।
निर्यातन—[सं० पु०] प्रतीकार, प्रतिहिंसा, बदला चुकाना, माल बाहर भेजना।
निर्यास—[सं० पु०] सार, सत, पेड़ों का गोंद।
निर्युक्ति—[सं० स्त्री०] अनुचित, युक्ति रहित।
निर्युक्तिक—[सं० वि०] अनुचित, अनुपयुक्त, युक्ति रहित।
निर्योगक्षम—[सं० वि०] चिंताशून्य, निश्चिंत।
निर्लज्ज—[सं० वि०] लज्जारहित।
निर्लज्जता—[सं० स्त्री०] बेहयाई, बेशरमी।
निर्लिप्त—[सं० वि०] निर्दोष, शुद्ध।
निर्लेप—[सं० वि०] निष्कलंक, शुद्ध, निर्दोष।
निर्लेपन—[सं० पु०] दोष शून्यता, शुद्धता।
निर्लेश—[सं० वि०] निष्कलंक, शुद्ध।
निर्लोभ—[सं० वि०] लालच रहित, लोभ हीन।
निर्लोम—[सं० वि०] लोम रहित, केश रहित।
निर्वंश—[सं० वि०] परिवार हीन, कुल हीन।
निर्वहण—[सं० पु०] निवाह, निर्वाह, गुजर, समाप्ति।
निर्वाचक—[सं०पु०] चुनने वाला।
निर्वाचन—[सं० पु०] अनेक में से कुछ का चुनना।
निर्वाचित—[सं० वि०] छाँटा हुआ, चुना हुआ।
निर्वाण—[सं० वि०] शांत, मृत, बुझा हुआ दीपक, बुझा हुआ।
निर्वात—[सं० वि०] पवन रहित। वायु विहीन स्थान।
निर्वाध—[सं० वि०] विघ्न रहित, सरल, अबाध, कंटक रहित।
निर्वापण—[सं० पु०] त्याग, दान, बुझाना, नाश।
निर्वायु—[सं० वि०] वायु रहित।
निर्वास—[सं० पु०] बाहर कर देना।
निर्वासक—[सं० पु०] निकालने वाला।
निर्वासन—[सं० पु०] वध करना, देश से निकाल देना।
निर्वासित—[सं० वि०] बहिष्कृत। निकाला गया।
निर्वास्य—[सं० वि०] अपराधी, देश निकालने के योग्य।
निर्वाह—[सं० पु०] निवाह, गुज़र।
निर्विकल्प—[सं० वि०] निश्चल, स्थिर, परिवर्त्तनहीन।
निर्विकल्प-समाधि—[सं० स्त्री०] परमात्मा साक्षात्कार, समाधि का एक भेद।
निर्विकार—[सं० वि०] शुद्ध, स्वच्छ, निर्दोष, विकार रहित।
निर्विघ्न—[सं० वि०] बाधा रहित, अबाध, निष्कंटक।

निर्विवाद—[सं० वि०] विवाद रहित, झगड़ा हीन ।

निर्विवेक—[सं० वि०] बुद्धि या ज्ञान से शून्य, विचार रहित ।

निर्विशंक—[सं० वि०] साहसी, निर्भय ।

निर्विशेष—[सं० पु०] परमात्मा, ईश्वर, जिसमें विशेष या अधिक कोई न हो ।

निर्विष—[सं० वि०] विष रहित, विष मुक्त ।

निर्विषी—[सं० स्त्री०] एक घास जिसकी जड़ अनेक विष-दोषों को मिटाती है । जदवार ।

निर्वीज—[सं० वि०] कारण रहित, विना बीज का ।

निर्वीर—[सं० वि०] विना वीर के, वीर विहीन ।

निर्वीर्य—[सं० वि०] पौरुष हीन, निस्तेज, वीर्य विहीन ।

निर्वृत्ति—[सं० स्त्री०] सिद्धि, वृत्ति रहित ।

निर्वेद—[सं० पु०] अपना अपमान, आत्मावहेलना, एक संचारी भाव ।

निर्वैर—[सं० वि०] आजातशत्रु, शत्रु रहित ।

निर्व्यलीक—[सं० वि०] निष्कपट ।

निर्व्याज—[सं० वि०] छल रहित, निष्कपट ।

निर्व्याधि—[सं० वि०] नीरोग, स्वस्थ ।

निर्हरण—[सं० वि०] मुर्दा या अरथी निकालना, शव-यात्रा ।

निर्हेतु—[सं० वि०] निष्प्रयोजन ।

निर्हेतुक—[सं० वि०] अकारण, निष्कारण ।

निल—[सं० पु०] विभीषण का मंत्री ।

निलय-[सं० पु०] मकान, स्थान, घर ।

निलीन—[सं० वि०] गूढ़, गुप्त, प्रच्छन्न । तिरोहित ।

निवर [सं० वि०] निर्णयकर्त्ता, बचानेवाला ।

निवरा—[सं० स्त्री०] अविवाहिता, कुमारी कन्या ।

निवर्त्तन—[सं० पु०] लौटना, वापस आना ।

निवसन--[सं० पु०] वस्त्र, घर, गांव ।

निवह—[सं० पु०] समूह, यूथ, सात वायु में से एक ।

निवात---[सं० पु०] वायु रहित स्थान, वायु रहित ।

निवातकवच—[सं० पु०] प्रह्लाद का पुत्र, एक दैत्य ।

निवारक—[सं० वि०] रोधक, हटाने या दूर करनेवाला ।

निवारण—[सं० पु०] छुटकारा, निवृत्ति, रोक ।

निवारित [सं० वि०] मना किया हुआ, रोका हुआ ।

निवास—[सं० पु०] मकान, घर, स्थान ।

निवासस्थान—[सं० पु०] रहने की जगह, घर, मकान ।

निवासी—[सं० पु०] रहनेवाला, बसनेवाला ।

निविड़- [सं० वि०] घना, गहरा ।

निविष्ट—[सं० वि०] एकाग्र, बँधा हुआ । तत्पर ।

निवीत—[सं० पु०] चादर, जनेऊ, हार, गले से लटका हुआ ।

निवृत्ति—[सं० स्त्री०] मुक्ति, छुटकारा, मोक्ष, निर्वाण ।

निवेदक—[सं० पु०] प्रार्थी, निवेदन कर्त्ता ।

निवेदन—[सं० पु०] प्रार्थना, विनय, विनती ।

निवेदित—[सं० वि०] निवेदन किया हुआ, अर्पित किया हुआ, विनत ।

निवेश—[सं० पु०] निवास, घर, प्रवेश, पड़ाव ।

निशंक—[सं० वि०] निर्भय, निडर, संदेह रहित, बेधड़क ।

निश—[सं० स्त्री०] रात्रि, निशा ।

निशचर—[सं० पु०] राक्षस ।

निशमन—[सं० पु०] देखना-सुनना ।

निशांत - [सं० पु०] प्रभात, प्रातःकाल, तड़का ।

निशांध—[सं० वि०] उल्लू, जिसे रतौंधी आती हो ।

निशा—[सं० स्त्री०] रजनी, रात्रि ।

निशाकर—[सं० पु०] चन्द्रमा ।

निशागम—[सं० पु०] संध्याकाल, रात्रि का आगमन ।

निशाचर—[सं० पु०] रात में चलनेवाला । राक्षस, चोर, भूत, उल्लू ।

निशाचरी—[सं० स्त्री०] अभिसारिका, राक्षसी, कुलटा ।

निशाचारी—[सं० वि०] रात्रि में चलनेवाला ।

निशाटन—[सं० स्त्री०] अभिसारिका, राक्षसी ।

निशात—[सं० वि०] पैनाया हुआ, शान दिया हुआ, तीक्ष्ण ।

निशानाथ—[सं० पु०] चन्द्रमा ।

निशापति—[सं० पु०] चन्द्रमा ।

निशामणि—[सं० पु०] चन्द्रमा ।

निशामुख--[सं० पु०] गोधूलि, संध्या समय ।

निशि—[सं० स्त्री०] रात्रि, रात ।

निशिकर—[सं० पु०] चन्द्रमा ।

निशिचर—[सं० पु०] राक्षस, उल्लू ।

निशित—[सं० वि०] तीक्ष्ण, पैना ।

निशिनाथ—[सं० पु०] चन्द्रमा ।

निशिपाल—[सं० पु०] चन्द्रमा।
निशिवासर—[सं० पु०] रात-दिन।
निशीथ—[सं० पु०] आधी रात, अर्द्ध रात्रि।
निशीथिनी—[सं० स्त्री०] रात्रि, रात।
निशुंभ—[सं० पु०] एक दैत्य, हिंसा, वध, मारण।
निशुंभमर्दिनी—[सं० स्त्री०] दुर्गा जी, देवी।
निश्चय—[सं० पु०] विश्वास, दृढ़ विचार, संकल्प।
निश्चयात्मक—[सं०वि०] संदेह रहित, ठीक ठीक।
निश्चल—[सं० वि०] अचल, स्थिर।
निश्चलता—[सं० स्त्री०] स्थिरता, दृढ़ता।
निश्चला—[सं० स्त्री०] पृथ्वी, अचल, स्थिरा।
निश्चिंत—[सं० वि०] चिंता रहित।
निश्चिंतता—[सं० स्त्री०] चिन्ता हीनता। बेफिक्री।
निश्चेष्ट—[सं० वि०] स्थिर, अचेत, चेष्टा रहित।
निश्छल—[सं० वि०] सीधा, छल रहित।
निश्छिद्र—[सं० वि०] छिद्र रहित, निर्दोष।
निःश्रेणी—[सं०स्त्री०] मुक्ति, सीढ़ी।
निःश्रेयस—[सं० पु०] कल्याण, मुक्ति, मोक्ष।
निश्श्वास—[सं० पु०] नाक या मुख के द्वारा बाहर निकलने वाली वायु।
निश्शंक—[सं० वि०] निडर, निर्भय।
निश्शब्द—[सं० वि०] शब्द हीन, सन्नाटा।
निश्शेष—[सं० वि०] संपूर्ण, शेष रहित।
निषंग—[सं० पु०] तूणीर, तरकश, भाथा।
निषण्ण—[सं० वि०] बैठा हुआ, उपविष्ट।
निषध—[सं०पु०] एक देश, एक पर्वत, एक स्वर।
निषाद—[सं० पु०] एक अनार्य्य जाति, केवट।
निषादी—[सं० पु०] हाथीवान, महावत।
निषिद्ध—[सं० वि०] वर्जित, दूषित, बुरा।
निषिद्धाचरण—[सं० वि०] शास्त्र विरुद्ध कार्य, कुकर्म करना।
निषूदन—[सं० पु०] नाश करने वाला।
निषेक—[सं० पु०] गर्भाधान संस्कार।
निषेचन—[सं० पु०] सींचना।
निषेध—[सं० पु०] वर्जन, मनाही, बाधा, रुकावट।
निषेधक—[सं० पु०] मना करने वाला।
निषेधाक्षेप—[सं० पु०] आक्षेपालंकार का एक भेद।
निषेधाभास—[सं० पु०] आक्षेप का एक भेद, एक अलंकार।
निषेधित—[सं०वि०] दूषित, वर्जित, निषिद्ध, रोका गया।
निष्कंटक—[सं० वि०] निर्विघ्न, झंझट रहित।
निष्क—[सं० पु०] सोने का एक सिक्का।
निष्कपट—[सं० वि०] निश्छल, सीधा।
निष्कपटता—[सं० स्त्री०] निश्छलता, सीधापन।
निष्कर—[सं० वि०] विना कर, विना महसूल।
निष्कर्म—[सं० वि०] अकर्म, कर्म न करने वाला।
निष्कर्ष—[सं० पु०] सार, तत्व, निचोड़, व्यवस्था, तात्पर्य, निश्चय।
निष्कलंक—[सं० वि०] निर्दोष।
निष्काम—[सं० वि०] कामना हीन, अनभिलाषा, आसक्ति रहित कर्म।
निष्कारण—[सं० वि०] व्यर्थ, निष्प्रयोजन।
निष्काशन—[सं० पु०] निकालना, बाहर करना।
निष्क्रमण—[सं० पु०] एक संस्कार, बाहर निकालना।
निष्क्रय—[सं० पु०] बदला, वेतन, विनिमय।
निष्क्रांत—[सं० वि०] बाहर निकला हुआ, प्रस्थित, निःसृत।
निष्क्रिय—[सं० वि०] निश्चेष्ट, क्रियाहीन, व्यापार रहित, निकम्मा।
निष्क्रियता—[सं० स्त्री०] निष्क्रिय होने का भाव।
निष्ठ—[सं० वि०] श्रद्धा, लगा हुआ, तत्पर, स्थित।
निष्ठा—[सं० स्त्री०] विश्वास, निश्चय, श्रद्धा, भक्ति, निर्वाह।
निष्ठावान—[सं० वि०] जिसमें श्रद्धा-भक्ति हो।
निष्ठीवन—[सं० पु०] थूक।
निष्ठुर—[सं० पु०] क्रूर, कठोर, निर्दय।
निष्ठ्यूत—[सं० वि०] निकला हुआ।
निष्णात—[सं० वि०] चतुर, निपुण, प्रवीण, पारंगत।
निष्पंद—[सं० वि०] दृढ़, स्थिर।
निष्पक्ष—[सं० वि०] तटस्थ, पक्षपात रहित।
निष्पत्ति—[सं०स्त्री०] सिद्धि, समाप्ति, विचार, मीमांसा, निर्धारण।
निष्पन्न—[सं० वि०] सिद्धि, पूर्ण, समाप्त।
निष्परिग्रह—[सं० पु०] योगी,

तपस्वी, संन्यासी।

निष्पादन—[सं० पु०] सिद्धान्त का समाधान करना, प्रण पूर्ण करना, सिद्धि, संपादन।

निष्पाप—[सं० पु०] निर्दोष, पाप-रहित। निरपराध।

निष्पीडन—[सं० पु०] निचोड़ना, पेरना, मरोड़ना।

निष्प्रतिभ—[सं० वि०] मूर्ख, अज्ञान, निर्बोध, हतबुद्धि।

निष्प्रत्यूह—[सं० वि०] निर्विघ्न, निरापद, निर्बाधा।

निष्प्रभ—[सं० वि०] प्रभाहीन, अस्वच्छ।

निष्प्रयोजन—[सं०वि०] व्यर्थ, निष्कारण, हेतु रहित।

निष्फल—[सं० वि०] निरर्थक, व्यर्थ।

निस्संकट—[सं० वि०] विपत्तिमुक्त, संकट रहित।

निसर्ग—[सं० पु०] आकृति, प्रकृति, सृष्टि, रूप।

निसृष्ट—[सं० वि०] प्रेरित, त्यागा हुआ, मध्यस्थ।

निसृष्टार्थ—[सं० पु०] श्रेष्ठ दूत, दोनों पक्षों के अभिप्राय का ज्ञाता।

निस्तत्व—[सं० वि०] निस्सार, तत्वहीन।

निस्तब्ध—[सं० वि०] शान्त, जड़, निश्चेष्ट। निश्शब्द।

निस्तब्धता—[सं० स्त्री०] सन्नाटा, जड़ता।

निस्तरण—[सं० पु०] तरना, मुक्त होना, पार होना।

निस्तार—[सं० पु०] मोक्ष, छुटकारा, मुक्ति। उद्धार।

निस्तारण—[सं० पु०] पार करना, मुक्त करना।

निस्तीर्ण—[सं० वि०] उद्धार, मुक्त, छूटा हुआ।

निस्तेज—[सं० वि०] उदास, प्रभाहीन, तेजहीन।

निस्तुप—[सं० वि०] बेशरम, निर्लज्ज।

निस्त्रिंश—[सं० वि०] खंग, तलवार।

निस्पृह—[सं० वि०] कामना रहित, लालच रहित।

निस्संकोच—[सं० वि०] बेधड़क, लज्जा रहित, संकोच रहित।

निस्संतान—[सं० वि०] संतान हीन।

निस्संदेह—[सं० वि०] निश्चित रूप से, अवश्य।

निस्सार—[सं० वि०] तत्त्व रहित, सारहीन। व्यर्थ।

निस्सारण—[सं० पु०] निकलने का मार्ग।

निस्सारित—[सं० वि०] निकाला हुआ।

निस्सीम—[सं० वि०] असीम, अपार।

निस्सृत—[सं० पु०] तलवार का एक हाथ।

निस्स्वार्थ—[हि० वि०] जिसमें अपना कोई मतलब या प्रयोजन न हो, निष्काम।

निहंता—[सं० वि०] प्राण लेने वाला, नाशकर्ता।

निहत—[सं० वि०] मृत, मार डाला गया।

निहत्था—[हि० वि०] खाली हाथ, शस्त्र-हीन, निर्धन।

निहित—[सं०वि०] स्थापित, रखा हुआ।

निह्नव—[सं० पु०] अविश्वास, छिपाना, गोपन।

निह्राद—[सं० पु०] निनाद, शब्द, ध्वनि।

नीच—[सं० वि०] निकृष्ट, क्षुद्र, अधम।

नीचगामी—[सं० वि०] नीचे की ओर जाने वाला। तुच्छ।

नीचाशय—[सं० वि०] क्षुद्र, तुच्छ, ओछा।

नीत—[सं० वि०] प्राप्त, स्थापित।

नीति—[सं० स्त्री०] राज-विद्या, युक्ति, सदाचार, व्यवहार।

नीतिज्ञ—[सं० वि०] चतुर, नीति में कुशल।

नीतिमान्—[सं० वि०] सदाचारी, नीति परायण।

नीतिविद्या—[सं०स्त्री०] नीतिशास्त्र।

नीतिशास्त्र—[सं० पु०] नीतिविद्या।

नीर—[सं० पु०] जल, पानी।

नीरज—[सं० पु०] कमल, मुक्ता, मोती।

नीरद—[सं० पु०] मेघ, बादल।

नीरधि—[सं० पु०] समुद्र।

नीरनिधि—[सं० पु०] समुद्र, सागर।

नीरमय—[सं० वि०] जल में डूबा, जलमग्न।

नीरस—[सं० वि०] स्वादरहित, शुष्क, फीका।

नीराजन—[सं० पु०] विसर्जन, दीप दान, आरती उतारना। हथियारों की सफाई।

नीराजना—[सं० स्त्री०] दीपदान, आरती, हथियारों की सफाई।

नीरुज—[सं० वि०] रोग रहित, स्वस्थ।

नीरोग—[सं० वि०] स्वस्थ, आरोग्य।

नीरोगी—[सं० वि०] स्वस्थ। रोग रहित।

नील—[सं० वि०] नीले रंग का।

नीलकंठ—[सं० वि०] शंकर जी, मोर। गौरा पक्षी। नीले गलेवाला।

नीलक—[सं० पु०] बीजगणित का प्रमाण, नीले रंग का हरिन।

नीलकमल—[सं० पु०] कृष्ण कमल,

नीले रंग का कमल।

नीलकांत—[सं० पु०] विष्णु, एक पक्षी, नीलमणि।

नीलक्रांत—[सं० स्त्री०] नीले और बड़े फूलों से युक्त विष्णुक्रान्ता बेल।

नीलगवय—[सं० पु०] नीलगाय।

नीलग्रीव—[सं० पु०] महादेव, मोर। एक पक्षी।

नीलचक्र—[सं० पु०] एक दंडक वृत्त, जगन्नाथ जी के मन्दिर के ऊपरी शिखर का चक्र।

नीलता—[सं० स्त्री०] नीलिमा, नीलापन।

नीलमणि—[सं० पु०] नीलम, नील-कांति मणि।

नीलमाधव—[सं० पु०] जगन्नाथ, विष्णु।

नीललोहित—[सं० वि०] बैंगनी रंग।

नीलवर्ण—[सं० वि०] आसमानी रंग।

नीलस्वरूपक—[सं० पु०] एक वर्णवृत्त।

नीलांजन—[सं० पु०] नीला थोथा, श्याम सुरमा।

नीलांबर—[सं० पु०] नीला वस्त्र, नीला रेशमी वस्त्र।

नीलांबरा—[सं० स्त्री०] लक्ष्मीजी।

नीलांबुज—[सं० पु०] नील कमल।

नीलाथोथा—[हि० पु०] तूतिया, ताँबे का क्षार।

नीलार्त्त—[सं० पु०] पियाबांसा।

नीलावती—[हि० पु०] चावल का एक भेद।

नीलिका—[सं० स्त्री०] एक वृक्ष, नीलवर्री, एक नेत्र रोग, मुख का रोग।

नीलिमा—[हि० स्त्री०] श्यामता, नीलापन।

नीलोत्पल—[सं० पु०] नील कमल।

नीलोपल—[सं० पु०] नीलमणि।

नीवार—[सं० पु०] पसही धान।

नीशार—[सं० पु०] तंबू।

नीहार—[सं० पु०] कुहरा, तुषार।

नीहारिका—[सं० स्त्री०] कुहासा, कुहरा।

नुति—[सं० स्त्री०] स्तुति, स्तोत्र।

नूतन—[सं० वि०] नया, अनोखा। नवीन।

नूतनता—[सं० स्त्री०] नवीनता।

नूनं—[सं० अव्य०] निश्चयार्थक शब्द।

नूपुर—[सं० पु०] पायल, बिछुआ। घुंघरू।

नृ—[सं० पु०] नर, मनुष्य।

नृकपाल—[सं० स्त्री०] मनुष्य की खोपड़ी।

नृकेसरी—[सं० पु०] नरसिंह, श्रेष्ठ पुरुष।

नृत्य—[सं० पु०] नर्त्तन, नाच।

नृत्यशाला—[सं० स्त्री०] नाच घर।

नृदेव—[सं० पु०] राजा, ब्राह्मण।

नृप—[सं० पु०] राजा, १६ की संख्या।

नृपति—[सं० पु०] नरेश, राजा।

नृमेध—[सं० पु०] यज्ञ, नरमेध।

नृवराह—[सं० पु०] विष्णु का वाराह अवतार।

नृशंस—[सं० वि०] क्रूर, दुष्ट, अत्याचारी, उद्दंड।

नृशंसता—[सं० स्त्री०] क्रूरता, निर्भीकता, निर्दयता।

नृसिंह—[सं० पु०] मनुष्यों में सिंह के समान, नरसिंह।

नृहरि—[सं० पु०] नरसिंह, नरहरि।

नेक्ता—[सं० पु०] पालक, पोषक।

नेता—[सं० पु०] सरदार, नायक, स्वामी।

नेति—[सं० वि०] जिसकी इति न हो। अनंत।

नेत्र—[सं० पु०] नयन, मथानी की रस्सी, रथ। पेड़ की जड़।

नेत्र-कनीनिका—[सं० स्त्री०] आँख की पुतली।

नेत्रच्छद—[सं० पु०] पलक।

नेत्रजल—[सं० पु०] आँसू।

नेत्र-पटल—[सं० पु०] पलक।

नेत्रवाला—[सं० पु०] सुगन्धवाला।

नेत्रमंडल—[सं० पु०] आँख का घेरा।

नेत्रलोत—[हि० पु०] अपराधी, कैदी।

नेत्रस्राव—[सं० पु०] आँख से पानी बहना।

नेत्रांबु—[सं० पु०] आँसू।

नेत्री—[सं० वि०] नेत्रवाली।

नेपथ्य—[सं० पु०] नाट्यशाला का शृंगारगृह, रंग मंच के पटल के पीछे का भाग। वेशभूषा।

नेमि—[सं० स्त्री०] प्रान्त, भाग, पहिये का घेरा, कुएं की जगत।

नैकट्य—[सं० पु०] समीपता, निकटता।

नैगम—[सं० वि०] वेद या ज्ञान सम्बन्धी।

नैज—[सं० वि०] निजी। आत्मीय, अपना।

नैतिक—[सं० वि०] नीति सम्बन्धी।

नैपुण्य—[सं० पु०] दक्षता, चतुराई, निपुणता।

नैमित्तिक—[सं० वि०] किसी प्रयोजन से होनेवाला कार्य।

नैमिष—[सं० पु०] एक तीर्थ।

नैमिषारण्य—[सं० पु०] नैमिष तीर्थ के निकट का एक वन।

नैयायिक—[स० वि०] न्याय का जानकार, न्यायवेत्ता।

नैर्ऋत—[स० वि०] दक्षिण पश्चिम के कोण का स्वामी।

नैर्ऋति—[सं० वि०] पश्चिम और

दक्षिण के बीच की दिशा ।

नैर्मल्य—[सं० पु०] स्वच्छता, शुद्धता ।

नैवेद्य—[सं० पु०] देवभोग, देवबलि । देवता को चढ़ाया गया फल फूल या पदार्थ ।

नैषध—[सं० वि०] निषध देश सम्बन्धी ।

नैष्ठिक—[सं० वि०] श्रद्धा-भक्ति युक्त ।

नैसर्गिक—[सं० वि०] स्वाभाविक, प्राकृतिक, स्वर्गीय ।

नोदन—[सं० पु०] प्रेरणा, पैना ।

नौवढ़—[हि० वि०] हाल ही में कंगाल से धनी हुआ व्यक्ति ।

न्यक्कार—[सं० पु०] अनादर, तिरस्कार, घृणा ।

न्यग्रोध—[सं० पु०] शिव, विष्णु, शमी वृक्ष, बरगद, वट ।

न्यस्त—[सं० वि०] धरोहर ।

न्याय—[सं० पु०] उचित निपटारा, प्रमाणों के द्वारा अपराध सिद्ध करना । इन्साफ ।

न्यायकर्त्ता—[सं० पु०] गौतम ऋषि, न्याय करने वाला ।

न्यायतः—[सं० वि०] न्यायसंगत, ठीक ठीक, ईमान से ।

न्यायपरता—[सं० स्त्री०] न्यायशीलता ।

न्यायवान—[सं० पु०] न्यायी ।

न्यायाधीश—[सं० पु०] न्याय करने वाला, शासक, न्यायालय का अध्यक्ष ।

न्यायी—[सं० पु०] सचाई पर चलने वाला, नीतिज्ञ, न्यायकर्त्ता ।

न्याय्य-[सं०वि०] उचित, न्यायानुकूल ।

न्यास—[सं० पु०] धरोहर, त्याग ।

न्यून—[सं० वि०] थोड़ा, कम । अल्प ।

न्यूनता—[सं० स्त्री०] कमी, अल्पता ।

न्यौछावर—[हि० स्त्री०] निछावर, उतार ।

न्यौली—[सं० स्त्री०] हठयोग की एक क्रिया ।

—:o:—

प

पंक—[सं० पु०] कीचड़, लेश ।

पंकज—[सं० पु०] कमल ।

पंकजराग—[सं० पु०] पद्मराग मणि ।

पंकजवाटिका—[सं० स्त्री०] एक वृत्त ।

पंकजात—[सं० पु०] कमल ।

पंकजासन-[सं०पु०] ब्रह्म, कमलासन ।

पंकरुह—[सं० पु०] कमल ।

पंकिल—[सं० वि०] कीचमय ।

पंक्ति—[सं० स्त्री०] श्रेणी, कतार, एक वृत्त । पंगति ।

पंक्तिपावन—[सं० पु०] दान लेने और यज्ञ में बुलाने योग्य ब्राह्मण ।

पंक्तिबद्ध—[सं० वि०] श्रेणीबद्ध, कतार में ।

पंखड़ी—[हि०स्त्री०] पुष्प-दल, फूल के पत्ते ।

पंगु—[सं० वि०] लंगड़ा ।

पंगुगति—[सं० स्त्री०] वर्णिक छन्दों का एक अवगुण ।

पंच-[सं०वि०] समाज, सभा, मुखिया, न्यायाधीश, पाँच की संख्या ।

पंचक—[सं० पु०] धनिष्ठा से ५ नक्षत्र, पाँच का समूह । पंचायत ।

पंच-कन्या—[सं० स्त्री०] अहल्या, तारा, कुन्ती, द्रौपदी, मंदोदरी जो विवाहित होकर भी कन्या रहीं ।

पंचकल्याण—[सं० पु०] लाल और सफेद रंग का घोड़ा ।

पंचकवल—[सं०पु०] पंच कौर, अग्राशन, भोजन के पूर्व कुत्ता, काग, रोगी, पतित और कोढ़ी के लिये निकाले गये पाँच ग्रास ।

पंचकोण—[सं० वि०] पाँच कोनों का क्षेत्र ।

पंचकोश—[सं० पु०] अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनन्दमय नामक शरीर के पाँच कोश ।

पंचकोस—[हि० पु०] काशी ।

पंचकोसी—[हि० स्त्री०] काशी की परिक्रमा ।

पंचकोशा—[सं० पु०] काशीजी ।

पंचगंगा—[सं० स्त्री०] गंगा, यमुना, सरस्वती, किरणा व धूतपापा नामक पाँच नदियों का समुदाय ।

पंचगव्य—[सं०पु०] धूप, घी, दही, गोबर, मूत्र नामक गाय के पाँच पदार्थों का समूह ।

पंचगौड़—[सं० पु०] गौड़, सारस्वत, कान्यकुब्ज, मैथिली और उत्कल नामक पाँच ब्राह्मणों का समुदाय ।

पंचचामर—[सं० पु०] गिरिराज, चामर या नाराच छन्द।

पंचजन—[सं० पु०] मनुष्य समुदाय, पाँच प्राणों का समूह।

पंचजन्य—[सं० पु०] श्रीकृष्ण का शंख।

पंचतत्त्व—[सं० पु०] पंचभूत, आकाश, तेज, वायु, जल, पृथ्वी का समुदाय।

पंचतन्मात्र—[सं० पु०] शब्द, रूप, स्पर्श, रस, गंध का समूह।

पंचता—[सं० स्त्री०] विनाश, मृत्यु।

पंचतिक्त—[सं० पु०] चिरायता, गुरिच, भटकटैया, सोंठ, कूट नामक ओषधियों का समूह।

पंचत्व—[सं० पु०] मरण, मृत्यु।

पंचदेव—[सं० पु०] शिव, गणेश, विष्णु, सूर्य, दुर्गा इन पाँच देवताओं का समूह।

पंचद्रविड़—[सं० पु०] द्रविड़, आंध्र, महाराष्ट्र, करणाट, और गुर्जर नामक पाँच ब्राह्मणों का समुदाय।

पंचनद—[सं० पु०] झेलम, चनाव, व्यास, रावी, सतलज नामक पाँच नदियों का समुदाय। पंजाब प्रदेश।

पंचनाथ—[सं० पु०] जगन्नाथ, बद्रीनाथ, द्वारिकानाथ, श्रीनाथ, रंगनाथ का समूह।

पंचपति—[सं० पु०] पंचभर्त्ता, पांडव।

पंचपल्लव—[सं० पु०] आम, जामुन, कैथा, बेल, और नीबू नामक वृक्षों के पत्ते।

पंचपात्र—[सं० पु०] श्राद्ध, एक बर्त्तन।

पंचप्राण—[सं० पु०] प्राण, अपान, उदान, समान और व्यान नामक पाँच पवनों का समुदाय।

पंचभर्त्तारी—[सं० स्त्री०] द्रौपदी।

पंचभूत—[सं० पु०] पंचतत्त्व।

पंचम—[सं० पु०] एकराग, एक स्वर, सुन्दर, कुशल, पाँचवाँ।

पंच-मकार—[सं० पु०] मछली, मुद्रा, मद्य, मांस, मैथुन, इन पाँचों का समुदाय।

पंचमहापातक—[सं० पु०] ब्रह्म-हत्या, चोरी, सुरापान, गुरु-पत्नी-मैथुन, और इन कर्मों के कर्त्ता की संगति।

पंचमहायज्ञ—[सं० पु०] ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ, और नृयज्ञ का समूह।

पंचमहाव्रत—[सं० पु०] ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, दान न लेना, अस्तेय, सूनृता, सत्यभाषण।

पंचमी—[सं० पु०] एक तिथि, अपा-दान कारक, द्रौपदी।

पंचमुखी—[सं० वि०] शिवजी, पाँच मुखवाला, सिंह।

पंचमूल—[सं० पु०] पाँच जड़ों के योग से बनी ओषधि।

पंचरत्न—[सं० पु०] सोना, हीरा, मोती, लाल और नीलम का समूह।

पंचराशिक—[सं० पु०] चार ज्ञात राशियों से पाँचवीं अज्ञात राशि के निकालने की क्रिया।

पंचलवण—[सं० पु०] सेंधा, सोंचर, विट, सामुद्र, कांच नामक पाँच प्रकार के नमक।

पंचवटी—[सं० स्त्री०] गोदावरी नदी के किनारे दण्डकारण्य में एक स्थान।

पंचवाँसा—[हि० पु०] गर्भधारण के पाँचवें मास का एक संस्कार।

पंचवाण—[सं० पु०] मोहन, उन्मादन, तापन, शोषण, द्रावण नामक कामदेव के पाँच वाण। आम्र, अशोक, कमल, नीलोत्पल और नवमल्लिका नामक कामदेव के पुष्प-वाण।

पंचवान—[हि० पु०] राजपूतों की एक जाति।

पंचशब्द—[सं० पु०] सितार, ताल, झांझ, नगाड़ा, तुरही का मिश्रित स्वर। महाकाव्य, भाष्य, कोष, सूत्र।

पंचशर—[सं० पु०] कामदेव के पाँच वाण।

पंचशिख—[सं० पु०] नरसिंघा बाजा, कपिल के पुत्र।

पंचसूना—[सं० स्त्री०] पीसना, कूटना, आग जलाना, झाड़ू लगाना, पानी का घड़ा रखना ऐसे पाँच हिंसा कर्म जो गृहस्थों द्वारा होते हैं।

पंचांग—[सं० पु०] पाँच अंगों की वस्तु, पत्रा, तिथिपत्र। प्रणाम करने की एक रीति।

पंचाक्षर—[सं०] एक वृत्त, पंच अक्षरोंवाला कोई शब्द या सूत्र, शिव-मंत्र।

पंचाग्नि—[सं० स्त्री०] पचन, गार्ह-पत्य, आहवनीय, आवसथ्य, अन्याहार्य्य नामक पाँच प्रकार की आग। चारों ओर अग्नि और ऊपर सूर्य-ताप में तपने की एक तपस्या।

पंचानन—[सं० पु०] पाँच मुखवाला, शिव, सिंह, बाघ।

पंचामृत—[सं० पु०] दूध, दही, घी, शक्कर और मधु मिश्रित पदार्थ।

पंचायत—[हि० स्त्री०] पंचों की सभा। बैठक।

पंचायतन—[सं० पु०] देवताओं की पंच मूर्तियों का समुदाय।

पंचाल—[सं० पु०] पंजाब देश, एक छन्द, शिवजी।

पंचालिका—[सं० स्त्री०] नटी, पुतली, गुड़िया।

पंचाली—[सं० स्त्री०] द्रौपदी, पुतली, पीपर, एक गीत।

पंचीकरण—[सं० पु०] पाँचों तत्त्वों का विभाग।

पंछी—[हि० पु०] पक्षी, चिड़िया।

पंजर—[सं० पु०] शरीर, कंकाल, पिंजरा, टट्टर।

पंजिका—[सं० स्त्री०] पंचाङ्ग।

पंडाल—[हि० पु०] सभा या उत्सव की बैठक के लिये बनाया गया मंडप।

पंडित—[सं० वि०] ज्ञानी, विज्ञानी, चतुर, विद्वान्।

पंडु—[सं० वि०] श्वेत, पीला, पांडु रोग। पांडु राजा।

पंडुर—[हि० पु०] पानी का साँप, पांडु वर्ण का।

पंथ—[सं० पु०] मार्ग, पथ, पद्धति, आचार, रीति। मत।

पंथिक—[हि० पु०] पथिक, बटोही।

पंथी—[हि० पु०] राही, किसी मत का अनुयायी।

पंपा—[सं० स्त्री०] दक्षिण भारत की एक नगरी, एक नदी, एक ताल।

पक्व—[सं० वि०] दृढ़, पका हुआ। गलित।

पक्वता—[सं० पु०] पक्कापन।

पक्वान्न—[सं० पु०] घी आदि से पकाया या भूना हुआ अन्न।

पक्वाशय—[सं० पु०] मेदा, पेट के भीतर वह भाग जहाँ भोजन पकता है।

पक्ष—[सं० पु०] पंख, ओर, पास, दो भिन्न बातों में से एक।

पक्षपात—[सं० पु०] किसी एक पक्ष का समर्थन करना। तरफदारी।

पक्षपाती—[सं० पु०] पक्ष लेने वाला।

पक्षाघात—[सं० पु०] लकवा, वात रोग में शरीर के किसी अंग का क्रिया-हीन हो जाना।

पक्षिणी—[सं० स्त्री०] पूर्णिमा, चिड़िया।

पक्षिराज—[सं० पु०] गरुड़।

पक्षिशावक—[सं० पु०] पक्षी का बच्चा।

पक्षी—[सं० पु०] पक्ष लेने वाला। चिड़िया।

पक्ष्मीय—[सं० वि०] हिमायती, पक्ष वाला।

पक्ष्म—[सं० पु०] आँख की बरौनी।

पख—[हि० स्त्री०] अड़ंगा, बखेड़ा।

पखवाड़ा—[हि० पु०] १५ दिनों का समय।

पखारना—[हि० क्रि०] शुद्ध करना, धोना।

पखाल—[हि० स्त्री०] मशक, धौंकनी, मुंह धोने का बर्तन।

पखावज—[हि० स्त्री०] मृदंग।

पग—[सं० पु०] पैर, डग।

पगदासी—[हि० स्त्री०] जूता, पनही।

पचित—[सं० वि०] पचा हुआ, जड़ा हुआ।

पच्ची—[हि० स्त्री०] जड़ाई, खुदाई।

पट—[सं० पु०] वस्त्र, पर्दा।

पटधारी—[सं० पु०] वस्त्र पहने हुए।

पटना—[हि० पु०] पाटलीपुत्र का आधुनिक नाम।

पटपर—[हि० वि०] समतल, चौरस।

पटबंधक—[हि० पु०] दखली। गिरवी।

पटवास—[सं० पु०] वस्त्रों को सुगन्धित करने की वस्तु। शिविर, घाँघरा।

पटबीजना—[हि० पु०] जुगनू।

पटमंजरी—[सं० स्त्री०] एक रागिनी।

पटमंडप—[सं० पु०] पंडाल, डेरा, तंबू।

पटरानी—[हि० स्त्री०] प्रधान रानी।

पटल—[सं० पु०] तख्ता, आवरण, अध्याय, टीका, समूह।

पटवारी—[हि० पु०] किसान और जमींदारों का हिसाब रखने वाला सरकारी कर्मचारी।

पटसन—[हि० पु०] जूट, एक प्रकार का सन।

पटह—[सं० पु०] दुंदुभी, नगाड़ा।

पटा—[हि० पु०] किर्च जैसा लोहे का एक अस्त्र जिससे तलवार के हाथ सीखे जाते हैं।

पटी—[हि० स्त्री०] कमरबन्द। पटुका।

पटीर—[सं० पु०] एक प्रकार का चन्दन, कत्था, पपीहा, बरगद, कामदेव।

पटु—[सं० वि०] प्रवीण, कुशल, स्वस्थ, प्रचंड, कठोर।

पटुता—[सं० स्त्री०] दक्षता, निपुणता, चतुराई।

पटुत्व—[सं० पु०] निपुणता, चतुराई।

पटेर—[सं० पु०] गोंद।

पटेल—[हि० पु०] चौधरी, गांव का मुखिया, जमींदारों की एक उपाधि।

पट्ट—[सं० पु०] प्रधान, पटिया, पगड़ी, ढाल, रेशम, पटसन, राज-सिंहासन।

पट्टदेवी—[सं० स्त्री०] पटरानी।

पट्टम—[सं० पु०] नगर।

पट्टमहिषी—[सं० स्त्री०] पटरानी।

पट्टा—[हि० पु०] कमरबन्द, चपरास, वह अधिकार पत्र जो ज़मींदार किसान को देता है।

पट्टिका—[सं० स्त्री०] पत्थर की पटिया, कपड़े की छोटी पट्टी।

पट्टीदार—[हि० पु०] भागीदार, अधिकारी।

पट्टू—[हि० पु०] तोता, एक ऊनी कपड़ा।

पठन—[सं० पु०] पढ़ना।

पठनीय—[सं० वि०] पढ़ने के योग्य ।

पठानीलोध—[हि० पु०] ओषधि के काम का एक जंगली वृक्ष ।

पठार—[हि०पु०] घास वाली पहाड़ी भूमि, पर्वतीय मैदान ।

पठित—[सं० वि०] शिक्षित, पढ़ा हुआ ग्रन्थ ।

पठमान—[सं० वि०] सुपाठ्य, पढ़े जाने के योग्य ।

पड़ती—[हि० स्त्री०] वह धरती जहाँ कुछ समय से खेती न होती हो ।

पड़ाव—[हि० पु०] यात्रियों के ठह-राने की या टिकाने की जगह ।

पण—[सं० पु०] स्तुति, मूल्य, प्रतिज्ञा, व्यवहार, एक प्राचीन सिक्का ।

पणव—[सं० पु०] ढोल, छोटा नगाड़ा, एक छन्द ।

पणफर—[सं० पु०] जन्मांक में २, ५, ८, ११ घर ।

पणाशी—[सं० वि०] विनाशक ।

पणित—[सं० वि०] बेचा हुआ, शर्त किया गया ।

पण्य—[सं० वि०] बचने या खरीदने योग्य, प्रशंसा के योग्य ।

पण्यभूमि—[सं० स्त्री] गोदाम ।

पण्यवीथी—[सं० स्त्री] हाट, चौक, बाजार ।

पण्यशाला—[सं० स्त्री०] हाट, दुकान, वेश्या ।

पतंग—[सं० पु०] सूर्य, गुड्डी, पक्षी, उड़ने वाले कीड़े, नाव, गेंद ।

पतंगज-[सं०पु०] सुग्रीव, कर्ण, यम ।

पतंगसुत—[सं० पु०] अश्विनीकुमार, सुग्रीव, कर्ण, यम ।

पतंचिका—[सं० स्त्री०] प्रत्यंचा, धनुष की डोरी ।

पतंजलि—[सं० पु०] योगदर्शन और पाणिनि-कृत अष्टाध्यायी के महाभाष्य के रचयिता एक महर्षि ।

पततप्रकर्ष—[सं० पु०] काव्य में दश प्रकार का रस दोष ।

पतन—[सं० पु०] अवनति, मृत्यु, गिरना, जाति-बहिष्कार ।

पतनीय—[सं० वि०] गिरने योग्य ।

पतनोन्मुख—[सं० वि०] पतनशील, अधोगति पर जाने वाला ।

पत-पानी—[हि० पु०] प्रतिष्ठा ।

पतवार—[हि० स्त्री०] नाव के पीछे रहने वाला डाँड़ ।

पताका—[सं स्त्री०] झण्डा ।

पताका-स्थान—[सं० पु०] नाटक में एक सन्धि, झण्डे की जगह ।

पताकिनी—[सं० स्त्री०] सेना ।

पताल-आंवला—[हि० पु०] एक ओषधि ।

पताल-कुम्हड़ा—[हि० पु०] एक जंगली वृक्ष जिसकी गांठों में कंद या शकरकंद होती है ।

पतिंवरा—[सं० स्त्री०] स्वयंवरा स्त्री ।

पति—[सं० पु०] स्वामी, परमेश्वर, प्रतिष्ठा, मर्यादा ।

पतित—[सं० वि०] पापी, अधम, गिरा हुआ ।

पतितता—[सं० स्त्री०] अधमता, नीचता ।

पतित-पावन—[सं० वि०] नीचों को पवित्र करने वाला ।

पतित्व—[सं० पु०] पति होने का भाव, स्वामित्व ।

पतिभक्ता—[सं० वि०] पतिव्रता ।

पतिलोक—[सं० पु०] वैकुण्ठ, स्वामी के रहने का स्वर्ग ।

पतिवती—[सं० स्त्री०] सौभाग्यवती, सधवा ।

पतिव्रत—[सं० पु०] स्त्री की अपने स्वामी में प्रीति ।

पतिव्रता—[सं० वि०] साध्वी, पति-भक्ता ।

पतीरी—[सं० स्त्री०] एक प्रकार की चटाई ।

पतोहू—[हि० स्त्री०] पुत्रवधू ।

पत्तन—[सं० पु०] नगर ।

पत्ति—[सं०पु०] प्यादा, पैदल सिपाही ।

पत्तिक—[सं० पु०] सेना का एक खंड और उसका नायक ।

पत्थरचटा—[हि० पु०] कृपण, सर्प, एक घास, मछली ।

पत्नी—[सं०स्त्री०]भार्या (विवाहिता स्त्री) ।

पत्नीव्रत—[सं० पु०] अपनी स्त्री से प्रेम का नियम ।

पत्य—[सं० पु०] पति होने का भाव ।

पत्र—[सं० पु०] पर्ण, पत्ता, पत्ती, चिट्ठी, कागज़, अखबार, पंखा, चद्दर ।

पत्रकार—[सं०पु०] समाचार-पत्र का सम्पादक, पत्र लिखने वाला ।

पत्रकृच्छ्र—[सं० पु०] पत्तों का काढ़ा पीकर रखा जाने वाला एक व्रत ।

पत्रपुष्प—[सं० पु०] छोटा पुरस्कार, फूल-पत्ते, सत्कार ।

पत्रभंग—[सं० पु०] सौन्दर्य के लिये मस्तक और कपोलादि पर रची गई रेखायें ।

पत्रवाहक—[सं० पु०] चिट्ठीरसा, पत्र ले जाने वाला ।

पत्रव्यवहार—[सं० पु०] लिखा-पढ़ी ।

पत्रा—[सं० पु०] तिथिपत्र, जंत्री ।

पत्रावली [सं०स्त्री०] पत्तों की पंक्ति ।

पत्रिका [सं० स्त्री०] छोटा समाचार-पत्र, सामयिक साहित्य-पुस्तक ।

पत्रित—[सं० वि०] जिसमें पत्ते निकल रहे हों ।

पत्री—[सं० स्त्री०] पत्रिका ।

पथ—[सं० पु०] मार्ग, राह ।

पथगामी—[सं० पु०] पथिक, बटोही ।

पथ-दर्शक—[सं० पु०] नेता, मार्ग दिखाने वाला ।
पथरी—[हि० स्त्री०] मूत्राशय का एक रोग ।
पथिक—[सं० पु०] यात्री, बटोही, राही ।
पथिवाहक—[सं० पु०] कहार, मजदूर ।
पथी—[सं० पु०] यात्री, बटोही ।
पथ्य—[सं० पु०] रोगी के अनुकूल भोजन, उपयुक्त भोजन ।
पथ्या—[सं० स्त्री०] हड़ । एक छन्द ।
पद—[सं० पु०] प्रतिष्ठा, उद्यम, बचाव । छन्द का एक चरण, शव, वस्तु, उपाधि, मोक्ष ।
पदक—[सं० पु०] किसी देवता के पद-चिह्न, तमग़ा ।
पदक्रम—[सं० पु०] डग, पग ।
पदग—[सं० पु०] पैदल चलनेवाला, प्यादा ।
पदचतुरर्द्ध—[सं० पु०] विषम वृत्तों का एक भेद ।
पदचर—[सं० पु०] प्यादा ।
पदच्छेद—[सं० पु०] व्याकरणानुसार किसी वाक्य के पदों को अलग अलग करना ।
पदच्युत—[सं० वि०] अधिकार से हटाया हुआ ।
पदज—[सं० पु०] पैरों की अंगुलियाँ ।
पदतल—[सं० पु०] पैर का तलवा ।
पदत्राण—[सं० पु०] जूता ।
पददलित—[सं० वि०] अपमानित, रौंदा हुआ ।
पदन्यास—[सं० पु०] पदों का व्यवस्थित करना ।
पदपटी—[हि० स्त्री०] एक प्रकार का नाच ।
पदपत्र—[सं० वि०] अधिकार पत्र, कमल का पत्र ।
पदपीठ—[सं० पु०] खड़ाऊँ ।
पदमैत्री—[सं० स्त्री०] काव्य में अनुप्रास ।
पदयोजना—[सं० स्त्री०] पद व्यवस्था, कविता के हेतु पदों को जोड़ना ।
पदरिपु—[सं० पु०] काँटा ।
पदवी—[सं० स्त्री०] उपाधि ।
पदवृत्त—[सं० पु०] युक्त शब्द ।
पद-विग्रह—[सं० स्त्री०] समास-पदों का अलग करना ।
पदव्याख्या—[सं० स्त्री०] व्याकरणानुसार पदों का परिचय ।
पद-सेना—[सं० स्त्री०] पैर दबाना ।
पदस्थ—[सं० वि०] पदारूढ़ ।
पदांक—[सं० पु०] पांव का चिह्न ।
पदानुसरण—[सं० पु०] अनुयायी बनना ।
पदाघात—[सं० पु०] पांव से मारना ।
पदातिक—[सं० पु०] दास, प्यादा ।
पदाधिकारी—[सं० पु०] प्रतिष्ठित अधिकारी ।
पदाम्भोज—[सं० पु०] चरण-कमल ।
पदारविन्द—[सं० पु०] चरण-कमल ।
पदार्थ [सं० पु०] वस्तु, पद का अर्थ, प्रयोजन ।
पदार्थवाद—[सं० पु०] वह मत जिसमें आत्मा को छोड़कर केवल भौतिक पदार्थों को ही सृष्टि कर्त्ता माना गया है ।
पदार्थ-विज्ञान—[सं० पु०] तत्व-विद्या, विज्ञान-शास्त्र ।
पदार्थ-विद्या—[सं० स्त्री०] विज्ञान शास्त्र ।
पदार्पण—[सं० पु०] किसी जगह जाना या आना ।
पदावली—[सं० स्त्री०] भजन-संग्रह, पद-माला ।
पदासन—[सं० वि०] पीढ़ा, काष्ठासन ।
पदिक—[सं० पु०] हीरा, जुगनू, पैदल फौज ।
पद्धटिका—[सं० स्त्री०] १६ मात्राओं का एक छन्द ।
पद्धति—[सं० पु०] परिपाटी, विधान, प्रणाली ।
पद्धरी—[सं० स्त्री०] पद्धटिका, १६ मात्राओं का एक छन्द ।
पद्म—[सं० पु०] कमल, विष्णु का एक अस्त्र, एक निधि, एक नरक, एक पुराण, एक छन्द, एक संख्या ।
पद्मकंद—[सं० पु०] भसींड़ा, कमल की जड़ ।
पद्मकाष्ठ—[सं० पु०] पद्माख वृक्ष ।
पद्मगर्भ—[सं० पु०] ब्रह्मा ।
पद्मजन्मा—[सं० पु०] ब्रह्मा ।
पद्मतंतु—[सं० पु०] मृणाल, कमल दंडी ।
पद्मक—[सं० पु०] पदमाक ओषधि ।
पद्मनाभ—[सं० पु०] विष्णु भगवान् ।
पद्मनेत्र—[सं० पु०] विष्णु ।
पद्मपत्र—[सं० पु०] कमल दल ।
पद्मपलाश-लोचन—[सं० पु०] श्रीकृष्ण, विष्णु ।
पद्मपाणि—[सं० पु०] ब्रह्मा, सूर्य, बुद्ध की एक मूर्ति ।
पद्मबंध—[सं० पु०] एक प्रकार का चित्र-काव्य ।
पद्मयोनि—[सं० पु०] ब्रह्माजी ।
पद्मराग—[सं० पु०] लाल, माणिक ।
पद्मरेखा—[सं० स्त्री०] हाथ की एक रेखा ।
पद्मलांछन—[सं० पु०] सूर्य्य, प्रजापति, राजा, कुबेर ।
पद्मलोचन—[सं० वि०] कमल-नयन ।
पद्मस्नुषा—[सं० स्त्री०] गंगा, लक्ष्मी, दुर्गा ।
पद्मबीज—[सं० पु०] कमलगट्टा ।
पद्मव्यूह—[सं० पु०] सेना को लड़ाई

में खड़ा करने का एक ढंग।

पद्मा—[सं० स्त्री०] लक्ष्मी।

पद्माकर—[सं० पु०] हिन्दी का एक प्रसिद्ध कवि, वह झील जिसमें कमल हों।

पद्मालय—[सं० पु०] ब्रह्मा, कमल का स्थान।

पद्मालया—[सं० स्त्री०] लक्ष्मी जी।

पद्मावती—[सं० स्त्री०] लक्ष्मी जी।

पद्मासन—[सं० पु०] ब्रह्मा, शिव, योग का एक आसन।

पद्मिनी—[सं० स्त्री०] उत्तम स्त्री, लक्ष्मी, छोटा कमल, चित्तौड़ की रानी।

पद्य—[सं० वि०] जिसमें कविता के पद हों। छन्दमयी कविता। पैरों से सम्बन्धित।

पद्यात्मक—[सं० वि०] जो छन्दों-बद्ध हो।

पधारना—[हि० क्रि०] आगमन।

पनकाल—[हि० पु०] अधिक वर्षा के कारण पड़ने वाला अकाल।

पनगोटी—[हि० स्त्री०] चेचक का एक भेद।

पनघट—[हि० पु०] पानी का घाट जहां से पीने का पानी भरा जाता है।

पनडुब्बी—[हि० स्त्री०] एक पक्षी, पानी के भीतर चलने वाली नाव।

पनस—[सं० पु०] कटहल।

पनसाल—[हि० स्त्री०] पियाऊ।

पनहियाभद्र—[हि० पु०] इतने जूते सिर पर मारना की सिर के बाल गिर जायँ।

पन्न—[सं० वि०] गिरा या पड़ा हुआ, नष्ट।

पन्नग—[सं० पु०] सर्प, पद्माख।

पन्नगपति—[सं० पु०] शेषनाग।

पन्नगारि—[सं० पु०] गरुड़।

पन्नगाशन—[सं० पु०] गरुड़।

पन्नगी—[सं० स्त्री०] सर्पिणी, नागिनी।

पन्ना—[हि० पु०] हरित मणि, मरकत। एक नगर जहाँ हीरों की खान है।

पपी—[सं० पु०] सूर्य।

पपीहा—[हि० पु०] चातक पक्षी।

पबि—[हि० पु०] वज्र।

पय—[हि० पु०] दूध, पानी।

पयस्विनी [सं० स्त्री०] एक नदी, दूध देने वाली गाय।

पयस्वी—[सं० वि०] दूध युक्त, जल युक्त।

पयहारी—[हि० पु०] केवल दूध पीकर रहने वाला।

पयोज—[सं० पु०] कमल।

पयोद—[सं० पु०] बादल, मेघ।

पयोधर—[सं० पु०] स्तन, थन, नागर मोथा, तालाब, कसेरू।

पयोधि—[सं० पु०] समुद्र।

पयोनिधि—[सं० पु०] समुद्र।

पयोव्रत—[सं० पु०] दूध या जल के आहार पर व्रत करना।

पयोराशि—[सं० पु०] समुद्र।

परंच—[सं० अव्य०] परंतु, तो भी।

परंतप—[सं० वि०] इन्द्रियजित, शत्रुओं को सताने वाला।

परंतु—[सं० अव्य०] लेकिन, तो भी।

परंपरा—[सं० स्त्री०] प्रणाली, परिपाटी, अनुक्रम।

परंपरागत—[सं० वि०] सनातन, जो सदा से होता आया हो।

पर—[सं० वि०] अन्य, दूसरा। मित्र। श्रेष्ठ, तत्पर।

परकीय—[सं० वि०] दूसरे का।

परकीया—[सं० स्त्री०] पति को छोड़ कर अन्य पुरुष से प्रीति करने वाली स्त्री।

परकोटा—[हि० पु०] घेरा, बाँध।

परगना—[हि० पु०] तहसील का वह भाग जिसमें बहुत से गाँव हों।

परघनी—[हि० स्त्री०] सोना-चाँदी आदि के ढालने का साँचा।

परछिद्र—[सं० पु०] परदोष।

परछी—[हि० स्त्री०] दूध या दही की मटकी।

परजवट—[हि० पु०] शुल्क, भाड़ा।

परजात—[सं० वि०] दूसरे से उत्पन्न, दूसरी जाति का।

परतंत्र—[सं० वि०] पराधीन, परवश।

परतंत्रता—[सं० स्त्री०] पराधीनता।

परतला—[हि० पु०] चपरास।

परत्र—[सं० वि०] परलोक।

परत्व—[सं० पु०] पूर्व होने का भाव।

परदाराभिगमन—[सं० पु०] व्यभिचार।

परदुःख—[सं० पु०] अन्य की पीड़ा।

परदेशी—[सं० वि०] विदेशी, दूसरे देश का।

परद्वेष्टा—[सं० पु०] परहिंसक, दूसरे का अनिष्ट करने वाला।

परद्रोह—[सं० पु०] दूसरे का अशुभ।

परद्रोही—[सं० वि०] दूसरे का अशुभ करने वाला।

परधन—[सं० पु०] दूसरे की सम्पत्ति।

परधाम—[सं० पु०] परमात्मा, स्वर्ग, बैकुंठ।

परपटी—[हि० स्त्री०] पापड़ी, गोपी-चन्दन, पपड़ी, स्वर्ण-पर्पटी।

परपार—[सं०पु०] दूसरी ओर का तट।

परपीड़क—[सं० पु०] परंतप, दूसरे को कष्ट देने वाला।

परपुरुष—[सं० पु०] अन्यपुरुष।

परपुष्ट—[सं० पु०] कोकिल। अन्य द्वारा पोषित।

परब्रह्म—[सं० पु०] परमेश्वर, परमात्मा। निर्गुण।

परभाग्योपजीवी—[सं॰वि॰] पराश्रित ।
परभुक्त—[सं॰ पु॰] दूसरे का भोगा हुआ ।
परभृत—[सं॰ स्त्री॰] कोकिल ।
परम—[सं॰ वि॰] अत्यन्त, मुख्य, केवल, प्रधान ।
परमगति—[सं॰पु॰] मोक्ष, उत्तमगति ।
परमतत्व—[सं॰पु॰] ब्रह्म, परमात्मा ।
परधर्म—[सं॰ पु॰] अन्य धर्म ।
परमधाम—[सं॰ पु॰] वैकुण्ठ, स्वर्ग ।
परमपद—[सं॰ पु॰] मोक्ष, मुक्ति ।
परमपिता—[सं॰ पु॰] परमात्मा ।
परमपुरुष—[सं॰ पु॰] परमात्मा ।
परमफल—[सं॰ पु॰] मोक्ष ।
परमभट्टारक—[सं॰ पु॰] एकछत्र राजाओं की एक पदवी ।
परमत—[सं॰ पु॰] दूसरे का मत ।
परमलाभ—[सं॰ पु॰] मोक्ष ।
परमहंस—[सं॰ पु॰] योगी, संन्यासी, अवधूत, परमात्मा ।
परमा—[सं॰ स्त्री॰] शोभा, सुंदरता ।
परमाणु—[सं॰ पु॰] सबसे छोटा अणु, किसी पदार्थ का वह छोटे से छोटा भाग जिसका विभाग न हो सके ।
परमाणुवाद—[सं॰पु॰]सृष्टि को परमाणुओं से रचित मानने का सिद्धान्त ।
परमात्मा—[सं॰पु॰] ब्रह्म, परमेश्वर ।
परमानन्द—[सं॰ पु॰] ब्रह्म के अनुभव का सुख, समाधि का सुख ।
परमान्न—[सं॰ पु॰] उत्कृष्ट भोजन ।
परमायु—[सं॰ स्त्री॰] जीवन काल की सीमा ।
परमार—[हि॰ पु॰] क्षत्रियों की एक जाति ।
परमार्थ—[सं॰ पु॰] मोक्ष, मुक्ति । सर्वश्रेष्ठ वस्तु ।
परमार्थवादी—[सं॰ पु॰] वेदांती, ब्रह्मज्ञानी, तत्वज्ञ ।
परमार्थी—[सं॰ वि॰] मुमुक्षु, यथार्थ तत्व की खोज करने वाला ।
परमिति—[सं॰ स्त्री॰] सीमित, मर्यादा । चरम सीमा ।
परमेश्वर—[सं॰ पु॰] ब्रह्म, भगवान्, शिव, विष्णु ।
परमेश्वरी—[सं॰ स्त्री॰] दुर्गा, देवी ।
परमेष्टी—[सं॰पु॰] ब्रह्मा, शिव, विष्णु ।
परलोक—[सं॰ पु॰] स्वर्ग, दूसरा शरीर ।
परलोक-गमन—[सं॰ पु॰] मृत्यु ।
परवश—[सं॰ वि॰] पराधीन ।
परवश्यता—[सं॰ स्त्री॰] परतंत्रता ।
परवी—[हि॰ स्त्री॰] उत्सव-काल । पर्व का समय ।
परश—[सं॰ पु॰] पारस पत्थर ।
परशु—[सं॰ पु॰] फरसा, कुठार ।
परशुराम—[सं॰ पु॰] जमदग्नि ऋषि के पुत्र ।
परश्व—[सं॰अव्य॰] परसों, आने वाला तीसरा दिन ।
परस्पर—[सं॰ क्रि॰ वि॰] आपस में ।
परस्परोपमा—[सं॰ स्त्री॰] एक अलंकार जिसमें उपमेय और उपमान परस्पर उपमान और उपमेय हों ।
परस्मैपद—[सं॰ पु॰] क्रिया का एक भेद ।
परहित—[सं॰ पु॰] परोपकार ।
परा—[सं॰ स्त्री॰] ब्रह्म-विद्या, उपनिषद्-विद्या । पंक्ति ।
पराक—[सं॰ पु॰] प्रायश्चित्त विशेष, वृत्त-विशेष । तलवार । क्षुद्र रोग-कीट । भेद ।
पराकाष्ठा—[सं॰ स्त्री॰] अंत, चरम सीमा ।
पराक्रम—[सं॰ पु॰] बल, शक्ति । पौरुष, उद्योग ।
पराक्रमी—[सं॰ वि॰] शक्तिशाली, पुरुषार्थी ।
पराग—[सं॰ पु॰] फूल की रज, पुष्प-धूलि ।
परागकेसर—[सं॰वि॰]पुष्पों के बारीक सूत जिनकी नोकों पर पराग होता है ।
परागति—[सं॰ स्त्री॰] गायत्री ।
पराङ्मुख—[सं॰ वि॰] उदासीन, विमुख, विरुद्ध ।
पराजय—[सं॰ स्त्री॰] हार, पराभव ।
पराजिका—[सं॰ स्त्री॰] परज नाम की एक रागिनी ।
पराजिता—[सं॰ स्त्री॰] एक लता । हारी हुई । विष्णुकांता ।
पराजेता—[सं॰ वि॰] विजयी, पराजय करने वाला ।
परातिक्ता—[सं॰ स्त्री॰] लाल रंग का पुनर्नवा ।
परात्पर—[सं॰ वि॰] सर्वश्रेष्ठ । परमात्मा ।
परात्मा—[सं॰ पु॰] परमात्मा ।
पराधीन—[सं॰वि॰] परवश, परतंत्र ।
पराधीनता—[सं॰ स्त्री॰] परतंत्रता ।
परान्न—[सं॰ पु॰] दूसरे का भोजन ।
परापर—[सं॰ पु॰] फालसा ।
पराभव—[सं॰ पु॰] तिरस्कार, हार, पराजय । विनाश ।
पराभिक्ष—[सं॰पु॰] थोड़ी सी भिक्षा से निर्वाह करने वाले वानप्रस्थ ।
पराभूत—[सं॰ वि॰] पराजित, ध्वस्त, अपमानित ।
परामर्श—[सं॰ पु॰] विवेचन, सलाह, विचार, युक्ति ।
परामर्ष—[सं॰ पु॰] तितिक्षा, सलाह, सहना ।
परामोद—[सं॰ पु॰] झाँसा ।
परामृष्ट—[सं॰ वि॰] निर्णीत, पीड़ित, खींचा हुआ ।
परायण—[सं॰ वि॰] प्रवृत्त, लगा

हुआ।

परायत्त—[सं॰वि॰] पराधीन, परवश।

परायु—[सं॰ पु॰] ब्रह्मा।

परारि—[सं॰ वि॰] बीता या आगे आने वाला वर्ष।

परार्थ—[सं॰ वि॰] परोपकार।

परार्द्ध—[सं॰ पु॰] ब्रह्मा की आयु, एक शंख की संख्या।

परार्द्धि—[सं॰ पु॰] ऋद्धिवान, विष्णु।

परार्द्ध्य—[सं॰ वि॰] सर्वोत्कृष्ट, श्रेष्ठ।

परावत—[सं॰ पु॰] फालसा।

परावर—[सं॰ वि॰] सर्वश्रेष्ठ, इधर-उधर का।

परावर्त्त—[सं॰ पु॰] लेन-देन, अदल-बदल। लौटना।

परावर्त्तन—[सं॰ पु॰] लौटना।

परावर्तित—[सं॰ वि॰] पलटा हुआ, उलटाया।

परावस्तु—[सं॰ वि॰] विश्वामित्र का एक पुत्र, एक गंधर्व।

परावह—[सं॰ पु॰] एक वायुभेद।

परावृत्त—[सं॰ वि॰] लौटा या बदला हुआ।

परावृत्ति—[सं॰ वि॰] पुनर्विचार, पुनरावृत्ति।

परावेदी—[सं॰ स्त्री॰] भटकटैया, कटेरी।

पराशर—[सं॰ पु॰] व्यास के पिता, वशिष्ठ और शक्ति के पुत्र।

पराश्रय—[सं॰ वि॰] दूसरे का सहारा, पराधीनता।

पराह्न—[सं॰ वि॰] तीसरा पहर। अपराह्न।

परि—[सं॰] आलिंगन, वीप्सा, लक्षण, दोषाख्यान, पूजा, व्यापकता, भूषण, संतोष, पूर्णता, अतिशय, विस्मृत, सर्वतोभाव, व्याधि, वर्ज्जन, शेष।

परिक—[सं॰ स्त्री॰] खोटी चाँदी।

परिकर—[सं॰ पु॰] पलंग, कमर-बन्ध, समूह, विवेक, सहकारी।

परिकरांकुर—[सं॰ पु॰] एक अर्थालंकार जिसमें साभिप्राय विशेष्य आता है।

परिकर्म—[सं॰ पु॰] उबटन लगाना, अंग-संस्कार, स्नान करना।

परिकर्मा—[सं॰ पु॰] सेवक।

परिकल्पन—[सं॰ पु॰] छल, प्रवंचन।

परिकल्पना—[सं॰ स्त्री॰] चेष्टा, उद्योग, उपाय, कर्म, चिन्ता, क्रिया।

परिकीर्ण—[सं॰ वि॰] समर्पित, विस्तृत, व्याप्त।

परिकीर्तन—[सं॰ पु॰] स्तुति, प्रस्ताव।

परिकूट—[सं॰ पु॰] नगर द्वार की खाई।

परिक्रम—[सं॰ पु॰] घूमना, टहलना।

परिक्रमण—[सं॰ पु॰] घूमना, टहलना।

परिक्रमा—[सं॰ स्त्री॰] किसी के चारों ओर घूमना, प्रदक्षिणा।

परिक्षत—[सं॰ वि॰] नष्ट-भ्रष्ट।

परिक्षव—[सं॰ पु॰] छींक।

परिक्षिप्त—[सं॰ वि॰] खाई आदि से घिरा हुआ।

परिक्षीद्र—[सं॰वि॰] कंगाल, निर्धन।

परिखा—[सं॰ स्त्री॰] खाई।

परिख्यात—[सं॰ वि॰] प्रसिद्ध, विख्यात।

परिगणन—[सं॰ पु॰] गिनना।

परिगणित—[सं॰ वि॰] ठीक गिना हुआ।

परिगत—[सं॰ वि॰] ज्ञात, प्राप्त, विस्मृत, वेष्ठित, गत।

परिगुंठित—[सं॰ वि॰] छिपा हुआ।

परिगृहीत—[सं॰ वि॰] स्वीकृत, मंजूर। सम्मिलित।

परिगृह्या [सं॰ स्त्री॰] धर्म-पत्नी, विवाहिता स्त्री।

परिग्रह—[सं॰पु॰] ग्रहण, दान लेना। स्वीकार, धर्मपत्नी, परिवार, प्रतिग्रह, विवाह।

परिग्रहण—[सं॰ पु॰] ग्रहण, कपड़े पहनना, पूर्ण रूप से लेना।

परिघ—[सं॰ पु॰] तीर, भाला, लोहे की लाठी, मुगदर, प्रतिबन्ध, घर, द्वार।

परिघोष—[सं॰ पु॰] मेघ-ध्वनि, कटु शब्द।

परिचय—[सं॰ पु॰] जानकारी, अभिज्ञता, लक्षण, प्रमाण। नाम, ग्राम, गुण आदि की जानकारी।

परिचयक—[सं॰ वि॰] जान-पहचान कराने वाला, ज्ञापक, बोधक।

परिचर—[सं॰ पु॰] सेवक।

परिचरा—[सं॰ स्त्री॰] दासी।

परिचर्य्या—[सं॰ स्त्री॰] टहल, रोगी की सेवा।

परिचायक—[सं॰ पु॰] ज्ञापक, जान पहचान कराने वाला।

परिचार—[सं॰ पु॰] सेवा, टहल।

परिचारक—[सं॰ पु॰] सेवक, भृत्य।

परिचारण—[सं॰ पु॰] संग करना, सेवा शुश्रूषा करना।

परिचारिक—[सं॰ पु॰] सेवक।

परिचारिका—[सं॰ स्त्री॰] दासी।

परिचालक—[सं॰ पु॰] चलाने वाला।

परिचालन—[सं॰ पु॰] क्रिया शील बनाना, चलाना, चलने की प्रेरणा देना।

परिचालित—[सं॰वि॰]चलाया हुआ।

परिचित—[सं॰वि॰] अभिज्ञ, जाना-समझा, ज्ञात।

परिचिति—[सं॰ वि॰] जानकारी,

लक्षण, प्रमाण, अभिज्ञता ।

परिचेय—[सं० वि०] परिचय के योग्य ।

परिच्छद—[सं० पु०] ढकने का वस्त्र, राजसेवक, परिवार, सामान ।

परिच्छन्न—[सं० वि०] ढका हुआ ।

परिच्छिन्न—[सं० वि०] परिमित, मर्यादायुक्त, विभक्त ।

परिच्छेद—[सं० पु०] विभाजन, पुस्तक का अध्याय, प्रकरण ।

परिजन—[सं० पु०] परिवार, नातेदार, सेवक ।

परिज्ञा—[सं० स्त्री०] बुद्धि, ज्ञान ।

परिज्ञात—[सं० वि०] समझा बूझा ।

परिज्ञान—[सं० पु०] पूर्ण ज्ञान ।

परिणत—[सं० वि०] बदला हुआ, झुका हुआ, परिणाम प्राप्त ।

परिणति—[सं०स्त्री०] पुष्टि, रूपान्तर, प्रौढ़ता, फल, अंत ।

परिणय—[सं० पु०] विवाह ।

परिणयन—[सं० पु०] विवाह करना ।

परिणाम—[सं० पु०] रूप परिवर्तन, फल,परिपुष्टि,विकार । एक अर्थालंकार ।

परिणामदर्शी—[सं० वि०] सूक्ष्मदर्शी, फल को विचार कर काम करने वाला ।

परिणामदृष्टि—[सं० स्त्री०] किसी कार्य के फल को जानने की दृष्टि ।

परिणामवाद—[सं० पु०] संसार की उत्पत्ति और नाश आदि का नित्य परिणाम के रूप में मानना ।

परिणामी—[सं० वि०] जो निरन्तर बदलता हो ।

परिणायक—[सं० पु०] पति, पासा खेलनेवाला ।

परिणायकरत्न—[सं० पु०] बौद्ध चक्रवर्तियों के सप्तधन कोषों में से एक ।

परिणाह—[सं० पु०] चौड़ाई, विस्तार, आकार ।

परिणीत—[सं० वि०] विवाहित, पूर्ण, समाया ।

परिणीता—[सं० स्त्री०] विवाहिता स्त्री, पाणिगृहीता ।

परिणेता—[सं० पु०] पति, भर्त्ता ।

परिणेय—[सं० पु०] व्याहने योग्य ।

परितः—[सं०अव्य०] चारों ओर,सर्वतः ।

परिताप—[सं० पु०] संताप, मनस्ताप । शोक, पश्चात्ताप, क्लेश ।

परितापन—[हि० पु०] संताप देना ।

परितापी—[सं० वि०] व्यथित, सतानेवाला ।

परितुष्ट—[सं० वि०] संतुष्ट । आनन्दित ।

परितुष्टि—[सं० स्त्री०] संतोष, तृप्ति ।

परितृप्त—[सं० पु०] सन्तोष ।

परितृप्ति—[सं० स्त्री०] हर्ष, सन्तोष । तृप्ति ।

परितोष—[सं० पु०] प्रसन्नता, सन्तोष, तृप्ति ।

परितोषक—[सं० पु०] तृप्ति करनेवाला ।

परितोषण—[सं० पु०] सन्तोष ।

परित्यक्त—[सं० वि०] त्यागा हुआ ।

परित्याग—[सं० पु०] त्यागना ।

परित्याज्य—[सं०वि०] त्यागने योग्य ।

परित्राण—[सं० पु०] रक्षा, बचाव ।

परित्रात—[सं० वि०] रक्षित ।

परित्राता—[सं० वि०] पालक, रक्षक ।

परिदान—[सं० पु०] लेन-देन, विनिमय, परिवर्त्तन ।

परिदेवक—[सं० वि०] दुखदायी, जुआरी, विलाप करनेवाला ।

परिदेवन—[सं० पु०] पछितावा, जुआ का खेल, विलाप ।

परिधान—[सं० पु०] वस्त्र धारण करना । धोती, कपड़ा ।

परिधि—[सं० स्त्री०] घेरा, गोला, मण्डल, वस्त्र ।

परिधेय—[सं० वि०] पहनने के योग्य ।

परिध्वंस—[सं० पु०] क्षति । हानि, नाश ।

परिनिर्वाण—[सं० पु०] मुक्ति, पूर्ण मोक्ष ।

परिनिष्ठित—[सं० वि०] ज्ञानी, प्रतिष्ठित ।

परिन्यास—[सं० पु०] काव्य में वह स्थल जहाँ कोई विशेष अर्थ पूर्ण हो । नाटक में मूल घटना का संकेत से सूचना करना ।

परिपक्व—[सं० वि०] पूर्ण रूप से पका हुआ । प्रवीण, प्रौढ़ ।

परिपंथी—[सं० पु०] विपक्षी, शत्रु, लुटेरा ।

परिपाक—[सं० पु०] प्रौढ़ता, निपुणता, कुशलता । पकाया जाना ।

परिपाटी—[सं० स्त्री०] पद्धति, रीति, क्रम, शैली ।

परिपार—[सं० पु०] मर्य्यादा, सीमा ।

परिपालन—[सं० पु०] बचाव, रक्षा, बचाना ।

परिपालक—[सं० पु०] पालन करनेवाला ।

परिपालित—[सं० वि०] पाला हुआ ।

परिपिष्टक—[सं० पु०] शीशा, धातु ।

परिपुष्ट—[सं० वि०] जो भली प्रकार पाला गया हो । स्वस्थ ।

परिपूत—[सं० वि०] शुद्ध, पवित्र ।

परिपूरक—[सं० वि०] पूरा करनेवाला ।

परिपूरित—[सं० वि०] प्रपूर्ण, पूरा भरा हुआ ।

परिपूर्ण—[सं० वि०] पूर्ण रूप से तृप्त ।

परिपोषक—[सं० वि०] पोषण

करनेवाला ।

परिपोषण—[सं० पु०] पालन-पोषण करना ।

परिपोषित—[सं० वि०] परिपुष्ट, पाला-पोषा हुआ ।

परिप्लव—[सं० पु०] अत्याचार । नौका, बाढ़, तैरना ।

परिप्लुत—[सं० वि०] भीगा । डूबा हुआ ।

परिब्राजक—[सं० पु०] अवधूत, संन्यासी । सदा घूमनेवाला ।

परिभव-[सं० पु०] अनादर, अवज्ञा, तिरस्कार ।

परिभावना—[सं० स्त्री०] चिंता, ऐसा वाक्य जो कुतूहल सूचित करे ।

परिभाषण—[सं० पु०] बुरा भाषण, निन्दापूर्ण कथन ।

परिभाषा—[सं० स्त्री०] सांकेतिक नियम, लक्षण, परिचय, परिष्कृत भाषा ।

परिभाषित—[सं० वि०] जिसका परिचय किया गया हो ।

परिभू—[सं० पु०] भगवान्, परमेश्वर ।

परिभूत—[सं० वि०] अपमानित । पराजित ।

परिभ्रमण—[सं० पु०] पर्यटन, घूमना, टहलना ।

परिभ्रष्ट—[सं० वि०] पतित, गिरा हुआ ।

परिमंडल—[सं० पु०] गोला, घेरा ।

परिमल—[सं० पु०] सुगंधि, संभोग, उबटना ।

परिमाता—[सं० पु०] तौल, माप ।

परिमार्जक—[सं० पु०] माँजने वाला, परिशोधक, परिष्कारक ।

परिमार्जन—[सं० पु०] परिशोधन, परिष्करण, मांजना, शुद्ध करना ।

परिमार्जित—[सं० वि०]परिष्कृत, शुद्ध किया हुआ, माँजा हुआ ।

परिमित—[सं० पु०] सीमित, सीमाबद्ध, अल्प ।

परिमितव्यय—[सं० पु०] नियमित खर्च ।

परिमितव्ययी—[सं० पु०] समझ-बूझकर खर्च करने वाला ।

परिमिति—[सं० स्त्री०] मर्य्यादा, परिमाण, सीमा ।

परिमेय—[सं० वि०] तोलने या मापने के योग्य ।

परिमोक्ष—[सं० पु०] मोक्ष, निर्वाण, परित्याग ।

परिमोक्षण-[सं०पु०] परित्याग करना, मुक्त करना ।

परिरंभ—[सं० पु० [परिरंभण, आलिंगन ।

परिरंभक-[सं० पु०] आलिंगन करने वाला ।

परिलंबन—[सं० पु०] भाचक्र की २७ अंश पर एक कल्पित वृत्त रेखा ।

परिलेख—[सं० पु०]वर्णन, उल्लेख, खाका, चित्र, तूलिका ।

परिलेखन—[सं० पु०] वर्णन, चित्र, किसी के चारों ओर रेखाएँ खींचना ।

परिवर्त्त—[सं० पु०] घुमाव, चक्कर, बदला, विनिमय ।

परिवर्तक—[सं० पु०] घूमने या चक्कर खाने वाला ।

परिवर्तन—[सं० पु०] रूपान्तर, घुमाव, फेरा, आवर्तन ।

परिवर्तित—[सं० वि०] बदला हुआ, रूपांतरित ।

परिवर्ती—[सं० वि०] बारंबार बदलने वाला ।

परिवर्द्धक—[सं० पु०] अति वृद्धि करने वाला, उन्नतिशील ।

परिवर्द्धन—[सं० पु०] बढ़ती, उन्नति ।

परिवर्द्धित—[सं० वि०] उन्नति या वृद्धि । प्राप्त, प्रवर्धित ।

परिवह—[हि० पु०] अग्नि की जीभ, एक पवन ।

परिवाद—[सं०पु०] निन्दा, अपवाद ।

परिवादिनी—[सं० स्त्री०] बाजा, वीणा ।

परिवादी—[सं० वि०] निन्दा करने वाला ।

परिवार—[सं० पु०] कुटुम्ब, कोष, वंश, आवरण ।

परिवास—[सं० पु०] सुगन्धि, घर, मकान ।

परिवाह—[सं० पु०] प्रवाह, बाढ़ ।

परिवृत—[सं० वि०] वेष्टित, आवृत ।

परिवृति—[सं० स्त्री०] ढकने या छिपाने वाला पदार्थ, वेष्टन ।

परिवृत्त—[सं० वि०] घेरा हुआ । उलटा-पलटा हुआ ।

परिवृत्ति—[सं० स्त्री०] घेरा, अर्थान्तर, समाप्ति ।

परिवृद्धि—[सं० स्त्री०] परिवर्द्धन ।

परिवेद—[सं० पु०] पूर्ण ज्ञान ।

परिवेदन—[सं० पु०] पूर्ण ज्ञान, बड़े भाई से पूर्व छोटे भाई का विवाह, बहस, दुःख ।

परिवेश—[सं० पु०] घेरा, वेष्टन ।

परिवेष—[सं० पु०] परकोटा, घेरा, भोजन परोसना ।

परिवेष्टन—[सं० पु०] आवरण, घेरा, आच्छादन ।

परिव्रज्या—[सं० स्त्री०] तपस्या, भ्रमण, भिखारी जैसा जीवन ।

परिव्राजक—[सं० पु०] परमहंस, संन्यासी, यती ।

परिव्राट्—[सं० पु०] संन्यासी, साधु ।

परिशिष्ट—[सं० वि०] अवशेष, आवश्यक बातों का अंश जो पुस्तक के

अन्त में छपा हो।

परिशीलन—[सं० पु०] स्पर्श करना, किसी विषय को ध्यान लगा कर पढ़ना।

परिशुद्ध—[सं० वि०] पवित्र, स्वच्छ, परिष्कृत।

परिशुष्क—[सं० वि०] बहुत सूखा।

परिशेष—[सं० वि०] बचा हुआ, अवशेष।

परिशोध—[सं० पु०] पूर्ण शुद्धि।

परिशोधक—[सं० पु०] शुद्ध करने वाला।

परिशोधन—[सं० पु०] पूर्ण रूप से शुद्ध करना।

परिश्रम—[सं० पु०] उद्यम, थकावट, श्रम, मेहनत।

परिश्रमी—[सं० वि०] उद्यमी, श्रम करने वाला।

परिश्रय—[सं० पु०] रक्षा या आश्रय का स्थान। सभा।

परिश्रांत—[सं० पु०] थका हुआ।

परिश्रुत—[सं० वि०] विख्यात, प्रसिद्ध।

परिषद्—[सं० स्त्री०] किसी विषय पर व्यवस्था देने वाली विद्वत्सभा।

परिषद्—[सं० पु०] सदस्य, सभासद।

परिष्कार—[सं०पु०] शुद्धि, स्वच्छता, शृंगार, भूषण।

परिष्क्रिया—[सं० स्त्री०] मार्जन, शोधन, सजाना।

परिष्कृत—[सं० वि०] परिमार्जित, सजाया, हुआ, शुद्ध किया हुआ।

परिष्वंग—[सं० पु०] आलिंगन, रमण।

परिसंख्या—[सं० स्त्री०] गणना, एक अलंकार जिसमें प्रस्तुत या अप्रस्तुत बात उसके समान अन्य बात के व्यंग्य या वाच्य से रोकने के लिये कही जाय।

परिसर्प—[सं० पु०] घूमना, परिक्रमण, टहलना।

परिस्फुट—[सं० वि०] खिला हुआ, प्रकाशित, प्रगट।

परिस्यंद—[सं०पु०] रसना, झरना।

परिहत—[सं०वि०] मृत। मरा हुआ।

परिहरण—[सं० पु०] त्याग, निराकरण, दोष निवारण।

परिहार—[सं० पु०] अनिष्ट आदि के दूर करने का उपाय, उपचार, प्रायश्चित्त, परित्याग।

परिहारी—[सं० पु०] कलंक को छिपाने वाला, निवारण, त्याग।

परिहार्य—[सं०वि०] निवारण योग्य, बचाव या त्याग के योग्य।

परिहास—[सं० पु०] उपहास, कौतुक, कुतूहल।

परिहास्य—[सं० पु०] हास्य के योग्य, उपहास।

परिहित—[सं० वि०] आच्छादित, पहना हुआ, वेष्ठित।

परीच्छित—[सं० वि०] अन्य का चाहा हुआ।

परीक्षक—[सं० पु०] जाँच करने वाला।

परीक्षण—[सं० पु०] निरीक्षण, जाँच-पड़ताल करने वाला।

परीक्षा—[सं० स्त्री०] समीक्षा, निरीक्षण, योग्यता का निर्णय, जाँच पड़ताल।

परीक्षित—[सं० वि०] जिसकी जाँच की गई हो। एक राजा।

परीक्ष्य—[सं० वि०] जाँच या परीक्षा के योग्य।

परीषह—[सं० पु०] जैन धर्म्मानुसार २२ प्रकार के त्याग।

परुष—[सं० वि०] कठोर, निर्दय, कड़ा।

परुषता—[सं० स्त्री०] निर्दयता, कठोरता।

परुषा—[सं० स्त्री०] रावी नदी, संयुक्त, टवर्ग, वर्ण तथा र, श, ष, क, दीर्घ समास वाली पद-योजना।

परुषाक्षर—[सं० पु०] व्यंग्य, कठोर वचन, टवर्ग के संयुक्त अक्षर।

परुषोक्ति—[सं० स्त्री०] नीरस वचन।

परेश—[सं० पु०] परमेश्वर।।

परोक्ष—[सं० पु०] अभाव, गुप्त, जो देखा न गया हो।

परोपकार—[सं० पु०] दूसरों के हित का कार्य।

परोपकारी—[सं० पु०] दूसरों की भलाई करने वाला।

परोपदेश—[सं० पु०] दूसरों को शिक्षा देकर हित की बात कहना।

परोपदेशक—[सं० पु०] दूसरों से हित की बात कहने वाला।

पर्जनी—[सं० स्त्री०] दारु हलदी।

पर्जन्य—[सं० पु०] विष्णु, इन्द्र, बादल।

पर्ण—[सं० पु०] पत्ता, वट-पत्र।

पर्णक—[सं० पु०] पार्णिक गोत्र चलाने वाले एक ऋषि।

पर्णकपूर—[हि० पु०] कपूरी पान।

पर्णकार [सं० पु०] तमोली।

पर्णकुटी—[सं०स्त्री०] पत्तों की झोपड़ी।

पर्णकुच—[सं० पु०] एक व्रत जिसमें ढाक, गूलर, कमल और बेल के पत्तों का काढ़ा तीन दिन तक पिया जाता है।

पर्णकृच्छ्र—[सं० पु०] एक व्रत-विशेष।

पर्णखण्ड—[सं० पु०] जिस वृक्ष पर फूल बिना फल होते हैं।

पर्णचोरक—[सं०पु०]गंध द्रव्य-विशेष।

पर्णनर—[सं० पु०] ढाक के पत्तों का पुतला जो मृतक के बदले जलाया जाता है।

पर्णभोजन—[सं० पु०] वह जीव जो केवल पत्ते खाकर रहे, बकरी।
पर्णमणि—[सं० स्त्री०] पन्ना, हरित मणि, एक प्रकार का अस्त्र।
पर्णमाचल—[सं० पु०] कमरख वृक्ष।
पर्णमृग—[सं० पु०] गिलहरी, बन्दर, पत्तों में घूमने वाला जीव।
पर्णय—[सं० पु०] एक दैत्य जो इन्द्र द्वारा मारा गया था।
पर्णरुह—[सं० पु०] वसंत ऋतु।
पर्णलता—[सं० स्त्री०] पान की बेल।
पर्णवल्कल—[सं० पु०] एक ऋषि।
पर्णवल्ली—[सं० स्त्री०] पलाशी नाम की लता।
पर्णशवर—[सं० पु०] एक देश।
पर्णशाला—[सं० स्त्री०] पर्णकुटीर, पत्तों की झोपड़ी।
पर्णशालग्र—[सं० पु०] भाद्रस्व वर्ष का एक पहाड़।
पर्णसि—[सं० पु०] सागर, कमल, पानी में बना हुआ घर।
पर्णास—[सं० पु०] तुलसी।
पर्णिक—[सं० पु०] पत्ते बेचने वाला, बारी।
पर्णिका—[सं० स्त्री०] मान कंद, शालपर्णी, अग्नि मथने की अरणी।
पर्णिनी—[सं० पु०] सुगंध वाला।
पर्णी—[सं० पु०] वृक्ष, ओषधि।
पर्पट—[सं० पु०] पित्तपापड़ा, पापड़ा।
पर्पटी—[सं० स्त्री०] गोपीचन्दन, गुजरात की मिट्टी, रसपर्पटी नाम की ओषधि।
पर्पटीरस-[सं०पु०] एक प्रकारका रस।
पर्यंक—[सं० पु०] पलंग, बड़ी चारपाई।
पर्यंक-बंधन—[सं० पु०] एक प्रकार का योगासन।
पर्यंत—[सं० अव्य०] तक।
पर्यंतदेश—[सं०स्त्री०] सीमान्त देश।
पर्यंतभूमि—[सं० स्त्री०] नदी, नगर या पर्वत के समीप की भूमि।
पर्यटन—[सं० पु०] यात्रा, भ्रमण।
पर्यनुयोग—[सं० पु०] जिज्ञासा।
पर्यवसान—[सं० पु०] अंत, समाप्ति, परिमाण, मिलना, अर्थ।
पर्यस्तापह्नुति—[सं० स्त्री०] एक अर्थालंकार जिसमें वर्ण्य वस्तु का गुण छिपाकर उसी का दूसरी वस्तु पर आरोपण हो।
पर्याप्त—[सं० वि०] यथेष्ट, आवश्यकतानुसार, काफी।
पर्याय—[सं० पु०] समान अर्थ वाले शब्द, एक अर्थालंकार।
पर्यायवाचक—[सं० पु०] एकार्थबोधक।
पर्यायशयन—[सं० पु०] पहरेदारों का बारीबारी से सोना।
पर्यायोक्ति—[सं० स्त्री०] एक अर्थालंकार।
पर्यालोचना—[सं० स्त्री०] समीक्षा, गुण दोष जानना।
पर्युत्सुक—[सं० पु०] उद्विग्नचित्त।
पर्युपासक—[सं० पु०] सेवक।
पर्युपासन—[सं० स्त्री०] सेवा।
पर्व—[सं० पु०] त्योहार, उत्सव दिवस, धर्मकाल, अध्याय।
पर्वणी—[सं० स्त्री०] पूर्णिमा।
पर्वत—[सं० पु०] पहाड़, एक प्रकार के संन्यासी।
पर्वतज—[सं० पु०] पहाड़ से उत्पन्न।
पर्वतनंदिनी—[सं० स्त्री०] पार्वती।
पर्वतराज—[सं० पु०] हिमालय, सुमेरु पर्वत।
पर्वतारि—[सं० पु०] इन्द्र।
पर्वतास्त्र—[सं० पु०] प्राचीन काल का एक अस्त्र
पर्वतीय—[सं० वि०] पहाड़ी।
पर्वतेश्वर—[सं० पु०] शिवजी, हिमालय।
पर्वसन्धि—[सं स्त्री०] सूर्य या चन्द्रग्रहण का समय, प्रतिपदा और पूर्णिमा या अमावस्या के बीच का समय।
पर्विणी—[सं० स्त्री०] पर्व सम्बन्धी।
पल—[सं० पु०] घड़ी का ६० वां भाग, तौल, छल।
पलक—[सं० स्त्री०] पपोट, आँख का आवरण।
पलक्या—[हि० पु०] पालक का शाक।
पलचर—[सं० पु०] एक उपदेवता।
पलल—[सं० पु०] मांस, आमिष, पशुओं के खाने की खली।
पलवार—[हि० पु०] बड़ी नौका।
पलवारी—[हि०पु०] नाविक, मल्लाह।
पलांडु—[सं० पु०] प्याज।
पलाद—[सं० पु०] एक राक्षस।
पलायक—[सं० पु०] भागने वाला, भगोड़ा।
पलायन—[सं० पु०] भाग जाना।
पलायमान—[सं० वि०] भागता हुआ।
पलायित—[सं० वि०] भागा हुआ।
पलाल—[सं० पु०] पयाल।
पलाश—[सं० पु०] ढाक, राक्षस, पत्ता। मगध देश। टेसू।
पलाशी—[सं० वि०] मांसाहारी।
पलित—[सं० वि०] वृद्ध, ताप, पका हुआ।
पल्लव—[सं० पु०] नये कोमल पत्ते, कंकण, विस्तार, एक देश।
पल्लवित—[सं० वि०] हरा-भरा, पनपा हुआ, किशलय-युक्त।
पल्लवी—[सं० पु०] वृक्ष।
पल्ली-[सं०पु०] छिपकली, गाँव, कुटी।

पवंगा—[हि० पु०] एक छन्द ।
पव—[सं० पु०] गोबर । वायु ।
पवन—[सं० पु०] वायु ।
पवन-अस्त्र—[सं० पु०] एक अस्त्र जिसके प्रयोग से प्रचंड आँधी चलने लगती थी ।
पवनकुमार—[सं० पु०] हनुमान, भीम ।
पवनचक्र—[सं० पु०] बवंडर ।
पवन-तनय—[सं० पु०] भीमसेन, हनुमान ।
पवन-पति—[सं०पु०] वायु के देवता ।
पवन-परीक्षा [सं० स्त्री०] आषाढ़ पूर्णिमा को वायु की दिशा को देख भविष्य कहना ।
पवनपुत्र—[सं० पु०] हनुमान, भीमसेन ।
पवन-बाण—[सं० पु०] वह बाण जिसके छोड़ते ही प्रचंड वायु चलने लगे ।
पवन-सखा—[सं० पु०] आग ।
पवन-सुत—[सं० पु०] हनुमान, भीमसेन ।
पवनायन—[सं० पु०] वातायन, भरोखा ।
पवनावर्ती—[सं० स्त्री०] कश्यप की एक स्त्री ।
पवनाशन—[सं० पु०] नाग, साँप ।
पवनाशी—[सं० पु०] सर्प ।
पवनास्त्र—[सं० पु०] वह अस्त्र जिसके प्रयोग से वायु प्रचंड हो उठे ।
पवमान—[सं० पु०] चंद्रमा, वायु ।
पवर्ग—[सं० पु०] संस्कृत या हिन्दी भाषा की वर्णमाला का पाँचवाँ वर्ग ।
पवि—[सं० पु०] वज्र, बिजली, इंद्र का अस्त्र । वाक्य ।
पवित्र—[सं० वि०] शुद्ध, निर्दोष, [पु०] पानी, दूध, जनेऊ, घी, शहद, वर्षा, ताँबा, कुशा, विष्णु ।
पवित्रता—[सं० स्त्री०] शुद्धता, निर्मलता ।
पवित्रा—[सं० स्त्री०] हलदी, तुलसी, रेशमी माला । पिपरी ।
पवित्रात्मा—[सं० वि०] शुद्ध आत्मा वाला ।
पवित्रित—[सं वि०] शुद्ध, निर्दोष ।
पवित्री—[सं० स्त्री०] मुद्रिका, अनामिका में पहनने की कुशा की अंगूठी ।
पविपात—[सं० पु०] वज्रपात, बिजली गिरना ।
पशु—[सं० पु०] चौपाया, प्राणी, देवता ।
पशुता—[सं० स्त्री०] मुर्खता, जड़ता, औद्धत्य ।
पशुतुल्य—[सं० वि०] अबोध, पशु के समान मूर्ख ।
पशुत्व—[सं० पु०] मुर्खता, पशुता ।
पशुधर्म—[सं० पु०] पशुओं के से आचार ।
पशुपतास्त्र—[सं० पु०] शिवजी का त्रिशूल ।
पशुपति—[सं० पु०] शिवजी, ओषधि, आग ।
पशुपाल—[सं० पु०] चरवाहा, अहीर, गड़रिया ।
पशुराज—[सं० पु०] व्याघ्र, सिंह ।
पश्चात्—[सं० अव्य०] अनन्तर, बाद, पीछे ।
पश्चात्ताप—[सं० पु०] पछतावा, अनुशोक, अनुताप ।
पश्चात्तापी—[सं० पु०] पछतावा करनेवाला ।
पश्चाद्वर्त्ती—[सं० वि०] पीछे रहनेवाला ।
पश्चानुताप—[सं० पु०] पछतावा ।
पश्चार्द्ध—[सं० वि०] शेषार्द्ध, पीछे का आधा ।
पश्चिम—[सं० पु०] प्रतीची । पूर्व दिशा के विपरीत ।
पश्चिमवाहिनी—[सं० वि०] पश्चिम दिशा को बहनेवाली नदी ।
पश्चिमाचल—[सं० पु०] अस्ताचल । सूर्यास्त का एक कल्पित पर्वत ।
पश्चिमोत्तर—[सं० पु०] उत्तर और पश्चिम के बीच का कोण ।
पश्तो—[हि० स्त्री०] पठानों की भाषा ।
पश्यंती—[सं० स्त्री०] नाद की द्वितीय अवस्था ।
पश्यतोहर—[सं० पु०] सुनार, देखते-देखते चुरानेवाला ।
पश्वाचार—[सं० पु०] वैदिक रीति से संकल्प युक्त देवों की पूजा ।
पह्लव—[सं० पु०] ईरान की एक प्राचीन जाति ।
पह्लवी—[स्त्री०] फारसी भाषा का प्राचीन रूप ।
पांचजन्य—[सं० पु०] विष्णु का शंख, अग्नि, कृष्ण ।
पांचभौतिक—[सं० पु०] पंच भूतों से बना शरीर ।
पांचाल—[सं० पु०] पंजाब प्रदेश ।
पांचाली—[सं० स्त्री०] द्रौपदी ।
पांडव—[सं० पु०] कुन्ती और माद्री से उत्पन्न पांडु के पुत्र ।
पांडव-नगर—[सं० पु०] दिल्ली ।
पांडित्य—[सं० पु०] विद्वत्ता ।
पांडु—[सं० पु०] लाल और पीले रंग का मिश्रण, एक रोग ।
पांडुर—[सं० वि०] पीला, सफेद ।
पांडुलिपि—[सं० स्त्री०] कच्चा लेख, मसौदा, पांडुलेख ।
पांडुलेख—[सं० पु०] लेख या पुस्तक का प्रथम स्वरूप, पांडुलिपि ।
पांडे—[हि० पु०] ब्राह्मण और

कायस्थों की एक शाखा। विद्वान।

पांडेय—[सं० पु०] पंडित, विद्वान, ब्राह्मणों की एक शाखा।

पांशु—[सं० पु०] बालू, रज, धूलि, दोष। खाद।

पांशुका—[सं० स्त्री०] रजस्वला, रज, धूलि।

पांशुल—[सं० पु०] व्यभिचारी, लंपट, मलिन।

पांशुला—[सं० स्त्री०] व्यभिचारिणी, मलिना।

पाक—[सं० पु०] पकाने की क्रिया, पकवान, पाचन क्रिया।

पाकक्षार—[सं० पु०] जवाखार।

पाकगृह—[सं० पु०] रसोई घर।

पाकपात्र—[सं० पु०] रसोई के बरतन।

पाकपटी—[सं० स्त्री०] चूल्हा।

पाकयज्ञ—[सं० पु०] अतिथि-भोजन, एक प्रकार का यज्ञ।

पाकरिपु—[सं० पु०] इन्द्र।

पाकशाला—[सं० स्त्री०] पाकालय, रसोई घर।

पाकशासन—[सं० पु०] इन्द्र।

पाकस्थली—[सं० स्त्री०] रसोई घर।

पाकागार—[सं० पु०] रसोई घर।

पाक्य—[सं० वि०] पकने या पचने योग्य।

पाक्षिक—[सं० वि०] १५ दिन का, पखवारे का।

पाखंड—[हि० पु०] आडंबर, ढकोसला, ढोंग।

पाचक—[सं० वि०] पकाने वाला, पचाने वाला। रसोइया।

पाचन—[सं० पु०] पकाना, भोजन का शरीर की धातुओं में परिवर्त्तन, प्रायश्चित।

पाचनशक्ति—[सं० स्त्री०] वह शक्ति जो भोजन पचाती है।

पाचनीय—[सं० वि०] पाच्य, पकाने या पचाने योग्य।

पाच्य—[सं० वि०] पकाने या पचाने योग्य।

पाटम्बर—[सं० पु०] रेशमी कपड़ा, पाटांबर।

पाटकृमि—[सं० पु०] रेशम का कीड़ा।

पाटच्चर—[सं० पु०] चोर।

पाटमहिषी—[सं० स्त्री०] पटरानी।

पाटरानी—[सं० स्त्री०] पटरानी।

पाटल—[सं० पु०] पाढ़र का वृक्ष।

पाटला—[सं० स्त्री०] दुर्गा, लाल लोध, पाढर का वृक्ष।

पाटलिपुत्र—[सं० पु०] प्राचीन बिहार या मगध की राजधानी। पटना।

पाटव—[सं० स्त्री०] पांडुफली, पटना की एक देवी।

पाटव—[सं० पु०] कुशलता, दृढ़ता, निपुणता।

पाटिका—[सं० स्त्री०] एक दिन की मजदूरी, पौधा विशेष, छिलका।

पाटी—[सं० स्त्री०] रीति, अनुक्रम, श्रेणी।

पाटीर—[सं० पु०] चंदन।

पाठ—[सं० पु०] अध्याय, परिच्छेद, किसी पुस्तक का नियमित अध्ययन।

पाठक—[सं० पु०] पढ़ाने वाला, अध्यापक, धर्मोपदेशक, ब्राह्मणों की एक पदवी।

पाठदोष—[सं० पु०] पढ़ने का बुरा ढंग।

पाठन—[सं० पु०] अध्यापन। पढ़ाना।

पाठभेद—[सं० पु०] पाठांतर।

पाठशाला—[सं० स्त्री०] विद्यालय।

पाठान्तर—[सं० पु०] पाठ-भेद, एक ग्रंथ की दो प्रतियों में शब्द, वाक्य या क्रम में अन्तर।

पाठा—[सं० स्त्री०] पाठ नामक लता। स्वस्थ, हट्टा-कट्टा।

पाठालय—[सं० पु०] पाठशाला।

पाठित—[सं० वि०] पढ़ाया हुआ।

पाठी—[सं० पु०] पाठक, पढ़ने वाला। चीता।

पाठीन—[सं० पु०] एक मछली।

पाठ्य—[सं० वि०] पढ़ने योग्य।

पाणि—[सं० पु०] हाथ, कर।

पाणि-ग्रहण—[सं० पु०] विवाह की एक रीति। विवाह।

पाणिग्राहक—[सं० पु०] पति।

पाणिघ—[सं० पु०] मृदंग, हाथों का बाजा।

पाणिज—[सं० पु०] अंगुली, नख।

पाणिनि—[सं० पु०] अष्टाध्यायी के प्रसिद्ध ग्रन्थकार एक मुनि।

पाणिनीयदर्शन—[सं० पु०] पाणिनिकृत व्याकरण-शास्त्र।

पाणिपाद—[सं० पु०] हाथ-पैर।

पाणिपीडित—[सं० पु०] विवाह, क्रोधादि से हाथ मलना।

पातंजल—[सं० वि०] पातंजलिकृत।

पातंजलदर्शन—[सं० पु०] योग दर्शन।

पातंजलभाष्य—[सं० पु०] महाभाष्य नामक व्याकरण का प्रख्यात ग्रन्थ।

पातंजलसूत्र—[सं० पु०] योग-शास्त्र, योगसूत्र।

पात—[सं० पु०] गिरना, नाश, पतन, पत्ता, राहु।

पातक—[सं० पु०] अधर्म, कुकर्म, पाप।

पातन—[सं० पु०] गिरानेवाला।

पातव्य—[सं० वि०] पीने के योग्य, रक्षा करने के योग्य।

पातराज—[सं० पु०] सर्प विशेष।

पाताल—[सं० पु०] नागलोक, अधोलोक, बड़वानल, विवर।

पाताल-केतु—[सं० पु०] पातालवासी एक दैत्य-विशेष।

पाताल-खंड—[सं० पु०] पाताल।

पाताल-गरुड़—[सं० पु०] छिरहटा।

पाताल-तुंबी—[सं० स्त्री०] एक लता-विशेष।

पातालनिलय—[सं० पु०] एक दैत्य, जिसका घर पाताल में हो। सर्प।

पातालनृपति—[सं० पु०] धातु, पाताल का राजा।

पातालयंत्र—[सं० पु०] कड़ी औषधों को गलाने या तेल निकालने का यंत्र।

पातित्य—[सं० पु०] दुराचार, पाप, अधःपतन।

पातिव्रत—[सं० पु०] पतिव्रता होने का भाव, पातिव्रत्य।

पात्र—[सं० पु०] किसी विषय का अधिकारी, उपयुक्त, भाजन, बरतन, नाटक के नायक, नायिका आदि। पत्र।

पात्रता—[सं० स्त्री०] क्षमता, योग्यता।

पात्रदुष्टरस—[सं० पु०] एक प्रकार का रस-दोष जिसमें कवि अपने समझे या जाने हुए विषय के विरुद्ध कह जाता है।

पात्री—[सं० स्त्री०] बरतनवाला, छोटा बरतन।

पात्रीय—[सं० वि०] पात्र का।

पाथ—[सं० पु०] जल, अग्नि, अन्न, वायु, आकाश।

पाथनिधि—[सं० पु०] सागर, समुद्र, पाथ नाथ।

पाथि—[सं० पु०] समुद्र, घाव की पपड़ी, पितरों का जल।

पाथेय—[सं० पु०] मार्ग का भोजन। संबल।

पाथोज—[सं० पु०] कमल।

पाथोद—[सं० पु०] बादल।

पाथोधर—[सं० पु०] बादल।

पाथोधि—[सं० पु०] समुद्र।

पाथोनिधि—[सं० पु०] समुद्र।

पाद—[सं० पु०] चरण, पैर, छन्द का चौथाई भाग, तल, वृक्ष-मूल।

पाद-कंटक—[सं० पु०] बिछुआ।

पादक—[सं० वि०] चलनेवाला।

पादकीलिका—[सं० स्त्री०] पाजेब।

पादकृच्छ्र—[सं० पु०] व्रत-विशेष।

पादखंड—[सं० पु०] वन, जंगल।

पादग्रन्थि—[सं० स्त्री०] एँड़ी।

पादगंडिर—[सं० पु०] श्लीपद रोग।

पादग्रहण—[सं० पु०] पाँव छूना।

पादचत्वर—[सं० पु०] पीपल का पेड़, बालू का टीला। बकरा।

पादचारी—[सं० पु०] पैदल चलनेवाला।

पादटीका—[सं० स्त्री०] वह टीका या टिप्पणी जो किसी ग्रंथ के पृष्ठों के तल में लिखी गयी हो।

पादतल—[सं० पु०] पैर का तलवा।

पादत्राण—[सं० पु०] जूता, खड़ाऊँ।

पादप—[सं० पु०] वृक्ष, पीढ़ा।

पादपीठ—[सं० पु०] पीढ़ा।

पादपूरण—[सं० पु०] किसी पद का पूरक वर्ण या शब्द।

पादप्रक्षालन—[सं० पु०] पाँव धोना।

पादप्रणाम—[सं० पु०] पाँव छूकर प्रणाम। दंडवत।

पादप्रहार—[सं० पु०] ठोकर मारना। पदाघात।

पादरक्षक—[सं० पु०] जूता।

पादरी—[हि० पु०] ईसाई धर्म का पुरोहित।

पादवंदन—[सं० पु०] पाँव पड़कर प्रणाम।

पादाकुलक—[सं० पु०] चौपाई छन्द।

पादाक्रांता—[सं० वि०] पामाल, पैरों से रोदा हुआ।

पादातिक—[सं० पु०] प्यादा, पैदल सिपाही।

पादार्पण—[सं० पु०] प्रवेश करना, पदार्पण।

पादी—[सं० पु०] पाँव वाले, मगर जैसे जल-जन्तु।

पादीय—[सं० वि०] मर्यादा वाला। पद प्राप्त।

पादुका—[सं० स्त्री०] खड़ाऊँ।

पादोदक—[सं० पु०] चरणामृत।

पाद्य—[सं० पु०] पैर धोने का जल।

पाद्यक—[सं० पु०] पाद्य देने का एक भेद।

पाद्यार्घ—[सं० पु०] पाँव धोने का जल, पूजा की सामग्री।

पान—[सं० पु०] पीना, खाना, पेय द्रव्य, ताम्बूल, पत्र।

पानगोष्ठी—[सं० स्त्री०] मद्यपान की मंडली।

पानागार—[सं० पु०] मधुशाला।

पानात्यय—[सं० पु०] अति सुरापान से उत्पन्न एक रोग।

पानासक्त—[सं० वि०] मद्यप्रिय।

पानाहार—[सं० पु०] अन्न-जल।

पानिप—[हि० पु०] चमक, द्युति, कांति।

पानीदेवा—[हि० वि०] वंशज, तर्पण करने वाला।

पानीफल—[हि० पु०] सिंघाड़ा।

पानीय—[सं० पु०] पीने के योग्य, रक्षा के योग्य।

पाप—[सं० पु०] कुकर्म, अघ, पातक।

पाप-कर्म—[सं० पु०] अशुभ कार्य, कुकर्म ।

पापकर्मा—[सं० वि०] पापाचारी । कुकर्मी ।

पापगण—[सं० पु०] ठगण का आठवाँ भेद ।

पापघ्न—[सं० वि०] पापनाशक ।

पापदृष्टि—[सं० वि०] अनिष्ट-प्रद दृष्टि ।

पापनाशन—[सं० पु०] पाप का नाश करने वाला, विष्णु, प्रायश्चित्त ।

पापयोनि—[सं० स्त्री०] पाप कर्म से मिलने वाली पशु-पक्षी की योनि ।

पापरोग—[सं० पु०] कुकर्मों से उत्पन्न रोग । यक्ष्मा, कुष्ठ, उन्माद, अन्धता, पीनस, मूकता आदि ।

पापलोक—[सं० पु०] नरक ।

पापहर—[सं० वि०] पापनाशक ।

पापाचार—[सं० पु०] दुराचार ।

पापात्मा—[सं० पु०] पापी, दुष्टात्मा ।

पापिष्ठ—[सं० वि०] बहुत बड़ा पापी ।

पापी—[सं० वि०] निर्दय, अघी, क्रूर, पातकी ।

पामर—[सं० वि०] दुष्ट, नीच ।

पायंदाज—[सं० पु०] पैर पोंछने का कपड़ा ।

पायक—[हि० पु०] दास, दूत, सेवक, प्यादा ।

पायल—[हि० स्त्री०] नूपुर, पाजेब, उलटा उत्पन्न होने वाला लड़का । तेज चलने वाली हथिनी ।

पायस—[सं० स्त्री०] खीर । सलई का गोंद ।

पारंगत—[सं० वि०] मर्मज्ञ, ज्ञाता, पंडित ।

पारंपर्य्य—[सं० पु०] कुल की सदा की रीति ।

पार—[सं० पु०] नदी, तालाब का दूसरा किनारा ।

पारखी—[हि० पु०] परीक्षक, परखने वाला ।

पारग—[सं० पु०] पूर्ण ज्ञाता, समर्थ ।

पारण—[सं० पु०] व्रत के दूसरे दिन का प्रथम भोजन । समाप्ति ।

पारतंत्र्य—[सं० पु०] पराधीनता ।

पारत्रिक—[सं० वि०] पारलौकिक, मुक्ति संबन्धी ।

पारद—[सं० पु०] पारा, रस, फारस देश की एक पुरानी जाति ।

पारदारिक—[सं० पु०] परस्त्रीरत ।

पारदर्शक—[सं० वि०] वह वस्तु जिसके पार दिखाई दे ।

पारदर्शी—[सं० वि०] चतुर, दूरदर्शी, अग्रसोची ।

पारधी—[हि० पु०] बधिक, शिकारी व्याध ।

पारमार्थिक—[सं० वि०] वास्तविक, मुक्तिसाधक, परमार्थ संबन्धी ।

पारलौकिक—[सं० वि०] स्वर्गलोक सम्बन्धी, परलोक में अच्छा फल देने वाला ।

पारवश्य—[सं० पु०] परवशता ।

पारशव—[सं० पु०] एक वर्णसंकर जाति, अन्य स्त्री से उत्पन्न ।

पारसनाथ—[हि० पु०] जैनियों के एक तीर्थङ्कर ।

पारसीक—[सं० पु०] फारस देश का । फारस का घोड़ा ।

पारस्कर—[सं० पु०] एक प्राचीन देश, गृह्य सूत्रकार एक मुनि ।

पारस्परिक—[सं० वि०] आपस का, एक दूसरे का ।

पारस्य—[सं० पु०] फारस ।

पारा—[हि० पु०] चाँदी के समान सफेद एक चमकदार द्रव्य धातु ।

पारायण—[सं० पु०] नियत समय में किसी धर्म-ग्रन्थ का आद्योपान्त पाठ ।

पारायणिक—[सं० पु०] पाठक, छात्र, पारायण करने वाला ।

पारावत—[सं० पु०] कपोत, कबूतर, पर्वत, बन्दर ।

पारावार—[सं० पु०] समुद्र, सीमा, दोनों ओर के तट ।

पाराशर—[सं० पु०] व्यासजी, पराशर के वंशज ।

पाराशर्य्य—[सं० पु०] व्यासजी ।

पारिजात—[सं० पु०] हरचंदन, हरसिंगार, पारिभद्र, कोविदार । एक देवतरु ।

पारिणाह्य—[सं० पु०] बंधन, संबन्ध, घर या गृहस्थी का उपकरण ।

पारितथ्या—[सं० स्त्री०] सधवा स्त्रियों के धारण करने योग्य वस्तु, टिकुली ।

पारितोषिक—[सं० पु०] पुरस्कार, प्रसन्नता से दिया हुआ धन ।

पारीन्द्र—[सं० पु०] शेर, सिंह ।

पारिपंथिक—[सं० पु०] चोर, डाकू ।

पारिपात्र—[सं० पु०] विन्ध्याचल के सात पर्वतों में से एक ।

पारिपार्श्व—[सं० पु०] पारिषद, अनुचर ।

पारिपार्श्विक—[सं० पु०] सूत्रधार, सेवक, पारिषद, नट, सहायक ।

पारिभद्र—[सं० पु०] देवदारु, निंब, सारवू ।

पारिभाव्य—[सं० पु०] प्रतिभू, ज़मानत ।

पारिभाषिक—[सं० वि०] सांकेतिकार्थ, जिसका अर्थ केवल परिभाषा द्वारा हो सके ।

पारिमाण्डल्य—[सं० पु०] परमाणु ।

पारिरक्षक—[सं० पु०] तपस्वी, साधु।

पारिशील—[सं० पु०] एक प्रकार का मालपुआ।

पारिषद—[सं० पु०] सभासद, अनुचर गण, अनुचर।

पारी—[हि० स्त्री०] अवसर, बारी, ओसरी।

पारीण—[सं० वि०] पारगामी। पार जाने वाला।

पारुष्य—[सं० पु०] कठोरता, इन्द्र का वन।

पार्घट—[हि० पु०] भस्म, राख।

पार्थ—[सं० पु०] अर्जुन, युधिष्ठिर, भीम, पृथा-पुत्र।

पार्थक्य—[सं० पु०] अलग होना, पृथकता। वियोग।

पार्थवी—[सं० पु०] मोटाई, भारीपन, स्थूलता।

पार्थिव—[सं० पु०] पृथ्वी से उत्पन्न, मिट्टी का बना।

पार्थिवी—[सं० स्त्री०] सीताजी, पार्वतीजी, पृथ्वी से उत्पन्न।

पार्पर—[हि० पु०] यमराज।

पार्वण—[सं० पु०] त्योहार सम्बन्धी, किसी त्योहार पर किया गया श्राद्ध।

पार्वत—[सं० वि०] पहाड़ पर होने वाला, पर्वत सम्बन्धी।

पार्वती—[सं० स्त्री०] गौरी, दुर्गा, गोपीचन्दन। हिमालय-पुत्री।

पार्वतीय—[स० पु०] पहाड़ सम्बन्धी, *पहाड़ से उत्पन्न।*

पार्वतेय—[सं० वि०] पहाड़ पर होने वाला।

पार्श्व—[सं० पु०] समीप, निकट।

पार्श्वग—[सं० पु०] सहचर, साथी।

पार्श्वनाथ—[सं० पु०] जैनियों के तेईसवें तीर्थङ्कर।

पार्श्ववर्त्ती—[सं० पु०] साथी, समीपवर्ती, निकटस्थ।

पार्श्वस्थ—[सं० त्रि०] समीपवर्ती, अभिनय के नटों में से एक।

पार्षद—[सं० पु०] मंत्री, सेवक, पास रहने वाला।

पाल—[सं० पु०] पालने वाला, बंगाल का एक राजवंश, चितावरी का पेड़।

पालक—[सं० पु०] पालने वाला, गोद लिया लड़का। एक शाक।

पालन—[सं० पु०] निर्वाह, भरण-पोषण।

पालि—[सं० स्त्री०] पंक्ति, सीमा, किनारा, गोद, चिह्न, कान की लौ।

पालिका—[सं० स्त्री०] पालने वाली, रक्षा करने वाली।

पालित—[सं० वि०] रक्षित।

पालिनी—[सं० वि०] पालने वाली।

पाल्य—[सं० वि०] पालने योग्य।

पावक—[सं० पु०] ताप, अग्नि, ब्रह्म, सूर्य, वरुण, सदाचार।

पावन—[सं० वि०] शुद्ध, पवित्र, पवित्र करने वाला।

पावनता—[सं० स्त्री०] पवित्रता।

पावस—[हि० स्त्री०] बरसात।

पाश—[सं० पु०] बन्धन, रस्सी, फाँसी।

पाशक—[सं० पु०] चौपड़ के पाँसे।

पाशकेरली—[सं० स्त्री०] रमल, वह ज्योतिष-विद्या जिसमें पाँसे फेंक कर विचार किया जाता है।

पाशभृत—[सं० पु०] वरुण, पाशी।

पाशव—[सं० वि०] पशु जैसा, पशु सम्बन्धी।

पाशित—[सं० पु०] बंधा, पाशयुक्त।

पाशी—[सं० पु०] वरुण।

पाशुपत—[सं० वि०] त्रिशूल, शिव संबन्धी।

पाशुपत-दर्शन—[सं० पु०] एक दार्शनिक साम्प्रदायिक शास्त्र।

पाशुपतास्त्र—[सं० पु०] शिवजी का त्रिशूल।

पाश्चात्य—[सं० वि०] पीछे का, पश्चिम दिशा का।

पाषण्ड—[सं० पु०] पाखंड, ढोंग।

पाषंडी—[सं० वि०] आडंबरी, वेद-विरुद्ध आचार करनेवाला।

पाषाण—[सं० पु०] पत्थर, प्रस्तर।

पाषाणभेद—[सं० पु०] पथरचटा।

पासी—[हि० पु०] बहेलिया। एक नीच जाति।

पाहुना—[हि० पु०] अभ्यागत, अतिथि। दामाद।

पाहुनी—[हि० स्त्री०] आतिथ्य।

पिंग—[सं० वि०] पीत, भूरा, पीला, पिंगल।

पिंगल—[सं० बि०] छन्द-शास्त्र के प्रथम आचार्य एक मुनि। पीला, पीत-तामड़ा, अग्नि, एक निधि, बन्दर।

पिंगला—[सं० स्त्री०] लक्ष्मी, एक नाड़ी, एक रानी, राजनीति, गोरोचन।

पिंजर—[सं० वि०] पीला, [पु०] पिंजड़ा, हड्डियों की ठठरी।

पिंजरापोल—[हि० पु०] पशुशाला, गोशाला।

पिंजल—[सं० वि०] व्याकुल। [पु०] कुश-पत्र, हरताल।

पिंड—[सं० पु०] ठोस, गोला, ढेर, श्राद्ध में पितरों का भोजन। आहार।

पिंडज—[सं० पु०] देह सहित उत्पन्न होनेवाला जीव।

पिंडदान—[सं० पु०] श्राद्ध।

पिंडरोग—[सं० पु०] नरक रोग।

पिंडी—[सं० स्त्री०] छोटा गोला, छोटा पिंडा।

पिक—[सं० पु०] कोयल ।
पिचु—[सं० पु०] कपास ।
पिचुमंद—[सं० पु०] नीम का पेड़ ।
पिच्छल—[सं० पु०] शीशम, आकाश वेल ।
पिटक—[सं० पु०] पिटारी, फोड़ा, ग्रन्थ विभाग ।
पितामह—[सं० पु०] पिता का पिता, बाबा, भीष्म, शिव ।
पितृ—[सं० पु०] पिता ।
पितृऋण—[सं० पु०] पिता आदि के प्रति ऋण । पुत्र उत्पन्न करना ।
पितृकर्म—[सं० पु०] श्राद्ध, तर्पण आदि पितरों के अर्थ कर्म ।
पितृकुल—[सं० पु०] पिता का परिवार या वंश ।
पितृगृह—[सं० पु०] पिता का घर, मायका, नैहर।
पितृतर्पण—[सं० पु०] पितरों को जल दान देना ।
पितृतीर्थ—[सं० पु०] गयातीर्थ, तर्जनी और अंगुष्ठ के मध्य का भाग ।
पितृत्व—[सं० पु०] पितरों का भाव, पिता का भाव ।
पितृपक्ष—[सं० पु०] क्वार मास का कृष्ण पक्ष, पितृ-कुल ।
पितृपद—[सं० पु०] पितरों का लोक ।
पितृमेधि—[सं० पु०] वैदिक काल में श्राद्ध से भिन्न अंत्येष्टि कर्म का एक भेद ।
पितृयज्ञ—[सं० पु०] श्राद्ध तर्पण ।
पितृयाण—[सं० पु०] मरने के पश्चात् जीव का चन्द्रमा के प्राप्त होने का मार्ग ।
पितृव्य—[सं० पु०] चाचा ।
पित्त—[सं० पु०] यकृत में शरीर का पोषण करनेवाली एक पीत धातु ।
पित्तघ्न—[सं० वि०] पित्त-नाशक ।
पित्तज्वर—[सं० पु०] पित्त-प्रकोप से उत्पन्न ज्वर ।
पित्तनी—[सं० स्त्री०] शालपर्णी ।
पित्तपापड़ा—[हि० पु०] एक ओषधि ।
पित्तप्रकृति—[सं० वि०] जिस व्यक्ति के शरीर में वात और कफ से पित्त अधिक हो ।
पित्तप्रकोपी—[सं० वि०] पित्त बढ़ाने वाले पदार्थ ।
पित्तल—[हि० वि०] पित्तकारी ।
पित्ता—[हि० पु०] यकृत में पित्त की थैली, साहस और श्रम ।
पित्ताशय—[सं० पु०] जिगर में पीछे और नीचेवाली पित्त की थैली ।
पित्ती—[हि० स्त्री०] शरीर की त्वचा का एक रोग । लाल ददोरे ।
पित्र्य—[सं० वि०] पितृ-सम्बन्धी ।
पिधान—[सं० पु०] आवरण, पर्दा, किवाड़, गिलाफ, म्यान ।
पिनाक—[सं० पु०] शिव, धनुष, त्रिशूल ।
पिनाकी—[सं० पु०] शिवजी ।
पिपरामूल—[हि० पु०] एक ओषधि ।
पिपासा—[सं० स्त्री०] प्यास, लोभ ।
पिपासित—[सं० वि०] प्यासा । तृषित ।
पिपासु—[सं० वि०] लोभी, तृषित, प्यासा ।
पिपील—[सं० पु०] चींटी, चींटा । पिपीलक ।
पिपीलिका-भक्षक—[सं० पु०] चींटी खानेवाला एक जन्तु ।
पिपीलिका-मातृक-दोष—[सं० पु०] बच्चों की एक बीमारी ।
पिप्पल—[सं० पु०] पीपल का पेड़, अश्वत्थ, एक ओषधि ।
पिप्पली—[सं० स्त्री०] पीपल, पीपर ।
पिप्पलीमूल—[सं० पु०] एक ओषधि । पिपरा मूल ।
पियाल—[सं० पु०] चिरौंजी का पेड़ ।
पिशंग—[सं० पु०] पीला रंग ।
पिशाच—[सं० पु०] भूत, देव-योनि विशेष, बैताल ।
पिशाचग्रस्त—[सं० पु०] पागल, उन्मत्त, वातुल ।
पिशाचघ्न—[सं० वि०] पिशाच-नाशक ।
पिशाचक—[सं० पु०] भूत, पिशाच।
पिशाचकी—[सं० पु०] कुबेर ।
पिशित—[सं० पु०] मांस, आमिष ।
पिशिताशन—[सं० पु०] राक्षस । मांसाहारी ।
पिशुन—[सं० पु०] छल । दुष्ट ।
पिशुन-वचन [सं० पु०] गाली । दुर्वचन ।
पिशुनता—[सं० स्त्री०] क्रूरता, दुष्टता ।
पिशुना—[सं० स्त्री०] चुगली ।
पिष्ट—[सं० वि०] पिसा हुआ ।
पिष्टक—[सं० पु०] पीठी, कचौड़ी । पुआ । रोट ।
पिष्ट-पेषण—[सं० पु०] बात को व्यर्थ दुहराना, पीस कर भी पीसना ।
पिहित—[सं० वि०] छिपा हुआ । एक अर्थालंकार ।
पीठ—[सं० पु०] सिंहासन, वेदी, पीढ़ा, चौकी, प्रदेश, पेट के पीछे की ओर का भाग।
पीठमर्द—[सं० पु०] नायक का वह सखा जो रूठी हुई नायिका को मना सके।
पीठिका—[सं० स्त्री०] पीढ़ा, अध्याय, अंश ।
पीड़क—[सं० पु०] सताने वाला । दुखदायक ।
पीड़न—[सं० पु०] अत्याचार करना, दबाना, उच्छेद ।

पीड़ा—[सं० स्त्री०] व्याधि, दुःख, व्यथा ।

पीड़ित—[सं० वि०] दुखित, क्लेशित ।

पीत—[हि० वि०] पीला । भूरा,कपिल ।

पीतकंद—[सं० पु०] गाजर ।

पीतक—[सं० पु०] हल्दी, केसर, हरताल, पीतल, अगर, शहद, पीला चन्दन ।

पीतकदली—[सं० पु०] चंपक, पीला केला, सोन केला ।

पीतकरवीर-[सं० पु०] पीला कनेर ।

पीतचंदन—[सं० पु०] हरिचंदन, पीला चंदन ।

पीतता—[सं० स्त्री०] पीलापन ।

पीतधातु—[सं० स्त्री०] सुवर्ण, रामरज । गोपीचंदन ।

पीतपुष्प—[सं० पु०] पीला कनेर । चंपा, घिया, कटसरैया ।

पीतमणि—[सं० पु०] पुखराज ।

पीतरत्न—[सं० पु०] पुखराज ।

पीतरस—[सं० पु०] हल्दी ।

पीतल—[हि० पु०] तांबे और जस्ते से बनी एक मिश्रित उपधातु ।

पीतवास—[सं० पु०] श्रीकृष्ण ।

पीतशाल—[सं० पु०] विजयसार ।

पीतसार—[सं० पु०] शिलाजीत, पीला या सफेद चंदन । गोमेद मणि ।

पीताम्बर—[सं० पु०] पीला वस्त्र, श्रीकृष्ण, रेशमी धोती ।

पीन—[सं० वि०] दृढ़, पुष्ट, स्थूल, सम्पन्न ।

पीनता—[सं०स्त्री०] दृढ़ता,स्थूलता ।

पीनस—[सं० स्त्री०] नाक का एक रोग । घ्राण-शक्ति नाशक रोग ।

पीनसा—[हि० स्त्री०] ककड़ी ।

पीनसी—[सं० वि०] पीनस रोग, मोटी या स्थूल स्त्री ।

पीप—[हि० स्त्री०] मवाद ।

पीयूष—[सं० पु०] दूध, अमृत, सात दिन की व्यायी गाय का दूध ।

पीयूषभानु—[सं० पु०] चंद्रमा ।

पीयूषवर्षी—[सं० पु०] आनन्द-वर्धक, चंद्रमा, कपूर, एक मात्रिक छन्द ।

पीर—[हि० स्त्री०] पीड़ा, सहानुभूति, कष्ट ।

पीलु—[सं० पु०] हाथी, फलवान वृक्ष, पीलू वृक्ष । परमाणु ।

पीलू—[हि० पु०] एक राग, एक कांटेदार वृक्ष । फलों के कीड़े ।

पीवर—[सं० वि०] दृढ़, मोटा, स्थूल ।

पीवरी—[सं० स्त्री०] सतावर, तरुण गाय ।

पुंख—[सं० पु०] वाण का पिछला भाग ।

पुंग—[सं० पु०] समूह, राशि, श्रेणी ।

पुंगल—[सं० पु०] आत्मा ।

पुंगव—[सं० पु०] बैल, [वि०] श्रेष्ठ ।

पुंगीफल—[हि० पु०] सुपारी ।

पुंज—[सं० पु०] समूह, राशि ।

पुंड—[सं० पु०] तिलक, टीका ।

पुंडरी—[सं० पु०] कमल, स्थल, गुलाब ।

पुंडरीक—[सं० पु०] कमल, वाण, रेशम का कीट, तिलक, श्वेतकुष्ठ, श्वेत हाथी, आग । आकाश । श्वेत कमल ।

पुंडरीकाक्ष—[सं० पु०] विष्णु ।

पुंड्र—[सं० पु०] गन्ना, पौंडा, श्वेत कमल, हिंदी का प्रथम ज्ञात कवि । भारत का एक प्राचीन प्रदेश ।

पुंड्रवर्द्ध—[सं० पु०] पुंड्रदेश की राजधानी ।

पुंलिंग—[सं० पु०] पुरुष वाची शब्द, पुरुष चिह्न ।

पुंशक्ति—[सं० स्त्री०] पौरुष, पुरुषत्व, वीर्य्य ।

पुंश्चली—[सं० स्त्री०] व्यभिचारिणी, कुलटा, छिनाल ।

पुंस—[सं० पु०] पुरुष, नर ।

पुंसवन—[सं० पु०] गर्भाधान संस्कार के बाद तीसरे मास का एक संस्कार । वैष्णवों का एक व्रत, दुग्ध ।

पुंसत्व—[सं० पु०] पुंसकता, पुरुषत्व, शुक्र, पुरुष की मैथुन-शक्ति ।

पुक्कस—[सं० पु०] अधम, नीच, डोम ।

पुखराज—[हि० पु०] पीले रंग का एक रत्न, पुष्पराज ।

पुख्य—[हि० पु०] पुष्य नक्षत्र ।

पुच्छ—[सं० स्त्री०] पूँछ, [पु०] केतु ।

पुच्छल—[हि० वि०] दुमदार, पूँछदार ।

पुजापा—[हि० पु०] देवताओं की पूजा सामग्री ।

पुजारी—[हि० पु०] पूजक, देव-प्रतिमा की आराधना करने वाला ।

पुट—[हि० पु०] मिलावट, डुबोना, भावना, छींटा ।

पुटकी—[हि० पु०] गठरी, पोटली ।

पुटपाक—[सं० पु०] औषधि पकाने की एक विधि ।

पुण्य—[सं० वि०] शुभ, पुनीत ।

पुण्यकर्म—[सं०पु०] शुभ कार्य, पवित्र कर्म, धर्म्म ।

पुण्यकाल—[सं० पु०] पवित्र समय, दान-धर्म्म का समय ।

पुण्यकृत—[सं०वि०] सुकृती, धार्मिक, पुण्यकर्त्ता ।

पुण्यक्षेत्र—[सं० पु०] वह स्थान जहाँ जाने पर शरीर और मन पवित्र हो ।

पुण्यगंध—[सं० पु०] चंपा का फूल ।

पुण्यजन—[सं० पु०] सज्जन मनुष्य, राक्षस, यक्ष ।

पुण्यजनेश्वर—[सं० पु०] कुबेर ।

पुण्यपत्तन—[सं० पु०] पूना नगर ।
पुण्यभूमि—[सं० वि०] आर्य्यावर्त्त, भरत खंड, तीर्थ स्थान ।
पुण्यवान्—[सं० वि०] धर्मात्मा, पुण्य कर्म करने वाला । दानी ।
पुण्यशील-[सं०पु०] उदार, धर्म्मात्मा ।
पुण्यश्लोक—[सं० वि०] यशस्वी, पवित्र आचरण वाला ।
पुण्यस्थान—[सं० पु०] तीर्थ स्थान ।
पुण्यात्मा—[सं० वि०] धर्मात्मा, सुकर्मी, पुण्यशील । दानी ।
पुण्याह—[सं० पु०] शुभ दिन ।
पुण्याहवाचन—[सं० पु०] स्वस्ति वाचन के प्रथम मंगलार्थ तीन बार 'पुण्याह' कहना ।
पुत्र—[सं० पु०] बेटा, लड़का ।
पुत्रजीवी—[सं० पु०] ओषधि के काम का एक वृक्ष ।
पुत्रवती—[सं०स्त्री०] पुत्र वाली स्त्री ।
पुत्रवधू—[सं० स्त्री०] पतोहू, पुत्र की स्त्री ।
पुत्रवान—[सं० पु०] लड़के वाला ।
पुत्रार्थी—[सं० वि०] पुत्र की अभिलाषा वाला, संतान-कांक्षी ।
पुत्रिका—[सं० स्त्री०] बेटी, गुड़िया, लड़की । आँख की पुतली, मूर्ति, स्त्री का चित्र ।
पुत्रिणी—[सं०वि०] लड़के वाली स्त्री । पुत्रवती ।
पुत्री—[सं०स्त्री०] कन्या, सुता, लड़की, तनुजा ।
पुत्रेष्टि—[सं० स्त्री०] पुत्रप्राप्ति के लिये एक यज्ञ-विशेष ।
पुद्गल—[सं० पु०] चैतन्य पदार्थ, आत्मा, रूप, रस और स्पर्श गुणवाली वस्तु ।
पुनः—[सं० अव्य०] पश्चात् । फिर, दो बार ।
पुनः पुनः—[सं० अव्य०] बार बार, मुहुर्मुहुः ।
पुनःसंस्कार-[सं०पु०] दो बार संस्कार ।
पुनरपि— [सं० वि०] फिर भी ।
पुनरागमन—[सं०पु०] दोबारा जन्म ।
पुनरावृत्ति—[सं० स्त्री०]दुहराना, फिर से आना । किये काम को फिर से करना ।
पुनरुक्तवदाभास—[सं० पु०] एक शब्दालंकार जिसमें शब्द के अर्थ की पुनरुक्ति का केवल आभास प्रतीत हो ।
पुनरुक्तप्रकाश—[सं० पु०] रोचकता के लिये शब्द का पुनः प्रयोग ।
पुनरुक्ति—[सं० स्त्री०] कथित कथन, एक ही अर्थ में व्यर्थ शब्द के पुनः प्रयोग का काव्य दोष ।
पुनरुत्थान— [सं० पु०] पुनरुन्नति, फिर से उठना ।
पुनर्जन्म—[सं० पु०] मरने के बाद फिर दूसरा शरीर धारण करना, फिर उत्पन्न होना ।
पुनर्नव—[सं० वि०] जो फिर से नवीन हुआ हो ।
पुनर्नवा—[सं०स्त्री०] गदापुन्ना नामक ओषधि । जो फिर से नया हो गया हो ।
पुनर्भव—[सं० पु०] पुनर्विवाह, पुनर्जन्म, नख, बाल, अंडज ।
पुनर्भू—[सं० स्त्री०] दूसरे से ब्याही विधवा स्त्री ।
पुनर्वसु—[सं० पु०] एक लोक, कात्यायन मुनि, विष्णु, २७ नक्षत्रों में से ७वां नक्षत्र ।
पुनर्विवाह—[सं० पु०] दूसरी बार विवाह ।
पुनीत— [सं० वि०] पवित्र, शुद्ध ।
पुन्नाग—[सं०पु०] सफेद कमल, एक प्रकार का चंपा, जायफल ।
पुमा —[सं० पु०] पुरुष ।
पुरंजय—[सं० पु०] एक सूर्यवंशी राजा जो आगे चलकर ककुत्स्थ कहाये । इंद्र ।
पुरंजर—[सं० पु०] कंधा, स्कंध, वय ।
पुरंदर—[सं० पु०] विष्णु, इन्द्र, शिव, पुर नामक राक्षस के नाशक ।
पुरंध्री—[सं० स्त्री०] सुगृहणी, पति, पुत्रादि से सुखी स्त्री ।
पुरः—[अव्य०] पहले, प्रथम ।
पुरस्सर—[सं०वि०] अग्रगामी, अगुआ, साथी ।
पुर—[सं० पु०] नगर, लोक, भुवन, घर, अटारी, शरीर, राशि । [वि०] पूर्ण । [हि०] चरस, चमड़े का डोल ।
पुरजन—[सं० पु०] नगरवासी ।
पुरट—[सं० पु०] सुवर्ण, पुरण ।
पुरतः—[सं० अव्य०] सामने, सम्मुख ।
पुरत्राण—[सं० पु०] नगर कोट, परकोटा । प्राकार ।
पुरपाल—[सं० पु०] नगर रक्षक, कोतवाल ।
पुरवासी—[सं० पु०] पुरजन, नगरनिवासी ।
पुरश्चरण—[सं० पु०] किसी कार्य की सिद्धि के लिये अनुष्ठान ।
पुरस्कार—[सं० पु०] सत्कार, पारितोषिक, उपहार, धन्यवाद । इनाम ।
पुरस्कृत—[सं० वि०] सम्मानित, पूजित, जिसे पारितोषिक या इनाम मिला हो ।
पुरस्तात्—[सं० अव्य०] प्रथम, पूर्व, अतीत काल, पूर्व दिशा ।
पुरा—[सं० अव्य०] प्राचीन ।
पुराकल्प—[सं० पु०] प्राचीनकल्प, प्राचीन काल, एक प्रकार का अर्थवाद ।
पुराकृत—[सं० पु०] पूर्व जन्म या पूर्व काल में किया हुआ ।
पुराण—[सं० वि०] पुरातन, प्राचीन इतिहास ।
पुरातत्त्व— [सं० पु०] प्राचीन काल

के सम्बन्ध की विद्या, प्रत्न शास्त्र ।

पुरातत्ववेत्ता—[सं० पु०] प्रत्न शास्त्र का ज्ञाता, प्राचीनकाल सम्बन्धी विद्या का ज्ञाता ।

पुरातन—[सं० वि०] प्राचीन, पुराना ।

पुरातल—[सं० पु०] रसातल ।

पुरारि—[सं० पु०] शिवजी, पुर नामक राक्षस के शत्रु ।

पुरावृत्ति—[सं० पु०] इतिहास, प्राचीन वृत्तांत ।

पुरि—[सं० स्त्री०] नगरी, पुरी, नदी । [पु०] संन्यासियों का एक भेद, राजा ।

पुरी—[सं० स्त्री०] नगरी, पुरुषोत्तम धाम, जगन्नाथ पुरी ।

पुरीतत—[सं० पु०] वह नाड़ी जहाँ सोते समय मन स्थिर रहता है । आँत ।

पुरीष—[सं० पु०] मल, विष्ठा ।

पुरु—[सं० पु०] देह, शरीर, देवलोक, दैत्य, राजा ययाति का पुत्र ।

पुरुकुत्स—[सं०वि०]मान्धाता का पुत्र ।

पुरुजित—[सं० पु०] एक राजा । अर्जुन का मामा । विष्णु ।

पुरुदम—[सं० पु०] विष्णु ।

पुरुभोज—[सं० पु०] भेंड़, भेड़ा ।

पुरुराज—[सं० पु०] पुरुरवा ।

पुरुष—[सं० पु०] मनुष्य, आत्मा, ब्रह्म, सूर्य, शिव, विष्णु, पूर्वज, स्वामी, एक चैतन्य, अपरिणामी, व्याकरण का एक भेद ।

पुरुषकार—[सं० वि०] पौरुष, शौर्य, पुरुष का कर्म ।

पुरुष-कुंजर—[सं० पु०] पुरुष-श्रेष्ठ ।

पुरुषत्व—[सं० पु०] पौरुष, पुंसत्व ।

पुरुषत्वहीन—[सं० वि०] नपुंसक ।

पुरुषपुर—[सं० पु०] प्राचीन गांधार की राजधानी पेशावर नगर ।

पुरुषमेध—[सं० पु०] नरबलि, मनुष्य यज्ञ । दाह कर्म ।

पुरुषसिंह—[सं० पु०] उद्योगी पुरुष ।

पुरुषसूक्त—[सं० पु०] सहस्र शीर्षा से आरंभ होने वाला ऋग्वेद का एक प्रसिद्ध सूक्त ।

पुरुपाद—[सं० पु०] राक्षस । पुरुषादक ।

पुरुपाधम—[सं० वि०] नराधम, नीच मनुष्य ।

पुरुषानुक्रम—[सं० पु०] पुरुषों की परम्परा ।

पुरुषायितबन्ध—[सं० पु०] विपरीत रति ।

पुरुषार्थ—[सं० पु०] मनुष्य का उद्योग, पौरुष, पराक्रम, शक्ति ।

पुरुषार्थी—[सं० वि०] उद्योगी, परिश्रमी, बलवान ।

पुरुषोत्तम—[सं० पु०] श्रीकृष्ण, विष्णु, नारायण, श्रेष्ठ पुरुष ।

पुरुहूत—[सं० पु०] इन्द्र, सुरेश ।

पुरुरवा—[सं० पु०] विश्वदेव, उर्वशी के पति और राजा इला के पुत्र ।

पुरोचन—[सं० पु०] दुर्योधन का मित्र और सेवक ।

पुरोलाश—[सं० पु०] यज्ञ-सामग्री, खीर, सोमरस ।

पुरोवर्त्ती—[सं० वि०] अग्रगामी ।

पुरोहित—[सं० पु०] कर्मकांडी, संस्कार कराने वाला । याजक ।

पुलक—[सं० पु०] प्रेम और हर्ष के उद्वेग से उत्पन्न रोमांच । एक रत्न । गद्गद होने का भाव ।

पुलकित—[सं० वि०] गद्गद, रोमांचित ।

पुलस्त्य—[सं० पु०] रावण के दादा, ब्रह्मा के मानस पुत्र, प्रजापतियों और सप्त ऋषियों में से एक ऋषि ।

पुलह—[सं० पु०] ब्रह्मा के मानस पुत्र, सप्त ऋषियों में से एक ।

पुलाक—[सं० पु०] भात, अकरा नामक अन्न ।

पुलिंद—[सं० पु०] एक प्राचीन असभ्य जाति और उसका देश ।

पुलिन—[सं० पु०] तट, पानी से निकली भूमि ।

पुलोमजा—[सं० स्त्री०] इन्द्राणी ।

पुलोमही—[सं० स्त्री०] अफ़ीम ।

पुलोमा—[सं० स्त्री०] भृगमुनि की स्त्री ।

पुष्कर—[सं० पु०] शंकर, विष्णु, बुद्ध, तालाब, कमल, पानी, बाण, आकाश, युद्ध, सर्प, पोहकर मूल नामक औषधि, सर्प, सारस, हाथी की सूड़ । अजमेर के निकट एक तीर्थ स्थान ।

पुष्करणी—[सं० स्त्री०] छोटा तालाब ।

पुष्करमूल—[सं० पु०] पोहकर मूल नामक एक औषधि ।

पुष्कल—[सं० पु०] शिव, अन्न मापने का एक मान, चार ग्रास की भिक्षा, भरत-पुत्र । [वि०] प्रचुर, अधिक, श्रेष्ठ ।

पुष्ट—[सं० वि०] बलवान, पाला-पोसा । दृढ़ ।

पुष्टता—[सं० स्त्री०] दृढ़ता ।

पुष्टि—[सं० स्त्री०] पोषण, किसी बात का समर्थन, दृढ़ता ।

पुष्टिकर—[सं० वि०] पौरुष या वीर्य्य उत्पादक वस्तु या औषधि ।

पुष्टिमार्ग—[सं०पु०] ईश्वर की कृपा । वैष्णव-भक्ति-मार्ग ।

पुष्प—[सं० पु०] वृक्षों का फूल, कुसुम, ऋतुमती स्त्री का रज ।

पुष्पक—[सं० पु०] कुबेर का विमान, सुमन, आँख की फूली ।

पुष्प-चाप—[सं० पु०] कामदेव ।

पुष्पदंत—[सं० पु०] शिव-भक्त एक

गंधर्व, वायुकोण का दिग्गज ।
पुष्पधन्वा-[सं०पु०] मदन, कामदेव ।
पुष्पध्वज—[सं० पु०] कामदेव ।
पुष्पपुर—[सं० पु०] प्राचीन पटना ।
पुष्पमित्र—[सं०पु०] राजा पुष्यमित्र ।
पुष्परज—[सं० पु०] पराग, फूल की धूल ।
पुष्पराग—[सं० पु०] पुखराज मणि ।
पुष्परेणु—[सं० पु०] पराग ।
पुष्पवती—[सं० स्त्री०] रजस्वला, फूली हुई ।
पुष्पवाटिका--[सं० स्त्री०] फुलवाड़ी।
पुष्पवाण—[सं० पु०] कामदेव ।
पुष्पवृष्टि—[सं०स्त्री०] फूलोंकी वर्षा ।
पुष्पशर—[सं० पु०] कामदेव ।
पुष्पसार—[सं० पु०] फूलों का तत्त्व ।
पुष्पांजलि – [सं० स्त्री०] देवता को अर्पित फूलों की अंजलि ।
पुष्पिका—[सं० स्त्री०] अध्याय के अन्तिम वाक्य ।
पुष्पित—[सं० वि०] विकसित । फूला हुआ ।
पुष्पिताग्रा—[सं० स्त्री०] एक अर्ध-सम छन्द ।
पुष्पेषु—[सं० पु०] कामदेव ।
पुष्पोद्यान—[सं० पु०] फुलवाड़ी ।
पुष्य—[सं० पु०] पुष्टि, पोषण, एक नक्षत्र ।
पुष्यमित्र—[सं० पु०] मौर्य के बाद शुङ्गराजवंश का एक राजा ।
पुस्तक—[सं० स्त्री०] पोथी, ग्रन्थ ।
पुस्तकाकार—[सं० वि०] पुस्तक की आकृति का ।
पुस्तकालय—[सं० पु०] पुस्तकों का संग्रहालय ।
पूँगोफल—[सं० पु०] सुपारी ।
पूँजी—[हि० स्त्री०] धन, व्यापार में लगा धन, समूह ।
पूँजीपति—[हि० पु०] धनवान, महाजन, पूँजीदार ।
पूग—[सं० पु०] सुपारी, समूह ।
पूजक—[सं० पु०] पुजारी, पूजा करनेवाला ।
पूजन—[सं० पु०] वन्दन, अर्चन, आराधना, देव-सेवा ।
पूजनीय—[सं० वि०] वंदनीय, आदरणीय, पूजने योग्य ।
पूजा—[सं० स्त्री०] सम्मान, सत्कार, अर्चन, आराधन ।
पूजित—[सं० वि०] पूजनीय ।
पूज्यपाद—[सं० वि०] अत्यन्त मान्य, जिसके चरण पूजने योग्य हों ।
पूत—[सं० वि०] शुद्ध, पावन । [पु०] शंख, श्वेत कुश, पलास, सत्य ।
पूतना—[सं० स्त्री०] एक राक्षसी जिसको कृष्ण ने मारा था ।
पूतनासूदन—[सं० पु०] पूतना को मारनेवाले कृष्ण ।
पूति—[सं० स्त्री०] दुर्गन्धि । पवित्रता ।
पूतिकर्णक—[सं० पु०] कान का एक रोग ।
पूतिगंधि—[सं० पु०] दुर्गन्धि ।
पूतीकृत—[सं० वि०] शोधित, रक्षित ।
पूप—[सं० पु०] पुआ । एक न्याय ।
पूय—[सं० पु०] पीब, मवाद ।
पूरक—[सं० वि०] पूरा करनेवाला, प्राणायाम की प्रथम विधि, बिजौरा नीबू, पिंड दान ।
पूरण—[सं० पु०] अंकों का गुणा करना, भरना, समाप्त करना, वृष्टि, सागर ।
पूरित—[सं० वि०] संपन्न, भरा हुआ, पूरा ।
पूर्ण—[सं० वि०] भरा पूरा, तृप्त, अखंडित, सफल ।
पूर्णकाम—[सं० वि०] जिसकी सब इच्छाएँ पूरी हो गई हों ।
पूर्णकुंभ—[सं० पु०] मंगलघट, जल भरा कलश ।
पूर्णचन्द्र—[सं०पु०] पूर्णिमा का चाँद ।
पूर्णतः—[सं० क्रि०वि०] पूरी तरह से । पूर्ण रूप से ।
पूर्णता—[सं० स्त्री०] पूर्ण होने का भाव ।
पूर्णपात्र [सं० पु०] हवन-सामग्री से भरा बर्त्तन, किसी वस्तु से भरा हुआ बरतन ।
पूर्णप्रज्ञ—[सं० वि०] पूरा ज्ञानी ।
पूर्णप्रज्ञ-दर्शन—[सं० पु०] वेदान्त दर्शन के सूत्रों के आधार पर बना हुआ एक दर्शन शास्त्र-विशेष ।
पूर्णभूत—[सं० पु०] वह भूत काल जिसे बीते बहुत समय हो चुका हो ।
पूर्णमासी—[सं० स्त्री०] पूर्णिमा, चान्द्र मास का अन्तिम दिन ।
पूर्णविराम—[सं० पु०] वाक्य के पूर्ण होने का चिह्न ।
पूर्णातिथि—[सं० स्त्री०] पंचमी, दशमी, पूर्णिमा, अमावास्या आदि ।
पूर्णायु—[सं० स्त्री०] सौ वर्ष की आयु । पूरी आयु ।
पूर्णावतार—[सं० पु०] परमात्मा की सोलह कला युक्त पूरा अवतार ।
पूर्णाहुति—[सं० स्त्री०] किसी कार्य का अन्तिम कृत्य, हवन में अन्तिम आहुति ।
पूर्णिमा—[सं० स्त्री०] पूर्णमासी ।
पूर्णोपमा—[सं० स्त्री०] उपमा अलंकार का एक भेद ।
पूर्त—[सं० पु०] देवमन्दिर, धर्मशाला कुँआ, सड़क आदि बनवाना ।
पूर्तविभाग—[सं० पु०] सड़क आदि बनवाने वाला विभाग ।
पूर्ति—[सं० स्त्री०] पूर्णता, भरण-

गुणन । काम पूरा करना ।

पूर्व—[सं० पु०] प्रथम, पहला, प्राची दिशा, सूर्योदय की दिशा ।

पूर्वक—[सं० क्रि० वि०] युक्त, सहित ।

पूर्वकाल—[सं० पु०] प्राचीनकाल ।

पूर्वकालिक-क्रिया—[सं० स्त्री०] अपूर्ण क्रिया का वह रूप जिससे मुख्य क्रिया से पूर्ववर्ती काल ज्ञात हो ।

पूर्वज—[सं० पु०] पूर्व पुरुष, दादा, परदादा, पिता, भाई, पुरखे ।

पूर्वजन्म—[सं० पु०] पहले का जन्म । जन्मान्तर ।

पूर्वदिन—[सं० पु०] बीता दिन ।

पूर्वदेश—[सं० पु०] प्राची दिशा का देश ।

पूर्वपक्ष—[सं० पु०] शंका, विवाद का प्रथम पक्ष ।

पूर्वपक्षी—[सं० पु०] विवाद में अपना पक्ष प्रथम रखने वाला ।

पूर्वपुरुष—[सं० पु०] पुरखे, पिता, पितामह, प्रपितामह ।

पूर्वफाल्गुनी—[सं० स्त्री०] २७ नक्षत्रों में से ११ वाँ नक्षत्र ।

पूर्वभाद्रपदी—[सं० पु०] २७ नक्षत्रों में से २५ वां नक्षत्र ।

पूर्वमीमांसा—[सं० स्त्री०] महर्षि जैमिनि कृत एक दर्शन ।

पूर्वयाम—[सं० पु०] प्रथम पहर ।

पूर्वलिखित—[सं० वि०] पूर्वोक्त, पहले लिखा हुआ ।

पूर्वरंग—[सं० पु०] नाटक आरंभ करने से पूर्व दर्शकों को सजग करने के लिये गान ।

पूर्वराग—[सं० पु०] प्रथम प्रेम, पहला अनुराग, संयोग से पूर्व नायक-नायिका की विशेष प्रेमावस्था ।

पूर्वरूप—[सं० पु०] लक्षण, आगम सूचक चिह्न, वस्तु-लक्षण, एक अर्थालंकार, आसार ।

पूर्ववत्—[सं० क्रि० वि०] पहले की तरह ।

पूर्ववर्त्ती—[सं० त्रि०] पूर्व सम्बन्धी, जो पहले रह चुका हो ।

पूर्ववायु—[सं० पु०] पुरवैया, पूर्वीय वायु ।

पूर्ववृत्त—[सं० पु०] इतिहास ।

पूर्वा—[सं० स्त्री०] पूर्व दिशा, एक नक्षत्र ।

पूर्वानुराग—[सं० पु०] गुण-श्रवण, चित्र-दर्शन अथवा रूप-दर्शन आदि से उत्पन्न प्रेम । पूर्वानुरक्ति ।

पूर्वापर—[सं० क्रि० वि०] आगे पीछे ।

पूर्वापर्य्य—[सं० पु०] आगा-पीछा ।

पूर्वाफाल्गुनी—[सं० स्त्री०] २७ नक्षत्रों में से ११ वाँ नक्षत्र ।

पूर्वाभाद्रपद—[सं०पु०] २७ नक्षत्रों में से २५ वां नक्षत्र ।

पूर्वाभिमुख—[सं० पु०] पूर्व की ओर मुख ।

पूर्वाभ्यास—[सं० पु०] पहले का अभ्यास ।

पूर्वार्द्ध—[सं० पु०] आरंभ का आधा भाग ।

पूर्वावधि—[सं० त्रि०] चिरकाल पर्यन्त, पूर्वकालावधि ।

पूर्वावस्था—[सं० स्त्री०] पहले की अवस्था ।

पूर्वाषाढ़ा—[सं० स्त्री०] २७ नक्षत्रों में से २० वाँ नक्षत्र ।

पूर्वसंध्या—[सं० स्त्री०] प्रभात ।

पूर्वाह्न—[सं० स्त्री०] सुबह से दोपहर तक का समय ।

पूर्वोक्त—[सं० वि०] पहले का कहा हुआ ।

पूषण—[सं० पु०] पशुओं का पालन पोषण करने वाला एक देवता । सूर्य्य का एक भेद ।

पूषा—[सं० पु०] पोषक, सूर्य्य ।

पृक्ष—[सं० पु०] अनाज ।

पृच्छक—[सं० वि०] पूछने वाला । जिज्ञासु ।

पृच्छा—[सं० स्त्री०] जिज्ञासा ।

पृतना—[सं० स्त्री०] सेना का एक भाग, युद्ध ।

पृथक्—[सं० वि०] भिन्न, विलग ।

पृथक्करण—[सं० पु०] भिन्न भिन्न करने का कार्य ।

पृथक्क्षेत्र—[सं० पु०] भिन्न वर्ण की स्त्री से उत्पन्न पुत्र ।

पृथगात्मा—[सं० स्त्री०] विराग, विवेक ।

पृथग्जन—[सं० पु०] नीच, साधारण लोग । पापी ।

पृथग्विधि—[सं०] विविध, अनेक प्रकार, बहुरूप ।

पृथवी—[सं० स्त्री०] वसुधा, धरनी, अवनि ।

पृथा—[सं० स्त्री०] कुंतिभोज की कन्या कुन्ती ।

पृथिवी—[सं० स्त्री०] धरती, वसुधा, भूमि ।

पृथिवीश—[सं० पु०] राजा ।

पृथु—[सं० वि०] विशाल, चतुर, महान्, असंख्य । [पु०] विष्णु, अग्नि, शिव, राजा, वेणु का पुत्र ।

पृथुक—[सं० पु०] चिउड़ा ।

पृथुता—[सं० स्त्री०] विस्तार ।

पृथुमा—[सं० पु०] मछली, बड़े रोयें वाला । [वि०] विस्तृत ।

पृथुशिवा—[सं० पु०] लौना वृक्ष ।

पृथूदक—[सं० पु०] एक तीर्थ ।

पृथूदर—[सं० पु०] भेड़, भेड़ा । [वि०] बड़े पेट वाला ।

पृथ्वी—[सं० स्त्री०] भूमि, धरती, अवनि, १७ वर्णों का एक वृत्त ।
पृथ्वीका—[सं० स्त्री०] स्याह-जीरा, बड़ी इलायची ।
पृथ्वीतल—[सं० पु०] भूमंडल, धरातल । भूतल ।
पृथ्वीनाथ—[सं० पु०] राजा, परमेश्वर ।
पृथ्वीपति—[सं० पु०] राजा, परमेश्वर ।
पृथ्वीपाल—[सं० पु०] राजा ।
पृथ्वीराज—[सं० पु०] भारत का एक वीर राजपूत राजा ।
पृश्नि—[सं० स्त्री०] सुपत राजा की रानी ।
पृषत—[सं० पु०] एक राजा, कण, श्वेत विन्दु युक्त हरिण ।
पृषत्क—[सं० पु०] बाण, तीर ।
पृषदश्व—[सं० पु०] पवन, एक राजा, एक घोड़ा ।
पृष्ट—[सं० वि०] प्रश्न किया, पूछा हुआ ।
पृष्ठग्रंथि—[सं० पु०] कुबड़ा, कुब्ज ।
पृष्ठता—[सं० स्त्री०] पीठ की ओर ।
पृष्ठपोषक—[सं० पु०] सहायक, पीठ ठोकने वाला ।
पृष्ठ-भाग—[हि० पु०] पिछला भाग, पीठ, ।
पृष्ठ-वंश—[सं० पु०] मेरु-दंड, रीढ़ की हड्डी ।
पृष्ठ-व्रण—[सं० पु०] पीठ का घाव ।
पृष्ठास्थि—[सं० स्त्री०] पीठ की हड्डी ।
पेटिका—[सं० स्त्री०] पिटारी, संदूक ।
पेय—[सं० पु०] पीने के योग्य ।
पेषण—[सं० पु०] पीसना ।
पैंजनी—[हि० स्त्री०] पायजेब, पायल ।
पैंठ—[हि० स्त्री०] हाट, बाज़ार ।
पैठ—[हि० स्त्री०] गति, प्रवेश ।
पैताना—[हि० पु०] पायँता ।
पैतृक—[सं० वि०] पुरखों या पूर्वजों की, पिता से सम्बन्धित ।
पैशाच—[सं० वि०] पिशाच देश का, पिशाच संबन्धी ।
पैशाच-विवाह—[सं० पु०] एक प्रकार का धोके का विवाह ।
पैशाचिक—[सं० पु०] राक्षसी, वीभत्स, घृणित ।
पैशाची—[सं० स्त्री०] एक प्रकार की प्राकृतिक भाषा ।
पैशुन्य—[सं० पु०] छल, दुष्टता, परनिन्दा ।
पोट—[सं० स्त्री०] गठरी, पोटली ।
पोत—[सं० पु०] नौका, गर्भ-पिंड, कपड़े की बुनावट, छोटा पौधा । [हि०] माला आदि का काँच का मनका ।
पोतक—[सं० पु०] बहुत छोटा बच्चा ।
पोतदार—[हि० पु०] कोषाध्यक्ष, तहसीलदार ।
पोष—[सं० पु०] वृद्धि, पोषण, तुष्टि, घना, संतोष ।
पोषक—[सं० वि०] संरक्षक, सहायक, वर्द्धक ।
पोषण—[सं० पु०] पुष्टि, वर्द्धन, पालन ।
पोष्य—[सं० पु०] पालने योग्य ।
पोष्यपुत्र—[सं० पु०] दत्तक पुत्र, पुत्र के समान पाला हुआ ।
पौंड्रक—[सं० पु०] मोटा गन्ना, पौंडा । भीमसेन का शंख, पौंड्र । एक जाति । पुंड्र देश का एक राजा ।
पौत्तलिक—[सं० पु०] मूर्त्ति पूजक ।
पौत्र—[सं० पु०] पुत्र का पुत्र, पोता ।
पौरव—[सं० पु०] पुरुवंशी ।
पौरस्त्य—[सं० वि०] पूर्व दिशा सम्बन्धी, आदि, पूर्वीय ।
पौराणिक—[सं० वि०] प्राचीन काल का, पुराण सम्बन्धी ।
पौरुष—[सं० पु०] पुरुषार्थ । साहस, परिश्रम, उद्यम ।
पौरुषेय—[सं० वि०] पुरुष द्वारा निर्मित, आध्यात्मिक, पुरुष समूह ।
पौरुष्य—[सं० पु०] साहस, पुरुषत्व ।
पौरुहूत—[सं० पु०] इन्द्र का अस्त्र, वज्र ।
पौरेय—[सं० पु०] गांव, नगर के समीप देश ।
पौरोगव—[सं० पु०] रसोई घर का अध्यक्ष ।
पौरोहित्य—[सं० पु०] पुरोहिताई ।
पौर्णमास—[सं० पु०] पूर्णिमा को किया जाने वाला एक यज्ञ ।
पौर्णमासी—[सं० स्त्री०] पूर्णिमा ।
पौर्वाह्निक—[सं० वि०] सुबह से दोपहर तक का कार्य ।
पौलस्त्य—[सं० पु०] कुबेर, रावण, चन्द्र, पुलस्त्य ऋषि के वंशज ।
पौष—[सं० पु०] पूस मास ।
पौष्टिक—[सं० वि०] बल-वीर्य वर्द्धक । शक्तिशाली ।
प्रकोप—[सं० पु०] कँपकँपी ।
प्रकम्पित—[सं० वि०] काँपता हुआ ।
प्रकम्पन—[सं० पु०] कँपकँपी । कम्पन ।
प्रकट—[सं० वि०] प्रत्यक्ष, स्पष्ट, व्यक्त, विदित ।
प्रकटन—[सं० पु०] व्यक्त होना, उत्पन्न होना ।
प्रकटित—[सं० वि०] स्पष्ट किया हुआ ।

प्रकर—[सं० पु०] फैले हुए फूल आदि। दल, समूह।

प्रकरण—[सं० पु०] वृत्तान्त, विषय, रूपक के भेद। अध्याय, कांड, सर्ग, ग्रन्थ का छोटा भाग।

प्रकरी—[सं० स्त्री०] कुछ काल तक चल कर रुक जाने वाली कथा-वस्तु। एक प्रकार का गाना, नाटक में प्रयोजन सिद्धि के पाँच भेदों में से एक। नाटक खेलने की वेदी।

प्रकर्ष—[सं० पु०] बाहुल्य, उत्कर्ष, अधिकता।

प्रकला—[सं० स्त्री०] समय का साठवां भाग।

प्रकांड—[सं०वि०] बहुत बड़ा, विराट।

प्रकांत—[सं० वि०] अनुचित, आरंभ किया हुआ।

प्रकाम—[सं० वि०] मनमाना, यथेष्ट।

प्रकार—[सं० पु०] तरह, भांति।

प्रकारान्तर—[सं० वि०] अन्य रीति, अन्य विधि।

प्रकाश—[सं० पु०] ज्योति, विकास, आभा, अभिव्यक्ति, प्रसिद्धि, अध्याय, प्रकट होना।

प्रकाशक—[सं० पु०] प्रसिद्ध करने वाला, प्रकाश करने वाला, प्रकट करने वाला।

प्रकाशधृष्ट—[सं० पु०] प्रकट रूप से ढिठाई करने वाला नायक।

प्रकाशन—[सं० पु०] प्रकाशित करना, फैलाना, प्रकट या व्यक्त करना।

प्रकाशमान—[सं० वि०] प्रसिद्ध, विख्यात, शोभायमान। आलोकित।

प्रकाशवियोग—[सं० पु०] वह विछोह जो अवसर पर प्रगट हो जाय।

प्रकाश-संयोग—[सं० पु०] सब पर *प्रकट हो जाने वाला मिलाप।*

प्रकाशित—[सं० वि०] प्रसिद्ध, प्रकट, व्यक्त।

प्रकाशी—[सं० पु०] चमकता हुआ।

प्रकाश्य—[सं० वि०] प्रकट करने योग्य, प्रकाशनीय।

प्रकीर्ण—[सं० वि०] विस्तृत, मिश्रित, ग्रन्थ-विच्छेद।

प्रकीर्णक—[सं० पु०] अध्याय, फैलाने वाला।

प्रकीर्तन—[सं०पु०] वर्णन, प्रस्तावना।

प्रकीर्तित—[सं० वि०] वर्णित, कथित।

प्रकुपित—[सं० वि०] क्रोध युक्त। कुपित।

प्रकुप्त—[सं० वि०] उग्र, विकार युक्त।

प्रकृत—[सं०वि०]विकार रहित, यथार्थ।

प्रकृतार्थ—[सं० वि०] यथार्थ, ठीक अर्थ। मूल भाव।

प्रकृति—[सं० स्त्री०] प्रधान प्रवृत्ति, मल गुण, स्वभाव।

प्रकृतिभाव—[सं० पु०] स्वभाव, विकार-रहित दो सन्धि का नियम।

प्रकृतिशास्त्र—[सं० पु०] वह शास्त्र जिसमें प्राकृतिक विषयों या पदार्थों का वर्णन हो। भूगर्भ शास्त्र। विज्ञान।

प्रकृतिसिद्ध—[सं० वि०] नैसर्गिक, स्वाभाविक।

प्रकृतिस्थ—[सं० वि०] स्वाभाविक दशा में रहने वाला। उदासीन।

प्रकृष्ट—[सं० पु०] उत्कृष्ट, प्रधान, मुख्य।

प्रकृष्टता—[सं० स्त्री०] श्रेष्ठता।

प्रकोट—[सं० पु०] परकोटा।

प्रकोप—[सं० पु०] चंचलता, अधिक क्रोध, शरीर में रोग का विकार।

प्रकोष्ठ—[सं०पु०] कोठा, बड़ा आंगन, हाथ की कलाई।

प्रकोषण—[सं० स्त्री०] एक अप्सरा।

प्रक्रम—[सं० पु०] अनुष्ठान, उद्योग, अवसर, उपक्रम, सिलसिला।

प्रक्रमण—[सं० पु०] भली प्रकार, आगे बढ़ना, घूमना, आरंभ करना।

प्रक्रमभंग—[सं० पु०] व्यतिक्रम, काव्य में यथेष्ट क्रम के न होने का एक दोष।

प्रक्रिया—[सं० स्त्री०] प्रणाली, रीति, दैवकर्म, प्रकरण, क्रिया।

प्रक्लिन्न—[सं० वि०] स्वेदमय, पसीना से डूबा हुआ, तृप्त।

प्रक्लेद—[सं० पु०] नमी, तरी।

प्रक्षय—[सं० पु०] विनाश, बरबादी, क्षय।

प्रक्षाल—[सं० पु०] प्रायश्चित्त।

प्रक्षालन—[सं० पु०] धोना। शुद्ध करना।

प्रक्षित—[सं० पु०] पीछे से मिलाया हुआ। फेंका हुआ।

प्रक्षिप्त—[सं० वि०] पीछे से मिलाया या बढ़ाया हुआ, क्षेपक।

प्रक्षेप—[सं० पु०] प्रक्षेपण, मिलाना, बढ़ाना, फेंकना, त्यागना।

प्रखर—[सं० वि०] तीक्ष्ण, उग्र, तीव्र, प्रचंड, तीखा। घोड़े की जीन।

प्रखरांशु—[सं० वि०] तीक्ष्ण किरण वाला।

प्रख्यात—[सं०वि०] विख्यात, कीर्तिमान। प्रसिद्ध।

प्रख्याति—[सं० स्त्री०] प्रसिद्धि।

प्रगट—[सं० वि०] व्यक्त, विदित, प्रत्यक्ष।

प्रगल्भ—[सं०वि०] उत्साही। उद्दंड, दंभी, ढीठ। चतुर, प्रवीण।

प्रगल्भवचना—[सं० स्त्री०] वह मध्या नायिका जो बातों द्वारा अपना क्रोध और दुःख प्रकट करे।

प्रगाढ़—[सं० वि०] कठोर, दृढ़, अधिक गहरा।

प्रगुण--[सं० वि०] उदार, सरल, ऋजु, सीधा ।

प्रगृहीत—[सं० वि०] भली प्रकार ग्रहण किया हुआ, संधि नियम के बिना उच्चरित ।

प्रगृह्य--[सं० वि०] संधि-नियम बिना उच्चारण योग्य, ग्रहण योग्य ।

प्रग्रह--[सं० पु०] लगाम, तराजू की डोरी, प्रग्रह ।

प्रघट्टन—[सं०] घर्षण, प्रगटना ।

प्रघसू--[सं० पु०] रावण का एक सेनापति ।

प्रघासा—[सं० पु०] दालान, चौपार, बरामदा ।

प्रचंड—[सं०वि०] प्रखर, तीव्र, तीक्ष्ण । भारी, असह्य, उग्र ।

प्रचंडता—[सं०स्त्री०] प्रखरता, उग्रता, भयंकरता, असह्यता ।

प्रचंडत्व—[सं० पु०] प्रखरता, उग्रता, तीक्ष्णता ।

प्रचंडमूर्ति—[सं० स्त्री०] उग्र स्वभाव, प्रतापी, भयंकर आकार ।

प्रचंडा—[सं० स्त्री०] दुर्गा, चंडी । कालिका ।

प्रचलन—[सं० पु०] प्रचार ।

प्रचलित—[सं० वि०] व्यवहृत, चालू, चलने वाला ।

प्रचार—[सं० पु०] रिवाज, उपयोग, चलना, प्रकट ।

प्रचारण—[सं० पु०] चलाना, जारी करना ।

प्रचुर—[सं० वि०] अधिक, बहुत ।

प्रचुरता—[सं० स्त्री०] बाहुल्य, आधिक्य ।

प्रचुरत्व-[सं० पु०] यथेष्टता, अधिकता ।

प्रचुरपुरुष—[सं० पु०] चोर ।

प्रचेता—[सं० पु०] वरुण, पृथु का प्रपौत्र ।

प्रचेल—[सं० पु०] पीला चन्दन ।

प्रचेलक—[सं० पु०] घोड़ा ।

प्रचोदन—[सं० पु०] प्रेरणा, नियम, उत्तेजना ।

प्रच्छक—[सं० वि०] पूछनेवाला । प्रश्नकर्त्ता ।

प्रच्छद--[सं०पु०] चादर, उत्तरीय वस्त्र ।

प्रच्छन्न—[सं० वि०] आच्छादित, लपेटा हुआ । छिपा हुआ ।

प्रच्छर्दिका—[सं० स्त्री०] उलटी, वमन, उद्गार ।

प्रच्छादन—[सं० पु०] उत्तरीय वस्त्र, छिपाना, गुप्त करना ।

प्रजनन—[सं० पु०] धात्री-कर्म, सन्तानोत्पादन ।

प्रजरण—[सं० पु०] बहुत जलना ।

प्रजव—[सं० पु०] अतिवेग ।

प्रजा—[सं० स्त्री०] रैयत, जनता । सन्तान ।

प्रजाकाम—[सं० पु०] पुत्र-प्राप्ति की इच्छावाला ।

प्रजाकार—[सं० पु०] ब्रह्मा, प्रजा उत्पन्न करनेवाला ।

प्रजागरण—[सं० पु०] अति चिन्ता, अति जागना ।

प्रजागरा—[सं० स्त्री०] एक अप्सरा ।

प्रजातंत्र—[सं० पु०] वह शासन-प्रणाली जिसमें प्रजा का चुना हुआ शासक शासन करता हो ।

प्रजाधिकारी राज्य—[सं० पु०] प्रजातंत्र राज्य ।

प्रजापति—[सं० पु०] सूर्य, राजा, मनु, सृष्टिकर्त्ता, ब्रह्मा, घर का मुखिया, अग्नि, पिता, मेघ ।

प्रजावती—[सं० स्त्री०] भाभी, बड़े भाई की पत्नी, पुत्रवती स्त्री ।

प्रजावान—[सं० पु०] पुत्रवाला ।

प्रजासत्ता—[सं० स्त्री०] प्रजातंत्र ।

प्रजासन—[सं० पु०] प्रजा का साधारण आहार ।

प्रजित--[सं० पु०] विजय करनेवाला ।

प्रजेश—[सं० पु०] नृप, राजा । प्रजेश्वर ।

प्रज्झटिका—[सं० स्त्री०] पद्धटिका, पद्धरी, १६ मात्राओं का एक छन्द ।

प्रज्ञ—[सं० पु०] पण्डित, ज्ञानी । विद्वान ।

प्रज्ञता—[सं० स्त्री०] पांडित्य, विद्वत्ता ।

प्रज्ञप्ति—[सं० स्त्री०] विज्ञापन, सूचना, निवेदन, संकेत ।

प्रज्ञा—[सं० स्त्री०] सरस्वती, ज्ञान, बुद्धि ।

प्रज्ञाचक्षु—[सं० पु०] अन्धा, धृतराष्ट्र । [वि०] ज्ञान-दृष्टि से देखनेवाला ।

प्रज्ञापारमिता—[सं० स्त्री०] गुणों की पराकाष्ठा ।

प्रज्ञामय—[सं० पु०] विद्वान । प्रज्ञावान ।

प्रज्वलन—[सं० पु०] बहुत ही जलना ।

प्रज्वलित--[सं० वि०] धधकता हुआ, जलता हुआ, प्रकाशित ।

प्रडीन—[सं० पु०] पक्षी की उड़ान ।

प्रण—[सं० पु०] दृढ़ निश्चय, प्रतिज्ञा ।

प्रणख--[सं० पु०] नख का अग्रभाग ।

प्रणत—[सं० वि०] नम्र, नत, दीन, झुका हुआ ।

प्रणतपाल—[सं० पु०] दीनों का पालक, शरणागत रक्षक ।

प्रणति—[सं० स्त्री०] विनय, नम्रता, नमस्कार, प्रणाम ।

प्रणमन—[सं० पु०] नम्र होना, झुकना ।

प्रणम्य—[सं० वि०] प्रणाम करने योग्य ।

प्रणय—[सं० पु०] प्रेम-प्रार्थना । मोक्ष, स्नेह, विश्वास ।

प्रणयन—[सं० पु०] निर्माण करना। रचना।

प्रणयिनी—[सं० स्त्री०] प्रियतमा, पत्नी, प्रिया, प्रेमिका।

प्रणयी—[सं० पु०] प्रेम करने वाला, पति, स्नेही।

प्रणव—[सं० पु०] ब्रह्म, ओ३म, ओंकार, परमेश्वर।

प्रणाम—[सं० पु०] नमस्कार।

प्रणामी—[सं० वि०] देवताओं के प्रणामार्थ दक्षिणा।

प्रणायक—[सं० पु०] मुखिया, नेता।

प्रणाल—[सं० पु०] नाली, मोरी, पतनाला।

प्रणाली—[सं० स्त्री०] नाली, जल-मार्ग, परम्परा, रीति, प्रथा।

प्रणाशन—[सं० पु०] नाश करने का भाव।

प्रणाश—[सं० पु०] नाश, ध्वंस।

प्रणिधान—[सं० पु०] श्रद्धा, समाधि, प्रयत्न, मन की एकाग्रता।

प्रणिधि—[सं० पु०] प्रार्थना, दूत।

प्रणिपात—[सं० पु०] प्रणाम।

प्रणिहित—[सं० वि०] स्थापित, समाहित, रक्षित।

प्रणी—[सं० वि०] दृढ़ प्रतिज्ञावाला।

प्रणीत—[सं० पु०] रचयिता, निर्माता।

प्रणेय—[सं० वि०] लौकिक, आधीन, संस्कार युक्त।

प्रणोदित—[सं० वि०] प्रेरित।

प्रतनु—[सं० वि०] दुर्बल, क्षीण, पतला।

प्रतपन—[सं० पु०] गर्मी, उत्ताप।

प्रतप्त—[सं० वि०] गर्म, तपा हुआ, उष्ण।

प्रतर्दन—[सं० पु०] काशी का एक राजा, एक ऋषि, विष्णु।

प्रतल—[सं० पु०] सातवाँ पाताल।

प्रतान—[सं० पु०] कुटिल तंतु, विस्तार।

प्रताप—[सं० पु०] ताप, पराक्रम, पौरुष तेज, प्रभाव, ऐश्वर्य।

प्रतापसिंह—[सं० पु०] चित्तौड़ के प्रसिद्ध महाराणा।

प्रतापी—[सं० वि०] प्रभावशाली, तेज-वान, वैभव शाली।

प्रतारक—[सं० पु०] वंचक, छली, धूर्त्त।

प्रतारण—[सं० पु०] चालाकी, छल, ठगी। धूर्त्तता।

प्रतारित—[सं० वि०] छला हुआ।

प्रति—[सं० अव्य०] एक उपसर्ग, विपरीत, हर एक, सामने, बदले में, मुकाबले में, समान, ओर, हेतु, नकल।

प्रतिकार—[सं० पु०] बदला, जवाब।

प्रतिकारक—[सं० पु०] बदला चुकाने वाला।

प्रतिकितव—[सं० पु०] जुआरी का जोड़ीदार।

प्रतिकूप—[सं० पु०] खाई।

प्रतिकूल—[सं० वि०] विपरीत, विरुद्ध।

प्रतिकृत—[सं० स्त्री०] प्रतिमा, प्रतिबिंब, प्रतिच्छाया, चित्र, बदला।

प्रतिक्रिया—[सं० स्त्री०] प्रतिकार, एक क्रिया के फल स्वरूप दूसरी क्रिया।

प्रतिक्षण—[सं० पु०] प्रत्येक क्षण।

प्रतिगृहीता—[सं० स्त्री०] धर्मपत्नी, विवाहिता।

प्रतिग्रह—[सं० पु०] अधिकार में लेना, स्वीकार, पाणिग्रहण, ग्रह विशेष।

प्रतिग्रहण—[सं० पु०] दान लेना, वस्तु से वस्तु बदलना।

प्रतिगृहीत—[सं० पु०] बदले में दान लेने वाला।

प्रतिघात—[सं० पु०] टक्कर, चोट के बदले चोट करना।

प्रतिघाती—[सं० पु०] शत्रु, वैरी।

प्रतिचिकीर्षा—[सं० स्त्री०] बदला चुकाने की इच्छा।

प्रतिचिकीर्षु—[सं० वि०] बदला चुकाने की इच्छा वाला।

प्रतिचिंतन—[सं० पु०] बारम्बार ध्यान। चिन्तित का पुनः चिन्तन।

प्रतिच्छाया—[सं० स्त्री०] प्रतिमूर्ति, प्रतिबिंब, परछाई। चित्र।

प्रतिज्ञान्तर—[सं० पु०] पराज्य, तर्क में एक निग्रह-स्थान।

प्रतिज्ञा—[सं० स्त्री०] प्रण, शपथ, दृढ़ निश्चय। संकल्प।

प्रतिज्ञात—[सं० पु०] स्वीकृत, अंगीकृत, वादा किया हुआ।

प्रतिज्ञान—[सं० पु०] प्रतिज्ञा, प्रण, आग्रह, हठ।

प्रतिज्ञा-पत्र—[सं० पु०] स्वीकार-पत्र, निश्चय सूचक-पत्र।

प्रतिज्ञाहानि—[सं० स्त्री०] एक प्रकार की पराजय।

प्रतिदर्शन—[सं० पु०] दर्शन के पीछे दर्शन, बार-बार दर्शन।

प्रतिदान—[सं० पु०] दान के बदले दान, परिवर्तन, विनिमय।

प्रतिदिन—[सं० पु०] प्रत्येक दिन। हर रोज़।

प्रतिदेय—[सं० पु०] लौटाने योग्य।

प्रतिद्वंद्व—[सं० पु०] बराबर बल का परस्पर झगड़ा, एक वस्तु के लिये दो व्यक्तियों का झगड़ा।

प्रतिद्वंद्वी—[सं० पु०] शत्रु, बराबर का लड़ने वाला।

प्रतिध्वनि—[सं० स्त्री०] गूंज, पलट कर आने वाला शब्द।

प्रतिनायक—[सं० पु०] नायक का प्रतिद्वन्दी नायक।

प्रतिनिधि—[सं० पु०] प्रतिमा, स्थानापन्न, दूसरे की ओर से काम करने के लिये नियुक्त व्यक्ति।

प्रतिनिर्यातन—[सं० पु०] अपकार के बदले अपकार।
प्रतिनिवर्तन—[सं० पु०] लौटाना।
प्रतिपक्ष—[सं० पु०] शत्रु का पक्ष।
प्रतिपक्षी—[सं० पु०] विरोधी।
प्रतिपत्ति—[सं० स्त्री०] प्रगल्भता, प्रतिष्ठा, प्रतिपादन, पदप्राप्ति।
प्रतिपदा—[सं० स्त्री०] किसी पक्ष की प्रथम तिथि।
प्रतिपन्न—[सं० वि०] स्वीकृत, प्रमाणित, अवगत, निश्चित, सिद्ध, शरणागत।
प्रतिपादक—[सं० पु०] प्रकाशक, बोधक, ज्ञापक, सिद्ध करने वाला।
प्रतिपादन—[सं० पु०] भली-भाँति समझना, सम्पादन, ज्ञापन, सप्रमाण कथन।
प्रतिपालक—[सं० पु०] रक्षक, पोषक, पालनकर्ता।
प्रतिपालन—[सं० पु०] रक्षण, पालन-पोषण।
प्रतिपाल्य—[सं० वि०] रक्षणीय, पोष्य, पालनीय, गोपनीय।
प्रतिपुरुष—[सं० पु०] प्रतिनिधि। हर आदमी।
प्रतिप्रसन्न—[सं० पु०] एक बार रोककर फिर आज्ञादान।
प्रतिफल—[सं० पु०] परिणाम, प्रतिबिंब, छाया।
प्रतिबंध—[सं० पु०] रुकावट, मनाही।
प्रतिबंधक—[सं० पु०] विघ्न-बाधा डालने वाला।
प्रतिबिंब—[सं० पु०] परछाँही, दर्पण, चित्र, प्रतिमा, चित्र।
प्रतिबिंबवाद [सं० पु०] जीव ही वास्तव में ब्रह्म का प्रतिबिंब होने का एक सिद्धान्त।
प्रतिभट—[सं० पु०] बराबर का योद्धा, प्रत्येक वीर।
प्रतिभा—[सं० स्त्री०] ज्ञान, आत्मशक्ति, दीप्ति, असाधारण मानसिक शक्ति। बुद्धि-बल। प्रगल्भता।
प्रतिभावान्—[सं० वि०] जिसमें असाधारण मानसिक बल हो। प्रतिभाशाली।
प्रतिभाग—[सं० पु०] राज्य के भाग, प्रत्येक अंश।
प्रतिभू—[सं०पु०] जमींदार, ज़मानत में पड़ने वाला।
प्रतिम—[सं० अव्य०] तुल्य, सदृश।
प्रतिमा—[सं० स्त्री०] देवमूर्ति, प्रतिमूर्ति, प्रतिच्छाया, पत्थर का प्रतिरूप, चित्र, एक अर्थालंकार।
प्रतिमान—[सं० पु०] समानता, प्रतिच्छाया, उदाहरण, प्रतिबिंब।
प्रतिमार्ग—[सं० पु०] प्रत्येक मार्ग।
प्रतिमुख—[सं० पु०] नाटक की पाँच संधियों में से एक अंग-संधि।
प्रतिमूर्ति—[सं० स्त्री०] अनुकृति, प्रतिमा।
प्रतिमोक्षण—[सं० पु०] मुक्तिप्राप्ति।
प्रतियत्न—[सं० पु०] संस्कार, संशोधन, लिप्सा, वांछा, निग्रह करने का उपाय।
प्रतियोग—[सं० पु०] विरुद्ध संयोग, शत्रुता।
प्रतियोगिता—[सं० स्त्री०] विरोध, शत्रुता, प्रतिद्वंद्विता।
प्रतियोगी—[सं० पु०] विरोधी, वैरी।
प्रतियोद्धा—[सं० पु०] शत्रु। समान योद्धा।
प्रतिरथ—[सं० पु०] समान लड़ने वाला।
प्रतिरूप—[सं० पु०] प्रतिनिधि, प्रतिमा, मूर्ति, चित्र।
प्रतिरोध—[सं० पु०] बाधा, विरोध, रुकावट।
प्रतिरोधी—[सं० पु०] अपहरण करने वाला, ठग, डाकू।
प्रतिलिपि—[सं० स्त्री०] लेख की नकल।
प्रतिलोम—[सं० वि०] विरुद्ध, विपरीत, विलोम।
प्रतिलोम-विवाह—[सं० पु०] उच्च वर्ण की कन्या का निम्न वर्ण के वर से विवाह।
प्रतिवस्तूपमा—[सं० स्त्री०] एक अर्थालंकार जिसमें पृथक् वाक्यों में उपमेय और उपमान के साधारण धर्म का कथन हो।
प्रतिवचन—[सं०पु०] उत्तर, प्रत्युत्तर।
प्रतिवर्त्तन—[सं० पु०] लौट आना।
प्रतिवाक्य—[सं०पु०] उत्तर, प्रत्युत्तर।
प्रतिवाद—[सं० पु०] विरोध, विवाद, खंडन।
प्रतिवादी—[सं०पु०] प्रतिपक्षी, वादी का विरोधी, खंडन करने वाला।
प्रतिबाधक [सं० पु०] विघ्नकारी, प्रतिबंधक, निवारक।
प्रतिवास—[सं० पु०] पड़ोस।
प्रतिविधान—[सं० पु०] प्रतिक्रिया, उपाय, प्रतीकार।
प्रतिबिम्ब—[सं० पु०] प्रतिमा, परछाँही, प्रतिमूर्ति।
प्रतिवेश—[सं० पु०] पड़ोस, घर के सामने का घर।
प्रतिवेशी—[सं० पु०] पड़ोसी।
प्रतिशब्द—[सं० पु०] प्रतिध्वनि।
प्रतिशोध—[सं० पु०] बदला।
प्रतिश्याय—[सं०पु०] जुकाम, श्लेष्मा। कफ।
प्रतिश्रव—[सं० पु०] प्रतिज्ञा, स्वीकार, निश्चित कथन।
प्रतिश्रुत—[सं० वि०] प्रतिज्ञा किया

हुआ, बात पर दृढ़ ।

प्रतिषिद्ध—[सं॰ वि॰] जिसके लिये मनाही की गयी हो ।

प्रतिषेध—[सं॰ पु॰] निषेध, मनाही, रोक, एक अलंकार ।

प्रतिष्क—[सं॰ पु॰] दूत ।

प्रतिष्ठा—[सं॰स्त्री॰] स्थापना, ख्याति, कीर्ति, गौरव,व्रत का उद्यापन,एक छन्द ।

प्रतिष्ठान—[सं॰ पु॰] स्थापित करना, एक नगर ।

प्रतिष्ठानपुर—[सं॰ पु॰] भूसी के निकट का एक प्राचीन नगर, गोदावरी तट पर एक नगर ।

प्रतिष्ठा-पत्र—[सं॰पु॰] सनद, सम्मान पत्र ।

प्रतिष्ठित—[सं॰ वि॰] सम्मानित, स्थापित किया हुआ ।

प्रतिस्पर्द्धा—[सं॰ स्त्री॰] होड़, चढ़ा-ऊपरी, दूसरे से किसी कार्य में आगे बढ़ने का प्रयत्न ।

प्रतिस्पर्द्धी—[सं॰ पु॰] बराबरी करने वाला । होड़ करने वाला ।

प्रतिहत—[सं॰वि॰] निराश । निराकृत ।

प्रतिहार—[सं॰ पु॰] द्वार, द्वारपाल, राजकर्मचारी, चोबदार ।

प्रतिहारी—[सं॰ पु॰] द्वारपाल ।

प्रतिहिंसा—[सं॰ स्त्री॰] प्रतिशोध, बदला लेना ।

प्रतीक—[सं॰ पु॰] प्रतिमा, चिह्न, आकृति, रूप ।

प्रतीकार-[सं॰ पु॰] चिकित्सा, बदला । प्रतिकार ।

प्रतीकाश—[सं॰ पु॰] उपमा, समान, सदृश ।

प्रतीकोपासना—[सं॰ स्त्री॰] मूर्ति-पूजा, ईश्वरोपासना ।

प्रतीक्षक—[सं॰ पु॰] राह देखने वाला, बाट जोहने वाला ।

प्रतीक्षा—[सं॰ स्त्री॰] किसी कार्य के होने या किसी के आने की बाट देखना ।

प्रतीची [सं॰ स्त्री॰] पश्चिम दिशा ।

प्रतीचीन—[सं॰ पु॰] पश्चिम दिशा में स्थित या उत्पन्न, हाल का ।

प्रतीच्य—[सं॰ वि॰] पश्चिमी ।

प्रतीत—[सं॰ वि॰] ज्ञात, विदित । आनन्द । विख्यात ।

प्रतीति—[सं॰ स्त्री॰] विश्वास, प्रसन्नता, ज्ञान ।

प्रतीप—[सं॰ पु॰] महाराज शान्तनु के पिता, एक अर्थालंकार जिसमें उपमान को ही उपमेय बनाते या उपमेय से उपमान को तिरस्कृत सा दिखाते हैं ।

प्रतीयमान—[सं॰ वि॰] ज्ञात होता हुआ, जान पड़ता हुआ ।

प्रतीहार—[सं॰ पु॰] ड्योढ़ी, प्रतिहार ।

प्रतीहारी—[सं॰ पु॰] द्वारपाल । चोबदार ।

प्रतुद—[सं॰ पु॰] एक प्रकार के पक्षी ।

प्रतोद—[सं॰ पु॰] चाबुक ।

प्रतोली—[सं॰ स्त्री] दुर्ग-द्वार, राज-मार्ग, गली, चौड़ी सड़क ।

प्रत्न—[सं॰ वि॰] पुरातन, प्राचीन ।

प्रत्नतत्व—[सं॰ पु॰] पुरातत्व ।

प्रत्यंचा—[हि॰ स्त्री॰] धनुष की डोरी ।

प्रत्यक्ष—[सं॰ वि॰] इन्द्रियों और उनके अर्थों से होने वाला निश्चयात्मक ज्ञान ।

प्रत्यक्षदर्शी—[सं॰ पु॰] साक्षी, अपनी आखों से स्पष्ट देखने वाला ।

प्रत्यक्षवादी—[सं॰ पु॰] प्रत्यक्ष प्रमाण को मानने वाला ।

प्रत्यग्र—[सं॰ वि॰] शुद्ध, अभिनव, नवीन ।

प्रत्यनीक—[सं पु॰] प्रतिपक्षी, विरोधी, एक अर्थालंकार ।

प्रत्यपकार—[सं॰ पु॰] अपकार के बदले अपकार ।

प्रत्यभिज्ञा—[सं॰ स्त्री॰] स्मृति की सहायता से उत्पन्न ज्ञान ।

प्रत्यभिज्ञा-दर्शन—[सं॰ पु॰] महेश्वर को परमेश्वर मानने वाला सम्प्रदाय ।

प्रत्यभिज्ञान—[सं॰ पु॰] स्मृति द्वारा होने वाला ज्ञान ।

प्रत्यभियोग—[सं॰ पु॰] अपराध पर अपराध ।

प्रत्यभिलाष—[सं॰ पु॰] अभिलाष पर अभिलाष, चाह पर चाह ।

प्रत्यभिवादन—[सं॰ पु॰] प्रणाम करने पर दिया गया आशीष ।

प्रत्यय—[सं॰ पु॰] निश्चय, शपथ, व्याख्या, बुद्धि, प्रसिद्धि, लक्षण,आवश्यकता, ज्ञान, कारण, आचार, छिद्र, चिह्न, निर्णय । वे वर्ण या वर्णसमूह जो किसी धातु या अन्य शब्द के अन्त में उसके अर्थ में कुछ विशेषता लाने को लगाये जाते हैं ।

प्रत्यर्थी—[सं॰ पु॰] प्रतिवादी, शत्रु ।

प्रत्यर्पण—[सं॰ वि॰] पुनर्दान ।

प्रत्यवाय—[सं॰ पु॰] अपराध, पाप, अनिष्ट ।

प्रत्यह—[सं॰ अव्य॰] प्रतिदिन ।

प्रत्याख्यान—[सं॰ पु॰] अस्वीकार, खण्डन, निराकरण ।

प्रत्यागत—[सं॰ वि॰] जाकर लौटा हुआ ।

प्रत्यागमन—[सं॰ पु॰] वापस लौट आना ।

प्रत्यादेश—[सं॰ पु॰] परामर्श, देव-वाणी, उपदेश, खंडन ।

प्रत्यालीढ़—[सं॰ पु॰] धनुष चलाते समय बैठने की एक रीति ।

प्रत्यावर्त्तन—[सं॰ पु॰] लौट आना ।

प्रत्याशा—[सं॰ स्त्री॰] विश्वास, भरोसा, अभिलाषा ।

प्रत्याशी—[सं॰ वि॰] आकांक्षी,

अभिलाषी।

प्रत्यासन्न—[सं० वि०] समीप रहनेवाला।

प्रत्याहार—[सं० पु०] इन्द्रिय-निग्रह, व्याकरण में अक्षरों का संक्षेप रूप।

प्रत्युत—[सं० अव्य०] बल्कि, वरन्, इसके विपरीत। बरूक।

प्रत्युत्तर—[सं० पु०] उत्तर का उत्तर।

प्रत्युत्पन्न—[सं० वि०] प्रस्तुत, जो ठीक समय पर उत्पन्न हो।

प्रत्युपकार—[सं० पु०] उपकार के बदले में उपकार।

प्रत्यूष—[सं० पु०] सवेरा।

प्रत्यूह—[सं० पु०] रुकावट, विघ्न, बाधा।

प्रत्येक—[सं० वि०] पृथक्-पृथक्, अलग-अलग।

प्रथम—[सं० वि०] सर्वनाम, पहला, पूर्व, श्रेष्ठ।

प्रथमज—[सं० पु०] जेठा, बड़ा।

प्रथमतः—[सं० वि०] प्रथम बार, सबसे पहले।

प्रथमा—[सं० स्त्री०] मदिरा। कर्त्ता, कारक।

प्रथमी—[हि० स्त्री०] पृथ्वी।

प्रथा—[सं० स्त्री०] व्यवहार, रीति, प्रणाली, चलन।

प्रथित—[सं० वि०] प्रसिद्ध, विदित।

प्रद—[सं० वि०] देनेवाला, दाता।

प्रदक्षिणा—[सं० स्त्री०] परिक्रमा। किसी देवता के चारों ओर घूमना।

प्रदत्त—[सं० वि०] दिया हुआ।

प्रदर—[सं० पु०] स्त्रियों का एक बुरा रोग।

प्रदर्शक—[सं० पु०] दर्शक, देखने वाला। दिखानेवाला।

प्रदर्शन—[सं० पु०] दिखलाने का कार्य, दिखावा।

प्रदर्शनी—[सं० स्त्री०] नुमाइश।

प्रदर्शित—[सं० वि०] जो दिखाया गया हो।

प्रदल—[सं० पु०] बाण, तीर।

प्रदाता—[सं० वि०] दानी, दाता।

प्रदान—[सं० पु०] दान, भेंट, विवाह।

प्रदायक—[सं० पु०] दाता, देने वाला।

प्रदायी—[सं० पु०] देने वाला, दानी।

प्रदाह—[सं० पु०] शारीरिक जलन।

प्रदिशा—[सं० स्त्री०] विदिशा।

प्रदीप—[सं० पु०] दीपक, प्रकाश।

प्रदीपक—[सं० पु०] दीपक, प्रकाशक।

प्रदीपन—[सं० पु०] उजाला, प्रकाश।

प्रदीप्त—[सं० वि०] जगमगाता हुआ, प्रकाशवान।

प्रदीप्ति—[सं० स्त्री०] कांति, प्रतिभा, प्रकाश, आभा।

प्रदेय—[सं० वि०] दान देने योग्य।

प्रदेश—[सं० पु०] प्रांत, सूबा, देश-भाग, स्थान।

प्रदेशिनी—[सं० स्त्री०] तर्जनी नामक उँगली।

प्रदोष—[सं० पु०] संध्या, त्रयोदशी का व्रत, बड़ा अपराध।

प्रद्युम्न—[सं० पु०] श्रीकृष्ण के ज्येष्ठ पुत्र, कामदेव।

प्रद्योत—[सं० पु०] किरण, रश्मि, कांति, प्रभा।

प्रद्योतन—[सं० पु०] सूर्य, चमक।

प्रधान—[सं० वि०] मुख्य, प्रमुख, सभापति, अध्यक्ष, सरदार।

प्रधानता—[सं० स्त्री०] प्रधान का कार्य। प्रधान का भाव।

प्रधि—[सं० पु०] पहिये की धुरी।

प्रधी—[सं० वि०] श्रेष्ठ बुद्धिसम्पन्न।

प्रध्वंस—[सं० पु०] नाश, नष्ट-भ्रष्ट।

प्रपंच—[सं० पु०] आडंबर, जंजाल, छल, संसार।

प्रपंची—[सं० वि०] कपटी, ढोंगी। आडंबरवाला।

प्रपत्ति—[सं० स्त्री०] शरणागत होने की भावना।

प्रपन्न—[सं० वि०] आश्रित, शरणागत। प्राप्त।

प्रपा—[सं० वि०] प्याऊ। पौसला।

प्रपाठक—[सं० पु०] वेदादि या श्रौत ग्रन्थों के अध्यायों का एक भाग।

प्रपात—[सं० पु०] सहसा नीचे गिरना, झरना।

प्रपितामह—[सं० पु०] परमेश्वर, परदादा।

प्रपीड़न—[सं० पु०] अत्यन्त वेदना।

प्रपुंज—[सं० पु०] समूह।

प्रपुत्र—[सं० पु०] पोता।

प्रपौत्र—[सं० पु०] पोते का लड़का।

प्रफुल्ल—[सं० वि०] आनन्दित, प्रसन्न, विकसित।

प्रफुल्लित—[सं० वि०] खिला हुआ, विकसित।

प्रबंध—[सं० पु०] निबंध, क्रमबद्ध लेख या काव्य। व्यवस्था, आयोजन।

प्रबंधकल्पना—[सं० स्त्री०] सत्यासत्य कथा। कल्पित निबंध।

प्रबर—[सं०] अतिश्रेष्ठ।

प्रबल—[सं० वि०] घोर, प्रचंड, महान, अतिबली।

प्रबाल—[सं० पु०] मूँगा। विद्रुम।

प्रबुद्ध—[सं० वि०] पंडित, ज्ञानी, सचेत।

प्रबोध—[सं० पु०] जागरण, पूर्ण ज्ञान, चेतावनी, सान्त्वना।

प्रबोधन—[सं० पु०] जगाना, समझाना, ज्ञान देना, चेताना।

प्रबोधिता—[हि० स्त्री०] प्रियंवदा, मंजुभाषिणी, । एक वर्ण वृत्त।

प्रबोधिनी—[सं० स्त्री०] ज्ञान देने-

वाली, देवोत्थान एकादशी।

प्रभंजन—[सं० पु०] आँधी, प्रबल वायु, नष्ट-भ्रष्ट।

प्रभंजनजाया—[सं० स्त्री०] वायु-पत्नी। [हि०पु०] हनुमान, भीमसेन।

प्रभंजनसुत—[सं० पु०] भीमसेन, हनुमान जी।

प्रभद्र—[सं० पु०] नीम का पेड़।

प्रभद्रक—[सं० पु०] एक वर्ण वृत्त।

प्रभव—[सं० पु०] जन्मस्थान, सृष्टि, पराक्रम, एक संवत्सर।

प्रभा—[सं० स्त्री०] प्रकाश, सूर्य की एक पत्नी, मंदाकिनी, कुबेर की पुरी। एक द्वादशाक्षर वृत्त।

प्रभाकर—[सं० पु०] विभाकर, सूर्य, अग्नि चन्द्रमा, सागर।

प्रभाकीट—[सं० पु०] जुगनू।

प्रभात—[सं० पु०] सवेरा।

प्रभाती—[सं० स्त्री०] प्रातःवेला में गाने का गीत।

प्रभाव—[सं० पु०] सामर्थ्य, शक्ति। महिमा, महत्ता।

प्रभावती—[सं० स्त्री०] सूर्य की एक पत्नी।

प्रभास—[सं० पु०] ज्योति, कांति, दीप्ति। एक प्राचीन तीर्थ।

प्रभु—[सं० पु०] परमेश्वर, नायक, स्वामी।

प्रभुता—[सं० स्त्री०] वैभव, शासनाधिकार, महत्त्व।

प्रभुत्व—[सं० पु०] प्रभुता।

प्रभूत—[सं० वि०] उत्पन्न उन्नत, प्रचुर, उद्भूत।

प्रभूति—[सं० स्त्री०] उन्नति, प्रभाव, प्रचुरता।

प्रभृति—[सं० अव्य०] आदि, इत्यादि।

प्रभेद—[सं० पु०] अन्तर, भेद, भिन्नता।

प्रमत्त—[सं० वि०] मतवाला, पागल।

प्रमथ—[सं० पु०] मंथन करनेवाला, शिव के गण।

प्रमथन—[सं० पु०] दुःखी करना, मथना, नाश करना।

प्रमथगण—[सं० पु०] शिवजी के सेवक।

प्रमद—[सं० पु०] प्रसन्नता, मतवालापन, मस्ती।

प्रमदा—[सं० स्त्री०] युवती।

प्रमर्दन—[सं० पु०] भली भाँति मलना।

प्रमा—[सं० स्त्री०] शुद्ध ज्ञान, माप।

प्रमाण—[सं० पु०] सबूत, किसी बात को सिद्ध करनेवाला तथ्य। एक अलंकार, सत्यता का साधन। [वि०] सिद्ध, सत्य, बड़ाई।

प्रमाणकोटि—[सं० स्त्री०] उन बातों या पदार्थों का समूह जो प्रमाण हों।

प्रमाण-पत्र—[सं० पु०] सनद। किसी बात के प्रमाण का लेख-पत्र।

प्रमाणिका—[सं० स्त्री०] एक वर्ण वृत्त।

प्रमाणित—[सं० वि०] निश्चित, प्रमाणों से सिद्ध।

प्रमाता—[सं० पु०] ज्ञान कर्ता, साबित करनेवाला। [स्त्री०] दादी।

प्रमातामह—[सं० पु०] परनाना।

प्रमाथ—[सं० पु०] बलपूर्वक हरण, प्रमथन।

प्रमाथी—[सं० पु०] मथनेवाला, पछाड़ देनेवाला। देह और इन्द्रियों को दुःख पहुंचाने वाला।

प्रमाद—[सं० पु०] असावधानी, धोखा, आलस्य, योग का एक भेद।

प्रमादिक—[सं० वि०] भ्रमात्मक, भूल करनेवाला।

प्रमादी—[सं० वि०] असावधान, मदमस्त।

प्रमित—[सं० वि०] विदित, परिमित, निश्चित।

प्रमिताक्षरा—[सं० स्त्री०] द्वादशाक्षरा एक वर्णिक वृत्त।

प्रमिति—[सं० स्त्री०] सत्यबोध, ज्ञान।

प्रमीला—[सं० स्त्री०] ग्लानि, तंद्रा, शिथिलता।

प्रमुख—[सं० वि०] माननीय, प्रधान, प्रथम, श्रेष्ठ, अगुआ।

प्रमुदित—[सं० वि०] हर्षित, प्रसन्न।

प्रमुदितवदना—[सं० स्त्री०] मंदाकिनी, एक छन्द। प्रसन्नमुखी।

प्रमेय—[सं० वि०] निर्धारणीय, प्रमाण का विषय, जो प्रमाण द्वारा सिद्ध हो सके।

प्रमेह—[सं० पु०] मूत्रसम्बन्धी एक रोग।

प्रमोद—[सं० पु०] हर्ष, आनन्द।

प्रमोदा—[सं० स्त्री०] आठ सिद्धियों में से एक सिद्धि।

प्रयत्न—[सं० पु०] प्रयास, उपाय, वर्णोच्चारण क्रिया

प्रयत्नवान—[सं० पु०] उपाय करने वाला।

प्रयाग—[सं० पु०] गंगा-जमुना के संगम पर एक तीर्थ।

प्रयाण—[सं० पु०] यात्रा, गमन, आक्रमण।

प्रयास—[सं० पु०] उद्योग, प्रयत्न।

प्रयुक्त—[सं० पु०] व्यवहृत, सम्मिलित।

प्रयुत—[सं० पु०] दस लाख की संख्या।

प्रयोक्ता—[सं० पु०] ऋणदाता, प्रयोग करने वाला।

प्रयोग—[सं० त्रि०] व्यवहार, साधन,

आयोजन, क्रिया का विधान। तांत्रिक उपचार। अभिनय, विधि, निदर्शन।

प्रयोगातिशय--[सं० पु०] प्रस्तावना का एक भेद।

प्रयोगी—[सं० पु०] अनुष्ठान कर्त्ता, प्रयोजक, प्रेरक, प्रदर्शक।

प्रयोजन—[सं० पु०] आशय, अभिप्राय, उद्देश्य, उपयोगी।

प्रयोजनवतीलक्षणा--[सं० स्त्री०] प्रयोजन द्वारा वाच्यार्थ से पृथक् अर्थ सूचक लक्षणा।

प्रयोजनीय--[सं० वि०] उपयोगी, आवश्यकीय, मतलब का।

प्रयोज्य—[सं० वि०] प्रयोग करने योग्य।

प्ररोचना--[सं० स्त्री०] रुचि उत्पन्न करना, उत्तेजना।

प्ररोहण—[सं० पु०] आरोहण, चढ़ाव।

प्रलंब--[सं० वि०] टँगा हुआ, टिका हुआ।

प्रलंबन--[सं० पु०] अवलंबन, सहारा।

प्रलंबी--[सं० वि०] लटकने या सहारा लेने वाला।

प्रलपित--[सं० वि०] अंडबंड कहा हुआ, मिथ्या भाषित।

प्रलयंकर—[सं० वि०] प्रलयकारी, नाशक।

प्रलय—[सं० पु०] विश्व का तिरोभाव, लय, मिट जाना, नाश, संसार के सब पदार्थों का प्रकृति में मिल जाना।

प्रलयकर्त्ता—[सं० पु०] प्रलयंकर, नाश करने वाला।

प्रलयकारी—[सं० पु०] प्रलय करने वाला।

प्रलाप—[सं० पु०] व्यर्थ बकबकाना।

प्रलेप—[सं० पु०] लेप, पुल्टिश।

प्रलेपन--[सं० पु०] पोतने या लेप करने की क्रिया।

प्रलोभन--[सं० पु०] लालच, लोभ दिखाना।

प्रवंचना—[सं० स्त्री०] छल, धूर्त्तता।

प्रवक्ता--[सं० पु०] उपदेशक, समझ कर बोलने वाला।

प्रवचन—[सं० पु०] भली भाँति समझाकर कहना। उपदेश।

प्रवण—[सं० पु०] ढाल, उतार, चौराहा। विनीत, नत, पेट, प्रवृत्त।

प्रवत्स्यत्पतिका—[सं० स्त्री०] वह नायिका जिसका स्वामी विदेश जा रहा हो।

प्रवत्स्यत्प्रेयसी--[सं० स्त्री०] "दे० प्रवत्स्यत्पतिका"।

प्रवर--[सं० वि०] श्रेष्ठ, मुख्य, बड़ा। [पु०] संतान। श्रेष्ठ मुनि।

प्रवरललिता—[सं० स्त्री०] एक वर्णिक वृत्त।

प्रवर्त—[सं० पु०] एक प्रकार के बादल, ठानना, कार्यारंभ।

प्रवर्त्तक—[सं० पु०] आविष्कार करने वाला, संचालक, प्रवृत्त करने वाला।

प्रवर्त्तन—[सं० पु०] कार्य संचालित करना।

प्रवर्षण—[सं० पु०] एक पहाड़, वर्षा।

प्रवह—[सं० पु०] वायु के सात भेदों में से एक, भारी बहाव।

प्रवाद—[सं० पु०] जनश्रुति, अपवाद, बातचीत।

प्रवाल--[सं० पु०] मूँगा, विद्रुम।

प्रवास—[सं० पु०] विदेश में रहना।

प्रवासी—[सं० वि०] दूसरे देश में रहने वाला।

प्रवाह—[सं० पु०] जल-स्रोत, धारा, सिलसिला, बहाव।

प्रवाहित—[सं० वि०] बहता हुआ।

प्रवाही—[सं० वि०] बहने या बहाने वाला।

प्रविष्ट—[सं० वि०] घुसा हुआ।

प्रवीण—[सं० वि०] निपुण, चतुर, कुशल।

प्रवीर--[सं० वि०] योद्धा, बहादुर।

प्रवृत्त—[सं० वि०] तत्पर, उद्यत, तैयार।

प्रवृत्ति--[सं० स्त्री०] चित्त का झुकाव, रुचि, बहाव, कार्य चलाना।

प्रवृद्ध--[सं० वि०] बढ़ा हुआ, प्रौढ़, पक्का।

प्रवेश--[सं० पु०] पैठना, भीतर जाना, जानकारी।

प्रवेशिका—[सं० स्त्री०] दाखिला, वह चिह्न या पत्र जिसके द्वारा कहीं जा सके।

प्रव्रज्या—[सं० स्त्री०] संन्यास।

प्रशंसक—[सं० वि०] स्तुति करने वाला। सराहने वाला।

प्रशंसन-[सं० पु०] कीर्तन, गुणगान, सराहना।

प्रशंसनीय [सं० वि०] सराहने योग्य।

प्रशंसा--[सं० स्त्री०] गुण-गान। स्तुति। तारीफ।

प्रशंसोपमा--[सं० स्त्री०] एक अलंकार जिसमें उपमेय की अति प्रशंसा से उपमान की सराहना सूचित की जाय।

प्रशंस्य—[सं० वि०] सराहने योग्य।

प्रशमन—[सं० पु०] विनाश, शमन, ध्वंस, शान्ति।

प्रशस्त—[सं० वि०] सुन्दर, श्रेष्ठ, प्रशंसनीय।

प्रशस्तपाद--[सं० पु०] एक आचार्य,

वैशेषिक।

प्रशस्ति–[सं० स्त्री०] प्रशंसा, स्तुति।

प्रशांत—[सं० वि०] शान्त, निश्चल, एक महासागर।

प्रशाखा—[सं० स्त्री०] शाखा की शाखा।

प्रश्न–[सं० पु०] जिज्ञासा, विचारणीय बात। सवाल।

प्रश्नोत्तर—[सं० पु०] सम्वाद, एक अलंकार।

प्रश्रय—[सं० पु०] आसरा, आधार, आश्रय-स्थान।

प्रश्राव—[सं० पु०] मूत्र।

प्रश्वास—[सं० पु०] नाक से बाहर निकलने वाला वायु।

प्रश्रित—[सं० वि०] विनीत, प्रणयी, प्रेमी।

प्रश्लथ—[सं० वि०] अशक्त, शिथिल।

प्रष्टव्य—[सं० वि०] पूछने के योग्य।

प्रष्टा—[सं० पु०] प्रश्नकर्त्ता।

प्रष्ठ—[सं० वि०] श्रेष्ट, अगुआ, अग्रगामी।

प्रसंग—[सं० पु०] सम्बन्ध, विषय, प्रकरण, अवसर, स्त्री-पुरुष संयोग। विषयानुक्रम।

प्रसन्न—[सं० वि०] संतुष्ट, आनंदित।

प्रसन्नचित्त [सं०पु०] हर्षित मन।

प्रसन्नता—[सं० स्त्री०] हर्ष, आनन्द, सन्तोष।

प्रसरण—[सं० पु०] विस्तार, व्याप्ति, फैलाव।

प्रसल—[सं० पु०] हेमन्त ऋतु।

प्रसव—[सं० पु०] बच्चा पैदा करना, जन्म, प्रसूति।

प्रसविनी—[सं० स्त्री०] जन्म देने वाली, जच्चा।

प्रसाद—[सं० पु०] प्रसन्नता, अनुग्रह, दया, नैवेद्य, देवता पर चढ़ा भोजन।

प्रसाधन—[सं० पु०] संपादन, वेश रचना, निष्पादन।

प्रसाधनी –[सं० स्त्री०] कंघी।

प्रसाधिका—[सं० स्त्री०] नाइन, शृंगार करने वाली।

प्रसार—[सं० पु०] निकास, विस्तार, संचार। गमन।

प्रसारण –[सं० पु०] फैलाना।

प्रसारिणी—[सं० स्त्री०] लाजवन्ती लता, गंध प्रसारिणी।

प्रसारित –[सं० वि०] फैलाया हुआ।

प्रसारी—[सं० वि०] पंसारी, फैलाने-वाला।

प्रसित—[सं० स्त्री] पीव।

प्रसिति—[सं० स्त्री०] ज्वाला, लपट, रश्मि।

प्रसिद्ध—[सं० वि०] विख्यात, प्रतिष्ठित।

प्रसिद्धता—[सं० स्त्री०] ख्याति, कीर्ति।

प्रसिद्धि—[सं० स्त्री०] कीर्ति, प्रचार, शृंगार।

प्रसीद—[सं०] प्रसन्न हो! दया करो!

प्रसुप्त—[सं० वि०] सोया हुआ।

प्रसुप्ति—[सं० स्त्री०] निद्रा।

प्रसू—[सं० स्त्री०] जननेवाली, प्रसूता।

प्रसूत—[सं० वि०] उत्पादक, उत्पन्न, एक स्त्री रोग।

प्रसूता—[सं० स्त्री०] जच्चा, बच्चा उत्पन्न करनेवाली स्त्री।

प्रसूति—[सं० स्त्री०] दक्ष की स्त्री, उत्पत्ति, जन्म, कारण, प्रकृति।

प्रसूतिका—[सं० स्त्री०] जच्चा, प्रसूता।

प्रसून—[सं० पु०] सुमन, फल, फूल।

प्रसृति—[सं० स्त्री०] तत्पर, विस्तार, संतान, लंपट।

प्रसेक—[सं० पु०] छिड़काव, प्रमेह रोग। सींचना।

प्रसेव—[सं० पु०] बीन की तूँबी।

प्रस्कन्दन —[सं० पु०] अतीसार, विरेचन। शिव। झपट।

प्रस्कन्न–[सं०वि०] गिरा हुआ, पतित।

प्रस्खलन –[सं० पु०] पतन, पत्तों का बिछौना। गिरना।

प्रस्तर—[सं० पु०] पत्थर, बिछौना।

प्रस्तरण—[सं० पु०] फैलाव, प्रस्तार, बिछौना।

प्रस्तार—[सं० पु०] फैलाव, वृद्धि, एक प्रत्यय।

प्रस्ताव—[सं० पु०] मन्तव्य, प्राक्कथन, विषय-परिचय, प्रकरण, अवसर की बात।

प्रस्तावना [सं० स्त्री०] भूमिका, आरंभ, प्राक्कथन, उपोद्‌घात, प्रसंग-कथन।

प्रस्ताविक—[सं० वि०] समयानुसार।

प्रस्तावित—[सं० वि०] जिसके हेतु प्रस्ताव किया गया हो।

प्रस्तुत—[सं० वि०] उपस्थित, उद्यत, वर्णनवस्तु, कथित, प्रशंसित।

प्रस्तुतालंकार—[सं० पु०] एक अलंकार जिसमें एक प्रस्तुत पर कही हुई बात का अभिप्राय दूसरे प्रस्तुत पर घटित किया जाय।

प्रस्थ—[सं० पु०] पर्वत पर समतल भूमि, एक बार।

प्रस्थान—[सं० पु०] गमन, यात्रा।

प्रस्थानी—[सं० वि०] जानने वाला।

प्रस्थापक—[सं० वि०] स्थापना करने वाला, भेजने वाला।

प्रस्थापन –[सं०वि०] स्थापन, प्रस्थान, प्रेरण।

प्रस्थित—[सं० वि०] दृढ़, ठहराया या टिका हुआ।

प्रस्नुषा—[सं० स्त्री०] पोता या पौत्र

की स्त्री।
प्रस्फुट-[सं०वि०] विकसित, खिला हुआ।
प्रस्फुटित—[सं० वि०] विकसित, प्रफुल्लित, खिला हुआ।
प्रस्फुरण—[सं० पु०] प्रकाशित होना, विकसना। फूलना।
प्रस्फोट—[सं० पु०] तीव्रता से फूटना।
प्रस्रवण—[सं० पु०] प्रपात, झरना, निर्झर।
प्रस्रव—[सं० पु०] मूत्र।
प्रस्राव—[सं० पु०] पेशाव, झरना।
प्रस्वेद—[सं० पु०] पसीना।
प्रहर—[सं० पु०] दिन रात के ८ सम भागों में से एक।
प्रहरणकलिका—[सं० स्त्री०] १४ वर्णों का एक वृत्त।
प्रहरी—[सं० वि०] चौकीदार, पहरेदार।
प्रहर्ष—[सं० पु०] प्रसन्नता, आनन्द।
प्रहर्षण—[सं० पु०] आनन्द, एक पर्वत, एक अलंकार।
प्रहर्षणी—[सं० स्त्री०] एक वर्ण वृत्त।
प्रहसन—[सं० पु०] चुहल, परिहास, रूपक का एक भेद।
प्रहार—[सं० पु०] आघात, मार। चोट।
प्रहारी—[सं० वि०] आघात करनेवाला, विनाशक।
प्रहित—[सं० वि०] प्रेरित, प्रेषित, क्षिप्त।
प्रहीण—[सं० वि०] छोड़ा हुआ, परित्यक्त।
प्रहुत—[सं० पु०] भूत यज्ञ, बलि वैश्वदेव।
प्रहृष्ट—[सं० वि०] संतुष्ट, हर्षित।
प्रहेलिका—[सं० स्त्री०] पहेली, एक अलंकार।
प्रह्लाद—[सं० पु०] आनन्द, एक भक्त, हिरण्यकशिपु का पुत्र।
प्रह्व—[सं०वि०] विनीत, नम्र, आसक्त।
प्रह्लीका—[सं० स्त्री०] पहेली।
प्रांगण—[सं०पु०] सहन, चौक, आँगन।
प्रांजल—[सं० वि०] सरल, सच्चा, सीधा, समान।
प्रान्त—[सं० पु०] सूबा, प्रदेश, सीमा, अंत, दिशा किनारा।
प्रान्तर—[सं० पु०] दो प्रदेशों के मध्य की खाली जगह। वन, अंतर।
प्रांतीय—[सं० वि०] किसी प्रान्त से सम्बन्धित।
प्राकाम्य—[सं० पु०] ८ प्रकार की सिद्धियों में से एक।
प्राकार—[सं० पु०] परकोटा, प्राचीर, नगर-रक्षक।
प्राकृत—[सं० वि०] स्वाभाविक, नैसर्गिक। भौतिक। [स्त्री०] भारत की एक प्राचीन आर्य्य भाषा।
प्राकृतिक—[सं० वि०] सहज, प्रकृति सम्बन्धी, स्वाभाविक, नैसर्गिक।
प्राकृतिक भूगोल—[सं० पु०] भूगोल का वह भाग जिममें पृथ्वी की बनावट, वर्तमान स्थिति, तथा स्वाभाविक दशाओं का वर्णन हो।
प्राक्—[सं० वि०] अगला, प्रथम का।
प्राखर्य—[सं० पु०] प्रखरता, तीखापन।
प्रागल्भ्य—[सं० पु०] चातुर्य्य, साहस, प्रगल्भता, धृष्टता।
प्राग्ज्योतिष—[सं० पु०] गोहाटी, काम रूप देश।
प्रागभाव—[सं० पु०] जिसका आदि हो पर अन्त न हो। किसी विशेष समय के पूर्व न होना।
प्राघूर्णिक—[सं० पु०] अभ्यागत, अतिथि, पाहुन।
प्राङ्मुख—[सं० वि०] पूर्व दिशा की ओर मुखवाला।
प्राची—[सं० स्त्री०] पूर्व दिशा।
प्राचीन—[सं० वि०] पुराना, वृद्ध, पूर्व का।
प्राचीर—[सं० पु०] परकोटा।
प्राचुर्य—[सं०पु०] बाहुल्य, अधिकता।
प्राचेतस—[सं० पु०] वरुण का पुत्र, प्राचीन वर्हि के पुत्र, विष्णु, दक्ष। प्रचेत के वंशज।
प्राच्य—[सं० वि०] पूर्व दिशा का, पूर्वीय।
प्राच्यवृत्ति—[सं० स्त्री०] वैताली वृत्ति का भेद।
प्राजाक—[सं० पु०] सारथी।
प्राजापत्य—[सं० वि०] एक प्रकार का विवाह, प्रजापति का।
प्राज्ञ—[सं० त्रि०] चतुर, विद्वान, पंडित।
प्राड्विवाक—[सं० पु०] न्यायाधीश, वकील।
प्राण—[सं०पु०] पवन। जीव धारण करने वाला वायु, शक्ति, बल, श्वास, १० दीर्घ मात्राओं का उच्चारण काल।
प्राणघात—[सं० पु०] हत्या, मार डालना।
प्राण-जीवन—[सं० पु०] पति, प्राणाधार, अतिप्रिय।
प्राणत्याग—[सं० पु०] मर जाना।
प्राणदंड—[सं० पु०] फाँसी, मृत्यु-दंड।
प्राणद—[सं० वि०] प्राणरक्षा करने वाला, जीवन देने वाला।
प्राणदाता—[सं० वि०] जीव रक्षक, जीवन दाता।
प्राणदान—[सं० पु०] जीवन-दान, प्राण-रक्षा करना।
प्राणधन—[सं० वि०] परमप्रिय, पति, स्वामी।

प्राणधारी—[सं० वि०] प्राणयुक्त, जीवित, चेतन, जीवधारी ।

प्राणनाथ—[सं० पु०] प्रियतम, पति ।

प्राणनाथी—[सं०स्त्री०] एक संप्रदाय । स्वामी ।

प्राणनाश—[सं० पु०] मृत्यु ।

प्राणपण—[सं० पु०] जीवन पर्यंत, प्रतिज्ञा, कठोर संकल्प ।

प्राणपति—[सं० पु०] पति, प्रियतमा ।

प्राण-प्रतिष्ठा—[सं० स्त्री०] प्रतिमा में देवत्व करण ।

प्राणप्रद—[सं० वि०] स्वास्थ्य-वर्धक, जीवन-दाता ।

प्राणप्रिय—[सं० वि०] प्रियतमा ।

प्राणप्रीता—[सं० स्त्री०] प्रियतम ।

प्राणप्रेयसि—[सं०स्त्री०] प्रिया, स्त्री । पत्नी, ।

प्राणमय—[सं०वि०] जिसमें प्राण हो ।

प्राणमयकोष—[सं० पु०] शरीर के पाँच कोषों में से दूसरा जिसमें पाँचों कर्मेन्द्रियाँ और पंच प्राण सम्मिलित हैं ।

प्राणवल्लभ—[सं० पु०] परम प्रिय ।

प्राणवायु—[सं० पु०] जीवनदायिनी वायु, प्राण ।

प्राणशरीर—[सं० पु०] सूक्ष्म शरीर, मनोमय ।

प्राणसम—[सं० वि०] प्राणतुल्य ।

प्राणान्त—[सं० पु०] मृत्यु, मरण ।

प्राणान्तक—[सं० पु०] घातक, यमदूत, प्राण लेने वाला ।

प्राणाधार—[सं० वि०] परम प्रिय, स्वामी, पति ।

प्राणायाम—[सं० पु०] प्राणों का नियंत्रण करना, अष्टांग योग का चौथा योग ।

प्राणिद्यूत—[सं० पु०] वह बाजी जो तीतर, मेढ़े या अन्य जंगली जीवों के भिड़न्त पर लगाई जाय ।

प्राणी—[सं० वि०] जीव, जन्तु, मनुष्य, जीवधारी ।

प्राणेश—[सं०पु०] पति, जीवन-स्वामी, प्राणेश्वर ।

प्रातः—[सं० पु०] सवेरा, प्रभात ।

प्रातःकर्म—[सं० पु०] शौच, स्नान, संध्यादि । प्रभात कर्म ।

प्रातःकाल—[सं० पु०] सवेरा ।

प्रातःकृत्य—[सं० पु०] स्नान, संध्यादि प्रातःकर्म ।

प्रातःक्रिया—[सं० स्त्री०] प्रातःकर्म ।

प्रातःनाथ—[सं० पु०] सूर्य ।

प्रातःसंध्या—[सं० स्त्री०] सुबह की उपासना, ब्रह्मध्यान ।

प्रातःस्मरण—[सं० स्त्री०] सबेरे ही याद करना ब्रह्म-ध्यान ।

प्रातःस्मरणीय—[सं० वि०]पूज्य, श्रेष्ठ, प्रातःकाल याद करने योग्य ।

प्रातराश—[सं० पु०]कलेवा, जल-पान ।

प्रातिकूल्य—[सं०पु०] विपक्षता, शत्रुता ।

प्रातिपदिक—[सं०पु०] अग्नि । धातु, प्रत्यय और प्रत्ययान्त को छोड़कर अर्थ-वान शब्द ।

प्राथमिक—[सं० वि०] प्रारंभिक, पूर्वका, पहलेका ।

प्रादुर्भाव—[सं० पु०] आविर्भाव, उत्पत्ति, प्रकट होना ।

प्रादुर्भूत—[सं० वि०] उत्पन्न, जिसका प्रादुर्भाव हुआ हो । आविर्भूत, प्रकट ।

प्रादुर्भूतमनोभवा—[सं० स्त्री०] चार प्रकार की मध्या नायिकाओं में से एक ।

प्रादेश—[सं० पु०] बालिश्त ।

प्रादेशिक—[सं० वि०] प्रदेश संबन्धी । प्रान्त का ।

प्राधा—[सं० स्त्री०] कश्यप की पत्नी, गंधर्वों और अप्सराओं की माता ।

प्राधान्य—[सं० पु०] श्रेष्ठता, मुख्यता, प्रधानता ।

प्रापण—[सं० पु०] मिलना, प्रेरणा, प्राप्ति ।

प्राप्त—[सं० वि०] समुपस्थित ।

प्राप्तकाल—[सं०पु०] मरने योग्य समय ।

प्राप्तव्य—[सं० वि०] प्राप्य ।

प्राप्ति—[सं० स्त्री०] मिलना, उपलब्धि; ८ सिद्धियों में एक सिद्धि । आय, लाभ ।

प्राप्तसम—[सं० पु०] हेतु और साध्य की प्राप्यवस्था में उनके अवशिष्ट बताने की आपत्ति ।

प्राप्य—[सं० वि०] मिलने के योग्य, प्राप्तव्य, प्राप्त करने योग्य ।

प्राबल्य—[सं० पु०] प्रबलता ।

प्रामाणिक—[सं० वि०] माननीय, प्रमाण द्वारा सिद्ध होनेवाली बात, प्रमाण पुष्ट ।

प्रामाण्य—[सं० पु०] मान-मर्यादा, प्रमाणता ।

प्राय—[सं० पु०] लगभग, समान, तुल्य ।

प्रायः—[सं० वि०] बहुधा, विशेष करके, लगभग ।

प्रायद्वीप—[हि० पु०] वह भू-भाग जो तीन ओर जल से घिरा हो ।

प्रायशः—[सं० क्रि० वि०] प्रायः, बहुधा ।

प्रायश्चित्त—[सं० पु०] पाप को मिटाने के लिये शास्त्रानुकूल कर्म ।

प्रायश्चित्तिक—[सं० वि०] प्रायश्चित्त के योग्य ।

प्रायश्चित्ती—[सं० वि०] प्रायश्चित्त करनेवाला ।

प्रारंभ—[सं० पु०] आदि ।

प्रारंभिक—[सं० वि०] आदिम, प्रारंभ का, प्राथमिक ।

प्रारब्ध—[सं० वि०] प्रारंभ किया हुआ, भाग्य, पूर्वकृतकर्म । वह कर्म जिसका फल-भोग हो चला हो ।

प्रार्थना—[सं० स्त्री०] विनती, विनय, निवेदन।

प्रार्थनापत्र—[सं० वि०] विनय-पत्र।

प्रार्थनासमाज—[सं०पु०] ब्रह्मसमाज के समान एक नया संप्रदाय।

प्रार्थित—[सं वि०] याचन किया हुआ, माँगा हुआ।

प्रार्थनीय—[सं० वि०] प्रार्थना करने योग्य।

प्रार्थी—[सं० वि०] निवेदन या विनय करनेवाला।

प्रालेय— [सं० पु०] हिम, तुषार।

प्रावृट्—[सं० पु०] वर्षाऋतु, बरसात।

प्राशन—[सं० पु०] भोजन, चखना, खाना।

प्राशी—[सं० वि०] भोजन करनेवाला।

प्रासंगिक—[सं० वि०] प्रसंग संबंधी, प्रसंग से प्राप्त।

प्रासाद—[सं० पु०] महल, राज-भवन, विशाल भवन।

प्रियंगु—[सं० स्त्री०] अनाज, मालकँगुनी।

प्रियंवद—[सं० वि०] प्रिय वचन कहनेवाला। प्रियभाषी।

प्रिय—[सं० पु०] प्यारा। मनोरम। स्वामी। पति

प्रियतम—[सं० वि०] अतिप्यार। पति।

प्रियदर्शन—[सं० वि०] मनोहर। सुंदर।

प्रियदर्शी—[सं० वि०] सब से प्रेम करनेवाला। सबको प्रिय देखनेवाला।

प्रियभाषी—[सं० वि०] मधुर वचन बोलनेवाला।

प्रियवर—[सं० वि०] अतिप्यारा।

प्रियवादी—[सं० पु०] मधुरभाषी।

प्रिया—[सं० स्त्री०] प्रेमिका। पत्नी। स्त्री। एक वृत्त। १६ मात्राओं का एक छन्द।

प्रीत—[सं० वि०] प्रेम। प्यार।

प्रीति—[सं० स्त्री०] स्नेह। हर्ष। प्रेम। तृप्ति।

प्रीतिकारक—[सं० वि०] प्रेम उत्पन्न करनेवाला। प्रसन्नता करनेवाला।

प्रीतिपात्र—[सं० पु०] प्रीति-भाजन। प्रेम करने योग्य।

प्रीतिभोज—[सं० पु०] प्रिय मित्रों और बन्धुओं का सप्रेम सम्मिलित भोजन।

प्रीत्यर्थ—[सं० अव्य०] प्रसन्नता के लिये। प्रीति के लिये।

प्रुम—[सं० पु०] समुद्र की गहराई नापने का एक यंत्र।

प्रेखण—[सं० पु०] भली प्रकार झूलना। रूपक के १८ भेदों में से एक।

प्रेक्षक—[सं०पु०] दर्शक। देखनेवाला।

प्रेक्षण—[सं० पु०] नेत्र। आँख। देखना।

प्रेक्षा—[सं० स्त्री०] नाच-तमाशा। देखना। ज्ञान दृष्टि।

प्रेक्षागार—[सं० पु०] रंगशाला। राज-मंत्रणागृह।

प्रेत—[सं० पु०] मरने के बाद प्राप्त कल्पित शरीर। एक देवयोनि। मृतक मनुष्य।

प्रेतकर्म—[सं० पु०] प्रेत कार्य।

प्रेतगृह—[सं० पु०] मरघट,श्मशान।

प्रेतत्व—[सं० पु०] प्रेत का भाव या धर्म।

प्रेतदाह—[सं० पु०] मृतक के जलाने का संस्कार।

प्रेतदेह—[सं० पु०] मरण से नये गर्भ में जाने तक के समय का कल्पित शरीर।

प्रेतयज्ञ—[सं० पु०] प्रेतयोनि को प्राप्त करनेवाला यज्ञ।

प्रेतलोक— [सं० पु०] यम लोक।

प्रेता—[सं० पु०] पिशाची, भूतनी, कात्यायिनी देवी।

प्रेत-विधि—[सं० पु०] मृतक-संस्कार।

प्रेतराज—[सं० पु०] यमराज।

प्रेताशिनी—[सं० स्त्री०] देवी, भगवती।

प्रेताशौच—[सं० पु०] सूतक, किसी के मरने पर लगी अशुद्धता।

प्रेतोन्माद—[सं० पु०] एक प्रकार का उन्माद।

प्रेम—[सं० पु०] अनुरक्ति, प्रीति, प्यार, एक अलंकार।

प्रेमगर्विता—[सं० स्त्री०] पति से प्रेम रखने वाली नायिका का घमंड।

प्रेमपात्र—[सं० पु०] स्नेहभाजन, जिससे प्रेम किया जाय।

प्रेमभक्ति—[सं० स्त्री०] श्रद्धा, स्नेह।

प्रेमवारि—[सं० पु०] प्रेमाश्रु, नेह नीर।

प्रेमा—[सं० पु०] स्नेह, वायु, इंद्र, उपजाति वृत्ति का ११ वाँ भेद।

प्रेमाक्षेप—[सं० पु०] आक्षेपालंकार का वह भेद जिसमें प्रेम के वर्णन में बाधा सी सूचित हो।

प्रेमालाप—[सं० पु०] प्रेम वार्ता।

प्रेमालिंगन—[सं० पु०] स्नेह से गले लगा कर मिलना। परिरंभण।

प्रेमाश्रु—[सं० पु०] प्रेमवारि।

प्रेमास्पद—[सं०वि०] स्नेह भाजन, प्रेमी, प्रिय।

प्रेमिक—[सं० पु०] स्नेही, प्रेमी, [स्त्री०] प्रेमिका।

प्रेमी—[सं० पु०] स्नेही, प्रियजन, मित्र।

प्रेय—[सं०] एक अलंकार।

प्रेयसी—[सं० स्त्री०] प्रेमिका।

प्रेरक—[सं० पु०] प्रेरणा करने वाला।

प्रेरण—[सं० पु०] आज्ञा देना ।
प्रेरणा—[सं० स्त्री०] कार्य में प्रवृत्त करने के लिये उत्तेजित करना ।
प्रेरणार्थक क्रिया—[सं० स्त्री०] क्रिया का वह रूप जो यह सूचित करे कि कर्त्ता किसी की प्रेरणा से कार्य करता है ।
प्रेरयिता—[सं० पु०] प्रेरणा करने वाला । भेजने वाला ।
प्रेरित—[सं० वि०] भेजा हुआ, प्रवृत्त किया हुआ ।
प्रेषक—[सं० पु०] भेजने वाला ।
प्रेषण—[सं० पु०] भेजना, प्रेरणा देना ।
प्रेषित—[सं० वि०] भेजा हुआ ।
प्रेष्ट—[सं० वि०] प्रिय, प्रेयणीय ।
प्रेष्य—[सं० वि०] सेवक, भृत्य, भेजने योग्य ।
प्रैष—[सं० पु०] उन्माद, दुःख, मर्दन, भेजना ।
प्रैष्य—[सं० पु०] दास ।
प्रोक्त—[सं० वि०] कहा हुआ । कथित ।
प्रोक्षण—[सं० पु०] पानी का छींटा, पोंछना ।
प्रोत—[सं० वि०] छिपा, कि, उलझा हुआ ।
प्रोत्साह—[सं० पु०] अति उमंग, अत्यन्त, उत्साह ।
प्रोत्साहन—[सं० पु०] अत्यन्त उत्साह बढ़ाना । बढ़ावा देना ।
प्रोत्साहित—[सं० वि०] जिसका उत्साह बढ़ाया गया हो ।
प्रोषित—[सं० वि०] प्रवासी, विदेशी ।
प्रोषितनायक—[सं० पु०] वह नायक जो परदेश में प्रियतमा की याद में व्याकुल हो ।
प्रोषितपतिका—[सं० स्त्री०] परदेशी प्रियतम की याद में दुखी नायिका ।
प्रोषितभर्तृका—[सं० स्त्री०] दे० "प्रोषितपतिका" ।
प्रोषितभार्य—[सं० पु०] वह पुरुष जो अपनी स्त्री के परदेश में होने से दुखी हो ।
प्रौढ़—[सं० वि०] अधेड़, उतरती युवावस्था वाला, गंभीर, चतुर ।
प्रौढ़ता—[सं० स्त्री०] अधेड़पन, युवावस्था का उतार ।
प्रौढ़ा—[सं० स्त्री०] ३० वर्ष से ५० वर्ष तक की आयुवाली नायिका जो कामकलादि में चतुर हो ।
प्रौढ़अधीरा—[सं० स्त्री०] पति वियोग से अधीर प्रौढ़ा नायिका ।
प्रौढ़धीरा—[सं० स्त्री०] व्यंग्य से निज क्रोध प्रगट करने वाली प्रिय-वियोग में धीर रहने वाली प्रौढ़ा नायिका ।
प्रौढ़ोक्ति—[सं० स्त्री०] एक अलंकार जिसमें किसी के उत्कर्ष का अहेतु ही हेतु रूप में कहा जाय ।
प्लक्ष—[सं० पु०] सात कल्पित द्वीपों में से एक, पीपल ।
प्लवंग—[सं० पु०] मृग, बन्दर, हरिन, पाकर वृक्ष ।
प्लवंगम—[सं० पु०] एक मात्रिक छन्द ।
प्लवन—[सं० पु०] उछलना, कूदना ।
प्लावन—[सं० पु०] बाढ़, तैरना, धोना ।
प्लावित—[सं० वि०] जल-मग्न, पानी में डूबा हुआ ।
प्लीहा—[सं० स्त्री०] तिल्ली ।
प्लुत—[सं० पु०] वक्रगति, उछाल ।
प्लुति—[सं० स्त्री०] उछलना ।
प्लुष्ट—[सं० वि०] दग्ध, जला हुआ ।
प्लोत—[सं० वि०] मुँह से गिरा पित्त ।
प्लोष—[सं० पु०] जलन, दाह ।

—:o:—

फ

फंकी—[हि० स्त्री०] भाग, किसी वस्तु का उतना भाग जो एक बार में फाँका जा सके ।
फंद—[हि० पु०] बन्धन, रहस्य, कपट, दुख, फन्दा ।
फक—[हि० वि०] स्वच्छ, सफेद, स्फटिक ।
फकीर—[पु०] योगी, साधु, त्यागी, निर्धन, भिक्षुक ।
फक्कड़—[हि० वि०] निर्धन और मस्त ।
फक्किका—[सं० स्त्री०] अयोग्य व्यवहार, छल, गूढ़ प्रश्न ।
फगुआ—[हि० पु०] होली का आमोद-प्रमोद, फाग, होली के रंगीले गीत ।
फगुनाहट—[हि० स्त्री०] फागुन की तीखी वायु ।

फटिक—[हि० पु०] संगमरमर, स्फटिक, बिलौर।

फड़—[हि० पु०] जुए का अड्डा, जुए का दाँव जिस पर बाजी लगाई जाती है।

फड़नवीस—[हि० पु०] मरहठों के राज्य-काल में एक राज-पद।

फड़बाज—[हि० पु०] जुआरी, जुआ खेलाने की व्यवस्था करने वाला।

फण—[सं० पु०] सांप का फन, रस्सी का फन्दा।

फणधर—[सं० पु०] नाग, साँप।

फणिपति—[सं पु०] बड़ा साँप, वासुकी, शेषनाग।

फणिमुक्ता—[सं० स्त्री०] साँप की मणि।

फणीन्द्र—[सं० पु०] शेषनाग, वासुकी, सर्प।

फणी—[सं० पु०] नागफनी नामक वृक्ष, नाग, साँप।

फन—[हि० पु०] फण, साँप का फैला हुआ सिर।

फबती—[हि० स्त्री०] व्यंग्य, चुटकी।

फबन—[हि० स्त्री०] छबि, शोभा, सुन्दरता।

फबीला—[हि० वि०] शोभायमान, सुन्दर।

फरहद—[हि० पु०] एक वृक्ष जिसकी छाल और फूलों से रंग बनता है।

फल—[सं० पु०] परिणाम, फूलों के बाद उत्पन्न गूदेदार वृक्षों का बीज-कोश।

फलक—[सं० पु०] पृष्ठ, पटल, चादर, हथेली, वरक। छाला, फफोला।

फलजनक—[सं० पु०] फल देने वाला।

फलतः—[सं० अव्य०] इसलिये, परिणाम स्वरूप।

फलप्रद—[सं० वि०] फलद, फल देने वाला।

फलदान—[सं० पु०] विवाह की एक रीति, तिलक।

फलमूल—[सं० पु०] फल और जड़।

फलयोग—[सं० पु०] नाटक में नायक के उद्देश्य की सिद्धि या प्रयत्न के फल की प्राप्ति का स्थान।

फललक्षणा—[सं० स्त्री०] काव्य में एक लक्षणा।

फलवान—[सं० वि०] सार्थक, सफल, फलयुक्त।

फलहरी—[सं० स्त्री०] बनमेवा।

फलांश—[सं० पु०] तात्पर्य, सारांश, निष्कर्ष।

फलागम—[सं० पु०] नाट्यशास्त्र के अनुसार नायक के उद्देश्य की जहाँ सिद्धि हो। शरद् ऋतु। फल लगाने की ऋतु।

फलादेश—[सं० पु०] जन्म-पत्र के अनुसार ग्रहों का फल कहना।

फलाफल—[सं० पु०] हिताहित।

फलार्थी—[सं० पु०] फल की कामना रखनेवाला।

फलाशन—[सं० पु०] फलाहारी।

फलाहरी—[सं० पु०] केवल फलों का भोजन करनेवाला।

फलित—[सं० वि०] ज्योतिष का एक भाग। परिणाम को प्राप्त।

फलितार्थ—[सं० वि०] सिद्ध अर्थ, तात्पर्यार्थ। सिद्धान्त।

फलीभूत—[सं० पु०] फलदायक, जिसका कुछ परिणाम हो।

फलेंदा—[हि० पु०] उत्तम जामुन।

फलोत्तमा—[सं० स्त्री०] मुनक्का, द्राक्षा, दाख।

फलोदय—[सं० पु०] आनन्द, लाभ, मनोरथ की सिद्धि।

फल्गु—[सं० वि०] तुच्छ, क्षुद्र।

फाग—[हि० पु०] होली का उत्सव, होली के गीत।

फाट—[हि० पु०] चौड़ाई। भाग।

फाटका—[हि० पु०] वस्तु के भाव के अनुमान पर एक प्रकार का जुआ।

फारस—[हि० पु०] ईरान, परशिया। एक मुस्लिम देश।

फाल—[सं० स्त्री०] हल के नीचे लगी लोहे की नुकीली छड़। छालियाँ।

फालूदा—[पु०] गेंहू के सत से बनी एक प्रकार की ठंडाई।

फाल्गुन—[सं० पु०] अर्जुन का एक नाम, माघ के बाद का चान्द्रमास।

फाल्गुनी—[सं० स्त्री०] पूर्वा या उत्तरा फाल्गुनी नाम के नक्षत्र।

फिरंगी—[हि० वि०] गोरा, फिरंग देश का वासी।

फुत्कार—[हि० वि०] तिरस्कार, दुत्कार।

फुल्ल—[सं० वि०] विकसित, खिला हुआ।

फुल्लदाम—[सं० स्त्री०] १९ वर्णों की एक वृत्ति।

फेण—[सं० पु०] फेन, झाग।

—:०:—

ब

बंक—[सं० वि०] तिरछा, पुरुषार्थी, दुर्गम ।

बंकट—[हि० वि०] तिरछा ।

बंकराज—[सं० पु०] एक तरह का साँप ।

बंचक—[हि० पु०] धूर्त, पाखंडी ।

बंचना—[हि० स्त्री०] छल, ठगी, पाखंड ।

बंजुल—[सं० पु०] गुच्छा, स्तवक ।

बंझा—[हि० वि०] बाँझ, वंध्या ।

बंदना—[सं० स्त्री०] प्रणाम, स्तुति ।

बंदरगाह—[पु०] समुद्र के तट पर जहाजों का अड्डा ।

बंदवान—[सं० पु०] जेलर, बंदीगृह का रक्षक ।

बंदी—[सं० पु०] भाट, यशोगान करनेवाली एक जाति ।

बंदीजन—[सं० पु०] चारण, भाट ।

बंध—[सं० पु०] गाँठ, बंधन, निबंध रचना, योग का आसन, रति के आसन ।

बंधक—[सं० पु०] गिरवी, रेहन, बंध, गिरवी या रति का आसन ।

बंधन—[सं० पु०] कारागार, प्रतिबंध, स्वतंत्रता का बाधक ।

बंधान—[हि० पु०] विधान, आयोजन, पानी को रोकने का बाँध, लेने-देने की परिपाटी ।

बंधी—[हि० पु०] बँधा हुआ ।

बंधु—[सं० पु०] भ्राता, सहायक, भाई । मित्र । एक वर्णवृत्त ।

बंधुक—[सं० पु०] दुपहरिया का फूल ।

बंधुता—[सं० स्त्री०] बंधुत्व, भाईचारा ।

बंधुत्व—[सं० पु०] बंधु का भाव ।

बंधुर—[सं० पु०] हंस, बगुला, बहिरा मनुष्य, मुकुट । एक फूल ।

बंधूक—[हि० पु०] बंधु, दुपहरिया का फूल, दोधक छन्द ।

बंधेज—[हि० पु०] रुकावट, प्रतिबंध, नियम ।

बंध्या—[सं० वि०] सन्तान उत्पन्न न कर सकनेवाली स्त्री, बाँझ ।

बंध्यापन—[हि० पु०] बंध्या रोग, बाँझपन ।

बंध्यापुत्र—[सं० पु०] असंभव बात ।

बंस—[हि० पु०] बाँस, वंस, कुल ।

बंसकार—[हि० पु०] बाँसुरी ।

बंसलोचन—[हि० पु०] बांस का सार भाग । वंस कपूर ।

बंसी—[हि० स्त्री०] मुरली । बंशी । मछली फसाने का एक यंत्र ।

बँहगी—[हि० स्त्री०] बोझा ढोने के लिये बास की खपाच के दोनों सिरों पर लटके हुए दो छींके ।

बक—[हि० पु०] कुबेर । बगुला । अगस्त्य का एक वृक्ष ।

बकध्यान—[सं० पु०] बनावटी साधुपन । पाखंड ।

बकमौन—[सं० पु०] अपना उद्देश्य साधनेवाला ।

बकला—[हि० पु०] पेड़ की छाल । फल का छिलका ।

बकायन—[हि० स्त्री०] नीम जैसा एक पेड़ ।

बकार—[सं० पु०] ब वर्ण ।

बकावर—[सं० पु०] बकावली । बकाउर । एक पौधा जिसके फूल अति सुगंधित होते हैं ।

बकावली—[सं० स्त्री०] एक पौधा जिसका फूल सफेद और सुगंधित होता है ।

बकासुर—[सं० पु०] श्रीकृष्ण द्वारा नष्ट किया गया एक दैत्य ।

बकुल—[सं० पु०] मौलसिरी ।

बक्षोज—[सं० पु०] स्तन । उरोज ।

बखान—[सं० पु०] वर्णन । प्रशंसा । स्तुति । कीर्तन । कथन ।

बगला—[हि० पु०] बकला । बगुला । लम्बी चोंच, टाँग और गर्दनवाला एक श्वेत जल-पक्षी ।

बगलामुखी—[हि० स्त्री०] एक देवी ।

बगहंस—[हि० पु०] एक हंस ।

बगार—[हि० पु०] वह स्थान जहां गायें बाधी या चराई जाती है ।

बगुर—[हि० पु०] फाँसी । जाल ।

बघम्बर—[हि० पु०] शेर या बाघ का चमड़ा । बाघम्बर ।

बघेला—[हि० पु] राजपूतों की एक जाति । बाघ का बच्चा ।

बचन—[हि० पु०] वाणी । बात ।

बजंत्री—[हि० पु०] बाजा बजानेवाला ।

बजरंगबली—[सं० पु०] हनुमानजी । महावीरजी ।

बजरबटटू—[हि० पु०] एक वृक्ष का बीज जिसे दृष्टि दोष से बचाने के लिए बच्चों को पहनाते है ।

बजाक-[हि० पु०] एक प्रकार का साँप ।

बजूखा—[हि० पु०] बिजूखा । खेत के रक्षार्थ जानवरों को डराने के लिये खेत में खड़ा किया गया हाँडी का पुतला ।

बट—[हि० पु०] बरगद का पेड़ । रस्सी की ऐंठन

बटोही—[हि० पु०] पथिक । यात्री ।

बट्टा—[हि० पु०] किसी वस्तु या सिक्के के असली मूल में कमी । दलाली ।

बड़भागी—[हि० वि०] भाग्यवान् ।

बड़वाग्नि—[सं० पु०] समुद्र के भीतर की आग ।

बड़वानल—[सं० पु०] समुद्र की आग।
वणिक्—[सं० पु०] व्यापारी। सौदागर। विक्रेता।
बणिज्—[सं० पु०] व्यापारी, व्यापार।
बतरस—[हि० पु०] बातें करने का आनन्द।
बद—[हि० स्त्री०] एक बुरा रोग।
बदर—[सं० पु०] बेर का पेड़ या फल।
बदरि-[सं० पु०] बेर का पेड़ या फल।
बदरिकाश्रम—[सं० पु०] बदरीनाथ का एक प्रसिद्ध मन्दिर। एक तीर्थ।
बदरीनाथ—[सं० पु०] बदरीनारायण।
बदरीनारायण—[सं०पु०] बदरीनाथ, एक तीर्थ।
बद्ध—[सं० वि०] बधा हुआ। निर्धारित। सीमित।
बद्धकोष्ट—[सं० पु०] कब्ज। अजीर्ण।
बद्धपरिकर—[सं० वि०] कटिबद्ध। तैयार।
बद्धपद्मासन—[सं० पु०] पद्मासन से बैठना।
बद्धांजलि—[सं० स्त्री०] दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम की मुद्रा।
बध—[सं०] हत्या। हनन।
बधस्थान—[सं० पु०] जीवों की हत्या करने की जगह।
बधाई—[हि० स्त्री०] शुभ अवसरों पर आनन्द व प्रसन्नता सूचक वचन।
बाधक—[सं० पु०] हत्यारा। व्याधा। बहेलिया।
बधिया—[हि० पु०] अंडकोषहीन साँड़ आदि।
बधिर—[सं० पु०] बहरा। जिसकी श्रवण-शक्ति क्षीण हो गई हो।
बधू [सं० स्त्री०] स्त्री। भार्या। पुत्र बधू।
बधूटी—[हि० स्त्री०] नयी बहू। सुहागिन स्त्री। पतोहू।
बध्य—[सं० वि०] बध के योग्य।
बन—[हि० पु०] कानन। जंगल। पानी।
बनकर—[हि० पु०] जंगली उपज।
बनखंड—[हि० पु०] जंगली प्रदेश।
बनज—[हि० पु०] जल या बन में उत्पन्न होने वाले पदार्थ, कमल, मोती।
बनजर—[हि० पु०] ऊसर भूमि।
बनफल—[हि० पु०] जंगली फल।
बनवाहन—[हि० पु०] नाव।
बनवाहक—[सं० पु०] मेघ, कहार।
बनबिलाव—[हि० पु०] जंगली बिल्ली।
बनरखा—[हि० पु०] बहेलियों की एक जाति।
बनरपकड़—[हि० पु०] निंदित हठ, दुराग्रह।
बनराजी—[हि० स्त्री०] वन का समूह।
बनवारी—[हि० पु०] श्रीकृष्ण।
बन्ना—[हि० पु०] बर, दुलहा।
बनात—[हि० स्त्री०] एक उत्तम ऊनी कपड़ा।
बनाफर—[हि० पु०] क्षत्रियों की एक जाति, बन्यफल।
बनायुज—[हि० पु०] ईरान या अरब देश में उत्पन्न होने वाला घोड़ा।
बनार—[हि० पु०] बनारस की उत्तरी सीमा पर एक राज्य।
बनासपती—[हि० स्त्री०] कंदमूल, जड़ी-बूटी, साग-पात।
बनिज—[हि० पु०] व्यापार, सौदा।
बनिजारिन—[हि० स्त्री०] व्यापारी या बनिजारे की स्त्री।
बनिहार—[हि० पु०] कृषिकार।
बनी—[हि० स्त्री०] बनस्थली, बाटिका। दुलहिन, नायिका।
बनैला—[हि० वि०] वन संबन्धी, जंगली। वन्य।
बपतिस्मा—[हि० पु०] इसाई बनाने का संस्कार।
बफारा—[हि० पु०] औषधि युक्त जल की भाप से किसी रोगी के अंग की सेंकाई करना।
बबेसी—[हि० स्त्री०] बवासीर रोग, अर्श रोग।
बया—[हि० पु०] गोरैया जैसा एक पक्षी।
बयाला—[हि० पु०] झरोखा, आला।
बरकाज—[हि० पु०] श्रेष्ठ कार्य, विवाह।
बरगद—[हि० पु०] वट वृक्ष।
बरगदाही—[हि० स्त्री०] वट-पूजन की अमावस्या।
बरछा—[हि० पु०] भाला।
बरसात—[हि० स्त्री०] वर्षा ऋतु।
बराक—[हि० पु०] युद्ध, शिव, [वि०] अधम, नीच।
बराट—[हि० स्त्री०] कौड़ी।
बरात—[हि० स्त्री०] वर के साथ कन्या के द्वार पर जाने वाला दल।
बरायन—[हि० पु०] लोहे का छल्ला जो विवाह काल में बर को पहनाया जाता है।
बरुआ—[हि० पु०] ब्रह्मचारी, उपनयन, वट।
बरुनी—[हि० स्त्री०] पलकों की अलकें।
बरूथी—[हि० स्त्री०] छोटी सेना, गोमती के मध्य की एक छोटी नदी।
बरेठा—[हि० पु०] रजक, धोबी।
बरेरा—[हि० स्त्री०] पान का खेत।
बरै—[हि० पु०] तमोली।
बरोक—[हि० पु०] विवाह की पुष्टि के लिए कन्या पक्ष द्वारा वर-पक्ष को दिया गया दान।

बरौठा—[हि० पु०] बैठक, दालान, धोबी।

बर्जे—[हि० वि०] श्रेष्ठ।

बर्जना—[हि० क्रि०] रोकना।

बर्बर—[सं० पु०] असभ्य पुरुष, वर्णाश्रम-रहित, अस्त्रों की झनकार। [वि०] उद्दंड, असभ्य।

बर्बरी—[सं० स्त्री०] ईंगुर, पीला चन्दन, बन-तुलसी।

बल—[सं० पु०] सामर्थ्य, शक्ति, सहारा, आश्रय। सेना।

बलकारक—[सं० वि०] पुष्टकारक, बलबर्द्धक।

बलदाऊ—[हि० पु०] बलराम। बलदेव।

बलभद्र—[सं० पु०] बलराम जी।

बलभी—[हि० स्त्री०] घर में सबसे ऊपर वाला कोठा।

बलमीकि—[सं पु०] बाँबी।

बलराम—[सं० पु०] बलदेव जी।

बलवंत—[सं० वि०] बली।

बलवान्—[सं० त्रि०] बली, सामर्थ्य वान्।

बलशील—[सं० वि०] शक्तिशाली। बलवान।

बलहीन—[सं० वि०] निर्बल।

बला—[सं० स्त्री०] एक प्रकार की विद्या, पृथ्वी, लक्ष्मी।

बलाक—[सं० पु०] बगुला, बक।

बलाका—[सं० स्त्री०] बगुलों का समूह।

बलाग्र—[सं० पु०] सेना का अगला भाग।

बलाढ्य—[सं० वि०] बलवान।

बलात्—[सं० क्रि० वि०] बलपूर्वक, हठात्।

बलात्कार—[सं० पु०] इच्छा के विरुद्ध बलपूर्वक संभोग करना।

बलाध्यक्ष—[सं० पु०] सेनापति।

बलाहक—[सं० पु०] एक तरह का बगुला, मेघ, एक दैत्य, एक नाम।

बलि—[सं० पु०] उपहार, भेंट, पूजा का सामान। चढ़ावा, भूत यज्ञ।

बलिदान—[सं० पु०] उत्सर्ग, नैवेद्य आदि द्वारा देवता को प्रसन्न करना। देवता के पूजार्थ पशु-बध।

बलिपशु—[सं० पु०] देव-पूजा के लिये बलिदान होने वाला पशु।

बलिपुष्ट—[सं० पु०] काग, कौआ।

बलिप्रदान—[सं० पु०] बलिदान।

बलिरसा—[सं० स्त्री०] गंधक।

बलिवर्द—[सं० पु०] बैल, साँड़।

बलिवेदी—[सं० स्त्री०] बलि के लिये एक निश्चित स्थान।

बलिवैश्वदेव—[सं० पु०] गृहस्थ के पंच महायज्ञों में से वह यज्ञ जिसमें भोजन का प्रत्येक ग्रास पृथक् रखा जाता है।

बलिष्ठ—[सं० वि०] बहुत शक्तिशाली।

बलिसंज—[सं० पु०] अंकुश, वानरों का समूह, चाबुक।

बलिहारी—[हि० स्त्री०] आत्मोत्सर्ग, प्रेम, भक्ति न्योछावर।

बली—[सं० वि०] बलवान्, शक्तिशाली।

बलीयान्—[सं० वि०] बलवान्।

बलुवा—[हि० वि०] बालूदार, रेतीला।

बलूची—[हि० पु०] बलूचिस्तान का निवासी।

बलैया—[हि० स्त्री०] आत्मोत्सर्ग, बला, रोग।

बल्लभ—[सं० पु०] स्वामी, पति, प्रिय।

बल्लभी—[सं० स्त्री०] गोपी, प्यारी, प्रिया।

बल्लरी—[सं० स्त्री०] लता, बल्ली।

बल्ली—[सं० स्त्री०] लता।

बवंडर—[हि० पु०] चक्र-सी घूमती आँधी। चक्रवात।

बसंती—[हि० वि०] पीले रंग का। बसंत ऋतु सम्बन्धी।

बसंदर—[हि० पु०] आग।

बसन—[सं० पु०] वस्त्र, कपड़ा।

बसनी—[हि० स्त्री०] कमर में लपेटने की रुपयों की थैली।

बसीकर—[हि० वि०] आधीन या वश में करनेवाला।

बसीठ—[हि० पु०] धावन, दूत, संदेश वाहक।

बस्ती—[हि० स्त्री०] निवास, आबादी।

बहिरंग—[सं० त्रि०] बाहरवाला, बाहिरी, बाह्य।

बहिर्गत—[सं० वि०] बाहर निकला हुआ।

बहिर्भूमि—[सं० स्त्री०] बस्ती से बाहर की पृथ्वी।

बहिर्मुख—[सं० वि०] प्रतिकूल, विमुख, विरुद्ध।

बहिर्लापिका—[सं० स्त्री०] एक प्रकार की पहेली जिसका उत्तर बाहरी शब्दों से प्राप्त होता है।

बहिष्कार—[सं० पु०] निकालना, हटाना।

बहु—[सं० त्रि०] बहुत, अधिक, अनेक।

बहुज्ञ—[सं० वि०] बड़ा जानकार।

बहुता—[सं० स्त्री०] अधिकता, अधिक।

बहुतिथि—[सं० त्रि०] बहुत समय। बहुत बार।

बहुत्व—[सं० पु०] अधिकता।

बहुदर्शिता—[सं० स्त्री०] बहुज्ञता।

बहुदर्शी—[सं० पु०] अनुभवी।

बहुधा—[सं० क्रि० वि०] प्रायः, अनेक प्रकार से।

बहुनैन—[हि० पु०] सहस्राक्ष, इन्द्र।

बहुबाहु—[सं० पु०] रावण।

बहुमत—[सं० पु०] अधिक लोगों की एक राय। भिन्न-भिन्न राय।

बहुमूत्र—[सं० पु०] मूत्र सम्बन्धी एक रोग।

बहुमूल्य—[सं० वि०] अधिक कीमत का, अधिक मूल्यवान्।

बहुरंगा—[हि० वि०] बहुरूपिया, चित्र-विचित्र, मनमौजी।

बहुरिया—[हि० स्त्री०] दुलहिन, वधू।

बहुरी—[हि० स्त्री०] चबैना, भूना हुआ अनाज।

बहुरूपिया—[हि० पु०] अनेक रूप बनाकर तमाशा दिखानेवाला, स्वाँगी।

बहुल—[सं० वि०] अधिक, बहुत।

बहुलता—[सं० स्त्री०] बाहुल्य, अधिकता।

बहुला—[सं० स्त्री०] इलायची।

बहुवचन—[सं० पु०] शब्द का वह रूप जिससे एक से अधिक वस्तु का ज्ञान हो।

बहुव्रीहि—[सं० पु०] एक समास जिसके दो या अधिक पदों से बने समस्त पद से अन्य पदार्थों का बोध हो और जो किसी पद का विशेषण-सा हो।

बहुश्रुत—[सं० वि०] अनेक विषयों का ज्ञाता।

बहुसंख्यक—[सं० वि०] अगणित, जो गिनती में अधिक हो।

बहू—[हि० स्त्री०] पत्नी, बधू, दुलहिन, पुत्रबधू।

बहूपमा—[सं० स्त्री०] एक अर्थालंकार जिसमें एक ही धर्म से एक ही उपमेय के अनेक उपमान कहे गये हों।

बहेड़ा—[हि० पु०] एक वृक्ष के फल जो ओषधि के काम आते हैं।

बहेलिया—[हि० पु०] व्याधा, हिंसक, शिकारी, चिड़िमार।

बाँकिया—[हि० पु०] नरसिंहा बाजा।

बाँगड़—[हि० पु०] हरियाना, करनाल, रोहतक और हिसार का प्रान्त।

बाँगड़ू—[हि० स्त्री०] बाँगड़ प्रान्त की बोली।

बाँझ—[हि० स्त्री०] बंध्या।

बाँदा—[हि० पु०] बंदाल, एक प्रकार की वनस्पति जो दूसरे पेड़ पर उगकर फैलती है।

बाँध—[हि० पु०] बंध, बंद, धुस्स। जल के बहाव की रोक।

बांधव—[सं० पु०] भाई, सम्बन्धी, मित्र।

बाँबी—[हि० स्त्री०] सर्पों के बिल, दीमकों द्वारा बनाया गया मिट्टी का भिटा।

बाँसली—[हि० स्त्री०] मुरली, बसनी।

बाँसुरी—[हि० स्त्री०] वंशी, मुरली।

बाकचाल—[हि० वि०] बातून, बाचाल।

बाकला—[पु०] एक सब्जी, एक प्रकार की मटर।

बागडोर—[हि० स्त्री०] लगाम।

बागर—[हि० पु०] नदी का ऊँचा किनारा।

बागुर—[हि० पु०] फंदा, जाल।

बाज—[हि० पु०] एक शिकारी पक्षी।

बाजा—[हि० पु०] वाद्य यंत्र, स्वर-ताल निकालने के यंत्र।

बाजि—[हि० पु०] बाण, घोड़ा, पक्षी, अड़ूसा।

बाटिका—[सं० स्त्री०] उद्यान, फूल-वारी, कुंज।

बाड़व—[सं० पु०] बड़वाग्नि, बड़वानल।

बाण—[सं० पु०] शर, तीर, गाय का थन, लक्ष्य। एक कवि। एक असुर।

बाणगंगा—[सं० स्त्री०] एक नदी।

बाणभट्ट—[सं० पु०] संस्कृत के प्रसिद्ध गद्यकार जिन्होंने कादम्बरी नामक ग्रन्थ रचा।

बाणलिंग—[सं० पु०] नर्मदा नदी से प्राप्त शिव-लिंग।

बाणासुर—[सं० पु०] राजा बलि का सबसे बड़ा पुत्र।

बाणिज्य—[सं० पु०] बनिज, व्यापार।

बातुल—[हि० वि०] पागल, सनकी।

बाद—[हि० पु०] विवाद, बहस, पृथक्।

बादरायण—[सं० पु०] वेदव्यास।

बादल—[हि० पु०] मेघ, वारिद,

बादुर—[हि० पु०] चमगीदड़।

बाध—[सं० पु०] अड़चन, बाधा, व्याघात, अर्थ की संगति न होना।

बाधक—[सं० पु०] दुखदायी, विघ्न-कारक।

बाधकता—[सं० स्त्री०] विघ्न, बाधा।

बाधन—[सं० पु०] बाधा डालना, विघ्न, दुःख देना।

बाधा—[सं० स्त्री०] विघ्न, अड़चन। संकट।

बाधित—[सं० वि०] असंगत, विघ्न या बाधा युक्त।

बाध्य—[सं० वि०] जो रोका जाने वाला हो।

बान—[हि० वि०] बाण, तीर।

बानक—[हि० स्त्री०] वेश, सजधज।

बानगी—[हि० स्त्री०] नमूना।

बानर—[हि० पु०] बंदर।

बानरेन्द्र—[हि० पु०] सुग्रीव, बानरेश।

बाना—[हि० पु०] वेश, रूप, स्वभाव, रीति।

बानी—[हि० स्त्री०] वाणी, वचन, प्रतिज्ञा, सरस्वती।

बानैत—[हि० पु०] सैनिक, बाण चलाने वाला।

बापिका—[हि० स्त्री०] बावली ।
बापुरा—[हि० वि०] बेचारा, अकिंचन ।
बापू—[हि० पु०] बाबा, पिता, बप्पू ।
बाबर—[पु०] बड़ा शेर, एक मुगल सम्राट ।
बाम—[हि० वि०] प्रतिकूल, बाँया । स्त्री ।
बायव—[हि० पु०] कोण, अन्य ।
बायबिड़ंग—[हि० पु०] एक फल जिसका आयुर्वेद में प्रयोग होता है ।
बायबी—[हि० वि०] अपरिचित, नवागंतुक ।
बायव्य—[सं० पु०] पश्चिम और उत्तर का कोण ।
बारमुखी—[हि० स्त्री] वेश्या, पतुरिया ।
बारहबान—[हि० पु०] सच्चा शुद्ध सोना । द्वादसवर्ण ।
बारहमासा—[हि० पु०] एक विरह का पद्य जिसमें प्रत्येक ऋतु का प्राकृतिक वर्णन हो ।
बारहसिंघा—[हि० पु०] कई सींगों वाला हरिण ।
बाराह—[हि० पु०] शूकर ।
बारि—[हि० पु०] जल ।
बारिगर—[हि० पु०] हथियारों पर धार रखने वाला ।
बारिधर—[हि० पु०] बादल, वारिद ।
बारौठा—[हि० पु०] विवाह में वर के कन्या के द्वार पर आने की रीति ।
बाल—[सं० पु०] बालक, बच्चा, नासमझ ।
बालक—[सं० पु०] अबोध लड़का, बच्चा, पुत्र, शिशु ।
बालकता—[सं० स्त्री०] लड़कपन ।
बालकृष्ण—[सं० पु०] बचपन के कृष्ण ।
बालखिल्य—[सं० पु०] अंगूठे के बराबर के ऋषियों का समूह ।
बालखोरा—[हि० पु०] गंज रोग ।
बालगोविंद—[सं० पु०] बालकृष्ण ।
बालग्रह—[सं० पु०] बालकों के नौ मारक ग्रह ।
बालछड़—[हि० स्त्री०] जटामासी औषधि ।
बालतंत्र—[सं० पु०] संतान-पालन विधि ।
बालधि—[सं० पु०] पूँछ ।
बालबोध—[सं० स्त्री०] शिशु ज्ञान, देवनागरी लिपि ।
बालभोग—[सं० पु०] प्रातःकाल का नैवेद्य जो देवताओं के सम्मुख रखा जाता है ।
बाल्मीकि—[हि० पु०] आदि काव्य रामायण के निर्माता एक मुनि ।
बालमुकुन्द—[सं० पु०] शिशु कृष्ण ।
बाललीला—[सं० स्त्री०] बच्चों का खेल, बच्चों का चरित ।
बालवत्स—[सं० पु०] कबूतर । बच्चों पर दयालु ।
बालविधु—[सं० पु०] शुक्ल पक्ष की द्वितीया का चन्द्रमा ।
बालसुख—[सं० पु०] बालकों का आनन्द ।
बालसूर्य्य—[सं० पु०] प्रातःकाल का सूर्य्य ।
बाला—[सं० स्त्री०] पुत्री, नव-यौवना स्त्री, पत्नी, एक महाविद्या, एक वर्णिक छन्द । एक गहना ।
बालार्क—[सं० पु०] प्रातःकाल का सूर्य ।
बालि—[सं० पु०] अंगद का पिता, सुग्रीव का भाई, किष्किन्धा का राजा ।
बालिका—[सं० स्त्री०] पुत्री, कन्या ।
बालुका—[सं० स्त्री०] रेत, बालू ।
बाल्य—[सं० पु०] लड़कपन, बचपन ।
बाल्यावस्था—[सं० पु०] लड़कपन । बालकपन ।
बावन—[हि० पु०] बौना, छोटे शरीर का मनुष्य । एक अवतार ।
बाष्प—[हि० पु०] भाफ, आँसू, लोहा ।
बासकसज्जा—[सं० स्त्री०] प्रियतम के आने पर केलि-सामग्री का सृजन करने वाली ।
बासन—[सं० पु०] बरतन, वस्त्र ।
बासव—[सं० पु०] इन्द्र ।
बाससी—[हि० पु०] कपड़ा ।
बासा—[हि० पु०] वह स्थान जहाँ पक्की रसोई बिकती हो ।
बाहु—[सं० पु०] भुजा, हाथ ।
बाहुक—[सं० पु०] राजा नल का एक नाम ।
बाहुत्राण—[सं० पु०] सैनिक, हाथों की रक्षा करनेवाला ।
बाहुबल—[सं० पु०] पराक्रम, बल, शक्ति ।
बाहुपाश—[सं० पु०] हाथों को जोड़ कर बनाया गया बन्धन ।
बाहुमूल—[सं० पु०] कन्धे का जोड़, हाथ की जड़ ।
बाहुयुद्ध—[सं० पु०] मल्लयुद्ध, कुश्ती ।
बाहुल्य—[सं० पु०] अधिकता ।
बाह्य—[सं० पु०] बाहर का, बाहरी । [पु०] सवारी ।
बाह्लीक—[सं० पु०] काम्बोज के उत्तरीय प्रदेश ।
बिंब—[हि० पु०] प्रतिमूर्ति, छाया, आभास, सूर्य या चन्द्रमा का मण्डल, एक छन्द । कुन्दरू फल ।
बिंबा—[सं० पु०] कुन्दरू फल, छाया ।
बिंबिसार—[सं० पु०] अजातशत्रु

के पिता, पटनाधिपति।

बिक्री—[हि० स्त्री०] बेचने से मिला हुआ धन।

बिगोना—[हि० क्रि०] बहकाना या भ्रम में डालना। सताना, छिपाना। नष्ट करना।

बिचकना—[हि० क्रि०] सतर्क होना, भड़कना, मुँह बनाना।

बिचला—[हि० वि०] बीचवाला, मध्यवाला।

बिचलित—[हि० वि०] व्याकुल, घबराया हुआ।

बिचवान—[हि० वि०] बीच-बचाव करनेवाला, मध्यस्थ।

बिचहुत—[हि० पु०] संदेह, अन्तर।

बिचौनिया—[हि० पु०, स्त्री०] मध्यस्थ, बीचबचाव करनेवाला।

बिच्छित—[सं० स्त्री०] चमत्कार, वक्रोक्ति, शृंगार रस के ११ हावों में से एक।

बिछलना—[हि० क्रि०] फिसलना, रपटना, विचलना।

बिछोह—[हि० पु०] वियोग, विरह, बिछुड़न।

बिजार—[हि० पु०] साँड़, बैल, वृषभ।

बिजारा—[हि० पु०] बीज युक्त, बीजवाला।

बिजोहा—[हि० पु०] एक वर्णिक छन्द, विमोह।

बिजौरा—[हि० पु०] एक प्रकार का बड़ा नीबू।

बिज्जू—[हि० पु०] बिल्ली जैसा एक जंगली जन्तु।

बिट—[हि० पु०] नायक का कला सम्पन्न मित्र। खल, धनी, वैश्य।

बिटौरा—[हि० पु०] कंडों का ढेर। चीटों का भीटा।

बिट्ठल—[हि० पु०] वल्लभाचार्य के शिष्य बिट्ठलनाथ, विष्णु।

बिडंबना—[हि० स्त्री०] उपहास, निन्दा, हँसी।

बिड़ाल—[सं० पु०] बिल्ली, बिड़ालाक्ष नामक दैत्य जिसे दुर्गा ने मारा। दोहे का बीसवाँ रूप।

बिड़ौजा—[सं० पु०] इन्द्र।

बित्त—[सं० पु०] सामर्थ्य, धन, शक्ति।

बित्ता—[सं०पु०] बालिश्त, चौथाई गज।

बिदा—[हि० स्त्री०] प्रस्थान, गमन, प्रयाण, गौना।

बिदारीकंद—[हि० पु०] एक लाल रंग की जड़।

बिनती—[हि० स्त्री०] निवेदन, याचना, प्रार्थना।

बिपदा—[हि० स्त्री०] आपत्ति, क्लेश।

बिबर—[हि० पु०] छिद्र, गुहा।

बिबाई—[हि० स्त्री०] पैरों के तलों की खाल फटने का रोग।

बिभु—[हि० पु०] परमेश्वर।

बियाल—[हि० पु०] शेर, सर्प।

बिरंग—[हि० वि०] कई रंग का, बिना रंग का।

बिरला—[हि० वि०] कोई एक, पृथक्, इक्का-दुक्का।

बिरवा—[हि० पु०] वृक्ष, पेड़।

बिरहा—[हि० पु०] एक राग, वियोग, विरह-गीत।

बिरुद—[हि० पु०] यश-कीर्त्तन, प्रशंसा।

बिरुदैत—[हि० वि०] प्रसिद्ध, विख्यात।

बिरुधाई—[हि० स्त्री०] बुढ़ापा।

बिरूप—[हि० वि०] भिन्न, कुरूप।

बिरोजा—[हि० पु०] चीड़ के पेड़ का गोंद।

बिल—[सं० पु०] विवर, गुफा, छेद, जीवजन्तुओं के रहने का छिद्र।

बिलखना—[हि० क्रि०] विलाप करना, दुखित होना, संकुचित होना।

बिलग—[हि० वि०] अलग, पृथक।

बिलहरा—[हि० पु०] बाँस की पतली तीलियों का डिब्बा जिसमें पान रखे जाते हैं।

बिलारी—[हि० स्त्री०] बिल्ली। [पु०] बिलार।

बिलावल—[हि० स्त्री०] एक रागिनी।

बिलासिनी—[हि० स्त्री०] भोग करने वाली।

बिलासी—[हि० वि०] भोगी।

बिलोन—[हि० वि०] नीरस, फीका, स्वाद रहित, कुरूप।

बिल्लौर—[हि० पु०] एक पारदर्शक पत्थर, स्फटिक।

बिषान—[हि० पु०] सींग।

बिसेन—[हि० पु०] क्षत्रियों की एक जाति।

बिस्वा—[हि० पु०] एक बीघे का बीसवाँ भाग, एक जाति।

बिहाग—[हि० पु०] एक राग।

बिहान—[हि० पु०] आने वाला दिन, प्रातःकाल।

बिहार—[हि०पु०] केलि, आनन्द, सैर।

बीघा—[हि० पु०] धरती की बीस बिस्वे की एक नाप।

बीज—[सं० पु०] दाना, वृक्षों का गर्भाण्ड।

बीजक—[सं० पु०] तालिका, मूल्यादि का विवरण, कबीर की रचनाओं में से एक।

बीजगणित—[सं० पु०] गणितशास्त्र की वह शाखा जिसमें अज्ञात राशियों के वर्णों को संख्या सूचक मानकर उनके द्वारा नियत नियमों को निकालते हैं।

बीजत्व—[सं॰ पु॰] बीज का भाव ।
बीजदर्शक—[सं॰पु॰] नाटक के अभिनय का निर्देशक ।
बीजपूर—[सं॰ पु॰] बिजौरा नीबू, चकोतरा ।
बीजमंत्र—[सं पु॰] किसी देवता को प्रसन्न करने वाला मूल-मंत्र । सारांश ।
बीजाक्षर—[सं॰ पु॰] बीजमन्त्र का प्रथम वर्ण ।
बीथी—[हि॰स्त्री॰] गली, सड़क, मार्ग ।
बीन—[हि॰ स्त्री॰] वीणा, एक प्राचीन वाद्य-यंत्र ।
बीभत्स—[सं॰ वि॰] काव्य का एक रस, घृणित, दुष्ट ।
बीमा—[हि॰ पु॰] डाक भेजने की एक सुरक्षित रीति । आर्थिक हानि का उत्तरदायित्व जो एक नियत धन लेकर किया जाय ।
बीर-बहूटी—[हि॰ स्त्री॰] लाल रंग का एक बरसाती कीड़ा, इन्द्रवधू ।
बीरन—[हि॰ पु॰] वीर, भाई ।
बीहड़—[हि॰ वि॰] विकट, विषम, जंगल ।
बुंदेलखंड—[हि॰ पु॰] बाँदा, जालौन, और झाँसी का प्रदेश जहाँ बुन्देले राज्य करते थे ।
बुकचा—[हि॰ पु॰] गट्ठा, गठरी ।
बुकनी—[हि॰ स्त्री॰] बारीक चूर्ण ।
बुक्का—[हि॰ पु॰] अभ्रक का चूर्ण ।
बुक्की—[हि॰ स्त्री॰] कन्धे पर डालने का कपड़ा ।
बुदबुद—बुलबुला ।
बुद्ध—[सं॰वि॰] ज्ञानी, विद्वान्, पण्डित, सचेत । महात्मा गौतम बुद्ध ।
बुद्धि—[सं॰ स्त्री॰] ज्ञान, विवेक-शक्ति, समझ । एक छन्द ।
बुद्धिपर—[सं॰वि॰] समझ से बाहर ।
बुद्धिमत्ता—[सं॰ स्त्री॰] समझदारी ।
बुद्धिमान्—[सं॰वि॰]चतुर, समझदार ।
बुद्धिमानी—[सं॰ स्त्री॰] समझदारी ।
बुद्धिवंत—[सं॰ वि॰] बुद्धिमान्, समझदार ।
बुद्धिहीन—[सं॰वि॰] निर्बुद्धि, अज्ञानी, मूर्ख ।
बुध—[सं॰पु॰] पण्डित, ज्ञानी, देवता, नवग्रहों में से चौथा ।
बुधवार—[सं॰ पु॰] सप्ताह का चौथा दिन ।
बुभुक्षा—[सं॰ स्त्री॰] भूख ।
बुभुक्षित—[सं॰ वि॰] भूखा, क्षुधित ।
बुलबुला—[हि॰ पु॰] पानी का बबूला, जल का फफोला, बुदबुद ।
बुल्ला—[हि॰ पु॰] बुलबुला ।
बुहनी—[हि॰ स्त्री॰] पहली बिक्री ।
बूचड़—[हि॰ पु॰] कसाई ।
बूचड़खाना—[हि॰] कसाईखाना ।
बूचा—[हि॰ वि॰] कनकटा ।
बूझ—[हि॰ स्त्री॰] समझ, ज्ञान ।
बूट—[हि॰ पु॰] चने का हरा दाना, पौधा, वृक्ष, होला ।
बूटा—[हि॰ पु॰] कपड़ों या दीवाल आदि पर फल, फूल, बेल, पौधे आदि के चिह्न । पौधा ।
बूटी—[हि॰ स्त्री॰] वनौषधि, विजया । भंग ।
बृहती—[सं॰ स्त्री॰] ९ वर्णों का एक वर्ण-वृत्त, गंधर्व की वीणा । कटैया, बनभाँटा ।
बृहद्—[सं॰ वि॰] बहुत बड़ा, विराट, दृढ़, बलिष्ठ, ऊँचा ।
बृहदारण्यक—[सं॰ पु॰] शतपथ ब्राह्मण का एक उपनिषद् ।
बृहद्रथ—[सं॰ पु॰] जरासन्ध के पिता, इन्द्र ।
बृहन्नल—[सं॰ पु॰] अर्जुन का एक नाम ।
बृहन्नला—[सं॰ स्त्री॰] अर्जुन ।
बृहस्पति—[सं॰ पु॰] महाविद्वान्, सौर मंडल का पाँचवाँ ग्रह, देवगुरु ।
बेंत—[हि॰ पु॰] एक लता ।
बेगवती—[सं॰ स्त्री॰] एक वर्णार्द्ध वृत्त, जो बड़े वेग से चले ।
बेगवन्त—[सं॰ वि॰] शीघ्र चलने वाला, वेगवान् ।
बेजू—[हि॰ पु॰] नकुल, नेवला ।
बेठन—[हि॰ पु॰] बाँधने या लपेटने का वस्त्र ।
बेड़ा—[हि॰ पु॰] बाँसों की नौका ।
बेड़िनी—[हि॰ स्त्री॰] नट जाति की एक नर्तकी । वेश्या ।
बेड़िया—[हि॰ पु॰] नटों की एक जाति ।
बेड़ी—[हि॰ स्त्री॰] कैदियों की हरकत रोकने के लिए पैरों में डाली जाने वाली लोहे की कड़ियाँ ।
बेढब—[हि॰ वि॰] भद्दा, अनोखा, बेढंगा ।
बेढ़ा—[हि॰ पु॰] बाड़ा, घेरा, एक प्रकार का कड़ा ।
बेणीफूल—[हि॰ पु॰] शिरोभूषण, शीशफूल ।
बेताल—[हि॰ पु॰] छप्पय छन्द का एक भेद, एक भूत योनि, द्वारपाल । भाट ।
बेदसिरा—[सं॰ पु॰] एक मुनि ।
बेनु—[हि॰ पु॰] वंशी, मुरली बाँस, बीन बाजा ।
बेपथु—[हि॰ वि॰] कंपित ।
बेबस—[हि॰ वि॰] पराधीन, लाचार, परवश, विवश ।
बेरजरी—[हि॰ स्त्री॰] झड़बेरी ।
बेल—[हि॰ पु॰] विल्व, श्रीफल, वल्लरी । लता ।
बेलपत्र—[हि॰ पु॰] बेल का पत्ता

जो शिवजी की प्रतिमा पर चढ़ाया जाता है।

बैकुंठ—[हि॰ पु॰] विष्णुलोक, स्वर्ग, विष्णु। बैकुंठ।

बैखानस—[हि॰ पु॰] एक प्रकार के वनवासी तपस्वी।

बैजन्ती—[हि॰ स्त्री॰] विजय माल, विष्णु की माला।

बैजनाथ—[हि॰ पु॰] महादेवजी, शिवजी।

बैतालिक—[हि॰ पु॰] स्तुति करने वाला।

बैनतेय—[हि॰ पु॰] गरुड़, विनता का पुत्र।

बैमात्र—[हि॰ पु॰] सौतेला भाई।

बैर—[हि॰ पु॰] शत्रुता, द्वेष, विरोध, वैमनस्य।

बैरागी—[हि॰ पु॰] संन्यासी, त्यागी।

बैरी—[हि पु॰] विरोधी, शत्रु।

बैसाखी—[हि॰ स्त्री॰] लँगड़ों को सहारा देनेवाली दो शाखाओं की लाठियाँ जिन्हें बगल में लगाकर टेकते चलते हैं।

बोद्ध—[सं॰ वि॰] ज्ञान, चतुर, व्युत्पन्न।

बोध—[सं॰ पु॰] ज्ञान, संतोष, जानकारी।

बोधक—[सं॰ पु॰] श्रृंगाररस का एक हाव। ज्ञान करानेवाला।

बोधगम्य—[सं॰ वि॰] समझ में आने योग्य।

बोधन—[सं॰ पु॰] सूचित करना। जगाना।

बोधिद्रुम—[सं॰ पु॰] गया का वह प्रसिद्ध वृक्ष जिसकी छाया में गौतम बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था।

बोधिसत्व—[सं॰ पु॰] बुद्धत्व प्राप्त करने का अधिकारी।

बोल—[हि॰ पु॰] वाक्य, वचन, प्रण, व्यंग्य।

बौद्ध—[सं॰ वि॰] महात्मा बुद्ध का अनुयायी, एक प्रसिद्ध मत।

बौद्धधर्म—[हि॰ पु॰] महात्मा बुद्ध द्वारा चलाया गया धर्म या मत।

बौना—[हि॰ पु॰] छोटे डील-डौल का मनुष्य। वामन।

बौरा—[हि॰ वि॰] पागल।

ब्यंजन—[हि॰ पु॰] अक्षर, वर्ण, भोजन, व्यंजन।

ब्यजन—[हि॰ पु॰] पंखा, बिजना, बेना।

ब्यालू—[हि॰ पु॰] रात का भोजन।

ब्योंगा—[हि॰ पु॰] चमड़ा छीलने का एक हथियार।

ब्रज—[सं॰ पु॰] मथुरा-वृन्दावन के चारों ओर का प्रान्त। गमन, जाना।

ब्रजेश—[सं॰ पु॰] श्रीकृष्ण।

ब्रह्मांड—[हि॰ पु॰] संसार।

ब्रह्म—[सं॰ पु॰] परमेश्वर, आत्मा, ब्राह्मण।

ब्रह्मकुंड—[सं॰ पु॰] ब्रह्मसर नामक एक तीर्थ।

ब्रह्मगाँठ—[हि॰ स्त्री॰] यज्ञोपवीत की ग्रन्थि-विशेष।

ब्रह्मग्रन्थि—[सं॰ स्त्री॰] ब्रह्मगाँठ।

ब्रह्मघाती—[सं॰ पु॰] ब्राह्मण की हत्या करनेवाला।

ब्रह्मघोष—[सं॰ पु॰] वेदध्वनि।

ब्रह्मचर्य—[सं॰ पु॰] मनुष्य के चार आश्रमों में से प्रथम। सदाचारमय जीवन।

ब्रह्मचारिणी—[सं॰ स्त्री॰] सरस्वती, पार्वती, दुर्गा। ब्रह्मचर्य पालन करनेवाली स्त्री। सदाचारिणी।

ब्रह्मचारी—[सं॰ पु॰] सदाचारी पुरुष, प्रथमाश्रमी।

ब्रह्मज्ञ—[सं॰ वि॰] आत्मतत्त्व का ज्ञाता, वेदों का ज्ञाता, ब्रह्मज्ञानी।

ब्रह्मज्ञान—[सं॰ पु॰] अद्वैतवाद, ब्रह्म सम्बन्धी ज्ञान।

ब्रह्मज्ञानी—[सं॰ वि॰] अद्वैतवादी।

ब्रह्मण्य—[सं॰ वि॰] ब्रह्मा या ब्रह्म सम्बन्धी, ब्राह्मणों का सेवक या प्रेमी।

ब्रह्मतीर्थ—[सं॰ पु॰] ब्रह्मसर तीर्थ, पुष्कर मूल।

ब्रह्मत्व—[सं॰ पु॰] ब्राह्मणत्व। ब्रह्म का भाव।

ब्रह्मदण्ड—[सं॰ पु॰] ब्रह्मा द्वारा दिया दंड, ब्रह्मचारी का दंड।

ब्रह्मदिन—[सं॰ पु॰] ब्रह्मा का दिवस जो एक हजार या सौ चतुर्युगों का माना जाता है।

ब्रह्मदेव—[सं॰ पु॰] शिव, ब्रह्मा, चन्द्रमा।

ब्रह्मदोष—[सं॰ पु॰] ब्राह्मण की हत्या का पाप।

ब्रह्मद्रोही—[सं॰ वि॰] ब्राह्मणों से शत्रुता रखनेवाला।

ब्रह्मद्वार—[सं॰ पु॰] ब्रह्मरंध्र।

ब्रह्मद्वेष—[सं॰ पु॰] ब्राह्मण से शत्रुता।

ब्रह्मनिष्ट—[सं॰ वि॰] ब्राह्मणों का भक्त, ब्रह्मज्ञानी।

ब्रह्मपद—[सं॰ पु॰] मोक्ष, मुक्ति, ब्रह्मत्व।

ब्रह्मपुत्र—[सं॰ पु॰] वशिष्ठ, नारद, मरीचि, मनु, सनकादि ब्रह्मा के पुत्र। मानसरोवर से निकलकर बंगाल की खाड़ी में गिरनेवाली एक प्रसिद्ध नदी।

ब्रह्मपुराण—[सं॰ पु॰] अठारह पुराणों में से एक पुराण।

ब्रह्मपुरी—[सं॰ स्त्री॰] ब्रह्मा का नगर।

ब्रह्मपाश—[सं॰ पु॰] ब्रह्मास्त्र, एक अस्त्र, ब्रह्म फाँस।

ब्रह्मभट्ट—[सं॰ पु॰] वेदज्ञानी, एक प्रकार का ब्राह्मण।

ब्रह्मभूति—[सं॰ स्त्री॰] ब्राह्मण का

तेज, ऐश्वर्य, ब्राह्मण का धर्म ।

ब्रह्मभोज—[सं० पु०] ब्राह्मणों को भोजन देने का कर्म ।

ब्रह्ममुहूर्त्त—[सं० पु०] प्रातःकाल, उषाकाल ।

ब्रह्मयज्ञ—[सं० पु०] वेदाभ्यास, वेदाध्ययन ।

ब्रह्मरंध्र—[सं० पु०] मस्तक के मध्य-भाग का एक अदृश्य छिद्र जिसके द्वारा प्राण निकलने पर ब्रह्म लोक की प्राप्ति होती है ।

ब्रह्मराक्षस—[सं० पु०] ब्राह्मण-भूत ।

ब्रह्मरात्रि—[सं० स्त्री०] सौ कल्प, ब्रह्मा की एक रात्रि जो उनके दिन के समान होती है ।

ब्रह्मरूपक—[सं० पु०] १६ वर्णों का वृत्त, चंचल छन्द ।

ब्रह्मरूप—[सं० पु०] ब्रह्मा या ब्राह्मण के रूप का ।

ब्रह्मलेख—[सं० पु०] भाग्य विधान, भाग्य लेखा ।

ब्रह्मरोष—[सं० पु०] ब्राह्मण का क्रोध ।

ब्रह्मर्षि—[सं० पु०] ब्राह्मण ऋषि ।

ब्रह्मलोक—[सं० पु०] ब्रह्मा के रहने का स्थान ।

ब्रह्मवाद—[सं० पु०] वेदाभ्यास, वेदपाठ, वेदान्तवाद ।

ब्रह्मवादी—[सं० वि०] अद्वैतवादी, वेदांती ।

ब्रह्मविद्—[सं० वि०] वेदार्थज्ञाता, वेदान्ती ।

ब्रह्मविद्या—[सं० स्त्री०] उपनिषद्शास्त्र, वेदान्त, अध्यात्मज्ञान ।

ब्रह्मवैवर्त्त—[सं० पु०] श्रीकृष्ण, ब्रह्म के कारण ज्ञान होने वाला संसार । कृष्ण भक्ति सम्बन्धी एक पुराण ।

ब्रह्मश्रव—[सं० पु०] वेद ।

ब्रह्मसमाज—[सं० पु०] दे० "ब्राह्म-समाज" ।

ब्रह्मसूत्र—[सं० पु०] यज्ञोपवीत, जनेऊ । वेदान्त ।

ब्रह्महत्या—[सं० स्त्री०] ब्राह्मण का वध ।

ब्रह्मांड—[सं० पु०] सम्पूर्ण संसार । कपाल ।

ब्रह्मा—[सं० पु०] विधाता, सृष्टिकर्त्ता, विरंचि, भारत के पूर्व में एक देश ।

ब्रह्माणी—[सं० स्त्री०] ब्रह्मा की शक्ति, सरस्वती ।

ब्रह्मानन्द—[सं० पु०] परमात्मा के रूप, गुण या ज्ञान से अनुभव होनेवाला आनन्द ।

ब्रह्मावर्त्त—[सं० पु०] सरस्वती और शरद्वती नदियों के मध्य का देश ।

ब्रह्मास्त्र—[सं० पु०] मत्र द्वारा संचालित एक प्रसिद्ध पौराणिक अस्त्र ।

ब्राह्म—[सं० वि०] परमात्मा सम्बन्धी ।

ब्राह्मण—[सं० पु०] विष्णु, शिव, चार वर्णों में से सर्वश्रेष्ठ वर्ण ।

ब्राह्मणत्व—[सं० पु०] ब्राह्मण का भाव ।

ब्राह्मण्य—[सं० पु०] ब्राह्मणत्व ।

ब्राह्ममुहूर्त—[सं० पु०] उषा, प्रभात । सूर्योदय से पूर्व का समय ।

ब्राह्मसमाज—[सं० पु०] ब्रह्मोपासक सम्प्रदाय ।

ब्राह्मी—[सं० स्त्री] भारत की प्राचीन लिपि, दुर्गा, एक औषध ।

—:o:—

भ

भ—संस्कृत और हिन्दी वर्णमाला के पवर्ग का चौथा वर्ण । [सं० पु०] ग्रह, नक्षत्र, राशि, भ्रम, शुक्राचार्य, भ्रमर ।

भंग—[सं० पु०] खण्ड, टुकड़ा, भेद, लहर, टेढ़ापन, नाश, टूटने का भाव । विसर्जन ।

भंगड़ी—[वि०] बहुत भाँग पीने वाला ।

भंगना—[क्रि० अ०] दबना, [क्रि० स०] दे० तोड़ना ।

भंगरा—[सं० पु०] भाँग के रेशों से बना हुआ वस्त्र ।

भंगराज—[सं० पु०] भंगरा, एक काला पक्षी ।

भंगरैया—[सं० स्त्री०] भंगरा, पौधा ।

भंगार—[सं० स्त्री०] कूड़ा-करकट, अट्ट-सट्ट, बरसाती पानी का गड्ढा ।

भंगिम—[सं० स्त्री०] टेढ़ापन, झुकाव ।

भंगी—[सं० पु०] [सं० भंगिन्] नष्ट होने वाला, तोड़ने वाला । डूमार, डोम, अछूत, मेहतर ।

भंगुर—[सं० त्रि०] टूटने या भंग होने वाला, टेढ़ा, नाशवान् ।

भंजक—[सं० वि०] तोड़ने वाला ।

(स्त्री०—भंजिका।)

भंजन—[सं० पु०] तोड़ना, विनाश, विध्वंस।

भंजना—[क्रि० अ०] [हि० क्रि०] तोड़ना, टूटना, भुनाना, एक बड़े सिक्के को छोटे सिक्कों में बदलना। कागज़ के फ़ार्मों को मोड़ना।

भंड—[सं० पु०] गंदी और असभ्यतापूर्ण बातें करने वाला, धूर्त, पाखंडी।

भँड़ताल—[सं० पु०] तालियाँ बजाते हुए भाँड़ों का गान।

भँडरिया—[सं० पु०] भड्डरी, एक जाति के लोग।

भँड़सर, भँड़साल—[हि० स्त्री०] खत्ती, अनाज भरा जाने का स्थान।

भंडा—[हि० पु०] [सं० भंड] बरतन, भाँड़ा, रहस्य, भेद।

भंडार—[हि० पु०] कोठार, खज़ाना। समूह। पेट। अन्न आदि रखने का स्थान।

भंडारा—[हि० पु०] भोज, साधुओं का भोज। पेट,भंडार। समूह। पाकशाला।

भंडारी—[हि० पु०] भंडार का अध्यक्ष। [स्त्री०] छोटी कोठरी।

भँड़ैती—[हि० पु०] भाँड़ों का-सा आचार-व्यवहार, नक़ल।

भँड़ौआ—[हि० पु०]भाँड़ों का गान, नक़ल। निकृष्ट तुकबंदी।

भँभीरी—[सं० स्त्री०] जुलाहा, लाल रंग का एक बरसाती कीड़ा।

भँवन—[हि० स्त्री०] भ्रमण करना, घूमना-फिरना।

भँवफेर—[हि० पु०] उलझन, घुमाव, चक्कर।

भँवर—[हि० पु०] पानी का चक्कर, जलगति, आवर्त्त, भौंरा।

भँवरकली—[हि० पु०] पशुओं के छूने का यंत्र, सहज ही में सब ओर घुमानेवाली कील में जड़ी हुई कड़ी।

भँवरजाल—[हि० पु०] [सं० भ्रम जाल] संसारिक झगड़े-टण्टे, भ्रमजाल, भवजाल।

भँवरभीख—[हि० स्त्री०] [सं० भ्रमर भिक्षा] भौंरे के समान थोड़ी-थोड़ी दूर में माँगी जानेवाली भीख।

भँवरी—[हि० स्त्री०] भ्रवरी, भौंरी, पानी का चक्कर, मोड़ना, एक स्थान पर घूमे हुए बाल या रोंएँ।

भँवाना—[हि० क्रि०] चक्कर देना, घुमाना, भ्रम में डालना।

भँवारा—[हि० वि०] भ्रमणशील, घूमने-फिरने वाला।

भइया, भैया—[हि० पु०] भाई, भ्राता।

भई—[हि० क्रि०] हुई।

भक—[हि०] एकाएक अथवा रह रह कर अग्नि के जल उठने का शब्द।

भकुआ, भंकुवा—[हि०] मूर्ख, मूढ़।

भकुआना—[हि० क्रि०] घबरा देना, मूर्ख बना देना।

भकोसना—[हि०क्रि०] [सं०भक्षण] जल्दी-जल्दी खाना, निगलना।

भक्त—[सं० पु०] अनुयायी, दास, भक्ति करनेवाला, सेवक। [वि०] बँटा हुआ, विभक्त।

भक्तता—[सं० स्त्री०] श्रद्धा, भक्ति।

भक्तवत्सल—[सं० वि०] भक्तों पर दया करनेवाले, दयालु।

भक्ताई—[सं० स्त्री०] भक्ति।

भक्ति—[सं० स्त्री०] श्रद्धा, पूजा, सेवा, अर्चना, प्रेम,प्रीति। नौ प्रकार की भक्ति—श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य, आत्मनिवेदन। बाँटना, भाग करना, अवयव, अंगी।

भक्ति-सूत्र—[सं० पु०] शांडिल्य मुनि विरचित वैष्णवसंप्रदाय का एक सूत्र ग्रन्थ।

भक्ष—[सं० पु०] खाना, चबाना।

भक्षक—[सं० वि०] खानेवाला, समाप्त कर जानेवाला।

भक्षण—[सं० पु०] खाना, चबाकर खाना, भोजन।

भक्षी—[वि०] [सं० भक्षिन्] भक्षक, खानेवाला।

भक्ष्य—[सं० वि०] खाने के योग्य। [सं० पु०] आहार, अन्न।

भखना—[हि० क्रि०] खाना।

भगंदर—[सं० पु०] गुदा का फोड़ा।

भग—[सं० पु०] योनि, प्रताप, धन, सौभाग्य, ऐश्वर्य, गुदा, १२ आदित्यों में से एक आदित्य।

भगण—[सं० पु०] गण विशेष जिस में आदि का वर्ण गुरु और अन्त के दो वर्ण लघु होते हैं (ऽ।।), ३६० अंशों वाला ग्रहों का पूरा चक्कर।

भगत—[हि० वि०] [सं० भक्त] उपासक, सेवक, साधु, पुजारी, ओझा।

भगतबछल—[हि० वि०] [सं० भक्त-वत्सल] भक्तों पर कृपा करने वाला, विष्णु।

भगतिया—[हि० पु०] राजपूताने में एक जाति विशेष जो गा-बजाकर अपना जीवन यापन करती है।

भगदर—[हि० स्त्री०] भगदड़, प्रायः डरकर भाग उठने की क्रिया।

भगल—[हि० पु०] छल-कपट, जादू, ढोंग, फरेब। [वि०] भगरी।

भगवंत—[सं० पु०] भगवान, समृद्धिशाली।

भगवती—[सं० स्त्री०] देवी, सरस्वती, दुर्गा, गौरी, पार्वती।

भगवत्—[सं० पु०] परमात्मा,

ईश्वर,

भगवद्गीता—[सं० स्त्री०] एक पवित्र ग्रन्थ-रत्न । महाभारत के भीष्म-पर्व का एक प्रकरण, जिसमें कृष्ण और अर्जुन के कर्म योग सम्बन्धी संवाद हैं ।

भगवान्—[सं० पु०] प्रतापी, पूज्य, ईश्वर, परमेश्वर ।

भगिनी—[सं० स्त्री०] बहन ।

भगीरथ—[सं० पु०] अयोध्या नरेश दिलीप के पुत्र जो अपनी तपस्या के बल पर गंगाजी को पृथ्वी पर लाए थे । मु०—भगीरथ-प्रयत्न = कठिन प्रयत्न ।

भगोड़ा—[हि० वि०] भागने वाला, कायर ।

भगोहाँ—[हि० वि०] भागने के लिए तत्पर, कायर ।

भग्गुल—[हि० वि०] युद्ध से भागा हुआ, कायर, भगोड़ा ।

भग्न—[सं० वि०] टूटा हुआ, पराजित ।

भग्नावशेष—[सं० पु०] खंडहर ।

भचक—[हि० स्त्री०] लँगड़ापन ।

भचक्र—[सं० पु०] नक्षत्र-समूह, राशियों या ग्रहों की गति का मार्ग ।

भजन—[सं० पु०] जप, वंदना, स्तुति, स्मरण, गीत ।

भजना—[हि० क्रि०] स्मरण करना, जप करना, ईश्वरोपासना करना ।

भजनानंद—[सं० पु०] भजन में मिलने वाला आनन्द ।

भजनानंदी—[सं० पु०] पूजा-पाठी, भक्त, भजन गाकर प्रसन्न रहने वाला ।

भजनीक—[सं० पु०] भजन गाने वाला ।

भट—[सं० पु०] सैनिक, योद्धा, वीर । [वि०] संज्ञारहित, शून्य ।

भटकटाई, भटकटैया—[हि० स्त्री०] कटेरी, काँटेदार एक पौधा ।

भटकना—[हि० क्रि०] मार्ग भूलकर इधर-उधर मारे फिरना, रास्ते से इधर-उधर हो जाना ।

भटकाना—[हि० क्रि०] गलत रास्ता बताना, भ्रम में डालना ।

भटा—[हि० पु०] बैंगन ।

भटियारा—[हि० पु०] मुसलमानों में एक जाति, खाना बेचने वाला, रसोइया ।

भटू—[हि० स्त्री०] हेसखी ! आली, एक सम्बोधन ।

भट्ट—[सं० पु०] भाट, ब्राह्मणों की एक उपाधि, योद्धा ।

भट्टाचार्य—[सं० पु०] बंगालियों में ब्राह्मणों का एक उपवर्ग ।

भट्ठा—[हि० पु०] ईंट आदि चीजों के पकाने का स्थान ।

भट्ठी—[हि० स्त्री०] बड़ा चूल्हा, देशी शराब बनाने का स्थान

भड़क—[सं० स्त्री०] चटकीला । चमकीला ।

भड़कना—[हि० क्रि०] चौंकना । तेजी से जल उठना । नाराज हो उठना ।

भड़काना—[हि० क्रि०] उत्तेजित करना । चमकाना । डराना ।

भड़कीला—[हि० वि०] चमकदार ।

भड़भड़ाना—[हि० क्रि०] भड़-भड़ करना । बकवास करना । मारे-मारे फिरना ।

भड़भड़िया—[हि० वि०] ऊटपटांग बातें करनेवाला । बक्की ।

भड़भूंजा—[हि० पु०] एक जाति । भाड़ पर अन्न भूननेवाला ।

भंडार—[स० पु०] कोष । कोठार ।

भड़िहा—[हि० पु०] चटोरा । चोट ।

भडुआ—[हि०पु०] वेश्याओं का दलाल ।

भणित—[सं० वि०] कहा हुआ । रचित ।

भतीजा—[हि० पु०] भाई का लड़का ।

भत्ता—[हि० पु०] कर्मचारी को अतिरिक्त कार्य के लिए वेतन के अतिरिक्त दी हुई रकम ।

भदई—[हि० स्त्री०] भादों में तैयार होनेवाली फसल । भादों की अमावस या पूनों ।

भदावर—[हि० पु०] एक छोटी रियासत ।

भदेश—[वि० हि०] भद्दा । कुरूप ।

भद्दा—[हि० पु०] बुरा । भोंडा । कुरूप ।

भद्र—[सं० वि०] शिष्ट । सभ्य । श्रेष्ठ । शरीफ़ । शिक्षित । [सं० स्त्री०] भद्रता । [सं० पु०] सोना । सुमेरु पर्वत । खंजन । दाढ़ी, मूंछ और बालों का मुंडन ।

भद्रक—[सं० पु०] एक पुराना देश । एक वर्णिक छंद ।

भद्रकाली—[सं० स्त्री०] भगवती । दुर्गा । देवी । कात्यायिनी देवी ।

भद्रता—[सं० स्त्री०] भलमनसी । शराफत । शिष्टता ।

भद्रा—[स० स्त्री०] आकाशगंगा । श्रीकृष्ण की पत्नी । दुर्गा । गाय । पृथ्वी । एक आरम्भ योग ।

भद्राक्ष—[सं० पु०] कृत्रिम रुद्राक्ष ।

भद्रिका—[सं० स्त्री०] एक वर्णिक छंद ।

भद्री—[सं० वि०] सौभाग्यशाली ।

भनक—[हि० स्त्री०] धीमी आवाज़ ।

भभकी—[हि० स्त्री०] धमकी । घुड़की ।

भयंकर—[सं० वि०] भीषण । भयानक ।

भयंकरता—[सं० स्त्री०] भीषणता । डरावनापन ।

भय—[स० पु०] एक मनोविकार । डर ।

भयप्रद—[सं० वि०] भयानक ।

भयभीत—[सं० वि०] डरा हुआ ।

भयातुर—[सं० वि०] डरा हुआ । भयभीत ।

भयानक—[सं० वि०] भीषण ।

डरावना ।

भयापह—[सं० पु०] भयनाशक ।

भयावन—[सं० वि०] भयकारी । डरावना ।

भयावह—[सं० वि०] भयंकर । डरावना ।

भरण—[सं० पु०] पालन-पोषण ।

भरणी—[सं० स्त्री०] एक नक्षत्र । एक कीड़ा । [हि०] भरण-पोषण करनेवाला ।

भरत—[सं० पु०] कैकयी से उत्पन्न राजा दशरथ का पुत्र । शकुन्तला से उत्पन्न राजा दुष्यन्त का पुत्र । उत्तर भारत का एक प्राचीन देश । नाट्यशास्त्र के रचयिता एक मुनि । नट ।

भरतखंड—[सं० पु०] भारतवर्ष । आर्यावर्त्त । राजा भरत कृत पृथ्वी के ९ खंडों में से एक ।

भरताग्रज—[सं० पु०] रामचंद्रजी ।

भरद्वाज—[सं० पु०] एक गोत्र-प्रवर्त्तक ऋषि ।

भरित—[सं० वि०] भरा हुआ ।

भरोसा—[हि० पु०] विश्वास, सहारा । अवलंब ।

भर्ग—[सं० पु०] शिव । शंकर ।

भर्त्ता—[सं० पु०] पति, स्वामी । विष्णु ।

भर्त्तार—[सं० पु०] पति । स्वामी ।

भर्तृहरि—[सं० पु०] राजा विक्रमादित्य का भाई । एक विख्यात कवि ।

भर्त्सना—[सं० स्त्री०] निंदा, ताड़ना ।

भल्ल—[सं० पु०] भाला ।

भल्लूक—[सं० पु०] रीछ ।

भवंत—[सं० वि०] आपलोग ।

भवँर—[हि० पु०] भ्रमर, भौंर, जल-चक्र ।

भव—[सं० पु०] संसार, उत्पत्ति, शिव, मेघ, कामदेव, सत्ता । जन्म-मरण का कष्ट ।

भवदीय—[सं० सर्व०] आपका, तुम्हारा ।

भवन—[सं० पु०] घर, मकान, मंदिर, छप्पय का एक भेद ।

भवबंधन—[सं० पु०] सांसारिक कष्ट, जीवन की झंझट ।

भवभंजन—[सं० पु०] परमात्मा ।

भवभामिनी—[सं० स्त्री०] पार्वती ।

भवभूति—[सं० पु०] संस्कृत के एक प्राचीन कवि ।

भवभूप—[सं० पु०] जगत के राजा, ईश्वर ।

भवभूषण—[सं० पु०] शिव जी का आभूषण, सर्प, भस्म ।

भवमोचन—[सं० वि०] भगवान्, संसार के बंधन से छुड़ानेवाले ।

भव-वारिधि—[सं० पु०] संसार-सागर ।

भवविलास—[सं० पु०] मोह-माया, प्रपंच ।

भवसंभव—[सं० वि०] सांसारिक ।

भवादृश—[सं० वि०] आपके तुल्य ।

भवा,भवानी—[सं० स्त्री०]पार्वतीजी ।

भवार्णव—[सं० पु०] संसार-सागर ।

भवान्—[सं०] आप ।

भवितव्य—[सं० पु०] होनहार ।

भवितव्यता—[सं० स्त्री०] भाग्य, होनहार ।

भविष्णु—[सं० पु०] होनहार, भावी ।

भविष्य—[सं० वि०] भावी, आगे आने वाला ।

भविष्यगुप्ता—[सं० स्त्री०] एक गुप्ता नायिका जो आगे रति करने वाली हो और प्रथम ही से उसे छिपावे ।

भविष्यत्—[सं० पु०] भावी, भविष्य, आगे आनेवाला ।

भविष्यद्वक्ता—[सं० पु०] दैवज्ञ, ज्योतिषी, भविष्यद्वाणी करनेवाला ।

भविष्यद्वाणी—[सं० स्त्री०] आगे होने वाली बात जो पहले ही कह दी गई हो ।

भवेश—[सं० पु०] महादेव जी ।

भवैया—[हि० पु०] नृत्यकार, कत्थक ।

भवोदधि—[सं० पु०] संसार-सागर ।

भव्य—[सं० वि०] मनोरम, शुभ-सूचक ।

भव्यता—[सं० स्त्री०] मनोरमता, शुभ का भाव ।

भस्त्रा—[सं० स्त्री०] धौंकनी ।

भस्म—[सं० पु०] राख, खाक ।

भस्मक—[सं० पु०] एक रोग जिसमें भोजन तत्काल पच जाता है ।

भस्मता—[सं० स्त्री०] भस्म होने का भाव ।

भस्मसात्—[सं० वि०] जलकर भस्म होना ।

भस्मासुर—[सं० पु०] एक दैत्य ।

भस्मीभूत—[सं० वि०] जो जलकर राख हो गया हो ।

भाँजना—[हि० क्रि०] मोड़ना, तह करना, मुगदर आदि घुमाना ।

भाँड़—[हि० पु०] विदूषक, मसखरा, बहुरूपिया, मसखरा । निर्लज्ज ।

भांडागार—[हि० पु०] भंडार, कोष ।

भांडागारिक—[सं० पु०] कोषाध्यक्ष, भंडारी ।

भांडार—[सं० पु०] संग्रहालय,कोष ।

भाँति—[हि० स्त्री०] प्रकार, रीति ।

भा—[सं० स्त्री०] आभा, कांति, शोभा, किरण, छवि, बिजली ।

भाकर—[सं० पु०] सूर्य्य, भास्कर ।

भाग—[सं० पु०] खंड, अंश, ओर ।

भागत्याग—[सं० पु०] भाग छोड़ना ।

भागधेय—[सं० पु०] भाग्य, राजा का कर ।

भागनेय—[सं० पु०] भानजा ।

भागफल—[सं० पु०] लब्धि ।
भागवंत—[हि० वि०] भाग्यशाली ।
भागवत—[सं० पु०] परमेश्वर का दास, व्यास जी द्वारा रचित १८ पुराणों में से एक प्रसिद्ध पुराण ।
भागिनेय—[सं० पु०] बहिन का लड़का ।
भागी—[सं० पु०] अधिकारी । भाग्यवान् ।
भागीरथ—[हि० पु०] राजा भगीरथ ।
भागीरथी—[सं० स्त्री०] गंगा नदी ।
भाग्य—[सं० पु०] विधि-लेख, दैवी विधान, किस्मत ।
भाग्यवंत—[सं० वि०] भाग्यशाली । धनी । सम्पन्न ।
भाग्यहीन—[सं० वि०] अभागा, कंगाल ।
भाग्याधीन—[सं० वि०] दैवी विधान के अधीन ।
भाचक्र—[सं० पु०] क्रांति वृत्त ।
भाजक—[सं० वि०] बाँटने या विभाग करनेवाला ।
भाजन—[सं० पु०] योग्य, आधार, पात्र, बरतन ।
भाजी—[सं० स्त्री०] शाक, तरकारी ।
भाज्य—[सं०] वह संख्या या पदार्थ जो बाँटा जाय ।
भाट—[हि० पु०] चारण, यशोगान करनेवाला, बंदीजन, चाटुकार ।
भाटा—[हि० पु०] समुद्र के पानी के चढ़ाव का उतार ।
भाण—[सं० पु०] हास्य रस-पूर्ण दृश्य काव्य का एक एकांकी रूपक । बहाना । व्याज ।
भाति—[सं० स्त्री०] शोभा, आभा, कांति ।
भाद्रपद—[सं० पु०] भादों ।
भाद्रपदा—[सं० स्त्री०] एक नक्षत्र समूह ।
भान—[सं० पु०] कांति, आभास, प्रतीति ।
भानमती—[हि० स्त्री०] जादूगरनी ।
भानवी—[हि० स्त्री०] भानुजा, यमुना नदी ।
भानु—[सं० पु०] सूर्य, किरण, विष्णु, राजा ।
भानुज—[सं० पु०] शनि, यम, कर्ण, मनु ।
भानुजा—[सं० स्त्री०] यमुना नदी ।
भानुतनय—[सं०पु०] कर्ण, शनि, यम ।
भानुतनया—[सं० स्त्री०] यमुना ।
भानुतनूजा—[सं० स्त्री०] यमुना ।
भानुमत्—[सं० त्रि०] प्रकाशमान ।
भानुमती—[सं० स्त्री०] राजा भोज की कन्या जो इन्द्रजाल की विशेषज्ञा थी ।
भानुसुत—[सं० पु०] शनिश्चर, कर्ण, यम, मनु ।
भानुसुता—[सं० स्त्री०] यमुना ।
भाभर—[हि० पु०] पहाड़ों की तराई का वन ।
भाम—[सं० पु०] एक वर्णिक छन्द ।
भामा—[सं० स्त्री०] स्त्री, वामा ।
भामिनि—[सं० स्त्री०] पत्नी, स्त्री ।
भामिनि-विलास—[सं० पु०] पंडित राज जगन्नाथकृत एक काव्य-ग्रंथ ।
भारंगी—[सं० स्त्री०] एक जंगली पौधा जो औषधि के काम आता है ।
भार—[सं० पु०] उत्तरदायित्व, बोझा, बीस पंसेरी का माप ।
भारत—[सं० पु०] आर्यावर्त, भारतवर्ष, घोर युद्ध, लम्बी कथा, महाभारत का मूल ग्रंथ ।
भारतखंड—[सं० पु०] भारतवर्ष ।
भारतवर्ष—[सं० पु०] भारत खंड, आर्यावर्त, हिन्दुस्तान ।
भारती—[सं० स्त्री०]सरस्वती, वचन, वाणी, गिरा । ब्राह्मी, संन्यासियों का एक भेद ।
भारतीय—[सं०वि०] भारत सम्बन्धी ।
भारथी—[हि० पु०] सैनिक, योद्धा ।
भारद्वाज—[सं० पु०] ऋषि भरद्वाज के वंशज, द्रोणाचार्य ।
भारवाह—[सं० त्रि०] बोझ ढोने वाला ।
भारवि—[सं० पु०] किरातार्जुनीय काव्य के रचयिता एक संस्कृत-कवि ।
भाराक्रांत—[सं० वि०] बोझ से पीड़ित ।
भाराक्रांता—[सं० स्त्री०] एक वर्णिक छन्द ।
भारावलंबकत्व—[सं० पु०] पदार्थों के परमाणुओं का पारस्परिक आकर्षण ।
भार्गव—[सं० पु०] वैश्य जाति का एक भेद । शुक्राचार्य । भृगुवंशीय व्यक्ति । एक उपपुराण, जगदग्नि, परशुराम ।
भार्गवेश—[सं० पु०] परशुराम ।
भार्य्या—[सं० स्त्री०] स्त्री । पत्नी ।
भार्य्यातिक्रम—[सं० पु०] परस्त्री-गमन, स्त्रीत्याग, स्त्रीनाश ।
भाल—[सं० पु०] मस्तक, ललाट, कपाल ।
भालचन्द्र—[सं पु०] महादेवजी, शिवजी, गणेशजी ।
भाललोचन—[सं० पु०] शिवजी ।
भालुक—[सं० पु०] रीछ ।
भालुनाथ—[सं० पु०] जाम्बवंत ।
भालू—[हि० पु०] रीछ ।
भाव—[सं० पु०] विचार, अभिप्राय, मन की इच्छा, मुखकी मुद्रा या चेष्टा । चित्त, आत्मा, जन्म, प्रेम, स्वभाव, कल्पना, प्रकार, अवस्था, भावना, दर, भरोसा, सम्मान, आकृति, अस्तित्व ।
भावगति—[सं० स्त्री०] इच्छा, इरादा,

विचार।

भावगम्य—[सं० वि०] श्रद्धा, भक्ति या प्रेम से जानने योग्य। भावपूर्ण।

भावग्राह्य—[सं० वि०] श्रद्धा, भक्ति और प्रेम-भाव से ग्रहण करने योग्य।

भावना—[सं० स्त्री०] चित्त का एक संस्कार, मनसा, विचार, ध्यान, कल्पना।

भावनीय—[सं० वि०] भावना करने योग्य।

भावभक्ति—[सं० स्त्री०] सम्मान, सत्कार, श्रद्धा, प्रेम, आदर।

भाववाचक—[सं० पु०] वह संज्ञा जिससे किसी पदार्थ का गुण, दशा, स्वभावादि जाना जावे या किसी आधार का बोध।

भाववाच्य—[सं० पु०] वह वाक्य जिसमें भाव प्रधान हो और कर्त्ता तृतीयांश हो अथवा क्रिया का वह रूप जो सूचित करे कि वाक्य का उद्देश्य कोई भावमात्र है।

भावसंधि—[सं० स्त्री०] एक अलंकार जहाँ दो विरुद्ध भावों का मेल प्रकट हो।

भावशबलता—[सं० स्त्री०] एक अलंकार जिसमें कई भाव एक साथ प्रकट किये जायँ।

भावाभास—[सं० पु०] भाव का आभास मात्र प्रकट करने वाला एक अलंकार।

भावार्थ—[सं० पु०] अभिप्राय, किसी पद्य या वाक्य का मूल भावसूचक अर्थ।

भावालंकार—[सं०पु०] एक अलंकार।

भाविक—[सं० वि०] मर्मज्ञ, रहस्य जानने वाला।

भावित—[सं० वि०] विचारा हुआ।

भावी—[सं० स्त्री०] भविष्यत् काल, होनहार, आनेवाला समय।

भावुक—[सं०वि०] जिस पर भावों का शीघ्र प्रभाव पड़े। अधिक गहराई तक सोचने वाला।

भाषण—[सं० पु०] व्याख्यान, कथन, वक्तृता।

भाषांतर—[सं० पु०] अनुवाद।

भाषा—[सं० स्त्री०] वाणी, बोली, किसी समाज में प्रचलित लिखने और समझने का माध्यम। हिन्दी भाषा।

भाषाबद्ध—[सं० वि०] देश की वाणी में बना हुआ।

भाषासम—[सं० पु०] एक शब्दालंकार जिसमें कई भाषाओं में समान रूप से बोले जाने वाले शब्दों की योजना हो।

भाषित—[सं० वि०] वर्णित, कथित।

भाष्यकार—[सं० पु०] सूत्रों की व्याख्या करने वाला।

भास—[सं०पु०] प्रकाश, दीप्ति, किरण, चमक।

भासमान—[सं० वि०] दिखाई पड़ता हुआ।

भासांत—[सं० पु०] सूर्य, चन्द्रमा, पक्षी-विशेष। [वि०] रमणीय।

भासित—[सं० वि०] प्रकाशित, चमकदार।

भासुर—[सं० वि०] दीप्तिमान, प्रकाशवान।

भास्कर—[सं० पु०] सुवर्ण, सूर्य, अग्नि, शिव। पत्थर पर चित्र और बेल बूटे बनाना। वीर।

भास्कराचार्य—[सं० पु०] एक प्रसिद्ध ज्योतिषी और गणितज्ञ।

भास्करानन्द—[सं० पु०] एक प्रसिद्ध कान्यकुब्ज महात्मा।

भास्वर—[सं० पु०] सूर्य, दिन, प्रकाशमान।

भिक्षा—[सं० स्त्री०] याचना, माँगने से मिला अन्न या पदार्थ।

भिक्षापात्र—[सं० पु०] भीख माँगने का बर्तन।

भिक्षार्थी—[सं० पु०] याचक, भीख माँगने वाला।

भिक्षु—[सं० पु०] भिखारी, बौद्ध संन्यासी। [स्त्री०] भिक्षुणी।

भिखारिनी—[हि० स्त्री०] भिक्षुणी।

भिज्ञ—[सं० वि०] जानकार।

भिड़न्त—[हि० पु०] लड़ाई, मुठभेड़।

भित्ति—[सं० स्त्री०] दीवार। भीति। भय।

भिद—[सं० पु०] अन्तर। भेद।

भिदना—[हि० क्रि०] छेदा जाना। प्रविष्ट होना। घायल होना।

भिदिर—[हि० पु०] वज्र।

भिदुर—[सं० पु०] वज्र।

भिन्न—[सं० वि०] पृथक्। दूसरा।

भिन्नता—[सं० स्त्री०] पृथकता। अंतर। विलगता।

भिलाँवा—[हि० पु०] एक जंगली पेड़ जिसका फल औषधि के काम में आता है।

भिषक्—[सं० पु०] वैद्य। हकीम। भिषज्।

भी—[सं० स्त्री०] भय।

भीटा—[हि० पु०] ऊँची या टीलेदार भूमि।

भीति—[सं० स्त्री०] डर। भय।

भीम—[सं० पु०] भीमसेन जो वायु द्वारा कुन्ती से उत्पन्न हुए। विष्णु। शिव की आठ मूर्तियों में से एक।

भीमकाय—[सं० वि०] विशाल शरीरवाला।

भीमता—[सं० स्त्री०] भयानकता।

भीमराज—[हि० पु०] एक काले रंग का पक्षी।

भीमसेन—[सं० पु०] पांडवों में युधिष्ठिर से छोटे।

भीमसेनी एकादशी—[सं० स्त्री०] ज्येष्ठ और माघ के शुक्ल पक्ष की

एकादशी।

भीआथली—[सं० पु०] घोड़े की एक जाति।

भीरु—[सं० वि०] कायर। डरपोक।

भीरुता—[सं० स्त्री०] भय, कायरता।

भील—[हि० पु०] एक जंगली जाति।

भीषण—[सं० वि०] भयानक। उग्र।

भीषणता—[सं० स्त्री०] भयंकरता।

भीष्म—[सं०पु०] राजा शांतनु के पुत्र, भयंकर। गांगेय। देवव्रत।

भीष्मक—[सं० पु०] रुक्मिणी के पिता, विदर्भ-नरेश।

भीष्म-पंचक—[सं० पु०] कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णमासी तक के पाँच दिन जिनको लोग व्रत रखते हैं।

भीष्म-पितामह—[सं० पु०] गांगेय, राजा शान्तनु के पुत्र।

भुक्त—[सं० वि०] भोगा हुआ, खाया हुआ। अनुभवी।

भुक्ति—[सं० स्त्री०] भोजन, आहार, भौतिक सुख।

भुग्न—[सं० वि०] कुटिल, वक्र।

भुजंग—[सं० पु०] साँप, सर्प।

भुजंगपाश—[सं० पु०] नागपाश नामक एक प्राचीन अस्त्र।

भुजंगप्रयात—[सं० पु०] ४ यगण का एक वर्णिक छन्द।

भुजंगविजृंभित—[सं० पु०] एक वर्णिक छन्द।

भुजंगसंगता—[सं० स्त्री०] एक छन्द।

भुजंगा—[हि० पु०] एक काला पक्षी। साप।

भुजंगिनी—[सं० स्त्री०] गोपाल नामक एक छन्द, सर्पिणी।

भुजंगी—[सं० स्त्री०] नागिन। साँपिन।

भुज—[सं० पु०] बाहु, हाथ।

भुजग—[सं० पु०] सर्प।

भुजगनिसृता—[सं० स्त्री०] एक वर्णिक छन्द।

भुजगशिशुभृता—[सं० स्त्री०] एक वर्णिक वृत्ति।

भुजदण्ड—[सं० पु०] बाहुदण्ड, हाथ।

भुजपाश—[सं० पु०] गलबाही, गले में हाथ डालना।

भुजप्रतिभुज—[सं० पु०] सरल क्षेत्र की संमुख भुजायें।

भुजबंद—[सं० पु०] एक आभूषण, बाजूबंद।

भुजमूल—[सं० पु०] पक्खा, काँख।

भुजा—[सं० स्त्री०] हाथ, बाहु।

भुजाली—[हि० स्त्री०] खुखरी, एक छुरी।

भुवः—[सं० पु०] लोक, अंतरिक्ष, सूर्य और भूमि के अन्तर्गत।

भुव—[सं०पु०] आग, अग्नि। पृथ्वी।

भुवन—[सं० पु०] संसार, लोक, जन।

भुवनकोश—[सं०पु०] संसार, भूमंडल, पृथ्वी।

भुवनपति—[सं० पु०] राजा, ईश्वर, भूपति।

भुवनेश—[सं०पु०] अखिलेश, भुवनपति।

भुवर्लोक—[सं०पु०] लोक, अन्तरिक्ष।

भुवि—[सं० स्त्री०] पृथ्वी, भूमि।

भुशुण्डी—[सं० पु०] काकभुशुंडी, [स्त्री०] एक प्राचीन अस्त्र।

भूकंप—[सं० पु०] भूचाल, भूडोल।

भूखंड—[सं० पु०] पृथ्वीखंड।

भूगर्भ—[सं० पु०] पृथ्वी का भीतरी भाग, पृथ्वी-विद्या।

भूगर्भशास्त्र—[सं०पु०] पृथ्वी-विज्ञान।

भूगोल—[सं० पु०] पृथ्वी का गोला, वह शास्त्र या ग्रन्थ जिसमें पृथ्वी के स्वाभाविक भावों का वर्णन हो।

भूचर—[सं० पु०] शिव, एक सिद्धि, पृथ्वी पर चलने वाले।

भूचरी—[सं० स्त्री०] योग में समाधि की एक मुद्रा।

भूचाल—[सं० पु०] भूकंप, भूडोल।

भूटान—[हि० पु०] नैपाल के पूर्व में हिमालय का एक प्रदेश।

भूडोल—[हि० पु०] भूचाल, भूकम्प।

भूत—[सं० पु०] पाँच तत्व जिनसे सृष्टि बनी है। चराचर, पदार्थ, प्राणी। बीता हुआ। एक प्रकार के पिशाच। एक देव-योनि।

भूतत्व—[सं० पु०] भूत का धर्म, भूत होना। [वि०] पृथ्वी तत्व।

भूतत्वविद्या—[सं० स्त्री०] भूगर्भ शास्त्र, प्रेत-विद्या।

भूतनाथ—[सं० पु०] शिवजी।

भूतपति—[सं० पु०] शिवजी।

भूतपूर्व—[सं०वि०] बीते हुए समय का।

भूतभर्त्ता—[सं० पु०] शिवजी।

भूतभावन—[सं० पु०] शिवजी, विष्णु।

भूतभाषा—[सं० स्त्री०] प्रेतों की बोली, प्राचीन पैशाची भाषा, एक प्राचीन भाषा।

भूतयज्ञ—[सं० पु०] पंच यज्ञों में से एक, भूतबलि। बलिवैश्व।

भूतराज—[सं० पु०] शिवजी।

भूतल—[सं० पु०] धरातल, संसार, पृथ्वीतल।

भूत-बाधा—[सं० स्त्री०] भूतों के आक्रमण से उत्पन्न हुआ संकट।

भूतांकुश—[सं० पु०] कश्यप ऋषि।

भूतात्मा—[सं० पु०] परमेश्वर, शरीर, जीवात्मा।

भूति—[सं० स्त्री०] वैभव, संपत्ति, राज्यश्री, आठ सिद्धियाँ, अधिकता।

भूतृण—[सं० पु०] रूसा।

भूतेश—[सं० पु०] शिवजी।
भूतेश्वर—[सं० पु०] महादेवजी।
भूतोन्माद—[सं० पु०] भूत-प्रेत के कारण होनेवाला उन्माद।
भूदान—[सं० पु०] धरती का दान।
भूदेव—[सं० पु०] ब्राह्मण।
भूधर—[सं० पु०] पर्वत।
भूधराकार—[सं० वि०] पर्वताकार।
भूपति—[सं० पु०] राजा।
भूपाल—[सं० पु०] राजा, एक नगर, एक ताल।
भूपाली—[सं० स्त्री०] एक रागिनी।
भूभल—[हि० स्त्री०] गर्म राख, गर्म रेत।
भूभुज, भूभृत—[सं० पु०] राजा।
भूमंडल—[सं० पु०] पृथ्वी का घेरा।
भूमि—[सं० स्त्री०] पृथ्वी, महि, भू, देश, स्थान, आधार, योगी की दशाएँ।
भूमिका—[सं० स्त्री०] प्राक्कथन, वक्तव्य, परिचय, वेश बदलना।
भूमिज—[सं० वि०] पृथ्वी से उत्पन्न।
भूमिजा—[सं० स्त्री०] सीताजी।
भूमिनाग—[सं० पु०] एक सर्पाकार कीड़ा।
भूमिपति—[सं० पु०] राजा।
भूमिपुत्र—[सं० पु०] मंगल, कुज।
भूमिरुह—[सं० पु०] वृक्ष, पेड़।
भूमिसुत—[सं० पु०] मंगल, कुज, भौम।
भूमिसुता—[सं० स्त्री०] सीताजी, अवनिजा।
भूमिहार—[सं० पु०] ब्राह्मणों की एक जाति।
भूमीन्द्र—[सं० पु०] राजा।
भयः—[सं० अव्य०] पुनः, फिर।
भूयोभूयः—[सं० अव्य०] बारबार, फिर फिर, पुनः पुनः।
भूरजपत्र—[हि० पु०] भोज पत्र।
भूरि—[सं० पु०] ब्रह्मा, विष्णु, इंद्र, सुवर्ण, [वि०] बहुत अधिक।
भूरितेज—[सं० पु०] आग, सोना, सूर्य।
भूरिद—[सं० पु०] बहुत देनेवाला।
भूरिश्रवा—[सं० वि०] यशस्वी, कीर्तिवान्।
भूरुह—[सं० पु०] वृक्ष, पेड़।
भूर्जपत्र—[सं० पु०] भोज पत्र।
भूलोक—[सं० पु०] संसार, जगत।
भूशायी—[सं० वि०] मृतक, धराशायी।
भूषण—[सं० पु०] अलंकार, आभूषण, गहना।
भूषित—[सं० वि०] अलंकृत, विभूषित, सजाया हुआ।
भूसुर—[सं० पु०] ब्राह्मण, महिसुर।
भृंग—[सं० पु०] भौंरा, एक कीड़ा।
भृंगराज—[सं० पु०] एक काला पक्षी।
भृंगी—[सं० पु०] शिवजी का एक दास।
भृकुटि—[सं० स्त्री०] भौंह।
भृगु—[सं० पु०] एक विख्यात मुनि जिन्होंने विष्णु की छाती पर लात मारी थी, परशुराम, शिव, शुक्राचार्य।
भृगुकच्छ—[सं० पु०] एक तीर्थ, भड़ौंच नगर।
भृगुनाथ—[सं० पु०] परशुरामजी।
भृगुनायक—[सं० पु०] परशुरामजी।
भृगुपति—[सं० पु०] परशुरामजी।
भृगुमुख्य—[सं० पु०] परशुरामजी।
भृगुरेखा—[सं० स्त्री०] भृगुमुनि के पदप्रहार का विष्णु भगवान् की छाती पर चिह्न।
भृगुसंहिता—[सं० पु०] भृगुमुनि कृत एक प्रसिद्ध ज्योतिषग्रन्थ।
भृत—[सं० पु०] सेवक, दास।
भृति—[सं० स्त्री०] चाकरी, पोष, वेतन, मजदूरी।
भृश—[सं० क्रि० वि०] अधिक।
भेद—[सं० पु०] रहस्य, मर्म, तात्पर्य, अंतर, फूट, प्रकार। छेदने की क्रिया।
भेदक—[सं० वि०] छेदनेवाला, रेचक।
भेदन—[सं० पु०] छेदना। नीति।
भेदभाव—[सं० पु०] अन्तर, मनमुटाव।
भेदी—[सं० पु०] भेदिया, जासूस।
भेदीसार—[सं० पु०] बरमा, बढ़इयों का छेद करने का एक औज़ार।
भेद्य—[सं० वि०] जो छेदा जा सके, भेदने योग्य।
भेरी—[सं० स्त्री०] ढोल, डंका, दुंदुभि।
भेषज—[सं० पु०] औषध।
भैक्ष—[सं० पु०] भिक्षा, भीख माँगने की क्रिया।
भैक्षचर्या—[सं० स्त्री०] भिक्षा माँगने का काम।
भैरव—[सं० पु०] संगीत का एक राग, महादेवजी का एक गण। [वि०] भयंकर।
भैरवनाथ—[सं० पु०] महादेव जी के एक प्रमुख गण।
भैरवी—[सं० स्त्री०] दुर्गा, चामुंडा। एक राग।
भैरवीचक्र—[सं० पु०] वाम मार्गियों की मंडली।
भैरवीयातना—[सं० स्त्री०] मरते समय भैरव द्वारा दिया गया कष्ट।
भैषज—[सं० पु०] औषधि।
भोक्तव्य—[सं० वि०] भोगने योग्य।
भोक्ता—[सं० वि०] भोगनेवाला।
भोक्तृ—[सं० वि०] खानेवाला। [पु०] स्वामी, विष्णु।
भोग—[सं० पु०] सुख-दुख का अनुभव, विलास, संभोग, पालन, भोजन, पाप-पुण्य का फल। धन, देह, खाद्य

पदार्थ, फण।

भोगबंधक—[सं० पु०] दखली रेहन।

भोगविलास—[सं० पु०] विषय-भोग, अमोद-प्रमोद। सुख-चैन।

भोगी—[सं० पु०] विलासी, आनन्द करनेवाला।

भोग्य—[सं० वि०] भोगने योग्य।

भोग्यमान—[सं० वि०] जो अभी भोगा न गया हो।

भोज—[सं० पु०] सम्मिलित भोजन करना। कान्यकुब्ज के राजा।

भोजक—[सं० पु०] विलासी, भोग करनेवाला।

भोजदेव—[सं० पु०] कान्यकुब्ज का प्रसिद्ध राजा।

भोजन—[सं० पु०] खाद्य पदार्थ।

भोजनालय—[सं० पु०] रसोईघर। भोजनशाला।

भोजपत्र—[हि० पु०] प्राचीनकाल में कागज का काम देनेवाली एक वृक्ष की छाल।

भोजपुरी—[हि० स्त्री०] राजा भोज की नगरी और वहाँ की भाषा, भोजपुर का निवासी।

भोजविद्या—[सं० स्त्री] भानुमती का खेल। इंद्रजाल। जादूगरी।

भोज्य—[सं० पु०] खाद्य पदार्थ।

भौगोलिक—[सं० वि०] भूगोल संबंधी।

भोज्य—[सं० पु०] केवल स्वार्थ-सुख के लिये किया जानेवाला राज्य।

भौतिक—[सं० वि०] पार्थिव। पाँच भूतों से बना हुआ। शारीरिक। सांसारिक।

भौतिकविद्या—[सं० स्त्री०] भौतिक पदार्थ-विज्ञान। भूतों के बुलाने या हटाने की विद्या।

भौतिकसृष्टि—[सं० स्त्री०] सांसारिक उत्पत्ति।

भौम—[सं० वि०] भूमि-संबंधी। भूमि से उत्पन्न।

भौमवार—[सं० पु०] मंगलवार।

भौमिक—[सं० पु०] जमींदार।

भ्रंश—[सं० पु०] पतन। ध्वंस।

भ्रकुटि—[सं० स्त्री०] भौंह। भृकुटी।

भ्रम—[सं० पु०] संदेह। संशय। धोखा। भ्रांति। मिथ्या ज्ञान।

भ्रमण—[सं० पु०] विचरण। घूमना-फिरना। चक्कर।

भ्रममूलक—[सं० वि०] भ्रमात्मक। संशयात्मक।

भ्रमर—[सं० पु०] भौंरा।

भ्रमरविलसिता—[सं० स्त्री०] एक छंद।

भ्रमरावली—[सं० स्त्री०] भौंरों का समूह।

भ्रमवात—[सं० पु०] सदा घूमनेवाला। आकाश का वायुमंडल।

भ्रमात्मक—[सं० वि०] संदेहजनक। जिससे भ्रम पैदा हो।

भ्रमी—[सं० वि०] जिसे भ्रम हुआ हो।

भ्रष्ट—[सं० वि०] पतित, दूषित, बुरा।

भ्रष्टा—[सं०स्त्री०] कुलटा, छिनाल।

भ्रष्टाचार—[सं० स्त्री०] बुरा व्यवहार।

भ्रांत—[सं० वि०] व्याकुल, भ्रम में पड़ा हुआ। [पु०] तलवार का एक हाथ।

भ्रांतापह्नुति—[सं० स्त्री०] एक अर्थालंकार जिसमें भ्रान्ति को मिटाने के लिए सत्य वस्तु का वर्णन हो।

भ्रांति—[सं०स्त्री०] भ्रम, सन्देह, धोखा, उन्माद, एक अर्थालंकार जिसमें दो वस्तुओं के साम्य के कारण एक भ्रम से दूसरी वस्तु समझने का कथन हो।

भ्राता—[सं० पु०] भाई।

भ्रातृत्व—[सं० पु०] भाईपन, बन्धुत्व।

भ्रातृद्वितीया—[सं० स्त्री०] यम-द्वितीया, भैया दूज।

भ्रातृपुत्र—[सं० पु०] भतीजा।

भ्रातृभाव—[सं० पु०] भाईचारा।

भ्रामक—[सं० वि०] बहकाने वाला, भ्रम में लाने वाला।

भ्रामर—[सं० पु०] मधु, शहद, दोहा का दूसरा प्रकार।

भ्रू—[सं० स्त्री०] भौंह।

भ्रूण—[सं० पु०] गर्भ का बच्चा।

भ्रूणहत्या—[सं० स्त्री०] गर्भ के बच्चे को मार डालना।

भ्रूभंग—[सं० पु०] क्रोध करना, त्योरी चढ़ाना। भौंहें टेढ़ी करना।

— :&: —

म

मंगता—[हि० पु०] भिक्षुक, याचक, भिखारी ।

मंगनी—[हि० स्त्री०] ब्याह पक्का करने की एक रीति । लौटाने के वादे पर ली गयी वस्तु ।

मंगल—[सं० पु०] सौर जगत का एक ग्रह, शुभ कार्य, कल्याण, इच्छा का पूर्ण होना ।

मंगल कलश—[सं० पु०] शुभ कार्यों के समय देव पूजा के लिये जल से भरा हुआ कलश या घट ।

मंगल-कामना—[सं०स्त्री०] कल्याण की इच्छा ।

मंगलवार—[सं० पु०] सप्ताह का एक दिवस ।

मंगलसूत्र—[सं० पु०] रक्षा-बन्धन, देव-प्रसाद के रूप में बाँधा गया तागा ।

मंगल-स्नान—[सं० पु०] कल्याण की इच्छा से होने वाला स्नान ।

मंगला—[सं० स्त्री०] पार्वती जी ।

मंगलाचरण—[सं० पु०] किसी शुभ काय के आरम्भ में पढ़े जाने वाले मंगलमय छन्द या श्लोक । देवस्तुति ।

मंगलामुखी—[सं० स्त्री] पतुरिया, वेश्या ।

मंगली—[सं० वि०] जन्म पत्र का एक अशुभ योग ।

मंगोल—[पु०] एशिया के पूर्वीय देशों की एक जाति, मंगोलिया के निवासी ।

मंच, मंचक—[सं० पु०] खाट, पीढ़ा, मंडप, कुर्सी ।

मंजन—[सं० पु०] स्नान । दाँत उजले करने का चूर्ण ।

मंजरी—[सं० स्त्री०] फूलों की बाल, नया कल्ला, आम की बौर ।

मंजिष्ठा—[सं० स्त्री०] मजीठ, मँजीठ ।

मंजीर—[सं० पु०] मँजीरा, एक बाजा, घुँघरू ।

मंजु—[सं० वि०] मनोहर, सुन्दर ।

मंजुघोष—[सं० पु०] एक बौद्ध आचार्य, सुन्दर शब्द ।

मंजुल—[सं० वि०] मनोहर, सुन्दर ।

मंजुश्री—[सं० पु०] मनोहर कान्ति, मंजुघोष ।

मंजूषा—[सं० स्त्री०] पिटारी, डिब्बा, सन्दूक, पिंजड़ा ।

मंड—[सं० पु०] माँड़, भात का पानी ।

मंडन—[सं० पु०] प्रमाण सहित पुष्टि करना, सजाना, शोभा देना ।

मंडप—[सं०पु०] यज्ञस्थल, विश्राम-गृह, शामियाना, चंदोवा ।

मंडल—[सं० पु०] परिवेष, गोला, वृत्त, परिधि, सूर्य और चंद्र के चारों ओर बादल का गोल घेरा । क्षितिज । समूह ।

मंडलाकार—[सं० वि०] गोल ।

मंडली—[सं० स्त्री०] समूह, समाज, बट वृक्ष, बिल्ली, सूर्य ।

मंडलीक—[सं० पु०] बारह राजाओं के मंडल का स्वामी ।

मंडलेश्वर—[सं० पु०] मांडलीक, मंडलीक ।

मंडित—[सं०वि०] शोभित, आभूषित, सजाया हुआ, प्रतिपादित ।

मंडूक—[सं० पु०] मेढक, संकीर्ण बुद्धि वाला, दोहा छन्द का ५वां प्रकार ।

मंडूर—[सं० पु०] गलाये हुए लोहे का मैल, लौहकीट ।

मंतव्य—[सं० पु०] विचार, मत, मानने योग्य ।

मंत्र—[सं० पु०] वेद की ऋचा, वेदों के देवाधिराधना वाक्य, जिनसे देवता प्रसन्न हों । परामर्श, गोपनीय ।

मंत्रकार—[सं० पु०] ऋषि, मंत्र रचने वाला ।

मंत्रणा—[सं० स्त्री०] परामर्श, राय, कई व्यक्तियों द्वारा विचार ।

मंत्र-विद्या—[सं० स्त्री०] मंत्र-शास्त्र, तंत्र-विद्या ।

मंत्र-संहिता—[सं० स्त्री०] वेदों का वह भाग जिसमें मंत्र संग्रहीत हैं ।

मंत्रित—[सं० वि०] मंत्र द्वारा संस्कृत, आमंत्रित ।

मंत्रिता—[सं० स्त्री०] मंत्री का पद, मंत्रित्व ।

मंत्रित्व—[सं० पु०] मंत्री का पद या कार्य । मंत्रित्व ।

मंत्री—[सं० पु०] सचिव, राज्य कार्यों में राय देने वाला, आमात्य, सलाहकार ।

मंथ—[सं० पु०] विलोड़ना, मथना, मलना, हिलाना ।

मंथन—[सं० पु०] मथना, विलोना, तत्त्वान्वेषण ।

मंथर—[सं० पु०] मंद, मूर्ख, मंथ-ज्वर, नीच ।

मंथरा—[सं० स्त्री०] कैकेयी की दासी ।

मंथान—[सं० पु०] मथना, एक वर्णिक छन्द ।

मंद—[सं वि०] शिथिल, धीमा, मूर्ख, आलसी ।

मंदभाग्य—[सं० वि०] दुर्भाग्य, अभागा ।

मंदर—[सं० पु०] स्वर्ग, मंदार, एक पर्वत जिससे समुद्र मंथन हुआ था, दर्पण एक वर्णिक छन्द । धीमा ।

मंदरगिरि—[सं० पु०] मंदराचल।
मँदरा—[सं० वि०] ठिगना, नाटा, बावना।
मंदरा—[हि० पु०] एक बाजा।
मंदराचल—[सं० पु०] मंदर पर्वत।
मंदा—[हि०] धीमा, आलसी, सस्ता, शिथिल।
मंदाकिनी—[सं० स्त्री०] चित्रकूट के निकट बहनेवाली पयस्विनी नदी, आकाश-गंगा। १२ वर्णों का एक वृत्त।
मंदाक्रान्ता—[सं० स्त्री०] १७ वर्णों का एक वर्णिक छन्द। १० और ८ वर्णों पर यति के साथ एक नगण, दो भगण, दो तगण और दो गुरु से १८ वर्णों का छन्द।
मंदाग्नि—[सं० स्त्री०] अपच, बदहज़मी।
मंदार—[सं० पु०] स्वर्ग का एक देव वृक्ष। हाथी, वैकुंठ, मंदराचल।
मंदारमाला—[सं० स्त्री०] २२ वर्णों का एक वर्णिक छन्द।
मंदिर—[सं० पु०] देवालय, मकान, घर, मंदिल।
मंदी—[हि० स्त्री०] सस्ता होना, किसी वस्तु की दर का गिरना।
मंदोदरी—[सं० स्त्री०] रावण की पटरानी, मय दानव की कन्या।
मंद्र—[सं० पु०] स्वरों के तीन भेदों में से एक, गहरी ध्वनि। [वि०] सुन्दर, धीमा, प्रसन्न, गंभीर।
मंशा—[हि० स्त्री०] इच्छा, चाह, आशय, प्रयोजन, अभिप्राय।
मकरंद—[सं० पु०] पराग, मंजरी, फूलों का रस, माधवी।
मकर—[सं० पु०] मगर, एक जलजंतु, मछली, एक राशि, एक सेना-व्यूह, छप्पय का ३९ वाँ भेद। माघ का मास।
मकरध्वज—[सं० पु०] कामदेव, चन्द्रोदय रस, हनुमानजी के स्वेदबिन्दु पान से एक मछली से उत्पन्न पुत्र। रससिंदूर।
मकरसंक्रान्ति—[सं० स्त्री०] वह समय जब सूर्य मकर राशि में प्रविष्ट होता है।
मकराकृत—[सं० वि०] मछली या मगर के आकार का।
मक्का—[पु०] मुसलमानों का एक तीर्थ, मकई। मक्का नामक एक अन्न।
मक्खीचूस—[हि० पु०] अति कृपण, भारी कंजूस। लोभी।
मक्षिका—[सं० स्त्री०] मक्खी।
मख—[सं० वि०] यज्ञ।
मग—[हि० पु०] पथ, राह, रास्ता।
मगण—[सं० पु०] आठ वर्णिक गणों में से एक शुभ गण जिसमें तीनों वर्ण गुरु होते हैं।
मगध—[सं० पु०] बिहार के दक्षिणी प्रान्त का पुराना नाम। बंदीजन, कीकट।
मगन—[हि० वि०] लीन, निमग्न, प्रसन्न।
मग्न—[सं० वि०] तन्मय, लिप्त, प्रसन्न, निमज्जित।
मघन—[हि० पु०] महक, सुगंध।
मघवा—[सं० पु०] इन्द्र, देवराज।
मघवाप्रस्थ—[सं० पु०] दिल्ली, इन्द्रप्रस्थ।
मघा—[सं० स्त्री०] सत्ताईस नक्षत्रों में से एक नक्षत्र।
मचान—[सं० पु०] मंच, उच्चासन, शिकार खेलने या खेती की रक्षा के लिये बनाया गया ऊँचा स्थान।
मछरंगा—[हि० पु०] एक जल-पक्षी, राम चिड़िया।
मजीठ—[हि० स्त्री०] एक लता जिसकी जड़ से लाल रंग निकलता है।
मज्जन—[सं० पु०] स्नान, नहाना।
मझधार—[हि० स्त्री०] नदी के बीच की धारा।
मझला—[हि० वि०] बीच का।
मठ—[सं० पु०] मन्दिर, सन्तों के रहने का स्थान।
मठाधीश—[सं० पु०] महन्त, मठधारी।
मणि—[सं० स्त्री०] अमूल्य रत्न, श्रेष्ठ मनुष्य, मनि।
मणिकर्णिका—[सं० स्त्री०] काशी का एक तीर्थस्थान।
मणिकार—[सं० पु०] जौहरी। आभूषणादि निर्माता।
मणिगुण—[सं० पु०] शशिकला, एक वर्णिक छन्द। लज्जा।
मणिगुणनिकर—[सं० पु०] चन्द्रवती छन्द।
मणिग्रीव—[सं० पु०] कुबेर का पुत्र।
मणिजटित—[सं० वि०] मणिमंडित। रत्नों से जड़ा हुआ।
मणिधर—[सं० पु०] साँप।
मणिपुर—[सं० पु०] नाभि के समीप का एक चक्र।
मणिबंध—[सं० पु०] कलाई।
मणिमंडप—[सं० पु०] रत्नमय गृह। मणिमन्दिर।
मणिमाला—[सं० स्त्री०] मणियों का हार। १२ वर्णों का एक वृत्त।
मणिहार—[सं० पु०] मणि-माला।
मणियाना—[सं० पु०] कुबेर का दास।
मणी—[सं० पु०] साँप, सर्प।
मतंग—[सं० पु०] बादल। हाथी। एक ऋषि।
मतंगी—[सं० पु०] हाथी का सवार।
मत—[सं० पु०] राय, भाव, विचार, आशय। पंथ, संप्रदाय। नहीं।
मतमतांतर—[सं० पु०] अनेक मत। मतभेद।

मतविरोधी—[सं० पु०] धर्म विरोधी। अधर्मी। विधर्मी।

मतवाला—[हि० पु०] पागल। मद-मस्त। धन आदि के गर्व में चूर।

मताधिकार—[सं० पु०] सम्मति या राय देने का अधिकार।

मतानुयायी—[सं० पु०] मत को माननेवाला। मतावलंबी।

मति—[सं० स्त्री०] सम्मति। सलाह। समझ। राय।

मतिमंत—[सं० पु०] बुद्धिमान्। मतिवंत।

मतिमान्—[सं० वि०] बुद्धिमान्। समझदार।

मतिहीन—[सं० वि०] बुद्धिहीन। मूर्ख।

मत्कुण—[सं० पु०] खटमल।

मत्त—[सं० वि०] पागल। मतवाला। मस्त। उन्मत्त।

मत्तकामिनी—[सं० स्त्री०] सुभार्या। अच्छी स्त्री।

मत्तगयंद—[सं० पु०] सवैया छंद का एक भेद।

मत्तमयूर—[सं० पु०] १५ वर्णों का एक वृत्त।

मत्तमातंगलीलाकर—[सं० पु०] एक प्रकार का दण्डक छंद।

मत्तसमक—[सं० पु०] एक प्रकार का चौपाई छंद।

मत्ता—[सं० स्त्री०] मदिरा। १२ वर्णों का वृत्त।

मत्ताक्रीडा—[सं० स्त्री०] २३ वर्णों का एक छंद या वृत्त।

मत्सर—सं० पु०] डाह। द्वेष। क्रोध। जलन।

मत्सरता—[सं० स्त्री०] जलन। डाह।

मत्सरी—[सं० पु०] मत्सरपूर्ण। जलनेवाला। डाही।

मत्स्य—[सं० पु०] विष्णु का प्रथम अवतार। मीन। मछली। राजा विराट का देश। छप्पय का २३ वाँ भेद।

मत्स्यगंधा—[सं० स्त्री०] व्यास-माता। सत्यवती।

मत्स्यपुराण—[सं० पु०] १८ पुराणों में से एक।

मत्स्यवित्ता—[सं० स्त्री०] ओषधि-विशेष। कुटनी।

मत्स्यांड—[सं० पु०] मछली का अंडा।

मत्स्यावतार—[सं० पु०] विष्णु का प्रथम अवतार।

मत्स्येन्द्रनाथ—[सं० पु०] गोरखनाथ के गुरु मत्स्येन्द्रनाथ। मछन्दरनाथ। हठयोगी।

मथन—[सं० पु०] विलोना। मंथन। मारनेवाला।

मथनी—[हि० स्त्री०] दही मथने की मटकी या काठ की मथानी।

मथानी—[हि० स्त्री०] मंथन-दंड। रई।

मथित—[सं० वि०] विलोड़ा हुआ। मथा हुआ।

मथुरा—[हि० स्त्री०] सात प्राचीन पुरियों में से एक पुरी जो व्रज में यमुना तट पर स्थित है।

मथुराधिप—[सं० पु०] कंस। कृष्णजी। मथुरानरेश।

मथुरेश [सं० पु०] श्रीकृष्ण। कंस।

मद—[सं० पु०] उन्मत्तता। मद्य। वीर्य्य। कस्तूरी। आनन्द। गर्व। हाथी का दान। [वि०] मतवाला।

मदक—[हि० पु०] अफीम के सत से बनी कोई मादक वस्तु।

मदकट—[सं० पु०] चीनी। खाँड़। शक्कर।

मदन—[सं० पु०] कामदेव। कंदर्प। प्रेम। भ्रमर। सारिका। कामक्रीड़ा।

मदनकदन—[सं० पु०] शिवजी। महादेवजी।

मदनगोपाल—[सं० पु०] श्रीकृष्णजी।

मदनचतुर्दशी—[सं० स्त्री०] चैत्रशुक्ल चतुर्दशी।

मदन-जल—[सं० पु०] वीर्य। काम-रस। मद-नीर।

मदन-ताप [सं० पु०] काम-ज्वर। वासना का आवेश।

मदन-दाप—[सं० पु०] कंदर्प-दर्प।

मदनपाठक—[सं० पु०] कोकिल। कोयल।

मदनफल—[सं० पु०] मैन फल।

मदनबंधु—[सं० पु०] मौलसिरी, बकुल।

मदनबाण—[सं० पु०] एक प्रकार के बेले का फूल, कामदेव के बाण।

मदनमंदिर—[सं० पु०] योनि, भग।

मदन-मनोरमा—[सं० स्त्री०] रति, सवैया का एक भेद।

मदन-मनोहर—[सं० पु०] मनहर, श्रीकृष्ण जी, दण्डक छन्द का एक भेद। [वि०] कामदेव से भी सुन्दर।

मदनमल्लिका—[सं० पु०] मल्लिका नाम का एक छन्द।

मदनमस्त [सं० वि०] काम-दर्प से प्रमत्त, चंपा की जाति का एक फूल।

मदनमहोत्सव—[सं० पु०] चैत्र शुक्ल द्वादशी से चतुर्दशी तक होनेवाला एक प्राचीन उत्सव।

मदनमित्र—[सं० पु०] चन्द्रमा।

मदनमोदक—[सं० पु०] कामोद्दीपक पौष्टिक ओषधियों के लड्डू, सवैया छन्द का एक भेद।

मदनमोहन—[सं० पु०] श्रीकृष्ण।

मदनललिता—[सं० स्त्री०] एक वर्णिक वृत्त।

मदनसद्म—[सं० पु०] योनि, भग, मदनसदन।

मदनहरा—[सं० स्त्री०] ४०

मात्राओं का एक छन्द ।

मदमत्त—[सं० वि०] मतवाला, मस्त ।

मदलेखा—[सं० स्त्री०] एक वर्णिक वृत्त ।

मदांध—[सं० वि०] अभिमानी, मदोन्मत्त, नशे में चूर ।

मदार—[सं० पु०] आक ।

मदारी—[हि०पु०] बाजीगर, कलंदर ।

मदालसा—[सं० स्त्री०] विश्वावसु गंधर्व की पुत्री जिसे पातालकेतु दानव पाताल ले गया था ।

मदिरा—[सं० स्त्री०] सुरा, वारुणी, शराब, उमा, दिवा, मालिनी छन्द ।

मदीय—[सं० वि०] मेरा ।

मदोन्मत्त—[सं० वि०] मदांध, मद या गर्व से प्रमत्त ।

मद्धे—[हि० अव्य०] संबन्ध में, विषय में, बीच में । मध्ये ।

मद्य—[सं०पु०] मदिरा, वारुणी, सुरा ।

मद्यप—[सं० वि०] मदिरा पीनेवाला ।

मद्र—[सं० पु०] उत्तर-कुरुदेश, रावी और झेलम नदी के बीच का देश ।

मधु—[सं०पु०] मकरंद, शहद, जल, मदिरा, अमृत, मुलहटी, शिव, बसंत ऋतु, चैत्रमास ।

मधुकर—[सं० पु०] भ्रमर, मधुमक्खी, एक प्रकार का चावल ।

मधुकरी—[सं०स्त्री०] भौंरी, वह भिक्षा जिसमें थोड़ा पका अन्न लिया जावे ।

मधुकैटभ—[सं० पु०] मधु और कैटभ नामक दो दैत्यबन्धु जिन्हें विष्णु ने नष्ट किया था ।

मधुकोष—[सं० पु०] कुसुमों में रस का स्थान, मधु का छत्ता ।

मधुचक्र—[सं० पु०] मधुमक्खी का छत्ता ।

मधुच्छद—[सं० स्त्री०] मोर की शिखा, शिखा बूटी, मोर ।

मधुजा—[सं० स्त्री०] पृथ्वी, भूमि ।

मधुप—[सं०पु०] भ्रमर, उद्धव, भौंरा ।

मधुपति—[सं० पु०] श्रीकृष्ण ।

मधुपर्क—[सं० पु०] दही, घी, शहद, चीनी और जल का मिला हुआ पदार्थ जो नैवेद्य में काम आता है ।

मधुपर्शी—[सं० पु०] पका और रस भरा फल ।

मधुपुर—[सं० स्त्री०] मथुरा नगरी ।

मधुपुष्प—[सं० पु०] मौहा ।

मधुप्रमेह—[सं० पु०] मूत्र का एक बुरा रोग ।

मधुबन—[सं० पु०] ब्रज का एक वन, सुग्रीव का बाग ।

मधुभार—[सं० पु०] एक मात्रिक छन्द ।

मधुमक्खी—[हि० स्त्री०] शहद एकत्र करने वाली मक्खी ।

मधुमक्षिका—[सं० स्त्री०] मधुमक्खी ।

मधुमती—[सं० स्त्री०] एक वर्णिक वृत्त ।

मधुमालती—[सं० स्त्री०] मालती लता ।

मधुमेह—[सं० पु०] मूत्र सम्बन्धी एक रोग ।

मधुयष्टि—[सं० स्त्री०] मुलहटी, मुलैठी ।

मधुर—[सं० वि०] मृदुल, मीठा, सुखद, सुन्दर ।

मधुरता—[सं० स्त्री०] मृदुलता, सुन्दरता, मिठास ।

मधुरा—[सं० पु०] मदरास प्रान्त का एक प्राचीन नगर मदुरा ।

मधुराज—[सं० पु०] भ्रमर, भौंरा ।

मधुरान्न—[सं० पु०] मिष्ठान्न, मिठाई ।

मधुरिमा—[सं० स्त्री०] सुन्दरता, मिठास ।

मधुरिपु—[सं० पु०] विष्णु, कृष्ण ।

मधुवन—[सं० पु०] सुग्रीव का वन, गोकुल के समीप यमुना तट पर एक वन ।

मधुवामन—[सं० पु०] भ्रमर, भौंरा ।

मधुव्रत—[सं० पु०] भ्रमर, भौंरा ।

मधुशर्करा—[सं० पु०] शहद की चीनी ।

मधुसखा—[सं० पु०] कामदेव ।

मधुसूदन—[सं० पु०] श्रीकृष्ण, मधुरिपु ।

मधुसेवी—[सं० पु०] भ्रमर ।

मधुहंता—[सं० पु०] विष्णु, कृष्ण ।

मधूक—[सं० पु०] मौहा, दाख ।

मधूकरी—[हि०स्त्री०] बाटी, मधुकरी ।

मध्य—[सं० पु०] बीच का भाग, अंतर, कमर, १७ वर्ष से ७० वर्ष तक की अवस्था ।

मध्यतापिनी—[सं० स्त्री०] एक उपनिषद् ।

मध्यदिवस—[सं० पु०] दोपहर ।

मध्यम—[सं० वि०] बीच का, औसत दर्जे का । संगीत के स्वरों में से चौथा स्वर । क्रुद्ध नायिका पर अनुराग न प्रकट करने वाला उपपति ।

मध्यमपदलोपी—[सं० पु०] लुप्त पद समास, वह समास जिसमें दो पदों के बीच संबन्ध-सूचक का लोप हो जाता है ।

मध्यमपुरुष—[सं० पु०] व्याकरण के अनुसार वह पुरुष जिससे बात चीत की जाय ।

मध्यमा—[सं० स्त्री०] नायिका का एक भेद, बीच की उँगली ।

मध्यलोक—[सं० पु०] पृथ्वी, भूलोक, मर्त्य लोक ।

मध्यवर्त्ती—[सं० वि०] मध्यस्थ, बीच में रहने वाला ।

मध्यस्थ—[सं० पु०] बीच में रहकर

संघर्ष ।

मध्यस्थल—[सं० पु०] कमर, बीच का स्थान ।

मध्या—[सं० स्त्री०] वह नायिका जिसमें लज्जा, और काम सम रूप में हो ।

मध्याह्न—[सं० पु०] मध्य दिवस, मध्य दिन, दोपहर ।

मध्वरि—[सं० पु०] श्रीकृष्ण, विष्णु ।

मध्वाचार्य—[सं० पु०] वैष्णवमत के एक विख्यात आचार्य । मध्व-संप्रदाय-प्रवर्त्तक ।

मनःशील—[सं० पु०] मैनसिल ।

मन—[सं० पु०] अन्तःकरण के चार भागों में से संकल्प-विकल्प के होने का भाग । चित्त, इच्छा, विचार, संकल्प । रत्न ।

मनका—[हि० पु०] माला का दाना ।

मनकामना—[हि० पु०] मनो कामना, इच्छा ।

मनगढ़न्त—[हि०वि०] कपोल-कल्पित ।

मनजात—[सं० पु०] मनोज, मनसिज, कामदेव ।

मनन—[सं० पु०] गूढ़ाध्ययन, चिन्तन, भली प्रकार पढ़ना और सोचना ।

मननशील—[सं० वि०] विचारवान, चिंतनशील ।

मनभावन—[हि० वि०] प्रिय, जो अच्छा लगे ।

मनमोदक—[हि० पु०] अपनी प्रसन्नता के लिए असंभव कल्पनाएँ ।

मनमोहन—[हि० वि०] प्रिय, मन को आकर्षित करने वाला ।

मनसिज—[सं० पु०] कामदेव ।

मनसुख—[सं० पु०] मन को प्रसन्न करने वाला ।

मनस्क—[सं० पु०] छोटा मन ।

मनस्ताप—[सं० पु०] आंतरिक दुख, पश्चात्ताप ।

मनस्विता—[सं० स्त्री०] बुद्धिमत्ता, स्वेच्छानुकूलता, शूरता ।

मनस्वी—[सं० वि०] बुद्धिमान, वीर ।

मनीषा—[सं० स्त्री०] ज्ञान, मति, बुद्धि ।

मनीषी—[सं० वि०] पण्डित, ज्ञानी, बुद्धिमान ।

मनु—[सं० पु०] आदि पुरुष, मन या अंतःकरण, ब्रह्मा के चौदह पुत्र जो मनुष्य-समाज के मूल पुरुष माने गये ।

मनुज—[सं० पु०] मनुष्य, मानव ।

मनुष्य—[सं० पु०] आदमी, मनुज ।

मनुष्यता—[सं० स्त्री०] मनुष्यत्व, शिष्टता, करुणा, शील, दया ।

मनुष्यत्व—[सं० पु०] पुरुषत्व, मनुष्यता, शिष्टता, शील ।

मनुष्यलोक—[सं० पु०] भूलोक, मर्त्य लोक, मानव-लोक ।

मनुस्मृति—[सं० स्त्री०] मनु द्वारा रचित मानव-धर्म्म-शास्त्र ।

मनुहार—[हि० स्त्री०] आदर-सत्कार, विनती, रुष्ट को मनाकर प्रसन्न करने के लिये विनय ।

मनोकामना—[हि० स्त्री०] मन की इच्छा, अभिलाषा ।

मनोगत—[सं० वि०] मन की बात, मन का भाव । [पु०] कामदेव ।

मनोगति—[सं० स्त्री०] चित्त-वृत्ति, मन की गति । इच्छा ।

मनोज—[सं० पु०] मदन, मनसिज, कामदेव ।

मनोजव—[सं० वि०] मन की गति के समान वेग वाला, अति वेगवान ।

मनोज्ञ—[सं० वि०] मनोहर, सुन्दर ।

मनोदेवता—[सं० पु०] विवेक, विचार । संयम ।

मनोनिग्रह—[सं० पु०] मन को वश में रखना । संयम ।

मनोनीत—[सं० वि०] मन के अनुकूल चुना हुआ ।

मनोभव—[सं० पु०] चन्द्रमा, अनंग, कामदेव, मदन ।

मनोमय-कोश—[सं० पु०] पाँच कोशों में से तृतीय कोश जिसके अन्तर्भूत मन, अहंकार और कर्मेन्द्रियाँ मानी गई हैं ।

मनोयोग—[सं० पु०] मन की सब वृत्तियों को किसी एक वस्तु में केन्द्रित करना ।

मनोरंजक—[सं० वि०] मन को हर्षित करने वाला ।

मनोरंजन—[सं० पु०] मनो-विनोद, मन को प्रसन्न करने का भाव ।

मनोरथ—[सं० पु०] कामना, अभिलाषा, इच्छा ।

मनोरम—[सं० वि०] मनोहर, सुन्दर । [पु०] सखी छन्द का एक भेद ।

मनोरमा—[सं० स्त्री०] सात सरस्वतियों में से चौथी सरस्वती, एक छन्द ।

मनोराज—[हि० पु०] मानसिक कल्पना, कल्पना-लोक ।

मनोलौल्य—[सं० पु०] मन की चंचलता ।

मनोवांछा—[सं० स्त्री०] मनोकामना ।

मनोवांछित—[सं० वि०] अभिलषित, अभीष्ट, इच्छित ।

मनोविकार—[सं० पु०] काम, क्रोध, लोभ आदि मन के विकार ।

मनोविज्ञान—[सं० पु०] मनोवृत्तियों की विवेचना करनेवाला शास्त्र ।

मनोवृत्ति—[सं० स्त्री०] मनोविकार ।

मनोवेग—[सं० पु०] मनोविकार ।
मनोव्यापार—[सं० पु०] विचार ।
मनोहत—[सं० वि०] अस्थिर, व्यग्र ।
मनोहर—[सं० वि०] मन को आकर्षित करनेवाला, सुन्दर ।
मनोहरता—[सं० स्त्री०] सुन्दरता ।
मन्वंतर--[सं० पु०] ब्रह्मा के एक दिन का १४ वाँ भाग, ७१ चतुर्युगी के व्यतीत होने का समय ।
मम—[सं०] मेरा, मेरी, मेरे ।
ममता—[सं० स्त्री०] ममत्व, अपनापन, वात्सल्य, मोह, प्रेम ।
ममत्व—[सं० पु०] अपनापन, ममता, मोह ।
मयंक—[हि० पु०] चन्द्रमा, सुधाकर ।
मयंद—[हि० पु०] सिंह, व्याघ्र ।
मय— [सं० पु०] एक प्रत्यय, एक प्राचीन देश, एक कारीगर दानव ।
मयूख—[सं० पु०] कांति, प्रकाश, किरण, प्रभा, दीप्ति ।
मयूर--[सं० पु०] मोर । [स्त्री०] मयूरी ।
मयूरगति—[सं० स्त्री०] मोर की चाल, २४ वर्णों का एक छन्द या वृत्त ।
मयूरसारिणी—[सं० स्त्री०] १३ वर्णों का एक छन्द ।
मरकट—[हि० पु०] बन्दर, बानर ।
मरकत—[सं० पु०] पन्ना, रत्न ।
मरघट—[हि० पु०] श्मशान, मृतकों के अन्तिम संस्कार का घाट ।
मरण—[सं० पु०] मृत्यु, मौत ।
मरणासन्न—[सं० वि०] मरने के निकट ।
मरमर—[सं० पु०] एक प्रकार का सफेद पत्थर, संगमरमर ।
मराल—[सं० पु०] हंस, बतख, हाथी, घोड़ा ।

मरिच—[सं० पु०] मिर्च ।
मरीचि—[सं० पु०] सप्तऋषियों में से एक ऋषि, ब्रह्मा के मानसिक पुत्र । भृगु के पुत्र, कश्यप के पिता । [स्त्री०] मृगतृष्णा, कान्ति, किरण ।
मरीचिका—[सं० स्त्री०] किरण, मिर्च, मृग-तृष्णा ।
मरीचिमाली—[सं० पु०] चन्द्रमा, सूर्य्य ।
मरीची—[सं० पु०] किरण, कांति, सूर्य्य, चन्द्रमा ।
मरु—[सं० पु०] निर्जल भूमि, रेगिस्तान ।
मरुवा—[हि० पु०] वन-तुलसी की जाति का एक पौधा ।
मरुत्—[सं० पु०] वायु, एक देव-गण ।
मरुत्सखा—[सं० पु०] अग्नि, तेज ।
मरुत्वान—[सं० पु०] इन्द्र, हनुमान, धर्म के पुत्र एक देवगण ।
मरुतात्मज—[सं० पु०] हनुमानजी ।
मरुद्वीप--[सं० पु०] शाद्वल भूमि, मरुस्थल में उपजाऊ स्थान ।
मरुधर—[सं० पु०] मारवाड़ प्रदेश ।
मरुभूमि—[सं० स्त्री०] रेगिस्तान, निर्जल देश ।
मरुस्थल—[सं० पु०] रेतीला देश, रेगिस्तान ।
मर्कट—[सं० पु०] बन्दर । छप्पय का आठवाँ भेद, दोहे का एक भेद ।
मर्कटी—[सं० स्त्री०] बंदरी, मकड़ी । ९ प्रत्ययों में से अन्तिम ।
मर्त्य—[सं० पु०] पृथ्वी-लोक, शरीर, मनुष्य ।
मर्त्यलोक—[सं० पु०] पृथ्वी, भूलोक ।
मर्दन—[सं० पु०] कुचलना, मसलना, नष्ट करना ।
मर्दित—[सं० वि०] मसला हुआ ।
मर्द्दन—[सं० पु०] पीसना, मलना, मसलना, कुचलना ।

मर्म—[सं० पु०] शरीर के वे कोमल अंग जहाँ चोट लगने से अत्यन्त पीड़ा होती है । भेद, तत्त्व, रहस्य ।
मर्मज्ञ—[सं० वि०] रहस्य जाननेवाला, तत्त्वज्ञ ।
मर्मभेदक—[सं० वि०] आन्तरिक कष्ट पहुँचानेवाला ।
मर्मभेदी—[सं० पु०] हार्दिक कष्ट देनेवाला ।
मर्मवाक्य—[सं० पु०] गंभीरवाणी, भेद की बात ।
मर्मविद्—[सं० वि०] भेद जाननेवाला, मर्मज्ञ ।
मर्मांतक—[सं० वि०] हृदय-स्पर्शी । मर्मस्पर्शी ।
मर्मी—[हि० वि०] तत्वज्ञ, रहस्य जाननेवाला ।
मर्य्यादा—[सं० स्त्री०] सीमा, नियम, सदाचार, धर्म, प्रतिष्ठा, प्रतिज्ञा ।
मल--[सं० पु०] विष्ठा, पाप, मैला, कीट, देह का विकार ।
मलद्वार—[सं० पु०] गुदा, मल विसर्जन की इन्द्रिय ।
मलमास—[सं० पु०] लौंद का महीना, पुरुषोत्तम या अधिमास ।
मलय—[सं० पु०] नन्दन वन, चन्दन-वन, मालाबार देश और उसके निवासी ।
मलयगिरि—[सं० पु०] दक्षिण का एक प्रसिद्ध पर्वत जहाँ चन्दन उत्पन्न होता है, आसाम देश ।
मलयज—[सं० पु०] चन्दन ।
मलयाचल—[सं० पु०] मलय पर्वत ।
मलयानिल—[सं० पु०] सुगन्धित वायु, वसंत-पवन ।
मलयुग—[सं० पु०] कलियुग ।
मलरुचि—[सं० वि०] पापी,

कुरुचित्राला ।

मलार—[हिं० पु०] पावस काल में गाया जानेवाला एक राग ।

मलिन—[सं० वि०] दूषित, उदास, पापी, म्लान, मैला ।

मलिनता—[सं० स्त्री०] मैलापन, उदासी, मलीनता ।

मलिनी—[हिं० स्त्री०] रजस्वला स्त्री, ऋतुमती स्त्री ।

मलूक—[सं० पु०] एक पक्षी, एक कीड़ा, मलूक दास नामक एक साधु ।

मल्ल—[सं० पु०] पहलवान, दीप-शिखा, विराट के निकट का एक प्राचीन देश ।

मल्लक—[सं० पु०] नारियल का पात्र, दीपक, पहलवान ।

मल्लभूमि—[सं० पु०] अखाड़ा ।

मल्लयुद्ध—[सं० पु०] बिना शस्त्रास्त्र के किया जाने वाला द्वन्द्व-युद्ध ।

मल्लविद्या—[सं० स्त्री०] कुश्ती लड़ने की कला ।

मल्लार—[सं० पु०] राग मलार, मल्लाह ।

मल्लारी—[सं० स्त्री०] एक रागिनी ।

मल्लिक—[सं० पु०] श्वेत हंस ।

मल्लिका—[सं० स्त्री०] बेले का एक फूल, मोतिया, एक वर्णिक छन्द ।

मल्लिनाथ—[सं० पु०] संस्कृत के एक प्रसिद्ध टीकाकार पंडित, एक तीर्थंकर ।

मल्ली—[सं० पु०] मल्लिका, सुन्दरी ।

मल्लूर—[सं० पु०] विल्व-वृक्ष, बेल का पेड़ ।

मवास—[सं० पु०] आश्रय, शरण, दुर्ग ।

मवासी—[सं० स्त्री०] छोटा दुर्ग, शरण, आश्रय ।

मशक—[सं० पु०] एक चर्म रोग, मच्छड़ ।

मष्ट—[सं० वि०] उदासीन, मौन, संस्कारशून्य ।

मसान—[हिं० पु०] मरघट, श्मशान ।

मसि—[सं० स्त्री०] लिखने की स्याही, काजल ।

मसिपात्र—[सं० पु०] दावात, स्याहीदानी ।

मसिमुख—[सं० वि०] दुराचारी, कलंकी ।

मसिबिंदु—[सं० पु०] दिठौना ।

मसूरिका—[सं० स्त्री०] शीतला, चेचक का एक भेद ।

मसूरी—[सं० स्त्री०] शीतला, चेचक ।

मसृण—[सं० वि०] कोमल, मृदु, नरम ।

मस्तक—[सं० पु०] माथ, सिर ।

मस्तिष्क—[सं० पु०] बुद्धि का स्थान, दिमाग़ ।

मस्याधार—[सं० पु०] मसिपात्र, स्याहीदानी ।

महत्—[सं० वि०] श्रेष्ठ, महान, वृहत् । [पु०] ब्रह्म ।

महती—[सं० स्त्री०] महिमा, नारद जी की वीणा । [वि०] बहुत भारी ।

महत्तत्व—[सं० पु०] जीवात्मा, बुद्धि-तत्व, प्रकृति का प्रथम विकार ।

महत्तम—[सं० वि०] सबसे बड़ा ।

महत्तर—[सं० वि०] दो की तुलना में एक श्रेष्ठ ।

महत्ता—[सं० स्त्री०] उत्तमता, गुरुता, श्रेष्ठता ।

महत्त्व—[सं० पु०] श्रेष्ठता, उत्तमता, गुरुता, बड़ाई ।

महदात्मा—[सं० वि०] महात्मा ।

महनीय—[सं० वि०] महान् ।

महर्लोक—[सं० पु०] १४ लोकों में से ऊपर का चौथा लोक ।

महर्षि—[सं० पु०] ऋषीश्वर, बड़ा ऋषि ।

महा—[सं० वि०] सबसे अधिक, सर्वोत्तम, बहुत भारी, विशाल ।

महारंभ—[हिं० वि०] बड़ी धूमधाम ।

महाउन्नत—[सं० पु०] कदम का वृक्ष ।

महाकंद—[सं० पु०] लहसुन ।

महाकल्प—[सं० पु०] ब्रह्मकल्प, ब्रह्मा की पूर्णायु का समय ।

महाकाल—[सं० पु०] महादेवजी ।

महाकाली—[सं० स्त्री०] दुर्गाजी की एक मूर्ति ।

महाकाव्य—[सं० पु०] वह प्रबंध काव्य जिसमें सामाजिक धर्म्म-कर्म्म, प्राकृतिक दृश्यों, ऋतुओं और अनेक रसों और घटनाओं को सर्गक्रम से वर्णित किया हो ।

महाकुंभी—[सं० पु०] कर्म फल ।

महाकुष्ट—[सं० पु०] गलित कुष्ट ।

महाखर्ब—[सं०पु०] सौ खर्ब की संख्या ।

महागौरी—[सं० स्त्री०] दुर्गाजी ।

महाजन—[सं० पु०] श्रेष्ठ पुरुष, बौहरा, रुपये का लेनदेन करने वाला ।

महाजल—[सं० पु०] समुद्र ।

महातत्व—[सं० पु०] महत्तत्व । प्रकृति का प्रथम विकार ।

महातल—[सं० पु०] १४ भुवनों में से पृथ्वी के नीचे का एक लोक ।

महातीर्थ—[सं० पु०] श्रेष्ठ स्थान, तीर्थराज, परमपुण्य क्षेत्र ।

महात्मा—[सं० पु०] महानुभाव, बड़ा साधु, संन्यासी ।

महादण्डधारी—[सं० पु०] यमराज ।

महादान—[सं० पु०] ग्रहणादि में निर्धनों को दिया गया दान ।

महादेव—[सं० पु०] शंकर भगवान्, शिवजी ।

महादेवी—[सं० स्त्री०] पटरानी।

महाद्वीप—[सं०पु०] वह भूभाग जिसमें अनेक देश हों।

महान्—[सं० वि०] विशाल, उन्नत।

महानंद—[सं० वि०] मगध का प्रतापी राजा। [पु०] आत्मानन्द।

महानाटक—[सं० पु०] वह नाटक जिसमें दश अंकों सहित नाटक के सम्पूर्ण लक्षण हों।

महानाभ—[सं० पु०] एक मंत्र जिससे शत्रु के शस्त्रास्त्र निष्क्रिय हो जाते हैं।

महानिद्रा—[सं० स्त्री०] मरण, मृत्यु।

महानिधान—[सं० पु०] शोधा हुआ पारा, मरण।

महानिर्वाण—[सं०पु०] मोक्ष,महामुक्ति।

महानिशा—[सं० स्त्री०] प्रलय की रात्रि। काल रात्रि।

महानुभाव—[सं० पु०] आदरणीय पुरुष, महात्मा।

महापथ—[सं० पु०] राजमार्ग, मृत्यु। पक्की सड़क।

महापद्म—[सं० पु०] सौ पद्म की संख्या, नौ निधियों में से एक निधि।

महापद्मक—[सं० पु०] एक निधि, एक साँप।

महापातक—[सं० पु०] महा पाप।

महापात्र—[सं०पु०]कट्टहा, महाब्राह्मण, मृतक कर्म में दान लेने वाला ब्राह्मण।

महापुरुष—[सं० पु०] श्रेष्ठ पुरुष। महात्मा।

महाप्रभु—[सं० पु०] वैष्णवसम्प्रदाय के महापुरुषों की पदवी।

महाप्रयाण—[सं० पु०] महाप्रस्थान, स्वर्गवास, मरण।

महाप्रलय—[सं०पु०] सबसे बड़ा प्रलय जिसमें जल के अतिरिक्त सब कुछ नष्ट हो जाता है।

महाप्रसाद—[सं० पु०] देवताओं को भोग लगाया हुआ खाद्य पदार्थ।

महाप्रस्थान—[सं० पु०] शरीरत्याग की इच्छा से हिमालय की ओर जाना। देहान्त, मरण।

महाप्राण—[सं० पु०] अधिक प्रेरित प्राण वायु द्वारा उच्चरित होनेवाले वर्ण। हिन्दी-वर्णमाला में प्रत्येक वर्ग के दूसरे और चौथे वर्ण।

महाबल—[सं० वि०] पराक्रमी।

महाबाहु—[सं० वि०] बलवान, आजानुबाहु।

महाबोधि—[सं० पु०] बुद्ध भगवान।

महाब्राह्मण—[सं०पु०] महापात्र, कट्टहा।

महाभाग—[सं० वि०] अति भाग्य-शाली, महापुरुष।

महाभागवत—[सं० पु०] छब्बीस मात्राओं का छन्द, भागवत पुराण। परम वैष्णव।

महाभारत—[सं० पु०] एक प्राचीन सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक महाकाव्य जिसमें कौरवों और पाण्डवोंके युद्धका वर्णन है।

महाभाष्य—[सं० पु०] पाणिनि के सूत्रों पर पतंजलि का भाष्य।

महाभूत—[सं० पु०] पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश—ये पंचमहा-भूत।

महामंत्र—[सं० पु०] प्रभावशाली मंत्र।

महामंत्री—[सं० पु०] प्रधान मंत्री।

महामति—[सं० वि०] बुद्धिमान्।

महामहिमा—[सं० वि०]महापुरुष।

महामहोपाध्याय—[सं० पु०] संस्कृत के विद्वानों की एक उपाधि।

महामांस—[सं० पु०] नर-मांस, गो-मांस।

महामाई—[हि० स्त्री०] महामाता, काली, दुर्गाजी।

महामात्य—[सं० पु०] मुख्यामात्य, प्रधान मंत्री।

महामाया—[सं० स्त्री०] गंगाजी, दुर्गाजी, प्रकृति, आर्या छंद का १३ वाँ भेद।

महामारी—[सं० स्त्री०]एक भीषण संक्रामक रोग। ताऊन, हैज़ा।

महामालिनी—[सं० स्त्री०] लघु दीर्घ के क्रम से १६ वर्णों का नाराच छंद। ५ जगण और अंत्य गुरु का छन्द।

महामृत्युंजय—[सं० पु०] महादेवजी की प्रसन्नता के लिये एक मंत्र।

महामोदकारी—[सं० पु०]क्रीड़ा चक्र, एक वर्णिक वृत्त।

महायज्ञ—[सं० पु०] नित्य किये जाने वाले पंच महायज्ञ या कर्म।

महायात्रा—[सं० स्त्री०] मृत्यु, परलोक यात्रा।

महायान—[सं० पु०] बौद्धों के तीन सम्प्रदायों में से एक।

महायुग—[सं० पु०] चतुर्युग समूह।

महायौगिक—[सं० पु०] २६ मात्राओं के छन्द।

महारंभ—[सं० वि०] महान् आरंभ वाला, धूम धाम से।

महारथी—[सं० पु०] योद्धा, महारथ।

महाराज—[सं० पु०] राजाधिराज, सम्राट। ब्राह्मण, गुरु।

महाराजाधिराज—[सं० पु०] चक्रवर्ती राजा। सम्राट।

महाराणा—[सं० पु०] उदयपुर, मेवाड़ और चित्तौड़ के राजपूत नरेशों की उपाधि।

महारात्रि—[सं० स्त्री०] महाप्रलय की रात्रि।

महारावण—[सं० पु०] बड़ा रावण जिसके एक हजार मुख और दो हज़ार हाथ थे।

महारावल—[सं० पु०] जयसलमेर और डूँगरपुर आदि के राजाओं की उपाधि।

महाराष्ट्र—[सं० पु०] दक्षिणी भारत का एक प्रदेश और वहाँ के निवासी।

महारुद्र—[सं० पु०] शिवजी, महादेव जी।

महारोग—[सं० पु०] क्षय, यक्ष्मा आदि असाध्य रोग।

महारौरव—[सं० पु०] एक बड़ा नरक।

महार्घ—[सं० वि०] बहुमूल्य।

महालक्ष्मी—[सं० स्त्री०] एक वर्णिक छन्द, लक्ष्मी जी की एक प्रसिद्ध मूर्ति।

महालय—[सं० पु०] महाप्रलय।

महालया—[सं० स्त्री०] पितृ विसर्जिनी अमावस्या।

महावट—[हि० स्त्री०] जाड़े की वर्षा।

महावतारी—[सं० पु०] २५ मात्राओं के छन्दों की संज्ञा।

महावारुणी—[सं० स्त्री०] गंगा स्नान का एक योग।

महाविद्या—[सं० स्त्री०] दश देवियाँ।

महावीर—[सं० पु०] हनुमान, गौतमबुद्ध, जैनियों के चौबीसवें तीर्थङ्कर।

महाव्याहृति—[सं० स्त्री०] परमात्मा के गौणिक नाम, ऊपर के तीन लोक।

महाशंख—[सं० पु०] सौ शंख की संख्या।

महाशक्ति—[सं० पु०] महादेवजी, शिवजी।

महाशय—[सं० पु०] महानुभाव, सज्जन, महात्मा।

महाश्वेता—[सं० स्त्री०] सरस्वती, कादम्बरी ग्रन्थ में एक नायिका।

महासाहस—[सं० पु०] निर्भीक, निधड़क।

महि—[सं० स्त्री०] पृथ्वी, भूमि, मही।

महिका—[सं० स्त्री०] ऋण। कर्ज।

महिजा—[सं० स्त्री०] सीता।

महिजात—[सं० पु०] भौम।

महिदेव—[सं० पु०] ब्राह्मण, भूसुर।

महितल—[सं० पु०] भूतल, पृथ्वी का स्तर। संसार।

महिपाल—[सं० पु०] महीश, राजा, महिपति।

महिमा—[सं० स्त्री०] गौरव, प्रताप, महत्ता, माहात्म्य।

महिम्न—[सं० पु०] शिवस्तोत्र।

महिरावण [सं० पु०] राक्षस, रावणकुमार।

महिला—[सं० स्त्री०] सुशील स्त्री।

महिष—[सं० पु०] भैंसा।

महिष-मर्दिनी—[सं० स्त्री०] दुर्गाजी।

महिषासुर—[सं० पु०] भैंसे के आकार का एक दैत्य जिसे दुर्गाजी ने मारा था।

महिषी—[सं० स्त्री०] सैरिंध्री, रानी, पटरानी, भैंस।

महिषेश—[सं० पु०] महिषासुर, यमराज।

महिसुर—[सं० पु०] ब्राह्मण, महिदेव।

मही—[सं० स्त्री०] पृथ्वी, भूमि, स्थान, देश, नदी, मिट्टी।

महीतल—[सं० पु०] भूतल, पृथ्वी, संसार, जगत।

महीधर—[सं० पु०] एक वर्णिक छन्द। पर्वत, पहाड़, एक वेद भाष्यकार।

महीप—[सं० पु०] राजा।

महीपति—[सं० पु०] राजा। नृप।

महीपाल—[सं० पु०] राजा। नृप।

महीभुज—[सं० पु०] राजा।

महीभृत—[सं० पु०] राजा, पर्वत।

महीरुह—[सं० पु०] वृक्ष, पेड़।

महीश—[सं० पु०] राजा।

महीसुर—[सं० पु०] ब्राह्मण।

महेन्द्र—[सं० पु०] इन्द्र, विष्णु, भारत का एक पहाड़।

महेन्द्रवारुणी—[सं० स्त्री०] बड़ा इन्द्रायण।

महेश—[सं० पु०] ईश्वर, महादेवजी।

महेशान—[सं० पु०] महादेवजी।

महेशी—[सं० स्त्री०] पार्वतीजी, महेशानी।

महेश्वर—[सं० पु०] शिवजी, महादेव।

महेष्वास—[सं० पु०] महाधनुषधारी।

महेला—[सं० स्त्री०] बड़ी इलायची।

महोक्ष—[सं० पु०]साँड़, बैल।

महोत्पल—[सं० पु०] कमल, पद्म।

महोत्सव—[सं०पु०] जलसा, समारोह, बड़ा उत्सव।

महोदधि—[सं० पु०] समुद्र।

महोदय—[सं० पु०] महाशय,स्वामी, आधिपत्य, कान्यकुब्ज देश।

महौषधि—[सं० पु०] सोंठ, अतीस।

मांगलिक—[सं० वि०] कल्याणकारी, मंगलपाठ पढ़ने वाला।

मांगल्य—[सं० वि०] शुभ, कल्याणकारी।

माँझी—[हि० पु०] केवट, खेनेवाला, मध्यस्थ।

मांडलिक—[सं०पु०] मंडल या प्रान्त का शासक, छोटा राजा।

मांडवी—[सं० स्त्री०] राजा जनक के भाई कुशध्वज की कन्या।

मांडव्य—[सं० पु०]एक ऋषि जिन्होंने यमराज को शूद्र होने का शाप दिया था।

मांडूक्य—[सं० पु०] एक उपनिषद्।

मांत्रिक—[सं० पु०] तंत्र-मंत्र का ज्ञानी।

मांद्य—[सं० पु०] मंद होने का भाव,

मंदता ।

मांस—[सं० पु०] गोश्त, चर्बी ।

मांसपेशी—[सं० स्त्री०] शरीर के अंगों का मांस-पिंड ।

मांसभक्षी—[सं० पु०] मांसाहारी ।

मांसल—[सं० वि०] हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा ।

मांसाहारी—[सं० पु०] मांसभक्षी ।

मा—[सं० स्त्री०] माता, प्रकाश, लक्ष्मी ।

मागध—[सं० पु०] भाट, गुणगायक, जरासंध ।

मागधी—[सं० स्त्री०] प्राकृत भाषा ।

माघ—[सं० पु०] संस्कृत के एक विख्यात कवि ।

माघी—[सं० स्त्री०] माघ की अमावस्या ।

माणवक—[सं० पु०] युवक, विद्यार्थी ।

माणिक्य—[सं० पु०] लाल रंग का एक रत्न । पद्मराग ।

मातंग—[सं० पु०] हाथी, चांडाल, पीपल, अश्वत्थ ।

मातंगी—[सं० स्त्री०] दश महा-विद्याओं में से एक ।

मातलि—[सं० पु०] इंद्र का सारथी ।

मातलिसूत—[सं० पु०] इंद्र ।

मातामह—[सं० पु०] नाना ।

मातुल—[सं० पु०] मामा, धतूरा ।

मातुली—[सं० स्त्री०] मामी, भाँग, विजया ।

मातृ—[सं० स्त्री०] माँ, माता, अंबा ।

मातृक—[सं० वि०] माता का ।

मातृका—[सं० स्त्री०] जननी, माता, धाय, दाई । ब्राह्मी, माहेश्वरी आदि सात देवियाँ ।

मातृपूजा—[सं० स्त्री०] पितरों को पुत्रों से पूजने की एक रीति ।

मातृभाषा—[सं० स्त्री०] मां की गोद से सीखी हुई बोली ।

मात्र—[सं० अव्य०] केवल ।

मात्रा—[सं० स्त्री०] परिमाण । एक ह्रस्व स्वर के बोलने का समय ।

मात्रासमक—[सं० पु०] एक मात्रिक छन्द या वृत्ति ।

मात्रिक-[सं० वि०] मात्रा संबंधी छंद ।

मात्सर्य्य—[सं० पु०] ईर्ष्या । डाह ।

माथुर—[सं० पु०] ब्राह्मण तथा कायस्थों की एक जाति ।

मादक—[सं० वि०] नशीला ।

मादकता—[सं० स्त्री०] नशीलापन ।

माद्री—[सं० स्त्री०] राजा पांडु की स्त्री । नकुल व सहदेव की माता ।

माधव—[सं० पु०] वसन्त ऋतु । विष्णु । श्रीकृष्ण । मुक्तहरा छंद ।

माधवाचार्य—[सं० पु०] संस्कृत के एक विद्वान और वैष्णव-आचार्य ।

माधवी—[सं० स्त्री०] एक प्रकार का सवैया छंद । दुर्गा । तुलसी । वारुणी । एक सुगन्धित कुसुम-लता ।

माधुरी-[सं० स्त्री०] सुंदरता । मिठास । मदिरा ।

माधुर्य—[सं० पु०] शोभा । मधुरता । काव्य का एक गुण ।

माध्यंदिनी—[सं०स्त्री०] शुक्ल यजुर्वेद की एक शाखा ।

माध्यम—[सं० वि०] साधन या उपाय । मध्य का ।

माध्यमिक—[सं० पु०] बौद्धों का एक भेद ।

माध्याकर्षण—[सं० पु०] पृथ्वी के केन्द्र का आकर्षण ।

माध्व—[सं० पु०] एक वैष्णव संप्रदाय जिसे माध्वाचार्य ने प्रचलित किया ।

माध्वी—[सं० स्त्री०] मदिरा ।

मान—[सं० पु०] परिमाण । माप । सम्मान । गर्व ।

मानगृह—[सं० पु०] कोप-भवन ।

मानचित्र—[सं० पु०] नक़शा ।

मानदण्ड—[सं० पु०] नापने का दंड, राज चिह्न, पैमाना ।

माननीय—[सं० वि०] पूज्य, सत्कार करने योग्य ।

मानमन्दिर—[सं० पु०] वेधशाला, कोप-भवन ।

मानमोचन—[सं० पु०] रूठे को मनाना ।

मानव—[सं० पु०] मनुष्य । १४ मात्राओं के छन्द ।

मानवशास्त्र—[सं० पु०] मनुस्मृति । धर्मशास्त्र ।

मानवी—[सं० स्त्री०] नारी, स्त्री ।

मान-सम्मान—[सं० पु०] प्रतिष्ठा, आदर । सत्कार ।

मानस—[सं० पु०] मान, चित्त, संकल्प, विकल्प, मनसरोवर, कामदेव, दूत । मनुष्य ।

मानसपुत्र—[सं० पु०] जो पुत्र इच्छा से उत्पन्न हो ।

मानसरोवर—[हि० पु०] मानसर, एक बड़ी झील जो हिमलय के उत्तर में है ।

मानसशास्त्र—[सं० पु०] मनो-विज्ञान ।

मानसहंस—[सं० पु०] मानसरोवर के हंस, एक वृत्त ।

मानसिंह—[सं० पु०] सम्राट अकबर के सेनापति, और अम्बर के राजा ।

मानसिक—[सं० वि०] मन की उड़ान से उत्पन्न, मन सम्बन्धी ।

मानसी—[सं० स्त्री०] मन सन्बन्धी, वह पूजा जो मन ही मन की जाय ।

मानहंस—[सं० पु०] एक छन्द ।

मानहानि—[सं० स्त्री०] अप्रतिष्ठा, अपमान ।

मानित—[सं० वि०] प्रतिष्ठित।

मानिनी—[सं० वि०] गर्विता, मानवती, नायक के दोष पर रुष्ट नायिका।

मानी—[सं० वि०] अभिमानी, मानने वाला, संमानित।

मानुषिक—[सं०वि०] मनुष्य संबन्धी। मनुष्य के योग्य।

मानुषी—[सं० वि०] मनुष्य-सम्बन्धी। मनुष्य।

मान्य—[सं०वि०] पूजनीय, माननीय।

मापक—[सं० पु०] पैमाना।

माया—[सं० स्त्री०] भ्रम, लक्ष्मी, सम्पत्ति, इन्द्रजाल, छल, लीला, एक वर्णिक छन्द।

मायाकृत—[सं० पु०] इन्द्रजाल, संसार।

मायापति—[सं०पु०] ब्रह्म, परमात्मा।

मायावाद—[सं० पु०] अद्वैतवाद।

मायावादी—[सं० पु०] ब्रह्मवादी, मायावादी।

मायाविनी—[सं० स्त्री०] प्रपंचिनी, ठगिनी।

मायावी—[सं० पु०] प्रपंची, जादूगर, कपटी।

मायास्त्र—[सं० पु०] एक अस्त्र।

मायिक—[सं० वि०] छली, मायावी, जाली।

मार—[सं० पु०] विष, कामदेव, आघात।

मारक—[सं० वि०] संहारक, नाश करने वाला।

मारकेश—[सं० पु०] संहार करने वाला ग्रह।

मारण—[सं० पु०] किसी के मारने के लिए एक कल्पित तांत्रिक प्रयोग।

मारात्मक—[सं० पु०] हिंसक, जिसका मूलतत्व कामदेव हो।

मारीच—[सं० पु०] एक राक्षस जिसने सोने का मृग बनकर रामचन्द्रजी को धोका दिया था।

मारुत—[सं० पु०] पवन, वायु।

मारुति—[सं० पु०] भीम, हनुमान।

मारुतसुत—[सं० पु०] हनुमानजी।

मारुतात्मज—[सं० पु०] हनुमान, वायुपुत्र।

मारू—[हि० पु०] डंका, युद्ध में बजाने का एक राग।

मार्कंडेय—[सं० पु०] मृकंडा ऋषि के पुत्र जो अपने तपोबल से अमर हैं।

मार्ग—[सं० पु०] पंथ, राह, अगहन।

मार्गण—[सं० पु०] खोज, वाण।

मार्गशीर्ष—[सं० पु०] अगहन मास।

मार्जन—[सं० पु०] माँजना, अभ्यास करना।

मार्जना—[सं० स्त्री०] क्षमा, सफाई।

मार्जनी—[सं० स्त्री०] झाड़ू।

मार्जार—[सं० पु०] बिलाव।

मार्जित—[सं० वि०] शुद्ध किया हुआ।

मार्तंड—[सं० पु०] मृतंडा के पुत्र सूर्य्यदेव।

मार्दव—[सं० पु०] मधुरता, मृदुता, सरलता, सहृदयता।

मार्मिक—[सं० वि०] विशेष प्रभाव शाली। मर्म सम्बन्धी।

मार्मिकता—[सं० स्त्री०] मार्मिक होने का भाव।

मालकोश—[सं० पु०] संगीत का एक राग, सम्पूर्ण जाति का एक राग, कौशिक-राग।

मालती—[सं० स्त्री०] बड़े वृक्षों पर फैलने वाली एक सघन लता। ६ वर्णों की एक वर्ण-वृत्ति। १२ वर्णों का वर्णिक छन्द।

मालद्वीप—[सं० पु०] भारत के पश्चिम की ओर का एक द्वीप समूह जो मूँगे के लिए प्रसिद्ध है।

मालव—[सं० पु०] मध्य भारत, मालव देश, भैरव राग। मालवा।

मालवीय—[सं० वि०] मालवा की एक ब्राह्मण जाति, मालवा निवासी।

माला—[सं० स्त्री०] हार, समूह, पंक्ति, अवली।

मालादीपक—[सं० पु०] एक अलंकार जिसमें पहले कही वस्तु को पीछे कही वस्तुओं के उत्कर्ष का कारण कहा जाता है।

मालाधार—[सं० पु०] १७ वर्णों का एक वर्णिक छन्द।

मालारूपक—[सं० पु०] रूपकालंकार का एक भेद।

मालिका—[सं० स्त्री०] हार, अवली, पंक्ति।

मालिनी—[सं० स्त्री०] चंपा नगरी। गौरीजी। एक वर्णिक छन्द। मालिन।

मालिन्य—[सं० पु०] मैलापन, मलिनता।

माल्य—[सं० पु०] माला।

मालोपमा—[सं० पु०] उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें एक उपमेय के भिन्न भिन्न धर्म वाले अनेक अनेक उपमान होते हैं।

माष—[सं० पु०] शरीर पर काले रंग का मसा। उरद।

माषपर्णी—[सं० स्त्री०] वन-उरद।

माषीण—[सं० पु०] उरदों का खेत।

मास—[सं० पु०] महीना, ३० दिन का समय।

मासान्त—[सं० पु०] अमावस्या-संक्रान्ति, महीने का अन्त।

मासिक—[सं० पु०] माहवारी।

माहात्म्य—[सं० पु०] गौरव, महत्ता,

महिमा, बड़ाई।
माहिष—[सं० वि०] भैंस सम्बन्धी।
माहिष्मती—[सं० स्त्री०] दक्षिण देश का एक प्राचीन नगर।
माहिष्य—[सं० पु०] क्षत्रिय से उत्पन्न वेश्या पुत्र, वर्ण-संकर।
माहेन्द्र—[सं० पु०] एक अस्त्र, ऐन्द्रास्त्र।
माहेश्वर—[सं० पु०] पाणिनि के सूत्र। एक यज्ञ, शैव सम्प्रदाय का एक भेद। एक अस्त्र।
माहेश्वरी—[सं० स्त्री०] वैश्यों की एक जाति, दुर्गा।
मिजराब—[स्त्री०] सितार बजाने की अंगूठी।
मित—[सं० वि०] सीमा, मर्य्यादित, परिमित।
मितप्रद—[सं० वि०] हिसाब से देनेवाला।
मितभाषी—[सं० पु०] मर्य्यादित बात करनेवाला।
मितव्यय—[सं० पु०] मर्यादित खर्च करना।
मितव्ययिता—[सं० स्त्री०] किफायत से खर्च करने का ढंग।
मितव्ययी—[सं० पु०] नियमित रूप से खर्च करनेवाला।
मिताक्षरा—[सं० स्त्री०] याज्ञवल्क्य-स्मृति की विज्ञानेश्वरी टीका।
मितार्थ—[सं० पु०] सूक्ष्मार्थ, अल्प वार्तालाप में अपना काम बनानेवाला दूत।
मिति—[सं० स्त्री०] सीमा, परिमाण, काल की अवधि।
मित्र—[सं० पु०] शुभचिंतक, साथी, संगी।
मित्रता—[सं० स्त्री०] मिताई, सखा भाव।
मित्रत्व—[सं० पु०] मित्रता।
मित्रद्रोही—[सं० वि०] खल, दुष्ट।
मित्रलाभ—[सं० पु०] मैत्री का लाभ।
मित्राक्षर—[सं० पु०] ऐसा पद जो छन्द जैसा ज्ञात हो।
मित्रावरुण—[सं० पु०] मित्र और वरुण देवता।
मिथिला—[सं० स्त्री०] तिरहुत का पुराना नाम।
मिथिलापति—[सं० पु०] राजा जनक।
मिथिलेश—[सं० पु०] राजा जनक।
मिथुन—[सं० पु०] दंपति, संयोग, संभोग, एक राशि।
मिथ्या—[सं० वि०] असत्य, मृषा।
मिथ्याचार—[सं०पु०] झूठा व्यवहार।
मिथ्याचारी—[सं० वि०] असत्य व्यवहार करने वाला।
मिथ्यात्व—[सं० पु०] असत्यता, प्रपंच।
मिथ्यादृष्टि-[सं० स्त्री०] नास्तिकता।
मिथ्याध्यवसिति—[सं० स्त्री०] एक अर्थालंकार जिसमें मिथ्या या असंभव बात का निश्चय करके दूसरी बात का कथन किया जाता है।
मिथ्याभाषी—[सं० पु०] झूँठ बोलनेवाला।
मिथ्याभियोग—[सं० पु०] झूँठा दोषारोपण।
मिथ्यायोग—[सं० पु०] प्रकृति या ऋतु के विरुद्ध कार्य।
मिथ्यावादी—[सं० पु०] असत्य-वक्ता, झूठा।
मिथ्याहार—[सं० पु०] अनुचित भोजन करना।
मियाँमिट्ठू—[हि० पु०] मधुरभाषी, तोता, मूर्ख।
मिलित—[सं० वि०] मिश्रित, सम्मिलित।
मिश्र—[सं० वि०] मिलाया हुआ, संयुक्त। एक देश। ब्राह्मणों की एक उपाधि।
मिश्रकेशी—[सं० स्त्री०] एक अप्सरा।
मिश्रण—[सं० पु०] मिलावट, जोड़, एकीकरण।
मिश्रित—[सं० वि०] मिला हुआ।
मिष—[सं० पु०] छल, व्याज बहाना, ढीला।
मिष्ठ—[सं० वि०] मीठा, मधुर।
मिष्ठभाषी—[सं० पु०] मधुरभाषी।
मिष्ठान्न—[सं० पु०] मिठाई, मीठा पकवान।
मिहिका—[सं० पु०] कुहरा, नीहार।
मिहिर—[सं० पु०] बादल, सूर्य, चंद्रमा, मदार।
मींड़—[हि० स्त्री०] संगीत में दो स्वरों के मध्य का संधिभाग।
मीणा—[सं० पु०] जंगली मनुष्यों की एक जाति।
मीन—[सं० पु०] एक राशि, मछली।
मीनकेतन—[सं० पु०] कामदेव।
मीनकेतु—[सं० पु०] कामदेव।
मीमांसक—[सं० स्त्री०] विवेचक, विवेचना करनेवाला।
मीमांसित—[सं० वि०] निर्णीत, विचारित, सिद्धांतित।
मीमांस्य—[सं० वि०] मीमांसा करने योग्य, विवेचना करने योग्य।
मीलन—[सं० पु०] मींचना, संकुचित करना।
मीलित-[सं० वि०] सिकोड़ा या बंद किया हुआ, सम्मिलित।
मुंड—[सं० पु०] पेड़ का ठूँठ, एक उपनिषद्, एक असुर।
मुंडन—[सं० पु०] बालकों का पहली

बार सिर मूँड़ने का एक संस्कार ।

मुंडमाला—[सं० स्त्री०] दुर्गाजी और शिवजी के गले में कटे सिरों की मालाएँ ।

मुंडमालिनी—[सं० स्त्री०] काली, दुर्गा ।

मुकुट—[सं० पु०] ताज । किरीट । राजाओं का शिरोभूषण ।

मुकुन्द—[सं० पु०] विष्णु भगवान । कृष्ण ।

मुकुर—[सं० पु०] दर्पण । मौलसिरी । कली ।

मुकुल—[सं० पु०] आत्मा । देह । कली । एक छन्द ।

मुकुलित—[सं० वि०] कुछ कुछ खिली हुई कलियाँ । कुछ बंद कुछ खुले नेत्र ।

मुक्त—[सं० वि०] स्वतंत्र । बंधनरहित ।

मुक्तकंठ—[सं० वि०] पूर्णस्वर से । चिल्लाकर बोलनेवाला ।

मुक्तक—[सं० पु०] स्फुट कविता । एक अस्त्र । मोती ।

मुक्तता—[सं० स्त्री०] मोक्ष । मुक्ति ।

मुक्तव्यापार—[सं० पु०] कर्मत्यागी । विरागी ।

मुक्तहस्त—[सं० वि०] खुले दिल से दान करनेवाला ।

मुक्ता—[सं० स्त्री०] मोती ।

मुक्ति—[सं० स्त्री०] मोक्ष ।

मुक्तिका—[सं० स्त्री०] एक उपनिषद् ।

मुख—[सं० पु०] आनन । आकृति । नाटक में एक संधि ।

मुखचपला—[सं० स्त्री०] आर्या छंद का एक भेद ।

मुखपत्र—[सं० पु०] किसी संस्था का प्रतिनिधि पत्र । उसकी नीति का पोषक ।

मुखबंध—[सं० पु०] भूमिका । प्रस्तावना ।

मुखप्रक्षालन—[सं० पु०] मंजन करना । मुँह साफ करना ।

मुखर—[सं० वि०] बकवादी । कटुवादी ।

मुखस्थ—[सं० वि०] कंठस्थ, मुखाग्र ।

मुखाग्र—[सं० वि०] कंठस्थ ।

मुखापेक्षी—[सं० पु०] अन्योपजीवी । दूसरे का मुँह ताकनेवाला ।

मुखाभा—[सं० स्त्री०] मुख की कांति । मुखश्री ।

मुखावलोकन—[सं० पु०] मुख-दर्शन ।

मुख्य—[सं० वि०] प्रधान ।

मुग्ध—[सं० वि०] मोहित । सुन्दर । मूर्ख ।

मुग्धा—[सं० स्त्री०] काम-चेष्टा-रहित युवा स्त्री ।

मुचक—[सं० पु०] लाख ।

मुचकुंद—[सं० पु०] एक प्रबल राजा जिन्होंने देवासुर युद्ध में इन्द्र की सहायता की थी ।

मुदित—[सं० वि०] प्रसन्न ।

मुदिता—[सं० स्त्री०] परकीया के अन्तर्गत एक नायिका । हर्षित ।

मुदिर—[सं० पु०] बादल, मेघ ।

मुदी—[सं० स्त्री०] चँदनी, जुन्हाई ।

मुद्ग—[सं० पु०] मूंग । अन्न ।

मुद्गर—[सं० पु०] मुगदर, एक अस्त्र ।

मुदगल—[सं० पु०] एक उपनिषद् ।

मुद्रक—[सं० पु०] छापने वाला ।

मुद्रण—[सं० पु०] छपाई ।

मुद्रांकित—[सं० वि०] मुद्रा पर लिखा हुआ ।

मुद्रा—[सं० स्त्री०] सिक्का, रुपया, नृत्य और अभिनय की अनेक चेष्टाएँ । गोरखपंथियों का कर्णभूषण ।

मुद्रातव—[सं० पु०] एक शास्त्र जिसके आधार पर पुराने सिक्कों की सहायता से ऐतिहासिक बातें जानी जाती हैं ।

मुद्रायन्त्र—[सं० पु०] मुद्रण या छापने का यंत्र ।

मुद्राविज्ञान—[सं० पु०] पुराने सिक्कों के आधार पर इतिहास जानने का शास्त्र ।

मुद्राशास्त्र—[सं० पु०] मुद्रा-विज्ञान ।

मुद्रिका—[सं० स्त्री०] अंगूठी, मुँदरी ।

मुद्रित—[सं० वि०] छपा हुआ, मुँदा हुआ ।

मुधा—[सं० क्रि० वि०] व्यर्थ, निष्प्रयोजन, निरर्थक ।

मुनि—[सं० पु०] त्यागी, सत्यासत्य का पूर्ण विचारक, तपस्वी, ब्रह्मचारी धार्मिक ।

मुनीन्द्र—[सं० पु०] मुनिवर, श्रेष्ठ मुनि ।

मुनीश्वर—[सं० पु०] बुद्धदेव, विष्णु, श्रेष्ठ मुनि ।

मुमुक्षु—[सं० वि०] मुक्ति की कामना वाला ।

मुमूर्षा—[सं० स्त्री०] मरने की कामना ।

मुमूर्षु—[सं० वि०] मृत्यु का इच्छुक, मरणासन्न ।

मुरदर—[सं० पु०] श्रीकृष्णजी ।

मुररिपु—[सं० पु०] श्रीकृष्ण ।

मुरलिका—[सं० स्त्री०] मुरली, वंशी, बाँसुरी ।

मुरली—[सं० स्त्री०] बाँसुरी, वंशी ।

मुरलीधर—[सं० पु०] श्रीकृष्णजी ।

मुरलीमनोहर—[सं० पु०] श्रीकृष्णजी ।

मुरहा—[सं० पु०] श्रीकृष्ण जी का नाम जब मुर राक्षस का संहार किया ।

मुरहारी—[सं० पु०] श्रीकृष्णजी, मुरारी ।

मुरा—[सं० स्त्री०] एक गंध द्रव्य, सम्राट चन्द्रगुप्त की माता एक शूद्रा ।

मुरारि—[सं० पु०] श्रीकृष्णजी, डगण का तीसरा भेद ।

मुशली—[सं० पु०] बलदेवजी, मूसली औषधि ।

मुष्टि—[सं० स्त्री०] मुक्का, अकाल, मल्ल, चोरी ।

मुष्टिक—[सं० पु०] मुक्का । कंस का

एक मल्ल। चार अंगुल की नाप।
मुष्टिका—[सं० स्त्री०] मुट्ठी, मुक्का।
मुष्टियुद्ध—[सं० पु०] घूँसेबाजी।
मुष्टियोग—[सं० पु०] हठयोग की कुछ क्रियाएँ।
मुस्ता—[सं० स्त्री०] नागरमोथा।
मुहुः—[सं० अव्य०] बार-बार।
मुहूर्त्त—[सं० पु०] शुभघड़ी, दो घड़ी का समय।
मूक—[सं० वि०] मौन, गूँगा, विवश।
मूढ़—[सं० वि०] मन्दबुद्धि, मूर्ख।
मूढ़गर्भ—[सं० पु०] गर्भ का बिगड़ना।
मूढ़ता—[सं० स्त्री०] मूर्खता।
मूढ़ात्मा—[सं० वि०] मूर्ख, जड़ात्मा।
मूत्र—[सं० पु०] पेशाब।
मूत्रकृच्छ्—[सं० पु०] रुक रुक कर पेशाब होने का रोग।
मूत्राघात—[सं० पु०] मूत्रावरोध, मूत्र के रुक जाने का रोग।
मूत्राशय—[सं० पु०] मसाना, नाभि तले मूत्र एकत्र रहने की ग्रन्थि।
मूर्ख—[सं० वि०] नासमझ, मूढ़।
मूर्खता—[सं० स्त्री०] मूढ़ता, नासमझी।
मूर्छन—[सं० पु०] एक मदनवाण, अचेत या संज्ञाहीन होना।
मूर्छना—[सं० स्त्री०] एक ग्राम से दूसरे तक जाने में स्वरों का उतार-चढ़ाव।
मूर्च्छा—[सं० स्त्री०] संज्ञाहीनता, बेहोशी।
मूर्छित—[सं० वि०] निश्चेष्ट, अचेत, बेसुध।
मूर्त्त—[सं० वि०] साकार, ठोस, आकार-युक्त।
मूर्त्ति—[सं० स्त्री०] शरीर, प्रतिमा, आकृति।
मूर्त्तिकार—[सं० पु०] प्रतिमा बनानेवाला। चितेरा, चित्रकार।
मूर्त्तिपूजक—[सं० पु०] प्रतिमा को देवता मानकर पूजा करनेवाला।
मूर्त्तिपूजा—[सं० स्त्री०] प्रतिमा-पूजा, पत्थर पूजा।
मूर्त्तिमान्—[सं० वि०] साकार, साक्षात्। प्रत्यक्ष।
मूर्द्ध—[सं० पु०] सिर, मुंड।
मूर्द्धकर्णी—[सं० स्त्री०] छाया के निमित्त सिर पर रखी वस्तु।
मूर्द्धज—[सं० पु०] केश, सिर के बाल।
मूर्द्धन्य—[सं० वि०] ललाट में स्थित।
मूर्द्धन्यवर्ण—[सं० पु०] मूर्धा से उच्चरित होने वाले वर्ण।
मूर्द्धा—[सं० पु०] मुख के भीतर तालु के पीछे का भाग।
मूर्द्धाभिषेक—[सं० पु०] सिर पर जल-सिंचन।
मूर्वा—[सं० स्त्री०] मरोड़फली, मुरहार।
मूल—[सं० पु०] प्रारंभ, पूँजी, आदि कारण, नींव। मुख्य, १६ वाँ नक्षत्र, कंद, वृक्षों की जड़।
मूलक—[सं० पु०] मूल रूप, जड़। [वि०] पिता।
मूलद्रव्य—[सं० पु०] प्रधान सामग्री जिससे कोई अन्य पदार्थ बने।
मूलधन—[सं० पु०] पूँजी। वह धन जो उधार दिया जावे।
मूलपुरुष—[सं० पु०] आदि पुरुष, वंश संचालक।
मूलस्थली—[सं० स्त्री०] पेड़ का थाला।
मूलस्थल—[सं० पु०] प्राचीन पुरुषों या पुरखों का स्थान। मुख्य घर।
मूलस्थिति—[सं० स्त्री०] प्रारंभिक दशा, आदमी।
मूलाधार—[सं० पु०] मनुष्य शरीर के भीतर के छः चक्रों में से एक चक्र।
मूलिका—[सं० स्त्री०] जड़ी, मूली।
मूल्य—[सं० पु०] महत्त्व, बदले का धन।
मूल्यवान्—[सं० वि०] बहुमूल्य, अधिक दामों का।
मूष—[सं० पु०] चूहा, मूसा, मूषक।
मूषण—[सं० पु०] चोरी करना।
मूषा—[सं० पु०] चूहा।
मृग—[सं० पु०] हिरन, जंगली पशु। अगहन मास, एक नक्षत्र, चार प्रकार के पुरुषों में से एक।
मृगचर्म—[सं० पु०] मृगछाला।
मृगजल—[सं० पु०] मृगतृष्णा की लहरें।
मृगतृष्णा—[सं० स्त्री०] मृगमरीचिका, भ्रांति, मृगजल।
मृगदाव—[सं० पु०] काशी के समीप सारनाथ का पुराना नाम।
मृगधर—[सं० पु०] चन्द्रमा।
मृगन—[सं० पु०] खोज।
मृगनयनी—[सं० स्त्री०] मृग के जैसे नेत्रों वाली स्त्री। मृगलोचनी।
मृगनाथ—[सं० पु०] बाघ, सिंह।
मृगनाभि—[सं० पु०] कस्तूरी।
मृगपति—[सं० पु०] सिंह।
मृगभद्र—[सं० पु०] एक जाति का हाथी।
मृगमद—[सं० पु०] कस्तूरी।
मृगमरीचिका—[सं० स्त्री०] मृगतृष्णा।
मृगमित्र—[सं० पु०] चन्द्रमा, मृगसखा।
मृगमेद—[सं० पु०] कस्तूरी।
मृगया—[सं० पु०] शिकार।
मृगराज—[सं० पु०] सिंह।
मृगरोचन—[सं० पु०] कस्तूरी।
मृगलांछन—[सं० पु०] चन्द्रमा।
मृगलोचनी—[सं० स्त्री०] हरिण के जैसे नेत्रों वाली स्त्री।
मृगवारि—[सं० पु०] मृगतृष्णा।

मृगशिरा—[सं० पु०] मृगशीर्ष, २७ नक्षत्रों में से ५ वाँ नक्षत्र ।
मृगांक—[सं० पु०] एक रस, चन्द्रमा ।
मृगाक्षी—[सं० स्त्री०] मृगनयनी ।
मृगाशन—[सं० पु०] बाघ, सिंह । हरिणी ।
मृगी—[सं० स्त्री०] कश्यप ऋषि की एक कन्या । हरिणी ।
मृगेन्द्र—[सं० पु०] सिंह ।
मृग्य—[सं० वि०] दर्शन, अनुसंधान करने योग्य ।
मृजा—[सं० स्त्री०] मार्जन ।
मृडानी—[सं० स्त्री०] दुर्गा जी ।
मृणाल—[सं० स्त्री०] कमलनाल, भसीड़ा ।
मृणालिका—[सं० स्त्री०] कमलनाल ।
मृणालिनी—[सं० स्त्री०] वह स्थान जहाँ कमल हों । कमलिनी ।
मृत—[सं० वि०] मरा हुआ ।
मृतकंबल—[सं० पु०] कफन ।
मृतक—[सं० पु०] निर्जीव । शव ।
मृतककर्म—[सं० पु०] प्रेत-कर्म, अन्त्येष्टि क्रिया ।
मृतकधूम—[सं० पु०] भस्म, राख, शवदाह का धूआँ ।
मृतजीवनी—[सं० स्त्री०] एक विद्या जिसके द्वारा निर्जीव शरीर सजीव हो जाता है ।
मृतसंजीवनी—[सं० स्त्री०] एक ओषधि जो नवजीवन प्रदान करती है ।
मृताशौच—[सं० पु०] किसी नातेदार के मरण पर मानी जाने वाली छूत ।
मृत्तिका—[सं० स्त्री०] मिट्टी, धूलि ।
मृत्युंजय—[सं० पु०] शिवजी, मृत्यु को जीतने वाला ।
मृत्यु—[सं० स्त्री०] यम, मरण, देहावसान ।
मृत्युलोक—[सं०पु०] संसार, यमलोक ।
मृदंग—[सं० पु०] पखावज ।
मृदव—[सं० पु०] गुणों के साथ दोषों की विरुद्धता या विषमता दिखाना ।
मृदु—[सं० वि०] नम्रता, सुकुमारता, कोमलता । मीठा ।
मृदुता—[सं० स्त्री०] मिठास ।
मृदुल—[सं० वि०] कृपालु, कोमल, विनम्र, मधुर ।
मृन्मय—[सं० वि०] मिट्टी से बना हुआ ।
मृषा—[सं० अव्य०] असत्य । व्यर्थ । मिथ्या ।
मृषात्व—[सं० पु०] मिथ्यात्व ।
मृषाभाषी—[सं० पु०] असत्यवादी ।
मृष्ट—[सं० वि०] शुद्ध ।
मृष्टि—[सं० स्त्री०] शोधन ।
मेकल—[सं० पु०] विंध्याचल का अमरकंटक वाला खंड ।
मेखला—[सं० स्त्री०] करधनी, कटिसूत्र, तगड़ी । अलफी ।
मेघ—[सं० पु०] बादल, एक राग ।
मेघाडंबर—[सं० पु०] बादलों की गर्जन, दलबादल । बड़ा शामयाना ।
मेघनाद—[सं० पु०] रावण का ज्येष्ठ पुत्र इन्द्रजीत, मोर । वरुण, मेघ-गर्जन ।
मेघपति—[सं० पु०] इन्द्र, मेघनाथ ।
मेघपुष्प—[सं० पु०] श्रीकृष्ण के रथ का घोड़ा । इन्द्र का घोड़ा ।
मेघमाला—[सं० स्त्री०] मेघावलि । कादंबिनी । बादलों की घटा ।
मेघराज—[सं० पु०] इन्द्र ।
मेघवर्ण—[सं० पु०] घनश्याम । श्रीकृष्णाजी ।
मेघवर्त्त—[सं० पु०] प्रलय का बादल ।
मेघविस्फूर्जिता—[सं० स्त्री०] एक वर्णिक छंद ।
मेघागम—[सं० पु०] बरसात । वर्षा ऋतु ।
मेघाध्व—[सं० पु०] आकाश । अंतरिक्ष । बादलों का मार्ग ।
मेचक—[सं० पु०] कालावर्ण । श्यामवर्ण ।
मेचकता—[सं० स्त्री०] श्यामता । कालापन ।
मेढ़ासिंगी—[हि० स्त्री०] एक झाड़ी-दार लता जिसकी जड़ दवा के काम आती है ।
मेथी—[सं० स्त्री०] एक ओषधि । मसाला । सब्जी ।
मेद—[सं० पु०] चर्बी, मुटापा, कस्तूरी ।
मेदा—[सं० स्त्री०] पाकाशय । उदर । एक ओषधि ।
मेदिनी—[सं० स्त्री०] भूमि । वसुधा । अवनि । वसुमती ।
मेध—[सं० पु०] यज्ञ ।
मेधा—[सं० स्त्री०] ज्ञान । बुद्धि, धारण-शक्ति । छप्पय छंद का एक भेद ।
मेधातिथि—[सं० पु०] मनुस्मृति के प्रसिद्ध टीकाकार ।
मेधावती—[सं० स्त्री०] एक लता । बुद्धिमती ।
मेधावी [सं० वि०] विद्वान् । पंडित । ज्ञानी । चतुर ।
मेध्य—[सं० वि०] पुनीत । पवित्र ।
मेनका—[सं० स्त्री०] पार्वती की माता । स्वर्ग की एक अप्सरा ।
मेय—[सं० वि०] थोड़ा । अल्प । जो नापा जा सके ।
मेरु—[सं० पु०] सुमेरु पर्वत जो सोने का है । हेमाद्रि ।
मेरुदंड—[सं० पु०] शरीर की रीढ़ । पृथ्वी के दोनों ध्रुवों की मध्यगत एक सीधी कल्पित रेखा ।
मेल—[सं० पु०] संयोग । मित्रता ।

एकता। समागम।

मेला—[सं० पु०] उत्सवों के लिये जनता का सम्मेलन। देव-दर्शन।

मेवात—[सं० पु०] राजपूताने और सिंध के मध्य का प्रदेश।

मेष—[सं० पु०] प्रथम राशि। भेड़।

मेषवृषण—[सं० पु०] इन्द्र।

मेषसंक्रांति—[सं० स्त्री०] सूर्य के मेष राशि में आने का योग या वर्षकाल।

मेह—[सं० पु०] प्रमेह रोग। मूत्र। प्रस्रव।

मैत्रायणि—[सं० पु०] एक उपनिषद्।

मैत्रावरुणि—[सं० पु०] अगस्त्य, मित्र और वरुण के पुत्र।

मैत्री—[सं० स्त्री०] मित्रता।

मैत्रेय [पु०] सूर्य। एक ऋषि।

मैत्रेयी—[सं० स्त्री०] अहल्या, याज्ञवल्क्य की स्त्री।

मैथिल—[सं० वि०] मिथला-संबंधी। मिथला प्रदेश का।

मैथिली—[सं० स्त्री०] जानकी, सीता।

मैथुन—[सं० पु०] रति-क्रीड़ा, संभोग।

मैनका—[स्त्री०] एक अप्सरा।

मैनफल—[हि० पु०] एक वृक्ष और उसका फल जो ओषधि के काम आता है।

मैनसिल—[हि० स्त्री०] पत्थर जैसी एक ओषधि।

मैना—[हि० स्त्री०] सारिका, पार्वती की माता।

मैनाक—[सं० पु०] एक पर्वत जो हिमालय का पुत्र कहलाता है। हिमालय का एक शृंग।

मैनावली—[सं० स्त्री०] एक वर्णिक छन्द।

मोक्ष—[सं० पु०] मुक्ति, जन्म-मरण के बंधन से जीवात्मा का छुटकारा।

मोक्षप्रद—[सं० पु०] मुक्ति देनेवाला।

मोघ—[सं० पु०] चूकनेवाला, निष्फल।

मोचन—[सं० पु०] रहित करना, दूर करना, मुक्त करना।

मोचरस—[सं० पु०] सेमल का गोंद।

मोटनक—[सं० पु०] त, ज, जगण और लघु-गुरु का एक वर्णिक वृत्त या १८ मात्राओं का एक छन्द।

मोट्टायित—[सं० पु०] एक हाव जिसमें नायिका अपने प्रेम को कटु भाषणादि से छिपाने की चेष्टा करती हुई भी छिपा नहीं सकती।

मोतियाबिंद—[हि० पु०] माड़ा, फूली, आंख का एक बुरा रोग।

मोतीझरा—[हि० पु०] मन्थ ज्वर जिसमें छाती पर मोती जैसे दाने निकलते हैं।

मोद—[सं० पु०] आनन्द। हर्ष, प्रसन्नता। एक वर्णिक वृत्त।

मोदक—[सं० पु०] ओषधि युक्त लड्डू, मिठाई, चार नगणवाला एक वर्णिक वृत्त।

मोदकी—[सं० स्त्री०] एक तरह की गदा।

मोदी—[हि० पु०] परचूनिया।

मोषण—[सं० पु०] वध करना, चोरी करना।

मोह—[सं० पु०] भ्रांति, अज्ञान, आसक्ति।

मोहक—[सं० वि०] मनोहर, लुभानेवाला।

मोहज—[सं० वि०] मोह से उत्पन्न।

मोहठा—[सं० पु०] १० वर्णों का एक वृत्त।

मोहन—[सं० पु०] मदन के ५ बाणों में से एक। श्रीकृष्ण। वशीभूत करने का एक तांत्रिक प्रयोग।

मोहन-मंत्र—[सं० पु०] वशीकरण मंत्र।

मोहनास्त्र—[सं० पु०] शत्रु को मूर्छित करनेवाला अस्त्र।

मोहनी—[सं० स्त्री०] विष्णु का स्त्री स्वरूप, एक वर्णिक छन्द, वशी-करण मंत्र।

मोहरात्रि—[सं० स्त्री०] अर्ध प्रलय की रात्रि।

मोहित—[सं० वि०] आसक्त, मुग्ध, भ्रमित।

मोहिनी—[सं० स्त्री०] अति सुंदरी, माया, मोहनेवाली। १५ वर्णों की एक वर्णिक वृत्ति, एक अर्ध सम छन्द।

मोही—[हि० वि०] मोहनेवाला।

मोहोपमा—[सं० स्त्री०] उपमा का एक भेद, भ्रांति अलंकार।

मौक्तिक—[सं० वि०] मोती संबंधी, मोती का।

मौक्तिकदाम—[सं० पु०] एक वर्णिक छन्द जिसमें १२ वर्ण होते हैं।

मौक्तिकमाला—[सं० स्त्री०] एक वर्णिक छन्द जिसमें ११ वर्ण होते हैं।

मौखरी—[सं० पु०] एक पुराना राज वंश।

मौखिक—[सं० वि०] मुख का, वाणी द्वारा, जिह्वाग्र।

मौन—[सं०पु०] मूकता, चुप्पी, शांत।

मौनव्रत—[सं० पु०] चुप रहने का व्रत।

मौनी—[सं० वि०] चुप रहनेवाला।

मौर्य्य—[सं० पु०] चन्द्रगुप्त और अशोक का राज वंश।

मौर्वी—[सं० स्त्री०] धनुष की डोरी, प्रत्यंचा।

मौलि—[सं० पु०] किरीट, प्रधान व्यक्ति, मस्तक, जूड़ा, चोटी।

मौलिक—[सं० वि०] नवीन, जड़ की वस्तु ।

म्रियमाण—[सं०वि०] मृतप्राय, मृतकल्प ।

म्लान—[सं० वि०] उदास, मलिन, मैला ।

म्लिष्ट—[सं० पु०] अव्यक्त वचन ।

म्लेच्छ—[सं० पु०] वर्णाश्रम से रहित जातियाँ, नीच ।

—:०:—

य

यंत्र—[सं० पु०] हथियार, कल, आले, जंत्र । तंत्र शास्त्रानुसार विशेष प्रकार से बने कोष्टकादि ।

यंत्रण—[सं० पु०] नियंत्रण, नियमानुसार रखना, रक्षा करना ।

यंत्रणा—[सं० स्त्री०] कष्ट, वेदना, पीड़ा, दुःख ।

यंत्रमंत्र—[सं० पु०] जंतर-मंतर, जादू-टोना ।

यंत्रविद्या—[सं० स्त्री०] कलों के बनाने या चलाने की विद्या ।

यंत्रशाला—[सं० स्त्री०] यंत्रागार, वेधशाला । कल-घर ।

यंत्रालय—[सं० पु०] मुद्रणालय, छापाखाना, कलों का स्थान ।

यंत्रित—[सं० वि०] यंत्र या कल द्वारा रोका हुआ, ताले में बन्द ।

यंत्रिका—[सं० पु०] ताला ।

यंत्री—[सं० पु०] तांत्रिक, तंत्रशास्त्र का ज्ञाता ।

यक—[सं० वि०] एक ।

यकृत—[सं० पु०] जिगर, पेट में भोजन पचानेवाला एक अंग ।

यक्ष—[सं० पु०] कुबेर के अधीन देवताओं का एक भेद ।

यक्षकर्दम—[सं० पु०] एक प्रकार का अंगराग या लेप ।

यक्षनाथ—[सं० पु०] यक्षनायक, कुबेर ।

यक्षपति—[सं० पु०] कुबेर ।

यक्षपुर—[सं० पु०] अलकापुरी ।

यक्षराज—[सं० पु०] कुबेर ।

यक्षाधिप—[सं० पु०] कुबेर ।

यक्षिणी—[सं० स्त्री०] यक्षपत्नी, कुबेर की स्त्री ।

यक्षी—[सं० स्त्री०] यक्षिणी ।

यक्षेश—[सं० पु०] कुबेर ।

यक्षौध—[सं० पु०] यक्षों का घर ।

यक्ष्मा—[सं० पु०] क्षय रोग ।

यगण—[सं० पु०]पिंगल शास्त्र में एक लघु और दो गुरु वर्णों का एक गण ।

यजत्र—[सं० पु०] अग्निहोत्री ।

यजन—[सं० पु०] यज्ञ करना ।

यजमान—[सं० पु०] जजमान, यज्ञ करने वाला, ब्राह्मणों को दान देनेवाला ।

यजुर्वेद—[सं० पु०] चारों वेदों में से वह वेद जिसमें यज्ञों का वर्णन है ।

यजुर्वेदी—[सं० पु०] यजुर्वेद का ज्ञाता, यजुर्वेदानुसार कर्म करनेवाला ।

यज्ञ—[सं० पु०] हवन, आर्यों के हवन पूजनादि का वैदिक कृत्य ।

यज्ञकुंड—[सं० पु०] हवन करने का गड्ढा या वेदी ।

यज्ञपति—[सं० पु०] यज्ञकर्त्ता, यजमान, विष्णु ।

यज्ञपत्नी—[सं० स्त्री०] दक्षिणा, यज्ञ की स्त्री ।

यज्ञपशु—[सं० पु०] बलि पशु, यज्ञ में बलिदान करने का पशु ।

यज्ञपात्र—[सं० पु०] यज्ञ में काम आने वाले पात्र ।

यज्ञपुरुष—[सं० पु०] यजमान, यज्ञकर्त्ता, विष्णु भगवान् ।

यज्ञभूमि—[सं० स्त्री०] यज्ञस्थल, यज्ञ करने का स्थान ।

यज्ञमंडप—[सं० पु०] यज्ञ-शाला ।

यज्ञशाला—[सं० स्त्री०] यज्ञ-मंडप, यज्ञ-स्थल ।

यज्ञसूत्र—[सं० पु०] जनेऊ, यज्ञोपवीत ।

यज्ञेश—[सं० पु०] यज्ञेश्वर, विष्णु भगवान् ।

यज्ञोपवीत—[सं० पु०] जनेऊ, यज्ञ सूत्र ।

यत—[सं० अव्य०] यदि, जो, जैसा ।

यति—[सं० पु०] संन्यासी, त्यागी, योगी, छन्दों के चरणों में विराम ।

यतिधर्म—[सं० पु०] संन्यास ।

यतिभंग—[सं० पु०] छन्द में विराम का उपयुक्त स्थान पर न पड़ने का दोष ।

यती—[सं० पु०] विरागी, त्यागी,

संन्यासी ।

यत्किंचित्—[सं० वि०] तनिक, रंच, थोड़ा ।

यत्न—[सं० पु०] प्रयत्न, उपाय, उद्योग, रक्षा ।

यत्नवान्—[सं० वि०] उपाय करने वाला ।

यत्र—[सं० क्रि० वि०] जिस स्थान पर, जहाँ ।

यत्र-तत्र—[सं० क्रि०वि०] जहाँ-तहाँ ।

यथा—[सं० अव्य०] जिस प्रकार, जैसे ।

यथाकथंचित्—[सं० अव्य०] जिस किसी प्रकार से, बड़े परिश्रम से ।

यथाकाल—[सं० पु०] यथासमय, उपयुक्त समय । समयानुसार ।

यथाक्रम—[सं० वि०] क्रमानुसार, क्रमशः ।

यथातथ—[सं० अव्य०] जैसे-तैसे, ज्यों-त्यों ।

यथातथ्य—[सं० अव्य०] ज्यों का त्यों, जैसा हो वैसा ही ।

यथापूर्व—[सं० अव्य०] ज्यों का त्यों, जैसा पहले था वैसा ही ।

यथामति—[सं० अव्य०] मति के अनुसार, बुद्धि के अनुसार ।

यथायोग्य—[सं० अव्य०] उचित, उपयुक्त, समीचीन, जैसा चाहिए वैसा ।

यथारुचि—[सं०अव्य०] इच्छानुसार ।

यथार्थ—[सं० अव्य०] ठीक ठीक, वास्तविक, वस्तुतः, उपयुक्त ।

यथार्थता—[सं० स्त्री०] वास्तविकता, सचाई, तथ्यता ।

यथालाभ—[सं० वि०] जो कुछ प्राप्त हो उसी पर निर्भर ।

यथावत्—[सं० अव्य०] ज्यों का त्यों । यथोचित । भली-भाँति ।

यथाविधि—[सं० वि०] विधि-पूर्वक ।

यथाशक्ति—[सं० अव्य०] सामर्थ्य के अनुसार, भरसक ।

यथाशास्त्र—[सं० वि०] शास्त्र के अनुसार ।

यथासाध्य—[सं० अव्य०] यथा-शक्ति ।

यथास्थिति—[सं० वि०] यथार्थ, स्थिति के अनुसार ।

यथेच्छ—[सं० अव्य०] इच्छानुसार, मन-माना ।

यथेच्छाचार—[सं० पु०] मन-मानी, स्वेच्छाचार ।

यथेष्ट—[सं० वि०] मनचाहा, जितना चाहिए । पर्य्याप्त । पूर्ण ।

यथोक्त—[सं० अव्य०] जैसा कहा गया हो ।

यथोचित—[सं० वि०] समीचीन, उचित, ठीक-ठीक ।

यदा—[सं० अव्य०] जब, जिस समय ।

यदाकदा—[सं० अव्य०] कभी-कभी ।

यदातदा—[सं० अव्य०] जब-तब ।

यदि—[सं० अव्य०] अगर ।

यदिचेत्—[सं० अव्य०] यद्यपि ।

यदीय—[सं० वि०] जिसका ।

यदु—[सं० पु०] देवयानी से उत्पन्न ययाति राजा के बड़े पुत्र ।

यदुकुल—[सं० पु०] यदुवंश ।

यदुनंदन—[सं० पु०] श्रीकृष्णजी ।

यदुनाथ—[सं० पु०] श्रीकृष्णजी ।

यदुपति—[सं० पु०] श्रीकृष्णजी ।

यदुवंश—[सं० पु०] यदुकुल ।

यदुवंशमणि—[सं० पु०] श्रीकृष्णजी ।

यदुवंशी—[सं० पु०] यदुकुल में उत्पन्न ।

यद्यपि—[सं० अव्य०] यदपि, हालांकि, अगरचे ।

यदृच्छया—[सं० क्रि० वि०] दैव-संयोगसे, अकस्मात् ।

यदृच्छा—[सं० स्त्री०] आकस्मिक संयोग ।

यद्वातद्वा—[सं० पु०] अनियमित, जैसा तैसा, अनिश्चित ।

यम—[सं० पु०] यमराज, काल, मृत्यु के देवता । योग के अष्टांगों में से एक अंग । जुड़वां बच्चे । धर्मराज ।

यमक—[सं० पु०] एक अनुप्रास या शब्दालंकार जिसमें भिन्नार्थ के साथ यथाक्रम वर्णावृत्ति या शब्दावृत्ति हो । एक वृत्त ।

यमकातर—[सं०पु०]यम की तलवार ।

यमघंट—[सं० पु०] नक्षत्रों का एक कुयोग ।

यमज—[सं० पु०] एक साथ उत्पन्न दो लड़के, धर्मराज, अश्विनीकुमार ।

यमदग्नि—[सं० पु०] परशुराम के पिता जमदग्नि ऋषि ।

यमद्वितीया—[सं० स्त्री०] कार्तिक शुक्ल द्वितीया ।

यमधार—[सं० पु०]दुधारी तलवार ।

यमन—[सं० पु०] नियंत्रण, बंधन, रोक ।

यमनाथ—[सं० पु०] यमराज ।

यमपुर—[सं० पु०] यमलोक ।

यमपुत्र—[सं० पु०] युधिष्ठिर, धर्मराज ।

यम-यातना—[सं० स्त्री] नरक की पीड़ा । मृत्यु काल की पीड़ा ।

यमराज—[सं० पु०] धर्मराज, काल ।

यमल—[सं० पु०] जोड़ा, युग्म, जुड़वां बच्चे ।

यमलार्जुन [सं० पु०] कुबेर के पुत्र नलकूबर और मणिग्रीव जो नारद के शाप से वृक्ष हो गये थे ।

यमलोक—[सं० पु०] यमपुरी ।

यमालय—[सं० पु०] यमपुरी ।

यमी—[सं० स्त्री०] यम की बहिन, यमुना नदी ।
यमुना—[सं० स्त्री०] जमुना । यम की बहिन ।
ययाति—[सं०पु०]राजा नहुष के पुत्र ।
यव—[सं० पु०] एक प्रसिद्ध अनाज, जौ, एक इंच का तिहाई भाग ।
यवद्वीप—[सं० पु०] जवा द्वीप ।
यवन—[सं० पु०] यूनानी, मुस्लिम, एक दैत्य ।
यवनानी—[सं०वि०]यवनों की लिपि ।
यवनाल—[सं० स्त्री०] जुआर । एक अनाज ।
यवनिका—[सं० स्त्री०] नाटक के रंग मंच पर मुख्य परदा ।
यवमती—[सं०स्त्री०] एक वर्णिक छन्द ।
यवशा [सं० स्त्री०] अजवाइन ।
यवस—[सं० पु०] घास, तृण ।
यवागू—[सं० पु०] जौ के आटे का हलवा ।
यवास—[सं० पु०] एक कटीला पौधा, जवासा ।
यविष्ट—[सं०वि०]पूर्ण युवा, अति लघु ।
यवीयस—[सं० वि०] छोटा, युवा ।
यवीयान—[सं०वि०] युवा, लघु,छोटा ।
यश—[सं० पु०] प्रशंसा, कीर्ति ।
यशस्वी—[सं०वि०] कीर्तिमान, प्रतिष्ठाशाली, विख्यात ।
यशुमति—[सं०स्त्री०] यशोदा,यशोमति ।
यशोदा [सं० स्त्री०] नंद की स्त्री, जशोदा ।
यशोधन—[सं० वि०] यशरूपी धन वाला ।
यशोधरा—[सं० स्त्री०] राहुल की माता, महात्मा बुद्ध की पत्नी ।
यष्टि—[सं० स्त्री०] लाठी, मुलेठी, डाली, छड़ी ।
याग—[सं० पु०] यज्ञ ।
याचक—[सं० पु०] भिखारी, भिक्षुक ।
याचना—[हि०क्रि०] माँगने की क्रिया, पाने के लिये निवेदन करना ।
याजक—[सं० पु०] यज्ञ करने वाला ।
याजन—[सं० पु०] यज्ञ की क्रिया ।
याज्ञवल्क्य—[सं० पु०] वैशंपायन के शिष्य एक विख्यात ऋषि ।
याज्ञिक—[सं० पु०] यज्ञ करने या कराने वाला ।
यातना—[सं० स्त्री०] पीड़ा, कष्ट ।
याता—[सं०स्त्री०] जेठानी या देवरानी ।
यातायात—[सं० पु०] आवागमन, आना-जाना ।
यातुधान—[सं० पु०] राक्षस ।
यात्रा—[सं० स्त्री०] प्रयाग, तीर्थाटन, प्रस्थान ।
यात्रावाल—[सं० पु०] यात्रियों को देवदर्शन कराने वाला पंडा ।
यात्रिक—[सं० वि०] यात्री ।
यात्री—[सं० पु०] पथिक, बटोही ।
याथार्थिक-[सं०वि०] वास्तविक, तथ्य, ठीक ।
याथार्थ्य—[सं० पु०] सत्यता ।
यादव—[सं० पु०] यदुवंशी ।
यादृक—[सं० वि०] जैसा ।
यादृशी—[सं० वि०] जैसी ।
यान—[सं० पु०] वाहन, विमान, सवारी, गाड़ी ।
यापन—[सं०पु०] व्यतीत करना,बिताना ।
याबूक—[सं०पु०] लाल रंग, महावर ।
याम—[सं० पु०] काल, समय, पहर ।
यामना—[हि० पु०] सुरमा, अंजन ।
यामल—[सं० पु०] यमज, एक तंत्र ग्रन्थ ।
यामि—[सं० स्त्री०] धर्म्म-पत्नी ।
यामिक—[सं० पु०] पहरुआ ।
यामिका—[सं० स्त्री०] रात ।
यामिनि—[सं० स्त्री०] रात्रि, रात ।
याम्य—[सं० वि०] यम-सम्बन्धी, दक्षिण का ।
याम्योत्तरदिगंश—[सं० पु०] दक्षिणोत्तर दिगंश ।
याम्योत्तररेखा—[सं० स्त्री०] सुमेरु कुमेरु से होती हुई भूगोल के चारों ओर की कल्पित रेखा ।
यावज्जीवन—[सं० पु०] जीवनभर ।
यावद्—[सं० अव्य०] जबतक ।
यावनो—[सं० वि०] यवन सम्बंधी ।
यास्क—[सं० पु०] एक प्रख्यात ऋषि, वैदिक निरुक्तकार ।
युञ्जान—[सं० पु०] अभ्यास करने वाला योगी ।
युक्त—[सं० वि०] उपयुक्त, उचित, संयुक्त, नियुक्त ।
युक्ता—[सं० स्त्री०] एक वर्णिक छन्द जिसमें दो नगण और एक यगण होता है ।
युक्ति—[सं० स्त्री०] चातुरी, उपाय, कौशल, ढंग, प्रथा, रीति, नीति ।
युक्तियुक्त—[सं० वि०] चातुरीपूर्ण, ठीक, युक्तिसंगत ।
युगंधर—[सं० पु०] एक पहाड़, कूबर, गाड़ी का बम ।
युग—[सं० पु०] जोड़ा, समय, काल ।
युगपत्—[सं० अव्य०] साथ साथ ।
युगल—[सं० पु०] जोड़ा, युग्म ।
युगति—[सं० पु०] युग का प्रलय, युगान्त । अन्त ।
युगान्तर—[सं० पु०] दूसरा युग ।
युगाद्या—[सं० स्त्री०] युगारंभ-काल ।
युग्म—[सं० पु०] दो जोड़ा । युग ।
युजान—[सं० पु०] सारथी, गाड़ीवान ।
युज्यमान—[सं० वि०] मिलने योग्य ।
युञ्जान—[सं० पु०] सारथी, विज्ञ, सर्वज्ञाता योगी ।
युत—[सं० वि०] सहित, युक्त ।

युति—[सं० स्त्री०] योग, मिलाप।
युद्ध—[सं० पु०] युद्ध, रण, संग्राम।
युधाजित—[सं० पु०] भरत के मामा।
युधान—[सं० पु०] क्षत्रिय जाति।
युधिष्ठिर—[सं० पु०] पाँच पाण्डवों में सबसे बड़े, धर्मराज।
युयु—[सं० पु०] अश्व, घोड़ा।
युयुत्—[सं० पु०] सिपाही; योद्धा, धृतराष्ट्र का दूसरा नाम।
युयुत्सा—[सं० स्त्री०] शत्रुता, वैर, युद्ध करने की इच्छा।
युयुत्सु—[सं० वि०] जो युद्ध चाहता हो।
युयुधान—[सं० पु०] क्षत्रिय, योद्धा, इन्द्र।
युवक—[सं० पु०] सोलह से पैंतीस तक की आयु का मनुष्य।
युवती—[सं० स्त्री०] तरुणी, मुग्धा, नवोढ़ा।
युवनाश्व—[सं० पु०] सूर्यवंशीय राजा प्रसेनजीत का पुत्र।
युवराज—[सं० पु०] राजा का ज्येष्ठ पुत्र।
युवराज्ञी—[सं० स्त्री०] युवराज की पत्नी।
युवा—[सं० वि०] [स्त्री० युवती] सिपाही, जवान।
युष्मद्—[सं०] तुम, तू।
यूक—[सं० पु०] खटमल।
यूथ—[सं० पु०] समूह, झुंड, वृन्द, सेना।
यूथप—[सं० पु०] सेनापति।
यूथिका—[सं० स्त्री०] जुही का फूल।
यूप—[सं० पु०] बलि पशु के बाँधने का खम्भा।
योग—[सं० पु०] प्रेम, मेल, ध्यान, धन, औषधि, छल, नियम, वैराग्य।
योगक्षेम—[सं० पु०] कुशल-मंगल। राज्य का सुप्रबन्ध, नवीन वस्तु की प्राप्ति। जीवन-निर्वाह।
योगज—[सं० पु०] अलौकिक संनिकर्ष। योग सम्बन्धी।
योगतत्व—[सं० पु०] एक उपनिषद्।
योगत्व—[सं० पु०] योग का भाव।
योगदर्शन—[सं० पु०] षट् दर्शनों में से एक जिसके कर्त्ता पतंजलि ऋषि हैं।
योगनिद्रा—[सं० स्त्री०] युगान्त में विष्णु की नींद, जिसे दुर्गा मानते हैं।
योगपट्ट—[सं० पु०] ध्यान के समय पहनने का वस्त्र।
योगफल—[सं० पु०] दो या अधिक संख्याओं के जोड़ने से प्राप्त संख्या।
योगबल—[सं० पु०] तपोबल, योग-सिद्धि।
योगभ्रष्ट—[सं० वि०] तप और ध्यान से गिरा हुआ, पतित योगी।
योगमाया—[सं० स्त्री०] महामाया, विष्णु की शक्ति, भगवती, यशोदा की पुत्री, प्रकृति।
योगरूढ़ि—[सं० स्त्री०] ऐसी संज्ञा जो देखने में तो यौगिक संज्ञा-सी हो किन्तु अपना सामान्य शाब्दिक अर्थ छोड़कर विशेष सांकेतिक अर्थ दे।
योगवाशिष्ट—[सं० पु०] एक वेदान्त ग्रन्थ जिसे ऋषि वशिष्ट ने रचा।
योगशास्त्र—[सं० पु०] महर्षि पतंजलि कृत योगदर्शन जिसमें योगसाधन और चित्तवृत्ति-निरोध का विधान है।
योगसूत्र—[सं० पु०] महर्षि पतंजलि-कृत योग संम्बन्धी सूत्रों का संग्रह ग्रन्थ।
योगांजन—[सं० पु०] सिद्धांजन।
योगात्मा—[सं० पु०] योगी।
योगाभ्यास—[सं० पु०] योग के अष्टांगों का अनुष्ठान या साधन।
योगाभ्यासी—[सं० पु०] योग की क्रियाओं को बारबार करनेवाला। योगी।
योगारूढ़—[सं० पु०] योगी।
योगासन—[सं० पु०] योगसाधन के लिये बैठने की रीतियाँ।
योगिनी—[सं० स्त्री०] तपस्विनी, रण पिशाचिनी।
योगिराज—[सं० पु०] शिव, बहुत बड़ा योगी।
योगी—[सं० पु०] शिव, महादेव, आत्मज्ञानी।
योगीनाथ—[सं० पु०] महादेवजी।
योगीश—[सं० पु०] याज्ञवल्क्य, सिद्ध, तपस्वी।
योगीश्वरी—[सं० स्त्री०] दुर्गा, देवी।
योगेन्द्र—[सं० पु०] बड़ा योगी, महादेव।
योगेश्वर—[सं० पु०] महात्मा, शिव, कृष्ण, बड़ा योगी।
योगेश्वरी—[सं० स्त्री०] दुर्गा, देवी।
योग्य—[सं० वि०] उचित, माननीय, श्रेष्ठ, अधिकारी, उपयुक्त।
योग्यता—[सं० स्त्री०] प्रतिष्ठा, सामर्थ्य, क्षमता, गुण।
योजक—[सं० वि०] जोड़ने या मिलानेवाला।
योजन—[सं० पु०] संयोग, योग, परमात्मा, मिलान, दूरी का एक माप।
योजनगंधा—[सं० स्त्री०] शान्तनु की पत्नी, सत्यवती।
योजना—[सं० स्त्री०] प्रयोग, रचना, कर्म व्यवस्था, नियुक्ति।
योद्धा—[सं० पु०] वीर, लड़ाका। सैनिक।
योधन—[सं० पु०] संग्राम, युद्ध।
योनि—[सं० स्त्री०] उद्गम स्थान, भग, स्त्री-जननेन्द्रिय, शरीर।
योनिज—[सं० पु०] भग से उत्पन्न होने वाले जीव।
योषा—[सं० स्त्री०] स्त्री, योषित।

यौगंधर—[सं० पु०] शत्रु के अस्त्रों को निष्फल करने वाला एक अस्त्र।

यौगिक—[सं० पु०] दो या दो से अधिक शब्दों के योग से बना शब्द। प्रकृति और प्रत्यय के योग से बना शब्द। अट्ठाईस मात्राओं के छन्दों का नाम।

यौतुक—[सं० पु०] दहेज।

यौधेय—[सं० पु०] एक प्राचीन देश, योद्धा, वीर।

यौवन—[सं० पु०] तरुणाई, जीवन का मध्य काल।

यौवन-लक्षण—[सं० वि०] लावण्य, सुन्दरता। जवानी के चिह्न।

यौवराज्य—[सं० पु०] युवराज का पद।

यौवराज्याभिषेक—[सं० पु०] राजकुमार के युवराज बनाये जाने का उत्सव।

यौत्स्ना—[सं० स्त्री०] उजियाली रात, ज्योत्स्ना।

—:※:—

र

र— संस्कृत वर्णमाला का २७ वाँ अक्षर। [सं० पु० सं०] आग, कामाग्नि, सितार का एक बोल।

रंक—[सं० वि०] कंगाल, दरिद्र, कृपण।

रंग—[सं० पु० सं०] वर्ण, किसी वस्तु के रँगने का पदार्थ। नाचगान।

रंगअवनि—[सं० पु० सं०] रंगभूमि।

रंगक्षेत्र—[सं० पु० सं०] नाटक की जगह, खेल तमाशे का स्थान।

रंगतरा—[सं० पु० हि०] संगतरा, शंतरा, बड़ी नारंगी।

रंगनाथ—[सं० पु० सं०] दक्षिण में वैष्णवों का तीर्थस्थान।

रंगभवन—[सं० पु० सं०] आमोद-प्रमोद का स्थान, भोगविलास का स्थान।

रंगभूमि—[सं० स्त्री० सं०] नाट्यशाला, युद्धस्थल। आमोद-प्रमोद का स्थान।

रंगमहल—[सं० पु० हि०] भोग-विलास करने का स्थान।

रंगरली—[सं० स्त्री० हि०] क्रीड़ा, खेल, आमोद-प्रमोद।

रंगरस—[सं० पु० सं०] क्रीड़ा, खेल, आमोद-प्रमोद।

रंगरसिया—[सं० पु० सं०] रसिक, आनन्दी, विलासी।

रंगराज—[सं० पु० सं०] श्रीकृष्णजी।

रंगशाला—[सं० स्त्री० सं०] नाटक खेलने का स्थान।

रंगस्थली—[सं० स्त्री० सं०] रंगभूमि, रंगशाला।

रंगोपजीवी—[सं० पु० सं०] नट।

रंच, रंचक—[वि०] दे० थोड़ा। किंचित्।

रंजक—[वि० सं०] प्रसन्न करनेवाला।

रंजन—[सं० पु० सं०] रँगने की क्रिया, प्रसन्न करने का भाव। लाल चंदन। छप्पय का ५० वाँ भेद।

रंजित—[वि० सं०] रँगा हुआ। आनन्दित हुआ।

रंजिश—[सं० स्त्री० फ़ा०] वैर, मनमुटाव, शत्रुता।

रंजीदा—[वि० फ़ा०] दुःखित, चिन्तित।

रंति—[सं० स्त्री० सं०] क्रीड़ा।

रंतिदेव—[सं० पु०] एक दानी राजा।

रंधक—[सं० पु०] रसोइया।

रंधन—[सं० पु० सं०] रसोई बनाना।

रंभ—[सं० पु० सं०] गम्भीर नाद, भारी स्वर, बाँस, एक बाण।

रंभन—[सं० पु० सं०] आलिंगन, भेंटना।

रम्भा—[सं० स्त्री० सं०] एक अप्सरा, केला, उत्तर दिशा।

रँभाना—[क्रि० अ०] दे० गाय का शब्द करना।

रइयत—[सं० स्त्री० अ०] प्रजा।

रकत—[सं० पु०] दे० रक्त, खून, लाल।

रक़बा—[सं० पु० अ०] क्षेत्रफल।

रक़ीब—[सं० स्त्री० फ़ा०] एक स्त्री के दो प्रेमी आपस में रक़ीब कहलाते हैं।

रक्त—[सं० पु० सं०] खून, केसर, कुंकुम, ईंगुर, सिंदूर, लालरंग।

रक्तकंठ—[सं० पु०सं०] कोयल, बैंगन।

रक्तकमल—[सं० पु० सं०] लाल कमल।

रक्तचंदन—[सं० पु० सं०] लाल चंदन।

रक्तज—[वि० सं०] रक्त के विकार से पैदा हुआ रोग, खून से पैदा हुआ।

रक्तता—[सं० स्त्री० सं०] रक्तिमा, लाली, सुर्खी।

रक्तपात—[सं० पु० सं०] खून-खराबी, लड़ाई-झगड़े में खून बहना, लोगों का घायल होना।

रक्तपायी—[वि० सं०] खून पीने वाला। [स्त्री०] रक्तपायिनी।

रक्तपित्त—[सं० पु० सं०] नकसीर फूटना, नाक से लोहू बहना, नाक-मुँह से खून बहने का एक रोग।

रक्तबीज—[सं० पु० सं०] एक दैत्य जिसके शरीर से खून की जितनी बूँदें गिरती थीं उतनी ही संख्या में उसके रूप बन जाते थे। बीदाना अनार।

रक्तवृष्टि—[सं० स्त्री० सं०] आकाश से खून अथवा लाल रंग की वर्षा होना।

रक्तस्राव—[सं० पु० सं०] किसी अंग से खून का बहना या निकलना।

रक्तातिसार—[सं० पु०सं०] खूनी दस्त, खूनी बवासीर।

रक्तार्श—[सं० पु० सं०] खूनी बवासीर।

रक्ष—[सं० पु० सं०] रक्षा, रक्षक, रखवाला।

रक्षक—[सं० पु० सं०] रक्षा करने-वाला। रखवाला। पहरेदार।

रक्षण—[सं० पु० सं०] रक्षा करना, पालन-पोषण करना, आश्रय देना।

रक्षणीय—[वि० सं०] रक्षा करने योग्य।

रक्षा—[सं० स्त्री०सं०] रक्षण, बचाव, पालन-पोषण।

रक्षागृह—[सं० पु० सं०] प्रसूति-गृह। जच्चा खाना।

रक्षाबन्धन—[सं० पु० सं०] श्रावण पूर्णिमा के दिन बहिनें अपने भाइयों के हाथों में राखिया बाँध कर इस त्यौहार को मनाती हैं।

रक्षामंगल—[सं० पु० सं०] भूत-प्रेतों के प्रभाव को शान्त करने के लिए एक धार्मिक क्रिया।

रक्षित—[वि० सं०] जिसका बचाव किया गया हो, जिसकी रक्षा की गई हो।

रक्ष्य—[वि० सं०] रक्षा के योग्य।

रगण—[सं० पु० सं०] आदि और अन्त में गुरु और मध्य में लघु वर्ण वाला एक गण (SIS)।

रघु—[सं० पु० सं०] सूर्यवंशी अयोध्या नरेश, महाराज रामचन्द्रजी के परदादा।

रघुकुल—[सं० पु० सं०] राजा रघु का कुटुम्ब।

रघुनन्दन—[सं० पु० सं०] श्रीरामचन्द्रजी।

रघुनाथ—[सं० पु० सं०] श्रीरामचंद्रजी।

रघुनायक [सं०पु०सं०] श्रीरामचंद्रजी।

रघुपति—[सं०पु० सं०] श्रीरामचंद्रजी।

रघुराई—[सं०पु०] दे०श्रीरामचन्द्रजी।

रघुराज—[सं०पु० सं०] श्रीरामचंद्रजी।

रघुराया—[सं०पु०] दे० श्रीरामचंद्रजी।

रघुवंश—[सं० पु० सं०] महाराज रघु का वंश, महाकवि कालिदास कृत एक नाटक।

रघुवर, रघुवीर—[सं० पु० सं०] श्रीरामचन्द्रजी।

रचना—[सं० स्त्री०सं०] रचने, बनाने का भाव अथवा क्रिया।

रचयिता—[सं० पु० सं०] बनाने या रचने वाला, लेखक, कवि, ग्रन्थकार।

रचित—[वि० सं०] बनाया हुआ।

रज—[सं० पु० सं०] स्त्रियों की योनि से प्रतिमास, ३, ४ दिन तक निकलने वाला दूषित रक्त। ऋतु, पानी, कुसुम, पुष्प-पराग। [सं०स्त्री०] धूल, रजोगुण, प्रकाश, रात, ज्योति।

रजक—[सं० पु० सं०] धोबी।

रजतंत—[सं०स्त्री०] दे० शूरवीरता।

रजत—[सं०स्त्री० सं०] चाँदी, सोना, रक्त। वि० श्वेत, धवल, लाल।

रजनि, रजनी—[सं०स्त्री०सं०] रात, हल्दी।

रजनीकर—[सं० पु० सं०] चंद्रमा, मृगांक।

रजनीचर—[सं० पु० सं०] निशाचर, राक्षस।

रजनीपति—[सं० पु० सं०] चन्द्रमा।

रजनीमुख—[सं० स्त्री० सं०] सन्ध्या।

रजनीश—[सं० पु० सं०] चन्द्रमा।

रजबहा—[सं० पु०] दे० बम्बा, बड़ा नाला। चौपायों के चलते रहने से धूल-भरा रास्ता।

रजवाड़ा—[सं०पु०] दे०देशी रियासतें।

रजस्वला—[वि० सं०] ऋतुमती स्त्री। वह स्त्री जिसे मासिक रज-स्राव हो रहा हो।

रजा—[सं० स्त्री० अ०] इच्छा, मरजी, छुट्टी, आज्ञा।

रजोगुण—[सं० पु० सं०] मनुष्य के स्वभावगत तीन गुणों में से एक गुण, भोग-विलासी प्रवृत्ति।

रजोदर्शन—[सं० पु० सं०] स्त्रियों का मासिक धर्म।

रजोवती—[सं० स्त्री०] ऋतुमती, रजस्वला।

रज्जु—[सं० स्त्री० सं०] रस्सी, जेवरी।

रण—[सं० पु० सं०] युद्ध, जंग।

रणक्षेत्र—[सं० पु० सं०] युद्धस्थल।

रणछोड़—[सं० पु० सं०] श्रीकृष्ण का एक नाम।

रणभूमि—[सं स्त्री० सं०] रणक्षेत्र, युद्ध-भूमि।

रणलक्ष्मी—[सं० स्त्री० सं०] विजय

लक्ष्मी। विजय।

रणस्तम्भ—[सं० पु० सं०] विजय के उपलक्ष्य में स्मारक स्वरूप स्थापित स्तंभ।

रणहंस—[सं० पु० सं०] एक वर्णिक छंद।

रणांगण—[सं० पु० सं०] युद्ध-भूमि।

रणति—[वि० सं०] बजता हुआ।

रत—[सं० पु० सं०] मैथुन। स्त्रीप्रसंग। [वि०] आसक्त। लिप्त। डूबा हुआ।

रतनज्योति—[सं० स्त्री०] दे० एक मणिविशेष।

रतनाकर—[सं० पु०] दे० रत्नाकर, समुद्र।

रतनार—[वि०] दे० लाल। सुर्खी लिए हुए।

रतनारी—[सं० स्त्री०] दे० एक प्रकार का धान। लालिमा।

रतामनी—[सं० स्त्री०] दे० वेश्या।

रति—[सं० स्त्री०] कामदेव की स्त्री। मैथुन। सम्भोग। शोभा। शृंगार रस का स्थायी भाव। नायक-नायिका की पारस्परिक प्रीति।

रतिदान—[सं० पु० सं०] संभोग। मैथुन।

रतिनाथ—[सं० पु० सं०] कामदेव।

रतिनायक—[सं० पु० सं०] कामदेव।

रतिपद—[सं० पु० सं०] एक वर्णिक वृत्त।

रतिप्रीता—[सं० स्त्री० सं०] प्रेमिका। रति में प्रेम करनेवाली नायिका। कामिनी।

रतिबंध—[सं० पु० सं०] मैथुन के आसन।

रतिभवन—[सं० पु० सं०] रतिक्रीड़ा। सम्भोग करनेवाला स्थान। योनि।

रतिमंदिर—[सं० पु० सं०] रति-भवन। योनि।

रतिराज—[सं० पु० सं०] कामदेव।

रतिवंत—[वि० सं०] प्रेमी। रति की उत्कट इच्छा रखनेवाला।

रतिशास्त्र [सं० पु० सं०] काम-शास्त्र।

रतीश—[सं० पु० सं०] कामदेव।

रतौंधी—[सं० स्त्री०] दे० एक रोग जिसमें रात के समय बिल्कुल दिखाई नहीं देता।

रत्ती—[सं० स्त्री०] दे० घुँघुची, स्वर्णादि तौलने के लिए बाँट। एक माशे का ८ वाँ भाग।

रत्न—[सं० पु० सं०] हीरा, जवाहरात सदृश बहुमूल्य पत्थर, सर्वश्रेष्ठ।

रत्नगर्भ—[सं० पु० सं०] समुद्र, सागर।

रत्नगर्भा—[सं० स्त्री० सं०] पृथ्वी।

रत्नजटित—[वि० सं०] हीरा, जवाहरात सदृश बेशकीमती पत्थरों से जड़ा हुआ।

रत्ननिधि—[सं० पु० सं०] समुद्र।

रत्नपरीक्षक—[सं० पु० सं०] जौहरी।

रत्नसानु—[सं० पु० सं०] सुमेरु पर्वत। देवलोक।

रत्नाकर—[सं० पु० सं०] समुद्र।

रत्नावली—[सं० स्त्री० सं०] रत्न-समूह, मणि-माला।

रथगर्भक—[सं० पु० सं०] पालकी।

रथगुप्ति—[सं० स्त्री० सं०] रथ का पर्दा।

रथचक्र—[सं० पु० सं०] रथ का पहिया।

रथयात्रा—[सं० स्त्री० सं०] आषाढ़ शुक्ला द्वितीया के दिन हिन्दुओं का एक विशेष पर्व।

रथांगनाम—[सं० पु० सं०] चक्रवाक।

रथांगपाणि—[सं० पु० सं०] श्रीकृष्ण, विष्णु।

रथिक—[सं० पु० सं०] रथ पर सवार होनेवाला।

रथी—[सं० पु० सं०] रथ पर चढ़ने-वाला, एक हज़ार वीरों से अकेला सामना करनेवाला।

रथोद्धता—[सं० स्त्री० सं०] एक वर्णिक छंद जिसमें ११ वर्ण होते हैं।

रथ्या—[सं० स्त्री० सं०] सड़क, मार्ग, गली।

रद—[सं० पु० सं०] दाँत।

रदच्छद—[सं० पु० सं०] ओंठ।

रददान—[सं० पु० सं०] चुम्बन करते समय दाँतों से निशान बना देना।

रदन—[सं० पु० सं०] दाँत। [वि०] रदनी।

रन—[सं० पु०] दे० रण, युद्ध।

रनबाँकुरा—[सं० पु०] दे० योद्धा।

रनवास, रनिवास—[सं० पु०] दे० रानियों के रहने का स्थान, अन्तःपुर।

रब—[सं० पु० अ०] मालिक, परमेश्वर।

रबी—[सं० स्त्री० अ०] फाल्गुन के आस-पास काटे जानेवाली फसल।

रब्त—[सं० पु० अ०] मश्क़, अभ्यास। [ग्रा०] रब्त, रप्त।

रभस—[सं० पु०] हर्ष, आनन्द, वेग, उत्सुकता, आतुरता।

रमक—[सं० स्त्री०] दे० तरंग, लहर, झूले की पेंग।

रमज़ान—[सं० पु० अ०] एक अरबी महीना जिसमें मुसलमान व्रत रखते हैं।

रमण—[सं० पु० सं०] विहार, विलास, केलि-क्रीड़ा, मैथुन, स्वामी, कामदेव, एक वर्णिक छन्द।

रमणगमना—[सं० स्त्री० सं०] वह नायिका जो अपने मन में यह विचार कर दुःखी होती हो कि नायक संकेत-स्थान पर पहुँच गया होगा और मैं अभी यहीं हूँ।

रमणी—[सं० स्त्री० सं०] नारी, स्त्री।

रमणीक—[वि०] दे० सुंदर, मनोहारी।
रमणीय—[वि० सं०] सुंदर, मनोहर।
रमणीयता —[सं० स्त्री० सं०] सुंदरता, मनोहरता।
रमता– [वि० हि०] घूमता-फिरता। चलना-फिरना।
रमा—[सं० स्त्री० सं०] लक्ष्मी, सम्पत्ति।
रमाकान्त—[सं० पु० सं०] विष्णु।
रमानाथ—[सं० पु० सं०] विष्णु।
रमापति—[सं० पु० सं०] विष्णु।
रमारमण—[सं० पु० सं०] विष्णु।
रमैनी —[सं० स्त्री०] दे० कबीर के बीजक का एक खण्ड।
रमैया—[सं० पु०] दे० राम।
रम्य—[वि० सं०] सुन्दर, मनोहारी।
रम्यता—[सं० स्त्री० सं०] सुंदरता।
रव—[सं० पु० सं०] शब्द, आवाज़, नाद।
रवि—[सं० पु० सं०] सूर्य, अग्नि, आक, मदार, मरदार।
रविकुल—[सं० पु० सं०] सूर्यवंश।
रविचंचल—[सं० पु० सं०] काशी का लोलार्क तीर्थ।
रविजात—[सं० पु० सं०] यम, सुग्रीव, कर्ण, अश्विनीकुमार, शनिश्चर।
रविजा—[सं० स्त्री० सं०] यमुना।
रवितनय—[सं० पु० सं०] यम, शनिश्चर, सुग्रीव, कर्ण, अश्विनीकुमार।
रवितनया—[सं० स्त्री० सं०] यमुना।
रविनन्दन—[सं० पु० सं०] रविजात, रवितनय।
रविनन्दिनी—[सं०स्त्री०सं०] यमुना।
रविप्रिय—[सं० पु० सं०] कमल।
रविप्रिया—[सं० स्त्री० सं०] सूर्य की पत्नी।
रविमण्डल—[सं० पु० सं०] सूर्य के चारों ओर का लाल गोला।
रविमणि—[सं० पु० सं०] सूर्यकान्त मणि, आतशी शीशा।
रविबाण —[सं० पु० सं०] वह बाण जिसके चलने से सूर्य का-सा प्रकाश हो जाए।
रविवार -[सं० पु० सं०] सप्ताह का अंतिम दिन, इतवार।
रविश--[सं० स्त्री० फ़ा०] चाल, तरीका, क्यारियों के बीच का छोटा मार्ग।
रश्क—[सं० पु० फ़ा०] डाह, ईर्ष्या।
रश्मि—[सं० पु० सं०] किरण, बाग, घोड़े की लगाम।
रस [सं० पु० सं०] स्वाद, आनंद। जिह्वा द्वारा ६ प्रकार के रस—मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त, कषाय। शरीर की धातुओं में से एक धातु। काव्य-कला आदि के पठन-पाठन अथवा दर्शन से मन में उठता हुआ भाव। काव्य के नवरस।
रसकपूर—[सं० पु०] दे० एक औषधि।
रसकेलि—[सं० पु० सं०] काम-क्रीड़ा।
रसग्रह—[सं० पु० सं०] रसना, जीभ।
रसज्ञ—[वि० सं०] रस का मर्म समझनेवाला, काव्य और कलाओं का ज्ञाता, कुशल, निपुण।
रसज्ञा—[सं० स्त्री० सं०] रसना, जीभ।
रसना—[सं० स्त्री० सं०] जीभ, जिह्वा।
रसनेन्द्रिय—[सं० स्त्री० सं०] जीभ, जिह्वा।
रसपति —[सं० पु० सं०] चन्द्रमा, राजा, शृंगार रस।
रसप्रबन्ध—[सं० पु० सं०] नाटक, एक ही विषय को लेकर तैयार किया हुआ सरस सम्बद्ध काव्य वर्णन।
रसभीना—[वि० हि०] हर्ष-मग्न, रस से द्रवित, तर।
रसराज—[सं० पु० सं०] शृंगार रस।
रसवंत—[सं० पु०] रसिक, प्रेमी।
रसवंती—[सं० स्त्री०] रसोई, रसौत। प्रेमिका।
रसवत—[सं० पु० सं०] एक अलंकार जिसमें एक रस किसी अन्य रस का अंग हो।
रसवादी—[सं० पु० सं०] काव्य में रस को प्रधान मानने वाले।
रसविरोध—[सं० पु० सं०] एक ही पद्य में दो पृथक् रसों का निर्वाह।
रसा—[सं० स्त्री० सं०] पृथ्वी, भूमि, वसुधा, जिह्वा, जीभ।
रसातल—[सं० पु० सं०] पृथ्वी के नीचे ७ लोकों में से छठा लोक।
रसापायी—[सं० पु० सं०] जीभ से पीने वाला।
रसाभास—[सं० पु० सं०] वह अलंकार जिसमें स्थान और विषय का युक्त-युक्त विचार किए बिना रस का वर्णन।
रसायन—[सं० पु० सं०] भस्म। वस्तुओं के तत्त्वों का ज्ञान।
रसायनविद्या—[सं० पु० सं०] पदार्थ-विद्या, वह विद्या जिसमें पदार्थों अथवा धातुओं को मिलाने या अलग करने की विधि का ज्ञान हो।
रसायनिक—[वि०] दे० रसायन शास्त्र-सम्बन्धी, रसायन शास्त्र का जानने वाला।
रसाल—[सं० पु० सं०] आम, गन्ना, ईख, गेहूं, कटहल।
रसालय—[सं० पु० सं०] रस-भवन, रस-स्थान, आम का पेड़।

रसालिका—[वि०] मीठा और छोटा आम।

रसिक—[सं० पु० सं०] रस का स्वाद लेने वाला, सहृदय, भावुक, विलासी। ज्ञाता, एक छन्द।

रसिकता—[सं० पु० सं०] सरसता।

रसिकविहारी—[सं० पु० सं०] श्रीकृष्ण।

रसित—[सं० पु० सं०] शब्द, ध्वनि।

रसूल—[सं० पु० अ०] पैगम्बर।

रसेर—[सं० पु० सं०] पारा, श्रीकृष्ण, षट् दर्शनों से पृथक् माना हुआ एक दर्शन।

रसोपल—[सं० पु० सं०] मुक्ता, मोती।

रसौत—[सं० स्त्री०] एक ओषधि।

रहँकला—[सं० पु०] दे० एक गाड़ी जिसमें तोप लादी जाती थी।

रहँचटा—[सं० पु०] दे० चाह। प्रेम-लिप्सा।

रहचह—[सं० स्त्री०] पक्षियों का चहचहाना।

रहमत—[सं० पु० अ०] दया, अनुकम्पा। कृपा।

रहल—[सं० स्त्री० अ०] पढ़ते समय पुस्तक रखने का स्टैंड।

रहसना [क्रि० अ०] दे० आनन्दित होना।

रहसि—[सं० स्त्री०] गुप्त स्थान, एकान्त।

रहस्य—[सं० पु० सं०] भेद, छिपी बात, गूढ़ तत्व।

रहस्यवाद—[सं० पु० हि०] काव्य के अन्तर्गत दार्शनिक प्रवृत्ति या धारा।

रहित—[वि० सं०] बिना, बगैर, हीन।

रहिला—[सं० पु०] दे० चना।

रहीम—[वि० अ०] दया करने वाला, रहम खाने वाला, दयालु।

राँक—[वि०] दे० निर्धन, दरिद्र, कंगाल।

राँकब—[वि०] दे० निर्धन, कंगाल।

राइ—[सं० पु०] दे० राउ, राय, छोटा राजा।

राउर—[सं० पु०] रनिवास, अन्तःपुर। (व्र०) आपका।

राउल—[सं० पु०] दे० राजा, राजकुल में उत्पन्न व्यक्ति।

राकस—[सं० पु०] दे० राक्षस।

राका—[सं० स्त्री०] पूर्णिमा, पूरनमासी की रात।

राकेश—[सं० पु० सं०] चन्द्रमा।

राक्षस—[सं० पु० सं०] दैत्य, असुर, दुष्ट, निशाचर।

राग—[सं० पु० सं०] स्नेह, प्रेम, प्रीति, किसी प्रिय वस्तु को प्राप्त करने की उत्कट इच्छा, सांसारिक सुख भोगने की अभिलाषा, रंगविशेष, लाल रंग। एक वर्णिक छन्द। गायन की ध्वनि।

रागनी, रागिनी—[सं० स्त्री० सं०] संगीत-शास्त्र के ६ रागों में से प्रत्येक राग का ५ वाँ भेद। इस प्रकार ३६ रागिनी। आगे चलकर प्रत्येक रागिनी के भी दो-दो भेद हैं।

रागी—[सं० पु० सं०] स्नेही, प्रेम करनेवाला। [स्त्री०] रागनी।

राघव—[सं० पु० सं०] रघुवंश के, श्रीरामचंद्रजी।

राज—[सं० पु०] दे० [सं० राज्य] शासन, हुकूमत।

राज—[सं० पु० फ़ा०] भेद, रहस्य।

राज-कर—[सं० पु० सं०] राजा अथवा शासन द्वारा जनता से वसूल किया जानेवाला महसूल।

राजकीय—[वि० सं०] राज-सम्बन्धी, राजा या राज्य का।

राजकोश—[सं० पु० सं०] राजा अथवा राज का ख़ज़ाना।

राजगद्दी—[सं० पु० सं०] राज-सिंहासन।

राजगिरि—[सं० पु० सं०] मगध देश का एक पहाड़। राजगृह। पटना।

राजगीर—[सं० पु० सं०] राज। ईंट, पत्थरों से मकानादि बनानेवाला।

राजगृह—[सं० पु० सं०] राज-महल, विहार में पटना के समीप एक स्थान जो प्राचीन काल में मगध की राजधानी भी रहा है।

राजतरंगिणी—[सं० स्त्री० सं०] काश्मीर के कवि-श्रेष्ठ कल्हण द्वारा लिखी हुई रचना।

राजतिलक—[सं० पु० सं०] राज्याभिषेक, राजगद्दी मिलने का शुभ अवसर।

राजत—[वि० सं०] चाँदी का, चाँदी-सम्बन्धी।

राजत्व—[सं० पु० सं०] राजा का भाव अथवा कार्य, राजा का शासन, शासन।

राजदण्ड—[सं० पु० सं०] राजा अथवा शासक द्वारा दिया हुआ दण्ड।

राजदंत—[सं० पु० सं०] बीच का बड़ा चौड़ा दाँत।

राजदूत—[सं० पु० सं०] राजा अथवा राज्य का संदेशवाहक। राज अथवा राजा द्वारा नियुक्त प्रतिनिधि।

राजद्रोह—[सं० पु० सं०] राजा अथवा शासन के प्रति उठाई हुई बग़ावत। राजद्रोही।

राजद्वार—[सं० पु० सं०] न्यायालय।

राजधर—[सं० पु० सं०] मंत्री।

राजधर्म्म—[सं० पु० सं०] राजा का कर्त्तव्य, शासक का कर्त्तव्य।

राजधानी—[सं० स्त्री० सं०] किसी राजा, राष्ट्र अथवा राज्यविशेष का वह केन्द्रस्थान जहाँ से शासन संचालित होता है।

राजना—[क्रि० अ०]दे० शोभा पाना। रहना, उपस्थित होना।

राजनीति—[सं० स्त्री० सं०] राजा अथवा शासन का शासन-नियम, रीति-नीति। वि० राजनीतिक, राजनैतिक।

राजन्य—[सं० पु० सं०] राजा, क्षत्रिय।

राजपथ—[सं० पु० सं०] राज-मार्ग। जो आम रास्ता नहीं होता। बड़ी सड़क।

राजपुरुष—[सं० पु० सं०] राज्य कर्मचारी।

राजपूत—[सं० पु०] दे० [सं० राज-पुत्र] राजा का पुत्र, क्षत्रिय।

राजपूतान—[सं० पु०] दे० राजपूतों के रहने का स्थान। एक प्रदेश।

राजप्रासाद—[सं० पु० सं०] राज-महल।

राजभक्त—[वि० सं०] राज्य अथवा राजा के प्रति भक्ति रखनेवाला। [स्त्री०] राजभक्ति।

राजभवन—[सं० पु० सं०] राज-महल।

राजभोग—[सं० पु० सं०] एक महीन धान, दोपहर के समय अर्पित नैवेद्य।

राजमण्डल—[सं० पु० सं०] राज-सभा। राजाओं अथवा राज्यों की सभा।

राजयक्ष्मा—[सं० पु० सं०] तपेदिक। टी० बी०।

राजयोग—[सं० पु०] महर्षि पतंजलि द्वारा बताई हुई एक यौगिक क्रिया। जन्मकुण्डली में वह शुभ योग जिसके प्रभाव से राजा बनने का अवसर मिले।

राजराज—[सं० पु० सं०] सम्राट। चन्द्रमा। कुबेर।

राजराजेश्वर—[सं० पु० सं०] सम्राट। महाराजाधिराज। राजाओं का राजा।

राजरानी—[सं० स्त्री०] राजा की पत्नी। रानी।

राजरोग—[सं० पु० सं०] तपेदिक। असाध्य रोग। वह रोग अथवा मुकद्दमा जो अर्से तक चलता रहे।

राजर्षि—[सं० पु० सं०] राजवंशीय महर्षि।

राजलक्ष्मी—[सं० स्त्री० सं०] राज-वैभव। राजसी ठाट-बाट।

राजवंश—[सं० पु० सं०] राजा का कुल।

राजश्री—[सं० स्त्री० सं०] राजलक्ष्मी। राज-वैभव।

राजसंसद्—[सं० पु० सं०] राजसभा।

राजस—[वि० सं०] रजोगुणी। [वि०] राजसिक।

राजसत्ता—[सं० स्त्री० सं०] राजा की शक्ति। शासन करने की शक्ति।

राजसभा—[सं० स्त्री० सं०] राजदरबार।

राजसी—[वि० हि०] राजाओं का-सा। शाही।

राजसूय—[सं० पु० सं०] यज्ञ-विशेष जिसे चक्रवर्ती सम्राट करते हैं, जिसमें अन्य राजा सेवक बनते हैं।

राजस्थान—[सं० पु० सं०] राजा का स्थान। वर्तमान भारत का एक राज्य।

राजस्व—[सं० पु० सं०] राज-कर।

राजहंस—[सं० पु० सं०] बड़ा हंस।

राजा—[सं० पु०] [सं० राजन्] स्वामी। राज्य करनेवाला। शासक। मालिक। प्रिय। सुंदर।

राजाज्ञा—[सं० स्त्री० सं०] राजा की आज्ञा।

राजाधिराज—[सं० पु० सं०] शाहंशाह। राजाओं का राजा।

राजावर्त्त—[सं० पु० सं०] लाजवर्द। [दे०] लाजवर्त्त नामक एक उपरत्न।

राजि,राजी—[सं० स्त्री० सं०] पंक्ति, श्रेणी। कतार। रेखा।

राजिका—[सं० स्त्री० सं०] पंक्ति। लकीर। रेखा।

राजित—[वि० सं०] शोभित, विराजित।

राजिव—[सं० पु०] दे० राजीव, कमल।

राजीनामा—[सं० पु०] दे० आपसी समझौता।

राजीव—[सं० पु० सं०] कमल।

राजोपजीवी—[सं० पु० सं०] राज-कर्मचारी।

राज्ञी—[सं० स्त्री०] रानी। सूर्य की स्त्री। संज्ञा।

राज्यतंत्र—[सं० पु० सं०] राज्य की शासन-शैली।

राज्याभिषेक—[सं० पु० सं०] राज-तिलक। राजगद्दी प्राप्त होने की रीति।

राट्—[सं० पु० सं०] राजा। श्रेष्ठ पुरुष। सरदार।

राठौर [सं० पु०] दे० क्षत्रियों की एक जाति। [सं० राष्ट्रकूट] दक्षिणी भारत का एक राजवंश।

राड़—[वि०] दे० नीच। डरपोक। कायर।

राढ़ि—[सं० पु० सं०] उत्तरी बंगाल का एक हिस्सा।

राणा—[सं० पु०] दे० राजा, राना।

राता—[वि०] दे० लाल, सुर्ख, रँगा हुआ। आसक्त।

रातिब [सं० पु० अ०] पशुओं का भोजन।

रात्रि—[सं० स्त्री० सं०] रात, निशा।

राद्ध—[वि० सं०] पकाया हुआ।

राध—[सं० स्त्री० सं०] सिद्धि, साधन।

राधन—[सं० पु० सं०] मिलना। सन्तोष। प्राप्ति।

राधा—[सं० स्त्री० सं०] राधिका।

श्रीकृष्ण-प्रिया। प्रीति। वैशाख पूर्णिमा। धनियाँ।

राधारमण—[सं० पु० सं०] श्रीकृष्ण।

राधावल्लभ-[सं० पु० सं०] श्रीकृष्ण।

राधावल्लभी, राधावल्लभीय—[सं० पु० सं०] एक वैष्णव सम्प्रदाय।

रान—[सं० स्त्री० फ़ा०] जाँघ, जंघा।

राना—[सं० पु०] दे० राणा।

राब—[सं० स्त्री०] दे० गन्ने के रस को औटाकर गाढ़ा किया हुआ गीला गुड़।

राम—[सं० पु० सं०] अवध के राजा, दशरथनन्दन। विष्णु के दस अवतारों में से एक। ईश्वर, आत्मा, एक मात्रिक छन्द।

रामकहानी—[सं० स्त्री० हि०] दुःख से भरी करुणकथा। बड़ी कथा।

रामकली—[सं० स्त्री० सं०] एक रागिनी-विशेष।

रामगीती—[सं० पु० सं०] ३६ मात्राओंवाला एक मात्रिक छन्द।

रामचन्द्र—[सं० पु० सं०] दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र श्री रामजी।

रामटेक—[सं० पु०] दे० रामगिरि। नागपुर जिले की एक पहाड़ी।

रामतरोई—[सं० पु०] दे० भिण्डी।

रामता—[सं० स्त्री० सं०] राम का गुण।

रामतारक—[सं० पु० सं०] रामजी का मंत्र (ॐ रां रामाय नमः)।

रामदास—[सं० पु०सं०] श्री हनुमान, शिवाजी के गुरु।

रामदूत-[सं० पु० सं०] हनुमानजी।

रामधनुष—[सं० पु० सं०] इंद्र धनुष।

रामधाम—[सं० पु० सं०] बैकुण्ठ।

रामनामी—[सं० पु०] दे० जिसपर रामनाम छपा हुआ हो ऐसा वस्त्र। प्रायः दुपट्टा। एक प्रकार की माला।

रामरस–[सं० पु०] नमक।

रामराज्य—[सं० पु० सं०] राम का राज्य। आदर्श राज्यव्यवस्था जिसमें जनता पूर्णरूप से सुखी हो।

रामलीला—[सं० स्त्री० सं०] श्री रामचन्द्र जी के जीवन-चरित्र का नाटकीय अभिनय जो अब भी बहुत से शहरों, कस्बों और ग्रामों में किया जाता है।

रामबाण—[वि० सं०] अचूक दवा, तुरन्त लाभ करनेवाली औषधि।

रामशर—[सं० पु० सं०] एक प्रकार का नरशल।

रामसनेही—[सं० पु०] वैष्णवों का एक सम्प्रदाय-विशेष। राम का स्नेही, प्रेमी।

रामसुन्दर—[सं० स्त्री० हि०] एक प्रकार की नाव।

रामसेतु—[सं० पु० सं०] रामेश्वर के समीप समुद्र पर श्री रामचन्द्रजी द्वारा बनवाया हुआ पुल।

रामा—[सं० स्त्री० सं०] लक्ष्मी, राधा, सीता, रुक्मिणी, नदी, सुंदरी। आठ वर्णों का एक वर्णिक वृत्त।

रामानन्द—[सं० पु० सं०] कबीर के गुरु। सुप्रसिद्ध वैष्णव सम्प्रदाय के आचार्य।

रामानन्दी—[वि० सं०] रामानन्द के सम्प्रदाय का साधु।

रामानुज—[सं० पु० सं०] वेदांत के अन्तर्गत विशिष्टाद्वैतवाद के प्रवर्तक आचार्य।

रामायण—[सं० पु० सं०] राम-चरित-संबंधी काव्य। प्रथम वाल्मीकि रामायण जो आदि काव्य माना जाता है। द्वितीय तुलसीदास विरचित रामचरित मानस।

रामायणी—[वि०] दे० रामायण से संबंधित। रामायण की कथा कहने वाला।

रामायुध—[सं० पु० सं०] धनुष।

रामावत—[सं० पु० सं०] आचार्य रामानन्द द्वारा चलाया हुआ एक वैष्णव सम्प्रदाय।

रामिल—[सं० पु० सं०] पति। कामदेव।

रामेश्वर—[सं० पु० सं०] दक्षिण भारत में समुद्र-तट पर स्थापित मंदिर का शिवलिंग अथवा वह स्थान। दक्षिण भारत का एक तीर्थ-स्थान।

राय—[सं० पु०] दे० सामंत, सरदार, राजा, भाट। [फ़ा०] परामर्श, मत, सलाह।

रायज—[वि० अ०] जिसका रिवाज़ हो।

रायसा—[सं० पु०] दे० पृथ्वीराज रासो।

रार, रारि—[सं०] दे० झगड़ा-टंटा। लड़ाई, तकरार।

रावटी—[सं० स्त्री० हि०] छोलदारी, छोटा डेरा, एक प्रकार का पत्थर।

रावण—[सं० पु०] दशानन, दशकंधर। दस सिर और बीस भुजाओं वाला लंका-नरेश।

रावणि—[सं० पु० सं०] मेघनाद, रावण का पुत्र।

रावत—[सं० पु०] दे० छोटा राजा, सरदार, सामंत बहादुर।

रावरो—[अ०] दे० आपका।

रावल—[सं० पु०] दे० राजमहल, अन्तःपुर। सरदार, मुखिया। राजा अथवा राजा की उपाधि।

राशि—[सं० स्त्री० सं०] ढेर, समूह, क्रांतिवृत्त के १२ तारासमूह—मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुंभ और मीन।

राशिचक्र—[सं॰पु॰ सं॰] राशिमंडल।

राशिनाम—[सं॰ पु॰] दे॰ किसी व्यक्ति का राशि के अनुसार रखा हुआ नाम।

राशीश—[सं॰ पु॰ सं॰] राशिपति, किसी राशि का स्वामीग्रह।

राष्ट्र—[सं॰ पु॰ सं॰] देश, राज्य।

राष्ट्रकूट—[सं॰ पु॰ सं॰] राठौर।

राष्ट्रतंत्र—[सं॰ पु॰सं॰] राज्य-शासन-प्रणाली।

राष्ट्रपति—[सं॰ पु॰ सं॰] जनता अथवा जनता के प्रतिनिधियों द्वारा निर्वाचित किसी राष्ट्र का सब से बड़ा अधिकारी, शासक।

राष्ट्रिय, राष्ट्रीय—[वि॰सं॰] राष्ट्र का, राष्ट्रसम्बन्धी।

रास—[सं॰ स्त्री॰ सं॰] प्राचीन काल में नृत्य-गीत के साथ की जाने वाली क्रीड़ा, एक प्रकार का नाटक, श्रीकृष्ण के साथ गोपियों द्वारा की जाने वाली नृत्य-क्रीड़ा। [अ॰] लगाम।

रासक—[सं॰ पु॰ सं॰] हास्यरस का एकांकी नाटक।

रासधारी—[सं॰ पु॰] दे॰ रास रचने वाला, श्रीकृष्ण लीला का अभिनय-प्रदर्शन करने वाला।

राह—[सं॰ पु॰] दे॰ रास्ता, मार्ग।

राहगीर—[सं॰ पु॰ फा॰] यात्री, राही, बटोही।

राहचौरंगी—[सं॰ स्त्री॰] दे॰ चारों ओर को जाने वाला रास्ता।

राहज़न—[सं॰ पु॰ फा॰] डाकू, [स्त्री॰] राहज़नी।

राहत—[सं॰ स्त्री॰ अ॰] आराम, सुख।

राहदारी—[सं॰ स्त्री॰ फा॰] सड़क पर चलने का कर।

राहरीति—[सं॰स्त्री॰] दे॰ रीति-रस्म।

राहिन—[सं॰ पु॰ अ॰] बंधक या रेहन रखने वाला।

राही—[सं॰ पु॰ फा॰] यात्री, बटोही।

राहु—[सं॰ पु॰ फ़ा॰] ९ ग्रहों में से एक ग्रह।

राहुग्रस्त—[सं॰ पु॰ सं॰] सूर्य अथवा चन्द्रग्रहण।

राहुग्रास—[सं॰ पु॰ सं॰] सूर्य या चन्द्रग्रहण।

राहुल—[सं॰ पु॰ सं॰] महात्मा बुद्ध का पुत्र।

रिंद—[सं॰ पु॰ फ़ा॰] मस्त, स्वच्छंद, धार्मिक बंधनों को न मानने वाला।

रियाया—[सं॰ स्त्री॰ अ॰] प्रजा।

रिक्त—[वि॰सं॰] खाली, रीता, निर्धन।

रिक्ता—[सं॰स्त्री॰ सं॰] चौथ, नवमी, चतुर्दशी की तिथियाँ।

रिक्थ—[सं॰ पु॰ सं॰] विरासत में प्राप्त हुई जायदाद।

रिखब—[सं॰ पु॰] दे॰ सात स्वरों में से एक स्वर।

रिग—[सं॰ पु॰] दे॰ [सं॰ ऋग्] एक वेद।

रिचा—[सं॰ स्त्री॰ सं॰] ऋग्वेद का मंत्र-विशेष।

रिज़क—[सं॰पु॰] दे॰ [अ॰] रिज़्क। जीविका, रोज़ी।

रिजु—[वि॰] दे॰ [सं॰ ऋजु] सीधा।

रिझाना—[क्रि॰ सं॰] दे॰ किसी को अपने ऊपर अनुरक्त अथवा प्रेमी बनाना।

रिपुंजय—[सं॰ पु॰ सं॰] शत्रु पर विजय प्राप्त करने वाला।

रिपु—[सं॰ पु॰ सं॰] शत्रु, बैरी।

रिपुसूदन—[सं॰ पु॰ सं॰] शत्रुघ्न। [वि॰] शत्रु का नाश करने वाला।

रिमझिम—[सं॰ स्त्री॰] छोटी-छोटी बूँदों का लगातार गिरना।

रियासत—[सं॰ स्त्री॰ अ॰] राज्य, हकूमत, वैभव। [वि॰] रियासती।

रिरना—[क्रि॰ अ॰] गिड़गिड़ाना।

रिवाज—[सं॰ पु॰ अ॰] रीतिरस्म, प्रथा, प्रणाली।

रिश्ता—[सं॰पु॰फ़ा॰] नाता, सम्बन्ध।

रिश्वत—[सं॰ स्त्री॰ अ॰] घूस, अंकोर, उत्कोच।

रिष्यमूक—[सं॰पु॰] दे॰ [सं॰ ऋष्य-मूक] दक्षिण में एक पहाड़।

रिसना—[क्रि॰ अ॰] दे॰ धीरे-धीरे बहना।

रिसहा—[वि॰] दे॰ क्रोधी।

रिसहाय—[वि॰ हि॰] नाराज़, क्रुद्ध, कुपित।

रिसाना—[क्रि॰ अ॰ हि॰] नाराज़ होना, क्रोधित होना।

रिसाल—[सं॰ पु॰] दे॰ राज्य-कर।

रिसालदार—[वि॰ फ़ा॰] घुड़सवार सेना का एक अफ़सर।

रिसाला—[सं॰ पु॰ फ़ा॰] घुड़सवार सेना, मासिक पत्र।

रिसिक—[सं॰ स्त्री॰] दे॰ [सं॰ रिषीक] तलवार।

रिहल—[सं॰ स्त्री॰ अ॰] पुस्तक रखकर पढ़ने का स्टैंड।

रिहा—[वि॰ फ़ा॰] छुटकारा, मुक्त।

री—[अव्य॰ स्त्री॰] दे॰ सम्बोधन विशेष। प्रायः ओरी, एरी, री।

रीछराज—[सं॰ पु॰] दे॰ जामवन्त।

रीज्या—[सं॰ स्त्री॰ सं॰] भर्त्सना, घृणा।

रीझ—[सं॰ स्त्री] दे॰ प्रसन्नता, मुग्ध होने का भाव।

रीठ—[सं॰ स्त्री॰] दे॰ [सं॰ रिष्ट] युद्ध। [डिं॰] तलवार। वि॰ अशुभ।

रीठा—[सं॰ पु॰] दे॰ एक जंगली वृक्ष जिसके बेर जैसे फल होते हैं। जिन्हें

लोग कपड़े धोने के काम में भी लेते हैं।

रीढ़—[सं० स्त्री०] दे० [सं० रीढ़क] मेरु-दण्ड, पीठ के बीच की लम्बी खड़ी हड्डी।

रीत—[सं० स्त्री०] दे० रस्म-रिवाज।

रीता—[वि०] दे० [सं० रिक्त] खाली, शून्य।

रीति—[सं० स्त्री० सं०] प्रथा, परिपाटी, रस्म, रिवाज, ढंग, तरह, प्रकार, नियम, पद्धति, प्रणाली। कव्य में विशिष्ट एवं मनोहर पदयोजना जिसके द्वारा माधुर्य गुण की सृष्टि होती है, इसे काव्यात्मा मानते हैं।

रीसना—[क्रि० अ०] दे० क्रोधित होना।

रुंड—[सं० पु० सं०] सिर अथवा हाथ पैर रहित धड़।

रुंडिका—[सं० स्त्री० सं०] युद्धभूमि।

रुँधना—[क्रि० अ०] दे० रुक जाना, घिर जाना, मार्ग बन्द होना।

रुक्का—[सं० पु०] दे० छोटा पुर्जा, कर्ज लेने पर लिखा हुआ लेख।

रुक्म—[सं० पु० सं०] स्वर्ण, धतूरा, रुक्मिणी का भाई।

रुक्मवती—[सं० स्त्री० सं०] रूपवती, चम्पक माला, एक वृत्त।

रुक्मसेन—[सं० पु० सं०] रुक्मिणी का भाई।

रुक्मागंद—[सं० पु० सं०] एक राजा।

रुक्मिणी—[सं० स्त्री० सं०] विदर्भराज भीष्मक की पुत्री, श्रीकृष्ण की पटरानी।

रुक्मी—[सं० पु०] [सं० रुक्मिन्] राजा भीष्मक का पुत्र, रुक्मिणी का भाई।

रुक्ष—[वि०] [सं० रूक्ष] नीरस, सूखा, विरस, शुष्क।

रुक्षता—[सं० स्त्री० सं०] दे० रुखाई, उदासीनता, शुष्कता।

रुख—[क्रि० वि० सं०]ओर, तरफ़। [सं० पु०] गाल, कपोल। कृपा-दृष्टि। मन की इच्छा। आगे या सामने का भाग। शतरंज में हाथी नामक मोहरा।

रुख़सत—[सं० स्त्री० अ०] विदा, छुट्टी, प्रस्थान, प्रयाण।

रुखानी—[सं० स्त्री०] दे० बढ़ईगीरी का एक औजार।

रुखिता—[सं० स्त्री०] दे० [सं० रुषिता] मान करने वाली, मानिनी नायिका।

रुग्न—[वि०] [सं० रुग्ण] बीमार, रोगी।

रुच—[सं० स्त्री०] दे० [सं० रुचि] रुचि।

रुचक—[वि० सं०] सुस्वाद। [सं० पु०] एक प्रकार का नीबू, कबूतर, माला।

रुचना—[क्रि० अ०] दे० अच्छा लगना, रुचि के अनुकूल होना, भला लगना।

रुचा—[सं० स्त्री०] दे० चाह, इच्छा, मैना।

रुचि—[सं० स्त्री० सं०] इच्छा, चाह, प्रेम, स्वाद, भूख, एक अप्सरा।

रुचिकर—[वि० सं०] रुचि पैदा करने वाला, सुस्वादु, अच्छा। वि०—रुचिकारक।

रुचित—[वि० सं०] इच्छित।

रुचिता—[सं० स्त्री० सं०] प्रेम, सौंदर्य।

रुचिर—[वि० सं०] रोचक, सुंदर, मधुर, मन को अच्छा लगनेवाला।

रुचिरता—[सं० स्त्री० सं०] सुंदरता।

रुचिरवृत्ति—[सं० स्त्री० सं०] अस्त्र-संहार का एक भेद।

रुचिरा—[सं० स्त्री० सं०] केसर, एक छन्द।

रुचिराई—[सं० स्त्री०] दे० सुंदरता, मनोहरता।

रुचिवर्द्धक—[वि० सं०] रुचि बढ़ाने वाला, भूख बढ़ाने वाला।

रुचिष्य—[वि० सं०] इच्छित, अभिलषित।

रुच्य—[वि० सं०] सुंदर, रुचिकर, मनोहर।

रुज—[सं० पु० सं०] रोग, कष्ट, पीड़ा, घाव, भांग।

रुजाली—[सं० स्त्री० सं०] कष्टों का समूह, रोगों का समूह।

रुजू—[वि०] दे० चित्त का झुकाव, प्रवृत्ति।

रुझान—[सं० स्त्री०] दे० प्रवृत्ति, (चित्त का) झुकाव।

रुणित—[वि० सं०] बजता या झनझन करता हुआ।

रुत—[सं० स्त्री०] दे० [सं० ऋतु] मौसम, फसल। [सं० पु० सं०] चिड़ियों का कलरव, ध्वनि।

रुतबा—[सं० पु० अ०] ओहदा, मान-सम्मान।

रुदन—[सं० पु०] दे० [सं० रोदन] रोना।

रुदराच्छ—[सं० पु०] दे० [सं० रुद्राक्ष] एक बड़ा पेड़ जिसके फलों की गुठलियों की माला बनाई जाती है।

रुदित—[वि० सं०] रोता हुआ।

रुद्ध—[वि० सं०] रुधा हुआ, रुका हुआ, बंद।

रुद्र—[सं० पु० सं०] शिवजी का एक रूप। वि०—भयंकर, भयानक।

रुद्रगण—[सं० पु० सं०] शिवजी के गण। (सेवक) ११ रुद्रों का समूह।

रुद्रट—[सं० पु० सं०] संस्कृत

काव्यालंकार ग्रन्थों के रचयिता एक आचार्य ।

रुद्रतेज—[सं० पु०] [सं० रुद्रतेजस्] षडानन, कार्तिकेय ।

रुद्रपति—[सं० पु०] शिवजी ।

रुद्रपत्नि—[सं० स्त्री० सं०] दुर्गा ।

रुद्रलोक—[सं० पु० सं०] शिवजी का निवासस्थान ।

रुद्रवन्ती—[सं० स्त्री०] रुदन्ती, एक ओषधि ।

रुद्रविंशति—[सं० स्त्री० सं०] रुद्र-बीसी । प्रभव आदि साठ संवत्सरों में से अन्तिम बीस संवत्सर ।

रुद्राक्रीड—[सं० पु० सं०] श्मशान ।

रुद्राक्ष—[सं० पु० सं०] दे० रुदराच्छ ।

रुद्राणी—[सं० स्त्री० सं०] दुर्गा, पार्वती । रुद्रजटा नामकी एक ओषधि-लता ।

रुद्रावास—[सं० पु० सं०] शिव का निवास-स्थान । काशीपुरी ।

रुद्रिय—[वि० सं०] आनन्ददायी, रुद्रका, रुद्र-सम्बन्धी ।

रुद्री—[सं० स्त्री०] वेद के रुद्रानुवाक सूत्र की ११ आवृत्तियाँ ।

रुधिर—[सं० पु० सं०] खून, रक्त ।

रुधिराशी—[वि० सं०] खून पीने वाला ।

रुनझुन—[सं० स्त्री०] दे० पायलों की सुमधुर ध्वनि ।

रुनित—[वि०] दे० बजता हुआ ।

रुनी—[सं० पु०] दे० घोड़ों की एक जाति विशेष ।

रुनुक-झुनुक—[सं० स्त्री०] रुनझुन ।

रुपहला—[वि०] दे० चाँदी का-सा । श्वेत । सफेद ।

रुबाई—[सं० स्त्री० अ०] एक छन्द ।

रुमंच—[सं० पु०] दे० [सं० रोमांच] पुलकावली ।

रुमन्वान—[सं० पु० सं०] एक प्राचीन ऋषि । एक पहाड़ ।

रुमाली—[सं० स्त्री०] दे० छोटा अंगोछा । लंगोट ।

रुमावली—[सं० स्त्री०] दे० रोमावली ।

रुराई—[सं० स्त्री०] दे० सुन्दरता ।

रुरु—[सं० पु० सं०] कस्तूरी मृग । एक दैत्य जिसे दुर्गा ने मारा था । एक भैरव ।

रुरुक्ष—[वि० सं०] रुक्ष । रूखा-सूखा ।

रुष, रुषा—[सं० पु०सं०] क्रोध, रोष ।

रुष्ट—[वि० सं०] अप्रसन्न । कुपित । नाराज ।

रुष्टता—[सं० स्त्री० सं०] अप्रसन्नता । नाराज़गी ।

रुस्वा—[वि० फा०] जिसकी निन्दा या बदनामी हुई हो ।

रुस्तम—[सं० पु० फा०] फारस देश का एक वीर योद्धा ।

रुहिर—[सं० पु०] दे० रुधिर ।

रुहेलखण्ड—[सं० पु०] दे० अवध के उत्तर-पश्चिम में एक प्रदेश ।

रू—[सं० पु० फा०] मुँह । चेहरा । सामना । द्वारा ।

रूबरू—[सं० पु० फा०] सामने । प्रत्यक्ष ।

रूख—[सं० पु०] दे० पेड़ । वृक्ष ।

रूखड़—[सं० पु० दे०] योगी विशेष ।

रूखड़ा, रूखड़ी—[सं० पु०] दे० छोटा पौधा । बिरवा ।

रूखा—[वि०] दे० सूखा । शुष्क । चिक-नाई बिना ।

रूज—[सं० पु०] एक कीड़ा ।

रूझा—[वि०] दे० बीमार ।

रूठना—[क्रि० अ०] दे० रुष्ट होना। अप्रसन्न होना ।

रूढ़—[वि० सं०] सवार । चढ़ा हुआ । आरूढ़ । प्रसिद्ध । गँवार । उजड्ड । कठोर ।

रूढ़यौवना—[सं० स्त्री०] [सं० आरूढ़ यौवना] पूरी तरह यौवनावस्था को प्राप्त लड़की । स्त्री । नवयौवना ।

रूढ़ा—[सं० स्त्री० सं०]

रूढ़ि—[सं० स्त्री० सं०]उठान । उभार । चाल । प्रथा । उत्पत्ति । एक संज्ञा-भेद ।

रूदाद—[सं० स्त्री०] दे० दशा । अवस्था । हाल । समाचार । अदालती कार्यवाही ।

रूप—[सं० पु० सं०] शक्ल-सूरत, सौंदर्य, आकृति, स्वभाव ।

रूपक—[सं० पु० सं०] दृश्य काव्य, नाटक, मूर्ति, वह काव्य जिसका अभिनय किया जा सके । रूपक के १० भेद—नाटक, प्रकरण, व्यायोग, भाण, समव-कार, डिम, अंक, ईहामृग, प्रहसन, बीथी । एक अर्थालंकार ।

रूपकरण—[सं० पु० सं०] एक प्रकार का घोड़ा ।

रूपकातिशयोक्ति—[सं० स्त्री० सं०] अतिशयोक्ति अलंकार का भेद, जिसमें केवल उपमान का वर्णन करके उपमेयों का अर्थ प्रकट करते हैं ।

रूपकांता—[सं० स्त्री० सं०] १७ वर्णों का वर्णिक वृत्त ।

रूपगर्विता—[सं० स्त्री० सं०] अपने सौंदर्य का अभिमान करनेवाली नायिका ।

रूपजीवी—[सं० पु०] [सं० रूप जीविन्] बहुरूपिया ।

रूपजीविनी—[सं० स्त्री० सं०] वेश्या ।

रूपनिधान—[सं० पु० सं०] अत्यन्त सुन्दर ।

रूपमंजरी—[सं० स्त्री० सं०] एक फूल, धान की एक किस्म ।

रूपमनी—[वि० दे०] रूपवती ।

रूपमय—[वि०] दे० अति सुन्दर,

रूपमयी।

रूपमान—[वि०] दे० रूपवान, अति सुन्दर।

रूपमाला—[सं० स्त्री० सं०] एक छंद।

रूपरूपक—[सं० पु० सं०] सांग रूपकालंकार।

रूपवंत—[वि०] [सं० रूपवत्] सुन्दर।

रूपवती—[सं० स्त्री सं०] गौरी छंद, [वि०] सुन्दर स्त्री।

रूपवान—[वि०] [सं० रूपवत्] सुन्दर। [स्त्री०] रूपवती।

रूपराशि—[सं० पु० सं०] रूप की खान, अत्यन्त सुन्दर।

रूपहला—[सं० पु०] दे० रूपहरा, चाँदी का-सा, धवल, श्वेत।

रूपा—[सं० पु०] दे० [सं० रूप्य] चाँदी। सफेद घोड़ा।

रूपित—[सं० पु० सं०] ज्ञान-वैराग्य आदि पात्र वाला नाटक अथवा उपन्यास।

रूपी—[वि०] [सं० रूपिन्] रूप वाला, सदृश। समान।

रूपोश—[वि० फा०] गुप्त, फ़रार, छिपकर भगा हुआ।

रूप्यक—[सं० पु० सं०] रुपया।

रूमटी—[सं० स्त्री०] दे० बहाना, व्याज, घुमाव।

रूमना—[क्रि० स०] दे० झूलना, झूमना।

रूरना—[क्रि० अ०] दे० चिल्लाना।

रूसा—[सं० पु०] दे० अडूसा। एक सुगंधित घास जिससे तेल निकाला जाता है।

रूसी—[वि०] रूस देश का निवासी, रूस-सम्बन्धी, रूस का।

रूह—[सं० स्त्री० अ०] आत्मा,सत्त, सार, इत्र का एक भेद।

रेंकना—[क्रि० अ०] गदहे का बोलना, बुरे स्वर से गाना।

रेंगटा—[सं० पु०] दे० गदहे का बच्चा।

रेंगना—[क्रि० अ०] दे० धीरे-धीरे चलना, जैसे चींटे वगैरह चलते हैं।

रेंड़—[सं० पु०] [सं० एरंड] एक पौधा जिसके बीजों से तेल तैयार किया जाता है।

रे—[अव्य० सं०] नीच सम्बोधन-शब्द। किसी को ललकारते हुए संबोधन करना।

रेख—[सं० स्त्री०] दे० रेखा, लकीर।

रेखता—[सं० पु० फ़ा०] एक प्रकार की गज़ल।

रेखा—[सं० स्त्री० सं०] लकीर।

रेखांकित—[वि० सं०] रेखा द्वारा स्पष्ट किया हुआ, बनाया हुआ, चिह्नित।

रेखागणित—[सं० पु० सं०] ज्योमेट्री, रेखाओं द्वारा निर्धारित किए कुछ सिद्धांतों के सहारे गणित के प्रश्न हल करना, गणितशास्त्र का एक अंग।

रेखित—[वि० सं०] जिस पर रेखा पड़ी हो।

रेगिस्तान—[सं० पु० फ़ा०] मरुस्थल, रेतीला मैदान।

रेचक—[वि० सं०] दस्तावर, प्राणायाम की एक क्रिया।

रेचन—[सं० पु० सं०] दस्त लाना, जुलाब।

रेणु—[सं० पु० सं०] धूल, कण, कणिका।

रेणुका—[सं० स्त्री० सं०] बालू,रेत, पृथ्वी, परशुरामजी की माता।

रेत—[सं० पु०] दे० बालू, धूल, रज, [सं० रेतस्] वीर्य, पारा, पानी, जल।

रेतीला—[वि०] रेत का, बालुका।

रेल-ठेल—[सं० पु०] दे० भीड़भाड़, भरमार।

रेलना—[क्रि० स०] दे० आगे-पीछे को धकेलना।

रेला—[सं० पु०] दे० धक्का, बहाव, प्रवाह।

रेवड़—[सं० पु०] दे० झुण्ड, भेड़-बकरियों की कतार।

रेवत, रेवतक—[सं० पु० सं०]बलदेव जी के स्वसुर।

रेवतक—[सं० पु० सं०] कबूतर।

रेवती—[सं० स्त्री० सं०] बलरामजी की पत्नी, एक नक्षत्र, दुर्गा, गाय।

रेवतीरमण—[सं०पु०सं०] बलदेवजी।

रेवा—[सं० स्त्री० सं०] नर्मदा नदी, दुर्गा, रति, रीवाँ राज्य।

रेशा—[सं० पु० फ़ा०] तंतु, बारीक सूत।

रेह—[सं० स्त्री०] दे० ऊसर की खार मिट्टी।

रेहन—[सं० पु० अ०] गिरवी, बंधक।

रेहनदार—[सं० पु० अ०, फ़ा०] जिसके पास गिरवी रखा गया हो, महाजन, साहु।

रेहला—[सं० पु०] दे० चना।

रेहू-पेहू—[सं० स्त्री०] दे० अधिक, बहुतायत।

रै—[सं० पु० सं०] धन-सम्पत्ति, सोना, शब्द।

रैदास—[सं० पु०] दे० एक भक्त जो चमार थे।

रैन, रैनि—[सं० स्त्री०] दे० रात।

रैय्यत—[सं० स्त्री० अ०] रिआया। प्रजा।

रैय्याराव—[सं० पु०] दे० छोटा राजा, मालिक, सरदार, स्वामी।

रैयत—[सं० पु० सं०] बादल।

रैवतक—[सं० पु० सं०] गुजरात में एक पहाड़, गिरनार ।

रैहर—[सं० पु०] दे० झगड़ा-टंटा, बखेड़ा ।

रोंगटा—[सं० पु०] दे० शरीर के छोटे छोटे बाल ।

रोंगटी—[सं० स्त्री०] दे० खेल में बुरा मानना । बेईमानी करना ।

रोंट—[सं० स्त्री०] दे० छल, कपट, बहाना ।

रोंटिया—[सं० पु०] दे० छली, कपटी, धूर्त ।

रोकटोक—[सं० स्त्री०] दे० मनाही, बाधा ।

रोकड़—[सं० स्त्री०] जमा, नक़द, नक़द धन, रुपया-पैसा ।

रोकड़िया—[सं० पु०] खजांची, रुपया रखनेवाला ।

रोग—[सं० पु० सं०] बीमारी, मर्ज़ ।

रोगग्रस्त—[वि० सं०] रोग से पीड़ित, बीमार ।

रोगदई—[सं० स्त्री०] अन्याय, बेईमानी ।

रोग़न—[सं० पु०] [फ़ा० रौग़न] तेल, चिकनाई, किसी चीज़ पर लगाने से चमक लाने वाला लेप, वार्निस ।

रोगी—[वि०] बीमार ।

रोचक—[वि०] दे० दिलचस्प, रुचि-कारक, मन को अच्छा लगनेवाला ।

रोचन—[वि० सं०] रोचक, मनो-रंजक, दिलचस्प, लाल ।

रोचना—[सं० स्त्री० सं०] लाल कमल, रोली, टीका, तिलक । [सं० पु०] दे० तिलक करने का रोरी का चन्दन ।

रोचि—[सं० स्त्री०] [सं० रोचिस्] कांति, शोभा, किरण, रश्मि ।

रोचित—[वि०] सुंदर, शोभापूर्ण, प्रिय ।

रोचिष्णु—[वि० सं०] रुचने योग्य, दीप्तमान, प्रकाशमान ।

रोज—[सं० पु०] दे० रोना एक बनैला पशु ।

रोज़गार—[सं० पु० फ़ा०] जीविका, धंधा, पेशा ।

रोज़नामचा—[सं० पु० फ़ा०] डायरी, वह पुस्तक जिसमें दैनिक आय-व्यय अथवा कार्य का लेखा लिखा जाता है ।

रोज़मर्रा—[अव्य० फ़ा०] हररोज, नित्यप्रति ।

रोज़ा—[सं० पु० फ़ा०] व्रत, उप-वास, रमज़ान के महीने में मुसलमान रोज़ा रखते हैं ।

रोज़ी—[सं० स्त्री० फ़ा०] जीविका, जीवन-निर्वाह के लिए उद्यम, भोजन ।

रोदन—[सं० पु० सं०] रोना, क्रंदन ।

रोदसी—[सं० स्त्री० सं०] आकाश, पृथ्वी, स्वर्ग ।

रोदा—[सं० पु०] दे० धनुष की प्रत्यंचा ।

रोधन—[सं० पु० सं०] रोक, रुका-वट, दमन ।

रोपक—[सं० पु० सं०] लगानेवाला, जमानेवाला ।

रोपण—[सं० पु० सं०] लगाना, गाड़ना, स्थापित करना, मोहना, मोहित करना ।

रोपना—[क्रि० स०] दे० लगाना, गाड़ना, बोना, स्थापित करना, बीज अथवा पौधा जमाना । [सं० पु०] दे० ब्याह-शादी में नाऊ द्वारा लाया गया हल्दी मिला चावलों का आटा ।

रोपनी—[सं० स्त्री०] दे० पौधे गाड़ने का काम ।

रोपित—[वि० सं०] लगाया हुआ, जमाया हुआ, मोहित, मुग्ध ।

रोप्य—[वि० सं०] रोपने योग्य ।

रोप्ता—[सं० पु० सं०] रोपन करने वाला, गाड़ने वाला ।

रोब—[सं० पु०] [अ० रुअ़ब] आतंक, धाक, प्रभाव, दबदबा ।

रोमंथ—[सं० पु०] चबाए हुए को चबाना, पगुराना ।

रोम—[सं० पु०] [सं० रोमन्] रोएँ, लोम, शरीर के मुलायम बाल ।

रोमक—[सं० पु० सं०] रोम नगर का ।

रोमपाट—[सं० पु० सं०] ऊनी कपड़ा ।

रोमपाद—[सं० पु० सं०] अंग देश के प्राचीन राजा ।

रोमराजी—[सं० स्त्री० सं०] रोमा-वलि, रोएँ की पंक्ति, लोम पंक्ति ।

रोमहर्षण—[सं० पु० सं०] लोम हर्षण, हर्षण, प्रेम, आनन्द । भय, विस्मयादि से शरीर के रोवों का खड़ा होना । वि०—भयंकर, भीषण ।

रोमांच—[सं० पु० सं०] प्रेम, आनंद । भय, विस्मय आदि से रोंगटे खड़े होना । शरीर के अन्दर एक विचित्र प्रकार की लहर सी दौड़ जाना ।

रोमांचित—[वि० सं०] पुल-कावलीयुक्त ।

रोमावलि—[सं० स्त्री० सं०] रोम-राजी, लोम-पंक्ति ।

रोयाँ—[सं० पु०] दे० देह के छोटे-छोटे बाल, लोम, रोम ।

रोर—[सं० स्त्री०] दे० कोलाहल, शोर, हल्ला । वि०—उपद्रवी, उद्दंड, प्रचंड ।

रोलना—[क्रि० स०] दे० हथेलियों से साफ़ करते हुए अच्छा माल निकलना, लुढ़काना ।

रोली—[सं० स्त्री०] दे० तिलक के लिए तैयार किया हुआ हल्दी चूने का चूर्ण।

रोशन—[वि० फ़ा०] प्रकाशित, प्रसिद्ध, प्रकट।

रोशनचौकी—[सं० स्त्री० फ़ा०] शहनाई, नफ़ीरी।

रोशनदान—[सं० पु० फ़ा०] प्रकाश के लिए बनाया हुआ झरोखा, खिड़की, मोखा।

रोशनाई—[सं० स्त्री० फ़ा०] स्याही, प्रकाश, चिकनाई, तेल, घी।

रोशनी—[सं० स्त्री० फ़ा०] प्रकाश, उजाला।

रोष—[सं० पु० सं०] क्रोध, कोप, गुस्सा, बैर-विरोध, जोश।

रोषी—[वि०] क्रोधी, गुस्सेवर।

रोह—[सं० पु०] दे० नीलगाय, रोझ, बनरोज।

रोहज—[सं० पु०] दे० आँख।

रोहण—[सं० पु० सं०] चढ़ना, बढ़ना, सवार होना।

रोहन—[क्रि० अ०] दे० रोहण।

रोहिणी—[सं० स्त्री० सं०] गाय, वसुदेव की पत्नी, बलराम की माता। ९ वर्ष की कन्या। चौथा नक्षत्र। बिजली।

रोहित—[वि० सं०] लाल, लोहित। इन्द्र-धनुष। कुंकुम, केसर, रक्त।

रोहिताश्व—[सं० पु० सं०] अग्नि। राजा हरिश्चंद्र का पुत्र।

रोही—[वि०] चढ़ने वाला। [पु०] दे० एक हथियार।

रोहू—[सं० स्त्री०] दे० एक प्रकार की बड़ी मछली।

रौंदना—[क्रि० स०] दे० पैरों से कुचलना।

रौ—[सं० स्त्री० फ़ा०] बहाव, झोंक, गति, पानी का बहाव, धुन।

रौज़ा—[सं० पु०] दे० कब्र, समाधि।

रौद्र—[वि० सं०] भयंकर, डरावना, प्रचण्ड। [सं० पु०] काव्य के नौ रसों में से एक। ११ मात्राओं के मात्रिक छन्द।

रौद्रार्क—[सं० पु० सं०] २३ मात्राओं के मात्रिक छन्द।

रौध—[सं० पु०] दे० चाँदी, धातु-विशेष।

रौनक—[सं० स्त्री० अ०] चमक, प्रसन्नता का भाव, कान्ति, शोभा।

रौनी—[सं० स्त्री०] दे० स्त्री, सुंदरी।

रौप्य—[सं० पु० सं०] चाँदी।

रौरव—[वि० सं०] भयानक, भयंकर। [सं० पु०] अत्यन्त कष्ट-प्रद भयानक नरक।

रौला—[सं० पु०] दे० शोर-गुल, हल्ला।

रौरे—[सर्व०] दे० आपके, आप (सम्बोधन)।

रौस—[सं० स्त्री०] दे० बाग-बगीचों में क्यारियों के बीच का मार्ग, चाल, रंग-ढंग, तौर-तरीका।

रौहाल—[सं० स्त्री०] दे० घोड़ों की एक जाति।

रौहिणेय—[सं० पु०] दे० रोहिणी के पुत्र, बलदेवजी।

—:०:—

ल

लंक—[सं० स्त्री०] मध्य देश, कमर, कटि। लंका नामक द्वीप।

लंका—[सं० स्त्री०] भारत के दक्षिण में एक द्वीप।

लंकापति—[सं० पु०] रावण, विभीषण, लंका नायक।

लंकेश—[सं० पु०] रावण, विभीषण, लंकेश्वर।

लंघन—[सं० पु०] उपवास, निराहार।

लंपट—[सं० वि०] व्यभिचारी, कामुक, विषयी।

लंब—[सं० पु०] एक राक्षस जो श्रीकृष्ण द्वारा मारा गया। किसी रेखा पर खड़ी होकर समकोण बनानेवाली रेखा।

लंबकर्ण—[सं० वि०] जिसके कान लम्बे हों, खरगोश, गदहा।

लंबग्रीव—[सं० पु०] ऊंट।

लंब-तड़ंग—[सं० वि०] जो ताड़ के समान लम्बा हो।

लंबित—[सं० वि०] लंबा।

लंबोदर—[सं० पु०] गणेशजी।

लंबोष्ट—[सं० पु०] ऊंट।

लंभन—[सं० पु०] प्राप्ति, कलंक।

लकड़बग्घा—भेड़िये से कुछ बड़ा एक मांसाहारी जंगली जन्तु।

लकसी—फल तोड़ने की लग्गी।

लकुच—[सं० पु०] छड़ी, बड़हर ।

लकुटी—छड़ी, छोटी लाठी, डंडा ।

लक्का—एक प्रकार का कबूतर जिसकी पूँछ पंखे जैसी हो ।

लक्ष—[सं० वि०] एक लाख, शत सहस्र । लक्ष्य, निशाना ।

लक्षक—[सं०पु०] दर्शक, दिखानेवाला, बतानेवाला ।

लक्षण—[सं० पु०] चिह्न, निशान, परिभाषा, शरीर के रोगादि सूचक चिह्न, शुभाशुभ प्रदर्शक शारीरिक चिह्न, चाल-ढाल ।

लक्षणा—[सं० स्त्री०] काव्य में अभिप्राय सूचक शब्द-शक्ति ।

लक्षि—[स्त्री०] लक्ष्मी ।

लक्षित—[सं० वि०] देखा या दिखाया हुआ, बतलाया हुआ, निर्दिष्ट, अनुमान से जाना या समझा गया । लक्षणा शक्ति के द्वारा ज्ञात शब्द का अर्थ । लक्षितार्थ ।

लक्षिता—[सं० स्त्री०] वह नायिका जिसका अन्य पुरुष के प्रति प्रेम दूसरों पर प्रकट हो । प्रकटित परकीया नायिका ।

लक्षी—[सं० स्त्री०] खंजन, गंगाधर, आठ रगण वाले चरण का एक वर्णिक छन्द ।

लक्ष्म—[सं० पु०] अंक, निशान, चिह्न ।

लक्ष्मण—[सं० पु०] चिह्न, निशान, सुमित्रानन्दन, श्रीरामचन्द्र के छोटे भाई ।

लक्ष्मणा—[सं० स्त्री०] श्रीकृष्ण की पटरानी, श्रीकृष्ण की पुत्रवधू, सारस पक्षी की मादा । एक औषधि ।

लक्ष्मी—[सं० स्त्री०] कमला, रमा, शोभा, श्री, दुर्गा, विष्णुप्रिया, सागर-सुता, धन की देवी । एक वर्णिक छन्द, आर्य्या छन्द का प्रथम रूप ।

लक्ष्मीकान्त—[सं० पु०] रमापति, विष्णु भगवान् ।

लक्ष्मीनाथ—[सं० पु०] विष्णु भगवान्, रमेश ।

लक्ष्मीपुत्र—[सं० वि०] धनवान्, धनी ।

लक्ष्मीवान—[सं० पु०] धनवान्, धनी ।

लक्ष्मीवाहन—[सं० पु०] उल्लू, मूर्ख धनवान ।

लक्ष्य—[सं० पु०] शब्द का वह अर्थ जो लक्षणा द्वारा ज्ञात हो । उद्देश्य, निशाना ।

लक्ष्यभेद—[सं० पु०] उड़ते या चलते हुए लक्ष्य को भेदने की कला ।

लक्ष्यवेधी—[सं० पु०] लक्ष्य भेदने-वाला, निशानेबाज ।

लक्ष्यार्थ—[सं० पु०] शब्द की लक्षणा शक्ति से प्रकट होनेवाला अर्थ । उद्देश्यार्थ ।

लगभग—[क्रि० वि०] प्रायः, पास, करीब-करीब ।

लगान—[पु०] भूमिकर, राजस्व, लगने या लगाने का भाव ।

लगाव—[पु०] संबन्ध, वास्ता, नाता ।

लगुआ—[पु०] मित्र, प्रेमी, उपपति ।

लगुड़—[सं० पु०] लकुटी, डंडा, छड़ी, लाठी ।

लग्घड़—[पु०] बाज, चीता, लकड़-बग्घा ।

लग्न—[सं० पु०] शुभकार्य की घड़ी, मुहूर्त, ब्याह का समय या दिन । लगन, स्नेह, नाता ।

लग्नदिन—[सं० पु०] विवाह का निश्चित दिन ।

लग्नपत्रिका—[सं० स्त्री०] वह पत्रिका जिसमें विवाह की रीतियों का समय और क्रम लिखा हो ।

लघिमा—[सं० स्त्री०] लघु होने का भाव, एक सिद्धि जिससे मनुष्य बहुत हलका हो जाता है ।

लघिष्ट—[सं० वि०] अधम, अति छोटा, निकृष्ट ।

लघु—[सं०वि०] कनिष्ट, अल्प, छोटा, एक मात्रा का ह्रस्व वर्ण । सुन्दर, हलका, निःसार ।

लघुकाय—[सं० पु०] बकरा, भेड़ा । छोटे शरीर वाला ।

लघुचेता—[सं० पु०] नीच, दुष्ट, तुच्छ विचारवाला ।

लघुता—[सं० स्त्री०] नीचता, छोटाई, तुच्छता ।

लघुपाक—[सं० पु०] सहज में पचने वाला खाद्य पदार्थ ।

लघुमति—[सं०वि०] मूर्ख, मंदमति ।

लघुमान—[सं० पु०] नायिका का कुपित होना । नायक को अन्य स्त्री से बात करते देख रूठना ।

लघुशंका—[सं० स्त्री०] मूत्र-त्याग, पेशाब करना ।

लघुहस्त—[सं० वि०] शीघ्रता से बाण चलाने वाला, फुर्तीला, हलके हाथ वाला ।

लघ्वी—[सं० स्त्री०] अति हलकी, अति छोटी ।

लचक—[स्त्री०] लचकने या झुकने का भाव । झुकाव, लचन ।

लछमन-झूला—[पु०] हरिद्वार से आगे तारों से बना पुल ।

लजाना—[सं० क्रि०] लज्जित होना, शरमाना ।

लज्जा—[सं० स्त्री०] लाज, मान-मर्य्यादा, शर्म, पत ।

लज्जाप्राया—[सं० स्त्री०] चार प्रकार की मुग्धा नायिकाओं में से एक ।

लज्जावंती—[सं० स्त्री०] लजीली, लजवंती, छुई-मुई नामक पौधा ।

लज्जावती—[सं० स्त्री०] शर्माने वाली

स्त्री या कन्या, लजीली।

लज्जावान्—[सं० वि०] लजीला, शर्मीला, लज्जाशील।

लज्जित—[सं० वि०] शर्माया हुआ। लज्जा से सहमा हुआ।

लट—[सं० स्त्री०] उलझे बालों का गुच्छा, केशपाश, अलक।

लता—[सं० स्त्री०] बेल, बल्लरी, सुन्दर स्त्री।

लता-कुंज—[सं० पु०] लताओं अथवा बेलों से मंडप के समान छाया हुआ, लता-गृह, लतामंडप।

लतिका—[सं० स्त्री०] छोटी बेल, लघु लता, वल्लरी।

लती—[वि०] आदी, स्वभाववाला, कुकर्मी, दुराचारी।

लत्ता—[पु०] चिथड़ा, फटा-पुराना कपड़ा।

लथपथ—[वि०] भींगा हुआ। पानी, कीचड़, रक्त या पसीने से भीगा हुआ, तराबोर।

लद्धड़—[वि०] आलसी, फिसड्डी, सुस्त।

लब्ध—[सं० वि०] भजनफल, प्राप्त, मिला हुआ।

लब्धकाम—[सं०वि०] जिसकी कामना पूर्ण हो गई हो।

लब्धप्रतिष्ठ—[सं० वि०] प्रख्यात, प्रतिष्ठित, सम्मानित।

लब्धवर्ण—[सं०पु०] पण्डित, विद्वान।

लब्धि—[सं० स्त्री०] प्राप्ति, लाभ, भजनफल।

लभन—[सं० पु०] लभनीय, पाना।

लभस—[सं०पु०] भिक्षुक, धन, पिछाड़ी।

लभ्य—[सं० वि०] प्राप्य, पाने योग्य, उपयुक्त।

लय—[सं०पु०] लीन होना। नृत्य, गीत और बाजों की परस्पर समता। गाने में सम, धुन, एकाग्रता, अनुराग, प्रेम, लोप, प्रलय।

लयन—[सं० पु०] तन्मयता, प्रलय, शरण, विश्राम, ग्रहण।

ललन—[सं० पु०] प्यारा बालक, प्रियतम या स्वामी, क्रीड़ा।

ललना—[सं० स्त्री०] स्त्री, कामिनी, भामिनी, जीभ, एक वर्णिक छन्द।

ललाट—[सं० पु०] भाल, मस्तक, भाग्य, लिलार।

ललाट-पटल—[सं० पु०] मस्तकतल। माथे की सतह।

ललाट-रेखा—[सं० स्त्री०] मस्तक की लकीरें, भाग्य-लेखा।

ललाटिका—[सं० स्त्री०] तिलक। एक शिरोभूषण।

ललाम—[सं० वि०] श्रेष्ठ, मनोहर, रमणीय, सुन्दर। [पु०] गहना। रत्न। चिह्न। घोड़ा।

ललित—[सं० वि०] मनोरम, सुंदर। [पु०] एक अंगचेष्टा जिसमें सुकुमारता से अंग हिलाये जाते हैं। एक विषम वर्णिक छन्द। एक अर्थालंकार जिसमें वर्ण्य वस्तु की जगह उसके प्रतिबिंब का कथन किया जाता है।

ललित-कला—[सं० स्त्री०] वे कलाएँ जिनके व्यक्त करने में सौंदर्य की प्रधानता हो। काव्य। संगीत। चित्रकला, वास्तुकला, मूर्तिकला आदि।

ललितपद—[सं० पु०] २८ मात्राओं का एक मात्रिक छन्द।

ललितोपमा—[सं० स्त्री०] उपमालंकार का एक भेद जिसमें उपमेय और उपमान की समता वाचक, सम आदि शब्द रखे जाकर निरादर, समता, ईर्ष्यादि भाव सूचक पद रखे जाते हैं।

लवंग—[सं० पु०] लौंग। लवांग।

लव—[सं० पु०] लवंग। लवा पक्षी। श्रीरामचन्द्रजी को दो यमज पुत्रों में से बड़े पुत्र। छत्तीस पल का समय। थोड़ी मात्रा, तनिक।

लवण—[सं० पु०] नमक, नौन, लोन।

लवण-समुद्र—[सं० पु०] लवणसागर। खारे पानी का समुद्र।

लवणाम्बु—[सं० पु०] खारा पानी। लवणसागर।

लवणासुर—[सं० पु०] मधु दैत्य का पुत्र जो शत्रुघ्न से मारा गया था।

लवन—[सं० पु०] काटना, छेदना, लुनाई, खेत की कटाई।

लव-निमेष—[सं० पु०] अल्प समय।

लवमात्र—[सं० वि०] अल्पकाल। क्षण भर।

लव-लेश—[सं० पु०] अल्प। थोड़ा। रंच।

लवाक—[सं० पु०] हँसिया। दराती।

लशुन—[सं० पु०] एक कन्द, लहसुन, लहसन।

लषित—[सं० पु०] अभिलषित, चाहा या देखा हुआ।

लस—[सं० पु०] आकर्षण, चिपकने या चिपकाने का गुण, चिप-चिपाहट।

लसित—[सं० वि०] प्रत्यक्ष, लक्षित, शोभित, विराज मान।

लसोला—[वि०] दे० शोभावान, लसदार, सरस।

लसुनिया—[सं० पु०] एक बहुमूल्य रत्न जो धूमिल रंग का होता है।

लहकीला—[वि०] चमकीला।

लहकौर—[पु०] विवाह में एक रीति जिसमें वर को दही बूरा खिलाते हैं। वर-वधू का एक दूसरे के मुख में कौर खिलाने की रीति।

लहर—[सं० स्त्री०] उमंग, उठती हुई जलराशि, तरंग, हिलोर, जोश, झोंका, मौज। विष का शरीर और मन

पर प्रभाव ।

लहरा—[पु०] आनन्द । गाने या बाजे की एक तान, बरसात का एक झोंका । मौज, तरंग ।

लहरिया—[पु०] वक्र या टेढ़ी रेखाओं की पंक्ति । कोई वस्त्र जिस पर रंग विरंगी टेढ़ी धारियाँ छपी हों ।

लहरी—[सं० स्त्री०] तरंगी, स्वच्छन्द, उमंगी, एक गाने की तान ।

लहलहाना—[क्रि०] प्रसन्न या प्रफुल्लित होना, सूखे पौधों में फिर हरियाली छाना । हवा के झोंकों से हरी भरी खेती का हिलना ।

लहलोट—[पु०] लेकर न देने वाला ।

लहसन—[पु०] शरीर के प्राकृतिक चिह्न ।

लहसुन—[पु०] लशुन, गोल गाँठ की अनेक पर्तों वाली एक सब्जी, एक कंद ।

लहाछेह—[पु०] नृत्य की एक गति ।

लहालोट—[वि०] मुग्ध, हर्षपूर्ण । हँसी से लोट-पोट ।

लहुरी—[स्त्री०] छोटे भाई की पत्नी । आयु में छोटी ।

लहू—[पु०] रक्त, लोहू ।

लांगली—[सं पु] नारियल, साँप, बलराम । [स्त्री] मजीठ, कलिहारी ।

लाँच—[स्त्री०] रिश्वत, घूस ।

लांछन—[सं पु०] दोष, कलंक, चिह्न ।

लांछना—[सं० स्त्री०] अपमान, कलंक, निन्दा, तिरस्कार ।

लांछित—[सं० वि०] निन्दित, तिरस्कृत ।

लाक्षणिक—[सं० वि०] लक्षणसूचक, ३२ मात्राओं का मात्रिक छन्द ।

लाक्षा—[सं० स्त्री०] लाख, लाह ।

लाक्षागृह—[सं० पु०] पांडवों को जलाने के लिए दुर्योधन का बनवाया हुआ लाख का घर ।

लाक्षारस—[सं० पु०] महावर ।

लाख—[स्त्री०] लाह, लाही, पेड़ों पर पैदा होनेवाला एक लाल पदार्थ । [वि०] एक लक्ष, सौ हजार ।

लाघव—[सं० पु०] छोटाई, हाथ की सफाई । आरोग्य । हलकापन ।

लाज—[स्त्री०] मान-मर्यादा । शर्म, लज्जा । खील, लावा ।

लाजवंत—[वि०] शर्मदार, लज्जा-वान, शर्मिन्दा ।

लाजा—[सं० स्त्री०] चावल, खील, धान का लावा, लाई ।

लाजावर्त्त—[सं० पु०] राबटी, एक रत्न या मणि ।

लाट—[स्त्री०] मीनार, ऊँचा स्तंभ ।

लाटानुप्रास—[सं० पु०] एक शब्दा-लंकार जिसमें अन्वयान्तर से तात्पर्या-न्तर पूर्ण वाक्य या शब्द की आवृत्ति हो ।

लाटिका—[सं० स्त्री०] काव्य में स्वल्प समासों या पदोंवाली एक रचना-रीति ।

लाड़—[पु०] प्यार, दुलार, बाल-स्नेह ।

लाड़ला—[वि०] दुलारा, अति प्यारा ।

लापक—[सं० पु०] सियार, गीदड़ ।

लाभ—[सं० पु०] उपकार, भलाई । प्राप्ति, लब्धि ।

लाभकारक—[सं० वि०] गुणदायक, गुणकारी, लाभप्रद ।

लाभदायक—[सं० वि०] लाभकारी, लाभप्रद ।

लाभप्रद—[सं० वि०] लाभदायक, गुणकारी ।

लायची—[स्त्री०] इलायची ।

लाल—[पु०] पुत्र, दुलारा बालक, प्रियतम, रक्तवर्ण ।

लालच—[सं० पु०] लोलुपता, लोभ, किसी वस्तु की प्राप्ति की बुरी इच्छा ।

लालची—[वि०] लोलुप, लोभी ।

लालड़ी—[पु०] एक लाल नगीना ।

लालन—[सं० पु] बालकों के प्रति दुलार, लाड़-प्यार ।

लाल-बुझक्कड़—[पु०] किसी भी बात का मनमाना अर्थ लगानेवाला ।

लालभक्ष—[सं० पु०] एक नर्क ।

लालमन—[पु०] माणिक, लाल मणि । एक प्रकार का तोता, श्रीकृष्ण ।

लालमी—[पु०] खरबूजा ।

लालसमुद्र—[पु०] भारतीय महा सागर का वह भाग जो अरब और अफ्रिका के मध्य में है ।

लालसा—[सं० स्त्री०] उत्कंठा, उत्सुकता, लिप्सा, अभिलाषा, इच्छा ।

लालसिखी—[पु०] अरुण-शिखा । कुक्कुर । मुर्गा ।

लालसी—[सं० वि०] आकांक्षी, उत्सुक, इच्छुक ।

लाला—[पु०] बच्चों का प्यारा संबोधन । वैश्य और कायस्थ जाति का आदरसूचक शब्द ।

लालाटिका—[सं० वि०] मस्तक देखकर शुभाशुभ बतानेवाला, भाग्य भरोसी ।

लालायित—[सं० वि०] उत्कंठित, लोभी, ललचाया हुआ ।

लालास्रव—[सं० पु०] मकड़ा, लार गिरना ।

लालास्राव—[सं० पु०] मकड़ा का जाला, लार गिरना ।

लालित—[सं० वि०] दुलारा, प्यारा, पाला हुआ ।

लालित्य—[सं० पु०] काव्य का एक गुण । सौंदर्य, सरसता ।

लालिमा--[सं० स्त्री०] अरुणिमा, लाली। सुर्खी।

लाली—[स्त्री०] लड़की, मानमर्यादा, ललाई।

लाले—[पु०] अभिलाषा, इच्छा, लालसा।

लावक—[सं० पु०] लवा पत्ती।

लावण--[सं० वि०] नमकीन।

लावण्य--[सं० पु०] अति सौंदर्य, नमकीन।

लावणिक—[सं० पु०] नमक विक्रेता, नमक का पात्र।

लावनी--[स्त्री०] एक प्रकार का छन्द जो चंग पर गाया जाता है।

लावा—[सं० पु०] खील, फुल्ला, लाई, लवा पत्ती।

लास्य--[सं० पु०] कोमलांग नृत्य, शृंगारादि मृदु रसों का उद्दीपक।

लिंग—[सं०पु०]चिह्न, लक्षण। संज्ञाओं में स्त्री-पुरुष का भेद-सूचक विधान। शिव-मूर्ति। पुरुष की जननेन्द्रिय।

लिंग-देह—[सं० पु०] जीव का सूक्ष्म शरीर जो स्थूल शरीर नष्ट होने पर भी कर्म-फल भोगने के लिये जीव के साथ रहता है।

लिंगपुराण—[सं० स्त्री०] शिव-माहात्म्य-विषयक एक पुराण।

लिंगशरीर—[सं० पु०] जीवात्मा का सूक्ष्म शरीर जो स्थूल के भीतर मृत्यु के बाद भी कर्म-फल भोगने को रहता है।

लिंगी—[सं० पु०] चिह्नधारी, लक्षण-युक्त। आडम्बरी, धर्म्मध्वजी।

लिंगेन्द्रिय—[सं० पु०] पुरुषों की जननेन्द्रिय या मूत्रेन्द्रिय।

लिक्खाड़—[पु०] बहुत लिखने वाला, भारी लेखक।

लिक्षा—[सं०स्त्री०] जूँ का अंडा, लीख, एक परिमाण।

लिखधार—[पु०] मुंशी, लेखक, मुहर्रिर।

लिखित--[सं० वि०] चित्रित, अंकित, चिह्नित।

लिखितक—[सं० पु०] एक भाँति के प्राचीन चौकोर अक्षर।

लिच्छवि—[सं० पु०] एक राजवंश जिसका राज्य कोशल, मगध और नेपाल में था।

लिपि—[सं० स्त्री०] वर्ण-चिह्न, अक्षर लिखने की रीति, लिखावट।

लिपिकर—[सं० पु०] लेखक।

लिपिबद्ध—[सं०वि०] अंकित,लिखित।

लिप्त—[सं० वि०] निमग्न, अनुरक्त, लीन।

लिप्सा—[सं० स्त्री०] लालच, लोभ।

लिलार—[सं० पु०] ललाट, मस्तक, भाग्य, माथा।

लीक—[स्त्री०] रेखा, लकीर।

लीन—[सं० वि०] तत्पर, आसक्त, मग्न, लगा हुआ।

लीला—[सं०स्त्री०] प्रेम-विनोद, विहार, क्रीड़ा, केलि, अभिनय। बारह मात्राओं का एक मात्रिक छन्द। २४मात्राओं का एक सगणान्त मात्रिक छन्द। एक वर्णिक छन्द।

लीलापुरुषोत्तम-[सं०पु०] श्रीकृष्णजी, लीलापुरुष।

लीलावती—[सं० स्त्री०] प्रख्यात ज्योतिषाचार्य भास्कराचार्य की कन्या जिसने अपने नाम से गणित की एक पुस्तक रची थी। ३२ मात्राओंका एक मात्रिक छन्द।

लुङ्गी—[स्त्री०] तहमत, धोती के समान कमर से लपेटने का एक वस्त्र।

लुंचन—[सं०पु०] चुटकी से उखाड़ना, नोचना।

लुंज—[वि०] ठूँठ, लँगड़ा, लूला।

लुंबिनी—[सं० स्त्री०] कपिलवस्तु के समीप का वह वन जहाँ गौतम बुद्ध उत्पन्न हुए थे।

लुआठा—[पु०] सुलगती या जलती हुई लकड़ी।

लुनियाँ—[हि० स्त्री०] एक प्रकार की घास, नमक बनाने वाली एक जाति।

लुनेरा—[हि पु०] खेत से पका अनाज काटने वाला।

लुप्त—[सं० वि०] अन्तर्हित, अदृश्य, छिपा हुआ, गुप्त।

लुप्तोपमा—[सं० स्त्री०] उपमालंकार का वह भेद जिसमें उसके ४ अंगों में से कोई अंग छिपा हो।

लुब्ध—[सं० वि०] मुग्ध, मोहित, ललचाया हुआ।

लुब्धक—[सं०पु०] एक तेजस्वी तारा जो उत्तरी गोलार्द्ध में है। बहेलिया, व्याधा।

लुब्धापति—[सं० स्त्री०] पति और कुटुम्बियों की लज्जा करने वाली प्रौढ़ा नायिका।

लुहान—[हि० वि०] रक्तमय, खून से भीगा हुआ, रक्तपूर्ण।

लूक—[सं० स्त्री०] जलती लकड़ी, आग की लपट। ग्रीष्म काल की गरम वायु का झोंका।

लूकटी—[हि०स्त्री०] लोमड़ी, लोघरी।

लेख—[सं० पु०] लिखावट, लिपि, लिखाई, निबन्ध, हिसाब-किताब। देवता। पक्की बात।

लेखक--[सं०पु०] ग्रन्थकार, रचयिता, लिखनेवाला।

लेखन--[सं० पु०] लिखने का कार्य, लिखने की कला। अक्षर या चित्र बनाना।

लेखनी—[सं० स्त्री०] कलम।

लेखा—[हि० पु०] विवरण, हिसाब-

किताब, गणना, गणित।

लेखिका—[सं० स्त्री०] पुस्तक रचने वाली स्त्री, लेख आदि लिखने वाली।

लेख्य—[सं० वि०] जो लिखा जाने को हो। लिखने योग्य। लेख।

लेख्यगृह—[सं० पु०] कार्यालय। कचहरी। आफिस।

लेन-देन—[हि० पु०] देने-लेने का व्यवहार। आदान-प्रदान। उधार लेना-देना।

लेप—[सं० पु०] किसी वस्तु पर चढ़ी हुई किसी गाढ़ी और गीली वस्तु की तह। लेई के समान पोतने या चुपड़ने की वस्तु।

लेपन—[सं० पु०] उबटन। मरहम। लेपने की वस्तु।

लेपालक—[हि० पु०] गोद लिया हुआ लड़का। दत्तक।

लेपित—[सं० वि०] लेप किया या लीपा हुआ। लिप्त।

लेला—[हि० पु०] मेमना। भेड़ का बच्चा।

लेलिह—[सं० पु०] नाग। साँप। सर्प।

लेश—[सं० पु०] एक अलंकार जिसमें किसी वस्तु के वर्णन के एक ही अंश में रोचकता हो। संबंध। संसर्ग। चिह्न। अणु। सूक्ष्मता।

लेश्या—[सं० स्त्री०] जीव की वह दशा जिसमें वह कर्म से बँधता है। जीव।

लेह्य—[सं० वि०] चटनी। चाटने योग्य वस्तु।

लैंगिक—[सं०पु०] अनुमान, वह ज्ञान जो लिंग या स्वरूप के वर्णन से प्राप्त हो।

लौंडी—[हि० स्त्री०] कन्या के साथ ससुराल भेजी जानेवाली दासी।

लोक—[सं० पु०] संसार। जगत। निवास-स्थान। जनता। दिशा। प्राणी। समाज। यश।

लोककंटक—[सं० पु०] समाज को हानि पहुँचानेवाले। समाजद्रोही।

लोकधुनि—[हि० स्त्री०] उड़ती हुई बात। अफवाह।

लोकनाथ—[सं० पु०] लोक-नायक। शिव। विष्णु। राजा।

लोकप—[सं० पु०] लोकपति। ब्रह्मा। इन्द्र। वरुण। कुबेर। राजा।

लोकपाल—[सं० पु०] दिशाओं के स्वामी। राजा। इन्द्रादि देवता।

लोकप्रवाद—[सं० पु०] कहावत। लोक प्रचलित उक्ति। लोकोक्ति।

लोकमाता—[सं० स्त्री०] रमा। कमला। देवी। लक्ष्मी।

लोकयात्रा—[सं० स्त्री०] जीवन। संसारयात्रा। लोकव्यवहार।

लोकरीति—[सं० स्त्री०] समाज में प्रचलित रीति।

लोकलाज—[सं० स्त्री०] समाज की लज्जा। संसार की शर्म।

लोकलीक—[हि० स्त्री०] समाज या लोक की रीति।

लोकव्यवहार—[सं० पु०] लोकरीति। लोकाचार।

लोकलोचन—[सं०पु०] सूर्य। चंद्रमा। विश्वनेत्र।

लोकश्रुति—[सं० स्त्री०] लोकधुनि। अफवाह।

लोकसंग्रह—[सं० पु०] संसार की भलाई। सबको प्रसन्न रखना।

लोकहार—[हि० वि०] लोक संहारक। संसार का नाश करनेवाला।

लोकहित—[सं० पु०] विश्वमांगल्य। संसार का कल्याण।

लोकहितू—[सं० वि०] संसार की भलाई करनेवाला।

लोकहितैषी—[सं० वि०] संसार का हित चाहनेवाला।

लोकांतर—[सं० पु०] परलोक।

लोकांतरित—[सं० वि०] परलोक-वासी। मृत।

लोकाचार—[सं० पु०] समाज का व्यवहार। लोक-व्यवहार।

लोकाधिप—[सं० पु०] लोकपाल। राजा। ब्रह्मा।

लोकापवाद—[सं० पु०] निंदा। अयश। अपकीर्ति। संसार संबंधी निंदा।

लोकायत—[सं० पु०] केवल इसी लोक को माननेवाला। चार्वाकदर्शन।

लोकेश्वर—[सं० पु०] लोकपाल। राजा।

लोकैषणा—[सं० स्त्री०] यश की आकांक्षा। कीर्ति। लालसा।

लोकोक्ति—[सं० स्त्री०] जनश्रुति। कहावत। एक अलंकार जहाँ लोकोक्ति का प्रयोग रोचकता के साथ भावपोषणार्थ हो।

लोकोत्तर—[सं० वि०] अलौकिक। अनोखा। अपूर्व। विलक्षण।

लोखरी—[हि० स्त्री०] लोमड़ी।

लोच—[हि० स्त्री०] कोमलता। लचक। लचलचाहट।

लोचन—[सं० पु०] नयन। नेत्र।

लोचुन—[हि० पु०] लोहे का चूर्ण।

लोटन—[हि० पु०] एक प्रकार का कबूतर।

लोथ—[सं० स्त्री०] मृत शरीर। शव। लाश।

लोथड़ा—[हि० पु०] मांस का पिंड।

लोध्र—[सं० पु०] लोध नामक एक वृक्ष।

लोध्रतिलक—[सं० पु०] उपमा अलंकार का एक भेद।

लोनाई—[सं० स्त्री०] मनोहरता, सुन्दरता।

लोप—[सं० पु०] छिपना, दिखाई न देना, नाश, अदर्शन।

लोपन—[सं० पु०] गोपन, नष्ट करना, लुप्त या तिरोहित करना।

लोपामुद्रा—[सं० स्त्री०] अगस्त्य-मंडल के पास उदय होने वाला एक तारा। अगस्त्य ऋषि की स्त्री।

लोपांजन—[सं० पु०] एक कल्पित सिद्धांजन जिसका प्रयोग करनेवाला अदृश्य हो जाता है।

लोपी—[सं० पु०] नाश करनेवाला, लोप करनेवाला।

लोभ—[सं० पु०] तृष्णा, लालसा, लालच।

लोभना—[क्रि०] मोहित करना, लुभाना, ललचाना।

लोभित—[हि० वि०] लुब्ध, मोहित, मुग्ध।

लोभी—[सं० वि०] लालची, तृष्णाग्रस्त।

लोम—[सं० पु०] रोयें, छोटे हलके बाल। रोम।

लोमकर्ण—[सं० पु०] खरगोश, खरहा।

लोमकूप—[सं० पु०] वे छिद्र जिनमें से रोम या केश उगते हैं।

लोमश—[सं० पु०] लोमड़ी, अधिक और बड़े रोयें वाला। एक अमर ऋषि।

लोमहर्षण—[सं० वि०] भयंकर, भीषण, रोमांचकारी।

लोरी—[हि० स्त्री०] बच्चों को सुलाने का मधुर गीत, थपकी।

लोल—[सं० वि०] चपल, चंचल, उत्सुक, क्षणिक, परिवर्त्तनशील।

लोलक—[सं० पु०] कान का एक आभूषण।

लोलदिनेश—[सं० पु०] काशी का एक तीर्थ, लोलार्क।

लोला—[सं० स्त्री०] एक वर्णिक छन्द, लक्ष्मी, रमा, जीभ, जिह्वा।

लोलार्क—[सं० पु०] काशी का एक तीर्थ।

लोलनी—[हि० वि०] बिजली। लक्ष्मी। चंचला।

लोलुप—[सं० वि०] चटोरा, लालची। परम उत्सुक।

लोष्ट—[सं० पु०] मिट्टी, पत्थर, ढेला।

लोह—[सं० पु०] लोहा।

लोहकार—[सं० पु०] लोहार।

लोहकिट्ट—[सं० पु०] लोहे को आग में देने पर लोहे से निकलने वाला मैल।

लोहित—[सं० वि०] लाल, रक्तवर्ण, मंगल ग्रह।

लोहित्य—[सं० पु०] ब्रह्मपुत्र नदी। लाल समुद्र।

लौंद—[हि० पु०] मलमास, अधिक मास।

लौंदा—[वि० पु०] गिली वस्तु का पिंडा।

लौ—[हि० स्त्री०] दीप-शिखा, आग की ज्वाला। लगन। कामना। चित्त-वृत्ति।

लौका—[हि० पु०] तूँबा, बड़ी लौकी। इन्द्र धनुष। बिजली।

लौकिक—[सं० वि०] सांसारिक, व्यावहारिक, समाज-सम्बन्धी।

लौह—[सं० पु०] लोहा।

लौहित्य—[सं० पु०] लालसागर। ब्रह्मपुत्र नदी।

—:※:—

व

वंक—[सं० वि०] टेढ़ा, कुटिल, वक्र।

वंकट—[सं० वि०] कुटिल, दुर्गम, बाँका, टेढ़ा। कठिन।

वंकटेश—[सं० पु०] विष्णु भगवान की एक मूर्त्ति।

वंकनाल—[स्त्री०] दे० सुनारों की टेढ़ी फुंकनी।

वंकनाली—[स्त्री०] दे० सुषुम्ना नाड़ी।

वंकिम—[सं० वि०] कुटिल, वक्र, टेढ़ा, झुका हुआ।

वंक्षु—[सं० स्त्री०] हिन्दूकुश पर्वत से निकल कर अरल सागर में गिरनेवाली आक्सस नदी।

वंग—[सं० पु०] राँगा धातु। बंगाल प्रान्त। राँगा-भस्म।

वंगज—[सं० पु०] बंगाल प्रान्त में उत्पन्न। सिंदूर। पीतल।

वंगेश्वर—[सं० पु०] बंगाल का राजा,

बंगाल का नायक। वंग-भस्म।

वंचक—[सं० त्रि०] खल, छली, धूर्त्त, ठग, धोखा देनेवाला।

वंचना—[सं० स्त्री०] छल, धोखा।

वंचित—[सं० त्रि०] विलग, रहित, विहीन, जिसको धोखा दिया गया हो।

वंदन—[सं० पु०] अर्चना, पूजा, स्तुति, प्रणाम।

वंदनमाला—[सं० स्त्री०] वंदनवार।

वंदना—[सं० स्त्री०] प्रणाम, स्तुति, आराधना।

वंदनीय—[सं० वि०] स्तुति योग्य, पूजनीय, आदरणीय।

वंदित—[सं० वि०] पूज्य, आदृत, कृत-स्तवन।

वंदी—[सं० पु०] भाट। कैदी, कारावासी। राजाओं का यशोगान करनेवाली एक जाति।

वंदीगृह—[सं० पु०] कारागृह, जेलखाना।

वंदीजन—[सं० पु०] भाट, वंदी।

वंद्य—[सं० वि०] वंदनीय, पूज्य, स्तुत्य।

वंश—[सं० पु०] कुल, कुटुम्ब। बाँस, वंशी। रीढ़ और नाक की हड्डियाँ।

वंशकपूर—[सं० पु०] वंशलोचन।

वंशज—[सं० पु०] सन्तान, सन्तति। वंशलोचन, बाँस का चावल।

वंशतिलक—[सं० पु०] कुटुम्ब का मुखिया, एक छन्द।

वंशधर—[सं० पु०] संतान, वंशज, कुल की प्रतिष्ठा रखनेवाला।

वंशलोचन—[पु०] वंसलोचन, एक औषध।

वंशशर्करा—[सं० स्त्री०]दे० वंशलोचन।

वंशस्थ—[सं० पु०] १२ वर्णों का एक वर्णिक वृत्त।

वंशावतंश—[सं० वि०] कुलोत्तम, वंश-विभूषण, वंश-श्रेष्ठ।

वंशावली—[सं० स्त्री०] किसी कुटुम्ब के पुरुखों की क्रमबद्ध सूची।

वंशी—[सं० स्त्री०] मुरली, बाँसुरी।

वंशीधर—[सं० पु०] वंशी धारण करनेवाला, श्रीकृष्ण।

वंशीय—[सं० वि०] वंश-सम्बन्धी, कुटुम्बी, कुटुम्ब में उत्पन्न।

वंशीवट—[सं० पु०] वृन्दावन का वह वटवृक्ष जिसकी छाया में श्रीकृष्णजी वंशी बजाते थे।

वंश्य—[सं० त्रि०] कुलीन, श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न।

वक—[सं० पु०] बगुला पक्षी। श्रीकृष्ण द्वारा मारा गया एक राक्षस। अगस्त का वृक्ष और फूल।

वकध्यान—[सं० पु०] छलपूर्ण ध्यान, झूठी भक्ति।

वकयंत्र—[सं० पु०] अर्क खींचने का एक यंत्र।

वकवृत्ति—[सं० स्त्री०] धोखे से काम बनाने की भावना।

वकालत—[अ० स्त्री०] दूत-कर्म। किसी पक्ष के समर्थन में बहस करना, वकील का व्यवसाय। प्रतिनिधित्व।

वकासुर—[सं० पु०] एक राक्षस जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।

वकी—[सं० स्त्री०] पूतना नाम की राक्षसी।

वकील—[अ० पु०] प्रतिनिधि। दूत। न्यायालयों में किसी के पक्ष-समर्थन में विवाद करनेवाला। कानून-शास्त्र का पण्डित।

वकुल—[सं० पु०] मौलश्री का वृक्ष।

वक्तव्य—[सं० वि०] कथनीय, कहने योग्य विचार। [पु०] कथन, वचन।

वक्ता—[सं० वि०] कुशलभाषी, बोलनेवाला, व्यास, वाग्मी।

वक्तृता—[सं० स्त्री०] भाषण, कथन, व्याख्यान, बोलने की कुशलता।

वक्तृत्व—[सं० पु०] भाषण, कथन, व्याख्यान, वक्तृता।

वक्त्र—[सं० पु०] मुंह, मुख। एक छन्द।

वक्र—[सं० वि०] कुटिल, तिरछा, टेढ़ा, कुटिल।

वक्रगामी—[सं० वि०] दुष्ट, कुटिल, तिरछी गति वाला।

वक्रग्रीव—[सं० पु०] ऊँट, टेढ़ी गर्दन वाला।

वक्रतुंड—[सं० पु०] गणेश जी।

वक्रदृष्टि—[सं० स्त्री०] कटाक्ष, टेढ़ी नजर, रोष।

वक्री—[सं० पु०] जन्म से टेढ़े अंगों वाला, भगवान बुद्ध। [वि०]

वक्रोक्ति—[सं० स्त्री०] एक अर्थालंकार। सुंदर उक्ति। टेढ़ी उक्ति, काकूक्ति।

वक्ष—[सं० पु०] वक्षस्, छाती, उर-स्थल।

वक्षःस्थल—[सं० पु०] छाती, उर, हृदय।

वक्षोज—[सं० पु०] छाती, स्तन, उरोज, पयोधर।

वक्ष्यमाण—[सं० वि०] वक्तव्य, जिसका भाषण हो रहा हो।

वचन—[सं० पु०] वाणी, वाक्य, बात, मानव मुख से उच्चारण होनेवाला शब्द-समूह।

वचनकारी—[सं० वि०] आज्ञाकारी।

वचनलक्षिता—[सं० स्त्री०] वह परकीया नायिका जिसकी बातें उसके प्रेमी के प्रति प्रेम प्रकट करें।

वचनविदग्धा—[सं० स्त्री०] वह परकीया नायिका जो बातों की चतुराई से नायक की प्रीति प्राप्त कर ले।

वचा—[सं० स्त्री०] एक औषध ।
वज्र—[सं० पु०] फौलाद । इन्द्र का एक तीक्ष्ण और कठोर शस्त्र, बिजली । हीरा । भाला, बरछा । पर्व ।
वज्रक—[सं० पु०] हीरा ।
वज्रक्षार—[सं० पु०] बज्रखार, एक औषध ।
वज्रतुण्ड—[सं० पु०] गणेश । गरुण । मच्छर । सूअर ।
वज्रदंत—[सं० पु०] चूहा । शूकर, सूअर ।
वज्रदन्ती—[सं० स्त्री०] एक पौधा ।
वज्रधर—[सं० पु०] देवराज इन्द्र ।
वज्रनाभ—[सं० पु०] एक राक्षस जो सुमेरु के निकट वज्रपुर में रहता था ।
वज्रपात—[सं० पु०] कठिन आपत्ति आना । बिजली गिरना ।
वज्रपाणि—[सं० पु०] इन्द्र ।
वज्रलेप—[सं० पु०] एक प्रकार का मसाला जिसके प्रयोग से भवन और मूर्तियाँ सुदृढ़ हो जाती हैं ।
वज्रसार—[सं० पु०] हीरा ।
वज्रहस्त—[सं० पु०] इन्द्र ।
वज्रांग—[सं० पु०] सुदृढ़ शरीरवान्, पराक्रमी । दुर्योधन ।
वज्रांगी—[सं० पु०] बजरंगी, हनुमान जी ।
वज्राघात—[सं० पु०] कठोर आघात, असहनीय चोट, वज्रपात ।
वज्रापात—[सं०पु०] वज्र से मारना, वज्राघात ।
वज्रावर्त्त—[सं० पु०] एक मेघ ।
वज्रासन—[सं० पु०] हठयोग का एक आसन ।
वज्रायुध—[सं० पु०] इन्द्र ।
वज्री—[सं० पु०] इन्द्र ।
वज्रोली—[सं० स्त्री०] हठयोग की एक मुद्रा ।

वट—[सं० पु०] बरगद का वृक्ष ।
वटक—[सं० पु०] बड़ी गोली, गोला, पकौड़ा ।
वटर—[सं० पु०] आसन, चटाई । पर्वत । चोर । मुर्ग ।
वटसावित्री—[सं० स्त्री०] वट-पूजन के साथ स्त्रियों का एक व्रत ।
वटिका—[सं० स्त्री०] गोली, टिकिया, वटी ।
वटु—[सं० पु०] विद्यार्थी, बालक । ब्रह्मचारी, माणवक ।
वटुक—[सं० पु०] ब्रह्मचारी, बालक । एक भैरव ।
वड़—[दे० पु०] वट वृक्ष, बरगद का पेड़, वर ।
वड़वानल—[सं० पु०] वाड़व, समुद्र की अग्नि ।
वड़िश—[सं० पु०] मछली पकड़ने का लोहे का काँटा ।
वणिक्—[सं० पु०] वैश्य, व्यापारी, बनिक, व्यापारी ।
वतंस—[सं० पु०] शिरोमणि, श्रेष्ठ पुरुष । कर-भूषण ।
वतन—[अ० पु०] जन्म भूमि । घर । देश ।
वत्—[सं० पु०] तुल्य, समान ।
वत्स—[सं० पु०] पुत्र, बेटा । गाय का बछड़ा ।
वत्सनाभ—[सं० पु०] बच्छनाग, मीठा विष । एक पौधे की विषैली जड़ ।
वत्सर—[सं० पु०] वर्ष, साल ।
वत्सल—[सं० वि०] माँ-बाप का बच्चों के प्रति प्रेम । दयालु, स्नेही, बच्चों के प्रति अनुरक्त ।
वदंती—[सं० स्त्री०] कथा, किम्वदंती ।
वदतो-व्याघात—[सं० पु०] एक तर्क-दोष । कही हुई बात के विरुद्ध बात कहना ।

वदन—[सं०पु०]मुख । कथन । वचन । अग्रिम भाग ।
वदरीनाथ—[सं० पु०] वदरिकाश्रम, एक धाम या तीर्थ ।
वदान्य—[सं० वि०] मधुरभाषी । उदार, दानी ।
वदी—[पु० दे०] कृष्णपक्ष, बदी ।
वध—[सं० पु०] हिंसा करना, हत्या या प्राण-घात करना, मार डालना ।
वधक—[सं० पु०] व्याध, हिंसक, घातक, बधिक, मृत्यु ।
वधजीवी—[सं० पु०] व्याध, हिंसक, कसाई ।
वधत्र—[सं०पु०]हथियार, हिंसक यंत्र ।
वधन—[सं० पु०] हिंसा, हत्या,घात ।
वधभूमि—[सं० स्त्री०] फाँसी घर, कसाई खाना ।
वधू—[सं० स्त्री०] नव विवाहिता स्त्री, दुलहिन, पत्नी, भार्या । पुत्रवधू । वधूटी ।
वध्य—[सं० वि०] हत्या या वध के योग्य, मार डालने योग्य ।
वन—[सं० पु०] वाटिका, बाग, जंगल । जल, भवन, बन ।
वनचर—[सं० वि०] वनवासी ।
वनज—[सं०पु०] कमल। वनमें उत्पन्न ।
वनपांशुली—[सं०पु०] बहेलिया,व्याधा ।
वनप्रिय—[सं० पु०] कोकिला, एक हिरन ।
वनमाली—[सं० पु०] श्रीकृष्ण जी ।
वनराज—[सं० पु०] सिंह, केशरी, जंगल का राजा ।
वनरुह—[सं० पु०] कमल ।
वनवास—[सं० पु०] जंगल में रहना ।
वनस्थल—वन-भूमि ।
वनस्पति—[सं० स्त्री०] पेड़-पौधे, जड़ी-बूटी ।

वनस्पतिशास्त्र—[सं० पु०] पेड़, पौधे, लता-जड़ आदि का सूक्ष्म अध्ययन ।
वनहास—[सं० पु०] काँस ।
वनिता—[सं० स्त्री०] नारी, स्त्री, प्रिया ।
वनी—[सं० स्त्री०] वाटिका ।
वनेचर—[सं० पु०] वनचर ।
वनोत्सर्ग—[सं० पु०] सर्वसाधारण के लिये कुँआ, मन्दिर आदि के द्वारा जल-दान ।
वनौषध, वनौषधि—[सं० स्त्री०] जंगली दवाएँ, जड़ी-बूटियाँ ।
वन्य—[सं० वि०] वन में उत्पन्न होनेवाला, जंगली ।
वपन—[सं० पु०] बीज बोना, मुंडन ।
वपनी—[सं० स्त्री०] नापित-शाला ।
वपा—[सं० स्त्री०] चरबी, मेद ।
वपु—[सं० पु०] शरीर, देह, गात्र ।
वपुष्टमा—[सं० स्त्री०] काशीराज की कन्या, राजा जनमेजय की पत्नी ।
वप्ता—[सं० वि०] बीज बोने वाला । नाई ।
वप्र—[सं० पु०] प्राचीर, दीवार, नगर-कोट, चहारदीवारी ।
वभ्रुवाहन—[सं०पु०] अर्जुन का पुत्र ।
वमन—[सं० पु०] खाये-पीये पदार्थ की उलटी करना, उलटा हुआ पदार्थ ।
वमनी—[सं० स्त्री०] जोंक ।
वयःसन्धि—[सं० स्त्री०] बाल्यावस्था और युवावस्था को मिलाने वाली अवस्था ।
वय—[सं० स्त्री०] अवस्था, उम्र, वयस ।
वयस्क—[सं० वि०] वयस्थ, अवस्था वाला, सयाना । वालिग़ ।
वयस्थ—[सं० वि०] सयाना, वयस्क ।
वयस्य—[सं० पु०] सखा, मित्र, समान अवस्थावाला ।
वयस्या—[सं० स्त्री०] सखी, सहेली ।
वयोवृद्ध—[सं० वि०] आयु में बड़ा, बड़ा बूढ़ा, वृद्ध पुरुष ।
वरं—[सं० अव्य०] श्रेष्ठ, अच्छा, उत्तम ।
वरंच—[सं० अव्य०] बल्कि, परन्तु, लेकिन ।
वर—[सं० पु०] पति, स्वामी, दुलहा, किसी पूज्य से प्राप्त सिद्धि या फल ।
वरटा—[सं० स्त्री०] हंसिनी ।
वरण—[सं० पु०] कन्या द्वारा वर का स्वीकार करना । सत्कार, अर्चना । किसी शुभ कार्य को करने के लिये किसी योग्य पुरुष को चुनना या नियुक्त करना । स्वीकार करना । पूजा करना ।
वरद—[सं० वि०] वरदान देने वाला ।
वरदराज—[सं० पु०] सिद्धान्त-कौमुदी के रचयिता एक प्रसिद्ध वैयाकरण वरदराज ।
वरदान—[सं० वि०] किसी पूज्य की प्रसन्नता से प्राप्त होने वाला सुफल या लाभ ।
वरन्—बल्कि, किन्तु, ऐसा नहीं ।
वरपतिक—[सं० पु०] अभ्रक, अबरख ।
वरयात्रा—[सं० स्त्री०] बरात, बारात, वर की विवाह-यात्रा ।
वररुचि—[सं० पु०] एक विख्यात विद्वान वैयाकरण और कवि । विक्रम के नवरत्नों में से एक ।
वरवर्णिनी—[सं० स्त्री०] रूपवती और गुणवती उत्तमा स्त्री ।
वरही—[सं०पु०] मोर, मयूर, । वर्ही ।
वराट—[सं० पु०] बड़ी कौड़ी, दीर्घ कपर्दिका ।
वरानना—[सं० स्त्री०] सुन्दर स्त्री ।
वराह—[सं० पु०] बाराह, विष्णु का शूकर अवतार । एक द्वीप ।
वराह मिहिर—[सं० पु०] एक प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य जो विक्रम-सभा के नवरत्नों में से एक थे ।
वरिष्ट—[सं० वि०] श्रेष्ठ, पूजनीय, उत्तम ।
वरुण—[सं० पु०] जलेश, जल के स्वामी एक वैदिक देवता । देव रक्षक । असुर नाशक ।
वरुणपाश—[सं० पु०] वरुण का अस्त्र । फंदा, फाँसी ।
वरुणालय—[सं० पु०] समुद्र, सागर, सिंधु ।
वरुत्थ—[सं०पु०] समूह, दल, वरूथ ।
वरुत्थी—[सं०स्त्री०] सेना, वरूथिनी ।
वरोरु—[सं० स्त्री०] सुन्दर जंघा वाली स्त्री ।
वर्ग—श्रेणी, समूह, जाति । एक जाति की अनेक वस्तुओं का समूह ।
वर्गक्षेत्र—[सं० पु०] ऐसा चतुर्भुज क्षेत्र जिसकी चारों भुजाएँ समान और कोण समकोण हों ।
वर्गफल—[सं० पु०] वह गुणनफल जो किसी संख्या या राशि को उसी संख्या या राशि से गुणा करने से मिले ।
वर्गमूल—[सं० पु०] किसी वर्गांक संख्या की ऐसी संख्या जिसे यदि उससे गुणा करें तो फल वही वर्गांक हो ।
वर्जित—[सं० वि०] निषिद्ध, अग्राह्य, त्यागा हुआ, त्यक्त ।
वर्ज्य—[सं० वि०] जिसके लिये मना किया गया हो । त्याज्य । छोड़ने के योग्य ।
वर्ण—[सं० पु०] भेद । प्रकार । रूप-रंग । ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र नामक जनसमूह के चार वर्ण ।
वर्णक—[सं० वि०] प्रशंसा करने वाला, स्तुति कर्त्ता ।
वर्णखंड मेरु—[सं० पु०] पिंगल की

वह शिक्षा जिससे विना मेरु बताए ही ज्ञात हो जाता है कि इतने वर्णों से कितने छन्द बन सकते हैं।

वर्णन—[सं० पु०] कथन, चित्रण, रूप और गुण का बखान, विस्तार से कहना।

वर्णनष्ट—[सं० पु०] पिंगल की एक क्रिया जिससे ज्ञात हो कि लघु-गुरु के विचार से प्रस्तारानुसार अमुक संख्या के वर्णों के छन्द के अमुक संख्यक भेद का रूप कैसा होगा।

वर्णना—[सं० स्त्री०] बखान करना, स्तुति, वर्णन। कहना।

वर्णपताका—[सं० स्त्री०] पिंगल की एक क्रिया जिससे यह ज्ञात हो कि वर्णिक छन्दों में से कौनसा ऐसा छन्द है जिसमें अमुक संख्यक लघु-गुरु होंगे।

वर्णप्रस्तार—[सं० पु०] पिंगल की एक क्रिया जिससे ज्ञात होता है कि इतने वर्णों के छन्दों के इतने भेद हो सकते हैं और इनके रूप इस तरह होंगे।

वर्णमाला—[सं० स्त्री०] किसी भाषा के अक्षरों की क्रमबद्ध लिखित सूची।

वर्णविचार—[सं० पु०] वर्ण-शिक्षा या व्याकरण का वह भाग जिसमें अक्षरों के रूप, उच्चारण और सन्धि आदि का वर्णन हो।

वर्णवृत्त—[सं० पु०] वह छन्द जिसके चरणों में लघु-गुरु क्रम तथा वर्णसंख्या समान हो।

वर्णसंकर—[सं० पु०] व्यभिचारजनित पुरुष, दोगला। दो भिन्न जातियों से उत्पन्न व्यक्ति या जाति।

वर्णसूची—[सं० स्त्री०] पिंगल की एक रीति जिससे वर्णिक छन्द संख्या की शुद्धता और उनके भेदों में आदि-अंत के लघु-गुरु जाने जाते हैं।

वर्णाश्रम—[सं० पु०] ब्राह्मण आदि चार वर्ण और ब्रह्मचर्य आदि चार आश्रम।

वर्णिकवृत्त—वह छन्द जिनमें अक्षरों की संख्या का नियम हो। वर्णवृत्त।

वर्ण्य—[सं० वि०] वर्णन का विषय। वर्णन के योग्य। उपमेय। कुम-कुम। बनतुलसी।

वर्त्तन—[सं० पु०] व्यवसाय। व्यवहार। वृत्ति। परिवर्तन। घुमाना। पीसना। पात्र।

वर्त्तमान—[सं० वि०] विद्यमान। उपस्थित। क्रिया के तीन कालों में से एक। आधुनिक। वृत्तान्त। समाचार।

वर्त्तिका—[सं० स्त्री०] बत्ती। सलाई। शलाका।

वर्त्तित—[सं० वि०] संपादित। चालू किया हुआ।

वर्त्ती—[सं० वि०] बरतनेवाला। स्थित रहनेवाला। वर्त्तनशील। व्रती।

वर्तुल—[सं० वि०] गोला। वृत्ताकार।

वर्त्म—[सं० पु०] मार्ग, पथ, राह। आश्रय। आँख की पलक। ओठ। किनारा।

वर्द्धक—[सं० वि०] पूरक। बढ़ाने-वाला, वृद्धिकारक।

वर्द्धन—[सं० पु०] उन्नति। बढ़ाना। अधिक करना। वृद्धि। काटना।

वर्द्धमान—[सं० वि०] बढ़नेवाला। [पु०] जैनियों के चौबीसवें तीर्थंकर। एक वर्णिक छंद।

वर्द्धित—[सं० वि०] बढ़ा हुआ। पूर्ण। कटा-छँटा।

वर्म—[सं० पु०] रक्षास्थान। घर। कवच।

वर्मा, बर्म्मा—[सं० पु०] क्षत्रिय और कायस्थों की एक उपाधि।

वर्य्य—[सं० वि०] श्रेष्ठ। वर। आदर-सूचक संबोधन।

वर्वर—[सं० पु०] वर्वर देश के असभ्य निवासी। अधम। नीच।

वर्ष—[सं० पु०] साल, संवत्सर, बारह मासों का एक काल। किसी द्वीप का प्रधान भाग। बादल। वृष्टि।

वर्षफल—[सं० पु०] फलित ज्योतिष में एक कुण्डली जिससे मनुष्य के साल भर का भला-बुरा ग्रह-फल ज्ञात हो।

वर्षाकाल—[सं० पु०] बरसात। पावस। सावन मास।

वर्षाशन [सं० पु०] एक वर्ष का भोजन।

वर्ही—[सं० पु०] मयूर। मोर।

वलय—[सं० पु०] चूड़ी। कंकण। मंडल। वेष्टन।

वलाहक—[सं० पु०] पर्वत। मेघ। एक दैत्य।

वलि—[सं० पु०] देवता की भेंट। सिकुड़न। रेख। पंक्ति। श्रेणी। पेट की रेखा। वली।

वलित—[सं० वि०] मोड़ा या झुकाया हुआ। झुर्रीदार। बल खाया हुआ।

वल्कल—[सं० पु०] बलकल। बकला। पेड़ की छाल। तपस्वियों के छाल के वस्त्र।

वल्गु—[सं० वि०] मनोहर। सुंदर।

वल्मीक—[सं० पु०] दीमक का घर। मिट्टी का ढेर। बाँबी। मुनि वाल्मीकि।

वल्लभ—[सं० वि०] प्रियतम, प्यारा। पति, स्वामी। नायक। वैष्णवमत की कृष्णोपासना के प्रवर्तक।

वल्लभा—[सं० स्त्री०] प्रियतमा। स्त्री। प्रिया।

वल्लभाचार्य—[सं० पु०] वैष्णव मत या कृष्ण-भक्ति और पुष्टि-मार्गप्रवर्तक एक प्रसिद्ध आचार्य।

वल्लभी—[सं० पु०] काठियावाड़ का

एक पुराना नगर। एक वैष्णव संप्रदाय।

वल्लरि, वल्लरी—[सं० स्त्री०] लता, वल्ली। मंजरी।

वश—[सं० पु०] अधिकार। शक्ति। इच्छा। बस।

वशवर्त्ती—[सं० वि०] अधिकार।

वशिता—[सं० स्त्री०] अधीनता। मोहने की क्रिया।

वशित्व—[सं० पु०] आठ सिद्धियों में से एक सिद्धि।

वशिष्ट—[सं० पु०] रघुवंश और श्रीरामचन्द्रजी के पुरोहित।

वशीकरण—[सं० पु०] वश में करने की क्रिया। मंत्रादि से किसी को अधीन करना।

वशीभूत—[सं० वि०] मुग्ध, मोहित। अधीन। पर इच्छानुचारी।

वश्य—[सं० वि०] वश में आनेवाला।

वषट्—[सं० अव्य०] इसे पढ़कर देवताओं को हवि दी जाती है।

वसंत—[सं० पु०] साल की छः ऋतुओं में से प्रथम सुहावनी ऋतु। छः रागों में से दूसरा राग।

वसंततिलक—[सं० पु०] त, भ, ज, ज (गण) और दो गुरु वर्णान्त १४ वर्णों का एक वर्णिक छन्द।

वसंतदूत—[सं० पु०] कोयल। आम का बौर या वृक्ष। चैत्र मास।

वसंतदूती—[सं० स्त्री०] माधवी लता। कोकिला, पिक।

वसंतोत्सव—[सं० पु०] एक प्राचीन उत्सव जो वसन्त पंचमी के दूसरे दिन होता था। होलिकोत्सव, मदनोत्सव।

वसति, वसती—[सं० स्त्री०] बस्ती, आबादी। घर। रात। गाँव।

वसन—[सं० पु०] आवरण, कपड़ा। निवास।

वसिष्ट—[सं० पु०] एक प्राचीन वैदिक ऋषि जो ब्रह्मा के पुत्र थे, सप्तर्षि मंडल का एक तारा, रघुवंश तथा राम जी के गुरु, सप्तर्षियों में से एक ऋषि।

वसिष्टपुराण—[सं० पु०] एक उपपुराण, लिंगपुराण।

वसुन्धरा—[सं० स्त्री०] पृथ्वी, वसुधा, भूमि, धरती, वसुमती।

वसु—[सं० पु०] आठ देवताओं का एक गण या समूह। आठ की संख्या। अग्नि। किरण। कुबेर। धन। रत्न। सोना। जल। सूर्य। शिव। विष्णु। सज्जन। तालाब। छप्पय का ६६ वाँ भेद।

वसुदा—[सं० स्त्री०] पृथ्वी, भूमि। माली नामक राक्षस की पत्नी।

वसुदेव—[सं० पु०] कंस के बहनोई, श्रीकृष्ण जी के पिता। यदुवंशियों के शूर कुल के राजा।

वसुधा—[सं० स्त्री०] पृथ्वी, भूमि।

वसुधारा—[सं० स्त्री०] जैनों की एक देवी। अलकापुरी, कुबेर की नगरी।

वसुमती—[सं० स्त्री०] भूमि, पृथ्वी। एक वर्णिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में छः वर्ण होते हैं।

वस्तव्य—[सं० पु०] बसने या ठहरने योग्य।

वस्ति—[सं० स्त्री०] पेड़ू, मूत्राशय। पिचकारी।

वस्तिकर्म—[सं० पु०] लिंग या गुदा में पिचकारी देना।

वस्तु—[सं० स्त्री०] गोचर पदार्थ, चीज। नाटक का आख्यान। सत्य, कथा-वस्तु।

वस्तुतः—[सं० अव्य०] यथार्थ में, सचमुच, सत्यतः।

वस्तुनिर्देश—[सं० पु०] मंगलाचरण का एक भेद जिसमें कथा का कुछ सूक्ष्म आभास प्रकट हो।

वस्तुवाद—[सं० पु०] एक दार्शनिक विचार जिसके अनुसार दृश्य जगत की सत्ता उसके दृश्य रूप में ही प्रकट हो।

वस्त्र—[सं० पु०] कपड़ा, वसन।

वहन—[सं० पु०] घसीट कर या लाद कर किसी वस्तु को ले जाना, सहना, लादना।

वहित्र—[सं० पु०] पोत, जहाज।

वहिरंग—बाहरी वस्तु, बाहरी मनुष्य, किसी वस्तु का बाहरी रूप।

वहिर्गत—[सं० वि०] बहिर्भूत, निकला हुआ, जो बाहर गया हो।

वहिर्द्वार—[सं० पु०] तोरण, सिंह-द्वार, सदर फाटक।

वहिर्मुख—[सं० वि०] विमुख, पराङ्मुख।

वहिर्लापिका—[सं० स्त्री०] ऐसी पहेली जिसका उत्तर बाहर से देना पड़े।

वहिष्कृत—[सं० वि०] त्यागा हुआ, त्यक्त, बाहर निकाला हुआ।

वह्नि—[सं० पु०] अग्नि। श्रीकृष्णजी के एक पुत्र। तीन की संख्या।

वांछनीय—[सं० वि०] अभिलषित, इष्ट, चाहने योग्य।

वांछा—[सं० स्त्री०] इच्छा, कामना, चाह, अभिलाष।

वाक्छल—[सं० पु०] तीन प्रकार के छलों में से एक। विपक्षी के भावार्थ के विरुद्ध अर्थ लेकर उसका पक्ष काटना। एक काव्य-दोष।

वाक्पटु—[सं० वि०] बातें करने में चतुर।

वाक्पति—[सं० पु०] विष्णु। गुरु, जीव, बृहस्पति।

वाक्य—[सं० पु०] वह पद या शब्द-समूह जिससे किसी श्रोता को वक्ता का अभिप्राय सूचित हो।

वाक्-सिद्धि—[सं० स्त्री०] वह सिद्धि जिसके अनुसार वक्ता की बात

सच सिद्ध हो।

वागीश—[सं० पु०] अच्छा वक्ता, कवि, पंडित, वृहस्पति। ब्रह्मा।

वागीश्वरी—[सं० स्त्री०] सरस्वती।

वागुर, वागुरा—[सं० पु०] फन्दा, जाल।

वाग्जाल—[सं० पु०] उलझाने वाली बातें, कथनाडंबर, बातों का जाल।

वाग्दण्ड-[सं० पु०] फटकार, डाँट-डपट, 'वाणी द्वारा भला बुरा कहने का दण्ड।

वाग्दत्त—[सं० वि०] वाणी से दिया हुआ। लक्ष्मी या सरस्वती का दिया हुआ।

वाग्दत्ता—[सं० स्त्री०] वह कन्या जिसका विवाह किसी के साथ ठहर चुका हो।

वाग्दान—[सं० पु०] वचन देना, वादा करना। पिता द्वारा कन्या का विवाह किसी के साथ स्थिर कर देना।

वाग्देवी—[सं० स्त्री०] सरस्वती, वाणी।

वाग्भट्ट—[सं० पु०] वैद्यकशास्त्र के एक विद्वान आचार्य और ग्रन्थकार।

वाग्मी—[सं० पु०] पण्डित। वृहस्पति। अच्छा वक्ता, वाचाल।

वाग्विलास—[सं० पु०] परस्पर आनंद से बातें करना।

वाङ्मय—[सं० वि०] साहित्य, गद्य-पद्यात्मक ग्रन्थ। वचन सम्बन्धी।

वाङ्मुख—[सं० पु०] एक गद्य-काव्य, उपन्यास।

वाच्—[सं० पु०] वाणी, गिरा, वाचा।

वाचक—[सं० वि०] बताने वाला, सूचक। [पु०] नाम, संज्ञा, संकेत, चिह्न।

वाचक-धर्म-लुप्ता—[सं० स्त्री०] उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें सामान्य धर्म और वाचक शब्द का लोप हो।

वाचक-लुप्ता—[सं० स्त्री०] उपमा अलंकार का वह भेद जिसमें उपमा वाची शब्द लुप्त हो।

वाचकोपमान-धर्मलुप्ता-[सं० स्त्री०] उपमा अलंकार का वह भेद जिसमें केवल उपमेय हो और वाचक शब्द, उपमान तथा धर्म इन तीनों का लोप हो।

वाचकोपमान-लुप्ता—[सं० स्त्री०] उपमा अलंकार का वह भेद जिसमें उपमेय और वाचक शब्द का लोप हो।

वाचन—[सं० पु०] पठन, पढ़ना, प्रतिपादन, कथन।

वाचनालय—[सं० पु०] समाचार पत्रों या पुस्तकों के पढ़ने का स्थान।

वाचसांपति—[सं० पु०] महा-विद्वान, वृहस्पति।

वाचस्पति—[सं० पु०] वृहस्पति, बड़ा विद्वान।

वाचा—[सं० स्त्री०] वाक्य, वाणी, वचन, शब्द।

वाचाबद्ध—[सं० वि०] संकल्प से बँधा हुआ, प्रणबद्ध, वाचाबद्ध।

वाचाल—[सं० वि०] अधिक बोलने वाला, बकवादी, वाक्पटु।

वाचिक—[सं० वि०] वक्ता-सम्बन्धी। [पु०] अभिनय, नाटक में वह स्थल जहाँ केवल परस्पर वार्त्तालाप ही होता है।

वाची—[सं० वि०] प्रगट करने वाला, सूचक।

वाच्य—[सं० वि०] अभिधेय, जिसका बोध शब्द संकेत से हो। क्रिया का वह रूप जिससे कर्त्ता, कर्म, या भाव की प्रधानता प्रगट हो।

वाच्यार्थ—[सं० पु०] मूल शब्दार्थ।

वाच्यावाच्य—[सं० पु०] कहने या न कहने योग्य बात।

वाजपेय—[सं० वि०] ७ श्रौत यज्ञों में से ५ वाँ यज्ञ।

वाजसनेय—[सं० पु०] याज्ञवल्क्य ऋषि, यजुर्वेद की एक शाखा।

वाजी—[सं० पु०] घोड़ा, वाजि, फटे दूध का पानी।

वाजीकरण—[सं० पु०] वे आयु-र्वैदिक ओषधियाँ जिनके प्रयोग से मनुष्य घोड़े के समान बलिष्ट और वीर्य्यवान हो जाता है। बल-वीर्यवर्द्धक योग।

वाटिका—[सं० स्त्री०] उद्यान, फुलवारी।

वाड़व—[सं० पु०] समुद्र की आग।

वाड़वाग्नि—[सं० स्त्री०] सागर की आग, वाड़वानल।

वाण [सं० पु०] तीर, शर, धनुष का अस्त्र,

वाणासुर—[सं० पु०] राजा बलि का पुत्र, एक बलवान दैत्य।

वाणिज्य—[सं० पु०] व्यापार, वनिज।

वाणिनी—[सं० स्त्री०] एक वर्णिक छन्द।

वाणी—[सं० स्त्री०] वाक् शक्ति, वचन, सरस्वती, गिरा। जीभ।

वात—[सं० पु०] वायु, हवा, पवन, प्राणियों के पक्वाशय में रहनेवाली वायु।

वातज—[सं० वि०] वायु से उत्पन्न।

वातजात—[सं० पु०] हनुमानजी, पवनसुत, वायु से उत्पन्न।

वातशूल—[सं० पु०] पेट की असह-नीय पीड़ा जो वायु के बिगड़ने से होती है।

वातापि—[सं० पु०] आतापि का भाई एक दैत्य जो अगस्त्य द्वारा खाया गया था।

वातायन—[सं० पु०] खिड़की, झरोखा, एक जनपद ।

वातुल—[सं० पु०] पागल, मतवाला, उन्मत्त ।

वातोर्मी—[सं० पु०] ११ वर्णों का एक छन्द या वृत्त ।

वात्सल्य—[सं० पु०] माता-पिता का सन्तान के प्रति प्रेम । स्नेह । दुलार । काव्य का एक रस ।

वात्स्यायन—[सं० पु०] कामसूत्र के निर्माता एक प्रसिद्ध ऋषि । न्याय-दर्शन के भाष्यकार एक ऋषि ।

वाद—[सं० पु०] तर्क, बहस, विवाद, शास्त्रार्थ, सिद्धान्त ।

वादक—[सं० पु०] तर्क करनेवाला । वक्ता, वाजा बजानेवाला ।

वादन—[सं० पु०] वाजा बजाना ।

वाद-प्रतिवाद—[सं० पु०] तर्क, शास्त्रार्थ, बहस ।

वादी-प्रतिवादी—[सं० पु०] विवाद में दोनों पक्षवाले, पक्षी-विपक्षी ।

वादरायण—[सं० पु०] वेदव्यास ।

वाद-विवाद—[सं० पु०] शास्त्रार्थ, बहस ।

वादानुवाद—[सं० पु०] बहस, वाद-विवाद ।

वादित्र—[सं० पु०] बाजा । वाद्यंत्र ।

वादी—[सं० पु०] पक्ष का आरोप करनेवाला । वक्ता । मुद्दई । मुकदमा चलानेवाला ।

वाद्य—[सं० पु०] बाजा ।

वानप्रस्थ—[सं० पु०] चार आश्रमों में से तीसरा आश्रम । वह अवस्था जिसमें मनुष्य गृहस्थाश्रम त्याग कर वनवास करता है ।

वानर—[सं० पु०] बन्दर, दोहे का एक भेद ।

वानवासिका—[सं० स्त्री०] चौपाई अथवा १६ मात्राओं के छन्दों का एक भेद ।

वापिका, वापी—[सं० स्त्री०] बावली, कूप, छोटा जलाशय, वाटिका ।

वाम—[सं० वि०] विपरीत, बायाँ, कुटिल ।

वामकी—[सं० पु०] जादूगरों की एक देवी ।

वामदेव—[सं० पु०] एक वैदिक ऋषि, महादेव, शिव ।

वामन—[सं० वि०] नाटा, छोटे शरीर वाला, बौना, ह्रस्व । विष्णु, राजा बलि की परीक्षा के लिये विष्णु का पंचम अवतार । १८ पुराणों में से एक पुराण ।

वाममार्ग—[सं० पु०] एक तांत्रिक मत जिसमें मांस-मदिरा का प्रचार है ।

वामा—[सं० स्त्री०] स्त्री । दुर्गा । १० वर्णों का एक वर्णिक छन्द ।

वामावर्त्त—[सं० वि०] बाँयी ओर से प्रारंभ होनेवाली प्रदक्षिणा ।

वायस—[सं० पु०] काक, काग, कौआ ।

वायु—[सं० पु०] वात, हवा, पवन ।

वायुकोण—[सं० पु०] पश्चिमोत्तर दिशा ।

वायुमंडल—[सं० पु०] पृथ्वी के चारों ओर ४५ मील ऊपर तक हवा का गोला, आकाश, अन्तरिक्ष ।

वायुलोक—[सं० पु०] आकाश, एक लोक ।

वार—[सं० पु०] आवरण । अवसर, द्वार । रोक । दिवस । क्षण । आघात, चोट । धावा ।

वारण—[सं० पु०] रोक, किसी काम को न करने का आदेश, बाधा । कवच ।

वारनारी—[सं० स्त्री०] पतुरिया, वेश्या, रंडी ।

वारमुखी—[सं० स्त्री०] वेश्या, रंडी ।

वारांगना—[सं० स्त्री०] अप्सरा, स्वर्ग की स्त्री, वेश्या, रंडी ।

वारांनिधि—[सं० वि०] महासागर, समुद्र ।

वाराणसी—[सं० स्त्री०] काशीपुरी ।

वारिचर—[सं० पु०] जलचर, जलजन्तु ।

वारिज—[सं० पु०] स्वर्ण । मोती । शंख । कमल । कौड़ी । घोंघा ।

वारिजात—[सं० पु०] पंकज, कमल ।

वारित—[सं० वि०] निवारित, मना किया गया, रोका हुआ ।

वारिद—[सं० पु०] बादल, मेघ ।

वारिधि—[सं० पु०] सागर, समुद्र ।

वारिनाथ—[सं० पु०] समुद्र, सागर ।

वारिनिधि—[सं० पु०] समुद्र ।

वारीन्द्र—[सं० पु०] समुद्र ।

वारीश—[सं० पु०] समुद्र ।

वारुणी—[सं० स्त्री०] मदिरा, मद्य, शराब ।

वार्त्ता—[सं० स्त्री०] वृत्तांत, समाचार, बात-चीत, संवाद । वैश्य-वृत्ति ।

वार्त्तालाप—[सं० पु०] बात-चीत ।

वार्त्तिक—[सं० पु०] अनुक्त, उक्त और दुरुक्त अर्थों का स्पष्टकारक वाक्य या ग्रन्थ । किसी सूत्रकार के मत का प्रतिपादक ग्रन्थ ।

वार्द्धक्य—[सं० पु०] आधिक्य, बढ़ती । बुढ़ापा ।

वार्षिक—[सं० वि०] सालाना, वर्ष सम्बन्धी ।

वार्षिकोत्सव—[सं० पु०] सालाना जलसा, वर्ष का उत्सव ।

वार्ष्णेय—[सं० पु०] श्रीकृष्ण जी ।

वालखिल्य—[सं० पु०] अंगुष्ठमात्र शरीर वाले ऋषियों का समूह ।

वालुका—[सं० स्त्री०] बालू, रेत,

कपूर। शाखा।

वाल्मीकि—[सं० पु०] एक भृगुवंशीय ऋषि जिन्होंने आदि काव्य रामायण का निर्माण किया।

वाशिष्ठ—[सं० पु०] एक उपपुराण, [वि०] वशिष्ठ सम्बन्धी।

वाष्प—[सं० पु०] भाप, आँसू।

वाष्पाकुलित—[सं० वि०] आँसू से भरे, भाप से भरा हुआ।

वासंतिक—[सं०पु०] नर्तक, विदूषक, भाँड़। वसंत सम्बन्धी।

वासंती—[सं० स्त्री०] माधवीलता, जुही। दुर्गा। मदनोत्सव। १४वर्णों का एक वर्णिक छन्द।

वास—[सं० पु०] निवास, घर, स्थान। सुगन्धि।

वासक—[सं० पु०] अड़ूसा।

वासकसज्जा—[सं० स्त्री०] वह नायिका जो सब प्रकार सज-धज कर नायक से मिलने की तैयारी किये बैठी हो।

वासन—[सं० पु०] सुगन्धित करना। वस्त्र, वसन। बरतन।

वासना—[सं० स्त्री०] कामना, इच्छा, भावना। प्रत्याशा, स्मृति।

वासर—[सं० पु०] दिन, दिवस।

वासव—[सं० पु०] इन्द्र, शचीश।

वासिता—[सं० वि०] स्त्री, कामिनी। आर्या छन्द का एक भेद।

वासुकि—[सं० पु०] शेषनाग, ८ नागों में से दूसरा नाग। वासुकी।

वासुदेव—[सं० पु०] श्रीकृष्ण, वसुदेव के पुत्र। पीपल का पेड़।

वास्तविक—[सं० वि०] ठीक ठीक, यथार्थतः।

वास्तव्य—[सं० वि०] बस्ती। रहने के योग्य। आबादी।

वास्तु—[सं० पु०] मकान, घर।

वास्तुविद्या—[सं० स्त्री०] गृह-निर्माण-शास्त्र।

वाहक—[सं० पु०] सारथी। बोझा ले जाने वाला, गाड़ी आदि को खींचने वाला।

वाहिनी—[सं० स्त्री०] सेना का एक भेद जिसमें ८१ रथ, ८१ हाथी, २४३ घोड़े और ४०५ पैदल रहते हैं।

वाह्य—[सं० वि०] भिन्न, पृथक्, बाहर, अलग।

वाह्यांतर-वाह्याभ्यंतर—[सं० वि०] भीतर और बाहर का।

वाह्येन्द्रिय—[सं० स्त्री०] बाहरी विषयों का अनुभव करनेवाली ५ ज्ञानेन्द्रियाँ।

विंदु—[सं० पु०] जल कण, पानी की बूँदें। शून्य। अनुस्वार। सिफ़र।

विंदुमाधव—[सं० पु०] विष्णु की एक प्रसिद्ध मूर्ति।

विंदुसार—[सं० पु०] सम्राट अशोक के पिता।

विंध्याचल—[सं० पु०] भारत के मध्य में पूर्व से पश्चिम तक फैली हुई एक पर्वत श्रेणी। विंध्यागिरि।

विंशोत्तरी—[सं० पु०] मनुष्य के शुभाशुभ के विचार की एक ग्रह दशा।

विकंपित—[सं० पु०] काँपता हुआ।

विकच—[सं० वि०] प्रस्फुटित, खिला हुआ। फूला हुआ।

विकर—[सं० पु०] तलवार के ३२ हाथों में से एक हाथ। बीमारी, रोग।

विकराल—[सं० वि०] भीषण, भयंकर, घोर।

विकर्षण—[सं० पु०] आकर्षित करने की विद्या। आकर्षण।

विकल—[सं० वि०] विह्वल, व्याकुल, बेचैन। अपूर्ण। कलाहीन।

विकलांग—[सं०वि०] अंगहीन, जिसका कोई अंग भंग हो गया हो।

विकला—[सं० स्त्री०] एक कला का साठवाँ भाग, समय का एक अति अल्प भाग। क्षण। नष्ट।

विकल्प—[सं० पु०] भ्रान्ति, भ्रम, धोखा। विपरीत सोच विचार। चित्त की पंचविध वृत्तियों में से एक।

विकसित—[सं० वि०] प्रफुल्लित, प्रस्फुटित, खिला हुआ, फूला हुआ।

विकस्वर—[सं० पु०] एक अर्थालंकार जिसमें किसी विशेष बात की पुष्टि सामान्य बात से की जावे।

विकार—[सं० पु०] दोष, अवगुण, बुराई। वासना। विकृति।

विकाश—[सं० पु०] प्रकाश। विस्तार। प्रसार। विकास।

विकास—[सं०पु०] प्रस्फुटन, खिलना। प्रसार, विस्तार। उन्नति, क्रमशः उन्नत होना।

विकिर—[सं० पु०] पक्षी, चिड़िया।

विकीर्ण—[सं० पु०] विख्यात, प्रसिद्ध। बिखेरा हुआ, छितराया हुआ।

विकृति—[सं०स्त्री०] अस्वाभाविकता। बिगाड़। व्याधि। बीमारी। मन का क्षोभ। मूल धातु से बिगड़ कर बना शब्द-रूप।

विकृष्ट—[सं० वि०] खींचा हुआ, आकृष्ट।

विक्रम—[सं० पु०] पराक्रम, शूरता, पौरुष, बल गति, शक्ति, विष्णु।

विक्रमादित्य—[सं० पु०] उज्जैन के एक सुप्रसिद्ध राजा जिन्होंने वर्तमान विक्रमीय संवत् चालू किया था।

विक्रमाब्द—[सं० पु०] विक्रम सम्वत्, विक्रमादित्य द्वारा चलाया गया संवत्।

विक्रमी—[सं० पु०] पराक्रमी, विक्रम-वाला, विष्णु।

विक्रय—[सं० पु०] बेचना, बिक्री।

विक्रयी—[सं० पु०] विक्रेता, बेचने

वाला ।

विक्रांत—[सं० पु०] पराक्रमी, शूरवीर, वैक्रांत मणि, व्याकरण में एक प्रकार की सन्धि जिसमें विसर्ग अविकृत रहता है ।

विक्रियोपमा—[सं० स्त्री०] उपमालंकार का एक भेद जिसमें किसी विशेष उपाय या क्रिया का सहारा कहा जाय ।

विक्रेता—[सं० पु०] बेचने वाला ।

विक्षत—[सं० वि०] घायल ।

विक्षिप्त—[सं० वि०] घायल, व्याकुल, विकल, छितराया हुआ ।

विक्षुब्ध-[सं०वि०]विकलता,क्षोभयुक्त ।

विक्षेप—[सं० पु०] व्याकुलता, असंयम, धनुष की प्रत्यंचा चढ़ाना, इधर-उधर या ऊपर फेंकना, झटका देना, तीर चलाना ।

विक्षोभ—[सं०पु०] मन की चंचलता, उद्विग्नता, क्षोभ ।

विख्यात—[सं०वि०] प्रख्यात, प्रसिद्ध ।

विगंध-[सं०वि०] दुर्गन्धपूर्ण, बदबूदार ।

विगत—[सं० वि०] बीता हुआ । गत, पिछला, विहीन ।

विगर्हणा—[सं० स्त्री०] निन्दा, फटकार, घुड़की ।

विगलित—[सं० वि०] गला हुआ, शिथिल ।

विगाथा—[सं० स्त्री०] आर्य्या छन्द का एक भेद ।

विग्रह—[सं० पु०] कलह, युद्ध, विपक्षियों में फूट, यौगिक या सामाजिक पदों के एक या सब पदों को पृथक् करने की क्रिया । आकृति, मूर्त्ति,शरीर ।

विग्रही—[सं०पु०] झगड़ालू, लड़ाका ।

बिघटन—[सं० पु०] विनष्ट करना, तोड़ना, फोड़ना ।

विघटिका—[सं० स्त्री०] एक घड़ी का २३वाँ भाग । समय का एक अल्प मान ।

विघातक—[सं०पु०] नाश करने वाला, बाधक, मारक ।

विघ्न—[सं० पु०] अड़चन, बाधा ।

विघ्नजित—[सं० पु०] गणेशजी ।

विघ्नपति—[सं० पु०] गणेशजी ।

विघ्नविनाशक—[सं० पु०] गणेश जी ।

विघ्नविनायक—[सं०पु०] गणेश जी ।

विचक्षण—[सं० वि०] निपुण, विद्वान्, चतुर, पण्डित, बुद्धिमान ।

विचरण—[सं० पु०] पर्य्यटन करना, घूमना-फिरना ।

विचलित—[सं०वि०] चंचल, विचलित, बेचैन, अस्थिर, घबराया हुआ ।

विचार—[सं० पु०] चित्त में उत्पन्न बात, भाव । मन में सोचा हुआ, मत, निर्णय ।

विचारक—[सं० पु०] सोचने वाला, मनन करने वाला, विचार करने वाला । न्यायकर्त्ता, न्यायाधीश ।

विचारणीय—[सं० त्रि०] विचार करने योग्य, चिन्तनीय, चिन्त्य, संदिग्ध ।

विचारपति—[सं० पु०] विचारक, न्यायकर्त्ता, न्यायाधीश ।

विचारशक्ति—[सं० स्त्री०] विवेक, ज्ञान, बुद्धि, अच्छा बुरा समझने की शक्ति ।

विचारालय—[सं० पु०] न्यायालय, कचहरी ।

विचारित—[सं० वि०] व्यवस्थापित, निर्धारित, निर्णीत ।

विचार्य्य—[सं० वि०] विचार करने योग्य, विचारणीय ।

विचिकित्सा—[सं० स्त्री०] संदेह, भ्रम, संशय ।

विचित्र—[सं० वि०] विलक्षण, अनोखा, विस्मयकारी, रंगबिरंगा ।

विचित्रवीर्य्य—[सं० पु०] चन्द्रवंशीय राजा शान्तनु के पुत्र ।

विचेतन—[सं० पु०] विवेकहीन, चेतनाहीन ।

विच्छित्ति—[सं० स्त्री०] विच्छेद, त्रुटि, अलगाव, कविता में यति । नायिका का स्वल्प शृंगार से नायक के मोहने की चेष्टा सूचक एक हाव ।

विच्छिन्न—[सं० वि०] विलग, भिन्न, विभक्त, काटकर पृथक् किया ।

विच्छेद—[सं० पु०] वियोग, बिछोह, टुकड़े करना, क्रम का टूटना, काटकर पृथक् करने की क्रिया । कविता की यति ।

विजन—[सं० वि०] एकांत, निराला, निर्जन । पंखा, विजन ।

विजय—[सं० स्त्री०] जय, तर्क या युद्ध में जीत । एक छन्द या मत्तगयंद सवैया ।

विजय-पताका—[सं० स्त्री०] जीत का झण्डा, जय-ध्वजा, युद्ध में जीतने पर फहराई जानेवाली पताका ।

विजययात्रा—[सं० स्त्री०] विद्रोहियों पर अधिकार करने के लिये की गई यात्रा । योद्धाओं को परास्त करने के लिए जीत की यात्रा ।

विजयलक्ष्मी—[सं० स्त्री०] विजयश्री, विजय की देवी, वह देवी जिसकी कृपा पर युद्ध में विजय होती है ।

विजया—[सं० स्त्री०] सिद्धि, दुर्गा । भंग । हर्षिणी । १० मात्राओं का एक छन्द, ८ वर्णों का एक वर्णिक वृत्त । श्री कृष्णजी की माला ।

विजया-दशमी—[सं० स्त्री०] आश्विन शुक्ला दशमी, भगवान रामचन्द्र जी की विजय-यात्रा का दिवस । हिन्दुओं का एक प्रसिद्ध त्यौहार ।

विजयी—[सं० पु०] जीतने वाला, विजेता, जयप्राप्त ।

विजात—[सं० वि०] वर्णसंकर, कुजात।

विजाति—[सं० स्त्री०] दूसरी जाति।

विजानु—[सं० पु०] तलवार चलाने के ३२हाथों में से एक हाथ, अखवा हाथ।

विजिगीषु—[सं० वि०] विजय चाहने वाला, जयाभिलाषी।

विजित—[सं० पु०] जीता हुआ देश, जिसको जीत लिया गया हो।

विजेता—[सं० पु०] विजयी, जीतनेवाला।

विज्ञ—[सं० वि०] ज्ञानी, विद्वान, पंडित, बुद्धिमान।

विज्ञप्ति—[सं० स्त्री०] जनता को सूचित करने की क्रिया, विज्ञापन, सूचना।

विज्ञान—[सं० पु०] तत्त्व-विद्या, किसी विषय की ज्ञात बातों का शास्त्रीय संग्रह। सांसारिक पदार्थों का ज्ञान, वस्तु-विज्ञान या शास्त्र। निश्चयात्मक बुद्धि, आत्मा, ब्रह्म, अविद्या।

विज्ञानमय-कोष—[सं० पु०] बुद्धि, और ज्ञानेन्द्रियों का समूह।

विज्ञानवाद—[सं० पु०] आधुनिक विज्ञान की बातों को मानने वाला सिद्धान्त। ब्रह्म और जीव की एकता का प्रतिपादक सिद्धान्त।

विज्ञानी—[सं० पु०] वैज्ञानिक, किसी विषय का विशेषज्ञ, बड़ा बुद्धिमान्, विज्ञान शास्त्र का ज्ञाता।

विज्ञापन—[सं० पु०] सूचना पत्र, जानकारी करना, जनता को सूचित करने की क्रिया।

विट—[सं० पु०] कामुक, वेश्या-गामी, लंपट, धूर्त, मल, वैश्य, धनी।

विटप—[सं० पु०] वृक्ष, पेड़, कोंपल, नवीन, कोमल, शाखा।

विटपी—[सं० पु०] पेड़, वृक्ष।

विटलवण—[सं० पु०] साँचर नमक।

विट्ठल—[पु०] दक्षिण भारत में विष्णु की एक मूर्त्ति। वल्लभाचार्य के शिष्य।

विडंबना—[सं० स्त्री०] उपहास, हँसी उड़ाना, नकल उतारना, दुर्दशा।

विडाल—[सं० पु०] बिल्ली, बिल्ला।

विडालाक्ष—[सं० पु०] कंजा, बिल्ली जैसी आँखों वाला। एक राजा।

वितंडा—[सं० स्त्री०] व्यर्थ का झगड़ा या कहासुनी, परपक्ष को दबाते हुए अपने पक्ष की स्थापना करना।

वितद्रु—[सं० पु०] झेलम नदी।

वितरक—[सं० पु०] बाँटने वाला।

वितरण—[सं० पु०] अर्पण, बाँटना, देना, दान करना।

वितरित—[सं० वि०] बाँटा हुआ।

वितर्क—[सं० पु०] तर्क पर होने वाला दूसरा तर्क, संदेह, संशय, एक अर्थालंकार जिसमें सन्देह या वितर्क का कथन होता है।

वितल—[सं० पु०] सात पातालों में से तीसरा पाताल।

वितस्ता—[सं० स्त्री०] झेलम नदी।

वितान—[सं० पु०] मंडप, चँदोवा, संघ, समूह, रिक्त या शून्य स्थान, कुंज, यज्ञ।

वित्त—[सं०पु०] लक्ष्मी, धन, सम्पत्ति।

वित्तपति—[सं० पु०] कुबेर, वित्तेश, वित्तनाथ, वित्ताधिपति।

विथराना-छितराना, फैलाना, बिखराना

विथोरना—अलग करना, पृथक करना।

विदग्ध—[सं० पु०] विद्वान, चतुर। कुशल, दक्ष, भावुक, रसिक।

विदग्धता—[सं० स्त्री०] निपुणता, चातुरी, विद्वत्ता, रसिकता।

विदग्धा—[सं० स्त्री०] ऐसी परकीया नायिका जो चातुरी से पर-पुरुष को मुग्ध करे।

विदर्भ—[सं० पु०] बरार देश का प्राचीन नाम।

विदर्भपुरन्दर—[सं० पु०] दमयन्ती के पिता, राजा भीम।

विदलन—[सं० पु०] मलने दलने या दबाने का कार्य, नष्ट करना या फाड़ना।

विदा—विदाय, प्रस्थान, प्रयाण, कहीं से चलने की आज्ञा।

विदारक—[सं० वि०] दुखद, चीरने वाला, फाड़ डालने वाला।

विदारण—[सं० पु०] नष्ट करना, चीरना, मार डालना, फाड़ना।

विदाही—[सं० पु०] पेट में जलन उत्पन्न करने वाले पदार्थ।

विदित—[सं० वि०] ज्ञात, समझा हुआ, जाना हुआ।

विदिशा—[सं० स्त्री०] दो दिशाओं के बीच का कोना, दिक्कोण, एक नगरी।

विदीर्ण—[सं० वि०] फाड़ा हुआ, चीरा हुआ, निहत।

विदुर—[सं० पु०] पंडित, ज्ञानी, धृतराष्ट्र के नीतिज्ञ मंत्री।

विदुष—[सं० पु०] विद्वान, पण्डित।

विदुषी—[सं० स्त्री०] शिक्षित स्त्री, पाण्डता।

विदूषक—[सं० पु०] भाँड़, विषयी, कामुक, मसखरा।

विदूषना—[सं० क्रि०] दोष लगाना, सताना।

विदेशी—[सं० वि०] परदेशी, अन्य देश सम्बन्धी, विदेशीय।

विदेह—[सं० पु०] मिथिला का प्राचीन नाम, राजा जनक, जिसकी उत्पत्ति माता पिता से न हो।

विदेह-कुमारी—[सं० स्त्री०] सीताजी, जानकीजी, विदेह कन्या।

विदेहपुर—[सं० पु०] जनकपुर, विदेहनगर ।

विदेही—[सं० पु०] ब्रह्म ।

विद्—[सं० पु०] विद्वान, जानकार, पण्डित, बुध ग्रह ।

विद्ध—[सं० वि०] फेंका हुआ, बीच से छेदा हुआ, टेढ़ा, सटा हुआ ।

विद्यमान—[सं० वि०] प्रस्तुत, उपस्थित । हाजिर ।

विद्या—[सं० स्त्री०] वे शास्त्रादि जिनसे ज्ञान प्राप्त हो, शिक्षादि से प्राप्त ज्ञान । वेद और उपवेद ।

विद्यागुरु—[सं० पु०] विद्या दान करने वाला, शिक्षक, सिखाने वाला ।

विद्याधर—[सं० पु०] एक देवयोनि विशेष, गंधर्व, किन्नर । एक अच्छ पण्डित ।

विद्याधारी—[सं० पु०] ४ मगण का एक वर्णिक छन्द ।

विद्यारंभ—[सं० पु०] एक संस्कार विशेष जिससे विद्या का अध्ययन आरंभ किया जाता है ।

विद्यार्थी—[सं०पु०] विद्या पढ़ने वाला, शिष्य, छात्र ।

विद्यालय—[सं० पु०] पाठशाला ।

विद्यावान्—[सं० पु०] पण्डित, विद्वान, ज्ञानी ।

विद्युत—[सं० स्त्री०] बिजली ।

विद्युत्मापक—[सं० पु०] एक यंत्र जिससे बिजली की शक्ति और गति का ज्ञान होता है । विद्युन्मापक ।

विद्युत्माला—[सं० स्त्री०] बिजली का समूह, दो मगण और दो गुरु का एक वर्णिक छन्द । विद्युन्माला ।

विद्युत्माली—[सं० पु०] एक राक्षस, एक वर्णिक छन्द ।

विद्युल्लेखा—[सं० स्त्री०] बिजली की रेखा, शेषराज, एक वर्णिक छन्द ।

विद्रधि—[सं० पु०] पेट के भीतर उठने वाला घातक फोड़ा ।

विद्रावण—[सं० पु०] पिघलाना, उड़ाना, फाड़ना, भागना, नष्ट करने वाला ।

विद्रुम—[सं० पु०] प्रवाल, मूँगा ।

विद्रोह—[सं० पु०] विप्लव, क्रान्ति, राज्य को हानि पहुँचाने वाला उपद्रव । द्वेष, हुल्लड़ ।

विद्रोही—[सं० पु०] राजद्रोही, उपद्रवी, द्वेषी । क्रान्तिकारी ।

विद्वत्ता—[सं० स्त्री०] पाण्डित्य, ज्ञान ।

विद्वान्—[सं० पु०] विद्या का धनी, पण्डित, ज्ञानी ।

विद्वेष—[सं० पु०] वैर, शत्रुता, द्रोह ।

विद्वेषण—[सं० पु०] दो व्यक्तियों में शत्रुता पैदा कराने का एक प्रयोग, द्रोह, वैर, दुष्टता ।

विधर्म्म—[सं० पु०] पराया धर्म, दूसरे का धर्म ।

विधर्म्मी—[सं० पु०] धर्म के विपरीत आचार करने वाला ।

विधवा—[सं० स्त्री०] रॉड़ स्त्री । पतिविहीन स्त्री ।

विधवाश्रम—[सं० पु०] विधवाओं के पालन-पोषण का स्थान ।

विधाता—[सं० पु०] ब्रह्मा । परमेश्वर । विधानकर्ता । सृष्टि की रचना करनेवाला ।

विधान—[सं० पु०] निर्माण, प्रणाली । किसी कार्य की विधि अथवा व्यवस्था, प्रबंध । परिपाटी ।

विधायक—[सं० पु०] बनानेवाला । विधान या प्रबन्ध कर्ता ।

विधि—[सं० स्त्री०] प्रणाली, ढंग । व्यवस्था, योजना । युक्ति । एक अर्थालंकार जिसमें किसी सिद्ध विषय का विधान फिर से किया जाय । ब्रह्मा । विधाता ।

विधिपुर—[सं० पु०] विधिलोक । ब्रह्मलोक ।

विधिवत्—[सं०] रीति के अनुसार । यथाविधि । उचित रूप से ।

विधुंतुद—[सं० पु०] राहु ।

विधु—[सं० पु०] विष्णु । ब्रह्मा । चन्द्रमा, शशि ।

विधुदार—[सं० स्त्री०] विधुदारा । रोहिणी । चन्द्र-पत्नी ।

विधुबंधु—[सं० पु०] कुमुद का सुमन ।

विधुवदनी—[सं० स्त्री०] सुंदर स्त्री । चन्द्रवदनी । चन्द्रमुखी ।

विधुर—[सं० पु०] असमर्थ, व्याकुल । दुःखी । घबराया हुआ ।

विधूत—[सं० वि०] हिलाया गया । कंपित ।

विधेय—[सं० वि०] जो विधि या नियम से जाना जाय । कर्त्तव्य, करणीय । जिसका विधान होनेवाला हो । वशीभूत । होनहार । वह शब्द या वाक्य जिसके द्वारा किसी के विषय में कुछ कहा जाय ।

विधेयाविमर्ष—[सं० पु०] एक काव्य-दोष जिसमें अभिव्यक्ति की प्रमुख बात वाक्य रचना में उलझी हो ।

विध्वंस—[सं० पु०] विनाश, बरबादी ।

विध्वंसी—[सं० पु०] नाश करनेवाला । बिगाड़नेवाला ।

विध्वस्त—[सं० वि०] नष्ट किया हुआ ।

विनत—[सं० वि०] शिष्ट । नम्र । विनीत ।

विनता—[सं० स्त्री०] कश्यप-पत्नी । गरुड़ की माता ।

विनति—[सं० स्त्री०] शिष्टता, विनय । सुशीलता । प्रार्थना ।

विनती—दे० विनति ।

विनम्र—[सं० वि०] विनीत । सुशील ।

नम्र। झुका हुआ।

विनय—[सं० स्त्री०] प्रार्थना, विनती। नम्रता।

विनयपिटक—[सं० पु०] बौद्धों का एक आदि शास्त्र।

विनयी—[सं० पु०] सुशील। विनम्र। विनयपूर्ण। प्रार्थी।

विनयोक्ति—[सं०स्त्री०] विनीत वाणी, विनय वाक्य।

विनश्वर—[सं० वि०] नाशवान्। अनित्य। सदा न रहनेवाला।

विनष्ट—[सं० वि०] नष्ट, ध्वस्त। नष्ट-भ्रष्ट। पतित। मृत।

विनायक—[सं० पु०] गणेशजी।

विनाश—[सं० पु०] ध्वंस, नाश, लोप।

विनाशन—[सं० पु०] नष्ट करना। संहार करना। लोप या लय करना।

विनिपात—[सं० पु०] पतन। अधः-पात। विपद्।

विनिमय—[सं० पु०] परिवर्त्तन, बदला करना। धोखा, भ्रम। आदान-प्रदान।

विनियोग—[सं० पु०] मंत्र-प्रयोग। उपयोग। अभीष्ट फल के हेतु किसी वस्तु का प्रयोग।

विनिर्गत—[सं० वि०] बीता हुआ। बाहर निकला हुआ।

विनीत—[सं० वि०] शिष्ट। नम्र। सुशील। विजयी।

विनेता—[सं० पु०] शिक्षक, शासक। राजा।

विनोक्ति—[सं० स्त्री०] एक अर्थालंकार जिसमें किसी के बिना किसी की श्रेष्ठता या हीनता व्यक्त की जाय।

विनोद—[सं० पु०] परिहास। आमोद-प्रमोद। मनोरंजन। क्रीड़ा, कुतूहल। हर्षानन्द।

विनोदी—[सं० वि०] आमोद-प्रमोद करनेवाला। आनन्दी जीव।

विन्यस्त—[सं० वि०] क्रम से रखा हुआ। स्थापित।

विन्यास—[सं० पु०] यथास्थान जड़ना। स्थापन। सजाना। रखना।

विपंची—[सं० स्त्री०] खेल-कूद। एक प्रकार की वीणा। क्रीड़ा-कौतुक।

विपक्ष—[सं० पु०] विरोधी पक्ष, प्रति-द्वंदी। खंडन। प्रतिवादी। अपवाद।

विपक्षी—[सं० पु०] विरुद्ध पक्षवाला। शत्रु, वैरी, विरोधी। प्रतिद्वंदी। प्रति-बादी। बिना पंख का पक्षी।

विपत्ति—[सं० स्त्री०] आपत्ति, संकट-काल। शोक का आगमन। बुरे दिन। कठिनाई, बखेड़ा।

विपथ—[सं० पु०] कुमार्ग, बुरी राह। दुर्गम मार्ग।

विपद्—[सं० स्त्री०] विपत्ति, आपत्ति।

विपदा—[सं० स्त्री०] आपदा, संकट, विपत्ति, आपत्ति।

विपन्न—[सं० वि०] दुखी, आर्त, संकटापन्न, विपत्तिग्रस्त।

विपरीत—[सं० वि०] प्रतिकूल, विरुद्ध, उलटा, अहित में।

विपरीतोपमा—[सं० स्त्री०] उपमा-लंकार का एक भेद जिसमें कोई भाग्य-शाली अति दीन दशा में दिखाया जाय।

विपर्य्यय—[सं०पु०] विरुद्ध, व्यतिक्रम, उलट-पलट, और का और, भूल। अव्यवस्था।

विपर्य्यस्त—[सं० वि०] अव्यवस्थित, अस्त-व्यस्त, गड़बड़।

विपर्य्यास—[सं० पु०] व्यतिक्रम, प्रतिकूल, उलटा-पलटा।

विपल—[सं० पु०] एक पल का साठवाँ भाग।

विपश्चित—[सं० पु०] बुद्धिमान, पण्डित, विद्वान। दोषज्ञ।

विपाक—[सं० पु०] पकना, पूर्ण दशा को प्राप्त होना।

विपादिका—[सं० स्त्री०] पहेली, प्रहेलिका, बिमाई नामक रोग।

विपिन—[सं० पु०] उपवन, वाटिका, अरण्य, जंगल।

विपिनतिलका—[सं० स्त्री०] एक वर्णिक छन्द।

विपिनपति—[सं० पु०] सिंह, विपिन-नायक, शेर।

विपिनविहारी—[सं० पु०] श्रीकृष्ण, मृग, वन में आनन्द करने वाला।

विपुल—[सं० वि०] विस्तार और संख्या में अति अधिक, अगाध, बड़ा, वृहत्।

विपुला—[सं० स्त्री०] भूमि, वसुधा, मेदनी, आर्य्या छन्द के तीन भेदों में से एक।

विप्र—[सं० पु०] पुरोहित, वेदपाठी, ब्राह्मण।

विप्र-चरण—[सं० पु०] ब्राह्मण का पैर, भृगुलता, विष्णु के हृदय पर भृगु मुनि के चरण-चिह्न।

विप्रचित्ति—[सं० पु०] सिंहिका पति, एक दानव, राहु-जननी।

विप्रलंभ—[सं० पु०] वियोग, प्रिय का न मिलना, विरह, विच्छेद, अभीष्ट की अप्राप्ति, छल, शृंगार रस का एक भेद।

विप्रलब्ध—[सं०वि०] वियोगी, वंचित, जिसे अभीष्ट वस्तु न मिली हो, विरही।

विप्रलब्धा—[सं० स्त्री०] संकेत-स्थल पर प्रियतम को न पाकर दुखी नायिका। वियोगिनी।

विप्लव—[सं० पु०] क्रान्ति, अशांति, विद्रोह, उथल-पुथल, जल की बाढ़।

विफल—[सं० वि०] निष्फल, असफल, निस्सार, व्यर्थ, परिणामरहित।

विबुध—[सं० पु०] पण्डित, बुद्धिमान,

देवता, चन्द्रमा ।

विबुधनदी—[सं० स्त्री०] गंगानदी, सुर सरिता, देवापगा ।

विबुधविलासिनी—[सं०स्त्री०] देवाङ्गना, अप्सरा, देव-बधूटी ।

विबोध—[सं० पु०] सतर्क या सजग होना, सावधान या सचेत होना, जागरण, ज्ञान, बोध ।

विभंग—[सं० पु०] ओला, उपल ।

विभक्त—[सं० वि०] बँटा हुआ, विभाजित, पृथक् या विलग किया हुआ ।

विभक्ति—[सं० स्त्री०] विभाग, बाँट, कारकों के चिह्न, वाक्य के किसी शब्द का क्रिया पद से सम्बन्ध-सूचक प्रत्यय या शब्द ।

विभव—[सं० पु०] ऐश्वर्य, संपत्ति, प्रताप, धन, उन्नति, अधिकता, मुक्ति ।

विभांडक—[सं० पु०] एक महर्षि, ऋषि शृंग के पिता ।

विभा—[सं० स्त्री०] प्रकाश, शोभा, कांति, किरण ।

विभाकर—[सं० पु०] सूर्य्य, चन्द्र, राजा, अग्नि ।

विभाग—[सं० पु०] बँटवारा, भाग, प्रकरण, कार्यक्षेत्र, अध्याय ।

विभाजन—[सं० पु०] बाँटने की क्रिया, पात्र, भाजन ।

विभाजित—[सं० वि०] विभक्त, बँटा हुआ ।

विभाज्य—[सं० वि०] विभाग करने योग्य, बाटने योग्य ।

विभात—[सं० पु०] प्रातःकाल, प्रभात, सवेरा ।

विभाव—[सं० पु०] रसों के रत्यादि स्थायी भावों के आश्रय तथा उद्दीप्त करनेवाले पदार्थादि ।

विभावना—[सं० स्त्री०] एक अर्थालंकार जहाँ कारण के विना या विपरीत कारण से कार्य का होना कहा जाय ।

विभावरी—[सं० स्त्री०] रात, निशा, रजनी, कुटनी, दूती ।

विभावसु—[सं० पु०] सूर्य, चंद्रमा, अग्नि, मदार का वृक्ष, वसुओं के पुत्र ।

विभास—[सं० पु०] प्रकाश, चमक ।

विभिन्न—[सं० वि०] अनेक प्रकार का, पृथक्, विलग ।

विभीतक—[सं० पु०] बहेरा फल ।

विभीति—[सं० स्त्री०] संशय, भय, डर । संदेह, शंका ।

विभीषण—[सं० पु०] लंकेश रावण का छोटा भाई जो रावण के बाद लंकाधिपति बना ।

विभीषिका—[सं० स्त्री०] भयंकर दृश्य या कांड, भय, भीति ।

विभु—[सं० वि०] सर्वत्र, सर्वकालव्यापक, शाश्वत, महान, विस्तृत, दृढ़, अचल, मन । [पु०] जीवात्मा, ब्रह्म, विष्णु, प्रभु, शिव, ब्रह्मा ।

विभुता—[सं० स्त्री०] ऐश्वर्य, प्रताप, प्रभुत्व, सर्वव्यापकता ।

विभूति—[सं० स्त्री०] योग की एक दिव्य शक्ति जिसमें आठ सिद्धियाँ विद्यमान हों । विभव, धन, सम्पत्ति, वृद्धि-समृद्धि । भस्म, लक्ष्मी, सृष्टि, एक दिव्यास्त्र ।

विभूषण—[सं० पु०] अलंकार, भूषण, शोभा, गहना ।

विभेद—[सं० पु०] विभिन्नता, अन्तर, पार्थक्य, अनेक प्रकार या भेद । धँसना ।

विभ्रम—[सं० पु०] भ्रमण, भ्रान्ति, पर्यटन, सन्देह, भ्रम, स्त्रियों का एक हाव ।

विभ्राट—[सं० पु०] विपत्ति, संकट, उपद्रव । बखेड़ा ।

विमंडन—[सं० पु०] शृंगार करना, सजाना । अलंकृत करना ।

विमत—[सं० पु०] विपरीत सिद्धान्त, विरुद्ध मत ।

विमत्सर—[सं० पु०] अति अभिमान ।

विमन—[सं० वि०] उदास, अनमना, उन्मन ।

विमनस्क—[सं० वि०] अनमना, उदास, अन्य-मनस्क ।

विमर्दन—[सं० पु०] भली-भाँति मलना, दलना, नष्ट करना, मार डालना ।

विमर्श—[सं० पु०] विवेचन, समीक्षा, परामर्श, आलोचना, विचार, परीक्षा ।

विमर्शन—[सं० पु०] विमर्श ।

विमर्ष—[सं० पु०] विमर्श, नाटक का एक अंग ।

विमल—[सं० वि०] स्वच्छ, शुद्ध, मनोहर, निर्मल, सुन्दर ।

विमलध्वनि—[सं० पु०] छः पदों का एक छन्द ।

विमला—[सं० स्त्री०] सरस्वती ।

विमलापति—[सं० पु०] विमलेश, ब्रह्माजी ।

विमाता—[सं० स्त्री०] सौतेली माँ ।

विमान—[सं० पु०] वायु-यान, गाड़ी, सवारी, रथ, मृतक की सजी हुई अर्थी । परिमाण, अनादर ।

विमुक्त—[सं० वि०] मोक्ष प्राप्त, स्वच्छन्द, स्वतंत्र, पृथक् ।

विमुक्ति—[सं० स्त्री०] मुक्ति, छुटकारा, मोक्ष ।

विमुख—[सं० वि०] निवृत, उदासीन, अप्रसन्न, निराश ।

विमुग्ध—[सं० वि०] विशेष रूप से मोहित, मूर्ख, उन्मत्त, विकल ।

विमुद—[सं० वि०] खिन्न, उदास ।

विमूढ़—[सं० वि०] अत्यन्त मुग्ध,

मूर्ख, भ्रांत, अचेत ।

विमूढ़गर्भ—[सं० पु०] वह गर्भ जिसमें बच्चा मर गया हो, बेहोश हो गया हो अथवा प्रसव में अति कठिनता हो।

विमोचन—[सं० पु०] बंधन से छुड़ाना । मुक्त करना, छोड़ना या छुड़ाना ।

विमोह—[सं० पु०] भ्रम, आसक्ति, अज्ञान, मोह ।

विमोहन—[सं० पु०] कामदेव के पाँच वाणों में से एक । मोहित करना, चित्त लुभाना ।

विमोही—[सं०वि०] चित्त लुभाने वाला, मुग्ध करने वाला । निर्दय, भ्रामक ।

वियुक्त—[सं० वि०] वियोगी, विरही, पृथक्, विलग ।

वियोग—[सं० पु०] विच्छेद, विरह, पृथकता ।

वियोगांत—[सं० वि०] कोई नाटक या उपन्यास जिसका अन्त दुःखमय हो ।

वियोगिनी—[सं० स्त्री०] विरहिणी, पति या प्रिय से विलग स्त्री ।

वियोगी—[सं० वि०] जो पत्नी या प्रिया से अलग हो, विरही ।

वियोजक—[सं० पु०] दो मिली हुई वस्तुओं को पृथक् करनेवाला । वह छोटी संख्या जो उसी जाति की बड़ी संख्या में से घटाई जाय ।

वियोजन—[सं० पु०] घटाना, पृथक्करण ।

विरंग—[सं० वि०] अनेक रंगों का । फीके रंग का ।

विरंचि—[सं० पु०] विधाता, ब्रह्मा ।

विरंचिपत्नी—[सं० स्त्री०] सरस्वती ।

विरंचिसुत—[सं० पु०] नारद ।

विरक्त—[सं० वि०] विमुख, उदासीन, विरागी, त्यागी ।

विरक्ति—[सं० स्त्री०] विराग, अप्रसन्नता, उदासीनता ।

विरचन—[सं० पु०] निर्माण, बनाना ।

विरचित—[सं० वि०] निर्मित, लिखित ।

विरत—[सं० वि०] निवृत्त, वैरागी, विरक्त, विमुख । अति लीन ।

विरति—[सं० स्त्री०] उदासीन, त्याग, वैराग्य ।

विरल—[सं० वि०] दुर्लभ, दूर, पतला, निर्जन, विरला ।

विरस—[सं० वि०] नीरस, अप्रिय, अरुचिकर ।

विरह—[सं० पु०] वियोग, विच्छेद, किसी प्रिय वस्तु या व्यक्ति का विलग होना ।

विरहिणी—[सं० स्त्री०] वियोगिनी, विरहिनी ।

विरहित—[सं० वि०] वियोगी, शून्य, विहीन, विना, रहित ।

विरही—[सं० वि०] वियोगी, प्रिया-हीन ।

विरहोत्कंठित—[सं० पु०] वह नायक जो नायिका के संयोग की पूरी आशा होने पर भी उससे न मिल सके ।

विरहोत्कंठिता—[सं० स्त्री०] वह नायिका जो नायक के संयोग की पूरी आशा होने पर भी उससे न मिल सके ।

विराग—[सं० पु०] विरक्ति, विषय-भोगों से निवृत्ति । त्याग, वैराग्य, अनुरागाभाव ।

विरागी—[सं० वि०] त्यागी, विरक्ति, योगी, वैरागी ।

विराज—[सं० पु०] क्षत्रिय, आदि पुरुष, परमात्मा का स्थूल रूप ।

विराजमान—[सं० वि०] आसीन, उपस्थित, सुशोभित, चमकता हुआ ।

विराट्—[सं० पु०] परमात्मा का विश्वरूप या स्थूल स्वरूप, क्षत्रिय, आभा ।

विराट—[सं० वि०] विशाल, विपुल, [पु०] मत्स्य प्रदेश के राजा जिनके राज्य में पांडवों ने अज्ञातवास किया था ।

विराध—[सं० पु०] सतानेवाला, पीड़ा, दण्डक वन का एक राक्षस जिसे लक्ष्मण ने मारा ।

विराम—[सं० पु०] विश्राम करना, वह स्थान जहाँ ठहरना आवश्यक है । विलंब, छन्द में यति ।

विराव—[सं० पु०] कलरव, बोली, शब्द ।

विरुज—[सं० वि०] नीरोग, रोग, रहित ।

विरुद—[सं० पु०] यश, कीर्ति, प्रशस्ति, राजाओं की प्रशंसा सूचक पदवी ।

विरुदावली—[सं० स्त्री०] प्रशंसा, यश-वर्णन, स्तवन, कीर्ति-कीर्तन ।

विरुद्ध—[सं० वि०] अनुचित, विपरीत, प्रतिकूल, उलटा ।

विरुद्धकर्मा—[सं० पु०] श्लेषालंकार का एक भेद, बुरे चालचलनवाला ।

विरुद्धता—[सं० स्त्री०] विपरीतता, प्रतिकूलता, विलोमता ।

विरुद्धधर्मा—[सं० पु०] विपरीताचारी, प्रतिकूल धर्म या स्वभाववाला ।

विरुद्ध रूपक—[सं० पु०] रूपकातिशयोक्ति नामक रूपकालंकार का एक भेद ।

विरुद्धार्थ दीपक—[सं० पु०] दीपकालंकार का एक भेद जिसमें दो विरुद्ध क्रियायें एक ही बात से एक ही साथ होती हुई कही जाती हैं ।

विरूप—[सं० वि०] भद्दा, कुरूप, परिवर्त्तित, अनेक रूप-रंगों का ।

विरूपाक्ष—[सं० पु०] रावण का एक सेनापति, महादेव, एक शिव गण ।

विरेक—[सं० पु०] अतीसार रोग ।

विरेचक—[सं० वि०] मलभेदी, दस्त करानेवाला ।

विरेचन—[सं० पु०] दस्तावर औषधि ।

विरोचन—[सं० पु०] सूर्य, अग्नि, चन्द्रमा, प्रकाशमान, किरण, विष्णु, राजा बलि का पिता और प्रह्लाद के पुत्र ।

विरोध—[सं० पु०] अनैक्य, प्रतिकूलता, शत्रुता, अनबन, एक अर्थालंकार ।

विरोधाभास—[सं० पु०] एक अर्थालंकार, द्रव्य, जाति, गुण, क्रिया का विरोध सूचक ।

विरोधी—[सं० वि०] विपक्षी, बाधक, शत्रु, प्रतिकूल कार्य करनेवाला ।

विरोधीश्लेष—[सं० पु०] श्लेषालंकार का एक भेद ।

विरोधोक्ति—[सं० स्त्री०] अनर्थ वचन उल्टी पुलटी बातें कहना, विरोध सूचक उक्ति ।

विरोधोपमा—[सं० स्त्री०] उपमा लंकार का एक भेद जहाँ किसी वस्तु को उपमा एक साथ दो विरोधी वस्तुओं से दी जावे ।

विलंब—[सं० वि०] आवश्यकता से अधिक समय, देरी, अतिकाल ।

विलंबित—[सं० वि०] वह कार्य जिसमें देर हुई हो, लटकता हुआ ।

विल—[सं० पु०] छेद, माँद, बिल ।

विलक्षण—[सं० वि०] अनोखा, अनूठा, असाधारण, अद्भुत अपूर्व ।

विलग—[वि० हि०] भिन्न, पृथक्, अलग ।

विलय—[सं० पु०] प्रलय, नाश ।

विलसन—[सं० पु०] क्रीड़ा, प्रमोद, खेल ।

विलाप—[सं० पु०] रोदन, क्रन्दन, रो रोकर कहना ।

विलास—[सं० पु०] आनन्द, आमोद-प्रमोद, विषय-भोग, प्रसन्नकारी क्रिया, मनोरंजन ।

विलासिका—[सं० स्त्री०] एक अंक का रूपक ।

विलासिनी—[सं० स्त्री०] सुन्दर स्त्री, वेश्या । एक वर्णिक छन्द ।

विलासी—[सं० पु०] कामुक, भोग-विलास में लीन, हँसोड़ा, आरामतलब ।

विलीन—[सं० वि०] लय, लुप्त, निमग्न, लोप, अदृश्य, नाश ।

विलुप्त—[सं० वि०] गुप्त, अदृश्य, निमग्न ।

विलुलित—[सं० वि०] लहराता हुआ हिलता हुआ ।

विलेप—[सं० पु०] उबटन, लेप ।

विलेशय—[सं० पु०] सर्प, बिल में सोने वाला ।

विलोकना—[सं० क्रि०] देखना ।

विलोकित—[सं० वि०] देखा हुआ ।

विलोचन—[सं० पु०] नयन, नेत्र, आंख फोड़ने की क्रिया ।

विलोड़ना—[क्रि०] हिलोरना, मँथना, मन्थन करना ।

विलोप—[सं० पु०] लुप्त, छिपा, नाश, अदर्शन ।

विलोपना—[क्रि०] छिपाना, विघ्न डालना, उड़ाकर भागना ।

विलोपी—[सं० वि०] लोपक, छिपानेवाला, नाश करनेवाला ।

विलोम—[सं० वि०] विरुद्ध विपरीत, प्रतिकूल, उलटा ।

विलोल—[सं० वि०] सुंदर, चपल, चंचल ।

विल्व—[सं० पु०] बेल का वृक्ष या फल ।

विल्वमंगल—[सं० पु०] अंधे होने से पूर्व महाकवि सूरदास का नाम ।

विवक्षा—[सं० स्त्री०] तात्पर्य, अर्थ, कहने का मतलब, अनिश्चय, संशय ।

विवक्षित—[सं० वि०] अपेक्षित, जिसकी कहने की इच्छा या आवश्यकता हो ।

विवर—[सं० पु०] गड्ढा, कंदरा, छेद, दरार, छिद्र ।

विवरण—[सं० पु०] वृत्तांत, विवेचन, व्याख्या, बयान ।

विवर्ण—[सं० पु०] क्रोध, मोह, भय आदि भावों से मुख का रंग बदल जाना । [वि०] नीच, अधम, कांति-हीन ।

विवर्त्त—[सं० पु०] समुदाय, समूह, भ्रम, संदेह, आकाश ।

विवर्त्तन—[सं० पु०] टहलना, घूमना ।

विवर्त्तवाद—[सं० पु०] परिणामवाद, सृष्टि को माया तथा ब्रह्म को सृष्टि का उद्गम स्थान मानने का सिद्धान्त ।

विवर्द्धन—[सं० पु०] उन्नति, उन्नति करना ।

विवर्द्धित—[सं० वि०] उन्नति को प्राप्त, उन्नत, बढ़ा हुआ ।

विवश—[सं० वि०] पराधीन, लाचार, बेबस, जिसका वश न चले ।

विवस्त्र—[सं० वि०] दिगम्बर, नग्न, वस्त्रहीन ।

विवस्वत्—[सं० पु०] सूर्य, अरुण ।

विवसा—[सं० पु०] चाहा हुआ, वांछित, इच्छित ।

विवाद—[सं० पु०] बहस, वाक्-युद्ध, झगड़ा ।

विवादास्पद [सं० पु०] जिस पर बहस हो सके, विवाद के योग्य ।

विवादी—[सं॰ पु॰] बहस करने वाला, न्यायालय में पक्षी या प्रतिपक्षी।

विवाह—[सं॰ पु॰] पाणिग्रहण संस्कार, परिणय, शादी।

विविक्त—[सं॰ पु॰] पवित्र, निर्जन, एकान्त।

विविचार—[सं॰ वि॰] आचाररहित, विवेकरहित, विचारहीन।

विविध—[सं॰ वि॰] अनेक प्रकार का।

विविर— [सं॰ पु॰] छिद्र, बिल, छेद, दरार।

विवुध—[सं॰ पु॰] देवता।

विवृत—[सं॰ वि॰] फैला या खुला हुआ विस्तारित, विस्तृत।

विवृतोक्ति—[सं॰स्त्री॰] एक अर्थालंकार जिसमें श्लेष से गुप्त किये अर्थ को कवि स्वयं अपने शब्दों से प्रगट कर देता है।

विवेक—[सं॰ पु॰] अच्छे-बुरे का ज्ञान, समझ, बुद्धि, सदसत् ज्ञान की मानसिक शक्ति। विचार।

विवेकी—[सं॰ पु॰] चतुर, ज्ञानी, विवेकवान्, न्यायशील, भले-बुरे को समझनेवाला।

विवेचन—[सं॰ पु॰] तर्क-वितर्क, मीमांसा, आलोचन, परीक्षा, सत्यासत्य का निर्णय।

विवेचक—[सं॰ पु॰] विचारक, बुद्धिमान, मीमांसक। आलोचक।

विवेचना—[सं॰ स्त्री॰] ज्ञान, विचार। परख।

विवेचनीय—[सं॰ वि॰] आलोचनीय, विचारणीय, विवेचन के योग्य।

विवेचित—[सं॰ वि॰] विचारा हुआ, आलोचित, वर्णित, निश्चित, निर्धारित।

विव्वोक—[सं॰ पु॰] संभोग के समय स्त्रियों का एक हाव।

विशद—[सं॰ वि॰] सुन्दर, स्पष्ट, स्वच्छ, निर्मल, श्वेत।

विशांपति—[सं॰ पु॰] राजा।

विशाख—[सं॰ पु॰] शिव, कार्त्तिकेय।

विशाखदत्त—[सं॰ पु॰] मुद्राराक्षस नामक संस्कृत नाटक के रचयिता।

विशाखा—[सं॰ स्त्री॰] राधा, कौशांबी के समीप का एक पुराना प्रदेश। २७ नक्षत्रों में से १६ वाँ नक्षत्र।

विशार—[सं॰ पु॰] गली।

विशारद—[सं॰ पु॰] कुशल, निपुण, ज्ञाता, पण्डित।

विशाल—[सं॰ वि॰] बहुत बड़ा, वृहत, प्रसिद्ध, सुन्दर।

विशालाक्ष—[सं॰ पु॰] शिव, महादेवजी, विष्णु, गरुड़।

विशालाक्षी—[सं॰ स्त्री॰] पार्वतीजी, सुन्दर और विशाल आँखों वाली स्त्री।

विशिख—[सं॰ पु॰] बाण, तीर।

विशिष्ट—[सं॰ वि॰] श्रेष्ठ, उत्तम, विलक्षण, मिश्रित, जिसमें कुछ विशेषता हो।

विशिष्टाद्वैत—[सं॰ पु॰] एक दार्शनिक सिद्धांत जिसमें माया, जीव, ब्रह्म तीन अनादि तथा जीव और जगत् ब्रह्म से भिन्न होते हुए भी भिन्न नहीं माने जाते।

विशुद्ध—[सं॰ वि॰] निर्दोष, निर्मल, सच्चा।

विशुद्धि—[सं॰ स्त्री॰] सफाई, शुद्धता।

विशूचिका—[स्त्री॰] अपच, हैज़ा।

विशृंखल—[सं॰ वि॰] स्वतंत्र, स्वच्छन्द, क्रमहीन।

विशेष—[सं॰ पु॰] असाधारण, भेद, अधिकता, पदार्थ, सार, एक अर्थालंकार।

विशेषज्ञ—[सं॰ पु॰] किसी विषय का मार्मिक ज्ञाता।

विशेषण—[सं॰ पु॰] किसी संज्ञा की बुराई-भलाई या विशेषता का सूचक विकारी शब्द। जो किसी वस्तु की कुछ विशेषता प्रकट करे।

विशेषत:—[सं॰ अव्य॰] विशेष रूप से, अधिकता से।

विशेषता—[सं॰ स्त्री॰] मुख्यता, प्रधानता, असाधारणता।

विशेषोक्ति—[सं॰ स्त्री॰] एक अर्थालंकार जहाँ पूर्ण कारण के होते हुए भी कार्य के न होने का कथन हो।

विशेष्य—[सं॰ पु॰] वह संज्ञा जिसके साथ उसका विशेषण भी हो।

विशोक—[सं॰ वि॰] सुखी, शोकरहित।

विश्—[सं॰ स्त्री॰] प्रजा।

विश्पति—[सं॰ पु॰] विशांपति, राजा।

विश्रंभ—[सं॰ पु॰] प्रेम, रतिकाल का प्रेमकलह। विश्वास, प्रतीति, भरोसा।

विश्रब्ध—[सं॰ वि॰] निर्भय, शांत, विश्वास के योग्य।

विश्रब्ध-नवोढा—[सं॰ स्त्री॰] वह नवोढा नायिका जो पति पर विश्वास और अनुराग करने लगी हो।

विश्रवा—[सं॰ पु॰] कुबेर के पिता, एक प्रचीन ऋषि।

विश्रांत—[सं॰ वि॰] थकित, क्लांत, श्रमित, जो आराम कर चुका हो।

विश्रांति—[सं॰स्त्री॰] विश्राम, आराम।

विश्राम—[सं॰ पु॰] आराम करना, श्रम दूर करना, ठहरनेका स्थान। सुख।

विश्रुत—[सं॰ वि॰] विख्यात, प्रसिद्ध।

विश्लिष्ट—[सं॰ वि॰] अलग रहने

वाला, शिथिल, वियोगी। विकसित, प्रकाशित। मुक्त, विभक्त।

विश्लेष—[सं० पु०] भेद, अलगाव, वियोग, विरह।

विश्लेषण—[सं० पु०] किसी संयुक्त पदार्थ को पृथक् करना। पृथक्करण।

विश्वंभर—[सं० पु०] एक उपनिषद्, विष्णु भगवान, परमेश्वर।

विश्वंभरा—[सं० स्त्री०] पृथ्वी, वसुधा, धरती, वसुंधरा।

विश्व—[सं० पु०] संसार, जगत्, ब्रह्माण्ड, शरीर, देवों का एक गण। विष्णु, चौदह भुवनों का समूह।

विश्वकर्म्मा—[सं० पु०] ब्रह्मा, परमेश्वर, शिल्प-शास्त्रके आदि आविष्कर्त्ता, एक देवता। शिवजी, सूर्य। लोहार, बढ़ई।

विश्वकोश—[सं० पु०] वह महाकोश जिसमें सब प्रकार के शब्दों या विषयों का विस्तृत वर्णन हो।

विश्वनाथ—[सं०पु०] विष्णु भगवान। महादेव, शिवजी।

विश्वपाल—[सं० पु०] परमेश्वर, विश्वपोषक।

विश्वरूप—[सं० पु०] गीतोपदेश के समय अर्जुन को दिखाया गया श्रीकृष्ण का विराट रूप, विष्णु, शिव।

विश्वलोचन—[सं० पु०] सूर्य और चन्द्रमा। जगन्नेत्र।

विश्वविद्यालय—[सं०पु०] वह शिक्षा-संस्था जहाँ सब प्रकार की विद्याओं की उच्च शिक्षा दी जाय।

विश्वव्यापी—[सं० पु०] भगवान्, परमात्मा।

विश्वश्रवा—[सं० पु०] कुबेर और रावण के पिता, एक मुनि।

विश्वसनीय—[सं० वि०] विश्वास करने योग्य।

विश्वसित—[सं० वि०] विश्वस्त। जिसका विश्वास किया गया हो।

विश्वस्त—[सं० वि०] विश्वसनीय।

विश्वात्मा—[सं० पु०] ब्रह्मा, विष्णु। परमात्मा, शिव।

विश्वाधार—[सं० पु०] परमेश्वर।

विश्वामित्र—[सं० पु०] श्रीरामचंद्र जी के धनुर्विद्या गुरु। गाधेय।

विश्वास—[सं० पु०] प्रतीति, भरोसा।

विश्वासघात—[सं० पु०] विश्वास के प्रतिकूल कार्य करना। छल करना। धोखा देना।

विश्वासपात्र—[सं० पु०] विश्वसनीय।

विश्वेदेव—[सं० पु०] देवताओं का एक गण जिसमें इन्द्र, अग्नि आदि नौ देवता हैं।

विष—[सं० पु०] गरल। जहर। शरीर को नष्ट करनेवाला पदार्थ।

विषकन्या—[सं० स्त्री०] वह स्त्री जिसके शरीर में इसलिए विष प्रविष्ट किया जाता है कि उससे प्रसंग करनेवाला मर जाय।

विषण्ण—[सं० वि०] उदास, दुखी। विषादपूर्ण।

विषदंड—[सं० पु०] कमलनाल।

विषधर—[सं० पु०] सर्प। शिव।

विषमंत्र—[सं० पु०] विष का प्रभाव उतारने का मंत्र। सपेरा। वैद्य।

विषम—[सं० वि०] असम, अतुल्य। वह संख्या जो दो से विभाजित न हो सके और एक शेष बचे।

विषमज्वर—[सं० पु०] नित्य अनिश्चित समय पर आनेवाला एक बुखार।

विषमता—[सं० स्त्री०] वैमनस्य। शत्रुता। असमता। विरोध।

विषमबाण—[सं० पु०] कामदेव।

विषमवृत्त-[सं० पु०] वह छन्द जिसके चरण समान न हों।

विषमशर—[सं० पु०] कामदेव।

विषमायुध—[सं० पु०] कामदेव।

विषय—[सं० पु०] धन, राज्य या प्रदेश, निबंध, जिस पर कुछ विचार किया जाय। मैथुन, स्त्री-प्रसंग।

विषयक—[सं० वि०] सम्बन्धी, विषय का।

विषय-वासना—[सं० स्त्री०] भोग-विलास, काम की इच्छा।

विषयी—[सं० पु०] कामी, विलासी, कामदेव, धनी।

विष-विज्ञान—[सं० पु०] विष-विद्या। विषोपविष सम्बन्धी शास्त्र।

विषांगना—[सं० स्त्री०] विषकन्या।

विषाक्त—[सं० वि०] विषपूर्ण, जहरीला।

विषाण—[सं० पु०] पशु का सींग, शूकर का दाँत।

विषाद—[सं० पु०] खेद, दुःख, निश्चेष्ट होने का भाव।

विषुव—[सं० पु०] भूमध्य रेखा के ठीक सम्मुख सूर्य के आने की स्थिति।

विषुवत्‌रेखा—[सं० स्त्री०] भौगोलिकों द्वारा कल्पित एक भूमध्य रेखा जो दोनों ध्रुवों से बराबर दूरी पर पूर्व से पश्चिम की ओर खिंची मानी जाती है।

विष्कंभ—[सं० पु०] नाटक के अंक का एक भेद जिसमें गत और आगत घटना की सूचना मध्यम पात्रों के द्वारा दी जाती है। बाधा, विघ्न।

विष्कंभक—[सं० पु०] विघ्न, बाधा, विस्तार, नाटक के अंक का एक भेद। विष्कंभ।

विष्कीर—[सं० पु०] विहंग, पक्षी, चिड़िया।

विष्टंभ—[सं० पु०] बाधा, रुकावट, पेट फूलने का एक रोग।

विष्टंभन—[सं० पु०] रोकने या

सिकोड़ने की क्रिया ।

विष्टप—[सं० पु०] लोक ।

विष्टर—[सं० पु०] बिस्तर, बिछौना ।

विष्टि—[सं० स्त्री०] अशुभ समय, भद्रा, बेगार ।

विष्टा—[सं० स्त्री०] मल, पाखाना ।

विष्णु—[सं० पु०] परमात्मा का दूसरा स्वरूप जो विश्व का भरण-पोषण करता है ।

विष्णुकान्ता -[सं० स्त्री०] नीली कोयल लता ।

विष्णुगुप्त—[सं० पु०] चाणक्य का वास्तविक नाम, कौटिल्य, एक वैयाकरण ऋषि ।

विष्णुपद—[सं० पु०] आकाश ।

विष्णुपदी—[सं० स्त्री०] गंगाजी ।

विष्णुलोक—[सं० पु०] स्वर्ग, वैकुंठ ।

विसदृश—[सं० वि०] अनोखा, विपरीत, विरुद्ध, प्रतिकूल ।

विसर्ग—[सं० पु०] अक्षर के आगे लगनेवाले दो बिन्दु जो प्रायः आधे 'ह' के समान बोले जाते हैं । त्याग, दान, मोक्ष, प्रलय, विरह, वियोग ।

विसर्जन—[सं० पु०] देवता का आह्वान करने के पश्चात् उन्हें अपने स्थान पर जाने की प्रार्थना करना । विदा होना, छोड़ना, चला जाना ।

विसर्जनीय—[सं० पु०] त्यागने योग्य, देने योग्य ।

विसर्जित—[सं० वि०] परित्यक्त ।

विसर्प—[सं० पु०] फुंसियों का एक रोग जिसमें ज्वर भी होता है ।

विसर्पी—[सं० वि०] फैलनेवाला ।

विसूचिका—[सं० स्त्री०] हैजा, दस्तों का एक रोग ।

बिसूची—[सं० स्त्री०] हैजा ।

विसूरण—[सं० पु०] शोक, चिन्ता ।

विस्तार—[सं० पु०] विशालता, प्रस्तार, फैलाव ।

विस्तारित—[सं० वि०] विस्तृत, फैलाया हुआ ।

विस्तीर्ण—[सं० वि०] लम्बा-चौड़ा, विशाल । अत्यधिक ।

विस्तृत—[सं० वि०] विशाल, लम्बा-चौड़ा, यथेष्ट विवरणवाला ।

विस्फार—[सं० पु०] प्रत्यंचा, विकास, फैलाव । तीव्र शब्द ।

विस्फारित—[सं० वि०] फैलाया हुआ, फाड़ा या खोला हुआ, तीव्र ।

विस्फोट—[सं० पु०] ज्वालामुखी का फूटना । गरमी पाकर किसी पदार्थ का फूट पड़ना, विषैला और कठोर फोड़ा ।

विस्फोटक—[सं० पु०] चेचक, विषाक्त फोड़ा, गरमी या आघात पाकर फूट उठने वाला ।

विस्मय—[सं० पु०] आश्चर्य, अद्भुत रस का स्थायी भाव ।

विस्मरण—[सं० पु०] भूल जाना ।

विस्मित—[सं० त्रि०] अचंभित, चकित, विस्मय पूर्ण ।

विस्मृत—[सं० वि०] भूला हुआ, जो याद न हो ।

विस्मृति—[सं० स्त्री०] विस्मरण ।

विहंग—[सं० पु०] पक्षी, खग, मेघ, वायु, वायुयान, सूर्य, चन्द्रमा, तारागण, देवता, वाण ।

विहग—[सं० पु०] पक्षी, सूर्य, चन्द्रमा, तारागण, वायु, मेघ, देवता, विमान ।

विहसित—[सं० पु०] मृदु हास्य । मधुर हसना ।

विहायस—[सं० पु०] पक्षी, आकाश ।

विहार—[सं० पु०] भ्रमण करना, घूमना-फिरना, आनन्द करना, केलि-क्रीड़ा, संभोग । श्रमणों के रहने का स्थान ।

विहारी—[सं० पु०] श्रीकृष्ण, विहार करने वाला ।

विहित—[सं०] विधान किया हुआ ।

विहीन—[सं०] रहित, बिना ।

विह्वल—[सं०] विकल, व्याकुल, बेकल ।

वीक्षण—[सं० पु०] देखना ।

वीक्षित—[सं० वि०] देखा हुआ ।

वीचि—[सं० स्त्री०] लहर, तरंग ।

वीचिमाली—[सं० पु०] समुद्र, सागर ।

वीज—[सं० पु०] प्रमुख कारण, बीज, वीर्य, शुक्र ।

वीजगणित—[सं० पु०] गणित शास्त्र का एक अंग ।

वीजपुर—[सं० पु०] बिजौरा नीबू ।

वीजांकुर—[सं० पु०] अन्योन्याश्रय सम्बन्ध ।

वीणा—[सं० स्त्री०] एक वाद्य यंत्र, बीन, बीना ।

वीणापाणि—[सं० स्त्री०] सरस्वती ।

वीत—[सं०] समाप्त हुआ, बीता हुआ, मुक्त ।

वीतराग—[सं० पु०] त्यागी, बुद्ध भगवान का एक नाम । जिसने आसक्ति, मोह आदि पर विजय प्राप्त कर उन्हें त्याग दिया हो ।

वीतहव्य—[सं० पु०] अग्नि ।

वीतहोत्र—[सं० पु०] अग्नि, सूर्य, राजा प्रियव्रत के एक पुत्र का नाम ।

वीथि—[सं० स्त्री०] गली, मार्ग ।

वीथिका—[सं० स्त्री०] गली, मार्ग ।

वीथी—[सं० स्त्री०] मार्ग, गली, आकाश में रविमार्ग । नक्षत्रों के स्थानों के कुछ विशेष भाग । रूपक अथवा दृश्यकाव्य के अन्तर्गत एक भेद ।

वीथ्यंग—[सं० पु०] रूपक में वीथी के १३ अंग ।

वीप्सा—[सं० स्त्री०] व्यापकता, अधिकता । शब्दालंकार-विशेष ।

वीर—[सं० पु०] शूर, साहसी, योद्धा, लड़का, भाई, पति ।

वीरगति—[सं० स्त्री०] युद्ध-स्थल में प्राप्त हुई गति (मृत्यु) ।

वीरप्रसु—[सं० स्त्री०] वीरों को उत्पन्न करने वाली, वीरमाता ।

वीरवधु—[सं० स्त्री०] वीर पुरुष की पत्नी ।

वीरव्रती—[सं० पु०] वीरता का व्रत धारण करने वाला ।

वीरवृत्ति—[सं० पु०] वीरों की-सी वृत्ति, वीरतापूर्ण स्वभाव ।

वीरभद्र—[सं० पु०] शिवजी के एक गण जिन्हें उनका अवतार और पुत्र भी माना जाता है ।

वीरभूमि—[सं० स्त्री०] वीर पुरुषों की जन्मभूमि । रणस्थली ।

वीररस—[सं० पु०] नव रसों में से एक रस ।

वीरललित—[सं० पु०] वीरोचित, किन्तु मृदु वृत्तिवाला ।

वीरशय्या—[सं० स्त्री०] रणभूमि ।

वीरशैव—[सं० पु०] शैवों में एक भेद-विशेष ।

वीरा—[सं० स्त्री०] शराब, पति और पुत्रों वाली स्त्री ।

वीरान—[फा०] उजड़ा हुआ, वीरान ।

वीरासन—[सं० पु०] बैठने का आसन विशेष ।

वीर्य्य—[सं० पु०] शुक्र, शक्ति, बल, तेज, शरीर को पुष्ट रखने वाली एक धातु ।

वृंत—[सं० पु०] स्तन का अगला भाग । बोंड़ी, ढेंढ़ी ।

वृंद—[सं० पु०] समूह, समुदाय, झुंड ।

वृंदा—[सं० स्त्री०] तुलसी, राधिका का उपनाम ।

वृंदारक—[सं० पु०] देवता विशेष ।

वृन्दावन—[सं० पु०] मथुरा के समीप श्रीकृष्ण भगवान की लीलाभूमि, हिन्दुओं का तीर्थस्थान ।

वृक—[सं० पु०] भेड़िया, गीदड़, कौआ, सियार ।

वृकोदर—[सं० पु०] भीमसेन ।

वृक्ष—[सं० पु०] पेड़ ।

वृजनि—[सं० पु०] दुःख, संकट, पाप, खाल, चमड़ा ।

वृत्त—[सं० पु०] हालात, समाचार, चरित्र, रोज़गार, वर्णिक छन्द, मंडल ।

वृत्तगंधि—[सं० स्त्री०] गद्य का एक भेद ।

वृतान्त—[सं० पु०] समाचार, हाल, विवरण ।

वृत्ति—[सं० स्त्री०] रोज़ी, धंधा, वज़ीफ़ा, चित्त की दशा ।

वृत्यनुप्रास—[सं० पु०] एक शब्दालंकार ।

वृत्र—[सं० पु०] बादल, शत्रु, अंधकार, त्वष्टा का पुत्र जिसका इन्द्र ने वध किया था । वृत्रासुर ।

वृत्रसूदन—[सं० पु०] इन्द्र, वृत्र का वध करनेवाला ।

वृत्रहा—[सं० पु०] इन्द्र ।

वृथा—[सं० स्त्री०] नाहक, व्यर्थ, फ़ज़ूल, बिना किसी अर्थ और प्रयोजन के ।

वृद्ध—[सं० पु०] बूढ़ा ।

वृद्धत्व—[सं० पु०] बुढ़ापा ।

वृद्धश्रवा—[सं० पु०] इंद्र ।

वृद्धा—[सं० स्त्री०] बूढ़ी स्त्री ।

वृद्धि—[सं० स्त्री०] बढ़ोतरी, उन्नति, सूद-व्याज, एक औषध विशेष ।

वृश्चिक—[सं० पु०] बिच्छू, १२ राशियों में से एक राशि ।

वृष—[सं० पु०] बैल, साँड़, चार प्रकार के पुरुषों में से एक, १२ राशियों में से एक राशि, श्रीकृष्ण ।

वृषकेतु, वृषकेतन—[सं० पु०] शिव, महादेव ।

वृषण—[सं० पु०] विष्णु, इन्द्र, कर्ण, बैल, घोड़ा, अण्डकोष ।

वृषध्वज—[सं० पु०] महादेव, गणेश, पुराणों में वर्णित एक पहाड़ ।

वृषभ—[सं० पु०] साँड़, बैल, पुरुष, श्रेष्ठ ।

वृषभानु—[सं० पु०] श्री राधिकाजी के पिता ।

वृषल—[सं० पु०] शूद्र, पतित, नीच, घोड़ा, राजा चन्द्रगुप्त का एक नाम ।

वृषला—[सं० स्त्री०] दुराचारिणी स्त्री, पतिता, रजस्वला ।

वृषवामी—[सं० पु०] शिव, महादेव ।

वृषाकपि—[सं० पु०] शिव, विष्णु ।

वृषाकपायी—[सं० स्त्री०] पार्वती, लक्ष्मी ।

वृषासुर—[सं० पु०] एक दैत्य ।

वृष्टि—[सं० स्त्री०] बरसा, ऊपर से मेह के समान किसी वस्तु का गिरना ।

वृष्णि—[सं० पु०] श्रीकृष्ण, यदुवंश, अग्नि, वायु, मेघ, इंद्र ।

वृष्य—[सं० पु०] वीर्य, बल, उत्पादक वस्तु ।

वृहत्—[सं० वि०] बड़ा, भारी, विशाल ।

वृहद्रथ—[सं० पु०] इंद्र, सामवेद ।

वृहन्नला—[सं० स्त्री] अज्ञातवास की अवधि में राजा विराट के यहाँ रहते समय अर्जुन का छद्म नाम ।

वृहस्पति—[सं० पु०] नव ग्रहों में से पाँचवाँ ग्रह ।

वेग—[सं० पु०] तेजी, बहाव, जल्दी ।

वेण—[सं० पु०] राजा पृथु के पिता । वर्णसंकर, एक प्राचीन जाति ।

वेणि, वेणी—[सं० स्त्री०] स्त्रियों की गुँथी हुई चोटी ।

वेणु, वेणुका—[सं० पु०] बाँस, मुरली, वंशी ।

वेतन—[सं० पु०] तनख्वाह, पारिश्रमिक ।

वेतस—[सं० पु०] बड़वानल, बेंत ।

वेत्ता—[सं० वि०] जाननेवाला, ज्ञाता ।

वेत्रधर, वेत्री—[सं० पु०] द्वारपाल ।

वेत्रवती—[सं० स्त्री०] बेतवा नदी ।

वेद—[सं० पु०] ज्ञान, श्रुति । संसार के आदि ग्रन्थ ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद ।

वेदज्ञ—[सं० पु०] वेदों का ज्ञाता । वेदों के मर्म को जाननेवाला ।

वेदना—[सं० स्त्री०] पीड़ा, दर्द । व्यथा ।

वेदमाता—[सं० स्त्री०] सावित्री । दुर्गा । सरस्वती ।

वेदवाक्य—[सं० पु०] ईश्वरवाक्य । ऐसा प्रामाणिक कथन जिसका खण्डन नहीं किया जा सकता ।

वेदव्यास—[सं० पु०] व्यासजी । कृष्ण द्वैपायन ।

वेदांग—[सं० पु०] वेदों के छः अंग । छः शास्त्र—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, छन्द, निरुक्त, ज्योतिष ।

वेदान्त—[सं० पु०] ब्रह्मविद्या । प्रमुख दर्शनशास्त्र । वेदों का अन्तिम भाग जिसमें जगत्, आत्मा और ब्रह्म का निरूपण किया गया है ।

वेदान्तसूत्र—[सं० पु०] व्यास द्वारा रचित उत्तर मीमांसा के मूल सूत्र ।

वेदान्ती—[सं० पु०] वेदान्त का जाननेवाला । ब्रह्मवादी । अद्वैतवादी ।

वेदिका, वेदी—[सं० स्त्री०] यज्ञादि शुभ कार्य के लिए बनाया गया ऊँचा स्थान ।

वेधना—[सं० क्रि०] छेदना । विद्ध करना ।

वेधशाला—[सं० स्त्री०]ग्रह-नक्षत्रादि के देखने का भवन-विशेष ।

वेधमुख्या—[सं० स्त्री०] कस्तूरी । कपूर ।

वेधा—[सं० पु०] विष्णु । ब्रह्मा । सूर्य । शिव ।

वेधी—[सं० पु०] वेधनेवाला । छेदनेवाला ।

वेपथु—[सं० पु०] कँपकपी ।

वेला—[सं० स्त्री०] समय, काल । समुद्र का किनारा । समुद्र की लहर ।

वेश—[सं० पु०] वस्त्रादि पहनना । पहनने का ढंग ।

वेशवधू—[सं० स्त्री०] वेश्या, रंडी ।

वेश्या—[सं० स्त्री०] रंडी, तवायफ़ ।

वेश्म—[सं० पु०] घर, मकान ।

वेष्टन—[सं० पु०] लपेटने की क्रिया । ऊपर लपेटने का कपड़ा ।

वेष्टित—[सं० वि०] लपेटा हुआ ।

वैकल्पिक—[सं० वि०] जिसे इच्छानुसार लिया जा सके ।

वैकल्य—[सं० पु०] विकलता ।

वैकाल—[सं० पु०] दोपहर के बाद का समय । अपराह्न ।

वैकुण्ठ—[सं० पु०] स्वर्ग, विष्णुलोक ।

वैकुण्ठवास—[सं० पु०] स्वर्गवास । मृत्यु ।

वैकृत—[सं० पु०] विकार, विगाड़ ।

वैक्रमीय—[सं वि०] विक्रम-संबंधी ।

वैखानस—[सं० पु०] वानप्रस्थी, वनवासी । तपस्वी ।

वैचक्षण्य—[सं० पु०] चातुर्य, दक्षता, चतुरता, कुशलता ।

वैचित्र्य—[सं० पु०] विचित्रता ।

वैजयन्त—[सं० पु] इन्द्र, इन्द्रपुरी ।

वैजयन्ती—[सं० स्त्री०] पताका । झण्डी । पाँच प्रकार के मोतियों की माला ।

वैज्ञानिक—[सं० पु०] विज्ञान का ज्ञाता । निपुण, चतुर । विज्ञान सम्बन्धी ।

वैतनिक—[सं० पु०] वेतन पर काम करनेवाला । कर्मचारी ।

वैतरणी—[सं० स्त्री०] यम-द्वार अथवा यमपुर की नदी ।

वैताल—[सं० पु०] पिशाच । भाट । बंदीजन ।

वैतालिक—[सं० पु०] राजा-महाराजाओं को स्तुति गान द्वारा जगानेवाला ।

वैतालीय—[सं० पु०] एक वर्णिक छंद ।

वैदग्ध्य—[सं० पु०] चातुर्य, चतुराई ।

वैदर्भ—[सं० पु०] विदर्भ देश का राजा । दमयंती और रुक्मिणी के पिता ।

वैदर्भी—[सं० स्त्री०] रुक्मिणी, दमयंती । काव्य शैली-विशेष ।

वैदिक—[सं० स्त्री०] वेदों का ज्ञाता । वेद-सम्बन्धी ।

वैदूर्य—[सं० पु०] एक मणि विशेष ।

वैदेशिक—[सं० पु० वि०] विदेश-सम्बन्धी ।

वैदेही—[सं० स्त्री०] विदेह राजा की कन्या । सीता ।

वैद्य—[सं० पु०] आयुर्वेद चिकित्सा शास्त्र के अनुसार चिकित्सा करनेवाला ।

वैद्यक—[सं० पु०] आयुर्वेद चिकित्सा-शास्त्र ।

वैद्युत—[सं० वि०] बिजली संबंधी ।

वैध—[सं० वि०] उपयुक्त, ठीक, विधान के अनुसार ।

वैधर्म्य—[सं० पु०] नास्तिकता, विधर्म्मी होने का भाव ।

वैधव्य—[सं० पु०] विधवा होना ।

वैधेय—[सं० वि०] विधि सम्बन्धी । ब्रह्मा का ।

वैनतेय—[सं० पु०] विनता की सन्तान अरुण, गरुड़ ।

वैभव—[सं० पु०] धन-सम्पदा, ऐश्वर्य, महत्व ।

वैमनस्य—[सं० पु०] शत्रुता, वैर-विरोध ।

वैमात्रेय—[सं० पु० वि०] विमाता से उत्पन्न, सौतेला ।

वैयाकरण—[सं० पु०] व्याकरण का पंडित, ज्ञाता ।

वैर—[सं० पु०] शत्रुता, दुश्मनी ।

वैर-शुद्धि—[सं० स्त्री०] वैर का बदला लेना ।

वैरागी—[सं० पु०] विरक्त, त्यागी, संन्यासी, विरागी ।

वैराग्य—[सं० पु०] विराग हो जाना, दुनिया से सम्बन्ध तोड़कर ईश्वराधना की चित्तवृत्ति ।

वैराज्य—[सं० पु०] एक ही देश में दो राजाओं का राज्य या शासन ।

वैलक्षण्य—[सं० पु०] विलक्षणता, विचित्रता ।

वैवर्ण—[सं० पु०] मलिनता ।

वैवाहिक—[सं० पु० वि०] विवाह-सम्बन्धी ।

वैशम्पायन—[सं० पु०] महर्षि व्यास के एक प्रिय शिष्य ।

वैशाख—[सं०पु०] १२ महीनों में से एक माह ।

वैशाली—[सं० स्त्री०] बौद्ध काल की एक नगरी ।

वैशिक—[सं० पु०] वेश्यागामी नायक ।

वैशेषिक—[सं० पु०] छः दर्शन शास्त्रों में से एक दर्शन शास्त्र । इसके रचयिता महर्षि कणाद हैं ।

वैश्य—[सं० पु०] चतुरवर्णों में से तीसरा वर्ण, व्यापारी लोग ।

वैषम्य—[सं० पु०] विषमता ।

वैषयिक—[सं० वि०] विषय सम्बन्धी ।

वैष्णव—[सं० पु० वि०] विष्णु के उपासक, ज्ञानी, ध्यानी, उपासक ।

वैष्णवी—[सं० वि०] विष्णु की शक्ति, लक्ष्मी, तुलसी, दुर्गा, गंगा ।

वोहित—[सं० पु०] दे० जहाज़ ।

व्यंग्य—[सं० पु०] चुटकी ।

व्यंजक—[सं० पु०] विशेष भाव प्रकाशित करने वाला ।

व्यंजना—[सं० स्त्री०] विशेष भाव प्रकट करने की क्रिया ।

व्यक्त—[सं० वि०] प्रकट हुआ, स्पष्ट हुआ ।

व्यक्ति—[सं० स्त्री०] मनुष्य,

व्यक्तित्व—[सं० स्त्री० वि०] व्यक्ति का गुण, गरिमा, निजी चारित्रिक विशेषताएँ ।

व्यग्र—[सं० वि०] विकल, उद्विग्न, भयभीत, चिंतित ।

व्यतिक्रम—[सं० पु०] क्रम का बिगड़ जाना, विघ्न-बाधा का पैदा होना ।

व्यतिरेक—[सं० पु०] अभाव, अतिक्रम, अंतर । एक अलंकार विशेष ।

व्यतीत—[सं० वि०] बीता हुआ, जो गत हो चुका है ।

व्यतीपात—[सं० पु०] योग-विशेष जिसके अंतर्गत कोई मंगल कार्य अथवा तत्सम्बन्धिनी यात्रा निषेध है, उपद्रव ।

व्यत्यय—[सं० पु०] लाँघना, व्यतिक्रम, अतिक्रम ।

व्यथा—[सं०स्त्री०] दुःख, क्लेश, कष्ट ।

व्यथित—[वि०] दुःखित, पीड़ित ।

व्यपदेश—[सं० पु०] बहाना, ब्याज ।

व्यभिचार—[सं० पु०] दुराचार, बदचलनी ।

व्यभिचारिणी—[सं० स्त्री०] दुराचारिणी, बदचलन स्त्री, कुलटा ।

व्यभिचारी—[सं० पु०] दुराचारी, परस्त्रीगामी, काव्य में एक संचारी भाव ।

व्यय—[सं० पु०] खर्च, नष्ट, जन्म कुण्डली में लग्न से १२ वाँ घर ।

व्यर्थ—[सं० वि०] फिजूल, वृथा, निरर्थक ।

व्यलीक—[सं० पु०] अनुचित, अयोग्य, अपराध, दुःख, डाट-फटकार ।

व्यवकलन—[सं० पु०] बाकी निकालना, अन्तर स्पष्ट करना ।

व्यवच्छेद—[सं० पु०] अलग होने का भाव, पार्थक्य, हिस्सा, विभाग ।

व्यवधान—[सं० पु०] रुकावट, परदा, भेद, खंड ।

व्यवसाय—[सं० पु०] उद्यम, पेशा, धंधा, व्यापार ।

व्यवसायी—[सं० पु०] व्यापारी, उद्यमी ।

व्यवस्था—[सं० स्त्री०] प्रबन्ध, शास्त्र निर्देशित विधान, निश्चय, रीतिनीति ।

व्यवस्थाता, व्यवस्थापक—[सं०पु०] प्रबन्धक, इन्तजाम करने वाला, विधायक, किसी निश्चय, विधान अथवा रीति-नीति को स्थापित करने वाला ।

व्यवस्थापिका-सभामण्डल—सरकार-द्वारा नामज़द तथा जनताद्वारा निर्वाचित व्यक्तियों की सभा जो नियम-कानून बनाती है ।

व्यवस्थित—[सं० वि०] कायदे का, सुप्रबन्धित ।

व्यवहार—[सं० पु०] बरताव, कार्य,

काम ।

व्यवहित—[सं० वि०] छिपा हुआ, जिसमें कोई रुकावट है ।

व्यवहृत—[सं० वि०]प्रयुक्त, जो काम में लाया गया हो ।

व्यष्टि—[सं० स्त्री०] एक व्यक्ति । भिन्न, अलग ।

व्यसन—[सं० पु०] बुरी लत, आपत्ति, दोष, दुष्प्रवृत्ति ।

व्यसनी—[सं० पु०] जिसे कोई बुरी लत पड़ गई हो, किसी में आसक्त ।

व्यस्त—[सं० वि०] कार्य में बहुत जुटा रहना ।

व्याकरण—[सं० पु०] भाषा-ज्ञान की विद्या जिसके द्वारा किसी भाषा का ठीक-ठीक लिखना, बोलना और समझना ज्ञात हो ।

व्याकुल—[सं० पु०] घबराया हुआ, उद्विग्न ।

व्याक्रोश—[सं० पु०] चिल्लाना, शोर मचाना, अनादर करते हुए व्यंग्य कसना ।

व्याख्या—[सं० स्त्री०] टीका, विवेचना, जटिल स्थलों का सरल, सुबोध अर्थ करना ।

व्याख्याता—[सं० पु०] भाषण देनेवाला, विवेचना करने वाला, टीकाकार ।

व्याख्यान—[सं० पु०] भाषण ।

व्याघात—[सं० पु०] चोट, विघ्न-बाधा, एक अलंकार-विशेष ।

व्याघ्र—[सं० पु०] बाघ, शेर, सिंह ।

व्याज—[सं० पु०] छल, कपट, बहाना, देर, विघ्न, सूद, लाभ ।

व्याजक—[सं० वि०] छली, कपटी, ऋणी ।

व्याजनिंदा—[सं० स्त्री०] छिपी हुई निन्दा, निन्दा तो हो लेकिन देखने में निन्दा न मालूम दे ।

व्याजस्तुति—[सं० स्त्री०] बहाने से की गई स्तुति, प्रशंसा, स्तुति तो हो लेकिन देखने में स्तुति न जान पड़े, एक शब्दालंकार ।

व्याजोक्ति—[सं० स्त्री०] एक अर्थालंकार, छलपूर्ण कथन, बहाना बनाकर किसी बात को छिपाया गया हो ।

व्याड़—[सं० वि०] धूर्त, कपटी ।

व्यादान—[सं० पु०] फैलाव, विस्तार ।

व्याध—[सं० पु०] अहेरी, वन्य पशुओं का शिकार करने वाला ।

व्याधि—[सं० स्त्री०] रोग-शोक, कष्ट, बीमारी ।

व्यापक—[सं० वि०] फैला हुआ, विस्तृत ।

व्यापादान—[सं० पु०] हत्या, दूसरे को दुःख देने का उपाय ।

व्यापार—[सं० पु०] व्यवसाय, कार्य, सौदागरी ।

व्यापी—[सं० पु०] व्यापक, विभु, समाए हुए ।

व्याप्त—[सं०वि०] फैला हुआ, विस्तृत। समाया हुआ ।

व्याप्ति—[सं० स्त्री०] एक वस्तु का दूसरी वस्तु में समा जाना, मिश्रित होना । आठ सिद्धियों में से एक ।

व्यामोह—[सं० पु०] मोह, अज्ञान, दुःख, व्याकुलता ।

व्यायाम—[सं० पु०] कसरत, वर्जिस, शरीर को स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट रखने के लिए शारीरिक श्रम ।

व्यायोग—[सं० पु०] दृश्य काव्य के अन्तर्गत एक भेद ।

व्याल—[सं० पु०] सर्प, बाघ, राजा ।

व्यालि—[सं० पु०] व्याकरण रचयिता एक ऋषि ।

व्यालिक—[सं० पु०] सँपेरा ।

व्यावहारिक—[सं० वि०] व्यवहार-सम्बन्धी ।

व्यावृत—[सं० वि०] निवृत, खण्डित, मनोनीत ।

व्यासंग—[सं० पु०] अत्यधिक आसक्ति या मनोयोग ।

व्यास—[सं० पु०] पराशर के पुत्र कृष्ण द्वैपायन, वेदों का संग्रह-सम्पादन करने के कारण वेद-व्यास भी कहलाए । महाभारत, भागवत, पुराणादि के रचयिता । फैलाव, विस्तार । वह रेखा जो वृत्त गोले के केन्द्र से चलकर परिधि पर समाप्त हो ।

व्यासार्द्ध—[सं० पु०] अर्ध व्यास ।

व्याहत—[सं०] व्यर्थ । निषिद्ध ।

व्याहार—[सं० पु०] वाक्य ।

व्युत्पत्ति—[सं० स्त्री०] उत्पत्ति-स्थान, उद्गम, शब्द का मूल रूप । शास्त्र का ज्ञान ।

व्युत्पन्न—[सं० वि०] किसी शास्त्र का अच्छा ज्ञाता ।

व्यूह—[सं० पु०] समूह, निर्माण, रचना । युद्ध में सैन्य-शक्ति की विशिष्ट व्यवस्था ।

व्योम—[सं० पु०] आकाश, बादल, जल ।

व्योमचर, व्योमचारी—[सं० पु०] देवता, सूर्य, चन्द्र, तारागण, पक्षी, मेघ, विमान, बिजली ।

व्रज—[सं० पु०] जाना, चलना, समूह, श्रीकृष्ण भगवान् की लीलाभूमि, मथुरा के आसपास का क्षेत्र ।

व्रजचन्द्र—[सं० पु०] श्रीकृष्ण ।

व्रजनाथ—[सं० पु०] श्रीकृष्ण ।

व्रजभाषा—[सं० स्त्री०] व्रज-क्षेत्र-(मथुरा-आगरा आदि) की बोली और भाषा जिसमें अनेक विशिष्ट कवियों ने अपनी रचनाएँ की हैं ।

व्रजेन्द्र—[सं० पु०] श्रीकृष्ण ।

व्रजेश, व्रजेश्वर—[सं॰पु॰] श्रीकृष्ण।

व्रज्या—[सं॰ स्त्री॰] भ्रमण, घूमना-फिरना, आक्रमण।

व्रण—[सं॰ पु॰] घाव या फोड़ा।

व्रत—[सं॰ पु॰] किसी पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में उपवास-अनुष्ठान करना।

व्रतिक, व्रती—[सं॰ पु॰] व्रत या उपवास करने वाला, ब्रह्मचारी, शुभ-संकल्प करने वाला।

व्रत्य—[सं॰ पु॰] व्रत करनेवाला।

व्राचड़—[सं॰ स्त्री॰] सिंध प्रदेश की प्राचीन भाषा। पैशाचिक भाषा का एक भेद या रूप।

व्रात—[सं॰ पु॰] भीड़, समूह।

व्रात्य—[सं॰ पु॰] जिसका संस्कार (यज्ञोपवीत) न हुआ हो, वर्णसंकर।

व्रीड़ा—[सं॰ स्त्री॰] लज्जा, शरम।

व्रीहि—[सं॰ पु॰] चावल, धान।

बहुव्रीहि—[सं॰ स्त्री॰] छः समासों में से एक।

—:❀:—

श

शं—[सं॰पु॰] मंगल, वैराग्य, कल्याण, सुख, शान्ति।

शंक—[सं॰ पु॰] आशंका, भय, डर।

शंकर—[सं॰ वि॰] कल्याणकारी, शुभ-कर्त्ता, मंगल कर्त्ता लाभ देने वाला। शिव, शंभु, महादेव, शंकराचार्य। आधुनिक काल का एक प्रसिद्ध कवि। एक मात्रिक छन्द।

शंकरा—[सं॰स्त्री॰] पार्वतीजी, शंकरी।

शंकराचार्य—[सं॰ पु॰] एक प्रसिद्ध शैव आचार्य, अद्वैत मत के प्रवर्तक। वेदान्त और गीताके प्रसिद्ध भाष्यकार।

शंकरी—[सं॰स्त्री॰] पार्वतीजी, शंकरा।

शंका—[सं॰ स्त्री॰] आशंका, सन्देह, चिन्ता, भय, संशय, अनिष्ट का भय, एक संचारी भाव।

शंकित—[वि॰] संदेहपूर्ण, डरा हुआ, अनिश्चित, चिंतित।

शंकु—[सं॰ पु॰] कामदेव, शिव, सूर्य की छाया को नाप कर समय का ज्ञान करने वाली कीली या खूँटी। कील, खूँटा, खूँटी, भाला, बरछा।

शंख—[सं॰ पु॰] दस या सौ खर्ब की संख्या, हाथी का गंडस्थल, कंबु, समुद्र में से निकलने वाला बड़ा घोंघा, जो देवमन्दिरों में पूजा के समय बजाया जाता है। शंखासुर नामक दैत्य। नौ निधियों में से एक, १४रत्नों में से एक।

शंखचूड़—[सं॰ पु॰] एक दैत्य जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था, कुबेर का मित्र या दूत।

शंखधर—[सं॰ पु॰] विष्णु, श्रीकृष्ण।

शंखध्वनि—[सं॰ पु॰] शंखनाद, विजय-ध्वनि।

शंखपाणि—[सं॰ पु॰] विष्णु।

शंखिनी—[सं॰ स्त्री॰] एक वनौषधि, शंखपुष्पी, शंखाहुली, सीप, मुख की नाड़ी, श्वेत अपराजिता। एक देवी।

शंठ—[सं॰ पु॰] नपुंसक, साँड़, मूर्ख।

शंतनु—[सं॰ पु॰] भीष्मपितामह के पिता, एक चन्द्रवंशीय राजा।

शंपु—[सं॰ वि॰] आनन्दित, हर्षित, प्रसन्न।

शंबरारि, शंबररिपु—[सं॰पु॰] प्रद्युम्न, कामदेव।

शंबल—[सं॰ पु॰] मार्ग का भोजन, पाथेय, विद्वेष, तट, संबल।

शंबु—[सं॰ पु॰] छोटा शंख, घोघा।

शंबुक—[सं॰ पु॰] छोटा शंख, घोंघा, संबुक।

शंभु—[सं॰ पु॰] शिव, महादेव, ११ रुद्रों में से एक। एक दैत्य।

शंभुभूषण—[सं॰पु॰] साँप, चन्द्रमा।

शंभुलोक—[सं॰ पु॰] कैलाश।

शंसा—[सं॰ स्त्री॰] अभिलाषा, उत्सुकता, चाह।

शंसित—[सं॰ पु॰] निश्चित, स्तुत्य, कथित, उक्त।

शंस्य—[सं॰ वि॰] श्लाघ्य, प्रशंसनीय, स्तुत्य, प्रशंसा के योग्य।

शकट—[सं॰ पु॰] एक दैत्य जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था। छकड़ा, बैलगाड़ी, भार, बोझा।

शकठ—[सं॰ पु॰] मचान।

शकुन्त—[सं॰ पु॰] पक्षी, विश्वामित्र का पुत्र।

शकुन्तला—[सं॰स्त्री॰] मेनका नामक अप्सरा की कन्या और दुश्यन्तकी रानी।

शकुन—[सं॰ पु॰] शुभ सूचक चिह्न,

सगुन, किसी कार्य-विशेष के समय शुभ या अशुभ लक्षण।

शकुनि—[सं० पु०] पक्षी, चिड़िया, दुर्योधन का मंत्री, हिरण्याक्ष का पुत्र एक दैत्य।

शक्त—[सं०पु०] समर्थ,शक्तिपूर्ण,योग्य।

शक्ति—[सं० स्त्री०] सामर्थ्य, बल, पराक्रम, पौरुष, अधिकार, माया, भगवती, दुर्गा, लक्ष्मी,गौरी, सरस्वती, एक शस्त्र, तलवार।

शक्तिधर—[सं० पु०] षडानन, कार्त्तिकेय, शक्तिभृत।

शक्तिपूजक—[सं० पु०] शाक्त, वाममार्गी, तान्त्रिक।

शक्तिमत्ता—[सं० स्त्री०] सामर्थ्य, बलिष्ठता, शक्तिवान होने का भाव।

शक्तिमान्—[सं० वि०] बलिष्ठ, बलवान् बली।

शक्तिशाली—[सं० वि०] बलवान्।

शक्तिहीन—[सं० वि०] नपुंसक, असमर्थ, निर्बल, बलहीन।

शक्तु—[सं० पु०] सत्तू, सतुआ।

शक्य—[सं० वि०] होने योग्य, क्रियात्मक, शक्तियुक्त।

शक्र—[सं० पु०] इन्द्र।

शक्र-प्रस्थ—[सं पु०] इन्द्रप्रस्थ, दिल्ली।

शचि—[सं० स्त्री०] शची, इन्द्राणी, इन्द्र की स्त्री।

शचीपति—[सं०पु०] इन्द्र, शची के स्वामी।

शठ—[सं० वि०] मूर्ख, अपढ़, बेसमझ, दुष्ट, पाजी, चालाक।

शठता—[सं० स्त्री०] धूर्त्तता, दुष्टता, शठत्व।

शत—[सं० वि०] सौ की संख्या, सैकड़ा (१००)।

शतक—[सं० पु०] सैकड़ा, एक-सी सौ वस्तुओं का समूह, शताब्दी।

शतकोटि—[सं० पु०] सौ करोड़ की संख्या।

शतक्रतु—[सं० पु०] इन्द्र।

शतघ्नी—[सं० पु०] पुराने समय की तोप या बन्दूक।

शतदल—[सं० पु०] कमल, पद्म।

शतद्रु—[सं० स्त्री०] सतलज नदी।

शतपत्र—[सं० पु०] कमल।

शतपथ—[सं० पु०] महर्षि याज्ञवल्क्य-कृत यजुर्वेद का एक ब्राह्मण ग्रन्थ।

शतपद—[सं०पु०] कनखजूरा, च्यूंटी।

शतपुष्प—[सं० स्त्री०] सौंफ।

शतभिषा—[सं० स्त्री०] सौ तारों के समूह से बना गोलाकार २४ वाँ नक्षत्र।

शतरूपा—[सं० स्त्री०] ब्रह्मा की मानसी कन्या तथा पत्नी और स्वायंभुव की माता, स्वायंभुव मनु की पत्नी।

शता—[सं० स्त्री०] सौंफ।

शतानंद—[सं० पु०] राजा जनक के पुरोहित, विष्णु, ब्रह्मा, कृष्ण, गौतम मुनि।

शताब्द—[सं० स्त्री०] शताब्दी, सौ वर्षों का समय।

शतायु—[सं० पु०] सौ वर्ष की अवस्था वाला पुरुष।

शतायुध—[सं० पु०] सौ अस्त्रोंवाला।

शतावधान—[सं० पु०] श्रुतिधर, वह व्यक्ति जो एक समय में एक ही साथ सौ या अधिक बातें सुनकर क्रमशः याद रख सके और एक साथ अनेक कार्य कर सके।

शती—[सं० स्त्री०] सैकड़ा, सौ का समूह।

शत्रु—[सं० पु०] वैरी, रिपु।

शत्रुघ्न—[सं० पु०] सुमित्रानन्दन, लक्ष्मण के छोटे भाई, दशरथनन्दन।

शत्रुता—[सं० स्त्री०] रिपुता, वैमनस्य, वैर-भाव।

शत्रुहंता—[सं० वि०] शत्रुओं का संहार करने वाला, वैरियों को मारनेवाला, शत्रुघ्न।

शत्रुहा—[सं० वि०] वैरियों को मारनेवाला।

शनि—[सं० पु०] अभाग्य, अनिष्टकारी, शनिश्चर ग्रह।

शनिश्चर—[सं० पु०] सौर मंडल का ७ वाँ ग्रह, शनिवार, शनीचर।

शनैः—[सं० अव्य०] धीरे-धीरे।

शनैश्चर—[सं० पु०] शनिश्चर ग्रह।

शपथ—[सं० स्त्री०] सौगंद, प्रतिज्ञा, कसम।

शफरी—[सं० पु०] छोटी मछली।

शब्द—[सं० पु०] किसी पदार्थ या भावादि-बोधक सार्थक ध्वनि, किसी संत या महात्मा के बनाये पद। सबद।

शब्दचित्र—[सं० पु०] अनुप्रास नामक एक शब्दालंकार।

शब्दप्रमाण [सं० पु०] कथन-प्रमाण। किसी विद्वान का कथन जो प्रमाण माना जाता है।

शब्दभेदी—[सं० पु०] दशरथ, अर्जुन, केवल शब्द सुनकर किसी वस्तु या व्यक्ति को बिना देखे बाण से बेधना।

शब्दवेधी—[सं० पु०] केवल शब्द सुनकर किसी को बाण से बेधनेवाला, अर्जुन, दशरथ, पृथ्वीराज।

शब्दाडंबर—[सं० पु०] बड़े-बड़े शब्दों का जाल, भावहीन।

शब्दानुशासन—[सं० पु०] व्याकरण।

शब्दालंकार—[सं० पु०] एक अलंकार जिसमें वर्णों या शब्दों के विन्यास द्वारा चमत्कार प्रकट किया जाय।

शम—[सं० पु०] मुक्ति, शान्ति, मोक्ष, काव्य में शांत रस का स्थायी भाव,क्षमा, मन और इन्द्रियों का निग्रह।

शमन—[सं० पु०] शांति, दमन, हिंसा, यज्ञ में पशु-बलिदान ।

शमलोक—[सं० पु०] स्वर्ग, वैकुंठ, शांतिलोक ।

शमित—[सं० वि०] शमन किया हुआ, शांत, ठहरा हुआ ।

शमी—[वि० सं०] अग्नि-गर्भ वृक्ष, विजयादशमी पर पूजा जानेवाला वृक्ष-विशेष ।

शयन—[सं० पु०] सोना, नींद लेना, पलंग, बिछौना ।

शयनगृह—[सं० पु०] शय्यालय, सोने का कक्ष, शयनागार ।

शयनागार—[सं० पु०] शयनालय, आराम करने का कक्ष, शयन-शाला ।

शय्या—[सं० स्त्री०] बिछौना, पलंग, सज्जा ।

शय्यादान—[सं० पु०] मृतक व्यक्ति के निमित्त महापात्र को बिछौना और वस्त्रादिसहित पलंग दान करना । सज्जादान ।

शर—[सं० पु०] बाण, तीर, सरकंडा, सरपत, नाराच, दूध-दही की मलाई । पिता, भाले का फल, एक असुर ।

शरण—[सं० स्त्री०] आश्रय, पनाह, भवन, आधीन, रक्षा, बचाव का स्थान ।

शरणागत—[सं० पु०] शरणापन्न, शरण में आया हुआ, आश्रय-प्राप्त, शिष्य, दास ।

शरण्य—[सं० वि०] आश्रित या शरणागत की रक्षा करनेवाला ।

शरत्—[सं० स्त्री०] शरद, क्वार और कार्त्तिक में आनेवाली ऋतु, जाड़ों का प्रारंभ । वर्ष, संवत्सर ।

शरद्—[सं० स्त्री०] शरत्-काल, क्वार, कार्त्तिक की ऋतु ।

शरदऋतु—[सं० पु०] क्वार और कार्त्तिक की ऋतु ।

शरदपूर्णिमा—[सं० स्त्री०] क्वार मास की पूर्णिमा ।

शरभ—[सं० पु०] शलभ, पतिंगा, हाथी का बच्चा, एक वानर-विशेष, विष्णु, पक्षी ।

शरासन—[सं० पु०] कमान, धनुष, धन्वा, धनु ।

शरीर—[सं० पु०] अंग, काया, तन, गात, बदन ।

शरीर-रक्षक—[सं० पु०] अंगरक्षक, शरीर की रक्षा करनेवाला ।

शरीर-शास्त्र—[सं० पु०] शरीर-विज्ञान, शरीर के अंगप्रत्यंग के निर्माण और कार्यप्रणाली की विवेचना करनेवाली विद्या ।

शरीरांत—[सं० पु०] मृत्यु, देहावसान, मौत, देहान्त ।

शरीरी—[सं० पु०] प्राणी, जीवधारी, देहधारी, जीव, शरीरवाला, आत्मा ।

शर्करा—[सं० स्त्री०] खाँड़, चीनी, शक्कर, बालू के कण ।

शर्म्म—[सं० पु०] आनन्द, हर्ष, सुख, मकान, गृह ।

शर्म्मद—[सं० वि०] सुख देनेवाला, आनन्ददायक, हर्षित करनेवाला ।

शर्म्मा—[सं० पु०] ब्राह्मणों की पदवी या उपाधि ।

शर्मिष्ठा—[सं० स्त्री०] दैत्यराज वृषपर्वा की कन्या, देवयानी की सहेली ।

शर्व—[सं० पु०] विष्णु, शिव ।

शर्वरी—[सं० स्त्री०] रात, संध्या, निशा, रजनी ।

शलभ—[सं० पु०] शरभ, पतिंगा, हाथी का बच्चा ।

शलाका—[सं० स्त्री०] लोहे या पीतल आदि की लंबी सलाई । बाण, जूआ खेलने का पाँसा ।

शल्य—[सं० पु०] अस्त्र-चिकित्सा, अस्थि, हड्डी, मद्र देशाधिपति जो कर्ण के सारथी बने थे और द्रौपदी-स्वयंवर में भीम से मल्लयुद्ध में पराजित हुए थे ।

शल्यक्रिया—[सं० स्त्री०] चीर-फाड़ की चिकित्सा, शस्त्रक्रिया । चीर फाड़ की चिकित्सा ।

शल्यशास्त्र—[सं० पु०] शस्त्रास्त्र विज्ञान ।

शव—[सं० पु०] लाश, मृत शरीर ।

शवदाह—[सं० पु०] मृतक-संस्कार, मनुष्य के मृत शरीर को जलाने की क्रिया ।

शवयान—[सं० पु०] शवरथ, अर्थी, मुर्दे को ले जानेवाली टिकटी, काँठी ।

शश—[सं० पु०] खरहा, खरगोश, चंद्रकलंक, मनुष्य के चार भेदों में से एक ।

शशकलंक—[सं० पु०] चन्द्रमा ।

शशधर—[सं० पु०] शशभृत्, चन्द्रमा ।

शशशृंग—[सं० पु०] शशकशृंग, असंभव कार्य, खरहे के सींग सदृश ।

शशांक—[सं० पु०] मृगांक, चन्द्रमा ।

शशि, शशी—[सं० पु०] चन्द्रमा, चाँद, इंदु ।

शशिकला—[सं० स्त्री०] चन्द्रमा की कला, एक छन्द या वृत्त ।

शशिज—[सं० पु०] बुध नामक ग्रह, चन्द्रात्मज ।

शशिधर—[सं० पु०] चन्द्रमौलि, शिव ।

शशिभाल—[सं० पु०] शिवजी, महादेवजी, शशिमौल, शशिमूर्धि्न ।

शशिभूषण—[सं० पु०] शिवजी ।

शशिमंडल—[सं० पु०] चन्द्रमा का गोला या घेरा, चन्द्रमंडल ।

शशिमुख—[सं० वि०] चन्द्रमा के समान सुन्दर मुख ।

शशिवदना—[सं० स्त्री०] चन्द्रमुखी । एक छन्द या वृत्त ।

शशिशेखर—[सं० पु०] शिव ।

शश्वत—[सं० अव्य०] सर्वदा, सदा । निरंतर, सनातन ।

शस्त्र—[सं० पु०] हथियार, खंग, मारने-काटने का साधन । सिद्धि का उपाय ।

शस्त्रक्रिया—[सं० स्त्री०] चीरफाड़ करने की क्रिया, नश्तर द्वारा चिकित्सा, जर्राही ।

शस्त्रधर—[सं० पु०] सैनिक, योद्धा, सिपाही, हथियारबन्द ।

शस्त्रधारी-[सं० वि०] सैनिक, सिपाही । हथियारबन्द ।

शस्त्रविद्या-[सं० स्त्री०] शस्त्र-विज्ञान, हथियार चलाने की विद्या, धनुर्वेद ।

शस्त्रशाला—[सं० स्त्री०] हथियार रखने का स्थान, शस्त्रालय ।

शस्त्रागार—[सं० पु०] शस्त्र-शाला । सिलहखाना ।

शस्त्री—[सं० पु०] हथियार बाँधने या चलानेवाला । छुरी ।

शस्य—[सं० पु०] अनाज, अन्न । धान्य । नयी कोमल घास ।

शांकर—[सं० वि०] शंकराचार्य या शंकर का, शंकर संबंधी ।

शांडिल्य—[सं० पु०] एक गोत्रकार ऋषि । एक मुनि जिन्होंने एक भक्ति-सूत्र और स्मृति का निर्माण किया ।

शांत—[सं० वि०] धीर, गंभीर । मौन, चुप । शिथिल, स्वस्थ-मन । रागादि-विहीन । मृत । स्थिर । जितेन्द्रिय । नौ रसों में से एक रस ।

शांतना—[सं० स्त्री०] मौन भाव । स्थिरता । धीरता । गंभीरता । शांति ।

शांतनु—[सं० पु०] भीष्म पितामह के पिता । द्वापर के चन्द्रवंशीय २१ वें राजा ।

शांता—[सं० स्त्री०] रेणुका । राजा दशरथ की कन्या जो ऋष्यशृंग को ब्याही थी ।

शांति—[सं० स्त्री०] स्तब्धता, स्थिरता । नीरवता । मौनभाव । विराग । वासनादि विहीनता । सौम्यता । मरण । धीरता । गंभीरता ।

शांतिकर्म—[सं० पु०] अमंगल के निवारण का उपचार ।

शांति-पाठ—[सं० पु०] वेद के शांति-कारक मंत्र ।

शांबरी—[सं० स्त्री०] जादूगरनी । इन्द्रजाल । [पु०] लोध वृक्ष ।

शांबुक, शांबूक—[सं० पु०] छोटा शंख, घोंघा, एक शूद्र तपस्वी ।

शाक—[सं० पु०] भाजी, तरकारी । शकों का ।

शाकद्वीप—[सं० पु०] ईरान और तुर्किस्तान के बीच में आर्यों और शकों का देश ।

शाकल्य—[सं० पु०] होम या हवन की सामग्री । एक प्राचीन वैयाकरण ।

शाका—[सं० पु०] शाका, शालिवाहन का संवत् ।

शाकाहार—[सं० पु०] अन्न, शाक और फलों का भोजन, निरामिष भोजन ।

शाकिनी—[सं० स्त्री०] डाइन, चुड़ैल ।

शाकुन—[सं० वि०] पक्षियों के सम्बन्ध का । शकुन-सम्बन्धी ।

शाकुनि—[सं० पु०]बहेलिया, व्याधा ।

शाक्त—[सं० वि०] शक्ति का उपासक, तांत्रिक, शक्ति सम्बन्धी ।

शाक्य—[सं० पु०] महात्मा बुद्ध की जाति, नैपाल की तराई की एक प्राचीन क्षत्रिय जाति ।

शाक्यमुनि, शाक्यसिंह—[सं० पु०] गौतम बुद्ध ।

शाखा—[सं० स्त्री०] विभाग, प्रकार, डाली, टहनी, अंग, हाथ-पैर, वेद की संहिताओं के पाठ तथा क्रम-भेद ।

शाखामृग—[सं० पु०] बानर, बन्दर ।

शाखी—[सं० पु०] पेड़, वृक्ष, तरु ।

शाखोच्चार—[सं० पु०] विवाह के समय दोनों पक्षों की वंशावलियों का बखान ।

शाठ्य—[सं० पु०] क्रूरता, दुष्टता, धूर्त्तता ।

शाण—[सं० पु०] चार माशे की तौल, शस्त्र प्रखर करने की सान, कसौटी ।

शात—[सं० पु०] मंगल, कल्याण ।

शातकुंभ—[सं० पु०] सुख, सोना ।

शातवाहन—[सं० पु०] शालिवाहन नाम के एक राजा ।

शाद्वल—[सं० वि०] हरी-भरी भूमि, हरी घास या दूब ।

शाप—[सं० पु०] भर्त्सना, कोसना, शाप, धिक्कारना, अहित कामना-सूचक शब्द ।

शापग्रस्त—[सं० वि०] जिसे शाप लगा हो, शापित ।

शाब्द—[सं० वि०] शब्द सम्बन्धी, शब्द का, एक प्रमाण ।

शाब्दिक—[सं० वि०] शब्द-सम्बन्धी, वैयाकरण ।

शाब्दी—[सं० स्त्री०] शब्द सम्बन्धिनी ।

शामूक—[सं० पु०] घोंघा, सीप ।

शायक—[सं० पु०] तीर, बाण, खंग, सायक ।

शारंग—[सं० पु०] सारंग, इसके ५६ अर्थ हैं । दीपक, साँप, मोर, रात, वस्त्र, मेघ इत्यादि ।

शारंग-पाणि—[सं० पु०] विष्णु, राम, कृष्ण ।

शारद—[सं० वि०] सरस्वती, शरद काल का ।

शारदा—[सं०स्त्री०] सरस्वती, भारती, दुर्गा, एक प्राचीन लिपि ।

शारदी—[सं० वि०] शरद ऋतु सम्बन्धी ।

शारदीय—[सं० वि०] शरद ऋतु सम्बन्धी ।

शारदीय महापूजा—[सं० स्त्री०] क्वार में होने वाली नवरात्रि की दुर्गा पूजा ।

शारदोत्सव—[सं०पु०] शरद पूर्णिमा का उत्सव ।

शारिका—[सं० स्त्री] सारिका, मैना पक्षी ।

शारीर—[सं० वि०] शरीर संबन्धी ।

शारीरिक—[सं० वि०] शरीर संबंधी ।

शार्ङ्ग—[सं० पु०] विष्णु का धनुष, सींग का धनुष ।

शार्ङ्गधर—[सं० पु०] शार्ङ्गभृत, विष्णु भगवान् ।

शार्ङ्गपाणि—[सं० पु०] विष्णु ।

शार्दूल—[सं० पु०] बाघ, चीता, शेर, राक्षस, दोहे का एक भेद ।

शार्दूलविक्रीडित—[सं० पु०] १९ वर्णों का वर्णिक छन्द ।

शाल—[सं० पु०] एक विशाल वृक्ष, एक मछली ।

शालग्राम—[सं० पु०] विष्णु की एक प्रस्तर-मूर्ति ।

शाला—[सं०स्त्री०] गृह, घर आलय, सदन, उपजाति ।

शालि—[सं० पु०] पौंडा, गन्ना, बासमती चावल, एक प्रकार का धान ।

शालिवाहन—[सं० पु०] एक शक राजा जिसने शकाब्द नामक संवत् चलाया था ।

शालिहोत्र—[सं० पु०] अश्व, घोड़ा । अश्व-चिकित्सा या अश्व-विज्ञान का ग्रन्थ ।

शालिहोत्री—[सं०पु०] अश्व चिकित्सक, अश्व विज्ञानी ।

शालीन—[सं० वि०] विनम्र, शिष्ट, सभ्य, सुन्दर, लज्जावान्, सदृश ।

शाल्मलि—[सं० पु०] सेमल का वृक्ष, एक द्वीप, एक नरक ।

शावक—[सं० पु०] पशु का बच्चा ।

शाश्वत—[सं० वि०] चिरस्थायी, नाश रहित, नित्य ।

शाश्वती—[सं०स्त्री०] सदा रहनेवाली ।

शासक—[सं० पु०] शासन या राज्य करने वाला, हाकिम ।

शासन—[सं०पु०] आदेश, हुकूमत, आज्ञा, लिखित प्रतिज्ञा, शास्त्र,अधिकार-पत्र । दण्ड, इन्द्रिय-निग्रह ।

शासनीय—[सं० वि०] शासन करने योग्य, दण्ड के योग्य ।

शासित—[सं० वि०] जिस पर शासन किया जावे, जिसे दण्ड दिया गया हो ।

शास्ता—[सं० पु०] राजा, शासक, अध्यापक, पिता, गुरु ।

शास्त्र—[सं० पु०] ज्ञान-विज्ञान का साहित्य, धार्मिक या शिक्षा-ग्रन्थ जो मनुष्य के हित और अनुशासन के लिये रचे गये हों ।

शास्त्रकार—[सं० पु०] शास्त्र निर्माता, शास्त्र रचयिता ।

शास्त्रज्ञ—[सं० पु०] शास्त्र ज्ञाता, शास्त्र का तत्व जानने वाला, शास्त्रवेत्ता ।

शास्त्री—[सं० पु०] ज्ञानी, पण्डित, शास्त्रवेत्ता, शास्त्रज्ञ ।

शास्त्रीय—[सं० वि०] शास्त्र-सम्बन्धी ।

शास्त्रोक्त—[सं० वि०] प्रामाणिक, शास्त्रों में कहा हुआ ।

शिंशपा—[सं० स्त्री०] शीशम का वृक्ष, अशोक वृक्ष । सिंसपा ।

शिक्षक—[सं० पु०] अध्यापक, शिक्षा देने वाला, गुरु, उपदेश देने वाला ।

शिक्षण—[सं० पु०] अध्यापन, शिक्षा, पढ़ाई, उपदेश, तालीम ।

शिक्षा—[सं० स्त्री०] उपदेश, पढ़ाई, सीख, मंत्र, गुरु के समीप विद्याध्ययन, सीखने-सिखाने की क्रिया ।

शिक्षागुरु—[सं० पु०] अध्यापक, गुरु, विद्या सिखाने वाला ।

शिक्षार्थी—[सं० पु०] विद्याभ्यासी, विद्यार्थी ।

शिक्षालय—[सं० पु०] विद्यालय, पाठशाला ।

शिक्षा-विभाग—[सं० पु०] जनता के शिक्षार्थ सरकारी विभाग ।

शिक्षित—[सं० पु०] पंडित, विद्वान, उपदेश-प्राप्त, सीखा हुआ ।

शिखंड—[सं० पु०] मोर की पूँछ, शिखा, काकुल, चोटी ।

शिखंडिनी—[सं० स्त्री०] द्रुपदनरेश की एक कन्या, मयूरी ।

शिखंडी—[सं० पु०] राजा द्रुपद का पुत्र जो पूर्व जन्म में स्त्री था ।

शिख—[सं० स्त्री०] सीख, सिख, शिक्षा, चोटी, शिखा ।

शिखर—[सं० पु०] शिखा, चोटी, कँगूरा, पहाड़ का शृंग, कलश, गुंबद, एक अस्त्र, एक रत्न ।

शिखरन—[सं० स्त्री०] श्रीखंड, दही-दूध और शक्कर से बना खाने का पदार्थ ।

शिखरिणी—[सं० स्त्री०] श्रेष्ठ स्त्री, नारी-रत्न, रसाल, रोमावली, शिखरन ।

शिखा—[सं० स्त्री०] चोटी, शिखर, शाखा, डाली, नुकीला सिरा । दीपक की लौ ।

शिखिनी—[सं० स्त्री०] मयूरी,

मोरनी, मुर्गी ।

शिखी—[सं० वि०] चोटी या शिखा वाला । मयूर । मोर ।

शित—[सं० वि०] श्वेत, सफेद, सित ।

शिति—[सं० वि०] उज्ज्वल, श्वेत, कृष्ण, काला ।

शितिकंठ—[सं० पु०] महादेव, चातक, पपीहा, जल-काक ।

शिथिल—[सं० वि०] श्रांत, आलस्य-युक्त, ढीला, मंद, जो जकड़ा न हो ।

शिथिलता—[सं० स्त्री०] आलस्य, ढिलाई ढीलापन ।

शिर—[सं० पु०] कपाल, खोपड़ा, सिर, शीश, मस्तक, चोटी ।

शिरमौर—[सं० पु०] शिरोमणि, कुक्कुट, प्रधान सिरताज ।

शिरस्त्राण—[सं० पु०] लोहे की टोपी, कूँड़ी ।

शिरा—[सं० पु०] रक्तवाही नाड़ी, रक्त-नालिका, जलधारा ।

शिरीष—[सं० पु०] सिरस वृक्ष ।

शिरोधार्य—[सं० वि०] सादर स्वीकार करने योग्य । सिर पर धारण करने योग्य ।

शिरोमणि—[सं० पु०] श्रेष्ठ पुरुष, सिर का आभूषण, मुकुट, चूड़ामणि ।

शिरोरुह—[सं०पु०] केश, बाल ।

शिला—[सं० स्त्री०] पाषाण, प्रस्तर-खण्ड, पटिया, चट्टान, सिलौटी ।

शिलाजतु—[सं० पु०] शिलाजीत ।

शिलाजीत—[सं० पु०] शिलाओं का काला रस । एक पौष्टिक औषधि ।

शिलादित्य—[सं० पु०] हर्षवर्धन, एक प्राचीन राजा ।

शिलान्यास—[सं० पु०] किसी भवन या मन्दिर की नीव रखने का उत्सव । नीव स्थापन समारोह ।

शिलापट, शिलापट्ट—[सं० पु०] पत्थर की चट्टान ।

शिलालेख—[सं० पु०] पत्थर पर लिखा या खुदा हुआ लेख या लिपि ।

शिलावृष्टि—[सं० स्त्री०] ओलों की वर्षा ।

शिलाहरि—[सं० पु०] शालग्राम, विष्णु ।

शिलीमुख—[सं० पु०] भौंरा, भ्रमर, बाण ।

शिल्प—[सं० पु०] कला संबन्धी व्यवसाय, दस्तकारी, कारीगरी ।

शिल्पकला—[सं० स्त्री०] हाथ से चीजें बनाने की कला, कारीगरी, दस्तकारी ।

शिल्पकार—[सं० पु०] कलाकार, कारीगर, शिल्पी, दस्तकार ।

शिल्पजीवी—[सं० पु०] कारीगर, शिल्पी, दस्तकार राज, कलावंत ।

शिल्पविद्या—[सं० स्त्री०] शिल्प-कला, कलाकारी, कारीगरी, इंजिनियरिंग ।

शिल्पशास्त्र—[सं० पु०] शिल्प-विद्या का शास्त्र, कारीगरी की कला का ग्रन्थ ।

शिल्पी—[सं०पु०] कारीगर, शिल्पकार । कलाकार ।

शिव—[सं० पु०] कल्याण, मंगल, महादेव, रुद्र, काला, कुशल पार, जल, मोक्ष, ११ मात्राओं का एक मात्रिक छन्द ।

शिवता—[सं० स्त्री०] मुक्ति, मोक्ष, मंगल का भाव, शिवत्व ।

शिवनंदन—[सं० पु०] गणेश, स्वामीकार्तिक ।

शिवपुरी—[सं० स्त्री०] काशी ।

शिवरात्रि—[सं० स्त्री०] शिव चतु-र्दशी, फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी ।

शिवरानी—[सं० स्त्री०] शिव पत्नी, पार्वतीजी ।

शिवलोक—[सं० पु०] कैलाश ।

शिववाहन—[सं० पु०] बैल, नादिया ।

शिववृषभ—[सं० पु०] नादिया, नंदी, शिव की सवारी ।

शिवा—[सं० स्त्री०] पार्वती, दुर्गा ।

शिवालय—[सं० पु०] देव मंदिर, देवालय, शिवजी का मंदिर ।

शिवि—[सं० पु०] एक प्रसिद्ध दानी राजा ।

शिविका—[सं०स्त्री०] पालकी, डोली ।

शिविर—[सं० पु०] सेना की छावनी, पड़ाव, तंबू, खेमा ।

शिशिर—[सं० पु०] शीतकाल, माघ और फाल्गुन की ऋतु ।

शिशिरमयूख—[सं० पु०] चंद्रमा । शिशिररश्मि ।

शिशिरांत—[सं० पु०] वसंतारंभ, वसंत ऋतु का आगमन ।

शिशिरांशु—[सं० पु०] चंद्रमा, हिमांशु, शीतांशु ।

शिशु—[सं० पु०] छोटा बालक, बच्चा ।

शिशुता—[सं० स्त्री०] बचपन, शैशव ।

शिशुमार—[सं० पु०] कृष्ण, सूस नाम का जल-जंतु, नक्षत्र-मंडल ।

शिश्न—[सं० पु०] पुरुष का लिंग ।

शिष्ट—[सं० पु०] धर्मशील, धीर, गंभीर, सुशील, सभ्य, सदाचारी, श्रेष्ठ पुरुष ।

शिष्टता—[सं० स्त्री०] सुशीलता, धीरता, गम्भीरता, सौजन्य, श्रेष्ठता ।

शिष्टाचार—[सं० पु०] साधु व्यव-हार, सभ्याचरण, विनम्रता ।

शिष्य—[सं० पु०] चेला, विद्यार्थी, उपदेश या शिक्षा पाने योग्य ।

शिष्या—[सं० स्त्री०] शिक्षा पाने

योग्य स्त्री । ७ गुरु वर्णों का एक वर्णिक छन्द ।

शीकर-[सं० पु०] जल-कण, ओस-बिन्दु, फुहार ।

शीघ्र—[सं० क्रि० वि०] तुरन्त, जल्दी, तत्काल, तत्क्षण ।

शीघ्रगामी—[सं० वि०] वेगवान, जल्दी चलनेवाला ।

शीघ्रता-[सं० स्त्री०] जल्दी, वेगपूर्ण ।

शीत—[सं० वि०] ठंडा, शीतल, जाड़े की ऋतु, तुषार, ओस, संनिपात ।

शीतकटिबंध—[सं० पु०] पृथ्वी का वह भाग जहाँ सर्दी अधिक पड़ती है ।

शीतकर—[सं० पु०] चन्द्रमा ।

शीतकाल—[सं० पु०] अगहन और पूस का माह, जाड़े की ऋतु ।

शीतकिरण—[सं० पु०] चंद्रमा ।

शीतदीधित—[सं० पु०] चंद्रमा ।

शीतमयूख—[सं० पु०] चन्द्रमा, कपूर ।

शीतल—[सं० वि०] ठंडा, सर्द, प्रसन्न ।

शीतलता—[सं० स्त्री०] ठंढापन, सरदी ।

शीतला—[सं० स्त्री०] विस्फोट रोग, चेचक, माता, चेचक की एक देवी ।

शीतांशु—[सं० पु०] हिमांशु, चंद्रमा, हिमकर, शीतकर ।

शीतार्त्त—[सं० वि०] शीत से दुखी, जाड़े से कम्पित ।

शीतोष्ण—[सं० वि०] ठंढा और गरम, सुख-दुख ।

शीर्ण—[सं० पु०] फटा-पुराना, कृश, मुरझाया हुआ, जीर्ण, खण्डित ।

शीर्य—[सं० वि०] नाशवान, नश्वर, भंगुर ।

शीर्ष—[सं० पु०] मुंड, सिर, माथा, अग्रभाग, चोटी, सामना ।

शीर्षक—[सं० पु०] लेखादि का आशय व्यक्त करने वाले शब्द, सिरा, सिर, मस्तक, चोटी ।

शीर्षविन्दु—[सं० पु०] शिखर विन्दु, सिर के ऊपर की ओर सबसे ऊँचा स्थान ।

शील—[सं० पु०] आचरण, प्रवृत्ति, सदाचार, चरित्र, संकोच, स्वभाव ।

शीलवान—[सं० वि०] सुशील, अच्छे स्वभाव और आचरण वाला ।

शीश—[सं० पु०] शिर, माथा, शीर्ष, मुण्ड, सीसा ।

शुंग—[सं० पु०] मगध का एक क्षत्रिय राज वंश ।

शुंठि—[सं० स्त्री०] शुंठी, सोंठ ।

शुंड—[सं० पु०] हाथी का सूँड़ । सुंड ।

शुंडी—[सं० पु०] हाथी, कलवार, मदिरा बनाने वाला ।

शुंभ—[सं० पु०] एक दैत्य जो दुर्गा जी के हाथ से मारा गया ।

शुक—[सं० पु०] तोता, सुग्गा, कपड़ा, वस्त्र ।

शुकदेव—[सं० पु०] व्यासजी के पुत्र, एक ज्ञानी पुरुष ।

शुकाचार्य—[सं० पु०] शुकदेव जी ।

शुक्त—[सं० पु०] सिरका, काँजी, खट्टा, अप्रिय, कठोर, सुनसान ।

शुक्ति, शुक्ती—[सं० स्त्री०] सीपी, सीप, एक नेत्र रोग, अर्श रोग ।

शुक्तिका—[सं० स्त्री०] सीपी, सीप, एक नेत्र रोग ।

शुक्तिज—[सं० पु०] शुक्तिबीज, मोती, शुक्तिजात ।

शुक्र—[सं० पु०] एक दीप्तिमान ग्रह, शक्ति, वीर्य, सामर्थ्य, अग्नि । शुक्राचार्य, दैत्यगुरु ।

शुक्रांग—[सं० पु०] गोरा शरीर ।

शुक्राचार्य—[सं० पु०] दैत्यों के गुरु एक ऋषि ।

शुक्ल—[सं० वि०] उजला, शुभ्र, श्वेत, धवल, निर्दोष । ब्राह्मणों की एक पदवी, चान्द्र मास द्वितीय पक्ष ।

शुक्लपक्ष [सं० पु०] उजेला पाख, अमावस्या के बाद की प्रतिपदा से पूर्णिमा तक का पक्ष ।

शुक्लांबर—[सं० पु०] श्वेत वस्त्र ।

शुक्ला—[सं० स्त्री०] सरस्वती ।

शुक्लाभिसारिका—[सं० स्त्री०] श्वेत वस्त्र धारण कर चाँदनी रात में पिया मिलन को जाने वाली नायिका ।

शुचि—[सं० स्त्री०] स्वच्छता, पवित्रता, शुद्धता ।

शुचिकर्मा—[सं० वि०] पवित्र कार्य करने वाला, सदाचारी, कर्मनिष्ठ ।

शुची—[सं० वि०] पवित्र, शुद्ध ।

शुद्ध—[सं० वि०] उज्ज्वल, पवित्र, स्वच्छ, सही, ठीक, निर्दोष ।

शुद्धापह्नुति—[सं० स्त्री०] एक अर्थालंकार जिसमें उपमेय को असत्य दिखाकर या उसका निषेध कर उपमान की सत्यता ठहराई जावे ।

शुद्धि—[सं० स्त्री०] सफाई, स्वच्छता, पवित्रता, अशुद्ध को शुद्ध करने का संस्कार ।

शुद्धिपत्र—[सं० पु०] पुस्तक और पत्रिकाओं की अशुद्धियों का सूचक ।

शुद्धोदन—[सं० पु०] गौतम बुद्ध के पिता । शाक्य वंशीय राजा शुद्धोदन ।

शुनःशेफ—[सं० पु०] महर्षि ऋचीक के पुत्र । एक ऋषि ।

शुनासीर—[सं० पु०] इन्द्र ।

शुनि—[सं० पु०] स्वान, कुत्ता ।

शुभंकर—[सं० वि०] मंगल या कल्याणकारी, शुभकारी ।

शुभ—[सं० वि०] कल्याणकारी,

उत्तम, पवित्र, मंगलमय ।

शुभचिंतक—[सं० वि०] शुभेच्छु, हितैषी, कल्याण चाहने वाला ।

शुभदर्शन—[सं० वि०] मनोहर, सुंदर, मंगलमूर्त्ति ।

शुभेच्छु—[सं० वि०] शुभाकांक्षी, हितैषी, भला चाहने वाला ।

शुभ्र—[सं० वि०] उज्ज्वल, श्वेत, धवल ।

शुल्क—[सं० पु०] मूल्य, फीस, भाड़ा, महसूल, दहेज ।

शुश्रूषक—[सं० पु०] सेवा या परिचर्या करने वाला ।

शुश्रूषा—[सं० स्त्री०] सेवा, टहल, परिचर्या ।

शुषेण—[सं० पु०] बानरी सेना का एक वैद्य ।

शुष्क—[सं० वि०] नीरस, व्यर्थ, निर्मोही, सूखा, रुचिहीन ।

शूक—[सं० पु०] यव, जौ, सींकुर, एक कीड़ा, एक रोग ।

शूकर—[सं० पु०] वाराह, सुअर, विष्णु का तीसरा अवतार ।

शूकरक्षेत्र—[सं० पु०] सूकर खेत, सोरों ।

शूची—[सं० स्त्री०] सुई, सूजी ।

शूद्र—[सं० पु०] हरिजन, आर्यों के चार वर्णों में से चौथा ।

शूद्रक—[सं० पु०] शूद्र जाति का एक राजा, शंबूक, संस्कृत के मृच्छकटिक नाटक का निर्माता एक महाकवि ।

शूद्रद्युति—[सं० पु०] काला या नीला रंग ।

शूद्रा—[सं० स्त्री०] शूद्र जाति की स्त्री ।

शूना—[सं० स्त्री०] घरों के वे स्थान जहाँ नित्य अनजान में छोटे जीवों की हत्या हो जाती है ।

शून्य—[सं० पु०] विन्दु, बिन्दी । रिक्त स्थान । आकाश, अभाव । परमेश्वर । स्वर्ग । विष्णु ।

शून्यवाद—[सं० पु०] बौद्धमत का एक सिद्धांत । संसार को शून्य मानने का एक दार्शनिक विचार ।

शूर—[सं० पु०] योद्धा । सैनिक । वीर । सूर्य । सिंह । विष्णु । श्रीकृष्ण के पितामह ।

शूरण—[सं० पु०] सूरन । ज़मीकंद ।

शूरता—[सं० स्त्री०] वीरता, बहादुरी ।

शूरवीर—[सं० पु०] वीर, योद्धा ।

शूरसेन—[सं० पु०] मथुरा का प्राचीन नाम । प्राचीन मथुरा के राजा । श्रीकृष्ण के पितामह ।

शूर्प—[सं० पु०] अन्न और धानादि फटकने का सूप ।

शूर्पणखा—[सं० स्त्री०] लंकाधीश रावण की बहिन । शूर्पनखा ।

शूर्पारक—[सं० पु०] बम्बई प्रान्त के सोपरा स्थान का दूसरा नाम ।

शूल—[सं० पु०] त्रिशूल । भाला । बरछी । प्राण दण्ड देने की कीली । टीस । मृत्यु । पताका । सलाख ।

शूलधर—[सं० पु०] महादेवजी ।

शूलपाणि—[सं० पु०] महादेवजी ।

शूलभृत—[सं० पु०] शिवजी । शंकरजी ।

शूलहस्त—[सं० पु०] शिवजी, शंकरजी ।

शूलि—[सं० पु०] महादेवजी । सूली ।

शूलिक—[सं० पु०] फाँसी या सूली देनेवाला ।

शूली—[सं० पु०] शिवजी । एक नरक । शूल रोगी । शूली पर चढ़ने वाला । शूली देने वाला । सुख, दुःख । पीड़ा ।

शृंखल—[सं० पु०] बेड़ी, साँकल, जंज़ीर, मेखला, हथकड़ी ।

शृंखलता—[सं० स्त्री०] क्रमबद्ध होने का भाव । सिलसिले में ।

शृंखला—[सं० स्त्री०] मेखला, करधनी, जंज़ीर, साँकल । श्रेणी, क्रम । यथाक्रम । एक अर्थालंकार ।

शृंखलाबद्ध—[सं० वि०] क्रमबद्ध, सिलसिलेवार ।

शृंग—[सं० पु०] पशुओं के सिर के सींग, पर्वत की चोटी, ऋष्य शृंग, कमल । एक बाजा ।

शृंगवेरपुर—[सं० पु०] श्रीरामचन्द्र के प्रिय निषाद-राज गुह का प्राचीन नगर, आज का सिंगरौर ।

शृंगार—[सं० पु०] काव्य के नौ रसों में से एक प्रमुख रस, रसराज । सजावट, किसी वस्तु को आकर्षक बनाने वाला साधन । सिंगार । सृजन ।

शृंगार-हाट [सं० स्त्री०] वह बाजार जहाँ वेश्याएँ बैठती हैं ।

शृंगारिक—[सं० वि०] शृंगार सम्बन्धी ।

शृंगारिणी—[सं० स्त्री०] स्रग्विणी छन्द ।

शृंगारिया—[सं० पु०] बहुरूपिया, सिंगारिया, वह पुरुष जो देवमूर्त्तियों का शृंगार करता हो ।

शृंगि—[सं० पु०] सिंगी मछली, सींगवाला ।

शृंगी—[सं० पु०] सींगवाला पशु, कनफटों के बजाने का एक बाजा, एक ऋषि, महादेवजी, वृक्ष, पहाड़, हाथी । ऋषभक नामक एक औषधि ।

शृंगीगिरि—[सं० पु०] एक प्राचीन पर्वत जहाँ शृंगीऋषि तपस्या करते थे ।

शृग, शृगाल—[सं० पु०] गीदड़, सियार ।

शृष्टि—[सं० पु०] कंस का एक भाई ।

शेखर—[सं० पु०] किरीट, माथा, सिर, मुकुट, सिरा, चोटी ।

शेवाल—[सं॰ पु॰] पानी की घास, शैवाल।

शेष—[सं॰ पु॰] शेषनाग जिसके फनों पर धरा धरी है, सर्पराज, बची वस्तु, बाकी, अंत को प्राप्त। अध्याहार।

शेषधर, शेषभृत—[सं॰पु॰] शिवजी। महादेव।

शेषनाग—[सं॰ पु॰] सर्पराज, सहस्र फनों पर धरती धारण करने वाला नागराज।

शेषवट—[सं॰ पु॰] अनुमान के तीन भेदों में से दूसरा, जहाँ कार्य के देखने से कारण का ज्ञान हो।

शेषशायी—[सं॰ पु॰] विष्णु।

शेषांश—[सं॰ पु॰] अन्तिम या अवशिष्ट भाग, बचा हुआ भाग।

शेषाचल—[सं॰ पु॰] एक पर्वत।

शेषावस्था—[सं॰ स्त्री॰] बुढ़ापा, वृद्धावस्था। अन्त की दशा।

शेषोक्त—[सं॰ वि॰] अन्तिम कथन।

शैत्य—[सं॰ पु॰] सर्दी, शीतलता।

शैथिल्य—[सं॰ पु॰] ढीलापन, शिथिलता। सुस्ती।

शैल—[सं॰ पु॰] पर्वत, चट्टान, शिला, पहाड़।

शैलकुमारी—[सं॰स्त्री॰] पार्वतीजी, शैलकिशोरी।

शैलगंगा—[सं॰ स्त्री॰] गोवर्द्धन पर्वत से निकलने वाली एक नदी।

शैलजा—[सं॰स्त्री॰] दुर्गाजी, पार्वतीजी, शैलतनया।

शैलतटी—[सं॰ स्त्री॰] पहाड़ की तराई।

शैलधर, शैलभृत—[सं॰पु॰] गिरिधारी, श्रीकृष्ण।

शैलनन्दिनी—[सं॰ स्त्री॰] पार्वतीजी, शैलात्मजा।

शैलपति, शैलराज—[सं॰ पु॰] शैलेन्द्र, शैलनाथ, हिमालय पर्वत।

शैलपुत्री—[सं॰ स्त्री॰] पार्वतीजी, शैलतनुजा।

शैलसुता—[सं॰ स्त्री॰] पार्वतीजी। शैलकन्या।

शैलाट—[सं॰ पु॰] सिंह, भील, किरात।

शैली—[सं॰ स्त्री॰] प्रणाली, रीति, ढंग, वाक्यरचना की रीति।

शैलूष—[सं॰ पु॰] बहुरूपिया, नट, छली, नाटक खेलने वाला, अभिनेता।

शैलेन्द्र—[सं॰ पु॰] हिमालय पर्वत।

शैलेय—[सं॰ वि॰] पहाड़ी, पथरीला, शिलाजीत, सिंह, सेंधानमक।

शैलोदक—[सं॰ पु॰] पहाड़ी जल।

शैव—[सं॰ वि॰] शिव सम्बन्धी, शिव का भक्त, धतूरा, पाशुपत अस्त्र।

शैव्या—[सं॰ स्त्री॰] सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र की रानी। रोहिताश्व की जननी।

शैशव—[सं॰वि॰] बाल्यावस्था सम्बन्धी, शिशुता, बच्चों का, बचपन।

शैशुनाग—[सं॰ पु॰] प्राचीन मगध नरेश शिशुनाग का वंशज।

शोक—[सं॰ पु॰] दुःख, संताप, किसी प्रिय और अमूल्य वस्तु के अभाव में अनुभव होने वाला कष्ट।

शोकहार—[सं॰ पु॰] तीन मात्राओं का एक मात्रिक छन्द।

शोकाकुल—[सं॰ वि॰] शोकातुर, शोकपीड़ित। दुःख से व्याकुल।

शोकार्त्त—[सं॰ वि॰] शोकातुर, शोकपीड़ित।

शोकापह—[सं॰ वि॰] शोकनाशक, दुःख का अन्त करने वाला।

शोच—[सं॰ पु॰] शोक, चिन्ता, शोक।

शोचनीय—[सं॰ वि॰] दुःखजनक, चिंतनीय।

शोण—[सं॰ पु॰] लाली, अरुणाई, अग्नि, रक्त, सोन नदी।

शोणित—[सं॰ पु॰] रक्त, रुधिर, लोहू। [वि॰] लाल, रक्त वर्ण का।

शोथ—[सं॰ पु॰] सूजन, वरम।

शोध—[सं॰पु॰] शुद्धि-संस्कार, अन्वेषण, खोज, परीक्षा।

शोधन—[सं॰ पु॰] सुधारना, शुद्ध करना, खोज करना, विरेचन, ऋण चुकाना, प्रायश्चित्त करना।

शोभन—[सं॰ वि॰] सुन्दर, मनोहर, श्रेष्ठ, शुभ, छविमान।

शोभना—[सं॰ स्त्री॰] हरिद्रा, हल्दी, सुन्दरी, रूपवती स्त्री।

शोभा—[सं॰ स्त्री॰] सुन्दरता, आभा, दीप्ति, सजावट।

शोभायमान—[सं॰ वि॰] छविमान, सुन्दर आभापूर्ण।

शोभित—[सं॰ वि॰] सुन्दर, सजा हुआ, दीप्तिमान।

शोष—[सं॰ पु॰] शरीर का क्षीण होना, सूखना। बच्चों का सूखा रोग, यक्ष्मा रोग का एक भेद।

शोषक—[सं॰ पु॰] सुखाने वाला, क्षीण करने वाला।

शोषण—[सं॰ पु॰] सोखना, सुखाना, क्षीण करना, नाश करना, कामदेव का एक बाण।

शौंडिक—[सं॰ पु॰] कलवार जाति।

शौक्तिक—[सं॰ पु॰] शौक्तिकेय, मोती।

शौच—[सं॰ पु॰] स्वच्छता से रहना। पावनता। प्रातःकाल के नित्यकर्म।

शौत—[सं॰ स्त्री॰] सपत्नी।

शौध—[सं॰ वि॰] पवित्र, निर्मल, शुद्ध।

शौनक—[सं॰ पु॰] एक पुराने ऋषि।

शौरसेन—[सं॰ पु॰] व्रज-मंडल का पुराना नाम।

शौरसेनी—[सं० स्त्री०] एक प्राचीन अपभ्रंश भाषा जिससे व्रज-भाषा का उदय हुआ।

शौरि—[सं० पु०] श्रीकृष्णजी।

शौर्य—[सं० पु०] वीरता, पराक्रम, शूरता, बहादुरी।

श्मशान—[सं० पु०] मरघट, मसान।

श्मशानपति—[सं० पु०] शिवजी। चांडाल, डोम।

श्मश्रु—[सं० पु०] दाढ़ी। मूँछ।

श्याम—[सं० पु०] कन्नौज से पश्चिम का एक प्राचीन देश। मेघ। काला। श्याम देश। श्रीकृष्ण।

श्यामला—[सं० वि०] काला, साँवला।

श्यामसुन्दर [सं० पु०] श्रीकृष्णजी। एक वृक्ष।

श्यामा—[सं० स्त्री०] मृदुल स्वरवाला एक काला पक्षी। सोलह वर्ष की स्त्री। तुलसी। एक प्रकार की काली गाय। कोकिल। रात। स्त्री। यमुना। राधा। एक गोपी।

श्यामाक—[सं० पु०] सावाँ नामक एक प्रकार का अन्न।

श्याल—[सं० पु०] पत्नी का भाई। साला, बहनोई। श्यालक, श्याला।

श्येन—[सं० पु०] सिकरा या बाज पक्षी। दोहे का चौथा भेद। [स्त्री०] श्येनिका।

श्येनी—[सं० स्त्री०] श्येनिका। बाज स्त्री। पक्षियों की माता तथा कश्यप की एक कन्या।

श्रद्धा—[सं० स्त्री०] आस्था। भक्ति। सम्मान का भाव। वेदादि ग्रन्थों में विश्वास। बड़ों के प्रति पूज्य भाव।

श्रद्धान्—[सं० पु०] श्रद्धा।

श्रद्धालु—[सं० वि०] श्रद्धावान, श्रद्धायुक्त।

श्रद्धास्पद—[सं० वि०] पूजनीय, आदरणीय, श्रद्धेय।

श्रद्धेय—[सं० वि०] श्रद्धास्पद, पूज्य।

श्रम—[सं० पु०] परिश्रम, मेहनत, मशक्कत, क्लांति, थकावट, स्वेद, दौड़-धूप, व्यायाम। एक संचारी भाव।

श्रमकण—[सं० पु०] पसीने की बूँद, श्रमसीकर।

श्रमजल—[सं० पु०] श्रम-सलिल, पसीना।

श्रमजित—[सं० वि०] अति परिश्रम से भी न थकनेवाला।

श्रमजीवी—[सं० वि०] परिश्रम द्वारा जीवन निर्वाह करनेवाला।

श्रमण—[सं० पु०] बौद्धमत का संन्यासी, मुनि, श्रमिक।

श्रमविंदु—[सं० पु०] पसीने की बूँद।

श्रमवारि—[सं० पु०] स्वेद, पसीना।

श्रमसीकर—[सं० पु०] पसीने की बूँद।

श्रमार्जित—[सं० पु०] श्रमोपार्जित, परिश्रम से प्राप्त।

श्रमित—[सं० वि०] परिश्रम से थका हुआ। शिथिल।

श्रमी—[सं० पु०] श्रमजीवी, मजदूर, मेहनती।

श्रवण—[सं० पु०] कान, कर्ण, सुनना, शब्द का अनुभव करनेवाली इन्द्रिय।

श्रवना—[सं० क्रि०] चूना, टपकना, रिसना, बहना।

श्रव्य—[सं० वि०] सुनने योग्य, वह काव्य जो केवल सुना जा सके।

श्रांत—[सं० वि०] शिथिल, क्लान्त, थका हुआ, जितेन्द्रिय, दुखी।

श्रांति—[सं० स्त्री०] थकावट, शिथिलता, क्लांति।

श्राद्ध—[सं० पु०] पितरों के लिये शास्त्रानुकूल कर्म। श्रद्धा, भक्ति से किया हुआ कार्य।

श्राद्धपक्ष—[सं० पु०] पितृ-पक्ष।

श्राप—[सं० पु०] कोसना, अहित कामना करना, धिक्कारना।

श्रावक—[सं० पु०] श्रावग, बौद्ध मत का साधु या संन्यासी, नास्तिक जैनी।

श्रावगी—[सं० पु०] जैनी, सरावगी।

श्रावण—[सं० पु०] सावन का मास।

श्रावणी—[सं० स्त्री०] सावन मास की पूर्णिमा, रक्षाबन्धन पर्व।

श्रावस्थी—[सं० स्त्री०] उत्तर कोशल में गंगातट की एक प्राचीन नगरी।

श्राव्य—[सं० वि०] सुनने के योग्य।

श्रिय—[सं० स्त्री०] शोभा, आभा, मंगल, कल्याण।

श्री—[सं० स्त्री०] लक्ष्मी, रमा, कमला, विष्णु-पत्नी, सरस्वती, गिरा, श्वेत चंदन, धर्म, अर्थ, काम। वैभव, कीर्ति, शोभा, स्त्रियों का सुहाग-विन्दु, एक आदर सूचक शब्द। पद्म।

श्रीकंठ—[सं० पु०] शिवजी, शंभु।

श्रीकांत—[सं० पु०] विष्णु।

श्रीकृष्ण—[सं० पु०] विष्णु-अवतार भगवान् श्री कृष्णचन्द्र।

श्रीक्षेत्र—[सं० पु०] जगन्नाथपुरी।

श्रीखंड—[सं० पु०] सफेद चन्दन, शिखरण, हरिचन्दन।

श्रीगिरि—[सं० पु०] मलयाचल।

श्रीदाम—[सं० पु०] सुदामा, श्री कृष्ण के एक बाल सखा।

श्रीधर—[सं० पु०] संस्कृत के एक प्रसिद्ध आचार्य, विष्णु।

श्रीनाथ—[सं० पु०] विष्णु।

श्रीधाम—[सं० पु०] श्रीनिकेत, लक्ष्मी-धाम, स्वर्ग, सोना, कमल, विष्णु।

श्रीनिवास—[सं० पु०] श्रीनिलय, विष्णु, वैकुंठ, कमल।

श्रीपंचमी—[सं० स्त्री०] बसन्त-

पंचमी ।

श्रीपति—[सं० पु०] विष्णु ।

श्रीपाद—[सं० पु०] श्रेष्ठ, पूज्य ।

श्रीफल—[सं० पु०] धन, संपत्ति, नारियल, बेल, आँवला, खिरनी ।

श्रीमंत—[सं० वि०] धनी, श्रीमान् ।

श्रीमत्—[सं० वि०] कान्तिवान् । सुंदर । धनी । शोभावान ।

श्रीमती—[सं० स्त्री०] श्रीमान् का स्त्रीलिंग । लक्ष्मी । शोभामयी

श्रीमान्—[सं० पु०] धनी, विद्वान् और पूज्य जनों के लिए आदरसूचक संबोधन ।

श्रीमाल—[सं० स्त्री०] गले का एक गहना । कंठश्री ।

श्रीमुख—[सं० पु०] शोभायुक्त । पूज्य जनों के मुख के लिए आदरसूचक शब्द ।

श्रीयुक्त—[सं० वि०] श्रीमान् । एक आदरपूर्ण विशेषण । शोभावान । धनवान । कांतिमान ।

श्रीयुत—[सं० वि०] श्रीयुक्त । आदरसूचक विशेषण । शोभावान ।

श्रीरंग, श्रीरमण—[सं० पु०] विष्णु ।

श्रीवंत—[सं० वि०] शोभावान । श्रीमान् । धनी । सुंदर ।

श्रीवत्स—[सं० पु०] विष्णु की छाती पर भृगु-चरण-चिह्न । विष्णु ।

श्रीवास, श्रीवासक—[सं० पु०] चंदन, कमल, देवदारु वृक्ष, पंकज । शिव । विष्णु ।

श्रीवास्तव—[हि० पु०] कायस्थों की एक ऊँची जाति ।

श्रीहत—[सं० वि०] निस्तेज, निष्प्रभ, शोभाहीन ।

श्रीहर्ष—[सं० पु०] कान्यकुब्ज देश के प्रसिद्ध सम्राट हर्षवर्द्धन, संस्कृत के प्रसिद्ध महाकवि ।

श्रुत—[सं० वि०] प्रसिद्ध, जो परम्परा से सुना गया हो ।

श्रुतकीर्ति—[सं० स्त्री०] शत्रुघ्न की पत्नी । राजा जनक के भाई की कन्या ।

श्रुतपूर्व—[सं० वि०] पहले का सुना या जाना हुआ ।

श्रुति—[सं० स्त्री०] कान, कर्णेन्द्रिय । सुनी बात, निगम । ज्ञान, विद्या । नाम, शब्द, ध्वनि । जिसे सदा से सुनते चले आते हों । अनुप्रास अलंकार का एक भेद । त्रिभुज में समकोण के सामने की भुजा ।

श्रुतिकटु—[सं० पु०] जो सुनने में अप्रिय लगे । काव्य में कठोर और कर्कश वर्णों का प्रयोग ।

श्रुतिपथ—[सं० पु०] कर्ण-मार्ग, सन्मार्ग. वेदानुकूल, वेद-मार्ग ।

श्रुतिपुट—[सं० पु०] कान के पर्दे, कर्णरंध्र ।

श्रुतिमार्ग—[सं० पु०] कान की राह वेद-पथ, वेद-विहित रीति ।

श्रुतिसेतु—[सं० पु०] वेद-पथ, ज्ञान-मार्ग ।

श्रुत्यनुप्रास—[सं० पु०] अनुप्रास अलंकार का एक भेद ।

श्रुवा—[सं० पु०] चमचा, करछी, हवनकुण्ड में घी डालने का चम्मच ।

श्रेणि, श्रेणी—[सं० स्त्री०] शृंखला, क्रम, पंक्ति, समूह, अवली, मण्डली, कक्षा, सीढ़ी ।

श्रेणीबद्ध—[सं० वि०] क्रम बाँधकर, शृंखलाबद्ध, पंक्ति के रूप में ।

श्रेय—[सं० वि०] शुभ, कल्याणकारी, उत्तम, श्रेष्ठ । [स्त्री०] श्रेयसी, [पु०] मंगल, पुण्य, सदाचार, मोक्ष ।

श्रेयस्कर—[सं० वि०] कल्याणकारी, मंगलदायक ।

श्रेष्ठ—[सं० वि०] सर्वोत्तम, उत्कृष्ट, मुख्य, पूज्य, सेठ, सब से अच्छा ।

श्रेष्ठता—[सं० स्त्री०] उत्कृष्टता, बड़ाई, उत्तमता ।

श्रेष्ठी—[सं० पु०] सेठ, महाजन, व्यापारियों का मुखिया ।

श्रोण, श्रोणित—[सं० पु०] रक्त, अरुणाई, लाल रंग ।

श्रोणि, श्रोणी—[सं० स्त्री०] कटि-प्रदेश, नितंब ।

श्रोत—[सं० पु०] कर्ण, कान, जलाशय, सोता ।

श्रोतव्य—[सं० वि०] सदुपदेश, सुनने योग्य, श्रवणीय ।

श्रोता—[सं० पु०] सुनने वाला ।

श्रोत्रिय—[सं० पु०] ब्राह्मणों का एक भेद, वेद-वेदांग का पूर्ण ज्ञाता ।

श्रौत—[सं० वि०] श्रुति या वेद संबंधी, यज्ञ सम्बन्धी, वेदानुकूल ।

श्रौतसूत्र—[सं० पु०] कल्प ग्रन्थ का वह विभाग जिसमें यज्ञों का विधान कहा गया है ।

श्लथ—[सं० वि०] मंद, दुर्बल, शिथिल, ढीला, अशक्त ।

श्लाघनीय—[सं० वि०] प्रशंसा के योग्य, श्रेष्ठ, उत्तम ।

श्लाघा—[सं० स्त्री०] बड़ाई, स्तुति, प्रशंसा, चाटुकारी ।

श्लाघ्य—[सं० वि०] प्रशंसनीय, स्तुति के योग्य ।

श्लिष्ट—[सं० वि०] मिश्रित, जुड़ा हुआ, दो या अधिक अर्थों सहित । श्लेषालंकार युक्त ।

श्लीपद—[सं० पु०] फीलपाँव रोग, पैर सूज जाने का रोग ।

श्लील—[सं० वि०] श्रेष्ठ, शिष्ट, सुंदर ।

श्लेष—[सं० पु०] जुड़ना, मिलना, आलिंगन, एक अलंकार जिसमें एक

शब्द के दो या दो से अधिक अर्थ निकलें ।

श्लेषक—[सं० वि०] जोड़ने वाला । [पु०] मिलन, आलिंगन, श्लेषालंकार ।

श्लेषण—[सं० पु०] मिलना, जोड़ना, आलिंगन । [वि०] श्लेषणीय, श्लेषित, श्लेषी, श्लिष्ट ।

श्लेषोपमा—[सं० पु०] एक अर्थालंकार जिसमें आने वाले श्लिष्ट शब्दों का अर्थ उपमान और उपमेय दोनों पर घटित हो ।

श्लेष्मा—[सं० पु०] शरीर की तीन धातुओं में से एक, कफ़ ।

श्लोक—[सं० पु०] शब्द, स्तुति, पुकार, आह्वान, संस्कृत का कोई पद्य ।

श्वन्—[सं० पु०] श्वान, कुत्ता ।

श्वपच—[सं० पु०] चांडाल, कुत्ते का मांस खाने वाला, डोम, श्वपाक ।

श्वफल्क—[सं० पु०] अक्रूर के पिता, वृष्णि यादव के पुत्र ।

श्वशुर—[सं० पु०] ससुर ।

श्वश्रू—[सं० स्त्री०] सास, पति या पत्नी की माता ।

श्वसन—[सं० पु०] दमा रोग, साँस लेना । वायु ।

श्वान—[सं० पु०] कुत्ता, कूकुर, दोहे का २१ वाँ तथा छप्पय का १५ वाँ भेद ।

श्वापद—[सं० पु०] हिंसक जन्तु ।

श्वास—[सं० पु०] साँस, उसाँस, हाँफना, दमा रोग । प्राण वायु ।

श्वासोच्छ्वास—[सं० पु०] वेग के साथ सांस लेने और छोड़ने की क्रिया ।

श्वित्र—[सं० पु०] सफेद कोढ़, श्वेत कुष्ठ ।

श्वेत—[सं० वि०] स्वच्छ, उजला, सफेद, गोरा, निष्कलंक ।

श्वेतकेतु—[सं०पु०] केतु ग्रह, उद्दालक मुनि के पुत्र ।

श्वेतगज—[सं० पु०] गजेन्द्र, ऐरावत हाथी, सुरेन्द्र ।

श्वेतद्वीप—[सं० पु०] विष्णु का निवास स्थान, एक उज्ज्वल द्वीप ।

श्वेतप्रदर—[सं० पु०] स्त्रियों का प्रदर रोग जिसमें मूत्र के साथ सफेद धातु जाती है ।

श्वेतवाराह—[सं०पु०] वाराह भगवान की मूर्त्ति, एक शिवावतार, ब्रह्मा के मास का एक कल्प या प्रथम दिन ।

श्वेतांबर—[सं० पु०] जैनियों का एक संप्रदाय जिसमें श्वेत वस्त्र धारण किये जाते हैं ।

श्वेतांशु—[सं० पु०] चन्द्रमा ।

श्वेता—[सं० स्त्री०] अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक । शंखिनी, चीनी, सफेद दूब ।

श्वेताश्वतर—[सं० स्त्री०] कृष्ण यजुर्वेद का एक उपनिषद् ।

श्वेतिक—[सं० पु०] उद्दालक मुनि के पुत्र, एक ऋषि ।

श्वेतिका—[सं० स्त्री०] सौंफ ।

—:०:—

ष

षंड—[सं० पु०] नपुंसक । क्लीव । शिव का एक नाम ।

षंडत्व—[सं० पु०] नपुंसकता ।

षंडामर्क—[सं० पु०] शुक्राचार्य के पुत्र और प्रह्लाद के गुरु का नाम ।

षट्—[सं० पु०] छः की संख्या ।

षट्क—[सं० पु०] छः की संख्या ।

षट्कर्म—[सं० पु०] यजन, याजन, अध्ययन, अध्यापन, दान देना, दान लेना—ब्राह्मणों के छः कर्म ।

षट्कोण—[सं० वि०] छः पहल, छः कोनों का एक क्षेत्र ।

षट्चक्र—[सं० पु०] आधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, अनाहत, विशुद्धि, प्रज्ञा—शरीर के भीतर कुण्डलिनी से ऊपर के छः चक्र ।

षट्चरण—[सं० पु०] भ्रमर, भौंरा ।

षट्तिला—[सं० स्त्री०] माघ कृष्ण एकादशी ।

षट्पद—[सं० पु०] भ्रमर, भौंरा ।

षट्पदी—[सं० स्त्री०] भौंरी, भ्रमरी ।

षट्प्रयोग—[सं० पु०] मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण स्तंभन, शान्ति—तान्त्रिकों के छः प्रयोग ।

षट्मुख—[सं० पु०] षण्मुख, देवसेनापति, शिव-सुत, षडानन, कार्त्तिकेय ।

षट्रस—[सं० पु०] सृष्टि के छः रस—खट्टा, खारा, कड़ुवा, कसैला, मीठा, तीखा ।

षट्राग—[सं० पु०] संगीत विद्या के

छः राग, बखेड़ा।

षट्रिपु—[सं० पु०] काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर—आत्मा के छः शत्रु।

षटवांग—[सं० पु०] एक राजर्षि जिन्होंने दो घड़ी की साधना से मुक्ति प्राप्त की।

षट्शास्त्र—[सं० पु०] न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा, वेदान्त—छः दर्शन शास्त्र।

षडंग—[सं० पु०] वेद के छः अंग, शरीर के छः अंग।

षडंघ्रि—[सं० पु०] भ्रमर।

षडानन—[सं० पु०] कार्त्तिकेय।

षडूर्मि—[सं० स्त्री०] छः प्रकार की तरंगें—भूख, प्यास, शोक, मोह, जरा, मृत्यु।

षड्ऋतु—[सं० पु०] वर्ष की छः ऋतुएँ।

षड्गुण—[सं० पु०] राजनीति के छः गुण—संधि, विग्रह, मान, आसन, द्वैधीभाव, संश्रय।

षड्ज—[सं० पु०] सात स्वरों में से प्रथम स्वर।

षड्दर्शन—[सं० पु०] ६ भारतीय शास्त्र, षट्शास्त्र।

षड्दर्शनी—[सं० पु०] ज्ञानी, दार्शनिक।

षड्यंत्र—[सं० पु०] भीतरी चाल, छद्म-योजना, कपट-नीति।

षड्रस-[सं० पु०] छः प्रकार का स्वाद या रस।

षड्रिपु—[सं० पु०] जीव या आत्मा के छः मनोविकार, षट्रिपु।

षड्वदन—[सं० पु०] देव-सेनानी, कार्त्तिकेय। षडानन।

षड्वर्ग—[सं० पु०] क्रोधादि छः शत्रु।

षड्विधि—[सं० पु०] छः रीतियाँ।

षष्ठ—[सं० वि०] छठा।

षष्ठी—[सं० स्त्री०] किसी पक्ष की छठी तिथि।

षाडव—[सं० पु०] वह राग जिसमें केवल छः स्वर ही लगें।

षाण्मातुर—[सं० पु०] कार्त्तिकेय, सेनानी।

षाण्मासिक—[सं० वि०] छमाही।

षोडश—[सं० पु०] सोलह की संख्या।

षोडशकला—[सं० स्त्री०] चन्द्रमा की १६ कलायें।

षोडशपूजन—[सं० पु०] सोलह अंगों सहित पूजन।

षोडशभुजा—[सं० स्त्री०] दुर्गा देवी।

षोडशमात्रिका—[सं० स्त्री०] एक प्रकार की सोलह देवियाँ।

षोडशशृंगार—[सं० पु०] शृंगार के सोलह प्रकार–उबटन, स्नान, अंजन, बेंदी आदि।

षोडशी—[सं० स्त्री०] सोलह वर्ष की स्त्री। एक महाविद्या।

षोडशोपचार—[सं० पु०] पूजन के सोलह अंग।

षोडशसंस्कार—[सं० पु०] गर्भाधान से मृतक संस्कार तक के कुल संस्कार।

ष्ठीवन—[सं० पु०] थूकना।

—:०:—

स

स—संस्कृत अथवा हिन्दी की वर्णमाला का ऊष्म संज्ञक वर्णों में तीसरा वर्ण। [पु०] ईश्वर, जीवात्मा, वायु, ज्ञान, चन्द्रमा, पक्षी। किसी शब्द के आदि में लगाने से सहित, साथ आदि का अर्थ प्रकट करता है, यथा—सबन्धु, सगोत्र इत्यादि में।

सं—[अव्य०] यह शब्दों के आगे जोड़ने पर उत्कृष्टता, समानता आदि अर्थ प्रकट करता है।

संयत—[वि०] व्यवस्थित, मर्यादित, नियम में बँधा हुआ, उचित सीमा के भीतर रोका हुआ, वशीभूत। [पु०] इन्द्रिय निग्रही, संयमी, तपस्वी, कैदी।

संयतात्मा—[पु०] जितेन्द्रिय, आत्म-निग्रही।

संयत—[वि०] सावधान, तत्पर, उद्यत।

संयन्ता—[पु०] रोकने वाला, नियन्त्रण में चलाने वाला।

संयम—[पु०] रोक, निग्रह, निरोध, मनोवृत्तियों का अवरोध, तपस्या, बन्धन।

संयमित—[वि०] रोका हुआ, मर्यादित, नियमबद्ध। नियन्त्रित, संयत। बद्ध, एकचित्त।

संयमी—[पु०] इन्द्रियनिग्रही, जितेन्द्रिय, मन को वश में रखने वाला, तपस्वी, एक मुनि।

संयाव—[पु०] हलुआ।

संयुक्त—[वि०] मिला हुआ, जुड़ा

हुआ, सम्बद्ध, युक्त मिश्रित, सहित, साथ।

संयुक्ता—[स्त्री०] महाराज पृथ्वीराज की पत्नी, जयचन्द्र की पुत्री। छन्दः-शास्त्र में एक छन्द।

संयुग—[पु०] युद्ध, लड़ाई, संग्राम। मेल, संयोग।

संयुत—[वि०] युक्त, सहित, साथ, जुड़ा हुआ, मिला हुआ।

संयोग—[पु०] मेल, मिलन, सम्बन्ध, जोड़, समागम, मेलन, मिलान, मिश्रण, मिलावट। अवसर, इत्तफ़ाक।

संयोगी—[पु०] संयोग वाला, संयोग-युक्त, संयोग करने वाला, जोड़ने वाला, संयोजक। वह व्यक्ति जो अपनी पत्नी के साथ हो, वियोगी का उलटा।

संयोजक—[पु०] जोड़ने वाला, मिलाने वाला, इकट्ठा करने वाला।

संयोजन—[पु०] मिलाना, जोड़ना, इकट्ठा करना।

संयोजना—[स्त्री०] मिलाना, एकत्र करना, व्यवस्था करना, जुहाना।

संयोजित—[वि०] मिलाया हुआ, मिलाया गया, दूसरे के साथ जोड़ा गया।

संरक्षक—[पु०] देख-भाल करने वाला, रक्षा करने वाला, पालन-पोषण करने वाला।

संरक्षण—[पु०] रक्षा करना, देख-भाल रखना, अधिकार, स्वत्व।

संरक्षित—[वि०] सुरक्षित, हिफ़ाज़त से रक्खा हुआ।

संरम्भ—[पु०] क्रोध, गुस्सा, कोप, आक्रोश, आवेग, उत्साह, निन्दा।

संराधन—[पु०] सेवा करना, भली-भाँति सोचना, चिन्तन करना।

संरूढ़—[वि०] उगा हुआ, जिसका अंकुर निकल आया हो, पैदा हुआ, प्रौढ़, परिपूर्ण।

संरोध—[पु०] रोकना, फेंकना।

संलग्न—[वि०] मिला हुआ, लगा हुआ, निमग्न।

संलाप—[पु०] वार्तालाप, बातचीत, प्रेमपूर्वक सम्भाषण, एकान्त सम्भाषण, संवाद, कथोपकथन।

संवत्—[पु०] राजा विक्रमादित्य के समय से चला वर्ष गणना का क्रम, वर्ष, साल, अब्द, वत्सर।

संवत्सर—[पु०] वर्ष, साल, अब्द, वत्सर।

संवर—[पु०] जल। बौद्धों का एक व्रत। एक दैत्य का नाम। मत्स्य-विशेष।

संवरण—[पु०] मनोवृत्ति को दबाना, इच्छाओं का दमन करना, मन को रोकना। मनोनिग्रह। चुनना, पसन्द करना। ढकना, छिपाना, आच्छादित करना।

संवर्त—[पु०] मेघों का राजा। धर्म-शास्त्र प्रणेता एक मुनि। प्रलयकाल।

संवर्तक—[पु०] बलदेव, हलधर। बलदेवजी का हल। वाडवानल, एक कथित अग्नि जो समुद्र में रहती बताई जाती है।

संवर्तिका—[स्त्री०] दीपक की लौ, दीप-शिखा। कमल-पुष्प की केसर के समीप की पंखड़ी। नवीन पत्ता।

संवर्द्धक—[पु०] बढ़ने वाला, वृद्धि-कारक, सम्मान या इज्जत करने वाला।

संवर्द्धन—[पु०] बढ़ाना, वृद्धि करना, पालन पोषण।

संवर्द्धित—[वि०] बढ़ाया हुआ।

संवलित—[वि०] मिला हुआ, मिश्रित, मिलित, एकत्रित।

संवाद—[पु०] समाचार, सन्देश, वार्तालाप, प्रसंग।

संवाददाता—[पु०] समाचार देने वाला, ख़बर पहुँचाने या भेजने वाला।

सँवारना—[क्रि०] सुधारना, ठीक करना, व्यवस्थित करना, सम्हालना, सजाना, अलंकृत करना। कार्य ठीक करना।

संवास—[पु०] घर, गृह। नगर से बाहर खेलने योग्य खुला स्थान।

संवाहक—[वि०] अंग विमर्दक, हाथ-पाँव दबाने वाला, पैर चप्पी करने वाला। मुट्ठी भरने वाला, शरीर मलने वाला। ढोने वाला, ले जाने वाला।

संवहन—[पु०] अंग मर्दन, पैर चप्पी करना, मुट्ठी भरना, हाथ-पैर दबाना। ढोना, ले जाना, चलाना, पहुँचाना।

संविग्न—[वि०] विकल, आतुर, उद्विग्न, घबराया हुआ।

संवित्ति—[स्त्री०] बुद्धि, चेतना, समझ, स्वीकार, अंगीकार। प्रतिपत्ति।

संविद्—[स्त्री०] बुद्धि, ज्ञान, शक्ति, बोध, अनुभूति, संवेदन, स्वीकृति, प्रसन्नता, आचार, संकेत, युद्ध, समाधि, वृत्तान्त, समाचार, नाम, पूर्व से निश्चित मिलन-स्थान। सम्पत्ति।

संविदा—[स्त्री०] विजया, भाँग, भंगा, सिद्धि।

संविदित—[वि०] अच्छे प्रकार जाना हुआ, संज्ञात, अंगीकृत, माना हुआ।

संविधान—[पु०] उपाय, रचना, सुव्यवस्था, प्रबंध-रीति।

संवीक्षण—[पु०] भले प्रकार देखना, खोजना, तलाश करना, अन्वेषण, गवेषण।

संवृत्त—[वि०] छिपाया हुआ, ढका हुआ, आवृत।

संवेद—[पु०] ज्ञान, अनुभव, समझ, बोध, वेदना।

संवेदन—[पु०] जानना, अनुभव

करना, जताना, प्रकट करना ।

संवेदना—[स्त्री०] अनुभव, अनुभूति । किसी के दुःख को स्वयं तद्वत् अनुभव करना ।

संवेदनीय—[वि०] अनुभव करने योग्य । जानने योग्य । जताने लायक, बताने योग्य ।

संवेद्य—[वि०] संवेदनीय, जानने योग्य, जताने योग्य ।

संवेशन—[पु०] रति क्रिया, मैथुन ।

संव्यान—[पु०] ऊपर ओढ़ने का वस्त्र, उत्तरीय वस्त्र, दुपट्टा, शाल । कोई भी वस्त्र ।

संशय—[पु०] संदेह, आशंका, अनिश्चयात्मक ज्ञान, दुविधा, डर, भय । साहित्य में एक अलंकार ।

संशयस्थ—[वि०] संदेह में पड़ा हुआ, संशययुक्त ।

संशयात्मक—[वि०] जिसमें शक हो, सन्देह युक्त, सन्दिग्ध ।

संशयात्मा—[पु०] सन्देह करने वाला, दुविधा में पड़ा हुआ, जिसके आत्मा में संशय हो । सन्देही, अविश्वासी, शक्की ।

संशयालु—[वि०] संशयवाला, सन्देहयुक्त, शक करने वाला । शक्की, अविश्वासी ।

संशयी—[वि०] सन्देह करनेवाला । शक्की ।

संशित—[वि०] किसी नियम के संबंध में पूर्ण प्रयत्न करने वाला । तेज किया हुआ, अच्छे प्रकार किया हुआ, भले प्रकार सम्पादित, निर्णय किया हुआ ।

संशितव्रत—[वि०] अपने व्रत को अच्छे प्रकार पूरा करने वाला । जिसने अपना नियम पूरा किया हो ।

संशुद्धि—[स्त्री०] अच्छे प्रकार सफ़ाई । शुद्ध करना, सुधारना ।

संशोधक—[पु०] सफ़ाई करनेवाला, सुधारनेवाला, शुद्ध करनेवाला, विकृत अवस्था से प्रकृत अवस्था में लानेवाला ।

संशोधन—[पु०] शुद्ध करना, साफ़ करना, सुधारना, ठीक करना, ऋण आदि का चुकता करना ।

संशोधित—[वि०] भले प्रकार सुधारा हुआ, ठीक या दुरुस्त किया हुआ, साफ किया हुआ । स्वच्छ या निर्दोष किया हुआ ।

संश्रय—[पु०] सहारा, आश्रय, आसरा, अवलम्ब, शरण, घर, मकान, सम्बन्ध, मेल, संयोग, लगाव ।

संश्रयण—[पु०] सहारा लेना, आश्रय लेना, शरण लेना ।

संश्रित—[वि०] आश्रित ।

संश्रुत—[वि०] अंगीकार किया हुआ, स्वीकृत, इकरार किया हुआ । प्रतिज्ञात ।

संश्लिष्ट [वि०] मिला हुआ, जुड़ा हुआ, लगा हुआ । आलिङ्गित ।

संश्लेष—[पु०] आलिङ्गन, मिलाप, मिलना, लगाव ।

संश्लेषण—[पु०] मिलाना, सटाना, जोड़ना ।

संसक्त—[वि०] मिला हुआ, लगा हुआ, जुड़ा हुआ, बँधा हुआ, संयुक्त, सम्बद्ध, लिप्त, आसक्त ।

संसद्—[स्त्री०] सभा, समाज, कमेटी, मजलिस ।

संसरण—[पु०] चलना, बहना, गमन, संसार, युद्ध का आरम्भ । राह, पथ, सड़क ।

संसर्ग—[पु०] सम्पर्क, लगाव, सम्बन्ध, संग, साथ, मेल, सम्बन्ध, स्त्री-पुरुष का सहवास ।

संसर्गदोष—[पु०] किसी के साथ से उत्पन्न होनेवाली बुराई, संगत का बुरा प्रभाव, सम्बन्ध-जनित दोष ।

संसार—[पु०] दुनिया, जगत, सृष्टि, हमेशा बदलते रहनेवाला, सदैव चलता रहनेवाला, जन्म-मरण या आवागमन की परम्परा । गृहस्थी ।

संसारचक्र—[पु०] भवजाल, जीवन-मरण का चक्कर, आवागमन की परम्परा ।

संसार-मार्ग—[पु०] संसार का रास्ता, दुनिया में आने का मार्ग,योनि, योनिद्वार ।

संसारमूर्ति—[पु०] विष्णु, परमात्मा, विराट् ।

संसारी—[वि०] संसार का, दुनयाबी, लौकिक, परिवर्तनशील, क्षणिक, संसार की माया में लिप्त । शरीर का अभिमानी जीवात्मा ।

संसिक्त—[वि०] अच्छे प्रकार सींचा हुआ, तर किया हुआ, आर्द्र, गीला ।

संसिद्ध—[वि०] स्वतःसिद्ध, भले प्रकार सिद्ध, स्वभावसिद्ध, प्रमाणित, चतुर, कुशल, निपुण । मुक्त पुरुष ।

संसिद्धि—[स्त्री०] स्वभाव, प्रकृति । मोक्ष । परम सिद्धि ।

संसृति—[स्त्री०] संसार, दुनिया, सृष्टि । जन्म-मरण का क्रम । आवागमन की परम्परा । संसार का प्रवाह । संगति । मेल ।

संसृष्ट—[वि०] सम्बद्ध, लगा हुआ, मिला हुआ, जुड़ा हुआ, मिश्रित । स्मृति के अनुसार जो एक बार माता पिता अथवा भाइयों से अलग होकर फिर उनसे मिल गया हो, वह । आयुर्वेद के अनुसार वमनादि क्रिया द्वारा शुद्ध किया हुआ । मेल ।

संसृष्टि—[स्त्री०] साथ-साथ उत्पत्ति, सह आविर्भाव । सम्बन्ध, लगाव, मिलाव, मिश्रण, घनिष्ठता, मेल । सञ्चय, संग्रह ।

संस्करण—[पु०] शुद्ध करना, संशोधन करना, सुधारना, संस्कार, (द्विजातियोंके लिए स्मृति-प्रतिपादित गर्भाधानादि कर्म करना)। पुस्तक का एक वार का मुद्रण, आवृत्ति।

संस्कर्ता—[पु०] संस्कार करने वाला।

संस्कार—[पु०] आत्मा और शरीर के संशोधनार्थ किये जानेवाले स्मृतिविहित गर्भाधानादि सोलह कर्म। जन्मान्तर के अनुभवजनित आत्मा का विशेष धर्म। सदसत् साहित्य के अध्ययन अथवा संगति के द्वारा मन पर पड़ा हुआ प्रभाव विशेष। पृथिवी, अप् ,तेज और वायु में रहने वाला वेग नामक गुण। सुधार, संशोधन, परिष्कार, सजाना।

संस्कृत—[वि०] शुद्ध किया हुआ, परिमार्जित, परिष्कृत, साफ, सुधारा हुआ, सजाया हुआ, पका हुआ, संस्कार (उपनयनादि) किया हुआ, व्याकरणादि द्वारा परिमार्जित भाषा-विशेष, देववाणी, आर्यों की प्राचीन साहित्यिक भाषा।

संस्कृति—[स्त्री०] शुद्धता, स्वच्छता, संस्कार, परिष्कार, सजावट, परम्परागत विचार और रीति-रिवाज आदि।

संस्तर—[पु०] बिछौना, विस्तर, शैया, कुशा आदि का बिछौना।

संस्तव—[पु०] परिचय, जान-पहचान, जानकारी। अच्छे प्रकार की गई प्रशंसा।

संस्था—[स्त्री०] मर्यादा, प्रतिज्ञा, स्थिति, सादृश्य, व्यवस्था, विधान, समूह, सभा, समाज, संघटित समूह। नाश। यज्ञ विशेष।

संस्थान—[पु०] स्थान, निवास स्थान, मात्रा, बनावट, ढेर, चिह्न, समीपता, चौराहा। समूह। समष्टि। मृत्यु। गाँव, घर, जनपद, सार्वजनिक स्थान, सबके एकत्र होने की जगह।

संस्थापक—[वि०] स्थापित करने वाला, आरम्भ करने वाला, नियत करने वाला।

संस्थापन—[पु०] एक स्थान पर रखना। स्थापित करना, नियत करना। आरम्भ करना।

संस्थापित—[वि०] स्थापित, एक जगह रक्खा हुआ। नियत किया हुआ।

संस्थित—[वि०] ठहरा हुआ, कायम, समीपस्थ, समाप्त, मृत।

संस्थिति—[स्त्री०] ढेर, समूह, स्थान, अवस्था, समीपता, रोग, प्रलय, मृत्यु।

संस्पर्श—[पु०] लगाव, छूना, मिलाव, स्पर्श, छूत।

संस्मरण—[पु०] याद, स्मृति, पूर्ण रूप से याद करना, ध्यान करना।

संस्रव, संस्राव—[पु०] टपकना, चूना, बूँद-बूँद गिरना। धारा।

संहत—[वि०] गठा हुआ, दृढ़, पक्का, घना, । इकट्ठा, जुड़ा हुआ, सटा हुआ, मिला हुआ, संयुक्त, सहित।

संहति—[स्त्री०] समूह, अत्यधिक मेल, समुदाय, राशि, ढेर, मेल, मिलाप, जुटाव, जोड़, संयोग, घनता, शक्ति, शरीर, चोट।

संहनन—[पु०] भले प्रकार मारना, संहार, बध, मालिश, देह, शरीर, समूह।

संहरण—[पु०] संहार, नाश, प्रलय, इकट्ठा करना, पकड़ना, रोकना, पीछे हटना।

संहर्त्ता—[पु०] नाश करने वाला, समेटने वाला, इकट्ठा करने वाला।

संहार—[पु०] प्रलय, नाश। अन्त, विनाश, ध्वंस, समेटना। एकत्र करना। परिहार, निवारण। एक नरक का नाम। केशादि का गूँथना। छोड़े हुए वाणादि को वापस लेना।

संहारक—[पु०] नाश करनेवाला, विनाशक, विध्वंसक, मिटानेवाला। एकत्र करने या समेटनेवाला।

संहित—[वि०] इकट्ठा किया हुआ। एकत्रित, संचित, समेटा हुआ, मिलाया हुआ, एक जगह रक्खा हुआ, सहित, स्थित।

संहिता—[स्त्री०] मेल, समूह, संयोग। एकत्र, संयुक्त। मंत्र। सूत्र अथवा श्लोकों का क्रमपूर्वक संकलन। ऋचाओं में पदों को सन्धि के नियमानुसार मिलाना।

सकरा—[वि०] संकुचित, संकीर्ण। रोटी-दाल आदि कच्चा भोजन।

सकरुण—[वि०] दयालु, दयावान, करुणापूर्ण।

सकर्मक—[वि०] कर्मशील। कर्म करनेवाला। व्याकरण में उस क्रिया को बतानेवाला धातु जिसका फल कर्म पर जाकर समाप्त हो।

सकल—[वि] सम्पूर्ण, समस्त, पूरा, सब। कलासहित, कलायुक्त। कला या हुनर जाननेवाला। [पु०] निर्गुण ब्रह्म तथा सगुण प्रकृति।

सकाम—[पु०] कामनायुक्त, इच्छा सहित। कामवासनायुक्त, कामी, कामुक। फल की चाहना से काम करनेवाला। सफल-मनोरथ। सन्तुष्ट।

सकारण—[वि०] कारण के सहित।

सकारे—[क्रि० वि०] सवेरे, प्रातःकाल, प्रभात वेला में।

सकाश—[पु०] पास, समीप, निकट।

सकुक्षि—[वि०] एक ही कोख से उत्पन्न होनेवाला। सहोदर, सगा।

सकुचना—[क्रि०] संकुचित होना, शरमाना, लजाना। सिकुड़ना, मुँदना, संपुटित होना।

सकुचाना—[क्रि०] संकोच करना । लज्जित होना, शरमाना । किसी को लज्जित करना ।

सकुल—[वि०] कुलीन, उच्चकुल का, एक कुल का । जाति, भाई, सम्बन्धी, रिश्तेदार ।

सकृत—[अव्य०] एक बार ।

सकृत्फला—[स्त्री०] एक ही बार फलनेवाला । कदली, केला ।

सकोप—[वि०] क्रुद्ध, क्रोधित । [अव्य०] क्रोधपूर्वक ।

सक्तु—[पु०] सतुआ । भुने हुए जौ चने आदि का आटा ।

सक्रिय—[वि०] क्रियात्मक, क्रियाशील।

सक्षम—[वि०] समर्थ, योग्यता अथवा सामर्थ्य रखनेवाला, क्षमतावान । सहनशील ।

सखरा—[पु०] सकरा, कच्चा भोजन—दाल-भात, रोटी आदि ।

सखा—[पु०] साथी, सहचर, मित्र, सहयोगी, संगी, दोस्त । साहित्य में नायक का मित्र ।

सखी—[स्त्री०] साथिन, सहचरी, संगिन, सहेली । साहित्य में नायिका की साथिन जिससे कोई बात छिपी न हो । उदार, दानी, दाता ।

सखीभाव—[पु०] कृष्णोपासकों का एक मार्ग, इसमें उपासक अपने को कृष्ण की प्रिया की सहचरी मानकर कृष्ण की भक्ति करते हैं । टट्टी संप्रदाय ।

सख्य—[पु०] मित्रता, मेलजोल, दोस्ती, सखाभाव । भक्तों का एक भाव। जिसमें ये अपने उपास्य का सखा मानकर भक्ति करते हैं ।

सगण—[वि०] गणों या सेवकों के साथ, अनुचरों सहित । सेनासहित । [पु०] शिवजी ।

सगन्ध—[वि०] गन्धयुक्त ।

सगबग—[वि०] गीला आर्द्र, तर, सराबोर, लथपथ, भीगा हुआ, परिपूर्ण ।

सगबगा—[वि०] कुछ कुछ गीला ।

सगर—[पु०] सूर्यवंशीय एक राजा का नाम (पुराणों में लिखा है इनके साठ हज़ार बेटे थे)। [वि०] गर (विष) के साथ, विषयुक्त, विषैला ।

सगर्भ—[पु०] सहोदर भ्राता, सगा भाई, गर्भवाला ।

सगर्भा—[स्त्री०] सहोदरा, सगी बहन । गर्भवती, गर्भयुक्ता ।

सगा—[वि०] एक ही माता-पिता से उत्पन्न, सहोदर । निकट सम्बन्धी, खास रिश्तेदार । [स्त्री०] सगी ।

सगाई—[स्त्री०] विवाह से पूर्व होनेवाली एक रस्म, जिससे विवाह सम्बन्ध निश्चित हो जाता है । मँगनी, टीका, वाग्दान । नाता, रिश्ता, सगापन, आत्मीयता ।

सगुण—[पु०] गुणसहित, गुणयुक्त, गुणवाला, साकार ब्रह्म, सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण—तीनों से युक्त ब्रह्म का स्वरूप ।

सगुनिया—[पु०] शकुन विचारने या बतलानेवाला ।

सगुनौती—[स्त्री०] शकुन विचारने की विधि या क्रिया ।

सगोत्र—[पु०] एक ही गोत्र का, सजातीय, जाति-भाई, एक ही गोत्र में उत्पन्न हुआ । भाईबन्धु, कुटुम्बी । [स्त्री०] सगोत्रा ।

सग्धि—[स्त्री०] साथ मिलकर खाना, सहभोज, दावत ।

सघन—[वि०] घना, अविकल, गुञ्जान, ठोस, निविड़ । घन अर्थात् बादलों सहित, बादल युक्त ।

सङ्कट—[पु०] दुःख, कष्ट, आपत्ति, मुसीबत [वि०] तङ्ग, सँकरा, संकुचित, छोटी जगह ।

सङ्कटा—[स्त्री०] एक देवी । ज्योतिष में मङ्गला आदि सात दशाओं में से एक ।

सङ्कर—[पु०] मिलाप, मिश्रण, मिलाव, विभिन्न प्रकार या जाति की वस्तुओं की मिलावट, भिन्न भिन्न जाति के स्त्री-पुरुष के संयोग से उत्पन्न हुई सन्तान, दोगला । वर्णों या जातियों का नियम विरुद्ध मिलाप । बुहारी से बुहार कर फेंकी हुई धूल, कूड़ा ।

सङ्करता—[स्त्री०] मिलावट, मिश्रण, घालमेल, संकरपना ।

सँकरा—[वि०] संकीर्ण, तंग, कम चौड़ा, संकुचित ।

सङ्कर्षण—[पु०] खींचना, घसीटना, खेत आदि में हल चलाना । कृष्ण जी के बड़े भाई—बलराम, हलधर ।

सङ्कलन—[पु०] जोड़ना, एकत्र करना, जमा करना, संग्रह करना, विभिन्न पुस्तकों से अच्छे-अच्छे अंश छाँटने का काम । गणित में जोड़ने की क्रिया ।

सङ्कलित—[वि०] इकट्ठा किया हुआ । संग्रह किया हुआ, संगृहीत, जमा किया हुआ, जुड़ा हुआ, मिला हुआ । चुना हुआ, छाँट-छाँटकर लिया हुआ ।

सङ्कल्प—[पु०] इच्छा, विचार, इरादा, मानसिक कर्म, निश्चय, दृढ़ या पुष्ट विचार, विचारे हुए काम को करने की हाथ में जल लेकर प्रतिज्ञा या घोषणा करना । उक्त घोषणा के लिए नियत शास्त्रोक्त संस्कृत वाक्य ।

सङ्कल्पजन्मा—[पु०] संकल्प से उत्पन्न होने वाला, कामदेव ।

सङ्काश—[वि०] सदृश, समान, तुल्य, तद्रूप । निकट, समीप, [पु०] प्रकाश, दीप्ति, कान्ति, प्रभा ।

सङ्कीर्ण—[वि०] संकुचित, सँकरा, तङ्ग, छोटा, ओछा, तुच्छ, छुद्र। मिश्रित, मिला-जुला, दोगला। [पु०] संकट, आफ़त, मुसीबत।

सङ्कीर्णता—[स्त्री०] संकीर्ण का भाव, तङ्गी छोटापन, ओछापन, तुच्छता।

सङ्कीर्तन—[पु०] किसी के यश का गान, स्तुति-गान, श्लाघा, प्रशंसा करना। देव-वन्दन।

सङ्कु—[पु०] शङ्कु, भाला, बरछा।

सङ्कुचित—[वि०] सिकुड़ा हुआ, अविकसित, सकुचा हुआ, संक्षिप्त, सङ्कोचयुक्त, लज्जित, तङ्ग, सँकरा, छोटा, थोड़ा, क्षुद्र, कंजूस।

सङ्कुल—[पु०] भीड़, झुण्ड, समूह। जनसमूह। युद्ध। मारकाट। [वि०] भरा हुआ, परिपूर्ण, घना, गड़बड़, बेतरतीब। व्याकरण में परस्पर विरोधी वाक्य।

सङ्कुलित—[वि०] भरा हुआ, परिपूर्ण, घना, सङ्कीर्ण।

सङ्केत—[पु०] इङ्गित, इशारा, मनोभाव प्रकट करने के लिए की गई अङ्ग-चेष्टा, चिह्न, निशान। साहित्य में प्रिय मिलन के लिए निश्चित गुप्त स्थान, सहेट।

सङ्कोच—[पु०] सकुच, झिझक, हिचक, कमी, न्यूनता, संक्षेप, सकोड़ना, तनाव, खिंचाव, लज्जा, आगा-पीछा, डर, भय।

सङ्कोचन—[पु०] सिकुड़ना, संकोच।

सङ्कोची—[पु०] शर्मीला, लज्जालु, संकोच करने वाला, सिकुड़ने वाला।

सङ्क्रन्दन—[पु०] इन्द्र, शक्र, श्रीकृष्ण। रोना, विलाप करना।

सङ्क्रमण—[पु०] चलना, गमन, पार करना, लाँघना, बीच में आना, समीप आना, प्रवेश करना। ज्योतिष में सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि पर जाना।

सङ्क्रान्त—[वि०] आक्रान्त, गृहीत, परिवर्तित, प्रविष्ट।

सङ्क्रान्ति—[स्त्री०] मेल, ज्योतिष में सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि पर जाने का समय। अच्छी तरह जाना, इकट्ठे जाना। साथ जाना, एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना।

सङ्क्रामक—[वि०] एक से दूसरे पर जाने वाला (रोगादि)। छूत से फैलने वाला।

सङ्क्षय—[पु०] नाश, अन्त, प्रलय।

संक्षिप्त—[वि०] कम किया हुआ, थोड़े में किया हुआ, सिकोड़ा हुआ, सारमात्र, मुख्तसिर, थोड़ा, सूक्ष्म। अच्छे प्रकार फेंका हुआ।

सङ्क्षिप्तलिपि—[स्त्री०] शार्टहैण्ड, संक्षेप में शीघ्र लिखने की रीति।

सङ्क्षेप—[पु०] बहुत से भाव को थोड़े शब्दों में व्यक्त करना। सूक्ष्म, मुख्तसिर, कम करना, घटाना, फेंकना।

सङ्क्षेपण—[पु०] छोटा करना, संक्षिप्त करना, फेंकना।

सङ्क्षेपतः—[अव्य०] संक्षेप में, थोड़े में।

सङ्क्षोभ—[पु०] चञ्चलता, घबराहट, उद्विग्नता, हड़बड़ी।

सङ्ख्य—[पु०] युद्ध, संग्राम, लड़ाई। विचार, बुद्धि, द्रव्य में रहने वाला, एक, दो आदि का बोधक गुण।

सङ्ख्यक—[वि०] संख्या वाला।

सङ्ख्या—[स्त्री०] गिनती, गणना, तादाद, समझ, विचार, बुद्धि। गणित में वह अङ्कसमूह जो किसी वस्तु का परिमाण गणना में व्यक्त करे।

सङ्ख्यात—[वि०] गिना हुआ, गणित, शुमार किया हुआ, कृतसंख्य, गिनती का, बहुत प्रसिद्ध।

सङ्ख्यातीत—[वि०] अगणित, बेसुमार, असंख्य।

सङ्ख्यान—[पु०] गिनना। शुमार करना।

सङ्ख्येय—[वि०] गिनने योग्य, गिन्ती-शुमार का, प्रसिद्ध।

सङ्ग—[पु०] साथ, मेल, मित्रता, लगाव, प्रेम, सम्पर्क, सोहबत। युद्ध।

सङ्गत—[वि०] एक जगह किया हुआ, जुड़ा हुआ, [पु०] मेल, मित्रता, सभा मीटिङ्ग।

संगति—[सं० स्त्री०] मिलाप, सम्मेलन, साथ, संग, मैथुन, प्रसंग, संबन्ध, संगत, ज्ञान। पूर्वापर या आद्यन्त की बातों या वाक्यों का मिलान।

संगम—[सं पु०] सम्मेलन, मिलाप, संयोग, दो नदियों के मिलने का स्थान, संग, साथ, सहवास, सहयोग, प्रसंग।

संगर—[स० पु०] नियम, प्रण, विष, विपत्ति स्वीकार।

संगिनी—[हि० स्त्री०] साथिन, सहेली, सखी।

संगी—[हि० पु०] बन्धु, साथी, सखा, मित्र। [स्त्री०] एक प्रकार का वस्त्र।

संगीत—[सं० पु०] गंधर्व-विद्या। गान और वाद्य की कला।

संगृहीत—[सं०वि०] संकलित, एकत्रित, संग्रह किया हुआ।

संगोपन—[स०पु०] छिपाने का कार्य।

सग्रह—[सं पु०] संकलन, संचय, एकत्र या जमा करना। वह पुस्तक जिसमें एक ही विषय या अनेक विषयों की पुस्तकों की बातें चुन कर एकत्र की गयी हों।

संग्रहणी—[सं० स्त्री०] एक उदर रोग जिसमें पाचनशक्ति के न रहने से बार बार दस्त होता है और सारा भोजन निकल जाता है।

संग्रही, संग्रहीता—[सं० पु०] संग्रह करने वाला, संकलन करने वाला ।

संग्रहीत—[सं० वि०] एकत्र या इकट्ठा किया हुआ । संकलित, संचित ।

संग्राम—[सं० पु०] रण, लड़ाई, युद्ध, समर ।

संग्राह्य—[सं०वि०] संग्रह करने योग्य ।

संघ—[सं० पु०] समुच्चय, समुदाय, समूह, वृन्द, झुण्ड, दल, समिति, समाज, सभा, प्राचीन काल में भारत का एक प्रकार का प्रजातंत्र राज्य, बौद्ध श्रमणों का एक धार्मिक समाज, साधुओं के रहने का मठ ।

संघट—[सं० पु०] युद्ध, संग्राम, राशि, ढेर, झगड़ा, संयोग, संघट्ट ।

संघटन—[सं० पु०] संयोग सम्मेलन, मेल-मिलाप, नायक-नायिका का संयोग, बनावट, रचना, संगठन, सम्बन्ध, सम्पर्क ।

संघट्ट, संघट्टन—[सं० पु०] रचना, बनावट, संयोग, सम्मिलन, मेल-मिलाप, संघटन ।

संघर्ष संघर्षण-[सं० पु०] रगड़ खाना, रगड़ जाना, घिस जाना, प्रतिद्वन्द्विता, रगड़, प्रतियोगिता, स्पर्द्धा, घिसना, रगड़ना, घिस्सा ।

संघात—[सं०पु०] समष्टि वृन्द, समूह, चोट, आघात, बध हत्या नाटक में एक प्रकार की गति । शरीर, घर ।

संघाराम—[सं० पु०] बौद्धमत के भिक्षुओं या साधुओं के रहने का मठ । विहार ।

संचय—[सं० पु०] समुदाय, समूह, झुण्ड, ढेर, संग्रह या एकत्र करना, जमा करना ।

संचरण—[सं० पु०] चलना, गमन करना, टहलना, घूमना, भ्रमण करना, फिरना, संचार करना ।

संचार—[सं० पु०] चलना, गमन करना, प्रवेश, फैलाना, प्रचार करना, प्रयोग, जाना ।

संचारिका—[सं० स्त्री०] कुटनी, दूती ।

संचारी—[सं०पु०] वायु, पवन, हवा । साहित्य में वे भाव जो मुख्य भाव के पोषक हों । व्यभिचारी भाव । संचरण करने वाला । प्रवेश करने वाला । गतिशील ।

संचालक—[सं० पु०] चलाने, फिराने या गति देने वाला । परिचालक, किसी व्यापार का करने वाला । कार्य कर्त्ता, प्रबंधक ।

संचालन—[सं० पु०] परिचालन, चलाना, चलाने की क्रिया । गति देना ।

संचित—[सं० वि०] संचय किया या जोड़ा हुआ । जमा किया गया, एकत्रित, [पु०] तीन प्रकार के कर्मों में से एक ।

संजय—[सं० पु०] राजा धृतराष्ट्र के मंत्री जो महाभारत के युद्ध के समय उसका समाचार सुनाते थे ।

संजात—[सं० वि०] प्राप्त, उत्पन्न ।

संजीवन—[सं० पु०] जीवन देने वाला, भले प्रकार जीवन बिताना ।

संजीवनी—[सं० स्त्री०] शक्ति-स्फूर्ति कारिणी, जीवन देने वाली, एक रसायनिक औषधि ।

सँजोई—साथ में, सजाकर ।

संज्ञक—[सं० वि०] नाम या संज्ञा वाला । जिसकी संज्ञा हो ।

संज्ञा—[सं० स्त्री०] चेतना, बुद्धि, होश, ज्ञान, आख्या, नाम । वह सार्थक विकारी शब्द जिससे किसी कल्पित या या वास्तविक शब्द के नाम का बोध हो । विश्वकर्मा की कन्या और सूर्य की पत्नी ।

संज्ञा-हीन, संज्ञारहित—[सं० वि०] बेसुध, बेहोश, मूर्छित, संज्ञाविहीन । सज्ञाशून्य ।

सँझवाती—[सं० स्त्री०] शाम के समय जलाया जाने वाला दीपक । संध्या दीप, संध्या समय गाने का गीत ।

संझावाती—[पु०] संध्या-समय जलाने का दीपक, सँझवाती, संध्या का गीत ।

संत—[सं० पु०] साधु, सज्जन, त्यागी, संन्यासी, महात्मा, धार्मिक व्यक्ति, परमेश्वर-भक्त ।

सतत—[सं०] सदैव, सदा, हमेशा, निरंतर, लगातार, बराबर ।

संतति—[सं० स्त्री०] संतान, प्रजा, वंश, फैलाव, रिआया ।

संतपन—[सं० पु०] बहुत तपना, अति संताप या दुख देना ।

संतप्त—[सं० वि०] अति तपा हुआ, बहुत गर्म, जला हुआ, पीड़ित, दग्ध दुखी ।

संतरक—[सं०वि०]भलीभाँति तैरने वाला

संतरण—[सं० पु०] भली भाँति करना या पार होना, तारने वाला ।

संतान—[सं० पु०] संतति, औलाद, बाल-बच्चे, कल्प वृक्ष ।

संताप—[सं० पु०] दाह, जलन, वेदना, आँच, कष्ट, दुःख, मानसिक कष्ट ।

संतापक—[सं० वि०] जलाने या संताप देने वाला । दाहक ।

संतापन—[सं० पु०] जलाना, संताप देना, अति कष्ट या दुख देना । काम के पांच बाणों में से एक ।

संतापित—[सं० वि०] दग्ध, तप्त, जलाया हुआ, दुखी, संतप्त ।

संतापी—[सं० पु०] दुखदायी, ताप या संताप देने वाला ।

संतारक—[सं० वि०] तारने वाला ।

संतुष्ट—[सं० वि०] जो मान गया हो । तृप्त, प्रसन्न, तोषयुक्त, जिसको संतोष

हो गया हो ।

संतोष—[सं०पु०] तोष, संतुष्टि, तृप्ति, सब दशा और काल में प्रसन्नता, शांति, आनन्द, सुख ।

संतोषी—[सं०पु०] सदा सन्तोष या सब्र रखने वाला ।

संथा—[सं० पु०] पाठ, सबक, एक बार का पढ़ा हुआ ।

संदर्भ—[सं० पु०] बनावट, रचना, प्रबन्ध, लेख, निबन्ध, कोई छोटा ग्रन्थ, अध्याय ।

संदिग्ध—[सं० वि०] संशय, संदेह-पूर्ण, संशयात्मक, भ्रमयुक्त, जिसमें या जिसपर संदेह हो ।

संदीपन—[सं० पु०] उद्दीपन, उत्तेजित करने का कार्य, कामदेव के पाँच बाणों में से एक, श्रीकृष्ण जी के गुरु ।

संदीप्त—[सं० वि०] अति दीप्तमान, प्रकाशमान, उद्दीप्त, उत्तेजित ।

संदेश—[सं० पु०] समाचार, हाल, खबर, एक बंगला मिठाई, संदेसा ।

सँदेसा—[पु०] मुखाग्र, जबानी कहाई हुई खबर या बात । हाल,समाचार ।

संदेह—[सं०पु०] संशय, भ्रम, शंका, शक किसी विषय या बात पर निश्चय न होने वाला विश्वास, एक अर्थालंकार जहाँ किसी वस्तु को देखकर उसमें अन्य वस्तु का संदेह बना रहे ।

संदोह—[सं० पु०] वृन्द, समूह, राशि, झुण्ड ।

संध—[सं० स्त्री०] मेल, संयोग, मिलाप, संधि, सुलह, मित्रता, प्रतिज्ञा ।

संधान—[सं० पु०] लक्ष्य या निशाना लगाना,योजन,वाणादि फेंकना, मिलाना, खोज, अन्वेषण, काँजी, संधि, काठियावाड़ का नाम ।

संधानना—[सं०] निशाना लगाना, वाण फेंकना ।

संधि—[सं० स्त्री०] संयोग, मेल, जोड़, मिलने का स्थान, मित्रता, सुलह, गाँठ, देह का कोई जोड़ । समीपागत दो वर्णों के मेल से होने वाला विकार । चोरी आदि के लिये दीवाल में किया गया भारी छेद ।

संध्या—[सं० स्त्री०] दिन और रात के मिलने का समय, संधि समय, प्रभात, शाम, सायंकाल, संझा, दिन-रात का संयोग काल ।

संन्यास—[सं० पु०] चार आश्रमों में से अन्तिम आश्रम जिसमें काम्य और नित्यादि कर्म निष्काम रूप से किये जाते हैं ।

संन्यासी-[सं० पु०] संन्यासाश्रम में रहने और तदनुकूल नियमों का पालन करने वाला ।

संपत्ति—[सं० स्त्री०] धन, लक्ष्मी, दौलत, वैभव, ऐश्वर्य्य ।

संपद्-[सं०स्त्री०] धन, पूर्णता, लक्ष्मी, वैभव, ऐश्वर्य, सौभाग्य, गौरव, सिद्धि ।

संपदा—[सं० स्त्री०] धन, लक्ष्मी, दौलत, वैभव, ऐश्वर्य ।

संपन्न—[सं० वि०] पूर्ण, भरा हुआ, सिद्ध, पूर्ण किया हुआ, धनी, सहित, युक्त ।

संपण्य—[सं० पु०] मृत्यु, मौत, युद्ध, लड़ाई, संकट-समय, विपत्ति ।

संपर्क—[सं० पु०] मिलावट, मेल, संग, मिश्रण, वास्ता, संसर्ग, सम्बन्ध, लगाव, सटना, स्पर्श ।

संपा—[सं० स्त्री०] बिजली, विद्युत ।

संपात—[सं० पु०] संगम, संसर्ग, मेल, संपर्क, समागम, एक साथ गिरना या पड़ना । जहाँ दो रेखाएँ एक दूसरे को काटें या मिलें ।

संपाति—[सं० पु०] गरुड़ का ज्येष्ठ पुत्र तथा जटायु का बड़ा भाई एक गीध, संपाती ।

संपाती—[सं० पु०] गरुड़ पुत्र जटायु का बड़ा भाई एक गीध ।

संपादक—[सं० पु०] किसी कार्य को तैयार या पूरा करनेवाला, सम्पन्न करने वाला, प्रस्तुत करने वाला, किसी पुस्तक या समाचार पत्र को क्रम से लगा या ठीक करके निकालने वाला ।

संपादकीय—[सं० वि०] सम्पादक सम्बन्धी, सम्पादक का ।

संपादन—[सं० पु०] कार्य पूर्ण करना, प्रदान करना, शुद्ध या सही करना, ठीक या दुरुस्त करना, किसी पुस्तक या समाचार पत्र को क्रमपूर्वक पाठादि लगाकर प्रकाशित करना या निकालना ।

संपादित—[सं० वि०] पूर्ण ठीक या दुरुस्त किया हुआ । ठीक क्रम, पाठादि लगाकर पुस्तक, समाचारपत्रादि को ठीक और प्रकाशित किया गया ।

संपुट—[सं० पु०] बरतन के आकार की कोई वस्तु, दोना, ठीकरा, डिब्बा, खप्पर, कपाल, अंजली, संकुचन, फूलों का कोश, मिट्टी से सने कपड़े से लपेटा हुआ एक बंद गोल पात्र जिसके भीतर रखकर कोई वस्तु आग में फूँकी जाती है ।

संपुटी—[सं० स्त्री०] प्याली, छोटी कटोरी ।

संपूर्ण—[सं० वि०] सबका-सब, पूर्ण, सारा, समस्त, कुल, बिलकुल, समाप्त, पूरा, सर्वस्व ।

संपूर्णतः—[सं०] पूर्ण रूप से, पूरी तरह से ।

संपूर्णतया—[सं०] पूर्ण रूप से, पूरी तरह से ।

संपूर्णता—[सं० स्त्री०] पूर्णता, संपूर्ण होने का भाव या कार्य । पूरा

पूरा, पूरापन, समाप्ति ।

संपृक्त—[सं० वि०] मिला हुआ, मिश्रित ।

सँपोला—[हि०] छोटा साँप, साँप का बच्चा ।

संप्रज्ञात—[सं० पु०] वह समाधि जिसमें आत्मा को अपने रूप का बोध हो या वह जो वहाँ तक न पहुँचा हो ।

संप्रति—[सं०] इस समय में, अभी, इस काल, आजकल, अधुना ।

संप्रदान—[सं० पु०] दान देने की क्रिया का भाव, मंत्रोपदेश, दीक्षा, एक कारक (चतुर्थी) जो दान-पात्र के अर्थ में आता है और जिसमें संज्ञा शब्द देना क्रिया का लक्ष्य होता है ।

संप्रदाय—[सं० पु०] कोई विशेष धर्म्म संबन्धी मत, किसी मत के अनुयायियों की मंडली जो एक ही धर्म के माननेवाले हों, परिपाटी, चाल, रीति, पंथ, प्रणाली ।

संप्रदायिक—[सं० वि०] किसी सम्प्रदाय सम्बन्धी, सम्प्रदाय का, धार्मिक ।

संप्राप्त—[सं० वि०] पाया हुआ, उपस्थित, जो हुआ हो, घटित, मिलना, पाना, लब्ध ।

संप्राप्य—[सं० वि०] प्राप्त करने के योग्य ।

संबंध—[सं० पु०] संसर्ग, लगाव, ताल्लुक, संगम, संपर्क, नाता, वास्ता, संयोग, मेल, सगाई, ब्याह, षष्ठी कारक जो एक शब्द का दूसरे से लगाव या संबन्ध प्रकट करता है इसमें एक पद सम्बन्धी और दूसरा सम्बन्धवान कहाता है ।

संबंधातिशयोक्ति—[सं० स्त्री०] अतिशयोक्ति अलंकार का एक भेद जहाँ संबन्ध न होने पर भी सम्बन्ध प्रकट किया जाता है ।

संबन्धी—[सं० वि०] सम्बन्ध रखनेवाला, विषयक । नातेदार, समधी ।

संबद्ध—[सं० वि०] संयुक्त, बँधा या जुड़ा हुआ, बंद, सम्बन्धयुक्त ।

संबल—[सं० पु०] मार्ग का भोजन, पाथेय, सफर खर्च ।

संबोधन—[सं० पु०] जगाना, सोते से उठाना, निद्रामुक्त करना, पुकारना, सचेत या चैतन्य करना, एक कारक (आठवाँ) जिससे शब्द का किसी के बुलाने या पुकारने का प्रयोग जाना जाता है ।

संबोधित—[सं० वि०] पुकारा हुआ, जगाया या चेताया हुआ ।

संभव—[सं० पु०] साध्य, जन्म, उत्पत्ति, संयोग, मेल होना, होने के योग्य ।

संभवतः—[सं०] हो सकता है, मुमकिन है ।

संभावना—[सं० स्त्री०] संभव होना, हो सकना, अनुमान, कल्पना, सम्मान, आदर, प्रतिष्ठा । एक अर्थालंकार जिसमें एक बात का होना दूसरी के होने पर निर्भर हो ।

संभावित—[सं० वि०] मन में माना हुआ या अनुमाना हुआ, संभव, मुमकिन, आदरणीय, प्रतिष्ठित, कल्पित, संचित या जुटाया हुआ ।

संभाव्य—[सं० वि०] संभव, मुमकिन।

संभाषण—[सं० पु०] वार्त्तालाप, बातचीत, कथोपकथन ।

संभाषी—[वि०] वार्त्तालाप करने या बोलने वाला । कहने वाला ।

संभूत—[सं० वि०] एक साथ उत्पन्न या उद्भूत, जन्मा हुआ, पैदा, प्रगट, सहित, युक्त, साथ ।

संभूय—[सं०] साझे में, शामिल या साथ में ।

संभूयसमुत्थान—[सं० पु०] साझे का काम । शामिल कारबार ।

संभोग—[सं० पु०] सुखपूर्वक व्यवहार, स्त्री-प्रसंग, रति-केलि, मैथुन-कार्य, मिलाप की हालत, संयोग-शृंगार ।

संभ्रम—[सं० पु०] उत्कंठा, व्याकुलता, घबराहट, व्यग्रता, विकलता, सिटपिटाना, खलबली, गौरव, सम्मान, आदर ।

संभ्रांत—[सं० वि०] व्यग्र, उद्विग्न, विकल, घबराया हुआ, व्याकुल, सम्मानित, समादृत, प्रतिष्ठित ।

संभ्रांति—[सं० स्त्री०] भ्रांति, भ्रम, व्यग्रता, व्याकुलता ।

संमत—[सं० वि०] सहमत, अनुमत, जिसकी राय या मत मिलती हो ।

संमति—[सं० स्त्री०] राय, अनुमति, सलाह ।

संमान—[सं० पु०] आदर, गौरव, इज्जत, सत्कार, सम्मान ।

संमानना—[सं०] आदर या सत्कार करना ।

संमेलन—[सं० पु०] जमाव, जमघट, सभा, समाज, मिलाप, सम्मिलन ।

संयत—[सं० वि०] दमन किया हुआ, दबाव में रखा हुआ, बँधा हुआ, रुद्ध, कैदी, वशीभूत, बन्द किया हुआ, व्यवस्थित, क्रम-बद्ध, उचित सीमा के अन्दर रोका हुआ मन सहित इन्द्रियजीत, निग्रही ।

संयम—[सं० पु०] रोक, निग्रह, दाब, इन्द्रिय-निग्रह, चित्तवृत्ति का निरोध, बंधन, बंद करना, बुरी बातों या वस्तुओं से बचना, ध्यान, धारणा और समाधि का साधन ।

संयमी—[सं० वि०] मनेन्द्रियों को वश में रखने वाला, इन्द्रिय-जीत, आत्मनिग्रही, इन्द्रिय-निग्रही, योगी, दबाव

रखने वाला ।

संयुक्त—[सं॰ वि॰] सम्मिलित, मिला हुआ, जुड़ा हुआ, लगा हुआ, युक्त, मिश्रित, सहित, साथ, सम्बन्ध ।

संयुक्ता—[सं॰ स्त्री॰] राजा पृथ्वीराज की रानी और जयचन्द की पुत्री ।

संयुग—[सं॰ पु॰] मेल, मिलाप, संयोग, युद्ध, संग्राम, लड़ाई ।

संयुत—[सं॰ वि॰] जुड़ा या मिला हुआ, संयुक्त, साथ ।

संयोग—[सं॰ पु॰] मेल, मिलाप, मिश्रण, मिलावट, लगाव, समागम, संबंध, स्त्री-प्रसंग, सहवास, विवाह सम्बन्ध, योग, जोड़, अवसर, इत्तफाक ।

संयोगी—[सं॰ पु॰] संयोग या मेल करने वाला, जो व्यक्ति अपनी प्रिया के साथ हो ।

संयोजक—[सं॰ पु॰] जोड़ने या मिलाने वाला, दो अथवा अधिक शब्दों या वाक्यों को मिलाने वाला शब्द या अव्यय ।

संयोजन—[सं॰ पु॰] जोड़ने और मिलाने की क्रिया ।

संयोजित—[सं॰ वि॰] जोड़ा या मिलाया गया, संयुक्त ।

संरंभ—[सं॰ पु॰] क्रोध, कोप, मानसिक आवेग, आक्रोश ।

संरक्षक—[सं॰ पु॰] रक्षक, रक्षा करने वाला, देख-रेख और पालन-पोषण करने वाला, आश्रय या अभय देने वाला ।

संरक्षण—[सं॰ पु॰] रक्षा करना, बचाना, हानि या बुराई आदि से बचाना । निगरानी, देख-रेख, अधिकार, स्वत्व ।

संरक्षित - [सं॰ वि॰] भली भाँति बचाया हुआ ।

संराधन—[सं॰ पु॰] सेवा करना, चिन्तन करना, समाराधन ।

संलग्न—[सं॰ त्रि॰] सम्बन्ध, लगा हुआ, सटा या मिला हुआ, लड़ाई में गुथा हुआ ।

संलाप—[सं॰ पु॰] बात-चीत, कथोपकथन, वार्त्तालाप, धीरता युक्त होने वाला संवाद ।

संवत्—[सं॰ पु॰] साल, वर्ष, राजा शालिवाहन के समय से मानी गई वर्ष गणना, शाका, सन्, सम्राट् विक्रमादित्य के समय से चली हुई वर्ष गणना ।

संवत्सर—[सं॰ पु॰] वर्ष, साल । फ़सल ।

संवरण—[सं॰ पु॰] आच्छादित करना । संगोपन, छिपाना, छोपना, बंद करना, दूर रखना या करना, हटाना, किसी मनोवृत्ति को दबाना या रोकना, निग्रह, चुनना, विवाह के लिये कन्या का पति या वर चुनना ।

संवर्द्धक—[सं॰ पु॰] वृद्धि करने या बढ़ाने वाला ।

संवर्द्धन—[सं॰ पु॰] बढ़ना, बढ़ाना, पालन-पोषण, प्रवर्द्धन, विवर्धन ।

संवाद—[सं॰ पु॰] कथोपकथन, बातचीत, वार्त्तालाप, समाचार, हाल, चर्चा, मामला, प्रसंग ।

संवाददाता—[सं॰ पु॰] समाचार या हाल देने या भेजने वाला ।

संवारना—[सं॰] अलंकृत या व्यवस्थित करना, सजाना, ठीक या दुरुस्त करना । क्रम से रखना ।

संवाहन—[सं॰ पु॰] उठाकर ले जाना, ले चलना ढोना, परिचालन, चलाना, पहुँचाना ।

संविग्न—[सं॰ वि॰] व्यग्र, आतुर, उद्विग्न, घबराया हुआ, व्याकुल ।

संविद्—[सं॰ स्त्री॰] समझ, ज्ञान-शक्ति, बुद्धि, बोध, संवेदन, चेतना, महत्तत्व, अनुभूति, पूर्व निश्चित मिलन-स्थान, संकेत-मंदिर, नाम, युद्ध, लड़ाई, संपत्ति, हाल, वृत्तांत, समाचार ।

संविधान—[सं॰ पु॰] प्रबन्ध, रीति, रचना, सुव्यवस्था ।

संवेद—[सं॰ पु॰] अनुभव, ज्ञान, बोध, समझ, वेदना ।

संवेदन—[सं॰ पु॰] अनुभव करना, जताना, सुख, दुख आदि की प्रतीति करना, प्रगट करना ।

संवेदना—[सं॰ स्त्री॰] सुख-दुःख आद की अनुभूति, समवेदना ।

संवेद्य—[सं॰ वि॰] प्रतीति या अनुभव करने योग्य, जताने या बताने के योग्य । प्रकटनीय ।

संशय—[सं॰ पु॰] आशंका, संदेह, शंका, डर, भय, शक, संदेहालंकार ।

संशयात्मक—[सं॰ वि॰] जिससे संदेह या शक हो, संदिग्ध, संदेह-युक्त ।

संशयात्मा—[सं॰ पु॰] अविश्वासी, संदेही ।

संशयी—[सं॰ वि॰] शक्की, संशय या संदेह करने वाला ।

संशोधक—[सं॰ पु॰] संशोधन करने या सुधारने वाला, ठीक करने वाला, बुरी दशा से अच्छी दशा में लाने वाला ।

संशोधन—[सं॰ पु॰] शुद्ध करना, सुधारना, दुरुस्त करना । चुकता या अदा करना ।

संश्रय—[सं॰ पु॰] संबंध, संयोग, मेल, लगाव, शरण, आश्रय, सहारा, अवलंब, घर, गृह, मकान ।

संश्रयण—[सं॰ पु॰] सहारा या आश्रय लेना, अवलंब या शरण लेना ।

संश्लिष्ट—[सं॰ वि॰] आलिंगित, परिरंभित, सम्मिलित, मिश्रित, मिला हुआ, संयुक्त, कारकादि विभक्तियों की संज्ञा-शब्दों से मिली हुई अवस्था ।

संश्लेषण—[सं० पु०] एक में मिलाना, सटाना, टाँगना, अटकाना।

संसक्त—[सं० वि०] संयुक्त, संबद्ध, आसक्त, लिप्त, सहित।

संसरण—[सं० पु०] चलना, गमन करना, जगत, संसार, मार्ग, पथ, सड़क, राह।

संसर्ग—[सं० पु०] सम्पर्क, लगाव, संबंध, संग, साथ, मेल-मिलाप, स्त्री-पुरुष का सहवास या प्रसंग।

संसर्ग-दोष—[सं० पु०] सम्पर्क या सम्बन्ध से उत्पन्न बुराई या दोष। संग-साथ से पैदा हुआ दुर्गुण।

संसार—[सं० वि०] बराबर एक दशा से दूसरी में परिवर्त्तित होते रहना। रूपान्तरित होने वाला, जगत्, सृष्टि, दुनिया, जहान, मृत्युकाल, इहलोक, गृहस्थी, जन्म-मरण की परम्परा, आवागमन।

संसिक्त—[सं० वि०] भली भाँति सींचा हुआ, आर्द्र, गीला।

संसिद्ध—[सं० वि०] सब प्रकार सिद्ध, प्रमाणित, भली भाँति किया हुआ, मुक्त-पुरुष, निपुण, चतुर, कुशल।

संसृति—[सं० स्त्री०] जन्म-मरण की परम्परा, आवागमन, संसार, सृष्टि।

संसृष्ट—[सं० वि०] मिलित, मिश्रित, सम्बद्ध, मिला हुआ, परस्पर लगा हुआ, अंतर्गत।

संसृष्टि—[सं० स्त्री०] एक ही साथ उत्पत्ति या उद्भूति, आविर्भाव, मिश्रण, मिलावट, लगाव, सबंध। घनिष्टता। संग्रह या संचय, एकता करना, दो या अधिक अलंकारों का ऐसा मिश्रण कि सब पृथक् पृथक् जाने जा सकें।

संस्करण—[सं० पु०] शुद्ध या सही करना, सुधारना, द्विजातियों के स्मृति-विहित संस्कार करना। आवृत्ति।

संस्कर्त्ता—[सं० पु०] सस्कार करने वाला।

संस्कार—[सं० पु०] सुधार, शुद्ध करना। शोधना, दुरुस्त या ठीक करना, सजाना, सुधारना, परिष्कार, मन पर शिक्षादि का पड़ा हुआ प्रभाव, आत्मा के साथ रहने वाला पूर्व जन्म के कर्मों का प्रभाव, कर्मानुसार शुद्ध करना, द्विजातियों के लिये जन्म से मरण तक के आवश्यक सोलह कृत्य, मृतक क्रिया, मन में होने वाला वह प्रभाव जो इन्द्रियों के विषय-ग्रहण से हो।

संस्कृति—[सं० स्त्री०] शुद्धि, सफ़ाई, सुधार, संस्कार, सजावट, सभ्यता, परिष्कार, २४ वर्णों के वर्णिक छन्द।

संस्था—[सं० स्त्री०] स्थिति, व्यवस्था, ठहरने या स्थिर होने की क्रिया या भाव, विधि, विधान, मर्य्यादा, वृंद, समूह, झुण्ड, समाज, सभा, मंडली, मंडल, संगठित समुदाय।

संस्थान—[सं० पु०] स्थिति, सत्ता। निवासस्थान, स्थापन, बैठाना, जीवन-अस्तित्व, गृह, डेरा, गाँव, घर, जनपद, बस्ती, सार्वजनिक स्थान, योग, समष्टि, मृत्यु।

संस्थापक—[सं० पु०] संस्थापन करनेवाला, नियत करनेवाला।

संस्पर्श—[सं० पु०] स्पर्श, छूत।

संस्मरण—[सं० पु०] भली भाँति याद, पूर्ण रूप से स्मरण, ध्यान करना, याद करना।

संहत—[सं० वि०] खूब मिला, सर्वथा मिश्रित, जुटा और सटा हुआ, संहित, संयुक्त, कड़ा, घना, गठा हुआ, एकत्र।

संहनन—[सं० पु०] संहार, बध, मेल, मालिश।

संहरण—[सं० पु०] संहार, नाश, प्रलय, एकत्र करना।

संहार—[सं० पु०] अन्त, समाप्ति, विनाश, प्रलय, एक नरक, एक भैरव, ध्वंस, परिहार, निवारण, समेट कर बाँधना, एकत्रित करना, बटोरना, गूँथना, ग्रंथन, विमुक्त बाण को वापस लेना।

संहारक [सं० पु०] नाश करने वाला, विनाशक, मिटानेवाला, ध्वंसक।

संहित—[वि०] एकत्रित किया हुआ, संचित मिलाया हुआ।

संहिता—[सं० स्त्री०] संयोग, मेल, मिलावट, एकत्र, इकट्ठा किया हुआ, संयुक्त, सान्निधि, व्याकरण में संधि या दो वर्णों का मिलकर एक होना। पद पाठादि के नियमानुकूल क्रम वाला ग्रन्थ।

सकरा—[सं०] संकीर्ण, संकुचित, रोटी-दाल आदि कच्चा भोजन।

सकरुण—[सं० वि०] दयावान, कृपापूर्ण।

सकर्मक-क्रिया—[सं० स्त्री०] वह क्रिया जिसका फल या कार्य उसके कर्म पर पहुँच कर समाप्त हो, जैसे पीना, लिखना।

सकल—[सं० वि०] संपूर्ण, समस्त, सब, कुल।

सकाम—[सं० पु०] कामना या इच्छा सहित, पूर्णमनोरथ, काम वासना युक्त कामी, फल प्राप्ति की इच्छा से कर्म करनेवाला।

सकार—[सं० पु०] प्रातःकाल, कल।

सकारे, सकोरे—[सं०] प्रातःकाल, प्रभात, सवेरे।

सकाश—[सं० पु०] समीप, निकट, पास।

सकुचना—[सं०] लज्जा करना, संकोच करना, सिकुड़ना।

सकुचाना-[क्रि॰]संकोच करना, लज्जित होना, शरमाना ।

सक्ति--[सं॰ स्त्री॰] शक्ति, सामर्थ्य, बल, पौरुष, पराक्रम ।

सक्तु, सक्तुक—[सं॰ पु॰] शक्तु, सत्तू, भुने अन्न का आटा ।

सक्षम—[सं॰ त्रि॰] क्षमताशाली, क्षमतावान, सहनशील, समर्थ, क्षमता-युक्त ।

सखरा—[पु॰] कच्चा भोजन, दाल-भात-रोटी ।

सखा—[सं॰ पु॰] साथी, मित्र, संगी, सहचर, सहयोगी ।

सखीभाव-[सं॰ पु॰] एक कृष्ण-भक्ति-मार्ग या उपासना-विधि जिसमें भक्त अपने को इष्टदेव या उसकी प्रिया की सखी या सहेली मानकर उपासना करते हैं ।

सख्य—[सं॰ पु॰] मित्रता, मैत्री, सखापन, विष्णु-भक्ति का वह भाव जिसमें अपने को विष्णु या उसके अवतार का सखा मानकर भक्त उपासना करता है ।

सगबग—[त्रि॰] आर्द्र, तर, सराबोर, द्रवित, लथपथ, परिपूर्ण, भींगा हुआ ।

सगर—[सं॰ पु॰] अयोध्या के एक सूर्य-वंशीय धर्मात्मा प्रजा-पालक राजा, इनके ६० हजार पुत्र थे, राजा भगीरथ इनके ही वंशज हैं ।

सगर्भा-[सं॰ स्त्री॰] गर्भवती स्त्री । सगी बहिन, गर्भयुक्ता ।

सगा—[सं॰ वि॰] सहोदर, एक ही माता-पिता से उत्पन्न ।

सगाई—[स्त्री॰] ब्याह का निश्चय होना ।

सगुण—[सं॰ पु॰] गुणसहित, साकार ब्रह्म । सत्व, रज और तम तीनों गुणों से युक्त ब्रह्म का रूप । वह संप्रदाय जिसमें परमेश्वर को सगुण मानकर उसके अवतारों की पूजा होती है ।

सगुनौती—[स्त्री॰] शकुन बिचारने की क्रिया ।

सगोत्र—[सं॰ पु॰] एक गोत्र के लोग, सजातीय, एक ही कुल या वंश के लोग ।

सघन—[सं॰ वि॰] घना, गुंजान, अविरल, ठस, ठोस, निबिड़ ।

सचराचर—[सं॰ पु॰] संसार के चलनेवाले और न चलनेवाले स्थावर-जंगम ।

सचिंत—[सं॰ वि॰] चिंता-युक्त, चिन्तित ।

सचिक्कण—[सं॰ वि॰] बहुत चिकना ।

सचिव—[सं॰ पु॰] मित्र, सहायक, मंत्री ।

सचेत—[सं॰ त्रि॰] चैतन्य, जो होश में हो, जिसमें चेतना हो । चेतन, चेतनायुक्त, सजग, सावधान, सतर्क, चतुर ।

सचेतन—[सं॰ पु॰] जिसमें चेतना हो, जो जड़ न हो, चेतन, चैतन्य ।

सचेष्ट—[सं॰ त्रि॰] जिसमें चेष्टा हो, जो चेष्टा करे ।

सच्चरित, सच्चरित्र—[सं॰ वि॰] अच्छे चरित्र या चरित वाला, सुकर्मी ।

सच्चिदानन्द—[सं॰ पु॰] सत्, चित् और आनन्द से युक्त ब्रह्म । परमात्मा, परमेश्वर ।

सजग—[सं॰ वि॰] सचेत, सावधान, सतर्क ।

सजधज—[स्त्री॰] सजावट, बनाव, शृंगार ।

सजन—[सं॰ पु॰] सज्जन, सुजन, भला आदमी, पति, स्वामी, भर्त्ता, प्रियतम, मित्र ।

सजना—[सं॰ क्रि॰] सुसज्जित होना, शृंगार करना, अलंकृत करना, शोभा देना, अच्छा लगना ।

सजनि, सजनी—[स्त्री॰] सखी, सहेली, सहचरी ।

सजल—[सं॰ त्रि॰] जलयुक्त, जल से परिपूर्ण, अश्रुपूर्ण, आँसुओं से भरी आँखें ।

सजला-[सं॰] चार भाइयों में से तीसरा भाई, मँझले से छोटा ।

सजावट—[स्त्री॰] सज्जित होने का भाव, धर्म्म, सजाव, शृंगार, बनावट ।

सजीव—[सं॰ वि॰] जिसमें जीव या जान हो, स्फूर्तिवान, ओजवान, जीवित ।

सज्जन—[सं॰ पु॰] सुजन, भला मानुस, आर्य, श्रेष्ठ पुरुष, प्रियतम ।

सज्जा—[सं॰ स्त्री॰] सजाने का भाव, सजावट, वेष-भूषा । शय्या, पलँग ।

सज्जित—[सं॰ त्रि॰] अलंकृत, सजा हुआ, आवश्यक पदार्थों से युक्त । सँवारा हुआ ।

सज्ञान—[सं॰ वि॰] ज्ञानी, ज्ञानयुक्त, बुद्धिमान्, चतुर, सजग, सावधान ।

सटकारा—[वि॰] लंबा और चिकना, साफ, बाँसादि ।

सटकारी—[स्त्री॰] पतली और लम्बी छड़ी, छोटी कंकड़ी ।

सटना—[क्रि॰] दो चीजों का पार्श्व लगा कर मिलना, चिपकना, मारपीट होना, समाना, घुसना ।

सटपटाना—[क्रि॰] सकुचना, सिकुड़ जाना, डर जाना, दब जाना, भौंचक्का होना, संशय में पड़ जाना ।

सटीक—[सं॰ वि॰] वह पुस्तक जिसमें मूल के साथ उसकी टीका भी हो । व्याख्या या अर्थ सहित । पूर्णतया ।

सठियाना—[क्रि०] साठवर्ष का होना, बुड्ढा होना, वृद्धावस्था से मन्दबुद्धि होना।

सठेरा—[पु०] सन निकाला हुआ डंठल।

सत्—[सं० पु०] परमेश्वर, ब्रह्म, सत्य, नित्य, स्थायी, शुद्ध श्रेष्ठ, पवित्र, विद्वान, ज्ञानी, पण्डित, साधु, धीर।

सत—[सं० वि०] सत्य, सार, मूल, तत्व। सभ्यतापूर्ण धर्म। बल, पौरुष, जीवन-शक्ति।

सतगुरु—[सं० पु०] अच्छा गुरु, परमात्मा।

सतत—[सं०] संतत, सदा, निरंतर। हमेशा, सदैव।

सतनजा—[पु०] भिन्न प्रकार के सात अन्नों का समूह या मेल।

सतयुग—[सं० पु०] सत्युग। चार युगों में से पहला युग। कृतयुग।

सतराना [सं० क्रि०] क्रोध या कोप करना रुष्ट होना, अप्रसन्न या नाराज होना।

सतरौंहा—[वि०] रोषपूर्ण, रुष्ट, क्रोधित, अप्रसन्न, कुपित, क्रोध या कोप-सूचक।

सतर्क—[सं० वि० सजग, सावधान, सचेत, युक्ति या तर्क से पुष्ट तर्क-युक्त।

सतवंती—[वि०] पतिव्रता, सती, सतवाली।

सतसंग—[सं० पु०] सत्संग, अच्छा साथ, सुसंगति।

सतसंगति—[स्त्री०] सत्संगति।

सतसई—[स्त्री०] सात सौ पद्योंवाला ग्रन्थ। सप्तशती, सतसैया।

सतिया—[स्त्री०] मंगल-सूचक एक चिह्न, स्वस्तिक।

सती [सं० वि०] पतिव्रता, साध्वी, दक्ष प्रजापति की कन्या। मृत पति के साथ जीते जी चिता में जल जानेवाली स्त्री।

सतीत्व—[सं० पु०] पातिव्रत्य, सती होने का भाव।

सतीर्थ—[सं० वि०] सहपाठी, साथ का पढ़नेवाला।

सतोगुण [पु०] तीन गुणों में से प्रथम, सत्वगुण, सुकर्म में लगानेवाला गुण।

सत्—[सं० पु०] सत्य, सार, ब्रह्म, सत्य, ठीक, प्रशस्त।

सत्कर्म—[सं० पु०] सुकर्म, धर्म या पुण्य का कार्य, अच्छा कार्य।

सत्कार—[सं० पु०] सम्मान, आदर, आतिथ्य श्रेष्ठ कार्य।

सत्कार्य— सं० वि०] सत्कार करने योग्य, उत्तम-कर्म।

सत्कीर्त्ति—[सं० पु०] सुयश, नेकनामी, सुकीर्त्ति।

सत्कुल—[सं० पु०] उत्तम या श्रेष्ठ वंश, अच्छा या बड़ा परिवार।

सत्त—[सं० पु०] सारांश, सत, सार-भाग मुख्य तत्व, काम की वस्तु।

सत्ता—[सं० स्त्री०] स्थिति, अस्तित्व, होने का भाव, शक्ति, अधिकार।

सत्ताधारी—[सं० पु०] अधिकारी, हाकिम।

सत्तू—[पु०] सित्तू, सेतुआ, भुने हुए चने और जौ का आटा।

सत्पथ, सत्पंथ—[सं० पु०] सन्मार्ग, उत्तम मार्ग, सत्पंथ, अच्छी चाल, सदाचार, एक ग्रन्थ-विशेष।

सत्पात्र—[सं० पु०] सुपात्र, सदाचारी, दानादि के योग्य, अच्छा व्यक्ति, विद्वान, सुकर्मी।

सत्पुरुष—[सं० पु०] भला आदमी, परमेश्वर।

सत्य—[सं० वि०] सच, ठीक, सही, यथार्थ, वास्तविक, तथ्य, असल। धर्म की बात।

सत्यकाम—[सं० वि०] सत्यानुरागी, सत्य का प्रेमी, सत्येच्छु।

सत्यता—[सं० स्त्री०] सचाई, यथार्थता, वास्तविकता।

सत्यधाम—[सं० पु०] विष्णुलोक, स्वर्ग, वैकुण्ठ, परमधाम।

सत्ययुग—[सं० पु०] चार युगों में से प्रथम युग, कृतयुग।

सत्यवती—[सं० स्त्री०] मत्स्यगंधा नाम की धीवरकन्या तथा व्यास या कृष्ण द्वैपायन जी की माता, सत्यवाली।

सत्यवादी—[सं० वि०] सच बोलने या कहनेवाला। अपनी बात को पूरा करनेवाला। सत्यभाषी।

सत्यवान्—[सं० पु०] शाल्व देश के राजा द्युमत्सेन का पुत्र और पतिव्रता सावित्री का पति जिसे उसने अपने सतीत्व के प्रभाव से यम से बचाया।

सत्यव्रत [सं० पु०] सच बोलने का नियम या प्रण।

सत्यसंध—[सं० वि०] सत्य-प्रतिज्ञ, वचनों को पूरा करनेवाला।

सत्यग्रह, सत्याग्रह—[सं० पु०] किसी सच्चे या न्यायसंगत पक्ष की स्थापना के लिए सदा शांतिपूर्वक लगातार अपना हठ निबाहना। सत्य के पक्ष पर आग्रह करना।

सत्यानृत—[सं० पु०] वाणिज्य, व्यापार, सौदागरी।

सत्र [सं० पु०] यज्ञ, गृह, धन, सदावर्त्त, छत्र। दीन, असहायों को जहाँ भोजनादि बँटे। एक सोमयाग।

सत्व [सं० पु०] सत्ता, अस्तित्व, मूल, तत्व, सारांश, सार, चित्त की प्रवृत्ति, आत्म-तत्व, मनोवृत्ति, चित्तत्व, चैतन्य, जीव, तत्व, प्राण। तीन गुणों

में से प्रथम गुण, सतोगुण। [स्त्री०] शक्ति, पौरुष पवित्रता।

सत्वगुण—[सं० पु०] प्रकृति के तीन गुणों में से प्रथम गुण, जीव को सुकर्मों की ओर प्रवृत्त करनेवाला।

सत्वर—[सं०] शीघ्र, जल्द, तुरंत, त्वरित।

सत्संग—[सं० पु०] सज्जनों या साधु पुरुषों की संगति, भले मनुष्यों का साथ। सत्पुरुषों के साथ उठना-बैठना।

सत्संगति—[सं० स्त्री०] अच्छा साथ, साधु पुरुषों का साथ।

सत्संगी—[सं० वि०] मेल-मिलाप रखनेवाला अच्छे सग में रहनेवाला।

सथिया सतिया [सं० पु०] मंगल-सूचक या ऋद्धि-सिद्धि-दायक चिह्न। फोड़ों या आँख के रोगों की चिकित्सा करनेवाला। जर्राह।

सद—[सं० वि०] नवीन, ताजा। तुरन्त, शीघ्र, सत्वर, सद्यः, त्वरित।

सदन—[सं० पु०] गृह, मकान, घर, मन्दिर, स्थिरता, विराम। एक राम भक्त कसाई, सदना।

सदय—[सं० वि०] दयावान, दयालु, दयायुक्त।

सदर्थ—[सं० पु०] सत्यार्थ, सदुद्देश्य।

सदसद्विचार—[सं० पु०] सत्यासत्य निर्णय सत्य-झूठ का विचार।

सदसद्विवेक—[सं० पु०] भले-बुरे या सत्यासत्य का ज्ञान, अच्छे-बुरे की पहचान।

सदस्य—[सं० पु०] सभासद, सभा या समाज का मनुष्य, यज्ञ करने वाला।

सदा—[सं० अव्य०] सदैव, सर्वदा, निरंतर, सतत, हमेशा, नित्य, लगातार।

सदाचरण, सदाचार—[सं० पु०] अच्छा व्यवहार, शुद्ध या शुभ आचरण, भलमनसाहत।

सदाचारी—[सं० पु०] धर्मात्मा, अच्छे व्यवहार या आचरणवाला।

सदादेश—[सं० पु०] श्रेष्ठ आज्ञा।

सदाफल [सं० वि०] सदैव फलने वाला पेड़, ऊमर, गूलर, श्रीफल, बेल, एक प्रकार का नींबू, नारियल।

सदाव्रत—[सं० पु०] दीनों को नित्य भोजन देना, दुखियों को दिया गया भोजन।

सदाशय—[सं० वि०] उदार और श्रेष्ठ भाव वाला व्यक्ति, सज्जन, भलामानुस, महाशय।

सदाशिव—[सं० पु०] नित्य कल्याणकारी, महादेव जी।

सदासुहागिन—[स्त्री०] वेश्या, पतुरिया, रंडी फूलों का एक पौधा।

सदुपदेश—[सं० पु०] उत्तम शिक्षा, अच्छी सीख या सलाह, सुन्दर उपदेश।

सदृश—[सं वि०] समान, तुल्य, सम, बराबर, अनरूप।

सदेह—[सं०] विना शरीर छोड़े, सशरीर।

सदैव—[सं०] सर्वदा, सदा।

सदोष—[सं० वि०] दोष या अपराध-युक्त, दोषी, अपराधी।

सद्गति—[सं स्त्री०] मरने पर उत्तम लोक का निवास, सुगति, परमगति।

सद्भाव—[सं० पु०] सच्चा और उत्तम भाव, सदाशय। प्रेम, प्रीति और हित का भाव, मैत्री, मेल-जोल, अच्छी नियत, सद्विचार।

सद्भावना—[सं० स्त्री०] सुन्दर और श्रेष्ठ भावना।

सद्म—[सं० पु०] सदन, गृह, घर, मकान, संग्राम, युद्ध, भूमि और आकाश।

सद्य—[सं०] अभी, सत्वर, तुरन्त, शीघ्र, आज ही।

सद्यःप्रसूता—[सं० स्त्री०] वह स्त्री जिसने तत्काल प्रसव किया हो।

सद्यःस्नात—[सं०] तत्काल या अभी नहाया हुआ।

सधना—[हि० क्रि०] पूरा या सिद्ध होना, काम होना, मतलब निकलना, अभ्यस्त होना, हाथ बैठना, प्रयोजन की सिद्धि के अनुकूल होना, गौं पर चढ़ना, निशाना ठीक बैठना।

सधवा—[सं० स्त्री०] वह स्त्री जिसका स्वामी जीता हो, सुहागिन, सौभाग्यवती।

सन—[सं० पु०] एक पौधा जिसकी छाल के रेशों से रस्सी आदि चीजें बनती हैं। स्तब्ध, चुप, मौन।

सनक—[स्त्री०] किसी बात की धुन, मन की झोंक, जनून, मौज।

सनकाना [हि] सनक चढ़ाना, इशारा करना, सैन करना।

सनत्कुमार—[सं० पु०] वैधात्र, ब्रह्माजी के चार मानस पुत्रों में से एक पुत्र।

सनाका—[वि०] आश्चर्यादि से स्तब्ध, मौन, सवेग वायु प्रवाह का शब्द।

सनातन—[सं० पु०] प्राचीन काल या पुराना समय, प्राचीन परम्परा,, बहुत समय से चला आया कार्य-क्रम, ब्रह्मा, विष्णु, शिव, ब्रह्म, परमात्मा। बहुत पुराना, अत्यन्त प्राचीन, जो बहुत समय से चला आता हो।

सनातनपुरुष—[सं० पु०] विष्णुजी, परमेश्वर, ब्रह्म, पुराण पुरुष।

सनातनी—[सं० पु०] जो अत्यन्त प्राचीन काल से चला आता हो, ईश्वर, सनातन-धर्मावलम्बी।

सनाथ—[सं० वि०] वह पुरुष जिसके कोई रक्षक या स्वामी हो।

सनाह—[सं० पु०] कवच, बकतर, जिरह-बख्तर, लोहे का अँगरखा।

सनीचर—[पु०] एक ग्रह, रविवार से पूर्व का एक दिन।

सनेह—[पु०] प्रेम, नेह, प्यार, तेल ।

सन्न—[वि०] जड़, भयादि से स्तब्ध, संज्ञाशून्य, भौचक ।

सन्नद्ध—[सं० वि०] तैयार, उद्यत, कटिबद्ध, जुड़ा हुआ ।

सन्नाटा—[सं० पु०] नीरवता, निस्तब्धता, निःशब्दता, निर्जनता, एकांतता, शून्यता, निरालापन, स्तब्धता ।

सन्नाह-[सं० पु०] लोहे का अंगरखा, जिरह-बख्तर, कवच ।

सन्निकट—[सं०] समीप, पास, निकट, अति समीप ।

सन्निकर्ष—[सं० पु०] नाता, लगाव, रिश्ता, सम्बन्ध, समीपता ।

सन्निधान—[सं० पु०]सामीप्य, समीपता, निकटता, स्थापित करना ।

सन्निधि—[सं० स्त्री०] संहिता, निकटता, समीपता, पड़ोस ।

सन्निपात—[सं०पु०] एक ही साथ गिरना या पड़ना, संयोग, समाहार, मिलाप, मेल, त्रिदोष । बात, पित्त, कफ तीनों का एक साथ बिगड़जाना, सरसाम ।

सन्निविष्ट—[सं० वि०] एक ही साथ जमा या बैठा हुआ, धरा या रखा हुआ, प्रतिष्ठित । स्थापित, समीपवर्ती, पास या निकट का पैठा हुआ ।

सन्निवेश—[सं० पु०] स्थित होना, बैठने-बैठाने की क्रिया, जमना, जड़ना, लगाना, समाना, रखना, धरना, निवास-स्थान, घर, इकट्ठा होना,जुटना, समाज, समूह, गढ़न, गठन ।

सन्निहित—[सं० वि०] साथ या पास रखा हुआ, समीपस्थ, निकटस्थ, अन्तर्गत ।

सन्मार्ग—[सं० पु०] सत्पथ, श्रेष्ठमार्ग ।

सन्मान—[सं०पु०] सम्मान, आदर-सत्कार ।

सन्मुख—[सं०] सम्मुख, सामने ।

सन्यास—[सं० पु०] संसार से अलग होने की अवस्था, त्याग, वैराग्य, चौथा आश्रम ।

सन्यासी—[सं० पु०] त्यागी, विरागी, जिसने संन्यास ले लिया हो, चौथे आश्रम वाला ।

सपक्ष—[सं० वि०] जो अपने पक्ष में हो, पोषक, समर्थक । सहायक, साथी, मित्र, पंखवाला ।

सपत्नी—[सं० स्त्री०] एक ही पति की दूसरी स्त्री, सौत ।

सपत्नीक—[सं० वि०] स्त्री-सहित ।

सपदि—[सं०] तत्काल, तुरन्त, शीघ्र, सत्वर, त्वरित ।

सपरना—[सं०] काम पूरा या समाप्त होना, निबटना, हो सकना, पार लगना, जा सकना, स्नान करना, नहाना ।

सपरिकर—[सं० वि०] सेवकों या या अनुचर वर्ग के साथ, ठाट-बाट के साथ, कमर में फेंट बाँधे हुए, कटिबद्ध, सन्नद्ध ।

सपाट—[सं० वि०] समतल, बराबर, हमवार, चिकना ।

सपाटा—[सं० पु०] दौड़ने या चलने का वेग, तेजी, झोंका, झपटा ।

सपिंड—[सं० पु०] एक ही वंश का व्यक्ति जो एक पितरों को पिंड-दान । करने में संमिलित हो ।

सपूत—[सं० पु०] अच्छा लड़का, सुपुत्र ।

सपूती—[हि०] योग्यता, लायकी । योग्य पुत्र उत्पन्न करनेवाली माता ।

सप्त—[सं० वि०] गिनती में सात ।

सप्तक—[सं० पु०] सात पदार्थों का समूह, सात स्वरों का समूह ।

सप्तजिह्वा—[सं० पु०] सप्तर्चिषा, सात जीभोंवाला, अग्नि, आग ।

सप्तदीप—[सं० पु०] पृथ्वी में स्थल के सात मुख्य बड़े विभाग, जम्बू, प्लक्ष, कुश, शाल्मलि, क्रौंच, शाक, और पुष्कर द्वीप ।

सप्तपदी—[सं० स्त्री०] भाँवर, ब्याह, विवाह में वर-वधू की अग्नि के चारों ओर परिक्रमा की रीति ।

सप्तपर्णी—[सं० स्त्री०] लज्जावंती लता, लजालू ।

सप्तपाताल—[सं० पु०] पृथ्वी के नीचे के सात लोक, अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल, पाताल ।

सप्तपुर—[सं० स्त्री०] सात पवित्र नगर या तीर्थ । अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, काशी, कांची, अवंतिका, द्वारका ।

सप्तर्षि—[सं० पु०] सात ऋषियों का समूह या मंडल, गौतम, भारद्वाज, विश्वामित्र, यमदग्नि, वसिष्ठ, कश्यप, अत्रि । उत्तर दिशा में उदय होने वाले सात तारे जो ध्रुवतारे के चारों ओर घूमते दीखते हैं ।

सप्तशती—[सं० स्त्री०] सात सौ का समूह, सात सौ छंदों का समूह, सतसई ।

सप्तसागर—[सं० पु०] सात समुद्र, क्षीर, दधि, घृत, इक्षु, मधु, मदिरा, लवण । सप्तोदधि, सप्तांबुधि ।

सप्ताश्व—[सं० पु०] सात घोड़ों के रथ में बैठनेवाले सूर्य ।

सप्तस्वर—[सं० पु०] सात प्रकार की ध्वनियाँ, सात स्वर ।

सप्ताह—[सं० पु०] सात दिनों का समूह ।

सफल—[सं० वि०] फलयुक्त, परिणामसहित, फलवान, फलदायक, कृतार्थ, कृतकार्य ।

सफलता—[सं० स्त्री०] सिद्धि, पूर्णता, कृतकार्यता, सफल होने का भाव ।

सफलीभूत—[सं० वि०] जो सिद्ध

या पूर्ण हुआ हो, जो सफल या सार्थक हुआ हो।

सबल—[सं० वि०] पराक्रम या पौरुष सहित, बलयुक्त, सेनायुक्त।

सबलता—[सं० स्त्री०] पौरुष, बल, पराक्रम।

सभय—[सं० वि०] सभीत, भययुक्त।

सभा—[सं० स्त्री०] समाज, गोष्ठी, समिति, परिषद्, वह संस्था जो किसी विचार करने के लिये संगठित हो।

सभाग, सभागा—सुन्दर, भाग्यवान, सौभाग्यशाली।

सभापति—[सं० पु०] सभा का प्रधान नेता, सभा का मुखिया, चेयरमैन।

सभासद—[सं० पु०] सदस्य, सामाजिक, किसी सभा में सम्मिलित हो भाग लेनेवाला।

सभिक—[सं० पु०] जुआ खेलनेवाला, जुआ का प्रधान।

सभीत—[सं० वि०] सभय, भयभीत, डरा हुआ।

सभ्य—[सं० पु०] सदस्य, सभासद, सामाजिक, उत्तम व्यवहारवाला। शिष्ट।

सभ्यता—[सं० स्त्री०] सभ्य होने का भाव, सदस्यता, समाजिकता, सुशिक्षित और सज्जन होने की अवस्था, शिष्टता।

समंजस—[सं० वि०] उचित, ठीक।

समंत—[सं० पु०] सीमा, सिरा, किनारा।

सम—[सं० त्रि०] तुल्य, बराबर, समान। सदृश, सब, चौरस।

समकक्ष—[सं० वि०] तुल्य, एक कोटि का, समान, बराबर।

समकटिबन्ध—[सं० पु०] शीत कटिबंध और ऊष्ण कटिबंध के बीच का भूखंड।

समकालीन—[सं० वि०] जो एक ही समय में हो। एक ही समय वाले।

समकोण—[सं० वि०] वह कोण जो ९० अंश का हो। समान कोने।

समक्ष—[सं०] सामने, सम्मुख, सन्मुख।

समगम—[सं० वि०]समान, बराबर, तुल्य।

समग्र—[सं० वि०] पूर्ण, समस्त, सब, कुल, सम्पूर्ण।

समचर—[सं० वि०] एक-सा या समान आचार-व्यवहार करने वाला।

समझ—[स्त्री०] ज्ञान, बुद्धि।

समझदार—[वि० हि०] बुद्धिमान, ज्ञानी।

समझौता—[हि० पु०] परस्पर का निपटारा, सुलह।

समतल—[सं० त्रि०] जिसकी सतह बराबर या हमवार हो, साफ, चिकना।

समता—[सं० स्त्री०] सादृश्य, तुल्यता, समानता, बराबरी।

समथल—[सं० त्रि०] समतल भूमि।

समदर्शी—[सं० पु०] सबको समान या एक सा देखने वाला।

समदृष्टि—[सं० स्त्री०] सबको समान दृष्टि से देखना।

समन्तात्—[सं०] चारों ओर, सब तरफ से।

समन्वय—[सं० पु०] मिलाप, मिलन, संयोग, मेल, कार्य-कारण का प्रवाह, अनुगतता।

समन्वित—[सं० वि०] संयुक्त, मिला हुआ।

समपाद—[सं० पु०] वह छन्द जिसके चारों चरण एक से हों।

समबल—[सं० वि०] समान बल, पौरुष या पराक्रम वाला।

समभाव—[सं० पु०] समता, बराबरी का भाव, समानता।

समय—[सं० पु०] अवसर।

समर—[सं० पु०] युद्ध, संग्राम, लड़ाई।

समर-भूमि—[सं० स्त्री०] संग्राम-भूमि, युद्ध-क्षेत्र, रण-स्थली।

समरस्थल—[सं० पु०] समरभूमि।

समरांगण—[सं० पु०] समरभूमि, संग्राम-स्थल, युद्ध-क्षेत्र।

समर्थ—[सं० वि०] शक्तिशाली, बली, क्षमताशील, योग्य, उपयुक्त।

समर्थक—[सं० वि०] समर्थन करने वाला, अनुमोदक।

समर्थता—[सं० स्त्री०] शक्ति, बल, सामर्थ्य, योग्यता, क्षमता।

समर्थन—[सं० पु०] किसी के मत का पोषण करना, किसी बात के ठीक होने का प्रमाण देना, विवेचन, अनुमोदन।

समर्थना—[सं० स्त्री०] अभ्यर्थना, प्रार्थना, निवेदन, सिफारिश।

समर्पक—[सं० वि०] समर्पण करने या देने वाला।

समर्पण—[सं० पु०] सादर भेंट करना, सत्कार या प्रतिष्ठापूर्वक देना, उपहार या दान देना।

समर्पित—[सं० त्रि०] समर्पण किया या दिया हुआ, जो समर्पण किया या दिया गया हो। जो सौंपा गया हो।

समल—[सं० वि०] दोष या मल से युक्त, मलिन, मैला, गंदा, पाप-सहित, विकार-युक्त।

समवर्त्ती—[सं० वि०] जो समीप स्थित हो, जो समान रूप से स्थित हो।

समवाय—[सं० पु०] समुदाय, समूह, वृंद, झुंड, भीड़, मिलित, नित्य सम्बन्ध।

समवायी—[सं० वि०] जिसमें नित्य या समवाय सम्बन्ध हो।

समवेत—[सं० वि०] जमा या एकत्र, संचित।

समवेदना—[सं० स्त्री०] किसी की

विपत्ति या दुःखदशा में समानरूप से साथ देना या तदनुभव करना।

समशीतोष्ण-कटिबन्ध —[सं० पु०] वे भूमि-भाग जो शीत-कटिबंध और उष्ण-कटिबंधों या कर्क और मकर रेखाओं के बीच में उत्तरी और दक्षिणी वृत्त तक हैं।

समष्टि—[सं० स्त्री०] समाहार, सब का समूह, समस्त, सब का सब।

समस्त—[सं० वि०] सम्पूर्ण, समग्र, सारा, सब, कुल, संयुक्त, समास-युक्त।

समस्थली —[सं० स्त्री०] गंगा-यमुना नदियों के बीच का देश, अंतर्वेद। समथल भूमि।

समस्या—[सं० स्त्री०] कठिन या जटिल प्रश्न, गूढ़ या गहन बात, उलझन, कठिन प्रसंग, किसी पद्य का अंतिमांश जिसके आधार पर पूर्ण पद्य रचा जाता है। संघटन, मिश्रण, मिलाने का भाव या क्रिया।

समस्यापूर्त्ति—[सं० स्त्री०] किसी समस्या के सहारे किसी पद्य को पूर्ण करना।

समाई—[हि० स्त्री०] औकात, गुंजाइश, विस्तार, सामर्थ्य, शक्ति।

समाकुल—[सं० वि०] व्याप्त, घिरा, दुखी व्याकुल, विकल, आकुल।

समागत—[सं० वि०] आया हुआ, प्राप्त।

समागम —[सं० पु०] आना, आगमन, मिलना, भेंट, मुलाकात, मैथुन।

समाचार—[सं० पु०] संवाद, हाल, खबर, समान व्यवहार।

समाचारपत्र—[सं० पु०] अखबार, गज़ट, वह पत्र जिसमें अनेक प्रकार के समाचार हों।

समाज—[सं० पु०] समूह, सभा, समिति, दल, वृन्द, समुदाय, संस्था, एक स्थान-निवासी तथा समान विचाराचार वाले लोगों का समूह, किसी विशेष उद्देश्य या कार्य के लिये अनेक व्यक्तियों की बनाई या स्थापित की हुई सभा, आर्य-समाज।

समादर —[सं० पु०] सम्मान, आदर, सत्कार।

समादृत—[सं० वि०] सम्मानित, समादर किया हुआ।

समाधान—[सं० पु०] समाधि, किसी के मन के संदेह को मिटाने वाली बात या काम, विरोध मिटाना, निराकरण, निष्पत्ति, समझाना, धैर्यप्रदान, तसल्ली, नायक या नायिका का अभिमत-सूचक कथा-बीज का पुनः प्रदर्शन-विशेष। मन को सब ओर से हटा ब्रह्म में लगाना।

समाधि—[सं० स्त्री०] ध्यानयोग की क्रिया-विशेष, समर्थन, प्रतिज्ञा, नींद, योग का अंतिम फल जिसमें योगी के सब दुःख दूर हो जाते तथा उसे अनेक दिव्य शक्तियाँ प्राप्त हो जाती हैं। काव्य में दो घटनाओं का दैव-योग से एक ही समय में होना सूचित करने वाला एक गुण। एक अर्थालंकार जहाँ किसी आकस्मिक हेतु से कठिन कार्य का सहज ही में सिद्ध होना कहा जाता है, मृतक के गाड़ने का स्थान। ध्यान। योग।

समाधित—[सं० वि०] समाधिप्राप्त योगी, वह योगी जिसने समाधि लगाई हो।

समाधिस्थ—[सं० वि०] जिस योगी ने समाधि लगाई या ली हो। समाधिप्राप्त।

समान —[सं० वि०] सदृश, तुल्य, बराबर, सम। गुण, रूप, रंग, मूल्य, मान, एवं महत्वादि में एकसे।

समानता-[सं०स्त्री०] सादृश्य, तुल्यता, बराबरी, समता।

समानांतर—[सं० पु०] जिसके बीच में सदा बराबर दूरी रहे, तुल्य दूरी।

समानार्थ, समानार्थक—[सं० पु०] वे शब्द जिनके अर्थ एकसे हों। पर्यायवाची शब्द।

समापक—[सं० पु०] पूर्ण या समाप्त करने वाला, पूर्णक।

समापन—[सं० पु०] समाप्त या पूरा करना, इति करना, बध, अंत करना, मार डालना।

समापिका—[सं० स्त्री०] वह क्रिया जिससे किसी कार्य की पूर्णता या समाप्ति समझी जाय।

समाप्त —[सं० वि०] जो पूरा हो गया हो, पूर्ण।

समाप्ति —[सं० स्त्री०] पूर्ति, पूरा या तमाम होने का भाव, खतम होना, अंत। इतिश्री।

समायोग [सं० पु०] संयोग, मेल, लोगों का एकत्रित होना।

समारंभ—[सं० पु०] भलीभाँति आरंभ या शुरू होना, समारोह।

समारोह—[सं० पु०] बृहद् योजना, धूम-धाम, तड़क-भड़क, बड़ी सजधज का कोई कार्य या उत्सव।

समालोचक—[सं० पु०] समालोचना करने वाला।

समालोचन—[सं० पु०] आलोचना, समालोचन, विचार, विवेचन, देखभाल।

समालोचना —[सं०स्त्री०] आलोचना, भलीभाँति देख-भाल करना, जाँचना, गुण-दोष देखना, गुण-दोष-विवेचना से पूर्ण लेख या कथन।

समालोच्य —[सं० वि०] समालोचना करने योग्य, समालोचनीय।

समावर्तन —[सं० पु०] लौट आना, वापस आना, वैदिक काल का एक संस्कार जो ब्रह्मचारी के निश्चित समय तक गुरुकुल में विद्याध्ययन कर स्नातक

हो आने पर ब्याह के प्रथम होता था।

समाविष्ट—[सं॰ वि॰] व्याप्त, समाया हुआ, व्यापक, जिसका समावेश हुआ हो, प्रविष्ट।

समावेश—[सं॰ पु॰] प्रवेश, एक वस्तु का दूसरी के भीतर होना, मेल, मनोनिवेश, एक स्थान पर साथ रहना, अन्तर्गत होना।

समास—[सं॰ पु॰] संग्रह, संक्षेप, संयोग, समर्थन, मेल, सम्मिलन, मिश्रण, दो या अधिक पदों के अपनी अपनी विभक्तियों को छोड़ कर नियमानुसार मिल जाने और उनसे एक पद बन जाने की क्रिया को समास कहते हैं।

समासोक्ति—[सं॰ स्त्री॰] एक अर्थालंकार, जहाँ प्रस्तुत से अप्रस्तुत वस्तु का ज्ञान समान विशेषण और समान कार्य के द्वारा हो।

समाहरण—[सं॰पु॰] समुदाय, समूह, संग्रह, राशि, ढेर, बहुत से पदार्थों का एक ठौर इकट्ठा करना, समाहार।

समाहर्त्ता—[सं॰ पु॰] मिलाने या इकट्ठा करने वाला, संग्रह करने वाला, राज-कर का एकत्रित करने वाला कर्मचारी। तहसीलदार।

समाहार—[सं॰ पु॰] समूह, संग्रह, पुंज, ढेर, राशि, मिलना, संचय, जमघट, बहुत से पदार्थों का एक ही स्थान पर एकत्र होना।

समाहित—[सं॰ वि॰] समाधिस्थ, सावधान, एक अलंकार।

समाहूत—[सं॰ वि॰] बुलाया हुआ।

समिति—[सं॰ स्त्री॰] समाज, सभा, प्राचीन काल में राजनीति के विषयों पर विचार करनेवाली सभा। किसी खास काम के लिये बनाई हुई सभा।

समिध—[सं॰ पु॰] अग्नि।

समिधा, समिधि—[सं॰ स्त्री॰] हवन या यज्ञ में जलाने की लकड़ी।

समीकरण—[सं॰ पु॰] समान या बराबर करना, ज्ञात से अज्ञात राशि का मूल्य ज्ञात करने की एक क्रिया।

समीक्षक—[सं॰ वि॰] समीक्षा करनेवाला।

समीक्षा—[सं॰ स्त्री॰] भलीभाँति देखना-भालना, विवेचना, आलोचना, समालोचना, प्रयत्न, मीमांसाशास्त्र, बुद्धि।

समीचीन—[सं॰ वि॰] यथार्थ, ठीक, उपयुक्त, उचित, मुनासिब।

समीप—[सं॰ वि॰] पास, निकट।

समीपवर्त्ती—[सं॰ वि॰] निकट या समीप का।

समीर [सं॰ पु॰] अनिल, वायु, पवन।

समीरण—[सं॰ पु] अनिल, पवन, समीर, वायु, हवा।

समुचित—[सं॰ वि॰] उचित, ठीक, समीचीन, उपयुक्त, यथोचित, यथायोग्य।

समुच्चय—[सं॰ पु॰] समुदाय, समूह, संग्रह, वृंद, राशि, पुंज, ढेरी। मिलान, मिश्रण। एक अर्थालंकार।

समुज्ज्वल—[सं॰ वि॰] शुभ, बहुत ही साफ, अति उज्ज्वल, धवल, बहुत स्वच्छ, शुक्ल।

समुत्थान—[सं॰ पु॰] उत्थान, उठने की क्रिया, उन्नति, उदय, आरंभ, उत्पत्ति रोग का निदान।

समुत्थापन—[सं॰ पु॰] सब प्रकार उठना, उन्नत करना।

समुत्थित—[सं॰ वि॰] उठा हुआ, उन्नत।

समुद—[सं॰ पु॰] समुद्र, सागर, सिंधु। आनन्द या हर्षयुक्त।

समुदाय—[सं॰पु॰] समूह, झुंड, ढेर।

समुद्र—[सं॰ पु॰] अंबुधि, सागर, सिंधु, उदधि, पयोधि, नदीश।

समुन्नत—[सं॰ वि॰] सब प्रकार से ऊँचा उठा हुआ, बहुत ऊँचा, प्राप्ताभ्युदय।

समुन्नति—[सं॰ स्त्री॰] यथेष्ट उन्नति, यथोचित उत्थान, पूर्ण वृद्धि, उच्चता।

समुन्नयन—[सं॰ पु॰] सब प्रकार ऊपर उठाना।

समुल्लास—[सं॰ पु॰] आनन्द, हर्ष, प्रसन्नता, ग्रंथ का परिच्छेद, अध्याय।

समूच, समूचा—[सं॰ वि॰] पूरा, समस्त, सारा, संपूर्ण, कुल, आद्यन्त सहित।

समूल—[सं॰ वि॰] जड़सहित, सब का सब, सकारण, हेतुयुक्त।

समूह—[सं॰ पु॰] पुंज, समुदाय, वृंद, राशि, ढेर, झुंड।

समृद्ध—[सं॰ वि॰] संपन्न, धनी, समर्थ।

समृद्धि—[सं॰ स्त्री॰] अति संपन्नता, अमीरी। धनाढ्यता।

समेत—[सं॰ वि॰] संयुक्त, मिला हुआ, सहित।

सम्मत—[सं॰ वि॰] राय मिलानेवाला, अनुमत, सहमत।

सम्मति—[सं॰ स्त्री॰] मत, राय, सलाह, अनुज्ञा, आदेश, अनुमति, अभिप्राय।

सम्मान—[सं॰ पु॰] सन्मान, आदर-सत्कार, मान, गौरव, प्रतिष्ठा।

सम्मानित—[सं॰ वि॰] प्रतिष्ठित, समादृत।

सम्मिलन—[सं॰ पु॰] सब प्रकार मिलना, संयोग, मिलाप, मेल।

सम्मिलित—[सं॰ वि॰] मिश्रित, मिला हुआ, युक्त।

सम्मिश्रण—[सं॰ पु॰] मिलने या मिलाने का कार्य या क्रिया, मिलावट।

सम्मुख—[सं०] सामने, समक्ष, आगे ।

सम्मूढ़—[सं० पु०] अज्ञान, मूर्ख, विमूढ़ ।

सम्मेलन—[सं० पु०] किसी हेतु मनुष्यों की एकत्रित हुई सभा । समाज, संगम, मेल, सभा ।

सम्मोह—[सं० पु०] मूर्च्छा, मोह ।

सम्मोहन—[सं० पु०] मुग्ध या मोहित करना, मोहनेवाला, मोह पैदा करनेवाला । एक काम-वाण । प्राचीन काल का एक वाण या अस्त्र जिससे शत्रु की सेना मोहित हो जाती थी ।

सम्यक्—[सं० वि०] पूरा, सब, भलीभाँति, सब प्रकार से ।

सम्राज्ञी—[सं० स्त्री०] सम्राट की पत्नी, महाराज्ञी, महारानी । साम्राज्य की अधीश्वरी ।

सम्राट—[सं० पु०] राजराजेश्वर, महाराजाधिराज, शाहंशाह, बहुत बड़ा राजा ।

सयान—[वि०] अनुभवी, चतुर, वयोवृद्ध ।

सयानप—[सं० पु०] चतुराई, बुद्धिमत्ता, प्रवीणता ।

सयानापन, सयानपना—चतुराई, चालाकी, प्रवीणता ।

सयाना—[सं० वि०] दक्ष, कुशल, चतुर, पटु, प्रवीण, चालाक, धूर्त ।

सर—[पु०] तड़ाग, तालाब, ताल । तीर, बाण ।

सरना—[क्रि०] खिसकना, सरकना, हिलना, काम निकलना या चलना, पूरा पड़ना ।

सरनी—[सं० स्त्री०] रास्ता, मार्ग, राह ।

सरमा—[सं० स्त्री०] देवताओं की एक कुतिया, लंका की एक राक्षसी कुतिया ।

सरल—[सं० त्रि०] सीधा ऋजु, सीधा-सादा, निष्कपट, आसान, सहज ।

सरलता—[सं० स्त्री०] ऋजुता, सीधापन, सिधाई, निष्कपटता, आसानी, सादगी ।

सरलीकृत [सं०] सरल किया हुआ ।

सरवर—[पु०] तड़ाग, तालाब, ताल ।

सरवा—[पु०] शरावक, प्याला, कटोरा, परई ।

सरस—[सं० वि०] रसीला, रसयुक्त, गीला, भीगा, सजल, हरा, सुन्दर, मनोरम, मीठा, मधुर, भावोद्दीपक भाव-पूर्ण, उत्तम, भावुक, रसिक, सहृदय । रसभावोत्तेजक ।

सरसरी—[वि०] जल्दी में, उतावली में, मोटे तौर पर, साधारण या स्थूल रूपमें ।

सरसाना—[हि०] रस भरना, हरा-भरा करना, रसयुक्त करना, भावोद्दीप्ति करना । शोभा देना ।

सरसिज—[सं० पु०] कमल, तालाब में उत्पन्न होने वाला ।

सरसिह—[स्त्री०] छोटा तालाब ।

सरसी—[सं० स्त्री०] छोटा तालाब, पुष्करणी, बावली ।

सरस्वती—[सं० स्त्री०] पंजाब की एक पुरानी नदी, गंगा-यमुना से प्रयाग में मिलने वाली एक नदी, वाणी, शारदा, वाणी या विद्या की देवी, गिरा, भारती, विद्या, कविता, ब्राह्मी बूटी ।

सरावग, सरावगी—[सं० पु०] जैनी, जैन धर्मावलम्बी, जैन ।

सरासर—एक सिरे से दूसरे सिरे तक, पूर्ण रूप से । प्रत्यक्ष, साक्षात् ।

सरासरी—[स्त्री०] शीघ्रता, जल्दी, आसानी, स्थूलानुमान, मोटा अंदाज़ ।

सराहना—प्रशंसा या तारीफ करना, बड़ाई या स्तुति करना ।

सरि—[स्त्री०] सरिता, नदी, समता, समानता, बराबरी ।

सरित्, सरिता—[सं० स्त्री०] नदी, दरिया ।

सरित्पति—[सं० पु०] सिंधु, समुद्र, सागर, नदीश ।

सरिवर, सरिवरि—[स्त्री०] समता, तुल्यता, बराबरी ।

सरिस—[वि०] सदृश, तुल्य, समान, बराबर ।

सरीखा—[वि०] जैसा, तुल्य, बराबर, समान, सदृश ।

सरीसृप—[पु०] रेंगने वाला जन्तु, साँप, सर्प ।

सरुज—[सं० वि०] रुग्ण, रोगयुक्त, रोगी ।

सरुष—[सं० वि०] कुपित, क्रोधयुक्त ।

सरूप—[सं० वि०] साकार, आकार वाला, रूपयुक्त, समान, सदृश, तुल्य, सम, सुन्दर, रूपवान ।

सरोज—[सं० पु०] कमल ।

सरोजिनी—[सं० स्त्री०] कमलों का समूह, कमलों का तालाब, कमल, कमलिनी ।

सरोद—[पु०] बीन जैसा एक बाजा ।

सरोरुह—[सं० पु०] कमल ।

सरोवर—[सं० पु०] ताल, तड़ाग, झील, तालाब ।

सरोष—[सं० वि०] सक्रोध, क्रोध-युक्त, कुपित ।

सर्ग—[सं० पु०] प्रकृति, सृष्टि, संसार, उत्पत्तिस्थान, उद्गम, जीव, संतान, प्राणी, स्वभाव, गति, फेंकना, प्रवाह, गमन, बहाव, चलना, अध्याय ।

सर्गबंध—[सं० वि०] वह पुस्तक

जो कई अध्यायों में बँटी हो।

सर्जन—[सं० पु०] छोड़ना, त्यागना, निकालना, फेंकना, रचना, बनाना, सृष्टि, पैदा करना।

सर्प—[सं० पु०] साँप, नाग, तेज़ी से चलना।

सर्पयज्ञ, सर्पयाग—[सं० पु०] एक यज्ञ जो राजा जनमेजय ने साँपों के नाश के हेतु किया था।

सर्पराज—[सं० पु०] साँपों का राजा शेष नाग, वासुकि, सर्पेश, सर्पाधीश।

सर्पविद्या—[सं० स्त्री०] वह विद्या जिसके द्वारा साँप पकड़ कर वश में किये जाते हैं।

सर्पारि—[सं० पु०] गरुड़, मोर, नेवला।

सर्पिणी—[सं०स्त्री०]साँपिनी, नागिनी, भुजंगी लता।

सर्बस—[पु०] समस्त, सम्पूर्ण, सब कुछ, सर्वस्व।

सर्व—[सं० वि०] सम्पूर्ण, सब, समस्त, कुल, सर्वस्व।

सर्वकाल—[सं० पु०] नित्य, सदा, सर्वदा, सब समयों में।

सर्वग, सर्वगामी—[सं० वि०] सब जगह जाने वाला, सर्वव्यापी, सब स्थानों में फैलने वाला।

सर्वगत—[सं० वि०] सर्वव्यापक, सर्वग, सर्वव्यापी।

सर्वग्रास—[सं० पु०] चन्द्रमा या सूर्य का ग्रहण। पूरा ग्रहण, खग्रास।

सर्वजनीन—[सं० वि०] सार्वजनिक। सब लोगों से सम्बन्ध रखने वाला, सब लोगों का।

सर्वज्ञ—[सं० वि०] सब कुछ जानने वाला।

सर्वज्ञता—[सं०स्त्री०] सर्वज्ञ का भाव।

सर्वतंत्र—[सं० पु०] सर्वशास्त्र-विरुद्ध, सर्वशास्त्र-सिद्धान्त। जिसे सब शास्त्र मानते हों।

सर्वतः—[सं०] सब प्रकार से। चारों ओर।

सर्वतोभद्र—[सं० वि०] सब ओरों से कल्याण या मंगल। जिसके सिर, दाढ़ी और मूँछ सबके बाल मुंडे हों। [पु०] वह चार कोने का मन्दिर जिसके चारों ओर द्वार हों, पूजा के कपड़े पर बना एक कोठेदार मांगलिक चिह्न या यंत्र जिसकी पूजा होती है। एक चित्र काव्य, एक प्रकार की पहेली, विष्णु का रथ।

सर्वतोभाव—[सं०] भलीभाँति, अच्छी तरह, सब प्रकार से।

सर्वत्र—[सं०] सब ठौर या जगह, सब कहीं।

सर्वथा—[सं०] सब तरह, सब प्रकार से, सब, बिलकुल।

सर्वदमन—[सं० पु०] राजा दुष्यंत का पुत्र। सब का दमन करनेवाला।

सर्वदर्शक, सर्वदर्शी—[सं०] सब कुछ देखने वाला, परमेश्वर।

सर्वदा—[सं०] सदैव, सदा, नित्य, हमेशा, संतत, नितांत, निरन्तर, सतत।

सर्वनाम—[पु०] संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होनेवाला शब्द।

सर्वनाश—[सं० पु०] सर्वध्वंस, पूरी बरबादी, सत्यानाश, पूर्ण विनाश।

सर्वप्रिय—[सं० वि०] सब का प्रिय, सब को प्यारा।

सर्वभक्षक—[सं० पु०] सब कुछ खाने वाला, अधर्मी।

सर्वभक्षी—[सं० पु०] सब कुछ खानेवाला, अग्नि, आग।

सर्वभूत—[सं० पु०] चराचर, संसार।

सर्वभोगी—[सं० वि०] सब का आनन्द लेने वाला, सब खाने वाला, अधर्मी।

सर्वमंगला—[सं० स्त्री०] पार्वती, दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती।

सर्वमांगल्य—[सं० पु०] सब का कल्याण या मंगल।

सर्वव्यापक—[सं० पु०] सब में उपस्थित या फैला हुआ। सर्वव्यापी, सब पदार्थों में रमणशील।

सर्वव्यापी—[सं० वि०] सब पदार्थों में व्याप्त, सब में रमणशील।

सर्वशक्तिमान्—[सं० वि०] सब कुछ करने की सामर्थ्य रखनेवाला।

सर्वश्रेष्ठ—[सं० वि०] सबसे बढ़ कर, सर्वोत्तम।

सर्वसंहार—[सं० पु०] सब का नाश, सब का नाशक, काल।

सर्वसाधारण—[सं० पु०] साधारण या आम लोग, जनता, सबलोग।

सर्वसामान्य—[सं० वि०] जो सब में समता से पाया जाये, मामूली, साधारण।

सर्वस्व—[सं० पु०] सम्पूर्ण, समस्त, सब कुछ, सारी सम्पत्ति, सारा धन, सब सामग्री।

सर्वहर—[सं० पु०] सब नाश करने वाला, शिव, महादेव, काल, यमराज।

सर्वांग—[सं० पु०] सम्पूर्ण शरीर, सब देह, सब अवयव, समस्त।

सर्वांश—[सं० पु०] समस्त भाग या अंश, सर्वांग, सम्पूर्ण।

सर्वात्मा—[सं० पु०] सम्पूर्ण संसार की आत्मा या विश्वात्मा, लोकात्मा, ब्रह्म।

सर्वाशी—[वि०] सब कुछ खाने वाला, सर्वभक्षी।

सर्वोच्च—[सं० वि०] सबसे ऊँचा।

सर्वोत्तम—[सं० वि०] सर्वश्रेष्ठ, सबसे उत्तम, सर्वोत्कृष्ट ।

सर्वोपरि—[सं०] सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम, सबसे बड़ा ।

सर्षप—[सं० पु०] सरसों, सरसों के बराबर का मान या परिमाण ।

सलज्ज—[सं० वि०] लज्जावान, शर्मीला, हयावाला ।

सलिल—[सं० पु०] वारि, पानी, जल, नीर ।

सलिलपति—[सं० पु०] वरुण, समुद्र ।

सलिलेश—[सं० पु०] सागर, वरुण, नीरनिधि ।

सवत्सा—[सं० स्त्री०] बच्चा के सहित ।

सवर्ण—[सं० वि०] समान वर्ण या जाति का, समान वर्णयुक्त, सदृश, तुल्य ।

सविकल्प—[सं० वि०] संदेहयुक्त, संशयात्मक, विकल्प सहित, संदिग्ध, जो दोनों पक्षों का निर्णय न कर सकने पर किसी विषय को मान ले । [पु०] किसी आलंबन की सहायता से युक्त साध्य समाधि ।

सविता—[सं० पु०] रवि, सूर्य, भानु, भास्कर, मार्तण्ड, बारह की संख्या, मदार, आक, अर्क ।

सविता-तनय—[सं० पु०] यम, शनि, कर्ण, बालि । [स्त्री०] सविता-तनया—यमुना ।

सवेग—[सं० वि०] वेग के साथ, तेजी से ।

सवेरा—[सं० पु०] प्रभात, प्रातः-काल, तड़के, सुबह, निश्चित समय के पहले का समय ।

सवैया—[पु०] तौलने का सवा सेर का बाट या मान ।

सव्य—[सं० त्रि०] दक्षिण, दाँयां, दाहिना, वाम विरुद्ध, प्रतिकूल ।

सव्यसाची—[सं० पु०] अर्जुन ।

सशंक—[सं० वि०] शंकित, सभीत, भयभीत भयानक, भयंकर ।

सशंकित—[सं० त्रि०] आशंकित, सभीत ।

सस्त्रीक—[सं० वि०] जिसके साथ स्त्री हो, पत्नीसहित, स्त्रीयुक्त ।

सस्य—[सं० पु०] धान्य, अनाज ।

सह—[सं०] साथ, सहित, युक्त, योग्य, समर्थ, उपस्थित, सहनशील ।

सहकार—[सं० पु०] आम का पेड़, सहयोग, सहायक, सुगन्धित पदार्थ ।

सहकारिता—[सं० स्त्री०] सहायक होने वाला, सहकारी, सहायता ।

सहकारी—[सं० पु०] साथ साथ काम करने वाला, सहयोगी, साथी ।

सहगमन—[सं पु०] पति के शव के साथ पत्नी का जल जाना, सती होना ।

सहगामिनी—[सं० स्त्री०] वह स्त्री जो अपने स्वामी के शव के साथ जल जावे या सती हो ।

सहगामी—[सं० पु०] साथ चलने वाला, साथी, सहचर ।

सहचर—[सं० पु०] संगी, साथी, साथ चलने वाला, दास, सेवक, अनुचर । मित्र, स्नेही ।

सहचरी—[सं० स्त्री०] साथ चलने वाली, पत्नी, स्त्री, सखी, सहेली ।

सहचारिणी—[सं० स्त्री०] साथ साथ रहने वाली, सखी, सहेली, स्त्री, पत्नी ।

सहचारिता—[सं० स्त्री०] सहचारी होने का भाव, सहचार्य, सहचारीपन ।

सहचारी—[सं० पु०] साथी, संगी, मित्र, स्नेही, सेवक, अनुचर, स्वामी ।

सहज—[सं० पु०] सहोदर भाई, सगा भाई, साथ उत्पन्न होने वाले दो भाई, स्वभाव, प्रकृति । सरल, सीधा, सुगम ।

सहजात—[सं० वि०] यमज, सहोदर, एक साथ उत्पन्न होने वाले ।

सहन—[सं० पु०] क्षमा करना, सह लेना, तितिक्षा, क्षमा, शांति ।

सहनशील—[सं० त्रि०] सहन करने वाला, संतोषी ।

सहपाठी—[सं० पु०] साथ पढ़ने वाला, सहाध्यायी ।

सहभोज—[सं० पु०] साथ साथ खाना, एक साथ बैठकर खाना ।

सहभोजी—[सं० पु०] वे लोग जो एक साथ बैठकर खाते हैं ।

सहम—[पु०] शंका, भय, डर, संकोच ।

सहमत—[सं० वि०] एक मत या विचार का; एक धर्म का ।

सहमना—डर जाना, भयभीत होना । घबरा जाना, मूर्च्छित होना, सूख जाना ।

सहमरण—[सं० पु०] मृत पति के शव के साथ पत्नी का चिता में जलना, सती होना ।

सहमाना—डराना, भयभीत करना, धमकाना ।

सहयोग—[सं० पु०] परस्पर मिलकर साथ-कार्य करने का भाव, संग, साथ, सहायता, आजकल सरकार के साथ मिलकर कार्य करना, सरकारी सभाओं में सम्मिलित होना और सरकार के पदाधिकार ग्रहण करना ।

सहवास—[सं० पु०] साथ रहना, संग, साथ, रति, संभोग, मैथुन, प्रसंग ।

सहसा—शीघ्र, झटपट, अचानक, अकस्मात, एकाएक ।

सहस्राक्ष, सहस्राखी—[सं० पु०] इन्द्र, देवराज ।

सहस्र–[सं० पु०] दस सौ की संख्या ।
सहस्रकर—[सं० पु०] सूर्य्य ।
सहस्रकिरण–[सं०पु०] सूर्य,सहस्रांशु ।
सहस्रदल,सहस्रपत्र—[सं० पु०] कमल ।
सहस्रनयन—[सं० पु०] इन्द्र, देवराज, सहस्रलोचन ।
सहस्रपाद—[सं० पु०] सूर्य, विष्णु ।
सहस्राक्ष—[सं० पु०] इन्द्र, विष्णु, परमात्मा ।
सहस्रानन—[सं० पु०] शेषनाग ।
सहाध्यायी—[सं० पु०] साथ पढ़ने वाला, सहपाठी ।
सहानुभूति—[सं० स्त्री०] किसी को दुखी जानकर आप भी दुखी होना ।
सहाय—[सं० पु०] सहायता, मदद, सहारा, आश्रय, भरोसा, सहायक ।
सहायक—[सं० वि०] सहायता या मदद करने वाला । छोटी नदी जो किसी बड़ी नदी में गिरे ।
सहायता [सं० स्त्री०] साहाय्य, मदद करना, किसी के कार्य को आगे बढ़ाने के लिये दिया गया धन ।
सहारना—[सं० पु०] सहन करना, अपने सिर पर भार लेना ।
सहारा—[सं० पु०] सहायता, आसरा, आश्रय, भरोसा ।
सहालग—[पु०] ब्याह-शादी के मुहूर्तों के दिन ।
सहित—[सं०] साथ, युक्त, समेत, संग ।
सहिष्णु—[सं० वि०] सहने वाला, सहनशील ।
सहिष्णुता—[सं० स्त्री०] सहनशील ।
सहृदय—[सं० वि०] सरसहृदयी, भावुक, रसिक, दयालु, दयावान, सज्जन ।
सहेजना—भली भाँति जाँचना, गिनना, खूब समझा-बुझाकर सौंपना ।
सहेट, सहेत—[सं० पु०] प्रेमी और प्रेमिकाओं के मिलने का पूर्व निश्चित या निर्दिष्ट स्थान । संकेत भवन ।
सहेतु, सहेतुक—[सं० वि०] जिसका कुछ प्रयोजन या मतलब हो, उद्देश्य या कुछ कारण से युक्त ।
सहेली—[सं० स्त्री०] सखी, संगिनी, साथिनी, दासी ।
सहोदर—[सं० पु०] एक ही माता से उत्पन्न संतान, एक दिल वाला । सगा ।
सह्य—[सं० पु०] सह्याद्रि पर्वत विशेष, सहने योग्य ।
साँई—[सं० पु०] स्वामी, सँइयाँ, परमेश्वर, मालिक, पति, भर्ता ।
सांख्य—[सं० पु०] महर्षि कपिल-कृत एक दर्शन शास्त्र जिसमें सत्व, रज, तममयी प्रकृति को ही मूल माना है ।
सांग—[सं० वि०] अंगों के सहित, पूर्ण ।
सांगोपांग—अंगों और उपांगों के सहित, समस्त, सम्पूर्ण ।
साँचा—[पु०] फ़रमा, वह उपकरण जिसमें कोई गीली वस्तु डालकर कोई विशेष आकार प्रकार की वस्तु बनाई जाती है ।
साँझ—[स्त्री०] संध्या, शाम ।
साँझी—[स्त्री०] प्रायः सावन के मास में देव मन्दिरों में भूमि पर की गई फूल-पत्तों की सजावट, एक उत्सव ।
सांत—[सं० वि०] अंत सहित। शान्त, सीधा, क्रोधरहित ।
सांत्वना—[सं०स्त्री०] धैर्य, आश्वासन, धीरज, ढाढ़स ।
सांधना—निशान लगाना या साधना, लक्ष्य करना ।
सांध्य—[सं० वि०] संध्या का, संध्या सम्बन्धी ।
सांपत्तिक—[सं० वि०] संपत्ति या धन से सम्बन्ध रखने वाला ।
सांपत्य—[सं०वि०] संपत्ति सम्बन्धी ।
सांपद्य—[सं० वि०] धन-सम्बन्धी ।
सांप्रत, साम्प्रतम्–[सं०] इसी समय, सद्यः, तत्काल अभी, अधुना ।
सांप्रदायिक—[सं० वि०] किसी सम्प्रदाय का, किसी सम्प्रदाय सम्बंधी ।
साँवल, साँवला–[वि०] श्यामला । श्यामलवर्ण का ।
साँसत, साँसति—[स्त्री०] साँस घुटने या दम घुटने का सा कष्ट, झंझट ।
सांसारिक—[सं० वि०] भौतिक, लौकिक, ऐहिक, संसार सम्बन्धी ।
सांहारिक—[वि०] संहार-सम्बन्धी ।
साइत—[स्त्री०] एक घंटे या ढाई घड़ी का समय, शुभ लग्न, मुहूर्त ।
साईं—[पु०] स्वामी, पति, परमेश्वर, मालिक ।
साकार—[सं० वि०] साक्षात, आकार या स्वरूपवान्, मूर्त्तिमान्, स्थूल रूप, दृश्य रूप ।
साकारोपासना–[सं० स्त्री०] परमेश्वर की मूर्ति स्थापित कर उनकी अर्चनोपासना करना ।
साक्षर—[सं०वि०] शिक्षित, विद्वान, पण्डित ।
साक्षात्—[सं०] प्रत्यक्ष, आँखों के आगे ।
साक्षात्कार—[सं० पु०] दर्शन, मुलाकात, भेंट, इन्द्रियों से होने वाला पदार्थ ज्ञान ।
साक्षी—दर्शक, देखने वाला, गवाह । जिसने कोई घटना अपनी आँखों से देखी हो ।
साक्ष्य—[सं०पु०] गवाही, शहादत ।
साखी—[सं० पु०] साक्षी, गवाह ।

[स्त्री०] गवाही ।

सागर—[सं० पु०] सिंधु, समुद्र, बड़ी झील या तालाब, संन्यासियों का एक भेद ।

साग्निक—[सं०पु०] निरन्तर अग्नि-होत्रादि करने वाला, अग्निहोत्री, याज्ञिक ।

साजन—[पु०] पति, स्वामी, वल्लभ, प्रेमी, परमेश्वर, सज्जन ।

साढ़साती—[स्त्री०] साढ़े-साती, शनिश्चर ग्रह की दशा जो साढ़े सात वर्ष, मास या दिन तक रहती है ।

सात्म्य—[सं० पु०] सरूपता, सारूप्य ।

सात्वत—[सं० पु०] श्रीकृष्ण, बलराम, विष्णु, यदुवंशी ।

सात्वती—[सं० स्त्री०] शिशुपाल की माता, श्रीकृष्ण जी की बुआ, सुभद्रा ।

सात्विक—[सं० वि०] सत्वगुण सम्बन्धी, सत्वगुणवाला, सतोगुणी ।

साथरो—[स्त्री०] विस्तर, तृणादि का बिछौना , कुश की चटाई ।

सादर—[सं० वि०] आदर या सत्कार सहित ।

सादृश्य—[सं० पु०] समता, तुलना, तुल्यता, समानता, एकरूपता ।

साध—[पु०] साधु, सज्जन, महात्मा, योगी । [स्त्री०] लालसा, कामना, इच्छा, गर्भाधान से सातवें महीने में होने वाला उत्सव या संस्कार ।

साधक—[सं० पु०] कार्य सिद्ध करने वाला, योगी, साधने वाला, साधन करने वाला, तपस्वी, करण, हेतु, द्वारा ।

साधन—[सं० पु०] कार्य सिद्धि की क्रिया, रीति, विधान, सिद्धि, युक्ति, सामग्री, उपकरण, सामान, उपाय, साधना, उपासना, धातुओं की शोधन क्रिया ।

साधना—[सं० स्त्री०] किसी कार्य के सिद्ध करने की युक्ति या क्रिया, सिद्धि, देवतादि के सिद्ध करने के हेतु उपासना, सिद्धि, उपाय । [क्रि०] कोई कार्य सम्पन्न या पूरा करना, पूर्ण करना, संधान करना, निशाना लगाना, जाँचना, नापना, अभ्यास करना, स्वभाव डालना, पक्का करना । शुद्ध करना, निश्चित करना, ठहराना, इकट्ठा करना ।

साधर्म्य—[सं० पु०] एक-धर्म्मता, समान धर्म होने का भाव ।

साधारण—[सं० वि०] सामान्य, मामूली, सहज, सरल, सार्वजनिक, समान ।

साधारणतः—[सं०] सामान्यतः, मामूली तौर पर, प्रायः, बहुधा ।

साधारणतया—[सं०] साधारण या सामान्य रूप से ।

साधित—[सं०] जो साधा या सिद्ध किया गया हो ।

साधु—[सं० पु०] आर्य, सज्जन, महात्मा, भलामानुष, धर्मात्मा, परोप-कारी, कुलीन, संत ।

साधुता—[सं० स्त्री०] सज्जनता, साधु होने का भाव या धर्म, भलमंसी, सुजनता, सीधापन, सरलता ।

साधुवाद—[सं० पु०] उत्तम काम करने पर साधु साधु कह कर किसी की प्रशंसा करना या उसे शाबाशी देना ।

साधो, साधौ—[सं० पु०] संत, साधु, साधव ।

साध्य—[सं० वि०] सिद्ध करने योग्य, जो सिद्ध हो सके, सरल सहज, जिसे सिद्ध या प्रमाणित करना हो । सामर्थ्य, शक्ति ।

साध्यता—[सं० स्त्री०] साध्य का धर्म या भाव, साध्यत्व ।

साध्वी—[सं० स्त्री०] पवित्रता, पवित्र या शुद्ध चरित्र वाली स्त्री ।

सानंद—[सं० वि०] हर्ष या आनन्द के साथ, आनन्द-पूर्वक, सहर्ष ।

सान्निध्य—[सं० पु०] समीपता, निकटता, सामीप्य, मुक्ति या मोक्ष का एक रूप या भेद ।

सापत्न्य—[सं० पु०] सौतपन, सौत का लड़का, सौत का धर्म या कार्य ।

सापराध—[सं० वि०] अपराध-विशिष्ट, अपराधयुक्त, दोषी, सदोष, कलंकी, गुनहगार ।

सापेक्ष्य—[सं०वि०] जिसकी अपेक्षा या परवा की जाय ।

साफल्य—[सं० पु०] सफलता ।

सामंजस्य—[सं० पु०] औचित्य, अनुकूलता, उपयुक्तता, समीचीनता, संगति, मेल, मिलान ।

सामंत—[सं० पु०] वीर, योद्धा, राजा सरदार ।

साम—[सं० पु०] प्राचीन काल में यज्ञादि में गाने के सामवेद के मंत्र, सामवेद, मीठा या मधुर, मृदु वाणी मधुर भाषण । शत्रु को मीठी बातों से, निज पक्ष में मिलाना, सामान ।

सामग—[सं० पु०] सामवेद का पूर्ण ज्ञाता, सामवेदज्ञ ।

सामग्री—[सं० स्त्री०] किसी कार्य की उपयोगी वस्तुएँ, आवश्यक पदार्थ, उपकरण, सामान, साधन ।

सामयिक—[सं० वि०] समयानु-कूल, समयानुसार, वर्तमान समय संबन्धी ।

सामरिक—[सं० वि०] युद्ध सम्बन्धी, समर का, लड़ाई वाला ।

सामर्थ्य—[सं० स्त्री०] शक्ति, बल, पौरुष, पराक्रम, ताक़त, क्षमता, योग्यता समर्थ होने का भाव ।

सामवायिक—[सं० त्रि०] समवाय-सम्बन्धी, समूह या झुण्ड-सम्बन्धी,

सामूहिक, सामुदायिक ।

सामवेद—[सं० पु०] भारत के आर्यों के चार वेदों में से तीसरा वेद जिसमें यज्ञों में गाने के स्तोत्रादि का संग्रह है ।

सामाजिक—[सं० वि०] समाज का, समाज संबंधी, समाज या सभा से संबंध रखने वाला, सदस्य ।

सामाजिकता—[सं० स्त्री०] सामाजिक होने का भाव, लौकिकता, सांसारिकता ।

सामान्य—[सं० वि०] साधारण, मामूली, किसी जाति की सब चीजों में समानता से पाया जाने वाला गुण या लक्षण, समानता ।

सामान्यतः, सामन्यतया—[वि०] साधारणतः, साधारणतया, साधारण रीति से, सामान्य रूप से ।

सामान्या—[सं०स्त्री०] गणिका, रंडी, वेश्या, पतुरिया, धन लेकर प्रेम करने वाली नायिका ।

सामासिक-[सं० वि०] समस्त, समास का, समास संबंधी ।

सामिष—[सं० वि०] मांस सहित ।

सामीप्य—[सं० पु०] समीपता, निकटता, मुक्ति के चार भेदों में से एक।

सामुदायिक—[सं० वि०] समूह, समुदाय का, सामूहिक ।

सामुद्र—[सं० पु०] सामुद्रिक शास्त्र, समुद्र से निकला नमक, समुद्र फेन, समुद्रोत्पन्न, समुद्र सम्बन्धी ।

सामुद्रिक——[सं० वि०] सागरीय, सागर सम्बन्धी, [सं० पु०] फलित ज्योतिष शास्त्र का एक अंग या भेद जिसके द्वारा मनुष्यों के शुभाशुभ फल, गुण-दोष या भली बुरी घटनाएँ या बातें हस्तरेखा या शरीर के तिलादि और चिह्नों को देख कर कहे जाते हैं । सामुद्रिक विद्या का ज्ञाता ।

साम्य—[सं० पु०] सम या समान होने का भाव, समानता, तुल्यता, समता, बराबरी, सादृश्य ।

साम्यवाद—[सं० पु०] समाजवाद का वह सिद्धान्त जिसमें सबको समान या तुल्य समझने और समाज में समता स्थापित करने तथा समाज से विषमता के हटाने के भाव का प्राधान्य है ।

साम्यावस्था—[सं० स्त्री०] वह अवस्था या दशा जब सत्व, रज और तम तीनों गुण समान रहते हैं, प्रकृति दशा ।

साम्राज्य—[सं० पु०] वह विशाल राज्य जिसमें बहुत से पराधीन देश हों और जिसमें एक ही सम्राट या महाराजाधिराज का शासन हो, सार्वभौम राज्य, पूर्णाधिकार ।

साम्राज्यवाद—[सं० पु०] साम्राज्य की लगातार उन्नति या वृद्धि करने का सिद्धान्त ।

सायं—[सं० वि०] संध्या सम्बन्धी, संध्या, शाम, साँझ ।

सायंकाल—[सं० पु०] शाम का समय, संध्या का समय ।

सायुज्य—[सं० पु०] अभेद के साथ मिलकर एक हो जाना, मुक्ति के चार भेदों में से वह भेद जब जीव या आत्मा ब्रह्म या परमात्मा से मिलकर एक ही हो जाता है ।

सारंग—[सं० पु०] बाज़, श्येन, कोयल, कोकिल, हंस, मोर, चातक, पपीहा, भ्रमर, खंजन, खंजरीट, एक मधुमक्खी, पक्षी, सोनचिड़ी, सूर्य, चन्द्रमा, ग्रह, नक्षत्र, परमेश्वर, श्रीकृष्ण, विष्णु, शिवजी, कामदेव, हाथी, घोड़ा, मृग, मेंढक, सर्प, सिंह, छत्र, शंख, कमल, चंदन, पुष्प, फूल, सोना, गहना, भूमि, पृथ्वी, केश, अलक, कपूर, विष्णु का धनुष, समुद्र, वायु, तालाब, सर, पानी, वस्त्र, दीपक, बाण, शर, छवि, स्त्री, रात, दिन, तलवार, बादल, हाथ, आकाश, सारंगी, बिजली, सब रागों का एक राग, मनोरम, सरस ।

सारंगपाणि—[सं० पु०] विष्णु । सारंगधर ।

सारंगी—[सं० स्त्री०] अति श्रुति-मधुर और प्रिय स्वरवाला तार का एक बाजा ।

सार—[सं० पु०] सत्त, तत्व, मूल, मुख्याभिप्राय, निष्कर्ष, किसी वस्तु का असली भाग, निर्यास, अर्क, रस, गूदा, दूध की मलाई, हीर, फल, नवनीत, अमृत, शक्ति, जुआ खेलने का पासा, तलवार, जल, उदार, लोहा । एक वर्णिक छन्द ।

सारगर्भित—[सं० वि०] जिसमें तत्व भरा पड़ा हो, सारांशयुक्त ।

सारथि, सारथी—[सं० पु०] रथ का हाँकने या चलानेवाला, सूत, रथवान । सागर, समुद्र ।

सारदा—[सं० स्त्री०] वाणी, गिरा, शारदा, सरस्वती जी ।

सारना—[क्रि० स०] पूरा या समाप्त करना, बनाना, साधना, दुरुस्त या ठीक करना, सुधारना, रक्षा करना । शस्त्रास्त्र चलाना, आँखों में अंजन और मस्तक में तिलकादि लगाना ।

सारमेय—[सं० पु०] सरमा की संतान, श्वान, कुत्ता ।

सारल्य—[सं० पु०] सरलता, सीधापन, सिधाई ।

सारस्य—[सं० पु०] सरसता । रसीलापन ।

सारस्वत—[सं० पु०] दिल्ली से पश्चि-

मोत्तर की ओर सरस्वती नदी के समीप का देश। (पूर्वीय पंजाब), वहाँ के ब्राह्मण, व्याकरण का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ।

सारांश—[सं० पु०] मूलतत्व, सार, संक्षेप, खुलासा, तात्पर्य, परिणाम, निचोड़।

सारिका—[सं०पु०] मैना पक्षी (नर)

सारिका—[सं० स्त्री०] मैना पक्षी (मादा)।

सारी—[सं० स्त्री०] मैना, पक्षी, जूए या चौपड़ का पाँसा, थूहर का वृक्ष। धोती, साड़ी। सब, सम्पूर्ण।

सारूप्य—[सं० पु०] चार प्रकार की मुक्ति में से एक जिसमें उपासक अपने इष्टदेव के रूप को पा जाता है, सरूपता, रूप-साम्य का भाव।

सार्थ—[सं० वि०] सोद्देश्य, अर्थ सहित, चरितार्थ, सफल।

सार्थक—[सं० त्रि०] अर्थवान, सफल, पूर्णमनोरथ, पूर्णकाम, गुणकारी, उपयोगी, हितकर, प्रयोजनीय, चरितार्थ।

सार्द्ध—[सं० वि०] डेढ़, आधे के साथ पूरा।

सार्व—[सं० वि०] सबसे संबंध रखनेवाला।

सार्वकालिक—[सं० वि०] सब समयों का, जो सब समयों में होता हो।

सार्वजनिक, सार्वजनीन—[सं० वि०] सब लोगों या सर्वसाधारण से सम्बन्ध रखनेवाला।

सार्वत्रिक—[सं० वि०] सर्वव्यापी, सर्वत्र सम्बन्धी।

सार्वदेशिक—[सं० वि०] सारे देश का, सम्पूर्ण देश सम्बन्धी।

सार्वभौम—[सं० पु०] चक्रवर्ती राजा, हाथी, सब पृथ्वी-सम्बन्धी।

सार्वराष्ट्रिय—[सं० वि०] जिसका सम्बन्ध कई राष्ट्र से हो।

सालोक्य—[सं० पु०] चार प्रकार की मुक्ति में से एक जिसमें मुक्त जीव परमात्मा के साथ उसके लोक में निवास करता है, सलोकता।

सावकाश—[सं० पु०] अवकाश युक्त, सामर्थ्य, समाई।

सावचेत—[सं० वि०] सावधान, सचेत, सतर्क, सजग।

सावधान—[सं० वि०] सतर्क, सचेत, सजग।

सावधानता—[सं० स्त्री०] सचेतता, सतर्कता, सजगपन।

सावयव—[सं० वि०] अवयवसहित, खंडसहित।

सावर—[सं० पु०] लोहे का एक लंबा औज़ार, शिवकृत एक प्रसिद्ध तंत्र-मंत्र-शास्त्र, साबर।

सावित्र—[सं० पु०] सूर्य, वसु, शिव, ब्रह्मा, ब्राह्मण, यज्ञोपवीत, एक अस्त्र।

सावित्री—[सं० स्त्री०] वेद-माता, गायत्री, ब्रह्मा जी की पत्नी, सरस्वती, उपनयन के समय का एक संस्कार, दक्ष प्रजापति की कन्या, मद्रनरेश अश्वपति की कन्या और सत्यवान की सती स्त्री, सरस्वती नदी, यमुना नदी, सधवा स्त्री।

साष्टांग—[सं० वि०] आठों अंगों के साथ, दण्डवत-प्रणाम, पृथ्वी पर लेट कर मस्तक, हाथ, पैर, आँख, जंघा, हृदय, मन और वचन से नमस्कार करना।

सासत—[स्त्री०] संसृति, कष्ट।

साहचर्य—[सं० पु०] साथ, संग, संगति, सहचरता, सहचर का भाव।

साहनी—[सं० पु०] सेना, फौज, संघी, साथी, परिषद।

साहस—[सं० पु०] हिम्मत, आपदादि का दृढ़ता से सामना करनेवाली एक मानसिक शक्ति, बलात्कार, उद्योग, उत्साह, वीरता, कार्य-तत्परता।

साहसिक—[सं० पु०] निर्भीक, निश्शंक, पराक्रमी, साहसी, चोर, डाकू, निर्भय।

साहसी—[सं० वि०] दिलेर, बहादुर, हौसलेवाला।

साहा—[पु०] शुभ कार्यों के लिये मुहूर्त्त अथवा लग्न।

साहाय्य—[सं० पु०] सहायता।

साहित्य—[सं० पु०] उपकरण, सामान, सामग्री, मिलान, प्रेम करना। एकत्र होना, संचय, काव्य, वाङ्मय, सार्वजनिक हित-सम्बन्धी स्थायी विचारों या भावों के गद्य-पद्यमय ग्रन्थों का सुरक्षित समूह। विद्याविशेष। वाक्यों में एक ही क्रिया से अन्वय कराने वाले पदों का पारस्परिक संबंध-विशेष।

साहित्यिक—[सं० वि०] साहित्य-संबंधी, साहित्य की सेवा करनेवाला, साहित्यसेवी।

साहू—[पु०] सेठ, साहूकार, धनी, महाजन, शिवाजी का पौत्र।

सिंगार—[पु०] स्त्रियों के सोलह शृंगार, शोभा, बनाव, टीपटाप। शृंगार रस।

सिंचन—[सं० पु०] सींचना, पानी छिड़कना।

सिंचाई—[स्त्री०] सींचने या पानी छिड़कने का काम।

सिंचित—[सं० वि०] सींचा हुआ।

सिंदूर—[सं० पु०] ईंगुर से बना सधवा स्त्रियों के माँग और माथे पर लगाने का एक विख्यात लाल चूर्ण।

सिंदूर-दान—[सं० पु०] सिंदूर रखने का पात्र, वर का कन्या की माँग में सिंदूर देना।

सिंधु—[सं० पु०] सिंध प्रान्त,

सागर, पश्चिमी पंजाब की एक नदी। चार और सात की संख्या, एक राग।

सिंधुज—[सं० पु०] मोती, विषादि, चंद्रमा, १४ रत्न, सेंधा नमक, सिंध देश का घोड़ा।

सिंधुजा—[सं० स्त्री०] लक्ष्मी।

सिंधुजात—[सं० पु०] चंद्रमा।

सिंधुतनय—[सं० पु०] चंद्रमा।

सिंधुतनया—[सं० स्त्री०] लक्ष्मी।

सिंधुपुत्र—[सं० पु०] विष, मोती, चन्द्रमा।

सिंधुमाता—[सं० स्त्री०] समुद्र की माता सरस्वती।

सिंधुर—[सं० पु०] आठ की संख्या, हाथी।

सिंधुरगति—[सं० स्त्री०] गजगति, हाथी जैसी मदमाती चाल।

सिंधुरगामिनी—[सं० स्त्री०] गजगामिनी, हाथी जैसी चाल वाली।

सिंधुर-मणि—[सं० पु०] गजमोती, गजमुक्ता।

सिंधुर-वदन—[सं० पु०] गणेशजी।

सिंधुरानन—[सं० पु०] गणेश।

सिंधुसुत—[सं० पु०] सागर का पुत्र, शंख, चन्द्रमा, जलधर राक्षस।

सिंधुसुता—[सं० स्त्री०] लक्ष्मी, सीप।

सिंधुसुतासुत—[सं० पु०] मोती।

सिंह—[सं० पु०] केसरी, मृगेन्द्र, शार्दूल, मृगराज, बारह राशियों में से पाँचवीं राशि।

सिंहद्वार—[सं० पु०] बड़ा दरवाज़ा, मुख्य द्वार।

सिंहनाद—[सं० पु०] सिंह की दहाड़, वीरों की ललकार, कवियों की आत्म-श्लाघा।

सिंह-पौर—[सं० पु०] सिंहद्वार, मुख्य फाटक।

सिंहल—[सं० पु०] भारत के दक्षिण में एक द्वीप जिसे लंका भी कहा जाता है।

सिंहवाहिनी—[सं० स्त्री०] दुर्गा देवी।

सिंहावलोकन—[सं० पु०] आगे बढ़ने से पहले पिछली बातों का संक्षिप्त कथन। सिंह की दृष्टि, सिंह जैसी छवि।

सिंहासन—[सं० पु०] राजासन, सम्राट या किसी देवता के बैठने का आसन, राजगद्दी, तख्त।

सिकता—[सं० स्त्री०] बालू, भूमि, रेती, शर्करा, चीनी।

सिक्त—[सं० वि०] सींचा या भीगा हुआ, गीला।

सिख—[सं० स्त्री०] सीख, उपदेश, शिक्षा, सिखावन।

सिखावन—[पु०] उपदेश, शिक्षा, सीख।

सित—[सं० वि०] स्वच्छ, सफेद, धवल, श्वेत, उज्ज्वल।

सितकर [सं० पु०] चन्द्रमा, सितरश्मि, सितांशु।

सितता—[सं० स्त्री०] धवलता, श्वेतता, उज्ज्वलता, सफेदी।

सितपक्ष—[सं० पु०] शुक्ल-पक्ष, धवल अथवा उज्ज्वल पक्ष, हंस।

सिताभानु—[सं० पु०] चंद्रमा, सितकर।

सिता—[सं० स्त्री०] चीनी, शक्कर, मिश्री।

सिताखंड—[सं० पु०] शहद से बनाई गई शक्कर, मिश्री।

सितासित—[सं० पु०] सफेद और काला, श्वेत-श्याम।

सिदौसी—शीघ्र, तुरंत, तत्काल।

सिद्ध—[सं० वि०] जिसकी साधना पूर्ण हो चुकी हो, सफल-प्रयत्न, कृतार्थ, कृतकार्य, योगादि से सिद्धिप्राप्त योगी, तपस्वी, महात्मा, मुक्त, उपलब्ध, संपन्न।

सिद्धकाम—[सं० वि०] कृतकार्य, पूर्ण कामना, सफलमनोरथ, सफल।

सिद्धगुटिका—मंत्र द्वारा सिद्ध की हुई रासायनिक गोली जिसे प्रायः योगी प्रयोग करते हैं, खेचरी गुटिका।

सिद्धता—[सं० स्त्री०] पूर्णता, सफलता, सिद्धि होने की दशा।

सिद्धत्व—[सं० पु०] सिद्धता, सफलता।

सिद्धपीठ—[सं० पु०] ऐसा स्थान जहाँ तपस्या, योग और तांत्रिक प्रयोग शीघ्र सिद्ध होते हों, सिद्धाश्रम, सिद्धभूमि।

सिद्धरस—[सं० पु०] पारा।

सिद्धहस्त—[सं० वि०] निपुण, कुशल, पटु, दक्ष, जिसका हाथ किसी कार्य में मँज गया हो।

सिद्धांजन—[सं० पु०] वह अंजन जिसके प्रभाव से पृथ्वी में गड़ी हुई वस्तुएँ दिखलाई देती हैं।

सिद्धान्त—[सं० पु०] उसूल, अध्ययन और मनन के उपरान्त स्थिर किया हुआ मत, प्रधान मंतव्य। मुख्य उद्देश्य, तत्व की बात, निर्धारित विचार।

सिद्धांती—[सं० पु०] सिद्धांत-ग्रन्थों का ज्ञाता, विचारक, मीमांसक।

सिद्धा—[सं० स्त्री०] सिद्ध पुरुष की स्त्री, सिद्ध स्त्री, आर्य्या छन्द का पंद्रहवाँ भेद।

सिद्धार्थ—[सं० वि०] कृतार्थ, पूर्ण कामनावाला, पूर्णमनोरथ, पूर्णकाम।

सिद्धि—[सं० स्त्री०] कामना पूर्ण होना, प्रयोजन निकलना, प्रमाणित होना, निर्णय, तपस्या या योग की पूर्ति का दिव्य फल, योग की आठ सिद्धियाँ, दक्ष प्रजापति की एक कन्या और धर्म की पत्नी, गणेश जी की दो स्त्रियों में से एक, विजया, भाँग।

सिद्धीश—[सं० पु०] गणेशजी।

सिधारना—प्रस्थान या गमन करना, स्वर्ग-वासी होना, मरना ।

सिधि—[स्त्री॰] आठ सिद्धियाँ, योग द्वारा प्राप्त शक्ति, सफलता ।

सिय—[स्त्री॰] सीता, जानकी ।

सियरा—[वि॰] ठंढा, कच्चा, शीतल ।

सिया—[स्त्री॰] जानकी, सीताजी ।

सियाना—[वि॰] चतुर, दक्ष, निपुण, प्रवीण ।

सिराना—[क्रि॰] नाश होना, मिटना, निराश होना, शीतल होना, कार्य से अवकाश मिलना । प्रवाहित करना, बहाना ।

सिला—[स्त्री॰] पत्थर की चट्टान या शिला । कटे खेत से अन्न बीनना ।

सिबिका—[स्त्री॰] पालकी ।

सिबिर—[पु॰] डेरा, तंबू, सेना का पड़ाव, लश्कर ।

सिसु—[पु॰] बच्चा, शिशु, छोटा बालक ।

सिहाना—स्पर्द्धा करना, मुग्ध होना, ललचाना, ईर्ष्या करना ।

सी—[स्त्री॰] सदृश, बराबर, समान, तुल्य, सिसकारी ।

सीकर—[सं॰ पु॰] स्वेद-कण, जल-कण, छींटा, पसीना ।

सीख—[स्त्री॰] परामर्श, शिक्षा, उपदेश, सिखावन, सलाह ।

सीतकर—[पु॰] चन्द्रमा ।

सीतल—[वि॰] ठंढा, शीतल ।

सीतला—[स्त्री॰] एक देवी, चेचक नामक रोग ।

सीतांसु—[पु॰] चन्द्रमा, शीतांशु ।

सीता—[सं॰ स्त्री॰] श्रीरामचन्द्र की पत्नी, वैदेही, जनकसुता, खेत जोतने में हल की फाल से बनी लकीर ।

सीत्कार—[सं॰ पु॰] पीड़ा मिश्रित आनन्द में मुख से निकलनेवाला शब्द । सी, सिसकारी ।

सीदना—कष्ट उठाना, दुख भोगना ।

सीमंत—[सं॰ पु॰] हड्डियों का संधि-स्थान, स्त्रियों की माँग । सीमंतोन्नयन संस्कार ।

सीमंतिनी—[सं॰ स्त्री॰] स्त्री, नारी ।

सीमंती—[सं॰ स्त्री॰] स्त्री, नारी ।

सीमंतोन्नयन—[सं॰ पु॰] एक संस्कार जो प्रथम गर्भाधान से चौथे, छठे या आठवें मास में होता है ।

सीम—[पु॰] हद, सीमा, मर्यादा ।

सीमांत—[सं॰ पु॰] सरहद, सीमा का अन्तिम स्थान । भारत का पश्चिमोत्तर प्रान्त ।

सीमा—[सं॰ स्त्री॰] मर्यादा, हद, सीम, किसी वस्तु या प्रदेश का अंतिम भाग । सरहद । माँग ।

सीमाबद्ध—[सं॰ पु॰] मर्यादित, सीमा के भीतर, हद में ।

सीमोल्लंघन—[सं॰ पु॰] हद से बाहर जाना । मर्यादारहित होना । सीमा लाँघना ।

सीय—[स्त्री॰] सीताजी, जानकी ।

सीर—[सं॰ पु॰] वह धरती जिसकी उपज अनेक साझीदारों में वितरित हो । सूर्य, हल, हल में जोतने के बैल, वह खेत जिसको उसका मालिक स्वयं जोते ।

सीरध्वज—[सं॰ पु॰] राजा जनक ।

सील—[सं॰ स्त्री॰] धरती का गीलापन, नमी, तरी ।

सीलन—[स्त्री॰] नमी, तरी, सील ।

सुंदर—[सं॰ वि॰] रूपवान, अच्छा, मनोरम, मनोहर, सुघड़ ।

सुंदरता—[सं॰ स्त्री॰] मनोरम होने का भाव, अच्छापन, सौन्दर्य ।

सुंदरी—[सं॰ स्त्री॰] रूपवती नारी, एक योगिनी, एक सवैया छन्द का भेद ।

सु—उत्तम और श्रेष्ठ का भाव व्यक्त करनेवाला, शब्दों के पूर्व लगनेवाला उपसर्ग ।

सुअन—[पु॰] सुत, लड़का, पुत्र ।

सुकंठ—[सं॰ वि॰] सुंदर और सुरीले गलेवाला । सुग्रीव ।

सुकचाना—[क्रि॰] सकुचाना, लज्जित होना ।

सुकर—[सं॰ वि॰] सुसाध्य, सरल, सहज ।

सुकरता—[सं॰ स्त्री॰] मनोहरता, सुन्दरता, सहज में होने का भाव ।

सुकर्म—[सं॰ पु॰] अच्छा कार्य, सौभाग्य, पुण्य, धर्म, सत्कर्म ।

सुकर्मी—[वि॰] अच्छे कर्म करनेवाला, धर्मात्मा, सदाचारी ।

सुकवि—[सं॰ पु॰] अच्छा कवि, श्रेष्ठ कवि ।

सुकुमार—[सं॰ वि॰] नम्र, कोमल अंगवाला, मृदुल, नाजुक ।

सुकुमारता—[सं॰ स्त्री॰] कोमलता, मृदुलता, नजाकत, सौकुमार्य ।

सुकुमारी—[सं॰ वि॰] सुन्दर कन्या, कोमल शरीरवाली, नाजुक ।

सुकुल—[सं॰ पु॰] कुलीन, श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न व्यक्ति, ब्राह्मणों का एक वंश ।

सुकृत्—[सं॰ वि॰] शुभ कर्म, धार्मिक, उत्तम कर्म करनेवाला ।

सुकृत—पुण्यकर्म, दान, धर्म, शुभकार्य ।

सुकृति—[सं॰ स्त्री॰] पुण्यकर्म, शुभ कार्य, सत्कर्म, अच्छा काम ।

सुकृती—[सं॰ वि॰] धर्मात्मा, दक्ष, कुशल, भाग्यवान, सुकर्मी ।

सुकृत्य [सं॰ पु॰] धर्म कार्य, अच्छा कार्य, सत्कर्म ।

सुकेशी—[सं॰ स्त्री॰] सुंदर और कोमल बालोंवाली रमणी ।

सुख—[सं॰ पु॰] अनुकूल दशा, आराम, शान्ति, कामनापूर्ण होने की

अवस्था ।

सुखकर—[सं० वि०] सुख देनेवाला, सुखद, सुकर ।

सुखकारक—[सं० वि०] सुखदाता, सुखदायी, सुखद ।

सुखद—[सं० वि०] आनंद देनेवाला, सुखदायी ।

सुखदा—[सं० स्त्री०] सुखदात्री, सुख देनेवाली ।

सुखदाता-[सं० वि०] सुखदायी, सुखद ।

सुखपाल—[सं० पु०] एक प्रकार की पालकी ।

सुखप्रद—[सं० वि०] सुख देनेवाला, सुखद ।

सुखमा—[सं० स्त्री०] छवि, सुंदरता, शोभा । चितवन, सुषमा ।

सुखसाध्य—[सं० वि०] सहज, सरल ।

सुखसार—[सं० पु०] मोक्ष, मुक्ति, सुख का तत्व ।

सुखसीकर—[सं० पु०] आनंद-अश्रु, सुख के आँसू, सुख-सलिल ।

सुखांत—[सं० पु०] कोई घटना, कार्य अथवा वस्तु जिसका अन्त सुखमय हो ।

सुखावह-[सं० वि०] सुखदायी, सुखद ।

सुखिआ,सुखिया—सुख से पूर्ण, सुखी ।

सुखी—[सं० वि०] आनन्दित, हर्षित, जिसे सब प्रकार का सुख हो ।

सुख्याति—[सं०स्त्री०] प्रसिद्धि, कीर्त्ति, यश, प्रशंसा, प्रतिष्ठा ।

सुगंध, सुगंधि—[सं० स्त्री०] सुन्दर और मोहक गन्ध या महक, सुवास, सुरभि, सौरभ, खुशबू ।

सुगंधित—[सं० वि] सुन्दर महक से पूर्ण, खुशबूदार, सुगंधयुक्त ।

सुगत—[सं० पु०] बौद्ध, बुद्धजी ।

सुगति—[सं० स्त्री०] मोक्ष, मुक्ति, उत्तम गति, सद्गति ।

सुगम—[सं० वि०] सहज, जिसमें या जहाँ जाने में कठिनाई न हो ।

सुगमता—[सं० स्त्री०] सरलता, आसानी, सहजपन ।

सुगम्य—[सं० वि०] जिसमें या जहाँ सरलता से प्रवेश हो सके ।

सुगाध—[सं० वि०] सुखपूर्वक नहाने के योग्य ।

सुग्गा—[सं० पु०] तोता, सुआ, शुक ।

सुग्रीव—[सं० पु०] वानरराज बालि का भाई । श्रीरामचन्द्र का सहयोगी ।

सुघट—[सं० वि०] सुशील, मनोहर, सुन्दर ।

सुघटित—[सं० वि०] भली भाँति गढ़ा हुआ, सर्वथा चरितार्थ ।

सुघड़, सुघर-[वि०] प्रवीण, मनोरम, चतुर, सुडौल, सुन्दर ।

सुचरित, सुचरित्र—[सं० पु०] सदाचारी, उत्तम आचरण वाला, सुचाली ।

सुचारु—[सं०] अति मनोरम, सुरम्य, बहुत सुन्दर ।

सुचि-[सं०वि०] शुचि, पवित्र, पावन ।

सुचित—[सं० वि०] एकाग्र, शान्त, स्थिर, सावधान, निश्चिंत ।

सुचिताई—[स्त्री०] निश्चिंत होने की अवस्था ।

सुचित्त—[सं० वि०] स्थिर चित्त वाला, शान्त, निश्चिंत, कार्यादि से निवृत्त ।

सुचिर्मत—[सं० वि०] अच्छे आचरण वाला, सदाचारी, शुद्धाचारी ।

सुचिर—[सं० वि०] बहुत काल तक, पुराना ।

सुचेत,सुचेता-सजग, सतर्क, सावधान ।

सुजन—[सं० पु०] आर्य, सत्पुरुष, सभ्य, शिष्ट पुरुष ।

सुजनता—[सं० स्त्री०] शिष्टता, सौजन्य, भद्रता, भलमनसाहत ।

सुजन्मा—[सं० वि०] श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न, कुलीन ।

सुजस-[पु०] सुख्याति, सुकीर्ति, सुयश ।

सुजागर—[वि०] विख्यात, सुरूपवान, प्रकाशमान, मनोहर, सुशोभित ।

सुजात-[सं०पु०] श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न, सुन्दर, विवाहित स्त्री और पुरुष से उत्पन्न ।

सुजान—[वि०] ज्ञानी, विज्ञ, बुद्धिमान, निपुण, प्रवीण, कुशल, समझदार ।

सुजानता—[स्त्री०] विज्ञता, बुद्धिमानी, प्रवीणता, निपुणता, चातुर्य ।

सुडौल—[वि०] सुन्दर, सुघड़, अच्छे आकार वाला ।

सुत—[सं० पु०] पुत्र, लड़का, बेटा ।

सुतनु—[सं० वि०] सुन्दर गात वाला, सुशरीर युक्त । [स्त्री०] सुन्दर शरीर वाली स्त्री ।

सुतरां—[सं०] इस कारण से, अपितु, अतः, निदान, और भी ।

सुतल—[सं० पु०] सात पातालों में से एक लोक अथवा पाताल ।

सुता—[सं० स्त्री०] कन्या, बेटी, पुत्री, लड़की ।

सुतार—[पु०] शिल्पकार, कारीगर, कलावंत । बढ़ई ।

सुतीक्ष्ण—[सं० पु०] अति तीखा, अगस्त्यजी के भाई ।

सुत्रामा—[सं० पु०] इन्द्र ।

सुदर्शन—[सं० पु०] मनोहर, मनोरम, रुचिर, सुमेरु, शिव, विष्णु का चक्र ।

सुदिन-[पु०] शुभ दिवस, अच्छा दिन ।

सुदी—[स्त्री०] उजियाला पक्ष, शुक्ल पक्ष ।

सुदूर—[सं० वि०] अति दूर ।

सुदृढ़—[सं० वि०] अति दृढ़, पक्का, मज़बूत ।

सुदृश्य—[सं० वि०] उत्तम, मनोहर, देखने योग्य, दर्शनीय, सुन्दर ।

सुदेश—[सं० पु०] अच्छा देश, उपयुक्त स्थान, अच्छा स्थान ।
सुद्धा—युक्त, सहित, समेत ।
सुधांग—[सं० पु०] चन्द्रमा ।
सुधांशु—[सं०पु०] सुधाकर, चन्दमा ।
सुधा—[सं० स्त्री०] अमृत, गंगा, पीयूष, मकरंद, रस, मदिरा, दूध, मधु, पृथ्वी, विष, एक वर्णिक वृत्त ।
सुधाकर—[सं० पु०] चन्द्रमा ।
सुधाधर—[सं० पु०] चन्द्रमा ।
सुधाधाम—[सं० पु०] चन्द्रमा ।
सुधाधार—[सं० पु०] चन्द्रमा ।
सुधानिधि—[सं०पु०] चन्द्रमा, समुद्र, सुधानिकेत ।
सुधापाणि—[सं० पु०] धन्वंतरि, पीयूष पाणि ।
सुधामयूख—[सं० पु०] सुधाकर, चन्द्रमा ।
सुधायोनि—[सं० पु०] । चन्द्रमा ।
सुधार—[पु०] संशोधन, संस्कार, सुधारने का भाव ।
सुधारश्मि—[सं०पु०] चन्द्रमा, सुधाकर ।
सुधि—[सं० स्त्री०] याद, समाचार, पता, सुध, स्मरण ।
सुधी—[सं० पु०] धार्मिक, समझदार, चतुर, प्रवीण, विद्वान, बुद्धिमान ।
सुधेश—[सं० पु०] चन्द्रमा, सुधेश्वर ।
सुनय—श्रेष्ठ नीति, सुनीति ।
सुपंथ—[पु०] सदाचार, सुन्दर मार्ग ,
सुपक्व—[सं० वि०] भली प्रकार पका हुआ ।
सुपथ [सं० पु०] उत्तम मार्ग, सत्पथ, सन्मार्ग, सदाचार ।
सुपात्र—[सं० पु०] उपयुक्त व्यक्ति, योग्य पात्र, अच्छा बासन । श्रेष्ठ ।
सुपास—[पु०] आराम, पड़ोस, सुखद स्थान । सुख, सुवास ।
सुप्त—[सं० वि०] मुंदा हुआ, सोया हुआ, निद्रित, ठिठुरा हुआ ।
सुप्रतिष्ठ—[सं० वि०] विख्यात, प्रसिद्ध, प्रतिष्ठावान ।
सुप्रतिष्ठा [सं० स्त्री०] सुप्रसिद्धि, ख्याति ।
सुप्रतिष्ठित—[सं० वि०] प्रतिष्ठा के योग्य, माननीय, आदरणीय ।
सुप्रसिद्धि—[सं० वि०] बहुत प्रसिद्ध, अति विख्यात, बहुत नामी ।
सुफल—[सं० पु०] सुन्दर परिणाम, सफल, कृतार्थ, कृतकार्य ।
सुबाहु [सं० पु०] सुन्दर भुजाओं या हाथों वाला । एक राक्षस जो मारीच का भाई था ।
सुबुद्धि—[सं० वि०] बुद्धिमान, ज्ञानी, धीमान, सुधी ।
सुबोध—[सं० वि०] ज्ञानी, बुद्धिमान, आसानी से समझने वाला, सुधी, पण्डित, स्पष्ट, सरलता पूर्वक समझ में आने वाला ।
सुभग—[सं० वि०] मनोरम, सुखद, प्रिय, अच्छा, सुंदर भाग्यशाली ।
सुभगा—[सं० वि०] सुहागिन, सोभाग्यवती, रूपवती, सुंदरी । प्रियतमा, पाँच वर्ष की कुमारी, स्वामिप्रिया ।
सुभट—[सं० पु०] योद्धा, पराक्रमी, वीर ।
सुभट्ट—[सं० पु०] महान् पण्डित, पराक्रमी, योद्धा ।
सुभद्र—[सं० पु०] सौभाग्य, कल्याण, श्रीकृष्णजी के एक पुत्र, विष्णु, सनत्कुमार ।
सुभद्रा—[सं० स्त्री०] दुर्गाजी, मंगल करने वाली, श्रीकृष्ण की बहिन और अर्जुन की पत्नी ।
सुभाषित—[सं० वि०] सुव्यक्त, सुकथित, सुंदर रूप से कहा हुआ ।
सुभाषी—[सं० वि०] अच्छी रीति से बोलने वाला, प्रिय वचन बोलने वाला, मधुरभाषी ।
सुभिक्ष—[सं० पु०] अधिक अनाज उत्पन्न करने वाला वर्ष, सुकाल ।
सुमंगल—[सं० पु०] कल्याण, शुभ, मंगलमय समय ।
सुमति—[सं० स्त्री०] अच्छी मति, सुबुद्धि, मेल-जोल, बुद्धिमान, राजा सगर की पत्नी ।
सुमन—[सं० पु०] सरस, सुंदर, सहृदय, देवता, विद्वान, कुसुम ।
सुमरनी—[स्त्री०] जप करने की छोटी माला । स्मरणी ।
सुमानिका—[सं०] सात वर्णों का एक वर्णिक छन्द ।
सुमार्ग—[पु०] उत्तम मार्ग, सत्पथ, सदाचार, अच्छा रास्ता ।
सुमित्रा—[सं० स्त्री०] राजा दशरथ की तीसरी रानी ।
सुमिरण, सुमिरन—[पु०] भजन, जप, ध्यान, स्मरण ।
सुमिरनी—[स्त्री०] जप करने की छोटी माला ।
सुमेध—[वि०] बुद्धिमान ।
सुमेधा—[वि०] बुद्धिमान ।
सुमेर—[पु०] सुमेरु, पहाड़ ।
सुमेरु—[सं० पु०] एक सोने का पर्वत, सब पहाड़ों का राजा, शिव, उत्तरी ध्रुव, माला का सबसे ऊपर का या बीच का प्रमुख दाना ।
सुयश—[सं० पु०] सुनाम, सुकीर्ति, अच्छी प्रतिष्ठा, सुख्याति ।
सुयोग—[सं० पु०] संयोग, अच्छा अवसर, सुंदर संग, अच्छा योग ।
सुयोग्य—[सं० वि०] अच्छी योग्यता वाला । अत्यन्त योग्य । लायक ।
सुरंग—[सं० वि०] मनोरम, सुडौल, रसमय, निर्मल, स्वच्छ, रक्तवर्ण । पहाड़ या पृथ्वी के तले बारूद द्वारा

बनाया हुआ मार्ग, शत्रुओं के जहाज नष्ट करने का एक यंत्र।

सुर—[सं० पु०] पण्डित, विद्वान, मुनि, देवता, सूर्य, ऋषि। ध्वनि, स्वर।

सुरकंत—[पु०] इन्द्र, विष्णु।

सुरकांता—[सं० स्त्री०] देवी, देव-बधूटी।

सुरकानन—[सं० पु०] सुरोपवन, देवाराम, नन्दन-वन, देव-वन।

सुरक्षित—[सं० वि०] जिसकी रक्षा भली प्रकार की गई हो।

सुरत—[सं० पु०] ध्यान, याद, अतिलीन, मैथुन, संभोग।

सुरतरंगिनी—[सं० स्त्री०] आकाश-गंगा, गंगानदी, देवनदी।

सुरतटनी—[सं० स्त्री०] देवनदी, आकाश-गंगा। सुर-सरिता।

सुरतरु—[सं० पु०] कल्पवृक्ष।

सुरति—[सं० स्त्री०] स्मरण, सुधि, मैथुन, काम-क्रीड़ा, सभोग।

सुरति-गोपना—[सं० स्त्री०] वह नायिका जो अपनी रति क्रीड़ा को सखियों पर प्रकट न करे।

सुरतिय—[स्त्री०] देव-बधूटी।

सुरती—[स्त्री०] खाने की तम्बाकू।

सुरदीघिका-[सं० स्त्री०] आकाश गंगा।

सुर-धाम—[पु०] स्वर्ग, देवलोक, बैकुंठ, सुरलोक।

सुर-धेनु—[सं० स्त्री०] काम-धेनु।

सुर-पति—[सं० पु०] विष्णु, इन्द्र, पति, सुरेश।

सुर-पुर—[सं० पु०] देवलोक, स्वर्ग, वैकुंठ।

सुरभि—[सं० पु०] कामधेनु, मदिरा, सुगंधि, तुलसी, वसंत-ऋतु, मधु, कंचन, चैत्रमास।

सुरम्य—[वि०] मनोरम, अति सुंदर, अत्यन्त शोभनीय।

सुर-वधू—[सं० स्त्री०] देवांगना, सुर-बधूटी, देव-बधूटी।

सुर-वृक्ष—[सं० पु०] कल्पवृक्ष, देवताओं का वृक्ष।

सुरश्रेष्ठ—[सं० पु०] देवताओं में श्रेष्ठ, सुरोत्तम, इन्द्र, ब्रह्मा, शिव, विष्णु।

सुरस—[सं० वि०] मधुर, सरस, सुस्वाद, रसीला, स्वादिष्ट।

सुर-सुंदरी—[सं० स्त्री०] एक योगिनी, दुर्गा, अप्सरा, देवांगना, देवी।

सुर-सुरभी—[सं० स्त्री०] कामधेनु।

सुरांगना—[सं० स्त्री०] देव-पत्नी, अप्सरा, देवांगना।

सुरा—[सं० स्त्री०] वारुणी, मद्य, मदिरा, मधु।

सुराग—[सं० पु०] अति अनुराग, स्नेह, सुन्दर राग, मनोहर गीत। पता, खोज।

सुरा-गाय—[सं० स्त्री०] दो नस्ल वाली एक गाय जिसकी पूँछ के बाल चँवर बनाने के काम आते हैं।

सुराज्य—[सं० पु०] शान्ति और सुख से भरा स्वराज्य। प्रजा-तंत्र, अपना राज्य।

सुराधिप, सुराधीश—[सं० पु०] सुरपति, देवराज, इन्द्र।

सुराप, सुरापी—[सं० वि०] मदिरा या सुरापान करने वाला।

सुरापगा—[सं० स्त्री०] गंगा नदी, देवसरिता।

सुरा-पात्र—[सं० पु०] मदिरा पीने या रखने का पात्र।

सुरा-पान—[सं० पु०] मद्य-पान, मदिरा पीने की क्रिया।

सुरालय—[सं० पु०] बैकुण्ठ, स्वर्ग, मंदिर, मधुशाला, सुमेर।

सुरासुर—[सं० पु०] सुर और असुर, देव-दानव, देवासुर।

सुरुचि—[सं० स्त्री०] अच्छी रुचि, ध्रुव की विमाता, राजा उत्तानपाद की रानी।

सुरूप—[सं० वि] सुन्दर व्यक्ति, रूपवान।

सुरेन्द्र—[सं० पु०] देवेन्द्र, सुरेश, इन्द्र, राजा।

सुरेन्द्र-चाप—[सं० पु०] इन्द्र-धनुष।

सुलक्षणा—[सं० स्त्री०] अच्छे, चिह्नों या लक्षणों वाली स्त्री।

सुलभ—[सं० वि०] सरलता से प्राप्त होने वाला, सहज, सुगम, साधारण।

सुलभ्य—[सं० वि०] सहज में मिलने वाला, सुलभ, सुगम।

सुलेखक—[सं० पु०] सुंदर लिखने-वाला, लेखक, उत्तम प्रबन्ध अथवा लेख लिखनेवाला।

सुलोचन—[सं० वि०] अच्छी आँखों-वाला, सुंदर नेत्र।

सुलोचना—[सं० स्त्री०] सुंदर नयनों-वाली, मेघनाद की पत्नी, एक अप्सरा, नरेश माधव की स्त्री।

सुवर्ण—[सं० पु०] दश माशे की स्वर्ण मुद्रा, सोना, स्वर्ण, धन।

सुवासित—[सं० वि०] सुरभित, सुगन्धित।

सुवासिनी—[सं० स्त्री०] यौवनकाल में भी पिता के घर पर रहनेवाली स्त्री।

सुविज्ञ—[सं० वि०] विद्वान, प्रवीण, पण्डित, चतुर।

सुविधा—[सं० स्त्री०] सुभीता, समाई।

सुवेश—[सं० वि०] सुंदर वेशयुक्त, वस्त्राभरण से सुसज्जित।

सुशिक्षित—[सं० वि०] भली प्रकार सीखा हुआ, उत्तम शिक्षाप्राप्त।

सुशील—[सं० वि०] साधु, सज्जन, शीलवान, उत्तम स्वभाववाला।

सुश्रृंग—[सं० पु०] सुंदर सींगवाला,

श्रेष्ठी ऋषि।

सुशोभन—[सं॰ वि॰] अति शोभावान, दिव्य, अति सुंदर।

सुशोभित-[सं॰ वि॰] अत्यन्त शोभित, अति शोभावान।

सुश्राव्य—[सं॰ वि॰] श्रुति-प्रिय, जो सुनने में मधुर लगे।

सुश्री—[सं॰ वि॰] कांतिमान, शोभामय, सुंदर, धनी, अति शोभित।

सुश्रुत—[सं॰ पु॰] सुप्रसिद्ध आयुर्वेदाचार्य, सुप्रसिद्ध, सुश्रुत संहिता के रचयिता।

सुषमा—[सं॰ स्त्री॰] अति सुंदरता, अति शोभा, सुखमा। १० वर्णों का एक वर्णिक वृत्त।

सुषुप्त-[सं॰ वि॰] गहरी नींद में सोया।

सुषुप्ति—[सं॰ स्त्री॰] चित्त की वह वृत्ति जिसमें जीव नित्य ब्रह्म की प्राप्ति करता हुआ भी उसका ज्ञान नहीं रखता।

सुषुम्ना-[सं॰स्त्री॰] १४ प्रमुख नाड़ियों में से नाभि के मध्य स्थित एक नाड़ी, शरीर की तीन प्रमुख नाड़ियों में से नासिका के मध्य भाग (ब्रह्मरंध्र) में स्थित रहनेवाली एक नाड़ी।

सुषेण—[सं॰ पु॰] वरुण पुत्र, एक बानर, विष्णु, राजा परीक्षित का एक पुत्र।

सुष्ठ—[सं॰ क्रि॰ वि॰] भली प्रकार, अच्छी तरह।

सुष्ठता—[सं॰ स्त्री॰] सौष्ठव, सुंदरता, सौभाग्य।

सुसज्जित—[सं॰ वि॰] अति शोभायमान, भली प्रकार सजाया हुआ, अलंकृत।

सुसाध्य—[सं॰ वि॰] जो सरलता से किया जा सके, सुख-साध्य।

सुस्थ—[सं॰ वि॰] नीरोग, भला-चंगा, प्रसन्न चित्त, भली प्रकार स्थित।

सुस्थिर—[सं॰ वि॰] भली-भाँति स्थिर, अविचल, अतिदृढ़।

सुस्वर—[सं॰ वि॰] मधुर स्वर युक्त, सुरीला, सुकंठ।

सुस्वादु-[सं॰ वि॰] अति स्वादिष्ठ, बहुत जायकेदार।

सुहागिन, सुहागन—[स्त्री॰] सधवा स्त्री, सौभाग्यवती।

सुहागिल—[स्त्री॰] सुहागिन, सौभाग्यवती, सधवा।

सुहाल—[पु॰] एक प्रकार का पकवान।

सुहावन, सुहावना—[वि॰] शोभित, प्रियदर्शन, मनोरम, सुन्दर।

सुहृत, सुहृद्—[सं॰ पु॰] अच्छे मन वाला, मित्र, प्रेमी, साखी।

सूक्त—[सं॰ पु॰] श्रेष्ठ कथन, वेदमंत्रों का समूह। [वि॰] सुकथित।

सूक्ति—[सं॰ स्त्री॰] श्रेष्ठ कथन, उत्तम उक्ति, सुन्दर पद या वाक्य।

सूक्ष्म—[सं॰ वि॰] संक्षिप्त, महीन, बारीक, अति लघु।

सूक्ष्मता—[सं॰ स्त्री॰] स्वल्पता, बारीकी, महीन होने का भाव।

सूक्ष्मदर्शकयंत्र—[सं॰ पु॰] वह यंत्र जिससे छोटे पदार्थ बड़े दिखाई दें, खुर्दबीन।

सूक्ष्मदर्शिता—[सं॰ स्त्री॰] कठिन या बारीक समस्याओं को सोचने-समझने का गुण।

सूक्ष्मदर्शी—[सं॰ वि॰] तीव्र बुद्धि। कठिन, गूढ़ या बारीक बातों को समझने वाला।

सूक्ष्मदृष्टि—[सं॰ स्त्री॰] ऐसी बुद्धि जो गूढ़, कठिन और बारीक बातों या समस्याओं को शीघ्र समझ ले।

सूक्ष्मशरीर—[सं॰ पु॰] पाँच प्राण, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच सूक्ष्मभूत, मन और बुद्धि का समूह।

सूचक--[सं॰ वि॰] बोधक, ज्ञापक, सूचना देने वाला।

सूचना—[सं॰ स्त्री॰] किसी को सावधान करने, अवगत कराने या बताने की बात। किसी को बतायी जाने वाली बात का पत्र, विज्ञप्ति, विज्ञापन, इश्तहार।

सूचा—[सं॰ स्त्री॰] विज्ञप्ति, विज्ञापन, सूचना।

सूचिका—[सं॰ स्त्री॰] सुई, हाथी की सूँड़, शुण्ड, तालिका, सूची।

सूचित—[सं॰ वि॰] बताया या प्रगट किया हुआ, प्रकाशित, सूचनाप्राप्त।

सूची—[सं॰ पु॰] गुप्त दूत, खल, भेदिया, चर, चुगुलखोर। [स्त्री॰] दृष्टि, सेना का एक व्यूह, तालिका, कपड़ा सीने की सुई।

सूचीकर्म—[सं॰ पु॰] सिलाई का काम, सुई का काम, दरजी का काम।

सूचीपत्र—[सं॰ पु॰] तालिका, सूची।

सूच्यार्थ—[सं॰ पु॰] जो अर्थ शब्दों की व्यंजना-शक्ति से ज्ञात हो।

सूजी—[पु॰] गेहूँ का मोटा आटा।

सूत, सूता—[पु॰] तागा, तार, धागा, डोरा, सूत्र, तंतु, रेशम, रूई या ऊन का डोरा, नापने का एक मान, पत्थर और लकड़ी आदि पर चिह्न करने की डोरी।

सूतक—[पु॰] किसी के जन्म अथवा मृत्यु से परिवार में अशौच होना, जन्म।

सूति—[सं॰ स्त्री॰] उत्पत्ति, जनन, जन्म, प्रसव, उत्पत्ति का स्थान।

सूतिका—[सं॰ स्त्री॰] जच्चा, जननी, जिस स्त्री ने हाल ही में किसी बच्चे को जन्म दिया हो।

सूतिकागार, सूतिकागृह—[सं॰ पु॰] सोवर, जच्चाखाना, प्रसवभवन,

सूतिका-गृह ।

सूत्र—[सं॰ पु॰] जनेऊ, यज्ञोपवीत, सूत, तागा, धागा, डोरा । कटि-भूषण। करधनी, गागर में सागर जैसा भाव व्यक्त करने वाला शब्द या वाक्य ।

सूत्रधर, सूत्रधार—[सं॰ पु॰] नाट्यशाला का व्यवस्थापक, प्रमुख नट, एक वर्णसंकर जाति ।

सूत्रपात—[सं॰ पु॰] प्रारंभ ।

सूत्रात्मा—[सं॰ पु॰] जीवात्मा, जीव ।

सूदन—[सं॰ वि॰] नाशक, बधक । [संज्ञा] मारने या बध करने की क्रिया । अंगीकरण ।

सून—[सं॰ पु॰] सूना, शून्य, खाली, कली, फूल, प्रसव, जनन, पुत्र ।

सूना—[वि॰] शून्य, सुनसान, निर्जन, एकांत, पुत्री, कन्या, घात, हत्यास्थान ।

सूनु—[सं॰ पु॰] सन्तान, पुत्र, छोटा भाई, सूर्य, नाती ।

सूप—[सं॰ पु॰] रसेदार शाक या दाल, रसोइया, पाचक, बाण । व्यंजन । अन्न फटकने का छाज, सूप ।

सूपक—[सं॰ पु॰] रसोइया, सुवार ।

सूपकार—[सं॰ पु॰] पाचक, रसोइया ।

सूपशास्त्र—[सं॰ पु॰] पाकविद्या । पाकशास्त्र ।

सूम—[वि॰] कृपण, मूंजी, कंजूस ।

सूर—[सं॰ पु॰] सूर्य, आचार्य, मदार, अंधा, सूरदास नामक प्रसिद्ध कवि ।

सूर-तनया, सूर-तनुजा—[स्त्री॰] यमुना, सूर्यसुता ।

सूरदास—[सं॰ पु॰] हिन्दी का महाकवि सूरदास जिसने श्रीकृष्ण की भक्ति में अनुपम काव्य-रचना की ।

सूरन—[सं॰ पु॰] एक प्रकार का कंद, ज़मींकंद ।

सूरमा—[सं॰ पु॰] बहादुर, योद्धा, वीर ।

सूर-सुत—[सं॰ पु॰] सुग्रीव, कर्ण, यम, शनि ।

सूर-सुता—[सं॰ स्त्री॰] भानुजा, जमुना, रविजा ।

सूरि—[सं॰ पु॰] आचार्य, पण्डित, सूर्य, कृष्ण, यज्ञ करानेवाला, ऋत्विज ।

सूरी—[सं॰ पु॰] विद्वान, पण्डित, विदुषी, कुन्ती, सूर्य,-पत्नी, सूली ।

सूर्य्य—[सं॰ पु॰] सूरज, भास्कर, रवि, दिनकर, आदित्य, भानु, प्रभाकर, मार्तण्ड, अर्क, मदार, बारह की संख्या ।

सूर्यकांत—[सं॰ पु॰] एक प्रकार का स्फटिक, आतशी शीशा, सूर्यमुखी ।

सूर्य-पुत्र—[सं॰ पु॰] सुग्रीव, कर्ण, वरुण, यम, शनि ।

सूर्य-पुत्री—[सं॰ स्त्री॰] यमुना, बिजली, सूर्य-कन्या ।

सूर्यप्रभ—[सं॰ वि॰] सूर्य के समान कान्तिमान, प्रकाशवान् ।

सूर्य-प्रिय—माणिक, कमल ।

सृजन—[सं॰ पु॰] सिरजन, सृष्टि, रचना या निर्माण का कार्य ।

सृजनहार—[सं॰ पु॰] ब्रह्मा, स्रष्टा, सिरजनहार ।

सृजना—[सं॰] सिरजना, सृष्टि, उत्पन्न करना, रचना ।

सृष्ट—[सं॰ वि॰] उत्पन्न, निर्मित, उद्भूत ।

सृष्टा—[सं॰ पु॰ ब्रह्मा, विधाता, रचयिता, निर्माता ।

सृष्टि—[सं॰ स्त्री॰] संसार, जगत, प्रकृति, उत्पत्ति, निर्माण, विधान ।

सृष्टिकर्ता—[सं॰ पु॰] परमेश्वर, विरंच, ब्रह्मा, विधि, विधाता, स्वामी ।

सृष्टिविज्ञान—[सं॰ पु॰] संसृति-विज्ञान, वह शास्त्र जिसके द्वारा संसार-रचना का रहस्य जाना जा सके ।

सेन्द्रिय—[सं॰ वि॰] इन्द्रियों सहित ।

सेंध—[सं॰ स्त्री॰] संधि, सुरंग, नकब, चोरी करने के लिए दीवाल में किया गया छेद ।

सेचन—[सं॰ पु॰] सिंचन, छिड़काव, अभिषेक ।

सेत—[वि॰] उजला, श्वेत, सफेद ।

सेतु [सं॰ पु॰] नदी का पुल, बाँध, डाँड, मार्ग, प्रणव, मर्य्यादा, नियम, व्याख्या ।

सेतुबंध—[सं॰ पु॰] श्रीरामचन्द्र द्वारा लंका पर आक्रमण करने के लिये समुद्र पर बाँधा हुआ पुल ।

सेन—[सं॰ पु॰] बंगालियों की एक जाति, एक भक्त नाई, देह, जीवन, सेना, बाज़ पक्षी, सैन ।

सेना —[सं॰ स्त्री॰] पलटन, सैनिक दल, फौज, भाला, इन्द्राणी, इन्द्र-वज्र, सेवा-शुश्रूषा ।

सेनाधिप—[सं॰ पु॰] सेनाधीश, सेनानायक, सेनापति ।

सेनाध्यक्ष—[सं॰ पु॰] सेनाधीश्वर, सेनप, सेनापति ।

सेनानायक—[सं॰ पु॰] सेनापति ।

सेनानी—[सं॰ पु॰] षड़ानन, कार्तिकेय, सेनापति, एक रुद्र ।

सेनापति –[सं॰ पु॰] सेनाधिपति, सेनाध्यक्ष, सेनप, सेनानायक ।

सेवक—[सं॰ पु॰] अनुचर, दास, नौकर, टहलकार, किंकर, भृत्य, चाकर, भक्त, उपासक, दरजी ।

सेवती—[सं॰ स्त्री॰] सफेद गुलाब ।

सेवन—[सं॰ पु॰] सेवा, आराधना, उपभोग, व्यवहार, गूँथना, सीना, खाना, पीना ।

सेवनीय—[सं॰ वि॰] प्रयोग के योग्य, उपभोग अथवा व्यवहार के योग्य, सेवा या पूजा के योग्य ।

सेवा—[सं० स्त्री०] परिचर्या, टहल, नौकरी, उपासना, दूसरे को सुख पहुँचाने की क्रिया।

सेविका—[सं० स्त्री०] दासी, परिचारिका, किंकरी, नौकरानी।

सेवित—[सं० वि०] आराधित, जिसका भोग या प्रयोग किया गया हो। प्रयुक्त, व्यवहृत।

सेवी—[वि०] सेवन या संभोग करने वाला, सेवा या पूजा करने वाला।

सेव्य [सं० वि०] सेवा या आराधना के योग्य, उपभोग या प्रयोग के योग्य, पूज्य, उपास्य, रक्षण और संभोग के योग्य।

सेव्य-सेवक—[सं० पु०] भक्ति मार्ग की उपासना पद्धति में दास और उपास्य देव का भाव, स्वामी और सेवक।

सैंतना—[क्रि०] संचित करना, बटोरना, सहेजाना, सँभाल कर रखना।

सैकत—[सं० वि०] रेतीला, बलुआ, बालू का बना, सिकतामय।

सैद्धांतिक—[सं० पु०] विद्वान, तांत्रिक, पण्डित, सिद्धान्त का ज्ञाता।

सैन—[स्त्री०] इशारा; इंगित, संकेत, चिह्न। सेना, बाज पक्षी, शयन।

सैना, सैनी—[वि०] संकेत से बात करना।

सैनिक—[सं० पु०] सेना का सदस्य, फौजी सिपाही, संतरी, सेना सम्बन्धी।

सैनियाना—[क्रि०] आँखों से इशारा करना, सैन चलाना।

सैन्य—[सं० पु०] सेना, छावनी, लश्कर, सैनिक, फौज।

सैयाँ—[पु०] पति, स्वामी, मालिक।

सैरंध्र—[सं० पु०] एक वर्ण-संकर जाति, घर का अनुचर।

सैरंध्री—[सं० स्त्री०] सैरंध्र जाति की स्त्री, द्रौपदी, अन्तःपुर की दासी।

सोंधा—[सं० वि०] सुगन्धित, महकदार। मिट्टी के कोरे बर्तन में पानी पड़ते ही एक प्रकार की सुगन्ध का अनुभव।

सोपान—[सं० पु०] सिड्ढी, जीना।

सोम—[सं० पु०] चंद्रमा, एक प्राचीन देवता।

सोमकर—[सं० पु०] चंद्रकिरण, सोमरश्मि।

सोमनन्दन—[सं० पु०] बुध, सोमपुत्र, सोमसुत।

सोमपूत—[सं० पु०] सोमपुत्र बुध।

सोमयज्ञ—[सं० पु०] एक प्रकार का वैदिक यज्ञ।

सोमयाग—[सं० पु०] सोमयज्ञ, एक वार्षिक या त्रैवार्षिक यज्ञ जिसमें सोमरस पान की प्रथा थी।

सोमयाजी—[सं० पु०] सोमयज्ञ करनेवाला।

सोमराज—[सं० पु०] चन्द्रमा।

सोमलता—[सं० पु०] सोमलतिका, सोमवल्लरी, एक लता।

सोमवंश—[सं० पु०] चन्द्रवंश।

सोमवती-अमावास्या—[सं० स्त्री०] सोमवार को पड़नेवाली एक शुभ अमावस्या।

सोमावती—[सं० स्त्री०] चन्द्रमा की जननी।

सोहन—[वि०] सुन्दर, सुहावना।

सोहना—[क्रि०] प्रिय लगना, सुशोभित होना, सजना।

सोहनी—[स्त्री०] सुहावनी, सुन्दर, झाड़ू, बुहारी।

सोहर—[पु०] सोहल, सोहला, सूतिका-गृह, स्वाहर, बच्चों के जन्म पर स्त्रियों द्वारा गाया जानेवाला गीत। मांगालिक-गान।

सोहिला—[पु०] सोहर, मांगलिक गीत जो बच्चों के जन्म पर गाये जाते हैं।

सौंही—[क्रि० वि०] सम्मुख, सामने।

सोहैं—[क्रि० वि०] सामने, अच्छे लगें, शोभित हों।

सौंदर्य—[सं० पु०] सुन्दरता, सुघराई।

सौंधा—[वि०] सुगंधित, रुचिका।

सौंह—[स्त्री०] शपथ, सामने, समक्ष।

सौकर्य—[सं० पु०] सुभीता, सुविधा, सुसाध्यता, सुकरता।

सौकुमार्य—[सं० पु०] मृदुलता, यौवन, सुकुमारता, कोमलता। काव्य का एक गुण।

सौख्य—[सं० पु०] सुख का भाव, सुख, सुखत्व।

सौत्रामणी—[सं० स्त्री०] इन्द्र की प्रसन्नता के हेतु किया जानेवाला यज्ञ।

सौध—[सं० पु०] रजत, चाँदी, दूधिया पत्थर, प्रासाद, भवन, महल।

सौभद्र—[सं० पु०] सुभद्रा के कारण हुआ युद्ध अभिमन्यु, सुभद्रा-पुत्र।

सौभाग्यवती—[सं० वि०] सुहागिन, सधवा स्त्री।

सौभाग्यवान्—[सं० वि०] सौभाग्यशाली, सुखी और सम्पन्न।

सौम—[वि०] सौम्य, सुशील, शान्त, शुभ, सोम सम्बन्धी, एक संवत्सर।

सौमनस्य—[सं० पु०] प्रसन्नता।

सौमित्र—[सं० पु०] सुमित्रा के पुत्र, लक्ष्मण और शत्रुघ्न।

सौम्य—[सं० वि०] सुशील, शुभ, सुन्दर, मांगलिक, सोमलता या चन्द्रमा सम्बन्धी।

सौम्यता—[सं० पु०] सुशीलता, सजनता, सुन्दरता।

सौम्या—[सं० स्त्री०] सुन्दर सुशीला स्त्री, अच्छे स्वभाववाली।

सौर—[सं० वि०] सूर्यसम्बन्धी, सूर्य से उत्पन्न। [पु०] रजाई, लिहाफ, सूर्यों-

पासक ।

सौर-दिवस—[सं॰ पु॰] एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का ६० घड़ी का समय ।

सौरभ—[सं॰ पु॰] सुरभि, केसर, आम, सुगंध, सुवास ।

सौरभित —[सं॰ वि॰] सुगंधित, सुरभित, सुवासित ।

सौराष्ट्र—[सं॰ पु॰] काठियावाड़ और गुजरात का देश, सोरठदेश, सोरठवासी ।

सौरी—[सं॰ स्त्री॰] सूतिकागार, जच्चाखाना, एक प्रकार की मछली ।

सौवीरांजन—[सं॰ पु॰] सुरमा ।

सौष्ठव—[सं॰ पु॰] सुन्दरता, सुडौलता, उपयुक्तता, नाटक का एक अंग ।

सौहार्द—[सं॰ पु॰] सौहार्य, सखाभाव, हार्दिक भाव, मित्रता, मैत्री ।

सौहृद—[सं॰ पु॰] मित्रता, साथी, मैत्री ।

स्कंद—[सं॰ पु॰] कार्तिकेय, शिव, देह, । ध्वंस, बहाना, गिरना, विनाश ।

स्कंध—[सं॰पु॰] कंधा, पेड़ की डालियाँ विकसित होने का स्थान । दंड, डाली, वृन्द, झुंड, व्यूह, शरीर, आचार्य, संग्राम, युद्ध, पाँच पदार्थ ।

स्खलन—[सं॰ पु॰] पतन, निकलना, गिरना, बहना, फिसलना ।

स्खलित—[सं॰ वि॰] विचलित, छूटा हुआ, फिसला हुआ, गिरा हुआ, पतित ।

स्तंभ—[सं॰ पु॰] खंभा, तना, शरीर के अंगों की गति का रुक जाना, रुकावट, प्रतिबन्ध, किसी शक्ति के रोकने का प्रयोग ।

स्तंभक—[सं॰ वि॰] रोकनेवाला, अवरोधक, वीर्य-पतन को रोकनेवाला ।

स्तंभन—[सं॰ पु॰] अवरोध, रुकावट, वीर्य-पात में रुकावट, वीर्यस्खलन में विलम्ब पैदा करनेवाली ओषधि । मलावरोध, किसी की शक्ति या चेष्टा को रोकने का तांत्रिक प्रयोग ।

स्तन—[सं॰ पु॰] पयोधर, उरोज, छाती, थन, मादा पशुओं या स्त्रियों के दूध-अंग ।

स्तनपायी—[सं॰ वि॰] शिशु, छोटा बच्चा, माता के स्तनों से दूध पीनेवाला ।

स्तब्ध—[सं॰ वि॰] स्तंभित, स्थिर, मन्द, अचल, दृढ़, जड़ीभूत ।

स्तर—[सं॰ पु॰] तह, परत, शय्या । सेज, तबक, अस्तर ।

स्तव—[सं॰ पु॰] किसी देवता या महापुरुष का गुणगान, स्तुति, स्तोत्र ।

स्तवक—[सं॰ पु॰] गुलदस्ता, फूलों का गुच्छा, पुस्तक का अध्याय या परिच्छेद, स्तुति करनेवाला ।

स्तवन—[सं॰ पु॰] यशोगान, गुणकथन, कीर्ति-गान, स्तुति ।

स्तीर्ण—[सं॰ वि॰] विकीर्ण, विस्तृत, बिखेरा हुआ, छितराया ।

स्तुत—[सं॰ वि॰] प्रशंसित । जिसका यशोगान किया गया हो ।

स्तुति—[सं॰ स्त्री॰] कीर्ति-कीर्तन, प्रशंसा, गुणगान, यशोगान ।

स्तुत्य—[सं॰ वि॰] प्रशंसनीय, स्तुति के योग्य ।

स्तूप—[सं॰ पु॰] ऊँचा टीला, वह ऊँचा टीला जिसके तले किसी महात्मा की अस्थियाँ या केशादि स्मृतिचिह्न गड़े हों ।

स्तेय— [सं॰ पु॰] चोरी । चौर्य ।

स्तोक—[सं॰ पु॰] चातक, पपीहा, विंदु ।

स्तोता—[सं॰ वि॰] स्तुति करने वाला, प्रशंसक ।

स्तोत्र—[सं॰ पु॰] स्तवन, किसी देवी-देवता के रूप, गुण, यश आदि का वर्णन ।

स्तोम—[सं॰ पु॰] स्तुति, प्रार्थना, एक यज्ञ-विशेष, स्तवन ।

स्त्री—[सं॰ स्त्री॰] नारी, मादा, पत्नी, औरत । महिला ।

स्त्रीत्व—[सं॰ पु॰] स्त्रीलिंगसूचक, स्त्रीपन, स्त्री का भाव, जनानापन ।

स्त्रीधन—[सं॰ पु॰] शील, लज्जा, जिस धन पर स्त्री का पूर्ण अधिकार हो ।

स्त्रीधर्म—[सं॰ पु॰] मासिक धर्म, रजोदर्शन, स्त्रियों का कर्त्तव्य ।

स्त्रीव्रत—[सं॰ पु॰] एकनारी-व्रत, अपनी स्त्री को छोड़ दूसरी की इच्छा न करना ।

स्त्रैण—[सं॰ वि॰] स्त्रियों के वश में रहने वाला, स्त्रीरत ।

स्थ—[सं॰] यह प्रत्यय शब्दों के अन्त में लगकर स्थिति, उपस्थिति, निवास और लीन भाव को व्यक्त करता है ।

स्थकित—[वि॰] श्रान्त, थका हुआ क्लान्त ।

स्थगित—[सं॰ वि॰] जो कुछ काल के लिये रोक दिया गया हो । मुलतवी ।

स्थपति—[सं॰ पु॰] शिल्पी, बढ़ई ।

स्थल—[सं॰ पु॰] स्थान, भू-भाग, सूखी भूमि ।

स्थलकमल—[सं॰ पु॰] गुलाब, सूखी भूमि में होने वाला कमल ।

स्थली—[सं॰ स्त्री॰] सूखी भूमि, जगह, स्थान ।

स्थविर—[सं॰ पु॰] वृद्ध, ब्रह्मा, पूज्य, बौद्ध भिक्षु ।

स्थाणु—[सं॰ पु॰] खंभा, स्तंभ, ठूँठ, शिव, अटल ।

स्थान—[सं॰ पु॰] स्थल, ठौर, जगह, टिकाव, आवास, भू-भाग, कार्यालय,

पद, मंदिर, अवसर।

स्थानच्युत—[सं० वि०] जो अपने पद या ठिकाने से हट गया हो।

स्थानभ्रष्ट—[सं० वि०] जो अपने स्थान या लक्ष्य से गिर गया हो या हट गया हो।

स्थानांतर—[सं० पु०] दूसरा स्थान, प्रस्तुत स्थान से भिन्न।

स्थानांतरित—[सं० वि०] जो एक स्थान को छोड़कर दूसरे पर गया हो।

स्थानापन्न—[सं० वि०] दूसरे के स्थान पर अस्थायी रूप से काम करने वाला। प्रतिनिधि, एवज़।

स्थानिक—[सं० वि०] स्थानीय, स्थान या ठौर वाला।

स्थानीय—[सं० वि०] स्थानिक, उसी स्थान का जिसके विषय में कोई उल्लेख हो।

स्थापक—[सं० वि०] संस्थापक। सूत्रधार का सहयोगी, मूर्ति स्थापित करने या बनाने वाला।

स्थापत्य—[सं० पु०] भवन-निर्माण के सिद्धान्तादि के विवेचन की विद्या। भवन-निर्माण-कला, राजगीरी।

स्थापन—[सं० पु०] जमाना, खड़ा करना, उठाना, रखना। किसी विषय को प्रमाणों से सिद्ध करना, निरूपण करना, नया कार्य आरंभ करना।

स्थापना—[सं० स्त्री०] बैठाना, जमाना, स्थित या प्रतिष्ठित करना, सिद्ध या प्रतिपादन करना, साबित करना।

स्थापित—[सं० वि०] प्रतिष्ठित, निश्चित, निर्दिष्ट, व्यवस्थित।

स्थायित्व—[सं० पु०] स्थायी होने का भाव, सुदृढ़ता, स्थिरता।

स्थायी—[सं० वि०] टिकाऊ, दीर्घ काल तक जीवित रहने वाला, दृढ़।

स्थायीभाव—[सं० पु०] काव्य के रसों में सदा स्थित रहने वाले तथा विभावादि में अभिव्यक्त होकर रसत्व को प्राप्त होने वाले तीन प्रकार के भावों में से एक भाव। इसके ९ भेद हैं—हास्य, शोक, भय, जुगुप्सा, रति, क्रोध, उत्साह, विस्मय और निर्वेद।

स्थायीसमिति—[सं० स्त्री०] किसी सभा या सम्मेलन के दो अधिवेशनों के बीच के समय में उसका कार्य संचालन करने वाली समिति।

स्थाल—[पु०] थाल, बड़ी थाली, बड़ी हाँड़ी, रकाबी।

स्थाली—[स्त्री०] थाली, तश्तरी, रकाबी, हाँडी।

स्थाली-पुलाक न्याय—[सं० पु०] एक बात को जानकर उसके सम्बन्ध की सब बातें जान लेना।

स्थावर—[सं० वि०] जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर न ले जाया जा सके, अटल, स्थिर।

स्थित—[सं० वि०] आसीन, अवलंबित, बैठा हुआ, अपने निश्चय या प्रण पर जमा हुआ। विद्यमान, निवासी, खड़ा हुआ, अपने स्थान पर स्थित।

स्थितप्रज्ञ—[सं० वि०] आत्मसंतोषी, सब दशाओं में एकसा रहने वाला, सब मनोविकारों से रहित, विवेकशील।

स्थिति—[सं० स्त्री०] निवास, अवस्था, दशा, पद, परिस्थिति, अस्तित्व, पालन।

स्थितिस्थापक—[सं० पु०] वह शक्ति अथवा विशेषता जिसके कारण कोई वस्तु नयी स्थिति में आकर भी फिर अपनी पूर्व दशा को प्राप्त हो जाय। लचीला।

स्थिर—[सं० वि०] स्थायी, दृढ़, अटल, शाश्वत, निश्चल, शान्त, निश्चित। शिव। पहाड़, एक छन्द।

स्थिरता—[सं० स्त्री०] दृढ़ता, धैर्य, स्थायित्व, अचलत्व, निश्चलता।

स्थिरबुद्धि—[सं० वि०] जिसकी बुद्धि स्थिर हो। दृढ़ चित्त, अटल मन।

स्थूल—[सं० वि०] मोटा, मोटी, पीन, पीवर, सहज ही समझ में या दिखाई देने वाली वस्तु। इन्द्रिय-ग्राह्य पदार्थ।

स्थूलता—[सं० स्त्री०] भारीपन, पीनता, मोटापन, पीवरत्व।

स्थैर्य—[सं० पु०] स्थिरता, दृढ़ता।

स्नातक—[सं० पु०] ब्रह्मचर्य व्रत पूर्ण करने पर गृहस्थाश्रम में प्रविष्ट हुआ व्यक्ति।

स्नान—[सं० पु०] नहाना, शरीर को पानी से स्वच्छ करना, नहान, न्हान।

स्नानागर—[सं० पु०] स्नानालय, नहाने का कमरा या स्थान।

स्नायविक—[सं० वि०] नाड़ी या स्नायु संबंधी।

स्नायु—[सं० स्त्री०] वेदना तथा स्पर्शादि का ज्ञान करानेवाली शरीर की भीतरी नाड़ियाँ।

स्निग्ध—[वि० सं०] जिसमें तेल या स्नेह हो, चिकना, प्रेमयुक्त, मृदुल।

स्नुषा—[सं० स्त्री०] पुत्रवधू, पतोहू।

स्नेह—[सं० पु०] प्यार, प्रेम, छोह, मुहब्बत, चिकना पदार्थ, चिकनाई, तेल, मृदुलता, मसृणता, सनेह, नेह।

स्नेही—[सं० पु०] नेही, प्रेमी, प्रिय, प्यारा, प्रेम करनेवाला, मित्र, साथी।

स्पंद, स्पंदन—[सं० पु०] धीरे धीरे काँपना या हिलना। स्फुरण, हृदय या अंगों का फड़कना।

स्पर्द्धा—[सं० स्त्री०] द्वेष, बराबरी, डाह, संघर्ष, रगड़।

स्पर्द्धी—[सं० वि०] ईर्षालु, द्वेषी,

स्पर्धा करनेवाला ।

स्पर्श—[सं० पु०] छू जाना, छूना, त्वग्, ग्रहण में रवि या शशि पर छाया पड़ने का आरंभ ।

स्पर्शजन्य—[सं० वि०] जो छूने से उत्पन्न हो, संक्रामक ।

स्पर्शास्पर्श—[सं० पु०] छूने या न छूने का विचार या भाव, छूत-पाक ।

स्पर्शी—[वि०] छूनेवाला ।

स्पर्शेन्द्रिय—[सं० स्त्री०] त्वचा, खाल, त्वगिन्द्रिय, स्पर्शज्ञान-कारिणी इन्द्रिय ।

स्पष्ट—[सं० वि०] प्रगट, साफ समझ में आने और दिखाई देनेवाला । सुव्यक्त ।

स्पष्टकथन—[सं० पु०] स्पष्ट वचन, साफ-साफ कहना, किसी के कथन को ठीक उसी तरह कहना ।

स्पष्टतया, स्पष्टतः—[क्रि० वि०] स्पष्ट रूप से, ठीक ठीक, यथार्थ रूप से ।

स्पष्टता—[सं० स्त्री०] स्पष्ट होने का भाव, यथार्थता ।

स्पष्टीकरण—[सं० पु०] प्रकटीकरण, स्पष्ट करने की क्रिया, किसी बात को ठीक ठीक या दो टूक कहना ।

स्पृश्य—[सं० वि०] छूने योग्य ।

स्पृहणीय—[सं० वि०] अभिलाषा करने योग्य, कामना के योग्य । आकांक्षणीय ।

स्पृहा—[सं० स्त्री०] कामना, अभिलाषा, आकांक्षा, चाह ।

स्पृही—[सं० वि०] इच्छुक, अभिलाषी, आकांक्षी ।

स्फटिक—[सं० पु०] बिल्लौर, पारदर्शी मूल्यवान पत्थर, शीशा, फिटकरी ।

स्फार—[सं० वि०] फैला हुआ, फाड़ा हुआ, प्रचुर, अधिक, विपुल ।

स्फाल—[सं० पु०] फड़कना, धीरे-धीरे हिलना, स्फूर्ति ।

स्फीत—[सं० वि०] समृद्ध, वर्द्धित, बढ़ा या फूला हुआ ।

स्फुट—[सं० वि०] फुटकल, भिन्न-भिन्न खिला हुआ, व्यक्त, विकसित ।

स्फुटन—[सं० पु०] विकसित होना, फूटना, फलना, हँसना ।

स्फुटित—[सं० वि०] विकसित, हँसता हुआ, फूला हुआ ।

स्फुरण—[सं० पु०] स्पन्दन, अंग का फड़कना, कम्पन ।

स्फुलिंग—[सं० पु०] चिनगारी ।

स्फूर्ति—[सं० स्त्री०] तेजी, फुरती, फड़कन, स्फुरण होना, किसी कार्य के लिये मन में ईषत उत्तेजना ।

स्फोट—[सं० पु०] फूट पड़ना, बाहरी शरीर को तोड़-फोड़ कर किसी वस्तु का बाहर निकल पड़ना । भयानक ध्वनि के साथ किसी पर्वत, भवन अथवा पृथ्वी के भाग का फूट पड़ना । शरीर के फोड़े । ज्वालामुखी पर्वत से अग्नि आदि का फूट पड़ना ।

स्फोटक—[सं० पु०] फोड़ा, फुन्सी ।

स्मर—[सं० पु०] याद, स्मृति, स्मरण, मदन, कामदेव, मनोज, मार ।

स्मरण—[सं० पु०] किसी देखी, सुनी, अनुभूत या पढ़ी हुई बात का पुनः ध्यान में आना । याद आना, नौ प्रकार की भक्ति में से एक प्रकार की भक्ति । एक अलंकार ।

स्मरणीय—[सं० वि०] स्मरण या याद रखने योग्य ।

स्मरारि—[सं० पु०] महादेव जी, काम-शत्रु ।

स्मारक—[सं० वि०] यादगार, स्मरण रखने को दी गयी वस्तु । याद कराने वाला ।

स्मार्त्त—[सं० पु०] स्मृति-लिखित कार्य या कृत्य, स्मृति-शास्त्र का ज्ञाता । स्मृतिसम्बन्धी । वैष्णव ।

स्मित—[सं० पु०] मंद हास, धीमी मुसकान ।

स्मृत—[सं० वि०] स्मरण में आया हुआ, याद किया हुआ ।

स्मृति—[सं० स्त्री०] याद, स्मरण, नीति तथा दर्शनादि का विवेचना संबंधी धर्मशास्त्र, अठारह की संख्या, एक छन्द ।

स्मृतिकार—[सं० पु०] धर्म-शास्त्र के निर्माता और ज्ञाता ।

स्यंदन—[सं० पु०] टपकना, चूना, रिसना, बहना, चलना, युद्ध का रथ, वायु ।

स्यात्—[सं०] शायद, कदाचित् ।

स्याद्वाद—[सं० पु०] संदेहवाद, जैनों का एक दर्शन, अनेकान्तवाद ।

स्यानप—स्यानपना, चालाकी, चतुराई, धूर्त्तता ।

स्यापा—[पु०] स्त्रियों के शोक मनाने की रीति ।

स्यार—[पु०] सियार, गीदड़, शृगाल ।

स्यूत—[सं० वि०] बुना हुआ, सिया हुआ ।

स्रक—[सं० स्त्री०] फूलों की माला ।

स्रग्धरा—[सं० स्त्री०] म, र, भ, न और तीन (गण) का एक वर्णिक छन्द ।

स्रजना—रचना, उत्पादन करना, सिरजना ।

स्रष्टा—[सं० पु०] ब्रह्मा, विरंचि, विष्णु, शिव, विधाता, रचयिता ।

स्रोत—[सं० पु०] सोता, उद्गम, निर्झर, नदी ।

स्रोतस्वती, स्रोतस्विनी—[सं० स्त्री०] नदी ।

स्वः—[सं० पु०] स्वर्ग, बैकुण्ठ ।

स्व—[सं० वि०] निजका, अपना।

स्वकीय—[सं० पु०] अपने सम्बन्ध का, निजका।

स्वकीया—[सं० स्त्री०] पति-अनुरागिणी स्त्री, पतिव्रता।

स्वगत—[सं० पु०] अपने ही मन में कहना।

स्वच्छंद—[सं० वि०] स्वतंत्र, स्वाधीन, निरंकुश, मनमाना काम करने वाला।

स्वच्छंदता—[सं० स्त्री०] स्वाधीनता, स्वतंत्रता।

स्वच्छ—[सं० वि०] पवित्र, उज्ज्वल, शुभ्र, निर्मल, शुद्ध।

स्वच्छता—[सं० स्त्री०] पवित्रता, निर्मलता, उज्ज्वलता, शुद्धता।

स्वजन—[सं०पु०] नातेदार, आत्मीयजन। कुटुम्बी।

स्वतंत्र—[सं० वि०] जो किसी के आधीन न हो। स्वाधीन, मुक्त, स्वच्छन्द, स्वेच्छाचारी, निरंकुश।

स्वतंत्रता [सं० स्त्री०] स्वाधीनता, स्वच्छन्दता, निरंकुशता।

स्वतः—अपने आप, स्वयम्।

स्वत्व—[सं० पु०] अपनत्व, अधिकार, निजत्व।

स्वत्वाधिकारी—[सं० पु०] स्वामी, अधिकारी, जिसके हाथ में किसी वस्तु का पूर्णरूप से अधिकार हो।

स्वदेश—[सं० पु०] मातृभूमि, अपना देश।

स्वधर्म—[सं० पु०] अपना धर्म।

स्वधा—[सं] इसका उच्चारण पितरों को हव्य देने में होता है।

स्वन—[सं० पु०] शब्द, ध्वनि, निस्वन।

स्वनामधन्य—[सं०वि०] जो अपने नाम से प्रशंसनीय या धन्य हो।

स्वप्न—[सं० पु०] मन में उठी हुई ऊँची कल्पनाएँ, निद्रावस्था में दिखाई देने वाले दृश्य और परिस्थितियाँ। निद्रा।

स्वभाव—[सं०पु०] प्रकृति, मनोवृत्ति, सदा रहने वाला मुख्य गुण, आदत, मिजाज़। तासीर,

स्वभावतः—स्वभावसे, सहजही, निसर्गतः।

स्वभावसिद्ध—[सं० वि०] प्रकृतिसिद्ध, सहज ही, स्वाभाविक, प्राकृतिक।

स्वभावोक्ति—[सं० स्त्री०] एक अर्थालंकार।

स्वयंभू—[सं० पु०] जो आपसे आप उत्पन्न हुआ हो, ब्रह्मा, विष्णु, शिव, कामदेव, मनु।

स्वयंवर—[सं० पु०] वह उत्सव जहाँ कन्या अपना पति आप ही चुने।

स्वयंवरा—[सं० स्त्री०] इच्छानुसार अपना पति चुनने वाली कन्या।

स्वयंसिद्ध—[सं० वि०] वह बात जिसकी सिद्धि के निमित्त प्रमाण की आवश्यकता न हो। स्वतःसिद्ध।

स्वयंसेवक—[सं० पु०] पुरस्कार की अभिलाषा के विना ही किसी की सेवा करने वाला।

स्वयमेव—[सं० वि०] स्वयं ही, आप ही।

स्वर—[सं० पु०] सुर, किसी जीव के कंठ अथवा बाजे का शब्द। किसी पदार्थ पर आघात पड़ने पर उत्पन्न होने वाला शब्द, अंतरिक्ष, आकाश। आवाज़।

स्वरभंग—[सं० पु०] कंठ-स्वर के वैठ जाने पर एक रोग।

स्वरस—[सं० पु०] किसी वृक्ष की पत्ती को कूट-पीस और छान कर निकाला हुआ रस।

स्वराज्य—[सं० पु०] अपने देश में अपना राज्य। प्रजातंत्र।

स्वरित—[सं० पु०] वह स्वर जो मध्यम स्वर से उच्चरित हो, तीव्र और मन्द स्वरों के बीच का स्वर। गूँजता हुआ।

स्वरूप—[सं० पु०] अपना रूप, आकार, आकृति, मूर्ति, चित्र, शक्ल।

स्वरोदय—[सं० पु०] वह शास्त्र जिसमें श्वासों के द्वारा शुभाशुभ जानना बताया जाय।

स्वर्गंगा—[सं० स्त्री०] मंदाकिनी। एक पवित्र नदी।

स्वर्ग—[सं० पु०] नाकलोक, वैकुण्ठ, देवधाम, सातलोकों में से तीसरा लोक जिसमें पुण्यात्माओं का निवास रहता है।

स्वर्ग-तरु—[सं० पु०] कल्पवृक्ष, देव-तरु। इच्छा पूर्ण करने वाला वृक्ष।

स्वर्ग-वासी—[सं० वि०] मृत, स्वर्गीय, स्वर्ग में निवास करने वाला।

स्वर्गारोहण—[सं० पु०] स्वर्ग को सिधारना, स्वर्गगमन, मरना।

स्वर्गीय—[सं० वि०] जिसने शरीर त्याग दिया हो, स्वर्ग सम्बन्धी।

स्वर्ण—[सं० पु०] कनक, सोना, कंचन, सुवर्ण, हिरण्य, हेम, धतूरा।

स्वर्णकार—[सं० पु०] सुनार।

स्वर्णगिरि—[सं० पु०] स्वर्णाचल, सुमेरु पर्वत, हेमाद्रि।

स्वल्प—[सं० वि०] अत्यन्त थोड़ा।

स्वस्ति—[सं० अव्य०] आशीष, कल्याण हो। ब्रह्मा की तीन स्त्रियों में से एक।

स्वस्तिक—[सं० पु०] एक शुभ चिह्न, हठ योग का एक आसन। एक मांगलिक द्रव्य।

स्वस्तिवाचन—[सं० पु०] मांगलिक वेद-मंत्रों का पाठ, शुभ कार्यारंभ पर देव-पूजन, एक धार्मिक कृत्य।

स्वस्त्ययन—[सं० पु०] एक धार्मिक कृत्य, विशेष शुभ अवसरों पर वेद के मांगलिक मंत्रों का पाठ ।

स्वस्थ—[सं० वि०] आरोग्य, भला-चंगा, सावधान, नीरोग, तन्दुरुस्त ।

स्वांत—[सं०पु०] अन्तःकरण, मन ।

स्वागत—[सं० पु०] अभिनन्दन, अभ्यर्थना, अगवानी, आदर-सत्कार ।

स्वागताध्यक्ष—[सं० पु०] स्वागत कारिणी सभा का सभापति ।

स्वातंत्र्य—[सं० पु०] स्वतंत्रता, स्वाधीनता ।

स्वाति—[सं० स्त्री०] पन्द्रहवाँ नक्षत्र जो शुभ माना गया है । स्वाती ।

स्वातिसुत—[सं० पु०] मुक्ता, मोती, स्वाती-तनय, स्वातिपुत्र ।

स्वाती—[सं० पु०] स्वाति नक्षत्र ।

स्वाद—[सं० पु०] रसानुभूति, आनन्द, किसी वस्तु के खाने-पीने से जीभ को होने वाला अनुभव ।

स्वादन—[सं० पु०] चखना, आनन्द लेना, स्वाद लेना ।

स्वादिष्ट—[सं० वि०] सुस्वादु, जायकेदार, अच्छे स्वादवाला, चखने में अच्छा, मजेदार ।

स्वादु—[सं० पु०] मधुरता, मिठास, दूध, गुड़, मीठा रस, स्वाद, ज़ायका ।

स्वाद्य—[सं० वि०] स्वाद लेने योग्य ।

स्वाधीन—[सं० वि०] स्वच्छन्द, स्वतंत्र, निरंकुश, मुक्त ।

स्वाधीनता—[सं० स्त्री०] स्वतंत्रता, स्वच्छन्दता, आज़ादी ।

स्वाधीनपतिका—[सं० वि०] वह नायिका जिसका पति उसके वश में हो ।

स्वाध्याय—[सं० पु०] अनुशीलन, अध्ययन, नियमित वेदाध्ययन ।

स्वाभाविक—[सं० वि०] प्राकृतिक, नैसर्गिक, स्वभावसिद्ध, जो स्वतः हो ।

स्वाभाविकी—[सं० वि०] नैसर्गिक, प्राकृतिक, स्वभावसिद्ध, कुदरती ।

स्वामिता—[सं० स्त्री०] स्वामित्व, प्रभुता ।

स्वामित्व—[सं० पु०] स्वामी का भाव, प्रभुत्व, स्वामिता ।

स्वामिनी—[सं० स्त्री०] सुगृहिणी, मालिकिनी, स्वामिनी । राधाजी ।

स्वामी—[सं० पु०] नाथ, मालिक, पति, स्वत्वाधिकारी, भगवान्, अन्नदाता। प्रधान, मुखिया, संन्यासी, साधु ।

स्वायत्त—[सं० वि०] जिस पर अपना ही अधिकार हो, जो अपने अधीन हो ।

स्वायत्तशासन—[सं० पु०] स्थानिक स्वराज्य, स्वराज्य, वह शासन जो अपने अधिकार में हो ।

स्वारस्य—[सं० वि०] सरसता, स्वाभाविकता, रसीलापन ।

स्वाराज्य—[सं० पु०] स्वाधीन राज्य, स्वर्ग का राज्य, स्वर्ग या वैकुंठ लोक ।

स्वार्थ—[सं० पु०] अपना उद्देश्य, अपनी भलाई, अपना प्रयोजन ।

स्वार्थता—[सं०स्त्री०] स्वार्थ का भाव, स्वलाभ, निज प्रयोजन ।

स्वार्थत्याग—[सं० पु०] किसी भले काम के लिये अपने हित का ध्यान न करना । अपने लाभ का विचार छोड़ कर परोपकार करना ।

स्वार्थपर—[सं० वि०] स्वार्थी, अपने-हित का ही ध्यान रखने वाला ।

स्वार्थपरता—[सं०स्त्री०] अपने प्रयोजन की ही सिद्धि का ध्यान रखना ।

स्वार्थपरायण—[सं० वि०] स्वार्थी, मतलबी ।

स्वार्थसाधन—[सं० पु०] अपना काम निकालना, अपना लाभ साधना ।

स्वार्थांध—[सं०वि०] अपने मतलब के लिये अंधे के समान कुछ न देखनेवाला ।

स्वार्थी—[सं० वि०] मतलबी, स्वार्थ-परायण, अपना ही हित देखने वाला ।

स्वास्थ्य—[सं०पु०] नीरोग, आरोग्य, स्वस्थ होने की अवस्था, सावधान ।

स्वास्थ्यकर—[सं०वि०] स्वास्थ्यकारक, स्वास्थ्यकारी, आरोग्य-वर्द्धक ।

स्वास्थ्यवर्धन—[सं० वि०] आरोग्यता बढ़ाने वाला ।

स्वास्थ्य-सुधार—[सं० पु०] विकृत स्वास्थ्य का निर्माण । स्वस्थ होने की अवस्था ।

स्वाहा—[सं०अव्य०] देवताओं को हवि देने में प्रयुक्त होने वाला एक शब्द विशेष । नष्ट या नाश करना ।

स्वीकरण—[सं०पु०] अंगीकार करना, अपनाना, मंजूर करना । मानना ।

स्वीकार—[सं०पु०] अंगीकार, स्वीकृत, मंजूर ।

स्वीकारोक्ति—[सं स्त्री०] ऐसा बयान जिसमें अभियुक्त अपना दोष आपही स्वीकार कर ले ।

स्वीकृत—[सं० वि०] अंगीकार किया हुआ, कबूल किया हुआ, मंजूर किया हुआ ।

स्वीकृति—[सं० स्त्री०] सम्मति, स्वीकार का भाव, मंजूरी ।

स्वीय—[सं० वि०] आत्मीय, सम्बन्धी, स्वजन, निजका ।

स्वेच्छाचार—[सं० पु०] मनमानी करना, यथेच्छाचार ।

स्वेच्छानुसार—[सं० पु०] स्वयंसेवक ।

स्वेत—[सं० वि०] श्वेत, धवल, सफेद, उज्ज्वल ।

स्वेद—[सं० पु०] पसीना, श्रमकण, भाप, गरमी, ताप ।

स्वेदक—[सं० वि०] स्वेदकारी, पसीना लाने वाला, प्रस्वेदकारक ।

स्वेदज—[सं० वि०] पसीने से उत्पन्न

होने वाला जूँ, खटमल आदि।

स्वेदन—[सं० पु०] पसीना निकलना।

स्वेदित—[सं० वि०] पसीने से युक्त, बफारा दिया या सेका हुआ।

स्वै-[सं०वि०] निजका, निजी, अपना।

स्वैर—[सं० वि०] स्वतंत्र, स्वच्छन्द, स्वाधीन।

स्वैरचारी—[सं० वि०] निरंकुश, स्वेच्छाचारी, स्वच्छन्द, व्यभिचारी, स्वेच्छाचारी।

स्वैरता—[सं० स्त्री०] स्वेच्छाचारिता, यथेच्छाचारिता।

स्वैरिणी—[सं०स्त्री०] स्वेच्छाचारिणी, व्यभिचारिणी।

स्वैरिता-[सं० स्त्री०] यथेच्छाचारिता।

स्वोपार्जित—[सं० वि०] निज का पैदा किया हुआ, अपना कमाया या उपार्जित किया हुआ।

—:०:—

ह

ह—संस्कृत और हिन्दी वर्ण माला का तेतीसवाँ वर्ण। व्याकरण के विचार से ऊष्मसंज्ञक वर्णों में चौथा वर्ण। [सं० पु०] आकाश, शिव, शुभ, मंगल, शून्य, जल, ज्ञान, घोड़ा, हँसी। [अव्य०] संस्कृत-पद्य-साहित्य में पाद-पूर्ति के लिये प्रयुक्त होने वाला सम्बोधन और प्रसिद्धिसूचक।

हँड़िया—[सं० स्त्री०] मिट्टी का बना एक छोटा पात्र।

हंस—[सं० पु०] बतख की जाति का एक सुन्दर पक्षी, जिसके सम्बन्ध में कहा जाता है कि वह मानसरोवर पर रहता है। मराल, ब्रह्मा, परमात्मा, जीवात्मा, शिव, विष्णु, सूर्य, ब्रह्म, आत्मा, संन्यासियों का एक भेद, परमहंस। प्राण वायु। घोड़ा। सुमेरु पर्वत। श्रेष्ठ। अत्यन्त शुद्ध।

हंसक—[सं० पु०] हंस नामक पक्षी, मराल। पैरों में पहनने का स्त्रियों का एक आभूषण—बिछुआ, झाँभन, पाज़ेब।

हंसगति—[सं० स्त्री०] हंस की सी सुन्दर मन्द गति। सायुज्य मुक्ति, एक मात्रिक छन्द।

हंसगामिनी—[वि० स्त्री०] हंस के समान सुन्दर मन्द गति से चलनेवाली। हंस द्वारा गमन करने वाली—ब्रह्माणी, ब्रह्मा की शक्ति।

हंसतनय—[सं० पु०] सूर्य-पुत्र, यमराज, शनि नामक ग्रह।

हंसतनया—[सं०स्त्री०] सूर्य की पुत्री, यमुना—यमराज की बहन।

हँसतामुखी—[सं० स्त्री०] हँसते हुए मुख वाली। प्रसन्नवदना। स्मितानना, हँसमुखी।

हँसना—[क्रि०] प्रसन्नता से मुँह फैलाकर विशेष प्रकार का शब्द करना। खिलखिलाना, कह कहा लगाना, प्रसन्न होना, किसी का उपहास करना। हँसी उड़ाना।

हंसनादिनी—[सं० स्त्री०] कोयल के समान बोलने वाली और भारी नितम्बों वाली स्त्री।

हँसनि—[सं० स्त्री०] हँसने का भाव, हँसने की क्रिया, हँसने का प्रकार, हँसना।

हंसपदी—[सं० स्त्री०] एक लता।

हंसपुत्र—[सं० पु०] हंसतनय, सूर्य-सुत, यम, शनि।

हंसपुत्री-[सं०स्त्री०] सूर्य-सुता, यमुना।

हंसमाला—[सं० स्त्री०] हंसों की पाँति।

हँसमुख—[वि०] प्रसन्नवदन, हँसोड़, विनोदप्रिय, जिसका चेहरा सदैव प्रसन्न रहता हो।

हंसरथ—[सं० पु०] हंस जिसका रथ (वाहन) है—ब्रह्मा।

हंसराज—[सं० पु०] एक पर्वतीय बूटी। शरद ऋतु में होने वाले धानों का एक भेद। हंसों का राजा, श्रेष्ठ हंस।

हँसली—[सं० स्त्री०] स्त्रियों का गले में पहनने का एक आभूषण, गले के नीचे की गोलाकार हड्डी।

हंस-वंश—[सं० पु०] सूर्यवंश।

हंसवाहन—[सं० पु०] ब्रह्मा।

हंसवाहिनी—[सं० स्त्री०] सरस्वती।

हंस-सुत—[सं० पु०] सूर्य-पुत्र, यम, शनि, राजा कर्ण।

हंससुता—[सं० स्त्री०] सूर्यपुत्री, यमुना।

हँसाई—[स्त्री०] उपहास, अपकीर्ति,

निन्दा, बदनामी। हँसने का भाव या हँसने की क्रिया।

हंसात्मज—[सं० पु०] सूर्यतनय, यम, शनि, कर्ण।

हंसात्मजा—[सं० स्त्री०] सूर्यतनया, यमुना।

हंसाधिरूढ़ा—[सं० स्त्री०] सरस्वती।

हँसाना—[क्रि०] दूसरे व्यक्ति को खुश करना।

हंसारूढ़—[सं० पु०] हंस पर चढ़ा हुआ, ब्रह्मा।

हंसालि—[सं० स्त्री०] हंसों की पाँति, हंसमाला, हंसावलि। एक मात्रिक छंद।

हंसिका—[स्त्री०] मादा हंस, स्त्री जाति का हंस, हंस की स्त्री।

हंसिनि, हंसिनी—[स्त्री०] मादा हंस, हंस की स्त्री।

हँसिया—[सं० पु०] लोहे का एक औज़ार जो फ़सल, घास या शाक काटने के काम आता है।

हंसी—[सं० स्त्री०] हंसिनी, हंस की स्त्री, एक वर्णिक छन्द।

हँसी—[स्त्री०] हास, हसना, हँसने की क्रिया, उपहास, निन्दा।

हँसोड़—[वि०] मसखरा, हँसी-ठट्ठा करने वाला, विनोदी, दिल्लगीबाज।

हँसौहा—[वि०] हँसी युक्त, मुस्कराहट युक्त, हँसने के स्वभाव वाला।

हक्का-बक्का—[वि०] घबराया हुआ, भौंचक्का, विस्मित।

हचकोला—[सं० पु०] खाट, कुर्सी, मेज अथवा गाड़ी आदि के धक्के अथवा दच्चों के कारण हिलना।

हटतार—[सं० पु०] हरताल, हड़ताल। माला का सूत।

हटवार—[सं० पु०] दुकानदार, बाजार में सौदा बेचने वाला।

हटिया—[सं० स्त्री०] हाट, बजरिया, छोटा बाजार, पैंठ।

हटौटी—[सं० स्त्री०] शरीर की गठन।

हट्ट—[सं० पु०] बाजार, क्रय-विक्रय का स्थान, हाट, पैंठ, मेला।

हट्टविलासिनी—[सं० स्त्री०] वेश्या, बाज़ारू स्त्री। हल्दी।

हट्टी—[सं० स्त्री०] हाट, दूकान।

हठ—[पु०] दुराग्रह, ज़िद, अड़, टेक। बलात्कार, जोरावरी।

हठधर्म—[सं० पु०] अड़, दुराग्रह, कट्टरपन।

हठधर्मी—[सं० स्त्री०] सत्यासत्य का विचार न करना, अपनी ही बात पर अड़े रहना। दुराग्रह, कट्टरपन।

हठयोग—[सं० पु०] प्राणायामादि क्रियाओं द्वारा चित्त-वृत्तियों को रोकना। नेती-धोती, आसनादि शारीरिक क्रियाओं द्वारा मन को वश में करना।

हठात्—[सं०] हठपूर्वक, दुराग्रह के साथ, बलपूर्वक, जबर्दस्ती, जोरावरी।

हठी—[वि०] हठ करने वाला, जिद्दी।

हठीला—[पु०] हठी, जिद्दी, हठ करने वाला, दुराग्रही। बात का पक्का, दृढ़प्रतिज्ञ।

हड़कम्प—[सं० पु०] हलचल, खलभली, तहलका।

हड़गिल्ल—[सं० पु०] बगुले की जाति का एक पक्षी। हड़गिल्ला।

हड़ताल—[सं० स्त्री०] किसी कार्य या व्यक्ति के प्रति असन्तोष प्रकट करने के लिए कारोबार बन्द कर देना। इस नाम से प्रसिद्ध पीले रंग की एक खनिज वस्तु।

हड़पना—[क्रि०] अनुचित ढंग से ले लेना। खा जाना, निगल जाना।

हड़बड़—[सं० स्त्री०] जल्दबाजी आतुरता, घबराहट, उतावल।

हड़बड़िया—[वि०] जल्दबाज़, उतावला, आतुर, उतावली करने वाला।

हड़बड़ी—[स्त्री०] घबराहट, उतावल, हड़बड़।

हड्डी—[स्त्री०] अस्थि, हाड़, शरीरस्थ रस, रक्तादि धातुओं में से एक धातु।

हण्डा—[पु०] पानी रखने का मिट्टी का बड़ा पात्र।

हण्डी—[स्त्री०] छोटा हण्डा।

हत—[वि०] मारा हुआ, नष्ट किया गया, बध किया गया, पीड़ित, रहित, विहीन। गणित शास्त्र में गुणित या गुणा किया गया।

हतदैव—[वि०] भाग्यहीन, कम्बख़्त, अभागा, बदकिस्मत।

हतप्रभ—[वि०] निस्तेज, कान्तिहीन, फीका, उदास, निष्प्रभ।

हतप्रभाव—[वि०] शक्तिहीन, जिसका असर जाता रहा हो।

हतबुद्धि—[वि०] मूर्ख, बुद्धिहीन, बेअक्ल।

हतभाग, हतभाग्य—[वि०] अभागा, कम्बख़्त, बदकिस्मत, भाग्यहीन।

हतलक्षण—[वि०] हतभाग्य, अभागा, जिसके शुभ लक्षण नष्ट हो गए हों।

हतश्री—[वि०] शोभाहीन, उजड़ा हुआ, हतप्रभ, निष्प्रभ, तेजहीन, धनहीन, गरीब, निर्धन।

हतसम्पद्—[वि०] निर्धन, ग़रीब, लुटा हुआ।

हताभा—[वि०] हतश्री, हतप्रभ, शोभाहीन, निस्तेज।

हताश—[वि०] निराश, नाउम्मेद, जो आशा त्याग चुका हो।

हताहत—[वि०] मारे गए और चुटैल, मृत और घायल।

हतोत्साह—[वि०] उत्साहरहित, जिसका हौसला जाता रहा हो।

हत्थ—[पु०] हाथ ।
हत्था—[पु०] बेंटा, दस्ता, मूठ ।
हत्थि—[पु०] हाथी ।
हत्थे—[क्रि०वि०] हस्ते, द्वारा, मारफ़त, हाथ में ।
हत्या—[स्त्री०] बध, खून, कत्ल । बध करने का पाप या दोष ।
हत्यारा—[पु०] हत्या करने वाला, बधक, खूनी ।
हथ—[पु०] हाथ का संक्षिप्त रूप जिसका समास किये हुए पद में प्रयोग होता है । यथा—'हथगोला' में ।
हथकण्डा—[पु०] हाथ की सफाई, हाथ की चालाकी, गुप्त चालाकी । हस्तकौशल, हस्तलाघव ।
हथकड़ी—[स्त्री०] अपराधियों के हाथों में पहनाने के लोहे के कड़े, जिसमें ताला लगा दिया जाता है ।
हथनाल—[स्त्री०] हाथी पर रख कर या हाथी द्वारा खींचकर ले आई जाने वाली तोप । गजनाल ।
हथफूल—[पु०] एक आभूषण जो हाथ के पृष्ठ भाग पर पहना जाता है ।
हथफेर—[पु०] किसी वस्तु की सफाई से छिपा लेने या उड़ा लेने की क्रिया ।
हथसार—[स्त्री०] हाथियों के रहने का मकान । हस्तिशाला । हाथीखाना ।
हथिनी—[स्त्री०]मादा हाथी, हस्तिनी ।
हथियाना—[क्रि०] ले लेना, हाथ में करना, अपने अधीन या अधिकार में कर लेना । किसी चीज को धोखे या चालाकी से ले लेना । उड़ा लेना । हाथ लगाना । हाथ में लेना ।
हथियार—[पु०] शस्त्रास्त्र, भाला, तलवार, बन्दूक आदि औज़ार, कोई काम करने का उपकरण ।
हथौटी—[स्त्री०] किसी काम के करने का ढंग, किसी काम में हाथ लगाने का प्रकार । हस्तकौशल ।
हद—[स्त्री०] सीमा, मर्यादा, हद्द ।
हनन—[पु०] बध करना, मार डालना, हत्या, चोट मारना, गणित में गुणा करना ।
हनु—[स्त्री०] ठोड़ी, चिबुक, ठुड्डी, नीचे वाले जबड़े की हड्डी, हथियार, रोग । मृत्यु । वेश्या ।
हनुमत्—[पु०] रामायण में प्रसिद्ध एक योद्धा, हनुमान, महावीर, बड़ी या विशेष प्रकार की ठोड़ी वाला ।
हनुमन्त—[पु०] हनुमान्, महावीर, पवनात्मज, आञ्जनेय ।
हनुमान्—[पु०] हनुमत्, महावीर ।
हनूमान—[पु०] देखो 'हनुमान' ।
हन्त—[अव्य०] शोक या खेदसूचक शब्द ।
हन्ता—[पु०] बध करने वाला, मारने वाला, बधक, घातक ।
हन्त्री—[स्त्री०] नाश करने वाली, मारने वाली, बध करने वाली ।
हमीर—[पु०] रणथम्भोर के राजा-हम्मीरदेव । संगीत में एक मिश्रित राग ।
हमेल—[स्त्री०] गले में पहनने का हार जो चाँदी, सोने के सिक्कों का बनाया जाता है ।
हम्मीर—[पु०] देखो 'हमीर' ।
हय—[पु०] घोड़ा । इन्द्र । सात की संख्या का सूचक शब्द, छन्दःशास्त्र में चार मात्राओं का एक छन्द ।
हयङ्कष—[पु०]इन्द्र का सारथि मातलि । सारथि । कोचवान ।
हयग्रीव—[पु०] विष्णु के २४ अवतारों में से एक । कल्पान्त में ब्रह्मा की निद्रित अवस्था में वेदों को चुरा ले जाने वाला राक्षस ।
हयज्ञ—[पु०] साईस, सालोत्तरी (शालिहोत्री) ।
हयनाल—[स्त्री०] घोड़ों द्वारा खींची जाने वाली तोप ।
हयप्रिय—[पु०] घोड़ों को प्रिय लगने वाला. जौ, यव (जई) ।
हयमेध—[पु०] अश्वमेध यज्ञ ।
हयशाला—[स्त्री०] घोड़े बाँधने का स्थान. अस्तबल, घुड़साल ।
हयारूढ़—[पु०] घुड़सवार, अश्वारोही ।
हयी—[स्त्री०] घोड़ी ।
हर—[पु०] शिव, महादेव, अग्नि, विभीषण के एक राक्षस मन्त्री का नाम, गधा । गणित में भिन्न के नीचे वाली संख्या, भाजक । छन्दःशास्त्र में छप्पय छन्द का एक भेद । [वि०] लूटने वाला, चोर हरण करने वाला. ले जाने वाला, वहन करने वाला, बध या विनाश करने वाला । विभाजन करने वाला ।
हरख—[पु०] हर्ष, प्रसन्नता, आनन्द, खुशी, मोद ।
हरखना—[क्रि०] प्रसन्न होना, हर्षित होना, आनन्दित होना, मुदित होना ।
हरखाना—[क्रि०] प्रसन्न करना, प्रमुदित करना, आनन्दित करना ।
हरखित—[वि०] हर्षित, आनन्दित, प्रसन्न, प्रमुदित ।
हरचन्दन—[पु०] श्वेत चन्दन ।
हरट्ट—[पु०] हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा, दृढ़, मजबूत ।
हरण—[पु०]चुराना, लूटना, छीनना, नाश करना, मिटाना, ले जाना, विभाग करना, बाँटना, घटाना ।
हरताल—[स्त्री०] पीले रंग का एक खनिज द्रव्य । "हरताल फेरना"—मिटा देना, नष्ट करना ।
हरदौल—[पु०] ओरछा-नरेश जुझार सिंह के छोटे भाई,जो बड़े ही भ्रातृ-भक्त थे । इन्हें हरियादेव या हरदेव भी

कहते हैं।

हरना—[क्रि०] लूटना, चुराना, छीनना, नाश करना, हटाना, मिटाना, भगा देना, बाँटना, घटाना, आकृष्ट करना, खींचना, [पु०] हिरन।

हरनी—[स्त्री०] हरिणी, मृगी।

हरनौटा—[पु०] हिरन का बच्चा। हिरनौटा।

हरबोंग—[वि०]मूर्ख, देहाती, अक्खड़, उजड्ड, गँवार, [पु०] अन्धेर, अत्याचार, उपद्रव, अराजकता।

हरशेखरा—[स्त्री०] गङ्गा।

हरहाई—[स्त्री०] जंगली गाय, दुष्ट या नट खट गाय।

हरहार—[पु०] शिवजी की माला, सर्प, शेषनाग।

हरावल—[स्त्री०] सेना का अग्र भाग, वे सैनिक जो सेना में सबसे आगे रहते हैं।

हरि—[पु०] विष्णु, सिंह, वायु, इन्द्र, सूर्य, शिव, चन्द्रमा, किरण, वानर, ब्रह्मा, अश्व, यम, मेंढक, मोर, हंस, तोता, कोकिल, जल, अग्नि, श्रीकृष्ण, राम, एक वर्ष का नाम, एक पहाड़, एक भूखण्ड, छन्दःशास्त्र में एक छन्द का नाम।

हरिकथा—[स्त्री०] परमेश्वर अथवा उसके अवतारों का गुण-कीर्तन।

हरिकीर्तन—[पु०] ईश्वर या उसके अवतारों का गुण-गान।

हरिकेश—[पु०] शिव।

हरिगीतिका—[स्त्री०] २८ मात्राओं वाला एक छन्द।

हरिचन्द—[पु०] सूर्यवंश के एक प्रसिद्ध सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र। हिन्दी के एक प्रसिद्ध कवि—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र।

हरिचन्दन-[पु०] लालचन्दन, कुंकुम, पद्मकेसर, चाँदनी।

हरिजन—[पु०] परमात्मा का भक्त या दास, शूद्र या अछूत जाति का व्यक्ति।

हरिण—[पु०] हिरन, मृग, शिव, सूर्य, विष्णु, हंस, श्वेत रंग।

हरिण-हृदय—[वि०] भीरु, डरपोक।

हरिणाक्षी—[स्त्री०] हरिण के से सुंदर नेत्रों वाली, मृगनयनी, मृगलोचनी, मृगाक्षी।

हरिणाङ्क—[पु०] चन्द्रमा।

हरिणी—[स्त्री०] मृगी, हिरनी। युवती स्त्री। छन्दःशास्त्र में एक छन्द का नाम। एक देवाङ्गना।

हरित—[पु०] हरा रंग, एक घोड़े का नाम। सिंह, विष्णु, सूर्य।

हरितमणि—[पु०] मरकत मणि, पन्ना।

हरितालिका—[स्त्री०] स्त्रियों का एक व्रत जो भादों सुदि तीज को किया जाता है।

हरिदश्व—[पु०] सूर्य, आक का वृक्ष।

हरिद्रा—[स्त्री०] हल्दी। वन, जंगल। सीसा धातु। मंगल।

हरिद्वार—[पु०] एक प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान। यहीं पर गंगाजी पहाड़ों से निकल कर समतल भूमि पर आती हैं।

हरिधाम—[पु०] वैकुण्ठ, हरिपुर।

हरिनायक—[पु०] मारुति, हनुमान। सर्पराज, शेषनाग, उच्चैःश्रवा घोड़ा।

हरिपद—[पु०] भगवान के चरण, भगवान का स्थान, विष्णु-लोक, वैकुण्ठ। छन्दःशास्त्र में एक छन्द।

हरिपुर—[पु०] हरिधाम, वैकुण्ठ, हरिपद।

हरिप्रिया—[स्त्री०] लक्ष्मी, तुलसी, लाल चन्दन। छन्दःशास्त्र में एक छन्द।

हरिभक्त—[पु०] भगवान् का प्रेमी, भगवद्भक्त।

हरिभुक्—[पु०] सर्प, मयूर।

हरियल—[पु०] इस नाम से प्रसिद्ध पक्षी, हरे रंग वाला कबूतर की जाति का एक पक्षी।

हरियाली—[स्त्री०] हरे-हरे पेड़ों का विस्तार या समूह। हरे रंग का फैलाव।

हरियाली तीज—[स्त्री०] सावन सुदि तीज।

हरिरस—[पु०] भगवत्प्रेम, कृष्णानुराग।

हरिराग—[पु०] हरि-रस, ईश्वर-प्रेम।

हरिवंश—[पु०] कृष्ण का वंश। इस नाम से प्रसिद्ध एक पुराण जिसमें कृष्ण के कुटुम्ब का वर्णन है।

हरिवर्ष—[पु०] जम्बुद्वीप के अन्तर्गत एक भूखण्ड का नाम।

हरिवास—[पु०] पीपल का वृक्ष जिसमें विष्णु का निवास माना जाता है।

हरिवासर—[पु०] विष्णु का चिह्न, रविवार, एकादशी, वामन द्वादशी, नृसिंह चतुर्दशी या अनन्त चतुर्दशी।

हरिवाहन—[पु०] विष्णु की सवारी, गरुड़।

हरिशयन—[पु०] आषाढ़ शुक्ला द्वादशी से कार्तिक शुक्ला द्वादशी तक का समय।

हरिशयनी—[स्त्री०] आषाढ़ सुदि एकादशी। इस दिन देवता शयन करते हैं।

हरिश्चन्द्र—[पु०] प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा जो त्रिशंकु के पुत्र थे। हिन्दी के प्रसिद्ध कवि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र।

हरिहय—[पु०] इन्द्र, देवराज।

हरिहाई—[स्त्री०] देखो "हरहाई"।

हरीतकी—[स्त्री०] हर्र, हरड़।

हरीरा—[पु०] मेवा और मसालों

को दूध में औटा कर बनाया हुआ एक पेय पदार्थ जो प्रायः प्रसूता स्त्रियों को खिलाया जाता है।

हर्त्ता—[पु०] हरण करनेवाला, नाश करने वाला, चुराने वाला।

हर्म्य—[पु०] महल, प्रासाद।

हर्यक्ष—[पु०] सिंह, कुबेर, [वि०] पीले नेत्रों वाला।

हर्यश्व—[पु०] इन्द्र।

हर्ष—[पु०] प्रसन्नता, आनन्द, खुशी।

हर्षवर्द्धन—[पु०] एक प्रसिद्ध क्षत्रिय राजा। इन्हीं की सभा में संस्कृत के सुप्रसिद्ध कवि बाण रहते थे।

हर्षिणी—[स्त्री०] भाँग, विजया।

हर्षित—[वि०] प्रसन्न, आनन्दित, आह्लादित।

हर्षोत्फुल्ल—[वि०] प्रमुदित, हर्ष से प्रफुल्लित।

हल्—[पु०] स्वररहित व्यंजन वर्ण।

हल—[पु०] लांगल, हल, खेत जोतने का औजार।

हलधर—[पु०] बलदेव जी, बलरामजी।

हलन्त—[पु०] वह शब्द जिसके अन्त में हल् वर्ण हो।

हलवाहा—[पु०] हलवाहक, हल जोतनेवाला।

हलायुध—[पु०] बलदेव जी। एक प्रसिद्ध संस्कृत कोश।

हलाहल—[पु०] एक प्रकार का तीक्ष्ण विष जो देव-दानवों के समुद्र-मन्थन करते समय निकला था, गरल।

हली—[पु०] बलराम।

हलीशा—[स्त्री०] हलदण्ड, हलका लम्बा डंडा जिसमें बैल जोते जाते हैं। हरस।

हवन—[पु०] होम, किसी देवता के उद्देश्य से अग्नि में जौ, तिल, घी आदि की आहुति देने की क्रिया। आहुति, अग्नि। आहुति डालने का चमचा।

हवनीय—[वि०] हवन के योग्य। [पु०] होम का द्रव्य, हव्य, हवि।

हवि—[पु०] हवनीय पदार्थ, हवन करने की सामग्री। देवताओं के उद्देश्य से अग्नि में आहुति देने का सामान, हव्य। आहुति-शेष।

हविष्य—[पु०] हवि, घृत, हवन करने योग्य। देवताओं को हवन द्वारा अर्पण करने योग्य खीर, हलुवा आदि भोज्य पदार्थ। आहुति, बलि।

हविष्यान्न—[पु०] घी, दूध आदि द्वारा सिद्ध भोज्य पदार्थ। यज्ञादि के समय खाया जाने वाला अन्न।

हव्य—[पु०] देवताओं का भोजन, हवन करने योग्य पवित्र पदार्थ। हवि, होम की सामग्री।

हविर्भुज्—[पु०] हवि को खानेवाला, अग्नि। यज्ञ का अग्नि।

हसित—[पु०] हास्य, हँसी, हँसना, कामदेव का धनुष, [वि०] विकसित, खिला हुआ, जिस पर लोग हँसते हों, जिसकी हँसी उड़ाई गई हो।

हस्त—[पु०] हाथ, कर। हाथी की सूँड। ज्योतिष में एक नक्षत्र का नाम। एक नाप जो २४ अंगुल के बराबर होता है।

हस्तसूत्र—[पु०] यज्ञादि के समय यजमान और ऋत्विगादि के हाथ में बाँधा जाने वाला सूत्र। विवाह के समय वर-कन्या के हाथ में बाँधने का कंकण।

हस्तकौशल—[पु०] किसी कार्य के करने की दक्षता। हाथ की सफाई।

हस्तक्रिया—[स्त्री०] दस्तकारी, हाथ का काम। हाथ से जननेन्द्रिय का संचालन।

हस्तक्षेप—[पु०] किसी काम में या बात में दखल देना। होते हुए काम में हाथ लगाना।

हस्तगत—[वि०] हाथ में आया हुआ, प्राप्त, उपलब्ध।

हस्तच्छाया—[स्त्री०] रक्षा, शरण।

हस्तत्राण—[पु०] युद्धादि के समय आघात से हाथ की रक्षा के लिए पहना जाने वाला दस्ताना।

हस्तमैथुन—[पु०] हाथ से जननेन्द्रिय संचालन कर कामवासना की तृप्ति करना।

हस्तरेखा—[स्त्री०] हथेली की लकीरें, जिनके द्वारा सामुद्रिक शास्त्री व्यक्ति के भाग्य का शुभाशुभ विचारते हैं।

हस्तलाघव—[पु०] हाथ की सफाई या स्फूर्ति। कार्य करने की दक्षता।

हस्तलिखित—[वि०] हाथ से लिखा हुआ।

हस्तलिपि—[स्त्री०] हाथ की लिखावट।

हस्ताक्षर—[पु०] हाथ से लिखे अक्षर, हाथ से लिखा गया अपना नाम। दस्तखत।

हस्तामलक—[पु०] हाथ में रक्खा हुआ आँवला। बहुत अच्छे प्रकार अभ्यस्त कोई कार्य जो आसानी से किया जा सके।

हस्ति—[पु०] हाथी, गज, हस्ती।

हस्तिदन्त—[पु०] हाथी का दाँत, दीवार में लगी वस्त्रादि टाँगने की खूँटी।

हस्तिदन्तक—[पु०] मूली।

हस्तिनी—[स्त्री०] हथिनी। कामशास्त्रानुसार स्त्रियों का एक भेद।

हस्तिप, हस्तिपक—[पु०] हाथीवान, फीलवान, हाथी को हाकने या चलानेवाला। महावत।

हस्तिमद—[पु०] जवान हाथी के गण्ड स्थल से चूनेवाला रस।

हस्ती—[पु०] हाथी।

हस्ते—[अ०] द्वारा, मारफ़त, हाथ से।

हहरना—[क्रि०] काँपना, थरथराना, दहल जाना, दंग रह जाना।

हहा—[स्त्री०] गिड़गिड़ाने या दैन्य प्रदर्शन करने का शब्द, हँसी या हास्य का शब्द।

हा—[अव्य०] शोक, पीड़ा, विषाद, निन्दा आदि में आता है। [पु०] हनन करने या मार डालनेवाला, नाशक (समासान्त में)।

हाँक—[स्त्री०] किसी को दूर से पुकारना। ललकार। हुंकार। उत्साहवर्द्धक या उत्तेजक शब्द। दुहाई। सहायतार्थ की गई पुकार।

हाकलिका—[स्त्री०] छन्दः-शास्त्र में एक छन्द का नाम।

हाकली—[स्त्री०] एक छन्द का नाम।

हाँका—[पु०] शिकार के समय सिंहादि को उत्तेजित करने के लिए मचाया जानेवाला हल्ला-गुल्ला। ललकार, गर्जन। पुकार।

हाट—[स्त्री०] दुकान, पैंठ, बाजार।

हाटक—[पु०] सोना, स्वर्ण, कंचन। धतूरा।

हाटकलोचन—[पु०] हिरण्याक्ष नामक दैत्य। [वि०] पीली आँखोंवाला।

हातव्य—[पु०] छोड़ देने लायक, त्याग देने योग्य।

हाता—[पु०] सूबा, प्रान्त, देश का भाग। बाड़ा, घेरा, दीवार से घिरा हुआ बड़ा स्थान। हद, सीमा।

हाथ—[पु०] कर, हस्त, पहुँचे से आगे का भाग जिसमें हथेली और उँगलियाँ सम्मिलित हैं। बाहु, भुजा।

हाथापाई—[स्त्री०] मार-पीट, धौल-धप्पड़, भिड़न्त।

हाथी—[पु०] हस्ती, गज, नाग, करी, कुंजर।

हाथीपाँव—[पु०] एक रोग जिसमें मनुष्य के पैर हाथी के पैर की भाँति मोटे हो जाते हैं।

हाथीवान—[पु०] फीलवान, महावत।

हानि—[स्त्री०] घाटा, टोटा, नुकसान, क्षति, अभाव, नाश, बुराई, अपचय, अनिष्ट, बिगाड़।

हानिकर—[वि०] नुकसान पहुँचानेवाला, बिगाड़ करनेवाला।

हानिकारक—[वि०] हानिकर, क्षतिप्रद।

हाय—[अव्य०] दुःख अथवा शोक सूचक शब्द। दुःखी हृदय से निकला हुआ अभिशाप। [स्त्री०] दुःख, पीड़ा।

हायन—[पु०] वर्ष, साल, संवत्। अग्नि। एक प्रकार के धान।

हार—[पु०] गले में पहनने का आभूषण जो सोने, चाँदी अथवा मोतियों का बनाया जाता है। समासान्त में-वाला या वहन करनेवाला जैसे—होनहार, भारहार आदि। खेत, जंगल, [स्त्री०] पराजय, शिथिलता, थकान, घटी, बिछोह।

हारक—[पु०] चोर, लुटेरा, दूर करने या हरण करनेवाला। गणित में विभाजक, बाँटनेवाला।

हारावली—[स्त्री०] मोतियों की माला।

हारी—[वि०] हरनेवाला, चुरानेवाला, मुग्ध या मोहित कर लेनेवाला, ले जानेवाला। हार वाला। मनोज्ञ।

हारीत—[पु०] एक स्मृतिकार ऋषि, कण्व ऋषि का शिष्य। धूर्त, वञ्चक। एक पक्षी।

हार्द—[पु०] हृदय का भाव, अभिप्राय, स्नेह, प्रेम।

हार्दिक—[वि०] हृदय का, हृदय सम्बन्धी, सच्चा, हृदय से निकला हुआ, आन्तरिक।

हालाहल—[पु०] तीव्र विष, गरल, हलाहल।

हालिक—[वि०] हल द्वारा जीविका चलानेवाला, किसान, कृषक।

हाव—[पु०] स्त्रियों की पुरुषों को लुभानेवाली चेष्टाएँ।

हावभाव—[पु०] स्त्रियों की शृंगार-भाव-जन्य चेष्टाएँ।

हास—[पु०] हँसी, परिहास, दिल्लगी, मज़ाक, ठट्ठा। हँसने की क्रिया अथवा भाव।

हास्य—[पु०] हँसना, हँसने की क्रिया। परिहास, दिल्लगी। साहित्य में नव रसों में से एक रस जिसका स्थायीभाव 'हास' होता है।

हास्यजनक—[पु०] हँसी उत्पन्न करनेवाला, उपहास करनेवाला।

हास्यास्पद—[पु०] वह व्यक्ति या कार्य जिसे देखकर लोग हँसी करें। हँसने योग्य, उपहास करने योग्य।

हाहन्त—[अव्य०] अत्यन्त शोक या दुःखसूचक शब्द।

हा-हाकार—[पु०] शोकजन्य ध्वनि, भयजनित शब्द, क्रन्द, कुहराम, कोलाहल, युद्ध का शब्द।

हि—[अव्य०] निश्चय बोधक, ही, प्रश्न-बोधक, कारण, हेतवपदेश (क्यों कि) पादपूर्ति, असूया, निन्दा।

हिंगलाज—[स्त्री०] सिन्धु प्रान्त में अवस्थित दुर्गा देवी की मूर्ति। हिंगुलाजा। [पु०] वह पहाड़ जिस पर हिंगलाज देवी का मन्दिर है।

हिंगु—[पु०] हींग, एक उग्र गन्धवाला पदार्थ जो भोजन के मसाले और ओषधियों में काम आता है। रामठ।

हिचक—[स्त्री०] झिझक, किसी कार्य के सम्बन्ध में मन में उत्पन्न हुई रुकावट।

आगा पीछा सोचना। सन्देह।

हिचकना—[क्रि०] रुकना, झिझकना, अटकना, आगा-पीछा करना।

हिडिम्ब—[पु०] महाभारत में इस नाम से प्रसिद्ध एक राक्षस जिसे वनवास काल में भीम ने मारा था।

हिडिम्बा—[स्त्री०] हिडिम्ब राक्षस की बहन जिसके साथ भीमसेन ने विवाह कर लिया था।

हिण्डोर, हिण्डोरा—[पु०] हिंडोला, झूला, दोला। संगीत में एक राग का नाम।

हिण्डोल, हिण्डोला—[पु०] झूला, दोला, पालना।

हिंसक—[वि०] मारनेवाला, हिंसा करनेवाला, वधक, घातक, हत्यारा। [पु०] सिंहादि जन्तु। शत्रु।

हिंसा—[स्त्री०] किसी के शरीर से प्राणों को वियुक्त कर देने की क्रिया। मार डालना, बध करना। सताना। पीड़ा या त्रास पहुँचाना।

हिंसात्मक—[वि०] हिंसा सम्बन्धी, जिसमें हिंसा हो।

हिंसालु—[वि०] हिंसाप्रिय, हिंसाकारी, हिंसा करनेवाला, हिंसक।

हिंसित—[वि०] मारा हुआ, वध किया गया।

हिंस्र—[वि०] हिंसक, घातक, हिंसाशील, मारने या बध करनेवाला, बधक। [पु०] सिंहादि खूँख्वार जानवर।

हिअ—[पु०] हृदय, दिल, मन, उर, छाती, हिय, हिया।

हिक्का—[स्त्री०] हिचकी।

हित—[वि०] भलाई चाहनेवाला, शुभचिन्तक, मित्र, लाभदायक। [पु०] भलाई, लाभ, कल्याण, मंगल, उपकार, प्रेम, स्नेह, मित्रता, अनुराग, [अव्य०] लिये, वास्ते।

हितकर—[पु०] लाभदायक, भलाई करनेवाला।

हितकारक, हितकारी—[पु०] हितू, हितैषी, भलाई करनेवाला, लाभदायक, फायदेमन्द, कल्याणकारी।

हितचिन्तक—[पु०] भला चाहनेवाला, हितैषी, शुभाकांक्षी, हितेच्छु, खैरख्वाह।

हितचिन्तन—[पु०] भलाई चाहना, हितैषिता, शुभाकांक्षा, मंगलकामना, कल्याण-कामना।

हितता—[स्त्री०] भलाई, शुभ चिंतना।

हितवादी—[वि०] भलाई की बात कहनेवाला।

हितावह—[वि०] हितकारी, हितकरनेवाला, लाभदायक।

हिताहित—[पु०] भलाई-बुराई, हानि-लाभ, शुभाशुभ।

हितू—[पु०] हितैषी, मित्र, सुहृद्, सम्बन्धी, नातेदार।

हितेच्छु—[पु०] हितचिन्तक, हितैषी, भलाई चाहनेवाला।

हितैषिणी—[स्त्री०] हित चाहनेवाली।

हितैषिता—[स्त्री०] भलाई चाहने की प्रवृत्ति। खैरख्वाही।

हितैषी—[पु०] हित चाहनेवाला, शुभचिन्तक।

हितोपदेश—[पु०] भला उपदेश, हितकारी शिक्षा, कल्याणकारी परामर्श। इस नाम से प्रसिद्ध एक नीति-पुस्तक।

हिन्द—[पु०] भारतवर्ष, आर्यावर्त, हिन्दुस्तान।

हिन्दी—[पु०] भारतवासी, भारतीय, [वि०] हिन्द का निवासी। हिन्द की वस्तु, हिन्द की भाषा।

हिन्दुस्तान, हिन्दुस्थान—[पु०] भारतवर्ष, आर्यावर्त, भरतखंड।

हिन्दू—[पु०] भारतवासी. वेद-स्मृति-पुराणों को माननेवाला। आर्यसन्तान, आर्य।

हिम—[पु०] पाला, बर्फ, तुषार, जाड़ा, शीत, शीत ऋतु। चन्दन। कपूर। चन्द्रमा। मोती। कमल। हिमालय पर्वत।

हिमउपल—[पु०] ओला, पत्थर।

हिमकण—[पु०] बर्फ के छोटे-छोटे टुकड़े, पाला, तुषार।

हिमकर—[पु०] कपूर। चन्द्रमा। हिमांशु।

हिमञ्चल—[पु०] हिमालय पहाड़। पार्वती के पिता।

हिमता—[स्त्री०] ठंढक, शीतलता, हिम का भाव।

हिमपर्वत—[पु०] हिमालय, बर्फ का पहाड़।

हिमभानु—[पु०] चन्द्रमा।

हिमरश्मि—[पु०] चन्द्रमा।

हिमवंत—[पु०] हिमालय पर्वत। पार्वती के पिता।

हिमवान्—[पु०] हिमालय, कैलाश, चन्द्रमा, [वि०] जिसमें बर्फ या ठंढ हो।

हिमांशु—[पु०] ठंढी किरणोंवाला, चन्द्रमा, हिमकर, शीतांशु।

हिमाग्नि—[पु०] हिमजन्य ताप या आग।

हिमाचल, हिमांचल—[पु०] देखो हिमंचल।

हिमाद्रि—[पु०] हिमालय।

हिमानी—[स्त्री०] बरफ का ढेर, बरफ का समूह।

हिमालय—[पु०] भारत की उत्तरीय सीमा पर अवस्थित प्रसिद्ध पर्वत जो संसार भर के पहाड़ों से ऊँचा, बड़ा और सर्वदा बर्फ से ढका रहनेवाला है। पर्वतराज, नगेन्द्र, हिमाचल।

हिमिका—[स्त्री०] जाड़ों में घास-फूस

पर जमजानेवाला तुषार, पाला।

हिम्मत—[स्त्री०] दुष्कर कार्य करने की मानसिक दृढ़ता। साहस, जीवट।

हिय—[पु०] हृदय, चित्त, मन, वक्षस्थल, छाती, उर।

हिरण—[पु०] देखो 'हरिण'।

हिरण्मय—[पु०] ब्रह्मा। [वि०] सोने का बना हुआ।

हिरण्य—[पु०] सोना, स्वर्ण, कंचन, कनक, सुवर्ण। शुक्र। वीर्य। धतूरा। अमृत। कौड़ी।

हिरण्यकशिपु—[पु०] इस नामवाला एक प्रसिद्ध दैत्य। प्रह्लाद का पिता।

हिरण्यकश्यप—[पु०] देखो 'हिरण्यकशिपु'।

हिरण्यगर्भ—[पु०] वह ज्योतिर्मय अण्ड जिससे कल्पान्त में ब्रह्मा और सम्पूर्ण सृष्टि उत्पन्न हुई। ब्रह्मा, विष्णु, परमात्मा, सूक्ष्म शरीर युक्त जीवात्मा।

हिरण्यदा—[स्त्री०] पृथिवी।

हिरण्यनाभ—[पु०] मैनाक पर्वत, विष्णु।

हिरण्यविंदु—[पु०] अग्नि।

हिरण्यरेता—[पु०] अग्नि, सूर्य, शिव, आयुर्वेद में चित्रक नामक ओषधि।

हिरण्याक्ष—[पु०] हिरण्य कशिपु का भाई।

हिरन—[पु०] एक प्रसिद्ध चौपाया, हिरण, मृग।

हिरनाकुस—[पु०] "हिरण्यकशिपु"।

हिराना—[क्रि०] खो जाना, गुम हो जाना, नष्ट हो जाना, मिट जाना। चकित होना, अपने आपको भूल जाना। विस्मरण हो जाना।

हिलकी—[स्त्री०] सिसकन, अधीर होकर रोने का शब्द।

हिलकोर, हिलकोरा—[पु०] लहर, तरंग, मौज, हिलोर।

हिलोर, हिलोरा—[पु०] लहर, तरंग, मौज।

हिल्लोल—[पु०] हिलोर, तरंग, वीचि, ऊर्मि, लहरियाँ। आनन्द की तरंग, उमंग। हिण्डोल।

हिवञ्चल—[पु०] हिमञ्चल, हिमालय।

हीन—[वि०] त्यक्त, त्यागा हुआ, नीच, निकृष्ट, न्यून। रहित, वञ्चित, दीन, नम्र, निर्बल, अशक्त, ओछा, घटिया, अल्प, कम।

हीनकर्म—[वि०] नित्य नैमित्तिक कर्म त्याग देने वाला। पतित, बुरे काम करने वाला।

हीनकुल-[वि०] नीच कुलका, कमीना।

हीनकुलज—[वि०] नीच कुलोत्पन्न।

हीनक्रम—[पु०] साहित्य में काव्य का दोष—जिसमें गुणी और गुणों का उल्लेख उचित क्रमसे न किया गया हो।

हीनचरित, हीनचरित्र—[वि०] दुराचारी, बुरे आचरण वाला, दुश्चरित्र, भ्रष्टाचारी।

हीनजाति-[वि०] जातिच्युत, पतित।

हीनता—[स्त्री०] कमी, त्रुटि, असमर्थता, निर्बलता, तुच्छता, निकृष्टता, क्षुद्रता, ओछापन।

हीनत्व—[पु०] देखो 'हीनता'।

हीनबल --[पु० वि०] निर्बल, कमजोर, अशक्त।

हीनबुद्धि-[वि०]मूर्ख,बेसमझ, निर्बुद्धि।

हीनयोनि—[वि०] नीच कुल का।

हीनरस—[पु०] नीरस, रसहीन। साहित्य में एक काव्य-दोष।

हीनवीर्य—[पु०] हीनबल, निर्बल, अशक्त, नपुंसक।

हीनाङ्ग—[वि०] अङ्ग-भङ्ग, लूला-लँगड़ा आदि। अधूरा, अपूर्ण।

हीनोपमा—[स्त्री०] साहित्य में एक काव्यदोष—जहाँ बड़े उपमेय के लिए छोटा उपमान लिया जावे।

हीर—[पु०] सर्प, माला, सिंह, शिव, हीरा नामक रत्न, किसी वस्तु का सार भाग, सत्व, गूदा, वीर्य बल, शक्ति। छन्दःशास्त्र में एक छन्द का नाम।

हीरक—[पु०] हीरा नामक रत्न, हीर नामक छन्द।

हीरा—[पु०] एक बहुमूल्य रत्न, बज्र, कुलिश, श्रेष्ठ, उत्तम।

हीरामन—[पु०] एक कथित तोता या सुग्गा जो सोने के से रंग का बतलाया जाता है।

हुङ्कार—[पु०] ललकार, गर्जन, पुकार, भर्त्सना।

हुण्डी—[स्त्री०] महाजनी चेक, वह विधि-पत्र जिसे एक महाजन दूसरे को लिख कर किसी अन्य को रुपये के बदले में रुपया दिलाता है।

हुड़दंग, हुड़दंगा—[पु०] उपद्रव, उत्पात, बखेड़ा, हुरदंग।

हुत—[वि०] हवन किया हुआ, अग्नि में आहुति रूप में डाला हुआ। [पु०] शिव, आहुति।

हुतभुक्—[पु०] अग्नि, यज्ञ की अग्नि जो आहुति दिये हुए पदार्थ को खाता है।

हुताग्नि—[पु०] यज्ञ का अग्नि।

हुताशन—[पु०] आग, अग्नि, शिव। चित्रक नामक ओषधि।

हुताशनी—[स्त्री०] होलिका, फाल्गुनमास की पूर्णिमा।

हुति—[स्त्री०] आहुति।

हुरदंग, हुरदंगा—[पु०] उत्पात, उपद्रव, देखो 'हुड़दंग'।

हुलसना—[क्रि०] आनन्द या प्रसन्नता से फूलना, उठना, उमड़ना, उभरना।

हुलसी—[स्त्री०] आनन्दित, प्रसन्न, उल्लसित। श्रीगोस्वामी तुलसीदास की

माता का नाम (कुछ लोगों के मत से)।

हुलास—[पु०] उल्लास, उत्साह, उमंग, हर्ष, आह्लाद, आनन्द। सूँघने की दवा जो प्रायः तमाखू से बनाई जाती है सुँघनी।

हुल्लड़—[पु०] उपद्रव, उत्पात हलचल, क्रान्ति, शोरगुल हल्ला।

हुल्लास—[पु०] देखो 'हुलास'।

हूँण—[पु०] एक राक्षस जाति। मंगोल जाति की शाखा।

हूक—[स्त्री०] हृदय की पीड़ा, दिल की कसक, मन का सन्ताप, दर्द, साल, दुःख।

हूकना—[क्रि०] पीड़ा या दर्द करना, दुखना, सालना, पीड़ा से चौंक पड़ना।

हूत—[वि०] बुलाया हुआ, आहूत।

हूति—[स्त्री०] निमन्त्रण, बुलावा।

हूल—[स्त्री०] हूक, पीड़ा, शूल। भाला, लाठी, डंडा आदि की नोक से ठेलने की क्रिया। शोर-गुल, कोलाहल, धूम, हर्षध्वनि, आनन्द, खुशी, ललकार।

हूलना—[क्रि०] भाला, लाठी, डंडा आदि की नोंक से ठेलना, घुसाना, गड़ाना, पीड़ा पहुँचाना।

हृत्—[पु०] हृदय।

हृत—[वि०] हरा गया, चुराया गया, छीना गया, विभक्त, बाँटा गया, स्वीकृत।

हृत्कम्प—[पु०] हृदय का काँपना, दिल का धड़कना, अत्यन्त भय।

हृत्तरंग—[पु०]मन की मौज, हृदयोल्लास।

हृत्पटल—[पु०] हृदय पटल।

हृत्पिण्ड—[पु०] हृदय, कलेजा, दिल।

हृतसर्वस्व—[वि०] जिसका सब कुछ छिन गया हो। बिलकुल नष्ट।

हृताधिकार—[वि०] जिसका अधिकार छिन गया हो। पदच्युत।

हृति—[स्त्री०] लूट, छीनना, अपहरण, नाश।

हृद्धाम—[पु०] हृदय।

हृदय—[पु०] मन, चित्त, दिल, छाती, वक्षःस्थल। हर्षशोकादि मनोविकारों का स्थान। अभ्यन्तर। अन्तःकरण। बुद्धि, विवेक।

हृदयकम्प—[पु०] हृत्कम्प, दिलकी धड़कन।

हृदयग्राहिणी—[स्त्री०] मन लुभाने वाली।

हृदयग्राही—[पु०] मन को लुभाने वाला। मनोहर, रुचिकर, प्रिय।

हृदयङ्गम—[वि०] मन में समाया हुआ। चित्त में घुसा हुआ। समझ में आया हुआ। हृदय को छूने वाला। सुन्दर। प्यारा।

हृदयच्छिद—[वि०] हृदय को छेदने वाला। दुखद, अप्रिय, हृदयवेधी।

हृदयनिकेतन—[पु०] कामदेव।

हृदयरोग—[पु०] दिल की बीमारी।

हृदयवेधी—[वि०] दिल दुखाने वाला, हृदय को छेदने वाला। अति दुखद।

हृदयस्थ—[वि०] मन में ठहरा हुआ, हृदय में स्थित।

हृदयस्पन्दन—[पु०] हृदय की धड़कन, दिल का काँपना। हृदय की गति।

हृदयस्पर्शी—[वि०] हृदय को छूने वाला, मन पर प्रभाव डालने वाला।

हृदयहारी—[वि०] मन मोहित करने वाला। हृदय को लुभाने वाला। दिल को चुराने वाला। मनोहर। सुन्दर।

हृदयाकर्षक—[वि०] मनोहर, चित्ताकर्षक। [स्त्री०] हृदयाकर्षिका।

हृदयेश—[पु०] पति, स्वामी, दिल का मालिक, प्यारा, प्रियतम।

हृदयेश्वर—[पु०] हृदयेश, हृदय का स्वामी।

हृदयेश्वरी-[स्त्री०] हृदय की स्वामिनी, पत्नी, भार्या, प्रियतमा।

हृदि—[क्रि० वि०] हृदय में।

हृद्गत—[वि०] भीतरी,मन में समाया हुआ, आन्तरिक। मानसिक। चित्त में बैठा हुआ। रुचिकर। प्रिय।

हृद्य—[वि०] हृदय को अच्छा लगने वाला, मन लुभाने वाला, रोचक, सुंदर, मनोहर, प्रिय, सुहावना, स्वादिष्ठ। हृदय के लिए हित करने वाला, आन्तरिक। भीतरी। दिल का सच्चा। दयालु।

हृषित—[वि०] प्रसन्न, खुश, आश्चर्यान्वित।

हृषीक—[पु०] इन्द्रियाँ, ज्ञानेन्द्रियाँ।

हृषीकेश—[पु०] इन्द्रियों का स्वामी। विष्णु, श्रीकृष्ण, ईश्वर। पूष का महीना।

हृष्ट—[वि०] हर्षित, प्रसन्न, खुश।

हृष्टचित्त—[वि०] प्रसन्नचित्त, खुश दिल।

हृष्ट-पुष्ट—[वि०] मोटा-ताजा, हट्टा-कट्टा। स्वस्थ, तगड़ा।

हृष्टरोम—[वि०] पुलकित या रोमांचित शरीर वाला।

हृष्टवदन—[वि०] प्रसन्न मुख।

हे—[अव्य०] सम्बोधन का चिह्न।

हेकड़—[वि०] दृढ़, साहसी, अक्खड़, उजड्ड, उद्दण्ड। उग्र, प्रचण्ड।

हेकड़ी—[स्त्री०] दृढ़ता, साहस, उद्दण्डता, अक्खड़पन, उजड्डपन, उग्रता, प्रचण्डता।

हेटा—[वि०] घटिया, नीच, तुच्छ।

हेटी—[स्त्री०] अपमान, अनादर, मानहानि, अप्रतिष्ठा।

हेत—[पु०] कारण, हेतु, वजह।

लिये, वास्ते ।

हेति—[स्त्री०] आग की लपट, किरण, प्रकाश, हथियार-भाला । चोट । शोर ।

हेतु—[पु०] कारण, सबब, वजह । अभिप्राय, उद्देश्य । तर्क, दलील । साहित्य में एक अलङ्कार । हित, भलाई, प्रेम, मेल, मित्रता ।

हेतुवाद—[पु०] तर्कविद्या, कारणवाद, बहस, शास्त्रार्थ, विवाह, । नास्तिकता, कुतर्क ।

हेतुशास्त्र—[पु०] तर्कशास्त्र, न्याय-शास्त्र ।

हेतुहेतुमद्भाव—[पु०] कार्य-कारण भाव, कार्य-कारण का अन्योन्य सम्बन्ध ।

हेतुहेतुमद्भूतकाल—[पु०] भूत कालिक वह क्रिया जो दूसरी क्रिया पर निर्भर हो, जैसे मैं बीमार न हुआ होता, तो प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होता ।

हेतूपमा—[स्त्री०] साहित्य में एक अलंकार । उपमालंकार का वह रूप जिसमें हेतु भी दिया हो ।

हेत्वाभास—[पु०] जो वास्तव में हेतु न हो, पर हेतु जान पड़े । असत् हेतु ।

हेम—[पु०] सोना, स्वर्ण ।

हेमकारक—[पु०] सुनार, स्वर्णकार, सोने के आभूषणादि बनाने वाला ।

हेमकुम्भ—[पु०] स्वर्ण कलश, सोने का घड़ा ।

हेमकूट—[पु०] हेमाद्रि, सुमेरु पर्वत, एक पहाड़ जो सोने का बताया जाता है ।

हेमगिरि—[पु०] हेमकूट, सुमेरु ।

हेमन्त—[पु०] छः ऋतुओं में से एक ऋतु—जो अगहन और पौष महीनों की होती है ।

हेममाला—[स्त्री०] यमराज की स्त्री ।

हेममाली—[पु०] सुनहरी किरणों वाला—सूर्य ।

हेमरागिणी—[स्त्री०] सुनहरे (पीले) रंग वाली—हल्दी, हरिद्रा ।

हेमाद्रि—[पु०] सुमेरु पर्वत, हेमकूट ।

हेय—[वि०] त्याज्य, त्यागने योग्य, छोड़ देने लायक, निकृष्ट, बुरा, निन्द्य, नीच ।

हेरम्ब—[पु०] गणेशजी ।

हेरना—[क्रि०] खोजना, ढूढ़ना, पता लगाना । देखना, ताकना, निहारना ।

हेर-फेर—[पु०] अदल-बदल, परिवर्तन, उलट-पलट । घुमाव-फिराव, चक्कर, दावपेच, चाल, कुटिल युक्ति ।

हेराफेरी—[स्त्री०] उलट-पलट, परिवर्तन, अदल-बदल, विनिमय । इधर का उधर करना ।

हेल—[स्त्री०] गोबर-मिट्टी आदि की सिर पर रख कर ले जाने की खेप ।

हेल-मेल—[पु०] मेल जोल, परिचय, मित्रता ।

हेला—[स्त्री०] अनादर, तिरस्कार, तुच्छ या घटिया समझना, क्रीड़ा, खेल, मनोरञ्जन, खिलवाड़ । प्रेमक्रीड़ा, केलि । साहित्य में नायिका की नायक के आकृष्ट करने की मुद्रा । हाँक, पुकार, चढ़ाई, आक्रमण, चाँदनी । [पु०] मेहतर, मैला उठाने वाला ।

हेली—[स्त्री०] सखी, सहेली । [अव्य०] हे सखी ।

हैतुक—[वि०] हेतुयुक्त, सकारण । [पु०] तार्किक, नास्तिक ।

हैम—[वि०] ठंडा, शीतल । सोने का, सुनहरा, स्वर्णमय । [पु०] शिव ।

हैममुद्रा—[स्त्री०] सोने का सिक्का, गिन्नी-अशरफ़ी ।

हैमवती—[स्त्री०] हिमालय से उत्पन्न हुई पार्वती, गंगाजी ।

हैयङ्गवीन—[पु०] लौनी, मक्खन ।

हैहय—[पु०] एक देश का नाम । हैहय देश का निवासी । यदु का प्रपौत्र कार्तवीर्य, सहस्रार्जुन ।

होठ—[पु०] ओष्ठ, दन्तच्छद ।

होड़—[स्त्री०] स्पर्धा, बाज़ी, शर्त, दूसरे से आगे निकल जाने की चेष्टा । समता, बराबरी, ज़िद, हठ, आग्रह ।

होड़ाहोड़, होड़ाहोड़ी—[स्त्री०] बदाबदी । स्पर्धा, चढ़ा-ऊपरी ।

होड़ाचक्र—[पु०] ज्योतिष में राश्यादि जानने या निकालने का एक प्रकार । इस नाम की ज्योतिष सम्बन्धी एक छोटी पुस्तक ।

होड़ा—[पु०] चोर, लुटेरा, डाकू ।

होतव, होतव्य—[पु०] होनहार, भवितव्य, भावी ।

होतव्यता—[स्त्री०] भवितव्यता, होनहार ।

होता—[पु०] हवन करने वाला, आहुति डालने वाला, यज्ञकर्त्ता, याज्ञिक । अग्नि ।

होत्र—[पु०] हवन करने योग्य पदार्थ—घृत, सामग्री आदि ।

होत्रा—[पु०] यज्ञ, प्रशंसा ।

होत्री—[पु०] यज्ञ करने वाला, आहुति डालने वाला । [स्त्री०] होता का स्त्रीलिंग ।

होनहार—[वि०] भवितव्य, जो होने वाला हो, जो होकर ही रहे, अवश्य होने वाला, उन्नतिशील, शुभ लक्षणों वाला ।

होनी—[स्त्री०] भवितव्यता, होनहार, भावी, अवश्य होने वाली, उत्पत्ति, पैदायश । वृतान्त, हाल ।

होम—[पु०] हवन, यज्ञ, अग्निहोत्र, देवताओं के उद्देश्य से घृतादि पदार्थों की अग्नि में आहुति देना ।

होमकुण्ड—[पु॰] यज्ञ करने के लिए भूमि में बनाया गया विशेष प्रकार का गढ़ा। ताम्रादि धातु का बना विशिष्ट रूप का पात्र जिसमें यज्ञ या हवन करने के लिए अग्नि प्रज्वलित करते हैं।

होमद्रव्य—[पु॰] हवन करने के द्रव्य, हवनीय पदार्थ।

होमधान्य—[पु॰] हवनीय अन्न—यव, तिल आदि।

होमधूम—[पु॰] यज्ञधूम, हवन का धुआँ।

होमना—[क्रि॰] हवन करना, आहुति देना, त्याग देना, छोड़ देना, नष्ट कर डालना।

होमशाला—[स्त्री॰] हवन करने का स्थान, यज्ञशाला।

होमाग्नि—[पु॰] यज्ञ की आग जिसमें आहुति डाली जाती है।

होमीय—[वि॰] होम के योग्य, होम सम्बन्धी—घृत-सामग्री आदि।

होरा—[पु॰] ढाई घड़ी का समय—१ घण्टा या अहोरात्र का चौबीसवाँ भाग। लग्न, शास्त्र-विशेष। जन्म-कुण्डली। कच्चे चने आदि भून कर बनाए गए होला।

होरिल—[पु॰] नवजात बालक।

होरिहार—[पु॰] होली खेलने वाला।

होरी—[स्त्री॰] होली। हिन्दुओं का एक त्योहार जो फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है।

होलक—[पु॰] अधपके चने-मटर आदि को भून कर बनाए गए होला। होरा।

होला—[पु॰] आग में भूनी गई चना या मटर की फलियाँ। चने की कच्ची फलियाँ, सिक्खों का त्योहार जो हिन्दुओं की होली के दूसरे दिन मनाया जाता है।

होलाष्टक—[पु॰] फागुन सुदि अष्टमी से फागुन सुदि पूर्णिमा तक के आठ दिन, इनमें विवाहादि मंगलकार्य करना वर्जित है।

होलिका—[स्त्री॰] हिरण्यकशिपु राक्षस की बहन, प्रह्लाद की बुआ। होलिका त्योहार, होली जलाने के लिए किया गया लकड़ी-कण्डों का ढेर।

होली—[स्त्री॰] फागुन सुदि पूर्णिमा को मनाया जाने वाला हिन्दुओं का त्यौहार। होली में जलाने के लिए एकत्र किया गया ईंधन का ढेर। एक प्रकार का गाना जो होली के दिनों में गाया जाता है—फाग।

हौल—[पु॰] भय, डर।

हौलदिली—[स्त्री॰] एक रोग जिसमें दिल धड़का करता है। भय के कारण उत्पन्न हुई हृदय की धड़कन। भय, शंका।

हौलू—[पु॰] शीघ्र ही डर जानेवाला। जिसके दिल में शंका या भय शीघ्र ही बैठ जावे।

हौले—[क्रि॰] धीरे, शनैः, मन्द गति से।

हौस—[स्त्री॰] चाह, कामना, लालसा, उत्सुकता, हर्षोत्कण्ठा, हुलास।

ह्रद—[पु॰] बड़ा तालाब, अगाध जलाशय, झील, सरोवर, ध्वनि।

ह्रसित—[वि॰] घटाया हुआ। जिसमें ह्रास हो गया हो।

ह्रस्व—[वि॰] कम, थोड़ा, तुच्छ, छोटा, नाटा, न्यून, नीच। लघु स्वर,

ह्रादिनी—[स्त्री॰] बिजली, विद्युत्। तड़ित्, सौदामिनी।

ह्रास—[पु॰] कमी, क्षय, न्यूनता, अवनति, नाश। शब्द।

ह्री—[स्त्री॰] लज्जा, शर्म, हया, त्रपा, व्रीडा। प्रजापति की कन्या जो धर्म को ब्याही गई थी।

ह्लाद—[पु॰] हर्ष, आह्लाद, उल्लास, आनंद, प्रसन्नता, प्रफुल्लता।

परिशिष्ट

भारतीय संविधान-परिषद् द्वारा स्वीकृत संविधान शब्दावली

अ

अक्षम—Incompetent
अक्षमता—Incompetency
अग्रिम धन—Advance
अतिक्रमण—Violation
अतिरिक्त न्यायाधीश—Judge, extra
अतिरिक्त लाभ—Excess profit
अधिकरण—Tribunal
अधिकार—Right
अधिकार-अभिलेख—Record of rights
अधिकार-पृच्छा—Quo warranto
अधिग्रहण Requisition
अधिनियम (n.)—Act
अधिनियम (v.)—Enact
अधिपत्र—Warrant
अधिभार—Sur-charge
अधिमान—Preference
अधिवक्ता—Advocate
अधिवास—Domicile
अधिवासी—Domiciled
अधिष्ठाता—Presiding officer
अधिसूचना—Notification
अधीक्षक—Superintendent
अधीक्षण—Superintendence
अधीन—Subject
अधीन अधिकारी—Subordinate Officer
अधीन न्यायालय—Subordinate Court
अध्यक्ष—Speaker
अध्यादेश—Ordinance
अध्यासीन होना—Preside
अनन्य क्षेत्राधिकार—Exclusive Jurisdiction
अनर्हता—Disqualification
अनर्हीकरण—Disqualify
अनियमिता—Irregularity
अनुकूलन—Adaptation
अनुच्छेद—Article
अनुज्ञप्ति—Licence
अनुज्ञा (v.)—Permit
अनुज्ञा (n.)—Permission
अनुदान—Grant
अनुदेश—Instruction
अनुन्मुक्त—Undischarged
अनुपाती प्रतिनिधित्व—Proportional representation
अनुपूरक—Supplementary
अनुपूरक अनुदान—Supplementary grant
अनुमति—Assent
अनुमोदन (v.)—Approve
अनुमोदन (n.)—Approval
अनुशासन—Discipline
अनुशासन सम्बन्धी—Disciplinary
अनुशक्ति—Adherence
अनुष्ठान—Exercise
अनुसमर्थन (n)—Ratification
अनुसमर्थन (v.)—Ratify
अनुसंधान (v.)—Investigate
अनुसंधान (n)—Investigation
अनुस्मारक—Reminder
अनुसूचित क्षेत्र—Scheduled area
अनुसूचित जनजाति—Scheduled Tribe
अनुसूचित जाति—Scheduled Caste
अनुसूची—Schedule
अन्तर्ग्रसन—Involve
अन्तर्ग्रस्त—Involved
अन्तर्देशीय जलपथ—Inland waterway
अन्तर्राष्ट्रीय—International
अन्तःकरण Conscience
अन्य-देशीय—Aliens
अन्य-संक्रामण (v.)—Alienate

अन्य-संक्रामण (n.)—Alienation
अपमान लेख -Libel
अपमान-वचन—Slander
अपमिश्रण—Adulteration
अपर न्यायाधीश Additional-judge
अपराध - Crime
अपराध Offence
अपराधी—Criminal
अपवर्जन (v) Exclude
अपवर्जन (n.)—Exclusion
अपात्र—Ineligible
अपात्रता—Ineligibility
अपील—Appeal
अपील न्यायालय—Court of Appeal
अप्रवृत्त—Inoperative
अभिकथन—Allegation
अभिकरण Agency
अभिकर्त्ता—Agent
अभिप्राय—Oppinion
अभियाचना—Demand
अभियुक्त—Accused
अभियुक्ति—Charge
अभियुक्ति -- Prosecution
अभियोग—Accusation
अभियोजन—Prosecution
अभियोज्य दोष—Actionable wrong
अभिरक्षा—Custody
अभिलेख—Record
अभिलेख न्यायालय—Court of record
अभिशस्त—*Convicted*
अभिशस्ति – Conviction
अभिसमय—Convention
अभ्यर्थी—Candidate
अमान्य—Invalid
अयुक्त प्रभाव— Undue influence
अर्जन—Acquisition
अर्जी—Petition
अर्थ करना—Construe
अर्थ दण्ड—Fine
अर्हता Qualification
अल्पसंख्यक वर्ग—Minority
अल्पीकरण Derogation
अवधिदान—Adjourn
अवमान —Contempt
अवयस्क—Minor
अविभक्त कुटुम्ब-Joint family
अविभक्त परिवार-Joint family
अविश्वास-प्रस्ताव—Motion of no confidence
अवैध—Illegal
अवैधाचरण-Illegal practice
असमर्थता—Incapacity
असमर्थता निवृत्ति वेतन —Invalidity pension
असैनिक— Civil
असैनिक शक्ति—Civil power
अहितकारी—Detrimental
अंकन—Endorse
अंकित – Endorsed
अंग—Unit
अंश—Share
अंशदान—Contribution

आ

आकलन (v.)—Credit
आकस्मिकता निधि—*Contingency Fund*
आचार—Custom
आजादी—Freedom
आजीविका—Callings
आजीविका-कर—Callings tax
आज्ञप्ति—Decree
आदेश—Order
आदेशिका Process
आनुषंगिक— Consequential
आपराधिक—Criminal
आपात—Emergency
आपाती —Emergent
आपात की उद्घोषणा—Proclamation of emergency
आभार—Obligation
आय-कर—Income tax
आयात-शुल्क—Import duty
आयुक्त—Commissioner
आयोग—Commission
आरक्षक —Police
आरक्षक बल—Police Force
आरोप—Allegation
आरोपण करना --Impose
आरोपण—Levy
आर्थिक—Economic
आर्थिक क्षेत्राधिकार—Pecuniary jurisdiction
आवर्त्तक—Recurring
आवारागरदी—Vagrancy
आवेदन-पत्र Application
आस्ति —Property
आहिंडन—Vagrancy
आह्वान —Summon
आंक – Estimate

इ

इच्छा पत्र—Will
इच्छा-पत्रहीन—Intestate
इच्छा-पत्र हीनत्व—Intestacy

उ

उगाहना—Levy (v.)
उच्चतमन्यायालय—-Supreme Court

उच्चन्यायालय—High Court
उत्तराधिकार—Succession
उत्तराधिकार-शुल्क—Successio-nduty
उत्तराधिकारी—Successor
उत्तरवादिता—Liability
उत्पादन—Production
उत्पादन-शुल्क—Excise duty
उत्प्रवास—Emigration
उत्प्रेषण-लेख—Certiorari
उद्ग्रहण—Levy (n.)
उद्घोषणा—Proclamation
उद्भव—Descent
उद्यम—Enterprise
उद्योग—Industry
उधार—Loan
उधार-ग्रहण—Borrowing
उन्मत्त Lunatic
उन्माद—Lunacy
उन्मुक्ति—Immunity
उपकर—Cess
उपक्रमण—Initiate
उपचार—Remedy
उपजीविका—Occupation
उपदान—Gratuity
उपदेश—Advisory
उपनिर्वाचन—Bye-election
उपनिवेशन—Colonization
उपबन्ध—Provision
उपभोग—Consumption
उपराज्यपाल—Lieutenant Governor
उपराष्ट्रपति—Deputy President
उपराष्ट्रपति—Vice President
उपलब्धि—Emolument
उपविभाग—Sub-division
उपवेशन—Sitting

उपविधि—Bye-law
उपसभापति—Deputy Chairman
उपस्थित होना—Apear
उपाध्यक्ष—Deputy Speaker
उपायुक्त—Deputy Commissioner
उपायोजन—Employment
उपार्जित—Accrued
उम्मेदवार—Candidate
उल्लंघन—Contravention

ऋ

ऋण—Debt
ऋणग्रस्तता—Indebtedness
ऋण-पत्र—Debenture

ए

एकक—Unit
एकल निगम—Corporation, Sole
एकल संक्रमणीय मत—Single transferable vote
एकस्व—Patent

क

कटक—Cantonment
कणकु—Account
कदाचार—Misbehaviour
कब्जा—Possession
कम्पनी—Company
कर—Tax
करार—Agreement
कर्तव्य—Duty
कर्तुमभिप्रेत—Purporting to be done
कर्मचारी-वृन्द—Staff
कानून सम्बन्धी—Legal
कारखाना—Factory
कारबार—Business

कारागार—Prison
काराबन्दी—Prisoner
कारावास—Imprisonment
कर्मिक संघ—Trade Union
कार्य—Business
कार्यकारी—Acting
कार्यपालिका शक्ति—Executive power
कार्यपालिका—Executive
कालदान—Adjourn
कावल—Custody
कांजी हौस—Cattle pound
किराया—Fare
किसान—Tenant
कुर्की—Attach
कृति स्वाम्य—Copyright
कृत्य—Function
केन्द्रीय गुप्त-वार्त्ता विभाग—Central Intelligence Bureau
कैद—Imprisonment
कैदी—Prisoner

क्ष

क्षति—Injury
क्षतिपूर्ति बिल—Bill of indemnity
क्षमताशाली—Competent
क्षमा—Pardon
क्षेत्र—Area
क्षेत्राधिकार—Jurisdiction

ख

खनिज—Mineral
खनि-वसति—Mining settlement
खनिज-सम्पत्—Mineral resources
खर्च—Cost
खंड—Clause

ग

गजट—Gazette
गणना—Account
गणनानुदान—Vote on account
गणना-परीक्षा—Audit
गणपूर्ति—Quorum
गवेषणा—Research
गूढ़ पत्र—Ballot
ग्राम परिषद्—Village Council
ग्राह्य—Admissibel

घ

घोषणा—Declaration

च

चक्रम—Act (n.)
चर्चा—Discussion
चल अर्थ—Currency
चलार्थ—Currency
चित्तविकृति—Unsoundness of mind
चिह्न—Mark
चुकती—Agreement
चुने हुए—Elected
चुंगी—Octroi
चैक—Cheque

छ

छावनी—Cantonment

ज

जगह—Post
जनगणना—Census
जन-जाति—Tribe
जनजाति-क्षेत्र—Tribal Area
जनजाति-परिषद्—Tribal Council
जल-दस्युता—Piracy
जल-प्रांगण—Territorial waters
जामिन—Bail
जांच करना—Inquire
जिला—District
जिला-गण—District Board
जिला-निधि—District Fund
जिला न्यायालय—District Court
जिला परिषद्—District Council
जिला-मंडली—District Board
जीविका—Livelihood
जुआ—Gambling
जुर्माना किया—Fined
जेल—Prison
ज्वार-जल—Tidal waters

ज्ञ

ज्ञाप—Memo
ज्ञापन—Memorandum

ट

टंकण—Coinage
टांच—Attach
ट्राम—Tramway
ट्रामगाड़ी—Tramcar

ड

डिक्री—Decree

त

तत्समय—For the time being
तत्स्थानी—Corresponding
तदर्थ—Ad hoc
तीर्ण—Passed
तौर्व—Assessment
तृतीय पठन—Third reading
त्रैवार्षिक—Triennial

थ

थाना—Police Station

द

दत्तक-ग्रहण—Adoption
दत्तक-स्वीकरण—Adoption
दस्तकारी—Handicraft
दस्तावेज—Document
दंड देना—Punish
दंड-न्यायालय—Criminal Court
दंड विधि—Criminal law
दंड-संबंधी—Criminal
दंडादेश—Sentence
दंडाधिकारी न्यायालय—Magistrate's Court
दाखला—Entry
दातव्य—Charities
दाय—Inheritace
दायित्व—Liability
दावा—Claim
दिवाला—Bankruptcy
दिवाला—Insolvency
दीवानी—Civil
दीवानी-अदालत—Civil Court
दृष्टांक—Visas
देय—Fee
देशीयकरण—Naturalisation
दोघरा—Bi-cameral
दोष-प्रमाणित—Convicted
दोष-सिद्धि—Conviction
दोषारोप—Charge (Cr)
द्यूत—Gambling
द्विगृही—Bi-cameral
द्वितीय-पठन—Second reading

ध

धन—Money
धन-विधेयक—Money-bill

धर्म—Faith
धर्मस्व—Endowments
धंधा—Occupation

न

नक्श—Design
नगरक्षेत्र—Municipal area
नगर-ट्रामवे—Municipal Tramway
नगर-निगम—Municipal Corporation
नगर-पालिका—Municipality
नगर-रथ्यायान Municipal Tramway
नगर-समिति—Municipal Committee
नागरिकता—Citizenship
नाम-निर्देशन—Nominate
नावधिकरण—Admiralty
निकाय—Body
निक्षेप-निधि—Sinking Fund
निखात-निधि-Treasure trove
निगम—Corporation
निगम-कर—Corporation tax
निगमन—Incorporation
निगम-निकाय—Body, Corporate
निदेश—Direction
निधि—Fund
निबद्ध—Registered
निबन्धन—Registration
निबन्धन—Term
नियन्त्रक-महालेखापरीक्षक—Comptroller and Auditor-General
नियंत्रण—Control
नियम—Rule
नियुक्ति—Appointment
नियोजक-उत्तरवादिता—Employer's liability
नियोजक-दातव्य—Employer's liabilty
निरसन—Repeal
निराकरण करना—Abrogate
निरोध—Custody
निरोधा—Quarantine
निर्णय—Judgment
निर्णायक मत—Casting vote
निर्देश—Reference
निर्धारण—Assessment
निर्बन्धन Restriction
निर्माण—Manufacture
निर्यात—Export
निर्यात-कर—Export tax
निर्यातशुल्क—Export duty
निर्योग्यता—Disability
निर्वचन—Interpretation
निर्वसीयत Intestate
निर्वसीयता—Intestacy
निर्वहन—Discharge
निर्वाचक-गण - Electoral college
निर्वाचक-नामावली Electoral rolls
निर्वाचन (v.)—Elect
निर्वाचन (n.)—Election
निर्वाचन-अधिकरण—Election Tribunal
निर्वाचन-आयुक्त-Election Commissioner
निर्वाचन-क्षेत्र—Constituency
निर्वाचित—Elected
निर्वासन—Transportation
निर्वाह मजूरी—Living wage
निलम्बन (v.)—Suspend
निलम्बन (n.)—Suspension
निवारक-निरोध—Preventive detention
निवृत्त होना—Retire
निवृत्ति—Retirement
निवृत्ति वेतन—Pension
निषेध—Forbid
निषिद्ध—Forbidden
निष्ठा—Allegiance
नौंदना—Register (v.)
नौकरी—Employment
नौकरी कर-Employment-tax
नौकाधिकरण—Admiralty
नौ-परिवहन—Navigation
नौ-सेनासम्बन्धी—Naval
न्यस्त करना—Entrust
न्यायपालिका—Judiciary
न्यायाधिकरण—Tribunal
न्यायाधिपति—Justice
न्यायाधीश—Judge
न्यायालय—Court
न्यायालय-अवमान—Contempt of Court
न्यायिक-कार्यरीति—Judicial proceeding
न्यायिक-कार्यवाही—Judicial proceeding.
न्यायिक मुद्रांक—Judicial stamps
न्यायिक शक्ति-Judicial power
न्यास—Trust
न्यूनन—Abridge

प

पक्ष—Party
पण लगाना—Bet
पण क्रिया—Betting
पण्यचिह्न Merchandise Mark
पत—Credit (n.)

पत्तन-निरोधा—Port quarantine
पथ-कर—Toll
पथ-नियम-Rule of the road
पद—Post
पद—Office
पदच्युत करना—Dismiss
पदत्याग—Resignation
पदधारी—Incumbent of an office
पदाधिकारी—Officer
पदावधि—Tenure
पदावास - Official residence
पदेन—Ex-officio
परकीकरण—Alienation
परमादेश—Mandamus
परन्तु—Provided
परमिट - Permit (n.)
परामर्श - Consultation
परित्यजन—Abandonment
परित्याग—Abandonment
परित्राण—Safeguard
परिपालन—Implement
परिप्रश्न—Inquiry
परिलब्धि -Perquisite
परिवहन—Transport
परिवहन—Carriage
परिव्यय—Cost
परिषद्—Council
परिषद्-आदेश—Order in Council
परिसीमन—Delimitation
परिसीमा—Limitation
परिहार—Remission
परिहार विधेयक—Bill of Indemnity
परोक्षनिर्वाचन-Indirect election
पर्यवेक्षण—Inspection
पर्यालोचन -Deliberate
पशु-अवरोध—Cattle Pounds
पंचाट—Award
पंजी Register
पंजी -Registered
पंजीबन्धन Registration
पंजीयन—Registration
पात्रता—Eligibility
पात्र--Eligible
पारपत्र Passport
पारण—Pass
पारित—Passed
पारितोषिक Reward
पारिश्रमिक—Remuneration
पावती--Receipt (paper)
पीठासीन होना—Preside
पीठासीनपदाधिकारी—Presiding officer
पुनरीक्षण - Revision
पुनर्विचार-न्यायालय Court of Appeal
पुनर्विलोकन Review
पुरःस्थापन Introduce
पुरःस्थापना -Introduction
पूर्त Charity
पूर्त धार्मिक धर्मस्व—Charitable and religious endowment
पूर्त संस्था Charitable institution
पूर्व मंजूरी—Previous sanction
पूर्व सम्मति—Previous consent
पूंजी—Capital
पृष्ठांकन—Endorse
पृष्ठांकित—Endorsed
पेशगी—Advance
पेशा—Profession
पोषण—Maintenance
पोषण करना—Maintain
पौरत्व—Citizenship
प्रकट करना—Discovery
प्रकाशन—Publication
प्रक्रिया—Procedure
प्रख्यापन—Promulgate
प्रग्रहण—Arrest
प्रचलित—Current
प्रचार करना—Propagate
प्रतिकर— Compensation
प्रतिकूल असर डालना—Affect prejudicially
प्रतिकूलता—Contravention
प्रतिकूल प्रभाव—Prejudice
प्रतिकूल प्रभाव डालना—Affect Prejudicially
प्रति कृति—Copy
प्रतिज्ञान—Affirmation
प्रतिनिधि—Representative
प्रतिनिधित्व—Representation
प्रतिपत्री—Proxy
प्रतिपालक अधिकरण-Court of wards
प्रतिभूति—Security
प्रतिरक्षा—Defence
प्रतिलिपि—Copy
प्रतिलिप्यधिकार—Copyright
प्रतिवेदन—Report
प्रतिव्यक्ति-कर-Capitation tax
प्रतिषिद्ध - Prohibited
प्रतिषेध—Prohibition
प्रति-शुल्क—Countervailing duties
प्रतिषेध लेख—Writ of prohibition

प्रतिसंहरण—Revoke
प्रत्यक्षनिर्वाचन-Direct election
प्रत्यय – Credit
प्रत्यय-पत्र —Letters of credit
प्रत्ययानुदान—Votes of credit
प्रत्यर्पण—Extradition
प्रत्याभूति—Guarantee
प्रथम पठन—First reading
प्रथम-सदन—Lower House
प्रधान-मंत्री—Prime Minister
प्रपत्र—Form
प्रभाव—Influence
प्रभु—Sovereign
प्रभुता - Sovereignty
प्रमाण-पत्र—Certificate
प्रमाणीकरण-Authentication
प्रमोद-कर—Entertainment tax
प्रयुक्ति—Application
प्रयोग—Application
प्रयोग—Exercise
प्रविलम्बन—Reprieve
प्रवर-समिति—Select Committee
प्रविष्टि—Entry
प्रवेश—Access
प्रवेशन—Accession
प्रव्रजन—Migration
प्रशांति—Tranquillity
प्रशासन —Administration
प्रशासन—Administer
प्रशासन कार्यक्षमता—Difficiency of administration
प्रशासन कार्यपटुता—Efficiency of administration
प्रशासनीय—Administrative
प्रशासनीय कृत्य—Administrative functions
प्रशासित—Administered

प्रशिक्षण—Training
प्रसंग—Context
प्रसारण—Broadcasting
प्रसूति साहाय्य—Maternity relief
प्रसूति सहायता—Maternity relief
प्रस्ताव—Motion
प्रस्तावना—Preamble
प्रस्थापना—Proposal
प्राक्कलन—Estimate
प्रादेशिक आयुक्त—Regional Commissioner
प्रादेशिक क्षेत्राधिकार—Territorial jurisdiction
प्रादेशिक निधि-Regional Fund
प्रादेशिक निर्वाचन क्षेत्र—Territorial constituency
प्रादेशिक परिषद्—Regional Council
प्रादेशिक भार—Territorial charges
प्राधिकार—Authority (ab.)
प्राधिकारी—Authority (con.)
प्राधिकृत—Authorised
प्रान्त—Province
प्रापण—Accrue
प्राप्त होना—Accrue
प्राप्ति—Receipt
प्रामिसरी नोट-Promissory note
प्रासंगिक - Incidental
प्रोद्भवन—Accrue
प्रोद्भूत—Accrued

फ

फरियाद—Complaint
फारम—Form
फीस—Fees

फेडरल न्यायालय—Federal Court

ब

बटवारा—Allocation
बनाये रखना—Maintain (v.)
बनाये रखना-Maintenance(n.)
बन्दी करना—Arrest
बन्दी प्रत्यक्षीकरण—Habeas Corpus
बन्धक—Mortgage
बल—Forces
बहिःशुल्क—Custom duty
बहुमत—Majority
बांट—Allotment
बिल—Bill
बीमा—Insurance
बीमा-पत्र—Policy of insurance
बेकारी—Unemployment
बैठक—Sitting
बैंक—Bank
बोर्ड—Board

भ

भत्ता—Allowance
भविष्य-निधि—Provident Fund
भर्ती—Recruitment
भागिता—Partnership
भाटक—Rent
भाड़ा—Fare
भार—Charge
भारग्रस्त सम्पदा—Encumbered estates
भारत सरकार—Government of India
भारित करना—Charge
भू-अभिलेख—Land Records

भू-धृति—Land tenures
भू-राजस्व—Land Revenue
भ्रष्ट—Corrupt

म

मजूरी—Wage
मण्डल—District
मण्डल न्यायालय—Court, District
मण्डलाधीश—Deputy Commissioner
मण्डलायुक्त—Deputy Commissioner
मण्डली—Board
मत—Vote
मतदाता—Voter
मतदान—Voting
मताधिकार—Suffrage
मतिमान्द्य—Dullness
मध्यस्थ न्यायाधिकरण—Arbitral tribunal
मध्यस्थ—Arbitrator
मध्यस्थ-निर्णय—Arbitration
मनोदौर्बल्य—Mental weakness
मनोनयन—Nominate
मनोवैकल्य—Mental defficiency
मंत्रणा—Advice
मंत्रणा देना—Advise
मंत्रणा-परिषद्—Advisory Council
मंत्रि-परिषद्—Council of Ministers
मंत्री—Minister
मरण-शुल्क—Death duty
महाजनी—Banking
महाधिवक्ता—Advocate-General
महान्यायवादी—Attorney-General
महाप्रशासक—Administrator General
महालेखापरीक्षक—Auditor-General
महाभियोग—Impeachment
मंजूरी—Sanction
मानदेय—Honorarium
मानव-पण्य—Traffic in human beings
मान-हानि—Defamation
मान्यता—Validity
मार्ग-प्रदर्शन—Guidance
मांग—Demand
मीनक्षेत्र—Fishery
मीन-पण्यौ—Fishery
मुक्त—Exempt
मुखिया—Headman
मुख्य—Chief
मुख्य-आयुक्त—Chief Commissioner
मुख्य-निर्वाचन-आयुक्त—Chief Election-Commissioner
मुख्य-न्यायाधिपति—Chief Justice
मुख्य न्यायाधीश—Chief Judge
मुख्य-मंत्री—Chief Minister
मुद्रा—Seal
मुद्रांक-शुल्क—Stamp duty
मूलधन—Capital
मूलधन मूल्य—Capital value

य

यथास्थिति—As the case may be
यन्त्र-शास्त्र—Engineering
याचिका—Petition
यातायात—Traffic
योगकाल—Joining time

र

रक्षण—Reservation
रक्षाकवच—Safeguard
रक्षित वन—Reserved forest
रथ्यायान—Tramcar
रद्द करना—Annulment
रसीद—Receipt
राजगामी—Escheat
राजनय—Diplomacy
राजस्व—Revenue
राजस्व-न्यायालय—Revenue Court
राज्य—State
राज्य की सरकार—Government of a State
राज्य-क्षेत्र—Territory
राज्यक्षेत्रातीत प्रवर्तन—Extra territorial operation
राज्य-निधि—State Fund
राज्य-परिषद्—Council of States
राज्यपाल—Governor
राज्य-सूची—State-List
राय—Opinion
राशि—Amount
राष्ट्र—Nation
राष्ट्र-ऋण—Public debt
राष्ट्रपति—President
राष्ट्रपति-प्रसाद पर्यन्त—During the pleasure of the President
राष्ट्रीय राजपथ—National highways
राष्ट्रों की विधि—Laws of Nations
रिक्तता—Vacancy

रिक्त स्थान—Vacancy
रिक्ति—Vacancy
रिक्थ—Property
रुकावट—Bar
रूढ़ि—Custom
रूप—Form
रूपभेद—Modification
रूपांकन—Design
रेल—Railway

ल

लगान—Rent
लगाना—Impose
लघूकरण—Commute
लम्बमान—Pending
लम्बित—Pending
लाइसेंस—Licence
लागत—Cost
लागू होना—Application(n)
लाभ—Profit
लाभांश—Dividend
लिखत—Instrument
लिखित सूचना—Notice in writing
लेख—Writ
लेखा—Account
लेखा-परीक्षा—Audit
लेखानुदान—Votes on accounts
लेख्य—Document
लेना देना—Dealings
लोक—People
लोक-अधिसूचना—Public notification
लोकसभा—House of the people
लोक-समाज—Community
लोक-सेवायें—Public Services
लोक-सेवायोग—Public Service Commission
लोक स्वास्थ्य—Public health

व

वकालत करना—Plead
वकील—Pleader
वचन-पत्र—Promissory note
वचन-बन्ध—Engagement
वणिक्-पोत—Merchant marine
वयस्क—Major
वयस्क-मताधिकार—Adult suffrage
वरी—Duty
वसीयत Will
वस्तु भाड़ा—Freight
वहन-पत्र—Bill of lading
वंटन—Allot
वाक्-स्वातन्त्र्य—Freedom of Speech
वाणिज्य—Commerce
वाणिज्य दूत—Consul
वाणिज्य सम्बन्धी—Commercial
वाद—Cause
वाद-पद—Issue
वाद-प्रतिवाद—Controversy
वाद-मूल—Cause of action
वाद-विवाद—Debate
वाद-विषय—Subject matter
वायदा-बाजार—Future market
वायु-पथ—Airways
वार्षिक—Annual
वार्षिक-वित्त-विवरण—Annual financial statement
वार्षिकी—Annuities
विकलन—Debit (v)
विकृत-चित्त—Unsound mind
विक्रय—Sale
विक्रय-कर—Sales tax
विघटन—Dissolution
विचार—Consideration
विचारार्थ प्रस्ताव—Motion for consideration
वितरण—Distribution
वित्त—Finance
वित्त-विधेयक—Finance bill
वित्तायोग—Finance-Commission
वित्तीय—Financial
वित्तीय भार—Financial obligation
वित्तीय विवरण—Financial statement
विदेशी कार्य—Foreign Affairs
विदेशीय विनिमय—Foreign exchange
विधान—Legislation
विधान-परिषद्—Legislative Council
विधान मंडल—Legislature
विधान-सभा—Legislative Assembly
विधायिनी शक्ति—Legislative power
विधि—Law
विधि-प्रश्न—Question of law
विधि-मान्य—Legal tender
विधियों का समान संरक्षण—Equal protection of law
विधिसम्बन्धी—Legal
विधेयक—Bill
विनियम—Regulation
विनियमन—Regulate
विनियम-पत्र—Bill of exchange
विनियोग—Appropriation
विनियोग-विधेयक—Appropriation bill

विनिश्चय—Decision
विभाग—Section
विभाजन—Distribution
विभेद—Discrimination
विमति—Dissent
विमान-परिवहन—Air navigation
विमान-यातायात—Air traffic
विमान-बल—Air Forces
विमोचन Redemption
विमोचन-भार—Redemption charges
वियुक्त—Deprive
विराम Respite
विरुद्ध—Repugnant
विरोध—Repugnance
विरोध—Repugnancy
विल—Will
विलेख—Deed
विवरणी—Return
विवाद—Dispute
विवाह-विच्छेद—Divorce
विशेषाधिकार—Privilege
विश्वास-प्रस्ताव—Motion of confidence
विश्वास का अभाव—Want of confidence
विषय—Subject
विसर्जन—Disperse
विसंगत—Irrelevant
विस्तार—Extend
विस्फोटक—Explosive
वीसा—Visas
वृत्ति—Profession
वृत्ति-कर—Profession tax
वृद्धि—Interest
वेतन—Pay
वेतन—Salary
वेलई—Employment
वेला-जल—Tidal waters
वैदेशिक कार्य—External Affairs
वोटदाता—Voter
वंचित करना—Deprive
व्यक्ति—Person
व्यपगत होना—Lapse
व्यय—Expenditure
व्यवसाय—Vocation
व्यवस्था—Order
व्यवहार—Civil
व्यवहार—Dealings
व्यवहार-अदालत—Civil Court
व्यवहारालय—Civil Court
व्यवहार न्यायालय—Civil Court
व्यवहार प्रक्रिया—Civil Procedure
व्यवहार प्रक्रिया संहिता—Civil Procedure Code
व्यवहार लाना—Sue
व्यवहार-वाद—Civil Suit
व्यवहार-विषयक अपकृत्य—Civil wrongs
व्यवहार-विषयक दोष—Civil wrongs
व्यवहार-शक्ति—Civil power
व्याख्या—Explanation
व्यापार—Trade
व्यापार कर—Trades Tax
व्यापार-चिह्न—Trademark
व्यापार-संघ—Trade Union
व्यावृत्ति—Savings

श

शक्ति—Power
शर्त—Condition
शलाका—Ballot
शलाका-पद्धति—Ballot
शान्ति—Peace
शाश्वत उत्तराधिकारी—Perpetual succession
शासक—Ruler
शासन—Governance
शासन—Govern
शासन—Government
शासी निकाय—Governing body
शास्ति—Penalty
शिक्षा—Education
शिक्षा—Instruction
शिल्पी-प्रशिक्षण—Technical training
शिविर—Camp
शिशु—Infant
शिस्त—Disciplinary
शुल्क—Duty
शुल्क-सीमान्त—Custom Frontiers
शून्य—Void
शेरिफ—Sheriff
शोधना—Research

श्र

श्रद्धा—Faith
श्रम—Labour
श्रमिक संघ—Labour Union
श्रेष्ठि चत्वर—Stock-Exchange

स

सक्षम—Competent
सत्र—Session
सत्र न्यायालय-Session Court
सत्रावसान—Prorogue
सदन—House
सदस्य—Member

सदाचरण-पर्यन्त—During good behaviour
सदाचार—Morality
संस्था—Association
संधि—Treaty
सभा—Assembly
सभापति—Chairman
समता—Equality
समर्पण—Dedicate
समवर्ती सूची—Concurrent List
समवाय—Company
समवाय संस्था—Co operative Society
समवेत होना—Assemble
समागम—Intercourse
समाचार-पत्र—Newspaper
समापन—Winding up
समिति—Committee
समुदाय—Community
समुद्र-नौवहन—Maritime shipping
सम्पदा—Estate
सम्पदा-शुल्क—Estate-duty
सम्पूर्ण-प्रभुत्व सम्पन्न लोकतन्त्रात्मक गणराज्य—Sovereign Democratic Republic
सम्मेलन—Conference
सरकार—Government
सरकारी अभियाचना—Public demand
सर्वक्षमा—Amnesty
सर्वोच्च समादेश—Supreme Command
सलाह—Advise
सशस्त्र बल—Armed forces
सहकारी संस्था—Co operative society
सहमति—Concurrence
सहायक—Ancillary
सहायक अनुदान—Grants-in-aid
संकटमय—Hazardous
संकल्प—Resolution
संक्रमण—Transition
संगणना—Compute
संघ—Union
संघटन—Organization
संघ सूची—Union List
संचार—Communication
संचार करना—Communicate
संचार साधन—Means of Communications
संचित निधि—Consolidated fund
संदर्भ—Context
संदेश—Message
संबोधित—Addressed
सम्पत्ति—Property
सम्पत्ति हस्तान्तरण पत्र—Assurances of property
सम्पर्क—Contact
सम्मति—Consent
सम्भावना—Honorarium
संरक्षक—Guardian
संलग्न—Append
संविदा—Contract
संविधान—Constitution
संविधान सभा—Constituent Assembly
संशोधन—Amendment
संसद्—Parliament
संस्था—Institution
संस्थापन—Establishment
संहिता—Code
साक्ष्य—Evidence
साख—Credit
साधारण निर्वाचन—General Election
सामर्थ्य—Capacity
सामाजिक बीमा—Social insurance
सामाजिक रूढ़ि—Social custom
सामाजिक सेवा—Social service
सामान्य मुद्रा—Common seal
सामान्य मुहर—Common seal
सार्वजनिक अधिसूचना—Public Notification
सार्वजनिक अभियाचना—Public demand
सार्वजनिक कल्याण—Common good
सार्वजनिक व्यवस्था—Public order
साहूकार—Moneylender
साहूकारी—Money lending
संसर्गिक—Contageous
सांक्रामिक—Infectious
सिद्ध दोष—Convicted
सिफारिश—Recommendation
सिफारिश करना—Recommend
सीमा—Boundary
सीमा-कर—Terminal tax
सीमांत—Frontiers
सीमा-शुल्क—Custom duty
सीमांकन—Demarcation
सुधार प्रन्यास—Improvement Trust
सुधारालय—Reformatory
सुसंगत—Relevant
सुसंगति—Relevancy
सूचना—Notice
सूचना-पत्र—Gazette

सूचना-पत्र—Notice
सूची—List
सूद—Interest
सूत्र—Formula
सूत्रित—Formulated
सेना—Military
सेना-न्यायालय—Court Martial
सेवा—Service
सेवा की शर्त—Condition of service
सेवा नियोजन—Employment
सेवा-भार—Service charges
सैनिक—Military
सैन्य-नियोजन—Demobilization
सौंपना—Assign
सौंपना Entrust
स्थगन—Adjourn
स्थगित करना—Adjourn
स्थान—Post
स्थान—Seat
स्थानान्तरण—Transfer (n.)
स्थानीय क्षेत्र—Local area
स्थानीय गण—Local Board
स्थानीय निकाय—Local body
स्थानीय प्राधिकारी—Local authority
स्थानीय मंडली—Local Board
स्थानीय शासन—Local Government
स्थानीय स्वशासन—Local Self-Government
स्थापना—Establishment
स्थापित करना—Establish
स्थायी आदेश—Standing orders
स्थायी समिति—Standing Committee
स्पष्टीकरण—Clarification
स्पष्टीकरण—Explanation
स्मारक—Memorial
स्वतन्त्रता Freedom
स्ववश—Possession
स्वविवेक—Discretion
स्वातन्त्र्य—Freedom
स्वाधीनता—Liberty
स्वामित्व—Ownership
स्वामिलभ्य—Royalties
स्वामिस्व—Royalties
स्वामी—Owner
स्वामिहीनत्व—Bona vacancia
स्वामी होना—Own
स्वायत्तता—Autonomy
स्वीय विधि—Personal law

ह

हक्क—Title
हक होना—Entitled
हटाना—Removal
हस्त-शिल्प Handicraft
हस्तांतर-पत्र—Conveyance
हस्तान्तरण—Transfer (n.)
हिदायतें—Instructions

—❀—

A

Abandonment—परित्यजन, परित्याग,
Abridge—न्यूनन
Abrogate—निराकरण
Access—प्रवेश
Account—लेखा, गणना, कणक,
Accrue—प्रापण, प्रोद्भवन,
Accrued—प्राप्त, प्रोद्भूत, उपार्जित,
Accusation—अभियोग
Accused—अभियुक्त
Acquisition—अर्जन
Act (n.)—अधिनियम, चट्टम्,
Acting (e. g. Chairman)—कार्यकारी
Actionable wrong-अभियोज्य दोष
Adaptation—अनुकूलन
Addressed—सम्बोधित
Adherence—अनुषक्ति
Ad hoc—तदर्थ
Adjourn—१ स्थगन, अधिदान, २ स्थगित करना, कालदान,
Administer—प्रशासन
Administered—प्रशासित
Administration—प्रशासन
Administrative—प्रशासनीय,
Administrative functions-प्रशासनीय कृत्य
Administrator-General—महाप्रशासक
Admiralty—नौकाधिकरण, नावधिकरण,
Admissible—ग्राह्य
Adoption—दत्तक-ग्रहण, दत्तक-स्वीकरण,
Adulteration—अपमिश्रण
Adult suffrage—वयस्क मताधिकार
Advance—अग्रिम, पेशगी,
Advice—मंत्रणा, उपदेश, सलाह,
Advise—मंत्रणा देना
Advisory Council—मंत्रणा परिषद्
Advocate अधिवक्ता
Advocate-General—महाधिवक्ता
Affect prejudicially-प्रतिकूल प्रभाव डालना, प्रतिकूल असर डालना
Affirmation - प्रतिज्ञान
Agency अभिकरण
Agent—अभिकर्त्ता
Agreement—करार, चुकती,
Air force—विमान बल
Air navigation-विमान परिवहन
Air traffic—विमान यातायात
Airways—वायु पथ
Alien—अन्यदेशीय
Alienate—अन्य-संक्रामण
Alienation—अन्य-संक्रामण, परकीकरण,
Allegation—अभिकथन, आरोप,
Allegiance—निष्ठा
Allocation—बटवारा
Allot—वंटन
Allotment—बांट
Allowances—भत्ता
Amendment—संशोधन
Amnesty—सर्वक्षमा
Amount—राशि
Ancillary—सहायक
Annual—वार्षिक
Annual Financial Statement—वार्षिक-वित्त-विवरण
Annuities—वार्षिकी
Annulment—रद्द करना
Appeal—अपील
Appear—उपस्थित होना
Appended—संलग्न
Application—१ प्रयुक्ति; २ लागू होना, ३ आवेदनपत्र
Appointment—नियुक्ति
Appropriation—विनियोग
Appropriation bill—विनियोग विधेयक
Approve—अनुमोदन करना
Approval—अनुमोदन
Arbitral tribunal—मध्यस्थ-न्यायाधिकरण
Arbitration—मध्यस्थ-निर्णय
Arbitrator—मध्यस्थ
Area - क्षेत्र
Armed Forces—सशस्त्र बल
Arrest—बन्दी करना, प्रग्रहण
Article—अनुच्छेद
Assemble—समवेत होना, सम्मिलित होना
Assembly—सभा
Assent—अनुमति
Assessment—निर्धारण, तीर्व
Assignment—सौंपना
Association—संस्था
Assurance of property—संपत्ति हस्तान्तरण-पत्र
As the case may be—यथास्थिति, यथाप्रसंग
Attach—कुर्की, टाँच

Attorney-General—महा-न्याय-वादी
Audit—लेखा-परीक्षा, गणना-परीक्षा
Auditor-General—महा-लेखा-परीक्षक
Authentication—प्रमाणीकरण
Authorise—प्राधिकृत
Authority प्राधिकारी
Autonomous—स्वायत्त
Autonomy—स्वायत्तता
Award—पंचाट

B

Bail—जामिन
Ballot—१ शलाका, २ शलाका-पद्धति, गूढ़-पत्र,
Bank बैंक
Banking महाजनी
Bankruptcy—दिवाला
Bar—रुकावट
Benefit हित
Betting पण लगाना, पणक्रिया
Bi-cameral—दोघरा, द्विगृही,
Bill—विधेयक, बिल,
Bill of exchange-विनिमय-पत्र
Bill of indemnity—परिहार-विधेयक, क्षतिपूर्ति-बिल,
Bill of lading—वहन-पत्र
Board—मंडली
Body—निकाय
Body, corporate—निगमनिकाय
Body, governing—शासीनिकाय
Bona vacancia—स्वामिहीनत्व
Borrowing—उधार-ग्रहण
Boundary—सीमा
Broadcasting—प्रसारण
Business—कारबार
Bye-election—उपनिर्वाचन
Bye-law—उपविधि

C

Calling—आजीविका
Camp—शिविर
Candidates—अभ्यर्थी, उम्मेदवार
Cantonment—कटक, छावनी
Capacity—सामर्थ्य
Capital—मूलधन, पूँजी
Capital value—मूलधन-मूल्य
Capitation tax—प्रतिव्यक्तिकर
Carriage—परिवहन
Casting vote—निर्णायक मत
Cattle pound—पशु-अवरोध, कांजी हौस,
Cause—वाद
Cause of Action—वाद-मूल
Census—जन गणना
Central Intelligence Bureau—केन्द्रीय गुप्त वार्ता विभाग
Certificate—प्रमाण पत्र
Certiorari—उत्प्रेषण-लेख
Cess—उपकर
Chairman—सभापति
Charge—भार, भारित करना
Charge (Cr.)—दोषारोप, अभियुक्ति
Charity—पूर्त, दातव्य
Charitable and religious endowments—पूर्त, धार्मिक, धर्मस्व
Charitable institutions—पूर्त-संस्था
Cheque—चेक
Chief—मुख्य
Chief-Commissioner—मुख्य आयुक्त
Chief-Election-Commissioner—मुख्य निर्वाचन आयुक्त
Chief-Judge—मुख्य न्यायाधीश
Chief Justice—मुख्य न्यायाधिपति
Chief Minister—मुख्यमंत्री
Citizenship—नागरिकता
Civil—१ व्यवहार, २ असैनिक
Civil Court—१ व्यवहार न्यायालय, दीवानी, २ व्यवहारालय, व्यवहार अदालत,
Civil power—१ व्यवहार-शक्ति २ असैनिक-शक्ति
Civil wrong—व्यवहार-विषयक अपकृत्य, व्यवहार-विषयक दोष,
Claim—दावा
Clarification—स्पष्टीकरण
Clause खण्ड
Code—संहिता
Coinage—टंकण
Colonization—उपनिवेशन
Commerce—वाणिज्य
Commercial—वाणिज्य-सम्बन्धी
Commission—आयोग
Commissioner—आयुक्त
Committee—समिति
Committee, Select—प्रवर-समिति
Committee, Standing—स्थायी समिति
Common good—सार्वजनिक कल्याण
Common Seal—सामान्य मुद्रा, सामान्य मुहर,
Communicate—संचार करना
Communication, means of—संचार साधन
Community—१ लोक समाज २ समुदाय

Commute—लघुकरण
Company—समवाय, कम्पनी
Compensation प्रतिकर
Competent—सक्षम, क्षमताशील
Complaint—फरियाद
Comptroller and Auditor General—नियन्त्रक-महालेखापरीक्षक
Compute—संगणना
Concurrence—सहमति
Conurrent List—समवर्तीसूची
Condition—शर्त
Conditions of service—सेवा की शर्तें
Conference—सम्मेलन
Confidence, want of—विश्वास का अभाव
Conscience—अन्तःकरण
Consent—सम्मति
Consent, previous—पूर्व-सम्मति
Consequential—आनुषंगिक
Consideration—विचार
Consolidated Fund—संचित निधि
Constituency—निर्वाचन-क्षेत्र
Constituency, territorial—प्रादेशिक निर्वाचन-क्षेत्र
Constituent Assembly—संविधान-सभा
Constitution—संविधान
Consul—वाणिज्य-दूत
Consultation—परामर्श
Construe—अर्थ करना
Consumption—उपभोग
Contact—संपर्क
Contagious—सांसर्गिक
Contempt—अवमान
Contempt of court—न्यायालय अवमान
Context—संदर्भ, प्रसंग
Contingency Fund—आकस्मिकता निधि
Contract—संविदा
Contravention—प्रतिकूलता, उल्लंघन
Contribution—अंशदान
Control—नियन्त्रण
Controversy—प्रतिवाद
Convention—अभिसमय
Conveyance—हस्तान्तरपत्र
Convicted—सिद्ध-दोष, दोषप्रमाणित, अभिशस्त,
Conviction—दोषसिद्धि, अभिशस्ति
Cooperative society—सहकारी संस्था, समवाय संस्था,
Copy—प्रतिलिपि, प्रतिकृति,
Copyright—प्रतिलिप्यधिकार, कृतिस्वाम्य,
Corporation—निगम
Corporation, Sole—एकल निगम
Corporation tax—निगम-कर
Corresponding—तत्स्थानी
Corrupt—भ्रष्ट
Cost—परिव्यय, खर्च, लागत
Council—परिषद्
Council of Ministers—मंत्रि-परिषद्
Council of States—राज्य-परिषद्
Council, Regional—प्रादेशिक-परिषद्
Council, Tribal—जनजाति-परिषद्
Countervailing duty—प्रति-शुल्क
Court—न्यायालय
Court of Appeal—पुनर्विचार-न्यायालय, अपील-न्यायालय,
Court, Civil—व्यवहार-न्यायालय
Court, Criminal—दंड-न्यायालय
Court, District—जिला-न्यायालय, मंडल-न्यायालय,
Court, Federal—फेडरल-न्यायालय
Court, High—उच्चन्यायालय
Court, Magistrate—दंडाधिकारी-न्यायालय
Court Martial—सेना-न्यायालय
Court of wards—प्रतिपालक-अधिकरण
Court, Revenue राजस्व-न्यायालय
Court, Session—सत्र-न्यायालय
Court, subordinate—अधीन न्यायालय
Court, Supreme—उच्चतम-न्यायालय
Credit—प्रत्यय, साख, पत
Credit—आकलन
Crime—अपराध
Criminal—१ अपराधी, दंड सम्बन्धी
२ आपराधिक
Criminal law—दंड-विधि
Currency—चल अर्थ, चलावणी,
Custody—अभिरक्षा, निरोध, कावल
Custom duty—वहिः-शुल्क, सीमा-शुल्क
Custom frontier—शुल्क-सीमान्त
Custom—रूढि, अचार

D

Dealings—व्यवहार, लेना देना,
Debate—वाद-विवाद
Debentures—ऋण-पत्र
Debit—विकलन
Debt—ऋण
Decision—विनिश्चय
Declaration—घोषणा
Decree—आज्ञप्ति, डिक्री
Dedicate—समर्पण
Deed—विलेख
Defamation—मानहानि
Defence—प्रतिरक्षा
Deliberate—पर्यालोचन
Delimitation—परिसीमन
Demand—माँग, अभियाचना
Demarcation—सीमांकन
Demobilisation-सैन्य वियोजन
Deprived—वंचित करना, वियुक्त करना
Deputy Chairman—उपसभापति
Deputy Commissioner—उपायुक्त, मण्डलायुक्त
Deputy President—उपराष्ट्रपति
Deputy Speaker उपाध्यक्ष
Descent—उद्भव
Derogation—अल्पीकरण
Design—रूपांकण, नक्श
Detrimental—अहितकारी
Diplomacy—राजनय
Direction—निदेश
Disability—निर्योग्यता
Discharge—निर्वहन
Discipline—अनुशासन
Disciplinary—अनुशासन सम्बन्धी, शिस्त
Discovery—प्रकट करना
Discretion—स्वविवेक
Discrimination—विभेद
Discussion—चर्चा
Dismiss—पदच्युत करना
Disperse—विसर्जन
Dispute—विवाद
Disqualification—अनर्हता
Disqualify—अनर्हीकरण
Dissent—विमति
Dissolution—विघटन
Distribution—वितरण, विभाजन
District—जिला, मण्डल
District Board—जिला-मंडली
District Council—जिला-परिषद्
District Fund—जिला निधि
Dividend—लाभांश
Divorce—विवाह-विच्छेद
Documents—लेख्य, दस्तावेज
Domicile—अधिवास
Domiciled—अधिवासी
Dulness—मतिमान्द्य
During good behaviour—सदाचार पर्यन्त
During the pleasure of the president—राष्ट्रपतिप्रसाद पर्यन्त
Duty—१ शुल्क, वरी, २ कर्तव्य
Duty, custom—सीमा-शुल्क
Duty, death—मरण-शुल्क
Duty, estate—सम्पत्ति-शुल्क
Duty, excise—उत्पादन-शुल्क
Duty, export—निर्यात-शुल्क
Duty, import—आयात-शुल्क
Duty, stamp—मुद्रांक-शुल्क
Duty, succession—उत्तराधिकार-शुल्क

E

Economic—आर्थिक
Education—शिक्षा
Efficiency of administration—प्रशासन-कार्यक्षमता, प्रशासन कार्यपटुता
Elect—निर्वाचन (v.)
Elected—निर्वाचित, चुने हुए
Election—निर्वाचन
Election Commissioner—निर्वाचन-आयुक्त
Election, direct—प्रत्यक्ष-निर्वाचन
Election, general—साधारण निर्वाचन
Election, indirect—परोक्ष निर्वाचन
Election tribunal—निर्वाचन अधिकरण
Electoral roll—निर्वाचक-नामावली
Electoral rolls—निर्वाचक-गण
Eligibility—पात्रता
Eligible—पात्र होना
Emergency—आपात
Emergent—आपाती
Emigration—उत्प्रवास
Emoluments—उपलब्धियां
Employer's liability—नियोजक-दातव्य, नियोजक-उत्तरवादिता
Enact—अधिनियम
Encumbered estate—भारग्रस्त-सम्पदा
Endorse—१ पृष्ठांकन, २ अंकन
Endorsed—१ पृष्ठांकित, २ अंकित
Endowment—धर्मस्व
Engagements—वचन-बन्ध

Engineering—यन्त्र-शास्त्र
Enterprise—उद्यम
Entitled—हक्क होना
Entrust न्यस्त, सौंपना
Entry - प्रविष्टि, दाखला
Equality—समता
Equal Protection of Laws—विधियों का समान संरक्षण
Escheat—राजगामी
Establishment—१ स्थापना, संस्थापन
२ स्थापन करना
Estates—संपदा
Estimates—आंक, प्राक्कलन
Evidence—साक्ष्य
Excess profit—अतिरिक्त लाभ
Exclude—अपवर्जन करना
Exclusion—अपवर्जन
Exclusive jurisdiction—अनन्य क्षेत्राधिकार
Executive—कार्यपालिका
Executive power—कार्यपालिका-शक्ति
Exempt—मुक्त
Exercise—प्रयोग, अनुष्ठान
Ex officio—पदेन
Expenditure—व्यय
Explanation—व्याख्या, स्पष्टीकरण
Explosives—विस्फोटक
Export—निर्यात
Extend—विस्तार
External Affairs—वैदेशिककार्य
Extradition—प्रत्यर्पण
Extra territorial operations—राज्यक्षेत्रातीत प्रवर्त्तन, राज्यक्षेत्रातीत वर्त्तन

F

Factory—कारखाना
Faith—धर्म, श्रद्धा
Fare—भाड़ा, किराया
Federal Court-फेडरल न्यायालय
Fees—देय, फीस
Finance—वित्त
Finance bill—वित्त-विधेयक
Finance Commission—वित्तायोग
Financial—वित्तीय
Financial obligation—वित्तीय भार
Financial statement – वित्तीय विवरण
Fine—अर्थ-दण्ड, जुर्माना किया
Fishery—मीन-क्षेत्र, मीन-पण्यै
Forbid—निषेध
Forbidden—निषिद्ध
Forces—बल
Foreign Affairs-विदेशीय कार्य
Foreign exchange – विदेशीय विनियम
Form—१ रूप
२ प्रपत्र, फारम
Formula—सूत्र
Formulated—सूत्रित
For the time being—तत्समय
Freedom—१ स्वतन्त्रता
२ स्वातन्त्र्य, आजादी
Freights—वस्तु भाड़ा
Frontiers—सीमान्त
Function—कृत्य
Function, administrative-प्रशासनीयकृत्य
Fund—निधि
Fund, sinking—निक्षेप-निधि
Future market—वायदा बाजार

G

Gambling—द्यूत, जुआ
Gazette—सूचना-पत्र, गजट,
General Election—साधारण निर्वाचन
Govern—शासन करना
Governance—शासन
Government—१ सरकार
२ शासन
Government of a State—राज्य की सरकार
Government of India-भारत सरकार
Governor—राज्यपाल
Grant—अनुदान
Grant-in-aid—सहायक अनुदान
Gratuity—उपदान
Guarantee—प्रत्याभूति
Guardian—संरक्षक
Guidance—मार्ग-प्रदर्शन

H

Habeas Corpus—बन्दी प्रत्यक्षीकरण
Handicrafts—हस्तशिल्प दस्तकारी
Hazardous—संकटमय
Headman—मुखिया
High Court—उच्चन्यायालय
Honorarium—मानदेय, संभावना
House—सदन
House of People—लोक-सभा

I

Illegal—अवैध
Illegal Practice—अवैधाचरण
Immunity—उन्मुक्ति
Impeachment—महाभियोग

Implementing—परिपालन
Impose—आरोपण, लगाना
Imprisonment कारावास, कैद
Improvemnt trust—सुधार-प्रन्यास
Incapacity—असमर्थता
Incidental—प्रासंगिक
Incometency—अक्षमता
Incompetent—अक्षम
Incorporation—निगमन
Incumbent of an office—पदधारी
Indebtedness—ऋण ग्रस्तता
Industry—उद्योग
Ineligble—अपात्र
Ineligility—अपात्रता
Infants—शिशु
Infectious—सांक्रामिक
Influence—प्रभाव
Influence, undue—अयुक्त प्रभाव
Inheritance—दाय
Initiate—उपक्रमण
Injury—क्षति
Inland waterways—अन्तर्देशीय जलपथ
Inoperative—अप्रवृत्त
Inquiry—परिप्रश्न, जाँच
Insolvency—दिवाला
Inspection—पर्यवेक्षण
Institution—संस्था
Instruction—१ शिक्षा
२ अनुदेश, हिदायतें
Instrumeut—लिखत
Insurance—बीमा
Intercourse—समागम
Interest—ब्याज, वृद्धि, सूद
International—अन्तर्राष्ट्रीय
Interpretation—निर्वचन
Intestacy—इच्छापत्रहीनत्व निर्वसीयता
Intestate—इच्छापत्रहीन, निर्वसीयत
Introduce—पुरःस्थापन
Introduction—पुरःस्थापन
Invalid—अमान्य
Invalidity pensions—असमर्थतानिवृत्ति वेतन
Investigation—अनुसंधान
Involve—अन्तर्ग्रसन
Involved—अन्तर्ग्रस्त
Irregularity—अनियमितता
Issue—वाद पद

J

Joining Time—योगकाल
Joint family—अविभक्त कुटुम्ब, अविभक्त परिवार
Judge—न्यायाधीश
Judge, Additional—अपर न्यायाधीश
Judge, extra—अतिरिक्त न्यायाधीश
Judgment—निर्णय
Judicial power—न्यायिक शक्ति
Judicial proceeding—न्यायिक कार्यवाही
Judicial stamp—न्यायिक मुद्रांक
Judiciary—न्यायपालिका
Jurisdiction—क्षेत्राधिकार
Justice, Chief—मुख्य न्यायाधिपति

L

Labour—श्रम
Labour Union—श्रमिक संघ
Land records—भू-अभिलेख
Land revenue—भू-राजस्व
Land tenures—भू-धृति
Law—विधि
Law of nations—राष्ट्रों की विधि
Legal—विधि सम्बन्धी कानून सम्बन्धी,
Legislation—विधान
Legislative power—विधायिनी शक्ति
Legislative Assembly—विधान सभा
Legislative Council—विधान-परिषद्
Legislature—विधान मंडल
Letters of credit—प्रत्यय-पत्र
Levy—१ अरोपण
२ उद्ग्रहण, उगाहना
Liability—दायित्व
Libel—अपमान-लेख
Liberty—स्वाधीनता
Licences—अनुज्ञप्ति, लाइसेंस
Lieutenant Governor—उपराज्यपाल
Limitation—परिसीमा
List—सूची
List, Concurrent—समवर्त्ती सूची
List, State—राज्य-सूची
List, Union—संघ-सूची
Livelihood—जीविका
Loans—उधार
Local area—स्थानीय क्षेत्र

Local authorities—स्थानीय प्राधिकारी
Local board—स्थानीय-मंडली स्थानीय गण,
Local body—स्थानीय निकाय
Local Government—स्थानीय शासन
Local Self Government—स्थानीय स्वशासन
Lock up—बन्दीखाना
Lower House—प्रथम सदन
Lunacy—उन्माद
Lunatic—उन्मत्त

M

Maintain—१ पोषण
२ बनाये रखना
Maintenance—पोषण
Major—वयस्क
Majority—बहुमत
Mandamus—परमादेश
Manufacture—निर्माण
Maritime shipping—समुद्र-नौवहन
Maternity Relief—प्रसूति-सहायता, प्रसूति-साहाय्य
Member—सदस्य
Memo—ज्ञाप
Memorandum—ज्ञापन
Memorial—स्मारक
Mental deficiency—मनो-वैकल्य
Mental Weakness—मनो-दौर्बल्य
Merchandise marks—पण्य चिह्न
Merchandise marine—वणिक-पोत
Message—संदेश
Migration—प्रव्रजन
Military—१ सेना
२ सैनिक
Mind unsound—विकृत-चित्त
Mineral—खनिज
Mineral resources—खनिज-सम्पत्
Mining settlement—खनि-वसति
Minister—मंत्री
Minor—अवयस्क
Minority—अल्पसंख्यक-वर्ग
Misbehaviour कदाचार
Modification—रूपभेद
Money—धन
Money bill—धन विधेयक
Money-lender—साहूकार
Money lending—साहूकारी
Morality—सदाचार
Mortgage—बन्धक
Motion—प्रस्ताव
Motion for Consideration—विचारार्थ प्रस्ताव
Motion of Confidence—विश्वास प्रस्ताव
Motion of No-confidence—अविश्वास-प्रस्ताव
Municipal area—नगर-क्षेत्र
Municipal Committee—नगर समिति
Municipal Corporation—नगर-निगम
Municipality—नगर-पालिका
Municipal tramways—नगर-रथ्यायान, नगर-ट्रांवे

N

Nation—राष्ट्र
National highways—राष्ट्रीय राजपथ
Naturalisation—देशीयकरण
Naval—नौसेना सम्बन्धी
Navigation—नौ-परिवहन
Newspapers—समाचार-पत्र
Nominate—नामनिर्देशन, मनोनयन
Notice—१ सूचना
२ सूचनापत्र
Notice in writing—लिखित सूचना
Notification—अधिसूचना

O

Obligation—आभार
Occupation—उपजीविका, धंधा
Octroi—चुंगी
Offence—अपराध
Office—पद
Officer—पदाधिकारी
Official residence—पदावास
Opinion—अभिप्राय, राय
Order—१ आदेश
२ व्यवस्था
Order in Council—परिषद् आदेश
Order standing—स्थायी आदेश
Ordinance—अध्यादेश
Organization—संघटन
Own—स्वामी होना
Owner—स्वामी
Ownership—स्वामित्व

P

Pardon—क्षमा
Parliament—संसद्
Party—पक्ष

Partnership—भागिता
Pass—पारण
Passed—पारित, तीर्ण
Passport—पारपत्र
Patents—एकस्व
Pay—वेतन
Peace—शान्ति
Pecuniary jurisdiction—आर्थिक क्षेत्राधिकार
Penalty—शास्ति
Pending—१ लम्बित २ लम्बमान
Pension—निवृत्ति वेतन
People—लोक, जनता
Permission—अनुज्ञा
Permit—अनुज्ञा, परमट
Perpetual succession—शाश्वत उत्तराधिकार
Perquisite—परिलब्धि
Person—व्यक्ति
Personal law—स्वीय विधि
Petition—याचिका, अर्जी
Piracy—जल-दस्युता
Plead—वकालत करना
Pleader—वकील
Police—आरक्षक
Poilce Force—आरक्षक बल
Police Station—थाना
Policy of insurance-बीमा-पत्र
Port quarantine-पत्तन निरोधा
Possession—स्ववश, कब्जा
Posts—१ पद
२ स्थान, जगह
Power—शक्ति—
Preamble—प्रस्तावना
Preference—अधिमान
Prejudice—प्रतिकूल प्रभाव
Preside—पीठासीन, अध्यासीन
President—राष्ट्रपति
Presiding officer—अधिष्ठाता
Preventive detention—निवारक निरोध
Prime Minister—प्रधान मंत्री
Prison—कारावास,जेल
Prisoner—कारावन्दी, कैदी
Privileges—विशेषाधिकार
Procedure—प्रक्रिया
Procass—आदेशिका
Proclamation—उद्घोषणा
Proclamation of Emergency—आपात की उद्घोषणा
Production—उत्पादन
Profession—वृत्ति, पेशा
Profit—लाभ
Prohibited—प्रतिषिद्ध
Prohibition, writ of—प्रतिषेध-लेख
Promissory note—प्रामिसरी नोट, वचन-पत्र
Promulgate—प्रख्यापन
Propagate—प्रचार करना
Property—१ सम्पत्ति; २ रिक्थ, आस्ति
Proportional representation—अनुपाती प्रतिनिधित्व
Proposal—प्रस्थापना
Prorogue—सत्तावसान
Prosecution—१ अभियोजन २ अभियुक्ति
Provided—परन्तु
Provident fund—भविष्य निधि
Province—प्रान्त
Provision—उपबन्ध
Proxy—प्रतिपत्री
Publication—प्रकाशन
Public debt—राष्ट्र-ऋण
Public demands—सार्वजनिक अभियाचना सरकारी, अभियाचना,
Public health—लोक स्वास्थ्य
Public notification—सार्वजनिक अधिसूचना, लोक अधिसूचना
Public Order—सार्वजनिक व्यवस्था
Public Service Commission—लोक सेवायोग
Public Services—लोक-सेवाएँ
Punish—दंड देना
Purporting to be done—कर्तुमभिप्रेत

Q

Qualification—अर्हता
Quarantine—निरोधा
Question of Law-विधि-प्रश्न
Quorum—गण-पूर्ति
Quo warranto—अधिकार-पृच्छा

R

Railway—रेल
Ratification—अनुसमर्थन
Ratify—अनुसमर्थन
Reading, first प्रथम पठन
Reading, second—द्वितीय पठन
Reading, third—तृतीय पठन
Receipt—प्राप्ति
Receipt(paper)—पावती, रसीद
Recommend—सिपारिश करना
Recommendation—सिपारिश
Record—अभिलेख
Record, court of—अभिलेख-न्यायालय
Record of rights—अधिकार अभिलेख
Recruitment—भर्ती

Recurring—आवर्त्तक
Redemption—विमोचन
Redemption charges—विमोचन भार
Reference—निर्देश
Reformatory—सुधारालय
Refundable to—लौटाये जाने वाली
Regional Commissioners—प्रादेशिक आयुक्त
Regional Councils-प्रादेशिक-परिषद्
Regional Fund—प्रादेशिक निधि
Register—पंजी
Registered—१ पंजीबद्ध २ निबद्ध, नौदना
Registration—१ पंजीयन २ पंजीबन्धन ३ निबन्धन
Regulate—विनियमन
Regulation—विनियम
Relevancy—सुसंगति
Relevant—सुसंगत
Remedy—उपचार
Reminder—अनुस्मारक
Remission—परिहार
Removal—हटाना
Remuneration—पारिश्रमिक
Rent—भाटक, लगान
Repeal—निरसन
Report—प्रतिवेदन
Representation—प्रतिनिधित्व
Representative—प्रतिनिधि
Reprieve—प्रविलम्बन
Repugnance—विरोध
Repugnancy—विरोध
Repugnant—विरुद्ध
Requisition—अधिग्रहण
Research—गवेषणा, शोधन
Reservation—रक्षण
Reserved forest—रक्षित वन
Resignation—पदत्याग
Resolution—संकल्प
Respites—विराम
Restriction—निर्बन्धन
Retire—निवृत्त होना
Retirement—निवृत्ति
Revenue—राजस्व, आगम
Review—पुनर्विलोकन
Revision—पुनरीक्षण
Revoke—प्रतिसंहरण
Reward—पारितोषिक
Rights—अधिकार
Rule—नियम
Rule of the road—पथ-नियम
Ruler—शासक

S

Safeguard—रक्षा-कवच, परित्राण
Salary—वेतन
Sale—विक्रय
Sanction—मंजूरी
Sanction, previous—पूर्व मंजूरी
Savings—व्यावृत्ति
Schedule—अनुसूची
Scheduled area—अनुसूचित क्षेत्र
Scheduled Caste—अनुसूचित जाति
Scheduled Tribes—अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित आदिम जाति
Seal—मुद्रा
Seats—स्थान
Sections—विभाग
Security—प्रतिभूति
Sentence—दंडादेश
Service—सेवा
Service charges—सेवाभार
Session—सत्र
Share—अंश
Sheriff—शेरीफ
Single transferable vote—एकल संक्रमणीय मत
Sinking Fund—निक्षेपनिधि
Sitting—उपवेशन, बैठक
Slander—अपमान-वचन
Social-custom—सामाजिक रूढ़ि
Social Insurance—सामाजिक बीमा
Social Service—सामाजिक सेवा
Sovereign—प्रभु
Sovereign Democratic Re-Sublic—संपूर्ण-प्रभुत्व-सम्पन्न लोकतन्त्रात्मक गणराज्य
Sovereignty—प्रभुता
Speaker—अध्यक्ष
Speech, freedom of—वाक्-स्वातन्त्र्य
Staff—कर्मचारी वृन्द
Stamp duties—मुद्रांक-शुल्क
Standing orders—स्थायी आदेश
State—राज्य
State funds—राज्य-निधि
Stock exchange—श्रेष्ठि-चत्वर
Sub-division—उपविभाग
Subject—१ अधीन, २ विषय
Subject matter—वाद विषय
Subordinate officer—अधीन अधिकारी
Succession—उत्तराधिकार
Successor—उत्तराधिकारी
Sue—व्यवहार लाना
Suffrage—मताधिकार

Suit, Civil—व्यवहार वाद
Summon—आह्वान
Superintendence—अधीक्षण
Superintendent—अधीक्षक
Supplementary—अनुपूरक
Supplementary grant—अनुपूरक अनुदान
Supreme Command—सर्वोच्च समादेश
Supreme Court—उच्चतम न्यायालय
Suspend—निलम्बन
Suspension—निलम्बन

T

Taxes—कर
Tax, Callings—आजीविका-कर
Tax, Capitation—प्रतिव्यक्ति कर
Tax, Corporation—निगम-कर
Tax, Employment—नौकरी-कर,
Tax, Entertainment—प्रमोद-कर
Tax, Export—निर्यात-कर
Tax, Profession—वृत्ति-कर
Tax, Income—आय-कर
Tax, Sales—विक्रय-कर
Tax, Terminal—सीमा-कर
Tax, Trades—व्यापार-कर
Technical training—शिल्पी प्रशिक्षण
Tenant—किसान
Tender, legal—विधिमान्य
Tenure—पदावधि
Term—निबन्धन
Territorial charges—प्रादेशिक भार
Territorial Jurisdiction—प्रादेशिक क्षेत्राधिकार
Territorial Waters—जल-प्रांगण
Territory—राज्य-क्षेत्र
Tidal waters—वेला-जल, ज्वार जल
Title—हक
Tolls—पथ-कर
Trade—व्यापार
Trademarks—व्यापार चिह्न
Trade Union—कार्मिक संघ, व्यापार संघ
Traffic—यातायात
Traffic in human beings—मानवपणन
Training—प्रशिक्षण
Tramcar—रथ्यायान, ट्रामगाड़ी
Tramway—ट्राम
Tranquillity—प्रशान्ति
Transfer—१ स्थानांतरण, २ हस्तान्तरण,
Transition—संक्रमण
Transport—परिवहन
Transportation—निर्वासन
Treasure troves—निखात-निधि
Treaty—सन्धि
Tribal Area—जनजाति-क्षेत्र
Tribe—जन-जाति
Tribunal—न्यायाधिकरण
Triennial—त्रैवार्षिक
Trust—न्यास

U

Undischarged—अनुन्मुक्त
Unemployment—बेकारी
Union—संघ
Unit- एकक
Unsoundness of mind—चित्त-विकृति

V

Vacancies—रिक्त स्थान
Vacancy—१ रिक्ति, २ रिक्तता
Vagrancy—आहिंडन, अवारागर्दी
Validity—मान्यता
Vice-President—उपराष्ट्रपति
Village Councils—ग्राम-परिषद्
Violation—अतिक्रमण
Visas—द्रष्टांक, वीसा
Vocation—व्यवसाय
Void—शून्य
Vote—मत
Vote, casting—निर्णायक मत
Voter—मतदाता, वोट-दाता,
Votes on account—लेखानुदान, गणनानुदान
Votes of credit—प्रत्यायानुदान

W

Wage—मजूरी
Wage, living—निर्वाह-मजूरी
Warrant—अधिपत्र
Will—इच्छा-पत्र, विल, वसीयत
Winding up—समापन
Writ—लेख